भावनगर—

श्री 'आनंद' प्रीन्टींग प्रेसमां शेठ देवचंद दामजी तथा शाह गुलाबचंद लल्लुभाइए छाप्युं.

समर्पण.

अखंड प्रौढप्रताप गौब्राह्मण प्रतिपाल नेकनामदार झालाकुलमुकुटमणि महाराणाश्री ऑनररी केप्टन सर अमरसिंहजी साहेबबहादुर के. सी. आई. ई.

स्व. वांकानेर.

आप नामदारनी आज्ञानुसार आपश्रीना पूर्वजोनी कथारुप पवित्र सरिताओथी विस्तार पामेलो अने जेमां विविध व्यवहारिक तथा पारमार्थिक सद्बोधरुपी अनंत रत्नोनो संग्रह थएलो छे, एवो आ " श्री झालावंश वारिधि " (समस्त झालाकुळनो इतिहास) रुप साहित्यनिधि आपश्रीनेज अर्पण करी कृतकृत्य थाउं छुं ते स्वीकारी आभारी करशो.

भवदीय कृपाभिलाषी,

राजकवि नथुराम सुन्दरजी.

MAHARANA SHRI SIR AMARSINHJI BAHADUR K. C. I. E.

॥ ॐ ॥

निवेदन.

ब्रह्माण्डसम्पुटकलेवरमध्यवर्ति,
चैतन्यपिण्डमिवमण्डलमस्ति यस्य ।
आलोकितोऽपि दुरितानि निहन्ति यस्तं,
मार्तण्डमादि पुरुषं प्रणमामि नित्यम् ॥

जेनुं मंडल ब्रह्मांडसंपुटरूपी कलेवर (शरीर) ना मध्यभागमां चैतन्यपिंडनी माफक रहेलुं छे, अने जे दर्शन मात्रथी दुरितो (पापो) ने हणे छे, ते आदि पुरुष मार्तंड (सूर्यनारायण) ने हुं निरन्तर नमन करुं छुं.

सृष्टिना आरंभथी अत्यारसूधीमां अनेक राजामहाराजाओ थई गया, कोण जाणे छे ए सर्वने ? मात्र कवि तथा लेखकजनोए जेना [1]इतिहास लखेला छे तेओज यशःशरीरे पोतानां उत्तम चरित्रो द्वारा भविष्यनी प्रजाने सदाचारनुं शिक्षण आपे छे.

ते धन्यास्ते महात्मानो, तेषां लोके स्थिरं यशः ।
यैर्निर्बद्धानि काव्यानि, ये च काव्येषु कीर्तिताः ॥

तेओज धन्य छे, तेओज महात्माओ छे अने तेओनोज यश आ लोकमां स्थिर छे के जेओए काव्योनुं बंधारण कर्युं छे अने जेओ काव्यमां गवाया छे.

चलं चित्तं चलं वित्तं, चलं जीवितयौवने;
चलाचलमिदं सर्वं, कीर्ति यस्य स जीवति.

चित्त (मन), वित्त (धन) जीवित (जीवन) अने यौवन वगेरे तमाम पदार्थो चलायमान अर्थात् नाशवंत छे, तेमां जेनी कीर्ति छे एज जीवे छे अर्थात् अमर छे.

मारी जन्मभूमि वांकानेर होवाथी अने वांकानेरनरेश महाराजा राजसाहेब अमरसिंहजी बहादुर के. सी. आई. ई. म्हारा उपर अपार प्रीति राखता होवाथी वखतोवखत कंइपण नविन काव्यो अगर नाटको तैयार थाय ते सांभळवा तेओ नामदार पोतानो अमूल्य समय रोकी मारा श्रमने अनुमोदन आपता, अने प्रसंगोपात प्रसन्नतापूर्वक पारितोपिक आदिथी पोतानाः—

---

१ इति–ए प्रमाणे, ह–स्फुट (स्पष्ट), आस–हतु

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं, युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च, क्षात्रंकर्म स्वभावजम् ॥

स्वभाविक शौर्य, तेज, धृति, दक्षता, युद्धमां पाछो पग न वरवो, दान अने ऐश्वर्य वगेरे क्षात्रकर्मनो परिचय करावता,

किमत्र चित्रं यत्सन्तः परानुग्रहतत्पराः ।
न हि स्वदेहशैत्याय जायन्ते चन्दनद्रुमाः ॥

एमां कांइ आश्चर्य जेवुं नथी, सत्पुरुषो (महान पुरुषो) स्वाभाविक रीते हमेशां अन्य उपर अनुग्रह करवाने तत्परज होय छे, चन्दननां वृक्षो पोताना देहने थंडक आपवा माटे नथी होतां, तेनो जन्म तो अन्यने शान्ति आपवा अर्थेज होय छे; तेमज अमारा राजसाहेब पण पोताना पुरवासीओ तथा सेवकजनो वगेरे कलाकौशल्यने प्राप्त करीने प्रसिद्धिमां केम आवे एवुंज चिन्तवन कर्या करे छे.

एक समय तेओ नामदारनी " समस्त झालाकुलनो इतिहास " लखाववानी इच्छा थतां ते काम मने सोंपवामां आव्युं.

" नरेश्वरो वा परमेश्वरो वा "

मने पण मारा महाराजानी सेवानो सुअवसर प्राप्त थयो अने एज वखते में इतिहासनां साधनो एकत्र करवा मांड्यां.

धन्य छे महाराजा राजसाहेबने के जेओ पोताना पूर्वजोनुं गौरव प्रकाशमां लाववा राजगादी पर अभिषिक्त थया त्यारथीज तत्पी रह्या हता, राजलक्ष्मी प्राप्त थया पछी मोज-शोखमां, व्यर्थ मान मेळववामां अने विविध प्रकारनां सुखसाधनो वधारवामां राजाओने रच्या-पच्या राखनार हालना जमानामां आवी प्रवृत्ति करनार पृथ्वीपति कांइ ओछा मानने पात्र नथी. केमके:—

यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्वमविवेकता ।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ॥

यौवन, धनसंपत्ति, प्रभुत्व अने अविवेकीपणुं ए एक महान अनर्थनां कारण छे, तो पछी ए चारे ज्यां भेळां थाय त्यां शुं बाकी रहे ? कंइज नहि.

महाराजा राजसाहेबने आदिनी त्रण चीजो प्राप्त थइ, परन्तु चतुर्थ अविवेकतानो तेओश्रीए अनादर कर्यो, जेथी यौवनादि त्रणे चीजो उचित कार्य करवामां सहायभूत थइ पडी.

तेओ नामदारे पोताना पूर्वजोनी वंशावळी तथा सामान्य हकीकत सन्देशान्तर्गत खेट गामना रहेवासी झालाकुलना वडवा बारोट कालुभाइने वांकानेर बोलावी लखावी आपी ते

उपरांत ध्रांगध्रा, सायडी, लखतर तथा वढवाणना न्हाना न्हाना इतिहासो छपाएला होवाथी मंगावी आप्या अने तेनी साथे आज्ञा करी के उंडा पायावाळी इमारतो अने उंडा मूळवाळां वृक्षो जेम चिरकाळ पर्यन्त अस्तित्व भोगवी शके छे तेम झालाकुळनो इतिहास पण सृष्टिनी शरुआतथी अत्यारसूधी शृंखलाबद्ध लखी तेमां विविध साहित्य मेळवी एक कथाकाव्यनी पेठे सर्वोपयोगी थाय तेम करो.

महाराजा राजसाहेबनी उक्त आज्ञाने मान्य राखी में वि. सं. १९६२ ना पोष शुदि ११ ने पवित्र दिवसे ग्रन्थ लखवानी शरुआत करी अने तेनुं नाम "**श्री झालावंश वारिधि**" राख्युं. प्रसंगोपात मार्कंडेय पुराण, महाभारत, श्रीमद् भागवत्, पातंजलि योगसूत्र, बृहद् वाराहिसंहिता, राजवल्लभ, धनुर्वेदसंहिता, चरकसंहिता, तेमज केटलाएक परचुरण साहित्यग्रन्थोमांथी भिन्न भिन्न विषयोरुपी निर्मळ नीरनो प्रवाह उक्त वारिधिमां वाळ्यो छे.

झालाओ प्रथम मखवान (मखवान) कहेवाता हता, एना आदि पुरुष मार्कंडेय मुनि होवाथी केटलाएक तेओने मुनिवंशीय माने छे; मुनिराज मार्कंडेये अग्निकुंडमांथी कुंडमालने उत्पन्न कर्या होवाथी अग्निना तेजोमय स्वभावने लइ तेने सूर्यवंशी कही शकाय. केटलाएक तेओने चन्द्रवंशना कहे छे. ए वात बीलकुल मान्य राखी शकाय तेवी नथी, केमके वडवा बारोटना चोपडामां पण झालाकुळने सूर्यवंशी लखेल छे.

क्षत्रिओना **सूर्य** अने **चन्द्र** ए बे वंश प्रसिद्ध छे. बुन्दीना स्वर्गस्थ कविराज सूर्यमल्ल पोताना **वंशभास्कर** नामना ग्रन्थमां,

> " **भुजभव, मनुभव, अर्कभव, ससिभव छत्रन बंस;**
> **हे चउतिम सुचिवंसहुव पंचम प्रथित प्रसंस.**
> **छत्रनके छत्तीस सब, इनतें अन्वय जात;**
> **दूजे आश्रममाँहि जिमि, आश्रम इतर समात.** "

भुजभव (भुजथी उत्पन्न थएला), **मनुभव** (मनुथी उत्पन्न थएला), **अर्कभव** (सूर्यथी उत्पन्न थएला), **शशिभव** (चन्द्रथी उत्पन्न थएला), ए रीतना मुख्य चार वंश उपरांत पांचमो **अग्निवंश** बनावी काळक्रमे जेम गृहस्थाश्रममांथी ब्रह्मचर्य आदि बीजा आश्रमो प्रतीत थाय छे, तेम उक्त पांच वंशमांथी क्षत्रीओना एकन्दर छत्रीश वंश थया एम जणावे छे.

महात्मा टॉड साहेब पोताना "**राजस्थान**" नामना इतिहासमां सूर्य अने चन्द्रवंश उपरांत काळक्रमे अग्निवंशथी भारतवर्षना प्राचीन आर्य राजाओनी उत्पत्ति थयानुं स्वीकारीने त्रणे वंशमांथी क्रमे क्रमे न्हानां न्हानां छत्रीश राजकुळ उत्पन्न थयां एम जणावे छे; जेनां नाम नीचे मुजब छे.

१ गिलहोट.
२ यदु.
३ तूयार (तुंवर).
४ राठोड.
५ कुशावह.
६ प्रमार.
७ चहुआण.
८ सोलंकी
९ प्रतिहार.
१० कान्यकुब्ज.
११ सौर.
१२ तक्षक.
१३ जीत (जत).
१४ हुण.
१५ काठी.
१६ वल्ल.
१७ झाला.
१८ जैत्व (जेठवा).
१९ गोहिल.
२० सारव्य, वा सारीयाप्य (सत्रियसार).
२१ सीलरवा–सुलार.
२२ देवी.
२३ गर.
२४ दर, वा देढा.
२५ घरवाल.
२६ वीरगूजर.
२७ सेनगड–सेंगर.
२८ शीकारवल (सीरकरवल).
२९ वाडस–वेस.
३० दाहिया–देहिया.
३१ जैहा–जोहिया.
३२ मोहिल.
३३ निकुंप.
३४ राजपाली–राजपाली.
३५ दाहिर.
३६ दाहिमा.

आ सबंधमां एक पुरातन दोहरो छे.

दश रविके दश चन्द्रके, द्वादश मुनिके जान;
चार अग्नि पहिचानिये, छत्ति बंस बखान.

दश रविना, दश चन्द्रना, बार मुनिना, अने चार अग्निना एम एकन्दर क्षत्रिओना छत्रीश वंश छे.

पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझाए पोताना भारतीय “ ऐतिहासिक ग्रन्थमाला ” नामना ग्रन्थमां प्राचीन आर्य राजाओनी नीचे मुजब जातिओ पुरातन ग्रन्थोमांथी उध्धृत करेली छे.

१ मौर्य (मोरी).
२ ग्रीक (यूनानी).
३ शातकर्णी (आंध्रभृत्य).
४ शक.
५ क्षत्रप.
६ तुरुष्क.
७ अभीर.
८ गुप्त.
९ पल्लव.
१० हूण.
११ यौध्धेय.
१२ वैश.
१३ लिच्छवि.
१४ मौखरी.
१५ मैत्रक.
१६ गुहिल.
१७ सोलंकी.
१८ पडिहार.
१९ परमार.
२० चौहान.
२१ चावडा.
२२ राठोड.
२३ कछवाहा.
२४ तंवर.
२५ कलचुरी (हैहयवंशी).
२६ चंदेल.
२७ यादव.
२८ गुर्जर.
२९ पाल.
३० सेन.

३१ कदंब	३५ नाग.	३९ सिंद.
३२ सिलारा.	३६ निकुंभ.	४० चौल.
३३ सेन्द्रक.	३७ गंगा.	
३४ काकतीया.	३८ वाण.	

कोइएक कवि क्षत्रिओना छत्रीश वंश नीचे प्रमाणे बतावे छे.

छप्पय.

रवि, शशि, जादववंश, ककुत्स्थ, परमारु तोंवर,
चाहुवाण, चालुक्य, छिंद, सिलार आभीवर,
दोयमत्त, मकवान, गरु अ गोहिल गहीसुत,
चापोत्कट, परिहार, रावराठोड रोसजुत,
देवरां, टांक, सिन्धव, अनिग, योतिग प्रतिहार दधिखट,
कारटपाल, कोटपाल, हुन, हरितट, गोरकमाड जट.

दोहा.

ध्यानपालक निकुंभवर, राजपाळ अवनीश;
काळच्छरके आदि दे बरने वंश छतीस.

मरेठाओनी छत्रीश वंशमां कोइए गणना करी नथी, छतां कविराज भुषणे पोताना आश्रयदाताना वंशने छत्रीशमी संख्या आपवा नीचे मुजब कवित्त रचेलुं छे.

रानी रजवारनकी दुकानी लगाइ बैठी,
तहां आय बादशा' लबार देखे लबकी ।
बेटिनके यार अरु यार है लुगाइनके,
राहनके मार दावादार गये दबकी ॥
एसी कीनी बात तोउ कोउने न कीनी घात,
नादानी भई है बंस पईंतीसे अबकी ।
दख्खनके नाथ एसी देख धर्यो मूछें हाथ,
सीवाजी न होत तो सुनत होत सबकी ॥

आ उपरथी राजकुळनी अमुकज संख्या छे एम कही शकातुं नथी. सूर्य अने चन्द्रमांथी एवां अनेक राजकुळो उत्पन्न थयां छे के जेनां नाम पण अत्यारे मळवां मुश्किल छे.

खरी रीते विचारी जोतां भुज (हाथ) थी मनुष्यनी उत्पत्ति संभवेज नहि, तेम मनुवंश पण कल्पित छे, मनु सूर्यनो पुत्र होवाथी तेनो सूर्यवंशमां समावेश थइ जाय छे. अग्निथी पण मनुष्यनी उत्पत्ति मानी शकाय तेम नथी, केमके ए वात मान्य राखतां ब्रह्मानी जे स्वेदज, अंडज, उद्भिज् अने जरायु ए चार प्रकारनी सृष्टि छे तेमां पांचमा प्रकारनी सृष्टि दाखल करवा जतां ब्रह्माना (आदि पुरुषना) सिद्धान्तने दूषित कर्या जेवुं थाय छे. अग्निथी मनुष्य उपजे नहि पण अग्निसंस्कारथी मनुष्यने शुद्धत्व प्राप्त थइ शके छे.

अमारा मत मुजब तो सूर्य अने चन्द्र सिवाय त्रीजो वंश छेज नहि. श्री बालभारतना कर्ता अमरचन्द्र पण आदि पर्वना आदि सर्गमां चन्द्रवंशनी शुश्रुषा करतां लखे छेः—

किरन्सुधां यो वसुधान्तराले, महा महा हन्तितमां तमांसि ।
हुताशतीव्रः किमनेन साम्यं, समं समायातु सहस्त्ररश्मिः ॥

आदिपर्व सर्ग १ श्लो ८

पृथ्वीतल उपर अमृत वर्षीने जे म्होटा तेजवालो अंधकारने हणे छे तेनी साथे अग्नि जेवो तीव्र सूर्य शुं साम्य पामवा योग्य छे ?

आ श्लोक पुरवार करी आपे छे के सूर्य अने चन्द्र बेज वंश छे एथीज अमरचन्द्रे ए बेनांज नाम आप्यां छे. ए बेथी इतर वंश होत तो तेनां नाम आपवा चूकत नहि. आ बन्ने वंशमांथी छत्रीश नहि पण अनंत शाखाओ नीकळेली छे, ए उपर मुजब महात्मा टॉड साहेबे दर्शावेल वंशो तथा तेथी भिन्न श्रीयुत गौरीशंकर ओझाए दर्शावेला प्राचीन वंशो अने कविवर भूषणे मरेठानी पण उत्तम राजकुळमां करेली गणना उपरथी साबीत थाय छे.

आ उपरथी अमे कोइनुं खंडन करवा चाहता नथी, परन्तु " रावणने दश मस्तक अने वीश भुज हता. " आनो खरो अर्थ ए छे के एक माथावाळा अने बे हाथवाळा मनुष्य करतां दशगणुं पराक्रम करनार. " हजार हाथवाळो बाणासुर " एनो पण एज अर्थ छे के बे हाथवाळा मनुष्य करतां पांचसोगणुं पराक्रम करनार.

आ प्रमाणे कविओनी अलंकारिक वाणीनो अर्थ न समजतां चित्रकारोए ए प्रमाणेज चित्रो चित्री कहाड्यां; अने लेखको पण एज राहे दोराया. एज रीते वंशनी बाबतमां पण भुजवंश, मनुवंश, अग्निवंश वगेरे कल्पित छे.

जो हाथथी अने अग्नि आदिथी मनुष्यो उत्पन्न थतां होत तो पछी ईश्वरने स्त्रीपुरुषनुं युग्म करवानी कंइ जरुर न हती.

खरी रीते जोतां परशुराम भगवाने एकवीश वखत पृथ्वी नक्षत्री करी ते वखत घणा क्षत्रिओ प्राण बचाववा ऋषिओना आश्रममां आश्रित बनी छुपाइ रहेला हता, पाछळथी तेना वंशजो ऋषिओनी आज्ञानुसार ब्रह्मकर्मनी साथे क्षात्रधर्मने पाळी यज्ञादिमां विघ्नरूप थता

राक्षसोने हणी भिन्न भिन्न दिशामां पोताना वाहुवळवडे राज्य जमावी रह्या अने जे जे ऋषिओना आश्रयथी तेओ प्राणने वचावी शक्या तेमज जे जे ऋषिओना हाथथी अभिषिक्त थइ राजा तरीके प्रसिद्ध थया ते ते ऋषिओना गोत्रवाळा गणाया, शौर्य अजव वस्तु छे अने एथी सर्व कांइ प्राप्त थइ शके छे.

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः ।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् ॥

शूरविर, कृतविद्य (जेणे विद्याने यथास्थित प्राप्त करी होय ते) अने जेने सेवाधर्म वरावर आवडतो होय एवो सेवक ए त्रणे सुवर्णपुष्पवाळी पृथिवीने शोधे छे. शूरवीरना पक्षमां सुवर्ण—व्राह्मण आदि उत्तम वर्ण, कृतविद्यना पक्षमां सुवर्ण—सारा अक्षर अने सेवकना पक्षमां सुवर्ण—सोनुं समजवुं.

को वीरस्य मनस्विनः स्वविषयः को वा विदेशस्तथा ।
यं देशं श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम् ॥
यद्दंष्ट्रानखलाङ्गुलप्रहरणः सिंहो वनं गाहते ।
तस्मिन्नेव हतद्विपेन्द्ररुधिरैः तृष्णा छिनत्त्यात्मनः ॥

मनस्वी एवा वीरपुरुषने पोतानो अथवा परायो कोइ देश छेज नहि, जे देशनो ए आश्रय करे छे, तेनेज वाहुवळना प्रतापथी पोतानो वनावी ले छे. जेम दाढ, नख अने लांगुल (पुच्छ) रुपी आयुधवाळो सिंह जे वनमां प्रवेश करे छे ते द्विपेन्द्रो (म्होटा हाथीओ) ने हणी तेनां रुधिरथी पोतानी तृष्णाने वुझावे छे.

झालाओना मूळपुरुष मुनिराज मार्कंडेये अग्निकुंडमांथी कुंडमालने उत्पन्न कर्या, ए राजर्षि कुंडमाले व्रह्मधर्मनी साथे क्षात्रधर्मनो अंगीकार करी वद्रिकाश्रममां रहेनारा ऋषिओना यज्ञयागादिमां विघ्नरुप थता राक्षसो साथे प्रचंड युद्ध करी विजय मेळव्यो. उक्त कार्यथी प्रसन्न थएला ऋषिमंडले तेओने " चमत्कारपुर " नी राजगादीपर अभिषिक्त कर्या. त्यां त्रण पेढी पर्यन्त तेमनुं राज्य रह्युं, त्यारवाद राक्षसोना उपद्रवथी अत्यंत कंटाळेला ऋषिओनी आज्ञाथी राजर्षि कुन्ते वद्रिकाश्रमनी निकटमांज " कुन्तलपुर " नामे शहेर वसाव्युं अने त्यां राजर्षि कुन्तना पुत्र धवलकुमारथी आरंभी चाचंगदेव सूधी लांवा काल पर्यन्त मखवान (मकवाणा) नुं राज्य रह्युं, ते पछी चाचंगदेवजीना कुमार सालंगदेवजीए पूर्वमां तुंवर जातिना राजपूतोनुं " सीकरी " नामे शहेर हतुं ते कवजे कर्युं. ए सीकरीमां सारंगदेवजीना कुमार जोमपालथी आरंभी सारंगधर सूधी राज्य रह्युं, त्यारवाद सारंगधरजीना कुमार कृपालदेवजीए सिन्धदेशमां प्रवेश करी " कीर्तिगढ " (केरंटीगढ) मां पोतानी राजधानी जमावी. ए कृपालदेवजीना कुमार सारंगधरथी आरंभी केसरदेवजी सूधी कीर्तिगढमां मकवाणाओनी राजधानी रही, वीर-

वर केसरदेवजी सुमरा हमीर साथेना युद्धमां सप्तकुमार सहित समरशायी थतां तेमना म्होटा कुमार हरपालदेवजी गुजरातमां आव्या अने क्षत्रीने छाजे तेवा उत्तम गुणोथी "पाटडी" नी राजधानी प्राप्त करी.

ए रीते मकवाणाओ प्रथम उत्तरमां, पछी पूर्वमां अने त्यारबाद पश्चिममां सिन्धनी अंदर दाखल थइ गुजरातमां आव्या, अने गुजरातमां पाटडी, शान्तलपुर, मांडलगढ तथा कुवा (कंकावटी) वगेरे स्थळे राज्य भोगवता काठिआवाडनी अंदर शौर्यना प्रशंसनीय प्रभावे स्वतंत्र राजधानी जमावी रह्या.

राज, हरपालदेवजीना वंशजोमांना हाल केटलाएक वांकानेर, ध्रांगध्रा, लींबडी, वढवाण, लखतर, चुडा, सायला वगेरे स्थळे छे, अने केटलाएक राजपुतानामां सादडी, देलवाडा, रायपर, नरवर, गोघुन्दा, कुन्हाडी, कानोड, झालोड तथा झालरापाटण वगेरे स्थळे छे. ए तमाम हकीकत इतिहासमां सविस्तर लखाएली छे.

झालाकुळनी राजधानी प्रथम चमत्कारपुरमां लखेली छे, ए तो केवळ पुराणोक्त वात छे अने कुन्तलपुरनी राजधानी पण मात्र बारोटना चोपडा सिवाय कोइ प्रकारना शिलालेख के कोइ बीजां साधनोथी साबीत थइ शके तेम नथी, तेमज सीकरी संबंधी पण जेवां जोइए तेवां मजबूत प्रमाण मळी आवतां नथी, मात्र सिन्धमां कीर्तिगढ के जे हाल करेन्टीगढ कहेवाय छे तेनां जूनां खंडेरो हजु पण सिन्धना अमुक प्रदेशमां छे एम संभळाय छे.

आगळना राजाओ पोतानी राजधानी बदलाया पछी तेनुं नाम कायम राखवा माटे पोते जे प्रदेशमां वसता त्यां एज नामनुं गाम वसावता हता. दाखला तरीके जेठवा राजपूतोनी मूळ राजधानी काश्मीर—श्रीनगरमां हती. काठिआवाडमां वसता जेठवाओए एज नामनुं गाम (श्रीनगर) घणा वर्षो अगाउ वसावेलुं छे, तेम झाला राजपूतोए पण गुजरातमां आव्या पछी पोतानी मूळ राजधानी कुन्तलपुरनुं नाम कायम राखवा कुन्तलपुर नामनुं गाम के जे हाल कांत्रोडी एवा नामथी ओळखाय छे ते वसावेल छे. सांभळवा प्रमाणे ए गामनी एक जूनी वावमां एक शिलालिपि छे तेमां ए गामनुं नाम कुन्तलपुर लखेल छे. उत्तरमां तो कुन्तलपुर कोण जाणे क्यांए हशे.

झालाकुळनी संवतवार हकीकत तो व्यास मकवाणाना कुमार केसरदेवजीथीज मळे छे, ते पहेलांना संवत बारोटना चोपडामां कपोलकल्पित लखेला जणाय छे.

मकवाणाओ सिन्धमां राज्य करता हता त्यारथी तेना वंश मांहेना राजस्थान साथे निकटना संबंधमां जोडाएला मालुम पडे छे.

बुन्दीना कविराज सूर्यमल्लजी पोताना **वंशभास्कर द्वितीय भाग** पृष्ट १४५९ मां आ प्रमाणे लखे छेः—

वि. सं. ४८१ ना अरसामां अग्निवंशीय भौमचन्द्रना कुमार अस्थिपाले पश्चिमने जीती गुजरातना सोलंकी गोभिलराजनुं मानमर्दन कर्युं, अने त्यां पोतानुं थाणुं स्थापी आगळ वधतां,

अधिपदेश आनर्तके, लरिजिति रुपयलाइ ।
कुमर बढ्यो इम लेतकर, नीरधितट नियराइ ॥
मकुवानपुर मोरवी, पठ्ये जब गोपाल ।
देकर पय लग्गे दरित, कुमरहिं भन्नतकाल ॥
पुब्बहि जनु निजपौत्रहित, परिचारक पठवाइ ।
सुत सुतको सतकार सब, दिन्नौं सविधि सधाइ ॥
कुमरहि झल्ल कुबेरहू, न मिलायउ निजगेह ।
दायज सर्व समेत दिय, निजतनया करि नेह ॥
कन्या भूप कुबेरकी, उमा नाम जस आहि ।
ललित मंकुवानी लई, कुमरानी बिधि ब्याहि ॥
जनक बैरपर जुज्झकी, बेरहु झल्ल कुबेर ।
समय सोधि दिन्नी सुता, सुगुन सुरूप सुबेर ॥

उपरना छए दोहानुं तात्पर्य ए छे के चहुआण कुमार अस्थिपाल आनर्त (ओखामंडल—द्वारका आदि) स्थळे युद्ध करी विजय मेळवी कर लेता लेता अने दरियाकिनारे चालता चालता मोरवी पहोंच्या त्यां मोरवीना मालिक झालाकुबेरे ए गोपालना पौत्रने काळसमान भय गणी भयथी पगे लागी पोताने घेर पधराव्या अने दायजासमेत पोतानी पुत्री उमानां तेनी साथे लग्न कर्यां, जो के पोतानुं वैर वाळवा माटे युद्ध करवानो समय हतो छतां झालाकुबेरनी पुत्रीने विधिवत् परणी अस्थिपाल कच्छ तरफ चाल्या गया. ए उपरथी झालाकुबेरे अथवा ते पहेलाना कोइ पुरुषे चहुआण अस्थिपालना पिताने पराभव पमाड्यो होय एवुं अनुमान थाय छे.

वळी कविराज सूर्यमल्लजीए वंशभास्कर द्वितीय भाग पृष्ट १५६१ मां नीचे मुजब लखेलुं छे.

एसें अनेक विजय करत विक्रमके ससिधर; सिव ११५१ सम्मित संवत्सरके चैत्रके प्रथम पक्षमें चंडासिराज पृथ्वीराज १ छ ६ मास अधिक छत्तीस वर्षके वयमें कान्यकुब्ज जाइ चउसट्ठि ६४ सामंतनकों वीर तल्प पौढाइ राष्ट्रकूट राज जयचन्द्रकी सुता संयोगिता आनी.

ताही तुमुलमें सहोदर हम्मीर १७।११ गंभीर १७।१२ के ही

गजनकों गिराइ कासीके नरेंद्रसे अनेक अरातिनकी वनितानकों वैधव्य देकें भद्रकालिकाकों छपाइ द्वै २ ही कुमार वीर तल्प सोये महामानीं सो जानी मंकुवानी नवश्री १७१।१ दहिमी जसोदा १७१।२ द्वै २ ही स्वस्व स्वामीके साथ गई वगेरे.

आमां मंडनगढना हाडा आनंदराजना कुमार हम्मीर साथे मकवाणी नवश्रीनां लग्न थयां हतां अने ते हम्मीरकुमार चहुआण पृथीराजना पक्षमां रही कनोजना राजा जयचन्द्र साथे लडतां काम आव्या, तेनी साथे मकवाणी नवश्री सती थयां ए स्पष्ट छे.

उक्त युद्धमां पृथीराज विजय मेळवी संयुक्ताने उठावी गयो हतो एवीज रीते बीजो उल्लेख पण छे. जुओ वंशभास्कर द्वितीय भाग पृष्ट १५३५.

अरु इतकों चंडासिराज रामदास १६४ सौराष्ट्र कूटीरानी प्रेमवती १६४।१ में राजकुमार रामचन्द्र १६५ नैं जन्म लहि सर्व विद्याको संग्रह करि देवपुरके अधीश मंकुवान मल्लिनाथकी कन्या कोकिला १६५।१ विवाहि पिताके अनन्तर पट्ट पायो ॥

आमां चहुआण रामचन्द्र देवपुरना अधीश मकवाणा मल्लिनाथनी कन्या कोकिलाने परण्या हता ए स्पष्ट छे.

विक्रमना तेरमा शतकमां मकवाणा सारंगदेव अने सिंहदेव नामना वीरपुरुषोए गुजरातना सोलंकी राजा भोळाराय भीमनी उत्तम प्रकारे सेवा बजावी अवनिमां अमर नाम राखेलुं छे ए नीचेना लेखथी मालुम पडे छे.

"चालुक्यराज भीम अर्बुदरा दुर्गमें मास १ दिन पंचक ५ बिताय आपरा विस्वासरा वीरानूं जन्मभूमि घरे राखणरी संधा भळाय अणहिलपुर आयो। अर चंडासिकुमाररे साथ इच्छणीशे सबंध कर्णगोचर पडतां ही प्रामारां १ चहुवाणा २ रे साथे अधम विरोध वधावणरे काज मंकुवाण राजसारंगदेवनूं बुलाय गज्नवी जावणरो निदेस लगायो.

वंशभास्कर द्वितीय भाग पृष्ट १३६३

सोलंकी राज भीमनी आज्ञा मुजब मकवाणा सारंगदेव गजनवी गया अने तेणे आपेलो पत्र तथा भेट वगेरे बादशाहने आपी प्रत्युत्तर माटे रोकाया, ते वखते बादशाह शाहबुदीनगोरीना

स्वार्थपरायण विचारो सांभळी मकवाणा सारंगदेवे शाहनो जातिस्वभाव तथा पोतानो (राजपूतोनो) उत्कर्ष जणाववा मांड्यो.

या कहताँही पातसाहरी सैन सूंवजाररो तीर मकुवाणरी छातीरे पार फूटो।
सो लोह लागताँही सारंगदेवरा हायरो चन्दहासरो प्रहार छूटो ॥
तिणसूँ गजनवीरा हुजावहैं जमरो मस्तक चक्र होय पडियो ॥

इण रीतिकेही जवनारा प्राण देहरूपकारा सदनरा वंदीवान सहाबुद्दीनरी सभामें सारंगदेव टूकटूक होय झडियो.

वंशभास्कर द्वितीय भाग पृष्ट १३६५

मकवाणा सारंगदेवे शाहनो जातिस्वभाव वोलवानी शरुआत करी त्यांज शहाबुद्दीनना इसाराथी वजीरनुं तीर तेनी छातीमां आरपार चाल्युं गयुं. ए तीर लागतांज सारंगदेवना हाथथी तलवारनो प्रहार छूट्यो अने ए प्रहारे शाहना वजीर हुजावहैजमनुं मस्तक चाकना पिंडानी माफक उडावी अनेक यवनोनां प्राण के जे देहरुपी कारागारना वंधीवान हतां तेने छोडाव्यां. ए रीते मकवाणा सारंगदेव शहाबुद्दीननी सभामां टूकडे टूकडा थया त्यांसुधी लड्या.

एज अरसामां झाला सिंहदेव सवंधी **वंशभास्कर द्वितीय भाग पृष्ट १३६९** मां नीचे मुजब छप्पय छे.

जिण झाले वळजोर, जंग आहणि जाडेचाँ,
पुहुवि कच्छ १ पंचाळ २ गंजिलीधी पटु पेचाँ;
अधिप भीमरे अग्ग, विजय कीधा कइवाराँ,
भड सात्रव घण भेटि, किया धडपार कटाराँ.
उण सिंहदेव रण अग्रणी, ले वळ साथ चउत्थलव;
गरदाय सिविर दीधो गरट, जामिक पण लीधो सजव.

जे झालाए वळजोरथी जाडेजाओ साथे जंग करी दावपेचथी कच्छ अने पंचाळनी पृथ्वी कवजे करी अने पोताना अधिपति सोलंकी भीम आगळ रही अनेक वखत विजय मेळव्यो तथा भडपणे घणा शत्रुओ साथे भेटी कटारथी धडने जुदां कर्यां. ए रणमां अग्रणी रहेनार (सेनापति) सिंहदेव ६०००० ना सैन्य साथे भोळाराय भीमना डेरानी आजुबाजु रात्रीने वखते पहेरो भरता हता अने युद्ध वखते पण तेओए घा पोताना अंगपर झीलया हता.

आज समयमां भोळाभीमना काका सारंगदेवना पुत्रोए राणंगझालाने मारी भीम साथे

वैर वधारी तेना डरथी दिल्हीमां जइ पृथुराजने आश्रये रह्या हता अने अंते तेओ सर्वनो पृथुराजना काका कन्ह चौहाणना हाथथी नाश थयो.

साक्षर पंडित बलदेवप्रसादमिश्रकृत राजस्थान इतिहास हिन्दी अनुवाद वोल्युम १ अध्याय ४ थो पृष्ट १२५ मां लख्युं छे के ज्यारे चितोडाधीश खुमानसिंहजीने खुरासानना अधिपति मामुद (महमद) साथे आर्यधर्मना संरक्षण अर्थे युद्धमां उतरवुं पड्युं हतुं त्यारे तेमनी मददे भिन्न भिन्न हिन्दु राजाओ गया हता, तेमां पाटडीथी झाला पण उक्त रणसंग्राममां हाजर हता एम लखेल छे. चितोडाधीश खुमानसिंहजीनो राज्यकाल वि. सं. ८६८ थी ८९२ सुधीनो "टॉडराजस्थान" वगेरे ग्रन्थोथी प्रतीत थाय छे. महात्मा टॉडसाहेबे ए वात "खुमानरासा" उपरथी लीधी होय एम जणाय छे.

झाला अवटंक अने पाटडीमां राज्यनी स्थापनाना सबंधमां बारोटना चोपडा तेमज रासमाळा वगेरेमां तो करणवाघेलानो समय स्पष्ट बताव्यो छे, पण तपास करतां करणवाघेलानो समय वि. सं. १३५२ छे अने हरपालदेवजीनो समय वि. सं. ११५६ छे. आ रीते मुकाबलो करतां लगभग बे सैकानुं अन्तर जणाय छे. वळी हिन्दराजस्थानमां करणसोलंकीना समयमां हरपालदेवजीनुं अस्तित्व जणावे छे. विचारी जोतां हरपालदेवजी अने करणसोलंकी एक सैकामां थएला छे पण कोइ इतिहासमां आनो उल्लेख मळी आवतो नथी. जैनमतना पंडितोए सोलंकी कुळनी झीणी झीणी बाबतोनो पण प्रबंधचिन्तामणि वगेरे ग्रन्थोमां समावेश कर्यो छे, छतां हरपालदेवजी अने शक्ति सबंधीनी महत्वनी बाबत केम भूली जाय ए पण शंका छे.

महाराणा खुमानना समयमां चितोडना जंग वखते पाटडीथी झालाओ आव्या आ उल्लेख झालाओनुं तथा पाटडीनुं प्राचीनपणुं बतावे छे, अने आगळ कहेल वंशभास्करमां कुबेरझालानुं अस्तित्व पण घणाज लांबा काळने सूचवे छे. हवे आमां खरुं शुं हशे तेनो कांइ निर्णय थइ शकतो नथी एथी ए काम मुज्ञ इतिहासवेत्ताओना अखत्यारमांज सोंपुं छुं.

अमने तमाम इतिहासवेत्ताओना मत करतां महान् इतिहासवेत्ता श्रीयुत गौरीशंकर हीराचंद ओझानो मत श्रेष्ट जणाय छे. एमनो लेख वांचतां एमणे इतिहास संबंधी घणीज उंडी अने विस्तृत शोध करी होय एम मालुम पडे छे.

तेओ सोलंकीना प्राचिन इतिहासमां सिद्ध करी आपे छे के सोलंकीओ चन्द्रवंशीज छे अने एना प्रमाणमां तेओ लखे छे के पश्चिमी सोलंकी राजा विक्रमादित्य छट्टाना समयना (वि. सं. ११३३ अने ११८३ नी मध्यना) शिलालेखमां लख्युं छे के चालुक्य (सोलंकी) वंश भगवान ब्रह्माना पुत्र अत्रिना नयनथी उत्पन्न थएल चन्द्रना वंशमां अन्तर्गत छे. आ शिलालेख मुंबइ इलाकाना धारवाड जील्लाना गडग गाममां वीरनारायणना मंदीरमां लागेलो छे.

आ उपरथी सिद्ध थाय छे के हाल अग्निवंशना नामथी दुनियामां प्रसिद्ध थया छे ए क्षत्रियो पण सूर्यवंशी अने चन्द्रवंशीज छे. लांबा काळना आवरणने लइ क्षत्रिओ पोतेज

पोताना वंशने भूली गया छे अने वडवा वारोटोए कल्पी काढेली कथाओने वेद–वाक्य समजी बेठा छे.

आ ग्रन्थना न्हाना म्होटा तरंगो वाचकवृन्दने आनंदनी छोळ्योथी रसबोळ बनावशे तो हुं मारा श्रमने कंइ अंशे सफळ थयो समजीश. इतिहास द्रष्टिथी जोनारने आ ग्रन्थ रुचिकर थाय के नही ए बाबत हुं कंइ कही शकतो नथी, पण विविध विषयोना अभिलाषीओमां आ पुस्तक आदरणीय थशे एम हुं मानुं छुं.

आ ग्रन्थ लखवानी शरुआतथी समाप्ति पर्यन्त म्हारा शिष्य जामनगरनिवासी बारोट केशवलाल श्यामजीए शरीरसंपत्तिनी लेशपण दरकार राख्या विना मने पूरती सहायता आपेली छे. प्राणी मात्रने दरेक कार्यमां सहायकनी आवश्यक्ता होय छे जेमः—

असहायः समर्थोऽपि, तेजस्वी किं करिष्यति;
निर्वाते ज्वलितोऽप्यग्निः स्वयमेव प्रशाम्यति.

निर्वात (वायु विनाना) प्रदेशमां प्रज्वलित थएलो अग्नि तेजस्वी अने समर्थ छतां पण वायुनी सहायता विना पोतानी मेळेज शान्त थइ जाय छे.

तेम मने पण म्हारा शिष्य केशव जेवा साक्षर लेखकनी सहायता न मळी होत तो झालावंशवारिधि जेवो महान ग्रन्थ हुं क्यारे अने केटला समयमां तैयार करी शकत ते कही शकतो नथी. जो के हुं तेमना कुटुंबना निर्वाह अर्थे योग्य पगार आपतो हतो तेम महाराजा राजसाहेब तरफथी पण ग्रन्थनी समाप्ति समये तेनी योग्य कदर बूझवामां आवी हती, तो पण तेना श्रम तरफ जोतां तेनो पूरेपूरो बदलो हुं आपी शक्यो छुं एम तो नहीज कही शकाय. छेवटे हुं तेने अखूट आशीर्वादरूपी धन आपुं छुं के जे भोगववा परमकृपाळु परमात्मा तेने आरोग्यतापूर्वक दीर्घायुष्य अर्पे.

आ पुस्तकमां पुरातनी डींगली भाषानां गीतो मने जेवी स्थितिमां प्राप्त थयां छे तेवांज दाखल कर्यां छे, मने ए भाषानुं पुरुं ज्ञान नहि होवाथी ते अशुद्ध होय तो सुज्ञ वांचकवृन्द क्षमा आपशे.

शुभंभवतु

राजकवि नथुराम सुंदरजी शुक्ल.

ग्रन्थ कर्ता.

राजकवि नथुराम सुंदरजी तथा तेमना पुत्र उत्तमराम

D A P WORKS, RAJKOT.

उपोद्घात.

म्हारा गुरुवर्य राजकवि नथुराम सुंदरजी तरफथी वहार पडेल " श्री झालावंशवारिधि " खरेखर वारिधि (समुद्र) समानज छे; कारणके वारिधि जेम रत्नाकर कहेवाय छे, तेम आमां पण अनेक रत्न जेवा राजेन्द्रोनां चरित्र द्रष्टिगोचर थाय छे. समुद्र जेम अथाह होय छे तेम आ ग्रन्थनो थाह पण वाचक एकदम लइ शके तेम नथी. सागर जेम गंभीर होय छे तेम आमां पण अनेकानेक गहन विषयोनो समावेश करवामां आव्यो छे. नीरनिधि जेम लोहकाष्टनिर्मित नावोने पार उतारे छे तेम आ ग्रन्थ पण मानवदेहने निर्मळ नीर जेवा सदुपदेशनी सपाटीपर चलावी त्वरा वगर तारे छे. जेम वादळांओ सागरनुं जळ लइ सूर्यना किरणो द्वारा सागरनुं जळ मेळवी वृष्टिरुपे अवनिपर उपकार करे छे, तेम आ ग्रन्थना उत्तम वचनामृतने सद्गुरु द्वारा यथास्थित अंतरमां उतारी लेख अथवा विवेचनरुपे सामान्य संस्कारीजनो पण लोकोपकार करी शकवा समर्थ वनी शके एमां जरापण संदेह जेवुं नथी; सागर जेम पोताना विशाल हृदयमां रहेला न्हाना म्होटा जन्तुओनुं पोषण करनार छे तेम आ ग्रन्थ पण पोतामां रहेला न्हाना म्होटा वाक्योने सजीव (चैतन्यमय) वताववा सर्वथा शक्तिमान् छे. केवळ वारिधि करतां श्री झालावंशवारिधिमां विशेषता मात्र एटलीज छे,के ज्यारे तेमां शंखशंखलां अने कोडी वगेरे निर्माल्य वस्तुओ छे त्यारे आमां मौक्तिक जेवा वीरनरोनां चरित्रोज विराजमान छे, ज्यारे समुद्रनुं जळ खारुं छे, त्यारे आ ग्रन्थमांनां दरेक वचनो माधुर्यथी भरेलां छे; सागरमां ज्यारे भरतीओट थाय छे, अर्थात् कायमने माटे एकसरखी स्थिति रहेती नथी, त्यारे आ ग्रन्थ पोतानी स्थिति एकसरखी राखी शकवा हिम्मत धरावे छे. वारिनिधि जेम दैवी अने संस्कारी व्यक्ति छे, तेम आ ग्रन्थनुं स्थूल पण संस्कृत अने दैवी विषयोथीज वंधाएलुं छे. सागरमां जेम अनेक सरिताओ आवीने समाय छे तेम आ ग्रन्थमां पण वेगवती विविध कथाओ दाखल थएली देखाय छे; सागरमां जेम तरंगो होय छे तेम आमां पण तरंगोनी रचना करवामां आवी छे. ज्यारे वारिधि विधातानी आद्यसृष्टि छे त्यारे श्री झालावंशवारिधि कविराजनी माध्यमिकसृष्टि लेखी शकाय छे, कारणके तेओश्रीनी आद्यसृष्टिमां कुमुदचन्द्र, कामलतास्वयंवर, हलामण जेठवो, हरिश्चन्द्र, राजयोगी, सतीसरोजीनी, लालखां, माधवकामकन्दला, गुमानसिंह, भक्तकुटुम्व, अने कवीरविजय, वगेरे द्रश्य काव्यो (नाटको) उपरांत तत्त्वयशत्रिवेणीका, भावआशीर्वचन काव्य, अमरकाव्यकलाप, भावसुयशवाटिका, आदि राजप्रशस्तिनां; अने श्रंगारसरोज, प्रतापप्रतिज्ञा तथा श्रीकृष्ण वाललीला संग्रह वगेरे साहित्यना ग्रन्थोनी गणना करी सौभाग्यसुंदरी, तुकाराम, नटीनटवर, मीरांभक्तिविजय,

नागरभक्त, बिल्वमंगळ उर्फे सुरदास, शहेनशाह अकब्बर, योगकन्या, पितृभक्त प्रभाकर अने महान कवि जयदेव वगेरे द्रष्योने; तेमज रणजीत राज्याभिषेक, मनहर लग्नमहोत्सव काव्य, तथा तख्तकुंवरी विवाहवर्णन काव्य, वगेरे राजप्रशस्तिना ग्रन्थोने, नाट्यशास्त्र, विवेकविजय, काव्यसंग्रह, संगीतशास्त्र अने काव्यशास्त्र नामक साहित्यग्रन्थोने माध्यमिकसृष्टि मानवा मनावबानुं सर्व रीते योग्य लागे छे, कारणके म्हारा गुरुवर्यनुं वय पचाश उपर चार पांच वर्षनुं छे, तो पण तेओनी शारीरिकसंपत्ति अने मगजशक्तिमां जरापण वृद्धत्व जणातुं नथी जेथी हजुपण तेओ वाकीनी अवस्थामां साहित्यनी तृतीयसृष्टिने जन्म आप्या वगर रहेशे नहि; कारणके तेओनी वाणी अने विचारोना वेगमां यौवन स्थिर थइ रहेलुं छे, शृंगारनां काव्योथीज तेओ प्रसिद्धिमां आव्या छे अने हजुपण तेवां काव्यो लखवा तेओ अद्भुत सामर्थ्य धरावे छे, छतां आहारविहार आदि व्यवहारमां अत्यंत नियमित छे, ए हुं मारा खास पंदर वर्षना सहवासथी मुक्तकंठे कही शकुं तेम छे. आद्यअवस्था (पहेली वीशी) मां महुकोइ शृंगार लखे, वांचे अने अनुभवे; परन्तु म्हारा गुरुश्रीए तो उक्त अवस्थामां पण केटलांक नीतिनां काव्यो लखेलां छे, बीजी अवस्थामां सहज नीति, भक्ति, अने वैराग्यनेज वळगी रहेला छे ते मुज्ञ वाचको तेमनां विवेकविजय अने काव्यसंग्रह आदि ग्रन्थो उपरथीज सिद्ध करी शके तेम छे. कहेवत छे के " जेवुं हैये तेवुं होठे " पलांडु जम्या होइए तो ओडकारमां कस्तूरीनो गंध न आवे अने कस्तूरी जम्या होइए तो ओडकारमां पलान्डुना गन्धनी प्रतीति न थाय, टुंकामां मनुष्योना विचारोज तेमना हृदयनो पूरावो आपवा पूरता छे.

म्हारे कविराज साथे गुरुशिष्यनो संबंध होवाथी हुं तेमनी प्रशंसा करुं अने ते मने अभिनन्दन आपे ए कांइ विशेष महत्तासूचक नथी. परन्तु सारा सारा साहित्यप्रेमी विद्वज्जनोए पण तेमनी जातने माटे तेमज तेमनां पुस्तकोने माटे अनेक उत्तम लेखो तथा काव्यो लखी मोकल्यां छे, तेमांना थोडाएक काव्यो आ जगोए वाचकवृन्द समक्ष रजु करीश तो अस्थाने नही गणाय.

सुप्रसिद्ध काशीनिवासी विद्वद्वर्य रामभद्रशास्त्रीजी लखे छे.

दोहा.

अथ रवि चन्द्र गणेश शिव, चतुराननको धाम,
जबलग तबलग अमरहे जिओ सुनाथूराम ॥
"ना" नारायण "थू" घृणा, "राम" राधिका ईश;
मनों चतुर ये चतुर लखि, धर्यो नाम जगदीश ॥

श्लोक—अनुष्टुप.

सिद्धिं गणपतिर्दद्याद्वाक्चातुर्यं च भारती ।
सनायुर्ग्लौर्द्विजाधीशः सूरः शौर्यं स्वतेजसा ॥

कवित्त.

भूपनमें भूप कवि कुशल सुकोविद है,
कला नाटकादिसों कलित कमनीय है ।
गीतिहूकी रीतिमंजु मंजुल सुपुञ्ज लखि,
नरप अनेक सुकहत पूजनीय है ॥
रामभद्र सुकवि बखाने कछुयामें नांहि,
काची जोपैं मानो पूछो मोहि कथनीय है ॥
गुणिगण आगर सुसागर समान मति,
बंकपूर एसो नाथूराम रमणीय है ॥

नाम अभिराम मुदधाम शुचिबाम लहि,
काम सुललाम आठोजाम सु करतु है ॥
गुणिजन रंजन सुभंजन अपार भीति,
रीति कमनीय उर बीच सु धरतु है ॥
सत्यमें सुधर्म कर्म आपने करत नित,
चितमें हुलास प्रतिदिनहि भरतु है ॥
आली रघुवीर ? नाहीं धीर द्विज नाथूराम,
रामभद्र एसो गुनग्रामन झरतु है ॥

जाकी धूमधाम धरामंडलमें राजत है,
जुगनू कविन शिर सूरज अपार है ॥
पार है न गुनको गुनिनकों सुमान देत,
लेत शुचि आशिष सुरसिक अधार है ॥
धार धर्म धुर है अगार है सुशीलताको,
अलि ज्यों प्रसूनको त्यों गहे सब सार है ॥
सार है न जगमें विवेकी एसो रामभद्र,
आली राम ? नांही—नाथूराम अत्युदार है ॥

अति ही प्रकाशी सावकाशी शुभ कामनमें,
दीन दुःखनाशी मंजुभासी सुविलासी है ॥
होत ना उदासी जहां जात सुखराशी वह,
शंकर उपासी क्षमाजामें सु धरासी है ॥
मंजुल सुहासी जामें क्रूरता जरासी नांहि,
कीरत दिगन्त जाकी घूमति हवासी हैं ॥
रामभद्र कवितायों खडी नाथूराम आगें,
जैसे भुजंगमके सुवाऽमुखी दासी है ॥

अंग अंग भूखनन भूषितसु अंग अंग,
जरीदार चैलनसु अधिक सुहात है ॥
मंडली ज्यों भूपनकी त्योंही तनतेरी शुभ,
विद्याधन तोहि तिन्हे रजत सुजात है ॥
भूमिपन गावत सुदानसे अनेक जन,
रामभद्र तेरो छन्द देशमें गवात है ॥
समता तु लखि भूपतिन बीच नाथूराम,
कोनतें धराप कोन मोहि न लखात है ॥

कैधों चन्द्रमंडल अखंडल है कैधों यह,
कैधों ये अलीक वालमीक चलि आयो है ॥
कैधों व्यास खास कैधों वरुन कुवेर कैधों,
कैधों धराधीश कैधों ईश धीर धायो है ॥
कैधों पदमासनको शासन सुशीश धरि,
देवनको शासन सुआसन उठायो है ॥
रामभद्र सुकवि भनत द्विज नाथूराम,
उनहूको अंश लेकें ब्रह्मजू वनायो है ॥

जोलों मारतंड सुप्रकाशे भुविमंडलमें,
जोलों सु अखंडल सुरन बिच गाजते ॥
जोलों गणाधीश धराधारक धरेश जोलों,
जोलों दिगपाल दसों दिस बिच राजते ॥
जोलों है मृर्कंडसुत जोलों वारि वारिधिमें,
जोलों ब्रह्मसुत ब्रह्मचारी पद साजते ॥
भनत सुकवि रामभद्र तोलों नाथूराम,
जीवहु अमर सकुटुम्ब ससमाजतें ॥

प्रथम सो तेज शुभ आनन द्वितीय सम,
बलमें तृतीय एसो चतुर सुजान है ॥
तुर्य बुद्धिसागर सुपंचम सो ज्ञानवान,
षष्ठ जिमि मंत्र तंत्र जानत प्रमान है ॥
सप्त अष्ट नव सब रिपुनके मंडलमें,
दुष्टनको एकादश जानत जहान है ॥
रामभद्र भनत सुकवि नाथूराम इमि,
अजर अमर जीवो नांहि कछु आन है ॥

शिखरिणीवृत्तम.

अयन्नाथूरामाभिध कलितकामः शुभधिया,
वरिवर्त्तुस्फीतः सुचिरमभिगीतः कविवरैः
इदानीं जातानां कविवरवदातः सुयशसा,
द्विजानां संघाता निजकुल विधाता किलकृती.

दोहा.

संवन उन इस पचवनो, सित फाल्गुन गुरु ईस;
विरुदाष्टक नथुरामको, पूरि सु देहुं अशीश.

महाशय रामभद्रशास्त्री संस्कृत भाषाना उत्तम विद्वान साथे व्रजभाषाना कवि पण छे, तेओ वि. सं. १९५५ मां जुनागढ शाहजादाश्री शेरजुमाखानजी बहादुरनी शादीना शुभ प्रसंग

उपर काठिआवाडमां पधारेला, मारा गुरुवर्य कवीश्वर नथुराम सुन्दरजी पण ए समये जुनागढ राज्यना निमंत्रणने मान आपी त्यां कविओनी परीक्षकमंडलीमां निमाएला हता, तेओनी "विद्यावर्धक" नामनी नाटकमंडलीने पण उक्त लग्नना महोत्सव प्रसंगे नामदार नवाबसाहेबे जुनागढ बोलावेली हती, कविराजनो स्वभाव मूळथीज उदार होवाथी तेओ सहुकोइना भलामां भाग लेता अने हजुपण तेवीज वृत्तिथी परोपकार करवामां पछात रहेता नथी. जुनागढमां देशी विदेशी अनेक विद्वानोनो तेओने समागम थयो हतो, अने तेमांना घणाओए तेमना उत्तम स्वभावनी तारीफ करेली हती, परन्तु अति विस्तारना भयथी मात्र रामभद्रशास्त्रीनी कविताज आ स्थळे वाचक समक्ष रजु करेल छे.

शास्त्रीजीए प्रनमना दोहामां आशीर्वचन आपी, बीजा दोहामां नामनी सार्थकता बतावी छे, त्रीजा श्लोकमां फरी आशीर्वचन आपी कवित्तमां अष्टक बनाव्युं छे; प्रथम कवित्तनी अंदर राजमान्यता, नाटक आदि कलानी सुन्दरता, मनोहर गायन बनाववानी पद्धति अने वांकानेरमां निवास वगेरे गुणसमुदायनी प्रशंसा करेली छे. बीजा कवित्तमां मनोहर नामवाळा, आनंदमय, पवित्र आठे प्रहर उत्तम काम करवामां प्रीतिवाळा, गुणीजनोने राजी करनार, भयने हरनार, सारी रीते सत्यपरायण तेमज स्वधर्म कर्मनुं आचरण करनारा आते राम छे? के कवीश्वर नथुराम छे? एम कोइ मित्रनुं मित्र प्रत्ये कथन छे, अलंकार छेकापन्हुति, त्रीजा कवित्तमां पण शास्त्रीजीए एज अलंकार कायम राखी कविराजने रामचन्द्रना गुणोथी सरखाव्या छे; चोथा कवित्तमां अत्यंत तेजस्वी, शुभ काममां अवकाशवाळा, दीनजनोनां दुःखने दूर करनारा, उत्तम विलासना भोक्ता, उदासीने अलग करनारा, परम सुखी, शंकरना उपासक, धरा जेवी क्षमाने धरनारा, मनोहर हास्य करनारा, क्रूरताथी विरक्त अने कविता जेमना पासे दासीनी माफक वशवर्तिनी छे वगेरे गुणानुवाद करेल छे. पांचमा कवित्तमां कविराजनी राजा साथे समता बतावी छे, राजा पासे जेम सोनुं रुपुं होय छे तेम कवीश्वर पासे विद्यारुपी अखूट धन दर्शाव्युं छे, जेम दानने लीधे अनेक लोको राजाओना गुण गाय छे तेम कविराजना छन्द पण मानपूर्वक सर्व देशमां गवाय छे; राजा पासे जेम नोकरोनो समुदाय तेम कविराज पासे पण गुणी—मित्रजनोनो समुदाय हाजरज होय छे, वगेरे बाबत शास्त्रीजीए स्वानुभवथी वर्णवेली छे. छठ्ठा कवित्तमां कविराज निःशंक दैवीअंश छे एम बताववा शास्त्रीजीए वाल्मीकि, व्यास आदि दैवी प्राणीओनी गणना करी बतावी छे, सातमा तथा आठमा कवित्तमां आशीर्वचन छे अने त्यारपछीना श्लोकमां जेना कुळनी अंदर कवीश्वर जेवो विधाता छे ते ब्रह्मसमाज खरेखर कृतकृत्य छे एम जाहेर करी छेल्ला दोहामां शास्त्रीए काव्यरचनानो समय बतावी आशीर्वादनी वृष्टि करी छे.

२. व्रजभाषानी अत्यंत सरल, कोमळ, रसवाळी अने अलंकारयुक्त कविता बनाववामां कविराजनी बरोबरी करवा कोइ काठिआवाडी कवि समर्थ नथी एम बताववा मोरबीनिवासी महामहोपाध्याय शास्त्रीजी शंकरलाल माहेश्वर भट्ट निम्नलिखित श्लोक बनावी मोकल्यो छे.

व्रजवासिगिराप्रबन्धबन्धे, नथुरामो नथुराम सन्निभोऽयम् ।
सरसा सरला च कोमलाऽलंकृतिसारा कवि नामकंव्यनक्ति ॥

३. काशीनिवासी पंडितवर्य श्रीकृष्णशास्त्रीजी के जेओ श्रीमद्वल्लभकुलावतंस श्रीदेवकीनन्दनाचार्यजी महाराज साथे रहेता हता तेओ एकवखत वांकानेरमां कविराजनुं मिलन थतां निम्नलिखित श्लोक वनावी गया छे.

श्रीनत्थुराम कविना कविनायकेन, जातेऽद्य मे सुकृतकर्मवशात्सुसंगः ।
एनं विवर्धय सदागमदृष्टिपूर्ण, मित्रागमेन सहितं सहितं विभो त्वम् ॥

श्रीकृष्णशास्त्री जेवा समर्थ विद्वान पण कविराजनो समागम थतां पोताना सुकृतकर्मनी प्रवलता अर्थात् सद्भाग्य समजे छे अने उत्तम प्रकारे आशीर्वचन आपे छे; कविराजे प्रयाण समये तेओश्रीने पुष्पमाला अर्पण करी ते वखते शास्त्रीजी नीचे मुजव वोल्या हता.

माला पुष्पवती गुणेन सहिता, प्राप्ता मयेऽयं शुभा,
सत्काव्यज्ञ कला कलापकुशलाच्छ्रीनत्थुरामाभिधात् ॥
शुक्ले शुक्रदिने सुहास्य नविन प्रज्ञा प्रतिष्ठायुतात्,
श्रीकृष्णेन सदागमेन सहिता सर्वस्य सौख्याय या.

आमां पण सत्काव्यज्ञ अने कलाकलापकुशल आदि दरेक विशेषणो शास्त्रीजीए कविराजने भलुं मनाववा नहि परन्तु तेओना गुणोत्कर्षने अनुमोदन आपवा अन्तरना साचा उर्मिओ जाहेर कर्या छे.

४ अनंत नामना कविवर कविराजनी कवित्वशक्ति विषे नीचे मुजव लखे छे.

कवित्त.

पूर्वजनमांतरके पूरन परिश्रमसों,
पाई इष्ट कृपातें अग्यानतम भानिजो ।
कुंभज ओ वालमिक त्योंजु वेदव्यास भास,
वेस कवि वाण कालिदास ध्यान आनिजो ॥
सुन्दरजी नन्द सुखकन्द नथुराम धन्य,
कहत अनंत या मरालपत्र मानिजो ।
सोही आज तेरे सुखधाममें निवासकर,
करत कलोल ये अमोघ वाक वानिजो ॥

दोहा.

सुरसरि ज्युं सरितानमें, सुरमें ज्युं सुरश्याम,
त्यों अनंत कविराजमें, राजे कवि नथुराम ॥

५ भूप नामना कविराज कवीश्वरना विविध गुणोनुं नीचे मुजब दिग्दर्शन करावे छे.

कवित्त.

साहित सँगीतमें प्रवीन नर देवबानी,
मित्रगन मंडन उदार अति मनको ।
महिपन पासनमें बंधी बरषासन है,
सत्य मुख भाषनमें पाले बिप्रपनकों ॥
कवि भूप कहे जस जाहिर जगति जाको,
साधत हमेश उठि षट करमनकों ।
वंकपुर धाम गुनग्राम सुत सुंदरको,
कवि नथुराम है अराम गुनीजनको ॥

६ विजापुरनिवासी कविवर वृजलालजी पण कविराजना समागमथी संतुष्ट थइ नीचे मुजब उद्गार काढे छे.

कवित्त.

अविके प्रताप जस फवि रह्यो अविदिस,
पविधरकोसो आज कवि नथुरामको ।
लाजको जहाज शिरताज कविराजनको,
राजे कविराज आज भावनग्र श्यामको ॥
दामगुनरासी वांकानेरको निवासी सोई,
सतत हुलासी है करैया शुभ कामको ।
कहे वृजलाल वंस शुक्कको है हंस सम,
करूं का प्रशंस मानुं अंश देवधामको ॥

७ कविश्रेष्ट माधव विजापुरवाळा कविश्वरना बुद्धिबळ विषे नीचे मुजब विचार दर्शावे छे.

कवित्त.

साजीकें नवीन कविताईके निबंध केक,
राजी किये मित्र अरु पाजी दिये पटकी ।
माधव भनंत बलबुद्धिको प्रभाव जाको,
खलके हृदय निसि द्योस रह्यो खटकी ॥
सुजनको रंजक है सुंदर सपूत आज,
इनकी छबीसों उर मेरे रही अटकी ।
कवि नथ्थुराम जो न हो तो कलिकालमें तो,
चाल चुकी जाते महिपाल क्षात्रवटकी ॥

८ श्रीयुत गुंसाइजीदादा आदित्यगिरिजी महाराज के जेओ प्रतापगढ देवलीआना महाराजासाहेबना अत्यंत मानीता छे अने आर्यकुलकमलदिवाकर उदयपुरना श्रीमान महाराणा श्रीफतेहसिंहजी बहादुरना परिचयमां हरवखत आवनार छे, तेओ कविश्वरनी उदारता तथा रसज्ञता सबंधे नीचे मुजब जणावे छेः—

कवित.

ग्राम भावनग्रके सुराज कवि नत्थूराम,
काम रंगरीतके तमाम सुख बेते हो ।
गृ'स्थ कलिकालके समस्त महिपालनकी,
मस्तता मिटायबेमें शिक्षक सचेते हो ॥
दधिचसे बंदनीय बंस अउदीच बीच,
आज उपकारकों अधार पद देते हो ।
विद्या अरविन्दको सुफूलिबो सफल आप,
बनिकें मिलिन्द मकरन्दरस लेते हो ॥

९ जोधपुर निवासी संतशिरोमणि भावनादासजी महाराज के जेओ रामस्नेही संप्रदायमां एक अग्रगण्य महात्मा छे अने जोधपुर तरफथी जेओने म्होटी जागिर मळेली छे अने जेओए " भावनी भावमाळा " वगेरे उत्तम ग्रंथो बनावेला छे तेओ जो के कविराजने कोइ वखत मळ्या न हता, परन्तु तेओश्रीना तख्तयशत्रिवेणिका आदि ग्रंथोमांहेनी हिन्दी कविता वांची उद्भवेला अनुरागने लीधे पत्रद्वारा वारंवार वांकानेर पधारवानी इच्छा दर्शावता हता,

कवीश्वरे पोतानी पुत्रीओना लग्न प्रसंगे तेओने कुंकुमपत्रिका पाठवी हती, तेनो प्रत्युत्तर तेओए नोचे मुजब काव्यमां आप्यो हतो.

॥ श्री रामो विजयते ॥

दोहा.

स्वस्ति श्री सुखमासदन, नगर सु वांकानेर;
तत्रस्थित उपमाअयन, विज्ञवर्य इहि वेर ॥
प्रियवर तुमप्रिय प्रानतें, सज्जन संख्यावान;
विद्यातें अनवद्य बड, उदन्वानसे आन ॥
कोविदाग्र कमनीय कवि, धैर्यादिक गुणधाम,
सतमति रत अतही सुहृद, राज रह्यो नथुराम ॥
तिहि प्रति नित अतिहित सहित राम राम अभिधान;
साधु भावनादासको, वाचहु सुकवि सुजान ॥
श्री सहाय करिकें सदा, आनँद उमगत अत्र;
सुख संपतियुत सर्वदा, तेसेँहि चाहिय तत्र ॥
देवराज द्विजराजवर, पंडित परम प्रवीन;
तेहि दीन्हीँ तव पत्रिका, ललित सुउत्सव लीन ॥
पेखत कुंकुमपत्रिका, लग्नोत्सवमय लेख;
उर उमग्यो सुखतें अधिक, वननिधि ज्योंहि विसेख ॥
वरतैं मम यहि वारमें, दोनों अक्षि अवद्य;
यहि कारनतें आपढिग, आना बने न अद्य ॥
मिलन हेत दल मोकल्यो, सज्जन तुम दिल साफ;
लोचनतें लाचारहूं, मित्र करहु अब माफ ॥
संवत् गुण ऋतु अंक शशि, माधव पक्ष वलक्ष;
दशमी तिथि गुरु दिवसकों, पत्र लिख्यो प्रत्यक्ष ॥

१० महाराजश्रीना शिष्य साल्ग्रामजीए पण कविराजनी कविताओ वांची निम्नलिखित अभिप्राय मोकलेलो छे.

कवित्व.

व्यंग्यतें विलच्छना सुलच्छनातें लच्छित है,
सुरभि सुहाय रही बरन धरनमें ।
चारु चटकीली नवरसतें रसीली रम्य,
अधिक विराज रही आभा आभरनमें ॥
सालिग सुहावनी है भाव ध्वनिहुतें भली,
चातुरी दिखाई देत चरन चरनमें ।
कविता तिहारी कमनीय कला कामिनीसी,
सुंदर सुवन बसी कविके करनमें ॥

दोहा.

रसिक सुकवि नथुराम तव कृति निहारि कमनीय;
भावन शिष सालिग भन्यो, भल कवित्व भवदीय ॥

कविराजने भावनगरना गुणज्ञ महाराजा महाराओल श्रीतख्तसिंहजी वहादुर तरफथी ज्यारे राजकवि नी उपाधि प्राप्त थइ त्यारे तेओए पोताना अन्नदाताना गुण गावानी साथे साहित्यमां पोतानुं केटलुं उच्चतम ज्ञान छे ते वतावva खातर एक " तख्तयशत्रिवेणिका " नामनुं उत्तम पुस्तक रच्युं अने ते सारा सारा विद्वानोने अभिप्राय अर्थे मोकलवामां आव्युं; ए अभिप्राय मांहेना थोडाएक नीचे मुजव छे.

११ जोधपुरनिवासी बृहद्विद्याभास्कर पंडितजी श्रीलालचन्द्र शर्मा लखे छे.

मुहल्ला–जालोरी दरवाजा

पत्र

जोधपुर–मारवाड.

कार्तिक कृष्णा–१२ सं. १९६७

श्रीहरि

॥ श्रीमान राज्यमान राजेश्री कविराज नथुराम सुन्दरजी योग्यम् लिखी. बृहत्कवि विद्याभास्कर पंडित गुरु लालचन्द्रशर्माके नमस्कार वंचावसी तथा आपकी निर्मित (तख्तयशत्रिवेणिका) नामक पुस्तककों श्रीयुत साधुमहाराज भावनादासजीके मार्फत पायकर मुझे वडा भारी प्रमोद हुआ. आपकी काव्यशक्ति और श्रीमान् वैकुंठनिवासी वडे महा-

राजा बहादुर भावनगरकी पूर्ण राजभक्तिकों देखकर मेरे चित्तके अभि-प्रायोंकों निम्न लिखित नवकवित्तोंमें जाहिर किये हैं, आशा है कि आप और आपके सज्जन मित्र इनें पढकर खुशी होंयगे, उक्त पुस्तककी यह मेरी तर्फसें समालोचना है ॥

छन्द मनोहर.

स्वस्तियुत भावनग्र लसत उदग्रपुर,
सुगुण समग्रमय सुकवि समाज है ।
पंडित प्रवीन निज धरम अधीन भूरि,
विद्यावोध जीन सत्यशील सुखसाज है ॥
लालचन्द्र कहत सुदेशके अधीश जहां,
सोहैं अवधेशसे नरेश शिरताज है ।
महाराज अधिराज दीनन निवाज आज,
भूप भावसिंह नरइन्द्रसे विराज है ॥

नृप भावसिंहकी अनूप रूप राजसभा,
शास्त्ररीति सहितके सुकवि सुजान है ।
राजे राजकवि जहां नथ्युराम सुन्दरजी,
शुक्ल शिष्ट धर्मनिष्ट काव्य कृतिवान है ॥
लालचन्द्र देत धन्यवाद हिय हेतकर,
कृतिकों निहारि अति अद्भुत प्रमान है ।
तखत नरेश यश विदित सुरेन्द्र सम,
पढत सुशर्म पर्म लहत महान है ॥

प्रेमसें पटाई पूर्ण पुस्तक प्रमोद पूरी,
पाई हम प्रीतियुक्त कविसुखदेणिका ।
भावनग्र भूतपूर्व भूपकी भलाई जामें,
अति अधिकाई गुणगणशतश्रेणिका ॥

लालचन्द्र कहे राजकविवर नथुराम,
सुन्दरजी सुन्दर बनाई बोध एणिका ।
कीन्ही अवलोकन अवलतें अखीर तक,
धन्य धन्य धन्य भूप तखत त्रिवेणिका ॥

गीति छन्द कीर्तिमय कीन्हो है उपोद्‌घात,
नीति सत्य वर्णनमें नृप यश भीनो है ।
समर्पण पत्रिका सुवाल भावसिंहजीकी,
आशिरवचन अति अधिक नवीनो है ॥
तखत सुरेश्वरको जीवनचरित्र चित्र,
लसत पवित्र वर वृत्त चित्त चीनो है ।
लालचन्द्र कहे राज्य कविवर नथुराम,
सुन्दरजी शुक्ल काव्यकृतिमें प्रवीनो है ॥

लिख्यो है संगीत भूप तखतविनोद राग–
रागिनीन तालशास्त्र रीति अनुसारी है ।
तखतयशवावनी कवित्तनमें दानताको,
वर्नन कियो है चित्र कविता प्रसारी है ॥
लालचन्द्र कहे राज्यकविवर नथुराम,
सुन्दरजी शुक्ल सारी सुमति तिहारी है ।
तखतयशको सँगीत सुमन रच्यो है तहां,
रागिनी गजल ताल मोदके विहारी है ॥

तखतविरहवारी वावनी रची तें महा,
दुःख उपजावनी सुने तें सवहीके है ।
कर्ण भोज विक्रम तें अधिक वदान्य भूप,
तखत नरेश्वरके सुयशजु नीके है ॥

लालचन्द्र कहे राज्यकविवर नथुराम,
सुन्दरजी शुक्ल शामधर्म निज पीके है ।
आश्रय सुपत्र लिख्यो आश्रय पवित्र सुधी,
माननीय शिष्टनके उपकृत जीके है ॥

पुस्तक पढत पायो परम प्रमोद हम,
तखतत्रिवेणिका त्रिवेणीसी सुधारी है ।
व्यंग धुनी व्यंजना अलंक्रिया सुलच्छना त्यों,
संस्कृत पराकरत बीचि बिसतारी है ॥
लालचन्द्र कहे राज्यकविवर नथुराम,
सुन्दरजी भगीरथ शोभा अधिकारी है ॥
तखतनरेश्वरके पुण्यवारि भूमें यह,
अमर कियो है सदा आशिष हमारी है ॥

महाराज अधिराज भूप भावसिंह वीर,
सुगुण समुद्र साचो लसे प्रजापाल है ।
दाता दिव्य दिपत दयालु दीह दीननको,
परउपकारी भारी धर्म रखवाल है ॥
लालचन्द्र देत है अशीष चिरजीवो सदा,
तखत नरेश्वरके प्यारे अति लाल है ।
राज अभिषेक लेकें सफल कियो है नृप,
गुणमय नाम भावनगर भुवाल है ॥

विजय सदैव भावसिंह नरइन्द्रजूकी,
जय जय भावपुर भूप महाराज है ।
गुनि निज सामधर्म अति सनमान देकें,
कीनो है दिवान प्रभाशंकर स्वराज है ॥

लालचन्द्र कहै राज्यकविवर नथुराम,
फेल्यो यश भूपतिको भारत विराज है।
शंकर कृपातें पुत्र दलपतके प्रतापी,
चीप कारभारी लसे प्रजा सुखसाज है ॥

इत्यलं सुकविषु.

आपका परम हितचाहक,

लालचन्द्र शर्म्मा.

उक्त पंडितजीने जोधपुरना सर प्रतापसिंहजी बहादुरे बृहद्विद्याभास्करनो उपाधि अर्पण करेल छे, तेओ कोइपण वखते भावनगरना विद्यमान महाराजा भावसिंहजी बहादुरने मळेला नथी तो पण कविराजनी साथे तेमना अन्नदातानी पण प्रशंसा करवा चूक्या नथी; आ उपरथी सिद्ध थाय छे जे उत्तम कविओने आश्रय आपनारा नरेश्वरो वगर पैसे म्होटा म्होटा पंडितो तरफथी प्रशंसा मेळवी शके छे.

१२ जोधपुर—मारवाडना सुप्रसिद्ध वकील अने बचवारीना जागीरदार पंडितजी देवराज पंचानन शास्त्री नीचे मुजब लखे छे.

प्रिय कविवर ! नत्थूरामजी साहिब !

भवत्प्रेरित "तख्तयशत्रिवेणिका" की पुस्तक भावनादासजी महाराजके द्वारा मुझे मिली जिसे में सहर्ष अंगीकार (स्वीकार) करता हूं. आपके इस अनुग्रहका वर्णन में कहां तक करूं, केवल धन्यवाद देकर परमात्मासे आपके आयुरारोग्य तथा दीर्घजीवी होनेकी प्रार्थना करता हूं. राजालोग कवियोंको केवल इसीलिये सन्मानपूर्वक रखते हैं कि वे उनका यश निर्माण करे, और दीर्घकाल तक संसारमें नाम बना रहे. हमारे मारवाडी भाषामें नाम स्थिर रहनेके दोही कारण एक प्राचीन कहनावतमें प्रसिद्ध है. कहते है कि "नाँव रहे कै गीतडां कै भीँतडां" सो गीतडां तो कविता वा पुस्तक रचना (गद्यपद्ये कृतौ कवेः) इसके अनुसार और भीँतडां "इमारत" बनवानेसें. बस इन दोके सिवा कोइ उपाय नाम चिरस्थाई रहेनेका नहीं है. आपने यह पुस्तक रचकर महा-

राज तख्तसिंह बहादुरका अटल नाम करदिया. अपने लवणकों उज्वल करदिया.

मैंने इस पुस्तककों देखी तो यह पुस्तक गुर्जर भाषा और गुर्जर लिपिमें है. कवित्त नागरी भाषामें है, गुर्जर भाषामें मुझको अत्यल्प बोध है. इसलिये गद्यके विषयमें अपनी अनुमति प्रकाश नहीं कर सकता; और अभी इतना सावकाश भी नही कि किसी गुजरातीके पास जाकर वा बुलाकर श्रवण करूं, तथापि जो आपकी कविता नागरी भाषामें है उसके लिये मेरी यह अनुमति है कि आपकी कविता प्राचीन प्रनालिका अनुकरण करती है और सरस कविता है. इसे पढकर चित्तकों अत्यंत हर्ष हुआ.

आपका

देव.

१३ जोधपुर—मारवाड तावे गाम मथाणीआना जागीरदार वारहट कविवर्य जेवदानजी लखे छे.

कवित्त.

अलंकृत ग्रन्थ अभिराम नथुरामकृत,
आयो इत सहित सनेह जोधपुरमें ॥
भावनग्रतें पठायो पास दास भावनके,
जास कवि जैत प्राप्य आँनँद भो उरमें ॥
शुक्ल चित्त शुक्ल हित जन्मकुल शुक्ल जासु,
शुकल विलास रम्य सकल भूसुरमें ॥
इतें अवलौक अविलौके बुद्धि आप और,
ग्रन्थन गुरुत्व ग्रन्थ त्यों गुरुत्व गुरुमें ॥

ईश भावनग्र भावसिंह अग्र शुक्ल वंस,
कवि नथुराम किय शुक्लवृत्ति लेनिका ॥
दूपन रहित गुन भूपन सहित दिव्य,

साहितके हित नित ऊर्ध्वगति देनिका ॥
लहर सँगीत जित लहर ललाम लेत,
सुधा श्रुत देत धुनि सुन चित चेनिका ॥
भरी श्यामभक्ति रस प्रसरी प्रसक्त अस,
जीवनपें जक्त तख्त सुजस त्रिवेनिका ॥

१४ अमदावादना रहेवाशी कविश्रेष्ठ हर्षदराय प्रथम वडोदरा स्टेटमां नोकर हवा, परन्तु पालीताणाना महाराजाना अत्यंत आग्रहथी तेओए त्यां राजीनामुं आपी गोहिलनरेशना राजकवि तरीके आनंदमां जींदगी गुजारे छे. पोते महान् रसिक अने मस्त छे, तेओए "तत्वयशत्रिवेणिका" नी समालोचना साथे केटलीएक उमदा कविताओ पत्ररुपे कवीश्वर उपर मोकलावी हती, ते तमाम वांचवा योग्य होवाथी ते समस्त पत्र अत्र दाखल करेलो छे.

ता. ११ फेब्रुआरी सने १९०१.

ॐ तत्सत्परमात्मने नमः

दोहा.

स्वस्ति श्री शुभनग्र वर, बंकनेर शुभ स्थान;
नत्थुराम अभिराम प्रिय, पूरन चतुर सुजान ॥
शुभ स्थल अमदावादसों, कवि हर्षद लिखितंग;
हृदय स्मरण अंकुरतें, बाढ्यो अधिक उमंग ॥
वह उमंग चुम्वक सरिस, स्थूल देह जनु लोह;
भयो विवश प्रिय मित्रको, ऐंचत तनकुं मोह ॥
दर्शन लालचु नयन द्वै, चित्त चाहत सुप्रसंग;
वह प्रसंग यह पातिमें, पठवत हर्षद रंग ॥
अत्र कुशल कल्यान है, चिन्तारहित शरीर;
सज्जन दर्शन रूपकी, व्याधि करत है पीर ॥
सोई व्याधिमें मस्त कवि, पेखतमस्त तरंग;
प्रेमसिन्धु विच मोदयुत, नौकासहित सुरंग ॥

सोइ रंग सुप्रसंगमें, लिख्यो पत्र अभिराम;
मुकुर तुल्य चित्त स्वच्छमें, करि है शब्द मुकाम ॥
ठरिहै वृत्ति प्रमोदयुत, दोनुँ द्रगनकी ठोर;
ललित मग्न चितद्वारको, कपाट फिरि है और ॥
नत्थुराम प्रियमित्र पुनि, पैहैं कविको हेतु;
तब प्रसन्न है जायगो, पायो ज्यों सुखसेतु ॥
सोइ मित्रके हृदयकी, प्रतिभा पेखहि सद्य;
तब हर्षद निजचितहिमें, आनँदमें अनवद्य ॥

यह मिथ्या जगमें लसत, बिमल प्रेमसुखधाम;
जेंहि जनपावत भेद वह, सुख पावे नथुराम ॥
हमहिं तुमहिकें स्थूलमें, अेक तत्त्व सुखकन्द;
न कछु भेद व्याधि रहित, शान्तवृत्ति ज्यों चन्द्र;
जो तुम्हारे चित पातिकी, असर हृदयबिच आति;
करि करुना मोपें लिखहु, प्रत्युत्तरकी पाति ॥
विविध उक्ति रसयुक्त रुचि, लायक रसिक पिछानि;
सो यह तत्त्वत्रिवेनि यश, सुखदायक हिय मानि ॥

सवैया.

देखतही यश तत्त्वत्रिवेनि, त्रिवेनिको संगम पाय रही;
जिनमें यह सृष्टि समस्तनकी द्युति सुंदरता दरसाय रही;
कलहंसरु कोकिल कीरनको, विधिना कृति ऐसी लिखाय रही,
जुँ कदंबके वृन्दमें आनँदकंद, सरस्वति मानों सुहाय रही ॥
देखतही द्रगतें रचना यह, भासत है कछु आनँद श्रेनी;
ओर अनेक विवेक विचार अलंकृत उक्ति सुधारसदेनी;
जैसी त्रिवेनि त्रितापनिवारिनी, शांतमतिकरनी चितचेनी,
सत्य कहै हर सिद्ध सुनो, प्रिय तैसी लिखी यशतत्त्वत्रिवेनी ॥

कवित्त.

काव्य रचनाकी छटारूप तट सुंदिर है,
अर्थरूप अलंकृतवारी स्वच्छ सेनिका ॥
कहै हरसिद्ध उछलत है तरंग वामें,
रंग रंग रसमें अभंग रंग देनिका ॥
काव्यरस बिन्दुको पिपासी जन प्यास हरे,
चितमें चितोनुं चाहे सुमतिकी श्रेनिका ॥
नथुराम ऐसी सुरमंडल अन्हाय बेकों,
चली अपवर्ग यश तख्तकी त्रिवेनिका ॥

होइकें संतुष्ट मोपें इन्द्र जू इन्द्रासन दे,
कोटिक विलास युक्त आनँदके घरकी ॥
चाह रखे मोपें चन्द्रशेखर कृपानिधान,
चितमें चितोनुं देव पदवी अमरकी ॥
परवा न रखें हम लैहेंना गुमानी ह्वैकें,
मानयुक्त मेरी चित्त कहुं में अँतरकी ॥
अहंभेद दूर कर चाहें हरसिद्ध ए तो,
पाती अब मिले नथुराम हस्ताक्षरकी ॥

दोहा.

लिखहु पाति प्रत्युत्तरकी, अंतरकी कछु सेन;
चाहत हर्षद मुकुरसम, स्वच्छ अच्छमति सेन ॥

सवैया.

कोउ रहे गिरिकन्दरमें, द्रगमूंद लगावत चंड समाधि,
चाहत है हरसिद्ध कहै, निज इन्द्रियके बलकी गति साधी;
दीन रहे दुःख प्यास सहे, जदपि नहि जानत है इक आधि,
सोई कहे हरसिद्ध सुनो प्रिय, चाहत हैं हम इश्क उपाधि.

दोहा.

इश्क उपाधि सिन्धुमें, जो कोउ परत सुजान;
नहि चाहत सुख स्वर्गको, नहि मागत कछु आन.

कवित्त.

सोइ इश्क रंगकी उपाधि ब्रह्मभेदहुमें,
मायारूप मोद मुद मंगल रचावनी ॥
हर्षद अभंग रंग आदि रंग रंगिनीसो,
सबहीके अंग मध्य रंग दरसावनी ॥
जहां तहां देखी खूब खलक खुबीसे खास,
भासत है भास प्रेम इश्ककी सुहावनी ॥
तैसे रंग रंगमें रंगाये जब नत्थुराम,
पेख लैहें पाति यह चारु चित्त च्हावनी ॥

दोहा.

सोइ रंगको रसिक तुम, सदा लहो आनँद;
रसज्ञ होकर स्वर्गमें, पाओ सुमति सुछन्द ॥
कामकाज कछु अत्रको, जो कछु आयसु देहु;
यथाशक्तिसें प्रेमयुत, उमंगसें कर लेहु ॥

कवित्त.

वंक तलवार कटितटके प्रदेशनमें,
वंक है कटारी तापें दच्छ भुज ल्यायो है ॥
हर्षद भयान वंक भ्रकुटी कमान जैसी,
वंक है त्रिवल्लि दीर्घ भाल बिच पायो है ॥
शिरपेच पाघहुपें वंक अर्धचन्द्राकृति,
चितमें निशंक धर्म अंश दरसायो है ॥
एसे वंकनेर वंक मुच्छनको वंक भूप,
निकट अनुप नथुराम कवि कहायो है ॥

उक्त कविश्वरे पण कविराज उपरना निःसीम सौहार्दने लीधे अन्तिम कवित्वथी तेमना आश्रयदाता श्रीमान महाराजा राजसाहेब अमरसिंहजी बहादुरनी कंइपण अर्थादिनी आकांक्षा विना स्तुति करेली छे.

एज रीते कविराजे पोताना तृतीय आश्रयदाता पोरबंदरना महाराणाश्री भावसिंहजी बहादुरनां प्राकृत तथा गुर्जरभाषामां अनेक काव्यो लखी "**भावसुयशवाटिका**" नामे पुस्तकनो प्रथम भाग बहार पाडी केटलाएक विद्वज्जनोने भेट तरीके मोकल्यो हतो, तेना अभिप्रायमां—

१५ मथाणीआनिवासी बारहट जैतदानजी नीचे मुजब लखे छे.

कवित्त.

निसामनि धारे हिम मन्दाकिनि तारे मर्त्य,
फेर भुम्मि गोल फन धारत फनी रहै ॥
पारावार धार पय बिहर बयारजोलों,
तोलों रविकर्न धर्न तेजतें तनी रहै ॥
ऐसें समराट जसपाट पोरबन्दरके;
काव्य नथुराम सदा सुधासी सनी रहै ॥
भावजसवाटिका बिलोक जिय जैत बाट,
भावसिंह भेटिबेकी भावना बनी रहै ॥

१६ मारवाड-गढोइना रहीश कविराज अचलदानजी फनोराम बारहट रतनु जे वखत पोताना बन्धुओ सहित पोरबंदर आव्या हता ते वखत खा. महाराणा श्री भावसिंहजीनी साथे कविराजनी पण तेमणे नीचे प्रमाणे कविताओ बनावी हती.

दोहा.

भावसिंह नृप भोज है, सुजस पवित्र प्रकाश;
नथूराम निश्चे लख्यो, कविवर कालीदास.

सवैया.

कोप अगस्त समस्त अरिपर, द्रोन समो वरभारथमें;
भाव सनेह सुहावत पूरन कृष्न चितंलग पारथमें;
त्यों अचलेश कहेयश जाहिर ना दिलहै निज स्वारथमें;
या जगमें द्विजराज नहीं, नथुराम जिसो परस्वारथमें. १

कोउक वेद पुरान पिछानत कोउ प्रवीन सुभारथमें,
कोउक पायन कंचन राजित, को द्रढहै निज स्वारथमें;
त्यों अचलेश किते द्रव पूरन, शास्त्र विद्या गुन पारथमें,
या कलिमें द्विजराज नही नथुराम जिसो परस्वारथमें. २

कवित्व.

अवि द्रढ गूढ पथा मूढ तम अवि तेज,
गुनभार ग्रहवेकों अविसम हाम है ॥
अविकार दिल राजे अविगत सुजस है,
महोदधि अविगति सो व्है वसुयाम है.
अचल कहंत अविचारी ताकों नोदनसों,
भावभूप कृपा अविरोधको विश्राम है.
अविचल काव्य रचे अविकल चित्त सदा,
अविश्रांत सज्जनकों कवि नथुराम है. ३
गुरुके गानपतिके गोविंदके गाय गुन,
सुधाधार शुद्ध विद्यावारिध विस्तारती ॥
देव नरदेव यश अमर धरामें करे,
अखंडित प्रभा ओज अधम उधारती ॥
वानी महारानीकों वनाय वेस रस सानी,
सुनके चकित्त गौरी होवे चित्त सारती ॥
कोटि मूल्यके कलाम कवी नथूरामजुके,
भारत कल्यानकाम भव्य जाकी भारती ॥

कविराजे लखेल द्रश्यकाव्य (नाट्यशास्त्र) ना अपूर्व ग्रन्थ संबंधी नीचे मुजब अभिप्रायो आवेला छे.

१७ साक्षरवर्य केशवलाल हर्षदराय ध्रुव अमदावादथी ता. २-२-१९०० ना रोज लखे छे जे—

" संगीतना अभिनय अंग उपर कोइपण विस्तारवाळो ग्रन्थ गूजरातीमां आजसुधी लखायो होय, तो ते कवि नथुराम सुंदरजीनुं नाट्यशास्त्र छे, एमां एमणे भरतनाट्यशास्त्र

ना दुर्बोध भाग उपर **संगीतरत्नाकर** आदि पुस्तकोनी साहाय्यथी प्रकाश पाडवा ठीक प्रयत्न कर्यो छे, प्राचीन अभिनय कळाना जिज्ञासु अने शोधक गूजरातीनो मार्ग नाट्यशास्त्रथी उक्त दिशामां सरल थशे.

१८ साक्षरोत्तम उत्तमलाल केशवलाल त्रिवेदी लखे छे जे नाट्यशास्त्र नामनो आपनो ग्रन्थ टूंक समयमां जेटले अंशे हुं जोइ शक्यो छुं तेटला उपरथी कहुं छुं के ते ग्रन्थ सारो थशे.

आपणी भाषामां नृत्यनो विषय केवळ नवीन छे, ते विषयमां आपना ग्रन्थथी घणो नूतन प्रकाश पडवा संभव छे. तेमांना केटलाक प्रकारोनो चित्रथी साक्षात्कार न करावी शकाय ?

नाट्य अने अभिनय कळा उपर "वसन्त" मासिक पत्रमां केटलाक सारा निवन्धो प्रसिद्ध थया छे जेना उपर हुं आपनुं ध्यान खेंचुं छुं. हुं धारुं छुं के ते निवन्धो आप जोशो तो आपना आ ग्रन्थने आप वधारे उपयोगी वनावी शकशो.

नाट्यमां—काव्य मात्रमां कृत्रिमताने माटे अवकाश नथी ए खरी वात छे. तथापि आवा गन्थो उत्तम काव्योमां केवा गुण केवी रीते स्वभावथीज आवी जाय छे ते प्रकट करे छे. अने उत्तम कविओने पोतानी कृतिओनी सारासारता समजवा समजाववा माटे सारुं सामर्थ्यवान साधन छे.

आपना ग्रन्थनो हुं सर्व प्रकारे विजय इच्छुं छुं.

ता. १५–१–९. वीरमगाम स्टेशन.

१९ जामनगर निवासी' विद्वद्वर्य महाशय, शास्त्रीजी हाथीभाई लखे छे.

श्रीभरताचार्यप्रणीतं नाट्यशास्त्रं कवीनां पद्धतिदर्शकस्य, नाट्यकाराणामुत्तमशिक्षकस्य, साहित्योपासकसहृदयानां काव्यरसास्वादन रुच्युत्पादकस्य प्रयोजनं प्रसाधयन्मनुष्याणां यावद् व्यवहारोपदेशकमिति नात्र मतद्वैतम्। तादृशस्यातिमहतः शास्त्रस्य संस्कृतभाषोपनिवद्धतयाऽद्यावधि तत् संस्कृतज्ञपुरुषैरेव यथाकथंचिदुपात्तलाभमासीत्। इदानीं वांकानेरपुरनिवासिशुक्लावटाङ्कनथुरामकविवर्यैस्ततत एव वहून् विषयानुद्धृत्य रसतरंङ्गिण्यादितश्चोदाहरणादिकमुपादाय रमणीयं निवन्धनं गूर्जरभाषायामुपनिवद्धं येन गूर्जरभाषासाहित्येऽमूल्य सम्पदुन्मेषो जातः। यद्यपि गीर्वाणगिरो गूर्जरगावि सङ्क्रमणे ह्रस्वदीर्घव्यत्ययशषसाद्वैताद्यशुद्धिलेशाः क्वचित्क्वचिदपरित्यक्तवसतयस्तथापि प्रूफशोधकस्य सावधानत्वविरह निवन्धनमिदं स्यादिति कलयामि। सर्वथा कविराजस्यायं प्रयत्नो गूर्जरभाषायाः सौभाग्यवर्धक इति शिवम्॥

श्री भरताचार्यप्रणीत नाट्यशास्त्र ए कविओने सारा नेतानुं, नाट्य प्रयोगकारोने उत्तम शिक्षकनुं अने साहित्यना उपासक सहृदय जनोने काव्य रसास्वादनी योग्य अभिरुचि उत्पन्न करी देवानुं प्रयोजन सारनार होवानी साथे मनुष्य मात्रने सर्व प्रकारनां व्यवहार-ज्ञाननुं उपदेशक छे. आवी महत्तावाळुं शास्त्र संस्कृत भाषा निबद्ध होवाथी अद्यापि मात्र संस्कृतज्ञ पुरुषोज तेनो लाभ यथाकथंचित् लेई शकता. हालमां वांकानेरनिवासी कवि नथुराम सुंदरजीए नाट्यशास्त्रनुं गूजराती भाषान्तर करीने छपाव्युं छे, तेथी गूजराती भाषाना साहित्यमां एक अमूल्य उमेरो थयो छे. मूळ संस्कृत उपरथी लीधेला विषयने गूजराती भाषानुं रुप आपतां केटलेक स्थळे ह्रस्व दीर्घ श ष, स नी एकता आदि अशुद्धि दोषो रहेवा पाम्या छे, पण ते कोई साक्षरद्वारा प्रूफ शोधवानुं नहि बनवानुं परिणाम जणाय छे. सर्वथा कविराजनो आ श्रम गूजराती भाषानो सौभाग्यजनक छे.

२० सुप्रसिद्ध मोरबीनिवासी महामहोपाध्याय शीघ्र कवि शास्त्रीजी शंकरलाल माहेश्वर भट्ट लखे छे.

नाट्यशास्त्रमवलोकितं मया, शुद्धगुर्जरगिरा विनिर्मितम्; ।
सत्कविप्रवरकीर्तिशालिना, शुक्लवर्य नथुराम शर्मणा ॥
दृश्यकाव्यरचनाविनिर्णयः श्रीमतो भगवतो महामुनेः ।
उत्तमं भरतशर्मणो मतं, शर्मदं समनुसृत्य निर्मितः ॥
इदमद्य नाट्यशास्त्रं, भरतमुनेर्मतमनुत्तमं मनसा;
आश्रित्य गुर्जरगिरा, रचितं शुक्लेन सुन्दरं सरलम् ॥
अयमीदृशः प्रबन्धः, प्रथमः सर्वोपकारकारीति;
दृष्ट्वैव तं विपश्चित्प्रवरा आनन्दसागरे मग्नाः ॥
तत्कृतिकर्त्रे कविगणमणये नथुरामशर्मणे नितराम्;
दास्यन्ति धन्यवादं, साशीर्वादोक्तियुक्तमिति मन्ये ॥
यस्मिन्नभिनयविधयश्चतुर्विधा वर्णिताः सविस्ताररम,
सर्वे रसाश्च सरसं सोदाहरणाः सुविस्ताराल्लिखिताः ॥
यद्यच्च नाटकानामुपयोगि प्रस्तुतं सुवस्तु मुदा;
तत्तच्चवर्णितं सद्भावाढ्यं तेन सत्कविना ॥
दर्शं दर्शं तदहं, परमं परितोषमासोऽस्मि;
प्राप्नोतु सुप्रसारं, सत्कविकीर्त्या समं हि सर्वत्र ॥

नाट्य प्रबन्ध मुक्ता हारोऽयं हर्षदो भूयात्;
श्रीशैलराजतनयाहृदयाधीशप्रसादतः सततम् ॥
इति शंकरलाल शर्मणः परमेशं प्रति चन्द्रशेखरम्
सततं परमार्थनाऽस्ति मे, परमाहेशमहेशजन्मनः

"कीर्तिशाळी कविवर्य नथुराम सुन्दरजी शुक्ले शुद्ध गुजराती भाषामां बनावेलुं नाट्यशास्त्र" में जोयुं. तेओए श्रीमान् समर्थ मुनि भरतना कल्याणकारी मतने अनुसरी द्रश्यकाव्यरचनाना निर्णयनुं निर्माण कर्युं छे. भरतमुनिना सर्वोत्कृष्ट मतनो आश्रय लई शुक्ल नथुरामे गूजराती भाषामां लखेलुं नाट्यशास्त्र सुन्दर अने सरल छे. तेओनो आ प्रबंध पहेल-वहेलो ज छे अने तमामनो उपकारक छे एम जोइ विद्वज्जनो आनंदसागरमां निमग्न थया छे, अने उक्त कृतिना कर्ता कविगणमां मणिरुप शुक्ल नथुराम सुन्दरजीने आशीर्वादपूर्वक धन्यवाद आपे छे. कविराजे नाट्यशास्त्रमां चार प्रकारना अभिनयो सविस्तार वर्णव्या छे अने तमाम रसो उदाहरणपूर्वक विस्तारथी रसिक शब्दोमां लखेला छे; तेमज जे जे नाटकोनां उपयोगी प्रस्तुत वस्तु गणाय छे ते सर्व सद्भावथी प्रशंसापात्र नीवडे एवी रीते वर्णवेल छे के जेना पर द्रष्टिपात करी करीने हुं परम संतुष्ट थयो छुं अने एवो आशीर्वाद आपुं छुं के कवि नथुरामनी कीर्तिनी साथे तेमनी उक्त कृतिनो पण सर्वत्र प्रचार थाओ. श्री पार्वतीप्राणेश शंकरनी कृपाथी आ नाट्य प्रबंधरुपी मुक्ताहार हमेशां हर्षदाता बनो एवी परमेश्वर चन्द्रशेखर (शिव) प्रत्ये म्हारी (माहेश्वरना पुत्र शंकरलालनी) निरंतर प्रार्थना छे.

२१. महामहोपाध्याय शीघ्रकवि शंकरलाल माहेश्वरना परीक्षकपणा नीचे उत्तीर्ण थएल षट्शास्त्रसंपन्न अत्रेनी वेदपाठशालाना शास्त्रीजी चतुर्भुज शीवशंकर कविराजना काव्य-शास्त्रनुं अवलोकन करी नीचे प्रमाणे कविराजनो विजय इच्छे छे.

श्रीहरिः

यो नित्यं विदतां मुदं हृदि दधत् साहित्यपाथोनिधिम्
बुद्ध्या मन्दरकन्दरिप्रवलवत्योन्मथ्यमन्थोद्भवाम् ।
काव्यं दिव्यसुधां सुधातुरतरे पृथ्वीतले पाययन्
स श्रीशन्नथुराम सुन्दरजयस्तात्तज्जयस्सर्वदा ॥

जेओ हमेशां मंदरपर्वतनी माफक मंथन करवामां प्रबल एवी बुद्धिथी साहित्यसमुद्रनुं मंथन करी सुधाना पानमां आतुर एवा, पृथ्वीतलमां साहित्यविद् पुरुषोने मंथन करतां उत्पन्न थएल काव्यरुप दिव्यसुधानुं पान करावी तेओना हृदयने हर्षित करी, क्षीरसागरनुं मंथन करी देवोने अमृतपान करावनार लक्ष्मीपति विष्णुभगवाननुं अनुकरण करे छे, एवा श्रीमान् नथुराम सुंदरजी कविराजनो सर्वदा विजय वर्तो. १.

सेदानीं च चरीकरीति सुमनस्स्वान्तं मुदा मज्जितम्
प्राग्भारं रसरीतिवृत्तिगुणलक्ष्मालंकृतीनां दिशन् ।
स्वे कार्ये सुमहत् प्रबन्धउररीकृत्यात्र साहित्यवित्
ब्रह्मानन्नथुराम सुन्दरजयस्तात्तज्जयस्सर्वदा ॥

प्रबन्धशब्दित प्रकृष्ट बन्धवाळा ब्रह्माए पोते रचेला कार्यात्मक आ जगतमां रस (प्रेम), रीति (धर्म), वृत्ति (जीवन), गुण (मनुष्यादिना सत्त्वादि लक्षण) अने अलंकृति (शोभा) ए जेम बताव्या छे, तेम आ कविराज नथुरामभाइ पण पोते रचेला आ काव्यशास्त्ररुप प्रबन्धमां शृंगारादि रस, वैदर्भ्यादि तथा आर्भट्यादि आर्थिक रीतिओ मधु-रादि त्रण वृत्तिओ, ओजस आदि गुणो, आर्या वगेरे लक्षणो (वृत्तो), छेकानुप्रासादि तथा उपमादि शब्दालंकार अने अर्थालंकारोने बतावी सहृदयोनां हृदयने अत्यंत आनंदमां निमग्न करे छे. एवा ब्रह्मानुं अनुकरण करनारा कविराज नथुराम सुंदरजीनो सर्वदा विजय थाओ. २

साहित्यामरनिम्नगां शशिकलां मूर्ध्नादधत्युत्तमाम्
शक्तिं यः प्रतिभां नियच्छतिगलेऽसत्काव्यतादुर्विषम् ।
साहित्यारचने च यस्य तनुते साहाय्यतां पार्वती
सेशानन्नथुराम सुन्दरजयस्तात्तज्जयस्सर्वदा ॥

जेओ साहित्यरुप गंगाजी अने उत्तम प्रतिभा शक्तिरुप चन्द्रकलाने मस्तक (मगज) मां धारण करो असत्काव्यरुप गरलने कंठमांज राखो साहित्यो रचवामां भगवती पार्वती-जोनी सहायता मेळवी गंगाधारी चन्द्रमौलि कालकंठ, पार्वतीश एवा भगवान शंकरनुं अनु-करण करे छे तेनो सर्वदा जय थाओ. ३.

हंहो काव्यकलापकोविदजना मन्येऽत्र शास्त्रे मुदां
युष्माकं करगीकृते रसिकहृन्नालं हि मातुं भवेत् ।
यस्मिन् गुर्जरवागभिज्ञजनताऽपि द्राक् पिपासावती
साहित्यं सहृदेकपेयसुरसं पातुं मुदा पारयेत् ॥

हे काव्यज्ञ पुरुषो? हुं मानुं छुं जे कविराज नथुरामभाइए रचेलुं आ काव्यशास्त्र आपना हस्तमां आवशे त्यारे आपनुं रसिक हृदय आनंदनो समास करवाने पुरतुं नहींज थाय; (कारण के) जे आ काव्यशास्त्रमां गुजराती भाषानुं ज्ञान धरावनारा साहित्यरसनुं पान करवाने आतुर होय तेओ पण आ शास्त्रमां सहृदय पुरुषोथी पीवा योग्य साहित्यरसने एकदम हर्षसहित पी शके.

सन्त्यस्यां भुवि भूरयः पृथगभिप्रायाङ्किताः क्लेशदाः
प्रायः संस्कृतवागभिज्ञसुगमास्साहित्यवाचोविदाम् ।

शास्त्रेऽस्मिंस्तु मतं यथा न विदुषां पूर्वैर्मतैर्भिन्नता
सर्वैर्गम्यमरं प्रमोदजनकेऽपूर्वे तथा दर्शितम् ॥

आ पृथ्वीमां विवुध पुरुषोए रचेला साहित्यविषयक शास्त्रो घणा छे, पण तेमांना घणाखरा तो संस्कृत ज्ञानवाळा पुरुषोथी समजी शकाय तेवा छे. कारणके तेओमां दरेकना परस्पर जुदा जुदा मतो होवाथी बीजाओने तो क्लेश आपनारा छे पण आ शास्त्र तो हर्ष आपनारुं अने अपूर्व छे. तेमां एवो मत लीधो छे के प्राचीनोना मतथी विरुद्ध न पडे अने सौ कोइ जाणी शके.

२२. कविराजे पोताना अन्नदाता भावनगर नरेश महाराजाश्री भावसिंहजी बहादुरनां कुंवरीश्री मनहरकुंवरवाना लग्नमहोत्सव प्रसंगे हिन्दी भाषामां घणीज उमदा कविताओ बनावी " **मनहरलग्नमहोत्सव** " नामथी प्रसिद्ध करेल छे तेना संबंधमां मेवाडमां " बडी सादडी " नामनी झाला नरेशनी एक उत्तम रियासत छे. त्यांना पंडितजी सीतारामजी ता. ११–९–१९१३ ना पत्रमां लखे छे.

श्रीयुत कविराजाजीश्री नथ्थूरामजी सुन्दरजी शुक्लकी सेवामें.

महाशय,

में चिरकालसे आपके सद्गुनोंकों श्रवण करता हूं, और केही दफा पत्र प्रेषितका भी विचार हुवा, परंतु नही लिख सका, आपने जो कृपाए मनहर लग्न महोत्सव काव्यकी ५ पुस्तकें पंडित वनवारीलालजीकी मार्फत प्रेषित की थी उनकी प्राप्ति सहर्ष स्वीकार करके निवेदन है कि आपने ईस काव्य निर्माणमें अतुल्य परिश्रम किया है, और ईसके अव-लोकनसें प्राचीन वा अर्वाचीन काव्यग्रन्थोमें आपकी पूर्ण विद्वत्ता वा चातुर्यता प्रकाशित होती है. मैं विशेष क्या प्रशंसा लिखूं आपने छोटीसी पुस्तकमें ललित कविताके साथ सागरकों गागरमें बन्द कर दिया है.

मैंने सुना है के आप आजकल झालावंशका इतिहासमें कटिवद्ध है ये वडे हर्षकी वात है के श्रीमान राजराना साहेव वांकानेर ईसके निर्माणमें आपकों सर्व प्रकारकी सहायता प्रदान कर रहे है, अपने पूर्वजो-के इतिहासकों भविष्यवत् संतानोंके लिये उपदेश वा चरितार्थ निर्माण करानेवाले वांकानेर नरेन्द्र सरीखे राजा आजकलके समयमें दुर्लभ ही नहीं

किन्तु दुष्प्राप्य है. आपने ईस जगह इतिहासका नमूना भेजा था उसको मैंने भली प्रकार सुना है. उस्की रचना वा रूपक वा अलङ्कार वा उपक्रम वा उपसंहार सर्व सराहनीय है. ईस जगहसें सम्मति भी आपको पहोंच गइ है. परन्तु फिर भी में आपको निवेदन करता हुं के इतिहासमें दो वातोंका अवश्यमेव उल्लेख होना चाहीये. एक तो ये के जो नरेन्द्रोंनें शूरवीरतासे प्रभावशाली कार्य किये है के जिनसें राज्यकी उन्नति हुइ है, द्वितीय जिन नरेन्द्रोंने कुसंगवश अथवा क्रूरता अथवा मनोराज्य कार्य किये है और उनसे राज्यमें क्षति हुइ है उनका उल्लेख अवश्य होना चाहिये. जिनसें वर्तमान वा भविष्यत् सन्तानोंकों शिक्षा प्राप्त हो सके, विशेष निवेदन क्या करूं. आप स्वयं बुद्धिमान है, और इतिहास संबंधी मेरे योग्य कार्य हो तों लिखियेगा. में सुमति अनुसार सहायता दूंगा.

२३ एवीज रीते महाराजा राजसाहेबश्री अमरसिंहजी बहादुरनां कुंवरीश्री तख्तकुंवरबाना लग्नमहोत्सव प्रसंगे कविराजे तेवीज उमदा कविता बनावी "तख्तकुंवरी विवाह वर्णन काव्य" नामनुं पुस्तक छपावेलुं छे जेना अभिप्रायमां महिअर स्टेटना राजकवि अने सरिस्तेदार नाजिर शारदाप्रसाद रसेन्द्र लखे छे.

सिद्धि श्री ५ राजमान राजकवि नथुराम सुन्दरजी शुक्ल. प्रणाम. आपकी " तख्तकुँवरीविवाहवर्णनकाव्य " श्रीमान् महाराजासाहेबबहादुरके निकट पहुंची उसीवक्त १ प्रति मुझे पंडित बनवारीलालमिश्रको प्रेजंट हुइ. वाह ! क्या बढिया काव्य है ? दरियाको आपने कूजेमें बन्द किया, क्यों न हो, राजकवि तो ठहरे ? पंडितजी जैसी आपकी तारीफ दरबारमें किया करते है उससे ज्यादः पाया. में आपके दरशनको अभिलाषा करता हूं मगर राजकाजसें छुट्टी कहां ? बदा है तो कभी मिलूंगा.

२४. कविराजे " विवेकविजय " नामे वेदान्तनो ग्रन्थ रचेलो छे तेना अभिप्रायमां मोरबीनिवासी महामहोपाध्याय शीघ्रकवि शंकरलाल माहेश्वर भट्ट स्वहस्ते लखे छे जेः—

आपे रा. रा. चकुभटजीना पुत्र रविभाई साथे " विवेकविजयकाव्य " मने मोकलाव्युं ते पहोंच्युं छे, तेथी हुं आपनो घणो उपकार मानुं छु, मने वाव आववनो हतो तेथी तरत पोंच लखाणी नथी तो क्षमा करशो. काव्य घणुंज उत्तम छे, जो के हजी आदिथी अंत-

सुधी वंचाणुं नथी, पण जेटलुं वंचाणुं छे तेटलाथी तेनी उत्तमता जणाई छे, इश्वरकृपाथी, तमे चिरंजीवी रहो अने नवां नवां काव्यो लखी लोकोपकार करता रहो. तथाऽस्तु.

२५. कविराजनी साहित्यसेवा सबंधी तथा तेओश्रीए लखेल " भावविरह " अने नाटकोना सबंधमां राणावावथी श्रीयुत मास्तर जगजीवन कालीदास लखे छे जेः—

आपनो कृपापत्र अने विरहबावनी बन्ने पहोंच्यां, कृपापत्र वांचतां आपनी गुर्जर-गिरानी अविरत सेवाना समाचार जाणतां अने साहित्यनी अहोनिश उपासनाना वर्तमान विलोकतां जे आनंद थयो छे ते अवर्ण्य छे. साहित्यपरिषदो राजकोट के गमे त्यां गमे तेटली भराय ने लांबां लांबां भाषणो गमे तेटलां भलेने थाय ! पण वगर बोल्ये ने वगर डोळ कर्ये मात्र एकान्तवास सेवी पोतानी कलम चलाव्ये जनार पोतानी स्वाभाविक काव्यप्रतिभाथी गिराने शोभावनार ने तेम छतां पोते जाणे साहित्यनी कांइज सेवा बजावतो नथी एम मौन रहेनार कवि नथुराम ते गुजराती भाषामां एकज छे, ने तेनो प्रयास ते आवी अनेक परिषदो करतां पण उच्चतर छे एम कविनी कोइ काळे पण गुजरात बूज करशेज एम अमारुं मानवुं छे. विरहबावनी वांचतां नेत्रमांथी अस्खलित अश्रुप्रवाह चाल्यो छे ए आपनी हृदयंगमवाणी ने सहृदयतानो प्रत्यक्ष पूरावो छे. वांचतां वांचतां सात आठ ठेकाणे गद्‌गद् बनी नयनो लो-वानो ने पुस्तक बंध करी शान्त थई फरी पाछुं वांचवानो प्रसंग लेवो पड्यो छे एज ए बाव-नीनी बलिहारी छे. आवां करुणरसनां जे जे काव्यो आपे प्रगट करेलां छे ते पण संग्रहित राख्यां हशे अथवा राखशो ए मारी प्रार्थना छे.

आपनां केटलांक नाटको वांचतां मन मुग्ध थएलुं छे ने बने तो बीजां पण वांचवाने अभिलाषा रहे छे, पण तेम थवुं अशक्य होवाथी वृत्तिने विराम आप्या विना रस्तो नथी.

२६. सौराष्ट्रनी द्वितीय साहित्यपरिषद्‌ना प्रमुख साक्षरवर्य श्रीयुत केशवलाल हर्षद-राय ध्रुव लखे छे जेः—

" स्नेहश्च निमित्तसव्यपेक्षश्चेतिविप्रतिषिद्धमेतत्. "

रसस्वरुप भाई श्रीनथुरामभाई. स्थळ वांकानेर.

महाकवि भवभूतिना उपर आपेला महावाक्यना सत्यनो साक्षात्कार तमारा समागममां में अनुभव्यो. सहवासजन्य प्रीति विदित छे. स्वार्थना ऐक्यथी जामतो स्नेह पण जाणवामां छे. पक्षपातथी प्रकटती प्रणयिताना द्रष्टांत पण शोधवा जवां पडतां नथी, पण निर्निमित सौहार्दनो आविर्भाव विरल छे. प्रेमनी खातर प्रेमनो आस्वाद रसिक हृदय वगर कोण अन्य करावे ?

तमारी छए कृतिओ आदरपूर्वक स्वीकारुं छुं. सहज द्रष्टिपात तो अनिवार्य कुतूहलथी एकेएकमां करी गयो छुं. परन्तु लहेजतथी घूंटडे घूंटडे रस तो अवकाशे पीश.

२७. वडोदराथी " केळवणी " मासिकना मेनेजर श्रीयुत छोटालाल नरमेरामभाई लखे छे जे—

कविराज !

हमणां महिकांठा गेझेटमां आपनुं " कलियुगशतक " वांचीने मने अति आनंद थयो छे. गुजराती भाषामां हिन्दीभाषा तुल्य कवितारचना हुं ए कवितामांज जोउं छुं. शब्द-माधुर्य, प्रसाद, जुस्सो, अने कविताना बीजा उत्तम गुणोथी आ कविता आकर्षक लागे छे. अथवा विशेष शुं कहुं ? आपनी आ कवितावडे आपनी सर्वोत्तम कवित्वशक्ति जोइ हुं बहुज प्रसन्न थयो छुं, अने मारा मननो ते उद्गार आपने जणाव्या सिवाय मारा मनने निरांत न वळवाथी आ पत्र लख्यो छे. केटलीक वस्तुओ एटली सुंदर होय छे के ते बळात्कारे बीजाना माथाने हालवानी फरज पाडे छे. आ कविता ते पैकीनी होवाथी मारी प्रसन्नता आपने व्यक्त करूं छुं.

कविराजे भावनगरमां राजकवि तरीके नियत थया पहेलां पंदर वर्ष पर्यन्त " श्रीविद्यावर्धक नाटकमंडली " नी मालिकी भोगवी हती अने तेमां कुमुदचन्द्रथी आरंभी कबीरविजय अने भक्तकुटुम्ब पर्यन्त लगभग अग्यार नाटको पोताने हाथे लखी भजवाव्यां हतां अने तमाम जनसमाजमां प्रशंसापात्र थयां, विद्वान तथा कविलोकोने ए नाटको वगर टीकोटे बतावबा कविराजे प्रथमथीज प्रथा राखेली हती, जेथी घणा साक्षरोए तेनो लाभ लीधो हतो. अने ए संबंधे पोताना अभिप्रायो पण जाहेर कर्या हता.

२८. विजापुरनिवासी माधवकवि लखे छेः—

कवित्त.

अनीति उखारवेको सुनीति सुधारवेको,
व्यभिचार पारवेको टारवेको तंत्र है ॥
मुदित महाजनकुं सुजन समाजनकुं,
राजनकुं राजनीति पढिवेको मंत्र है ॥
माधव प्रसिद्ध सिद्ध सुंदर सपूत आज,
हाल कलिकालमें उदारताको अंत्र है ॥
कवि नथुराम नाट्यमंडली तिहारी सो तो,
जगतविदित जस पाइवेको जंत्र है ॥

———

आर्यधर्मसागरकी सेतु है पवित्र कैधों,
पुन्यकी प्रकाशक बिनाशक बिरोधकी ॥
सुंदर सपूत तेरे जसको पताका कैधों,
धर्मकी धरीता हे सरिता है सुबोधकी ॥
माधव भनंत गुनवंत यों अनंत कहै,
कैधों है कुठारी कलिकाल तरु क्रोधकी ॥
कवि नथुराम नाट्यमंडली तिहारी सो तो,
मेरे जानिबेमें पाठशाला है प्रबोधकी ॥

२९. कविराज किसनदानजी लखे छेः—

गायनकलाको धाम नाम पर्यो नाटकही,
राजा अरु रंक देख हियो हरषावे है ॥
पूरन प्रतापी शूरवीर निज वेस पुनि,
सती शीलताको धर्म नीत सु निभावे है ॥
कहे किसनेस भक्तजनको रहावे भाव,
मोद मन पावे उक्त उमदा उपावे है,
नथुकवि गावे सो तो पंडित पढावे पुत्र,
शोभा सरसावे रसरीत सु रखावे है ॥
सुंदर सुहात अंग सुंदर मतिको श्रेष्ठ,
सुन्दरके नन्दकी सु कीरत सुनी सही ॥
मोद मन धार बांनी आनन उचार आप,
देखन कवीरको चरित्र मुखसों कही ॥
कहे किसनेस मर्त्यलोग स्वर्गलोग देख्यो,
देखत कवीन्द्र रीत आदिकी सवी सही ॥
कर्यो शुभ काम नथुराम द्रव्य जामाहित,
देखे विन दाम धाम नाटक नवीनही ॥

३०. मीर्जापुर परगणे कोरीपात पोष्ट सीखड मोजे मवईयाना मुन्निराम उर्फे मुनीश चोबाजी लखे छे.

पिंगल पुरान काव्यकोश अलंकार ग्रन्थ,
पढे है अनेक शास्त्र काहूतें न दबि है ॥
संग ही समश्या परिपूर्न करि देत छन्द,
सारदाकी कृपातें उदय मानों रवि है ॥
सुन्दर साहित्य श्लेष मित्रामित्र भाव राखि,
भाखि कहे मुन्निराम दूजो कोन फबि है
विद्याको निधान कविकुलमें तो एसो नांहि,
जैसो महिमंडलमें नाथूराम कवि है ॥

वर्नत सुजस चारु दक्षता निहारि अस.
भौनमें हमेशां वेटो धनद धनी रहे ॥
कहत मुनीश धर्मशीलको निधान तैसो,
सुर द्विज धेनुमँह भगति सनी रहे ॥
हातिमसी हिम्मत सखावत शहानशाहि,
प्रवल प्रताप दया दिलमें घनी रहे ॥
नाथूराम कवि महिमंडलमें मंडलीसु,
रावरी अनोखी कला साहिवी वनी रहै ॥

३१. कानोडना रावजीसाहेव श्रीइन्द्रसिंहजी वहादुरना , अत्यंत मानीता अने रसिकविहारीना शिष्य श्रीयुत नवलसिंहजी राव लखे छे.

कवित्त.

कैधों चित्त पावे मुद चाहक चकोरें चित्त,
कैधों शुभ चाही मोद लीयत ललाम है ॥
कैधों तम घोर जोर मिटि सकुचावे कंज,
कैधों नसे दुर्जन विवादी मति वाम है ॥
कैधों जलसागरको उमगि उफांन लेत,
सोहत प्रसन्न कैधों भाव निज श्याम है ॥

कहत नवल कल सोरहसों काव्यकला,
रेनपति कैधों कैधों कवि नथुराम है ॥

उक्त कवीश्वर पोताना पत्रनो कविराज तरफथी कामकाजना अत्यंत दबाणने लई प्रत्युत्तर नहि मळतां स्नेहनी अभिलाषापूर्वक उपालंभ आपे छे जेः—

वामनकी लकुटी बिराटमें बिसारी नहीं,
सोऊ यश आज तिहुँ लोकमें समावे ना ॥
त्योंही यदुनाथने सुदामा द्विज सख्यताई,
पूरन निबाही ताको कोउ पार पावे ना ॥
नवल भनत त्योंही कवि नथुराम निज,
उर अवरेखो यामें रति झूंठ आवे ना ॥
पूरन कृपालुताको हित प्रगटाय फेर,
केवल बिसर जैवो उचित कहावे ना ॥

३२. मथाणीआनिवासी श्रीयुत बारहट जैतदानजी जेवा कवीश्वरो कविराजना समागमनुं सुख मेळववा केटला इन्तेजार छे ते नीचेना कवित्तथी स्पष्ट समजाय तेम छे.

आयो पत्र रावरो चढायो तत्र सीस तामें,
सुवरन लिखायो त्युंही सुवरन लिखायो है ॥
पढत पढत जाको बढत उछाह वड,
मढत सनेह चित्त महामोद छायो है ॥
प्रिय अर्पनाके कृत पानि लेख दोहा प्राप्य,
झर झर हूमें सुधाझर सरसायो है ॥
ऐसो अभिराम नथुराम हित हेर हेर,
ऐवो वांकानेर बेर बेर मन भायो है ॥

३३. सने १९१७ ना एप्रील मासमां हुं तथा मारा गुरुवर्य लींबडी दीर्घायु युवराज श्रीदिग्विजयसिंहजी साहेबबहादुरना जन्ममहोत्सव प्रसंगे गयेला त्यां झालरापाटणना श्रीयुत् राजकवि मुरारिदानजीनुं मिलन थयुं, ए वखते श्रीझालावंशवारिधिनुं एक पुस्तक के जे प्रेसमांथी नमूना तरीके आवेल हतुं ते उक्त कविराजे प्रेमपुरःसर वांची निम्नलिखित अभिप्राय जाहेर कर्यो.

पिंगल पुरान काव्यकोश अलंकार ग्रन्थ,
पढे है अनेक शास्त्र काहूतें न दबि है ॥
संग ही समश्या परिपूर्न करि देत छन्द,
सारदाकी कृपातें उदय मानों रवि है ॥
सुन्दर साहित्य श्लेष मित्रामित्र भाव राखि,
भाखि कहे मुन्निराम दूजो कोन फवि है
विद्याको निधान कविकुलमें तो एसो नांहि,
जैसो महिमंडलमें नाथूराम कवि है ॥

बर्नंत सुजस चारु दक्षता निहारि अस.
भौनमें हमेशां बेटो धनद धनी रहे ॥
कहत मुनीश धर्मशीलको निधान तैसो,
सुर द्विज धेनुमँह भगति सनी रहे ॥
हातिमसी हिम्मत सखावत शहानशाहि,
प्रबल प्रताप दया दिलमें घनी रहे ॥
नाथूराम कवि महिमंडलमें मंडलीसु,
रावरी अनोखी कला साहिबी बनी रहै ॥

३१. कानोडना रावजीसाहेब श्रीईन्द्रसिंहजी बहादुरना , अत्यंत मानीता अने रसिक-विहारीना शिष्य श्रीयुत नवलसिंहजी राव लखे छे.

कवित्त.

कैधों चित्त पावे मुद चाहक चकोरें चित्त,
कैधों शुभ चाही मोद लीयत ललाम है ॥
कैधों तम घोर जोर मिटि सकुचावे कंज,
कैधों नसे दुर्जन विवादी मति वाम है ॥
कैधों जलसागरको उमगि उफांन लेत,
सोहत प्रसन्न कैधों भाव निज श्याम है ॥

कहत नवल कल सोरहसों काव्यकला,
रेनपति कैधों कैधों कवि नथुराम है ॥

उक्त कवीश्वर पोताना पत्रनो कविराज तरफथी कामकाजना अत्यंत दबाणने लई प्रत्युत्तर नहि मळतां स्नेहनी अभिलाषापूर्वक उपालंभ आपे छे जेः—

वामनकी लकुटी बिराटमें बिसारी नहीं,
सोऊ यश आज तिहुँ लोकमें समावे ना ॥
त्योंही यदुनाथने सुदामा द्विज सख्यताई,
पूरन निबाही ताको कोउ पार पावे ना ॥
नवल भनत त्योंही कवि नथुराम निज,
उर अवरेखो यामें रति झूंठ आवे ना ॥
पूरन कृपालुताको हित प्रगटाय फेर,
केवल बिसर जैवो उचित कहावे ना ॥

३२. मथाणीआनिवासी श्रीयुत बारहट जैतदानजी जेवा कवीश्वरो कविराजना समागमनुं सुख मेळववा केटला इन्तेजार छे ते नीचेना कवित्तथी स्पष्ट समजाय तेम छे.

आयो पत्र रावरो चढायो तत्र सीस तामें,
सुबरन लिखायो त्युंही सुबरन लिखायो है ॥
पढत पढत जाको बढत उछाह बड,
मढत सनेह चित्त महामोद छायो है ॥
प्रिय अर्पनाके कृत पानि लेख दोहा प्राप्य,
झर झर हूमें सुधाझर सरसायो है ॥
ऐसो अभिराम नथुराम हित हेर हेर,
ऐवो वांकानेर बेर बेर मन भायो है ॥

३३. सने १९१७ ना एप्रील मासमां हुं तथा मारा गुरुवर्य लींबडी दीर्घायु युवराज श्रीदिग्विजयसिंहजी साहेबबहादुरना जन्ममहोत्सव प्रसंगे गयेला त्यां झालरापाटणना श्रीयुत् राजकवि मुरारिदानजीनुं मिलन थयुं, ए वखते श्रीझालावंशवारिधिनुं एक पुस्तक के जे प्रेसमांथी नमूना तरीके आवेल हतुं ते उक्त कविराजे प्रेमपुरःसर वांची निम्नलिखित अभिप्राय जाहेर कर्यो.

कवित्त.

सत्ता है अथाह जामें राजत अनेक रत्न,
जगके सुकवि मित्त आशयको जानेंगे ॥
शुद्ध कविधर्म स्वामीधर्मको निबाह्यो सत्य,
अनंत सुवीरजू उछाह उर आनेंगे ॥
कृत्य इतिहासकके रत्नसो कियो है कहुं,
मनि मखवाने भूप मोद बहु मानेंगे ॥
वाह कवि नाथूराम झालावंशवारिधिसो,
बारिधि बनायो जाकों विबुध बखानेंगे ॥

ग्रन्थना लेखक संबंधी आटलो परिचय कराव्या बाद लेख संबंधी उल्लेख करवा लेखिनीने आगळ चलाववी अनुचित नहि जणाय.

श्रीझालावंशवारिधि.

ना

प्रथम तरंगमां—आदि नारायणथी आरंभी वांकानेरना विद्यमान राजराणा अमरसिंहजी सूधीनो संक्षिप्त इतिहास काव्यमां रचेलो छे; तेमां दोहा, सोरठा, रोळा, छप्पय, हरिगीत, पद्धरी तथा मोतीदाम वगेरे मात्रामेळ; अने स्रग्धरा तथा तोटक वगेरे अक्षरमेळ छन्दो के जे आजकाल सर्वत्र प्रचलित छे तेज दाखल कराएला छे, शब्दरचनामां ओज, प्रासाद, अने माधुर्य ए त्रणे काव्यना गुणो स्थळे स्थळे जणाया वगर रहेता नथी, अक्षर सगाईने बनतांसुधी अलग करवामां आवी नथी, अलंकारोने पण कोई कोई स्थळे अवकाश आपवामां आवेलो छे. दाखला तरीके:—

तोटक.

वर वंशज श्रीहरपालतणा, नृपराय सही रणघाव घणा;
पृथिवीपर चक्कर खाइ पड्या, जवरा शवयुत्थ विषे न जड्या.

पृ. २०. छन्द १००

एज पृष्ठमां.

नवसंगर ए स्थलमां निरखी, पृथिवीपति लंगरथी परखी;
गुरु आगळ शिष्य समस्त कहे, रविने गजवी यम राहु ग्रहे ॥

छन्द १०२.

विवेकथी वेण वदे नृपराय, खरा रजपूतथी केम खसाय;

प्र. २१. छ. ११३.

सोरठो.

हाथी ऊपर हाथ, पडतां राय प्रतापीनो;
शाहतणा दिल साथ, दिल्ही आखी डगमगी.

प्र. २२. छ. ११६.

सोरठा.

तेवामां धरी टेक, शत्रु पुरातन सज थया;
आवी चळ्या अनेक, हाला देदा हळवदे. १२२.
जशनामी झलराण, सुभट संग सन्मुख गया;
घाटीले घमसाण, उभय पक्षमां उद्भव्युं. १२३
दिल्हीने दरबार, सबळ हाथ स्थापी गया;
हळवदनाथ हजार, वर्षे पण बिसराय नहि. १२९

झालाकुळमां वीरवर हरपालदेवजीना वंशज रायसिंहजी पछी तेना जेवाज बहादुर वांकानेरना मूळ पुरुष राज सुरतानसिंहजी थएला हता अने तेओए बालपणथीज सहज पराक्रम बतावी ते समयना जनसमाजने आश्चर्यचकित बनावेलो हतो जेमकेः—

सोरठा.

शूरवीर सुरतान, जामनगर जइ पहोंचीआ;
मुदथी आप्युं मान, लाखेणुं लाखाजीए. १७१
कचेरीमां जन कोइ, उचर्यो एवुं एकदिन;
हणनारो को होय, निज कर नग्न कटारपर. १७२
बळियो जेनो बाप, शुं न करे सुरतान ए;
स्थिर रही हणी थाप, कूदी नग्न कटारपर. १७३

छप्पय.

भाणेजे भय छोडी, करी कृति अति अनेरी;
हरख्या हदविण जाम. हाम बालकनी हेरी;

व्हाल धरी वरदान, जे समे जामे दीधुं;
सुरताने ए समय, कुटिल भ्रकुटी कर्री दीधुं;
परघर पेट भरी हजी, दिवस दोहिला गाळीए;
मळे मदद देनार तो, गइ वसुंधरा वाळीए. १७४

सरल छन्दो दाखल करवानुं प्रयोजन पण एटलुंज छे के तेनो सहुकोइ लाभ लइ शके, भाषा साव हलकी वापरवामां आवी नथी; जेथी सामान्य ज्ञानवाळा मनुष्योने कदाच केटलाएक शब्दो समजवा अघरा थइ पडशे, परन्तु ग्रन्थ साथे शब्दकोष पण छापेलो होवाथी एज शब्दो विशेष ज्ञाननी प्राप्ति करावनारा थशे ए निःसंदेह छे.

बीजा तरंगमां—शब्दादि विषयोथी रहित अव्यक्त परब्रह्मथी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति शीरीते थइ ए संक्षेपथी वर्णवी सत्य, द्वापर, त्रेता अने कलियुगनुं केटलुं प्रमाण छे; अने ए प्रमाणने देवना काळथी तथा देवना काळप्रमाणने ब्रह्मना काळथी केटलो केटलो तफावत छे ते जणावी पाद्मकल्पने अंते हाल वाराहकल्प वर्ते छे ए सिद्ध कर्युं छे. आ विषय पौराणिक होवाथी खास मननपूर्वक वांचवालायक छे, अनादि अने अनंत परब्रह्मथी अनादि अने शान्त जगतनी उत्पत्ति बतावतां महत्तत्वथी उपजेलां सात्विकादि त्रिगुणात्मक अहंकारमांना तामस् अहंकारथी शब्दादि तन्मात्राओए जन्म लइ आकाश आदि पंचमहाभूतने जन्म आप्यो तेनुं उत्तम प्रकारे विवेचन करवामां आव्युं छे. अकर्ता ब्रह्म अद्वितीय छतां मोहने लइ सात्विकादि त्रिगुणरुपे कहो के ब्रह्मा-विष्णु अने महेशरुपे सृष्टिस्थिति अने प्रलयना कार्यमां योजाइ कर्ता जेवुं जणावा लाग्युं, तेमां पण ब्रह्माना एक दिवसमां केटली उथलपाथल थइ जाय छे ते बाबत तो बहुज ध्यान खेंचनारी छे.

त्रीजा तरंगमां—ब्रह्मद्वारा पुरुष अने प्रकृतिथी प्राकट्य पामेला ब्रह्माए पृथ्वी आदि पंचमहाभूत तथा देवथी आरंभी स्थावर पर्यन्त स्वेदज आदि चार प्रकारनी सृष्टि उत्पन्न करी अने तेना संरक्षण अर्थे कृषिविद्या सिद्ध कर्या बाद वर्णाश्रमधर्मने स्थाप्या, तेमज ब्राह्मण आदि वर्णने केवां कर्म करवाथी केवुं स्थान प्राप्त थाय छे वगेरे लोकोपयोगी बाबतो वर्णवेली छे. आमां सत्य अने द्वापर पर्यन्त वनमां के समुद्र किनारे वीतरागीपणे आनंदपूर्वक भ्रमण करनारी अने अल्प आहार विहारथी महान तृप्ति माननारी प्रजानो चितार अने ते पछी त्रेतायुगनी शरुआतथी सराग थएली प्रजानी दुर्दशा अने वासनानी वृद्धि लइ ममत्वनी जबरी जाळमां जकडातां नगर, किल्लाओ वगेरे बनावी संसारसुखने माटे वेठवी पडती विटंबनाओनुं उमदा विवेचन करवामां आव्युं छे अने ते ब्राह्मण आदि दरेक वर्णने कर्तव्यमां एक सारा शिक्षकनी गरज सारे तेम छे.

चोथा तरंगमां—ब्रह्माना ९ मानसपुत्रोमां भृगुनुं प्रथमपद भृगुथी मृकंडनी उत्पत्ति,

मृकंडथी मनस्विनी नामनी नारी विषे मार्कंडेयनो उद्भव, पुरुषना सर्वांगपरत्वे सामुद्रिकनुं वर्णन, सामुद्रिकपरथी जणाइ आवेलुं मार्कंडेयनुं अल्पायु, पितानी आज्ञाथी परम ब्रह्मचर्यने पाळी ब्राह्मणोने नमवानो नियम राखनारा मार्कंडेयने सप्तर्षिना समागमथी मळेलो दीर्घायुनो आशीर्वाद, जे स्थळे सप्तर्षिओए बालमार्कंडेय साथे मित्रता बांधी ए तीर्थस्थाननुं "बालसख्य" एवुं नाम जाहेर थवुं, एज स्थळे मृकंडऋषिए भगवान ब्रह्मानी मूर्तिनुं स्थापन करवुं तथा मार्कंडेये उत्तम गुरु पासे वेदाध्ययन करवुं वगेरे वर्णवेलुं छे. आ ग्रन्थ ज्ञालाकुळना यथास्थित वृत्तान्तने प्रसिद्धिमां लाववा लखाएल होवाथी तेमज तेना आदि पुरुष मार्कंडेयनी उत्पत्ति स्वायंभुव मन्वंतरमां थएली होवाथी आदि नारायणथी आरंभी समग्र हकीकत लखवानुं योग्य जणातां कविराजे पुराणोनुं मथन करी माखण जेवी मुलायम, शुभ्र अने मनोरंजक वावतो उद्धृत करी वाचकवर्ग माटे जे उदारता बतावी छे ते कोइथी भुली शकाय तेवी नथी. कारणके म्होटां म्होटां पुराणो वांचवा जेटलो समय हालना प्रवृत्तिमय जीवनमां मळी शकवो मुश्कील होवाथी अमुक मुदते आ एकज ग्रन्थ वांचवाथी अगणित विषयोनुं ज्ञान कराववा तेओश्रीए जे अथाह श्रम उठावेलो छे ते खरेखर प्रशंसापात्र छे. मातापितानो बाळक प्रत्ये केवो विशुद्ध अने निःस्वार्थ प्रेम होय छे ते मार्कंडेयनुं चरित्र वांचवाथी मालुम पडे तेम छे; वनमां निवास करनारा ऋषिमुनिओ केवा पवित्र मनना अने उदारचित्त होय छे ते मार्कंडेय साथे थएली ऋषिओनी मित्रतानां बावयो वांचवाथी समजी शकाय तेम छे; जो मार्कंडेये पितानी आज्ञाथी ब्राह्मणोने नमवानो नियम कायम राख्यो तो अल्पायु छतां दीर्घायु थवा ते समर्थ थयो. माटे "नम्युं ते प्रभुने गम्युं." ए कहेवत जरापण खोटी नथी. नमवाथी कंइ नीचा वापना थइ जवातुं नथी; उद्धताइ प्राणीमात्रने अधम गतिए पहोंचाडनारी छे. नम्रता ए वळहीनपणुं नहि, परन्तु दैवीगुण छे. ए मार्कंडेयना चरित्रथी स्पष्ट रीते जाणी शकाय तेम छे; पुरुष केवां लक्षणोथी केवा नीवडे छे ते जाणवा माटे सर्वांगपरत्वे लखाएलुं पुरुषनुं सामुद्रिक अवश्य वांचवा योग्य छे. वेदाध्ययन करवा जतां पहेलां नैष्ठिक ब्रह्मचर्य केवी रीते पाळवुं ए विषय पण उत्तम वर्ण माटे कंइ ओछो उपयोगी नथी.

पांचमा तरंगमां—पुत्रप्राप्तिथी गृहस्थाश्रमनी पूर्णाहुति समजी महात्मा मृकंडऋषिए वानप्रस्थाश्रम स्वीकारवो, मार्कंडेयनो तीर्थाटन करी योग साधवानो तीव्र मनोरथ तथा वैराग्य, बाद तेणे इश्वरभजनअर्थे मातपिता पासे विदायगिरि मागवी, परंतु मातापिताए गृहस्थाश्रमनी उत्तमता बतावी तेनो अंगीकार करवा पुत्रने कहेवुं, मार्कंडेये मातापितानी आज्ञाने मान्य राखवी, स्त्रीओनां शुभाशुभ सामुद्रिक लक्षण, मार्कंडेय माटे धूम्रवती नामनी शुभ लक्षणवाळी ऋषिकन्याने पसंद करवी, पुरुष तथा स्त्रीओना उद्भवनो हेतु, आठ प्रकारनां लग्न, अने तेनुं विवेचन, मार्कंडेयनी साथे धूम्रवतीनां ब्राह्मलग्न, धूम्रवतीनुं पति प्रत्ये सद्वर्तन, ज्ञानी मार्कंडेयने सुशीला स्त्रीना समागमथी मळेलुं संसार-सुख अने "वेदशिरा" नामना पुत्रनी प्राप्ति, योग्य वये पहोंचेला वेदशिराने मार्कंडेये आपेलो सद्वर्तन संबंधी बोध, बाद पोतानां धर्मप-

त्नीनी आज्ञा लइ मार्कंडेयनुं योगसाधनामां प्रवृत्त थवुं वगेरे दरेक वावतो मनुष्यजीवन उच्च बनाववाना आदर्शरुप छे, नजरे जोया वगर अथवा तो कन्याना गुणदोप तरफ द्रष्टि कर्या विना केवळ जाति तथा कुळथीज पोताने कृतकृत्य माननारा वाळलग्नना हिमायतीओने बुरां परिणामथी वचवा माटे स्त्रीनां शुभाशुभ सामुद्रिक लक्षण अने लग्नप्रकार तेमज शरीरयात्राने सफळ करवा इच्छनार प्राणीमात्रने सदूवर्तन सबंधी पंक्तिओ वारंवार मनन करवा लायक छे.

छठ्ठा तरंगमां—हिमालयनी अंदर हर्षपूर्वक मुनिवर मार्कंडेये शीत आदि संकष्टोने सही साधेला अष्टांगयोगनुं वर्णन करेलुं छे, एमां योगीओ माटे आश्रम (रहेठाण) केवुं होवुं जोइए, तेमज प्राणायामना विपयमां पूरक, कुंभक अने रेचकना नियमोने समज्या वाद ध्यान अने समाधिनी सिद्धि अर्थे मूल, जालंधर अने उड्डियान नामना त्रिवंधपुरःसर सूर्यभेदन आदि आठ प्रकारना कुंभकनुं विवेचन अने मुद्राकरणविधि योगसाधनानी अभिलाषावाळा उत्तम जनोने अलौकिक आनंदनी प्राप्ति करावथामां शंका वगर समर्थ थइ शके तेम छे.

सातमा तरंगमां—मार्कंडेये ज्यांसुधी योगसाधना करी त्यांसुधीमां थइ गएला स्वायंभुव आदि छ मनुओ सबंधी सविस्तर कथा लखाएली छे; जेमां अन्तर्गत बोधक टुचकाओ एवा तो असरकारक छे के जे अनेक प्रकारनुं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करवा माटे दरेक मनुष्यने वारंवार वांचवानी आवश्यक्ता छे. वासना प्राणीमात्रने केवी पीडा उत्पन्न करनारी छे ते वरुणानदीने किनारे अरुणास्पद नामना गाममां रहेनारा विप्रना चरित्र उपरथी समजी शकाय तेम छे. पोताने घेर परम निवृत्ति अने आनंदपूर्वक धर्मकर्मनुं आराधन करता उक्त ब्राह्मणने अतिथिनां आगमन अने समागमथी जो पृथ्वी उपरना रमणीय प्रदेशो जोवानी इच्छा उद्भवी तो तेणे पोताने त्यां आश्रित वनी आवेला अतिथिनो आश्रय लेवो पड्यो अने तेना पासेथी मंत्रप्रसादी मेळवी पगे दिव्य लेप लगावी हिमालय तरफ प्रयाण कर्युं, परन्तु बरफमां गमन करवाथी उक्त लेप धोवाइ जतां नित्यकर्मअर्थे घेर जवा अशक्त वनी गयो, आमतेम अथडातां तेने वरुथिनि नामनी देवांगनानो मिलाप थयो, परंतु तेणीना कर्ममां कामवृत्तिनुं विपम फळ अनुभववानुं लखाएल होवाथी ते ब्राह्मणने घेर जावानो उपाय नहि वतावतां पोता साथेज भोग भोगववा आजीजी करवा लागी, धर्मनिष्ठ ब्राह्मणे तेना सौन्दर्य आदिथी लेशपण चलायमान न थतां गार्हपत्य अग्निनुं स्मरण कर्युं, धर्मात्मा प्राणीपर देव सत्वर प्रसन्न थाय छे, ते दुनियाने वतावत्रा उक्त ब्राह्मणना अंगमां अग्निए प्रवेश करी तेने घेर पहोंचवानुं सामर्थ्य आप्युं. क्रोधना परिणामथी पूर्वे अपाएला शापो अने तेथी थती तपनी हानि वगेरे बोधक वावतो स्वायंभुवथी आरंभी छठ्ठा चाक्षुपमन्वंतर पर्यन्त छटादार शब्दोमां लखाएली छे अने तेमां शृंगार, वीर, हास्य तथा करुण वगेरे रसोनी जमावट पण जेवी जोइए तेवी करवामां आवी छे.

आठमा तरंगमां—वद्रिकाश्रममां पुष्पभद्रा नदीने किनारे दीर्घायु मुनिराज मार्कंडेयना महान तपथी इन्द्रने भय, इन्द्रे तेमनुं चित्त चलायमान करवा मोकलेली अप्सराओनो काम-

चेष्टा, मुनिराजनुं अडगपणुं, नरनारायणे प्रकट थइ तेओने दर्शन देवां तथा माया बतावबी, बाद मार्कंडेयने थएलो शिवपार्वतीनो समागम, विश्वपतिनुं वरप्रदान करी विदाय थवुं, राक्षसोना उपद्रवथी बद्रिकाश्रममां रहेला ऋषिमंडले मार्कंडेय पासे जइ पोताना रक्षण अर्थे एक पराक्रमी पुरुषनी मागणी करवी, मार्कंडेये योगबळे अग्निकुंडमांथी " कुंडमाल " नामना वीरनरने प्रकट करी तेने ऋषिमंडलना रक्षण अर्थे सदैव सज्ज रहेवानी आज्ञा आपवी, ऋषिओनो मार्कंडेय प्रत्ये सहर्ष आशीर्वाद वगेरे बाबतोनो समावेश करवामां आव्यो छे तेमां मुनिवर्य मार्कंडेय निष्कामवृत्तिथी तप करता हता तोपण सकाम धर्माचरणथी उच्चपदने पामेला इन्द्रने भय उत्पन्न थतां तेणे मुनिनुं मन डगाववा अनेक उपायो कर्या परन्तु ज्यां मनज नहोतुं त्यां ए डगावे कोने ? अप्सरा तो शुं पण एक कुरुपी स्त्रीना न जेवा हावभावथी हृदयमां विह्वळताने स्थान आपनारा कलिना महात्माओ दुनियानुं कल्याण शीरीते करी शके ? मनुष्यथी आरंभी देव पर्यन्त जेम जेम महत्ता प्राप्त थती जाय छे तेम तेम भय वधतो रहे छे. दुनियामां ज्यारे धनवानने निर्धन थवानो भय, हृष्टपुष्टने दुर्वळ थवानो भय, सुखीने दुःखी थवानो भय, संभावितजनोने अपयशनो भय, त्यारे अति उन्नति पामेला इन्द्रने अवनतिनो भय उद्भवे ए स्वाभाविक छे, परंतु भय ए उत्कृष्ट हृदयनी निशानी नथी, क्षुद्र मनवाळाओज एवा भयथी आकुळव्याकुळ बने छे. पूर्वे ऋषिओ योगबळथी नवी सृष्टि उत्पन्न करी शकता ए मार्कंडेये करेला " कुंडमाल " ना उद्भव उपरथी साबीत थाय छे. जो ए लोकोमां एवुं योगबळ न होत तो राक्षसोना उपद्रवथी तेओ कदीपण तप आदि उत्तम कर्मोनुं आचरण करी शकत नहि. आ उपरथी मनुष्ये एटलो बोध अवश्य लेवानो छे के उत्तम कर्म करनाराओने दुर्जनरुपी राक्षसो कदीपण पराभव पमाडी शकता नथी, केमके सत्कर्मना करनारना वचनमां सिद्धि होय छे. ए धारे ते करी शके छे. अने तेओ मार्कंडेये मेळवेला ऋषिओना आशीर्वादनी माफक अन्य प्राणीओनी शुभेच्छाओने प्राप्त करी मानवदेहने कृतकृत्य बनाववामां सर्वांशे सफळ थइ शके छे.

नवमा तरंगमां—ऋषिओना यज्ञयागादि कर्मोमां विघ्नरुप थता राक्षसो साथे वीरवर कुंडमाले करेलुं प्रचंड युद्ध, पराजय पामेला राक्षसोनुं बद्रिकाश्रममांथी पलायन, शक्तिए कुंडमालने प्रसन्न थइ वरप्रदान करवुं, पोताना कुळमां जनेतारुपे अवतरवानुं शक्ति पासेथी वरदान मेळवी कुंडमालनुं चमत्कारपुर तरफ विदाय थवुं, त्यां ऋषिमंडले कुंडमालने करेलो विधिवत् राज्याभिषेक, स्त्रीनुं नखशिख वर्णन, सर्वांगसुंदरी पुष्पमाला नामनी कन्या साथे कुंडमालनां लग्न, ऋषिमंडले पोताना राजा तथा राजराणीने आशीर्वाद साथे आपेलो सद्बोध, पुष्पमालानी पतिभक्ति परायणता, पछीथी तेने गर्भाधान, गर्भवती स्त्रीए आचरवालायक व्यवहारनो अंगीकार करी पूर्ण मास थतां पुष्पमालाए कंदर्प समान कान्तिवाळा " कामिक " नामना पुत्रने जन्म आपवो, योग्य वये ज्ञानसंपन्न थएला पुत्र कामिकने चमत्कारपुरनी राजगादी आपी कुंडमालनुं ईश्वरना आराधनमां दृढसंकल्प थवुं, वगेरे बाबतोनुं वर्णन करवामां आव्युं छे. ज्ञातिकुळना मूळपुरुष मार्कंडेयना पुत्र कुंडमाले राक्षसो साथे युद्ध कर्युं हतुं एम बारोटना चोपडामां

लखेलुं हतुं परन्तु ते राक्षसोनां नामठाम वगेरे कंइपण उपलब्ध नहि होवाथी काल्पनिक सृष्टि रचवामां अजब कौशल्य धरावता कवीश्वरे चंडास्य, चंडाक्ष अने सिंहानन नामना दैत्योने कल्पी आसुरी सैन्यनुं मायावी युद्ध बहुज उत्तम प्रकारे बताव्युं छे. झालाकुळमां राज हरपालदेवजी शंकरना अंशावतार हता अने तेने शक्ति वर्यां हतां ए उल्लेख अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थमां अस्तित्व भोगवतो होवाथी तेनुं समर्थन करवा कुंडमालपर पिनाकपाणिए प्रसन्न थइ तेना कुळमां पितारुपे अवतरवानुं तथा शक्तिए प्रसन्नतापूर्वक जनेतारुपे अवतरवानुं वरदान आपवुं वगेरे बीजरुप वृत्तान्त श्रीझालावंशवारिधिनी वस्तुसंकलनाने एटलां तो जेव आपनारां छे के जे वांचवाथी उत्तरोत्तर रसवृद्धि जणाती रहे छे; कामी माणसनुं केवी रीते मृत्यु थाय छे ते मोहिनीरुपा शक्तिए चंडास्य अने चंडाक्ष आदि राक्षसोने मांहोमांहे लडावी मारी करावेल समूळ विध्वंसथी समजी शकाय तेम छे, ए उपरांत स्त्रीनुं नखशिख वर्णन, ऋषिमंडले आपेलो राजाने सद्बोध, स्त्रीपुरुषो परस्पर केवुं वर्तन राखवाथी सुखी जींदगी गाळी शके तेमज गर्भवती स्त्रीओए उत्तम संताननी प्राप्ति माटे केवा नियमोनुं पालन करवानी जरुर छे वगेरे व्यावहारिक विषयो पण जाणवा जेवा छे.

दशमा तरंगमां—महात्मा कुंडमालजोनी वानप्रस्थ अवस्था, वानप्रस्थाश्रम संबंधी संक्षिप्त विवरण, कामिकनी राजनीति, एथी कुमार वृषकेतुनो जन्म, ए वृषकेतुथी कल्याण अने कल्याणथी राजर्षि कुन्तनी उत्पत्ति, ऋषिओने दुःख देवा असुरोनुं फरी उद्यत थवुं, महाराजा कुन्तनी युद्धअर्थे तैयारी, विजय आपनार इन्द्रध्वजने विधिवत् ग्रहण करी तेनुं पूजन करवुं, धवलकुमारसमेत बद्रिकाश्रममां जइ राक्षसो साथे रोमहर्षण युद्ध करी विजय मेळववो, पछीथी ऋषिमंडलनो आग्रह थतां महाराजा कुन्ते खास विश्वकर्माने हाथे एक सुंदर शहेर बंधावी तेने "कुन्तलपुर" एवुं नाम आपवुं. आ जगोए शिल्पशास्त्रने आधारे किल्लाओ, शहेरो, राजमहेलो, वगीचाओ, दिवानने रहेवानां गृहो, सेनापति वगेरेने रहेवानां गृहो, तेमज ब्राह्मण आदि चातुर्वर्ण्यने रहेवानां गृहो केटला प्रकारनां होय छे अने केवां बांधवाथी केवुं फळ मळे छे, वगेरे सविस्तर वर्णवेल छे; ए उपरांत अश्वशाळा, गजशाळा, गौशाळा, तेमज शहेरना रक्षणअर्थे अष्टप्रकारना यंत्रोनी कृति पण दर्शावेली छे. कुन्तलपुर तैयार थया बाद यज्ञ करवानी इच्छावाळा राजर्षि कुन्तने ऋषिमंडले "मखवान" एवुं पद आपवुं के जेनो अपभ्रंश अत्यारे "मकवाणा" ए रीते थयो छे. आ तरंगमां दाखल करेला घणाखरा विषयो राजाओने अत्यंत उपयोगना छे; कारणके युद्धनी बाबत अने तेने अंगे इन्द्रध्वजना पूजननो विधि, तेमज सुंदर शहेर बांधवाने लगती केटलीएक हकीकत शिल्पशास्त्रने आधारे बहूज सारीरीते दर्शाववामां आवी छे; शहेरना रक्षण अर्थे यंत्रोनो माप पण बनाववामां आव्यो छे, अत्यारे आंबानी गोठली वावी तुरतमां वृक्ष अने तेमां फळ लावी बतावनारने आपणे जादुगर अथवा नजर बांधी लेनार तरीके लेखी लइए छीए, परंतु तेवा प्रयोगो शास्त्रमां लखेला छे अने ते आ तरंगमांज शहेरने अंगे वगीचा तैयार करवानी बाबतमां वृक्षमांथी लता अने लतामांथी वृक्ष कर-

वानी वातो वांचकने सत्य समजाया विना रहेशे नहि. आपणां शास्त्रोमां समग्र विद्या समाएली छे, परंतु आलस्य अने बेदरकारीने लीधे आपणे तेने उध्धृत करी उपयोगमां लइ शकता नथी, जेम गंगाकिनारे रहेनाराओने गंगाना महिमानी गम होती नथी तेम आपणे पण आपणां शास्त्रो प्रत्ये अनुद्योगमयी अश्रद्धा वतावी आ समये सर्वस्व गुमावी वेठा छीए, एज विद्याना प्रतापथी आजे पाश्चिमात्य प्रजा शा शा बुद्दाओ उठावी रही छे तेनो कंइक ख्याल आपणने सांप्रत युद्ध प्रसंगे आप्यो छे. जेम स्त्रीओ निर्माल्य पुरुषनो त्याग करी बुद्धिमान अने वीरनरने वरे छे तेम पूर्वनी लक्ष्मी अने सरस्वती घणा वर्ष थयां हिन्दमांथी अपसरण करी रही छे; ए बन्ने व्यक्तिओ दैवी छे, तेनो प्रेम आर्यदेश उपर कंइ ओछो नथी, हजुपण पोतानी समृद्धिनो केटलोएक अंश तेओए आपणा माटे राखेल छे, ज्यारे कोइ उत्तम व्यक्तिने उत्तम गृह आश्रय न आपे त्यारे तेने अन्य स्थळे जवानी जरुर पडे छे तेम लक्ष्मी अने सरस्वतीने पण न छूटके पश्चिममां प्रवेश करवानुं पसंद करवुं पड्युं छे, हजुपण जो ए भारतने जागृत वनेल अने उद्योग आदि सद्गुणोथी मालवाळो जोशे, तो फरी पोतानां दिव्य अंगथी पूर्वने देदीप्यमान कर्या विना रहेशे नहि. झालाकुळमां "मकवाणा" अवटंकथी व्यवहार थतो सांभळवामां आवे छे, ए व्यवहारने सावीत करवा कविराजे राजर्षि कुन्तने ऋषिमंडले आपेलुं "मखवान" पद अत्यंत योग्यरीते गोठवी झालाकुळ उपर महान उपकार कर्यो छे, खरीरीते विचारी जोतां मकवाणानो मूळ शब्द "मखवान" सहुकोइ सुज्ञजनो कबूल करी शके तेम छे, अने ते झालाकुळने परंपराथी प्राप्त थएल छे, छतां उक्त पदनां गौरवथी अज्ञात क्षत्रिवर्गने युक्तिपुरःसर पोताना धर्मपरायण पूर्वजोनुं स्मरण करावी तेवां आचरणो द्वारा तेओ पोतानां कल्याणनी साथे प्रजानुं पण कल्याण करी शके एवा हेतुथी कवीश्वरनी कलमे जे साहस उठाव्युं छे ते विश्वमां तेओनी शोभाने वधारनारुं वने एमां कंइ अतिशयोक्ति नथी.

अग्यारमा तरंगमां—राजर्षि कुन्तना स्वर्गवास पछी धवलकुमारथी आरंभी महाराजा चाचंगदेव सुधी कुन्तलपुरमां राजधानी रहेवी, चाचंगदेव आदि चार वन्धुओ यादवना भाणेज हता अने सहुथी न्हाना मालदेवजी हस्तिनापुरीना दौहित्र हता, एक वखत सिंहना शिकार प्रसंगे ए पांचे भाइओमां परस्पर कलह थयो, मालदेवजीए हस्तिनापुरनी मदद मेळवी म्होटा भाइ साथे युद्ध कर्युं अने कुन्तलपुरनुं धवलछत्र पोताने मस्तके धर्युं, त्यारे चाचंगदेवजीए पोताना कुमार सालणदेवजी सहित त्यांथी चाली नीकळी पूर्वमां तुंवरजातिना राजपूतो राज्य करता हता तेने हरावी गढ सीकरीनुं राज्य स्वाधीन कर्युं अने त्यांना तख्तपर कुमार सालणदेवजीने देसाड्या. आ जग्याए पुष्यस्नानविधि, सिंहासन, खड्ग, ढीग, मोती तथा मणिमाणिक्य वगेरेनां शुभाशुभ लक्षण साथे हीरा वगेरेनी उत्पत्ति तथा तेनी परीक्षा आदि उपयोगी बावतो सविस्तर वर्णवेली छे. बाद चोसठ कळाओनुं निरुपण करी सीकरीना छेल्ला अधिपति सारंगदेवजी सुधी कोण कोण अने केवा महाराजाओ थया तेनुं बयान करेल छे. तेमां सिंहना शिकार प्रसंगे चाचंगदेवजी आदि पांचे भाइओमां थएलो कलह कलियुगनी प्रतीति कराव-

नारो छे. " आ में कर्युं " ए अभिमान कहो के अहंकार प्राणीमात्रने अनेक प्रकारना अनर्थोनो कर्ता बनावे छे. मालदेवजीए शास्त्रमर्यादाने उल्लंघी म्होटा भाइ विरुद्ध खड्ग उठाव्युं ए अहंकारनी पराकाष्टा लेखी शकाय. जो के शिकार तेमनीज बहादुरीथी थयो हतो तोपण वडिलजनोथी विपरीत वर्तवुं ए न्हानाओनो धर्म नथी. चाचंगदेवजीने सीकरीना राज्यनी प्राप्ति थइ अने तेनो परिवार अद्यापि झालावंशविभूतिरुपे विराजमान छे. सृष्टिना समारंभथी अत्यारसूधी नवखंडरुपी अभिनव अवयववाळी रंगबेरंगी तृणपुष्पादि परिधानने धारनारी तेमज दश दिशाओरुपी मर्यादाने वहन करनारी वसुंधरानी विशाल गोदमां अगणित धीरवीरो क्रीडा करी करी काळने वश थइ गया. ब्राह्मण आदि चार वर्णोमांथी क्षत्रिओज तेना पति तरीके पूजाया छे, अन्य वर्णोए तो वसुंधराने माता तुल्यज मानेली छे; त्यारे शुं पृथ्वीना पति ए वैश्य आदि वर्णोना पिता समजवा ? हा, शास्त्रकारो चोख्खुं कहे छे के राजा पिता समान छे अने प्रजा तेनां बालबच्चां छे. बधा क्षत्रिओ कंइ राजा बनी शकता नथी, राजपद पूर्वपुण्योपलब्ध छे, पृथ्वीनो उपभोग अनेक राजाओ करी गया, करे छे अने करशे; तेमज वैश्य आदि पण मातृभावे पूजन करी तेनाथी अनेक प्रकारना लाभ मेळवे छे, अने मेळवशे, छतां अन्य स्त्रीओनी माफक वसुमतीने वृद्धत्व प्राप्त थयुं नथी ए तेना अनुपम धैर्यनी निशानी छे; कारणके तेने पुत्रना जन्मथी आनंद के मृत्युथी शोक प्राप्त थतो नथी; त्यारे अहीं एक नवी शंकाने अवकाश मळशे के पृथ्वीना अनेक पतिओ थइ गया छे, अने थशे तो पछी कुलटामां अने महावंदनीय मनाती वसुमतीमां तफावत शो ? एनो खुलासो मने तो मात्र एज जणाय छे जे पृथ्वीए कोइने पति तरीके स्वीकार्यो नथी, ए तो कायम कन्यास्वरुपेज स्थित थएली छे, तेने घणा पुरुषो पोतानी मानी गया छे, माने छे अने मानशे तो पण ए कोइनी साथे गइ नथी, जती नथी अने जशे पण नहि; कुलटा स्त्रीथी कंइ उत्तम फळनी आशा राखी शकाती नथी, अने वसुंधरा तो कामधेनु समान सहुकोइने इच्छित आपवा सर्वदा सज्ज रहेली छे. झालाकुळना पूर्वजो पण ए पृथ्वीना पूर्वभाग–हिमालयथी खसता खसता सीकरी सुधी आव्या अने त्यां कुमार सालणदेवजीनो राज्याभिषेक थयो, अभिषेकना अन्य विधिओमां पुष्पस्नानविधि महत्वनो छे ते केवी रीते करवाथी केवां उत्तम फळनो आपनार थाय छे तेमज खास राजाओने माटे सिंहासन बनाववामां काष्ठ कइ जातनुं जोइए अने तेनो माप केटलो होवो जोइए वगेरे शास्त्रीय बाबतो एवी तो स्पष्ट रीते वर्णववामां आवी छे के जे आजे पण उन्नतिनी अभिलाषावाळा अवनिपतिओने ते प्रमाणे करवामां कंइ कठिनता छेज नहि. राजाओ माटे वस्त्र तथा अलंकार केवी जातना होवा जोइए तेमज ते वस्त्र आदि क्या नक्षत्रमां धारण करवाथी शुभ फळ आपनार निवडे वगेरे कल्याणकारी विषयोने आमां स्थान आपवामां आव्युं छे; हीरा वगेरे ज्वाहिरना गुणदोष तेमज खड्ग बनाववानो विधि अने एनी बनावट समये तेमां थती विक्रियाओथी तेमज म्यानमांथी काढती वखते तेमां जणातां चिह्नो उपरथी समजवा जेवुं भविष्य राजाओने माटे एक अखूट संपत्ति सरखुं छे. तेनी साथे गायन आदि चोसठ कळाओनुं

निरुपण तो दरेक मनुष्यने उपयोगी थइ पडे तेवुं छे. दुनियामां चोसठ कळाओ छे एम घणा-खराए सांभळेलुं छे, पण ते कळाओनां नाम अने विवेचन तो ज्यारे श्रीझालावंशवारिधिनो अग्यारमो तरंग वंचाय त्यारेज ध्यानमां आवे तेम छे. जो के उक्त कळाओनो विषय शास्त्रीय छे अने अनेक विद्वज्जनो तेनुं विवेचन करी गया छे तो पण कवीश्वरे ए महान् विषयने संक्षेपे एवो सरस अने सरलताथी समजी शकाय तेवो लख्यो छे के जे वांचवाने माटे वाचकोनुं मन ललचाया वगर रहेशे नहि.

बारमा तरंगमां—राज सारंगधरजीना कुमार कृपालदेवजी गादीसीकरीनो त्याग करी शुभ शकुन जोइ पश्चिममां पधार्या अने त्यां तेओए कीर्तिगढ नामना शहेरनी अंदर पोतानी राजधानी स्थापी ए ऐतिहासिक कथानी अंदर अनेक प्रकारनां शकुन अने तेथी थतां शुभा-शुभ फळनुं सविस्तर वर्णन करेलुं छे, त्यारबाद विजयना अभिलाषी राजाओए करवा लायक अश्व, गज, तथा मनुष्यना पूजननो विधि बतावी कृपालदेवजीथी जयमलजी सुधीना महारा-जाओनुं वृत्तान्त आपेल छे अने त्यारथीज “ मखवान ” नो अपभ्रंश “ मकवाणा ” थयो छे, ते पछी जयमलजीना पिता नरभ्रमरे पोताना राणंगजी आदि आठ पुत्र के जे पटाया कुमारो हता तेने पोतानी हयातीमांज गरास वहेंची आपेलो होवाथी ए राणंग आदि आठ भाइओथी राणंग, बापल, लूणंग, बालायच, खवड, बुहा, विठ्ठल तथा हांफा नामे मकवाणानी आठ शाखाओ प्रसिद्ध थवी, कीर्तिगढना महाराजा जयमलजीथी वाघसिंहजी अने वाघसिंहथी व्यास मकवाणानो जन्म, तेओए करेली कीर्तिगढनी आबादी, वर्षाना भविष्यत् ज्ञान अर्थे गर्भधारणथी आरंभी प्रवर्षणकाळ पर्यन्तना विधियोग अने तेथी थतां शुभाशुभ फळनुं सवि-स्तर वर्णन, छेवटे मकवाणा व्यासथी कुमार केसरदेवजीनो जन्म, वगेरे बाबतोनो सन्निवेश करवामां आव्यो छे, तेमां ज्योतिःशास्त्रने आधारे शकुननो विषय अत्यंत स्पष्टताथी विस्तार-पूर्वक लखाएलो छे, दिशाओ तथा सूर्य आदि ग्रहो कइ कइ स्थितिमां केवां नाम धारण करे छे अने पशुपक्षी आदि शकुननां प्राणीओ केवी स्थितिमां कइ दिशा तरफ गति करवाथी तथा बोलवाथी केवां फळ आपे छे ते खरेखर वांचवा लायक छे, पूर्वे राजाओ राज्यनी लगाम हाथमां लीधा बाद तुरतज अमुक प्रदेशपर विजय मेळवता अने जयनी प्राप्ति अर्थे अश्व, गज तथा मनुष्य आदिनुं शास्त्रोक्त रीते पूजन करता, जो के अत्यारे ए प्रथानो तद्दन लोप थइ गयो छे, तोपण विजयनी इच्छाथी रहित हृदय तो कोइनां नहिज होय. तेमज पोताना वडवाओए स्थापन करेली प्रथा उपर प्रेम नहि राखे एवा कोइपण आर्य नरेश्वरो हशेज नहि. मात्र आवा गूढ विषयनी अज्ञानता दूर करवा अर्थे आ पुरातनी प्रथा सदा कायम रहे एवा कारणथी दीर्घदृष्टिवाळा कविश्वरे जे जे उत्तम विषयो चर्च्या छे ते भविष्यमां सहुनुं श्रेय करनारा छे. मखवानो अपभ्रंश मक-वाणा अने तेनी राणंग आदि आठ शाखाओ के जेने आजे झालाना दरेक वंशजो जाणे छे ते व्यवहार कोना समयमां प्रचलित थयो ए जाणवा माटे आ तरंग घणोज उपयोगी छे. वळी दुनियानी उन्नतिनो आधार वर्षापर रहेलो छे. साहित्यकारो तो वसंतनेज ऋतुराज एवुं नाम

आपे छे, कारणके तेना साम्राज्यमां नयनानन्दजनक विविध वृक्षलताओ प्रफुल्लित बनी सुगन्धि समीरद्वारा घ्राणेन्द्रियने तृप्त करे छे. कोकिल आदि पक्षीओनां कलरव कर्णेन्द्रियमां अमृतसमान कोइ अपूर्व रस भरे छे. आम्र आदि मधुर फळो रसेन्द्रियद्वारा ग्रहण करी सहुकोइनां हृदय ठरे छे; परन्तु वर्षानो महिमा कांइ एथी उतरतो नथी. अमे तो छए ऋतुओमां प्राणरुप वर्षाने प्रमाणीए छीए, प्राण विना जेम देह शून्य छे, तेम वर्षा विना अन्य ऋतुओ आनंददायक बनवा समर्थ छेज नहि. जो वर्षानो अमल आनंदमय उजवाय तोज शरद् पोतानी शोभा बतावी शके, शिशिर दंत आदि अंगोने कंपावी शके, हिंमत संयोगीओने भावी शके अने वियोगीओने तावी शके, तेमज वसंत पण पोतानी ज्योति त्यारेज जाहिरमां लावी शके के ज्यारे प्राव्हट् महाराजानी प्रसादी प्राप्त थएल होय, तेनी साथे ज्यारे ग्रीष्म दुर्जननी माफक भीष्म बनी डर आपवा लागे छे त्यारे वर्षा विना तेनुं अभिमान तोडवा कोण सामर्थ्य धरावी शके तेम छे ? बस, एटलाज माटे ऋतुराज तो खरेखर वर्षाज छे के जेनाथी समग्र सृष्टि जीवनमय बनी जाय छे; ए ऋतुना भविष्यत् ज्ञान माटे गर्भधारणथी आरंभी प्रवर्षणकाळ पर्यन्त रोहिणी आदि नक्षत्रोना विविध योग अने तेथी उद्भवतां शुभाशुभ फळनुं विवेचन पण अवश्य वांचवा योग्य छे.

तेरमा तरंगमां—कुमार केसरदेवजीए उत्तम गुरु पासेथी मेळवेलुं अगाध ज्ञान अने तेओना मुखथी श्रवण करेलो संपूर्ण राजधर्म, मकवाणा व्यासनो कैलासवास, तेओनी अन्तिम आज्ञा मुजब केसरदेवजीए करेलुं गाम शमीना सुमरा हमीर साथेनुं युद्ध अने तेमां तेओने मळेलो विजय वगेरे बाबतनुं विवेचन कराएलुं जोवामां आवे छे.

राजाओ बीजा गमेतेटला विषयोनुं गमेतेटलुं ज्ञान मेळवे, परन्तु ज्यांसुधी राजधर्मनो विषय न जाणता होय त्यांसुधी तेनुं अन्य समस्त ज्ञान वृथा छे. कारणके प्रजापालन ए राजाओनुं मुख्य कर्तव्य छे अने ए कर्तव्यने कीर्तिमय बनाववा राजधर्म ए एक उपयोगी बाबत छे. राजाओनो धर्म ए राजधर्म, राजधर्म नहि जाणनारो राजा अधर्मी कहेवाय एमां आश्चर्य नथी. वंदनीय व्यासभगवाने महाभारतमां विस्तारपूर्वक लखेला राजधर्मनुं दोहन करी अति संकोच के अति विस्तार नही करतां तेनुं समग्र रहस्य आमां दाखल करेलुं द्रष्टिगोचर थाय छे, अने ते दरेक राजाओए अक्षरे अक्षर याद राखवा योग्य छे. जेओ पितानी आज्ञाने मान्य राखवा प्राणोत्सर्ग जेवा विकट कार्यमां पण योजाय छे ते विजयशाळीज बने छे ए केसरदेवजीए करेला सुमरा हमीर साथेना युद्धथी साबीत थाय छे.

चौदमा तरंगमां—मकवाणा केसरदेवजीनी प्रशंसापात्र राजनीति, तेओए सिन्धदेशनी अंदर स्थापेलां अनेक शिवालयो, भिन्न भिन्न देवमंदिरो अने प्रतिमाओ बनाववानो विधि तथा तेनाथी थतां शुभाशुभ फळो, वृद्धावस्था प्राप्त थया छतां पुत्रप्राप्ति नहि थवाथी केसरदेवजीए करेलुं शंकर उपर उग्र तप, पिनाकपाणिनुं प्रसन्न थवुं, केसरदेवजीनी शंकरसमान पुत्र पामवानी आकांक्षा, शंकरे तेओने त्यां अंशरुपे अवतरवा तथा “ राज ” पदवीथी प्रसिद्ध

थवा आपेलुं वरदान, वाद केसरदेवजीने त्यां हरपाल आदि दश पुत्रोनो जन्म, केसरदेवजीने थएलुं एक महान ज्योतिषीनुं मिलन, ज्योतिषीना गुणदोष संबंधी विवरण, ज्योतिषीए भाखेलुं केसरदेवजीनुं अवशेष अल्पायु, रणांगणमां प्राण छोडवा केसरदेवजीए करेलो संकल्प अने हमीर सुमराने मोकलावेलुं युद्धनुं आमंत्रण, उन्हाळाने लीधे घासपाणीनी तंगी होवाथी हमीरनी आनाकानी, केसरदेवजीए तेने माटे खोदावेला कुवाओ तथा ववरावेलां यवनां क्षेत्रो, आ स्थळे दकार्गल (भूमिगत जलपरीक्षा) नो विषय सविस्तर दाखल करेलो छे के जेमां कइ जगोए केटला पुरुष खोदवाथी अने केवां चिह्नो जणावाथी पाणी नीकळशे वगेरे जाणवा-लायक उपयोगी बावतोनुं विवेचन करवामां आव्युं छे. बाद हमीर सुमरा साथे केसरदेवजीनुं भयंकर युद्ध, अने तेमां सात कुमार सहित तेमनुं समरशायी थवुं, सहुथी न्हाना बे कुमारोनुं घायल थवुं, तेमांना एकने कोळी तथा बीजाने मुसलमान उपाडी गएला होवाथी तेना वंश-जोनुं " कोलीमकवाणा तथा मोलीसलाम मकवाणा " ए रीते प्रसिद्ध थवुं अने कीर्तिगढनो कबजो सुमरा हमीरना हाथमां जवो वगेरे बाबत वर्णवेली छे. तेमां कया देव माटे केवां मन्दिरो अने कया देवनी केवी प्रतिमा बनाववी ते आजकाल एक सरखां मन्दिर अने सरखी प्रतिमा बनावनारने माटे बहुज उपयोगी छे. देवनी प्रतिमा शास्त्रोक्त प्रकारे बनाववामां आवी होय अने तेनी स्थापना विधिपुरःसर करवामां आवी होय तो ते दैवी चमत्कारथी भक्तजनोने अभिष्ट आपवामां समर्थ थइ शके छे, परन्तु गमे ते पत्थरने गमे ते स्थळे उभो करी चन्दनादि चढाववाथी कोइपण प्रकारनो लाभ थतो नथी; उलटा व्हेम आदिथी ते हानिकारक थवा संभव छे, माटे समज्या विना अर्थात् शास्त्रना आधार विना देवमंदिरो के प्रतिमा तैयार कर-वामां धर्म करतां धाड आवी पडवानो सर्वदा संभव रहे छे. आथी देवमन्दिरो न बांधवां एम कहेवानो आशय नथी, ए कार्य तो अति उत्तम छे. जो नहोत तो पूर्वना शिष्यजनो तेनो कदी पण समारंभ न करत. श्रीमद् भगवद्गीता जेवा जगत्वन्द्य पुस्तकमां श्रीकृष्ण परमात्माए कह्युं छे जेः—

" यद्यदाचरति श्रेष्टस्तत्तदेवेतरोजनः "

श्रेष्टपुरुषो जे जे आचरण करे छे तेनुं अनुकरण इतरजनो करे छे, तो देवमंदीर आदि कर्म पण श्रेष्टपुरुषो करी गया छे ते धर्मात्मकज छे, तेनुं अनुकरण करवानी इच्छावाळा समृद्धिसंपन्न प्राणीओए मान्यवर मकवाणा केसदेवजीनी माफक ते सघळी क्रिया शास्त्रमां बनाव्या मुजब करवा अमारी खास भलामण छे. ते उपरांत मकवाणा केसरदेवजीना उग्र तपथी प्रसन्न थएला महादेवे तेमने त्यां अंशरूपे अवतरी जे भक्तवत्सलता प्रदर्शित करी ते प्रसंग पण भारे आकर्षक छे. वळी ज्योतिषी संबंधी गुणदोष, राजाओने माटे ज्योतिषीनी आवश्यक्ता अने ज्योतिर्विद्याथी समजी शकातुं आयुष्य आदि सर्वेनु प्रमाण ए विषय तो खास वांचवा लायक छे. रणांगणमां प्राणनो परित्याग करवो ए क्षत्रीओने माटे मानसूचक छे ते मकवाणा केसर-देवजीए हमीर सुमरा साथे बीजी वखत करेला युद्ध उपरथी जाणी शकाय तेम छे. दुश्मनने

युद्धनुं आमंत्रण करी, तेने अन्नपाणी वगेरे पुरुं पाडी मकवाणा केसरदेवजीए जे मननी महत्ता बतावी ते बीजा क्षत्रीवीरो बतावी शकशे के ? युद्धनो प्रसंग प्राप्त थाय त्यारे प्रतिपक्षीनां साधनोनी पायमाली केम करवी अने दुश्मने सर करती वखते पोताना देशने केवी छिन्नभिन्न स्थितिमां खाली करवो एवाज विचारवाळा अनेक राजाओनां चरित्रो ऐतिहासिक ग्रन्थो वांचवाथी मालूम पडे छे. त्यारे मकवाणा केसरदेवजीनुं बीजी वखतना युद्धनुं वृत्तांत ए सर्वथी विपरीत छतां चढती कोटिनुं अने गौरव प्रदर्शक जणाया वगर रहेतुं नथी, एज प्रसंगे कवीश्वरे गोठवेलो दकार्गलनो अर्थात् कइ जगोए केटलुं खोदवाथी अने केवां चिन्हो जणावाथी केटलुं पाणी निकळशे ए विषय अर्थात् भूमिगत जलपरीक्षा आखी दुनियाने उपयोगी बनी शके तेम छे. कारणके जीवन (जळ) उपरज समग्र सृष्टिनो आधार छे. विशेषमां राज हरपालदेवजीनो जन्म, झालाओने " राज " पदनी क्यारथी प्राप्ति थइ अने " कोली मकवाणा " तथा " मोलीसलाम मकवाणा " ए बे शाखाओनो उद्‌भव शीरीते थयो ए पण आज तरंगमां बतावबामां आव्युं छे.

पंदरमा तरंगमां—समग्र कुटुम्बना क्षयथी असह्य शोकने वहन करता श्रीमान हरपालदेवजीनो गहन वनमां प्रवेश, मार्कंडेयनुं मिलन, तेओना मुखथी राजहरपालदेवजीए सांभळेलो आपद्धर्म, मुनिवर्य मार्कंडेयना बोधथी आश्वासन पामेला हरपालदेवजीनुं पाटण तरफ प्रयाण, वर्षाऋतुनुं वर्णन, पाटणना पादरमां पहोंचेला हरपालदेवे पंथना परिश्रमने लीधे विश्रान्ति लेवी, रात्रिवर्णन, प्रभातवर्णन, पुरवर्णन, हरपालदेवजीने थएलो प्रताप सोलंकीनो मिलाप, सोलंकीना आग्रहथी हरपालदेवजीए तेमने त्यां मिजमान बनी जवुं, प्रताप सोलंकीना पुरातन गृहनुं वर्णन, सोलंकी सुता (शक्ति) ना समागमथी परस्पर उद्‌भवेलो पूर्वानुराग, बाद राज हरपालदेवजीनुं धनुर्वेदना आचार्य तरीके महाराजा कर्णनी मुलाकाते जवुं, पाटणनी बजारनुं वर्णन, राजमार्गनुं वर्णन, राजद्वारनुं वर्णन, कचेरीनुं वर्णन, राज हरपालदेवजीनो त्यां प्रवेश, तेओनी शौर्यभरित मुखमुद्रा तथा चेष्टाथी महाराजा कर्णने थएलो संतोष तथा अन्य राजकीय जनोना अन्तःकरणमां उपजेली इर्षा, महाराजा कर्णना आग्रहथी हरपालदेवजीए तेमने एकान्तमां संभळावेलो धनुर्वेद, नूतन तथा राज्यना संरक्षणमां अत्यंत सहायभूत थनारी धनुर्वेद संबंधी सविस्तर कथा श्रवण करी आश्चर्य पामेला नरपति कर्णे हरपालदेवजीना हाथ नीचे केटलाएक क्षत्रीओना बाळकोने धनुर्वेदनुं शिक्षण अपाववुं वगेरे बाबतोनो समावेश करेलो छे. एमां मूळ बाबत तो एटलीज छे जे कीर्तिगढनो कबजो मुमरा हमीरना हाथमां जवाथी तेमज पिता तथा बन्धु आदिनो क्षय थवाथी हरपालदेवजी पाटण पधार्या अने महाराजा कर्णने मळी पोतानां बुद्धिबळथी अत्यंत माननीय थया. हमेशां ऐतिहासिक बाबत एवी होय छे के वांचनारने कंटाळो आव्या विना रहेज नहि, अमुकना अमुक थया अने तेणे अमुक वर्ष राज्य भोगव्युं ए जाणवाथी दुनियाने शुं लाभ ? कदाच जेना कुळनी हकीकत होय तेने तो भावे कभावे पण वांचवानुं मन थाय, परन्तु जेओने जे नामेथी कंइ सबंध न होय ते पण ते

नामोनुं प्रेमपूर्वक स्मरण करे एटला माटे तेओनी वार्त्ताने विविध वर्णनोथी विभूषित करवामां आवे तोज तेमां रहेला रसनुं पान करवा साहित्यप्रेमीओ पण ललचाय; एवाज हेतुथी झालाकुळनी कथाने पण रंगवामां आवी छे अने तेथी विस्तार पण घणो थएलो जोवामां आवे छे, के जे ग्रंथना नाम प्रमाणे जरुरनो छे; नाम वारिधि अने संपत्ति सरिता जेटली होय तो लेखकने उपहासपात्र थवुं पडे अने एवी भूल सारा लेखको कदीपण न करे. कुदरतने चाहनाराओमां आ तरंग विविध वर्णनोने लइ अत्यंत आवकारदायक थइ शकशे ए निर्विवाद छे. राजाथी ते रंक पर्यन्त सुखदुःख, संपत्ति विपत्ति, चडती पडती तथा लाभ हानि वगेरे युग्मो एकसरखी रीते काम करी रह्यां छे; कारणके ए वस्तुओ कुदरती छे, अने कुदरतनो सर्व माथे एकसरखो काबु छे, पक्षपात वगेरे अमानुषीय (राक्षसी) कर्त्तव्यने सारा माणसो पण ज्यारे आश्रय नथी आपता त्यारे कुदरत-प्रभु के दैव जे मनुष्यथी कोटि प्रकारे उच्च कोटिनां छे, तेनी पासे तो तेने अवकाश क्यांथीज मळे ? आम कहेवानो हेतु मात्र एटलोज छे के आपत्तिने समये राजाओए केवुं वर्तन राखवुं ते जाणवा माटे आ तरंगमां लखाएलो आपद्धर्म जीवनने उन्नत बनाववा माटे दुःखसमुद्रमां डुबेलाओने एक सबळ आधार सरखो छे, वर्षावर्णन रसिकजनोने रसबोळ बनावी अपूर्व आनंद आपनारुं छे, शंकरना अंशावतार राजहरपालदेवजीनुं तथा शक्तिनुं चरित्र अने तेने अंगे रात्री, प्रभात, पुर, बजार, राजमार्ग, राजद्वार अने राजसभा आदिनां वर्णनो वारंवार वांचवाथी पण तृप्त थवाय तेम नथी.

राज हरपालदेवजी जेवा दैवी नरने डाकलाना डमडमाटथी आवेशमां आवी “ हाउ हाउ ” करता एक अभण भुवा तरीके अने शक्ति जेवां दैवी प्राणीने दुनियामां त्रासरुप देखाती एक डाकण तरीके आलेखवामां साक्षर नंदशंकरभाइए जबरी थाप खाधी छे, मारा धारवा प्रमाणे तेमां तेओनो बिलकुल दोष नथी कारणके तेओए तो भाटचारणो पासेथी जेवी हकीकत सांभळी तेवी लखी काढी, तो पण सारा लेखक माटे ए शरम जेवुं तो खरुं. कोइ कहे के गर्दभ जेवो कोकिल उच्चार करे छे, अथवा तो मनुष्य खड खाय छे तो शुं ए वात साची मानी लेवी ? एमां कंइक बुद्धिनो पण उपयोग करवो जोइए; अधम प्रकृत्ति-वेपबादला वगेरेथी उत्तम प्रकृतिनुं अनुकरण करवा उद्यत थाय, परन्तु उत्तम प्रकृति अधम प्रकृतिनुं अनुकरण करे ए बनवालायक छेज नहि, कारण के—

“ क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे ”

शुं हरपालदेवजी सरखा क्षत्रीवीरमां बळ नहोतुं के ए एक हलका भुवा तरीके महाराजा कर्णना मंदिरमां प्रवेश करे ? शुं एटलोए एने पोताना कुळगौरवनो ख्याल नहि होय ? के शुं एटलोए एने अधम प्राणी तरीके प्रसिद्ध थतां अपयशनो भय नहि होय ? अमारा मगजमां तो ए वात कोइ रीते योग्यता मेळवी शके तेम नथी. कवीश्वरे धनुर्वेदना एक उत्तम आचार्य तरीके तेओनुं महाराजा कर्ण साथे जे मिलन कराव्युं छे तेज योग्य छे अने तेम करवाथी वर्तमान अने भविष्यना राजाओना हित माटे धनुर्वेद जेवो एक गूढ विषय जे वहार

आव्यो छे ए ओछा आनंदनी वात नथी. आजसूधी आपणे एमज समजता हता के कवायद (लश्करी तालीम) अंग्रेजोना समयमांज जन्म पामेली छे, परन्तु धनुर्वेदनो विषय वांचवाथी मालूम पडे छे के ते आदिकाळथीज अस्तित्व भोगवती आवे छे, तेमां युद्धनां दरेक अंगोनुं जेमके सेनापति अने पैदल वगेरे केवा राखवा, कोना सन्मुख केवा संयोगोमां लडवुं के ना लडवुं, राजाओए पोतानी आसपास रक्षको केवा राखवा वगेरे समग्र बाबत स्पष्टताथी लखाएली छे.

सोळमा तरंगमां हरपालदेवजीना शिष्योए महाराजा करणनी आकांक्षाथी करी बनावेला धनुर्वेदना अखतराओ, प्रसन्न थएला पाटणना पतिए वधारेलो हरपालदेवजीनो दरज्जो, अन्य राज्यकीय जनोना हृदयमां प्रकटेलो विद्वेषाग्नि, कचेरीमां हरपालदेवजीना बाहुबळनी कसोटी, हरपालदेवजीना भाला साथे तणाएली जाजमपर बेठेला अमीरउमरावोना उंधा पडी जवाथी जामेलो हास्यरस, हरपालदेवजीनो क्रोध, करणनुं गभरावुं, पाछळथी शान्त्वन, प्रकट थएली सबंधनी पिछाण, हरपालदेवजी प्रत्ये करणनुं सहोदर समान वर्णन, शरदृऋतुनुं वर्णन, हरपालदेवजीनो वैभव, सोलंकी सुतानी स्थिति, पुत्री म्होटी थवाथी प्रताप सोलंकीने थती अमाप चिन्ता, तेने शक्तिए आपेलुं धैर्य, वार्षिक प्रथा प्रमाणे खंजनदर्शन (दिवाळीघोडा जोवा) अर्थे निकळेला महाराजा करणने राजहरपालदेवजीए संभळावेल खंजनदर्शनना विविध प्रकार तथा तेनां शुभाशुभ फळ, बाद महाराजा करणे राज हरपालदेवजीने एकान्तमां कहेली पोतानी कष्टकथा, हरपालदेवजीनी हिम्मत, करणना राजमहेलमां बाबरानो बूमाट, ए बाबरा साथे हरपालदेवजीए करेलुं बाहुयुद्ध, अन्योन्य मर्दनवडे थती उभयनी हारजीत, शक्तिए अद्रश्यपणे राज हरपालदेवजीने आपेलुं उत्तम ओसाण, हरपालदेवनी हाक सांभळी बाबरानुं हारवुं, तथा प्राण बचाववा खातर स्मरण करती वखते सेवामां हाजर थवानुं वचन आपी कायमने माटे करणना महेलमांथी विदाय थवुं, राज हरपालदेवजीए राक्षस साथे करेला युद्धना अथाह परिश्रमने लीधे क्षुधातुर थवुं अने महाराजा करणनी पशुशाळामांथी बे घेटां मंगावी स्मशान भणी जवुं, काळीचतुर्दशीनी अंधकारमय बीहामणी रात्रीनुं वर्णन, स्मशानभूमिनुं वर्णन, हरपाल्देवजीनी हिम्मत जोवा अद्रश्यपणे शक्तिए करेलो साथ, चिताना अग्निमां घे.ानुं मांस शेकी शेकी हरपालदेवजीए क्षुधानुं शमन करवुं, पाछळथी शक्तिए हाथ प्रसारतां तेने पण उक्त मांसना कवल आपता जवुं, मांस खलास थया छतां शक्तिए हाथ लंबाववो, हरपालदेवजीए हिम्मतथी पोतानी जांघ चीरी तेमांथी काढेलो मांसनो कोळीओ आपवो, शक्तिनी प्रसन्नता, वरदान, हरपालदेवजीने वरवानुं वचन आपी शक्तिनुं अद्रश्य थवुं, हरपालदेवजीनुं उतारे जवुं, बीजे दहाडे प्रतापसोलंकीने घेर शक्ति साथे थएलां राज हरपालदेवजीनां तात्कालिक लग्न, लग्नक्रिया करावनार मसालीया गामना रहीश ब्राह्मणना बाळकने राज हरपालदेवजीए पोताना कुळगोरनी पदवी आपवी, पाटणमां दिवाळी अने तेनुं वर्णन, बेसता वर्षने प्रसंगे भराएलो महाराजा करणनो दरबार, हरपालदेवजीए करेला उपकारनो बदलो

आपवा करणनी इन्तेजारी, बीजुं कांइ नहि लेतां एक रात्रीमां जेटलां गामने गागरबेडां तथा तोरण बंधाय तेटलां गामो पोताने अर्पण करवा हरपालदेवजीनुं करणने कहेवुं, करणे करेलो ए वातनो स्वीकार, शक्ति अने बावरानी सहायताथी हरपालदेवजीए त्रेवीशसो गामने झांपे बांधेलां गागरबेडां तथा तोरण, करणने थएलुं आश्चर्य तथा तेणे पोतानुं समग्र राज्य राज हरपालदेवजीने आपवुं, हरपालदेवजीए तेमांनां पांचसो गाम करणनी राणीने व्हेन तरीके कापडानां आपी बाकीनां अढारसो गामना स्वतंत्र मालिक बनवुं, तथा शक्तिनी सलाहथी पाटडीनो अंदर राजधानी स्थापवी, शहेरने सुसमृद्ध करवा तथा राजकीय वैभव वधारवा हाथी, घोडा अने गाय आदि चतुष्पदनी खरीदी अर्थे देशावरमां मोकलवा नियत करेला माणसोने ते ते पशुओनां क्षेत्रोनी तथा शुभाशुभ लक्षणनी आपेली सविस्तर समजूति, बाद राज्यमहेलो तथा देवमन्दिरो बंधावी राज हरपालदेवजीनुं पाटडीना एक उत्तम राजा तरीके प्रसिद्ध थवुं वगेरे वृत्तान्तनो समावेश करवामां आव्यो छे, तेमां राज हरपालदेवजीनुं अने शक्तिनुं चरित्र वांचतां ए बन्ने व्यक्ति दैवीगुणोथी देदीप्यमान हती एम कबूल कर्या विना छूटको नथी; कारणके बावरा जेवा समर्थ असुरने पराभव पमाडी एकज रात्रीमां त्रेवीशसो गामने गागरबेडां तथा तोरण बांधवां ए मानवशक्तिथी न बनी शके तेवी बाबत छे. वळी पाटडीमां राजधानी वसाव्या बाद हाथी, घोडा, गाय वगेरे चतुष्पदनी खरीदी माटे विदेशमां मोकलवा नियत करेला माणसोने राज हरपालदेवजीए समजावेल ते ते पशुओनां क्षेत्रो तथा शुभाशुभ लक्षण राजाओने माटे खास उपयोगनां छे. गुणदोष जोया विना मात्र रूप उपरथीज मोहित थइ हाथी तथा हय आदिनो संग्रह करनारा राजाओ लाभने बदले हानिना भोक्ता थइ पडे छे अने एटलाज माटे पशुनां शुभाशुभ लक्षण समज्या बाद खरीदवानी सहुकोइ श्रीमानने भलामण करवी अयोग्य नहि गणाय.

सत्तरमा तरंगमां—शिवना अंशावतार हरपालदेवजीनुं तथा शक्तिनुं परस्पर प्रशंसनीय वर्तन, पुरुष करतां स्त्रीजातिनी उत्तमता, शय्या केटला प्रकारनी होय छे अने ते केवी बनाववाथी केवां फळ आपे छे तेनुं संक्षिप्त विवेचन, सुभग अने दुर्भग पुरुषनां लक्षण, शक्तिने रहेलो गर्भ, श्रीमान सोढाजीनो जन्म अने त्यारबाद अनुक्रमे लींबडीना मूळपुरुष मांगुजी, शखेराजजी तथा पुत्री उमादेनी उत्पत्ति, कुमारोनी क्रीडार्थे खरीदेला कूर्म, कुक्कुट, शुक, सारिका, मयूर, तथा श्वान आदिनां शुभाशुभ लक्षण, राजमार्गमां कुमारोनुं रमवुं, गजशाळामांथी मदोन्मत्त हाथीनुं छूटवुं, सर्वत्र शोरबकोर, कुमारोना अंगरक्षकोनी विह्वळतापूर्वक दोडादोड, कुमारोनी निर्भयता, हाथीनो ए तरफ हल्लो, पराभवनी आशंकाथी गोखमां बेठेलां शक्तिए पोताना रत्नजडित कंकणोथी अद्भुत रमणीयताने धारण करनारा चार भुजोने प्रकट करी त्रणथी त्रणे कुमारोने झाली लेवा, तथा चोथा हाथथी तेओनी साथे रमता चारणना बाळकने टापली मारी आघे उडावी देवो अने त्यारथी मकवाणा वंशनुं " झाला " एवी अवटंकथी प्रसिद्ध थवुं. तथा राज्यना दसोंदी चारणकुळनुं " टापरीआ " कहेवावुं, राज हरपा-

लदेवजीनी उपरामवृत्ति, तेओए उत्तम ज्योतिषीना मुखथी सांभळेली सविस्तर मृत्युपरीक्षा, दिव्य, भौम अने आन्तरिक्ष नामना अनेक उत्पातोनुं विवेचन तथा तेनां शुभाशुभ फळ, छत्रभंग करावनारा उत्पातनी उत्पत्तिथी पाट्वीकुमार सोढाजीने थएली चिन्ता, शक्तिनुं राज हरपालदेवजी तथा पुत्री उमादे सहित धामा-गामने पादर पृथ्वीमां समाइ जवुं वगेरे बावत वर्णवेली छे. संसारमां स्त्री अने पुरुष ए बन्नेना हृदयनी ऐक्यता होय तोज सुखनो अनुभव करी शकाय छे, एटला माटे ए बन्नेए केवुं वर्तन राखवाथी हृदयनी ऐक्यता जळवाइ रहे ते जाणवा माटे राज हरपालदेवजी तथा शक्तिए राखेलुं परस्पर वर्तन खास वांचवा लायक छे; पुरुष करतां स्त्रीजातिनी उत्तमता आदिथीज शिष्टजनोए मान्य राखेली छे, कारणके मानवरत्ननो उत्पत्ति एनाथीज थाय छे अने ते जाते उत्तम केळवणी लइ संततिने उत्तम प्रकारे केळवी शके छे अने तेना दाखलारूपे सीता, सुलोचना, अनसूया तथा सावित्री आदि अनेक आर्य अबळाओनां चरित्रो अद्यापि विद्यमान छे, लखी वांचो समजी शके एटलुं जोइतुं ज्ञान प्राप्त करी जे कन्याओ माता पासेथी पूरती गृहकेळवणी मेळवी सासरीए सिधावे ते अवश्य स्त्रीजातिनी उत्तमता बतावी शके छे, मात्र विद्या संबंधी केळवणीथीज स्त्रीओ पोताना पतिने के कुटुम्बीओने संतोष आपी शकती नथी, परन्तु ते साथे गृहकेळवणीनुं ज्ञान शर्करामिश्रित दूध जेवो स्वाद आपे छे. आजकाल स्प्रींगवाळा लोढाना पलंगो दरेक राजाओ अने धनाढ्य गृहस्थोना शयनभुवनमां जोवामां आवे छे. गृहस्थो तो गमेतेवी शय्यापर शयन करे तेमां कहेवा जेवुं कंइए नथी, परन्तु राजाओ के जेमां इश्वरनो अंश रहेलो छे तेने माटे शय्या केवी होवी जोइए अने तेनाथी केवां शुभाशुभ फळनी प्राप्ति थाय छे ते आ तरंगमां शास्त्रोक्त शय्याप्रकार वांचवाथी प्राचीन विद्वानो जगहित अर्थे केवुं काम करी गया छे ते समजाया वगर रहेवाशे नहि. केमके लाखो मनुष्योनुं हित एक राजा करी शके छे, ए राजाओनुं हित इच्छवुं ए दरेक सुज्ञनुं कर्तव्य छे, अने एवाज आशयथी कवीश्वरे आवा गूढ अने बारीक विषयने प्रकाशमां लाववानो प्रयत्न कर्यो छे, सुभग अने दुर्भग पुरुषनां लक्षण पण ओछां आकर्षक नथी, जेम अमृत जीवाडनार छे अने झेर मारनार छे तेम झेर जेवा दुर्भग पुरुषनां लक्षणने दूर राखी सुधासमान सुभग पुरुषनां लक्षणोनुं अनुकरण करी मनुष्ये उन्नति मेळववा आकांक्षा राखवी जोइए. आजकाल राजाओ पोताना राजमन्दिरमां कुकडा, जंगली काचवा, शुक, सारिका अने श्वान आदिना उपरना रूपथी अंजाइ गुणदोषनी तपास कर्या विना भेळां करे छे, पछी ते विपरीत फळने आपे तेमां नवाइ शी ? एवां विपरीत फळ हवे पछीना सुज्ञ नरेशोने भोगववां न पडे एटला माटे उक्त प्राणीओना गुणदोष अने तेथी थतां शुभाशुभ फळनुं विवेचन आ तरंगमां बहु उत्तम रीते करेलुं छे. मकवाणाओ " झाला " शीरीते कहेवाया अने तेना दसोंदी चारणनी " टापरोआ " एवी संज्ञा शी रीते थइ ए पण आ तरंगमांज बताववामां आव्युं छे; ते उपरांत मृत्युपरीक्षानो विषय पण दरेक मनुष्ये मननपूर्वक वांचवायोग्य छे.

अढारमा तरंगमां—राज सोढाजीथी आरंभी शांतलजी पर्यन्त झालानरेशोनी संक्षिप्त

हकीकत, शांतलजीए " शांतलपुर " वसावी त्यां राजधानी स्थापवी, तेओना विजयपाल आदि कुमारोए पोताना मामा वाघेला लूणकरण साथे करेला प्रचंड युद्धनुं वर्णन, ए युद्धमां राज शांतलजी तथा तेना बे कुमारोनुं काम आववुं, शांतलपुर वाघेला लूणकरणने हाथ जवुं, राजविजयपाले पाछी पाटडीमां राजगादी स्थापवी, ते पछी राज उदयसिंहजी सूधीनुं संक्षिप्त वृत्तान्त, ए उदयसिंहजीना पृथीराज तथा वेगडजी नामना बे कुमार, चित्तोडना लाखाराणानी कुंवरी साथे थएलो वेगडजीनो संबंध, वरातनुं चितोड जवुं, राणानी मददथी फटाया कुमारने पाटडीनी गादी प्राप्त थवी, पाटवी पृथीराजनुं राणा साथे व्हारवटुं, वेगडजीए पोताना वडिल बन्धुने समजावी १२० गाम सहित "थळा " नी जागीर आपवी के जेना वंशजो "थळेचा" झाला कहेवाय छे. त्यारबाद राजवेगडजीथी आरंभी राजरणमलजी सूधीनुं वृत्तान्त, मरुदेशान्तर्गत " जालिनेरकोटडा " नामना गाममां परणेला राजरणमलसिंहजीनुं सासु वगेरेना आग्रहथी त्यां जवुं, चोपाटनी रमतमां सोनगरा राठोडो साथे थएलो झगडो, राजरणमलसिंहजीनुं केद पकडावुं, ए समाचार पाटडीमां पहोंचतां पाटवीकुमार छत्रसालजीनुं सैन्य सहित त्यां जइ जालिनेरकोटडाने भांगवुं तथा सोनगराओने भयभीत बनावी पिता सहित पाटडी पधारवुं, राजरणमलसिंहजीना स्वर्गवास पछी छत्रसालजीए गढ मांडलमां राजगादी स्थापवी, तेओने त्यां जेतसिंह आदि तेर कुमारोनो जन्म, राजजेतसिंहजीए पोताना राघवदेव आदि बार बन्धुओने आपेलो विट्ठलगढनो गरास के जेना वंशजो हाल रायपुर तथा नरवर वगेरे स्थळे छे. अमदावादना बादशाह अहमदशाहना शाहजादापर राजजेतसिंहजीए करेलो हल्लो अने ए वैरने लीधे करवो पडेलो गढ मांडलनो परित्याग, कंकावटी उर्फे कुवागढमां स्थापेली राजधानी, राजजेतसिंहजीथी राजवाघजी सूधीनुं संक्षिप्त वृत्तान्त, राजवाघजीए लूंटेलो जूनागढना नवाब बोडीआनो खजानो, नवाब साथे दुश्मनाइ, महाभारत युद्ध, माणसनी भूलने लीधे राजवाघजीए जनाना साथे करेला संकेतनुं विपरीत परिणाम, साडात्रणसो क्षात्रबाळाओनुं एकीसाथे विशाल कुवामां पडी मरवुं, कुवानो केर, बार हजार यवनोने मारी पांच हजार क्षात्रसुभटो साथे राजवाघजीनुं समरशायी थवुं, तेओना पाटवीकुमार रायधरजीए हळवदमां राजगादी स्थापवी, केटलीएक आश्चर्यजनक कथा, फटाया कुमार राणाजीने राजगादी मळवी, पाटवीकुमार अजाजी तथा सजाजीनुं प्रथम मारवाड तथा पछीथी मेवाडमां जवुं. अने त्यां बहादुरीथी म्होटी प्रतिष्ठा मेळवी सादडी तथा देलवाडा वगेरे रियासतोना मालिक बनवुं, दसाडाना मलेक बखनी साथेना धींगाणामां राजराणाजीनुं मृत्यु, तेना पुत्र मानसिंहनुं हळवदनी गादीए बेसवुं. अमदावादना बादशाह बहादुरशाहे म्होटी फोज मोकली हळवदने स्वाधीन करवुं. मानसिंहजीए कच्छमां जइ " मानकुवा " नामे गाम वसाववुं, तथा पोताना निमकहलाल नोकर भागाजीने साथे राखी बादशाहथी व्हारवटुं खेडवुं. तेना पाळल पडेली बादशाही बार, मानसिंहजीपर पडेली महान आपत्ति, हटलोकोए बुद्धिपूर्वक करेलो राजमानसिंहजीनो बचाव. बादशाही स्वारोनुं चाल्या जवुं. बाद मरणीआ बनी युद्ध बादशा-

इने मारवानो मनोरथ करी प्रागाजी साथे राजमानसिंहजीनुं अमदावाद जवुं, मार्गमां मुशीवत, मेघली रात्रीनुं वर्णन, साबरमतिने पेलेपार पहोंची किल्लानी ओथे उभेला राजमानसिंहजीए सांभळेलो बादशाह तथा बेगमनो संवाद, ए उपरथी तेओए करेली बादशाहने अरज, बादशाहना दिलमां प्रकटेली रहेम अने तेना तरफथी प्रभातमांज राजमानसिंहजीने हळवदनी हकुमत पाछी मळवी, हळवदमां राजमानसिंहजीनुं आगमन, राज्यनी दुर्दशा, नंदवाणाओनी नीचता, राज्यना हित अर्थे निमकहलाल प्रागाजीए रचेली युक्ति अने तेमां आपेलो आत्मभोग, राजघेला मानथी शरु थएलो जाडेजाओ साथे दिकरीओ लेवादेवानो सबंध, राजमानसिंहजीनो कैलासवास थतां पाटवीकुमार रायसिंहजीनुं हळवदनी गादीए बेसवुं, वगेरे वृत्तान्त द्रष्टिगोचर थाय छे, तेमां मुख्यत्वे झालाकुळना कया कया नरेशोए केवा केवा संयोगोमां कये कये स्थळे राजधानी स्थापी अने तेनी शाखाओ हाल कइ कइ जगोए विद्यमान छे ते विस्तारपूर्वक वर्णववामां आव्युं छे, "कुवाना केर" नी हकीकत पण हृदयने कंपायमान करे तेवी छे, राजमानसिंहजीपर केवी विपत्ति पडी हती अने ए विपत्तिमां तेओए धैर्यपूर्वक शी शी चेष्टाओ करी हती ते विषय वांचतां भाविनी जेटले दरज्जे प्रबळता मानीए तेटली ओछीज छे. मेघलीरात्रीनुं वर्णन, बादशाह बेगमनो संवाद अने प्रागाजीनी निमकहलाली ए दरेक विषय ज्ञान साथे भिन्न भिन्न रसनुं भान करावे छे. झालाकुळनो जाडेजाओ साथे दीकरीओ लेवादेवानो सबंध क्यारनो थयो ए पण आ तरंगमां बतावबामां आवेलुं छे.

ओगणीशमा तरंगमां—राजरायसिंहजीना सद्गुणोनुं वर्णन, तेओए इसरबारोटने बे लाख रुपिया आपी बतावेली उदारता, बाद तेओनुं पोताना मामा ध्रोळ ठाकोर जसाजीने त्यां मिजमान बनी जवुं, मामाभाणेजे जमावेली चोपाटनी रमत, दिल्हीथी द्वारिका तरफ जती नागानी जमातनुं ध्रोळने पादर आवी नगारुं वगाडवुं, ठाकोर जसाजीनो क्रोध, राजरायसिंहजीए ए क्रोधनुं कारण पूछवुं, पोतानी हदमां कोइने नगारुं नहि वगाडवा देवा तथा वगाडे तो फोडी नांखवानो जादव जसाजीए आपेलो जवाब, बाजीनुं वगडवुं, राजरायसिंहजीए मामाने तैयार रहेवानुं आमंत्रण आपी हळवद जवुं अने हळवदथी सैन्य सहित पाछा ध्रोळने पादर आवी डंको बजावबो, ठाकोर जसाजीनी असहनता, जाडेजाओना जबरा सैन्य साथे झालाओए करेलो मुकाबलो, युद्धनुं विस्तारथी वर्णन, छेवटे मामाभाणेजनुं तुमुलयुद्ध, ठाकोर जसाजीने रणमां प्राणरहित करी राजरायसिंहजीए मेळवेलो विजय, वसन्तऋतुनुं वर्णन, होळीनी शरुआत, राजरायसिंहना दरबारमां फागनी धमाल, शृंगारमां वीररसनी संभावना, कोइएक चारणना उश्केरवाथी ध्रोळना ठाकोरना मरणनुं वैर लेवा आडेसरथी जाडेजा साहेबसिंहनुं नीकळवुं, राजरायसिंहजीए तेना मामे चाली टीकर मुकामे मळवुं, परस्पर प्रचंड युद्ध, जाडेजा साहेबसिंहजीनुं समग्र सैन्य सहित समरशायी थवुं, राजरायसिंहजीए घायल बनी अचेत अवस्थाए पृथ्वीपर पडवुं, युद्धनी समाप्ति, हळवदनां माणसोए करेली राजरायसिंहजीनी शोध, पत्तो न मळवाथी सर्वेनुं निराश थइ पाछा फरवुं, द्वारिका गएली

नागानी जमातनुं हिंगळाज परसी दिल्ही जवा माटे ए रस्ते नीकळवुं, प्रभात, रणभूमिनो भयानक देखाव, सुवर्णना लंगरथी अलंकृत चरणवाळा राजरायसिहजीपर पडेली एक साधुनी द्रष्टि, महंतनी आज्ञाथी तेना अनुचरोए राजरायसिहजीने जमातमां उपाडी लाववा, तेओनी भयंकर स्थिति, जमातना महंते करेला उपचार, जमातनी साथे दिल्ही जइ पहोंचेला राजरायसिंहजीनुं आरोग्य तथा सत्समागम, ग्रीष्मऋतुनुं वर्णन, मठना महंत मकनभारथीने बादशाही वावनुं शीतल जल पीवानी अभिलाषा, ए कार्य करवामां अन्यना असमर्थपणाने लीधे रायसिंहजीने महंते करेलो निदेश, पोतानां प्राण बचावनार महंतनी सेवा बजाववा राजरायसिंहजीए खेडेलुं साहस, बादशाही बागमां रात्रीने वखते तेओनो प्रवेश, बळनुं अभिमान राखनारा बादशाही बे एक्काओनी बेदरकारी, बादशाही वावमां दाखल थएला रायसिंहजीनुं गुरु माटे जल भरवुं तथा पोते पण जलपान करी पादप्रक्षालन करवुं, एथी उठेलो वावमां शब्द, बादशाही एक्काओना कान चमकवा तथा गाळोनी वृष्टि, राजरायसिहजीए गुरुनां वचन खातर सो गाळो सहन करी वावमांथी बाहेर नीकळतांज एक्कापर करेलो वामबाहुनो प्रहार, ए एक एक्कानुं मृत्यु जोइ बीजानुं पलायन, बादशाहने थएली जाण, महंतनुं गभरावुं, प्रभातमां मठनी अंदर दाखल थएला बादशाही दूतो, राजरायसिंहजीनुं प्रत्यक्ष बळ जोवा बादशाहे छूटो मूकेलो एक मदोन्मत्त हाथी, राजमार्गमां मनुष्योनी भागाभाग, राजरायसिंहजीनुं निर्भयताथी सामे पगले चालवुं, हाथीए करेलो तेमनापर मोरो, रायसिंहजीए हणेली हाथीने थप्पड, आर्तनाद करी हाथीनुं दूर हटी जवुं, बादशाहने आश्चर्य, तथा पराक्रमी पुरुष उपर उद्भवेलो प्रेम, प्रसंगोपात थएली पिछाण, हळवद नरेशने दिल्हीमां बादशाह तरफथी मळेलुं अपूर्व मान, राजरायसिंहजीनुं हळवद आववुं, सर्वने आश्चर्य तथा आनंद, श्रीमान रायसिंहजीए एक ज्योतिषीना मुखथी सांभळेली गृहयुद्ध संबंधी कथा, अंते घाटीला पासे हाला तथा देदाओ साथे थएली भयंकर लडाइमां तेओनुं काम आववुं, हळवदनी गादीपर तेओना पाटवीकुमार चन्द्रसिंहजीनो राज्याभिषेक वगेरे हकीकत उत्तम प्रकारे दाखल करवामां आवी छे. इसरबारोटने बे लाख रुपिया आपी चारणना पुत्रने बादशाही बन्धनथी मुक्त करावबामां क्षात्रधर्म सहित उदारता, जाडेजा जसाजी तथा साहेबसिहजी साथेना युद्धमां अद्भुत वीरता, अने पोताने प्राणदान आपनार महंतने बादशाही वावनुं जळ लावी आपवामां कृतज्ञता वगेरे राजरायसिहजीना गुणो खरेखर प्रशंसापात्र अने दरेक राजाओए अनुकरण करवा लायक छे. साहस करवुं ए मारा माणसनुं काम नथी एम " सहसा विदधीत न क्रियां " इत्यादि श्लोको रची प्राचीन विद्वानो पुकारी गया छे, परन्तु केटलाएकनी कार्यसिद्धि साहसथीज थएली जोवामां आवे छे, अन्यनी मान्यता गमे तेवी होय, परन्तु अमे साहसना विषयमां छेवटे ए निर्णय उपर आव्या छीए जे एनाथी थतो लाभ पण अनहद छे, अने हानि पण हद वगरनी छे, माटे उत्तम जनोए बहु दीर्घद्रष्टिए विचार कर्या पछी साहसनो अंगीकार करवानो छे, राजरायसिंहजीए इकानी वावमां धोळना ठाकोर साथे जे युद्ध कर्युं अने जेने परिणामे घायल बनी नागानी जमातनो आश्रय लेवो पड्यो ए तेमना साहस विना बीजुं कंइ न कही शकाय, छतां

ते साहसद्वारा तेमनी वीरता प्रकाशमां आवी अने दिल्हीना बादशाही दरबारमां अपूर्व मान मळ्युं के जेने यशना एक मजबूत अंग तरीके लेखी शकाय, आम केटलीएक वखत साहसमां लाभ समाएलो होय छे. ए उपरान्त वसंतवर्णन, फागनी धमाल, ग्रीष्मवर्णन अने गृहयुद्ध संबंधी कथा ए चार विषयोमांथी आदिना त्रण सर्वोपयोगी तथा आनंदजनक छे अने चोथो गृहयुद्धनो विषय मात्र युद्ध अर्थे प्रयाण करवा उत्सुक बनेला राजाओना हित माटे दाखल करवामां आव्या छे.

वीशमा तरंगमां—राजचन्द्रसिंहजीनुं जोधपुर परणवा जवुं, त्यां आवेली बादशाही वराननी स्पर्धामां हळवदने मळेलुं मान तथा यश, बीजी पांच जगोए थएलां राजचन्द्रसिंहजीनां लग्न अने तेनाथी पृथीराज आदि ९ कुमारोनी उत्पत्ति, राजचन्द्रसिंहजीए जामना लश्कर साथे करेली लडाइ अने तेमां मेळवेलो विजय, बादशाही सूबा खान अजीजीकोका साथे थएली राजचन्द्रसिंहजीनी मुलाकात, पोताना चोथा कुमार अभेराजजीने श्रीमान राज चन्द्रसिंहजीए आपेली थान तथा लखतरनी चोवीशी, बादशाही सूबा साथे अणबनाव थतां सिहाणी नरेश अदाजीनुं सहकुटुम्ब हळवद आवी राजसाहेबने आश्रये रहेवुं, कुमार पृथीराजजी अने ठाकोर अदाजी वच्चे उद्भवेलो कलह, शरणागतने नहि सतावबा राजचन्द्रसिंहजीए कुमारने आपेलो बोध, पृथीराजनुं रीसाइ वढवाण जवुं अने त्यां पोतानी स्वतंत्र राजधानी स्थापवी, पराक्रमी कुमार पृथीराजे लूंटेलो बादशाही खजानो, बादशाहे पृथीराजनुं मस्तक छेदी लावनारने म्होटुं इनाम आपवा बाबत काढेलुं जाहेरनामुं तथा वढवाणपर मोकलेलो फोज, ए फोजे प्रथम कुमार पृथीराजने विश्वास आपी बादशाही खंडणी उघराववाने विशे तेओनी मदद मागवी, पृथीराजे ए फोजमां सामेल थइ सिहाणीपर चढाइ करवी अने अदाजीनुं मस्तक कापी तेनी सती स्त्रीथी शापित थवुं, बीजे मुकामे बादशाही सूबाए पृथीराजने केद करी अमदावाद लइ जवा, बाद दगाथी नीपजेलुं तेओनुं मृत्यु, पृथीराजना अवसान संबंधी मतभेद, फटाया कुमार आशकरणजीनुं राजचन्द्रसिंहजीना स्वर्गगमन पछी हळवदनी गादीए बेसवुं, वढवाणमां पृथीराजजीना परलोक प्रयाण संबंधी थएली जाण, सुरतानसिंहजी तथा राजाजी वगेरे कुमारोने लइ पृथीराजजीनां राणीनुं लखतर नरेश अभेराजजीने आश्रये रहेवा गढ–थान जवुं, हळवदना राजआशकरणजीना भयथी अभयराजजीए तेओने अन्य स्थळे जवा सूचववुं, चोटीला आणदपरना काठी मुळुजीनी मददथी सुरतानसिंहजी वगेरेनुं पोताने मोसाळ जांबुडे जवुं, तेओने थएली जाम लाखाजीनी मुलाकात, कचेरीमां नागी कटारपर थाप मारी सुरतानसिंहजीए बतावेलुं शौर्य, तेओने महाराजा जामे आपेली मदद, महीया तथा बाबरीया लोकोने मारी राज सुरतानसिंहजीए गढीआपर जमावेलो अमल, हिमंतऋतुनुं वर्णन, राजसुरतानसिंहजीए जारी राखेलुं हळवदथी चळगण तथा फरी लडवा उद्यत थएला महीया लोकोने मारेलो मार, शिशिर ऋतुनुं वर्णन, गढीआपर रहेला वांकानेरमां बाहुबळथी सुसमृद्ध बनेला राजसुरतानसिंहजीनो राजधानी योग्य एक नवुं शहेर वसाववानो मनोरथ,

शाहबावा वगेरे त्रण महात्माओनुं गढीआ नीचेनी स्मशानभूमिमां रात्रि निर्गमन करवा रोकावुं, राजसाहेबे जोएलो तेओनो अद्भुत चमत्कार अने तेमांना शाहबावानी सलाहथी मच्छु अने पताळीया वच्चे वसावेलुं वांकानेर, राज्यनी आबादी, राठोड राणी प्रतापबा रीसाइ पोताने पीअर गएलां होवाथी तेमने मनाववा राजसुरतानसिंहजीनुं इडर भणी प्रयाण, हळवदनी फोजे भीमगुडानां ढोर वाळवां, राजसाहेबनुं वारे चढवुं, भयंकर लडाइ, राजसुरतानसिंहजीनुं अनेक दुश्मनोने मारी रणमां पडवुं अने ए स्थळनुं "सुरतानसिंहजीनुं रण" ए नामे प्रसिद्ध थवुं, उक्त समाचार सांभळी इडरमां राठोडराणी प्रतापबानुं सती थवुं तथा तेमनी साथे सखीभावना अपूर्व स्नेहने लीधे श्रीमाळीब्राह्मणनी पुत्री सुरजबाइनुं वळी मरवुं, राजकुमार मानसिंहजीनी न्हानी उम्मर होवाने लीधे तेओने तख्तनशीन करी स्वर्गस्थ सुरतानसिंहजीना लघुबन्धु राजाजीए राज्यनो कार्यभार चलाववो, राजखटपटने लीधे राजाजीनुं रातीदेवळी जवुं अने त्यांथी खोडुमां राजदरबार बांधी पोताना बापदादानी राजधानी वढवाणना मालिक बनवुं, राजमानसिंहजीए म्होटा थइ हळवद साथे राखेलुं वळगण, तेओने त्यां रायसिंहजी आदि कुमारोनो जन्म, लूणसरीआ भायात कलाजी तथा सबळाजीनी बहादुरी संबंधी स्वल्प बयान के जेना जेवो वीरना आजसुधी जन्मेला विरला क्षात्रवीरोएज जणावेली छे. पृथीराजजीनुं वृत्तान्त राजखटपटमय छतां शौर्यथी भरेलुं छे, अने तेमना पिताश्री चन्द्रसिंहजीए पाटवीकुमारपरनो प्यार छोडी आश्रये आवी रहेला सिंहाणीनरेश अदाजी उपर बतावेलुं ममत्व प्रशंसापात्र छे; आ तरंगनी शरुआतमां एक बाबत खास ध्यान खेंचनारी छे, बादशाही बरातनी स्पर्धामां हळवद जेवुं न्हानुं राज्य कोइ रीते टकी शके नहि, परन्तु लींबड शाखाना राजपूते राज्यनो उतारो लूंटावी थोडे खर्चे पोताना मालिकनी कीर्तिने फेलाववामां जे कार्यकुशळता वापरी छे ते आजकाल राजाओ पासे रहेनारा मानपात्र जनोए अनुकरण करवा लायक छे अने तेमां राजाओए पण राजचन्द्रसिंहजीनी माफक म्होटुं मन राखवानी जरूर छे, थान लखतर वढवाण तथा वांकानेरनी राजधानी कोणे अने क्यारे स्थापी ए बाबत पण आ तरंगमांज छे. वांकानेरना मूळपुरुष राजसुरतानसिंहजीए जाम लाखाजीना राजदरबारमां नागी कटारपर थाप मारी बतावेलुं शौर्य, तेना वंशजोने माटे गौरवसूचक छे, शाहबावा वगेरे महात्माओनी चमत्कारिक वार्ता पण वांचवा जेवी छे. एवा वचनसिद्ध महात्माओ आ हळहळता कलिकालमां मळवा मुश्केल छे, कलिकालना आरंभने तो त्रण हजार वर्षो उपरांत थइ गयां, परंतु आज करतां सो वर्ष पहेलांना, अने सो वर्ष करतां पांचसो वर्ष पहेलांना मनुष्यो आयुष्यमां. बळमां अने वचनसिद्धिमां घणे दरज्जे चढिआता हता, आज जेवुं काले नहि होय, अर्थात जेम जेम जमानो वहेतो जशे तेम तेम असत्य आदि कलिना सुभटो प्राणीमात्रने विशेष प्रमाणमां पराभव पमाड्या विना रहेशे नहि. राजसुरतानसिंहजी समरशायी थतां तेनां इडरवाळां राणी प्रतापबा सती थयां तेनी साथे सखीभावना अपूर्व स्नेहथी श्रीमाळीब्राह्मणनी पुत्री पण वळी मुइ तो ते आज दिवस सुधी झालाकुळमां एक देवी तरीके पूजाय छे, धन के प्राणनो भोग आप्या विना यश मळी शकतो नथी, अने स्नेही खातर प्राण आपवां ए कोकथी-

ज बनी शके छे, स्नेह, लज्जा अने मननी द्रढता आदि दैवी गुणोनो अत्यारे तो तद्दन लोप थएलो जोवामां आवे छे, परन्तु ए गुणो बीजरुपे तो क्यांइकज रहेला होवा जोइए. समय आव्ये ए ज्यारे प्रफुल्लित थइ सर्वने शोभायमान करशे त्यारेज दुनियाने फरी सत्ययुगनुं भान थशे.

एकवीशमा तरंगमां—राजरायसिंहजीना कुमार चन्द्रसिहजी उर्फे चांदाजीए बहादुरीथी हळवदने हाथ करी त्यां त्रण वर्ष पर्यन्त चलावेली स्वतंत्र सत्ता तथा बोंचना गराशीआ हरभमजीए वांकानेरीआमां प्रवेश करी लींबाळा नामनुं गाम भांगतां तेने आसोड तथा मच्छुना मध्यप्रदेशमां मारेलो मार, राजचन्द्रसिंहजीना पाटवीकुमार पृथीराजजी उर्फे सरतानजीनो गादीए बेठा बाद निःसंतान स्वर्गवास थतां न्हानाभाइ केसरीसिंहजी के जेओने वणझारा नामनुं गाम गरासमां मळेलुं हतुं तेने प्राप्त थएली वांकानेरनी गादी, हुवा भायात गजसिंहजीए बनावेला विष्णुप्रकाश नामना ग्रन्थ सबंधी हकीकत, केसरीसिंहजीना कुमार राजभारोजी, तेमणे बाहुबळथी काठीओपर बेसाडेलो भय, तेओना रोटलानी चोतरफ फेलाएली तारीफ, राजकोटना ठाकोर बावाजीराजनुं अभिमान उतारवा राजभाराजीए कम्मर कसवी, अने सरधार सुधी पहोंची साजडीआली गामने भांगवुं, पाटवीकुमार राजरायसिंहजीनो राजभाराजीनी हयातीमांज स्वर्गवास थतां तेमना कुमार केसरीसिंहजीनुं दादाना परलोक प्रयाण पछी तख्तनशीन थवुं, ए केसरीसिंहजीने त्यां कुमार चन्द्रसिहजी उर्फे डोसाजीनो जन्म, राजडोसाजीनी बहादुरी, तेओए रामपरडाथी, ढसाथी तथा हालारमांथी करेलुं ताजण, माणकी तथा शींगाळी घोडीओनुं हरण; जूनागढ, जामनगर, तथा ध्रांगध्राना लश्करोनी एकीसाथे वांकानेरपर चढाइ; राजडोसाजीए लडाइमां ए त्रणे राज्यनां लश्करोने पोकरावेली तोबाह, राजडोसाजीनुं हामण, अने तेथी तूटेली कैंक काठीओनी कम्मर, जतवाडाना जतलोकोनी भोगावे भेळा थइ राजडोसाजीए खेंचेली खाल, बाद भीमोरानुं भांगवुं, नाजाखाचरनुं न्हासवुं, वढवाणना ठाकोर पृथीराजजी साथे अमदावाद तरफ फेरो मारवा राजडोसाजीनुं जवुं, मार्गमां वच्चा जमादारनां माणसो साथे थएलुं धींगाणुं, अने तेमां जमादारना जमाइ इसबभाइनुं मोत, राज डोसाजीना शौर्य साथे दया आदि सद्गुणो, त्यारबाद राजबखतसिंहजी अने तेओनो बहोळो परिवार, तेओए पुत्रीओ तथा पुत्रपौत्रादिकना विवाह वगेरेमां खर्चेलुं पुष्कळ द्रव्य, जनाना सहित म्होटा आडंबरथी करेली विविध यात्राओ, नागाबावा सबंधी हकीकत, राजबखतसिंहजीनी धर्मपर श्रद्धा तथा देनगी, तेओना वखतमां थएलुं थान साथे धींगाणुं, पाटवीकुमार जसवंतसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेमना कुमार बनेसिंहजीए दादाना परलोक प्रयाण पछी राजपदवीने धारण करवी, राजबनेसिंहजीनुं बुद्धिबळ, तेओए करेली राज्यनी आबादी, पाडलना धींगाणा सबंधी हकीकत, दिल्हीमां भराएला बादशाही दरबार वखते राजबनेसिंहजीने मळेली ९ तोपोनी सलामी, तेओ नामदारने प्रसंगोपात्त थएली अंग्रेज अमलदारोनी मुलाकात, विविध यात्राओमां राजबनेसिंहजीए करेलां पुण्यदान तथा तेओनी उत्तम कार्यकीर्तिनुं वर्णन करवामां आव्युं छे, तेमां ओगणीशमी सदीना लगभग पोणा भाग सुधी मारपछाड

अने धींगाणानी बाबतज जोवामां आवे छे, आगळना राजपूतोने मुखे बेसवुं गमतुं नहि अने तेम बेसी शकाय तेम हतुं पण नहि, कारणके बाहुबळमां एकबीजाथी चढिआता गणावानी सहुकोइने चाहना हती, पोते स्वाधीन करेली जमीन कोइ लइ न जाय अने बीजानी जमीनने दबाववी एज शूरवीरोनुं परम कर्तव्य हतुं, दातारी पण ए वखते विशेष जोवामां आवती एनुं कारण मात्र एटलुंज हतुं के एक शूरवीर सांज पछे पांच पंदर गाम मेळवी शकवा सामर्थ्य धरावता हता तेने बे गाम कोइने आपी देवां ए भारे वात न हती, अत्यारे नवुं मेळवी शके एवो समय तो रह्यो नथो, अने छे तेमांथी पण साम्राज्यनी सेवा अर्थे म्होटा भागनो व्यय थतो जोवामां आवे छे, माटे हालना राजाओ उदार मटी कृपण बनी गया छे एम कहेवुं सर्वथा भूल भरेलुं छे. आ तरंगमां राज भाराजी तथा डोसाजी वगेरेनां चरित्रो वीरतामय होवाथी खास वांचवा लायक छे, झालावंशमां उत्तम कविओ पण थएला छे ए बनाववा वांकानेरना भायात गजसिंहजीए रचेला विष्णुप्रकाश नामना ग्रन्थ संबंधी हकीकत आपवामां आवी छे. राजवखतसिंहजीनुं धार्मिक तथा व्यावहारिक वृत्तान्त अने राज बनेसिंहजीनी कारकीर्दी पण अति उत्तम प्रकारे आलेखेली जोवामां आवे छे.

बावीशमा तरंगमां—राजबनेसिंहजीने त्यां जन्म पामेल कुमार अमरसिंहजी न्हानी उम्मरना होवाथी राज्यपर मेनेजमेन्ट, जुदा जुदा मेनेजरो अने तेओए करेलां बांधकाम तथा सुधारावधारा, कुमारश्री अमरसिंहजीनुं अभ्यास अर्थे राजकोट राजकुमार कॉलेजमां दाखल थवुं, वांकानेर स्टेटने वीननजराणे दत्तक लेवानी नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी मळेली सनंद, कुमारश्री अमरसिंहजीनो शायपुरे थएलो संबंध, तेओश्रीए मानवंता बामासाहेब साथे करेली प्रभासपाटणनी यात्रा, कॉलेजना वेकेशनमां महाबलेश्वरनी मुसाफरी, शायपुरे थएलां हथेवाळे लग्न, स्टेट मेनेजर गणपतराव लाड साथे करेली हिन्दुस्थाननी पहेली मुसाफरी, कॉलेजमांथी मुक्त थवुं, डाक्टर दीनशाह बरजोरजी साथे हिन्दुस्थाननी बीजी मुसाफरी, कुमारश्री अमरसिंहजीए जोएलां उत्तम स्थळो अने तेनुं वर्णन, श्रीयुत् हेन्कोकसाहेब साथे करेलो युरोपनो प्रवास, युरपनां प्रख्यात स्थळो अने तेनुं वर्णन.

त्रेवीशमा तरंगमां—विलायतनी मुसाफरीएथी पधार्या बाद कुमारश्री अमरसिंहजीने मळेली स्वतंत्र राज्यसत्ता, राजकोट थएलां हथेवाळे लग्न, छप्पननो भयंकर दुष्काळ, रैयतनुं रक्षण, त्यारबाद राजसाहेबश्री अमरसिंहजी बहादुरनां उमदा जीवनचरित्रनी अंदरवळाना तथा मांटाना विवाहनुं वर्णन. तेथी थएलां संतानो, यात्राओ अने तेनां वर्णन, श्रीमान राजकोट ठाकोर साहेबश्री लाखाजीराज साथे साजसाते करेली काश्मीरनी मुसाफरी, त्यांना दर्शनीय स्थळोनुं वर्णन, स्टेटमां थएलां बांधकाम, राज्यनी आबादी, अने प्रजाने मळेलो संतोष वगेरे अनेक बाबतो वर्णवी छेवटे श्रीमान राजसाहेबनुं नामदार शहेनशाह ज्योर्ज ५ पीफ्थना राज्याभिषेक प्रसंगे दिल्हीदरबारमां पधारवुं तथा त्यां थएली के. सी. आइ. इ. ना इल्कावनी प्राप्ति अने एथी उद्भवेलो प्रजा-

वर्गमां हर्ष तेमज उक्त प्रसंगे कवीश्वरे आपेल आशीर्वचन वगेरे वावत छे, तेमां मुख्यत्वे करी महाराजा राजसाहेवना विशुद्ध चरित्रने अंगे विस्तारपूर्वक लखाएलां युरप अने काश्मीरनां वर्णनो खास वांचवा लायक छे; महाराजा राजसाहेवे दरेक मुसाफरीमां शुं शुं जोयुं अने अनुभव्युं ते तमामनी तारीखवार नोंध पोतानी डायरीमां करेली होवाथी अने ते प्रवास करवा इच्छता अन्य राजाओने उपयोगी होवाथी कविराजे तेओश्री पासेथी उक्त हकीकत मेळवी अने तेमां अन्य हिन्दी ग्रन्थोने आधारे उमेरो करी ते ते स्थळोए जवाना मार्ग तथा जवामां जोइतां साधन तथा लागतो समय वगेरे एवुं तो सरलताथी विवेचन कर्युं छे के जेना वांचवाथी जाणे ते ते स्थळोनुं आपणे प्रत्यक्ष अवलोकन करता होइए एवो भास थया वगर रहेतो नथी. मारा दश वर्षना जातिअनुभवथी हुं सत्य कहुं छुं जे नामदार राजसाहेव जेवा तेजस्वी अने न्यायपरायण राजा काठिआवाडना दरेक स्टेटमां होय तो हुं नथी धारतो के प्रजाने कंइपण पुकार करवानो समय प्राप्त थाय एज तेमनी कार्यकुशळतानो सुदृढ पुरावो छे.

चोवीशमा तरंगमां—राजहरपालदेवजीना द्वितीय पुत्र मांगुथी आरंभी विद्यमान महाराणाश्री दोलतसिंहजी वहादुर सुधीनो सविस्तर गद्यमां अने संक्षिप्त पद्यमां इतिहास लखवामां आव्यो छे. गद्य अने पद्य बन्नेनी वाक्यरचना उत्कृष्ट छे तेमज युद्ध आदिनां वर्णनो तेमां पण प्रसंगोपात्त दाखल करेलां देखाय छे.

पचीशमा तरंगमां—रायपुर, नरवर अने कुन्हाडीनो, छवीशमा तरंगमां सादडी तथा देलवाडानो, सत्यावीशमा तरंगमां ध्रांगध्रानो, अठ्यावीशमा तरंगमां लखतरनो, ओगणत्रीशमा तरंगमां वढवाणनो, त्रीशमा तरंगमां झालरापाटणनो, एकत्रीशमा तरंगमां सायलानो; अने बत्रीशमा तरंगमां चुडा, थळा, रामपर, मेघपर, अजमेर अथवा अदेपर, अने शादुलका भायात वगेरे क्यारे क्यारे जुदा थया अने तेने क्यां क्यांनो गरास मळ्यो वगेरे समस्त हकीकत प्रथम गद्यमां अने पछी संक्षेपे पद्यमां एवी तो सरस रीते लखाएली छे के अमुक छन्दो याद करवाथी अमुक राज्य कोणे वसाव्युं अने ते पछी क्रमवार कोण कोण अने केवा पुरुषो थया ते सरलताथी समजी शकाय अने बीजाने पण समजावी शकाय.

तेत्रीशमो तरंग ग्रन्थना उपसंहाररुपे लखाएलो छे. अने ते मंडूकप्लुति न्याय मुजव त्रेवीशमा तरंग साथे सबंध राखनारो छे, तेमां वांकानेर नरेश राजराणाश्री अमरसिंहजी वहादुरे करेली द्वारिकानी यात्रा, काठिआवाडना माजी एजन्ट टु धी गवर्नर मे. स्लेडनसाहेवने हाथे करावेल “ सर ज्यॉर्ज सीडनहाम हाइस्कुल ” नुं खातमुहूर्त, वांकानेरना माजी कारभारी नाथाभाइ अवीचलदास देशाइने नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी मळेलो “ राववहादुर ” नो इल्काव, राजमहेलोमां गोठवेली वीजळीनी वत्तीओ चालु करवानुं यंत्रालय कच्छना महाराओश्री खेंगारजी वहादुरने हाथे खुल्लुं मुकवानी थएल क्रिया, महाराजा राजसाहेवनुं नामदार ब्रीटीशसरकारने महायता आपवा युद्धभूमिमां जवुं, दी. कुंवरीश्री तख्तकुंवरबा साहेवनो मयूरभंजना महाराजासाहेव साथे थएलो सबंध, महाराजा राजसाहेवनुं कुश-

ळतापूर्वक युद्धयात्रा करी वांकानेर पधारवुं, वफादार प्रजावर्गमां व्यापेलो आनन्द, दी. कुंवरीसाहेबनां लग्न अने तेनुं वर्णन तथा नामदार ब्रीटीशसरकार तरफथी बेसता वर्षने मांगलिक प्रसंगे महाराजा राजसाहेबने मळेल बे तोपनुं विशेष मान तथा ऑनररी केप्टननी महान मानसूचक पदवी, अने सालगिरा महोत्सव प्रसंगे भराएला दरबारमां महाराजा राजसाहेबे करेली नवाजेश, अने प्रजानी प्रसन्नता साथे कवीश्वरे आपेल आशीर्वचनथी ग्रन्थने संपूर्ण करवामां आव्यो छे के जे सर्वथा प्रशंसनीय छे.

ली. बारोट केशवलाल श्यामजी.
स्व. जामनगरना राज्यकवि.

शुद्धिपत्र.

पृष्ट.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	७	अतिमननी	अति मननी
१	१०	नित्यने	नित्य ने
२	३	भाव	भावे
३	१९	बलवाळा	बलवाळा
३	२०	नर	नर
४	६	जशवंत	जशवंत
५	१६	लालनी	लालजी
७	४	करणने	करण ने
७	१५	मायालु	मयालु
८	१०	राजर्षि	राजर्षि
९	११	पुरन्दर	पुरन्दर
९	१५	अरिमद	अरिमद
१०	१३	शिशुपाल.	शिशुपाल.
१७	५	वक्र पुरी	वक्रपुरी
२२	७	धस्यो.	धस्यो
२३	१८	छतरसाल	छत्तरसाल
२४	१०	प्रताप शाळी	प्रतापशाळी
३४	१९	सवने	सर्वने
३५	१४	तेम तेम	तेम
३७	१	अने	एने
३८	११	सर्व	सर्वत्र
३९	२३	न	न
४१	४	बृहतसाम	बृहत्साम
४३	८	जवानो	जवनो
४३	१२	पुर	पुर,
४३	१४	होय	होय,
४४	२२	गंधर्वोनु	गंधर्वोनुं
४५	३	मृकंडतणाजे	मृकंडतणा जे

४५	९	कर्या	कर्या.
४६	५	ओखखाता	ओळखावा
४७	१७	दारिध	दारिद्र
५१	३	शूखीर	शूरवीर,
५१	७	वंधाएला जत्रुवाळो,	वधाएला जत्रुवाळो निर्धन होय छे, ऊंचा जत्रुवाळो
५३	१९	वहु	वहु
५५	१५	उन्नन	उन्नत
५९	२०	तियक्तुं	तिर्यक्तुं
६०	१०		पिशाच प्रकृतिनो मनुष्य चंचल, मलिन देहवाळो, वहु वकनार अने स्थूल अंगोथी युक्त होय छे.
६६	९	ब्रह्मचांरी	ब्रह्मचारी
६७	४	तेनी	जेनी
६७	२०	सपति	सपत्ति
७०	१९	कन्यान	कन्याने
७१	१८	द्वितीया	द्वितीयाना
७२	२१	करवुं	करवु,
७५	२२	कार्य क्रिया	कार्यनी क्रिया
७५	२३	घेनुंतुं	घेनुतु
७६	४	भाव	सत्यभाव
८४	५	वहार	वहार.
८७	१८	घडोना	घडोना
८८	१३	घेर	घेर
८८	१५	देशो	देशो,
८९	६	किन्नरो	किन्नरो,
९०	४	पोताना	पोतानी
९०	५	प्रमद	प्रमदा एके नथी एम मानुं.
९०	१२	जाराधी	जोराथी.
९०	१५	थन	थशे
९०	२६	अहादकारक	आह्लादकारक.
९१	१८	गरणो	गरणो.
९२	९	आनद दायक	आनंददायक.

९४	२०	पिनाकथाणि	पिनाकपाणि
९५	१४	ब्रह्मवन्धुने	ब्रह्मवन्धुने
९९	१४	थयो छे.	थयो छे
१००	२०	अलि	अलि,
१०३	६	अर्घ	अर्घ्य.
१०३	११	गणतां	गणता
१०३	२६	उप्तला	उत्पलावत.
१०७	१३	स्वद	स्वेद
१०७	२५	छे	छे ?
१०८	६	पातानी	पोतानी
११०	६	क्यां	कयां
११३	७	एकसर	एक सर.
११३	८	पमुच	प्रमुच
११३	१८	पसन्न	प्रसन्न
११५	१०	सुमेघा	सुमेघा
११६	१	छे.	छे,
११६	७	कहे छे	कहे छे.
११९	७	छे.	छे
१२०	१६	क्वच	कवच
१२१	९	इक्ष्वाकुना	इक्ष्वाकु.
१२३	१८	चार चार	चार
१२३	२१	पद वंदन	पदवंदन
१२३	२५	पाद प्रक्षालन	पादप्रक्षालन
१२४	१७	करता	करतो
१२४	२२	जगतन	जगतने
१२५	२१	सारुं	सारु
१२५	२५	कृशीकारना	कृपीकारनां
१२८	११	क्युं	कयुं
१३२	१४	प्रेमीओना	प्रेमीओना
१३४	८	सिंहासनपर	सिंहाननपर
१४६	२५	जधनवाळी	जघनवाळी
१४८	११	विछाना	विछाना
१५१	२२	क्या	कया

१५८	२४	वैश्याओ	वेश्याओ
१५९	२३	धान्यना	धान्यनां
१६२	७	फळ,'	फळ,
१६२	१५	क्रव्याद	क्रव्याद्
१६६	१०	वषा	वर्षा
१६८	१३	" नंदावर्तक "	" नंदावर्तक, "
१६९	१६	के.	के:—
१७०	९	कोणमां	कोणमां,
१७१	१२	नाम.	नाम:—
१७१	२०	वधार	वधारे
१७३	१२	जेवा	जेवां
१७६	१०	प्रयम	प्रथम
१८१	१३	पूष्य	पुष्य
१८१	१४	पुनवसु	पुनर्वसु
१८२	११	आव.	आवे
१८२	१२	वर्ग.	वर्ग
१८४	९	अतरे	अंतरे रोपाय ते
१८५	२०	वोवुं	वोवुं,
१८६	१८	अर्थे,	अर्थे, तथा
१८६	१८	हींचोळा	हींडोळा
१८८	१९	पहोळाइवामा	पहोळाइवाळ'
१८९	१५	गहे	महो
१९०	११	तटली	तेटली
१९०	२३	काष्टन	काष्टने
१९२	४	मध्यय	मध्यम
१९२	१४	" घात '	" वात, "
१९२	१५	गृहमा	गृहमा
१९४	३	ओवे छ	आवे छे
१९५	५	चन्द्र दिवाकर	चन्द्रदिवाकर
१९६	१४	करी	करी
१९६	१७	इन्द्र	इन्द्र
१९७	२	अनमान	यनमान.
१९८	१७	मदगुरुओनुं	मद्गुरुओने

१९९	१०	मणिक	माणिक
१९९	११	थया	थयो
२००	४	भीमसेना	भीमसेनना
२००	५	स.रंगदेवे	सारंगदेवे
२००	१३	देवपाल	देवपाल,
२००	२१	धनुधर	धनुर्धर
२०१	१४	राजर्षि	
२०१	१७	अजयभूगाल.	अजयभूपाल,
२०४	१९	सालणदेवजीने.	सालणदेवजीने
२०५	४	शुक्र	शुक
२०५	१२	वैश्या	वेश्या
२०५	२३	मूपका	मूषकोना
२०६	१७	पितृओनुं	पितृओनु,
२०७	१	लाज	लाजा
२०८	१०	आसनना	असनना
२०९	१५	करवा.	करवा.
२०९	२४	नरथर	नरथर,
२१३	३	शुकल	शुक्ल.
२१४	१२	थता,	थता
२१४	१३	सिक्थ	सिक्थ,
२१४	१६	त्रिशशि	त्रिराशि
२१६	७	उत्पात्ति स्थान	उत्पत्तिस्थान
२१८	१	विद्व	विद्ध
२१८	२०	कंकपत्ती.	ककपत्ती,
२२२	८	देव पत्न्यश्च	देवपत्न्यश्च
२२२	८	देव मातर	देवमातर
२२३	१३	कुवेर	कुबेर
२२४	२५	पत्र छेद्य	पत्रछेद्य
२२५	२४	कुचुमार योग	कुचुमारयोग
२२५	२५	वार्त्ताशर्मा	वार्त्ताशर्मा
२२६	५	तेनां	तेना
२२८	१६	वासठमी	वामठमी
२३०	१२	अमृतसिंसजी	अमृतसिंहजी

२३०	१८	गगेववजीना	गगेवजीना
२३१	२२	उक्त,	उक्त
२३२	६	वन्नेना	वन्नेना
२३२	१४	जेमां	जेमा सूर्य
२३३	८	विष्टादिक	विष्टादिक
२३३	१८	कुकक्कुट	कुक्कुट
२३५	६	थाय छे	थाय छे.
२३५	७	पीडित	पीडित,
२३५	१३	आ स्फोटित.	आस्फोटित.
२३६	१	छिक्कर	छिक्कर,
२३८	१९	उपद्रय	उपद्रव.
२३९	१	प्तो	तो
२३९	७	छत्रथी युस्त	छत्रथी युक्त
२३९	१४	वेचाएल	वेचाएल
२३९	२१	शाकुनतुं	शाकुनतुं
२४६	१५	खजर	खजन
२४६	२२	कृमि	कृमि,
२४७	१०	ऐवा	एवा
२४८	१५	वोले	बोले
२५२	१०	स्मार्माने	स्वार्माने
२५३	६	स्त्राभाविक	स्वाभाविक.
२५३	२२	वोलेतो	बोले तो
२५४	९	वन्ने	बन्ने
२५५	९	नेत्र	नेत्र
२५५	१९	प्रतिघ्वनी	प्रतिध्वनि
२५६	११	स्यर्श	स्पर्श
२५६	१६	दात	दांत
२५६	१९	क्रमथी,	क्रमथी
२५८	१०	टुर्भिदिन्नो	दुर्भिन्नो
२५९	१५	द्दष्टि	दृष्टि
२६०	१	आयुध	आयुध.
२६१	१४	लप ी	लपटी
२६३	१४	बोलि	बोले

२६३	१६	दोषन	दोषने
२६५	१	श्रीझालावंशवारिधि.	द्वादशतरंग.
२६५	३	स्थित.	स्थित,
२६६	१	चूचवे छे	सूचवे छे.
२६६	६	मुखयी	मुखथी
२६६	७	कृपालने देवजीने	कृपालदेवजीनें
२६७	१२	शत्रु मूर्ति	शत्रुनी मूर्ति
२६७	१९	वधारी	वधारी
२६८	९	यौव	यौवना
२६८	१४	गोवरर्धनमिहजी	गोवर्धनसिंहजी
२६८	१७	रणजीतसिहजी	रणजीतसिंहजी
२६८	२१	सासन	शासन
२६९	६	गादी	गादीए
२६९	१२	चेमराजजी	चेमराजजीए
२७१	५	प्रसन्न होय	प्रसन्न होय,
२७४	१०	स्निग्ध	स्निग्ध,
२७४	१६	धूळ	धूळ,
२७५	८	द्राणे	द्रोण
२७७	१	नरर्थक	निरर्थक
२८३	४	वृद्धिथी	वृद्धिथी
२८३	१४	वत्तनी	वृत्तनी
२८४	१८	पवन	पवन
२८४	२२	वाळको	वाळको
२८५	९	धरनी	घरनी
२८९	५	माट	माटे
२८९	१४	वणा	वर्णन
२९०	१६	ए,	ए
२९०	२४	स्यानोने	स्थानोने
२९२	११	निर्मि—	निर्मि—
२९२	२२	सभूह	समुह
२९२	२२	तना	तेना
२९२	२३	कयु	कर्युं.
२९२	२३	पेहला	पहेला

२९२	२३	षिष्णु	विष्णु
२९२	२०	धमार्थ	धर्मार्थ
२९३	२३	शकता	शकतो
२९८	२	रहनार	रहेनार.
२९८	१३	अरजदार,	अरजदार
२९८	१६	दडने	दडने
२९९	१५	कुडनो	भुडनो
३००	४	राखवा.	राखवा
३००	१४	जवु.	जवु
३०१	५	दुःख	दुःख
३०१	२०	परले कनु	परलोकनु
३०१	२४	दुःख	दुःख
३०३	१५	अथात्	अर्थात
३०८	१३	ला रहे.	लता रहे
३०९	४	शकतो	शकतो
३०९	१०	अ मे	अमे
३१०	६	छ	छे
३१०	११	हवाथी	हवाथी
३१२	१४	क्वचवाळा	कवचवाळा
३१२	२२	पृथवीपर	पृथ्वीपर
३१४	६	पागे छे	पामे छे
३१५	२४	सुग्रीवेनामनो	सुग्रीव नामना
३२१	२०	साधि	सवि
३२२	१	जळ झरणमा	जळझरणामा
३२५	१८	पेयस्कार	श्रेयस्कर
३२७	११	विस्तरर्ण	विस्तीर्ण
३२७	२२	[illegible]	[illegible]
३२८	७	वधाव्दा	वधाव्या
३२८	१६	दर्भलेप	वज्रलेप
३२८	२२	वतार्वी	वतावी
३२८	२४	अथात	अर्थात
३२८	२६	हवारनी	द्वारनी

३२९	१९	वनाववी	वनाववी
३२९	२१	म्रकुटिनी	भ्रकुटिनी
३३१	१	अमामिकानुं	अनामिकानु
३३३	१२	लावु	लांवुं
३३५	२	वन प्रवेश	वनप्रवेश
३३५	१३	गुरुश्रीन	गुरुश्रीने
३३९	१२	ललाट.	ललाट,
३४०	२१	आदिथ	आदिथी
३४३	२	छे	छे.
३४४	११	कुककुट	कुक्कुट
३४४	१४	दीपलक्षण	दीपलक्षण,
३४५	२१	कर्ण पिशाची	कर्णपिशाची
३४५	२५	पकितदूषकने	पंक्तिदूषकने
३४७	२१	वाहनो	वाहनो
३४९	१४	नि ुडी	निर्गुंडी
३५०	१५	नीवे	नीचे
३५४	१४	अजुनवृक्ष	अर्जुनवृक्ष
३५७	४	अन	अने
३५७	१६	अन	अने
३५९	१	मधा	मघा
३६०	१४	प्रवळ	प्रबळ
३६३	१२	धरावती	करावती
३६३	१३	कोट	कटि
३६५	६	मेळे	मेळ
३६७	१	अन	अने
३६७	१५	हाइ	होइ
३६७	२४	शके छे	शके छे.
३६९	८	यागथी	योगथी
३६९	१४	सभजी	समजी
३६९	१५	मळनारा	भळनारा
३६९	१८	जम	जेम
३७०	१४	आपात्तिने	आपत्ति

३७१	१	पंचभदश	पचंदश
३७१	२७	उत्पात्तथी	उत्पातथी
३७४	१०	मुर्ख	मूर्ख
३७५	१	काचवा	काचवा
३७५	७	स्वाघीन	स्वाधीन
३७६	२१	आव	आवे
३७५	२३	करता	करता
३७६	२	कार्याकार्यने	कार्याकार्य न
३७६	३	अभ्युत्वान	अभ्युत्थान
३७६	६	मित्र	मित्र
३७६	१५	सपनी	सर्पनी
३७८	८	शुक्रो	शुको
३७८	१०	पेठ	पेठे
३७८	१६	उपजावनाम	उपजावनार
३८०	२३	झुलती	भूलती
३८१	२५	ध्रम्रनी	धूम्रनी
३८१	२६	अवशेप	अवरेखी
३८२	२२	आद्य	आग्र
३८४	१	आपना	आपना
३८४	१९	वंबावेला	वनावेला
३८४	२०	चित्र	चित्र —
३८४	२२	तमजता	समजता
३८४	२५	भानना	भातना
३८५	१५	लाप्या	लाया
३८५	१५	जता	जता
३८५	२३	दारवल	दाखल
३८६	६	बेटेला	वेठेला
३८६	२६	घोवार	धोवार
३८९	२	मर्धवेदना	अर्धवेदना
३९०	१२	दारिद्य	दारिद्र्य
३९४	२	धनुप	धनुष
३९५	१७	[illegible]	[illegible]
३९५	१८	[illegible]	[illegible]

३९२	१६	वनाववुं	वनाववुं
३९२	१७	काक	काक,
३९२	२२	होय	होय
३९२	२२	जाणंवु	जाणवुं
३९२	२३	शकें छे	शके छे
३९५	६	तेनु	तेनुं नाम
३९८	६	नीचे जनारी,	नीचे जनारी, उपर जनारी,
३९८	२१	घाणथी	बाणथी
३९९	२५	का सिद्धि	कार्यसिद्धि
४०१	२४	समुख	सन्मुख
४०३	८	वर	स्वर
४०५	१५	भवत्	भवत
४०६	११	तमे साभळो	तमे वे सांभळो
४०६	२१	ज्ञीप्सायाम्	वीप्सायाम्
४०६	२७	ब्रूतम्	ब्रूतम्
४०७	९	इण	इण्
४०९	१	तमे पाथरो	तमे वे पाथरो
४०९	१	थाओ	खाओ
४०९	२	वे	
४०९	२	जाओ	खाओ
४०९	२१	वे	
४१०	१	शूशान	शूरान्
४१०	४	खडगोवडे	खड्गो वडे
४११	१	धोडाओ	घोडाओ
४११	८	गृह्णीत	गृह्णीत
४११	१९	उत्तरस्याः	उत्तरस्याः
४११	१९	पूर्त्रे	पूर्व
४१२	२	शस्त्रानो	शस्त्रोनो
४१२	१५	गृह्णीत	गृह्णीत
४१२	११	पथी	पक्षी
४१५	१	पचमदश	पंचदश
४१६	१०	वस्या	वस्या
४१९	१	वेर	वेरे

४२०	८	देव मन्दिरोने	देवमन्दिरोने
४२०	९	रिझावया	रिझववा
४२२	११	पुण्यथी	पुण्यथी
४२३	१५	कृपाविलोए	कृपाविलोए
४२६	१७	माट	माटे
४२९	२५	क्यो	कयो
४३३	१२	मास	मांस
४३३	१५	माश	मास
४३४	११	युद्व	युद्ध
४३९	६	तथा	×
४३९	६	वनावजो.	वनावजो.
४४१	१	पोदश	पोडश
४४१	१९	झाई	झाइ
४४३	१	पोदश	पोडश
४४७	३	अघम	अधम
४४८	१	होये	होय
४४८	१४	होवाथी	होवाथी
४४९	१२	वेषनी	वर्षनी
४४९	१९	मध्यमा	मध्यममा
४५३	७	नथी	नथी
४५३	५	पेपणदन्तनी	पेपणदन्त
४५४	१४	आपवा	आपवा
४५६	२७	भारत वर्षाय	भारतवर्षीय
४५६	७	अने अने	अने
४५९	२५	वगलमा	वगलमा
४६२	८	न्हाना,	न्हाना
४६२	१३	वळेलु	वळेलु
४६२	२३	जेना	जेना
४६३	५	वर्या	कर्या
४६३	२४	वणाजेला	वणाएला
४६५	३	हालिना	हालिना
४६५	६	निदम्प,	निदम्प.
४६५	१६	ऐ	ए

४६६	२०	हाय	होय
४६७	१६	अ ो	अने
४६७	२०	गन्थिमय	ग्रन्थिमय
४६८	१५	वहिलाभ	वहिर्लोम
४६८	१६	मांगतो	मागतो
४६०	२१	आग्न प्रवेश	अग्निप्रवेश
४७०	८	परोच्चगा	परोच्चमा
४७०	७०	पुरुपोना	पुरुषोनां
४७०	२१	पारितोपकथी	पारितोपिकथी
४७१	१३	गृहवाटिकामाविहार	गृहवाटिकामा विहार
४७१	१४	कुमारोना	कुमारोना
४७२	२४	हाहाकार	हाहाकार
४७४	२२	कार्यलिङ्गानुमान	कार्यलिङ्गानुमान
४७५	१	लिङ्गानुंमान	लिङ्गानुमान
४७६	७	पियासा	पिपासा
४७६	११	निमित्तानुरुप	निमित्तारूपा
४७६	१४	अकारण	सकारण
४७८	१६	परीप	पुरीष
४८०	२	हरिन्द	हरिद्र
४८०	३	वाळा	वाळा
४८०	१२	मनुष्यने	मनुष्यने,
४८३	१३	राखे	राखे,
४८५	२३	मन्या	सन्ध्या
४८६	४	लीध	लीधे
४८६	७	छ	छे
४८७	२३	वाकुं	वाकु
४८९	१	वळनी	वळनी
४८९	६	रोगीना	रोगीना
४८९	१३	जेन	जेने
४८९	२३	जठा	जुठा
४९०	६	भागवी	भोगवी
४९४	११	मेळवववु	मेळववु
४९४	२६	प्रधरु	प्रथम

४९७	१५	पोताना	पोतानां
४९८	५	परलाकनी	परलोकनी
५०१	२०	दूघ	दूध
५०१	२३	वांदळांओ	वादळांओ
५०४	१८	उल्का	उल्का
५०७	६	मेघमद्दशवर्ण	मेघसदृशवर्ण
५०९	३	इयामवर्ण	श्यामवर्ण
५०९	११	दिशा मा	दिशामां
५१०	१५	वकरी	वकरी
५१६	१९	जाय छे	जाय छे
५२१	१८	जनुनी	जननी
५२१	१९	उपजी	उपजी.
५२२	१९	केटलाएकना	केटलाएकनां
५२२	१९	क्वच	कवच
५२३	५	धया	थया
५२५	१८	सात घामथी	सात गामथी
५२५	२३	" शंखेशर "	" शंखेसर, "
५२५	२३	" कारेला '	" कारेला, "
५२५	२३	" कट्टुटा "	" कट्टुटा, "
५२६	३	तेमा	तेमां
५२६	११	१४५०	१४५०
५२७	१८	थयो.	थयो,
५२८	९	छे.	छे
५२८	१३	शहित	सहित
५२९	६	पड्यो.	पड्यो,
५२९	६	लाग्यो	लाग्यो,
५२९	२२	साहेबकुवरनाए	साहेबकुवरदाए
५३०	१९	त्यान्या	त्यान्यां
५३१	१५	दरवाजाओ	दरवाजाओ
५३२	२	हता	हतां
५३२	७	नया	गया
५३३	१३	ऐवे	एवे
५३४	९	[illegible]	[illegible]

५३८	३	अने	×
५३८	१७	राजभुव मां	राजभुवनमां
५४०	३	जोइ	जोइ कह्युं
५४०	१७	वे श्याहुंदो	वेश्याहुंदो
५४०	२०	ज्ञालाना	झालाना
५४०	२१	मानहिंहजीए	मानसिंहजीए
५४१	२०	बादशाइनी	बादशाहनी
५४५	५	घिगेरे	विगेरे
५४६	२०	जाळ	झाळ
५४७	१५	सहि ।	सहित
५४८	३	ढीला	ढीली
५४९	६	प्रराक्रमथी	पराक्रमथी
५४९	१४	सिन्धु रागने	सिन्धुररागने
५५१	८	राजरायसिंहजी	राजरायसिंहजीए
५५१	२६	अलकृत	अलंकृत
५५३	६	चोत्रेर	चोमेर
५५४	२	वसंतन	वसंतना
५५४	२५	कुन्द	×
५५६	१६	नयनाने	नयनोने
५५९	९	हतो	हतो.
५६०	९	चुडाकर्म	चुडीकर्म
५६०	१९	योद्धओनां	योद्धाओना
५६०	२०	करां	करमा
५६२	१७	कमळानाज	कमळनाज
५६३	९	समी े	समीपे
५६३	१९	नवाल्लव	नवपल्लव
५६३	२६	तपायमन	तपायमान
५६५	१	ग्काए	एकाए
५६५	२५	प्रलंव	प्रलंव
५६६	११	रायसिंहजी े	रायसिंहजीने
५६८	३	कत्ागा	कत्ामा
५६८	३	रहेली	रहेला
५६८	१३	वन्ने	वन्ने

५७१	१३	युद्धभूमिंज	युद्धभूमिमाज
५७१	१४	" हरिरर काव्य "	" हरिरसकाव्य "
५७८	६	सूर्यसिह्नीनां	सूर्यसिह्जीनां
५७८	१८	राजचन्द्रगिंह्नी	राजचन्द्रसिंह्जी
५७९	५	चा कनो	चाबुकनो
५७९	१४	आश्र ।	आश्रय
५८०	१०	जे	जो
५८२	२	स्वार्थवृति	स्वार्थवृत्ति
५८६	५	निकळा	निकळी
५८७	१६	ि यतमाने	प्रियतमाने
५८७	२४	विरह दुःखने	विरहदुःखने
५८८	३	मारथी	मारथी
५९०	१५	उत्तप	उत्तम
५९१	७	पता	पिता
६०५	१	वींशन् तरंग	एकविंशन् तरग
६०६	१०	ग्रतानजी	सर्तानजी
६०७	१	वींशत तरग	एकविंशन् तरग
६१७	४	हजार	हाथ
६२२	११	प्रशासाना	प्रशासाना
६२२	२२	राणी	राणी
६२६	५	दे ातो	देवातो
६२८	३	राज्योनी	राज्योनी
६३०	३	हता	हती
६३१	११	बाइसाहेबबाना	बाइसाहेबबाना
६३२	५	काठि आवाडनी	काठिआवाडनी
६३४	४	त्माना	त्माना
६३५	६	खाजटीपु	नोजडीपु
६३५	१६	दि स	दिवस
६३५	१८	वोरानी	चोरानी
६३८	८	लगभग	लगभग
६३८	१०	लगाम	लगाम
६३८	१०	दबते	दबते
६३८	१७	डाम	डाम

६४०	७	ोपक	पोपाक
६४१	१६	वनेसिहजीना	वनेसिहजीना
६४६	५	मन	मना
६४७	१३	एफ	एक
६४८	१२	भेसरीश्रा	मेसरीश्रा
६५१	१	ाक्रया	क्रिया
६५१	११	न ी	नवी
६५२	१४	सत्पुरेषानो	सत्पुरुषोनो
६५७	२२	श्रानढ	श्रानंद
६६४	१३	रविारे	रविवारे
६६५	७	श्रमा	श्रमो
६७७	१२	सेग्रेगेशन	सेग्रेगेशन
६७९	२१	शुशोभित	सुशोभित
६८२	२४	ग्लॅनस्टवना	ग्लॅडस्टनना
६८५	२१	एमानु	एमानुं
६८५	२२	म्युझीम	म्युझीश्रम
६८५	२२	हिरटरी	हिस्टरी
६८७	२०	वुश्य ा	वुश्यम
६९०	९	त्याथी	त्यांथी
६९३	९	जावा	जोवा
७०६	६	ेनर्र	मेसर्स
७११	६	किवताश्रो	कविताश्रो
७२६	२	वत्रके	व्रत्रके
७२६	१२	गिरमां	गिरमें
७२६	१९	श्राय	श्राये
७२७	५	सुखभाकर	सुखमाकर
७२७	११	कहते	करतें
७२९	१०	फालको	फालको
७२९	१३	करहे लो	कर हेलो
७२९	१४	करछे लो	कर छेलो
७३१	९	महोत्स	महोत्सव
७४१	१९	श्रहथिश	श्रहर्निश
७४२	११	श्राशीर्वयन	श्राशीर्वचन

७४२	१९	घनर्पातको	वनपतिको
७४५	३	धारींने	धारॉने
७४९	९	रिद्धि	रिद्धि
७५०	२२	घरको	घरको
७५१	१५	किं	कि
७५३	१२	मखवानकुलभान	मखवानकुलभानु
७५८	६	मरा	मरी
७५८	१५	ढाळाव	ढोळाव
७६०	१४	रींत	रीत
७६३	१४	मनापति	सेनापति
७६३	२३	गाइल	माइल
७६४	२३	लहरींनो	लहरीनो
७६६	६	पढे छे	पडे छे
७६६	८	पहोंघा	पहोंच्या
७७०	४	उंठनी	उंटनी
७७५	१४	लगवाथी	लागवाथी
७७५	१९	पांचमा	पाचमा
७७५	१६	मकातनी	मकाननी
७७७	७	पंदरमां	पंदरमा
७७८	१२	राख	×
७८०	२०	पुष्पोवाळुं	पुष्पोवाळुं
७८८	११	आनंद	आनंद
७८८	१४	रतशा	रतनशा
७८८	१९	राव्या	राख्यो
७९०	१५	दोहा	सोरठा
७९१	१५	वसुधायशधी	वसुधा यशधी
७९५	५	छत्र है	छात्र है
७९५	१५	के सी. आइ को	के. सी. आइ [illegible]
७९९	७	परम	परम
८०५	१	सद्गुणोधा	सद्गुणोधी
८०५	१८	फरी	करी
८११	१	हीमरजीने	[illegible]

८१८	१०	वरशाजीन	वरशाजीने
८१८	१४	" श्रीयशवतजीवनचरित्र "	" श्रीयशवंतजीवनचरित्र "
८१९	२	वि. स.	वि. सं.
८१९	१३	त्या	त्यां
८२१	१५	वखतसिंदजी	वखतसिंहजी
८२२	२३	यशवतसिंहजी	यशवंतसिंहजी
८२७	८	पच्छमममा	पच्छममां
८२८	१४	पछा	पाछा
८३१	८	साहवेने	साहेवने
८४०	१९	वामलेज	घामलेल
८४०	२०	वीर	धीर
८४३	२३	नापे	नामे
८४६	९	भगीनॅा	भगिनॅा
८४८	११	वचन	वचने
८४८	१६	हर्ष	वर्ष
८५०	२४	उर्पक्त	उपर्युक्त
८५१	१३	नरहनदासजी	नरहरदासजी
८५६	१५	लछमनसिंहजीने	लछमनसिंहजी
८५९	१७	झालावाळी	झालावाडी
८६३	१२	चुंडावतोमा	चुडावतोमा
८६३	१३	सिघाव्या.	सिधाव्या
८६४	४	करीके	कर्यांने
८६६	२३	वीकावत	बॅीकावत
८६८	३	धारी	धार्यॅा
८७०	८	महॅिप	महिप
८७१	८	जइ	जई
८७१	११	थयां	थया
८७१	१४	गुणशाळी	गुणशाळॅी
८७१	२२	अर्जुसिंहजी	अर्जुनसिंहजी
८७१	२२	राखी	राखॅी
८७१	२३	जाळवी	जाळवॅी
८७४	२३	तापण	तोपण

८७५	१	आळखी	ओळखी
८७५	१	गगा	गया
८७५	१	झालावाड	झालामंड
८७६	४	कर्या	कर्या
८७६	१९	करवी	करवाने
८८१	२३	वारीनी	वारीगरनी
८८३	१७	शौर्यथी	शौर्य
८९२	९	राजन्हि	राजचिन्ह.
८९५	११	पातानी	पोतानी
८९६	१७	मनगा	मनमा
८९७	१०	ए	एने
८९८	४	पड छे	पडे छे
९११	८	महपातिए	महिपतिए
९१२	२५	चंदनसिंहजीना	चंदनसिंहजीना
९१४	०	जनननके	जननके
९१७	८	निमलहेडाने	निमवहेडाने
९१८	१२	लघुवन्धु	लघुबन्धु
९१८	१७	शाथे	माथे
९२१	२	कानोठवाळा	कानोठवाळा
९२१	२३	लघु	लघु
९२३	१०	अने अने	अने
९२४	५	न्यायाग्रुव–	न्यायग्रुव–
९२४	१९	लघुबन्धु	लघुबन्धु
९२६	११	भादराजनवाळा	भादराजनवाळा
९२६	१७	इता	हता
९२६	२०	कया	कर्यो
९२७	१४	विरद	बिरद
९२७	१७	और	औ
९२८	१४	रिसायत	रियासत
९२९	२२	मद	मर्द
९३०	१३	दात	वात
९३२	६	गर्द	गर्द
९३३	३	म	मान्यो

१३३	१४	असीतणो	आमितणो
१३४	१९	धमसाण	घमसाण
१३४	२०	वाह्निनीमा	वाह्निनीँमा
१३५	५	झीलानी	झालानी
१३५	८	दुःख हरण	दुःखहरण
१३५	१४	क्षितिपाल,	क्षितिपाल,
१३६	१०	भालीने	भाळीने
१४१	८	स्वर्गवास	स्वर्ग
१४१	२०	राखी	राखीँ
१४२	५	राग	राज
१४२	२३	मेवाडी	मेवाडीँ
१४८	७	पोताना	पोतानां
१४९	२४	राजचन्द्रसिह्जीग	राजचन्द्रसिह्जीने
१५१	८	तेना	तेनां
१५५	२५	पहोंच्यो	पहोन्या
१५७	१०	राज्यना	राज्यनो
१५८	३	वाघलानी	वाघेलानी
१५८	१५	राज्यन	राज्यने
१६४	२	रथळे	स्थळे
१६४	२२	सुरतान	सुलतान
१६५	२४	तर्जा	तर्जाँ
१७२	१७	कुवरीश्री	कुंवरीश्री
१७५	१०	मागणीयी	मागणीथी
१७६	६	नामना	नामनां
१७६	१९	कुवरीने	कुवरी
१७८	१५	झालावाड वीरमगाणना,	वीरमगाम झालवाडना
१८०	२	भूमि	भूमिने माटे
१८१	१५	मालीकानो	मालीकीनो
१८७	१४	चाह्न.	चाह्याँ
१८८	३	नभ्र	नम्र
१९६	२	गायाकवाड	गायकवाड
१९९	१४	पृथीरा	पृथी

१०५०	१७	सामन्त,	सामन्त.
१०५४	३	शेषगालजी	शेषमालजी
१०५५	३	धींगाणु	धींगाणुं
१०५७	१५	कुवरोने	कुंवरोने
१०५८	१३	धर्म धुरंधर	धर्मधुरंधर
१०५८	१७	चोपे	चोपे
१०६२	१७	थया,	थया.
१०६३	६	जुवानसिंहजी	जोरावरसिंहजी
१०६३	१०	कुवरी	कुंवरी
१०६३	२२	शामजी	शामजीने
१०६४	६	ठाकोह	ठाकोर
१०६४	१६	चोवशी	चोवीशी
१०६६	९	भाग्यदवीने	भाग्यदेवीने
१०६७	२	प्रचिाजी	प्रतिपच्ची
१०६७	१४	एक	एज
१०६७	१७	कपडां	कापडां
१९६८	१	जोघोजी	जोधोजी
१०७२	५	सुरभिनु	सुरभिनु
१०७२	१८	आवीयो	आवीयो
१०७६	३	करी	करी
१०७६	९	द्वितीयातणा	द्विसीयातणा
१०७७	७	हवा	हवा
१०७८	२१	सुरभितणा	सुरभितणी
१०८०	१२	नथुरामनी	नथुरामनी
१०८१	१९	उदधि मही	उदधिमही
१०८३	२१	ध्वात अरि	ध्वातअरि
१०६६	१२	स्थलमहिं	स्थलमांहि
१०९१	६	मुख सुधाधर	मुखसुधाधर
१०९६	१३	वारण वैरीमही	वारणवैरीमही
११०३	३	गनकी	पानकी
११०३	९	अग अम	अग अंग

११०३	२०	डारी वे को	डारीवेको
११०३	२३	चटाय	चढाय
११०४	३	विप्रन के	विप्रनके
११०४	३	अगनि हुको	अगनिहुको
११०४	७	अरुवाजी	अरु वाजी
११०५	६	आगश्राने	आगश्राने

श्री झालावंश वारिधि.

प्रथम तरंग.

मंगलाचरण.

छंद स्त्रगधरा.

आखा ब्रह्मांड मांहे रजनी दिवस जे, पूर्ण राजी रहे छे;
वेदोमां रुप जेनुं, निरणय करतां, नेति नेति कहे छे;
नांही प्होंची शके ज्यां, गति अतिमननी वाणी पामे विशम;
प्रीतें नित्ये करुं ए, प्रणवमय परब्रह्मने हुं प्रणाम. १

साधे म्होटी समाधि, तदपि मुनितणा वृन्द पामे न पार;
प्रेमे गाये पुराणो, निरवयव तथा नित्यने निर्विकार;
कष्टेथी सुज्ञ कोइ, कळी नथी शकता, रंगमां श्याम राम;
प्रीतें नीत्यें करुं ए प्रणवमय परब्रह्मने हुं प्रणाम. २

म्होटा म्होटा मुमुक्षु, श्रम सहन करे, सर्वदा जेनी शोधे;
ज्ञानी ज्यां खाय गोथा, विमळ हृदयमा विश्व केरा विरोधे;
जेने जोवा तपस्वी, जप तप करीने जाय छे हारी हाम,
प्रीतें नित्यें करुं ए, प्रणवमय परब्रह्मने हुं प्रणाम. ३

जेनी सत्ता थकी आ, चर अचर सहु पृथ्वी माथे प्रकाशे;
जे जाण्याथी जनोना, जनम मरणनी, वात सर्वे विनाशे;
भाव जेने भजे छे, अनुदिन अजने, विष्णु विख्यात वाम;
प्रीतें नित्यें करुं ए, प्रणवमय परब्रह्मने हुं प्रणाम. ४

दोहा.

निज कुळनी वंशावळी, सुणवा वारंवार;
अमर भूप! छे आपने, इच्छा उरें अपार— १
वीर आपना वंशजो, निर्मळ एनां नाम;
प्रथम कहुं छुं पद्यमां, संक्षिप्तें सुखधाम— २

रोळा वृत्त.

आदि एक अव्यक्त, विश्वपति नित्य निरामय;
एथी थयां उत्पन्न, पुरुषने प्रकृति प्रभामय,
थया एथी अजदेव, चार मुखवाळा चारु;
करता विविध विचार, विश्वनी वृद्धि सारु. ३
तेना मानस पुत्र, थया भृगु मुनि मनोहर;
थया एथी उत्पन्न, विधाता नामे सुतवर;
तेना मुनि मृकंड, यज्ञविधि आचरनारा;
पुत्र थया ख्यात, धुरा धर्मनी धरनारा. ४
तेना सुत तेजस्वी, नित्य द्विजने नमनारा;
मार्कंडेय महान, थया शुभ लक्षणवाळा;

अल्प आयुनो योग, मळ्यो सप्तर्षि मळतां;
अजरामर ए थया, कृपा ब्रह्मानी फळतां. ५
शूरवीर शस्त्रज्ञ, तनुज तेहना तपस्वी;
कुंडमाल कमनीय, अवनिमां थया यशस्वी;
यज्ञकुंड मालनुं, कलित रक्षण करनारा;
करी विघ्न विध्वंस, हाम अरिनी हरनारा. ६
अतुल ओज धरी रणे, कैक राक्षसने रोळ्या;
रुंडथी मुंड उडावी, त्वरित अभिमानो तोड्यां;
तेना **कामिक** ऋषि, छाप जेणे शुभ छापी;
वृषकेतु विद्वान, तेहना पुत्र प्रतापी. ७
थया एथी **कल्याण,** ऋषि ऋषिना हित कारण;
रात दिवस जे रह्या हता, करी शस्त्रो धारण;
कुन्त ऋषि ते तणा, तनुज तेजस्वी गणाया;
करी प्रसन्न मुनि वृन्द, भव्य मखवान भणाया. ८
उत्तरमां अभिराम, शहेर सुखदायक स्थाप्युं;
कुन्तलपुर कमनीय, नाम आनंदे आप्युं;
थया **धवल** ते तणा **सदो** सुत तेना सारा;
धीर **धनिक** धर्मीष्ट, भ्रष्टने भय भरनारा. ९
वलवाळा **वलधीर, इन्द्र** ने **गगन अनल** वर,
इन्द्र अडस्व सु जैश, पछी **यशमान मुलक नर;**
श्याम मान ने इन्द्र, रतन श्रीपति सुखदायक,
सोम महेश महान, जवर **जयमल** अति लायक. १०

ए पछीं अक्षय भान, यज्ञ युवनाश्व अनुपम,
माणिक विठ्ठल पछी, थया शान्तल अति उत्तम;
स्वराज ने शुरतान, हठीलो हमीर भारी,
भाण करणना पछी, थया केसर सुखकारी. १९

कलित भूप कल्याण, भीमने विजय भणाणा,
पछीं बलदेवॅ प्रसिद्ध, जबर जशवंत जणाणा;
युवनाश्व सारंग, पछी शिवराजजॉ शूरा;
देव अने बलवीर, मूळ सुप्रतापी पूरा. १२

अक्षय पछी अजीत, अने माणिक नृप म्होटा,
प्रताप भूपं पछी, कर्यां खळ दळने खोटा;
घह्न शूर बलवीर, करण लखधीर लखाणा;
मालदेव मुळराज, गुणी लखधीर गणाणा. १३

सोमेश्वर रणधीर,रतन ने पृथ्वीमल राजा;
विजयराज ने क्षेमराज मनहर कुळमाजा
अक्षयराज शुरतान, हिम्मती हमीर एना;
धरणीधर नृप धीर गाय गुणीओ गुण जेना. १४

धीरसेन धृतिमान धरणीपति धर्म धुरंधर;
पुष्पसेन ते पछी, संत सुराभिना सुखकर,
पछी माणिक मकवाण, विश्वमांहे वखणाया;
पद्मसेन ए पछी धर्मने पंथे धाया १५

पातलसेन प्रसिद्ध, रेन दिन रणना रागी;
प्रतापभाण प्रतापी **कर्मसिंह** अति अनुरागी;
जयमल ने **जशराज**, पछी **सुरतान** सुभागी;
हमीर ने **हरपाल** मुखथी लेता युद्ध मागी; १६

हर्ष भर्या **हरराज**, **श्रीपति** नृपति शाणा;
वाघ भूप विख्यात, महद मोजी मकवाणा.
बेरसिंह बहादूर, **भीम** अरिने भय दाता;
भोजराज सारंग, सदा करता सुखशाता. १७

शिवराज मुळराज पछी **माणेक** मनस्वी;
रुपराज रणजीत तीव्र युद्धना तपस्वी;
भोजराजने करण कीर्ति **केसरे** प्रसारी;
भव्य **अजय** भूपाल, **देवपालक** दुःखहारी. १८

अक्षयपालने अमृतपाल पछी **रत्नपाल** नृप;
देवपाल सुरपाल, जपे याचक जशना जप;
विजयपाल ने **सोमपाल**, पछी **चन्द्रपालजी**
मानपाल मकवाण, चतुर **चन्द्र**ना लालनी १९

लेख्या **लक्ष्मणपाल** पछी **लूणपाले** प्रजापति;
लाखणशी बलवीर महिप **बलदेव** महामति;
वच्छराज नृपवीर, पछी **नरभ्रमर** नरेश्वर;
नेतसिंह ने **कर्मसिंह** सुखप्रद **सोमेश्वर** २०

हमीर ने हँसराज भूप हद हिम्मतवाळा;
वच्छराज मुळराज, नेक नरनाथ निहाळ्या;
क्षेमराज सुरतान, अक्षयराज आनंदी;
पातलसेन प्रताप, सदा लखधीर स्वच्छन्दी. २१

जयमल ने पृथीराज, पछी पुँजराज प्रतापी;
माणिकने युवनाश्व, महीने सुयशे मापी;
धारँगने धीरसेन पुष्पसेनाभिध नृपति
शहाभोज सोमेश शुद्ध करनारा सुकृति. २२

शूरवीर सुरतान, वैरीने विदारनारा;
उत्तम अमृतसेन पछीथी प्रगट्या प्यारा;
जाहिर जशवँतसेन, जन्म तेने घर पाम्या;
भीमसेन गृह रतनसेन जशजोरे जाम्या. २३

भूप भारमल कीर्तिपाल पछी केसर कहीए;
बुद्धिवंत बलदेव नाम संग्रामनुं लहीए;
थया नृपति नरभ्रमर, रत्नसेनाभिध राजा;
श्रीपति ने शिवराज, करण राखण कुळ माजा; २४

यशधारी यशराज, महद मुळराज महीपति;
सोमेश्वर शान्तले, राखी ऋषि रक्षणमां रति.
वाघसेन ने वैरीशाह, युवनाश्व उमंगी;
चंद्रपाल ने मेघपाल, प्रगट्या रणरंगी. २५

मूळराज ने छत्रसाल, ए पछीँ उत्साही;
उत्तम आनँदमेरु, जन्म पाम्या जगमांही;
सोमेश्वर बहु सुज्ञ, थया पछी नृप सारँगधर,
शौर्यवान सुरतान, करणने रत्नसेन वर. २६

हमीरने रणमल्ल, पछी संग्राम सुशोभित;
धीरसेनने पुष्पसेन, अवनिना आदित;
पराक्रमी पृथीमल्ल, भारमलजी, भयहारी,
पद्मसेन यशवंतसेन, ए पछीँ अवतारी. २७

इन्द्रसेनने अजय भूप बलवीर वखाणुं,
जोधपाल यशपाल, जबर जशवाळा जाणुं;
मानपालने रत्नपाल, रणधीर रसीला,
सुखप्रद सालणदेव, वडा विभुवना वसीला. २८

शेषपाल क्षितिपाल, पछी शान्तल सतवादी,
कलित भूप लखधीर, आपुँ जयमलनी यादी;
युवनाश्व माणेक, पछी मुळराज मायाळु,
अक्षयराज ने अमृतसेन, दिलतणा दयाळु. २९

भमिसेन ने भोजराज, पछीँ पर उपकारी,
पातलसेन प्रसिद्ध, थया पापीने प्रहारी;
नरपति श्री नरभ्रमर, भीमपाळे भय टाळ्यो,
पृथ्वीपाळे पण परम, धरम निज कुळनो पाळ्यो. ३०

प्रतापभाणे पछी, कार्य उत्तमनां कीधां,
अभयराज अवनिपे, अभयनां दानो दीधां;
मेघराज मुळराज, अने **शिवराज** उचारुं,
राजा श्री **रणमले**, कर्युं सहु जननुं सारुं. ३१

क्षेमराज ने **अक्षयराज**, नृप उरना निर्मळ,
अमृतसेने अधिक, वैरीने वतलाव्युं वळ;
भीमसेन पछी **भोजराज** जन्म्या जश धारी,
भूप **भारमलजीए**, पृथ्वीमां कीर्ति प्रसारी. ३२

रसिक भूप **रणजीत**, तनुज **रुपसिंहजी** तेना,
रुक्मांगद राजर्षि, गाय जन सद्गुण जेना;
राजा श्री **रणधीर**, पछी **धारंग** धरणीमां,
धीरसेन ने **पुष्पसेन**, प्रगट्या सुख सीमा. ३३

माणिक ने **सुरतान**, महा मतिवाळा मह्वीपति,
छत्रसाल ते पछी, थया उत्तम नृपमां अति;
हिम्मतवान **हमीर**, **करण** ते तणा तनुज वर,
कर्मसिंह कल्याणमल्ल, पछीं प्रगट्या **केसर**. ३४

बळधारी **बळदेव**, थया जनमी जग जाहिर,
वैरिसाल नृपवरे, हण्या रिपुने हद बाहिर;
शान्तलसेन सुशील, पछी **संग्राम** प्रमाणो,
सोमेश्वर पृथ्वीमल्ल जबर **सारंगधर** जाणो. ३५

सूर्यभाण पृथिराज, अवनिमां थया अटंका,
पद्मसेनथी पूर्ण, पामता शत्रु शंका;
अमृतसेन ने **अजयभूप,** आनंदी अनुपम,
जोधपाल ने **भीमसेन,** साचवता संयम. ३६

छेल्या **लक्ष्मणसेन,** महा दुनियामां दानी,
रत्नसेन विक्रमे, हरी रैयतनी हानि;
समरसिंह सुखरूप, पछी **नरभ्रमर** नरेशे,
प्रसराव्यो परिपूर्ण, सुयश शुभ देश विदेशे. ३७

भारमल्ल ने **करणपाल** नृप **जगन्नाथ** वर,
सुखकर **श्रीपतिसेन,** अरिने दिलभरता डर;
शत्रुसाल ने **सोमपाल,** पृथ्वीना **पुरंदर,**
उदयपाल पछी **करणपाल** महीपति सुदमन्दिर. ३८

रत्नपाल पछी थया, धीर नृपति **धरमांगद;**
देवचक्र झांझरे उतार्यो महद **अरिमद**
जग जाहिर **यज्ञेश** पछी **युवनाश्व,** अतुलबल;
जाण्या **यशवंतसिंह,** न्यायना निधान निर्मल. ३९

प्रगट्या **भानुप्रताप** ए पछी भयहर भूपति;
पातलसेने पूर्ण, राखी सत्कर्मोमां रति;
पुष्पसेन ने **भीमसेन** पछी थया **पृथ्वीमल;**
धीरसेन माणेक पछी जन्म्या **जयमल** भल. ४०

मूळराज ने क्षेमराज लाखणसिँह लेख्या;
लूणकरण लखधीर पराक्रमवाळा पेख्या;
पुंजराज पृथॉराज, धीर धनराज धरामां;
दुःखहर सालणदेव, धर्या जेणे जश जामा. ४१

करमी केसरदेव, करण हरराज हिम्मती.
हर जेवा हरपाल थया काव्यना किम्मती;
हमीरने सुरतान, थया पछी पूरण प्रेमी;
सूर्यपाल सोमेश. निरंतर नौतम नेमी. ४२

शाहॉभोज संग्राम शेषपाले सुख दीधां;
खुमाणसिंहे खूब, कार्य कीर्तिनां कीधां;
इन्द्रसिंह ने अमृतसेन पछॉ धीर धरणॉधर;
अक्षयराज ने अमृतसेन वखणाया नृपवर. ४३

पद्मसेन सारंगदेव, शिशुपाल क्षितिपति;
अजयभूप पछॉ देवपाल, धरता दिनकर द्युति;
भीमपाल यशपाल, थया ए पछॉ अवतारी;
सोमपाल ने सूर्यपाल जाणो जशधारी. ४४

इन्द्रसेन पछॉ अक्षयपाल ने मानपाल नृप;
रत्नपाल केसरे, तीव्र कीधां समरे तप;
चन्द्रपाल पछॉ अक्षयराज सुरतान हमीरे;
उखेडीयां अरि वृक्ष, मूळथी शौर्य समीरे. ४५

हरवखते **हरराज**, क्रूरनो विनाश करता;
अक्षयराज ए पछी, हानि सहु जननी हरता;
अमृतसेन ने **भीमसेन** दळता दुश्मन दळ;
पुष्पसेन पछी थया, प्रकट भडभूप **भारमल**. ४६

पृथीराज युवनाश्व, रत्नपाले रिपु रोळ्या;
मूळराज माणिके, मान अरि उरनां मोड्यां;
क्षेमराज क्षितिपाल, पछी **जयमल्ल** जणाया;
लेल्या पछी **लखधीर**, भूप **रणमल्ल** भणाया. ४७

भोजराज ने **सूर्यभाण** पछी नृप **सारँगधर**;
सुंदरपाल सुजाणसिंह, जगजाहिर सुखसर;
विजयराय विक्रमे, प्रजाने प्रेमथी पाळी;
यशराजे अवतरी पापीनी पंक्ति प्रजाळी. ४८

दानी **वीशळदेव**, महीपति **आनँदमेरु**;
ए पछी **अमृतसेन**, थया भाग्याना भेरु
पुत्रो तेना पांच, जगतमां जाहिर जाणो;
चाचँग वाचकदेव, पछी **शिवराज** प्रमाणो. ४९

वच्छराज नुं नाम, सहू ए पछी उचारे;
भव्य हता भाणेज, एह यादवना चारे;
मालदेवजी कुँवर, जबर पाचमा जणाये;
महद जेनुं मोसाळ. हस्तिनापुर गणाये. ५०

प्रवळ पक्ष मोसाळ तणो एणे मेळवीयो
वळियो चारे बन्धु साथ संग्रामे लडीयो;
अग्रजनो करी अन्त, पाणी पाछळथी पीधुं;
कुन्तलपुरनुं कलित, राज्य कबजे करी लीधुं; ५१
ए समये चाचंगदेवनो कुमार केवळ,
शूरो **सालणदेव**, बच्यो रणमां निजने बळ;
कुन्तलपुर तजी संग लइ लश्कर पोतानुं.
गयो पूर्व दिशिमांहि, भव्य अवनिनो भानु. ५२
सीकरीमां ए समय, राज्य करता'ता तुंवर;
युध्द कर्युं ए साथ,सालणे समरी हेतें हर;
ए लडाइमां विजय, मेळव्यो नृप मकवाणे;
कर्युं कबज सीकरी, वात जे जग सहु जाणे. ५३

दोहा.

अमर ! आपना पूर्वजो, सीकरी जीत्या बाद;
कोण थया कयां जइ वस्या, ते कहुं विना विवाद. ५४

छन्द हरिगीत.

क्षितिपाळ साळणदेवना सुत **जोमपाल** जशे भर्या,
जशराज ने **झालंगदेवे** काम कीर्तिनां कर्यां,
सारंगदेव पछी थया **शिवराजजी** शूरा अति;
वर **विक्रमादित्यजी** विबुधपर राखता हृदये रति. ५५
सुत एहना शुभ **समरसिंह** थया पछी **वनदेवजी**.
धनराज पछी मीतें रह्या नृप **देवराज** सुखो सजी;

पछीँ इन्द्रभाण उदार, उदयादित्य एनी पाछळे
श्रीपति अक्षयराज पाछळ भूपश्रेणीमां भळे. ५६

महिपाळ श्री मुळराज ते पछीँ क्षेमराज महामति;
जयमल पछी नृप इन्द्रसेने कैंक करी उत्तम क्रांति;
पछीँ पुष्पसेन थया प्रतापी, पद्मसिंह प्रजापति;
भड भीमसिंह थया पछी दिनकर समी धारी द्युति.

पछीँ मालदेव महीप तेना करणसिंह कळानिधि. ५७
नृप हमीरसिंहे हाम धारी, चलव्युं राज यथाविधि;
ते पछीँ थया पृथीराज पातलसिंह पूर्ण पराक्रमी;
प्रीति प्रजानी प्रतापभाणे मेळवी रणमां रमी. ५८

र पछी अर्जुनसिंह यौवनसिंह ने संग्रामजी;
सुखदाइ शान्तलसिंहना गुणी गाय गुण हर्षे हजी;
नृप सुरत अजय सुपाळ तेना मानपाल महीपति;
नरनाथ श्री नरभ्रमर नित्ये खळतणी करता क्षति. ५९

नृप जोधपाल पछी भुमीपति भारमल भड नीपज्या;
जशधारी जयमल सोमपाले शत्रुपर शस्त्रो सज्यां;
नृप हंसराज पछीँ महामति मानपाल महीपरे,
पर वीरसिंह तणा विनयसिँह कोटि दान दीधां करे. ६०

भयहरण भूपति भारमल पछी भोजराज भणाय छे,
नृप करणसिंह पछी गणतीमा भीमसिंह गणाय छे;
शुरसिंह ने संतोषभानु पछी उदयभानु थया,
अमृत प्रताप पछीथी रणमलसिंह कुलदीपक रह्या. ६१

अवतारी अक्षयराज ए पछीं मूळराज मनाय छे,
प्रिय मानपाल पछी कलित नृप भोजराज लेखाय छे;
नृप रत्नसिंह पछी थया सोमेश ने गोवर्धन,
गंगेवजी ने सूर्यमल सारंगधर सुखना सदन. ६२

सारंगधरना कुँवर दिव्य कृपालदेवे बळ घणुं,
वतलावीं सिन्ध महीं जमाव्युं राज कीर्तिगढ तणुं;
तेना थया सारंगधर पछीं अजयभूप उदारधी,
पछीं मानपाल महीप तेना देवपाल दयानिधि ६३

नृप जोधपाल पछी जणाया सूर्यपाल शूरा अति
एना उदयभानु थया, पछीं धरणीधर धरणीपति;
नृप धीरसिंह पछी थया, पातल अने पृथीराजजी,
मरतां लगी मुळराज महिपें तीव्र आसिने नहि तजी. ६४

श्रीइन्द्रभाण अनूप पछीं लखधीरजीने लेखीया;
नृप क्षेम पाछळ वाघसिंह प्रताप वाळा पेखीया;

तेना थया दश कुँवर दानी हृदयना बहु हिम्मती,
कहुं नाम एनां कलित कीधां काम जेणे किम्मती;
हरपाळ, विजय, हमीर, तेम प्रतापवान **पंचाणजी.**
लाखाजीराज तणा अनुज सुखसिंधु **सामन्तसिंहजी;** ७०

शांताजी तेमज **क्षेमराज** पराक्रमी परखाय छे,
श्री कर्मसिंहजी, देवराज यथार्थ लघु लेखाय छे;
श्रीसिन्धना सुलतानथी करी युद्ध केसरदेवजी,
स्वर्गे सिधाव्या सप्त कुँवरो साथ शुभ साधन सजी. ७१

घायल थया बे बन्धु विजय हमीर ब्हादुरी करी,
हरपाळ पाम्या पार सेनानो हणी अगणित अरि
त्यांथी पधार्या तुरत पाटण मह्द गृह मासी तणे,
करणे निकटमां राखीया बन्धु गणी आदर घणे. ७२

भय पामतो बहु भूतथी प्रतिदिवस पाटणनो धणी,
ए दुःखथी करी दूर उरनी हानि हरपाळे हणी;
पूरण पराक्रम पेखी अंश उमापतिनो जाणीने,
शक्ति वरी सिद्धि भरी आनंद उरमा आणीने ७३

शक्तिनी श्रेष्ठ सहायताथी काम करण तणां करी,
बहु देश मेळवी क्लेश विण हिम्मत वडा रिपुनी हरी;
शुभ पाटडीमा राज्य स्थाप्युं हृदय केरा हर्षथी,
तेजस्वी त्रण कुँवरो सहित ओप्या अधिक उत्कर्षथी. ७४

दोहा.

सोढो, मांगु, शेखरो, त्रय शक्ति तनु जात;
द्रढ झाला अवटंक धरी, परम थया प्रख्यात. ७५

वरसोढाना वंशजो, कहुं हवे कुळ दीप;
वासव वक्र पुरी तणा, सुणो अमर अवनीप. ७६

रोळा वृत्त.

सुत सोढाना थया, दुरजनसाल दयाळु,
पछी द्वारिकादास, महा मन तणा मयाळु;
देवराज दुदाजी, शूरसिंह ए पछी शाणा,
शान्तलजी पछीं विजयपाल मधुजी मकवाणा. ७७

पद्मसिंहने उदयसिंह ए पछीं अवतारी,
वेगडजीने रामसिंह भड भूपति भारी;
वीरसिंह रणमल्ल, अधिक करता आवादी,
छत्रसाल लगी रही, पाटडीगढमां गादी. ७८

जेतसिंह नृपतिए, कटक वैरीनां कापी;
कुवा गाममां गादीं, शौर्यथी सत्वर स्थापी;
तेना पछीं वनवीर, भीमसिंह वाघजीं वीरे,
कर्युं कुवामां राज, स्नेहथी सुखी शरीरे. ७९

राज रायधरजीॲ राज हळवदमां स्थाप्युं,
राणाजीए रसिक, नाम क्षितिपतिमां स्थाप्युं;
मानसिंह महिपाळ, यथाक्रम पाटें आव्या,
ए पछीं रायें प्रगटी, तनो शत्रुंनां ताव्यां. ८०

छन्द पद्धरी.

इतीं राजधानीं हळवद रसाल, पाळक प्रसिद्ध झाळा नृपाळ;
रणरागी राय गुणोंमां गवाय, महिमा महान जेनो जणाय. ८१

जे कोइ रायने शरण जाय, सहु काम एहनां सिद्ध थाय;
ए रायसिंह अतिशय उदार, चारु चरित्र एनां अपार. ८२

चारण चतुर ईसर अमाप, तनमांहि शाहथी पामी ताप;
पहोँच्या अनेक अवनीप पास, एनी न कोइए पूरी आश. ८३

पछीं रायसिंहनी पास आवी, संकटनीं वात एणे सुणावी;
मखवान केरुं मशहूर नाम, दीधां त्वरार्थी द्वय लक्ष दाम. ८४

वळीं एकवार रणधीरराय, मळवा मुदेथीं मोसाळ जाय;
यदुवंशीं भूप मामा जसाजीं, मन थाय राय मिळनेथीं राजी. ८५

पुर एनुं धोळ धारो प्रसिद्ध, आनंद राय ले त्यां अविद्ध;
दिन एक आणीं उरमां उमंग, मातुळ सुजाण भाणेज संग. ८६

चोपाट केरीं रम्मत चलावी, जवरी जमात ए समय आवी;
पडीं महद दाडीं डंकानीं माय, ए धणेंधणाट सुणीं धोळनाय ८७

क्रोधायमान वनीने महान, कहे नकी मोडुं नागानुं मान;
ए समय मूछपर हाथ नांखी, कहे राय रीत आवी शुं राखी ? ८८

जादव जसाजी देछे जवाब, ओ रायसिंह ! न करो रुवाब;
मुज हद मांहि मर्याद छोडी, वागे नगारुं ते नांखुं तोडी. ८९

वळियानी साथ भरी जसे बाथ, नवळाथी वेगळो होय नाथ;
कहे रायसिंह हमणा हुं आवुं, वस ध्रोळ मांहि डंको वजावुं. ९०

पळ माहि कीधुं हळवद प्रयांण, त्यां जइ जसाजीने कीधी जाण;
शूरा अनेक सुभटोनी साथ, हर हर उचारी धरी खड्ग हाथ. ९१

चाल्या जवेथी झालराण जोध, जादव जसाजी पर करी क्रोध;
कसवाती जोडी वावन मगावी, वळ धारी ध्रोळ हदमां बजावी. ९२

ठाकोर ध्रोळनो वाहु ठोकी, उभो अडग्ग रण राह रोकी;
जाम्यो महान ए समय जंग, पाम्या पळाद उत्तम प्रसंग. ९३

विजयी महीप मखवान मस्त, वगडी जसानी वाजी समस्त;

हळवद नरेशथी हार पामी, अन्ते उचारी साहेब स्वामी. ९४

पळमां जसाजीए छांडी प्राण, परलोक मांहि कीधुं प्रयाण,
निज राजधानी भणी वळ्या राय, गुण विविध वन्दीना वृन्द गाय.९५

सोरठा.

ज्यां भूपति जसवंत, साहिव कही सूता रणे;
त्यहां वधारण तंत, चारण एक उभो हतो. ९६

आडेसरमां आवी, भेट्यो चारण भूपने;
साहेबने समजावी लडवा कारण लइ गयो. ९७

छन्द पद्धरी.

सुणी रायसिंह ए समाचार, टीकर मुकाम रहीआ तयार;
दल उभय आखड्यां एह ठाम, आव्या अनेक ए मांहि काम. ९८

झलराण झुझीया धारी जोर, जाहिर जमावी घमसाण घोर;
करी रायसिंह उपर चढाइ, साहेब थया संग्राम शायी. ९९

छन्द त्रोटक.

धर वंशज श्री हरपाल तणा, नृप राय सही रण घाव घणा;
पृथिवी पर चक्कर खाइ पड्या, जवरा शव शुत्य विषे न जड्या. १००
सहु दास जनो बहु शोध करी, तजी आश गया रणसिन्धु तरी;
निकळी हती जेह जमात वडी, करी तीरथ ए पथथी ज वळी. १०१
नवसंगर ए स्थळमां निरखी, पृथिवीपति लंगरथी परखी;
गुरु आगळ शिष्य समस्त कहे, रविने गजवी यम राहु ग्रहे. १०२
नथी प्राण हजी नीकळ्यां तनथी, अनुमान महान कर्युं मनथी;
गुरुए खरी शिष्यनी वात गणी, झट मेळवी लास महीप तणी. १०३
क्रमथी करिया उपचार अति, निरवद्य निरोगी थया नृपति;
मकनेश महंतनी पासी मया, जनपाल जमातनी साथ रह्या. १०४

छन्द पद्धरी.

निजधाम पहोंचीया धर्मवंत, मठधारी दिल्हीना ए महंत;
जे संग सेंकडो साधुसंत, रटी सांब छांडता त्वरित तंत. १०५

अतिशय विचित्र विधि अंक आंकी, हळवद नरेश निज वेष ढांकी;
अणजाण भाग्य केरा उदेथी, मठमां निवास करता मुदेथी. १०६

करता महंततनुं एक काम, थइ शाह केरी सत्वर सलाम;
कचरी करेथी एकानी काय, छानो रह्यो न रणधीर राये. १०७

गइ वात वेगथी शाह पास, शाहे त्वराथी करवा तपास;
मठ माहि मोकल्यो हुकम खास, तिलमात्र रायने छे न त्रास. १०८

छन्द मोतीदाम.

भजी मुख पार्वतीना भरथार, तजी डर शाह तणे दरबार
जवा निकळ्या जुगतें झलराण, लई निज संग महंत सुजाण १०९

अजाण तणुं वळ जाणण काज, मतंगजने करी मस्त दराज;
छुटो मुकी राहमहीं पतशाह, अटारी परे चढीओ धरी चाह. ११०

ग्रही झट छूट गयंद छकेल, मचावी रह्यो मग अंदर फेल;
निहाळी द्रगें गजने नरनार, करे भय पामी अपार पुकार १११

उपाधि अरे! जवरी अही जागी गया भयभीत वनी सहु भागी;
त्यहां निकळ्या तप धारी नरेन्द्र, धस्यो सनमुख गुमानी गजेन्द्र. ११२

महंत कहे अटको अही आप, वृथा नहिं वारी लिओ परिताप;
विवेकथी वेण वदे नृप राय, खरा रजपूतथी केम खसाय ११३

स्थिति सरखी न तमारी अमारी, हठुं नहि हुं कदि हिम्मत हारी;
महंत छुपाइ गया वनी त्रस्त, मतंगज आवी चढयो मदमस्त. ११४

मदीपतिए शिर थप्पड मारी, हठयो गजराज करी किलकारी;
वदे मुख आशिरवाद महंत, दीठो नहि तुं सम शूर दिगंत. ११५

सोरठो.

हाथी उपर हाथ, पडतां रायॅ प्रतापीनो
शाह तणा दिल साथ, दिल्ही आखी डगमगी. ११६

छन्द मोतीदाम.

धट्यो गजनो घडि मांहि घुमंड, गयुं चगदाइ जरा स्थल गंड;
भयंकर राय तणो भुज दंड, पविसम पात विलोकी प्रचंड. ११७

प्रसन्न थयो पळमां पतशाह, सराही सराही वदे मुख वाह;
धरेल हतां भगवां परिधान, नहीं नरपाळनुं कांइ निशान. ११८

मनोहर आकृति ओज महान, निहाळी करे झट शाह निदान;
न होय अतीत हशे नृप कोइ, तमाम जनाधिपनी छवि जोइ: ११९

जणाइ गया क्षणमां झलराण, पडी पछीथी परिपूर्ण पिछाण;
मुदे बनी शाह तणा मिजमान, गया निज राज्य महीं मखवान. १२०

प्रजा उर पामी प्रमोद अपार, महीपति राय महान उदार;
करे विण कंटक राज्य रसाल, धरी कर सुंदर धर्मनी ढाल. १२१

सोरठा.

तेवामा धरी टेक, शत्रु पुरातन सज थया;
आवी चढ्या अनेक, हाला देदा हळवदे. १२२

जशनामी झलराण, सुभट संग सन्मुख गया;
घाटीले घमसाण, उभय पक्षमां उद्भव्युं. १२३

छन्द मोतीदाम.

वडो नृप राय लड्यो बहुवार, तडोतड तुटी रही तलवार;
परस्पर थाय प्रचंड प्रहार, लडी लडी कैक रह्या रणठार. १२४

बहु बरछी तणी जामी बहार, करे वळी केर छटाथी कटार;
सही न शके जरी भूतल भार, हली फण शेषनी एक हजार. १२५

वहे अति वेगथी रक्त प्रवाह, तथापि न वीर तजे रणराह;
घटशुं वळ घायल रायनुं साव, बन्यो दुःखदायक तुर्त बनाव. १२६

सोरठा.

महद राय मखवान, उचित अप्सराने वरी;
वेगें चढी विमान, सुर पुर मांहि सिधाविया. १२७

विध विध थाय वडाइ, इन्द्र सभामां एहनी;
सुयश रह्यो जग छाइ, रायसिंह राजा तणो. १२८

दिल्हीने दरबार, सबळ हाथ स्थापी गया;
हळवदनाथ हजार, वर्षे पण विसराय नहि. १२९

छन्द मोतीदाम.

हता नृप राय तणा त्रण बाल, वडा सुखदायक छतरसाल;
सुभागी बीजा सुत चन्द्र सुजाण, तृतीय गणो भड सूरजभाण. १३०

छन्द छप्पय.

मॅच्युं युद्ध माळीए, सबळ मीयाणा संगे;
छत्रसालजी शूर, रॅगाया रणने रॅंगे;
ग्रही तीक्ष्ण तलवार, कैक शत्रुने कापी;
अचळ राखी अभिधान, पडया रणमांहि प्रतापी;
एना अनुज उदारमति, दिल अंदर धारी दया;
पुर हळवदना तख्तपति, चन्द्रसिंह चाहे थया. ३११

चन्द्रसिंहजी चतुर, सुखद हळवदना स्वामी;
अमित लहे आनंद, परम शान्तिने पामी;
एने त्यां अवतर्या, पुत्र नव प्रताप शाळी;
पृथीराज पाटवी, वीरतामां हदवाळी;
आशाकरण, ने अमर पछीं, अभेराज ने राजहरि
राणो, भोज पछी रह्या, सूर्ये प्रतापे प्रभा धरी. ३१२

सूबा साथे थतां, एक समये इतराजी;
सीह्राणीना श्याम, आवीया त्यहां अदाजी;
एने शुद्ध उरेथीं, भला निजवंशज भाख्या;
हर्ष धारीं हळवदे, राज चांदाए राख्या;
सरवर जल पावा सरस, अदो अश्व लइ आवता;
पृथीराजे त्यां प्होंचीया, ग्वासो हय खेलावता. ३१३

अदाजीना अश्वनी, पीठ उपर पृथीराजे;
चोटाडी चाबूक, क्रेश कीधो विण काजे;

अवरेखी अपमान, आंख थइ रक्त अदानी;
पराक्रमी पृथीराज, भरे नहि पाछी पानी.
करवा ध्वंस कुमारनो, उदये भालुं उठावीयुं;
अन्य जनोए उभयनें शान्त थवा समजावीयुं. १३४

छन्द त्रोटक.

करी क्रोध अदाजी परे उरमां, पृथीराज पधारी गया पुरमां;
झट संग्रह सैन्य तणो करता, दिलमां नथि कोइ थकी डरता. १३५

शरणागत उपर सैन्य सजी, सुत केरी चढाइ नृपे समजी;
दिल चन्द्र तणुं दिलगीर थयुं, करमी सुतने समजावी कह्युं. १३६

पृथीराज तजी पितुनी परवा, अभिमान अदाजी तणुं हरवा;
धरी चाह उछाह थकी चडिआ, पितु चन्द्र पधारी वचे पडिआ. १३७

बळवानथी कांइ वन्युंज नहीं, मननी सघळी मनमांज रही;
परिवार समेत प्रवासी थया, पृथीराज पिताथी रिसाइ गया. १३८

वढवाण विषे जइ वास कर्यो, अरिना तनमां अति त्रास भर्यो;
निज आधीन गाम अनेक करी, कुळ गादी त्यहां धृति युक्त धरी. १३९

छन्द छप्पय.

वढवाणे करी वास, वीर झलराण विराजे;
जवरी फोज जमावी, पुण्यशाळी पृथीराजे;
अमदावादी उंट, खरे लइ शाही खजानो;
जूनागढथी जाय, मानी ए समय मजानो;

शाह तणा शिरबंधीपर हिम्मतथी हल्लो कर्यो;
पुत्र चन्द्रनो पाटवी, विजय पद्मजाने वर्यो. १४०

छन्द पद्धरी.

सुणी वात पादशाहे समस्त, करीओ निदेश बनीं क्रोध ग्रस्त;
पृथीराज केरुं जे शीश कापी, मुज पास लावशे नर प्रतापी. १४१

मळशे महान एने इनाम, टळशे उपाधि तेनी तमाम;
जगमां जणावी ए जाहिरात, वळी याद आवतां अन्य वात. १४२

शाहे तयार करीया सुयोध, करवा महान शत्रुनी शोध;
सैनिक समग्र सूबानी साथ, झाल्या उठावी समशेर हाथ. १४३

पृथीराज केरी शक्ति पिछाणी, पळमां सुकाइ सूबानुं पाणी;
विणकपट फोजथी नहि फवाय, वनराज एम वश केम थाय. १४४

एवा विचार करीने अनेक, सूबे गुमान्युं प्राबल्य छेक;
वढवाण पाठवी दूत एक, पृथीराज पास कीधो विवेक. १४५

चढी खूब खंडणी पादशाही, ए काज आवीयो छुं हुं आंही;
आ देशथी छुं तदन अजाण, मुज संग आप चालो सुजाण. १४६

पृथीराज बोलीया धारी प्रेम, आवे मने न इतबार एम;
यवनो प्रपंची होये अपार, उपरथी प्यार मनमांहि खार. १४७

सोरठो.

मन अंदर मरदान! रंच न शंका राखशो;
करमां ग्रही कुरान, शपथ खाइ सूबो कहे. १४८

छन्द मोतीदाम.

तमे करशो नहि जो छल कांइ, नहीं करुं तो हुं मपंच कदाय;
कर्यो पलमांहि परस्पर कोल, पिछाणी नहीं मन कापटनी पोल. १४९

गरीब निवाज सुलाजजहाज, पराक्रमशाळी महा पृथीराज;
अदाजी गृहे करवा उतपात, मळ्या जइ शाहनी फोज सँगात. १५०

सिहाणी परे चढिआ शुरवीर, तुँटयां अगणित तणां तकदीर;
अदो निज अल्प सवार समेत, लडी घडि मांहि रह्यो रणखेत. १५१

थता मनमां सहु कारज सिद्ध, पथे शिर छेदी अदानुं प्रसिद्ध;
त्वराथी टंगाव्युं तरुवर टोंच, सिहाणी विषे वधीओ बहु शोच. १५२

उदे नृपतिनी अभागिनी नार, करे पृथीराजनी पास पुकार;
दिओ मुजने पति मस्तक देव! वळी मरुं ते सह हुं ततखेव. १५३

वँद्या अवळां वचनो पृथीराज, सुणी सतीना दिलमां वधी दाझ;
पथा! नडशे तुजने तुज पाप, दिधो सतीए अति क्रोधथी शाप. १५४

छन्द पद्धरी.

पृथीराज जीती ए रीत जंग, चाल्या त्यहांथी सूवानी संग;
ज्या अन्य ठाम कीधुं मुकाम, त्यां तृपातुर सैनिक तमाम. १५५

उरमां अपार बनीया उदास, करी आसपास जलनी तपास;
नहि कूप वापिका जोइ क्यांइ, सूवानी छाती कंपे त्यांइ. १५६

छन्द छप्पय.

एक जने ए समय, आवी सूवानी आगळ;
खुल्लुं पाडयुं खास, राज पृथीराजतणुं छळ;
अमळ कूप उपरे, तंबु पोतानो ताणी;
माणे झालो मोज, फोज विण पाणी पिडाणी;
तपास करवा तेहनी, गर्व सहित सूवो गयो;
प्रपंच गणी पृथीराजनो, शपथ थकी छूटो थयो. १५७

सोरठा.

सैनिकने करी साद, पकडावी पृथीराजने;
वेगें अमदावाद, सूवो त्यांथी संचर्यो. १५८

जाण पडी न जराइ, शूरवीरनुं शुं थयुं ?
दशा बनी दुंखदाइ, पाछळथी पृथीराजनी. १५९

चांदो चतुर सुजाण, समाचार ए सांभळी;
पलमां छांडी प्राण, देवपुरे दाखल थयो. १६०

बाल्यवये बळवान, पुत्र उभय पृथीराजना;
श्रेष्ठ ज्येष्ठ सुरतान, लघु राजोजी लेखीए. १६१

हळवदना हकदार, पुत्र हता पृथीराजना;
छतां कर्म अनुसार, गादी आशाकरणे ग्रही. १६२

छन्द मोतीदाम.

जता जगमांथी भलो भरथार, रडे पृथीराजनी राणी अपार;
हता दशु बालक बेउ कुमार, वळी डर दीयरनो दुंःखकार. १६३

करे हरकोइ उपाय हजार, लॅख्या विधि लेख टळे न लगार;
गयां सहु ए समये गढथान, अभे नृपने गणी नीति निधान. १६४

उदास थया निरखी अभमाल, विवेक करे दरशावी वहाल;
विनोदथी आप करो अहीं वास, परंतु जशे मुज गाम गरास. १६५

दोहा.

थाय कदी आ वातनी, जो झळवदमां जाण;
आशकरण आवी अहीं, पलमां ले मुज प्राण. १६६

छन्द छप्पय.

निश्चय वनी निराश, राज पृथीराजनी राणी;
शाणी अति गभराणी, जुल्म दीयरनो जाणी;
बन्धु राखडी वांधी, कर्यो 'तो पूर्वे काठी;
ए मूळने लखी, दशा पोतानी माठी;
पुर चोटीले पत्र लइ, सत्वर दूत सिधावीयो;
संग सुभट लइ सोळशत, मूळू मददे आवीयो. १६७

छन्द पद्धरी

चतुराइ काठीओए चलावी, हय मध्य वाइनो रथ हलावी;
जवधारी जांबुडे जबरजस्त, सुखरूप आवी पहोंच्या समस्त. १६८

सुरतान केरुं मोसाळ श्रेष्ठ, लेखाय जाम लाग्वाजी ज्येष्ठ;
पुर जामनग्र एनुं उदग्र, वैरी विलोकतां थाय व्यग्र. १६९

दिन एक पामी उत्तम प्रसंग, सुरतानसिंह निज बन्धु संग;
चाल्या वधारी हृदये सुहाम, श्री जाम केरी करवा सलाम. १७०

सोरठा.

शूरवीर सुरतान, जामनगर जइ प्होचीआ;
मुदथी आप्युं मान, लाखेणुं लाखाजीए. १७१

कचेरीमा जन कोइ, उचर्यो एवुं एक दिन;
हणनारो को होय, निज कर नग्न कटार पर. १७२

बळियो जेनो बाप, शुं न करे सुरतान ए;
स्थिर रही हणीं थाप, कूदी नग्न कटारपर. १७३

छन्द छप्पय.

भाणेजे भय छोडी, करी कृति अति अनेरी;
हरख्या हद विण जाम, हाम बालकनी हेरी;
व्हाल धरी वरदान, जे समे जामे दीधुं;
सुरताने ए समय, कुटिल भ्रकुटी करी कीधुं;
पर घर पेट भरी हजी, दिवस दोहिला गाळीए;
मळे मदद देनार तो, गइ वसुंधरा वाळीए. १७४

रोळा वृत.

सत्वर आपीं सहाय, जबर लाखाजी जामे;
पृथीराजना पुत्र, हाली निकळ्या राट हामे;

धर्युं इष्टनुं ध्यान, कार्यनी सिद्धि करवा;
शूरवीर सुरतान, फोज लइ लाग्या फरवा. १७५

हळवदपर हरवख्त, चढाइ करता चोंपे;
कठिन हृदय कांपतां, शत्रुना जेने कोपे;
गढिआ पर गढ हतो, सबळ वावरीआ केरो;
किल्लो कबजे कर्यो, घाली सुरताने घेरो. १७६

भालांथी भरपूर, कष्ट काठीने दीधां;
अधिक गाम एहनां, कोपीने कबजे कीधां;
लइ शाहनुं वचन, महद नदी मच्छू किनारे;
वसाव्युं वाकानेर, पराक्रम करीने प्यारे. १७७

निज काका अमरथी, युद्ध कीधुं अति भारी;
अमर मेळव्युं नाम, शत्रु सेना संहारी;
मानसिंह ते तणा, तनुज म्होटा मन वाळा;
भलुं भोगव्युं राज्य, करी अरिनां मुख काळां. १७८

रायसिंह ते तणा, प्रतापी पुत्र प्रगटीया;
जेनी हिम्मत जोइ, हरामीनां दल हठियां;
चंन्द्रसिंहजी थया, रायना पुत्र प्रतापी;
हळवद कीधुं हाथ, शेह सुवाने आपी; १७९

अल्प समयें त्यां रही, फरी आव्या निजपुर प्रति;
कुँवर **केसरीसिंह**, थया ए पछी गादीपति;
एना थया अनूप, राज **भारोजी** राजा;
गो द्विज रक्षण करी, महद राखी कुळ माजा. १८०

कोठी ने कुंदणी, तोडीं काठीने मार्या;
लूंट्युं साजडीयाली, हिम्मती यादव हार्या;
राखी कुळनी लाज, **रायसिंहे** रण खेली;
धरा मंडले धाक, रही'ती जेहनी फेली. १८१

थया **केसरीसिंह,** केसरी बालक जेवा;
करता अरिमृग अन्त, कीर्ति लाखेणी लेवा;
चन्द्रसिंह ए पछी, गादीए बेठा गुणीयल;
करमां ग्रही कृपाण, बचूने वतावीयुं बल. १८२

वखतसिंह वर वखत, ए पछी आव्या पाटें.
दुनियामा दइ दान, ठीक नृप शोभ्या ठाठें;
तेना **यशवतसिंह,** पाटवी स्वर्ग सिधाव्या;
बनेसिंह वहादूर ए पछी तख्तें आव्या. १८३

हृदये धारी राम, काम अति उत्तम कीधां;
पाळी गो द्विज संत, दान दीनोने दीधां;
करी तीर्थ वृत कलित, स्वर्गमां शान्ति पाम्या;
ए पछीं **अमर** नरेश, ! आप यश जोरें जाम्या. १८४

वर विद्या मेळवी, कदर गुणीओनीं करोछो;
राजनीतिए राज्य, करी कुळ धर्म धरोछो,
पाळोछो निज प्रजा, पुत्र सम गणीनें प्रीते;
नित्य कवि नथुराम, गुणो गायेछे गीते. १८५

द्वितीय तरंग.

हरिगीत.

मुनिराज मार्कंडेय छे अमरेश पूर्वज आपना,
तेना पवित्र पुराणमां छे चारु चरित अमापनां;
आधार लइ ए ग्रन्थनो उत्पत्ति आ ब्रह्मांडनी,
आनंदथी कहुँ आपने नृप! सांभळो सावध बनी.

जगततुं आदि कारण अव्यक्त, जेने महान् ऋषिओ नित्य, सत्, अने असत् रुप सूक्ष्म प्रकृति कहे छे, निश्चळ, अक्षय, अजर, अमाप, अन्यना आश्रय विना पोताने आधारे रहेलुं, शब्द, स्पर्श–रुप–रस अने गन्ध ए विषयोथी रहित, अनादि, अनंत, जगततुं मूळरुप, त्रिगुणना उत्पत्ति अने लयतुं स्थान प्राचीन तेमज अविज्ञेय ए अव्यक्त ब्रह्म प्रथम हतुं; जगत्ना प्रळय पछी पण आ सर्व तेनाथी व्याप्त हतुं.

क्षेत्रज्ञना अधिष्ठानरुप अने त्रण गुणनी समानतावाळा अव्यक्ते सृष्टि करवा मांडी त्यारे गुणनी चेष्टाओथी प्रधान महत्तत्व उत्पन्न थयुं, तेने अव्यक्ते वींटी लीधुं, जेम बीजनी पछवाडे छोडुं वींटाएलुं होय छे तेम अव्यक्तथी वींटाएलुं महत्तत्व छे. अव्यक्तमां रहेला गुण एनामां आव्या जेथी ते सात्विक, राजस, अने तामस एवा त्रण प्रकारनुं थयुं. महत्तत्वथी अहंकार थयो ते पण त्रण प्रकारनो. सात्विक, राजस, अने तामस. अव्यक्तथी जेम महत्तत्व वींटायुं तेम महत्तत्वथी अहंकार पण वींटायो. त्रण प्रकारना अहंकारमांथी तामस अहंकार विकार पाम्यो अने तेथी शब्दात्मक सूक्ष्मरुप उत्पन्न थयुं, शब्द तन्मात्राथकी शब्द गुणवाळुं आकाश उत्पन्न थयुं, ए शब्द तन्मात्रावाळा आकाशने तामस अहंकारे वींटयुं, आकाशथी स्पर्श उत्पन्न थयो अने तेथी बळवान वायु थयो तेनो स्पर्श गुण छे; वायु थकी रुपतन्मात्रा अने तेज उत्पन्न थयुं तेनो गुण रुप छे,

स्पर्श तन्मात्रावाळो वायु रुप तन्मात्रावाळा तेजने ढांके छे; तेज विकार पामीने रस तन्मात्राने उत्पन्न करे छे. ते थकी जळ उपजे छे, तेनो गुण रस छे, रस तन्मात्राने रुप तन्मात्रा वींटे छे, जळ विकार पामीने गंध तन्मात्राने उपजावे छे ते थकी पृथ्वी पेदा थाय छे तेनो गंध गुण छे; ते ते भूतमां तेनो जे सूक्ष्म विषय छे तेने तन्मात्रा कहे छे. ए तन्मात्राओ मात्र वाणीथी साधारणपणे कहेवाय छे पण तेमनुं कांइ विशेष रुप कहेवामां आवतुं नथी. एवुं अविशेषपणुं तेमां छे, माटे ते शांत नथी के भयानक नथी तेम मूढ नथी.

सात्विक अहंकारनो सर्ग सात्विक, ते अधिक सत्ववाळा अहंकारथी तेनी साथे एकी वखते उपजे छे. पांच ज्ञानेंद्रियो अने पांच कर्मेन्द्रियो ए रजोगुणात्मक अहंकारथी उपजे छे अने तेना दश देवता सात्विक छे, अगियारमुं इन्द्रिय अने तेनो देवता ए सर्व वैकारिक कहेवाय छे. श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा अने नासिका ए पांच इन्द्रिय शब्दादि ग्रहण करवा माटे बुद्धियुक्त कहेवाय छे, चरण, गुदा, उपस्थ, हस्त अने वाक् ए पांच कर्मेन्द्रियोनुं कर्म अनुक्रमे गमन, मळ त्याग, आनंद, शिल्प अने वाक्य छे. हवे शब्द तन्मात्रावाळुं आकाश स्पर्श तन्मात्रावाळा वायुमा प्रवेश करे छे. जेथी वायुमां शब्द अने स्पर्श ए बे गुण आवे छे, ए शब्द अने स्पर्श, रुपमा मळीने अग्निने शब्द, स्पर्श अने रुप ए त्रण गुणथी युक्त करे छे. रसात्मक जळमां शब्द, स्पर्श अने रुप मळवाथी जळने रस सहित चार गुण युक्त बनावे छे; शब्द, स्पर्श, रुप अने रस ए गन्धमा प्रवेश करी तेनी साथे एकत्र थइ आ पृथ्वीने वींटे छे, माटे आ स्थूळ पृथिवी भूतोमा पांच गुणवाळी देखाय छे, अने तेमांना शब्दादिक गुण शान्त, घोर अने मूढ जणाय छे माटे ते विशेष कहेवाय छे, ए गुणो परस्परमां प्रवेश करी अन्योअन्यने धारण करे छे, तेमज पृथ्वी मध्ये प्रकाशात्मक तथा अप्रकाशात्मक, घन तथा वेष्टित आ सर्वने पण ते धारण करे छे. तेओ इन्द्रिओथी ग्राह्य अने नियमित होवाथी विशेष कहेवाय छे, पूर्व भूतोना गुण तेनी पछीनामां आवता जाय छे, ए सर्व विविध बळवाळा अने भिन्न भिन्न हता त्या सुधी एकत्र थया विना अने एक बीजामा मळ्या विना प्रजा सरजवाने समर्थ थया नहि, पण पछीथी एक बीजानो आश्रय धारण करी एकठा मळी एकीभूत थया अने समग्रपणे एकरुप थया पछी अव्यक्तनी कृपाथी तेमा पुरुषे निवास कर्यो त्यारे ते महत्तत्वथी पृथ्वी सुधीना अंड उत्पन्न करी शक्या, जळना परपोटानी पेठे ते अंड भूतसमुदायथी क्रमे करी वृद्धि पाम्युं, ते अंड महान् अने जळमा शयन करनारुं हतुं, ए प्रकृतिथी उपजेला अंडमा क्षेत्रज्ञ (जे ब्रह्म कहेवाय छे ते) वृद्धि पाम्यो, एज सृष्टिमां प्रथम

शरीर धारण करनारो थयो, अने एनेज "पुरुष" नाम अपायें छे, ए भूत मात्रनो आदि कर्ता जे पूर्वे हतो तेनाथी आ सचर अने अचर त्रण लोक व्याप्त छे. ते महान् अंडनी पछी मेरु उत्पन्न थयो, वेष्टन अने बीजा पर्वतो ते पछी उपज्या, ते अंडना अंतर भागनुं जळ ते समुद्रो छे, ते अंडमा देव, असुर अने मनुष्य सहित आखुं जगत् द्वीपादि, पर्वतो, समुद्रो, चंद्र सूर्यादि ज्योति अने सर्व लोक समायला छे, जळ, वायु, अग्नि अने आकाश आदि भूतो वडे ते बहारथी वींटायेलुं छे ते ए रीते के अंडना करता दश गणी म्होटी पृथिवी तेनी चारे तरफ वींटायेली छे तेथी दश गणा जळथी पृथ्वी वींटाइ छे, तेथी दश गणा वायुथी जळ वींटायुं छे एम एक एकनी पाछळ दश दश गणा महान् भूत वींटाया छे. ते भूतोनी पाछळ अहंकारनुं आवरण अने अहंकारनी पाछळ महत्तत्वनुं आवरण छे ते सर्व सहित महत्तत्व अव्यक्तथी वींटायुं छे, ए सात प्रकृतिना आवरणथी ते अंड वींटायेलुं छे अने ते आठे प्रकृतिओ अन्योअन्यने वींटी रहेली छे. ए प्रकृति नित्य छें अने तेमां रहेलो पुरुष साक्षात् ब्रह्म छे.

जेम कोइ जळमां डूबेलो मनुष्य बहार नीकळती वखते जळमां कुंडाळां उत्पन्न करे छे. तेम "पुरुष" ब्रह्म अने "जळ" व्यापक प्रकृति जाणवी. अव्यक्त क्षेत्र अने ब्रह्मा तेनो क्षेत्रज्ञ छे, मेघ संयोगथी जेम विद्युत उत्पन्न थाय छे तेम तेम प्रथम अबुद्धिथी प्राकृत सर्ग अर्थात् प्रकृति सृष्टि प्रकट थइ अने क्षेत्रज्ञे तेमां निवास कर्यो.

ज्यारे आ अखिल जगत् प्रकृतिमां लय पामे छे, त्यारे पंडितो तेने प्राकृत प्रलय कहे छे, व्यक्त (इन्द्रियग्राह्य जगत् आदि) मात्रने पोतामां लीन कर्या पछी अने विकार मात्रने पाछो खेंची लीधा बाद प्रकृति अने पुरुष समान धर्मनो आश्रय करी रहे छे, तें वखते तमो गुण अने सत्त्व गुण पण समपणे वर्ते छे, न्यूनाधिकनो त्याग करी परस्पर मिश्र थइ रहेला छे. जेम तलमां तेल अने दूधमां घी ते रीते तमोगुण अने सत्त्वगुणमां रजोगुण मळी रहेलो छे. ब्रह्मानी उत्पत्तिथी मांडीने ज्यांसुधी तेनुं वे परार्ध आयुष्य रहे छे त्यांसुधी परमेश्वरनो दिवस छे अने ब्रह्माना लय थया पछी तेटलीज रात्री जाणवी, जगतनो आदि पुरुष, जेनो आदि काळ छेज नहि, सर्व विश्वनो हेतु, जेने विषे मन के बुद्धि पहोंची शकतां नथी तथा जेनी क्रियाओ स्वतंत्र छे एवो कोइ जगतनो पति परमेश्वर पोताना अगम्य योगथी प्रकृति अने पुरुषमां प्रवेश करी तत्काळ तेने क्षोभ पमाडे छे, जेम तरुण स्त्रीओमां मद अथवा वसंतनो वायु प्रवेश करी तेओने क्षोभ पमाडे

छे, तेम ते योगरुप मूर्तिवाळो परमेश्वर प्रकृतिपुरुषने क्षोभ पमाडे छे, प्रधान क्षोभ पाम्युं एटले तेज देव " ब्रह्म " संज्ञा धारण करी अंडकोशमां उत्पन्न थाय छे तेज प्रथम क्षोभक छे.

तेज प्रकृतिनो पति थइ क्षोभ पामे छे अने संकोच विकाश वडे करीने प्रधानपणामां पण तेज रह्यो छे. तेज जगत्नो हेतु निर्गुण छे तथापि आ रीते उत्पन्न थइ रजोगुणने भोगवतो ब्रह्मा-पणानो आश्रय लइ सृष्टि करवामां प्रवर्ते छे. ब्रह्मा थइ प्रजा उत्पन्न करी रह्या बाद सत्वगुणना आधिक्यवाळो ते विष्णु बनी धर्म वडे तेनुं परिपालन करे छे, पछी तमोगुणना आधिक्यवाळो ते रुद्र (शंकर) थइ त्रिलोकीनो संहार करी त्रिगुणात्मक पोते निर्गुण थइने शयन करे छे. जेम खेतरनो मालिक प्रथम वावनारो थइ, पछी वावेला पदार्थनो पाळक थाय छे अने अन्नादि परिपाक पाम्या पछी तेनो कापनारो पण पोतेज थाय छे, तेम ते निर्गुण पुरुष ब्रह्मा, विष्णु अने रुद्र एवी संज्ञा धारण करी ब्रह्मा रुपे लोकने सरजे छे, विष्णुरुपे उदासीन रही पाळे छे अने रुद्र रुपे संहारे छे, स्वयंभू परमात्मानी ए त्रणे अवस्थाओ छे, परमात्मानो रजोगुण ते ब्रह्मा, सत्वगुण ते विष्णु अने तमोगुण ते रुद्र. एज त्रण देव छे अने एज त्रण गुण छे. तेओ अन्यो-अन्य जोडां थइ वर्ते छे तथा अन्योअन्य आश्रय करी रह्या छे. क्षणवार तेनो वियोग नथी.

आ रीते जगत्नी पूर्वे जे देवनो देव हतो तेज रजोगुणने धारण करी चतुर्मुख ब्रह्मा थइ जगत्नी उत्पत्ति करवाना कार्यमां योजायेल छे, विचारी जोतां अनादि, हिरण्यगर्भ, ए आदि देव पृथ्वीरुप कमळनाळमां रहेला प्रथम ब्रह्मा उत्पन्न थया.

ब्रह्मानी गणतरी प्रमाणे ते महात्मा ब्रह्मानुं एकसो वर्षनुं परम आयुष्य छे. पंदर निमे-षनी एक काष्ठा, त्रीश काष्ठानी एक कळा, त्रीश कळानुं एक मुहूर्त त्रीश मुहूर्तनो एक मानवी रात्री दिवस, त्रीश रात्रि दिवसना बे पखवाडीयां अथवा एक मास, छ मासनुं एक अयन, ते अयन बे छे. दक्षिणायन अने उत्तरायन, बे अयननुं एक वर्ष, एक मानवी वर्ष एटले एक दिव्य (देवनुं) रात्रि दिन तेमां दक्षिणायन रात्रि अने उत्तरायन दिवस जाणवो, एवां बारहजार देवनां वर्ष वडे कृत युगादि चार युगनी एक चोकडी थाय छे; दिव्य चारहजार वर्षनो एक कृतयुग, चारसो वर्षनी तेनी संध्या अने तेटलोज संध्यांश, त्रण हजार वर्षनो त्रेतायुग, त्रणसो वर्षनी तेनी संध्या अने तेटलोज संध्यांश, बे हजार वर्षनो द्वापरयुग, बसो वर्षनी तेनी संध्या अने तेटलोज संध्यांश जाणवो; देवना हजार वर्ष जेटलो कलियुग छे, तेनां संध्या अने

संध्यांश सो सो वर्षनां छे. ए देवना बार हजार वर्षोनी विद्वानोए "युग" संज्ञा पाडी छे अने हजार गणा करीए त्यारे ब्रह्मानो दिवस थाय, ब्रह्माना एक दिवसमां चौद मनु थाय छे तेनां नाम—स्वायंभुव, स्वारोचिप, औत्तम, तामस, रैवत अने चाक्षुप ए छ मनुओ थइ गया अने हालमा सातमो वैवस्वत मन्वंतर छे, हवे पछी पाच सावर्णिक, छठ्ठो रौच्य अने सातमो भौत्य. ए मन्वंतर थवाना छे एटले कुल चौद मनुओ थया, हजार चोकडीमांथी चौदमा भाग जेटली चोकडी प्रत्येक मनु भोगवे छे. ज्यारे मनु प्रकट थाय छे, त्यारे तेनी साथे देव, सप्तर्षि, इन्द्र अने राजाओ विगेरे उत्पन्न थाय छे, अने तेना लयनी साथे सर्वनो लय थाय छे.

एक मनु इकोतेर चोकडी अने ते उपरांत केटलांएक वधारे वर्ष (७१३/७) चोकडी भोगवे छे तेने मन्वंतर कहे छे. तेनी संख्या मानुष वर्षनी गणतरीए त्रीश करोड सडसठ लाख वीश हजार तथा इकोतेर उपर कहेलां वर्षो १८५१४२८४/७ मळीने ३०८५७१४२८४/७ वर्ष एक मनु भोगवे छे, दिव्य वर्षनी गणतरीए आठ लाख बावन हजार तथा ५१४२६/७ मळीने ८५७१४२६/७ वर्षनो एक मन्वंतर कहेवाय छे, ए काळने चौद गणो करवाथी ब्रह्मानो एक दिवस थाय छे, तेनी अंते ब्रह्मानी रात्री पडवाथी प्रलय थाय छे, तेने विद्वानो "नैमित्तिक" कहे छे, ते समये भूर्लोक, भुवर्लोक अने स्वर्लोक ए त्रण नाश पामे छे अने महर्लोक तेमज ते उपरना लोको रहे छे, त्रणेलोक एक समुद्ररुप थइ जवाथी ब्रह्मा रात्रे सूइ रहे छे, जेटलो ब्रह्मानो दिवस तेटलीज तेनी रात्री जाणवी, ए रात्रीनी अंते पाछी सृष्टि चालु थाय छे. ब्रह्माना आयुष्यनुं अर्ध पचास वर्षने परार्ध कहे छे ते परार्धनी अंते पाद्म नामे महाकल्प थयो हतो, हाल ब्रह्मानुं द्वितीय परार्ध चालेछे तेमां प्रथम आ वाराहकल्प वर्ते छे.

तृतीय तरंग.

दोहा.

विधिए विधियुत जे करी, प्रजोत्पत्ति धरी प्यार;

अमर! कहुं ए आपने, शोधी शास्त्रनो सार.

पाद्म कल्पना अंतमां प्रलयकाळे रात्रे सूतेला समर्थ ब्रह्मा जागृत थया अने सत्वगुणना आधिक्य सहित चोतरफ जोवा लाग्या तो वधा जगत्ने शून्य जोयुं; जेथी तेओए जगत्नी उत्पत्तिना कारणरुप, विकार रहित, ब्रह्मस्वरुप नारायण (नारां जळने कहे छे कारण के जळ ए नरनी संतति छे अने तेमा शयन करे छे माटे नारायण कहेवाय छे) नी स्तुति करी. वाद ब्रह्माए अनुमानथी पृथ्वीने जळमां डूबेली जाणी तेने वहार कांढवा विचार कर्यो. पूर्वे जेम कल्पना आदिकाळमां मत्स्य कूर्म आदि शरीर धारण कर्यां हतां तेम आ वखते पण वेद अने यज्ञमय वाराहरुप धारण करी जळमा प्रवेश कर्यो. सर्वना उत्पत्ति स्थान अने सर्व गतिवाळा तेमज जनलोकमा रहेला सिद्ध पुरुषोए चिन्तवन कराता जगत्पतिए पृथ्वीने पाताळमांथी वाहेर काढी पाणी उपर मुकी, ते पृथ्वी जळना समूह माथे म्होटी होडीनी माफक तरवा लागी, पृथ्वीने समान करी ते उपर ब्रह्माए पर्वत उत्पन्न कर्यां, संवर्तकअग्निए करी प्रथमनी सृष्टि दग्ध थइ गइ ते वखते पर्वतो सर्वत्र वेराइ गया हता. त्रण लोक एकार्णवरुप थया त्यारे ए पर्वतो जळमां डूब्या हता, तेमनुं जळ वायुए दूर कर्युं जेथी प्रथमनी पेठे जे जे जगोए हता त्या तेओ स्थिर थया, पछी पृथ्वीना सात द्वीपथी सुशोभित भाग करी तेने आदि लइ लोकोनी पूर्ववत् ज्ञानवान् ब्रह्माए कल्पना करी. जेवी सृष्टि पूर्वे कल्पना आदि काळमां हती तेवी सृष्टिनुं चिन्तवन करतां ब्रह्मानी पासे एनी मेळे तमोमय जड सृष्टि प्रकट थइ तेमज तम, मोह, महामोह, तामिस्र अने अंध ए पाच प्रकारनी अविद्या प्रकट थइ; अंतरथी अने वहारथी अज्ञानवडे वींटायेली ए सृष्टिने नगात्मक अर्थात् पर्वतरुप सृष्टि जाणवी. केमके विकृतसर्गमां प्रथम पर्वतनी सृष्टि करी. ए पर्वत सृष्टि विकृत-

सर्गमां मुख्य समजवी. आ सृष्टिथी ब्रह्माने संतोष थयो नहि त्यारे बीजी सृष्टिनुं ध्यान करवाथी तिर्यक् सृष्टि उत्पन्न थइ, ए सृष्टिमा उत्पन्न थयेलानुं गमन क्रम रहित होवाथी तिर्यक् सृष्टि कहेवाइ. ए सृष्टिमां ज्ञानरहित, तमोगुणप्रधान, उन्मार्गगामी, अज्ञानमां ज्ञान माननारा अहंकारयुक्त, मानरहित, सुखदुःखादि जाणवावाळा परंतु परस्पर संबंध ज्ञानें विनाना पशु आदिक उत्पन्न थयां, तेथी पण विधाता संतोष न पाम्यां अने ध्यानथी त्रीजी सृष्टि उत्पन्न थइ, ते उर्ध्वस्रोत कहेवाय छे. आ सृष्टि सात्विक थइ तेमां सुख अने प्रीतिवाळा अंतर अने बाहेरथी आवरण विनाना उर्ध्वे प्रवाहथी देव उपज्या. आने देव सृष्टि पण कहेछे, आथी ब्रह्मा प्रसन्न थया. त्यारपछी ज्ञानमार्गनुं साधन करी शके एवी उत्तम सृष्टिनुं ध्यान कर्युं, धारणा प्रमाणे तुरतज अर्वाक्स्रोत प्रकृतिथी उत्पन्न थयो, ए सृष्टि अधोमार्गथी प्रकट थइ माटे अर्वाक्स्रोत कहेवाय छे, ए सृष्टिना जीवोमां ज्ञान बाहुल्य तथा रजोगुण अने तमोगुण अधिक होवाथी तेओ विशेष दुःखवाळा, वारंवार कर्म करनारा, अंतरथी तेमज बाहेरथी प्रकाशवाळा तथा ज्ञाननुं साधन करी शके एवा मनुष्यो थया. ब्रह्मानी पांचमी अनुग्रह सृष्टि थइ ते विपर्यय, सिद्धि, शान्ति अने तुष्टि ए चार प्रकारनी व्यवस्थावाळी छे. ते सृष्टिमां उत्पन्न थयेला भूत अने वर्तमान अर्थने जाणनारा छे. भूतना अधिक अंशवाळी भूतोनी छठी सृष्टि कहेवाय छे, ए सर्व बलिदानादिनुं ग्रहण करनारा, विभाग करवामा आसक्त, ज्ञानवान् अने आत्मशील होय छे.

प्रथम महत्तत्वनो सर्ग थयो ते ब्रह्मानो, बीजो सर्ग तन्मात्राओनो, ते भूतसर्ग कहेवाय छे, त्रीजो वैकारिक सर्ग इन्द्रियोनो ते बुद्धिरहित प्रकृतिसर्ग कहेवाय छे, चोथो मुख्य सर्ग तेमां मुख्य पर्वतोने मानेला छे, तिर्यक् योनिथी उपजेलो तिर्यक्स्रोत पांचमो सर्ग छे, छठो उर्ध्वस्रोतसर्ग ते देवसृष्टिनो छे, सातमो अर्वाक्स्रोतसर्ग मनुष्यसृष्टिनो जाणवो, आठमो अनुग्रहसर्ग ते सात्विक तथा तामस छे. पाछळना पांच सर्ग वैकृत अने प्रथमना त्रण सर्ग प्राकृत कहेवाय छे, अने नवमो कौमार सर्ग छे. ए नवे सर्ग (प्राकृत तथा वैकृत) जगतना मूळ हेतुओ छे.

देवथी आरंभी स्थावर पर्यन्त चार प्रकारनी प्रजाओ पोतानां शुभ अशुभ पूर्व कर्मनी वासनाओथी वासित थइने तेमज हुं " पुण्यवान, हुं पापी " ए रीतनी ख्यातिथी निर्मुक्त न थतां प्रळयकाळमां लय पामी हती. ज्यारे ब्रह्माने फरी सृष्टि करवानी इच्छा थइ त्यारे ए प्रजाओ तेना मन थकी उत्पन्न थइ. देव, असुर, पितृओ, अने मनुष्यो ए चारनी उत्पत्तिनेअर्थे ब्रह्माए पोताना आत्मानो जळमा योग कर्यो.

ब्रह्माना तमो भागनुं आधिक्य थताजघन भागथी प्रथम असुर उत्पन्न थया ते तमो-भागवाळा देहनो त्याग कर्यो, त्याग करेलो ते देह तत्काळ रात्री रुपे थइ गयो, पछी बीजो देह धारण कर्यो एटले सत्वगुणना आधिक्यवाळा देवो तेना मुखथकी निकळ्या. प्रजापति देवे ते देहनो पण त्याग कर्यो एटले सत्वगुणनी अधिकतावाळो दिवस प्रकट थयो, पछी केवळ सत्वगुण-नोज देह धारण कर्यो अने तेमांथी पितृओ उत्पन्न करी ते देहनो त्याग कर्यो तेमांथी दिवस अने रात्रिना मध्यमां रहेली संध्या उत्पन्न थइ, पछी ते प्रभुए रजोगुणरुप बीजो देह धारण कर्यो तेमांथी मनुष्य थया, मनुष्यने सरजी इश्वरे ते देहनो त्याग कर्यो तेमांथी रात्रिना अंतमां अने दिवसना प्रारंभमा जे प्रकाश देखाय छे ते उत्पन्न थयो. ए रात्री, दिवस, संध्या अने प्रभात देवना देव बुद्धिमान् ब्रह्मानां शरीर छे. प्रभात, सायंकाळ तथा दिवस ए त्रण सत्वमात्रात्मक छे अने रात्री तमोरुप छे एटला माटे एने त्रियामा कहे छे. एज कारणथी दिवसे देवो, रात्रीए असुरो, प्रभाते मनुष्यो अने सायंकाळे पितृओ बळवान होय छे अर्थात् तेओ पोतपोताना समय उपर शत्रुओथी पराभव पामता नथी, उलटा समय उपर उलटी स्थिति (शत्रुओथी पराभव) पामे छे.

प्रजापति देवे रात्रे क्षुधा अने तृषायुक्त थइ रजोगुण तथा तमोगुणमय अन्य शरीर धारण कर्युं अने अंधकारमां क्षुधाथी कृश, कदरुपा तेमज दाढीवाळा जीवोने सरज्या तेमांथी " अमे रक्षण करीए छीए " एम जे बोल्या ते " राक्षस " कहेवाया अने " भक्षण करीए छीए " एम जे बोल्या ते " यक्ष " कहेवाया, तेमने जोइ ब्रह्मा अप्रसन्न थया जेथी तेओना मस्तक उपरथी वाळ खरी पडया ते फरी वृद्धि पामी शक्या नहि. सरी पडया माटे " सर्प " अने फरी आरोहण न करी शक्या माटे " अहि " कहेवाया.

सर्पोने जोइ इश्वरने क्रोध थयो जेथी ते सर्पो क्रोधमय, कपिल वर्णवाळा अने भयंकर थया. वाणीनुं ध्यान करता ब्रह्मा थकी बारोट अने गंधर्व उत्पन्न थया. वाणी सांभळतां उत्पन्न थया माटे तेओ " गंधर्व " कहेवाय छे.

ब्रह्माए ए आठ देव योनिओ उत्पन्न कर्या पछी पोताना देहथी बीजां पशु तेमज पक्षी सरज्या, मुखथी बोकडो, छातीथी बकरा, उदरथी गायो अने बे पासां तथा बे पग थकी घोडा, हाथी, गधेडा, ससला, हरिण, उंट, खच्चर अने बीजी नाना प्रकारनी जातिओ उत्पन्न करी. रोम थकी फळ अने मूळवाळी औषधिओ उत्पन्न थइ, पशु अने औषधिओ पेदा करी ब्रह्माए

कल्पना आदि काळमां यज्ञ कर्यो. गाय, बोकडो, घोडो, गधेडो, इत्यादि ग्राम्य पशुओ अने सावज, दीपडा, हाथी, वानर विगेरे अरण्य पशु कहेवाय छे.

ब्रह्माए पोताना प्रथम (पूर्व) मुखथी गायत्री छंद, ऋग्वेद, त्रिवृत्साम रथंतर अने अग्निष्टोम यज्ञ; दक्षिण मुखथी त्रिष्टुप छंद, यजुर्वेद, पंचदशस्तोम, बृहत्साम अने उक्थ; पश्चिम मुखथी जगती छंद, सामवेद, सप्तदशस्तोम अने अतिरात्र तेमज उत्तर मुखथी एकवीश अथर्वाण, आपतोर्यामाणयज्ञ, अनुष्टुप छन्द अने वैराज उत्पन्न कर्या.

भगवान् ब्रह्मदेवे कल्पना आदि काळमां विद्युत, वज्र, मेघ, रोहित नामे मृग विशेष, इन्द्र धनुष्य अने पक्षीओ विगेरे सरज्यां तेमज उत्तम अधम अनेक भूत तेना अंग थकी उत्पन्न थया. प्रथम देव, असुर, पितृओ अने मनुष्यो ए चार प्रजाओ उत्पन्न करी, पछी स्थावर जंगम भूत तेमज यक्ष, पिशाच, गंधर्व, अप्सराओना समूह, नर, किन्नर, राक्षस, पशु, सर्प, विकारी अने निर्विकारी जे काइ स्थिरचर छे ते सर्व उत्पन्न कर्या उत्पन्न थएल प्राणीओमां सृष्टिनी पहेलां जे जेना कर्मो हतां ते ते फरी तेने प्राप्त थयां. हिंसा के अहिंसा, दया के क्रूरता, धर्म के अधर्म, सत्य के असत्य ते ते कर्मनी वासनावाळा जीवो ते ते कर्मने प्राप्त थाय छे अने तेओने ते अनुकूळ आवे छे, इन्द्रियोना विषयोमां तथा उत्पन्न थएला शरीरोमां विविधता अने अरस्परसनो योग समर्थ ब्रह्मदेवे पोतेज करेलो छे. देवादिकनां अने भूतादिकनां नाम तेमज रुप तथा तेना कृत्योनो विस्तार ब्रह्माए सृष्टि काळमां प्रथम वेदना शब्दो वडेज कर्यो हतो, ऋषिओना, देवसृष्टिनां तथा ब्रह्म रात्रीनी अंते जे कांइ प्रकट थयुं हतुं ते सर्वनां नामादिक पण तेज रीते आप्या हतां, जेम ऋतुमां तेनां चिह्नो विविध प्रकारना होय छे; ते ऋतु ज्यारे पाछी आवे छे त्यारे तेनां तेज चिह्नो प्रकट थाय छे एज प्रमाणे युगादिमां पण सर्व वस्तुनुं समजवुं.

सत्य संकल्पवाळा ब्रह्माए प्रथम सृष्टि करती वखते एक हजार स्त्रीपुरुषनां जोडां मुखथकी उत्पन्न कर्या ते सर्व सत्वगुणवाळा तेमज स्वयं तेजस्वी जणाया, पछी छातीमांथी बीजां हजार स्त्री पुरुष उत्पन्न कर्या ते सर्व रजोगुण प्रधान, प्रतापी तथा अमर्षवाळा थया, त्यारबाद जंघामांथी बीजा हजार युग्म उत्पन्न कर्या ते सर्व रजोगुण तथा तमोगुणवाळा अने अभिलाषायुक्त थया, पछी एक हजार स्त्री पुरुष पगमांथी उत्पन्न कर्या ते सर्व तमोगुण प्रधान, सौभाग्यहीन अने क्षुद्र मनना थया. ए रीते मिथुन रुपे उत्पन्न थएल प्राणीओ हर्ष पामी कामातुर

थइ अन्योअन्य संयोग करवा लाग्या, त्यारथी आ कल्पमां मिथुनसृष्टि प्रवर्ते थइ, ते वखते स्त्रीओने महिने महिने रजस्वलापणुं प्राप्त थतुं नहोतुं तेथी संभोग सेवन करवाथी पण स्त्रीओने प्रसव थतो न्होतो, परंतु आयुष्यना अंत भागमां ते एकज वार स्त्री पुरुषनुं युग्म प्रसवती हती, प्रत्येक प्रजावर्गने मन वडे एकवार ध्यान करवाथी शब्दादिक पांचे प्रकारना विषयो प्राप्त थता हता, प्रजापतिथी उपजेली आ मानुषी सृष्टि जाणवी. जेनी वंशपरंपराथी आ आखुं विश्व व्यापी रह्युं छे. ते युगमां उत्पन्न थएली प्रजाओ नदी, सरोवर, समुद्र अने पर्वतोनुं सेवन करती हती, तेमने शीत तथा उष्णता अल्प होवाथी ते यथेच्छ फरती हती, तेने विषयोमां स्वाभाविक तृप्ति हती, तेमनामा मलिनता, द्वेष के अदेखाइ नहोता. ते कोइ जगोए घर करी नहि रहेतां पर्वतोमां के समुद्र किनारे पडी रहेती, मनमां निरंतर आनंदयुक्त होइ मनोरथ रहित फरती हती. पिशाच, सर्प, राक्षसो, अदेखां मनुष्यो, पशुओ, मगर, माछलां, पेटे चालनारां प्राणी आच्छादन रहित अथवा अंडज प्राणीओ ते समये अधर्मथी उपजेली प्रजाओ हती. ए अरसामा मूळ, फळ के पुष्प नहोतां. ऋतु के ऋतुना चिह्नो नहोतां, अति गरमी के अति शरदी नहोती, सदाए सुखमय समय हतो. काळक्रमे करी ते प्रजाने विचित्र सिद्धिओ प्राप्त थइ, दिवसना पूर्व भागमा तथा मध्याह्ने अतृप्ति जणावाथी तृप्त थवानी इच्छा करतां ने अनायासे तृप्त थती हती. तेने जळना सूक्ष्मांशनी "रसोल्लसा" अने बीजी केटलीएक मनकामना पूर्ण करनारी सिद्धि प्राप्त थइ, ते प्रजाओ शरीरे औषधादि संस्कार कर्या सिवाय पण स्थिर यौवनवाळी हती तेमने संकल्प विना पण युग्मप्रजा उत्पन्न थती हती. तेनो जन्म साथेज थतो, रुप सरखुं अने मृत्यु पण साथे ज थतुं हतुं. तेने परस्पर काइ अभिलाष के द्वेष नहोतो सर्व समानरुप अने समान आयुष्यवाळां हतां, कोइ अधम के उत्तम नहोतुं. तेनुं आयुष्य मनुष्यना चार हजार वर्ष जेटलुं हतुं. काळ वीततो गयो तेम तेम ते प्रजाओ नाश पामती गइ तेनी साथे सर्व सिद्धिओ पण क्रमे करी नष्ट थइ गइ. आकाशमांथी रस पडवा मांड्या अने पृथ्वी कल्पवृक्ष उत्पन्न थयां ते घरने आकारे बनी रह्या. तेनाथी प्रजाओने सर्व प्रकारना उपभोग प्राप्त थवा लाग्या, त्रेतायुगना आरंभमां तेणे तेथी निर्वाह करवा मांड्यो, पछी क्रमे करी ते प्रजामा अकस्मात् राग उत्पन्न थयो, स्त्रीओने महिने महिने ऋतु प्राप्त थवा लागी अने वारंवार गर्भनी उत्पत्ति थवा माडी; रागनी उत्पत्तिथी तेमना गृहाकारे रहेलां कल्पवृक्षो नाश पाम्यां अने तेनी जगोए चार शाखाओ वाळा वृक्षो उत्पन्न थयां तेमांथी वस्त्र नीकळवा माड्या अने तेना

फळोमा अलंकार प्रगट थवा लाग्या, ते वृक्षोमां सुगंधवाळुं, सारा वर्णनुं, सुरस तथा महोवळ आ-पनारुं मक्षिकाओ विना पुडाओमां मध नीपजतुं हतुं, तेथी प्रजा पोतानो निर्वाह चलावती, काळां-तरे ते प्रजाओ लोभयुक्त थइ अने तेमना चित्तमां ममत्त्वनो प्रवेश थयो, एटले ते वृक्षो उपर पोत-पोतानुं स्वामीत्व मानी लीधुं. ए दुराचारथी तेमनां ते वृक्षो पण विनष्ट थयां पछी शीत, उष्ण, क्षुधा, तृषा इत्यादि उत्पन्न थयां, तेना निवारणने अर्थे तेणे प्रथम नगर बांधवा मांड्या अने रणना प्रदेशमां, दुर्गम्य पर्वतोमा तेमज नदीओमां वृक्षोना, पर्वतोमां अने जळना दुर्ग बांधी सर्व रहेवा लाग्या. माप करवा अर्थे प्रथम तेना प्रमाण निर्माण कर्या, सूक्ष्ममां सूक्ष्म अंशने परमाणु कहे छे, ते परमाणु त्रस--रेणु, पृथ्वीनुं रज, वाळनो अग्र भाग, लिक्षा, जू अने जवानो मध्यभाग ए सर्वे उत्तरोत्तर क्रमे करी आठ गणा जाणवा. आठ जवनो एक आंगळ, छ आंगळनुं पद, बे पदनी वेंत, बे वेंतनो हाथ, चार हाथनुं धनुष्य तेने दंड तथा नाडिकायुग पण कहे छे, बे हजार धनुष्यनो एक कोस, बे कोसनी एक गव्यूति अने चार कोसनुं योजन जाणवुं. चार प्रकारना दुर्गमांथी त्रण तो स्वाभाविक उपजेला हता पण चोथो कृत्रिम दुर्ग तेओए यत्नथी कर्यो. पुर खेटक, द्रोणीमुख, शाखानगर, खर्वट, द्रुमी, ग्राम, घोष विन्यास तथा ते जुदा जुदा रहेवाना घर ते सर्व तैयार कर्या. जे चो तरफ किल्लावाळुं होय किल्लाने फरती खाइ खोदेली होय तथा तेनी बहार भींत बांधेली होय, एक एक कोस उपर बुरज करेला होय एवा आठ भागवाळुं, पूर्व के उत्तर तरफथी नमतुं अने शुद्ध वास वडे करी बहार जवाना प्रदेश युक्त होय तेने पुर कहे छे. पुरथी अरधुं ते "खेटक," पुरनो चतुर्थांश ते खर्वट अने तेथी आठमे भागे नानुं ते "द्रोणीमुख," खाइ तथा किल्ला विनाना नगरने पण "खर्वट" कहे छे. ज्यां मंत्री तथा सामंतो रहेता होय ते "शाखा-नगर" कहेवाय छे, ज्यां समृद्धि युक्त खेडूत लोको रहेता होय, घणा शूद्र जननी वस्ती होय तथा ज्यां खेडवा लायक जमीन होय तेने "ग्राम" कहे छे, कोइ कारणने लीधे नगरादिमांथी नीकळी कोइ ठेकाणे मनुष्यो वश्यां होय ते "वसति" कहेवाय छे. ज्यां खेतर वाडी न होय, घणा दुष्ट लोको रहेता होय, जे शत्रुनी भूमिना सीमाडापर होय, ज्यां सैन्य अने राजानां प्रिय मनुष्यो निवास करतां होय तेने "द्रुमी" कहे छे. वासण कुसण गाडामां नांखी गायोनां टोळां लइ इच्छा मुजब निवास करी रहेनारा भरवाडना वासने "घोष" कहे छे; त्यां दुकानो होती नथी.

आ रीते शीतोष्णादिनुं निवारण कर्या पछी क्षुधा अने तृषाथी व्याकुळ थती प्रजा पीडावा लागी ते वखते तेने त्रेतायुगमा सिद्धि प्राप्त थइ. तेम स्वाभाविक औषधिओ उत्पन्न थइ

तथा पुष्कळ वृष्टि पण थइ, ते वृष्टिनुं जळ नीचाणमां भरायुं तेमा बीजुं वृष्टिनुं जळ भरावाथी प्रवाह चाल्यो अने जमीन खोदाइ नदीओ थइ, जे जळना बिंदुओ पृथ्वीना पृष्ट उपर पडया तेनो पृथ्वीनी साथे संयोग थवाथी औषधिओ उत्पन्न थइ ते खेडया तथा वाव्या वगर थएली ग्राम्य तथा अरण्य मळीने चौद प्रकारनो हती. तेम प्रत्येक ऋतुमां पुष्प तथा फळ आपे एवां वृक्षो अने भोथां पण उपज्या. औषधि समूहनी आ उत्पत्ति प्रथम त्रेतायुगमां थइ अने प्रजाए तेथी निर्वाह चलाववा मांडयो, वळी पाछो प्रजामां अकस्मात् राग अने लोभ उत्पन्न थवाथी नदी, खेतर पर्वत, वृक्ष, गुल्म, औषधिओ विगेरे उपर पोतपोतानी शक्ति प्रमाणे स्वामीत्व स्थापवा लागी. जेथी ते औषधिओ नाश पामी, जेथी क्षुधाकुल प्रजा भगवान ब्रह्माने शरणे गइ, ब्रह्माए " पृथ्वी गळी गइ छे " एम निर्णय करी मेरुने वाछरडुं करी पृथ्वीने दोही, दोह्या पछी जे ग्राम्य अने अरण्य औषधिओ पृथ्वीमा लीन थइ हती तेनां बीज पृथ्वीना पृष्ट उपर उगी नीकळ्यां; फळ पाम्या पछी जे सुकाइ जाय तेने " औषधि " कहे छे. तेना सत्तर भेद छे १–डांगर, २–जव ३–घउं ४–अणु जातनी डागर ५–६–बे प्रकारनां तल ७–कांग ८–उदार नामे धान्य ९–कोदरा १० वटाणा ११–अडद १२–मग—१३–मसूर–१४–निष्पावनामे धान्य–१५–कळथी–१६–तुवर १७–चणा. याज्ञीय औषधिओ ग्राम्य तथा आरण्य मळीने चौद प्रकारनी छे. डांगर, जव, घउं अणुजातनी डांगर, तल, काग, कळथी, सामो निवार, यन्तिल नामे धान्य, गवेधुनामे तृण धान्य-कुरुविंद, मर्कटक अने वासीआवोखा. आ औषधिओ ज्यारे फरी उगी नहि त्यारे तेनी वृद्धिने अर्थे स्वयंभू ब्रह्माए कृषिविद्या तेमज हस्तसिद्धि पण उत्पन्न करी त्यारथी औषधिओ खेडीने पकाववामा आवी. खेतीनी कळा सिद्ध थया पछी समर्थ ब्रह्मदेवे गुण प्रमाणे मर्यादाओ स्थापन करी धर्म अने अर्थनुं पालन करनारा सर्व वर्णना लोकोना वर्णना तथा आश्रमना धर्मोनुं पण स्थापन कर्युं. तेमज क्रियावान ब्राह्मणोने अर्थे प्रजापतिनुं स्थान, संग्राममा स्थिर रहेनारा क्षत्रीओने अर्थे इन्द्रनुं स्थान, पोताना धर्म प्रमाणे चालनारा वैश्योने अर्थे देवोनुं स्थान, सेवा वृत्तिए वर्तनारा शूद्रोने अर्थे गंधर्वोनुं स्थान, गुरुकुलमा वसनारा ब्रह्मचारीने अर्थे उर्ध्वरेता अठ्ठाशी हजार ऋषिओनुं स्थान, वानप्रस्थाश्रमीने अर्थे सप्तर्षिओनुं स्थान, गृहस्थने अर्थे प्रजापतिनुं, संन्यासीने अर्थे ब्रह्मनुं अने योगिओने माटे अक्षय स्थान निर्माण कर्युं.

चतुर्थ तरंग.

सवैया.

पूर्वज आपतणा जगजाहिर, पुत्र मुनीश मृकंडतणाजे;
आयुष अल्प छतां चिरजीव बनी, विचरे अवनि पर आजे;
ताप जरादिकनो तजीने, सुखरुप समाधि निरंतर साजे;
ते नथुराम तमाम कहुं, अमरेश ! सुणो कुळना हित काजे.

पूर्वे ध्यान करता ब्रह्माना शरीरमांथी जीवो प्रकट थया ते देवथी आरंभी स्थावर पर्यंत कहे वाइ गया. ब्रह्मानीं ए सर्व प्रजाओ ज्यारे वृद्धि न पामी त्यारे तेणे पोताना जेवा नव मानस पुत्रों उत्पन्न कर्या तेनां नाम भृगु, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अंगिरा, मरीचि, दक्ष, अत्रि अने वशिष्ठ. आ नवेने पुराणमां " ब्रह्मा " नाम आपेल छे. पछी ब्रह्माए क्रोधमांथी रुद्रने तथा पूर्वजोना पूर्वज धर्मने अनें संकल्पने उत्पन्न कर्या.

पूर्वे जे सनंदन आदि सरज्या हता ते सर्व अपेक्षा विनाना, ध्यान निष्ठ, भविष्य--वार्ताने जाणनारा, प्रीति रहित तथा मत्सर विनाना होइने लोकमां आसक्त थया नहिं. आ रीते ए सर्वने लोकनी उत्पत्ति करवामां निरपेक्ष जोइ ब्रह्माने महा क्रोध थयो तेमांथी एक भारे शरीरवाळो जेनुं अर्धुं शरीर स्त्री रुप छे, एवो सूर्यना सरखो पुरुष उत्पन्न थयो तेने " तुं पोताना विभाग कर " एम कही पोते अंतर्धान थया.

ब्रह्माथी उत्पन्न थएला ए पुरुषे पोतामांथी स्त्रीपणाने अने पुरुषपणाने जुदा कर्या तथा पुरुषना तेणे अगियार भाग कर्या. वळी ते समर्थ देवे सौम्य, असौम्य, शांत, श्वेत अने श्याम एवा अनेक प्रकारे पुरुषना तथा स्त्रीना विभाग कर्या, पछी प्रजापति ब्रह्माए पोताथी प्रकट थएला स्वायंभुव मनुने पोताना समान कर्या. ए स्वायंभुव मनुए तप वडे जेना पापो नष्ट थयां छे एवो

शतरुपा नामनी स्त्रीने पोतानी पत्नी तरीके ग्रहण करी, ने पुरुषथी शतरुपाने प्रियव्रत अने उत्तान-पाद नामे बे पुत्र तथा ऋद्धि अने प्रसूति नामे बे कन्याओ उत्पन्न थइ; तेमना पिताए प्रसूतिने दक्षनी साथे तथा ऋद्धिने रुचिनी साथे परणावी. रुचि प्रजापतिने ऋद्धिथी दक्षिणाए सहवर्तमान यज्ञ नामे पुत्र थयो, ए स्त्री पुरुषनुं जोडुं हतुं; यज्ञ थकी दक्षिणाने बार पुत्र थया ते स्वायंभुव मन्वंतरमां " यामदेव " नामे ओळखाता तेमज तेओ महा तेजस्वी हता.

प्रसूतिने विशे दक्षे चोवीश कन्याओ उत्पन्न करी तेमां श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, तुष्टि, पुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, सिद्धि, अने कीर्ति ए तेर कन्याओने समर्थ धर्मदेवे पत्नी तरीके ग्रहण करी. श्रद्धाने काम, लक्ष्मीने दर्प, धृतिने नियम, तुष्टिने संतोष, पुष्टिने लोभ, मेधाने श्रुत, क्रियाने दंड, नय अने विनय; बुद्धिने बोध, लज्जाने विनय, वपुने व्यवसाय, शान्तिने क्षेम, सिद्धिने सुख, अने कीर्तिने यश, नामे पुत्र थयो, ए सर्वे धर्मना पुत्रो जाणवा. दक्षनी प्रथम कहेली कन्याओथी न्हानी सुंदर नेत्रवाळी ख्याति, सती, संभुति, स्मृति, प्रीति, क्षमा, संतति, अनसूया, उर्जा, स्वाहा अने स्वधा ए अगियार कन्याओनी साथे अनुक्रमे भ्रगु, शिव, मरीचि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ, अत्रि अग्नि अने पितृओए लग्न कर्यां. भृगुने ख्याति थकी धाता अने विधाता नामे बे पुत्र उत्पन्न थया तथा विष्णुपत्नी लक्ष्मीजी उत्पन्न थयां. धाता अने विधाता मेरुनी कन्या आयति अने नियति साथे अनुक्रमे परण्या. धाताने आयतिथी प्राण नामे पुत्र थयो अने विधाताने नियतिथी मृकंड नामे पुत्र उत्पन्न थयो. ए मृकंडऋषि मनस्विनी नामनी कन्या साथे लग्न करी चमत्कार पुरनी पासेना जंगलमां आश्रम बांधी रहेता हता. ए ऋषि ब्रणाज शान्तात्मा होइने शास्त्रना सर्व नियमो पाळी पोताना आश्रममा तप करता हता,; तेने उत्तरावस्थामा एक सारो पुत्र उत्पन्न थयो. ते पुत्र शुभ लक्षणवाळो अने चंद्र समान क्रांतिवान थयो, तेना पिता मृकंडे विधि पूर्वक तेनुं " मार्कंडेय " एवुं नाम पाड्युं. ते बाळक शुक्ल पक्षना चद्र समान वृद्धि पामवा लाग्यो. मार्कंडेयने पांच वर्ष थयां, ते निरंतर बाल क्रीडा करतां करता एक दिवसे पोताना पिता मृकंडना खोळामा जइ बेठा, ते वखते एक जोष जोनारो अने सारी रीते सामुद्रिक शास्त्र जाणनारो द्विज ऋषि पासे आव्यो ते विप्रे मृकंडना खोळामा बेठेला कुमारने नखना अग्रथी ते शिखा पर्यन्त वारंवार निहाळीने विस्मयथी पोताना नेत्र उघाडी मंद हास्य कर्युं.

आ रीतें ते ब्राह्मणनी चेष्टा अने हास्य जोइ मृकंडऋषि विनययुक्त थइ कांइक मनमां क्रोध लावी तेने पूछवा लाग्या के " महाराज " तमे मारा बाळक सामुं जोइ मुखनो चेहरो

फिक्को करो छो अने हृदयमां हसो छो तेथी मारा मनमां संशय रहे छे माटे जेवी वात होय तेवी कहो." ब्राह्मणे कह्युं के, "हुं ज्योतिष अने सामुद्रिक यथास्थित जाणुं छुं जेथी तारा पुत्रनी रेखाओ जोइ इश्वरनी कुदरतने हसुं छुं." आवां भ्रान्तिवाळां वचनो सांभळी महात्मा मृकंड ऋषि अति विनयथी हाथ जोडी कहेवा लाग्या के "आप प्रथम पुरुषनी शुभ अशुभ रेखाओ तेमज शरीरना अवयवोनुं मने वर्णन करी बतावो पछीथी आप मारा पुत्र माटे जे कांइ भविष्य कहेवानुं होय ते कहेशो तो मने विशेष खात्री थशे.", आ रीते मृकंडना वचन सांभळी सामुद्रिकशास्त्री पुरुषनां भविष्य सूचक शुभ अशुभ लक्षणो कहेवा लाग्या के—

"उन्मान, मान, गमन, संहति, सार, वर्ण, प्रकृति, सत्व (एक प्रकारनो चित्तनो धर्म जेना विद्यमानपणाथी कदी विषाद के भय उत्पन्न थतो नथी), अनूक पाद आदि दश प्रकारना क्षेत्र, मृजा ए सर्व वातोने सामुद्रिक शास्त्र जाणनारो चतुर पुरुष प्रथम जोइ मनुष्योने भूत अने भविष्य शुभाशुभ फळ कही शके छे. जेनां चरण, स्वेद रहित कोमळ तळियांथी युक्त, कमलना मध्यभाग समान कान्तिवाळा परस्पर मळेली आंगळीओथी युक्त, चमकदार अने लाल रंगना नखोथी युक्त, सुंदर एडीओवाळा उष्ण शिराओथी रहित (जेमां नाडी न देखाती होय) निगूढ गुल्फ (जेना टांकणा, घुंटीओ उंचो न होय) अने कूर्मना समान उपरथी उंचा होय ते राजा समजवो. अर्थात् जे पुरुषना चरण उक्त लक्षणवाळा होय ते राजा बने छे.

सुपडानी पेठे आगळथी पहोळा श्वेतरंगना नखोथी युक्त, वाकी नाडीओथी व्याप्त, शुष्क अने विरल आंगळीओवाळा चरण होय तो दारिद्य अने दुःख आपे छे. मध्यथी चरण उंचा होय तो निरंतर घणो पंथ करावे छे, कषाय रंगना चरण होय तो वंशनो विच्छेद करे छे अर्थात् जे पुरुषना कषाय रंगना चरण होय तेनो वंश वृद्धि पामतो नथी, अग्निमा पकावेली माटीना समान जेना पगना तळीयानी कान्ति होय ते पुरुष ब्रह्महत्या करे छे अने जे पुरुषना चरण पीळा रंगना होय ते अगम्या स्त्रीमा आसक्त थाय छे.

विरळ अने सूक्ष्म रोमथीयुक्त वर्तुलाकार जेनी जंघा होय, हाथीनी सुंढ समान सुंदर जेना उरु होय, मांसयुक्त अने समान जेना जानु होय ते राजा थाय छे. श्वान अने शृगाल जेवो जेनी जंघा होय ते धनहीन होय छे.

जेनी जंघाओना रोमकूपमां एक एक रोम होय ते राजा, जेना एक रोम कूपमां बव्बे रोम होय ते पंडित अने श्रोत्रिय तेमज जेना एक एक रोमकूपमा त्रण त्रण चार चार रोम होय ते निर्धन अने दुःखी थाय छे, आ रीते मस्तकना केशोनुं पण शुभ अशुभ फळ जाणी लेवुं.

जेना जानु उपर मांस न होय ते पुरुष प्रवास करतां करतांज मरण पामे छे, न्हाना जानु होय तो सौभाग्य प्राप्त थाय छे; जेनां जानुं विकट होय ते पुरुष दारिद्र्य भोगवे छे, जेनां जानुं नीचां होय ते पुरुष स्त्रीजीत होय छे, जेना जानु मांसयुक्त होय तेने राज मळे छे अने जे पुरुषनां जानु म्होटां होय ते दीर्घ आयुष्य पामे छे.

जे पुरुषनुं गुह्यांग न्हानुं होय ते धनवान अने संतानहीन होय छे, स्थूल गुह्यांगवाळो पुरुष धनहीन होय छे. जे पुरुषनुं गुह्यांग डावी बाजु नमतुं होय ते धन अने पुत्रहीन तथा जमणी बाजु नमतु होय ते पुत्रवान थाय छे; जे पुरुषनुं गुह्यांग नीचे बहु नमतुं होय ते दरिद्री होय छे, जेनुं गुह्यांग नाडीओथी व्याप्त होय ते थोडा पुत्रवाळो थाय छे, स्थूल ग्रन्थि युक्त गुह्यांगवाळो पुरुष सुखी होय छे. जेनुं गुह्याग मृदु होय ते पुरुष प्रमेह आदि रोगोथी मृत्यु पामे छे.

जेनुं गुह्यांग कोश (अंडकोश) मां निगूढ होय ते राजा थाय छे, जेनुं गुह्याग दीर्घ अने त्रूटेल जेवुं देखातुं होय ते पुरुष धनहीन थाय छे, जेनुं गुह्यांग सीधुं अने गोळ होय ते तथा जेनुं गुह्याग न्हानुं अने नाडीओथी व्याप्त होय ते पुरुष धनवान बने छे.

जे पुरुषने एकज वृषण होय ते जळमा डूबी मरे छे, जेनां वृषण विषम होय ते पुरुष स्त्रीलंपट होय छे, जेनां बन्ने वृषण समान होय ते राजा थाय छे, जेनां वृषण उपर खेंचायेला होय ते अल्प आयुष्य भोगवे छे अने जेनां वृषण लांबा होय ते पुरुषनुं आयुष्य सो वर्षनुं होय छे.

पुरुषना गुह्यागना अग्रभागनुं नाम मणि छे. जे पुरुषने लाल रंगनो मणि होय ते धन-वान थाय छे, श्वेत अने मलिन मणिवाळो पुरुष धनहीन होय छे.

पिशाब करती वखते शब्द थाय ते पुरुष सुखी थाय छे जेनी मूत्रधारा शब्द रहित होय ते निर्धन बने छे.

जेना मूत्रनी बे त्रण अथवा चार धारा थती होय अने ते धारा दक्षिणावर्तथी नीकळती होय ते पुरुष राजा थाय छे.

पिशाव करती वखते जेनुं मूत्र विखेराइ जतुं होय ते धनहीन होय छे, अने मूत्रनी एक धारा थती होय ते अने ते वलित होय तो स्वरुपवान् पुत्र आपनारी थाय छे.

जे पुरुषोना मणि स्निग्ध, उंचा अने समान होय तेओ धन, स्त्री अने रत्नोना भोगवनावाळा थाय छे.

जेनो मणि मध्य भागमां नीचो होय ते पुरुष कन्याओनो पिता थाय छे अर्थात् एने घेर कन्याओज जन्मे छे अने ते पुरुष निर्धन पण थाय छे. जेना मणि मध्यथी उंचा होय तेओ घणा पशुओना मालिक थाय छे, जेना मणि अत्युल्वण न होय ते धनवान बने छे.

पुरुषना गुह्यांग तथा नाभिना अंतरने वस्ति कहे छे. जेना वस्तिनो उपलो भाग निर्मांस होय ते पुरुष धनहीन अने दुर्भग थाय छे.

जेनुं पुष्पना समान सुगंधवाळुं वीर्य होय ते राजा, मध समान गंधवाळुं वीर्य होय ते बहु धनवान, मत्स्य समान गंधवाळुं वीर्य होय ते बहु संतानवाळो, तेमां अल्प वीर्यवाळो होय ते बहु कन्याओनो पिता थाय छे, मांसना समान गंधवाळुं वीर्य होय ते महा भोगी, मदिरा समान गंधवाळुं वीर्य होय ते यज्ञ करवावाळो अने खार समान गंधवाळुं वीर्य होय ते पुरुष दरिद्री थाय छे.

जे पुरुष शीघ्र मैथुन करे ते दीर्घायुष्य पामे छे अने जे पुरुष घणा वखत सुधी (धीमे धीमे) मैथुन करे ते अल्पायुष्य थाय छे.

जे पुरुषना स्फिच् अति स्थूल होय ते निर्धन थाय छे, जेनां स्फिच् सुंदर मांसयुक्त होय ते सुखी होय छे, जे पुरुषनां स्फिच् अध्यर्ध होय तेने व्याघ्र मारी नांखे छे, जेनां स्फिच् मंडूक समान होय ते पुरुष राजा थाय छे.

जे पुरुषनी कटि सिंहना समान होय ते राजा अने वानर तथा उंट समान जेनी कटि होय ते धनहीन थाय छे.

जेनुं उदर सम होय ते भोगी जाणवो अने जेनुं उदर घडा तुल्य अथवा हांडी समान होय ते पुरुष निर्धन थाय छे.

केडनी उपरना चार आंगळ जेटला भागने पार्श्व अने उदरना मध्य भागने कक्ष्या कहे छे. जेना पार्श्व अविकल अर्थात् मांसथी पुष्ट होय ते पुरुष धनवाळो होय छे. समान

कक्ष्यावाळो पुरुष भोगी होय छे अने नीची कक्ष्यावाळो पुरुष भोगहीन होय छे. उन्नत कक्ष्या-वाळो पुरुष राजा थाय छे, विषम कक्ष्यावाळो पुरुष कठोर होय छे.

जेनुं उदर सर्पना उदर समान बहु लांबु होय ते पुरुष दरिद्री अने बहु भोजन करनारो होय छे.

गोळ, उंची अने विस्तीर्ण नाभिवाळो पुरुष सुखी होय छे, न्हानी, अदृश्य अने छिछरी नाभि दुःखदायक बने छे.

जेनी नाभि विषम होय ते अने पेटना वळिनी वचमां आवती होय ते पुरुष निर्धन होये छे अने तेने शूळी उपर चढाववामा आवे छे. जेनी नाभि वामावर्त होय ते पुरुष शठ होय छे, नाभि दक्षिणावर्त होय तो बुद्धिने उत्तम बनावे छे, बन्ने तरफ लांबी नाभि आयुष्यने वधारे छे, नाभि उपरना भागमां लांबी होय तो पुरुषने ऐश्वर्ययुक्त करे छे अने नीचेना भागमां लांबी होय तो घणी गायोनो मालिक बनावे छे; कमळना तंतु समान नाभिवाळो पुरुष राजा थाय छे.

उदरना मध्यमां जे रेखा होय छे तेने वळि कहे छे. जे पुरुषने एक वळि होय तेनुं शस्त्रथी मृत्यु थाय छे, जे पुरुषने बे वळि होय ते पुरुष घणी स्त्रीओ साथे संभोग करनारो होय छे, त्रण वळि होय ते आचार्य थाय छे अने जे पुरुषना उदरमां चार वळि होय तेने घणा पुत्र थाय छे. जेना उदरमां एक पण वळीयुं न होय ते पुरुष राजा थाय छे, जेना उदरमां विषम अर्थात् कोइ न्हानी तथा कोइ म्होटी वळि होय ते पुरुष अगम्या स्त्रीमां गमन करे छे अने पापी होय छे, जेना उदरमा सीधी वळि होय ते पुरुष सुखी तथा परस्त्रीथी विमुख होय छे.

जेनां पार्श्व मांसथी पुष्ट, कोमळ अने दक्षिणावर्त रोमोथीयुक्त होय ते पुरुष राजा थाय छे अने जेनां पार्श्व मांस हीन, कठोर अने वामावर्त रोमोथी युक्त होय ते पुरुष निर्धन, दुःखी तथा घणा पुरुषनो दास थाय छे.

स्तनना अग्र भागने चूचुक कहे छे. जेनां चूचुक अनुंद्र होय ते पुरुष भाग्यशाळी समजवो, जेना चूचुक विषम अने लांबा होय ते निर्धन होय छे, जेनां चूचुक कठिन, पुष्ट अने निमग्न होय ते पुरुष राजा थाय छे तेमज सदा सुख भोगवे छे.

उन्नत, विस्तीर्ण, कंप रहित अने मांसल हृदय राजाओनुं होय छे.

निम्न, संकोचायेलुं अने दुर्बळ हृदय अधमोनुं होय छे तेमज कठोर, रुवाडांथीयुक्त अने नाडीओथी व्याप्त हृदय पण अधमोनुंज होय छे.

सम छातीवाळा पुरुष धनवान्, पुष्ट अने कठोर छातीवाळा पुरुष शूरवीर न्हानी छाती वाळा पुरुष अकिंचन अर्थात् पुरुषार्थ रहित होय छे अने विषम छातीवाळा पुरुष निर्धन होयछे तथा तेनुं मृत्यु शस्त्रथी थाय छे.

कांधनी संधिओने जत्रु कहे छे. विषम जत्रुवाळो पुरुष, क्रूर होय छे, अस्थिओनी संधिमां बंधाएला जत्रुवाळो भोगी, नीचा जत्रुवाळो निर्धन अने पीन जत्रुवाळो पुरुष धनवान होय छे.

जेनी ग्रीवा चीपटी होय ते पुरुष निर्धन होय छे, सुकायेली अने नाडीओथी युक्त जेनी ग्रीवा होय ते पण निर्धन होय छे, जेनी ग्रीवा महिषना जेवी होय ते शूरवीर थाय छे; जेनी ग्रीवा वृष जेवी होय तेनुं मृत्यु शस्त्रथी थाय छे, शंखनी माफक त्रण रेखाओथी युक्त जेनी ग्रीवा होय ते पुरुष राजा थाय छे.

जेनो कंठ लांबो होय ते प्रभक्षण थाय छे अर्थात् संचय नथी करतो.

अभग्न अने रोम रहित पीठ धनवानोनी तेमजे भग्न अने रोमवाळी पीठ निर्धनोनी होय छे.

स्वेद रहित, पुष्ट, उन्नत, सुगंध युक्त, सम अने रोमयुक्त कक्षा धनवानोनी अने एथी विपरीत कक्षा निर्धनोनी होय छे.

मास रहित, रोमयुक्त, भग्न अने न्हाना अंसवाळा पुरुषो निर्धन होय छे; विस्तीर्ण, अभग्न अने सुश्लिष्ठ खभावाळा पुरुषो बळवान होय छे.

हाथीनी सुंढ समान गोळ, जानु पर्यंत लांबी, सम अने पीन भुजा राजाओनी होय छे; रोमयुक्त अने न्हानी भुजा अधम पुरुषोनी होय छे.

दीर्घायुषवाळा पुरुषोनी अंगुली लांबी होय छे, सीधी अंगुलीवाळा पुरुषो भाग्यशाळी होय छे, बुद्धिमान पुरुषोनी अंगुली पातळी होय छे, पारकी सेवा करवावाळा पुरुषोनी अंगुली चिपटी होय छे, म्होटी अंगुलीवाळा पुरुषो निर्धन होय छे.

जेना हाथ वांदरा जेवा होय ते धनवान अने व्याघ्र जेवा होय ते पुरुषो पापी होय छे.

हाथना मूळने मणिबंध कहे छे.

जेना मणिवंध निगूढ, द्रढ अने सुश्लिष्ट संधिवाळा होय ते पुरुष राजा थाय छे, जेना मणिवंध न्हाना होय तेना हाथ कपाय छे. श्लथ अने शब्द सहित जेना मणिवंध होय ते पुरुष निर्धन होय छे.

जेनी करतल निम्न होय ते पुरुष पिताना धनथी रहित होय छे, जेनी हथेळी सम, वर्तुलाकार अने निम्न होय ते पुरुष धनवान् छे एम समजवुं, उंची हथेळी वाळो पुरुष दातार होय छे, विषम हथेळी वाळो पुरुष क्रूर अने निर्धन होय छे, जेनां करतळ लाक्षाना समान लाल रंगना होय ते पुरुष ऐश्वर्यवान् होय छे, पीळा रंगनी हथेळी वाळो पुरुष अगम्या स्त्रीमां गमन करनारो होय छे अने रुखी हथेळी वाळो निर्धन होय छे.

जेना नख तुष समान रेखाओथी युक्त होय ते नपुंसक होय छे; चिपटा अने त्रुटित नखवाळो पुरुष निर्धन होय छे.

जेना नखो बुरा, रंगहीन होय ते पुरुष परतर्कक अर्थात् बीजानी वातमां तर्क करवावाळो होय छे; त्रांवाना समान लाल रंगना नखवाळो पुरुष सेनापति थाय छे.

अंगुठाना मध्यमां जेने जव होय ते धनाढ्य होय छे अने अंगुठाना मूळमां जेने जवनुं चिह्न होय ते पुरुष पुत्रवान् थाय छे.

जेनी आंगळीओना पर्व लांबा होय ते पुरुष भाग्यशाळी अने दीर्घायुष होय छे.

जेना हाथनी रेखा स्निग्ध अने निम्न होय ते धनाढ्य तेमज जेना हाथनी रेखा रुक्ष अने अनिम्न होय ते निर्धन जाणवो.

विरल आंगळीओवाळो पुरुष निर्धन अने घन आंगळीओवाळो पुरुष धननो संचय करनार होय छे.

मणिवंधथी नीकळी त्रण रेखा जेना करतलमां जाय, ते पुरुष राजा थाय छे. जेना हाथमां बे मत्स्य रेखा होय ते पुरुष नित्य सत्र आपनारो होय छे.

जेना हाथमां वज्राकार रेखा होय ते धनवान् होय छे, जेना हाथमा मत्स्यना पुच्छ जेवी रेखा होय ते पुरुष विद्वान होय छे.

जेना हाथमां शंख, छत्र, पालखी, हाथी, घोडा अने कमलना आकारनी रेखा होय ते पुरुष राजा थाय छे.

जेना हाथमां कलश, मृणाल, पताका अने अंकुशना आकारनी रेखा होय ते पुरुष निधिपाल अर्थात् भूमिमां धन दाटवावाळो होय छे.

जेना हाथमां दामना आकारनी रेखा होय ते धनाढ्य जाणवो; जेना हाथमां स्वस्तिकना आकारनी रेखा होय ते ऐश्वर्य पामे छे.

जेना हाथमां चक्र, खड्ग, परशु, तोमर, शक्ति अने धनुषकुन्तना आकारनी रेखा होय ते पुरुष सेनापति थाय छे.

जेना हाथमां उलूखलना समान आकारनी रेखा होय ते पुरुष यज्ञ करवावाळो थाय छे, जेना हाथमां मकर, ध्वज अने कोष्ठागारना आकारनी रेखा होय ते पुरुष बहु धनवान होयछे.

अंगुष्ठना मूळने ब्रह्मतीर्थ कहे छे; जेनुं ब्रह्मतीर्थ वेदीना आकारनुं होय ते पुरुष अग्निहोत्री छे एम समजवुं.

जेने वापी, देव मंदिर आदिना आकारवाळी तथा त्रिकोण रेखा होय ते पुरुष धर्म करे छे अर्थात् धर्मात्मा होय छे.

अंगुष्ठ मूळनी रेखाओ सन्ताननी छे एमां जेटली रेखा सूक्ष्म होय तेटली कन्या अने जेटली रेखा स्थूल होय तेटला पुत्र उत्पन्न थाय छे.

जेनी रेखा तर्जनी पर्यन्त पहोंचेली होय ते पुरुष सो वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे, एथी न्हानी रेखा होय तो अनुमाने आयुष्य जाणी लेवुं.

जेना हाथमा टूटेली रेखा होय ते वृक्षथी पडे छे, जेना हाथमां घणी रेखा होय अथवा तो बीलकुल न होय ते पुरुष निर्धन होय छे.

बहु कृप अने लांबी दाढीवाळो पुरुष निर्धन तेमज मांसथी पुष्ट दाढीवाळो पुरुष धनवान होय छे जेनो अधर बिम्बफल समान लाल रंगनो अने सीधो होय ते पुरुष राजा थाय छे.

न्हानां अधरवाळो पुरुष निर्धन होय छे, फूटेलां, खंडित, खराब रंगना अने रुक्ष अधरवाळो पुरुष पण धनहीन होय छे.

स्निग्ध, घन अने तीखी दाढोथी युक्त, समान दांत शुभ समजवा.

राती, लांबी, सूक्ष्म अने समान जिह्वावाळो पुरुष भोगी होय छे, श्वेत, काळी अने रुखी जिह्वावाळो पुरुष धनहीन होय छे. तालुनुं पण एज लक्षण छे

सौम्य, सवृत्त, निर्मळ, सूक्ष्म अने समान वक्र राजाओनुं होय छे. एथी विपरीत अर्थात् असौम्य, असंवृत्त, अनिर्मळ, स्थूळ अने विषम वक्र क्लेश भोगवनारा पुरुषनुं होय छे. जेनुं मुख बहु फेलायेलुं होय तेने हीनभागी समजवो.

स्त्री जेवां मुखवाळो पुरुष संतानहीन, गोळ मुखवाळो पुरुष शठ अने लांबा मुखवाळो पुरुष निर्धन होय छे. जेनुं मुख भयभीत जणाय तेने पापी समजवो.

धूर्तजनोनुं मुख चतुष्कोण होय छे, पुत्रहीन पुरुषोनुं मुख निम्न होय छे अर्थात् निम्न मुखवाळाने पुत्रनी प्राप्ति थती नथी; कृपणनुं मुख बहु न्हानुं होय छे, संपूर्ण अने मनोहर मुख-वाळा पुरुषो भोगी होय छे.

जे श्मश्रुना वाळ आगळथी फाटेला न होय, स्निग्ध होय, कोमळ अने सन्नत होय ते शुभ समजवी; लाल अने रुखी दाढीवाळा पुरुषो चोर होय छे.

जेना कर्ण निर्मांस होय ते पुरुषनुं पाप कर्मथी मृत्यु थाय छे, चिपटा कानवाळा पुरुषो घणा भोगी होय छे, न्हाना कानवाळा पुरुषो कृपण होय छे; जेना कान शंकु समान आगळथी तीक्ष्ण होय ते सेनापति थाय छे, जेना कान रोमथी युक्त होय ते दीर्घ आयुष पामे छे; म्होटा कानवाळा पुरुषो धनवान होय छे; जेना कान नाडीओथी व्याप्त होय ते क्रूर छे एम समजवुं, लांबा अने मांसथी पुष्ट कानवाळा पुरुषो सुखी थाय छे.

जेना कपोल उंचा होय तेने भोगी जाणवो; मांसथी पुष्ट कपोलवाळो पुरुष राजानो मंत्री थाय छे.

शुक समान नासिकावाळो पुरुष भोगी होय छे, शुष्क अथवा निर्मांस नासिकावाळो पुरुष दीर्घ आयुष्य भोगवे छे, जेनी नासिका कापेल जेवी देखाय ते पुरुष अगम्या स्त्रीमां गमन करनारो होय छे; लांबी नासिकावाळा पुरुषने भाग्यशाळी समजवो; आकुंचित नासिकावाळो पु-रुष चोर होय छे; चिपटी नासिकावाळो पुरुष स्त्रीना हाथथी मार्यो जाय छे; आगळथी वांकी ना-सिकावाळो पुरुष धनवान होय छे; जमणी तरफ वांकी नासिकावाळो पुरुष खाउकण अने क्रूर होय छे; जेनी नासिका सीधी, न्हाना छिद्रोथी युक्त अने सुंदर पुटवाळी होय तेने संपूर्ण भाग्य-शाळी समजवो.

एकवार छीके ते धनवान, बे त्रणवार उपराउपर छीके ते पंडित अने हृदयना अनुनाद-सहित युक्त प्रमुक्त तेमज रोहत छीके तेने दीर्घ आयुष प्राप्त थाय छे.

कमलदल समान नेत्रवाळा तथा जेना नेत्रना छेडा लाल होय ते लक्ष्मीवान होय छे तेमज मध समान पीळा रंगना नेत्रवाळा पुरुषो बहु धनवान होय छे, बिलाडी जेवा नेत्रवाळा पुरुषो पापी होय छे, हरिण समान नेत्रवाळा, गोळ नेत्रवाळा अने वांका नेत्रवाळा पुरुषो चोर होय छे; केकर नेत्रवाळो पुरुष क्रूर होय छे; जेनां नेत्रो हाथी तुल्य होय ते सेनापति थाय छे, गंभीर नेत्रवाळा पुरुषने ऐश्वर्य प्राप्त थाय छे, नील कमळ समान कान्तियुक्त नेत्रवाळा पुरुषो विद्वान होय छे.

जे नेत्रोना तारा अति कृष्ण होय ते नेत्रो काढी नांखवामां आवे छे, म्होटां नेत्रवाळो पुरुष राजानो मंत्री थाय छे; श्याव रंगना नेत्रवाळो पुरुष भाग्यशाळी होय छे; दीन नेत्रोवाळो पुरुष निर्धन होय छे; स्निग्ध अने म्होटां नेत्रोवाळा पुरुषो धनवान अने भोगी होय छे.

जेनी भ्रू मध्यथी उंची होय ते पुरुष अल्प आयुष्य भोगवे छे; म्होटी अने उंची भ्रकुटी-वाळा पुरुषो घणा सुखी होय छे; न्हानी म्होटी भ्रकुटीवाळा पुरुषो दरिद्री होय छे; बाल चन्द्रमा समान नमेली भ्रकुटीवाळा पुरुषो धनवान होय छे; लांबी अने परस्पर न मळेली भ्रकुटीवाळा पुरुषो पण धनवान होय छे; टूटेली भ्रकुटीवाळा पुरुषो धनहीन होय छे; जेनी भ्रकुटी वच्चेथी नमेली होय ते पुरुष अगम्या स्त्रीमां आसक्त थाय छे.

उन्नत शंख (कपाळनुं हाडकुं) वाळो पुरुष धनवान् होय छे, निम्न शंखवाळो पुरुष पुत्र अने धनथी हीन होय छे; जेनुं ललाट विषम होय ते निर्धन अने अर्ध चन्द्र समान ललाटवाळा पुरुषने धनवान समजवो.

जेनुं ललाट शुक्ति समान विस्तीर्ण होय ते पुरुषने आचार्यपद प्राप्त थाय छे; जेनुं ललाट नाडीओथी व्याप्त होय ते पुरुष अधर्म करवामां तत्पर रहे छे; जेना ललाट मध्ये उंची नाडी होय अने ते साथीआने आकारे रहेली होय ते पुरुष धनाढ्य छे एम जाणवुं; जेनुं ललाट निम्न होय ते पुरुष वध अने बंधननो भागी थाय छे. तेमज ते क्रूर कर्म करवामां तत्पर रहे छे. उन्नत ललाट-वाळो पुरुष सेनापति थाय छे, गोळ अने न्हाना ललाटवाळो पुरुष कृपण होय छे.

दीनता अने अश्रुथी रहित स्निग्ध रुदन मनुष्योने शुभ फळ आपे छे. तेमज रूक्ष, दीन अने बहु अश्रुओथी युक्त रुदन पुरुषोने अशुभ फळ आपे छे.

हसती वखते शरीर न कंपे ते शुभ समजवुं, आंखो मींची हसनारो पुरुष पापी अने वारंवार हसनारो पुरुष दोष युक्त होय छे. प्रमादी पुरुष हसी रह्या बाद वारंवार हसे छे.

जेना ललाटमां लांबी त्रण रेखा होय ते पुरुष सो वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे; जेना ललाटमां चार रेखा होय ते राजा थाय छे अने पचाणु वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे. जेना ललाटमां विछिन्न रेखा होय ते अगम्या स्त्रीमां गमन करनारो होय छे अने नेवुं वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे. ललाटमां एके रेखा न होय ते पण नेवुं वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे.

ज्यांथी केशोनी उत्पत्ति थाय छे तेने केशांत कहे छे जेना ललाटमां केशान्त पर्यंत रेखा पहोंची होय ते एंशी वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे, जेना ललाटमां पांच रेखा होय ते सीतेर वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे,

जेना ललाटमां बधी रेखाओना अग्रभाग मळेला होय तेनु आयुष्य साठ वर्षनुं होय छे, जेना ललाटमां छ सात अने ते उपरांत घणी रेखा होय ते पुरुष पचाश वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे, जेना ललाटमां वांकी रेखा होय तेनुं आयुष्य चालीश वर्षनुं होय छे, जेना ललाटनी रेखा भ्रकुटीथी मळेली होय ते त्रीश वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे, वाम भागमां वांकी रेखा होय तेनुं आयुष्य त्रीश वर्षनुं होय छे; न्हानी रेखा होय तो वीश वर्षथी पण न्यून आयुष्य जाणवुं, जेना ललाटमां न्यून अर्थात् एक बे रेखा होय ते पण वीश वर्षथी न्यून आयुष्य भोगवे छे. आ रेखाथी १॥२ अर्थात् दोढ, अढी इत्यादि रेखा होय तो अनुमाने आयुष्य कल्पी लेवुं, जेम त्रण रेखा होय तो सो वर्षनुं अने चार रेखा होय तो पचाणु वर्षनुं आयुष्य कह्युं छे तेमां साडीत्रण रेखा होय तो साडीसत्ताणु वर्षनुं आयुष्य जाणवुं अर्थात् त्रण अने चार रेखानुं आयुष्य मिलावी तेनुं अर्ध करी लेवुं. ए रीते बधे समजवुं.

जेनुं माथुं गोळ होय ते घणी गायोनो मालिक थाय छे, जेनुं शिर छत्राकार उपरथी विस्तीर्ण होय ते पुरुष राजा थाय छे; चिपटा शिरवाळो पुरुष मातापितानो वध करे छे; करोटिना आकारनुं जेनुं शिर होय ते पुरुष घणो वखत जीवे छे; जेनुं शिर घटना समान आकारवाळुं होय तेनो शब्दमां रुचि रहे छे, बे शिरवाळा पुरुष पापी अने निर्धन होय छे, जेनुं शिर निम्न होय ते पुरुष प्रतिष्ठित छे एम जाणवुं, पण अति निम्न होय तो ते अनर्थ करनारो थाय छे.

जे पुरुषोना एक रोमकूपमां अकेक स्निग्ध, कृष्ण, आकुंचित, अग्र भागथी नहि फूटेल, कोमल अने विरल केश होय तो तेओ घणाज सुखी अथवा राजा थाय छे.

जेना शिरमां एक एक रोमकूपथी घणा केश निकळ्या होय अने ते विषम, कपिल रंगना,

अग्र भागथी भिन्न थएला, रुक्ष, कुटिल अतिशय कठोर अने वहु घाटा होय ते पुरुष निर्धन छे एम समजवुं.

जे जे अंग रुक्ष, मांसहीन अने नाडीओथी व्याप्त होय ते ते अंग अशुभ जाणवां; स्निग्ध, पुष्ट अने नाडीओथी रहित अंगो शुभ होय छे.

जेनां त्रण अंग विस्तीर्ण, त्रण अंग गंभीर, छ अंग उंचां, चार अंग ह्रस्व, सात अंग रक्तवर्ण, पांच अंग दीर्घ अने पांच अंग सूक्ष्म होय ते पुरुष राजा थाय छे.

छाती, ललाट अने वदन ए त्रण अंग विस्तीर्ण, नाभि, शब्द अने सत्व ए त्रण गंभीर; छाती, कक्ष्या, नख, नासिका, मुख अने कृकाटिका ए छ उन्नत; गुह्यांग, पीठ, ग्रीवा, अने जंघा ए चार ह्रस्व; नेत्रोनो प्रान्त, पगनां तळीयां, हाथ, तालु, अधर, जिह्वा अने नख ए सात रक्तवर्ण; दांत, आंगळीओना पर्व, केश, त्वचा अने नख ए पांच सूक्ष्म होय ते शुभ समजवां. हनु, नेत्र, भुजा, नासिका अने बन्ने स्तनोना मध्य भाग ए पांच अंग दीर्घ राजाओविना वीजा मनुष्योनां होतां नथी अर्थात् ए पांच अंग जे पुरुषोनां दीर्घ होय ते राजा थाय छे.

लक्षण जाणवावाळा पुरुषोए मनुष्य, पशु अने पक्षीओमां शुभाशुभ फल सूचन करनारी, रत्नना घडामां रहेली दीप प्रभानी पेठे शरीरनी अंदर रहीने पण तेज गुणथी वाहेर प्रकाश करनारी छाया जोवी जोइए. अर्थात् ए छायाथी शुभ अशुभ फळनो विचार करवो जोइए.

जे वखते पुरुष आदि उपर भूमिनी छाया होय ते वखते एनां दांत, नख, रोम, शिर अने केश स्निग्ध अने शरीरमां सुगन्ध रहे छे, ते भूमिनी छाया तुष्टि, धननो लाभ अने अभ्युदय आपी दिवसे दिवसे धर्ममां प्रवृत्ति करावे छे.

जळनी छाया स्निग्ध, श्वेत, स्वच्छ अने हरित तेमज नेत्रोने प्रिय लागे एवी होय छे. ते छाया सौभाग्य, कोमलता, सुख अने अभ्युदय आपी सर्व कार्योनी सिद्धि करवावाळी थाय छे, अने मातानी माफक पुरुष आदि जीवोने शुभ फळ आपे छे.

अग्निनी छाया चंडा, अधृष्या, कमल, सुवर्ण अनेअग्निना समान रंगवाळी तेमज तेज, पराक्रम अने प्रतापथी युक्त होय छे; ए आग्नेयी छाया प्राणीओने जय आपे छे अने सत्वर वांछित अर्थने सिद्ध करे छे.

वायुनी छाया मलिन, रुक्ष, काळी अने दुर्गन्धयुक्त होय छे. ए छाया मरण, बंधन, रोग, अनर्थ अने धननो नाश करे छे.

आकाशनी छाया स्फटिक समान अति निर्मळ होय छे. ए छाया भाग्य युक्त, अति उदार अने कल्याणना निधानरूप होय छे.

ए रीते पंच भूतमयी शरीर छाया जाणवी. हाथी, वृष, रथसमूह, भेरी, मृदंग, सिंह अने मेघना तुल्य जेनो शब्द होय ते राजा थाय छे.

गर्दभ समान, जर्जर अने रुक्ष स्वरवाळो पुरुष धन तेमज सुखथी हीन होय छे.

तालु, ओष्ठ, दंतमांस, जिह्वा, नेत्रोना छेडा, पायु, हाथ अने पग रक्तवर्ण होय ते रक्तसार कहेवाय छे, ए रक्तसारवाळा पुरुषो घणुं सुख, स्त्री, धन अने पुत्रोथी युक्त थाय छे.

स्निग्ध त्वचावाळो पुरुष धनिक, कोमळ त्वचावाळो पुरुष भाग्यशाळी अने तनु त्वचावाळो पुरुष पंडित होय छे.

मज्जा अने मेदना सारवाळा पुरुषो सुंदर शरीरवाळा पुत्र अने धनथी युक्त होय छे.

जेना शरीरमां अस्थिसार होय तेना हाडकां म्होटां होय छे अने ते पुरुष बळवान्, विद्याना अंतने पामनारो तेमज रुपवान होय छे.

घणां अने घाटां वीर्यवाळो पुरुष वीर्यसार होय छे, अने ते भाग्यशाळी, विद्वान तेमज रुपाळो होय छे.

पुष्ट शरीरवाळो पुरुष मांससार होय छे अने ते विद्वान, धनाढ्य तेमज रुपवान होय छे.

अंग सन्धिओनी सुश्लिष्टताने संघात कहे छे. संघातवाळा पुरुषो सुखभोगी होय छे.

वचन, जिह्वा, दांत, नेत्र अने नख ए पांच जेनां स्निग्ध होय ते पुत्र, धन तेमज सौभाग्यथी युक्त थाय छे अने जेना ए पाचे अस्निग्ध होय ते निर्धन छे एम समजवुं.

राजाओनो गौर के श्याम गमे ते वर्ण होय परंतु ते वर्ण स्निग्ध अने कान्तिमान होय छे.

मध्यम (स्निग्ध नहीं तेमज रुक्ष पण नहि) वर्ण पुत्रवान अने धनवान पुरुषोनो तेमज रुक्ष वर्ण धनहीन पुरुषोनो होय छे. स्निग्ध वर्ण शुभ अने संकीर्ण वर्ण अशुभ लेखाय छे.

गाय, बळद, वाघ, सिंह, अने गरुडना समान मुखवाळा पुरुषोनो पूर्व जन्म शुभ होय छे अने ते पुरुषो अखंड प्रौढ प्रताप, शत्रुओने जीतवावाळा राजा थाय छे.

वानर, महिष, सूकर अने बकराना जेवा मुखवाळा पुरुषोनो पूर्व जन्म मध्यम होय छे अने तेओ शास्त्र, धन तेम सुखथी संपन्न होय छे.

गर्दभ अने उंट समान मुख तथा शरीरवाळा पुरुषोनो पूर्व जन्म अशुभ समजवो, तेओ निर्धन अने सुखहीन होय छे.

पोताना आंगळ प्रमाणे एकसो आठ आंगळ उंचो होय ते पुरुष उत्तम, छन्नु आंगळ उंचो होय ते मध्यम अने चोराशी आंगळ उंचो होय ते अधम होय छे; पगना अग्र भागथी मस्तकना मध्य भाग पर्यन्त माप करवो.

बे हजार पलनो एक भार थाय छे.

५ चणोठीनो १ मासो
१६ मासा ,, १ तोलो
४ तोला ,, १ पल
१०० पल ,, १ तुला
२० तुला ,, १ भार

जे पुरुषनुं वजन अरधो भार होय ते सुख भोगवे छे अने एथी न्यून वजन होय ते दुःखी रहे छे. एक भार वजनवाळो पुरुष अति धनवान होय छे, जेना शरीरनुं वजन दोढ भार होय ते चक्रवर्ती राजा थाय छे.

वीश वर्षनी अवस्थाए स्त्रीनो तेमज पचीश वर्षनी अवस्थाए पुरुषनो माप अने तोल करवो; अथवा गणित आदिथी जेटलुं आयुष्य नक्की थयुं होय ते आयुष्यनो चोथो भाग वीती जाय ए वखते माप अने तोल करवो.

भूमि, जळ, अग्नि, वायु, आकाश, देव, मनुष्य, राक्षस, पिशाच अने तिर्यक्नुं सत्त्व पुरुषमां होय छे.

भूमि प्रकृतिवाळा पुरुषनो सुंदर कमल आदि पुष्पो समान गंध होय छे, ते भोगी, सुगन्ध श्वासथी युक्त अने स्थिर स्वभावनो होय छे.

जल प्रकृतिवाळो पुरुष पाणी बहु पीए छे अने मीठुं बोलनारो तेमज रस भोजन करवामां रुचिवाळो होय छे.

अग्नि प्रकृतिवाळो पुरुष चपल, अति तीक्ष्ण तेमज क्रूर होय छे, क्षुधाने सहन करी शकतो नथी अने बहु भोजन करे छे.

वायु प्रकृतिनो मनुष्य चंचळ तेमज दुर्बळ होय छे अने तुरत क्रोधवश थइ जाय छे.

आकाश प्रकृतिनो मनुष्य सर्व काममां निपुण होय छे, मुख खुल्लुं राखे छे, शब्दगतिमां कुशळ होय छे अने एनां अंग सुषिरयुक्त होय छे.

देव प्रकृतिनो मनुष्य त्यागी, अल्प क्रोध अने प्रीतियुक्त होय छे.

मनुष्य प्रकृतिना पुरुषने गीत अने भूषण प्रिय होय छे. ए हमेशां संविभाग अर्थात बांधवो उपर उपकार करवावाळा अने शीलवान् होय छे.

राक्षस प्रकृतिनो मनुष्य बहु क्रोधी, दुष्ट स्वभावनो अने पापी होय छे.

तिर्यक् प्रकृतिनो पुरुष भीरु, क्षुधालु अने घणु खानारो होय छे.

जेनी गति शार्दूल, हंस, मस्त हाथी, वृष अने मयूर समान होय ते पुरुष राजा थाय छे; शब्द रहित मंद गतिवाळा पुरुषो धनवान् होय छे; शीघ्र अने देडकानी माफक ठेकडा मारता जे पुरुष गमन करे छे ते दरिद्री होय छे.

थाकी जतां यान, भूख्या थतां भोजन, प्यास लागतां जळ आदि पान अने भयने समये रक्षण ए सर्व वात जे पुरुषने विना यत्ने प्राप्त थाय ते पुरुषने धन्य अर्थात् शुभ लक्षणवाळो समजवो. पिशाच प्रकृतिनो मनुष्य चचळ, मलीन देहवाळो, [illegible] ने बहुल अगोपी युक्त होय छे

आ तमारा पुत्रना तमाम चिन्हो जोतां ते कोइ म्होटो योगी तेमज प्रतापी थाय तेम छे, छता आश्चर्य ए छे के आयुष्यनी रेखा बीलकुल स्वल्प छे जेथी छ महिने तेनुं मृत्यु थशे एमां जरापण फेरफार थवानो नथी. माटे हुं तमने चेतवुं छुं के तमारे तमारा बाळकना हित माटे जे करवुं घटे ते करजो. आटलुं कही ते विप्र चालतो थयो.

गर्भथी आठमे वर्षे ब्राह्मणने, अग्यारमे वर्षे क्षत्रिने अने बारमे वर्षे वैश्यने यज्ञोपवीत देवुं जोइए छता मृकंड ऋषिए कंइ पण मुहूर्त के मास जोया विना अकाळे पोताना पुत्रने यज्ञोपवीत दइ दीधुं अने पोताना पुत्रने पासे बेसाडी उपदेश आपवा लाग्या के " भाइ ! तारे हर जगोए भ्रमण करतां मार्गमा ज्यां ज्यां ब्राह्मण मळे त्यां तेने विनय पूर्वक अभिवंदन करवुं.

पोताना पितानां वचन अंगीकार करी मार्कंडेये ब्राह्मणोने नमवानो नियम राख्यो, एम करतां छ महिनामां त्रण दिवस बाकी रह्या एटले तेना मृत्युने पण त्रण दिवस बाकी रह्या एटलामां दैवयोगथी तीर्थयात्रा करता करता मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, अंगिरा, अने वशिष्ठ ए सप्तर्षिओ त्यां आव्या, तेओने आवता जोइ जेणे माळा धारण करी ब्रह्मचर्य पाळ्युं छे अने दंड ग्रहण कर्यो छे एवा मार्कंडेय ते साते ऋषिना पगमां पड्या; बाळकनी आवी आस्था जोइ प्रसन्न थइने "दीर्घायुर्भव" एम प्रत्येके आशीर्वाद दीधो; एटलामां वशिष्ठ ऋषिए बाळ ब्रह्मचारी मार्कंडेय सामुं जोइ बीजा ऋषिओने कह्युं के "आपणे बधाए आ बाल ब्रह्मचारीने "दीर्घायुर्भव" आशीर्वचन आप्युं पण आ बाळक तो आजथी त्रीजे दीवसे प्राण त्याग करशे एम तेनां लक्षणो उपरथी जणाय छे; आपणे तेने शुभ आशिष आपेल छे तो हवे प्रयत्न करी तेने दीर्घायुष्यवान् करवो ए आपणुं काम छे; वशिष्ठनां वचन सांभळी ऋषिओ विचार करी बोल्या के आ बाळकने जीवाडवानो उपाय ब्रह्मा विना कदी पण बनवानो नथी, माटे आ बाळकने लइ आपणे सर्व ब्रह्मलोकमां जइए अने ब्रह्माना मुखथी "दीर्घायुर्भव" एम कहेवरावीए. आ रीते सप्तर्षि एकत्र थइ बाल ब्रह्मचारी मार्कंडेयने साथे लइ तीर्थ यात्रा पडती मुकी ब्रह्मा पासे गया, त्यां जइ सप्तर्षिओ ब्रह्माने साष्टांग प्रणाम करी वेदोक्त सूक्तो वडे स्तुति करी पोतपोताने आसने बेठा; त्यार पछी मार्कंडेये ब्रह्माना चरणारविन्दमां नमन कर्युं, ब्रह्माए बाल ब्रह्मचारीने जोइ प्रसन्न थइ "दीर्घायुर्भव" एम आशीर्वाद आपी सप्तर्षिने पूछवा लाग्या के "मुनिओ ! तमो अहीं केम अने क्यांथी आव्या छो ? जरुरी कारण होय ते कहो, मारुं काइ कार्य होय ते करवा हुं तत्पर छुं. वळी आ बाळ ब्रह्मचारी कोण छे ते पण मने कहो."

आ रीतें ब्रह्मानां वचन सांभळी सप्तर्षि बोल्या के "पितामह ! अमो तीर्थयात्रा करवा पृथ्वीमां फरता फरता ज्यारे चमत्कारपुरनी आसपास गया त्यारे आ बाळ ब्रह्मचारीए अमने अभिवंदन कर्युं एटले अमे बधाए जुदो जुदो "दीर्घायुर्भव" ए आशीर्वाद आप्यो. पाछळथी लक्षण जोता आजथी त्रीजे दीवसे आ बाळकनुं मृत्यु छे एम जाणी अमो घणाज लज्जित थया जेथी आने साथे लइ अमो आपनी पासे आव्या त्या अर्थे पण दैवयोगे आ बाळकने दीर्घायुष्य थवानो आशीर्वाद आप्यो माटे महाराज ! आपणे सर्व सत्य वाणीवाळा थइए तेवो उपाय करवो जोइए; आपनी पासे आववानुं कारण पण आज छे.

सप्तर्षिनां वचन सांभळी ब्रह्मा हसीने बोल्या के–" ऋषिओ ! आ बाळक मारा प्रसादथी जरा अने मृत्यु रहित तथा संपूर्ण रीते वेद विद्या जाणनार थशे एमां जरा पण संदेह राखवो नहि; हवे आ बाळकने झट पृथ्वी उपर लइ जाओ अने एना वृद्ध पिता पोतानां धर्मपत्नि सहित पुत्रना दुःखथी मृत्यु न पामे तेटला वखतमां सत्वर तेमनी पासे मुकी आवो; ब्रह्माना वचन सांभळी सप्तर्षिओ ते बाळकने तेना पिताना आश्रम पासे अग्नितीर्थनी नजीक मूकी तेनी साथे वातचीत करी तीर्थाटन करवा चाली नीकळ्या.

हवे आ प्रमाणे जे अरसामां सप्तर्षिओ मार्कंडेयने लइ ब्रह्मलोकमां गया ते अरसामा तेना पिता मृकंड ते बाळकुमारनी चोतरफ गोत करवा मंडया, पुत्रनी घणी शोध करतां ज्यारे क्यांही पण पत्तो न मळ्यो त्यारे पोतानी पत्नि आगळ विलाप करवा लाग्या के " ओ मारा व्हाला बाळक ! तुं केम देखातो नथी ? शुं रमतां रमता कोइ कूवामां पडयो ? अथवा तो वनमां कोइ सर्पे तने डस्यो के शुं थयुं ? मारा प्यारा पुत्र मार्कंडेय ! तुं दग्ध अंतःकरणवाळा मने तथा तारी माताने आखा जन्मपर्यंत दुःखी करी क्यां न्हासी गयो ! पुत्र ! तें घणुंज अवळुं कर्युं; प्राणप्रिया ! अघोर पाप करनारा में मरवा वखत पण पुत्रनुं मुख न जोयुं, पूर्वे मने सामुद्रिकशास्त्र जाणनार ज्योतिषीए कह्युं हतुं के तारा आ पुत्रनुं छ महिनामां मृत्यु थशे " ए वात खरी बनी, तो ए पुत्रना शोकरुपी दावाग्निथी न बळुं एटलामा काष्ठनी चिता खडकी बळी मरवुं एज ठीक छे. मृकंड ऋषिनां वचन साभळी तेमना पत्नि बोल्यां जे प्राणनाथ ! मारो पण एज सिद्धान्त छे, पुत्रना मृत्यु पछी आपणे जीवी शुं करवुं छे ! माटे हवे झाझो वखत नहि वितावता लाकडां एकठा करो, हुं पण आपनी साथेज बळी मरीश, पुत्रनो शोक माराथी खमातो नथी. आ रीते मृकंड अने तेमना स्त्री पोताना असह्य कष्टनी वात करे छे, एटलामां राजी थतो थतो तेमनो पुत्र मार्कंडेय तेओनी पासे आवी पहोंच्यो; सामा आवता पोताना पुत्रने दूरथी जोइ माता अने पिता बन्नेने हर्षाश्रु आवी गयां अने पुत्रने मळवा उतावळथी सामा दोडयां तथा वारंवार बाथमां घाली पूछवा लाग्या के, पुत्र ! घणा वखतथी तुं क्यां भागी गयो हतो ? अमने शोक समुद्रमा डुबावी एकदम तुं क्यां चाली नीकळ्यो हतो ? मारा व्हाला पुत्र! आज पछी कोइ दिवस आम कह्या विना चाल्यो जइश नहि. मातपिताना वचन सांभळी मार्कंडेय बोल्या के मातपिता ! आज मार्गमां सात ऋषिओ मळ्या तेओने आपनी आज्ञा मुजब मे अभिवंदन कर्युं, ते ऋषिओए पृथक् पृथक् "दीर्घायुर्भव" ए रीतनो मने आशीर्वाद आप्यो, पण तेमाथी एक मुनिए कह्युं के आ बाळकनुं आजथी त्रीजे

दिवसे मृत्यु छे." आ वात सांभळी सर्वे मुनिओ विचार करी मने ब्रह्मलोकमां लइ गया, त्यां में ब्रह्माने अभिवंदन कर्युं, जेथी तेओए पण "दीर्घायुर्भव" एम आशिर्वचन आप्युं, ते पछी ब्रह्माए आजे आप आंही क्याथी? विगेरे मुनिओने पूछ्युं, एटले ऋषिओए मने जे आशीर्वाद आपेल ते विषयनी सघळी वात जाहेर करी अने कह्युं के "पितामह! आपना प्रसादवडे आ बाळक दीर्घ आयुष्यवाळो थाय एम अमारी आपने विज्ञप्ति छे." ब्रह्माए कह्युं के "आ बाळक जरा मरणथी रहित थशे. माटे आने तुरत घेर पहोंचतो करो." पिताजी ए ऋषिओ मने आ ठेकाणे मुकी आ तीर्थमां स्नानार्थे उतर्या छे.

आ रीते पोताना पुत्र मार्कंडेयनां वचन सांभळी मृकंड मुनि अत्यंत सानंदाश्चर्य पाम्या अने ज्यां सप्तर्षिओ न्हावा गया हता त्यां दोडी पहोंच्या. तेणे सर्व ऋषिओने प्रणाम करी हाथ जोडी विनय पूर्वक कह्युं के "मुनीश्वरो! आपना प्रतापथी मारुं कुळ वृद्धि पाम्युं छे;" पूर्वना आचार्यो सत्य कही गया छे के "सत्पुरुषोनो आश्रय त्रिलोकमां प्रसिद्ध छे, साधु पुरुषनां दर्शन तीर्थथी पण विशेष छे कारण के साधु तीर्थस्वरुप कहेवाय छे, वळी तीर्थ तो अमुक काळे फळ आपे छे पण सत्समागम तो सत्वर फळे छे." माटे आप मारे घेर अतिथि पधार्या छो तो कृपा करी मने सेवा फरमावो.

मृकंडनां वचन सांभळी सप्तर्षिओ बोल्या के "तमारो अल्प आयुष्यवान् पुत्र मृत्युनी जाळमाथी बच्यो एज अमे कोटिगणु आतिथ्य मान्युं छे." त्यारबाद मृकंड बोल्या के "महाराज! मारा पुत्रने मृत्युना मुखथी छोडावी आपेज मारा कुळनो उद्धार कर्यो छे, जो हुं आपनो प्रत्युपकार न करुं तो महा पापी कहेवाउं, कारण के ब्रह्महत्या तथा सुरापान करनार अने व्रतभंजकनां प्रायश्चित्त शास्त्रोमां कहेल छे परंतु कृतघ्नतारुपी अघोर पापनुं प्रायश्चित्त कह्युंज नथी; माटे कृपा करी मने कृतघ्नतानो दोष प्राप्त न थाय एवी कोइ सेवा बतावो.

आ रीते मृकंडना अति आग्रहथी सप्तर्षिओ बोल्या के "तमारा अन्तःकरणमां प्रत्युपकार करवानो खरो निश्चय होय तो तमे आ तीर्थनी पासे एक मंदिर चणावो अने तेमा जेनी कृपाथी आ तमारो पुत्र अजरामर थयो छे ए श्री ब्रह्मदेवनी स्थापना करो तेमज आ तमारा पुत्र सहित निरंतर ते पितामह देवनी पूजा करो, अमे पण तमारी साथे हमेशा ब्रह्म मूर्तिनी पूजा करशुं, बीजा ब्राह्मणो पण तेनी पूजा करशे. वळी आ तीर्थनी जगोए अमोए आ बाळक साथे मित्राइ करी माटे आ तीर्थनुं नाम "बाळसख्य" एम जगतमां प्रसिद्ध थशे. अने आ तीर्थ बाळकोने

घणुंज हितकारक थइ पडशे. वळी आ तीर्थमां जे कोइ पोताना रोगार्त्त, भयार्त्त, भूत प्रेतनी जडमां आवेला तथा बालग्रहनी पीडा पामता बाळकने न्हवरावशे तेना रोग, भय तथा पीडा अमारां वचनथी निःसंशयपणे नष्ट थइ जशे; तेमज जे कोइ मनुष्य निष्काम वृत्तिथी श्रद्धावान् थइ आ तीर्थमां स्नान करशे ते ब्रह्माना प्रसादथी तथा अमारां वचनथी परम गतिने पामशे." आटलुं कही सप्तर्षिओ तीर्थ प्रवासे चाली नीकळ्या. त्यारबाद मृकंड ऋषिए ए जगोए म्होटी धामधूमनी साथे श्रद्धावान् थइ भगवान् ब्रह्मदेवनी मूर्त्ति स्थापन करी.

महात्मा मार्कंडेय वेदाध्ययन करवा पोताना पूज्य पितानी आज्ञा लइ कोइ उत्तम वेदवेत्ता ऋषि पासे गया. गुरुनी आज्ञा मुजब नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पाळी यथाविधि अध्ययन करवा लाग्या. जटा, वल्कल, कमंडलु, दंड, उपवीत, जपमाळा अने दर्भोने धारण करवा लाग्या, धर्मनी वृद्धिने अर्थे शांतपणाथी बन्ने संध्यामां अग्नि, सूर्य, गुरु, ब्राह्मण अने पोताना शरीरमां भगवाननुं पूजन करवा लाग्या; सायंकाळे तेमज प्रातःकाळे भिक्षा लावी गुरुने समर्पण करी तेओनी आज्ञा पामी पोते मौनपणे एकभुक्त करी संतोष पामवा लाग्या. आ रीतें लांबा वखत सुधी ब्रह्मचर्य पाळी ऋग्, यजुः साम तथा अथर्व ए वेदना पद, क्रम, शिखा, दंड, माळा, ध्वज, रथ अने घन विगेरे भेदो भली रीते भण्या; वेदाध्ययन पूर्ण थइ रह्या पछी पोताना पिता पासे जवा गुरु पासे आज्ञा मागी. गुरुए घणा हर्ष साथे आशीर्वाद आपी प्यारथी चुंबन करी ऋषिओना शिरोमणि मार्कंडेयने विदाय कर्या.

पंचम तरंग.
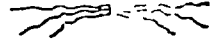
स्रग्धरा.

मार्कंडेये गृहस्थाश्रम निज पितुना बोधथी मान्य राखी,
स्नेहे सत्कर्म कीधां, निशदिन भयना भारने दूर नांखी;
पुत्रोत्पत्ति थवाथी, प्रियजन तजीने, योगमां वृत्तिधारी,
एनुं वृत्तांत व्हालें, अमर नरपति ! सांभळो श्रेयकारी.

महात्मा मृकंडऋषि भगवान् ब्रह्मानी स्थापना कर्या पछी अने मार्कंडेय जेवा पुत्रनी प्राप्तिथी गृहस्थाश्रम पूर्ण थयुं समजी पोतानां पत्नि सहित वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करी त्यां ब्रह्म-देवालयमांज निवास करी तपव्रत आदि उत्तम साधनाओ करवा लाग्या.

महात्मा मार्कंडेय वेदाध्ययन करी घेर आवी पोतानी योग्य अवस्था थवाथी तीर्थाटन करी योग साधवा माटे कोइ पवित्र स्थाननो आश्रय लेवा पोताना मातपिता पासे नम्रतायी हाथ जोडी रजा मागवा लाग्या; मनस्विनी माता सजळनेत्रे पोताना पुत्रने तेम नहि करवा अने पोना पासे रही गृहस्थाश्रम चलाववा समजाववा लाग्यां, वैराग्यवान् मार्कंडेय गृहस्थाश्रमथी थता दुःखोनुं वर्णन कर्या पछी अति नम्रतायी नमन करी माताने कहेवा लाग्या के ब्रह्मस्वरुप ब्रह्मानी कृपाथी मने अमरपणुं प्राप्त थयुं छे जेथी हवे हुं क्षणपण इश्वर भजन सिवाय व्यर्थ व्यतीत करवानो नथी.

महात्मा मृकंडऋषि पुत्रनो हठ जोइ समजाववा लाग्या के “भाइ! गृहस्थाश्रम कर्या सिवाय त्यागाश्रम कदीपण सुखरुप थतुं नथी; तमाम आश्रमोथी गृहस्थाश्रम उत्तम छे, जे गृहस्थोना सुख वैभवोने अनुभव्या सिवाय स्वर्ग आदिमां श्रद्धावान् बनी शरीरनो त्याग करे ते तामस सन्यासी कहेवाय छे, जे स्थान रहित भिक्षार्थे फरनार मात्र वृक्षनां मूळनोज जेने आश्रय छे ते भिक्षुक-संन्यासी कहेवाय छे, आनंद, क्रोध अने चुगलीनो त्याग करी जे विप्र वेदनुं अध्ययन करे ते

त्यागी कहेवाय छे. एक बाजु गृहस्थाश्रम अने बीजी बाजु बधां आश्रम तोळीए तो अन्य सर्व आश्रमोथी गृहस्थाश्रम वजनदार गणाय छे, अन्य आश्रमोथी मात्र स्वर्गीय लाभ प्राप्त थाय छे; परंतु गृहस्थाश्रमथी तो काम तेमज स्वर्ग उभयनी प्राप्ति थाय छे; माटे महर्षिओने पण उत्तम गति आपनार गृहस्थाश्रमज छे; रागद्वेषने वरजी गृहस्थाश्रम पाळनारने महान् भाग्यशाळी समजवो; कारण के पीडितने शयन, श्रमितने आसन, तृषितने जळ अने क्षुधातुरने भोजन आपवुं ए गृहस्थोना सामान्य धर्म छे." आ रीते पितानां वचन सांभळी मार्कंडेय सविनय कहेवा लाग्या के "पूज्य! बधां आश्रमो करतां गृहस्थाश्रमने आप शा कारणथी श्रेष्ठ गणोछो? तपस्वी मृकंड बोल्या के "जेम पवनने आधारे सर्व प्राणी रहेलां छे तेम तमाम आश्रमो गृहस्थाश्रमने आधारे रहेला छे, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ अने सन्यासी ए त्रणेने गृहस्थज खानपानादिथी सन्मान आपे छे. जेथी ए सर्वोत्तम गणाय छे. वेद अने स्मृतिमां पण गृहस्थाश्रम उच्च गणेल छे, सर्व आश्रमोनी उत्पत्ति गृहस्थाश्रममांथीज छे. जेम सरिताओनी स्थिति सागरमां छे तेम अखिल आश्रमोनी स्थिति गृहस्थाश्रममांज छे. कारण के सर्वनुं पोषण गृहस्थज करी शके छे, माटे तुं इश्वर कृपाथी अमरपणुं पाम्यो छे तो तमाम आश्रमोनो विधिवत् सन्कार कर; पुत्र प्राप्ति थया पछी खुशीथी त्यागाश्रम स्वीकारजे."

पितानी आज्ञानुं उल्लंघन नहि करनार मार्कंडेय मुनिए शरमने लीधे मुखथी नहि बोलतां चेष्टाओथी सर्व आज्ञा स्वीकारी नमन कर्युं.

ज्ञानी मृकंड ऋषिए तुरतज प्रथम मळेल सामुद्रिक शास्त्रीने बोलाव्या, सत्कार करी साष्टांग दंडवत् पूर्वक विज्ञप्ति करी के "दैवज्ञ ऋषि! आपे मने भविष्य संभळावी मारा पुत्रने दीर्घायु कर्यो, हवे ए अमरपणु पामेल पुत्रने गृहस्थाश्रमी करवा मारो विचार थयो छे तो तेना योग्य कन्या शोधतां पहेलां स्त्रीओनां शुभ अशुभ सामुद्रिक लक्षणो सांभळवा इच्छा राखुं छुं तो कृपा करी मने संभळावशो."

महात्मा मृकंडनां वचन सांभळी सामुद्रिक शास्त्री बोल्या के "जेम क्षीरमां शर्करा मळवाथी विशेष स्वाद उत्पन्न थाय छे तेम उत्तम लक्षणवाळा पुरुषने उत्तम लक्षणवाळी स्त्री होय तो बन्ने सुख पामे छे; स्त्री पुरुषमांथी एक शुभ लक्षण युक्त होय अने एक लक्षणहीन होय तो तेनुं जीवन मरण तुल्य छे, कारण के जाळनी अंदर सपडाएला माछलांनी पेठे दुःख पामे छे. जेम

कंचननी अंदर नंग जडवाथी शोभानी आधिक्यता थाय छे तेम स्त्री पुरुष सरखां शुभ लक्षण-वाळा होवाथी तेनी शोभामां वृद्धि जणाय छे.

जे कन्याना पग स्निग्ध, उंचा, आगळथी पातळा अने लाल रंगना नखोथी युक्त होय, समान, पुष्ट, सुंदर अने निगूढ गुल्फथी युक्त होय; तेमज तेनी आंगळीओ परस्पर मळेली होय अने तळीयांनी कान्ति कमलनी कान्ति समान होय ए कन्याथी राजा बनवानी इच्छावाळा पुरुषे लग्न करवां.

जेमां मत्स्य, अंकुश, कमल, जव, वज्र, हळ अने खड्गना आकारनी रेखा होय, पसीनो वीलकुल न वळतो होय तथा जेनां तळीयां सुकोमळ होय एवां चरणो शुभ होय छे.

रोम अने नाडीओथी रहित सुंदर गोळ जंघा होय, बन्ने जानु समान होय अने तेना सन्धिओ स्थूल न होय; बन्ने उरु पुष्ट हाथीनी सुंढने आकारे रोम रहित होय, पीपळानां पान समान कोमळ अने विस्तीर्ण गुह्यांग होय; केडनी उपरनो भाग विस्तीर्ण अने कूर्मनी पीठ समान उन्नत होय तेमज मणि गूढ होय आवां लक्षणवाळी स्त्री मळतां घणा धननी प्राप्ति थाय छे.

कांची कलापने धारण करनार नितंब विस्तीर्ण, मांसथी पुष्ट अने गुरु होय तेमज नाभि गंभीर, विस्तीर्ण अने दक्षिणावर्त होय तो ते शुभ गणाय छे.

जे स्त्रीनो मध्य भाग त्रिवलीथी युक्त अने रोम रहित होय; बन्ने स्तन गोळ, पुष्ट, सरखां अने कठिन होय, छाती रोम रहित अने कोमळ होय तेमज ग्रीवा शंख समान त्रण रेखाओथी युक्त होय ते स्त्री धन अने सुख आपनारी बने छे.

बंधुजीवनां पुष्प समान अति रक्तवर्ण, मांसथी भरेलां, सुंदर, बिम्ब फळ तुल्य आकृति वाळा अधर होय तेमज कुंदनी कळी समान श्वेत अने सरखा दांत होय तो ते स्त्रीओने पतिसुख तथा घणी संपति आपनार थाय छे.

सरलता युक्त शठता रहित कोकिल अने हंसना शब्द जेवा रम्य अने दीनता रहित जेनां वचन होय ते स्त्री बहु सुखदायक बने छे; समान पुटवाळी सुंदर नासिका शुभ गणाय छे, नील कमलना दल समान कान्तिवाळी दृष्टि उत्तम समजवी.

बन्ने भ्रकुटी मळेली न होय, बहु पहोळी न होय तेम लांबी पण न होय परंतु बाल चंद्रमानी माफक वांकी होय तो ते शुभ जाणवी.

अर्ध चंद्राकार, रोम रहित अने सम (उंचु नहि तेम नीचुं पण नहि) ललाट शुभ होय छे.

बन्ने कर्ण थोडा मांसथी युक्त, कोमळ, समान अने समाहित होय ते शुभ समजवा.

एक एक रोमकूपमां स्निग्ध, अति कृष्ण वर्ण कोमळ अने कुंचित एक एक केश उत्पन्न थाय ते सुखदायक होय छे. मस्तक पण सम अर्थात् उंचा नीचुं न होय ते शुभ जाणवुं.

जे स्त्रीनां चरणतल अने करतलमां भृंगार, आसन, घोडा, हाथी, रथ, श्रीवृक्ष, यूप, बाण, माळा, कुंडल, चामर, अंकुश, यव, पर्वत, ध्वज, तोरण, मत्स्य, स्वस्तिक, यज्ञवेदी, पंखो, शंख, छत्र अने कमलना आकारनी रेखा होय ते स्त्री राजानी राणी थाय छे.

जेना मणिबंध नविन कमलदलना गर्भ समान पातळी अने लांबा पर्ववाळी आंगळीओथी युक्त निगूढ अर्थात् उंचा न होय ते स्त्री राजानी राणी थाय छे.

स्त्री अथवा पुरुषना हाथमां मणिबंधथी निकळी मध्यमा अंगुली पर्यन्त जे रेखा जाय अथवा पादतलमां जे उर्ध्व रेखा होय ते रेखा राज्यसुख आपनारी थाय छे.

कनिष्ठिकानां मूळथी नीकळी तर्जनी अने मध्यमाना मध्य भागमां जे रेखा जाय ते रेखाथी आयुष्यनुं प्रमाण थाय छे. जो ए रेखा पूरी होय तो आयुष्य पूरी होय छे अने जो न्यून होय तो ए प्रमाणे आयुष्य न्यून पण जाणी लेवुं.

अंगुष्ठना मूळमां संताननी रेखा होय छे, तेमां म्होटी रेखा पुत्रोनी अने न्हानी रेखा कन्याओनी होय छे, जे रेखा वच्चेथी टूटेली न होय ते दीर्घायुष्यवाळां संताननी अने जे रेखा टूटेली तेमज न्हानी होय ते अल्प आयुष्यवाळा संतानोनी जाणवी.

जे स्त्रीना पगनी कनिष्ठिका अथवा कनिष्ठिकाना समीपनी आंगळी अनामिका भूमिनो स्पर्श न करे तेमज जेना पगनी तर्जनी अंगुठाथी अधिक लांबी होय ते स्त्री व्यभिचारिणी अने पापिणी होय छे.

जेनी जंघाओ उपर खेंचायेली पिंडीओथी युक्त, नाडीओथी व्याप्त, शुष्क अथवा बहु पुष्ट अने रोमश होय; वामावर्त रोमोथी युक्त निम्न अने न्हानुं जेनुं गुह्यांग होय तेमज जेनुं पेट घटाकार होय ते स्त्री दुःख भोगवे छे.

टुंकी ग्रीवा वाळी स्त्री निर्धन होय छे, बहु लांबी ग्रीवा वाळी स्त्री होय तो तेना कुळनो क्षय थाय छे. अने म्होटी ग्रीवा वाळी स्त्री क्रूर स्वभावनी होय छे.

जे स्त्रीनां नेत्र केकर अथवा पिंगल होय ते तथा जेनां नेत्र श्याव अने चंचळ होय ते स्त्री व्यभिचारिणी थाय छे.

जेनुं ललाट लांबुं होय ते स्त्री देवरने मारे छे, जेनुं उदर लांबुं होय ते श्वसुरने मारे छे अने जेना स्फिच् लांबा होय ते स्त्री पतिने मारे छे.

जेनो उपरनो होठ बहु रोम युक्त होय ते तथा जे बहु लांबी होय ते स्त्री पतिने माटे शुभ होती नथी.

जे स्त्रीनां स्तन रोमश, मलिन, अने उत्कट होय तेमज कर्ण विषम होय ते क्लेशकारी थाय छे.

जेना दांत स्थूळ, कराल अने विषम होय ते स्त्री कलेश भोगवे छे, काळा मांसवाळा जेना दांत होय ते स्त्री चोरी करे छे.

जे स्त्रीना हाथमां मांस खानारां गीध आदि पक्षी, वृक्, काक, कंक, सर्प अने उलूकना आकारनी रेखा होय ते तथा जेना हाथ शुष्क नाडीओथी व्याप्त अने विषम होय ते स्त्री दुःखी अने धनहीन थाय छे.

जेनो उपलो होठ उंचो अने केशना अग्र भाग रुखा होय ते स्त्री कलहप्रिया थाय छे.

घणे भागे कुरूपा स्त्रीओमां दोष अने उत्तम रूपवाळी स्त्रीओमां गुण होय छे.

पग अने गुल्फ ए पहेलो भाग, जानु चक्रो सहित जंघा बीजो भाग, गुह्याग, उरु अने वृषण त्रीजो भाग, नाभि अने कटि चोथो भाग, उदर पांचमो भाग, स्तन सहित हृदय छट्ठो भाग, स्कंध अने जत्रु ए सातमो भाग, ओष्ठ अने ग्रीवा ए आठमो भाग, भ्रू सहित नेत्र नवमो भाग अने ललाट सहित शिर दशमो भाग जाणवो.

पाद आदि अंग अशुभ लक्षणोथी युक्त होय तो एनी दशानुं फळ अशुभ अने शुभ लक्षणोथी युक्त होय तो एनी दशानुं फळ शुभ होय छे; आनुं तात्पर्य ए छे के जन्मथी मांडीने बार बार वर्ष पाद आदि दश भागोनी दशा होय छे; एमां जो पाद आदि अंग रुक्ष, नाडीओथी व्याप्त अने अशुभ लक्षणोथी युक्त होय तो तेनी दशा अशुभ तेमज जे अंग पुष्ट, नाडीओथी रहित तथा उत्तम लक्षणोथी युक्त होय तेनी दशा शुभ होय छे.

आ बार वर्षनुं दशा प्रमाण भविष्यमां थनारी छेल्लामां छेल्ली प्रजाना एकसो वीश वर्षना आयुष्य प्रमाणे कहेल छे माटे गणितथी जेटलुं आयुष्य जणाय तेनुं दशांश प्रमाण लेवुं.

सामुद्रिक शास्त्रीना मुखथी स्त्रीओनां शुभ अशुभ लक्षणो सांभळी प्रसन्नमनथी महात्मा मृकंड ऋषि पोताना पुत्र मार्कंडेय माटे योग्य कन्यानी शोधे प्रवृत्त थया. घणी कन्याओ जोया पछी धूम्रवती नामनी सुलक्षणा कन्या पसंद करी, अने तेना पिता पासे मार्कंडेय माटे कन्यानी याचना करी.

आ दुनियामां परमेश्वरे गर्भ धारण करवा स्त्रीओने अने गर्भाधान करवा सारु पुरुषोने पेदा कर्या छे.

पुरुषे स्त्री संगाते रही सर्व सामान्य धर्म पालन करवानुं वेदमां वर्णवेलुं छे.

उद्वाह आठ प्रकारना छे. ब्राह्मय, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस अने पैशाच.

विद्वान, सदाचारशील तेमज याचना नहि करनारा पुरुषने बोलावी, वरकन्याने वस्त्राभूषण धारण करावी, वरने सन्मान पूर्वक जे कन्यादान आपवामां आवे तेने ब्राह्मय लग्न कहे छे.

ज्योतिष्टोम आदि विस्तीर्ण यज्ञ ज्यां थतो होय त्यां तेनां कर्म करावनार ऋत्विजने वस्त्राभरणथी भूषित कन्या अर्पण करवी तेने दैव लग्न कहे छे.

धर्म शास्त्रनी आज्ञा मुजब वर आगळथी एकाद बे गाय अने बळद लइ कन्यादान आपवामां आवे तेने आर्ष लग्न कहे छे.

कन्यादान देवा टाणे वर कन्या बन्नेने साथे रही धर्म पाळवानुं कहेवामां आवे तेमज वरकन्यानुं पूजन करी वरने कन्या आपवामां आवे तेने प्राजापत्य लग्न कहे छे.

कन्यानां मावापने द्रव्य दइ तथा कन्याने यथाशक्ति वस्त्राभरण आपी शास्त्र विरुद्ध जे लग्न करवामां आवे तेने आसुर लग्न कहे छे.

मात्र वर कन्यानी इच्छानुसारे जे संबंध जोडाय तेने गांधर्व लग्न कहे छे.

कन्याना पीयरीयानो नाश करी, रुदन करती तेमज राडो पाडती कन्याने बळात्कारे उपाडी जइ ते साथे परणवुं तेने राक्षस लग्न कहे छे.

उंघी गयेली अथवा केफथी बेभान बनी गयेली कन्याने एकान्ते भोगववी तेने पैशाच लग्न कहे छे.

उपर कहेल लग्नोमांथी उत्तमोत्तम ब्राह्य लग्नथी धूम्रवतीना पिताए मृकंड ऋषिराजनुं वचन मान्य राखी पोतानी पुत्रीनो मार्कंडेय साथे विवाह कर्यो, विवाह थया पछी धूम्रवती तथा मार्कंडेय वेदमां अने स्मृतिमां कहेल धर्म प्रमाणे वर्तवा लाग्या. अहर्निश परस्पर प्रीति राखी गृहस्थाश्रम चलाववा लाग्या, कुलदेव, गाय, अतिथि अने मातपितानी सेवा घणा भावथी करवा लाग्या, अने धूम्रवती पोताना पतिने इश्वर समजी रातदिवस शुद्ध मनथी सेवा करवा लागी.

हृदयनी अवस्थानुं सूचन करावनारवाळा शरीरकम्प, रोमांच, स्वेद, अने मुख वैवर्ण्य आदि सात्विक भावो पतिना एकान्त मिलन वखते प्रगट करवा लागी तेमज नाभि, भुजा, उरोज अने भूषणोनुं देखाडवुं, वस्त्रोनुं संकोचवुं, केशोने खुल्ला मूकवा, भ्रकुटी चढाववी, कंपवुं, कटाक्षथी जोवुं इत्यादि अनुरक्तानी चेष्टाथी पतिने प्रसन्न करवा लागी; उंचा स्वरथी भाषण करी, हसी, शय्या समीप जइ आळस खाइ योगीराज मार्कंडेयनुं मन हरण करवा लागी, मधुर वचन बोली, पोतानुं सर्वस्व पतिने अर्पण करी प्रसन्न थवा लागी, क्रोध रहित थइ पतिना गुण गावा लागी, पतिना मित्र वगेरेने आदर आपी तेना प्रतिपक्षीओने धिक्कारवा लागी तेमज पति जरा दूर जतां उदास थवा लागी.

सुशीला धूम्रवतीना आवां वर्तनथी मार्कंडेय महा ज्ञानी छतां संसार सुखनी प्रशंसा करता हता.

काळे लइने महात्मा मार्कंडेयने सती धूम्रवतीथी एक देदीप्यमान उत्तम लक्षणवाळो पुत्र उत्पन्न थयो जेनुं उत्तम ज्योतिष शास्त्रीओ पासे जोवरावी "वेदशिरा" नाम पाड्युं. धूम्रवतीना शुभ संकल्पना उत्तम फळरुप वेदशिरा दिनप्रतिदिन द्वितीया चन्द्रनी माफक वृद्धि पामवा लाग्यो.

महात्मा मार्कंडेय वेदशिराने योग्य वये पहोंचेल जाणी पोता पासे बोलावी कहेवा लाग्या के–" आयुष्मन् पुत्र ! हु हवे गृहस्थाश्रमनो त्याग करवा इच्छा राखुं छुं तो तारे मारां वचन उपर विश्वास राखी मारी गेरहाजरीमां वर्तवानुं छे. आपणा पूर्वजोथी चालतो आवतो सनातन धर्म स्वीकारी पंच महायज्ञ सहित बीजा यज्ञो करवा अने कराववा, अधर्मथी दूर रहेवुं, दान कदि पण न लेवुं अने लेवुं तो विपत्ति काळमां लेवुं, भिक्षा मागवीज नहि, विद्या भणवी अने भणाववी, वेद कर्म करावी द्रव्य मेळववुं, विनाश्रम कदिपण द्रव्य लेवुं नहि अने वेदाध्ययन करवा माटे

गुरुने घेर रही नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पाळवुं; पुत्र! तने हुं सूत्ररूपे सद्वर्तन समजावुं छुं ते सांभळ" मनुष्यपणुं पाम्या छतां सद्वर्तनथी रहित पुरुष पशुसमान गणाय छे एटला माटे दुर्लभ मनुष्यपणाने शोभाववा सद्वर्तनवान थवुं. सुरभि, विप्र, गुरु, वृद्ध, सिद्धपुरुष अने आचार्यनुं यथा-विधि अर्चन करवुं. सवार सांज अग्निमां हुतपदार्थ होमवा, रोगने दूर करनारी श्रेष्ठ औषधिओने शरीर उपर धारण करवी, सांजसवार स्नान संध्या करवा चूकवुं नहि, तमाम अंगोने साफ राखवां, पखवाडीयामां एकाद वखत शिरकेश, दाढी, मुछ तेमज बगलना वाळ उतरावी नखो काढी नांखवा, हमेंशां स्वच्छ अने नहि फाटेल वस्त्रो धारण करवां, अन्तःकरणने आनंदमां राखवुं, चंदनादि सुगंधि द्रव्यो लगाडी शरीरने सुगन्धवाळुं राखवुं, शोभतो पोशाक धारण करवो, माथाना वाळ मळ रहित राखवा. माथामां, कर्णमां, नासिकामां अने हाथ पगोमां हमेशां तैल मर्दन करवुं, पयःपान करवुं, हरकोइनो मिलाप थती वखते प्रथम आदर आपवानी टेव राखवी, मुख प्रसन्न राखवुं, आपत्तिमां सपडायेल प्राणीने सहायता आपवी, यज्ञ करवा, विप्र अने कंगालोने दान देवुं, पांच श्रेष्ठ मनुष्योने बेसवाना स्थानने नमन करवुं, चौटामां बलि मूकवां, अतिथिनुं विधिवत् आतिथ्य करवुं, पितृओने सप्रेम पिंडदान आपवुं, योग्य वखते हित करनार यथाकार्य प्रिय अने सप्रयोजन वाक्य वदवुं, इन्द्रिओने स्वाधीन राखवी, धर्ममां अन्तःकरण प्रेरवुं, अन्यने विद्या, धन अने धर्म विगेरे प्राप्त थाय तो इर्षा करवी नहि परंतु ते मेळववा यत्न करवो, चिन्ता रहित थवुं, भय राखवो नहि, लोक लज्जाने स्नेह पूर्वक जाळवी राखवी, बुद्धिमान बनी क्षमाशील थवुं, धार्मिक अने आस्तिक थवुं, जे विनय, बुद्धि, विद्या, कुलिनता अने उम्मरमां पोताथी आगळ होय तेओनुं अने म्होटा पुरुषोनुं तेमज आचार्योनुं सेवन करवुं, बाहेर फरवा जती वेळाए शरीर उपर स्वच्छ परिधान पहेरवा, माथे पाघडी, हाथमां लाकडी अने पगमां पगरखां पहेर्या सिवाय बाहेर जवुं नहि, रस्ते चालतां आसपास चार हाथ द्रष्टि राखी गमन करवु, मंगळ आपनार आचारोनुं यथाविधि सेवन कर्या करवुं जे स्थळे ग्लानि उत्पन्न करनार तूटेला वस्त्रो, अस्थि, कंटक, उतारेलां वाळ, तूष, कंकर, राख अने फूटेलां मृत्तिका भाजनो पडेला होय तेने नहि अडकतां दूर चालवुं, स्नान करवाने स्थाने पण विना प्रयोजन जवुं नहि, श्रम जणाय पहेलांथीज व्यायाम बंध करवो, प्राणी मात्र प्रत्ये बंधुभाव राखवो, क्रोधे भरायेलाओने सामथी शान्त करवा, भयभीतने धैर्य देवुं, दीनोने आश्रय देवो, सत्य प्रतिज्ञावान थवुं, शान्ति राखवी, कोइ कटु वचन कहे तो क्रोध न लावतां सहन करवुं, इर्षा रहित थवुं, राग द्वेषना हेतुओनो विनाश करवो, कादि पण

असत्य उचारवुं नहि; पराइ स्त्रीनी तथा पराया धननी स्वप्ने पण स्पृहा करवी नही, कोइ साथे वैर-भाव राखवो नहि, पापाचरणथी अलग रहेवुं, पापकर्म करवानो समय प्राप्त थाय तो पण तेथी दूर रहेवुं, अवरना दुर्गुणो उचारवा नहि, कोइनी गुह्यवात प्रकाशमां लाववी नही, धर्म रहित मनुष्यो साथे, राजद्रोह करनारनी साथे, उन्मत्त मनुष्यो साथे, पापीओनी साथे, गर्भनो विध्वंस करनार स्त्रीओनी साथे, क्षुद्र आचरणवाळाओनी साथे तथा दुष्ट मनुष्योनी साथे कदिपण वेसवुं नहि, निरंकुश वाहनपर स्वारी करवी नहि, अति उन्नत अने कठिन आसनपर वेसवुं नहि, विना ओछाडेल ओशीका विनानी तेमज विषम शय्या उपर सूवुं नहि, पहाडोना विषम शिखरो उपर अटन करवुं नहि, वृक्षोपर चढवुं नहि, अति वेगथी वहेतां जळमां स्नान करवुं नहि, सरिता तटे उगेला वृक्षोनी छांयां सेववी नहि, सळगी उठेल अग्निनी आसपास जवुं नहि, म्होटे अवाजे अति हास्य करवुं नहि, छीक अने बगामुं खाती वखते मुख आडो हाथ देवो, विना प्रयोजन हसवुं नहि, वारंवार नासिकाने खणवी नहि, दंत पंक्तिने परस्पर अथडाववी नहि, अस्थिवाळा भाग उपर कोइने ताडन करवुं नहि, विना प्रयोजन पृथ्वी खणवी नहि, नखथी तृण तोडवुं नहि, चालता मृत्तिकाना अरोडा उपर पग मुकी भांगवा नहि, अंगना कोइ पण अवयवोथी क्षुद्र चेष्टाओ करवी नहि, ग्रहोने, अशुभ वस्तुओने, अपवित्र चीजोने तथा अमंगळ पदार्थोने जोवा नहि; शवनुं अपमान करवुं नहि, गाममां सर्वथी मुख्य तरुनी, देवालयोनी, ध्वजानी, गुरुनी, पूजवा योग्यनी अने चांडालादि नहि अडकवा योग्य जातिनी छायाने उल्लंघी चालवुं नहि, देव मंदिरमां, म्होटा वृक्ष नीचे, चोरा चौटामा, उद्यानमां, स्मशान भुमिमां तेमज वधस्थानमां रात्रीनी वखते रहेवुं नहि, निर्जन गृहमां अने जंगलमां एकाकी जवुं नहि, स्त्री, मित्र अने दास पापी होय तो तेनो तुर्त त्याग करवो, पोताथी म्होटा साथे वैर करवुं नहि, अधम पुरुषोनी सेवाथी अलग रहेवुं, कपटी मनुष्य साथे स्नेह राखवो नहि, अनार्य पुरुषना आश्रयमां कदी पण रहेवुं नहि, कोइने पण भय उत्पन्न नहि करता साहस, अति उंघवुं, अति जागवुं, अति न्हावुं, अति पीवुं अने अति आहार इत्यादिनो परित्याग करवो, ल्यावो वखत उभे गोटणे वेसवुं नहि, हिंसक, दाढवाळा अने शिंगडावाळां प्राणीओथी दूर रहेवुं, पूर्वनो पवन ताप, शरदी अने अति तीव्र वायुनुं सेवन करवुं नहि, क्लेशनी शरुआत पोते कदी पण करवी नहि, गफलत राखी अग्निसेवन करवुं नहि, जम्या पछी मुख प्रक्षालन कर्या सिवाय अग्निनी उपासना करवी नहि, अग्निथी चरणतळ तपाववा नहि. श्रम दूर थयां पहेला स्नान करवुं नहि, न्हाता पहेला मुख धोवुं, वस्त्र रहित थइ स्नान करवुं नहि, पहेरेल कपडाथी माथु साफ करवुं नहि, स्नान

करी माथाना वाळ झाटकवा नहि, न्हाया पछी पवित्र वस्त्र पहेरवां; रत्न, घृत, पूजनीय वृद्धजन, मांगलिक वस्तुओ तथा पुष्पोनो स्पर्श कर्या शिवाय घर व्हार जवुं नहि, वाहेर जती वेळाए पूजवा लायक तथा मांगल्कि पदार्थोने वाम भागमां राखी चालवुं नहि, हाथमां रत्नाभरण धारण करी न्हाइ, पवित्र परिधान पहेरी गायत्री आदि मंत्र जप करी, अग्नि देवने आहुति दइ, पितृ तर्पण करी, गुरु, अतिथि तेम आश्रितोने अन्नदान आपी, चन्दन आदि सुगन्धि पदार्थोनो शरीरे लेप करी, पुष्पमाळा पहेरी, हाथ, पग अने मुखनुं प्रक्षालन करी, उत्तराभिमुख वेशी आचमनथी मुख शुद्धि करी, प्रसन्न मनथी, दासजन, अभक्त, अनिच्छित वस्तु अने अशुद्धताने अलग करी क्षुधा लागे त्यारे शुद्ध पात्रमां भोजन करवुं; जनसमुदायमां, वखत विना अन्नने वेद विहित विधि मुजव अभिमंत्रित कर्या वगर तेमज प्रतिकूळ मनुष्यनी हाजरीमां भोजन कदी पण न करवुं, दुश्मनोए आपेलुं तेमज अशुद्ध अन्न जमवुं नहि; वासी अन्नने उपयोगमां लेवुं नहि. किंतु फळ, काचरी अने आदु आदि लीला शाक वासी होय तो पण उपयोगमां लेवां, पात्रमां पीरसेलु सर्व अन्न जमी न जतां कांइक अवशेष राखवुं, किंतु दधि, मध, लवण, साथवो अने घृत ए चीजोमांथी जमतां जरापण अवशेष राखवुं नहि; रात्री भोजनमां दधिनो त्याग करवो; घृत अने शर्करा मेळव्या शिवाय, रात्रि भोजनमां सर्व अन्न जमी लीधां वाद मात्राथी विशेष अने दिवसमां वेठाणां साथवो कदी पण न खावो, साथवो जमतां मध्य जळ करवुं नहि, छींक खाता, भोजन करतां अने शयन करता शरीरने वांकु वाळवुं नहि. लघुशंका तेमज दीर्घशंका थता मळमुत्रनो त्याग कर्या शिवाय अन्य कार्यमां योजावुं नहि, रस्तामां विशाव करवो नहि, वायु, अग्नि, जळ, चन्द्र, सूर्य, द्विज अने गुरुनी सामे थुंकवुं नहि तेमज अशौच क्रिया करवी नहि, जनसमुदायमां, जमती वखते, जप, होम अने वेदाध्ययन करती वखते, वलि आपवा टाणे तथा मंगळ कार्य करती वेळाए नाक छींकवुं नहि.

अवळानुं अपमान करवुं नहि तेम तेनो विश्वास पण न करवो; स्त्रीओने गुप्त वात कहेवी नहि; तेम तेने कोइ प्रकारनुं उपरीपणुं पण न आपवुं, सत्पुरुषनी अने गुरुनी असत्य निंदा न करवी, अपवित्रपणे देवपूजन के वेदाध्ययन करवुं नहि.

वर्षाकाळ सिवाय विद्युत थती होय ते वखते, दिग्दाह थती वखते, अग्नि सळगी उठेल होय ते वखते, भूकंप वखते, तहेवारोना दिवसोमा, उल्कापात थती वखते, चन्द्र सूर्यना ग्रहण वखते,

प्रातःकाळे तथा संध्यानी संधि वखते; चन्द्र क्षय तिथि अर्थात् अंधारी चतुर्दशी अने अमास तथा अजवाळी प्रदिपदाने दिवसे तेमज गुरु आगळथी पाठ लीधा शिवाय अध्ययन करवुं नहि; मध्यना अक्षर स्खलित न थाय तेम उतावळा न थतां धैर्यथी काकस्वर न करतां शुद्ध स्वरथी, अध्ययन करवुं. जन समुदाये बांधेला नियमोनो भंग न करतां सामान्य नियमोनो पण भंग न करवो. रात्रीए विना प्रयोजन बाहेर फरवुं नहि, अज्ञात स्थाने गमन करवुं नहि, सायंकाळे विद्याभ्यास, अदन, स्त्री संग अने उंघनो त्याग करवो, अति बाळ, अति वृद्ध, कृपण अने मूर्ख साथे मित्रता बाधवी नहि, मद्य, द्यूत अने वेश्यामां आसक्त थवुं नहि, गुप्त वात प्रकाशमां लाववी नहि, कोइनुं अपमान न करतां निरभिमानी रहेवुं, कर्ममां कुशळता मेळववी, सदा प्रसन्न रहेवुं, अन्यना गुणोपर दोषारोपण करवुं नहि, विप्रनी निन्दा न करवी, सुरभि उपर दंड उपाडवो नहि, वृद्धजन, गुरुजन, जनसमुह अने नृपतिओनी निन्दा कदीपण न करवी; बहु बोलवानी टेव न राखवी, बन्धुजन, पोतापर प्रेम राखनार, दुःखने टाणे सहायता देनार तथा गुप्त वात जाणनारनो तिरस्कार करवो नहि; कोइ वातमां अधैर्यनुं अवलंबन लेवुं नहि, अति उद्धत मनना थवुं नहि, स्त्री, पुत्र अने सेवक आदिनुं पोषण करता रहेवुं; निज जनोनो अविश्वास न राखवो, एकाकीए सुखनो उपभोग न करवो; सहज आचरण, शास्त्रोक्त आचार तेमज विवेक आदि दुःखप्रद थाय ते रीते पाळवां नहि; सर्वनो विश्वास करतां अटकवुं तेम सर्व उपर शंका पण न लाववी; विचारग्रस्त थइ दिवसो निर्गमन न करवा, कार्य करवाना समयने वृथा व्यतीत न करवो, इन्द्रिओने आधीन थवुं नहि; चंचळ चित्तने विशेष चांचल्य युक्त न करवुं, रोष अने आनंदने वश थवुं नहि, शोकथी अलग रहेवुं, कार्य सिद्ध थता हर्ष अने कार्य सिद्ध न थतां खेद न करवो; पंच महा भूतात्मक प्रकृति अनित्य छे एम हमेशा मनथी मनन करवुं के जेथी राग द्वेष हृदयने पराभव पमाडवा समर्थ थइ शके नहि; कारण प्रमाणे कार्य उत्पन्न थाय छे ए विचार दृढ करवो, ज्यांसुधी आरंभेळ कार्य फळदाता न बने त्यांसुधी कार्य करतां अटकवुं नहि. कोइपण कार्य हुं करी चुकयो एम विश्वास न राखता सिद्धि पर्यन्त कार्य क्रिया जारी राखवी; पराक्रमनो परित्याग कदिपण करवो नहि, अपवित्रपणे धेनुंनुं घृत, चोखा, तल, दर्भ अने सर्षपनो अग्निने विषे होम न करवो, पवित्रपणे होम करी रह्या बाद नीचेनां वाक्योथी पोताने आशीर्वचन आपवुं "मारा देहमा अग्नि देव स्थिर थइ रहो, वायु प्राणाधान करो, विष्णु भगवान् पराक्रम अर्पो, इन्द्र वीर्य वृद्धि करो तेमज श्रेयस्कर सलिल देवता मारा देहमा दाखल थाओ," आ प्रमाणे आशीर्वाक्य उचारी रह्या

बाद वेद मंत्रथी मार्जन कर्या पछी आचमन करी उभय करतलथी बे वखते ओष्ठने साफ करवा. जप कर्या पछी पादनुं मोक्षण करी नेत्र आदि इन्द्रिओने तथा आत्माहृदय अने शिरने सलिलना स्पर्शथी संतृप्त करवां. पुत्र! आ प्रमाणे वर्तन कर्याथी दुनियामां मनुष्य धर्म, अर्थ, यश अने प्रतिष्ठाने पामे छे; माटे तारे सद्वर्तन पूर्वक सर्व साथे सख्य भाव राखवो अने पोतानी संतति पण तेवीज थवा माटे शुभ इच्छा राखवी, माता प्रति पुत्रोए केम वर्तवुं ए कहेवानी काइ जरुर नथी कारण के तुं धर्मज्ञ छे.

आटलुं कही पोतानी स्त्रीनी आज्ञा लइ महात्मा मार्कंडेय योग साधना करवा प्रवृत्त थया.
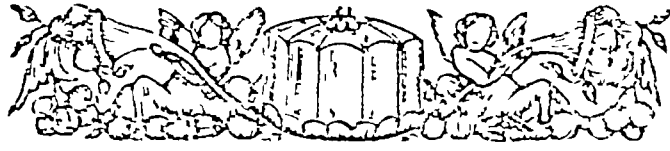
षष्टम तरंग.

वसन्त तिलका.

हर्षे हिमालय महीं द्रढता ग्रहीने, शीतादि संकट शरीर थकी सहीने;
साधेल योग मुनिवर्य मृकंड पुत्रे, स्नेहें सुणावुं अमरेश नरेश सूत्रे.

महात्मा मार्कंडेय पृथ्वी परिक्रमण करता अनेक नदी, पर्वतो अने वनोने उल्लंघी हिमालयना उत्तर भागमां पहोंची पुष्पभद्रा नदीने किनारे चित्रा नामनी शिला समीप योगीओने अनुकूळ न्हानुं द्वारवाळुं, जाळी, झरोंखा, गोख अने नीची उंची पृथ्वी विनानुं, उंदर आदिक प्राणीनो भय दूर करनारुं चडवा उतरवामां श्रम न पडे अने दृष्टिनो लय तथा विक्षेप न थाय एवुं सुंदर गायना छाणथी लीपेलुं निर्मळ मच्छर मत्कुणादि जन्तुओथी रहित मंडपशाळा अने वेदीवाळुं, जलाशय तेमज वृक्षावलि, पुष्पावलिथी युक्त आसपासना भागवाळुं, चारे तरफ भींतोवाळुं आश्रम बांध्युं.

उपर कहेल आश्रममां चिन्ता रहित थइ ज्ञाननी सात भुमिओ सुधी पहोंचेल स्वात्माराम महात्मा मार्कंडेय अति आहार, अतिश्रम, अति बोलवुं, अति शीतळ जळथी प्रातः स्नान, रात्री भोजन अने अन्य मनुष्योना संगथी थती चांचल्यता ए छए योग प्रतिबंधकनो त्याग करी योगाभ्यास करवा माटे योगनो उत्कर्ष करनार उत्साह, साहस, धैर्य, तत्त्वज्ञान, निश्चय अने जनसंगपरित्याग ए छनुं सेवन करवा लाग्या.

आसन, कुंभक, मुद्राकरण अने नादनुं अनुसंधान ए योगना चार अंगोमाथी प्रथम देह तथा मननो चंचळतारुप रजो गुण धर्मने दूर करी स्थिरता आपनार, रोगने दूर करनार, अंगमाथी गौरवरुप तमोगुण धर्मने अलग करनार तथा अंगने लघुता आपी क्षुधा तृषानी वृद्धिनो विनाश करनार आसन साधना करवा मांडी. तेमां प्रथम:—

१ जानु अने उरुना मध्यमां वन्ने पगनां तळीयां मूकी सरल देहथी वेठक जमावी "स्वस्तिक" आसन सिद्ध कर्युं.

२ डावी तरफ केडनी नीचे जमणा पगनुं गुल्फ राखी अने जमणी वाजु केड नीचे डावा पगनुं गुल्फ राखी वेसी गोमुखनी आकृतिवाळुं "गोमुखासन" सिद्ध कर्युं.

३ जमणो पग डावा उरु उपर अने डावो पग जमणा उरु माथे मुकी "वीरासन" सिद्ध कर्युं.

४ वन्ने पगनी एडीओथी मूळ द्वारने दवावी सावधान स्थित थइ "कूर्मासन" सिद्ध कर्युं.

५ वन्ने उरु उपर उभय चरण स्थापन करी वन्ने हाथ जानु अने उरुनी वच्चेथी पृथ्वी पर मूकी उंचा थइ "कुक्कुटासन" सिद्ध कर्युं.

६ कुक्कुटासनमां कीधेल रीते स्थित थइ वे वाहुथी ग्रीवाने पकडी कूर्मनी पेठे उंची दृष्टि करी "उत्तान कूर्मासन" सिद्ध कर्युं.

७ वन्ने हाथथी वन्ने पगना अंगुठा पकडी एक हाथ अंगुठा सहित लांवो करी तेमज वीजो हाथ अंगुष्ठ सहित कान सुधी खेंची "धनुरासन" सिद्ध कर्युं.

८ डावा उरुना मूळमां जमणो पग राखी तेना गुल्फनी उपरना भागने वांसे वाळेला डावा हाथथी पकडी जमणा पगना जानुनी वाहेर वींटायेल डावा पगना अंगुठा, डावा पगना जानुनी वाहेर वींटायेल जमणा हाथथी ग्रहण करी, अंगो सहित मुख डावी तरफ परिवर्तित करी "मत्स्येन्द्रासन" सिद्ध कर्युं.

९. पृथ्वीपर वन्ने पग लांवा करी तेना अंगुठा हाथथी पकडी, जानु उपर ललाट राखी "पश्चिमतानासन" सिद्ध कर्युं.

१०. प्रसारेली आंगळीओ वाळा वेउ करतल भूमि उपर मूकी तेमज कोणी उपर पार्श्व ठेरवी, लाकडीनी पेठे अधर थइ "मयूरासन" सिद्ध कर्युं.

११. मुडदानी माफक वन्ने हाथ तथा पग लांवा राखी पृथ्वीपर पीठ मुकी उंघेळानी पेठे सुइ रही "शवासन" सिद्ध कर्युं.

१२. मूळद्वार अने उपस्थना मध्य भागने योनिस्थान कहे छे ते योनिस्थानने डावा पगनी एडीथी दबावी अने जमणा पगने उपस्थना उपला भाग उपर मूकी तेमज हृदयना चार आंगळ उपर चिबुक राखी, भ्रकुटीना मध्य भागमां दृष्टिने अचल करी मोक्षना कमाडने उघाडनारुं "सिद्धासन" सिद्ध कर्युं.

उपस्थथी उपरना भागमां डावा पगनी जमणी घुंटी मूकी तेना उपर जमणा पगनी घुंटी लगावी बीजी रीततुं "सिद्धासन" सिद्ध कर्युं.

१३. डावा उरु उपर जमणो पग राखी अने जमणा उरु उपर डावो पग राखी पीठ पाछळ वाळेला जमणा हाथे डावा उरु उपर रहेला चरणना अंगुष्ठने तथा पीठ पाछळ वाळेल डावे हाथे जमणा उरु उपर रहेला पगना अंगुष्ठने पकडी दाढीने हृदय समीप राखी नासिकाना अग्र भाग उपर दृष्टि दृढ करी "पद्मासन" सिद्ध कर्युं. बन्ने उरु उपर बेउ पग चत्ता राखी एडी साथे प्रथम डावो पछी जमणो ए उभय हाथ उपरा उपर सीधा मूकी, दृष्टिने नासिकाना अग्रभाग उपर स्थिर करी, बेउ तरफनी दाढीना मूळमां जिह्वातुं उर्ध्व स्तंभन करी वक्षःस्थलमां चार आंगळने अंतरे दाढी राखी धीरे धीरे श्वास लइ बीजी रीततुं "पद्मासन" सिद्ध कर्युं.

१४. वृषणनी नीचे सीवनीना जमणा भागमा डावा पगनी एडी स्थापन करी, जानु उपर बन्ने हाथ उंधा राखी आंगळीओ फेलावी, मुख फाडी, जीभ बाहेर काढी एकाग्रचित्ते नासिकाना अग्रभागपर दृष्टि ठेरावी "सिंहासन" सिद्ध कर्युं.

१५. वृषणनी नीचे सीवनीना डावा भागमां डावा पगनी एडी अने जमणा भागमां जमणा पगनी एडी राखी पार्श्व समीप आवेला पगोने बेउ भुजाओथी बांधी लइ "भद्रासन" सिद्ध कर्युं.

उपर प्रमाणे आसनो सिद्ध कर्या पछी योगी, जीतेन्द्रिय अने पथ्य तथा मित आहार करनार मुनि मार्कंडेय पोते अजरामर छता "वायु चलायमान होय तो चित्त पण चलित थाय छे अने वायु निश्चल रहेथी चित्त पण निश्चल रहे छे. वायुनो निरोध करनार योगी स्थाणुत्वने पामे छे; ज्यां सुधी देहमां वायु स्थित होय त्यां सुधीज जीवन छे अने वायु नीकळी गया बाद मृत्यु थाय छे माटे यत्नथी वायुनो निरोध करवो" ए शिवना वचनोने शिरे स्थापी तेओने बतावेल मार्ग मुजब प्राणायाम अभ्यास करवा तत्पर थया.

महात्मा मार्कंडेय सारी रीते समजता हता जे मळथी व्याकुळ नाडीओमां वायु विचलन न थवाथी तुर्यावस्थामां सुख प्राप्त थतुं नथी अने मोक्ष रूपी कार्य सिद्धि पण थती नथी; ज्यारे मळथी आकुळ सर्व नाडी चक्रशुद्धि पामे छे त्यारेज योगी प्राणायाम करवा समर्थ थइ शके छे. जेथी पोते पण सात्विक बुद्धिथी प्राणायाम करवा लाग्या.

प्रातःकाळे, मध्यान्हे, सायंकाळ अने अर्धरात्र ए चारे समयमां प्रथम पद्मासन वांधी चन्द्रथी पूरक करी यथाशक्ति कुंभक करी सूर्यथी रेचक करवा लाग्या. (सूर्य नाडी—पिंगला द्वाराए घणा यत्नथी वहारना वायुने उपर ग्रहण करवो तेने पूरक कहे छे, जालंधरादिक बंधपूर्वक वायुने रोकवो तेने कुंभक कहे छे अने धारण करेल वायुने यत्न पूर्वक धीरे धीरे छोडवो तेने रेचक कहे छे.)

सूर्यनाडीथी प्राणने खेंची मंद मंद उदरमां पूरी फरी विधिवत् बंधपूर्वक कुंभक करी चन्द्र नाडीथी रेचक करवा लाग्या.

जे चन्द्रथी अथवा सूर्यथी रेचक करता हता तेथीज पूरक करवा लाग्या फरी जेथी पूरक कर्यो होय तेथी अन्य नाडी वडे धीरे धीरे रेचक करवा लाग्या. कारण के उतावळे रेचक करवाथी बळनी हानि थाय छे. अने जेथी पूरक करेल तेथी रेचक करवुं अयोग्य तेमज जेथी रेचक कर्युं होय तेथी पूरक करवुं योग्य छे एम पोते सारी रीते समजता हता.

इडाथी प्राणने पूरी फरी कुंभक करेल प्राण पिंगलाथी रेचक करवा लाग्या; तथा पिंगलाथी पूरक करी यथाविधि कुंभक कर्या पछी इडाथी रेचक करवा लाग्या.

आदिमां प्रस्वेद युक्त बेतालीश विपल कुंभकवाळुं कनिष्ठ प्राणायाम करीने कंपयुक्त चोराशी विपल कुंभकवाळुं मध्यम प्राणायाम सिद्ध कर्युं अने छेवटे ब्रह्मरन्ध्रनी प्राप्ति पर्यन्त एकसो पचीश विपल कुंभकवाळुं उत्तम प्राणायाम करवा लाग्या. ए रीते प्राणने ब्रह्मरन्ध्रमां पचीश पल पर्यन्त स्थिर करी प्रत्याहार, पांच घडि स्थिर करी धारणा, छ घडि स्थिर करी ध्यान अने बार दिवस पर्यंत स्थिर करी समाधि करवा लाग्या.

महात्मा मार्कंडेयनुं मन स्थिर हतुं तोपण पोते आसन अने विधिवत् प्राणायामे करी नाडी चक्र शुद्ध थवाथी सुषुम्ना नाडीनो अंदर सुखरुप प्राणवायुने स्थापी मननी अधिक स्थिरता मेळवी मनोन्मनी अवस्थानी अधिक सिद्धिने अर्थे सूर्य भेदन आदि आठ प्रकारना कुंभकनुं अनुष्ठान करवा तत्पर थया.

पूरकनी अंते कंठना आकुंचन पूर्वक चिबुकने हृदय उपर स्थापवा रुप जालंधर बंध करी कुंभक अने रेचकनी अंते यत्नथी नाभि पाछळ खेचवा रुप उड्डीयान बंध करवा लाग्या.

मूळ द्वारना संकोचरुप मूलबंध, कंठसंकोचनरुप जालंधर बंध अने नाभिने पृष्ठ भागे खेंचवारुप उड्डीयान बंध ए त्रण बंध सिद्ध करी प्राणवायुने ब्रह्मनाडी प्रत्ये पहोंचाडवा लाग्या.

अपान वायुने उपर खेंची कंठने संकोची वायुने कंठथी नीचे स्थापी योगीराज मार्कंडेय सोळ वर्षना युवान माफक शोभवा लाग्या.

१. प्रथम सिद्धासन बांधी दक्षिण नाडीथी बाहेर रहेला वायुने धीरे धीरे खेंची (पूरक करी), केशथी मांडी नखाग्र पर्यन्त अति प्रयत्नथी यथाविधि तेनो निरोध करी वाम नाडीथी धीरे धीरे रेचक करी "सूर्य भेदन" नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.

२. मुख बंध करी कंठथी हृदय पर्यंत शब्दायमान वायुने धीरे धीरे खेची इडाथी रेचक करी "उज्जायी" नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.

३. बन्ने होठना मध्यमां जिह्वा राखी सीत्कार पूर्वक मुखथी प्राणवायु पूरी कुंभक करी मुख खोल्या विना बेउ नासापुटथी वारंवार विजृंभिका रेचक करी, कामदेव समान कान्ति आपनार तेमज क्षुधा, तृषा, निद्रा, अने आलस्यनो नाश करनार "सीत्कारी" नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.

४ पक्षीनी नोचली चंचु पेठे जीभने मुखथी बाहेर काढी तेनाथी वायुने खेंची सूर्य भेदन प्रमाणे कुंभक करी बेउ घ्राण रन्ध्रथी धीमे धीमे रेचक करी "शीतळी" नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.

५. बन्ने उरु उपर बेउ पगनां तळीयां राखी पद्मासन वाळी ग्रीवा अने उदरने समान राखी मुख बंध करी यत्न पूर्वक नासिकाना एक रन्ध्रथी कपाल पर्यन्त हृदय अने कंठमां शब्दायमान वायुनुं रेचन करी फरी हृदय कमळ पर्यंत वायुने पूरी पाछो रेचक करी पाछो पूरी एम वारंवार लुहारनी धमण पेठे पोताना शरीरमां रहेल प्राणवायुने चलावी देहमां श्रम जणातां सूर्य नाडीथी वायुने उदर पूर्ति पर्यंत पूरी अंगुष्ठथी दक्षिण नासारन्ध्र तथा अनामिका अने कनिष्ठिकाथी वामरन्ध्र दृढ दबावी विधिवत्

कुंभक करी चन्द्र नाडीथी रेचक करी सुषुम्ना नाडीमां उत्पन्न थयेल ब्रह्म, विष्णु अने रुद्र नामक ग्रन्थिनो भेद करनार " भस्त्रिका " नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.

६. भ्रमरनाद समान शब्दायमान वेगथी पूरक करी तेमज भ्रमरीना नाद समान शब्दायमान मंद मंद रेचक करी "भ्रामरी" नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.

७. पूरकनी अंते अति गाढ जालंधर नामनो बंध बांधी धीमे धीमे रेचक करी, मनने मुर्छित करनार सुखदायक " मुर्छा " नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.

८. शरीरनी अंदर अतिशय वायु भरी पोताना आश्रम नजीक रहेला अगाध जलाशयमां पद्म पत्रनी पेठे तरी " प्लाविनी " नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.

आ रीते अष्ट कुंभक सिद्ध कर्या पछी महात्मा मार्कंडेय मुद्रा करण विधिमां तत्पर थया.

प्रथम वाम पादथी मूळद्वार अने शिश्नुनो मध्य भाग जे योनि स्थान तेने दबावी जमणो पग लांबो करी पृथ्वीपर एडी लगावी दंड माफक हाथनी आंगळीओ उंची करी अंगुष्ठ अने तर्जनीथी जमणा पगनो अंगुष्ठ पकडी, जालंधर बंध बांधी वायुने ब्रह्म नाडीमां धारण करी, इडा पिंगलामां प्राण वायुना अभावथी मरणावस्था अनुभवी पछीथी धीमे धीमे रेचक करी " महा मुद्रा " सिद्ध करी.

डावा पगनी एडी योनिस्थानमां लगावी डावा पगना उरु उपर जमणो पग राखो वायुने पूरी हृदयमां चिबुक लगावी मूल बंध करी मनने ब्रह्मनाडीमां प्रवृत्त करी यथाशक्ति कुंभक कर्या बाद वायुने धीमे धीमे रेचक करी वामांगमां करेल पूरक रेचकनी संख्या मुजब दक्षिणांगमां पूरक रेचक करी " महाबंध " नामनी मुद्रा सिद्ध करी.

महाबंध मुद्रामा स्थित योगीराज मार्कंडेये एकाग्र मनथी पूरक करी जालंधर बंधथी वायुनी गतिने रोकी, बन्ने हाथ पृथ्वीपर सरखा राखी, धीमेथी कटि पश्चात् भागने पृथ्वी साथे अथडावी, प्राणवायुने चन्द्र सूर्य नाडीना अतिक्रमणथी ब्रह्मनाडीमा पहोंचाडी मृतक अवस्था अनुभवी वायुनुं धीरे धीरे रेचन करी सिद्धि आपनार " महावेद " नामनी मुद्रा सिद्ध करी.

थोरना पत्रनी तुल्य अति तीक्ष्ण, चीकणुं अने निर्मळ शस्त्र लइ जिह्वा नीचेनी नसने रोम मात्र छेदी तेना उपर खेर अने हरडेनुं चूर्ण साज सवार सात दिवस छांटवुं अने आठमे दिवस अधिक छेदी पाछुं सात दिवस उपर कहेल चूर्ण छांटवुं, वळी आठमे दिवस अधिक छेद

करवो, पाछुं सात दिवस चूर्ण छांटवुं एम छ मास पर्यंत करवाथी कपाल छिद्रे पहोंचता जीभने अवरोध करनार स्नायुनो नाश करवो ते छेदन, हाथना अंगुष्ठ अने तर्जनीथी जीभने हलावी लांबी करवी ते चालन, अने हाथना अंगुठा अने तर्जनीथी जीभने गायना आंचळनी पेठे खेंची खेंची भ्रकुटीना मध्य पर्यन्त पहोंचाडवी ते दोहन ए; त्रण अंगमांथी महात्मा मार्कंडेये चालन रीतिए जिह्वाने लांबी करी कपाल छिद्रमां विपरीत राखी भ्रकुटीना मध्य भागमां दृष्टि स्थिर करी " खेचरी " मुद्रा सिद्ध करी.

तालुना मूळमां रहेल दिव्य रुप चन्द्रमा कांइक अमृत स्त्रवे छे ते अमृतने नाभिमां रहेल अग्निरुप सूर्य शोषी जाय छे ते अमृततुं शोषण न थाय एटला माटे नाभिने उर्ध्व भागमां राखी अने तालुने नीचला भागमां स्थापी " विपरीत करणी " मुद्रा सिद्ध करी.

सचिक्कण, गुह्यांगमां पेसी शके एवी चौद आंगळनी सीसानी शळी लइ ते गुह्यांगमां नाखवानो अभ्यास करवा लाग्या. पहेले दिवसे एक आंगळ, बीजे दिवसे बे आंगळ अने त्रीजे दिवसे त्रण आंगळ ए रीते बार दिवस बार आंगळ सलाक अंदर नांखी तेनी शुद्धि करी बाहेर रहेला ते सलाकानी आगळना वांका अने उंचा बे आंगळना भागमां सोनीनी अग्नि धमवानी नाळ माफक बीजी नळी चढावी पोते फुंक मारी अंदरनो भाग तद्दन शुद्ध कर्या पछी जळने उपर खेंचवानो प्रयोग करी " वज्रोली " मुद्रा सिद्ध करी.

जेम कुंचीथी कपाट उघाडी शकाय छे; तेम योगी लोको कुंडलिनीथी मोक्षनुं द्वार उघाडी शके छे. जे मार्गथी निरामय ब्रह्म स्थाने जवाय छे ते मार्गने परमेश्वरी कुंडलिनी कंदना उर्ध्व भागमां शयन करी ढांकी रही छे, सर्पनी पेठे कुटिल आकारवाळी कुंडलिनी शक्तिने चलायमान करवाथी संशय विना पूर्ण योगी थइ शकाय छे. गंगा यमुना रुप इडा पिंगलानी मध्ये तपस्विनी बालरंडा रुप कुंडलिनी रही छे तेने बळात्कारथी उसेडी आनन्दपद मेळवाय छे. एम जाणी महात्मा मार्कंडेये सुतेली सापण जेवी ते कुंडलिनीने हठथी जगाडी, मूळद्वारने आगळ रहेली कुंडलिनी निद्रा तजी उंची उठी अवस्थित थइ. तेने प्रातःकाळ, मध्याह्न, सायंकाळ अने अर्ध रात्र ए चारे समय सूर्यथी पूरी परिधान युक्तिथी ग्रहण करी निरंतर चालित करवा लाग्या. प्रथम वज्रासन करी बन्ने हाथथी बन्ने पगने गुल्फ प्रदेशथी दृढ ग्रहण करी कंद (नाभि अने मूळद्वारना मध्य भागमां रहेल, तेनुं स्थान मनुष्यना देहमां नव आगळ जेटलुं चार आगळ पहोळुं अने पक्षीना

इंडां माफक कोमळ अने श्वेत होय छे) ने पीडी. त्यार वाद भस्त्रिका करी सूर्य नाडीने संकोची वे मुहूर्त पर्यंत कुंडलिनीने चलायमान करी उंचे खेंची सुषुम्नानुं मुख खुल्लुं थवाथी ते द्वाराए प्राणवायुने तेमां स्थापी " कुंडलिनी " मुद्रा सिद्ध करी.

अन्दर आधार चक्रथी मांडी ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त जे चक्रो तेमां पोताना अभिमत चक्रमां रहेल लक्ष्य (ब्रह्म) मां अन्तःकरणनी वृत्ति स्थापी तथा बहार देखाती द्रष्टिने निमिषोन्मेष करी " शांभवी " मुद्रा सिद्ध करी.

द्रष्टिने नासिकाना अग्र भाग उपर स्थिर कर्याथी प्रकाश उत्पन्न थाय छे. ते तेजमां द्रष्टिने निश्चल करी, भ्रकुटीओ कांइक उंची चढावी पूर्वे कहेल अन्तर्लक्ष्य, अने बहिर्द्रष्टि पूर्वक " उन्मनी " मुद्रा सिद्ध करी.

महात्मा मार्कंडेय विधिवत् मुद्राओ करीने संकल्प मात्रथी प्रकृतिने दूर करी देहने परमाणु तुल्य बनाववानी " अणिमा " सिद्धि, प्रकृतिने पोतामां धारण करी आकाशादिकनी पेठे स्थूल अने महान थवानी " महिमा " सिद्धि, बहु हलका तुल आदि पदार्थोने पर्वतादि समान गुरुता आपनारी " गरिमा " सिद्धि, पर्वतआदि गुरुतावाळाओने तुल समान लघु बनाववानी " लघिमा " सिद्धि; उभां थतां अंगुलीना अग्र भागथी चन्द्रनो स्पर्श करावनारी तेमज सर्व पदार्थ सन्निध करनारी " प्राप्ति " सिद्धि; पाणीमां डूबी पाछुं नीकळवुं तेमज पृथ्वीपर द्रश्य अद्रश्य थवानी " प्राकाम्य " सिद्धि; भूत भौतिकना जन्म मरणनी रचना करवामां समर्थ थवानी " इशता " सिद्धि अने तमाम स्थावर जंगमने पोताने आधीन करवानी " वशित्व " सिद्धि पाम्या.

सिद्धासनमां स्थित थयेला योगीराज मार्कंडेय एकाग्र चित्तथी शांभवी मुद्रा करी दक्षिण कर्णद्वाराए सुषुम्ना नाडीमां थतो नाद श्रवण करवा लाग्या.

अंगुष्ठो तथा आंगळीओथी वे कर्ण, वे नेत्र, नासिका अने मुखने बंध करी प्राणायामने प्रयोगे सुषुम्नाना मार्गमां प्रगट थतो निर्मळ नाद सांभळ्यो.

आरंभावस्थामां ब्रह्म ग्रन्थिनुं भेदन करी आनंदने आपनार, हृदयाकाशमां उत्पन्न थएल अनेक जातना आभूषणना शब्द समान अनाहत ध्वनि श्रवण कर्यो.

घटावस्थामां प्राण वायु अने नादने एकत्र करी कंठ स्थानीय मध्य चक्रमां स्थित थइ द्रढ आसन जमावी लावण्यताथी देव समान दीपवा लाग्या. एज अवस्थामां ब्रह्म ग्रन्थिना भेदन पछी कंठस्थ विष्णु ग्रन्थिनुं कुंभकथी भेदन करी ब्रह्मानंदनुं भान करावनार भेरी समान नाद श्रवण कर्यो.

परिचयावस्थामां भ्रकुटीनी मध्यना आकाशमां प्राणवायुने पहोंचाडी वाद्य समान नाद सांभळवा लाग्या.

छेवटे योगीराज मार्कंडेय आज्ञा चक्रमां रहेल रुद्र ग्रन्थिनो भेद करी शिवजीनुं स्थान जे भ्रकुटीनो मध्य भाग (ब्रह्मरन्ध्र) तेमां प्राणवायुने पहोंचाडी निष्पत्ति अवस्थामां नांसळी अने वीणा समान नाद श्रवण करवा लाग्या.
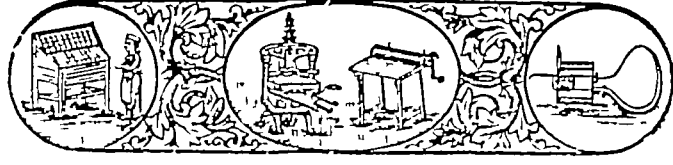
सप्तम तरंग.

शार्दूल विक्रीडित.

ज्यांसूधी शुभ योग साधन कर्युं, ज्ञानी मृकंडात्मजे,
त्यां सूधी मनुओ थया षट् महा, तेओनुं माहात्म्य जे;
व्हालें वाल्मिकि आदिए अवनवुं, शास्त्रो विषे वर्णव्युं,
संक्षेपे अमरेश ! ए सकल हुं, आनंद धारी कवुं.

पहेला स्वायंभुव मन्वंतरमां ब्रह्माथी भृगु आदि नव मानस पुत्रो उत्पन्न थया तेमां भृगुथी विधाता तेथी मृकंड अने तेथी मार्कंडेय आदिनी उत्पत्ति थइ. भृगुना बीजा पुत्र धाताने प्राण नामे पुत्र थयो ते प्राणनो पुत्र द्युतिमान अने तेनो अजरा. तेना पुत्र प्रपौत्र मळीने पुष्कळ विस्तार थयो. मरीचिनी स्त्री संभुतिने पौर्णमास नामे पुत्र थयो, ते महात्माने विरजा अने पर्वत एवा बे पुत्र थया; अंगिरानी स्त्री स्मृतिने सीनीवाली, कुहू, राका अने अनुमति ए कन्याओ थइ; अत्रिथी अनसूयाने सोम, दुर्वासा अने दत्तात्रेय योगी ए त्रण पुत्रो थया. पुलस्त्यनी स्त्री प्रीतिने एक बीजो दत्त नामे पुत्र थयो. ते स्वायंभुव मन्वंतरमां पूर्व जन्मे अगस्त्य कहेवातो हतो. प्रजापति पुलहनी स्त्री क्षमाने कर्दम, अर्ववीर अने सहिष्णु नामे त्रण पुत्रो थया. क्रतु थकी सन्नतिने विशे उर्ध्वरेता साठ हजार वालखिल्य नामे ऋषि पुत्रो जनम्या; वशिष्ठनी स्त्री उर्जाने रज, गात्र, उर्ध्ववाहु, सवल, अनघ, सुतपा अने शुक्र नामे सात पुत्रो थया; ते सर्वे सप्तर्षिओ कहेवाय छे.

स्वायंभुव मनुने पोताना समान दश पुत्र हता. जेमणे आ सप्तद्वीप, पर्वत, समुद्र तथा आकरवाळी वधी पृथ्वी प्रति वर्षे व्याप्त करी तेमज स्वायंभुव मन्वंतरमां तथा त्रेतायुगना आरंभमां स्वायंभुवना पौत्र अने प्रियव्रतना पौत्रोए तमाम वसुंधरा व्याप्त करी हती.

प्रियव्रतथी प्रजावतीने विषे कन्या उत्पन्न थइ, ते कन्या प्रजापति कर्दम ऋषिने आपी. प्रियव्रत राजाने दश पुत्र अने बे कन्याओ थइ. ते प्रियव्रतना दशे पुत्रो प्रजापति सरखा हता.

तेओनां नाम आग्निध्र, मेधातिथी, वपुष्मान, ज्योतिष्मान, द्युतिमान, भव्य, सवन, मेधा, अग्नि अने वाहुमित्र तेमां छेल्ला त्रण महा भाग्यशाळी अने योगपरायण हता. तेओए राज्य करवामां मन लगाड्युं नहि, प्रियव्रत राजाए प्रथमना सात पुत्रोने सात द्वीपना राजानो अभिषेक कर्यो.

आग्निध्रने जंबुद्वीपनो, मेधातिथीने प्लक्षद्वीपनो, वपुष्मानने शाल्मलिद्वीपनो, ज्योतिष्मानने कुशद्वीपनो, द्युतिमानने क्रौंच द्वीपनो, भव्यने शाक द्वीपनो अने सवनने पुष्कर द्वीपनो अधिपति बनाव्यो.

सवनने महावीत अने धातकी नामे बे पुत्र थया तेमने पुष्कर द्वीपना बे विभाग करी तेना पिताए वहेंची आप्या. भव्यने जलद, कुमार, सुकुमार, मनवीक, कुशोत्तर, मेधावी अने महाद्रुम नामे सात पुत्रो हता. तेमना पिताए शाक द्वीपने सात भागे वहेंची ते ते खंडनां नामो पुत्रने नामे राख्यां.

द्युतिमानना कुशल, मनुग, उष्ण, प्राकार, अर्थकारक, मुनि, दुन्दुभि नामे सात पुत्रो हता, तेओना पिताए क्रौंच द्वीपने सात भागे वहेंची पुत्रने नामे खंडोनां नाम पाड्यां.

ज्योतिष्मानने उद्भिद, वैणव, सुरथ, लंबन, धृतिमन्, प्राकार अने कपिल नामे सातपुत्रो थया. तेओने कुश द्वीप सात भागे वहेंची आपी तेओने नामे खंडोना नाम राख्यां.

वपुष्मानने श्वेत, हरित, जीमूत, रोहित, विद्युत्, मानस अने केतुमान नामे सात पुत्रो थया, तेओने शाल्मलि द्वीप सात भागे वहेंची आपी ते खंडोना नाम तेओने नामे राख्यां.

मेधातिथीने शाक, शिशिर, सुखोदय, आनंद, शिव, क्षेम अने ध्रुव नामे सात पुत्रो थया तेओने प्लक्ष द्वीप सात भागे वहेंची आपी तेओने नामे खंडोना नाम पाड्यां.

प्लक्ष द्वीपथी आरंभी शाक द्वीपना अंत सुधी पांच द्वीपोमां सर्व सामान्य अधिक विधिओथी वृद्धि पामेल नित्य अने स्वाभाविक वर्णाश्रमना विभागनो धर्म वर्तनो.

आग्निध्रने तेना पिताए जंबुद्वीप आप्यो हतो तेने प्रजापति सरखा नव पुत्रो थया. तेमा सर्वथी म्होटानुं नाम, नाभि, बीजो किंपुरुष, त्रीजो हरिवर्ष, चोथो इलावृत, पांचमो रम्य, छठ्ठो हिरण्य, सातमो कुरु, आठमो भद्राश्व अने नवमो केतुमाल हतो. ते नवेने जंबुद्वीप नव भागे वहेंची आपी तेओना नामथी खंडोना नाम राख्या. हिमखंड विना बीजा किंपुरुषादि खंडमां

सुखसिद्धि विना यत्ने प्राप्त थती हती, त्यां कोइ वातनो विपर्यय न हतो, जरा अने मृत्युनो भय नहोतो, ते खंडोमां धर्म, अधर्म, उत्तम, मध्यम अने अधम एवो भेद पण न हतो; चार युगनी जुदी जुदी स्थितिओ, ऋतु संबंधी फेरफार के ऋतुओ पण न हती.

आग्निध्रना पुत्र नाभिने ऋषभ नामे पुत्र थयो, ऋषभने सो पुत्र थया तेमां सहुथी श्रेष्ठ अने पराक्रमी भरत हतो, ऋषभे भरतने राज्याभिषेक करी पोते पुलहाश्रममां जइ तप कर्यु. दक्षिणनो हिम नामनो खंड ऋषभे भरतने आप्यो तेथी तेनुं "भरतखंड" नाम पडयुं, भरतने सुमति नामे महाधार्मिक पुत्र थयो. तेने राज आपी भरत पण वनमां चाल्या गया. तेमना पुत्र अने पौत्रोए तथा प्रियव्रतना पुत्रोए सात द्वीपवाळी पृथिवी स्वायंभुव मन्वंतरमां भोगवी.

वरुणा नदीना किनारापर आवेला अरुणास्पद नामे नगरमां कोइ एक विप्र वसतो हतो, ते रुपमां अश्विनी कुमारथी चडतो हतो, स्वभावे कोमळ, उत्तम आचरणवाळो, वेद अने वेदना अंगोने पूर्णरीते जाणनारो, आश्रितने आश्रय आपनारो तथा अतिथिनो प्रेम पूर्वक आदर सत्कार करतो हतो; अतिशय रमणीय वन अने उपवनवाळां नाना प्रकारनां नगरोथी सुशोभित पृथ्वी जोवानी तेना मनमां इच्छा थइ; एक समये तेने घेर नाना प्रकारनो औषधिना प्रभावने पिछाणनार मंत्र विद्यामां कुशळ कोइ अतिथि आवी चढयो. विप्रे तेनुं श्रद्धा पूर्वक प्रसन्नचित्ते आतिथ्य करी पृथ्वी उपरना देशो रमणीय नगरो, [illegible] जो अने पवित्र स्थळो संभळाववा प्रार्थना करी, अतिथिए स[illegible] अथ इति कही संभळा[illegible] ए त्रण पु[illegible] विस्मय पामी अतिथिने कह्युं के द्विजराज! तमे घणा देश जोयाछे छतां श्रमित जणाता नथी; एटलो वधो काळ व्यतीत थया छतां तमारामां वृद्धत्व वरतातुं नथी; तमारी युवावस्था वीती [illegible]इ होय एम पण अवलोकातुं नथी. तमो स्वल्प समयमा पृथ्वीमां शी रीते फरी वळ्या? अतिथिए कह्युं के विप्र! मंत्र अने औषधिना प्रयोगथी मारी गति निर्विघ्न छे, हुं अर्ध दिवसमा एक हजार योजन गमन करी शकुं छुं. ब्राह्मण ते बुद्धिशाळी अतिथिनां वचनो उपर श्रद्धा लावी आदरपूर्वक फरी पूछवा लाग्यो के ब्रह्मन्! मने आ पृथ्वी जोवानी अति अभिलाषा छे. माटे आपना मंत्र प्रभावनी प्रसादी आपवा कृपा करो. उदार बुद्धिशाळा अतिथिए ते ब्राह्मणने पगे चोपडवानो लेप आप्यो तथा पोते कहेली दिशाओनुं यत्नथी अभिमंत्रण कर्युं.

ब्राह्मणे अतिथिए आपेल लेपने पगे लगावी नाना प्रकारना झरणाओथी युक्त हिमवान

पर्वत जोवा प्रथम प्रयाण कर्युं, ते विप्रे विचार कर्यो के हुं अर्ध दिवसमां हजार योजन जइश अने अर्ध दिवसमां पाछो घेर पहोंचीश, हवे ते थाक्या विना हिमालयना पृष्ठ उपर पहोंच्यो अने ते पर्वतनी पृथ्वी उपर विचरण करवा लाग्यो; तेना पग तळे दबाएल बरफ ओगळ्यो अने तेथी पगे लगावेलो परमौषधिनो लेप धोवाइ गयो, विप्रनी गति शिथिल थइ गइ अने अहींतहीं फरतो फरतो हिमालयनां अति सुंदर शिखरो जोवा लाग्यो, केटलांएक शिखरो उपर सिद्ध अने गन्धर्वो, केटलांएक उपर किन्नरो केटलांएक उपर देवादिकनां क्रीडा अने विहार करवानां रमणीय स्थळो अने केटलांएक शिखरो उपर चारे तरफ भमता सुरनी अप्सराओना सेंकडो समुदाय जोइ विप्रनां रोम खडां थइ गयां. ए सर्व जोइ विप्रनां अंतरमां तृप्ति थइ नहीं. कोइ कोइ ठेकाणे झरणमांथी पडता जळना धोधवाओथी अन्तःकरणने आनंद आपनारा, बीजी तरफथी मयूरोना रमणीय रवथी शब्दायमान, कोइ ठेकाणे कर्णनुं आकर्षण करनार महा मनोहर सारस तथा कोकिळाना मधुर आलापथी युक्त, सुमनथी सुशोभित, वृक्षोना सुवासथी वासित थएल वायु वडे विनोद दायक पर्वतराज हिमालयने विप्रे विलोक्यो. बाकीनो भाग हवे काले जोइशुं एम धारी घर तरफ जवा तेणे विचार कर्यो पण तेना पगना तळियानो लेप धोवाइ जवाथी जड बनी गयेल पग घणी वारे उपडवा लाग्या जेथी पोते विचार कर्यो के अरे में आ अज्ञानथी शुं कर्युं? मारा पगनो लेप तो बरफना पाणीथी धोवाइ गयो, हवे आ पर्वत महा दुर्गम छे, हुं घेरथी घणे दूर नीकळी आव्यो छुं, हवे हुं अग्नि सेवन आदि कर्म केवी रीते करी शकीश? हुं क्रियाथी भ्रष्ट थइश, आतो महान संकट आवी पड्युं. आ पर्वतनी रमणीयता अने सौंदर्य शत वर्ष पर्यन्त जोया करुं तोपण तृप्ति थाय तेम नथी. अहीं तो कर्णेन्द्रियने स्वाधीन करनार किन्नरोना मधुर स्वरो चारे तरफथी संभळाय छे, प्रफुल्लित पुष्पोथी छवाइ गएलां वृक्षोनो सुगन्ध घ्राण इन्द्रियनुं आकर्षण करे छे, वायु शरीरनो स्पर्श करी सुख उत्पन्न करे छे, रसभरित फळो रसना इन्द्रियने ललचावी रह्यां छे, सुशोभित मनोहर मननुं बळात्कारे हरण करे छे, आ वखते कोइ तपस्वी मने मळी जाय तो मने घेर जवानो रस्तो बतावे एम विचार करतो करतो ते विप्र हिमालयमां आमतेम भटन करवा लाग्यो; पण लागेल औषधिनुं बळ नाश पामवाथी ते बहु व्याकुळ बनी गयो, तेटलामां कोइएक कुळवती सुरूप स्वरूपवाळी वरुथिनी नामे उत्तम अप्सराए ते विप्रने भमतो भाळ्यो, तेने जोतांज ए अप्सराना अन्तःकरणमां प्रेम प्रगट्यो, तेनुं हृदय कामातुर बनी गयुं, वरुथिनी विचार करवा लागी के अहो आ अति मनोहर आकृतिवाळो पुरुष कोण हशे? जो ए मारो तिरस्कार न करता स्नेहथी स्वीकार करे

तो खरेखर मारो जन्म सफळ थाय; वाह! केवुं एना रूपनुं माधुर्य छे! केवी सुंदर चाल छे! केवुं द्रष्टिनुं गांभीर्य छे! में अनेक देव, दैत्य, सिद्ध अने गन्धर्वो जोया छे पण आ प्रभामय पुरुषना रूपनी समानता कोइपण करी शके तेम नथी. जेवी एना उपर मारी प्रीति थइ छे, तेवीज एनी प्रीति मारा उपर थाय तो पछी हुं जेवी भाग्यशाळी कोण? जो आ महात्मा पोताना स्नेह-भरी द्रष्टि एक वखत मारा उपर नांखे तो पछी हुं जेवी पुण्यशाळी प्रमदा एके नथी एम मानुं. आ रीते विचार करती अत्यंत मनोरम आकृतिवाळी कामपीडित देवांगना वरुथिनी ते विप्रनी द्रष्टि आगळ जइ उभी रही. पोतानी आगळ आवी उभेली रुपवती वरुथिनीने विलोकी मर्यादा पूर्वक विप्र तेनी पासे जइ कहेवा लाग्यो के! अरे कदलीना गर्भ समान सुकोमळ कान्ता! तुं कोण अने कोनी स्त्री छे? अहीं शा माटे आवी उभी रही? हुं अरुणास्पद नामे नगरथी अहीं आव्यो छुं, ज्ञाते ब्राह्मण छुं. हुं जेना प्रभावथी आटले सुधी आव्यो ते मारा पगनो लेप वरफना पाणीथी धोवाइ गयो छे. आ सांभळी वरुथिनी बोली के–हुं उत्तम कुळमां उत्पन्न थएली वरुथिनी नामे देवांगना छुं, अने आ रमणीय नगराजमां निरंतर अटन करुं छुं. तमने जोवाथी मारुं हृदय कामातुर बनी गयुं छे तो कृपा करी मने योग्य आज्ञा फरमावो. हमणा हुं तमारे आधीन छुं. विप्र बोल्यो के वरांगि! हुं मारे घेर जइ शकुं एवो मने उपाय बताव. कल्याणि! नहिं तो मारां तमाम कर्मोनो नाश थशे. ब्राह्मणने नित्य अने नैमित्तिक कर्मनी हानि ए सर्व करतां महान् हानि छे. माटे मोदमन्दाकिनि! आ हिमगिरिमांथी मारो छूटको कर. ब्राह्मणे कोइ काळे प्रवास करवो योग्य नथी. मारा मनने पृथ्वी जोवानुं कुतूहल उपज्युं ए बहु भुंडुं थयुं; निरंतर घेर निवास करवाथी श्रेष्ठ ब्राह्मणने नित्य अने नैमित्तिक तमाम कर्मोनी प्राप्ति थाय छे, पण प्रवासीने तो हानिज थाय छे. बहु कहेवाथी शुं फळ? गमे तेम करी सूर्यास्त थतां पहेलां हुं मारे घेर पहोंचुं एवो मार्ग बताववा कृपा कर. विप्रना वचनो श्रवण करी वरुथिनी बोली के–महात्मन्! एवुं हवे पछी आप बोलशो नहि; मने मूकी तमो घेर चाल्या जाओ एवो दिवस जोवा हुं कदिपण इच्छती नथी; द्विजराज! अमने स्वर्गलोक एटलो बधो आनंददायक नथी; एटला माटेज अमो सुरलोक तजी अहीं आवीने निवास करीए छीए. हृदय-वल्लभ! आ मनोहर हिमगिरिमां मारी साथे रमण करो, तमारा बांधव आदिनुं स्मरण छोडी दिओ; कारण के हुं तमारे वश थइ छुं; हुं तमोने हार, वस्त्रालंकार, भक्ष्य, भोज्य अने चंदनादि अनुलेपन तमाम आपीश. मनने मोदप्रद वीणा तेमज वेणुना शब्दयुक्त किन्नरोनुं गायन, अंगोने अह्लादकारक वायु, उष्ण अन्न, निर्मळ नीर, यथेच्छ शय्या अने सुगन्धि लेप विगेरे

सर्व आपनी आज्ञा मुजब हाजर करीश; तमारे घेर एवी शुं अधिक छे! अहीं निवास करवाथी तमने कोइ काळे वृद्धत्व प्राप्त थवानुं नथी. आ यौवन बळ आपनारी देवभूमि छे. इत्यादि वचनो उचारती अनुरागवाळी उत्कंठिता कमलनयनी वरुथिनी "मारा उपर प्रसन्न थाओ" एम वारंवार मधुर वाक्यो उचारती एकाएक तेने आलिंगन करवा दोडी. आ जोइ ब्राह्मण क्रोध करी बोल्यो के अरे पापिणि! मारो स्पर्श करीश नहि, जे तारा जेवो होय तेनी आगळ जा, मे तारी पासे मारे घेर जवा उपायनी याचना करी त्यां तुं मारी पासे कोइ विचित्र रुवेज वात करे छे; सांज सवार हमेशनुं हुतद्रव्य अक्षय लोकनी प्राप्ति करावनार छे. आ त्रणे लोक हुतद्रव्यमां रहेला छे जेथी हुं मारे घेर पहोचुं एवो उपाय बताव. वरुथिनी बोली के विप्र! शुं हुं आपने अप्रिय छुं? शुं आ पर्वत रमणीय नथी? गन्धर्व अने किन्नरादिनो त्याग करी तमोने अन्य वयो मनुष्य अभिष्ट छे? थोडो वखत मारी साथे अलभ्य भोग भोगवो त्यार पछी तमो तमारे घेर जवा शक्तिमान थइ शकशो. आ सांभळी ब्राह्मण बोल्यो के गार्हपत्यादि त्रण अग्निओ मारां इष्टजन छे, मने अग्निकुंड अति रमणीय लागे छे अने दर्भासनयुक्त वेदी मने प्रिय छे. वरुथिनी बोलीके सद्धर्मनुं परिपालन करनारा विप्र! आत्माना अष्ट गुणोमां सर्वथी प्रथम दया छे, ते तमो मारा उपर केम नथी करता? तमो मने तजी देशो तो हुं जीवी शकवानी नथी एटले वधो तमारा उपर मारो प्रेम छे. आपने हुं जरा पण असत्य बोलती नथी. माटे मारा उपर प्रसन्न थाओ. आ सांभळी ब्राह्मण बोल्यो केजो तुं साचा दिलथी बोलती हो अने जो मारा उपर तारो साचे साचो प्रेम होय तो हुं मारे घेर जइ शकुं तेवो उपाय बताव. वरुथिनी बोली के—मारी साथे भोग भोगव्या बाद आप सुखेथी घेर जइ शकशो. ब्राह्मणे कह्युं के—वरुथिनी! ब्राह्मणोना आचरण भोग भोगववाने अर्थे नथी. परंतु आ लोकमां तपादि क्लेश सहन करी परलोकमां तेना फळनी प्राप्ति अर्थे छे. वरुथिनी बोली के तमारा अनुग्रह विना हुं जीववानी नथी; मने बचाववाथी आ लोकमां तमोने सुख भोगवी मानि साथे परलोकमां पण पुण्यनुंज फळ मळशे. आ रीते बेय बाजु तमारो अभ्युदय छे. जो तमो तजी देशो तो हुं मरी जइश अने तमोने पाप लागशे, ब्राह्मणे कह्युं के मारा गुरुनी आज्ञा छे के "तारे स्वप्ने पण परस्त्रीनी इच्छा करवी नहि." जेथी हुं तारी कादिपण इच्छा नहि करुं, तारे गमे तेम थाओ. आ प्रमाणे बोली जळनो स्पर्श करी सावधान तथा पवित्र थइ ते महाभाग ब्राह्मण गार्हपत्य अग्निने प्रणाम करी स्तुति करवा लाग्यो. स्तुतिथी प्रसन्न थइ गार्हपत्य अग्निए ते ब्राह्मणना शरीरमां प्रवेश कर्यो, गार्हपत्यना

आवेशने लीधे ते मूर्तिमान् अग्निदेवनी माफक दीपवा लाग्यो, अधिक तेज जोवाथी वरुथिनीनो तेना उपर अत्यंत अनुराग थयो; अग्नि प्रवेशना बळथी ते ब्राह्मण प्रथमनी माफक गमन करवा शक्तिमान थयो, जेथी तेणे चालवा मांड्युं. निश्वास मूकवाथी कंपित स्कंधवाळी सूक्ष्मांगी देवांगनाए दृष्टि पहोंची त्यांसुधी ते विप्रने जोया कर्यो अने ते घणी उतावळथी चाल्यो गयो. क्षणवारमां पोताने घेर पहोंची ते श्रेष्ठ ब्राह्मणे कथा मुजब सघळी क्रियाओ करी. पेली सर्वांग सुंदरी वरुथिनीनुं चित्त तो तेनामांज चोट्युं हतुं तेथी तेणे निश्वास नांखी नांखी बाकीनो दिवस अने रात्री निर्गमन करी.

ए अनुपम सुंदरी वारंवार विलाप करती निश्वास मूकती हती अने पोताने अभागिणी गणी निन्दती हती. आहार विहारमां, रमणीय वनोमां अने आनंद दायक गुफामां तेनुं मन बिलकुल लागतुं नहि; एक समये एक चक्रवाकनुं जोडुं रमण करतुं हतुं ते उपर तेनी स्पृहा थइ पण ते जोडुं ते सुंदरीने छोडी चाल्युं गयुं. ते पोतानी युवावस्थाने धिक्कारवा लागी अने कहेवा लागी के अरे ! मारां दुर्भाग्ये मने आ पर्वत उपर क्यां लावी मुकी ? अने त्यां एवो पुरुष क्यांथी मारी दृष्टिए पड्यो ? जो आज ए प्रभावाळा पुरुषनो समागम नहि थाय तो दुःसह कामाग्नि निःसंशय मारो क्षय करशे. अहो ! जे कोकिलाना शब्दो मने मधुर जणाता तेज आजे दिलमां दाह उपजावे छे. आ रीते कामातुर वरुथिनी ते उत्तम विप्रनुं ध्यान करवा लागी अने एथी तेनी प्रीति विप्र उपर वधती गइ. प्रथम कलि नामे कोइ एक गान्धर्व तेना उपर प्रीति राखतो हतो पण तेने वरुथिनीए तिरस्कार आपी तजी दीधो हतो. ते कलि आज वरुथिनीने आवी अवस्थामां जोइ विचारवा लाग्यो के आ निश्वासना पवनथी करमाइ गएली गजगामिनी वरुथिनी आ पर्वत उपर शामाटे स्थित थएली छे ? शुं एने कोइ तपस्वीना शापनो आघात थयो ? के कोइए एनुं अपमान कर्युं हशे ? कारणके एनुं वदन अश्रुजळथी भींजाइ गयुं छे, कलिए कुतूहलथी घणो वखत विचार्युं, पछी समाधिना बळथी यथार्थ वात तेना जाणवामां आवी गइ, ध्यानथी पेला ब्राह्मणनुं रुप आदि पण तेणे पिछाणी लीधुं. जेथी तेणे विचार कर्यो के—भला ठीक थयुं, पूर्वना सद्भाग्ये मने आ प्रसंग सारो मळ्यो; एना उपर अनुराग राखी प्रथम मे घणीवार एनी प्रार्थना करी हती. तो पण एणे मारो स्वीकार न्होतो कर्यो. ए आजे मारे हाथ आवी जशे. जे पुरुष उपर एनो प्रेम छे तेनोज वेष धारण करी एनी पासे जाउं; जरुर ए मारी साथे रमण करशे. हवे विलंब शामाटे करवो ? आ रीते विचार करी कलिए पेला ब्राह्मणनुं स्व-

रुप धारण कर्युं अने ज्यां देवांगना वरुथिनी बेठी हती त्यां ते जइ पहोंच्यो तेने जोइ वरुथिनीनां नयनो कांइ प्रफुल्लित थयां अने ते कोमळ कान्ता तेनी आगळ जइ वारंवार कहेवा लागी के "हवे मारा उपर कृपादृष्टि नांखो" तमो मने तजी देशो तो निःसंशय मारो जीव जवानो. तमोने क्रियालोपनो तो स्वल्प अधर्म थशे पण मनोहर हिमगिरिनी गुफाओमां हुंथी समागम करतां मारां जीवन रक्षणनो खरेखर महान् धर्म प्राप्त थशे. द्विजराज! मारुं आयुष्य हजी कांइ अवशेष रहेलुं जणाय छे. तेथीज मारा अन्तःकरणने आह्लाद आपनारा आप फरी अहीं आवी मळ्या. आ रीते वरुथिनीनां विनोदवर्धक वचनो सांभळी कलिए कह्युं के हवे मारे शुं करवुं? अहि वधारे वखत रोकावाथी मारां नित्य कर्मोनी हानि थाय ए वात तुं पण स्वीकारे छे. आ महान् संकष्ट मारा माथे आवी पडयुं छे. परंतु जो मारुं कहेवुं कबुल राख तो हुं तारी साथे समागम करी शकुं. नहितो कांइपण थनार नथी; मारी एक वातनुं तो तारे अवश्य मान राखवुंज जोशे. वरुथिनी बोली के आप कहेशो तेम करवा हुं बंधाउं छुं. मारा उपर प्रसन्न थाओ. मने जे आज्ञा करवी होय ते निःशंक बनी कहो. कलिए कह्युं के आज संभोग वखते वनप्रदेशमां तारे मारा तरफ दृष्टि करवी नहि. जो तुं नयनो बीची राखे तो ज मारी साथे तारो संसर्ग बने. वरुथिनी बोली के—भले आपनी आज्ञा माथे चडावुं छुं, तमारी इच्छा प्रमाणे वर्तीश. वरुथिनीनां आवां वचनो श्रवण करी कलि नामनो गन्धर्व ते पर्वतना शिखरोमां, मनोरम फुलवाडीओमां, सुशोभित सरोवरोमां, रमणीय गुफाओमां, सरिताओना तट उपर तेमज बीजां अनेक रमणीय स्थान उपर ते आनंद पूर्वक रमण करवा लाग्यो. संभोग समये वरुथिनी गार्हपत्य अग्निना प्रभाव वगरने पेला ब्राह्मणनुं जे तेज हतुं तेनुं आंखो बीची ध्यान करवा लागी. केटलोक काळ वीता बाद पेला तेजस्वी ब्राह्मणनुं चिन्तवन करतो वरुथिनीने ते गन्धर्वथी गर्भ रह्यो. ब्राह्मणनुं रुप धरनार गन्धर्वे वरुथिनीने गर्भ रह्यो जाणी तेना मननुं समाधान करी जवा रजा मागी. वरुथिनीए प्रेमपूर्वक रजा आपी. जेथी ते गन्धर्व त्याथी चाल्यो गयो. ए गर्भनो अग्नि तुल्य कान्तिवाळो देदीप्यमान पुत्र जनम्यो. तेणे सूर्य समान पोतानी कान्तिथी तमाम दिशाओना प्रकाश करी मुक्यो. तेनुं नाम "स्वरोचि" पाडयुं. ते महा भाग्यशाळी बाळक द्वितीयाना चंद्र समान दिन प्रतिदिन कळाओथी वृद्धि पामवा लाग्यो.

उम्मरनी वृद्धि साथे सद्गुणोनी पण वृद्धि थवा लागी, तेने यौवन प्राप्त थयुं ते अरसामां तेणे चारे वेद, धनुर्वेद अने ते उपरांत केटलीएक विद्याओ मेळवी लीधी. एक दिवस

ए उत्तम आचरणवाळो कुमार मंदरगिरिमां अटन करतो हतो तेवामां तेणे कोइ एक भयभीत कन्याने ए पर्वतनी भुमि पर स्थित थएली जोइ. कुमारने जोइ भयभीत नेत्रवाळी ते कन्या बोली के "मारुं रक्षण करो" कुमारे तेने धैर्य आपी कह्युं के तुं शामाटे आटली बधी भयभीत बनी छे ? भय पामीश नहि. तुं कोण छे अने तारुं नाम शुं छे ? कन्या श्वास भराइ जवाने लीधे त्रुटित अक्षरे बोली के मारुं नाम मनोरमा छे, हुं इन्दीवराक्ष नामना विद्याधरनी पुत्री छुं, मरुधन्वानी पुत्री मारी माता थाय; मन्दार नामना विद्याधरनी पुत्री विभावरी तथा पार मुनिनी पुत्री कलावती ए मारी बन्ने साहेलीओनी साथे हुं उत्तमोत्तम कैलासतट तरफ जती हती, त्यां तपथी शुष्क शरीरवाळो क्षुधाथी कृष बनी गएल कंठवाळो तेज विहीन अने उंडा उतरी गएल नयनवाळो कोइ मुनि मारा जोवामां आव्यो. तेने जोइ हुं हसी तेथी तेणे सक्रोध बनी मने शाप आप्यो. दुर्बळ देहवाळा अने कलुप कंठवाळा मुनिए अधरोष्ठ फरकावी मने कह्युं के—अरे! अनार्ये! तें मारा तरफ तिरस्कार प्रदर्शक हास्य कर्युं जेथी स्वल्प समयमां राक्षस तने पराभव पमाडशे. आ सांभळी मारी बन्ने सखीओए ते मुनिनो तिरस्कार कर्यो अने बोली उठी के तारा ब्राह्मणपणाने धिक्कार छे क्रोधथी तारुं तमाम तप नष्ट थयुं. तारुं शरीर आटलुं बधु क्षीण तपथी नहि पण क्रोधथी थयुं जणाय छे; ब्राह्मणपणुं क्षमानुं स्थान छे, क्रोधने काबुमां राखवो तेनुं नामज तप, मारी सखीओनां आवां वचनो सांभळी वधारे क्रोधयुक्त बनेला ते मुनिए ए बन्नेने शाप आप्यो. एकने कह्युं के तारे शरीरे कोढ नीकळशे अने बीजीने कह्युं के तने क्षय थशे. तत्काळ ते बन्ने कन्याओने ते ते रोग लागु पडया. मारी पाछळ पण मोटो राक्षस वेगथी दोडयो आवे छे. हजी तो ते घणे दूर छे छता तेनी घोर गर्जना अहीं सुधी संभळाय छे. आजे त्रण दिवस थया छतां ए मारो केडो मुकतो नथी. हुं यथार्थ रीते तमाम अस्त्रविद्या जाणुं छुं. ते आज तमोने शिखवुं छुं. ते अस्त्रविद्याना प्रभावथी तमो राक्षसथी मने बचावो. पूर्वे ए विद्या पिनाकपाणि महादेवे स्वायंभुव मनुने अर्पण करी हती. स्वायंभुवे मुनिवर्य वशिष्टने आपी तेणे मारी माना पिता चित्रायुधने अर्पण करी अने तेणे ए अस्त्रविद्या मारा पिताने पहेरामणीमां आपी. ते विद्या में मारा पिता पासेथी बाल्यावस्थामां प्राप्त करी हती. ए तमाम अस्त्रोनां हृदयरुप शत्रुओनो विनाश करनारी विद्या हुं आजथी तमोने अर्पण करुं छुं ते स्वीकारो, अने एथी अहीं आवता दुष्ट राक्षसनो अन्त करो. स्वरोचिए आ वात कबुल राखी. जेथी मनोरमाए जळनो स्पर्श करी रहस्य अने प्रतिसंहार सहित ते अस्त्रोनो आतमा स्वरोचिने अर्पण

कर्यो. तेवामां महाभयमद आकृतिवाळो अने घोर स्वरथी गर्जना करतो राक्षस तेनी पासे वेगथी आवी पहोंच्यो; अने बोल्यो के अरे दुष्टे! माराथी पराभव पामेली तुं कोनुं रक्षण शोधे छे? स्वस्थ थइ अहीं आव. हुं तारुं भक्षण करी जाउं. विलंब तजी दे. आवां राक्षसनां वचनो सांभळी मनोरमा मुंझाणी. स्वरोचिए राक्षस आगळ आवेलो जोइ विचार कर्यो के मुनिनुं वचन असत्य न थवुं जोइए. एने भले पकडी ले. "मने बचावो मने बचावो" ए रीते दयाजनक विलाप करती ते कन्याने राक्षसे वेगथी झडपी लीधी. पछी स्वरोचिए क्रोध करी अति प्रचंड अने भयानक अस्त्र राक्षसनी नजरे मुकी एकी द्रष्टिए तेना सामुं जोयुं. ते अस्त्रथी पीडित थइ मनोरमाने मुकी दइ राक्षस केहवा लाग्यो के कृपा करी तमारां अस्त्रने शान्त करो, प्रतापी पुरुष? महा घोर शापथी तमे मने मुक्त कर्यो छे. कोइ एक तीव्र स्वभाववाळा ब्रह्म बंधुए मने आ शाप आप्यो हतो. महा कष्टतर आ शापथी तमे मने छोडाव्यो एथी हुं तमारो अति उपकार मानुंछुं. आ सांभळी स्वरोचिए पूछ्युं के तमोने महात्मा ब्रह्मबंधुए शा माटे शाप आप्यो हतो? अने केवी रीतनो शाप आप्यो हतो? राक्षसे कह्युं के-ब्रह्मबंधु अथर्वण विप्र हतो. तेणे अष्ट प्रकारना भेद सहित अने त्रयोदश अधिकार युक्त आयुर्वेदनो अभ्यास कर्यो हतो. तेमज हुं विद्याधरोना अधिपति खड्गधारी नलनाभनो पुत्र तथा आ मनोरमानो पिता इन्दीवराक्ष नामे विद्याधर हतो. ब्रह्मबंधुने समग्र आयुर्वेद शिखववा में प्रथम घणीवार नम्रतापूर्वक प्रार्थना करी छता तेणे ते विद्या मने न शीखवी. ज्यारे ए पोताना शिष्योने अभ्यास करावतो त्यारे हुं गुप्त रीते त्यां संताइ ए आयुर्वेद विद्या शीखतो. आठ मासनी अंदर समग्र विद्या में शीखी लीधी जेथी मने अति आनंद थयो. वारंवार घणुं हसवुं आवतुं. मारा हास्यथी मुनिए मने ओळखी लीधो, क्रोधथी तेना स्कंध कंपवा लाग्या. तेणे मने कह्युं के दुर्मते! राक्षसनी माफक गुप्त रीते रही तें मारा आगळथी विद्या शीखी लीधी तेमज मारी अवज्ञा करी तुं हसे छे जेथी जा दुष्ट! आजथी मानेप दहाडे मारा शापथी तुं राक्षस बनी जइश इत्यादि घणां कठोर वचनो संभळाव्यां. में नमस्कार आदि अनेक उपचारो वडे मुनिने प्रसन्न कर्या जेथी तेओनुं मन तत्काळ कोमळ थइ गयुं. तेओए फरी मने कह्युं के-गन्धर्व! मारुं वचन मिथ्या थवानुं नथी. तोपण कहुं छुं के तुं राक्षस थया पछी फरी तने तारुं पोतानुं शरीर प्राप्त थशे; ज्यारे तुं स्मृति रहित बनी क्रोधथी पोतानी संततिनुं भक्षण करवानी स्पृहावाळो राक्षस थइश त्यारे अस्त्राग्निथी परिताप पामेलो तुं फरी स्मृतिमान बनी तारा पूर्व देहने पामी गन्धर्व लोकमां तारे स्थाने जइ वसीश. प्रतापी पुरुष! ए प्रम

भयानक राक्षसपणाथी तमे मने मुक्त कर्यो माटे मारी एक प्रार्थना स्वीकारो, आ मारी पुत्री मनोरमा हुं आपने अर्पण करुंछुं तेने पत्नी तरीके ग्रहण करो. हुं ते मुनि आगळ अष्टांग आयुर्वेद शीख्यो छुं ते तमाम आपने आजथी अर्पण करुं छुं ते स्वीकारो. आ रीते पोताना पूर्व रुपने प्राप्त थएला दिव्य वस्त्रो, हार अने अलंकारना धारण करवाथी उदार कान्तिवाळा विश्वावरे कुमार स्वरोचिने विद्या समर्पी अने त्यारबाद पोतानी कन्या आपवा तत्पर थयो. त्यारे मनोरमा पूर्व रुपने प्राप्त थएला पोताना पिताने कहेवा लागी के पिता! आ भाग्यशाळी अने तेजस्वी नरने जोवा मात्रथीज अने तेओए मारा उपर करेल उपकारथी मारो तेना उपर अति अनुराग थयो छे तो पण हजी मारे लीधे मारी बन्ने साहेलीओ अति पीडा पामे छे. जेथी आ पुरुषनी साथे हुं भोग भोगववा स्पृहा राखती नथी. पुरुष पण एवा कठोर हृदय-ना नथी होता तो पछी मारा सरखी कोमळ बाळा तो कठोर हृदयनी केम ज बने ? जे रीते मारी उभय साहेलीओ आ वखते दुःख अनुभवे छे तेवीज रीते हुं पण शोकाग्निथी परिताप पामती दुःख भोगवीश. आ रीते मनोरमानां वचनो सांभळी स्वरोचिए कह्युं के सुंदरी आयुर्वेदना प्रभा-वथी तारी बन्ने साहेलीओने हुं रोगथी विमुक्त करीश माटे ए संबंधी शोक छोडी दे. आ सांभळी मनोरमानुं मन शान्त थयुं. त्यारबाद मंदर गिरिमांज गंधर्वे मनोरमाना स्वरोचि साथे विधिपूर्वक लग्न कर्या. पोतानी कन्यानां मननुं शान्त्वन करी ते गंधर्व दिव्य गतिथी पोताना नगर प्रत्ये पहों-ची गयो. स्वरोचि कृशांगी मनोरमाने संगे लइ ज्यां तेनी बन्ने साहेलीयो रोगथी पीडाती हती ते उपवनमां गयो. अने पोताना अजीत अने व्याधि विनाशक औषध तथा रसथी ते बन्ने बाळाओ-ने रोग रहित बनावी. व्याधिथी विमुक्त थएली बन्ने बाळाओए पोतपोतानी अवर्णनीय प्रभाथी पर्वतनी तमाम दिशाओने देदीप्यमान करी मूकी. व्याधिथी विमुक्त थएली विभावरी नामनी कन्या स्वरोचिने सहर्ष कहेवा लागी के प्रभु! तमे मारा उपर अति उपकार कर्यो छे. हुं तमारी दासी छुं मने आपनी पत्नी तरीके स्वीकारो. तमाम प्राणीओनी बोली सहेलाइथी समजी शकाय एवी विद्या मारी पासे छे ते आजथी हुं तमोने अर्पण करुं छुं. धर्मज्ञ स्वरोचिए आ वात कबुल राखी. त्यार बाद बीजी कलावती नामनी कन्या बोली के—वेद अने वेदांगने जाणनार मारा पिता पार नामे ब्रह्मर्षि बाळ ब्रह्मचारी हता. पूर्वे एक समये कोकिलाना शब्दोथी अति रमणीय वसंत ऋतुमां पुंजिकस्थली नामनी एक सुप्रसिद्ध अप्सरा तेना आश्रममां आवी. तेणे पोताना सौन्दर्य बळथी ते मुनिने कामातुर बनाव्यो. ए बन्नेनो संयोग थता आ गिरिराज उपर मारो

जन्म थयो. आ सर्प अने हिंसक पशुओथी व्याप्त निर्जन वनमां मने एकली मूकी मारी माता चाली गइ. प्रारब्ध योगे पोषण पामी दिन प्रतिदिन हुं म्होटी थती गइ. त्यार बाद कोइ एक उदारअन्तः गन्धर्वे मारुं पुत्रीनी पेठे पालन कर्युं अने ते पिताए मारुं "कलावती" ए प्रमाणे नाम पाड्युं. त्यार बाद कोइ एक अलि नामना प्रबळ दैत्ये मारुं सौन्दर्य जोइ ते गन्धर्व आगळ मारी याचना करी परंतु तेणे न आपी जेथी मारो पिता गन्धर्व सूता हता त्यां आवी दैत्ये तेनो संहार कर्यो, आथी मने घणो खेद थयो अने हुं मरवा सज्ज थइ. मने सत्य प्रतिज्ञावाळी जाणी शिवजीनां स्त्री सतीए धैर्य आपी मारुं आश्वासन कर्युं अने कह्युं के तुं शोक तजी दे, महा प्रतापी स्वरोचि तारो स्वामी थशे, अने तेनो पुत्र स्वारोचि मनु थशे. तमाम निधिओ तारी आज्ञामां वर्तशे अने तने इच्छा मुजब धन प्राप्त थशे. तारा उपर प्रसन्न थइ हुं तने महापद्मे पूजेली पद्मिनी नामे विद्या आपुं छुं. आ रीते सत्य शीळ-वाळां दक्षपुत्री सतीए मारुं भविष्य संभळाव्युं. सतीनां वचनो कदी व्यर्थ थायज नहिं. तमे स्वरोचि छो अने मने व्याधिथी विमुक्त करी प्राणदान दीधुं छे तो हुं आजथी मारुं शरीर तथा विद्या आपने समर्पु छुं ते प्रसन्न थइ स्वीकारो. आ रीते स्वरोचिए विभावरी तथा कलावतीनो पोता प्रत्ये अपूर्व प्रेम जोइ ते बन्ने बाळाओ साथे पोते परण्या. त्यारबाद देव सरखी द्युतिवाळो ते स्वरोचि पोतानी सुंदर त्रणे स्त्रीओने साथे लइ मनोहर उपवन अने झरणवाळा गिरिराज उपर क्रीडा करवा लाग्या. पद्मिनी विद्याना प्रभावथी सदा वश वर्तनार निधिओ तमाम उपभोगने अनु-कूळ रत्नो, मिष्ट मधु, वस्त्र, अलंकार, सुगन्धि लेप, अति उज्वळ सुवर्णना आसनो, शय्या विगेरे महात्मा स्वरोचिनी इच्छा मुजब हाजर करवा लागी. स्वरोचि तथा तेनी त्रणे स्त्रीओ स्वर्गनी माफक ते गिरिराज उपर परस्पर क्रीडा करी परमानंद पामवा लाग्यां. एक समये कोइएक राजहंसी तेना तथा तेनी स्त्रीओना सुख दायक संबंधमां प्रेम लावी जळमां स्थित थएली चक्रवाकीने स्वरोचिने उद्देशीने कहेवा लागी के, आ पुरुष महा पुण्यशाळी अने धन्य छे. कारणके नवयौवन पामी पोतानी प्रियतमाओनी संगे यथेच्छ विहार करे छे. पृथ्वीमां युवान अने प्रशंसनीय अनेक पुरुषो छे पण तेनी पत्नीओ एटली बधी सुंदर होती नथी. अति सुंदर पति पत्नीओना जोडा विश्वमां विरल छे. कोइ पुरुषनो स्त्री उपर अति स्नेह होय छे अने कोइ प्रमदानो पोताना पति उपर अति प्रेम होय छे, परंतु परस्पर समान स्नेहवाळां दंपति भाग्यनिमां पण थोडा छे. आ पुरुष पोतानी प्रिय-तमाओने बहुज प्रिय छे अने तेनो पण पोतानी स्त्री उपर अपूर्व प्रेम छे माटे एने सौन्दर्य

धन्यवाद घटे छे. परस्पर प्रेम तो कोइ श्रेष्ठ प्रारब्धवाळाओनेज थाय छे. आ रीते राजहंसीनां वचन सांभळी विस्मय पामेली चक्रवाकी बोली के—ए धन्य शानो ? कारण के एनुं मन ज्यारे एक स्त्री तरफ खेंचाय छे ते वखते ते अन्य स्त्रीनो उपभोग करे छे परंतु ए वातनी एने शरम छेज नहि. एकी वखते एनुं मन तमाम स्त्रीओ उपर आकर्षाय ए असंभवित छे. सखि ! अन्तःकरणनो अनुराग एक स्थळमांज रही शके छे, माटे एने बधी नारीओ उपर समान स्नेहवाळो शी रीते कही शकाय ? ए स्त्रीओ एनी प्रियतमाओ नथी अने ए पोते स्त्रीओनो प्रियतम नथी. एतो अन्य गृहसेवक आदिनी माफक आनंद मात्र छे. जो स्त्रीओने ए पुरुष प्रियतम होय तो जे समये एक स्त्रीओना उपर अनुराग बतावे छे त्यारे ते बीजी स्त्रीने आलिंगे छे तो पेली स्त्री प्राणत्याग शामाटे नथी करती ? एतो विद्यारुपी मूल्यथी खरीदेला नोकर माफक वर्तन करी रह्यो छे. घणी नारीओ उपर पुरुषनो एकी वखते समान स्नेह होइ शकेज नहि. राजहंसि ! मारा स्वामीने अने मने धन्य छे के जेनां मन अन्योन्य स्थिर थइ रहेलां छे. प्राणी मात्रनी भाषाने पिछाणनार स्वरोचिए राजहंसीनो अने चक्रवाकीनो आ रीते संवाद सांभळी सर्व सत्य गणी पोते शरमाणो. मंदरगिरिमा विहार करतां एकसो वर्ष व्यतीत थयां. त्यारबाद एक वखते पोतानी प्रियतमाओ साथे रमण करता ए राजाए पोताना मुख पासे एक स्निग्ध अने सुशोभित अवयववाळा, मृगीना समूहमां विहार करता मृगने जोयो. ते वखते नासिकाना अग्र भागने खेंची खेंची सुघती मृगीओने मृगे कह्युं के—तमो आम बेशरम शामाटे बनो छो ? चाली जाओ, हुं स्वरोचि समान आचरणवाळो नथी, जे एवा निर्लज होय तेनी पासे जाओ; एक स्त्रीनी पाछळ लागेला अनेक पुरुषो जेम दुनीयामां हास्यने पात्र थाय छे तेम अनेक अबळाओए काम दृष्टिथी जोवातो पुरुष पण हांसीने पात्र थाय छे. दिन प्रतिदिन तेनी धर्म क्रियाओनी हानि थाय छे अने ते पुरुष एक रमणीनी साथे रमण करतो बीजी स्त्रीओ उपर पण कामथी आसक्त रहे छे. पारलौकिक पंथथी विमुख गति करनार स्वरोचि जेवा आचरणवाळो होय तेनी इच्छा करो, हुं स्वरोचि नथी. आ रीते कहीं मृगे हरिणीओने रजा आपी. स्वरोचि आ सर्व वात सांभळतो हतो, तेने पोताने पतित समान गण्यो. चक्रवाकी अने मृगे निन्देलो स्वरोचि ते त्रणे स्त्रीओने तजी देवानो विचार करवा लाग्यो; परंतु पुनः प्रमदाओना परिचयमां आव्यो जेथी कामनी वृद्धि थइ, ते वैराग्य वार्ता वीसरी गयो अने पोतानी पत्नीओ साथे आनंद करवा अनुरक्त थयो. आमने आम बीजां छसो वर्ष वीती गयां, परंतु उदार मतिवाळा स्वरोचिए पोतानां धर्म कर्मोने बाध न आवे एवी रीते तेओनी साथे रमण कर्युं.

स्वरोचिथी मनोरमाने विजय, विभावरीने मेरुनंद अने कलावतीने प्रभाव नामे पुत्र थयो. स्वरोचिए पद्मिनी विद्याना प्रभावथी पोताना त्रणे पुत्रोने माटे त्रण नगरो निर्मित्त कर्या. सहुथी म्होटेरा पुत्र विजयने पूर्व दिशामां कामरुप गिरि माथे विजय नामनुं नगर बांधी आप्युं, बीजा पुत्र मेरुनंद माटे उत्तर दिशामां उन्नत किल्ला तेमज बुरज अने माळवाळी नंदवती नामे नगरी तैयार करावी आपी. तेमज त्रीजा पुत्र प्रभावने अर्थे दक्षिण दिशामां ताल नामनुं नगर निर्मित कर्युं. ए रीते त्रणे पुत्रो माटे त्रण नगर निर्मित करी पोते अनुपम अने सुंदर स्थानोमां मनोरमा आदि मानिनीओनी साथे विहार करवा लाग्यो. एक समये ते स्वरोचि धनुष्य बाण धारण करी अरण्यमां मृगया करवा गयो. त्यां तेणे घणे दूर एक वराहने विलोकी धनुष्य खेंच्युं, तेवामां तेनी पासे एक हरिणी आवी वारंवार कहेवा लागी के-मारा उपर कृपा करो अने ए बाण मारा उपरज नांखो. वराहनो विनाश करवाथी तमारुं कार्य सिद्ध थवानुं नथी. मारा उपर बाण मारी मने संकष्टथी मुक्त करो. आ सांभळी स्वरोचि बोलयो के तुं पीडित जणाती नथी. छतां प्राण त्याग करवा शामाटे इच्छे छे? मृगीए कयुं के अन्य स्त्रीओमां आसक्त थएला पुरुष उपर मारो अनुराग थयो छे. जेथी आ वखते मृत्यु विना अन्य औषध करवा मारो इरादो नथी. स्वरोचिए कयुं के भीरु! तारा उपर कोण प्रीति न करे? तारो कोना उपर अनुराग थयो छे. के जेनी अप्राप्तिथी तुं प्राण तजवा तत्पर थइ छे? मृगीए कयुं आपनुं श्रेय थाओ. हुं आपनीज अभिलाषा राखुं छुं, तमे ज मारुं मन हरी लीधुं छे एथी ज हुं मरवा तत्पर थइ छुं, मारा उपर शरनो प्रहार करो. आ सांभळी स्वरोचिए कयुं के-हरिणि! तुं मृग जाति अने हुं पुरुष, तारी साथे हुं सरखानो योग शी रीते बने? मृगीए कयुं के जो तमारो मारा उपर प्रेम होय तो मने आलिंगनमां लीओ, नहि तो मारो विनाश करो. स्वरोचिए दया लावी आलिंगन कर्युं के तुरत ते हरिणी मटी दिव्य देहवाळी सुंदरी बनी गइ. स्वरोचिए विस्मय पामी तुं कोण छे? एम पूछ्युं. सुंदरी बोली के-हुं वन देवता छुं; तमो मारा विषे मनुनी उत्पत्ति करो, देवोए मारा पासे प्रार्थना करी ए माग्युं छे; हुं तमारा उपर प्रेमासक्त बनी छुं; मारे विषे पृथ्वीनुं पालन करनार मनुने पेदा करो. तुरतज स्वरोचिए ते सुन्दरीने विषे सर्वोत्तम लक्षणोथी संयुक्त अने पोता समान कान्तिवाळा पुत्रने उत्पन्न कर्यो. ते बाळकनो जन्म थतांज देवनां वाजां वागवा लाग्या, गन्धर्वो गायन करवा लाग्या, अप्सराओ नृत्य करवा लागी अने तपोधन ऋषिओ तथा देवगण चोतरफथी पुष्पवृष्टि करवा लाग्या. तेनुं तेज जोइ स्वरोचिए ते बाळकनुं "द्युतिमान" एवुं नाम पाड्युं. कारण के तेना तेजथी दिशाओ देदीप्यमान बनी रही हती. ए स्वरोचिनो महा बळवान् द्युतिमान् नामनो पुत्र स्वारोचिष कहेवायो.

धन्यवाद घटे छे. परस्पर प्रेम तो कोइ श्रेष्ठ प्रारब्धवाळाओनेज थाय छे. आ रीते राजहंसीनां वचन सांभळी विस्मय पामेली चक्रवाकी बोली के–ए धन्य शानो ? कारण के एनुं मन ज्यारे एक स्त्री तरफ खेंचाय छे ते वखते ते अन्य स्त्रीनो उपभोग करे छे परंतु ए वातनी एने शरम छेज नहि. एकी वखते एनुं मन तमाम स्त्रीओ उपर आकर्षाय ए असंभवित छे. सखि ! अन्तःकरणनो अनुराग एक स्थळमांज रही शके छे, माटे एने बधी नारीओ उपर समान स्नेहवाळो शी रीते कही शकाय ? ए स्त्रीओ एनी प्रियतमाओ नथी अने ए पोते स्त्रीओनो प्रियतम नथी. एतो अन्य गृहसेवक आदिनी माफक आनंद मात्र छे. जो स्त्रीओने ए पुरुष प्रियतम होय तो जे समये एक स्त्रीओना उपर अनुराग वतावे छे त्यारे ते बीजी स्त्रीने आलिंगे छे तो पेली स्त्री प्राणत्याग शामाटे नथी करती ? एतो विद्यारुपी मूल्यथी खरीदेला नोकर माफक वर्तन करी रह्यो छे. घणी नारीओ उपर पुरुषनो एकी वखते समान स्नेह होइ शकेज नहि. राजहंसि ! मारा स्वामीने अने मने धन्य छे के जेनां मन अन्योन्य स्थिर थइ रहेलां छे. प्राणी मात्रनी भाषाने पिछाणनार स्वरोचिए राजहंसीनो अने चक्रवाकीनो आ रीते संवाद सांभळी सर्व सत्य गणी पोते शरमाणो. मंदरगिरिमां विहार करतां एकसो वर्ष व्यतीत थयां. त्यारबाद एक वखते पोतानी प्रियतमाओ साथे रमण करता ए राजाए पोताना मुख पासे एक स्निग्ध अने सुशोभित अवयववाळा, मृगीना समूहमां विहार करता मृगने जोयो. ते वखते नासिकाना अग्र भागने खेंची खेंची सुंघती मृगीओने मृगे कह्युं के–तमो आम बेशरम शामाटे बनो छो ? चाली जाओ, हुं स्वरोचि समान आचरणवाळो नथी, जे एवा निर्लज होय तेनी पासे जाओ; एक स्त्रीनी पाछळ लागेला अनेक पुरुषो जेम दुनीयामां हास्यने पात्र थाय छे तेम अनेक अबळाओए काम दृष्टिथी जोवातो पुरुष पण हांसीने पात्र थाय छे. दिन प्रतिदिन तेनी धर्म क्रियाओनी हानि थाय छे अने ते पुरुष एक रमणीनी साथे रमण करतो बीजी स्त्रीओ उपर पण कामथी आसक्त रहे छे. पारलौकिक पंथथी विमुख गति करनार स्वरोचि जेवा आचरणवाळो होय तेनी इच्छा करो, हुं स्वरोचि नथी. आ रीते कहीं मृगे हरिणीओने रजा आपी. स्वरोचि आ सर्व वात सांभळतो हतो, तेने पोताने पतित समान गण्यो. चक्रवाकी अने मृगे निन्देलो स्वरोचि ते त्रणे स्त्रीओने तजी देवानो विचार करवा लाग्यो; परंतु पुनः प्रमदाओना परिचयमां आव्यो जेथी कामनी वृद्धि थइ, ते वैराग्य वार्ता वीसरी गयो अने पोतानी पत्नीओ साथे आनंद करवा अनुरक्त थयो. आमने आम बीजां छसो वर्ष वीती गयां, परंतु उदार मतिवाळा स्वरोचिए पोतानां धर्म कर्मोने बाध न आवे एवी रीते तेओनी साथे रमण कर्युं.

स्वरोचिथी मनोरमाने विजय, विभावरीने मेरुनंद अने कलावतीने प्रभाव नामे पुत्र थयो. स्वरोचिए पद्मिनी विद्याना प्रभावथी पोताना त्रणे पुत्रोने माटे त्रण नगरो निर्मित्त कर्या. सहुथी म्होटेरा पुत्र विजयने पूर्व दिशामां कामरुप गिरि माथे विजय नामनुं नगर बांधी आप्युं, बीजा पुत्र मेरुनंद माटे उत्तर दिशामां उन्नत किल्ला तेमज बुरज अने माळवाळी नंदवती नामे नगरी तैयार करावी आपी. तेमज त्रीजा पुत्र प्रभावने अर्थे दक्षिण दिशामां ताल नामनुं नगर निर्मित कर्युं. ए रीते त्रणे पुत्रो माटे त्रण नगर निर्मित करी पोते अनुपम अने सुंदर स्थानोमां मनोरमा आदि मानिनीओनी साथे विहार करवा लाग्यो. एक समये ते स्वरोचि धनुष्य बाण धारण करी अरण्यमां मृगया करवा गयो. त्यां तेणे त्रणे दूर एक वराहने विलोकी धनुष्य खेंच्युं, तेवामां तेनी पासे एक हरिणी आवी वारंवार कहेवा लागी के--मारा उपर कृपा करो अने ए बाण मारा उपरज नांखो. वराहनो विनाश करवाथी तमारुं कार्य सिद्ध थवानुं नथी. मारा उपर बाण मारी मने संकष्टथी मुक्त करो. आ सांभळी स्वरोचि बोल्यो के तुं पीडित जणाती नथी. छतां प्राण त्याग करवा शामाटे इच्छे छे? मृगीए कह्युं के अन्य स्त्रीओमां आसक्त थएला पुरुष उपर मारो अनुराग थयो छे. जेथी आ वखते मृत्यु विना अन्य औषध करवा मारो इरादो नथी. स्वरोचिए कह्युं के भीरु! तारा उपर कोण प्रीति न करे? तारो कोना उपर अनुराग थयो छे. के जेनी अप्राप्तिथी तुं प्राण तजवा तत्पर थइ छे? मृगीए कह्युं आपनुं श्रेय थाओ. हुं आपनीज अभिलाषा राखुं छुं, तमे ज मारुं मन हरी लीधुं छे एथी ज हुं मरवा तत्पर थइ छुं, मारा उपर शरनो प्रहार करो. आ सांभळी स्वरोचिए कह्युं के–हरिणि! तुं मृग जाति अने हुं पुरुष, तारी साथे हुं सरखानो योग शी रीते बने? मृगीए कह्युं के जो तमारो मारा उपर प्रेम होय तो मने आलिंगनमां लीओ, नहि तो मारो विनाश करो. स्वरोचिए दया लावी आलिंगन कर्युं के तुरत ते हरिणी मटी दिव्य देहवाळी सुंदरी बनी गइ. स्वरोचिए विस्मय पामी तुं कोण छे? एम पूछ्युं. सुंदरी बोली के–हुं वन देवता छुं; तमो मारा विषे मनुनी उत्पत्ति करो, देवोए मारा पासे प्रार्थना करी ए माग्युं छे; हुं तमारा उपर प्रेमासक्त बनी छुं; मारे विषे पृथ्वीनुं पालन करनार मनुने पेदा करो. तुरतज स्वरोचिए ते सुन्दरीने विषे सर्वोत्तम लक्षणोथी संयुक्त अने पोता समान कान्तिवाळा पुत्रने उत्पन्न कर्यो. ते बाळकनो जन्म थतांज देवनां वाद्यो वागवा लाग्यां, गन्धर्वो गायन करवा लाग्या, अप्सराओ नृत्य करवा लागी अने तपोधन ऋषिओ तथा देवगण चोतरफथी पुष्पवृष्टि करवा लाग्या. तेनुं तेज जोइ स्वरोचिए ते बाळकनुं "द्युतिमान" एवुं नाम पाड्युं. कारण के तेना तेजथी दिशाओ देदीप्यमान बनी रही हती. ए स्वरोचिनो महा बळवान् द्युतिमान् नामनो पुत्र स्वारोचिष कहेवायो.

एक समये स्वरोचि कोइ एक कमनीय गिरिना झरण पासे विचरतो हतो ते समये तेणे ए जगो उपर एक हंसने तेनी हृदयवल्लभा समेत जोयो. वारंवार काम क्रीडानी इच्छा प्रदर्शित करती हंसीने हंसे कह्युं के—हवे तारा मनने तुं शान्त कर, घणा दिवस में तारी साथे भोग भोगव्या. सदा काळ भोग भोगववाथी कोइनुं कल्याण थतुं नथी. हवे आपणी छेल्ली अवस्था निकट आवी छे. आ वखत आपणे वन्नेए संसारनो त्याग करवानो छे. आ सांभळी हंसी बोली के भोग भोगववाने क्यो काळ अयोग्य छे ? अखिल जगत् भोगथी भरपूर छे; जीतेन्द्रिय जनो पण भोगनी प्राप्ति अर्थे यज्ञयागादि कर्म करे छे. ज्ञात तेमज अज्ञात भोग भोगववानी अभिलाषावाळा विवेकी जनो दान दिए छे. भोग ए विवेकी जनो तेमज तिर्यक् जातिना प्राणीओनुं अभिष्ट फळ छे. तो पछी जेने आत्मानी गम नथी एवां अन्य प्राणीओने इष्ट होय एमां नवाइ शी ? आ सांभळी हंस बोल्यो के भोगमां आसक्त चित्तवाळां तेमज बांधवोना स्नेह सूत्रमां गुंथाएल हृदयवाळां प्राणीओनी वृत्ति परमात्मामां लागती नथी. तळावना पंक रुप पयोधिमां डूबेला वनना वृद्ध हस्ति समान विचारां प्राणीओ पुत्र, मित्र अने अंगना आदिमां आसक्त थइ पीडा पामे छे. भद्रे ! आ स्वरोचिने तुं नथी भाळती ? ए बाळपणथीज काममां निमग्न थइ रह्यो छे. स्नेह जळना पंकमां घुंची गयो छे; जेवुं युवावस्थामां स्वरोचितुं मन स्त्रीओमां आसक्त हतुं तेवुंज हाल पुत्रपौत्रादिकमां निमग्न थयुं छे, अरे रे ! ए शी रीते मुक्त थशे ? हुं स्वरोचि पेठे स्त्रीवश नथी बन्यो. हवे हुं भोगथी निवृत्ति पाम्यो छुं. आ रीते हंसनां वचनो श्रवण करी उद्वेग पामेला स्वरोचिए पोतानी स्त्रीओ सहित अन्य तपोवनमां जइ महा तीव्र तप कर्युं अने तमाम पापनो विनाश थवाथी तेने उत्तम लोकनी प्राप्ति थइ. त्यार बाद स्वरोचिना पुत्र द्युतिमानने समर्थ प्रजापतिए मनु बनाव्यो. ते स्वरोचि मनुना वखतमां पारावत अने तुषिता नामे देवो तथा विपश्चित नामे सुप्रसिद्ध इन्द्र अने ऊर्ज स्तंब, प्राण, दत्त, अलि ऋषभ, निश्चर अने अर्ववीर नामे सप्तर्षिओ हता.

उत्तानपादने सुरुचि नामनी स्त्रीथी महा पराक्रमी, धर्मात्मा, उदार अन्तःकरणवाळो, सर्वथी श्रेष्ठ, सूर्य सरखो प्रतापवान उत्तम नामे पुत्र थयो हतो, ते धर्मज्ञ राजा शत्रु अने मित्र उपर तथा पुत्र अने अन्य जनो उपर समान स्नेह राखतो हतो, ते दुष्टोने यम तुल्य अने सज्जनोने चन्द्र समान हतो; इन्द्र जेवो उत्तम अने धर्मधुरंधर उत्तानपादनो पुत्र इन्द्राणी जेवी बभ्रुनी पुत्री बहुला साथे परण्यो हतो. जेवो चन्द्रनो प्रेम रोहिणी साथे हतो तेवोज प्रेम उत्तम बहुला साथे राखतो. एनुं मन कोइ दिव-

स अन्य वस्तु उपर अनुरागतुं नहि, स्वप्नमां पण उत्तमना अन्तःकरणमां बहुलाज रमी रही हती. ए सुंदरीने जोतांज ते आलिंगन करतो अने अंगसंग थतां तद्रुप बनी जतो. ते स्त्रीनां कर्णकटु वचनो पण उत्तमने अति प्रिय लागतां हतां, बहुलाए आपेल तिरस्कार ते मानरुप समजतो हतो. उत्तम कांइ वस्त्रालंकार आपतो तेने बहुला दूर नांखी देती हती. राजा चुंबन करतो ते पण पीडा रुप प्रमाणती हती; जमवा टाणे उत्तम घडिवार तेणीना कर पकडी राखतो त्यारे ते उदासीन मुद्राए थोडुं भोजन करती हती. आ रीते अनुकूळ राजाने पत्नी तद्दन प्रतिकूळ हती छतां उत्तम तेनापर अति प्रीति राखतो. एक समये अनेक खंडीआ राजाओनी सभा भरी पोते बेठो हतो, नायिकाओ नृत्य करती हती अने गान विद्यामां परम प्रविण गायको गायन करता हता तेवामां उत्तमे जरा मद्यपान करी ते मद्यवाळुं पात्र पकडवा पोतानी प्रमदा बहुलाने आदरथी कह्युं. परंतु तेणीए अवळे मुखे फरी ते पात्र करमां ग्रहण कर्युं नहि. अनेक राजाओनी सन्मुख पोतानो आ रीते अनादर थयो जाणी उत्तमने अति क्रोध उपज्यो; अने पोतानी पत्निए अप्रियताथी अवगणना कराएलो ते महा झेरी नागनी माफक निश्वास नांखी द्वारपाळने बोलावी आज्ञा करवा लाग्यो के—आ दुष्ट दिलवाळी दासीने दूर लइ जा. अने वगर विलंबे कांइ पण विचार नहि करतां निर्जन वनमां मुकी आव. महिपालनी आज्ञा माथे चडावी बहुलाने रथमां बेसाडी द्वारपाळ मनुष्य रहित जंगलमां मुकी आव्यो, बहुला आथी घणीज खुशी थइ. अने जाणे पतिए पोता उपर अनुग्रह कर्यो होय एम मान्युं, परन्तु उत्तमना अन्तःकरणमां प्रेम पीडाथी असह्य दाह थवा लाग्यो. एणे बीजी स्त्री न करी. प्रजानुं यथाविधि पालन करी राज्य करतां ते निरंतर अस्वस्थ चित्ते पोतानी प्रमदा बहुलाने याद कर्या करतो हतो.

एक वखते महा दुःख पामेलो कोइ एक ब्राह्मण उत्तम राजा पासे आव्यो अने केहेवा लाग्यो के—नरपाल! हुं महान् संकटमां आवी पड्यो छुं, मारुं रक्षण करो. आश्रितने अभय आपवुं ए राजानुं काम छे, हुं रात्रिए निद्रावश थएल हतो त्यारे मारा गृहनुं द्वार उघड्यां विना मारी स्त्रीनुं कोइ हरण करी गयुं छे. तो ते स्त्रीने शोधी आपो. राजाए कह्युं के—कोण अने क्यां लइ गयुं ए जाण्या सिवाय हुं कोने पकडुं? अने तारी स्त्रीने शी रीते शोधी आपुं ? ब्राह्मण बोल्यो के महाराज! मारा गृहनुं द्वार बंध हतुं अने हुं उंघी गयो हतो जेथी मारी स्त्रीने कोण उपाडी गयुं ते मारा जाणवामां शी रीते होय ? तमे अमारुं रक्षण करो छो तेने बदले अमे तमने अमारा धर्मनो

छठ्ठो हिस्सो अर्पण करीए छीए. तमो रक्षक छो एथीज सर्व कोइ रात्रिए निश्चिन्त बनी उंघी जाय छे. आ सांभळी राजाए कह्युं के, तारी स्त्रीने में कोइ दिवस भाळी नथी. माटे तेनी आकृति अवयवो, उम्मर अने आचरण आदि कही संभळाव. ब्राह्मणे कह्युं के ते कदमां उंची छे, कदरुपी, कठोर नयनवाळी, टुंका हाथवाळी अने पातळां मुखवाळी छे, तेना आचरण उत्तम नथी, वाणी पण कठोर छे छतां हुं तेने निन्दतो नथी. तेनुं रुप जोनारने अरुचि उत्पन्न करे एवुं छे तेनी प्रथम अवस्था वीती गइ छे. आ सांभळी राजाए कह्युं के ए नारीनी चिन्ता तजी दे. तने बीजी स्त्री आपुं. कारणके सारी स्त्री सुखदायक बने छे; परन्तु आवी स्त्री तो दुःखरुपज होय छे. सुखनो हेतु स्त्रीनुं सौन्दर्य नथी पण उत्तम शील छे. रुप अने शीलविहीन स्त्रीनो त्याग करवो उचित छे. ब्राह्मण बोल्यो के राजन्! स्त्री गमे तेवी होय तो पण तेनुं रक्षण करवुं, स्त्रीना रक्षणथी प्रजानुं रक्षण थाय छे, पत्नीने विषे पति पोत ज जन्मे छे माटे तेनुं यत्न पूर्वक रक्षण करवुं जोइए. प्रजानुं रक्षण ए पोतानुंज रक्षण छे. अने एमां उपेक्षा राखवाथी प्रजा वर्णसंकर थाय छे, एम में श्रेष्ठ पुरुषोना मुखथी सांभळ्युं छे. वर्णसंकर बनेली प्रजा पोताना पूर्वज पितृओने स्वर्गे जतां अवरोध करे छे, स्त्री विना नित्यकर्मोनो लोप थवाथी मने दिन प्रतिदिन धर्मनी हानि थाय छे. आ कारणथी मने ब्राह्मणपणाथी भ्रष्ट थवानो भय रहे छे. मारी ए स्त्रीथी जे प्रजा उत्पन्न थशे. ते धर्म साधना करी आपने छठ्ठो भाग आपशे. प्रजानुं रक्षण करवा माटे ज भगवान् प्रजापतिए तमोने राजा बनाव्या छे माटे गमे तेम करी चोराइ गएली मारी स्त्रीने शोधी आपो, तमे सर्व वाते समर्थ छो. आ रीते ब्राह्मणना वचनो श्रवण करी राजाए घणो विचार कर्यो, तुरतज तमाम साहित्यो सहित उत्तम रथ तैयार करावी तेमां बेसी पृथ्वीमां चोतरफ तपास करवा लाग्यो. त्यां अरण्यमां कोइ एक तपस्वीनुं मनोहर आश्रम तेना जोवामां आव्युं. राजा उत्तम तुरतज रथ उपरथी उतरी ते आश्रममां दाखल थयो. त्यां तेणे द्युतिथी दीप्यमान दर्भासन उपर विराजेला मुनिराजने देख्या. राजा उत्तमना आगमनथी प्रसन्न थइ मुनिए "स्वागतम्" ए रीते उच्चार करी आसनथी उठी, योग्य आगता स्वागता करी पोताना शिष्यने अर्घ्य लाववा आज्ञा आपी. शिष्ये धीमेथी गुरुने कह्युं के—महाराज! एने शुं अर्घ देवो छे? विचारी आज्ञा करो. आज्ञा मुजब वर्तवा तैयार छुं. आत्मज्ञ मुनिए राजानुं वृत्तांत जाणी लीधुं अने आसन आपी सारी रीते तेनुं सन्मान करी मुनि बोल्या के राजन्! शा कारणथी आपनुं पधारवुं थयुं? आपना अन्तःकरणमां कयुं कार्य करवानी इच्छा छे? आप उत्तानपादना पुत्र उत्तम अत्युत्तम छो ए अमारा जाणवामां छे.

बाद राजा बोल्यो के—ऋषिराज! एक विप्रना घरमांथी तेनी स्त्रीने कोइ उपाडी गयुं छे. उपाडी जनार कोण छे ए हजी सुधी खबर पडी नथी, हुं तेनी शोध अर्थे अहीं आवेल छुं. हवे हुं आपने प्रणाम करी एक वात पुछवा धारुं छुं ते कृपा करी कहेशो? ऋषिए कह्युं के—राजन्! तमारे जे प्रश्न करवुं होय ते खुशीथी करो, जो कहेवा लायक हशे तो खरेखरुं कही आपीश. राजाए कह्युं के ऋषिराज! हुं आपना आश्रममां आव्यो ते वखते आपे जे मारे माटे अर्घ तैयार करवा आपना शिष्यने आज्ञा आपी ते पाछो बंध शामाटे राख्यो? त्यारे ऋषिए जवाब आप्यो के—राजन्! तमोने जोतांज में उतावळथी मारा शिष्यने अर्घ तैयार करवा आज्ञा आपी त्यारे तेणे मने बोध कर्यो. मारी कृपाथी ते भूत, भविष्य अने वर्तमाननी वातो जाणवा समर्थ थयो छे. एणे मने कह्युं के—गुरु! विचारीने आज्ञा करो, एटलामां में पण तमाम वृत्तांत जाणी लीधुं. जेथी तमोने विधि पूर्वक अर्घ न आप्यो. स्वायंभुवना पवित्र कुळमां उत्पन्न थएला तमो अर्घने पात्र छो तोपण अमो तमोने अर्घ पात्र गणतां नथी. आ सांभळी राजाए पूछयुं महात्मन्! मे भूलथी अथवा बुद्धि-पूर्वक एवुं शुं दुष्कर्म कर्युं छे के हुं घणे काळे आपने त्यां अतिथि बनी आव्यो छतां अर्घने योग्य न थयो? ऋषिए जवाब आप्यो के—ज्यारथी तमोए तमारी स्त्रीने वनमां काढी मुकी छे, त्यारथीज तमो धर्मभ्रष्ट थया छो, जे मनुष्य मात्र पंदर दिवसज नित्य कर्म न करे तेनो स्पर्श करवो उचित नथी. तो पछी तमारे तो एक वर्ष थयां नित्यकर्मनी हानि थाय छे; तमोने वधारे शुं कहेवुं? जेम गमे तेवा आचरणवाळा पुरुषनी शुद्ध मनथी सेवा करवी ए स्त्रीनो धर्म छे तेम पतिए पण गमे तेवा दुष्ट आचरणवाळी स्त्री होय तेनुं पोषण करवुं जोइए. राजन्! तमे कहो छो ते विप्रनी स्त्री तेनाथी विमुख वर्ते छे छतां तेने कोइ उपाडी जवाथी धर्ममां अवरोध आवशे ए भयथी तेणे तमारा पासे प्रार्थना करी. आ रीतें अधर्म राहे चालतां अन्य जनोने अटकावी धर्म मार्गे प्रवर्ताववा तमो प्रयत्न करो छो. परंतु तमेज ज्यारे धर्मथी विमुख थशो; त्यारे तमने कोण कहेवा आवशे? ऋषिराजनां आवां वचनो ध्यान पूर्वक सांभळी उत्तम राजाए पोतानी तमाम भूल कबूल करी अने नम्रता पूर्वक कह्युं के महात्मन्! आप त्रिकालदर्शी छो तो ते ब्राह्मणनी स्त्रीने कोण उठावी गयुं छे अने ते हाल क्यां छे ते कृपा करी कहेशो. ऋषिए कह्युं—के अद्रिनो पुत्र बलाक नामनो राक्षस तेने उपाडी गयो छे अने ते उत्पलावन वनमां छे, त्यां जवाथी तमने तमाम वात जाणवामां आवशे; जल्दी जइ ए उत्तम ब्राह्मणनी स्त्रीने छोडावी तेने सोंपी दिओ; के जेथी तमारी पेठे दिनप्रतिदिन ए विचारो धर्मभ्रष्ट न थाय. राजा तुरतज ऋषिराजने प्रणाम करी रथमां बेसी उत्पला-

वनमां पहोंच्यो. त्यां तेणे पेला ब्राह्मणे वर्णवेल आकृतिवाळी बीलां खाती ब्राह्मणीने जोड पूछ्युं के–कल्याणि तुं विप्रवर्य विशालना पुत्र सुशर्मानी पत्नी छतां आ वनमां शा कारणथी आवी छे ? ब्राह्मणी बोली के–अतिरात्र नामे वनवासी विप्रनी हुं पुत्री छुं अने विशालना पुत्रनी पत्नी छुं, हुं घरमां उंघी गइ हती त्यांथी वलाक नामनो दैत्य मने अहीं उपाडी लाव्यो छे. मारा बन्धु तथा माता विगेरेनो वियोग पडावनार ए पापीनो नाश थजो. स्नेही वर्गथी वियोग पामेली हुं अहीं एकली अतिशय दुःख अनुभवुं छुं. आ विकट वनमां ए राक्षस मने शा माटे लाव्यो छे ए हुं हजी समजी शकी नथी. ए राक्षस मने खाइ जवा के भोगववा इच्छा जणावतो नथी. आ रीतें ब्राह्मणीनां वचन सांभळी राजाए कह्युं के--तारा पतिए मने आंही मोकल्यो छे तने मुकी ए राक्षस क्यां गयो ए तुं जाणे छे ? ब्राह्मणी बोली के ए दैत्य आ वनमांज वसे छे; जो तमने तेनो भय न लागतो होय तो जइ तपास करो. बाद ब्राह्मणीए बतावेल मार्गे राजा चाली नीकळ्यो, थोडे दूर जतां तेणे सपरिवार राक्षसने त्यां बेठेलो जोयो. ते राक्षस पण दूरथी राजाने आवतो जोइ सत्वर मस्तक नमावी प्रणाम करतो तेना चरण नजीक आवी बोल्यो के--महाराज ! आपे मारा उपर महान अनुग्रह करी आपना पवित्र चरणारविन्दथी मारुं ग्रह पावन कर्युं, हुं आपना देशमां वसुं छुं तो मने शी आज्ञा करो छो ? मारा तरफथी आ अर्घ्य स्वीकारो, आ आपना माटे आसन तैयार छे, बे घडि विराजो; आप अमारा स्वामी अने अमो आपना सेवक छीए, इच्छा मुजब आज्ञा करो. राजाए कह्युं के–ए तो बधुं ते आतिथ्य कर्युं, परंतु विप्र सुशर्मानी स्त्रीने तुं शा माटे अहीं उठावी लाव्यो छे, जो तुं तेने पत्नी बनाववा लाव्यो हो तो ते कदरुपी छे, तेम तारे बीजी घणी स्त्रीओ छे अने जो तुं तेने खाइ जवा माटेज लाव्यो हो तो तेने खाइ केम न गयो ? आ सांभळी राक्षस बोल्यो के राजन् ! अमे मनुष्यनुं भक्षण करता नथी. ए तो अन्य असुरोनुं काम छे, अमो तो केवळ सुकृतना फळर्थीज अमारुं गुजरान चलावीए छीए. मनुष्य तथा प्रिय अप्रिय स्त्रीओना स्वभावनो फेरफार करी अमो तृप्ति पामीए छीए. अमे प्राणीनुं भक्षण करता नथी. अमे ज्यारे मनुष्यनी क्षमानो आहार करी जइए छीए त्यारे तेओ क्रोध पामे छे. अने ज्यारे तेओना दुष्ट स्वभाव खाइ जइए छीए त्यारे तेओ सद्गुणी बने छे; राजन् ! अप्सराओथी अधिक रुपवाळी स्त्रीओ अमारे त्यां छे; तेम छतां मनुष्यनी स्त्रीओ उपर अमो शा माटे आसक्त थइए ? आ सांभळी राजाए कह्युं के ज्यारे ए स्त्री तने उपभोग के खावाना खपमां आवे तेम नथी तो पछी तुं एने आंही शा माटे उपाडी लाव्यो छे ? राक्षस बोल्यो के–राजा !

ए ब्राह्मण मंत्रज्ञ छे हुं दरेक यज्ञमां जाउं छुं त्यां रक्षोघ्न मंत्र भणी मारुं उच्चाटण करे छे. एथी मारुं कुटुंब क्षुधाथी पीडाय छे अने ए ब्राह्मण दरेक यज्ञमां ऋत्विज् होय छे तो अमारे क्यां जवुं ? जेथी आ उपाय शोधी में तेने विकळ बनाव्यो छे. कारणके स्त्री रहित पुरुष यज्ञ कर्म करवा योग्य नथी. आ सांभळी राजाने अति खेद थयो अने पोते विचार्युं के खरेखर आ दैत्य ब्राह्मणनी विकळता बतावी मारीज निन्दा करे छे. जेम प्हेला ऋषिए अर्घ माटे मने अयोग्य गण्यो तेम आ दैत्ये पण ब्राह्मणनुं वैक्लव्य कही बताव्युं. हुं पण स्त्री विनानो होवाथी महान् संकष्ट आवी पड्युं छे. आ रीतें विचार करता राजाने फरी राक्षसे कह्युं के--आपना देशमां निवास करनारा आ सेवकने कृपा करी कांइ आज्ञा करो. राजाए कह्युं के--तुं मनुष्योना स्वभावने बदलावी शके छे, तो आ ब्राह्मणीनो दुष्ट स्वभाव दूर कर, जेथी ए उत्तम गुणवाळी बनी जशे अने तेने तेना पति सुशर्माने घेर मूकी आव. आ काम कर्याथी तें मारुं तमाम आतिथ्य कर्युं एम हुं मानी लइश. राक्षसे राजानी आज्ञा माथे चडावी माया बळें ते स्त्रीना शरीरमां प्रवेश करी पोतानी शक्तिथी तेनो दुष्ट स्वभाव खावा लाग्यो. ब्राह्मणीना क्रूर तथा दुष्ट आचरणो नष्ट थवाथी ते राजाने कहेवा लागी के महाराज ! प्रारब्धने लइ मने मारा स्वामीनो वियोग थयो तेमां आ राक्षस कारण रुप बन्यो हतो, पण तेमां तेनो बिलकुल दोष नथी, मारा पति पण निर्दोष छे, आमां मारो ज अपराध छे. कारण के करेलां कर्म अवश्य भोगववांज पडे छे. में पूर्व जन्ममां कोइने वियोग पडाव्यो हशे, जेथी आ जन्ममां तेनुं फळ प्राप्त थयुं. राक्षस बोल्यो के राजन् ! आ बाइने हमणाज एना पति सुशर्माने घेर मुकी आवुं छुं, ए सिवाय मने बीजी शी आज्ञा छे ? राजाए कह्युं के सत्पुरुष तें मारां तमाम काम कर्यां, बस, हवे हुं ज्यारे तने याद करुं त्यारे मारी पासे हाजर थजे. आ आज्ञा माथे चडावी ते दैत्य तुरतज दुष्टपणुं दूर थवाथी शुद्ध बनेली ब्राह्मणीने तेना पतिने घेर पहोंचाडी आव्यो.

ब्राह्मणीने घेर मोकलावी राजा निःश्वास मूकी विचारवा लाग्यो के हवे शुं करवाथी मारुं सारुं कहेवाय ? उदार मतिवाळा मुनिए मने अर्घ माटे अयोग्य लेख्यो अने दैत्ये पण ब्राह्मणने उद्देशी मारामां विकळतानुं आरोपण कर्युं; में पोते मारी स्त्रीने रजा आपी, हवे केम करवुं ? ते महा ज्ञानमूर्त्ति ऋषिराजने मळवाथी तमाम संशय टळशे अने बधो खुलासो मळशे. आम विचार करी रथमां बेसी राजा त्रिकाल दर्शी महर्षिना आश्रमे गयो. रथमांथी उतरी ऋषि पासे जइ सवि-नय प्रणाम करी राक्षस संबंधी सर्व हकीकत कही संभळावी. ऋषिए कह्युं के राजन् ! ए सर्व

वृत्तांत अने पाछुं अहीं आववानुं कारण मारा जाणवामां आवी गयुं छे; उद्वेगयुक्त अंतःकरण-वाळा तमे " हवे मारे शुं करवुं " ए पूछवा धारो छो तो तेनो हुं खुलासो आपुं छुं, ते श्रवण करो. मनुष्योने धर्म, अर्थ, अने काम साधवामां प्रबळ सहायक स्त्री छे, ते स्त्रीनो त्याग करनार धर्मथी भ्रष्ट थाय छे. स्त्री विनानो पुरुष ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र गमे ते होय परंतु ते पोतानां कर्म करवाने योग्य गणातो नथी. तमे स्त्रीने तजी दीधी ए बहुज बुरुं कर्युं छे; स्वामी गमे तेवो होय तो पण स्त्रीओए तजवो न जोइए, तेम स्त्री गमे तेवी होय तो पण पुरुषे तेनो त्याग न ज करवो जोइए. राजा बोल्यो के ऋषिराज ! हुं शुं करुं ? हुं बधी रीते एनी अनुकूळता जाळवतो हतो छतां ते माराथी प्रतिकूळ वर्तन करती जेथी में निरुपाय बनी रजा आपी छे. तेना वियोग वह्निथी पीडित थवानो मने भय रहेतो हतो जेथी में तेनां असह्य वर्तनने पण सहन कर्युं; छेवट अति थतां रजा आपवी पडी. हवे ते क्यां हशे ? ए मारा जाणवामां नथी. कांतो एने कोइ हिंसक प्राणी अथवा राक्षस खाइ गएल हशे. ऋषिए कह्युं के राजन् ! तारी स्त्रीने कोइ खाइ गयुं नथी. ते हजी निष्कलंक रीते रसातळमां जीवे छे. तेने त्यां कोण उपाडी गयुं अने ते निष्कलंक शी रीते रही, ए महा आश्चर्य जनक वात तने हुं यथार्थ कहुं छुं ते श्रवण कर. पाताळमां कपोतक नामे एक अति प्रसिद्ध नाग लोकोनो राजा छे. तेणे गाढ जंगलमां भमती तारी स्त्रीने भाळी ते अति रुपवती होवाथी तेना प्रति नागराजनी प्रीति थइ; ते तारी स्त्रीनी तमाम वातथी वाकेफ थइ तेने पाताळमां उपाडी गयो. ते कपोतकने मनोरमा नामे स्त्री अने नन्दा नामे पुत्री हती. नन्दाए तारी स्त्रीने जोइ विचार्युं के आ अति रुपाळी होवाथी मारी माताने शोक बनी सालशे. आम धारी ते नन्दाए तारी स्त्रीने अन्तःपुरमां छुपावी राखी. त्यार बाद नागराजे पोतानी पुत्री पासे तारी स्त्रीनी मागणी करी पण तेणे कांइ जवाब आप्यो नहि. जेथी नागराजे पोतानी पुत्रीने सक्रोध शाप आप्यो के "जा तुं मुंगी बनीश." राजन् ! तारी स्त्री हजी त्यांज छे. आ सांभळी राजा खुशी थयो अने ऋषिराजने पोतानां दुर्भाग्यनुं कारण जाणवा पूछ्युं के महाराज ! सर्व मनुष्योनी मारा उपर अति प्रीति छे छतां मारी पत्नी मारा उपर प्रेम शा माटे नहि राखती होय ? मने ए प्राणथी पण अधिक व्हाली छे छतां ए मारा प्रत्ये दुष्ट स्वभाव केम दर्शावे छे ? ए कृपा करी कहेशो. ऋषिए जवाब आप्यो के राजन् ! तें जे समये ए स्त्रीनुं पाणिग्रहण कर्युं ते वखते तारा उपर सूर्य, मंगळ, अने शनि ए त्रण ग्रहोनी दृष्टि हती. तेमज तारी स्त्री उपर शुक्र अने बृहस्पतिनी दृष्टि हती, तेनी मूर्तिमां बुध अने तारी मूर्तिमां चन्द्र हतो. ए बन्ने प्रतिपक्षी होवाथी तेनुं शुभ फळ

तने प्राप्त थतुं नथी. तुं तारे स्थाने जा, अने धर्म पूर्वक पृथ्वीनुं पालन तेमज स्त्री सहित धर्म क्रियाओ कर. आ सांभळी राजा उत्तम ऋषिराजने नमन करी रथमां वेसी पोताना शहेर तरफ रवाना थयो.

राजाए नगरमां आवतां विप्र सुशर्माने पोतानी सुलक्षणा स्त्रीनी साथे आनंदमां जोयो. राजाने आशीर्वाद आपी ब्राह्मणे कह्युं के राजन्! मारा धर्म रक्षण अर्थे तमोए मारी स्त्रीने शोधी आपी मने कृतार्थ कर्यो. राजाए कह्युं के विप्र! तुं तो धर्म पालनथी कृतार्थ थयो परंतु मने महा संकष्ट छे. कारणके मारुं गृह स्त्री रहित छे.

ब्राह्मण बोल्यो के—महाराज ! एने तो हिंसक प्राणीओ जंगलमां खाइ गयां हशे. आप बीजी स्त्री शामाटे परणता नथी? क्रोधने वश थइ तमो धर्म रक्षण करी शक्या नहिं. राजाए कह्युं के–विप्र मारी पत्नीने हजी सुधी कोइए पराभव पमाडयो नथी. ए निष्कलंकपणे जीवे छे. हवे मारे शुं करवुं ? ब्राह्मणे कह्युं के महाराज! जो आपनां पत्नी कलंक रहित जीवतां होय तो स्त्री विना धर्म हानि शामाटे करो छो ? राजाए कह्युं के–एने अहीं लाववा हुं सर्व वाते समर्थ छुं, पण ए माराथी विमुख वर्ते छे जेथी निरंतर मनमां खेद रह्या करे छे. ते मारा उपर बिलकुल प्रेम राखती नथी, जेथी मारुं मन दुःखाय छे. माटे महाराज ! ए स्त्री मने वश थाय एवो कांइ तमे यत्न करो. ब्राह्मण बोल्यो के राजन्! आपने प्रसन्न करवा अन्योन्य उदास थएलां मनमां पुनः प्रेम प्रगट करनारी अने स्त्रीपुरुषमां स्नेहनी वृद्धि करावनारी इष्टिनो हुं आरंभ करुं छुं. तमारां पत्नी ज्यां होय त्यांथी शोधी लावो. हवेथी ए आपना पर अति प्रेम राखशे. आ सांभळी राजाए यज्ञनो तमाम सराजाम मंगावी सुशर्माने आप्यो. तेणे इष्टिनो आरंभ कर्यो. उत्तम राजानी पत्नी बहुलाना मनने प्रेममय करवा तेणे उपरा उपरी सात यज्ञ कर्या. ज्यारे सुशर्माए जाण्युं के राज पत्नीनो राजा उपर प्रेम थयो छे. त्यारे तेणे राजाने कह्युं के राजन्! जेवो तमारो प्रेम छे तेवोज तमारी पत्नीना अन्तःकरणमां प्रेम प्रगट्यो छे. माटे तेने प्रयत्नथी प्राप्त करी तेनी साथे भोग भोगवो अने धर्म कार्य करो. आ रीते ब्राह्मणनां वचनो सांभळी विस्मय पामेला उत्तम राजाए महा पराक्रमी अने सत्य प्रतिज्ञावाळा बलाक नामना राक्षसनुं स्मरण कर्युं. तुरतज ते दैत्य राजा पासे हाजर थयो. अने प्रणाम करी बोल्यो के महाराज! मने शी आज्ञा छे त्यारे राजाए सर्व वृत्तांत कही संभळाव्युं. बलाक तुरतज पाताळमां पहोंच्यो अने राज राणी बहुलाने लइ आव्यो. नागलोकमांथी आवेली

वहुला पोताना पतिने प्रेम पूरित नयनोथी निहाळी आनंद पूर्वक बोली के–प्रभु प्रसन्न थाओ, मारो अपराध क्षमा करो. राजा वहुलाने सप्रेम भेटी बोल्यो के–प्रिये ! हुं तो सदा प्रसन्नज छुं. त्यारे वहुलाए कह्युं के जो तमे मारा उपर प्रसन्न होतो हुं एक वस्तुनी आप पासे याचना करुं छुं ते आपवा कृपा करो. राजाए कह्युं के जे तारी इच्छा होय ते सत्वर निःशंक बनी मागी ले. तारुं अभिष्ट माराथी अप्राप्य नथी. हुं खरेखर तारा कबजामां छुं. त्यारे वहुला बोली के–प्राणनाथ ! मारे माटे नागराजे पोतानी पुत्री तथा मारी प्रियसखी नन्दाने शाप आप्यो छे के " तुं मुंगी थइश." आथी ते विचारी मुंगी थइ छे तो तेनी वंध थएली वाणीनुं निवारण करी मारो मनोरथ पूर्ण करो. राजाए सुशर्माने बोलावी पूछ्युं के नागकन्यानुं मौन शी रीते मटे ? त्यारे ब्राह्मण बोल्यो के–हुं आपना वचनथी सरस्वती यज्ञनो समारंभ करुं छुं; ते नागकन्याने वाचा प्राप्त थवाथी आपनां पत्नी तेना ऋणथी मुक्त थशे. राजाए कह्युं के–खुशीथी सरस्वती यज्ञनो आरंभ करो. सुशर्माए सरस्वतीनी इष्टि शरु करी अने सरस्वतीना सूक्तनो एकाग्र मनथी जप कर्यो जेथी नाग कन्या नंदानी वाणी उघडी गइ. तेने पाताळमां गर्गे कह्युं के–आ तारा उपर म्होटो उपकार तारी सखी वहुलाना पति उत्तम राजाए कर्यो छे. आ सांभळी नाग कन्या नन्दा उत्तम राजाना नगरमां अति वेगथी आवी पोतानी प्रिय सखीने मळी अने वारंवार मंगळ वचनोथी राजानी स्तुति करवा लागी. आसने बेठा पछी नागकन्या बोली के-प्रतापी वीर ! आपे करेलो महान् उपकार मारा हृदय लोहने चुंवक बनी आंहीं खेंची लाव्यो छे. आपने महा पराक्रमी पुत्र थशे ए मारुं कहेवुं सत्य मानजो. ते बाळनी आखी पृथ्वीपर अप्रतिहत आण वर्तशे अने ते तमाम अर्थ शास्त्रने जाणनार, धर्मनी धुरा धारण करनार महान् बुद्धिशाळी मन्वंतरनो अधिपति मनु थशे. आ प्रमाणे वरदान आपी पाछी पोतानी प्रिय सखी वहुलाने सप्रेम भेटी ते नागकन्या पाताळमां पहोंची; पोतानी प्रमदा साथे विनोदथी विहार करता अने प्रेमथी प्रजानुं पालन करता ते उत्तम नामना राजाने त्यां घणो काळ वीतया पछी पूर्ण चन्द्र समान कमनीय कान्तिवाळो पुत्र जनम्यो. प्रजा आनंद पामी, देवोना दुन्दुभि वागवा लाग्यां, आकाशमांथी पुष्पनी वृष्टि थइ. हर्ष प्रदर्शित करवा आवेला ऋषिओए उत्तम नृपतिना वंशमा उत्तम समये जन्म पामेल उत्तम अन्वयवाळां ते बाळकनुं " औत्तम " एवुं नाम राख्युं ते महा प्रख्यात मनु थयो. तेना समयमां नाम प्रमाणे गुणवाळा देवोना पांच गण हता, पहेलो स्वधामान, बीजो सत्य, त्रीजो शिव, चोथो प्रतर्दन अने पांचमो वशवर्ती. ते देवोना पांचे गणो बार बारनी संख्याना हता. शत यज्ञो करी त्रैलोक्यनुं आ-

धिपत्य पामेलो सुशान्ति नामे इन्द्र थयो हतो. जेना नामाक्षरथी अलंकृत गाथाओ केटलोएक मन्वंतर पर्यंत भूतादि उपसर्गना विनाश अर्थे गवाती हती. ते मनुने देव सरखा सुप्रसिद्ध अने बळवान अज, परशुचि अने दिव्य नामे त्रण पुत्रो थया हता, तेओए कृत त्रेतादि एकोतेर चोकडी पर्यन्त पृथ्वीनुं पालन कर्युं. ते मन्वंतरमां तपोबळथी अधिक तेजस्वी बनेला वशिष्ठ मुनिना साते पुत्रो सप्तर्षि थया हता.

पूर्वे महा पराक्रमी, अनेक यज्ञ करनार अने युद्धमां सदा विजय मेळवनार स्वराष्ट्र नामे प्रख्यात राजा पृथ्वी पर थयो हतो, मंत्रोथी आराधेला सूर्ये तेने दीर्घ आयुष्य अर्प्युं हतुं, तेने सद्गुणथी सुशोभित स्त्रीओ हती पण ते सर्व अल्पायुपवाळी हती जेथी काळे करी ते स्त्रीओ, तेना सेवको, तथा मंत्रीओ सर्व मरण पाम्या. तमामना मरण थवाथी राजाना मनमां महा खेद उत्पन्न थयो; शोकथी दिन प्रतिदिन तेनुं बळ ओछुं थवा लाग्युं; वीर्य विहीन तथा सेवकोना समूहथी रहित ते महा दुःखी राजाने कोइ एक विमर्द नामना पुरुषे तेने गादी परथी उठाडी मुक्यो. जेथी तेना मनमां अत्यंत उद्वेग थयो, तेणे वनमां जइ वितस्ता नदीने किनारे महा उग्र तप करवा मांड्युं. ते ग्रीष्म ऋतुना दिवसोमां पंचाग्नि तापतो, वर्षामां खुल्ली आंखे आकाश भणी जोइ रहेतो, अने शीतकाळमां जळ महींज पड्यो रहेतो, तेणे आहार पण तजी दीधो हतो. आ रीते द्रढ व्रत आचरवा लाग्यो. एक वखते चोमासामां रात्रि दिवस अविच्छिन्न धाराए वृष्टि थवा लागी, वितस्ता नदीमां महान् पूर आव्युं, वादळना वृन्दथी बधे अंधकार छवाइ गयो तेथी पूर्व, पश्चिम के उत्तर दक्षिणनुं पण भान न थतुं; नदीने किनारे बेठेलो स्वराष्ट्र वारिना पूरमां वहेवा लाग्यो, किनारे जवा तेणे घणो श्रम कर्यो पण व्यर्थ, ते तणातो चाल्यो तेवामां जळमां तणाती एक हरिणीनुं पूछडुं तेना हाथमां आव्युं; ते पुच्छना आश्रयथी अंधकारने लीधे पाणीमां आम तेम अथडातो काइ एक किनारे पहोंच्यो; त्यां घणोज कादव हतो, तेने उल्लंघी सुकी जमीनमां जवुं घणुंज कठिन थइ पड्युं, परंतु ते हरिणीनी पाछळ घसडातो घसडातो रमणीय वननी निकट पहोंच्यो. त्यां पण पूंछडे वळगी रहेला दुर्वळ अने धमणनी माफक श्वासोच्छ्वास लेता राजाने हरिणी अंधकारमां घणे दूर घसडी जवा लागी, अंधकारमां हरिणीनी पाछळ अथडाता राजाने पण मृगीना स्पर्शथी अति आनंद उपज्यो, अनंगे तेना चित्तनुं आकर्षण कर्युं अने पोते हरिणीनी पीठ माथे हाथ फेरववा लाग्यो. हरिणी पण साभिलाप बनी बोली के-राजन्! तमो ध्रुजते हाथे मारी पीठनो शा माटे स्पर्श करो छो ? आ वखते तमारा मननी वृत्ति जुदीज जणाय छे; परंतु नाथ! तमारुं मन अयोग्य

स्थाने आकर्षायुं नथी. हुं आपने गम्या छुं, पण आपना संसर्गमां मने आ लोल विघ्न उत्पन्न करे छे. आ सांभळी राजाने महान् आश्चर्य थयुं. तेणे हरिणीने कह्युं के–तुं कोण छे अने मनुष्य माफक शी रीते उच्चार करी शके छे ? तारा संगममां मने विघ्न करनार लोल कोण छे ते मने कही संभळाव. मृगी बोली के राजन् ! पूर्वे हुं द्रढधन्वानी पुत्री अने आपनी सो स्त्रीओमां हुं उत्पलावती नामे पटराणी हती. आ सांभळी राजा आतुरताथी बोल्यो के–तुं पतिव्रता तेमज धर्मीष्ट छतां क्यां दुष्कृत्यथी आ पशु योनिमां पडी ? मृगी बोली के नाथ ! हुं बाल्यावस्थामां एक वखत मारी सखीओ साथे वन विहार करवा गइ हती. त्यां एक मृगीनी साथे आवता मृगने में जोयो, त्यार बाद मृगी पासे जइ में तेने कांइक प्रहार कर्यो जेथी ते भयभीत थइ भागी गइ, आथी मृगने अति क्रोध उत्पन्न थयो. अने तेणे मने कह्युं के दुष्टे ! आम उन्मत्त केम बनी गइ छे ? ते मारो आधान काळ निष्फळ कर्यो, तारां आवां दुष्ट वर्तनने शतकोटि धिक्कार छे. आ रीते ते मृगना मनुष्य जेवां वचनो श्रवण करी मारा अंतःकरणमां भय उपज्यो. मे तेने पूछ्युं के आ मृगयोनि पामेला तमे कोण छो ? त्यारे तेणे कह्युं के–हुं निवृतचक्षु नामना ऋषिनो पुत्र छुं. मारुं नाम सुतपा छे; ए मृगीने जोइ कामातुर बनेलो हुं हरिणनुं रुप लइ तेनी पाछळ प्रेम वश थइ चाली निकळ्यो; एणे मने वनमां लइ जवा अभिलाषा बतावी जेथी हुं आटले दूर आव्यो छुं. ते एने भय आपी भगाडी मुकी जेथी तने हुं हमणा शाप आपुं छुं. आ सांभळी ते मृगने मे विनय पूर्वक कह्युं के–अज्ञानताथी थएल मारो अपराध क्षमा करो, मने शाप आपवो ए आपने घटतुं नथी. आ सांभळी मृग रुपे रहेल ते सुतपा नामना मुनिए मने कह्युं के–जो तुं तारुं शरीर मने अर्पण कर तो हुं शाप न आपुं. त्यारे में कयुं के हुं वनमा फरनार मृगी नथी. तमने कोइ बीजी मृगली मळी रहेशे; मारा उपर कामवृत्ति करशो नहि. आ सांभळी अति क्रोधायमान थएल ते मुनि रक्तनेत्र करी, ओठने फरकावी मने कहेवा लाग्यो के “ हुं मृगी नथी. ” एम तुं कहे छे माटे हुं शाप आपुं छुं के ‘ जा तुं मृगी थइश. ” आ सांभळी मने घणोज खेद थयो. त्यार बाद पोताना प्रथम स्वरुपने प्राप्त थएला ते मुनिने में प्रणाम करी अत्यंत नम्रता पूर्वक कह्युं के–महाराज ! मारा उपर कृपा करो, हुं बाळक छुं, योग्य पुरुष आगळ केवी रीते बोलवुं जोइए ए पण मने आवडतुं नथी; अज्ञानताने लीधे जो कांइ माराथी अघटित बोलाइ गयुं होय तो क्षमा करो. मारा पिता विद्यमान होवाथी हुं स्वतंत्र नथी. जे स्त्रीओ स्वतंत्र होय छे ते पोतानी मेळे पतिने पसंद करी ले छे. महाराज ! हुं अपराधी थइ छुं तो तेनी प्रणामपूर्वक आप पासे माफी मागुं छुं.

मारा उपर करुणा करो. आ रीते में घणा कालवाला कर्या त्यारे ते मुनि बोल्या के-" मारुं वचन कदि पण व्यर्थ थशे नहि " तुं आ जन्ममां नहि पण आवते जन्म मृगी थइश. ते वखते ए मृगयोनिमां सिद्धवीर्य नामना मुनिनो लोल नामे पुत्र तारा गर्भमां आगमन करशे. तेना आगमनथी तने तारा पूर्व जन्मनी स्मृति थशे तेमज ते वखते तने मनुष्यनी वाणी प्राप्त थशे. ते गर्भनो जन्म थया बाद तारा स्वामीथी सन्मान पामेली तुं मृगयोनिथी निर्मुक्त थइ उत्तम लोकने पामी शकीश. तारो महा पराक्रमी पुत्र पोताना पिताना प्रतिपक्षीओने पराभव पमाडी आखी अवनिने आधीन करी प्रख्यात मनु थशे. आ रीते शापने लीधे मरण पाम्या बाद मृगयोनिमां मारो जन्म थयो. अने तमारा कर स्पर्शथी मारा उदरमां गर्भ रह्यो. एथीज मारुं मन तमारा उपर अभिलाषावाळुं थयुं छे ते तमाम रीते योग्य छे. पण आ गर्भ मध्ये रहेलो लोल आ वखते विघ्न कर्ता छे. " पोतानो पुत्र वसुंधरामां विजय मेळवी मनु थशे. " आ सांभळी राजा स्वराष्ट्रने आनंदनो पार रह्यो नहि. थोडा वखतमां ते मृगीने चक्रवर्तीना शुभ लक्षणोथीयुक्त पुत्रनो प्रसव थयो. ए बाळकना जन्मथी प्राणी मात्र हर्ष पाम्यां अने मृगी शापथी मुक्त थइ उत्तम लोकने पामी; त्यां तमाम ऋषिओए आवी ते बाळकनुं भविष्य जोइ तेनी नामकरण क्रिया करी, ते तामसी योनिमां जन्मेली माताथी उत्पन्न थएलो होवाथी तेमज तेना जन्म समये तमाम जगोए तम छवाइ जवाथी ऋषिओए कह्युं के आ तामस एवा नामथी प्रख्यात थशे. महाराजा स्वराष्ट्रे पोताना पुत्र तामसने वनमां उछेरी म्होटो कर्यो, ते बाळकने ज्ञान प्राप्त थतां पोताना पिताने कहेवा लाग्यो के तमे कोण छो? हुं तमारो पुत्र शी रीते थयो! मारी जनेता कोण छे? अने तमो वनमां शामाटे निवास करो छो? त्यारे स्वराष्ट्रे सर्व हकीकत कही संभळावी. ते सांभळी तामसे सूर्यनी उपासना करी प्रतिसंहार सहित सर्व दिव्य अस्त्रो प्राप्त कर्या, अस्त्रो मेळव्या पछी तेणे प्रतिपक्षीओने पराजय पमाडी पोताना पिता पासे हाजर कर्या; पुत्र धर्म पाळनारा तामसे जेओने पोताना पिताए छोडवानी आज्ञा करी तेओने तुरत छोडी मुक्या. पुत्रनां मुखदर्शन रुपी सुखने अनुभवी देह छोड्या बाद राजा स्वराष्ट्र पोताना तप अने यज्ञ आदिथी प्राप्त करेल उत्तम लोकने पाम्या; तामस तमाम अवनिने स्वाधीन करी मनु बन्यो; तेना समयमां सत्य, सुरुप, सुधी अने हरि नामना दरेक सत्यावीशनी संख्यावाळा देवना चार गण थया. ते देवोनो अधिपति महा वीर्यवान् अने पराक्रमी शत यज्ञ करी प्रख्यात बनेलो शिखरीन्द्र नामे इन्द्र थयो हतो. ज्योतिर्धामा, पृथु, काव्य, चैत्र,

अग्नि, वळक अने पीवर नामना सप्तर्षि थया हता. ते तामस मनुना नर, क्षान्ति, शान्त, दान्त, जानु अने जंघ इत्यादि अनेक बळवान् पुत्रो राजा बन्या हता.

एक ऋतवाक् नामे महा प्रसिद्ध अने भाग्यशाळी ऋषि अपुत्र हतो, तेने रेवती नक्षत्रने अंते एक पुत्र थयो, ऋषिए ते बाळकनी जात कर्म आदि तमाम क्रियाओ यथाविधि करी उपवीत संस्कार पण कर्यो; परंतु ते बाळक दुष्ट आचरणवाळो निवड्यो, ज्यारथी ए बाळकनो जन्म थयो त्यारथी तेना पिता ऋतवाक् महा भयंकर रोगथी पीडा पामवा लाग्या अने तेनी माताने पण कुष्ट आदि रोगनी महा व्यथा उत्पन्न थइ, व्यथित ऋतुवाक् ऋषि ए व्यथानुं कारण विचारवा लाग्या, तेवामां तेना दुराचरणवाळा बाळके कोइएक मुनिपुत्रनी संमुखी नामनी स्त्रीने ग्रहण करी. आ बनावथी अन्तःकरणमां क्लेश पामेला ऋतुवाक् ऋषि बोलवा लाग्या के—कुपुत्र करतां मनुष्य अपुत्र रहे एज उत्तम छे. माता अने पिताना अन्तःकरणने निरंतर बाळनार कुपुत्र स्वर्गस्थ पितृओने अधोगति अर्पण करे छे; ते पोताना स्नेही वर्गनुं सारुं नहि करतां मातपिताने पण आनंद पमाडतो नथी, मात्र मातापिताने दुःख देनार दुराचारी पुत्रना जन्मने शतकोटि धिक्कार छे. जेनो पुत्र लोकमां मान मेळवे छे; परोपकार करनार शान्त स्वभाववान् अने उत्तम कर्म करवामां उत्सुक पुत्रोना मातपिता धन्यवादने पात्र थाय छे. जेनुं जीवित कुपुत्रने आधीन छे तेने स्वप्ने पण शान्ति प्राप्त थती नथी, कुपुत्रना मातपितानुं जीवन परलोकथी विमुख अने मंद बनी जाय छे, तेनी सद्गति न थतां नरकमां जाय छे; पोतानां स्नेहीओने कष्ट आपनार कुपुत्र दुश्मनोने राजी करे छे अने मातापिताने समय वगर प्राप्त थएलुं वृद्धावस्थानुं दुःख देखाडे छे, आ रीते पोताना दुराचारी पुत्रना आचरणथी पीडा पामता ऋषिए आ वात संबंधी वर्तमान गर्गने पूछ्युं के महाराज! पूर्वे मे शुभ व्रत पाळी यथाविधि वेदोनुं ग्रहण कर्युं छे अने यथाविधि तेनी समाप्ति करी मे गृहस्थाश्रम स्वीकार्यु छे, श्रौत, स्मार्त अने वषट्कार युक्त जे क्रियाओ स्त्रीवाळा पुरुषे करवी जोइए तेमां मे कोइ दहाडो खामी आववा दीधी नथी; में विषय वांछनाथी नहि परंतु पुन्नामना नरकथी बचवा खातर विधिवत् गर्भाधान करी आ पुत्रनी उत्पत्ति करी, ते पुत्र कोण जाणे पोताना के मारा दोषथी दुराचारी बनी स्नेहीओने शोकप्रद अने अमोने दुःख देनार निवड्यो. आ रीतना ऋतुवाकनां वचनो श्रवण करी गर्ग महाराज बोल्या के—ऋषिराज! आ तमारा पुत्रनो जन्म रेवतीना अंत भागमां थयो छे; ए दुष्ट योगमां उत्पन्न थयेल पुत्र दुःखदायक नीवडे एमां नवाइ नथी. आमां तमारो, तमारां पत्नीनो, कुळनो के ए पुत्रनो काइ पण दोष छेज नहि; ते पुत्र दुराचारी थवानुं कारण

रेवतीनो अस्त समयज छे. आ सांभळी ऋतवाक् बोल्या के—मारो एकनो एक पुत्र दुराचरणी थवानुं कारण रेवतीनो अंत समय छे तो हुं कहुं छुं के तुरतमां ए रेवतीनुं पतन थाओ. ऋतवाक्ना आ वचननी साथेज रेवतीनो पृथ्वी उपर पात थयो; रेवती नक्षत्रने पृथ्वी उपर पडेलुं जोइ तमाम लोकोने आश्चर्य थयुं. ए नक्षत्र कुमुद पर्वतनी उपर चोपासे पड्युं, जेथी ते पर्वतनी गुफाओ, वृक्षो, झरणाओ अने वनआदि तमाम भागो प्रकाशित थइ गया, ते दिवसथी कुमुदाद्रि रैवतक नामे प्रसिद्ध थयो. अने पृथ्वीना तमाम पर्वतो करतां श्रेष्ठ कहेवायो. ए नक्षत्रनी प्रभामांथी कमळनाळयुक्त एकसर उत्पन्न थयुं, तेमांथी अत्युत्तम स्वरुपवाळी एक कन्या प्रकट थइ. रेवतीनी प्रभाथी प्रकटेली ते कन्याने जोइ प्रमुच नामना मुनिए तेनुं "रेवती" नाम पाड्युं. रैवतकनी निकटमां प्रमुच मुनिनुं आश्रम हतुं, पोताना आश्रमनी समीपे जन्म पामेली ते कन्याने प्रमुचे पाळीपोषी म्होटी करी; काळे लइ रेवतीने यौवन प्राप्त थयुं, रेवतीनुं रुप जोइ मुनिने विचार थयो के आने हवे परणाववी क्यां ? घणो काळ वीती गयो छतां ते कन्या योग्य कोइ पण वर न मळ्यो. रेवतीनो पति कोण थशे ? ए संबंधी अग्नि देवने पूछवानुं विचारी प्रमुच मुनि अग्निशाळामां पधार्या; अग्निदेवे मुनिने कह्युं के--महा पराक्रमी, वीर्यवान्, प्रियंवद अने धर्मनुं रक्षण करनार "दुर्गम" नामनो राजा रेवतीनो पति थशे. तेवामां बुद्धिशाळी राजा दुर्गम मृगया अर्थे निकळेल ते प्रमुच मुनिना आश्रममां आवी पहोंच्यो; प्रियव्रतना वंशमां उत्पन्न थयेल महान् विक्रमवाळा, कालिन्दीना पराक्रमी पुत्र दुर्गमे आश्रममां प्रवेश करतां मुनिने जोया नहि. जेथी त्यां हाजर रहेली परम सुन्दरी रेवतीने प्रिये ! एवुं संबोधन आपी कह्युं के समर्थ मुनिराज आश्रममां केम जणाता नथी ? क्यांइ बाहेर पधार्या छे ? सुन्दरि! हुं तमोने प्रसन्न करवा चाहुं छुं मने सत्य वात कहो. अग्निशाळामां उभेला प्रमुच मुनिए राजा दुर्गमनुं आ रीतनुं भाषण तथा "प्रिये" ए संबोधन श्रवण करी सत्वर बाहेर आवी पोताना आश्रममां समग्र राज चिह्न संपन्न सविनय स्थित थएल राजा दुर्गमने जोइ शिष्य गौत्तमने आज्ञा आपी के--आ महीपति माटे तुरत अर्घ लइ आव, महिपाल पोते एकाकी तेमज घणे दहाडे पधार्या छे; अने वळी जमाइ, जेथी अर्घने पात्र छे.

आ सांभळी राजाए विचार्यु के-मने जमाइ कहेवानुं शुं प्रयोजन हशे ? ए समजातुं नथी. जे हशे ते जणाइ आवशे. एम धारी जरा मौन रही मुनिए आपेल अर्घ ग्रहण कर्यो. आसने बेसाड्या पछी प्रमुचे तेनो घणो आदर सत्कार करी अनेक रीते कुशळ पूछ्युं; राजा दुर्गमे कह्युं

कर्युं अने मंत्र योगवाळा विवाह विधिथी पोतानी पुत्री प्रसन्नता पूर्वक राजा दुर्गमने परणावी अने " हुं पहेरामणीमां आपने शुं आपुं ? " एम वारंवार प्रमुच मुनि राजा दुर्गमने कहेवा लाग्या; वळी कह्युं के—राजन् ! मारा महा वळवान तपना प्रभावथी दुर्लभ पदार्थ पण हुं आपने आपवा समर्थ छुं, माटे खुशीथी कहो. त्यारे राजा दुर्गम वोल्यो के—ऋषिराज ! मारो जन्म स्वायंभुव मनुना कुळमां थयो छे तो आपनी कृपाथी मन्वतरनो अधिपति थाय एवा पुत्रनी मारे इच्छा छे ऋषिए कह्युं के—राजन् ! तमारी इच्छा पूर्ण थशे; तमारो पुत्र मनु वनी तमाम पृथ्वीने भोगवनार अने महा धर्मज्ञ थशे. आ रीते मुनिराज प्रमुचनो आर्शीर्वाद पामी राजा दुर्गम परम सुन्दरी रेवतीनी साथे पोताना शहेर तरफ रवाना थयो. त्यां पहोंच्या पछी थोडा वखतमां रेवतीथी " रैवत " नामे मनु उत्पन्न थयो ते मानव धर्म युक्त समग्र शास्त्रना तत्वने समजनार, वेद विद्यामां अने अर्थ शास्त्रमां महा निपुण वन्यो. आ रैवत मनुना समयमां चौद चौदनी संख्यावाळा सुमेधा, भूपति, वैकुंठ अने अमिताभ नामे देवना चार गण थया; तेनो इन्द्र शतयज्ञनो करनार विभु नामे प्रख्यात थयो तेमज हिरण्यलोमा, वेदश्री, ऊर्ध्वबाहु, वेदबाहु, सुधामा, पर्जन्य, अने वेद तथा वेदान्तनो पार पामेला वशिष्ट ए सप्तर्षि थया. रैवत मनुना वलवन्धु, महावीर्य, सुयष्टव्य अने सत्यक आदि पुत्रो थया. तेणे घणो वखत पृथ्वी भोगवी.

हवे छट्टो चाक्षुष मनु थयो. ते पूर्व जन्मे समर्थ ब्रह्मदेवना चक्षुथी उत्पन्न थयेलो हतो जेथी वर्तमान जन्ममां पण तेनुं नाम " चाक्षुष " ए रीते प्रसिद्ध थयुं, एनो जन्म थयो ते वखते तेनी माता तेने गोदमां लइ हेत करती हती तथा प्रेमपूर्वक छाती साथे चांपती हती अने अनेक रीते हुलावती हती. पण ते वाळक तो जातिस्मर जन्म्यो हतो. ते मातानी गोदमां खेलतो खेलतो हास्य करवा लाग्यो, जेथी तेनी माताए क्रोध पूर्वक कह्युं के तुं हसे छे शामाटे ! मने डर लागे छे. तने अकाळ ज्ञान उपज्युं के शुं ? अथवा तने कांइ प्रिय वस्तुना दर्शन थयां के शुं ? आ सांभळी वाळक वोल्यो के–माजी ! आ तारा मुख पासे उभेली मार्जारी मारुं भक्षण करवा विचार करी रही छे तेमज वीजी जातहारिणी अदृश्य वनी उभेली छे. शुं तुं एने नथी भाळती ? तुं पूर्ण वात्सल्यताथी मारा तरफ प्रेमभरी दृष्टिए जुए छे, फरी फरी छाती साथे चांपी मारुं मुख चूमे छे, स्नेहथी तारां रोम खडां थयां छे अने आंखमां प्रेमनां आंसु वहे छे. आथी मने हसवुं आव्युं. माता ! जेम तुं मारा उपर प्रेम जणावे छे तेम आ विलाडी स्वार्थमां आसक्त वनी मने चाहे छे. अने आ अदृश्य थइ उभेली जातहारिणी पण मने उठावी जवा इच्छे छे, जेम ए

के–महाराज ! आपनी कृपाथी सर्व कुशळ छे, परंतु मने आश्चर्य ए थाय छे के आ जगोए मारी कइ स्त्री छे ? त्यारे मुनिराज प्रमुच बोल्या के–राजन् ! जे त्रिलोकीमां एकज सुंदर स्त्री छे ते आ उत्तम अंगवाळी रेवती आपनी अर्धांगना छे; शुं तमो तेने पिछाणता नथी ? आ सांभळी राजा दुर्गम बोल्यो के सुभद्रा, सुराष्ट्रजा, सुजाता, कदंबा, वरुथजा, विपाठा अने नन्दिनी आदि मारी स्त्रीओ छे. तेओने हुं सारी रीते ओळखुं छुं, पण आ रेवती कोण ? त्यारे मुनि बोल्या के जे सुन्दरीने हमणा आपे " प्रिये " ए प्रमाणे संबोधन आप्युं ए शुं आपनी स्मृति बहार छे ? ए प्रशंसनीय प्रमदा तमारी पत्नी छे. राजा बोल्यो के महाराज ! में " प्रिये " ए प्रमाणे संबोधन आप्युं ते वात खरी, पण ए दुष्ट भावथी कह्युं नहोतुं. हुं आपने सविनय कहुं छुं के कृपा करी आप मारा उपर कोप नहीं करशो. ऋषिए कह्युं के–राजन् ! तमे यथार्थ कह्युं छे तमारा भावने हुं दूषित गणतो नथी; अग्नि देवनी प्रेरणाथीज तमारा मुखमां " प्रिये " ए शब्द आव्यो छे. में हमणाज अग्निशाळामां जइ अग्निदेवने पूछ्युं के आ कन्यानो पति कोण थशे ? त्यारे ते समर्थ देवे आपनुंज नाम आप्युं; जेथी आ कन्या हुं आपनेज अर्पण करुं छुं ते स्वीकारो; तमो तेने " प्रिये " कही चुक्या छो तो हवे विचारवानुं प्रयोजन नथी. आ सांभळी राजा दुर्गम कांइ पण बोली शक्यो नहि, कन्याना विवाह विधिनी तैयारी करवा प्रमुच मुनि तत्पर थया. ते वखते रेवती पोताना पिताने सविनय कहेवा लागी के तात ! मारो विवाह कृपा करी रेवती नक्षत्रमां करशो. ऋषिए कह्युं के—कल्याणि ! हमणा रेवती नक्षत्र चन्द्रना योगवाळुं नथी, ए सिवाय तारा विवाहने योग्य अन्य अनेक नक्षत्रो छे. त्यारे कन्या बोली के–ए नक्षत्र विनानो समय मने निष्फळ जणाय छे. एवा निष्फळ काळमां मारां लग्न शी रीते थाय ? आ सांभळी ऋषि बोल्या के ऋतवाक् नामना ऋषिए रेवती उपर क्रोध करी तेने पृथ्वी उपर पाडेल छे अने हुं तने राजा दुर्गमने आपवा प्रतिज्ञा करी चुक्यो छुं; हवे तुं आम कहे छे जेथी मारे माथे आ महान् संकष्ट आवी पड्युं. कन्या बोली के तात ! ऋतवाक् ऋषिए एटलुं वधुं शुं तप कर्युं छे अने आपे शुं नथी कर्युं ? हुं शुं कोइ अधम द्विजनी आत्मजा छुं ? आ सांभळी ऋषि बोल्या के बाले ! तुं उत्तम तथा तपस्वी ब्राह्मणनी पुत्री छे; हुं के जे नवा देवो उत्पन्न करवा समर्थ छुं तेनी तुं पुत्री छे. कन्या बोली के—आप तपस्वी मारा तात छो तो ए नक्षत्रने फरी गगनमां स्थापी एज नक्षत्रमां मारा लग्न शा माटे करता नथी ? ऋषिए कह्युं के भद्रे ! तारुं कल्याण थाओ; हुं तारी इच्छा मुजब करुं छुं, खुशी था एम कही रेवतीने प्रमुचे पूर्ववत् तुरतज चन्द्रना योगवाळुं

कर्युं अने मंत्र योगवाळा विवाह विधिथी पोतानी पुत्री प्रसन्नता पूर्वक राजा दुर्गमने परणावी अने "हुं पहेरामणीमां आपने शुं आपुं?" एम वारंवार प्रमुच मुनि राजा दुर्गमने कहेवा लाग्या; वळी कह्युं के—राजन्! मारा महा बळवान तपना प्रभावथी दुर्लभ पदार्थ पण हुं आपने आपवा समर्थ छुं, माटे खुशीथी कहो. त्यारे राजा दुर्गम बोल्यो के—ऋषिराज! मारो जन्म स्वायंभुव मनुना कुळमां थयो छे तो आपनी कृपाथी मन्वतरनो अधिपति थाय एवा पुत्रनी मारे इच्छा छे ऋषिए कह्युं के—राजन्! तमारी इच्छा पूर्ण थशे; तमारो पुत्र मनु बनी तमाम पृथ्वीने भोगवनार अने महा धर्मज्ञ थशे. आ रीत मुनिराज प्रमुचनो आशीर्वाद पामी राजा दुर्गम परम सुन्दरी रेवतीनी साथे पोताना शहेर तरफ रवाना थयो. त्यां पहोंच्या पछी थोडा वखतमां रेवतीथी "रैवत" नामे मनु उत्पन्न थयो ते मानव धर्म युक्त समग्र शास्त्रना तत्वने समजनार, वेद विद्यामां अने अर्थ शास्त्रमां महा निपुण बन्यो. आ रैवत मनुना समयमां चौद चौदनी संख्यावाळा सुमेधा, भूपति, वैकुंठ अने अमिताभ नामे देवना चार गण थया; तेनो इन्द्र शतयज्ञनो करनार विभु नामे प्रख्यात थयो तेमज हिरण्यलोमा, वेदश्री, ऊर्ध्वबाहु, वेदबाहु, सुधामा, पर्जन्य, अने वेद तथा वेदान्तनो पार पामेला वशिष्ठ ए सप्तर्षि थया. रैवत मनुना बलबन्धु, महावीर्य, सुयष्टव्य अने सत्यक आदि पुत्रो थया. तेणे घणो वखत पृथ्वी भोगवी.

हवे छठ्ठो चाक्षुष मनु थयो. ते पूर्व जन्मे समर्थ ब्रह्मदेवना चक्षुथी उत्पन्न थयेलो हतो जेथी वर्तमान जन्ममां पण तेनुं नाम "चाक्षुष" ए रीते प्रसिद्ध थयुं, एनो जन्म थयो ते वखते तेनी माता तेने गोदमां लइ हेत करती हती तथा प्रेमपूर्वक छाती साथे चांपती हती अने अनेक रीते हुलावती हती. पण ते बाळक तो जातिस्मर जन्म्यो हतो. ते मातानी गोदमां खेलतो खेलतो हास्य करवा लाग्यो, जेथी तेनी माताए क्रोध पूर्वक कह्युं के तुं हसे छे शामाटे! मने डर लागे छे. तने अकाळ ज्ञान उपज्युं के शुं? अथवा तने कांइ प्रिय वस्तुना दर्शन थयां के शुं? आ सांभळी बाळक बोल्यो के—माजी! आ तारा मुख पासे उभेली मार्जारी मारुं भक्षण करवा विचार करी रही छे तेमज बीजी जातहारिणी अदृश्य बनी उभेली छे. शुं तुं एने नथी भाळती? तुं पूर्ण वात्सल्यताथी मारा तरफ प्रेमभरी दृष्टिए जुए छे, फरी फरी छाती साथे चांपी मारुं मुख चूमे छे, स्नेहथी तारां रोम खडां थयां छे अने आंखमां प्रेमनां आंसु वहे छे. आथी मने हसवुं आव्युं. माता! जेम तुं मारा उपर प्रेम जणावे छे तेम आ बिलाडी स्वार्थमां आसक्त बनी मने चाहे छे. अने आ अदृश्य थइ उभेली जातहारिणी पण मने उपाडी जवा इच्छे छे, जेम ए

बन्ने मात्र स्वार्थने लीधे स्नेहार्द्र अन्तःकरणथी मारा तरफ आकर्षाय छे. तेम तुं पण स्वार्थनी खातर मारा उपर स्नेह बतावे छे, मात्र तफावत एटलोज छे के आ मार्जारी तथा जातहारिणी तुरतमां मारो उपभोग करवा चाहे छे. अने तुं क्रमे करी मारा तरफथी फळ मेळववा चाहे छे. हुं कोण छुं ते तारा जाणवामां नथी, में तारा उपर कांइ उपकार करेल नथी. तेम तारो अने मारो समागम लांबा समयनो नथी, मात्र पांच सात दिवसनो ज छे. छतां आंखमां स्नेहजळ आणी तुं मारा उपर प्रेम बतावे छे अने "भाइ! तारुं कल्याण थाओ" एम वारंवार शुद्ध अन्तः-करणथी कहे छे आ सांभळी माताए कह्युं के–पुत्र! प्रत्युपकारनी इच्छाए हुं तने हेत करती नथी छतां ए तने सारुं न लागतुं होय तो आजथी तें मने तजी दीधी एम हुं समजुं छुं; ताराथी हुं स्वार्थनी तमाम इच्छा छोडी दउं छुं. आटलुं कही बाळकने त्यांज पडतो मुकी ते सूतिका गृहमांथी तुरतज बाहेर चाली नीकळी; माताए तजी दीधेला अने जेनी बाह्येन्द्रियो जड छे एवा शुद्ध अन्तः करणवाळा ते बाळकने तुरतज त्यां उभेली जातहारिणीए उपाडी लीधो. राजा विक्रान्तनी रा-णीए एक पुत्र प्रसव्यो हतो तेने स्थाने आ बाळकने मूकी ते प्रसवेला विक्रान्तना पुत्रने त्यांथी लइ लीधो, तेने त्रीजे घेर मूकी दीधो अने ते त्रीजाना बाळकनुं ते भक्षण करी गइ. आ रीते अति निर्दय स्वभाववाळी ते यातुधानी हमेशां त्रण जगो बदली त्रीजा घरना बाळकने खाइ जती, हवे चाक्षुप के जेने जातहारिणी राजा विक्रान्तने घेर मुकी आवी तेने राजा विक्रान्ते पोतानो ज पुत्र मानी उत्तम रीते क्षात्र संस्कारो कराव्या अने परम आनन्द पामी विधिपूर्वक ते कुमारनुं नाम पण "आनन्द" राख्युं. त्यारपछी तेने उपवीत संस्कार कर्यो त्यारे गुरुए कह्युं के भाइ! तारी मातानी आगळ जइ तुं प्रणाम कर. आ सांभळी कुमार हसीने बोल्यो के मारी कइ माताने हुं प्रणाम करुं? जनेताने के पालक माताने? त्यारे गुरु बोल्या के–भाइ! जारुजनी पुत्री अने विक्रान्तनी राणी "हैमिनी" तारी जनेता आ रही. आनन्द कुमारे कह्युं के–गुरुदेव! आ तो विशाळ गाममां वसनार "बोध" नामे द्विजवरना पुत्र चैत्रनी जनेता छे; मारी जनेता जुदी छे. आ सांभळी गुरुने महा आश्चर्य लाग्युं अने तेणे पूछ्युं के भाइ आनन्द! त्यारे तुं क्यांथी आव्यो छे? अने तुं "चैत्र" कहे छे ए कोण? आ वात अमोने विटंबना उत्पन्न करे छे. तारो जन्म क्यां थयो छे अने आ तुं शुं कहे छे? त्यारे आनन्द कुमार बोल्यो के गुरुदेव! हुं अनमित्र नामना क्षात्रि-यने घेर गिरिभद्रा नामनी माताथी उत्पन्न थयो छुं. मने त्यांथी जातहारिणी अहीं "हैमिनी" पासे उपाडी लावी छे तेमज "हैमिनी" ना बाळकने बोधने घेर लइ गइ छे अने बोधना पुत्रनुं

ए भक्षण करी गइ छे; हेमिनीना पुत्रने बोधने घेर द्विजना संस्कारो कराइ चूक्या छे, तमोए गुरु बनी आ साथे मने क्षात्र संस्कार कर्या जेथी आपनुं वचन मारे माथे चडाववुं जोइए तो कृपा करी कहेशो के हुं कइ माताने प्रणाम करूं? आ सांभळी गुरुए कह्युं के–पुत्र! अमो गहन संकटमां आवी पड्या, हवे शुं करवुं ? ए कांइ समज पडती नथी. मारी बुद्धि आ वखते भ्रमित बनी गइ छे. आनन्द बोल्यो के गुरुवर्य! विश्वनी गति विचित्र छे, एमां मोह पामवानुं कांइ कारण नथी; कोइ कोइनो पुत्र के कोइ कोइनो बांधव नथी. जन्म धारण करतां एक बीजानो संबंध बंधाय छे, मृत्यु थतां पूर्वनो संबंध त्रुटी जाय छे अने फरी देहनो जन्म थता जे नविन संबंधो जोडाय छे ते पण देहना अंतनी साथे विनाश पामे छे. ए रीते यथाक्रमे काळचक्र चाली रह्युं छे, माटे संसारमां रहेनार मातपिता के भ्राता भगिनी कोइपण कायमनां संबंधी होतांज नथी. शा वास्ते आपनी बुद्धिने भ्रमजाळमां भटकावो छो? मने आ देहेज बे माता अने बे पिता प्राप्त थयां तो देहनो अन्य जन्म थतां अन्य मातापिता थाय तेमां ते नवाइ शी ? आ महाराजा विक्रान्तनो पुत्र "चैत्र" विशाल गाममां छे तेने अहीं तेडी लावजो. हुं तो हवे तप करवा इच्छुं छुं माटे सर्व आज्ञा आपो. आ सांभळी बांधव अने स्त्रीसमेत राजा विक्रान्त विस्मित थयो अने आनन्द कुमार उपरनी ममता मेली तेने वनमां जवा आज्ञा आपी; बोध नामना ब्राह्मणे "चैत्र"ने पुत्रवत् पाळी पोषी म्होटो कर्यो हतो त्यां जइ राजा विक्रान्ते तेना चित्तने संतुष्ट करी पोताना चैत्र कुमारने गहेरमां लावी गादीपति बनाव्यो.

आनंद कुमारे वन गमन करी मुक्तिमां विघ्न करनार कर्मना नाश अर्थे तपनो प्रारंभ कर्यो, ए तप करता कुमारने ब्रह्मदेवे आवी कह्युं के वत्स! तुं आवुं उग्र तप शामाटे आचरे छे? आनंद बोल्यो के–भगवन्! बंधनकारक कर्मनो विनाश अने आत्मनी शुद्धिने अर्थे में आ तपनो समारंभ कर्यो छे. आ सांभळी ब्रह्मदेवे कह्युं के कुमार! तुं मुक्तिनो अधिकारी नथी. कर्मवासनाओथी वींटायेलो छे, परंतु मनुनो अधिकार भोगव्या पछी तने मुक्ति मळशे. हजु तारे छट्ठा मनुनुं पद धारण करवानुं छे माटे जा, मारी आज्ञा प्रमाणे कर. मारां वचनथी तने मुक्ति प्राप्त थशे. तप करवानुं तजी दे. आ रीते ब्रह्मदेवनी आज्ञा थतां आनंद कुमार "अस्तु" कही तप छोडी त्यांथी कर्म करवा चाली नीकळ्यो. तपनी निवृत्ति थवाने ब्रह्मदेवे तेने "चाक्षुष" कहीने बोलाव्यो, जेथी ते कुमार पोताना "चाक्षुष" ए रीतना पोताना पूर्व नामथी प्रख्यात मनु थयो. तेणे राजा उग्र-

नी विदर्भा नामनी कन्या साथे लग्न कर्या, तेनाथी चाक्षुप मनुए घणा पराक्रमी पुत्रो प्रकट कर्या. आ चाक्षुप मनुना मन्वंतरमां यज्ञना हव्यनुं अदन करनार तथा प्रसिद्ध कर्मवाळा "आर्य" नामना अष्टदेवोनो प्रथम गण, महा तेजस्वी तथा दुर्लभ दर्शनवाळा "प्रसूत" नामना अष्टदेवोनो द्वितीय गण, "भव" नामना अष्ट देवोनो तृतीय गण अने "यूथग" नामना अष्ट देवोनो चतुर्थ गण थयो. तेज मन्वंतरमां अमृत भोजन करनार "लेख" नामना देवोनो पांचमो गण पण हतो. यज्ञ भागनो उपभोग करनार शतयज्ञ करी प्रसिद्ध थएलो "मनोजव" नामे तमाम देवोनो अधिपति थयो; सुमेधा, विरजा, हविष्मान्, उन्नत, मधु, अतिनाम अने सहिष्णु नामे सप्तर्षिओ थया. तेमज ए महा प्रतापी चाक्षुप मनुना उरु, पूरु अने शतद्युमान् आदि महा पराक्रमी पुत्रो अवनिना अधिपति थया हता.

विश्वकर्मानी महा भाग्यवती संज्ञा नामे पुत्री समर्थ सूर्य देवनी स्त्री हती; सूर्यथी संज्ञाने विषे महा ज्ञानी, यशस्वी अने प्रख्यात मनुनो जन्म थयो. सूर्यनुं बीजुं नाम विवस्वान् छे. अने तेथी उत्पन्न थयो माटे ते वैवस्वत मनु कहेवायो; ज्यारे सूर्य संज्ञा भणी दृष्टि करता त्यारे ते आंखो मींची जती, जेथी सूर्य क्रोधायमान बनी कठोर वचन कह्युं के—मने निहाळी तुं नयनोनो संयम करे छे माटे तने प्रजानो संयम करनार "यम" नामनो पुत्र थशे. आथी भयभीत बनी संज्ञा देवीए पोतानां नेत्र चपळ कर्या; फरी सूर्ये तेने चंचळ चक्षुवाळी जोइ कह्युं के—मने जोइ तुं दृष्टिने चंचळ करे छे, माटे ताराथी एक चंचळ पुत्री नदी जन्म पामशे. त्यार बाद पतिथी शाप पामेली संज्ञाए यम अने महा नदी यमुनाने जन्म आप्यो; संज्ञा देवी सूर्यनुं तेज महा कष्टथी सहन करती. ज्यारे तेनाथी तेज सहन न थयुं त्यारे तेणे विचार कर्यो के—हवे मारे शुं करवुं? क्यां जवाथी निवृत्ति मळे? मारा पतिने शी रीते क्रोध न थाय? आम अनेक रीते शोच विचार करी संज्ञा देवीए पोताने पीयर जवानुं उत्तम गण्युं अने पोतानुं छायारूप अन्य शरीर उत्पन्न करी सूर्यनी स्त्री बनावी तेने सूचना करी के--आ सूर्यना गृहमां सूर्य तथा तेनी संतति तरफ हुं जेवी रीते वर्तुं छुं तेवीज रीते तारे वर्तन करवुं, मारा जवा संबंधी तने कोइ पूछे तो पण तारे कांइ कहेवुं नहि. "हुं ज संज्ञा छुं." ए प्रमाणे हमेशां तारे दृढ राखवुं. आ सांभळी छाया संज्ञा बोली के—देवि! केशाकर्षण के शाप प्रदान ज्यां सुधी नहि थाय त्यां सुधी हुं तारां वचन मुजब वर्तन राखीश, परंतु ए बेमांथी एकनो पण प्रसंग प्राप्त थशे तो हुं तमाम हकीकत कही आपीश.

"बहु सारु" एम कही संज्ञा देवी पोताने पीयर गइ. त्यां तेणे तपना प्रभावथी निष्पाप थएला पोताना जनकने जोया. विश्वकर्माए निष्कलंक पुत्रीने निहाळी अति मान आपी तेनो सत्कार कर्यो; संज्ञा देवी त्यां आनंद पूर्वक केटलाएक दहाडा रही, हजी कांइ वधारे दहाडा वीत्या न हता तेवामां भगवान् विश्वकर्माए पोतानी पुत्रीने मान पूर्वक प्रशंसा करी कह्युं के बेटा! अहीं तारा आगमनथी मने बहु आनंद रहे छे, घणा दिवसो वीत्या छतां तुं आजेज आवी होय एम मने जणाय छे, पण बेटा! धर्मनी हानि थाय छे; स्त्रीओए लांबो वखत पीयरमां रहेवुं उचित्त नथी, पोताना स्वामीने घेर रहेतां पुत्रीनी प्रतिष्ठा वधे छे. एम अमारी मान्यता छे; तुं त्रिलोकीना स्वामी सूर्य नारायणनी स्त्री छे; माटे आंही तारे झाझा दिवस रहेवुं योग्य नथी, तुं तारा स्वामीने घेर सिधाव, हुं तारां आचरणथी अति संतुष्ट थयो छुं; पाछी इच्छा थाय त्यारे खुशीथी मळी जजे. आ रीते पितानां वचन श्रवण करी पोताना जनकनुं यथाविधि अर्चन करी संज्ञादेवी उत्तरकुरु तरफ रवाना थइ; सूर्यना तापथी व्यथित बनेली अने तेना तेजथी भयभीत थएली त्यां अश्विनीनुं स्वरुप धरी तप करवा लागी; हवे त्यां सूर्यनारायणे छायाने "साक्षात् संज्ञा छे" एम मानी तेने विषे बे पुत्र अने एक पुत्री उत्पन्न करी; छाया संज्ञा पोतानां बाळको उपर जेवो प्रेम राखती तेवो संज्ञाना बे पुत्र तथा पुत्री पर प्रेम न राखती; आ पक्षपात वैवस्वत मनुए तो सहन कर्यो, पण ते यमथी सहन न थयुं, तेणे छायाने लात हणवा क्रोधथी पग उपाड्यो, पण पाछळथी दया आवतां तेम न कर्युं, आ जोइ छायाना हृदयमां क्रोध व्याप्यो, अने तेणे ओष्ठ फरकावी शाप आप्यो के हुं तारा पितानी स्त्री तारी माता थाउं तेने तुं मर्यादा मूकी पग प्रहार करवा तत्पर थयो; जेथी आजेज तारो ए पग तुटी पृथ्वी पर पडी जशे. छायाना शापथी भय पामेला यमे पोताना पिता सूर्य पासे जइ प्रणाम करी कह्युं के–तात! आजे एक अपूर्व आश्चर्यनी वात बनी छे, मारा उपरनो पुत्रप्रेम छोडी मारी माता मने आजे शाप आपे छे; मनुना कहेवा मुजब आ मारी माता नथी, कारणके पुत्र दुर्गुणी होय तो पण माता तेना जेवी थती नथी; यमनां वचन सांभळी सूर्ये छायासंज्ञाने बोलावी कह्युं के--संज्ञा क्यां गइ? छायाए जवाब आप्यो के--विश्वकर्मानी पुत्री अने आपनी स्त्री हुं पोतेज संज्ञा छुं. तमोए माराथी संतानो उत्पन्न कर्यां छे. सूर्ये अनेक रीते प्रश्न कर्या छतां छायाए सत्य वात न करी त्यारे सूर्य नारायण क्रोधथी तेने शाप देवा तत्पर थया. छायाए तुरतज खरी हकीकत कही आपी. छायाना मुखथी तमाम वृत्तान्त सांभळी सूर्य विश्वकर्माने त्यां गया; विश्वकर्माए त्रिलोकीना पूज्य सूर्य नारायणनुं यथाविधि अर्चन कर्युं. त्यारे सूर्य देवे संज्ञाना समा-

चार पूछ्या त्यारे विश्वकर्माए कह्युं के--भगवन्! संज्ञा मारे त्यां आवेल हती, परंतु में तेने पाछी आपने त्यां मोकलेल छे. आ सांभळी सूर्ये ध्यान द्वाराए जोयुं त्यां संज्ञाने उत्तर कुरुमां घोडीने रुपे तप करती भाळी, तप करवामां संज्ञा देवीनो ए मनोरथ हतो के--" मारा पति शान्त मूर्तिवाळा अने उत्तम आकृतिवाळा बने " आ वात सूर्य नारायणे ध्यानथी जाणी लीधी. जेथी पोते विश्वकर्माने कह्युं के--मारुं तेज ओछुं करो. आ सांभळी सुरना समूहे सप्रेम स्तवन करातां विश्वकर्माए चरखीना भ्रमणमां सूर्य नारायणनुं तेज ओछुं कर्युं. देवताओए सूर्यनी पण अनेक प्रकारे स्तुति करी, जेथी तेजना समूह रुप अने विकार रहित सूर्यदेवे पोतानुं तेज तजी दीधुं, तेना रुग्वेद रुप तेजथी पृथ्वी; यजुर्वेद रुपथी आकाश अने साम रुपथी स्वर्ग थयुं, भगवान् विश्वकर्माए सूर्यना तेजना पंदर अंश ओछा कर्या तेमांथी तेणे महादेवनुं त्रिशूल, विष्णुनुं चक्र, वसु, शिव, अने अग्निदेवनी महा भयानक शक्तिओ, कुबेरनी पालखी, अन्य देवोना जे जे दारुण अस्त्रो छे ते तथा विद्याधरनां शस्त्रो पण बनाव्यां, बाकी रहेल सोळमो भाग हजी सूर्य नारायणे धारण करेल छे. भगवान् विश्वकर्माए सूर्यना तेजना पंदर भाग ओछा कर्या. बाद सूर्य अश्वनुं रुप धारण करी उत्तर कुरु तरफ चाली निकळ्या त्यां अश्विनी रुप धारण करी रहेली संज्ञाने जोइ, संज्ञा देवीए पण सूर्यने आवता जोइ पर पुरुषनी आशंकाथी पोताना पृष्ठ भागनुं रक्षण करवा माटे तेना सामुं मुख राखी चाली. बन्ने एकत्र थयां, ते वखते नासिका योग थयो, जेथी ए अश्विनीना मुखथी अश्विनी कुमार जन्म पाम्या, तेमज वीर्यमांथी ढाल, तलवार कवच सहित बाण अने भाथा समेत अश्व उपर आरुढ थएल रेवंत नामे पुत्र जन्म्यो. त्यार बाद संज्ञा देवीने सूर्ये पोतानुं अनुपम स्वरुप बताव्युं ते जोइ, संज्ञा देवीए हर्ष पामी पोतानुं मूळ स्वरुप धारण कर्युं; जळनुं शोषण करनार सूर्यदेव प्रेमशाळी पोतानी पत्नी संज्ञा देवीने घेर लाव्या, तेनो जे म्होटो पुत्र वैवस्वत हतो ते मनु थयो, तेथी न्हानो पुत्र धर्म दृष्टिवाळो तथा मित्र शत्रु प्रत्ये समान भाव राखनार तेमज छायानो शाप पामेलो यम हतो. छायाए तेने " तारो पग पृथ्वीपर पडशे " एम शाप आप्यो हतो, तेने मिथ्या न करतां सूर्ये " कृमीओ पगमांथी मांस लइ पृथ्वीपर पडशे " एम फडचो करी यमने यमराजनो अधिकार मेळव्यो. यमुना नदीने कलिन्द देशमां वहेवा आज्ञा आपी, जेथी ते कालिन्दी कहेवाइ, अश्विनी कुमारने देवोना वैद्य बनाव्या. आ रीते संज्ञा देवीना संतानोनी व्यवस्था करी.

सूर्यथी छाया संज्ञामां जन्मेलो म्होटो पुत्र वैवस्वत समान होवाथी " सावर्णिक "

नाम पाम्यो, हवे ज्यारे बलिराजा इन्द्र बनशे त्यारे ते सावर्णिक मनुनी पदवी पामशे; तेथी न्हाना शनिश्वरने ग्रहोनी पंक्तिमां भेळव्यो अने तपती नामनी कन्या संवरण नामना राजाने परणावी, तेनाथी कुरु नामनो पुत्र जन्म्यो अने ते पृथ्वीपति थयो. आ वैवस्वतमन्वंतरमां आदित्य, वसुओ, रुद्र, साध्यादेव, विश्वेदेवा, मरुद्गण, भृगुओ अने आंगिरस ए देवताओना आठ गण छे. तेमांथी आदित्य, वसु अने रुद्र ए कश्यपना पुत्र, साध्या, वसु अने विश्वेदेवा ए त्रण गण धर्मना पुत्र, भृगुओ, भृगुना पुत्र, अने आंगिरस अंगिराना पुत्र. आ सर्व सृष्टि मरिचीनी गणाय छे. आ देवोनो अधिपति यज्ञना भागनो उपयोग करनार शतयज्ञ करी प्रसिद्ध थएल हाल उर्जस्वी नामे इन्द्र छे. अत्रि, वसिष्ठ, कश्यप, गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र अने महात्मा ऋचिकना पुत्र जमदग्नि ए सात आ मन्वंतरमां सप्तर्षि कहेवाय छे आ वैवस्वत मनुना इक्ष्वाकुना भग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यंत, नाभगोदिष्ट, कुरुष, पृषध्र अने लोक प्रसिद्ध वसुमान ए नव पुत्रो गणाय छे.
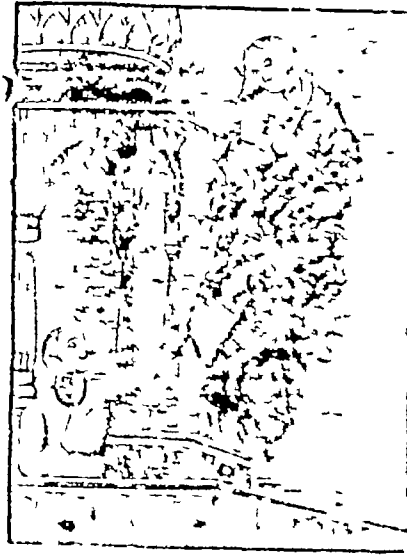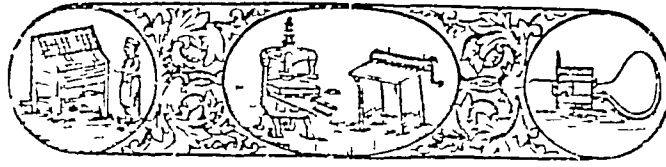
अष्टम तरंग.

शार्दूल.

मार्कंडेय तणा महान तपथी संतुष्ट थातां अति,
श्रीनारायण आवी सन्निध उभा प्रीतेंथी मायापति;
मार्कंडेय तणो मनोरथ सुणी माया बतावी बधी,
ए वार्ता अमरेश आज कहुँ छुं, हुं सर्व संक्षेपथी.

चिरंजीव बनेला मुनिराज मार्कंडेय बद्रिकाश्रममां पुष्पभद्रा नदीने किनारे उग्र तप अने योग आदि आचरता हता तेने छ मन्वंतरो वीती गया, आ सातमा वैवस्वत मन्वंतरमां तेमना तीव्र तपथी भयभीत थएला इन्द्रे तेमना तपमां विघ्न करवा गन्धर्व, अप्सरा, कामदेव, वसंतऋतु, मलयगिरिनो वायु, मद अने लोभने तेओना आश्रम तरफ रवाना कर्या. मुनिराज मार्कंडेयनुं अति पवित्र आश्रम के ज्यां विविध वृक्ष लताओ विराजी रह्यां हतां, पवित्र द्विजोनां वृन्द वसतां हतां, पवित्र जळाशयो निर्मळ नीरथी भर्या हतां, मदथी उन्मत्त बनेला भ्रमरो गुंजारव करी रह्या हता, कोकिल गणना कमनीय शब्दो थइ रह्या हता, नटनी माफक मदोन्मत्त मयूरो नृत्य करता हता, अने अन्य जातनां अनेक पक्षीओथी सर्व स्थळ शब्दायमान थइ रह्युं हतुं. त्यां कामनी वृद्धि करनार शीत जळना बिंदुओ समेत सुमननी सुगंधि युक्त वायु विचरण करवा लाग्यो; संध्या समये शशिना उदयथी सुशोभित तेमज सुकोमळ पल्लव अने गुच्छादार अरसपरस वींटायेल वृक्ष तथा वेलीओना वृन्दवाळी वसंत व्याप्त थइ; इन्द्र देवना सर्व सेवकोए वह्निमां होम करी नयनो मींची ध्यानस्थ थएला अने शरीरधारी अनलनी माफक अमाप ओजवाळा मुनिवर्य मार्कंडेयने जोया, तेनी सन्मुख अप्सराओ नृत्य करवा लागी, मृदंग अने वीणा आदि वाद्योना मनोहर निनाद साथे गन्धर्वो गायन करवा लाग्या; समयानुसार कामदेवे पण शोषण, दीपन, संमोहन, तापन, अने उन्मादन संज्ञाना पंच मुखवाळुं अस्त्र पोताना धनुष्य उपर चढाव्युं, आ सिवाय वसंत, मद

अने लोभ विगेरे इन्द्रना अखिल अनुचरो मुनिराज मार्कंडेयनां चित्तने चलायमान करवा लाग्या, उरोजना बोजाथी अतिशय लटकनी कटिवाळी पुंजिकस्थली नामनी अप्सरा गेदथी क्रीडा करवा लागी. तेना केश पाशमांथी कुसुमनी माळा वारंवार सरकी जवा लागी, अने ते अप्सरा चारे बाजु नयनोने नचावती दडाने ग्रहण करवा दोडे छे, तेवामां तेनी कटि मेखळाना कटका थइ गया, वायुए तेना झीणा वस्त्रने उराडी नांख्युं, आ वखते मुनिराज मार्कंडेयने स्वाधीन बनेला समजी पंचशरे पोतानुं शर फेंक्युं, परंतु भाग्यहीन पुरुषनो उद्योग जेम निष्फळ जाय छे तेमज काम आदि तमामनो मार्कंडेयने वश करवानो उद्योग अफळ थयो; मुनिनुं अवळुं करवानी इच्छा राखता इन्द्रना तमाम अनुचरो तपस्वी मार्कंडेयना तेजथी तपवा लाग्या अने सूतेला सर्पने स्वस्थ करी बाळको जेम भय पामी भागी जाय तेम सर्व त्यांथी पलायन करी गया; आ रीते इन्द्रना भृत्योए अनेक रीते उद्योग कर्यो छतां महात्मा मार्कंडेयना मनमां लेश मात्र विकार न थयो. महात्माओनी महत्तामां कांइ आश्चर्य होयज नहि.

निरुपाय बनी पाछा फरेला कामदेव आदिना मुखथी महात्मा मार्कंडेयनो अप्रतिहत प्रभाव श्रवण करी इन्द्र पण अति विस्मय पाम्यो.

आ रीते तीव्र तप आचरता अने जीतेन्द्रिय बनी मनने कबजे राखता मुनिराज मार्कंडेय माथे अनुग्रह करवा त्या भगवान् नरनारायण स्वयं प्रगट थया. जेवडुं उपवीत, कमंडलु, वंशनो दिव्य दंड, कमळ काकडीनी माळिका, जीवने इजा न थाय तेवी रीते तेओने अळग करनारी सूत्रनी सावरणी सहित, दर्भमुष्टिने धारण करनार, गौर अने श्याम कांतिवाळा; नूतन कमळ तुल्य नयनवाळा, चार चार भुजवाळा, वल्कल अने मृगचर्म रुपी वसनवाळा, पवित्रीयुक्त हाथवाळा, साक्षात् तपःस्वरुप, देदीप्यमान विद्युत समान पीतवर्णवाळा, उदार तेमज महान् सुरगणोए नमाएला, अवर्णनीय विष्णुना अवतार रुप नर अने नारायणने निहाळी मुनिराज मार्कंडेये आसनथी उठी आदर पूर्वक दंडनी माफक ए उभयना पद वंदन कर्या. साक्षात् नरनारायणनां दर्शनथी आनंदयुक्त बनेलां देह, इन्द्रिय अने मन शान्ति समुद्रमां झीलवा लाग्यां, मुनिराज मार्कंडेयनां रोम खडां थइ गयां तथा आंखमां स्नेह जळ भराइ जतां, तेओने पूर्ण रीते निहाळी पण न शक्या. घोडीवार पछी मुनिए हाथ जोडी नरनारायणने नम्रता पूर्वक गद् गद् स्वरे नमोनमः ए रीते उच्चार कर्यो; विष्णु स्वरुप उभयने आसन आपी पाद प्रक्षालन करी अर्घ, चंदन, धूप अने पुष्प

आदिथी यथाविधि पूजन कर्युं; आसन उपर आरुढ थएला अने अनुग्रह करवा उत्सुक बनी रहेला नरनारायणनी मुनिराज मार्कंडेये अनेक प्रकारे स्तुति करी.

बुद्धिशाळी महात्मा मार्कंडेयनी स्तुतिथी प्रसन्न थइ भगवान नारायणे कह्युं के–ब्रह्मर्षिना समूहमां श्रेष्ठ मार्कंडेय ! तमे एकाग्र चित्तथी, मारी अनन्य भक्तिथी, तप, स्वाध्याय तेमज संयमथी सिद्ध बनेला छो. तमे अवर्णनीय ब्रह्मचर्य पाळ्युं छे जेथी अमो संतुष्ट थया छीए; अने तमोने प्रसन्नता पूर्वक वरदान देवा आव्या छीए; माटे यथेच्छ वरदान मागो. आ सांभळी मार्कंडेय बोल्या के देवाधिदेव, अशरणशरण प्रभो ! मारा उत्कर्षने प्रदर्शित करनार वरदान मागवानुं आप कहो छो परंतु मने एवी कांइ अभिलाषा छेज नहि, आपे दर्शन आप्यां एज महान् वरदान मळ्युं एम मानुं छुं. ब्रह्मादि देवो पण योगद्वाराए पवित्र थएला मनथी आपना मनोहर चरण कमलनां दर्शन पामी पोताने कृतकृत्य माने छे. एवां आपनां अलभ्य दर्शन हुं प्रत्यक्षपणे पाम्यो, आथी अधिक वरदान कयुं ? छतां कमलनयन ! देवाधिदेव ! जेथी लोकपाल समेत सर्व लोको स्वरुपमां भेद समजे छे एवी आपनी माया जोवानी मने घणी अभिलाषा छे; नरनारायण तथास्तु कही अदृश्य थया; मायाना दर्शननुंज चिन्तवन करता, वह्नि, सूर्य, शशि, जळ, पृथिवी, आकाश अने आत्मामां नारायणनुं ध्यान धरता मुनिराज मार्कंडेय पोताना आश्रममांज निवास करी मनोमय पदार्थोथी अखिल स्थळमां इश्वरनुंज अर्चन करता हता, कोइ वखते प्रेम पूरमां निमग्न बनी पूजन पण चुकी जता हता, पोते एक दहाडो संध्या समये पुष्पभद्रा नदीने किनारे बिराजमान थया हता त्यां एकाएक अति प्रबळ पवन प्रगट थयो, पवननी पाछळ गाढ गर्जना करता भयंकर मेघ भारे जोरथी वरसवा लाग्यो, विद्युतना वेगथी वारंवार घोर शोर करता वादळना वृन्दोथी रथनी धरी समान स्थूल धाराओ छोडवा लाग्या, वायुना वेगथी वृद्धि पामता उन्नत अने तरल तरंगोथी अवनिने डुबावी देवा इच्छता होय तेम चारे तरफ महासागरोना गंभीर शब्दो संभळावा लाग्या, पोता सहित जरायुज आदि चारे प्रकारनां जगत वारिथी वारंवार चमकती विद्युतथी अने प्रबळ पवनथी अन्तर्बहिर पीडातां जोइ मुनिराज मार्कंडेय बहुज भयभीत बनी गया, स्वल्प समयमांज महान् तरंगोथी हृदयमां भय उपजावनार अने अखंड धाराए वरसता मेघोथी परिपूर्ण थएल महा समुद्रोए द्वीप, खंड, अने पर्वतो समेत पृथ्वीने आच्छादित करी नांखी; पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग, ज्योतिर्गणो अने दिशाओ समेत त्रिलोक्यने डुबावी दीधुं.

तमाम डूबी जतां एक मुनिराज मार्कंडेयज अवशेष रह्या. ते जटाने छूटी करी जड अने अंधनी माफक जळमां भ्रमण करवा लाग्या; भूख तथा तरसथी व्याकुळ वनेला, मत्स्य अने मगर आदिथी पीडाता, अमित अंधकारमां गोथां खाता, पवनथी प्रगट थता तरंगे प्रहार कराता मुनि आकाश के पृथ्वीने ओळखी शकता नहोता. वखते जळनी घूमरीमां घूमता, वखते मोजाओमां अथडाता, वखते जळना जंतुओ तेमनुं भक्षण करी जता, वखते शोकने, वखते मोहने, वखते दुःखने, वखते सुखने, वखते भयने, वखते मृत्युने आधीन वनी जतां. वखते रोग आदिथी पीडित थता. आ रीते विष्णुनी मायाथी वींटायेला प्रलयना समुद्रोमां भ्रमण करता मुनिवर मार्कंडेयने सेंकडो अने हजारो वर्ष व्यतीत थइ गयां. तेओए एक समये ए प्रलयना पयोनिधिमां पृथ्वीना उन्नत भाग उपर फळ अने पल्लवोथी प्रकाशमान तेमज सुकोमळ एक वड जोयो. तेमज ते वडनी इशान कोणनी शाखा उपर पर्णना पडीयामां शयन करी रहेला अने द्युतिथी अंधकारने दूर करनार एक वाळकने जोयो; ए वाळकनो इन्द्रनीलमणि समान श्याम वर्ण हतो, मनोहर मुखारविंद; शंख समान त्रिरेखावाळो कंठ, महान् वक्षःस्थल, सुंदर नासिका अने भ्रमर तथा श्वासथी कंपायमान केश अति सुशोभित जणातां हतां. ते वाळकना शंखनी माफक अंदर वळेला कर्णमां रहेलां दाडिम पुष्प दीप्तिनी वृद्धि करतां हतां. विद्रुम तुल्य ओष्ठनी प्रभाथी सुधा समान स्वच्छ मंदहास्य जरा लाल जणातुं हतुं, सरोजना गर्भ समान आंखनी अणीओ लाल लागती हती, तेनुं सहास निरीक्षण अति प्रशंसनीय हतुं, पीपळाना पर्ण जेवा सुकोमळ उदरमां श्वासथी कंपायमान थती वळीओथी चंचळ अने गभीर नाभि विराजती हती. ए वाळक सुशोभित अंगुलीओवाळा उभय करथी कमळ जेवा पोताना पगने उंचो करी मुखमां नांखी धावतो हतो. आ जोइ महात्मा मार्कंडेयने आश्चर्य थयुं. तेनां दर्शन थतां तमाम परिश्रम टळी गयो; ए वाळकनी अद्भुत लीला जोइ रोम खडां थइ गयां, तेमज हृदयकमळ अने नेत्रकमळ बन्ने विकाश पाम्यां. मुनिराज मार्कंडेय भय पामता पामता कांइ प्रश्न करवा सारुं ते वाळकनी निकटमां पहोंच्या, तेवामां वाळकना श्वासनी साथे मुनि मसल्लानी माफक तेना देहमां दाखल थया: ए दिव्य वाळकना न्हाना उदरमां पण प्रलय पहेलां समग्र जगत् जे स्थितिमां हतुं तेवुंज मुनिराजना जोवामां आव्युं ज्यांथी मुनिने मोह अने विस्मय उत्पन्न थयो अने तेणे पृथ्वी, स्वर्ग, व्योम, नाग गण, पर्वतो, महा समुद्रो, द्वीप, खंड, दिशाओ, देव, अदेव, वन, उपवन, देश, सरिताओ, नगर, आकर, दुर्गाकारमां ग्रामो, वर्णो, वर्णाश्रमनी वृत्तिओ, आश्रमो, गोकुळ, पंच महाभूत, तेथी उत्पन्न थनारा अनेक पदार्थो, अमित

युग, अनेक कल्पोनुं सूचन करनारो काळ, अन्य व्यावहारिक विषय के जे सर्व ए बाळकनीज सत्ताथी प्रकाशे छे ते सर्व महात्मा मार्कंडेयना जोवामां आव्युं; आ रीते मुनि सर्व वस्तुनुं निरीक्षण करता हता तेवामां ए सुशोभित बाळकना श्वासे तेने बाहेर फेंकी दीधा, जेथी मुनिराज पाछा प्रलयना सागरमां जइ पड्या. त्यां तेने पृथ्वीना उन्नत भाग उपर उगेल वड, ए वडना पर्णपुटमां सूतेल बाळक नजरे पड्यो, ए बाळके प्रेम पूर्वक अमृत जेवा मंदहास्ययुक्त आंखनी अणीथी महात्मा मार्कंडेय भणी दृष्टि करी, मुनि बहुज मुंजवणमां आवी पड्या. पोताना हृदयमां बिराजमान थयेल भगवान रुप बाळकने भेटवा मुनिराज पाछा तेनी समीपे गया, तेवामां अन्तर्यामी महान् योगेश्वर साक्षात् भगवान, ऋषि आगळथी भाग्यहीन पुरुषे करेल उद्योगनी माफक सत्वर अदृश्य थइ गया, तेनी पाछळ वड, जळ तथा प्रलय ए सर्व निमिष मात्रमां अंतर्धान थइ गया अने मुनिराज मार्कंडेय प्रथमनी माफक पाछा पोताना आश्रममां स्थित थया.

आ रीते भगवान नारायणनी योगमायाना वैभवनो अनुभव करनार मार्कंडेय बोल्या के—प्रभो ! विद्वत्तानो घुमंड राखनार मारा सरखा जनो पण ज्ञानमय जणाती आपनी मायाथी मोहित बने छे, शरणागतोने अभयदान देनार आपना चरण कमळनुं शरण हुं पण ग्रहण करुं छुं.

कोइ एक दिवसे प्रमथ गणोथी वींटायेल पार्वती समेत शंकर नन्दी उपर विराजमान थइ व्योमपंथे विहार करता हता, तेओए एकाग्रमनवाळा मुनिराज मार्कंडेयने जोया, ऋषिराजने जोइ पार्वतीए सदाशिवने सूचव्युं के—स्वामीनाथ ! वायु विना जेम सागरनां जळ अने मकर आदि जन्तुओ स्थिर थइ रहे छे तेम जेनां मन, इन्द्रिय अने देह आदि अति निश्चळ बनेल छे एवा आ द्विजराज भणी दृष्टि करो, आप सिद्धिना देनार छो तो आ मुनिना तपनुं फळ समर्पो, त्यारे सदाशिवे कह्युं के—सती ! अनन्य भक्तिथी परमात्मा पूर्ण पुरुषोत्तमनी कृपा मेळवनार आ ब्रह्मर्षि कोइ पण जातना सुखनी स्पृहा राखता नथी, एने मोक्षनी पण अभिलाषा नथी, छतां आ सत्पुरुषनी साथे आपणे वार्ता विनोद करीशुं, कारण के प्राणी मात्रमां सत्पुरुषनो समागम कोइ अलौकिक आनंद आपनार छे, आ प्रमाणे बोली यज्ञ स्वरुप अखिल जगत्ना इश्वर सदाशिव मुनिराज मार्कंडेयनी निकटमां आवी पहोंच्या, मुनि समाधिस्त थयेला हता; अन्तःकरणनी वृत्तिओनो निरोध थवाथी पोताने, जगत्ने तथा आत्मस्वरुप उमामहेशना आगमनने पण जाणता नहोता. आ वातने समर्थ सदाशिवे जाणी लीधी अने छिद्रमां वायु प्रवेश करे तेम योगबळथी पोते मुनिराजनां

हृदयान्तरिक्षमां प्रवेश कर्यो, त्रण नयनवाळा, विद्युत् जेवी पीळी जटाने धारण करनार, दश हाथवाळा, उन्नत, उदय पामता सूर्य समान तेजवाळा, वाघ चर्मनुं अंबर, त्रिशूल, धनुष्य, बाण, कृपाण, ढाल, रुद्राक्षमाल, डमरु, कपाल अने फरसी आदिने धारण करनार सदाशिवने अकस्मात् पोताना हृदयमां प्रकाशेला निहाळी मुनिवर मार्कंडेय अति विस्मय पाम्या, तेओनी समाधि अलग थइ; अने नयन खोली निरखे छे त्यां सती समेत त्रैलोक्यपति सदाशिवने पधारेला जोया. मुनिराजे तेओने प्रेम पूर्वक साष्टांग प्रणाम करी स्वागतना वचनोथी वधावी लीधा; आसन, अर्घ, पाद्य, चंदन, धूप तेमज दीप आदिथी गणो अने सती समेत शिवजीनुं अर्चन कर्युं. अने घणे प्रकारे स्तुति करी फरी प्रणाम कर्या. महात्मा मार्कंडेयनी स्तुतिथी प्रसन्न थयेला, निर्मळ अन्तः करणवाळा अने सत्पुरुषोने शरणमां स्थापनार सदाशिव मन्द हास्य प्रगट करता बोल्या के—महात्मन्! वरं ब्रूहि (वरदान मागो) कारणके ब्रह्मा, विष्णु अने हुं वर आपनाराओना अधिष्ठाता छीए; अमारुं दर्शन कदी पण अमोघ जायज नहि, प्राणीने तेओना समागम अने सद्बोधथी मोक्ष प्राप्त थाय छे, जे विप्र अथवा साधु, शान्त, असंग, समान दृष्टिवाळा, वैरविहीन अने प्राणी मात्र उपर दया दर्शावनार अमारा साचा भक्त होय तेओने देवो पण नमन करे छे, सेवे छे अने अर्चे छे. एटलुंज नहि परंतु हुं, बुद्धिशाळी ब्रह्मा अने सर्वेश्वर विष्णु पण पूजे छे, सेवे छे. अमो आ वरदान आदि आपी अनुग्रह करीए छीए एम समजशो नहि, पण तमारा सरखा सत्पुरुषोनी सेवाज बजावीए छीए, तमारा सरखा विप्रो हुंमां, विष्णुमां, ब्रह्मामां, पोतामां अने प्राणीमात्रमां लेशपण भेदबुद्धि नथी राखता, एथीज अमे तमारी सेवा करीए छीए. तीर्थो जळमय अने देवनी प्रतिमाओ जड छे एम न मानवुं. तेओ पण लांबे वखते पवित्रता अर्पे छे अने तमारा सरखा सत्पुरुषो तो मात्र दर्शनथीज पवित्र बनावे छे. एकाग्र चित्त, तप, स्वाध्याय अने संयमथी अमारा देह स्वरूपने धारण करनार विप्रोने अमे पण नमन करीए छीए महा पातकी अने चांडाल आदि पण तमारा पवित्र दर्शनथी तेमज नाम स्मरणथी पाप रहित बने छे तो पछी तमारी साथे वार्ता विनोद करनार पावन थाय एमां शी नवाइ?

धर्मना रहस्यथी भरपूर अने वर्णातीत सर्वेश्वर सदाशिवना वचनो श्रवण करी मुनिराज मार्कंडेयने तृप्ति न थइ, भगवाननी मायाथी रीते नाच पर्यंत भ्रमित बनेला मार्कंडेये सदाशिवना वचनामृतथी काइक शान्ति वळी पोताना तमाम बंधन दूर थया तेओ कहेवा लाग्या के—प्रभु!

इश्वरनी लीला अद्भुत छे, कोइना तर्कमां आवी शकती नथी, जे लीलाने लइ जगतनो इश्वर पोते पण पोताना हाथ हेठळ वसनार किंकर समान जनोने नमन करे छे तेमज तेओनी प्रशंसा करे छे. मने तो घणे भागे एमज भासे छे के मनुष्योने धर्मनुं शिक्षण आपवा माटे धर्म वक्ताओ पोते पण धर्माचरण करे छे अने कोइ तेमां अनुमोदन आपी तेओनी प्रशंसा करे छे. सर्वेश्वर प्रभो ! स्वकीय वृत्तिओ मायामय होवाथी आप अन्य जनोने नमन आदि करो एमां आपना अपूर्व प्रभावनी लेश पण हानि थती नथी, जेम नट वेषबदलो करी पोताना भृत्य आदिने भजे छे एमां नटनी महत्ताने कशो बाध लागतो नथी, जेम स्वप्ननो द्रष्टा मनथी अनेक देहने उपजावी तेओमां प्रवेश करी इन्द्रिओए कराती क्रियाओनो जाणे स्वयं कर्ता होय एम भासे छे तेवीज रीते आ सृष्टिने मनथी सरजी स्वकीय स्वरुपथी तेमां प्रवेश करी गुणोए कराती क्रियाओना कर्ता मनाता आपने हुं वारंवार वंदन करुं छुं; त्रिगुणात्मक छतां निर्गुण गणाता, केवळ, अद्वितीय, परब्रह्म मूर्ति प्रभो ! मने आपनां सर्वोत्कृष्ट दर्शन प्राप्त थयां एथी अन्य क्युं उत्तम वरदान याचुं ? आपनी कृपाथीज प्राणीओना काम सत्य अने पूर्ण थाय छे, तथापि भगवानमां, तेओना भक्तोमां अने आपमां मारी दृढ भक्ति रहे ए एक वरदान आप पासे याचुं छुं. आ रीते मुनिवर मार्कंडेये स्तुति करायेला सदाशिव सतीनी संगतिथी बोल्या के—महर्षि ! तमारी तमाम अभिलाषा पूर्ण थशे, तमो कल्पना अंत पर्यन्त अजरामर रही अतुल पवित्र कीर्ति पामशो, केमके तमो भगवानना अनन्य भक्त छो, ब्रह्म तेजने धारण करनार तमो त्रिकालज्ञ बनी वैराग्ययुक्त विज्ञान अने पुराणना आचार्यनुं पवित्र पद पामशो.

आ रीते मुनिवर मार्कंडेयने वरदान आपी तेमना पवित्र चारित्रनी तेमज तेमणे पूर्वे जोयेल मायाना विविध वैभवोनी सती सन्मुख वातो करता विश्वपति त्यांथी विदाय थया; अने महात्मा मार्कंडेय तेज स्थाने दृढ आसन वाळी अग्निहोत्र आदि नित्य कर्म करवा बेठा, तेटलामां ऋषि मंडले आवी तेओने सविनय दंडवत् प्रणाम करी विज्ञप्ति करी के—महात्मन् ! आप ब्रह्मदेवनी कृपाथी अजरामर थया छो एटले आपने तो कोइनो भय नथी, पण अमो जे यज्ञनेज अमारुं धन समजीए छीए ते यज्ञमां हर वखत असुर गण आवी विघ्न करे छे, तो कृपा करी आप एक एवो वीर पुरुष अमने सोंपो के जेथी अमो निश्चिन्तपणे अमारुं कर्म करवा समर्थ थइए.

ऋषिमंडलना वचन सांभळी धर्मात्मा मार्कंडेये "तथास्तु" कही तेज वखते पोताना

महान् योगबळे अग्निकुंडमांथी सूर्य समान कान्तिवाळो, प्रचंड भुजदंडवाळो, रक्त नेत्रवाळो, सिंह सरखी विशाल छातीवाळो अने भव्य भालवाळो एक क्षत्री वीर उत्पन्न कर्यो. ए वीरवरने विलोकतांज ऋषि मंडलमां आनंद फेलाइ रह्यो, सर्व महात्मा मार्कंडेयनी स्तुति करवा लाग्या. क्षत्री वीर पोताना जनक मार्कंडेयना चरणारविन्दमां नमन करी बोल्या के–प्रभु ! शी आज्ञा छे ? मार्कंडेये कह्युं के–आयुष्मन् ! आ ऋषिओनी यज्ञकुंडपालओनुं रक्षण करवा माटे में तने प्रगट कर्यो छे, तारुं नाम पण "कुंडमाल" ए रीते प्रसिद्ध थशे. हुं आज्ञा करुं छुं के तुं आ ऋषि-मंडलनी साथे जा अने असुरोनी साथे युद्धमां विजय मेळवी हर वखते ऋषिओनां संकट हर्या करजे.

मुनि मार्कंडेयनां आवां शुभ वचनो श्रवण करी सहर्ष आशीर्वाद आपता सर्व ऋषिओ वीरवर कुंडमालने साथे लइ त्यांथी विदाय थया.

नवम तरंग.

दोहरो.

कुंडमाल ऋषिए कर्युं, असुर वृन्दथी युद्ध;
विजय मेळव्यो विश्वमां, सुणो अमरनृप शुद्ध.

राक्षसोना उपद्रवथी बद्रिकाश्रममां रहेनार ऋषिमंडल बहु गभरायेलुं हतुं, तेटलामां महात्मा कुंडमालनुं आगमन थवाथी सर्व हर्ष पाम्या, उंचा हाथ करी प्रसन्न मनथी वेदमंत्रवडे सर्व ऋषिओ आशीर्वाद देवा लाग्या.

महात्मा कुंडमाल ऋषिमालने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करी कहेवा लाग्या के-"हवे मने आप शुं आज्ञा आपोछो?"

ऋषिमंडल बोल्युं के "अन्य राक्षसोने तो आप सरलताथी जीती शकशो पण चंडाक्ष अने चंडास्य नामना बे असुरोने जीतवा मुश्केल छे, कारण के ए दुष्टो उग्रतपथी शंकरने प्रसन्न करी एवुं वरदान पाम्या छे के तेनुं कोइना हाथथी मृत्यु थायज नहि, अने जो थाय तो ते अन्योन्य बंधुओना हाथथीज थाय, आवा कारणथी आप तप करी तेओना मृत्युनो उपाय प्राप्त करो.

ऋषिओनां वचनो माथे चडावी महात्मा कुंडमाल पवित्र स्थान उपर स्थित थइ उग्र तप आचरवा लाग्या; घणे काळे तप प्रभावथी इंद्र आदि देवताओ कुंडमाल पासे आवी वरदान आपवा तत्पर थया, अन्य प्रकारना लोभ रहित कुंडमालऋषिए बीजुं कांइ नहि मागतां चंडाक्ष अने चंडास्य आदि असुरोनो विनाश करवानां साधनो माटे याचना करी, प्रसन्नपनथी इन्द्र, ब्रह्मा, वरुण, अग्नि, अने मारुत विगेरे देवताओए पोतपोतानां अस्त्रो आपी कह्युं के "अन्य असुरोनो आ शस्त्रोवडे तमो त्वराथी नाश करी शकशो पण चंडाक्ष अने चंडास्यनो नाश करवा माटेनो उपाय तो अजन्मारुद्र पासेज छे; अमो सर्व देवताओ ए बन्ने पापीओथी बहु पराभव पामीए छीए,

अमने यज्ञोमांथी मळतो भाग अटकाववा माटेज ए असुरो ऋषिओना यज्ञमां विघ्न करे छे, माटे तमो अजरामर ऋषिराज मार्कंडेयना पुत्र होइ अमने आ महा भयंकर दुःखथी मुक्त करशो एवी आशा छे.

महात्मा कुंडमाळ देवताओनां वचनो माथे चढावी नमन करी बोल्या के "आपना आशीर्वादथी सर्व कांइ थशे, हुं कांइ करवा शक्तिमान नथी.

देवताओ पोतपोताने स्थाने गया बाद राजर्षि कुंडमाळे शंकरने प्रसन्न करवा कोइथी न बनी शके तेवुं फरी उग्र तप करवा मांड्युं.

चंडाक्ष अने चंडास्ये आ खबर पडवाथी भय पामी पोतानी आसुरी माया वडे एक विस्मय पमाडनारो माया प्रदेश रची तेमां सुंदर अने अवर्णनीय शहेर बांध्युं अने आसपासना पोताना कबजाना तमाम असुरोने पत्र लख्या के "आपणा वैरि देवताओने सहायता आपवा मार्कंडेयनो पुत्र कुंडमाळ उग्र तप करे छे अने ते देवताओ तरफथी दिव्य अस्त्रो मेळवी चुक्यो छे, अमोने खात्री छे के ए थोडा वखतमां भोळानाथने बोलवी असुर कुळना नाशने माटे वरदान मेळवशे, अमारो नाश थवो एनाथी मुश्केल छे, परंतु आपणा अन्य स्नेहीओनो नाश सरलताथी करशे, माटे तमो सर्व आ पत्र वांची पोतपोतानी सेनाओ तैयार करावी अमारा पासे हाजर थाओ. जो आ हुकमनो अनादर करशो तो तमारा सर्वनो नाश अमारा हाथथीज थशे, अमारा अज्ञान पणाविषे तमे अजाण्या नथी."

उपर मुजब पत्र वांची तमाम असुरो पोत पोतानी सेना सहित चंडाक्ष अने चंडास्ये निर्मित करेल मायाकृत देश तरफ रवाना थया, चंडाक्ष अने चंडास्य मंडपनी अंदर उन्नत आसन पर बेठा हता तेवामां अकस्मात् आंधी चडवा लागी. आकाश वादळांथी छवाइ गयुं, अने पाषाणोनी वृष्टि थवा लागी. आ जोइ चंडाक्ष अने चंडास्ये जाण्युं के कोइ महान पुरुषो आवे छे. तेने उत्थान अने सन्मान आपवा माटे ते बन्ने असुरो सुन्दर मुख्य [illegible] लइ [illegible] उपर नजर जोवा लाग्या त्यां तो दिशाओने घेरता [illegible] मार्गनां सूर्यना प्रकाशने मंद करता आषाढ मासना अभ्रोनी पेठे सेना सहित असुरोने आवता जोया तेमां मुख्य पुरुषो [illegible] आदि भयं-कर प्राणीओ उपर अने अन्य असुरो माया सहित मयूर [illegible] आदि पक्षीओ उपर सवार थइ, [illegible] अने [illegible] आदि नामो धारण कर्यां. [illegible] असुरी माया [illegible] पाली अनेको [illegible] पोतपोतानी असुरी माया एक बीजाने बतावता आवता हता.

नवम तरंग.

दोहरो.

कुंडमाल ऋषिए कर्यु, असुर वृन्दथी युद्ध;
विजय मेळव्यो विश्वमां, सुणो अमरनृप शुद्ध.

राक्षसोना उपद्रवथी वद्रिकाश्रमनां रहेनार ऋपिमंडल वहु गभरायेलुं हतुं, तेटलामां महात्मा कुंडमालनुं आगमन थवाथी सर्व हर्ष पाम्या, उंचा हाथ करी प्रसन्न मनथी वेदमंत्रवडे सर्व ऋषिओ आशीर्वाद देवा लाग्या.

महात्मा कुंडमाल ऋषिमालने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करी केहवा लाग्या के–"हवे मने आप शुं आज्ञा आपोछो?"

ऋषिमंडल वोल्युं के "अन्य राक्षसोने तो आप सरलताथी जीती शकशो पण चंडाक्ष अने चंडास्य नामना वे असुरोने जीतवा मुश्केल छे, कारण के ए दुष्टो उग्रतपथी शंकरने प्रसन्न करी एवुं वरदान पाम्या छे के तेनुं कोइना हाथथी मृत्यु थायज नहि, अने जो थाय तो ते अन्योन्य वंधुओना हाथथीज थाय, आवा कारणथी आप तप करी तेओना मृत्युनो उपाय प्राप्त करो.

ऋषिओनां वचनो माथे चडावी महात्मा कुंडमाल पवित्र स्थान उपर स्थित थइ उग्र तप आचरवा लाग्या; घणे काळे तप प्रभावथी इंद्र आदि देवताओ कुंडमाल पासे आवी वरदान आपवा तत्पर थया,-अन्य प्रकारना लोभ रहित कुंडमालऋषिए वीजुं कांइ नहि मागतां चंडाक्ष अने चंडास्य आदि असुरोनो विनाश करवानां साधनो माटे याचना करी, प्रसन्नमनथी इन्द्र, ब्रह्मा, वरुण, अग्नि, अने मारुत विगेरे देवताओए पोतपोतानां अस्त्रो आपी कह्युं के "अन्य असुरोनो आ शस्त्रोवडे तमो त्वराथी नाश करी शकशो पण चंडाक्ष अने चंडास्यनो नाश करवा माटेनो उपाय तो अजन्मारुद्र पासेज छे; अमो सर्व देवताओ ए वन्ने पापीओथी वहु पराभव पामीए छीए,

अमने यज्ञोमांथी मळतो भाग अटकाववा माटेज ए असुरो ऋषिओना यज्ञमां विघ्न करे छे, माटे तमो अजरामर ऋषिराज मार्कंडेयना पुत्र होइ अमने आ महा भयंकर दुःखथी मुक्त करशो एवी आशाछे.

महात्मा कुंडमाल देवताओनां वचनो माथे चडावी नमन करी बोल्या के " आपना आशीर्वादथी सर्व कांइ थशे, हुं कांइ करवा शक्तिमान नथी.

देवताओ पोतपोताने स्थाने गया बाद राजर्षि कुंडमाले शंकरने प्रसन्न करवा कोइथी न बनी शके तेवुं फरी उग्र तप करवा मांडयुं.

चंडास्य अने चंडाक्षने आ खबर पडवाथी भय पामी पोतानी आसुरी माया वळे एक विस्मय पमाडनारो माया प्रदेश रची तेमां सुंदर अने अवर्णनीय शहेर बांध्युं अने आसपासना पोताना कबजाना तमाम असुरोने पत्र लख्याके " आपणा वैरि देवताओने सहायता आपवा मार्कंडेयनो पुत्र कुंडमाल उग्र तप करे छे अने ते देवताओ तरफथी दिव्य अस्त्रो मेळवी चुक्यो छे, अमोने खात्री छे के ए थोडा वखतमां भोळानाथने भोळवी असुर कुळना नाशने माटे वरदान मेळवशे, अमारो नाश थवो एनाथी मुश्केल छे, परंतु आपणा अन्य स्नेहीओनो नाश सरलताथी करशे, माटे तमो सर्व आ पत्र वांची पोतपोतानी सेनाओ तैयार करावी अमारा पासे हाजर थाओ. जो आ हुकमनो अनादर करशो तो तमारा सर्वनो नाश अमारा हाथथीज थशे, अमारा अजीतपणाविषे तमे अजाण्या नथी. "

उपर मुजब पत्र वांची तमाम असुरो पोत पोतानी सेना सहित चंडाक्ष अने चंडास्ये निर्मित करेल मायाकृत देश तरफ रवाना थया, चंडाक्ष अने चंडास्य महेलनी अंदर उन्नत आसन पर बेठा हता तेवामां अकस्मात् आंधी चडवा लागी, आकाश वादळांओथी छवाइ गयुं, अने पाषाणोनी वृष्टि थवा लागी, आ जोइ चंडाक्ष अने चंडास्ये जाण्युं के कोइ महान् पुरुषो आवे छे. तेने उत्थान अने सन्मान आपवा माटे ते बन्ने असुरो मुख्य मुख्य शूरवीरोने लइ किल्ला उपर चढी जोवा लाग्या त्यां दशे दिशाओने घेरता आकाश मार्गमां सूर्यना प्रकाशने मंद करता आषाढ मासना अभ्रोनी पेठे सेना सहित असुरोने आवता जोया; तेमां मुख्य पुरुषो अजगर आदि भयंकर प्राणीओ उपर अने अन्य असुरो माया रचित मयूर गीध आदि पक्षीओ उपर सवार थइ, हाथमां मुशळ अने त्रिशूल आदि शस्त्रो धारण करी, गळामां आसुरी माया प्रसारवाना सरंजामवाळी अकेकी झोळी नांखी पोतपोतानी आसुरी माया एक बीजाने बतावता चाल्या आवता हता.

ज्यारे सर्व निकट आव्या त्यारे सर्वने सन्मान पूर्वक किल्लानी अंदर दाखल कर्या; अने पोते बन्ने बंधुओ उन्नत सिंहासन पर बेठा; आवेला तमाम असुरोए विधिवत् बन्नेनी पूजा करी, त्यारबाद सर्वने यथायोग्य उतारा आपवामां आव्या; तेमां अग्रणी पुरुषोने महेलनी समीप भागना बागमां राख्या; ए बाग अनेक प्रकारनां पुष्पोथी प्रफुल्लित, वृक्ष अने लताओना समुदायथी शोभायमान भ्रमरोना गुंजारवथी तेमज नाना प्रकारना पक्षीओनी मधुरवाणीथी शब्दायमान हतो. तेमां जे जे स्थानो बनाववामां आव्यां हतां ते सर्व दिव्य अने रत्नोथी जडेलां हतां; अर्धांगनी आज्ञाथी ते बागना सर्व विभागो खानपानादि पदार्थोथी अलंकृत करवामां आव्या हता. समय थतां गन्धर्विणीओने बोलावी बन्ने बन्धुओ आवेल असुरोनुं आतिथ्य करवा त्यां हाजर थया. बधाए उत्थान करी सन्मान आप्युं, सर्वने यथोचित आसने बेसवा आज्ञा आपी, पोते बेउ उन्नत आसने बेठा, सर्वने मधुर वाणीथी प्रसन्न करी सुरापाननी शरुआत करवा आज्ञा आपी; उत्तम माध्वी मद्यनां पानपात्रो आमतेम फरवा लाग्यां, सन्मुख परम सुन्दरी, मृगशावक नयनी, कोकिल कंठी, ग्रीवाने हलावती, श्रवणफूलने चमकावती, करकंजने झुलावती, कटिने लचकावती, नूपुरने बजावती तमाम अंगोने फरकावती, घुंघटने लंबावती, शिरनी साडीने सरकावती. मंदहास्योथी भावोने प्रगट करती, वांकी दृष्टिथी सर्व सभासदोने निरखती, प्रेमीओनां प्रेमने परखती अने हृदयमां हरखती गन्धर्विणी नृत्यगान करवा लागी;

अहिं आ प्रमाणे धामधूम थइ रही छे अने बद्रिकाश्रममां तप करता महात्मा कुंडमाल राजर्षिनी मनोवृत्ति पण श्री शंकरना चरणारविन्दमां एकाग्र थइ तपोबळथी कैलास शिखरने नृत्य कराववा लागी; श्री अजन्मा शंकरनुं ध्यान छूट्युं, नंदी तैयार करी शक्ति सहित कुंडमाल पासे पधार्या, तपमां आरूढ थयेल कुंडमाल राजर्षिना मस्तक उपर हाथ मूकी " वरं ब्रूहि " ए प्रमाणे उच्चार कर्यो, कुंडमाल राजर्षि ध्यानथी जागृत थइ शिवशक्तिना चरणकमलनो सप्रेम स्पर्श करी अति दीनताथी स्तुति करवा लाग्या; सर्वनुं शुभ करनार शंकर बोल्या के " हुं तारा उग्र तपथी बहु प्रसन्न थयो छुं माटे वरदान माग " कुंडमाले बीजो कांइ पण उच्चार नहि करतां चंडाक्ष अने चंडास्यना नाश करवा विषे वर माग्यो; शंकरे प्रसन्न वदने कह्युं के " तारी इच्छा प्रमाणे थशे, तारा हाथथी ए असुरोनो नाश थवो विकट छे पण हुं आ एक तने शक्ति आपुं छुं एनो अंत वखते उपयोग करजे, तारी दृढता अने धैर्य जोइ हुं बहु प्रसन्न थयो छुं माटे बीजो वर माग." महात्मा कुंडमाल उभय हस्त जोडी बोल्या के " प्रभु ! जो आप मारा उपर अति

प्रसन्न थया हो तो मारा कुळनो उत्कर्ष करवा माटे एक वखत आप मारा कुळमांज अवतार लेशो. शंकर सप्रेम "अस्तु" कही अदृश्य थया.

वरदान पामेल कुंडमालऋषि अंतःकरणथी ऋषिओना आश्रम तरफ चाल्या, राक्षसोने खबर पडतां म्होटा दमामथी बद्रिकाश्रम उपर चडी आव्या, ऋषिओ व्याकुळ अन्तःकरणथी कुंडमालने बताववा लाग्या के "जुओ! आ असुरो आव्या तेनो जल्दी नाश करो. कुंडमालऋषि पोतानां शस्त्र अस्त्र सज्ज करी मोटा शैलराजनी पेठे दृढ थइ एक पछी एक असुरोनो नाश करवा लाग्या, घणा असुरोनो नाश थवाथी बाकी रहेल असुरो भयभीत थइ भागी चंडाक्ष अने चंडास्यने शरणे गया. चंडाक्ष एक मनुष्यनुं अतुल पराक्रम सांभळी क्षोभ पाम्यो, अने हवे शुं करवुं? एम विचार करे छे तेटलामां अकस्मात् जळ अने अग्निनी वृष्टि थवा लागी. चंडाक्षे सभासदोने कह्युं के कोइ महान् पुरुष आवे छे माटे तमो तेने सामा जइ सन्मान पूर्वक बोलावी लावो, सभासदो सामा चाल्या, थोडे दूर जतां भेरी विगेरे रणवाद्योना अवाजो संभळावा लाग्या अने एक सिंहपर सवार थयेल, भयंकर स्वरुपवाळो मायावी असुर पोतानी म्होटी सेना साथे मायाकृत देशमां उतर्यो; सेनाने बाहेर राखी सामा लेवा गयेल सभासदोनी साथे पोते राज्यमहेलमां प्रवेश कर्यो; चंडाक्ष अने चंडास्यने प्रणाम करी उभो रह्यो; तेओए ए मायावी असुरने सन्मान साथे आसन उपर बेसवा आज्ञा आपी; अने कुशल खबर पूछया बाद आववानुं प्रयोजन सांभळवा आतुरता बतावी, जेथी ते बोल्यो के आपणा दानव कुळनो नाश करवा कटिबद्ध थयेल मार्कंडेयना पुत्रना समाचार मारा जाणवामां आव्या जेथी आपे नही बोलाव्या छतां एनो नाश करवा हुं आहीं हाजर थयो छुं, मात्रे आज्ञा आपो; चंडाक्षे समयने धन्यवाद आपी विना बोलाव्ये आवेल सिंहानन नामना असुरने कुंडमालने हराववा माटे जवा आज्ञा आपी, अने तेनी साथे जवा पोताना कनिष्ट बंधु चंडास्यने पण तैयार कर्यो.

चंडास्य अने सिंहानन म्होटी असुरोनी सेना साथे बद्रिकाश्रम तरफ जवा तैयार थया; प्रयाणनां वाद्यो वागवा लाग्यां; लडाइनो सामान अने आरामनां उपस्कर महान् मायाकृत वाहनो उपर लादवामां आव्यां; बधा असुरो मायाकृत नाना प्रकारना वाहनो पर सवार थइ पोत पोताना अभ्यस्त मायाना चमत्कार एक बीजाने बतावता बद्रिकाश्रमनी निकट पहोंच्या, ज्यां ऋषिमंडळ सहित महात्मा कुंडमालजी बेठा हता त्यां अकस्मात् प्रचंड पवन चालवा लाग्यो, तेमज अकाळे काळां

पीळां वादळो आकाश मार्गने ढांकवा लाग्यां, अने भयंकर शब्दो थवा लाग्या, जेथी ऋपिओ जाणी गया के फरी कोइ महान् आपत्ति आवी; त्यां तो अग्नि अने पापाणोनी वृष्टि करती असुर सेना निकट आवी पहोंची.

महात्मा कुंडमालजी ऋपिओने धैर्य आपता पोताना शस्त्र अस्त्रो असुर सेना पर चलाववा लाग्या; प्रथम सिंहानन पोतानी आसुरी मायाने प्रसारतो आकाशमां मेघ मंडलनी उपमाने धारतो कुंडमाल उपर चडी आव्यो अने प्रचंड अग्निगोलकनो प्रयोग करी कुंडमाल तेमज ऋपि मंडलने दुःख देवा लाग्यो. राजर्षि कुंडमाले तुरत वरुणास्त्रनो प्रयोग करी अग्निने शान्त कर्यो, ऋपि-मंडलने धैर्य आपी सिंहासनपर ब्रह्मास्त्रनो प्रयोग कर्यो जेथी सिंहानन सत्वर पंचत्वने प्राप्त थयो, असुर सेनामां " हाहाकार " थयो, अनंत उत्पातो थवा लाग्या, आ खबर चंडास्यने पडवाथी तुरत पोताना मायाकृत मयूर उपर चडी कुंडमाल सामे धसी आव्यो. उपरा उपर शस्त्र अस्त्रनो प्रयोग करवा लाग्यो. अने पोतानी आसुरी मायाथी म्होटा पहाडो कुंडमाल तेमज ऋपिओ उपर झुकाव्या, जेथी महात्मा कुंडमाल गभराया, ऋपिओए तुरत यादी आपी के शंकरनी आपेल शक्तिनो प्रयोग करो. आ सांभळी कुंडमाल राजर्षिए मनमां भोळानाथनुं ध्यान धरी शक्तिनुं आवाहन कर्युं अने असुर सेना तरफ फेंकी. सुसवाट करती प्रलयकाळनी विद्युत्नी पेठे शक्ति आकाश मार्गमां चाली नीकळी, अप्सरा करतां पण अधिक रुपवाळी ते शक्ति चंडास्यनी सन्मुख प्रगट थइ; ए सुन्दरीना नयन परम शोभायमान अने कटाक्ष बाण तुल्य हतां तेमज कंचुकीमां कसेलां पीन पयोधर अति मनोहर जणातां हतां, रणभूमिमां आवी स्थिर थया बाद ते सुन्दरी युद्ध करता चंडास्यने पोतानी समीपे आवेल जोइ कहेवा लागी के " अरे चंडास्य ! तारुं युद्धमां अतुल पराक्रम जोइ हुं देवांगना छतां तारा उपर मोहित थइ तने वरवा आवी छुं छतां तुं मारा सामुं पण जोतो नथी एथी हवे हुं जाउं छुं. " आ सांभळी चंडास्ये ए सुन्दरी तरफ दृष्टि करी, जोतां वेंत तेना कटाक्ष रुपी बाणथी ते घायल थइ गयो अने सुन्दरीनी समीप चाल्यो आव्यो, त्यारे सुन्दरीए पूछ्युं के कही दे, हवे तारी शी इच्छा छे? चंडास्ये कह्युं के " सुंदरी हुं तारा उपर मोहित थयो छुं, तारो भक्त अने दास छुं " " हुं तारे हाथे आववी कठिन छुं " एम बोली सुन्दरी हाथमां धारण करेल रत्न जडित्र पंखाथी तेने वायु ढोळवा लागी, ए वायुथी चंडास्य उन्मत्त जेवो बनी गयो अने विरहीनी पेठे वचनो उचारवा लाग्यो, ए जोइ सुंदरी पोताना विमानने उडाडती एक तरफ चाली त्यारे चंडास्य पुकार

करवा लाग्यो के " ओ पाषाण हृदयनी प्रमदा ! मने मृत तुल्य करी द्रग बाण हणी, बोल्या विना चित्त चोरी क्यां चाली गइ." इत्यादि घणी आधीनता पूर्वक ए सुन्दरीने पासे बोलावी पोतानुं मस्तक तेना पगो उपर मूकी एटलो बधो आसक्त थयो के युद्ध करवुं पण भूली गयो. ए वखते सुंदरी बोली के "हुं राजर्षि कुंडमालनुं शुभ इच्छनारी छुं, तुं मारा भक्तनी साथे युद्ध करीश तो हुं तने वरीश नही; माटे जो तारे मारी साथे प्रेम जोडवो होय तो सर्व सेनाने निवृत्त थवा आज्ञा आप अने तारी तमाम माया दूर कर." आ सांभळी चंडास्ये कांइक मंत्र भणी मायाने दूर करी अने सेनाने युद्ध बंध करवा आज्ञा आपी दीधी. माया दूर थतां कुंडमाल अने ऋषिओपर झुकेला पर्वतो कंकर थइ पृथ्वी उपर पड्या, अने सैन्यना तमाम योद्धाओ युद्ध छोडी चंडास्यनी समीप आव्या, अने सुन्दरीना मोहिनीस्वरुपने जोइ सर्वे मोहित थइ गया. मोहिनीरुपा शक्तिए चंडास्यने कह्युं के-" हुं तारा कार्यथी प्रसन्न थइ छुं छतां प्रेमनी विशेष कसोटी करवाने कहुं छुं के जो तुं मारो खरो प्रेमी हो तो तारुं माथुं मने विना विलंबे उतारी अर्पण कर." आ सांभळी प्रेमांध चंडास्य पोतानी ग्रीवा उपर खड्ग राखी बोल्यो के आजना दिवसने हुं धन्यवाद आपुं छुं के मारा चित्तनी चोर सामी उभी छे अने हुं मृत्युवश थाउं छुं." आटलुं कही जेवुं पोतानुं शिर कापवा जाय छे तेटलामां मोहिनीरुपा शक्तिए तेनो हाथ पकडी कह्युं के "जो तुं मरी जाइश तो आ मारा सुंदर स्वरुपनो भोक्ता कोण थशे? कारणके दुनियामां रसिक विना रसनो भाव पूछनार कोइ नथी; हवे हुं तारा साथे प्रेम करवा बंधाउं छुं पण तुं तारा ज्येष्ठ बंधु चंडाक्षनुं मस्तक छेदी मारी पासे जल्दी लइ आव अने ते मारा परम भक्त कुंडमाळने भेट आप, पछी मारी साथे आनंदपूर्वक रमण करजे; मोहिनी रुपा शक्तिनां वचनो सांभळतां वेंतज चंडास्य तथा तमाम असुरसेना "दोडो दोडो" ना पुकार करती पोतानो तमाम सरंजाम त्यांज छोडी मायाकृत देश तरफ चाली नीकळ्या अने पवनवेगे मायाकृत देशनी सीमा आगळ पहोंच्या; ज्यां चंडाक्षना हजारो भृत्यो चोकी उपर हता तेओए सर्वने रोक्या, जेथी मांहोमांहे महान् युद्ध मच्युं, अनंत असुरो कपाइ गया. म्होटो कोलाहल थयो, अग्नि अने पत्थरोनी वर्षा थवा लागी, प्रचंड पवन फुंकवा लाग्यो. आ बनावथी चंडाक्षे म्हेल उपर चडी जोयुं त्यां पोतानो कनिष्ठ बंधु पोतानीज सेनाने कापतो पोता तरफ आवतो देखायो. कपाळ उपर हाथ मुकी निश्वास नांखी पोतानी आसुरी माया तेमज अस्त्रशस्त्र सज्ज करी तेना सामे धस्यो, अने परस्पर दारुण युद्ध शरु थयुं, चंडाक्षे पोतानी तथा सामेनी तमाम सेनानो नाश थयो जोइ पोतानां प्राण बचाववा चंडास्य

उपर प्रचंड सांग फेंकी; जे चंडास्यना मर्म स्थानने भेदी पाताळमां पहोंची. कारी-घाथी व्यथित थया छतां स्रवते रुधिरे अति क्रोधावेशमां चंडास्ये चंडाक्ष उपर प्रचंड त्रिशूल फेंक्युं, जे चंडाक्षना हृदयघरने भेदी आकाशमार्गे चाली नीकळ्युं, बन्ने असुरो पृथ्वी उपर पडी गया, आसुरीमाया नाश पामी, आकाश स्वच्छ थयुं, देवताओ आकाशमार्गे विमानपर बेसी युद्ध जोता हता तेओए जय जयकारना पुकारथी गगन मंडल गजावी कुंडमाल तेमज ऋषिगण उपर पुष्पवृष्टि करी, मोहिनीरुपा शक्ति अष्टभुजा स्वरुप धारण करी चमकतां शस्त्रो अने किरीटथी भूषित थयेली कुंडमाल पासे आवी बोली के " वत्स ! हवे हुं तारुं शुं प्रिय करुं ? " कुंड-माल नमन करी बोल्या के मारा कुळनो उद्धार करवाने अर्थे कोइ काळे आप मारा वंशजोनी जनेता थजो. " शक्ति " अस्तु " कही अदृश्य थयां, सर्व ऋषिमंडले वेदमंत्रोथी कुंडमाल राज-र्षिने आशीर्वाद आप्यो अने कह्युं के आपे अमारां सर्व संकटो दूर कर्या छे अने हजी भविष्यमां आवनार संकटोने दूर करवा आप शक्तिमान छो, एटला माटे आजथी आपने चमत्कारपुरनुं म्होटुं राज्य अर्पण करीए छीए, जेथी तमो पोताना बाहुबळथी गौब्राह्मणनुं रक्षण सारी रीते करी शकशो. आ सांभळी महात्मा कुंडमालजी बोल्या के " मने राजवैभवनी इच्छा नथी, मात्र तपव्रत आदि करी इश्वर भजवानीज अभिलाषा छे. " आ रीते कुंडमालजीनां वचन सांभळी ऋषिओए कह्युं के जेम मद विना हाथी शोभतो नथी तेम राज विना क्षत्री शोभतो नथी, माटे तमारे अमारी आज्ञाथी राजपदवी स्वीकारवी पडशे. आ रीते ऋषिमंडळना आग्रहथी सविनय मस्तक नमावी कुंडमालजी " अस्तु " कही सर्वनी आज्ञा लइ चमत्कारपुर तरफ रवाना थया.

चमत्कारपुरमां ऋषिमंडळे वेदविधिथी वीरवर कुंडमालनो राज्याभिषेक कर्यो; त्यारबाद वृद्ध ऋषिओए राजर्षि कुंडमालना वंशनी वृद्धिनो विचार करी स्त्रीओना गुण दोषने जाणनारी एक वृद्ध ऋषिपत्नीने उक्त कार्यमां योजी. ए ऋषिपत्नी राजर्षि कुंडमाल माटे योग्य राजकन्या शोधवा लागी, घणी कन्याओ जोया बाद विवाह योग्य थयेली अने पतिनो पाणिग्रहण करवा आतुर थइ रहेली पुष्पमाला नामनी राजऋषिनी कन्या पोतानी दृष्टिने प्रिय लागी;

१—ते कन्या मुख कमल तरफ चालेली अलिमाला सरखी, छोनवी लीधेली कामभूपनी कृपाणरुप, अधरामृत चाखवाने चढेली नविन नागिणी समान, यमुनानी धारा तुल्य, पति नयन चातकोने वर्षानी यामिनी तुल्य सुख आपनार, रुप मसालना धूमरुप, कनकपाटी रुप पीठ उपर

पडती काजळनी धारा सरखी. श्रृंगाररसनी वल्लरी समान विराजनारी, सुखमानी श्रेणीरुप, स्वर्गनी सीडी समान सुशोभित, जाणे मेरुना शिखरपर राहु बेठो होय नहि शुं? आनन इन्दुथी नीकळेलुं कलंक वेठुं होय नहि शुं ? इत्यादि भ्रान्ति भरनार रेशम समान सुकोमळ, तमनी तरंगिणीरुप, तमालनी वल्लरी तुल्य, विधिए कलानिधिनुं कलंक निचोवी निर्मित करेली, ओपदार कामदेवनी तोपसरखी, कंचनना कदली दल उपर सूतेली साविणी समान, चांदनीनी पाछळ रहेला तम समूहतुल्य, नीलमणिथी बनावेली मन्मथनी निसरणीरुप लांबी अने सौरभयुक्त वेणीवाळी.

२—शोक रहित शृंगारलोक समान सुंदर, कनकना केदारतुल्य कमनीय, गंगाना पवित्र पुलिनरुप, सुहागनी सेजरुप, चन्द्रना भाग समान चारु, सुभाग्यनी सभारुप, अनंगना आसनरुप, सौन्दर्य सरसीमां खीलेला सरसिजना दल तुल्य दीप्तिवान्, सुकृतना समूहनी उत्पत्ति रुप, सुयशनी स्थली समान स्वच्छ, रसमंदिरना रमणीय अजीररुप, कल्पतरुनी छाया समान सर्व प्रकारना सुख आपनार, मोहिनीना शासनरुप, सौरभना वासणरुप, काम तुरंगने दोडवानी सपाट धरणी समान सुशोभित, कीर्तिना भंडाररुप, अनंगना अखाडारुप, शोभाना शृंगाररुप, यौवनना द्वाररुप, शरद्ना चन्द्र समान शीतलतायुक्त, सौन्दर्यना सिंहासन रुप, रसना सागररुप, प्रेमना पुलरुप अने काम कळा शीखवानी पाटीरुप विशाल भालवाळी.

३—निर्मळ कमळ पर वेठेला उभय भ्रमर समान, प्रेम रुपी तुलानी दांडी तुल्य, हाव-भावना वकीलरुप, पतिना मनने मोह पमाडनार, काम धनुष्यनी कमानरुप, आरसी उपर पांखो प्रसारी वेठेला अलिनी उपमाने धारण करनार, रुप सिन्धुमां विकासित नीलकमळ समान सुशोभित, चन्द्र मंडलमां प्रकाशेली शनिनी उभय रेखा तुल्य, रति नायकनी कुटिल कृपाणरुप, शशि मंड-लमां खेलता वालभुजंगनी भ्रान्तिने भरनार, नयन चातक पर आवी स्थिर थएली श्याम घननी घटा समान, शृंगार वेलीना उभय दल तुल्य, कमल पर वेठेली षट्पदनी पंक्ति समान, भाल रुपी कंचन भाजन पर राखेला नयनरुपी उभय दीपकथी नीकळती मेश तुल्य. सुहागना यंत्ररुप, अने अनुरागना मंत्ररुप, भव्य भ्रकुटीवाळी.

४—कंज, खंजन, मीन अने मृगना मदनुं गंजन करनार, आभादार, अजब, अनोखां, अणियाळां तीर समान तीक्ष्ण, चपला समान चंचळ, कर्ण पर्यन्त विशाळ, काम भूपतिना उभय बाळक रुप, अवलख रंगवाळा जेना उपर सुंदरतानुं जीन, काजळनुं श्रेष्ठ पाखर, लाजनी लगाम, कुटिल

भ्रकुटीनी कलगी अने चाहनी चाबुक धरेल छे एवा अने कटाक्षनी खरीवाळा मुखरुपी कंचननी थाळीमां नृत्य करता मदन महाराजाना उभय अश्वरुप, अनुराग वल्लरीना अंकुररुप, आनंदना मंदिरमां पडेली माणिक्यनी कान्ति समान कमनीय, चटकदार, रसथी भरेलां, दीर्घ, विधिए सुधाथी सुधारेलां, मणिनो मद उतारनार, पतिनुं मन रंजन करनार, काजळरुप कवच पहेरी, भ्रमररुपी धनुष्य ताणी, वांका अने सीधां निरखन रुप बे तलवार बांधी उभेला काम पातशाहना युगल सिपाही रुप, अमलतानां अंबुज तुल्य, चपलतामां खंजनतुल्य, छलतामां मीनतुल्य, प्रेमनो नियम निभाववामां चकोरतुल्य, डसवामां भ्रमरतुल्य, रुप सागरना युगल रत्नरुप, सुयशना केतु रुप, स्नेहथी भरेला मदन सदनना दीपकरुप, रसना प्यालारुप, स्मरना शररुप, ज्ञान अने ध्याननुं हरण करनार, वशीकरण मंत्रनी मूर्तिरुप, कामना रमकडांरुप, अमृतना आलय रुप, लाजना जहाज रुप. स्नेहनो मेह वरसावनार, कामदेवे छबिना पींजरामां पूरेला उभय खंजन समान खुबीदार काळां, कजराळां, लोहनी कटारी तुल्य ललित, राजिव समान रक्त, प्रदीप्त दीपक तुल्य, शोभाना समुद्रमां वडवानलनी आभाने धारण करनार, सुघडपणाना सदनरुप, प्रभाना पुंजरुप, लाजने वहन करनार, प्रमोदना पुरोहित, स्नेहना छडीदार, चित्तचाहना चक्रवर्ती, दयाना दिवान, पतिव्रताना प्रधान, नवरोजाना विधान रुप, मृगोना महाराजा, सफरीना शिरताज, सरोजना साहिब, मनोजना मुसाहिबरुप, मुख सुधानिधि मंडलमां अमृतना उभय कुंडरुप, शीलना सरदार, प्रेमपथना फोजदार, लाल, श्वेत अने श्याम वर्णने धारण करनार, नट समान नृत्य करनार, हाव भावना भव्य भंडाररुप, प्रवीणतारुपी पुतळीना रमणीय नगीनारुप अने पतिमनना दिव्य दूतरुप, कामनी कमानरुप, कुटिल भ्रकुटीमांथी नीकळता तीर समान तीक्ष्ण कटाक्षयुक्त निर्मळ नेत्रोवाळी.

५—विधिए शोभाने समेटी बनावेली उंची वेली समान, दीपकनी शिखा तुल्य द्युतिने धारण करनार, सुगन्धथी भरेली कल्पतरुनी कळी समान, तिलना पुष्प तुल्य, पंचशरना भाथां रुप; रुप समुद्रमां सुखनी सेतु समान सुशोभित, छबिना तरंगरुप, सुगंध श्वास आदि सिद्धिओनी गुफारुप, शुक चंचु समान सुंदर, चंपक कलिथी अधिक चारु, चन्द्रना खोळामां खेलता बुध समान, रुपना निधिने दीधेलां बे कुंचीना ताळां तुल्य, सरळ, कोमळ, अने नमणी नासिकावाळी.

६—कंचनना पत्र समान कमनीय, वारिजना दल समान विराजमान, उभय सुधाधर

समान सुशोभित, ज्ञानना भुवनरुप, पति वचनना उभय अतिथिरुप, नयनना मित्र, मुख शशिने मंत्राभ्यास करावना बेठेला सुरगुरु (बृहस्पति) अने असुरगुरु (शुक्राचार्य) समान, कपोल पर मुकेला सुंदर सुरद्रुमना सुमन तुल्य, चन्द्ररथना चक्ररुप, जेनी बरोबरी करवा छीप हजारो वर्ष थयां समुद्रमां शीत सहन करे छे, तेमज संगति पण शुद्धमां शुद्ध मुक्तानी राखे छे छतां हजी सुधी समता पामी शकी नथी एवा उत्तम पति गुणना आसनरुप, सरोजना सिंहासनरुप, स्नेह रसथी भरेला उभय पात्ररुप, सत्यासत्य तोळवानी तुलारुप, कपोल पर लपटी रहेला किंशुकना पत्र समान, प्रेमकथा रस पीवाना उभय कंचनना प्यालारुप, पति वचनोने स्नान करवानी वावडीरुप, शोभाना समुद्ररुप, काम यंत्रनी शाळारुप, स्वरुपनी ध्वजा समान, शशिने सहोदर जाणी मळवा आवेल छीपनी छविने धारण करनार, सुमेरुना शिखर पर चडेला शशिने वजाववानी झांझरुप, रागना आलयरुप, मंत्रना भव्य भंडाररुप, ज्ञानना विवररुप, श्रुतिना कमनीय कूपरुप, मनना मित्ररुप, रुप भूपना भुवनरुप, नयनना सचीव समान सुशोभित, कनकनी कचोरी तुल्य, हिम शिखरनी गुफाना वांका द्वाररुप, मन मंदिरना उभय झरोखारुप, अने पंचशरना फरकता निशान जेवा सुंदर श्रवणवाळी;

७--मदन महीपनी उभय आरसी समान अमूल्य, माखणना गोळा तुल्य, चन्द्र मंडळ समान प्रकाशमान, रुप समुद्रमां तरती पुष्ट रत्ननी माछलीओ समान सुशोभित, विधिए चांदीनी कली दइ बनावेली सुवर्ण शिला समान चमकदार, पतिना मनने विना मुल्ये खरीदनार, मनोजना अभिनव आसनरुप, स्फटिकना फरसरुप, सुखमानी सरसीरुप, केशर, चंदन अने गुलालने एकत्र करी विधिए बनावेला, नयनोरुपी नटने नाचवानी रंगभूमिरुप, अनंग वल्लरीने उगवाना शुभ्र क्षेत्ररुप, पतिना मन रुपी मल्लने खेलवाना अखाडारुप, मोह मंत्र साधवाना सुंदर स्थानरुप, कपूर अने कंदनी द्युतिने मंद करनार, रुपनी रसाना उभय खंड रुप, पतिना लोचन रुपी अश्वनी विहारस्थलीरुप, पतिना मनोरथरथने चालवानी सडकरुप, गोरा अने गोळ कपोलवाळी;

८—प्रीतमनी प्रगट प्रीतिनी प्रतीतिरुप प्रभाथी पूराएल, मदनना मनोहर बागनी आभाभरी गुलाब कळी समान, नारंगी तुल्य आम्र फळ समान, रुपना तळाव तुल्य, मध्य प्रदेशमां गहेरी, इन्दिराना मन्दिररुप, रतिमुख बनाववाने विधाताए थोडो भाग लइ लेवाथी मध्यमां खाडा पड्या होय नहि शुं ? एवी भ्रान्ति भरनार, कामदेवना राजसूययज्ञना कुंड समान, चन्द्रना

चरण समान चारु, कलधौत समान कमनीय अने कामरुपी रंगरेजने रंगणुं रंगवाना कुंडारुप मध्यथी उंडी अने पुष्ट चिबुकवाळी.

९—प्रभात अने संध्यानी अरुणता धारण करी मळेला तेरस अने द्वितीयाना युगल शशि समान सुशोभित, उष अने पीयूपथी अधिक मिठाशवाळा, कमल तुल्य कोमळ, बिम्ब फळथी अधिक अरुण, विद्रुमनी लालिमाने लज्जित करनार, सहज सुवासयुक्त, चन्द्र उपर मुकेला बंधुकना कुसुम तुल्य कमनीय, रसालना नवांकुर समान निर्मळ, मजीठने होडमां हरावनार, अनारनी कळी तुल्य अभिराम, अमीकूपना उभय किनारारुप, विधिए सर्व शोभाने समेटी बनावेला उज्वळ, मोहिनीरा धनुष्यरुप, चन्द्रनी मध्ये सिन्दूरथी काढेली उभय रेखा समान, बंधुजीवना बंधुरुप, रजो गुणना नायकरुप, अनुरागना प्रतिबिम्बरुप, जपा, गुलाल अने इंगुरनुं गुमान उतारनार अभिनव उभय ओष्ठवाळी;

१०—कमल कोशथी झरता मालतीनां पुष्प समान, पतिना मनने पहेरावत्रा माटे अगाउथी गुंथी राखेल कुसुमनी माळा तुल्य मनोहर, कलानिधिनी कळा तुल्य, चपलानी चारुताने धारण करनार, कमल कोशमां वसेली कमलाना आभूषणोनी ज्योति समान सुशोभित, पतिना चित्तने फसाववाना फांसा रुप, दर्पणमां पडना सूर्यना प्रकाश समान प्रभामय, ऋषिराजोनी तपश्चर्याना तेजरुप, वदन हिमालयथी प्रगट थती सुरसरिता समान शुभ्र, क्षीर सागरना तरंग तुल्य, प्रेम-तरुना अंकुरने सींची पल्लवित करनार, हीराना हाररुप, हंसनी पंक्ति समान, शारदानी साडी रुप, दीप मालिका समान द्युतिने धारण करनार, मीसरीनी मधुरताने लूंटी लेनार, खीलेली संध्या उपर पडेला सुधाकरना किरणो समान कमनीय, म्यानमांथी नीकळती सजेली तलवार तुल्य, खरता तेजस्वी तारा तुल्य, रुपेरी तार समान, पारद तुल्य प्रभावाळा; चन्द्रथी चोगुणी, चन्द्रिकाथी सो गुणी अने चंचलाथी हजार गुणी चारुताने धारण करनार मंद हास्यवाळी;

११—अनुरागनी ठकराणीरुप, रागनी राजधानीरुप, मयूर अने कोकिलाना अवाजने लज्जित करनारी, चातुरीनी मातारुप; माधुरीनी सखीरुप, सरस्वतीना निवासरुप, मीठाइथी भरेली, आनंद आपनारी, मुख चन्द्रथी स्रवती सुधानी धारा समान सुखदायिनी, सपत्नीना दिलमां दाह उपजावनारी, इक्षुरस अने पीयूष समान क्षुधाने टाळनारी, वीणा आदि वाद्योथी पण अधिक श्रेष्ठ, मुक्ता समान स्वच्छ अक्षरोनी उत्पत्तिरुप, सुधासागरनी ललित लहरी समान जाणे

कमलकोशमां पेसी भ्रमर गुंजारव करतो होय नहि शुं ? एवी भ्रान्ति भरनार, जेम स्वातिनां बिन्दु व्यालना वदनमां पडी विष, पपीहाना मुखमां पडी पीयूष, छीपना मुखमां पडी मोती अने कदलीना मुखमां पडी कपूर थाय छे तेम सपत्नीने श्रवणे पडी दुःख देनारी, सखीने श्रवणे पडी सुख देनारी, अने गुरुजनने गुणतुं भान करावनारी मृदु वाणीवाळी.

१२—षट्रसना स्वादनी परीक्षा करनारी, कोककला पढवानी पोथीरुप, नव रसनी भूमिरुप, मयंक तुल्य मुख संपुटमां रहेल प्रेमनी यन्त्रिका समान, शारदानी सेजरुप, सुखनी साहेली समान सुशोभित, मुखारविन्दमां निवास करी रहेली विधिनी वरांगनारुप वरदायिनी, सप्त स्वर सागरनी नौतम नौका समान, सुधारस पान करवानी पतूषी रुप, आगम निगम इतिहास पुराण अने व्याकरणनां वखाण करनार विदूषी रुप, गूढ ग्रन्थोनो प्रकाश करनारी, सर्वना मननुं सत्य असत्य कही आपनारी, यशनी गायिका जाणी विधिए सुधाथी सुधारेली, नाद वेदना भेदने उचारनारी, कमल कोशमां रहेला जपाना सुमन समान सुशोभित, इंगुर अने गुलालनी प्रभुताने पायमाल करनारी, तार विनानी वीणा समान निनाद करती, उत्तम उत्तम वार्ताओनी जनेता समान, रसोनी देवी रुप, सकल सुजाणतानी सुखदायक सखी रुप अने सुवासनी शय्या समान रमणीय रसनावाळी;

१३—विद्रुमना डव्वामां राखेल नविन मुक्ताफळरुप, कमलदलना मध्यमां बेठेली इन्द्रवधूनी पंक्ति समान, चमेलीनी कळी समान चमकदार, मणिना मुकुरमां पडेला सीकर समान, मयंकनी मध्ये सुधा सींची वावेली विद्युत्‌नी कलमो समान सुशोभित, दाडिमना दाणा तुल्य दीप्ति-वाळा, पद्मरागनी प्रभाने धारण करनार, कुन्दनी कळी तुल्य, जपाना पुष्प समान प्रफुल्लित, नहिं वींधेला मोती समान मनोहर, हीराओ समान हृदयने हरनार, हंसनां बच्चांओ तुल्य शुभ्र, यशना वीज रुप, तपोधनना मन समान विमल, अमृतनी कणिकाओ तुल्य, हास्य रसना रमणीय नगर रुप, चंद्र मंडलमा पडती ताराओनी झांइ तुल्य, जाणे वाणी पर प्रसन्न थइ विधिए वे सरवाळो मुक्ताहार पहेराव्यो होय नहि शुं ? द्विज (दांत–विप्र) नी राजि द्विजराज (चन्द्रमा) नी सेवा करती होय नहि शुं? इत्यादि भ्रान्ति भरनार, सुवर्णनी रेखा समान, मंगलना बालक तुल्य मनो-हर, जवाहिर तुल्य ज्योतिथी भरेला, चन्द्र मंडलमां नीकळेली हीरानी खाण समान खूबीदार, बत्रीश लक्षणनी मूर्ति रुप, शशि मंडलमां बेठेल सुरोनी सभा समान सुशोभित, सुंदर सोळ काळाना कटका करी बनावेल बत्रीश दांतवाळी;

१४—कमल, केतकी, चम्पक, चमेली, केसर, कपूर, कस्तूरी, अगर, गुलाब, जाइ, जुही, मालती अने मोगराथी अधिक, बारे मास भ्रमर समूहने वसंतनुं भान करावनार मुखवासवाळी;

१५—पतिना चक्षुचकोरने पूर्ण चन्द्र समान आनंद आपनार, अरविन्दनी आभाने अभिमान रहित करनार, सुखगाना सदनरुप, विधाता रुपी कारीगरे कंजथी कोमळता लइ, गुलाबथी सुगंध लइ, चन्द्रथी प्रकाश लइ, रतिथी रुप लइ, सुजाणथी चातुरी लइ, नवाणथी नीर लइ, सुवर्णथी सुरंग लइ; सुधानो स्वाद लइ अने आखी वसुधानुं मुख लुंटी बनावेल; जेनी बराबरी करवाने ब्रह्मा चंद्रबिम्ब तैयार करी पाछुं कटके कटके तोडे छे अने कटके कटके जोडे छे छतां हजी सुधी तुल्यता करी शकतुं नथी; जाणे प्रातःकाळे सरोवरमां कमळ खील्युं होय नहि शुं? सोनजुही उपर गुलाबनुं पुष्प खील्युं होय नहि शुं? इत्यादि भ्रान्ति भरनार, सप्तर्षिना यज्ञोनी सिद्धिरुप, दिनेशथी द्विगुण अने चन्द्रथी चार गणी कान्तिने धारण करनार, दर्पणथी अधिक अमल, ज्योतिथी आखी अवनिने प्रकाशित करनार; गज मुखने बंध करनार कंज, कंज मुखने बंध करनार चंद्र अने चंद्र मुखने बंध करनार मनोहर मंदहास्ययुक्त मुखवाळी;

१६—सप्त स्वर, त्रण ग्राम, श्रुति अने मूर्च्छनाना धामरुप, मुखरुपी चन्द्रमंडलना परम आधार रुप, अमित उज्वळ, शील अने शोभानी निवासभुमि, प्रियतमनी प्रीतिनी प्रतीति रुप, कम्बु समान कमनीय, जावकना रंगथी भरेली काचनी शीशी समान, सुखना सदन रुप, मुखकमळनी मनोहर नाळ तुल्य, कोकिला समान नाद करती, वीनना त्रण तार समान त्रण रेखाओने धारण करनारी अने कपोतना कंठ समान गोळ ग्रीवावाळी;

१७—दर्पण समान निर्मळ, कदलीना पत्र जेवी, पंचशरने प्रवीणता शीखवानी पाटी रुप, यौवनमंदिरनी भींत समान भव्य, यौवन महीपतिना सेवक कामदेवने रहेवाना स्थान रुप अने जमावेल कदली दलना गर्भ समान सुकोमळ पीठवाळी;

१८—प्रभातमां अरुण अरविन्दनी मध्य आनंदथी बेठेल इन्द्रगोपनी पंक्ति समान सुशोभित जाणे पद्मरागनी अंदर हीराओ जडया होय नहि शुं? कंज पत्रोपर सुधानां बिन्दुओ पडयां होय नहि शुं? अमीकुंडमां केलि करता तारा गण होय नहि शुं? इत्यादि भ्रान्ति भरनार दिव्य

दीप्तिना धामरुप, मदननी माळारुप, तेमज सपत्निने नखथी शिखा पर्यंत प्रज्वलित करनार निर्मळ नखोवाळी.

१९—चन्द्ररुपी करतलमां किरणोरुप वनी पतिना मनरुपी चकोरने स्वाधीन करनार कामदेवना कबजाना मोहन, स्तंभन, वशीकरण, उच्चाटन आदि गुणोने छिनवी लेनार, चम्पानी कलिकाओ समान सुशोभित, पंचशरना पांच शररुप, दिलने ललचावनार कल्पतरुनी सुंदर शाखाओ समान, सुगन्ध अने स्नेहना निवासरुप, कोमळ अने निर्मळ, दश चक्र चिह्नथी विराजित दीपकनी शिखाओ समान दीप्तिने धारण करनार अने रतिनी विजय लेखिनीरुप करनी अंगुलीओ वाळी.

२०—रुप सरोवरमां खीलेला सनाल कमलना पत्रो समान कमनीय, श्रावणनी संध्याए थता सूर्यना रंग तुल्य रक्त, सुहागनी साहिबीना ललित लेखयुक्त, उदय थता आदित्य समान अरुण, गुलाबनो गर्व गलित करनार, रिद्धि अने सिद्धिना निवासरुप, परम प्रकाशमान, पतिना चित्तने चोरनार, इंगुरनुं अभिमान उतारनार, लालिमाथी विद्रुम, दाडिम, जपा अने बिम्ब आदिने लजावनार, विधिए फारसी अक्षरमां लखेल पंचशरना प्रबंधरुप रेखाओथी रमणीय, लक्ष्मीनी स्थानरुप, मनोजरुपी रंगरेजे कमलदल उपर बांधेली चूनडी समान, कंचन तुल्य कलित अने माखण समान सुकोमळ करतलवाळी;

२१—सुधानी लहरी समान, तनरुपी घनमां दामिनीनी द्युतिने धारण करनार, कमलना मृणाल नाल समान सुकोमळ, पतिना मनने फसाववाना पास रुप, सपत्नी पासेथी सुहाग रुपी दंड लेवा विधिए अर्पण करेल उभय दंडरुप, कामकेलिनी लतिकारुप, मुख मयंकथी पीयूष पान पामवा दोडेला उभय उरग समान, सुवर्णना दंड तुल्य अखंड, सौन्दर्यथी भरेला, तन तरुवरनी उभय शाखारुप, अति निर्मळ मूळवाळा, अन्य मानिनीओना मुखने मलिन करनार, मदन महिपना विजय ध्वज समान सुशोभित, केसर, कनक, जुही अने चम्पाना रंगने लजावनार, गोळ अने गौर भुज दंडवाळी.

२२—कमल कोशनी वच्चे बेठेला भ्रमर समूह समान, कंचनना कलशपर धरेला मरकत मणिना ढांकणा तुल्य, शंकरना मुखमां रहेल हालाहलनी कोथळी समान, सुवर्णना बटवामां जडेल श्याम मणि तुल्य, लघु तन दनी रहेला तमोगुणरुप, जाणे अमीना कुंभ उपर अनंगे छाप

मारी होय नहि शुं? श्रीफळ उपर राखेली विपनी कणि समान जाणे कामदेवरुपी गवैयाए तन-रुपी तंबुरनो सुंदर स्वर मेळववा रोम राजिनो तार ताणवा खुंटीओ लगावी होय नहि शुं? जाणे रतिरणमां उभय सुभटोए शिर उपर लोष्टना टोप धारण कर्या होय नहि शुं? एवां श्याम तेमज अमीथी भरेल कनकना घडापर धरेला माणिकना ढांकणा समान सुशोभित, यौवन छत्रपति उपर धरेल सुवर्ण छत्र समान, शरद्‌ना घनमां उदय थती अरुणद्युति सरखां, स्फटिकना पहाड उपर प्रसरती सन्ध्यानी कान्तिने धारण करनार, गंगामां प्रवेश करता सरस्वतीना जळ समान सुशोभित, जाणे अंतरनो राग बाहेर प्रगट थयो होय नहि शुं? एवा लाल कुचाग्रवाळी;

२३—अरुण अनार तुल्य, सुंदर नारंगी समान, उंचां धरेलां नगारां सरखां, श्रीफळ समान कठिन, चक्रवाकना युग्म समान सुशोभित, मारना प्रतिहाररुप, कंज कोश समान कमनीय, टोपीदार तरबूच तुल्य, हिमालयना उभय शिखर समान उन्नत, कामदेवने खेलवाना गेंद रुप, सुरति समुद्रमां तरी विना प्रयासे पार पामवा छातीए बांधेल तुंबडा तुल्य, सुवर्णना कलश समान, गेंद, गुंमज, गिरि अने गजना कुंभस्थलनो गर्व गाळनार, मदनना घटरुप, प्रतिवर्ष वृद्धि पामता अनंगना अंगरुप, यौवन महीपनुं आगमन थतुं जाणी मदन फरासे ताणेला उभय तंबुरुप, तरुणता-रुपी तरुना सुंदर फळ समान, कामदेवना महेल उपर रहेला सुवर्णना कांगरा तुल्य, मेदानमां यौ-वन नरेशे गोठवेला निशानरुप, रुपनी नदीमांथी धीमे धीमे नीकळता मस्त गयंदसमान सुशोभित, सुमनना गुच्छा समान, द्युतिना दोणारुप, सुमेरुना शिखर समान उन्नत, अनंगे उंचा धरेला आ-सवना प्यालारुप, कमठनी पीठ समान पतिना उरने आनंददायक उरोजवाळी

२४—तन रुपी प्रयाग तीर्थमां त्रिवली रुपी त्रिवेणीने किनारे वेणीमाधवना मंदिर समान मनोहर, दर्शन करतां पतिनां नयनोने प्रमोद आपनार, सत्व, रज, अने तम ए त्रिरेखायुक्त विराजमान हृदयवाळी;

२५—कनकनी भूमि पर आळखेली मृगमदनी रेखा समान, उरोजरुप शैल मध्ये नीकळेली यमुनानी धारा तुल्य, नाभिकुंडमां जल पान करवा माटे हाथीए प्रसारेली सुंढ सरखी, जलधरनी एक धारा रुप; उरोज रुपी बन्ने राजाओए पोतपोताना भाग वेंची लीधा बाद स्थापेली सीमा रुप; अधर रस चाखवाने नाभिस्थलथी नीकळेली पिपीलिकानी पंक्ति तुल्य, यौवन रुपी वसंत ऋतुमां प्रफुल्लित अंग लताओने लपटी रहेला भ्रमर समान सुशोभित; जाणे पाछळ विलंबित वेणी आगळ

प्रतिबिम्बित थयेली होय नहि शुं ? एवी काळी, सुकुमार, पन्नगीनुं रुप धारण करनार, कंचनना कुंभ तुल्य उरोजथी नीकळती आसवनी धारा समान; हरना नेत्र हुताशनथी दग्ध थयेला कामदेवे नाभि सुधा कुंडमां स्नान कर्याथी आग बूझातां उठेला धूम समूह तुल्य, अनुरागनी रेल समान, मदनरुपी मतंगने पगे बांधेली सांकळ तुल्य; यंत्र, मंत्र, अने तंत्रना तार समान रोमावलिवाळी.

२६—शरीररुपी मेरुना मध्य भागमां मुकावेल कामदेवरुपी मस्त फकीरना नील वसनरुप, कनकनी शिला पर सूतेली सापिणी समान, मटेला मुग्धपणानी रेखारुप; पूर्वेनुं वैर विचारी शंकरना अंग शिथिल करवा कामदेवे सज्ज करेली सांग समान, कुचरुप विहंगना शिकार माटे ताणेली तुफंग तुल्य, यौवन सरोवरमां उगेली नविन वेली समान, पतिना नयनरुपी खंजनने बाधवानी रज्जु समान, काजळनी रेखा तुल्य, अन्धकारनी धारा सरखी, चिन्तामणिनी चोकी उपर नीलमणिना किरणोनी झांइ समान; कामदेवरुपी बागवाने वावेली शृंगार लतिका सरखी, उरोजरुपी हिंडोळे बांधेली मखतूलनी दोरी समान, अमृतना घडा उपर चडती पिपीलिकानी पंक्ति समान, तरल तरंगवाळी शृंगार रसनी सरिता तुल्य, सोनानी पट्टिका उपर लखेल मोहिनी मंत्रनी पत्रिका समान, बाजीगरनी बाजी तुल्य; केसरनी पृथ्वी उपर कामरुपी चोपदारे धारण करेली अबनूसनी छडी सरखी, हृदय घर छोडी भागी गयेली शिशुताना राहरुप रोमराजिवाळी;

२७—कोमल, विमल, कामदेवरुपी राजानी रंगभूमि समान, सपत्नीने सतावनार, शोभाना समूहरुप, उदय पामता आदित्यनी आभाने धारण करनार, मदन महीपने विराजवानी वेदिकारुप, मखमल समान नरम अने कृश; प्रभाना पारावार समान; किरतारनी कुदरतनुं भान करावनार, पतिना मनरुपी मृगने विलास करवाना रमणीय प्रदेश तुल्य रोमराजिथी विराजित उदरवाळी; पतिना मन रुपी हंसने बेसवा माटे रुप नदीना कान्तिमान किनारारुप, यौवन महीपें विजय मेळववा बांधेल मोरचानी मर्यादारुप; अति क्षीण कटि माथे कुचनो भार धारण करवा विधाताए बनावेल सुवर्णदामना बंध सरखी; सुवर्णनी सीढी समान सुशोभित त्रिवलीवाळी.

२८—रुप सरितानी भ्रमरी समान, जेमां बेसी काममुनि मोहिनी मंत्रनो जाप करे छे एवी शृंगार रसनी गुफारुप; आनंद भुवनना द्वाररुप; सुवर्णभूमिमां कीटे बनावेल छिद्र सरखी; पतिनी नेत्रकीकीओने रमवानी रंगभूमिरुप; स्वामीना मनभ्रमरने रहेवाना रसभग्नि रन्ध्ररुप; उरोजरुप किल्लामां जवानी खडकी समान, मन्मथनी मथनीरुप, किरतारनी लेख लखवानी दुवात

समान, सौन्दर्य ठगना अन्धारा कूप तुल्य, श्याम तमाल लताना क्यारारुप; व्यालना विवर समान; अति गंभीर सुशोभित कुंड सरखी; बाल्यावस्थाने छुपावाना भोंयरारुप: बत्रीश लक्षणनी शोभाना भंडार तुल्य; सौन्दर्य नगरमां काम नृपतिए बनावेल रसकूप सरखी, अमृतना तळाव तुल्य, कायाकिल्लाना मध्यमां निर्मित करेली तोप सरखी अने पंचशरना प्याला समान नाभिवाळी;

२९—सिंहनी कटिथी सूक्ष्म कमलनाल, तेथी सूक्ष्म नागवेल, तेथी सूक्ष्म दोरो, तेथी सूक्ष्मवाळ, तेथी सूक्ष्म तार अने तेथी सूक्ष्म मकरीतार तेनाथी पण सूक्ष्म जिह्वामां रहेल वाणी समान देहमां स्थित थएली;

ब्रह्मा बीजा अवयवो बनावी मध्य प्रदेश बनाववो भूली गयो होय नहि शुं ? अर्थात् अति सूक्ष्म भूतनी मीठाइ समान, साधुनी जुठाइ समान, शियाळनी ब्हादुरी तुल्य, धीरा नायिकाना हास्य समान, दासीना सुख समान, शूरवीरनी शंका समान, रंकना वित्तसमान, सूमना दान समान, मूढना ज्ञान समान, अने गोरीना मान समान अदृश्य कटिवाळी;

३०—जाणे कामदेवना मोरचाना वे बुरज होय नहि शुं ? रतिराजे रतिरणमा विजय मेळवी उभय नगारांने उंधा वाळ्यां होय नहिशुं ? गवैयाए गायन करी तंबुरने उलटा राख्या होय नहिशुं ? इत्यादि भ्रान्तिने भरनार, कामद्वारना चारु चोतरा समान, चक्रवाक तुल्य चारुताथी चित्तने चोरनार, चामीकरना चक्ररुप; प्रेमरंगथी भरेला सुवर्णना घट समान, प्रभाना पुंजरुप सर्व शोभाने समेटी अमित उपमाओने लपेटी विधिए व्हालथी बनावेला, कटि पश्चात् भागवाळी;

३१—कदलीना गर्भ समान सुकोमल, रतिराजने रमण करवानी सुंदर स्थलीरुप, गजराजनी सुंढ समान सुशोभित, जेनी समता पामवा कदली शिर उपर जटा धरी, मौन ग्रहण करी एक पगे उभी उभी हजी सुधी तप कर्या करे छे; रुपना अने रसना आसनरुप, स्मरना सिंहासन रुप, सपत्निना गर्वने गाळनार, समान ढाळवाळां अनंगना रथनी धरी समान, कल्पतरुनी उभयशाखा तुल्य, सदा प्रियतमने सुख आपनार, विद्युत्थी पण विशेष द्युतिवाळां, सुधारसथी भरेल शेरडीना सांठा समान, कामदेवना दंडरुप, पतिमनना अवलंबनरुप; कमलनाल तुल्य कमनीय; अन्य मानिनीओना मदने मुकावनार, सहज सौरभथी भरेलां, अनुरागथी फेलायेल प्रफुल्लित सुहागनी वेलीरुप; स्मरना भार्था समान; सुवर्णना स्तंभ तुल्य सघन जघनवाळी;

३२—विधाताए घनसारनो सार लइ केसर अने कनकनां चूर्णमां सुधा सलिल मिलावी बनावेली, रंभानी छवि छीनवी लेनारी, रंभाने कान्तिहीन करनारी कोमल अने अमल केतकीना दल समान पींडीओवाळी;

३३—प्रवालनी प्रभाने धारण करनार, उभय सूर्य समान सुशोभित गुलाबी गोरां गुल्फोवाळी;

३४—मृदु, मनोहर, गुलाबदल अने प्रवालथी अधिक आभायुक्त दाडिमना पुष्प समान रक्त, सपत्नीना सालरुप, राजस रंगवाळी. आनंद आपनार, रक्त कमल कोश समान, वशीकरण मंत्रनी गुटिकारुप; पतिना मननी वेडी समान एडीवाळी;

३५—जेनी उज्वळता जोइ चांदनी लज्जित थइ पृथ्वीपर लोटे छे, पद्मराग अने रत्नथी जडेल कुंदमां कुमकुमना बिन्दुओ समान शोभता मनने मोह पमाडनारा, दिलने वींधी आरपार जनार, दर्पण तुल्य निर्मळ द्युतिवाळा, कमलना दल उपर पडेला स्वातिना बिन्दुओनी शोभाने हरनारा, चंपानी कळीपर पडेला मुक्ताहारनी चारुताने परास्त करनार, कमलनी कलिका माथे पडेला गंगाजळना बिन्दुओनी आभाने अभिमान रहित करनार, अर्ध गुंजा तुल्य, चकोरना चक्षु समान चमकदार, चेटकना चिह्नरुप, कनकनी कणि समान अंगुलीओनी अणी उपर जडेला अमूल्य नगीना समान सुशोभितपदनखवाळी;

३६—विधिए सुधाकरनी कळाने जावकना रंगथी रंगी सुधाथी सुधारेली होय नहि शुं? शोभाना समुद्रमां विद्रुम लता समान विराजनारी, सीधी, सुंदर, सुशोभित, कंजनी कलिकाओ तुल्य कमनीय, शुभना सरोवररुप, पदपंकजरुपी भाथामां पंचशरना बाणनी पंक्ति होय नहि शुं? सघन, मनोहर, लांबी नहि तेम टुंकी पण नहि, परम प्रभामय पातळी, दर्पण समान द्युतिवाळा निर्मळ नखोने धारण करनारी, सपत्नीना शरणरुप, दश दिशाओनी देवीओरुप, जाणे दिग्पालोनी सुशोभित छडीओ होय नहि शुं? दश इन्द्रिओने बांधवाना यंत्रो समान, मननुं मथन करवामां रवैयारुप, कामदेवना मुकुटना कांगरा तुल्य दिलने लोभावनार, रुपनी परिसीमा, माखण समान चीकणी अने कोमळ, पतिना अनुरागने रहेवाना प्रकाशमान स्थानरुप, वर्णन करनार कविओनी मति पांगळी बनावनार पगनी आंगळीओवाळी;

३७—मान सरोवरमां उगेलां उभय अमल कमल समान कान्तिवाळां, जपा अने जाव-कनां रंगनुं अभिमान उतारनार; कल्पतरुना पल्लव समान विमल, भ्रम तमनो विनाश करनार भानुरुप, रतिपतिना मुकुटमां रहेल लाल मणि अने माणिक समान सुशोभित, लाखोना मनने लोभावनार, आंखोने अमित सुख आपनार, ललित, अनुपम, लाल जावक समेत सुमनना निकेत-रुप, महेंदीना रंगथी रंगेला निर्मळ नखोने धारण करनार, विराजमान, गज अने हंसनी गतिने लजावनार, कोमळता अने निर्मळतानी रंगभूमिरुप, शोभासदनना अभिनव आंगणा रुप, अरुण दल पर कोपेला सूर्य समान रक्त, राजिव गणना रजोगुणने जीती लेनार, पळेंपळें पतिना सनमां उद्भवेल पूर्वानुरागने प्रगट करता; विंब अने इन्द्रवधूना रंगने पराजय पमाडनार, स्वाभा-विक सुरंगवाळा; पृथ्वीपर विछावेल कमलनी पांखडीओ समान अरुणकान्तिवाळा; मखमल समान मनोहर पेशमाइदार, अति अरुणताथी मुग्धवधूओने दिवसे संध्यानी भ्रान्ति भरनार; शिशिर लताना किसलयोनी कान्तिने कबजे करनार; चांदनीना विछाना उपर मखमलना विछानानी द्युति दर्शावनार; गमन करतां आंगणाना स्फटिकबंधने विद्रुमतुल्य बनावनार; कमनीय किसलय उपर जामेला जपा पुष्पना परागनी प्रभाने धारण करनार; वीडाएल बंधूकना दल समान; सुवासना सागररुप,; पटीरना पल्लव समान; उन्नत अंगुष्ठवाळा; आभादार अंगुलीओवाळा; शोकना भालरुपी सिंहासनपर स्थिर थनार; खीलेला सुहागना बागरुप; इंगुरना रंग समान रक्त अने नूपु-रना झणकारथी शब्दायमान चरणोवाळी;

३८—सर्व सद्गुणसंपन्न, शिखाथी नख पर्यन्त सर्वांग सुंदरी पुष्पमाला सर्व रीते योग्य जणातां वृद्ध ऋषिपत्नीए ऋषिमंडलने वात करी. ऋषिमंडले तुरतज ए पुष्पमाला साथे राजर्षि कुंडमालनो अग्नि, सूर्य, ब्राह्मण अने वेदनी साक्षीथी विवाह कर्यो.

वर्षा ऋतुथी मयूर अने मयूरथी वर्षा ऋतु, पुष्पथी वसंत अने वसंतथी पुष्पो, राजाथी प्रजा अने प्रजाथी राजा, सुवर्णथी जवाहिर अने जवाहिरथी सुवर्ण, गीतथी कंठ अने कंठथी गीत, यामिनीथी चन्द्र अने चन्द्रथी यामिनी, कविथी काव्य अने काव्यथी कवि, पंकजथी तळाव अने तळावथी पंकज, विनयथी विद्या अने विद्याथी विनय; द्वारथी बंधनमाल अने बंधनमालथी द्वार, रंगोलीथी आंगणु अने आंगणाथी रंगोली, तांबुलथी मुख अने मुखथी तांबुल, जेम परस्पर उप-कारक बनी शोभे छे तेम राजर्षि कुंडमाल तथा सती पुष्पमाला शोभवा लाग्यां.

लग्नविधि थइ रह्या पछी वर कन्या वृद्ध ऋषिओने पदवंदन करी हाथ जोडी सविनय कहेवा लाग्यां के "महात्मन्! अमोने कांइ बोध करो."

ऋषिओ सप्रेम हर्षित वदने आशीर्वाद आपी बोल्या के-"तमारे बन्नेए निरंतर अन्योन्य प्रीतिथी वर्तन करवुं, देहांत लगी अन्योन्य उत्तम भाव प्रचलित राखवो, एक बीजाथी अलग थतां अन्योन्य अभावनी उत्पत्ति न थाय एवो यत्न करता रहेवुं, जे कुटुंबमां स्त्रीथी पुरुष अने पुरुषथी स्त्री प्रसन्न रहे छे ते कुटुंब कल्याण मेळवी वृद्धि पामे छे, पुरुष स्त्रीना तेम स्त्री पुरुषना सुखदुःखमां भाग लेनारी होवाथी अर्धांगना कहेवाय छे, ज्यां लगी पुरुष उद्वाहित थयो नथी त्यां लगी ते अर्ध गणाय छे. कारणके मात्र पुरुषथीज प्रजोत्पत्ति थती नथी, परंतु स्त्रीनो पाणिग्रहण कर्या बाद पूर्ण थइ प्रजोत्पत्ति करवा शक्तिमान् थाय छे; गृह गृह नथी पण स्त्रीज गृह छे, कारणके स्त्री रहित गृह जंगल समान जणाय छे; स्त्री धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष मेळववामां सहायभूत थनारी छे; विदेशमां विश्वासपात्र पण स्त्रीज छे; रोगार्त पुरुषने स्त्री समान एके औषध छेज नहि; पुरुषने स्त्री समान आखी दुनियामां अन्य कोइ साचुं सगुं नथी, एटला माटे तमारे धर्म, अर्थ अने काम संपादन करवामां एक अन्तःकरणथी तुल्य आचरण अने तुल्य वृत्तिथी वर्तवुं.

राजन्! पुरुषे स्त्री प्रत्ये केम वर्तवुं ते सांभळो. पुरुषने कांइ प्रयोजनने लइ विदेश जवानुं थाय तो तेणे पोतानी धर्म पत्नीना पोषण अर्थे प्रथम योग्य व्यवस्था करवी. सर्वत्र गमे तेवी सद्गुणी स्त्री होय छतां खानपाननी असगवडताने लीधे अवळे रस्ते दोराय छे; जे संभाळपूर्वक स्त्रीने दुराचारने मार्गे जतां रोके छे ते पुरुष पोतानी प्रजाने निष्कलंक राखे छे तथा पोतानां पवित्र चरित्रो प्रकाशमां लावी शके छे; कुटुंबनी आबरुनी वृद्धि करे छे. तेमज प्रसन्न मनथी स्वधर्म पाळी शके छे; द्रव्य साचववानां कार्यमां, स्नानविधिनां कार्यमां, धर्म संपादक कार्योनी व्यवस्थामां, पाक विधाननां कार्यमां अने घरना किम्मती वासण तेमज वस्त्राभूषण संभाळी राखवाना कार्यमां पुरुषे स्त्रीने योजवी.

आ प्रमाणे राजर्षि कुंडमालने शिक्षण आपी राजराणी पुष्पमाला तरफ मुख फेरवी कहेवा लाग्या के-जे स्त्री मरणपर्यंत पति साथे शुद्ध प्रेम राखी रहे छे ते स्त्री रमणीय रूप धरी सत्कारपात्र थइ सूर्य समान द्युतिवाळा स्वकीय मनभावनथी मळी उत्तम प्रजानी प्राप्ति करी शके छे,

स्त्रीए पतिथी जुदा यज्ञ, व्रत के उपवास आदि करवानी आवश्यकता नथी परंतु पति सेवाथीज ते अवर्णनीय स्वर्ग सुख पामे छे. स्त्रीए पति प्रत्ये श्रेष्ठ स्वभाव तथा उत्तम आचरण राखवां, मिष्ट वचन बोलवां, प्रसन्न मुख राखी पतिमांज चित्त परोववुं, पति स्त्रीने सेव्य देव छे. स्त्री तेनी सेवक छे, स्त्रीने संसारना सर्वस्वरुप परम दैवत प्राणनाथज छे. पतिसेवा विना स्त्रीए जप, तप, दान, व्रत, देवदर्शन के तीर्थ करवां ए बधुं वृथा छे; पतिसेवा विना श्रवण, मनन अने निदध्यास लेश पण कामनां नथी, पतिनां मनने संतुष्ट कर्या विना स्त्रीनुं कदी पण कल्याण थतुं नथी, पतिथी निष्कपट प्रेम जोड्या विना स्त्रीने परलोकमां तो सुख शानुं मळे किंतु आ लोकमां पण कोइ प्रकारना सुख वैभव भोगवी शकवा ते समर्थ थती नथी; वळी अति हास्य करनारी, परायां बाळकोने चुंबन करनारी, अन्य पुरुषने निरखी गमन करतां ठोकर खानारी, उन्नत अवाजे गायन करनारी, कान खंजोळनारी, कटि प्रदेशने लचकावनारी, शिर उपर वस्त्र नहि ओढनारी, हेतु विना हसनारी, विना प्रयोजन एकथी बीजाने घेर आथडनारी, पराया पुरुषने निहाळवा स्थिर थनारी अने सुयाणी आदि हलकी स्त्रीओ साथे मातृभाव राखनारी अबळा अधम गणाय छे. तेमज स्वातंत्र्य, पिता गृहवास, जनसमुदायमां तेमज उत्सवमां एकला जवुं, पर पुरुषनी संगाते गुप्त वार्ता करवी, कुळ मर्यादा छोडी वर्तन करवुं, पतिनुं विदेशगमन, निरंतर अधम स्त्रीओनो संग, खानपाननी तंगी, स्वामीनी वृद्धावस्था अने इच्छा मुजब अटन ए सर्व प्रमदाओने भ्रष्टताना भयानक कूपमां नांखनार छे; वळी सुरापान, दुर्जन संग, वल्लभनो वियोग, यथेच्छ फरवुं, वखत विना उंघवुं तथा पराया घरमां प्रवेश करवो ए छ दूषणवाळी स्त्री दुष्ट गणाय छे.

पुरुष करतां स्त्रीने बमणो आहार, चार गणी लाज, छ गणुं साहस, अने आठ गणो काम होय छे. पण तेमां असत्य, विना विचार्ये कार्य करवा सत्वर तैयार थवुं, कपट, मूर्खता, कृपणता, अपवित्रपणुं अने निर्दयपणुं ए स्त्रीओना सहज दूषणो छे.

केटलीएक अधम स्त्रीओ पतिने वश करवा माटे सोमवार आदि व्रत, उपवास आदि तप, मिलन वखते शरीरे सुगन्धि पदार्थोनुं लेपन तेमज मंत्र यंत्र आदि विधिना उपचारो करे छे पण ए सर्व व्यर्थ छे, पतितो मात्र सद्गुण अने शियळथीज वश थाय छे.

आ रीते पिता करतां विशेष प्यार राखनार वृद्ध ऋषिनां वचनो माथे चडावी सती पुष्पमाला पति प्रत्ये उत्तम वर्तन करवा लागी; स्वामी कुंडमाल सामे अहंकारथी के क्रोधथी कदि पण

सामुं बोलती नहि, पतिनो साद सांभळी हजार काम पडतां मेली सत्वर तेनी सेवामां हाजर थती, पति आंखने इसारे जे कांइ सूचना करता ते सर्व समजी तेनो उतावळथी अमल करती; स्वामीथी वधारे स्वरुपवान्, सद्गुणी, सुवेष, सबळ अने शूरवीर पुरुषोने तुच्छ गणवा लागी, पति करतां अमुक पुरुष उत्तम छे एम कदि पण मनमां न लावती, पति जम्या पहेलां कदि पण जमती नहि, स्वामीने उभा रहेला जोइ पोते पण सामे हाथ जोडी उभी रहेती. स्वामी बहारथी घेर आवता त्यारे तमाम घर काम त्यागी तेनी सामे जइ आसन नांखी बेसवा सविनय विज्ञप्ति करती, पति आसने विराज्या बाद तेओनी आगळ जलपात्र भरती, पति आनंदमां छे के विचारमां छे के चिन्तामां छे ? ते सर्व युक्तिथी जाणी प्रसंगोपात वार्तालापथी तेने संतुष्ट करती हती, घरनां वासण कुसण तथा अन्य साहित्यो निरंतर काळजीपूर्वक साफसुफ राखती; पतिनी इच्छा प्रमाणे हाथे रसोइ करी युक्तिथी जमाडती, धान्य आदि पदार्थो घरमां श्रेष्ठ रीते संभाळ पूर्वक साचवी राखती, कोइ स्त्रीने तिरस्कारनां वचन संभळावती नहि, गृहमां के गृह बहार परपुरुष साथे एकान्तमां कोइ दहाडो उभती नहि, कान्त विना अन्य साथे हास्य विनोद करती नहि, गमे तेवुं अगत्यनुं काम होय तो पण द्वारे हाथ लगाडी उभी रहेती नहि, कोइ वखत अति हास्य करती नहि, रोष अने क्रोधने अन्तःकरणमां कदि पण स्थान आपती नहि; पतिने परमेश्वरथी अधिक गणी आठे प्रहर शुद्ध मनथी सेवा करती, जे उपर स्वामीनी अरुचि होय तेने कदि पण आदर आपती नहि; तीर्थ, दान, तप अने व्रत करतां पतिभक्तिने विशेष मान आपवा लागी. पति जरा दूर जतां शरीरे चंदन आदि सुगन्धि लेप के पुष्प धारण करती नहि, पति बहार जती वखते जेवो खोराक लेवानी आज्ञा करी जता ते मुजब खोराक लइ नीतिथी वर्तन करती, मन, कर्म अने वचनथी पतिनेज परम गतिरुप मानती, पतिनी आज्ञानुसार अलंकार तथा वस्त्र धारण करती, सासु अने ससरानी स्वप्ने पण निन्दा न करती, सासु श्वश्रवती जे आज्ञा करतां ते माथे चडावी प्रेमपूर्वक तेनी सेवामां हाजर रहेती तथा तेना सामे कोइ दिवस ताणीने बोलती नहि. गृहमां दास दासीओ तेमज, तेनां नाम अने गुण तथा कोण क्या काममां योग्य छे ते सारी रीते समजती; स्वामीना आवक अने खर्चनी शी रीते व्यवस्था करवी ते तमाम बाबतमां पूर्णरीते कुशळता धरावती हती; स्वामी बहार जती वेळाए जे जे कार्य करी राखवा आज्ञा करी जता ते प्रथम करी पछी पोताना कार्यमां प्रवृत्त थती, स्वामीना आप्तवर्गने सारी रीते ओळखी आदर आपवा चूकती नहि, पति शयन कर्या बाद पोते शयन करी तेना उठ्या पहेलां हमेशां उठती तेमज कहेणी मुजब रहेणी राखती,

तथा स्वामीनी शुश्रूषा करी सर्व प्रकारनां सुख मेळवती; स्वामी कांइ काम सेवकने कहेता ते आडेथी पोते करी तेनी प्रियता प्राप्त करती, स्वामीए कहेली गुप्त वार्ताने कदि पण प्रकाशमां लावती नहि, माता पिता, विद्यादान देनार, विदुषी स्त्री अने पति प्रत्ये हमेशां गुरुभाव राखती. पतिप्रेम, पतिभक्ति, अने पतिदर्शनने अभ्यास तथा धर्म ध्यानथी अधिक मानती, दरेक प्रसंगे पतिनुं कार्य प्रसन्न चित्ते प्रथम बजावती, नित्य गृह खर्च नोंधी सांजे पतिने संभळावती, आवक करतां अधिक खर्च कदि पण करती नहि, स्वामीनी गेरहाजरीमां आवेल मिजमाननुं आदर जाळवी घरनी शक्ति मुजब सन्मान करती. घरमां रहेलुं धान्य बगडी के सडी न जाय तेनी पूरेपूरी संभाळ राखती, घरनां सर्व जमी रह्या बाद पोते जमती, परिधान के आभूषण बाबत पतिथी रिसाइ हठ के कंकाश कदि पण करती नहि, कदाच कांइ भूल थइ गइ होय तो तुरत कबुल करी पोते पति पासे क्षमा याचती हती, स्वामी के गृहनो गुप्त भेद कोइ पासे न कहेतां कोइने तेनी खबर पण न पडवा देती; आ प्रमाणे उत्तम व्यवहारथी वर्तन करती पुष्पमालाने गर्भ रह्यो अने ते गर्भ दिनप्रतिदिन वृद्धि पामवा लाग्यो; सती पुष्पमाला निरंतर प्रसन्न वदने स्वधर्म परायण रही अंदर अने बाहिर स्वच्छता राखी गर्भनुं संरक्षण करवा लागी. तेमज उत्तम वस्त्रालंकार धारण करी शृंगार सजवा लागी; दुष्ट स्त्रीओनी संगाते वार्तालाप, सुपडानो पवन लेवो, जेनां बाळक न जीवतां होय तेवी स्त्रीओ साथे बेसवा उठवानो प्रसंग, पारके घेर भोजन करवुं, लुखो, भारे अथवा वासी खोराक खावो, पंचमासीनी क्रिया कर्या बाद उग्र औषधो अथवा खार तेमज मैथुननुं सेवन करवुं, भार वहन करवो, अमंगळनी वाणी वदवी, अति हास्य करवुं, मुख चढाववुं, पाणीमां सर्वौषधि नांख्या सिवाय स्नान करवुं, वृक्षपर तेमज किल्लापर चढवुं, सागरमां प्रयाण करवुं अने उंडी खाइओनुं उल्लंघन करवुं " विगेरे गर्भवती स्त्रीओए नहि आचरवा लायक व्यवहारनो त्याग करी आनंदमां रहेवा लागी; पूर्ण मास थतां कंदर्प जेवा पुत्रनो जन्म थयो, ऋषिमंडलमां आनंदनो पार रह्यो नहि; बाळकने नाम करण विधिथी कमनीय " कामिक " नाम आपवामां आव्युं, मातपितानी कामनाओ पूर्ण करनार कामिक बालपणथीज उत्तम शीलवाळो जणावा लाग्यो.

महात्मा कुंडमालजी राज्यासन उपर विराज्या पछी राजनीति प्रमाणे राज्य कारभार चलाववा लाग्या. सौम्य स्वभाव राखी जीतेन्द्रियपणे प्रजानुं पालन करी वृद्ध, पंडित अने बुद्धिमान् मनुष्योनी सलाह लइ सर्व काम करता हता, निग्रह अने अनुग्रहथी उत्तम प्रकारे राज्यनी मर्यादा बांधी देश, दुर्ग, मित्र अने शत्रुओनी सेनामां पोताना दूत राखी वृद्धि अने क्षय जोता

हता; उपाय, दूत, मंत्र, पराक्रम निग्रह अने चतुराइ आदिथी सर्व प्रकारना कार्य सिद्ध करता तेमज साम, दाम, दंड अने भेद एमांथी एक अथवा सर्वेथी जेम बने तेम पोताना कार्य साधनमां तत्पर रहेता, जे वात मंत्रथी सिद्ध थवानी होय तेनो विचार प्रथम ब्राह्मणोथी करता तेमज ज्यां जेवा घटे तेवा दूतो मोकलता अने राखता, जे मंत्र गुप्त राखवानो होय तेनो विचार स्त्री, मूढ, बालक, लोभी, नीच अने उन्मत्त मनुष्योनी हाजरीमां कदि पण करता नहि, विद्वानो साथे मंत्र विचार करता, समर्थ मनुष्योने कार्य सोंपता, हितकारी पुरुषोने हाथे नीतिनो प्रबंध राख्यो हतो, मूर्खोथी कांइ पण काम न लेता, ज्यां धर्मनुं काम होय त्यां धर्मात्माने,धननुं काम होय त्यां पंडितोने, स्त्रीओनुं काम होय त्यां नपुंसकोने अने ज्यां क्रूर कर्म करवानां होय त्यां क्रूर मनुष्योने योजता हता. तेमज तमाम काममां कार्य अकार्यना निश्चयपूर्वक शत्रुओना बळ अबळने दूत अथवा लोभी पुरुषोद्वारा जाणता हता. तेमज मर्यादाहीन मनुष्योने दंड आपी शरणे आवेला उपर अनुग्रह करता हता.

आ रीते लांबा वखत सुधी राजकाज करी दिशाओना अन्त सुधी कीर्तिकेतु फरकावी छेवटे मोक्षनी इच्छाथी पोते राज्यकार्यभारनी उपाधिथी अळगा थइ इश्वर भजन करवा कृतनिश्चय थया; अने चमत्कारपुरनी गादी कुमार कामिकने आपी.

दशम तरंग.

" कुंडळीओ "
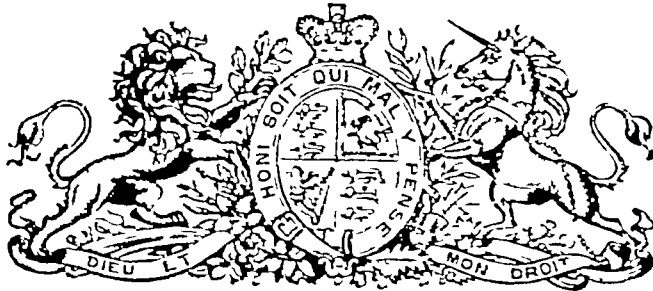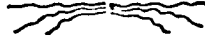
कुन्ते राक्षसनुं कर्युं, अलग बधुं अभिमान;
रक्षक ए ऋषिओ तणा, पाम्या पद मखवान;
पाम्या पद मखवान, भलुं जे सहुने भाव्युं;
निज नामे पुर नविन, श्रेष्ठ विधियुक्त वसाव्युं;
सुणो अमर ! इतिहास, खास पूर्वजनो खंते;
मेळवी जगमां महद, कीर्ति राजर्षि कुन्ते.

महात्मा कुंडमाल राजर्षि वेदोक्त विधिवत् गृहस्थाश्रम भोगवी राज्य व्यवहार तेमज कुटुंब आदिनो संबंध छोडी दश पुरमां तथा पुर बहार भोजन कराय छे तेनो तेमज वासणकुसण आदि तमाम संपत्तिनो त्याग करी पोतानी स्त्री सती पुष्पमाला साथे अरण्यमां एकान्तवासवाळा "वालसख्य" तीर्थमां अग्निहोत्र तेमज अग्निहोत्रमां उपयोगी यज्ञपात्रो आदि सरसामान सहित इन्द्रियोने नियममां राखी निवास करवा लाग्या, वेद अने शास्त्रोना अभ्यासमां निरंतर तत्पर रही शम, दम, पाळी शीत अने उष्णता सहन करी दरेक प्राणी उपर दया राखी उपकार करवा लाग्या. मनने नियममां राखी परमात्मानुं ध्यान धरी सर्वनो योग्य सत्कार करी कोइ आगळथी कांइ पण ग्रहण करता नहि, वानप्रस्थ धर्म पाळनारा अन्य विप्रो पासेथी केवळ प्राणाधार जेटली भिक्षा याची भोजन करता अथवा अन्य अरण्यमां निवास करी रहेला गृहस्थाश्रमी विप्रो पासेथी भिक्षा मागी लावता, आत्मस्वरुपनी संसिद्धि अर्थे वेद अने उपनिषद्मां कहेल अनेक रीतनी दिक्षाओ लइ आनंदथी वर्तवा लाग्या.

आम दीर्घकाळ सुधी आयुष्यना त्रीजा भाग पर्यन्त वानप्रस्थाश्रम पाळी अंतमां सती पुष्पमाला पासे सन्यस्त धारण करवा आज्ञा मागी. सतीधर्मना रहस्यने जाणनार सती पुष्प-

मालाए संसारथी विरक्त थएली पतिनी मनोवृत्तिने परखी अनुमोदन आप्युं जेथी महात्मा कुंडमालजीए चमत्कारपुरथी पुत्र कामिकने बोलावी तेओनी साथे पुष्पमालाने मोकली आप्यां, त्यार बाद पोते उत्तम गुरु पासे दिक्षा लइ पवित्र दंड कमंडलु धारण करी मुनिव्रत स्वीकारी रहेवा लाग्या, सन्यस्त ग्रहण कर्या बाद अग्नि तेमज गृहनो परित्याग करी केवळ भोजन अर्थे शहेरमां के गाममां जता आवता. देहमां व्याधि आदिनी दरकार न राखतां परमात्मामां वृत्तिने स्थिर करी जीवन मरणनी इच्छा नहि राखतां निर्मित काळनीज राह जोया करता, गमन करती वखते अस्थि के जीव जन्तुनी संभाळ राखी तेथी दूर स्वच्छ जमीन उपर चरण धरी चालता. जीवहिंसा न थाय एटला माटे वस्त्रथी गळ्या विना जलपान करता नहि. हृदयने पवित्र राखी सत्य वचनो उचारता, योगमां कहेल आसनपर स्थित थइ परब्रह्म प्राप्तिमांज प्रेम राखता, कोइ पण पदार्थनी अभिलाषा न राखतां मात्र आत्म सहायताथीज सुखलब्धिनी अभिलाषा राखी विश्वमां विचरता, शरीरना वाळ उतरावी नांखी, नख कपावी, श्मश्रु तथा मूछ उतरावी भोजन करवानुं पात्र, दंड अने कमंडलु निरंतर संगेज राखता, सदा ब्रह्मनिष्ठपणे कोइपण प्राणीने दुःखरुप थया विना फर्या करता. जितेन्द्रिय, राग द्वेष वार्जित अने अहिंसकपणे वर्तवा लाग्या, मनुष्य गमे ते आश्रममां स्थित होय तेमज स्वकीय आश्रमनां चिह्नो पण धारण न करता होय छतां तेओए तमाम प्राणी उपर समदृष्टि राखी पोताना सत्य धर्मनुं पालन करवुं, केमके सन्यस्तमां दंड, कमंडलु आदि चिह्नो छे ते धर्मनां सत्य कारण लेखातां नथी; किंतु शास्त्रमां कहेल धर्मनुं प्रतिपालन करवुं एज सत्य चिह्न छे. जेम निर्मळीनुं फळ जळने निर्मळ बनावे छे परंतु केवळ तेनुं नाम लेवाथी जळ निर्मळ थतुं नथी. जेम धातुओने वाह्निमां तपाववाथी तेनो मेल दूर थाय छे तेम प्राणायामनी क्रियाथी इन्द्रियोना दोषो दग्ध थइ जाय छे, एटला माटे पोते प्राणायाम पूर्वक रागद्वेषादि दोषोने दूर करी धैर्यथी परब्रह्ममां चित्तनुं स्थापन करी पापनो विनाश करवा लाग्या. प्रत्याहार करी विषयादि वासनाओने अलग करी एक ध्यानथी " हुं अविनाशी परब्रह्म छुं." एवा सजातीय ज्ञानवेगथी काम, क्रोध, लोभ आदि परब्रह्म स्वरुपने पिछाणवामां विघ्नरुप थनार दोषोने दूर करी उत्तम तथा अधम प्राणीओमां अन्तरात्मानी शी गति थाय छे अने शा कारणथी के जे अल्प मतिवाळा मनुष्यो अति श्रमथी समजी शके छे ते पण ध्यानयोगथी प्रत्यक्ष करवा लाग्या. जे मनुष्ये ब्रह्मनो सारी रीते साक्षात्कार करेल होय ते कदि पण कर्मना बंधनमां आवतो नथी, जेने उत्तम ब्रह्मज्ञान प्राप्त थतुं नथी तेओ अनंत योनिओमां आथड्या करे

छे, इत्यादि निश्चय करी पोते प्राणाधार अर्थे एक वखत भिक्षा लेता, तेमां पण यथेच्छ भोजन न करता; केमके मिष्ट भोजन जमवानी टेव पडी जवाथी सन्यासी विषयोना फंदामां फसाइ जाय छे.

विषयोमां अन्तःकरणपूर्वक दोष दृष्टि करी ते उपर अभाव लावता अने उभय लोकमां अवर्णनीय अविनाशी सुख आपनार परब्रह्मनी प्राप्ति अर्थे उद्यम करी उत्तम आयुष्य आनंदथी निर्गमन करवा लाग्या.

चमत्कारपुरना राज्यासन उपर बिराज्या पछी राजर्षि कामिकजी पोताने प्राप्त थएल गृहस्थाश्रमने शोभाववा माटे राजाओने योग्य कार्योनो विचार करता हता, परम प्रतापवान् कुंडमाल ऋषिए राज्यना बंदोवस्त माटे जे जे योजनाओ करी हती तेमां पुष्टि थाय तेवा उपायो हर वखते विचारता हता. पोताना राज्यनी सीमानां स्थानको खंडिआ राजाओनां राज्यो अने स्वतंत्र के जेमां पोतानीज आज्ञानुवर्ती प्रजा हती तेने कोइ रीते पराभव न थाय तेटला माटे बुद्धिमान् अमात्यने साथे राखी सरस सुखद अने शान्ति आपनारां साधनो सजता हता, जेथी आखा राज्यमां सर्व कोइ संपत्तिवान बनी आनंद वैभवमां विहार करवा लाग्या. आ प्रमाणे लांबो वखत राज कार्यभार चलाव्या बाद पोताने एक उत्तम लक्षणवान् पुत्र प्राप्त थयो, जेनुं नाम शास्त्रविधि प्रमाणे " वृषकेतु " राखवामां आव्युं.

वृषकेतु योग्य वयनो थतां तेने राज्यकारभार सोंपी राजर्षि कामिक पोताना पितृओथी चाल्यो आवतो परंपरानो धर्म पाळवा लाग्या.

वृषकेतुए लांबो वखत नीतिथी राज्य भोगव्युं अने कल्याण नामनो पुत्र राजकार्यभार चलाववाने योग्य थतां पोते पण पोताना पितानी पेठेज विश्रान्तिना आनन्दनो अनुभव करवा लाग्या.

राजर्षि कल्याण बहु नीतिवान् अने धर्मज्ञ होवाथी क्षात्र धर्मनी धुरा धारण करी देशविदेशमां कीर्तिकेतु फरकाववा लाग्या, लांबे काळे कुंत नामनो कुमार योग्य वयनो थतां तेने पोतानां पराक्रमी पितृओनी पद्धति प्रमाणे वर्तवा बोध करी पोते वानप्रस्थाश्रम स्वीकारी एकान्तवासनो आनन्द अनुभववा लाग्या.

जे समयमां कुंत ऋषिराज पोतानो नीतियुक्त राज्यकार्यभार चलावता हता तेज समयमां मायाकृत देशमां चंडास्यना वंशमां उत्पन्न थएल वक्रदंत नामनो असुर पोताना पितृओनुं वैर लेवा

आसुरी मायाना प्रयोग सिद्ध करवा रात्रि दिवस उद्योग कर्या करतो हतो, घणा वृद्ध असुरो तेने समजावता हता के महात्मा मार्कंडेयना वंशनी स्थिति छतां तारो करेल उद्योग सफळ नहि थाय. आ वृद्धनां वाक्योनो तिरस्कार करी पोतानी समान वयना अने समान बुद्धिना असुर वर्गने ऋषि-मख भंग करवानुं अनुमोदन आपी बद्रिकाश्रम उपर पोताना मायावीरुपथी चडाइ करी. घणाओ सूकरनां रुप धारण करी ऋषिओने पोषण माटे मळता कंदो तेमज फळ आपनारां वृक्षोनो नाश करवा लाग्या, केटलांएक भयंकर हिंसक प्राणीनां स्वरुप धारण करी ऋषिओनी यज्ञधेनुओनो वध करवा लाग्या, केटलाएक विष धारण करनार सर्प आदि प्राणीओनां स्वरुपथी ऋषिओनी पर्णकुटिमां प्रवेश करी डराववा लाग्या, केटलाएक अकाळ वर्षाथी ऋषिना यज्ञकुंडना अग्निने बुझावी नांखवा लाग्या अने केटलाएक पत्थर तेमज रुधिर मांस मज्जानी वर्षाथी ऋषिओने बहुज गभराववा लाग्या. बद्रिकाश्रममां मोटो कोलाहल थयो. आवा घणा उत्पातोना योगथी दैवज्ञ ऋषि-ओए विचार करी जोतां जाण्युं के चंडास्यना वंशमां उत्पन्न थएल वक्रदंत नामनो असुर आ सर्व पराभव करे छे अने तेना नाशने माटे अजरामर मार्कंडेयना वंशनी सहायता विना अन्यनुं कांइ बळ काममां आववानुं नथी, आम निश्चय करी ऋषिओमांना एक उत्तम दैवज्ञ ऋषिने चमत्कार-पुरप्रति रवाना कर्या.

दैवज्ञ ऋषि थोडा वखतमां चमत्कार पुर पहोंची गया, राजर्षि कुंते तेओने घणा मान-पूर्वक आवकार आपी अर्घ पाद्यथी पूजा करी उन्नत आसन उपर बेसार्या, आगमननो हेतु पूछतां आवेल ऋषिए बद्रिकाश्रममां बनती सर्व हकीकत निवेदन करी, राजर्षि कुंत हकीकत सांभळी कोपी उठेला प्रलयना अग्निनी पेठे असुररुपी काष्ठ वनने प्रजाळवा तैयार थया. दैवज्ञ ऋषिए शा-न्तिथी आश्वासन आपी युद्धमां पधारतां पहेलां करवा योग्य कार्यनो बोध कर्यो, जेथी राजर्षि कुन्त उत्तम करण, तिथि, वार, नक्षत्र अने मुहूर्तमां सुतारने साथे लइ वन प्रत्ये पधार्या.

बाग, देवालय, स्मशान, सर्पनी लांबी, मार्ग आदिमां उत्पन्न थएलां वृक्षोने तेमज वांका, उभां उभां सुकाइ गयेलां, कांटावाळां, जेना उपर वेलीओ चढी हती एवां वृक्षोने तथा एक वृक्षमां बीजुं वृक्ष उत्पन्न थयुं होय तेने, जेमां घणा पक्षीओना माळा होय तेमज कोटर होय तेने, पवनथी त्रुटी गयेलां अग्निथी बळी गयेलां अने स्त्रीलिंगे नामवाळां अर्थात् बदरी, सल्लकी आदि वृक्षोनो त्याग करी इन्द्रध्वज बनाववा माटे उत्तम एवा अर्जुन, अजकर्ण, प्रियक, धव, अने गूलर ए पांच वृक्ष हतां तेमांथी एक वृक्षनुं ग्रहण कर्युं.

कृष्ण वर्णनी भूमिमां उत्पन्न थएल वृक्षनी समीपे रात्री वखते राजर्षि कुंतना पुरोहिते जइ प्रथम एकान्तमां विधि पूर्वक तेनुं पूजन करी नीचेना मंत्रो भणी हाथथी तेनो स्पर्श कर्यो.

यानीह वृक्षे भूतानि तेभ्यः स्वस्ति नमोऽस्तुवः
उपहारं गृहीत्वेमं क्रियतां वासपर्ययः ॥
पार्थिव स्त्वां वरयते, स्वस्ति तेऽस्तु नगोत्तम,
ध्वजार्थं देवराजस्य पूजेयं प्रतिगृह्यनाम् ॥

प्रभात समये पूर्व तरफ मुख करी ए वृक्षने काप्युं. वृक्ष कापती वखते कुहाडानो जर्जर अशुभ शब्द नहि थतां शुभ एवो मधुर अने घाटो शब्द थयो, ते वृक्ष राजर्षि कुंतनो जय प्रदर्शित करतुं पडतां भांग्युं नहि तेम वांकु पण वळ्युं नहि, उत्तर दिशा तरफ पडयुं तेमज बीजा वृक्षनी साथे अथडायुं नहि, कारणके जे वृक्ष पडती वखते भांगी जाय, वांकु थइ जाय, पूर्व तथा उत्तर सिवायनी दिशामां पडे अथवा कोइ वृक्षना अग्र भागथी अथडातुं पडे तो ते इन्द्रध्वज बनाववा माटे ग्रहण न करवुं जोइए.

उपर मुजब कापेला वृक्षनी यष्टिने चार आंगळ आगळथी अने आठ आंगळ मूळथी कापी जळमां नांख्युं, पछी जळथी बाहेर काढी मनुष्योथी उपडावी नगरना दरवाजा पासे लाव्या. ए यष्टि गाडामां नांखीने पण लाववामां आवे छे परंतु जो गाडीना पैडानो आरो त्रुटी जाय तो राजानी सेनामां भंग थाय छे, पैडानी नेमी त्रुटी जाय तो सेनानो नाश, धरी भांगी जाय तो धननो क्षय अने धरीना अग्र भागमां जे खीलो मारेलो होय छे ते त्रुटी जाय तो सुतारनो विनाश थाय छे.

भादरवा शुदि अष्टमीने दिवसे जेओए उत्तम वस्त्रो अने आभूषण पहेर्यां छे एवा नगरना लोको, ज्योतिषी, मंत्री, कंचुकी अने ब्राह्मण आदिथीयुक्त राजर्षि कुंते नविन वस्त्रमां वींटेली पुष्पमाला अने गंध धूपथी पूजेली ते यष्टिनो लोको सहित नगरमां प्रवेश कराव्यो, प्रवेश वखते शंख तुरी आदि अनेक प्रकारनां वाद्यो वागवा लाग्यां.

नगर पण सुंदर पताका तोरण अने पत्र पुष्पोनी माळाओथी शणगारवामां आव्युं हतुं. सर्व मनुष्यो प्रसन्न हतां, वधा रस्ता स्वच्छ अने सुशोभित करवामां आव्या हता. वेश्याओ

सुंदर वस्त्र अने अलंकारोथी विभूषित थएली हती, तमाम दुकानो सज्ज राखवामां आवी हती, घणाज पुण्याहवाचन अने वेदना शब्दो थवा लाग्या. नट लोको, नृत्य करनाराओ अने गायकोथी चौटा भराइ गया.

नगरमां श्वेत अने चित्ररंगनी पताकाओ राखवामां आवी हती कारणके पीळा रंगनी पताका रोग उत्पन्न करे छे. अने लाल रंगनी पताकाथी शस्त्रकोप अर्थात् युद्ध थाय छे.

इन्द्रध्वज अर्थे प्राप्त करेली यष्टिने बहुज सावचेतीथी नगरमां लइ जवामां आवी, कारण के नगरमां यष्टि प्रवेश वखते कोइ हाथी, महिष आदि जीव यष्टिने पाडी दे तो भय उत्पन्न थाय छे, बाळको पोतपोताना बन्ने हाथथी शब्द करे अर्थात् ताळीओ पाडे तो युद्ध थाय छे अने गाय आदि जीव युद्ध करे तो पण युद्ध थाय छे.

सुतारे ए यष्टिने छोली यंत्रपर चढावी अने यष्टिने निमित्त दैवज्ञ ऋषिनी आज्ञा मुजब राजर्षि कुंते एकादशीने रोज नगरमां जागरण कराव्युं, पुरोहिते श्वेत रंगनी पाघडी बांधी इन्द्र अने विष्णुनामंत्रथीहवन कर्यो तेमज राजज्योतिषीए अग्निनां शुभाशुभ लक्षण जोयां; राजज्योतिषी सारी रीते जाणता हता जे इष्ट अर्थात् मनोहर वस्तुना आकारनो, सुगन्ध युक्त, स्निग्ध अने ज्वाळाओथी युक्तअग्नि होय तो शुभ फळ आपे छे अने एथी विपरीत रुप होय तो अशुभ गणाय छे.

पूर्णाहुति आपती वखते उज्वळ ज्वालाओथी युक्त जे अग्नि स्निग्ध तेमज दक्षिण तरफ गमन करनारी ज्वालावाळो होय तो ते पृथ्वी राजाने तावे करी देछे.

सुवर्ण अशोक पुष्प, कुरंटक पुष्पो, कमल, वैदूर्य अने नील कमल तुल्य अग्निनो वर्ण होय तो राजाना गृहमां रत्नोना किरणोथी नष्ट थएलो अंधकार अवकाश पामी शकतो नथी अर्थात् अग्निनो उपर प्रमाणे रंग होय तो राजाने घणा रत्नोनो लाभ थाय छे.

ध्वजा, घट, घोडा, हाथी अने पर्वत तुल्य अग्निनो आकार होय तो उदयाचल अने अस्ताचलने धारण करनारी तेमज हिमाचल अने विन्ध्याचलरुपी स्तनवाळी भूमि राजाने वश थइ जाय छे.

हाथीनो मद, भूमि, कमल पुष्प, धान्यना फोतरां, घृत अने मध समान अग्निमां गंध आवे तो राजा ज्यां बेठेल होय तेना आगळनी भूमि प्रणाम करता राजाओना मुकुटमणिना किरणोथी रंगाइ जाय छे अर्थात् अन्य सर्व राजाओ ए राजाने प्रणाम करे छे.

इन्द्रध्वज उठावती वखते आ जे अग्निना रुपथी शुभ अशुभ फळ कह्यां ते तमाम जन्म समये यज्ञ, ग्रहशान्ति, यात्रा अने विवाह वखते जे होमनो अग्नि होय तेनाथी पण जाणी शकाय छे.

मालपुआ अने खीरआदिथी तेमज दक्षिणाथी ब्राह्मणोनी पूजा करी श्रवण नक्षत्रयुक्त भादरवा शुद द्वादशीने दिवसे इन्द्रध्वजने उभो कर्यो; श्रवण नक्षत्र न होय तोपण द्वादशीने दिवसे इन्द्रध्वजने उभो कराय छे.

मनु महाराज एम कहे छे के इन्द्रध्वजनुं विधान जाणवावाळा पुरुष सात अथवा पांच शक्र-कुमारी वनावे; तेनां नाम अने प्रमाण नीचे मुजव छे.

ध्वज जेटलो उंचो होय तेनाथी चतुर्थांश जेटली नंदा अने अर्ध जेटली उपनन्दा नामनी शक्रकुमारी वनावे; नंदाना प्रमाणमां तेना सोळमा भागथी अधिक जया अने उपनन्दाना प्रमाणमां तेना सोळमा भागथी अधिक विजया, जयाना प्रमाणथी षोडशांश अधिक एक वसुंधरा अने विजयाना प्रमाणथी षोडशांश अधिक वीजी वसुंधरा वनावे, छ तो ए थइ अने सातमी इन्द्रमाता ते वीजी वसुंधराना प्रमाणथी अष्टमांश आधिक वनावे.

राजर्षि कुन्ते पण उपर मुजव सात शक्रकुमारी वनावी. प्रथम रक्त अशोकपुष्पना रंग-नुं चतुष्कोण आभूषण विश्वकर्माए इन्द्रध्वजने आप्युं हतुं, ब्रह्मा अने शिवजीए अनेक रंगनी कांची-रुप वीजुं भूषण, इन्द्रे अष्टकोण अने नीला रंगनुं त्रीजुं भूषण, यमराजे काळा रंगनुं अने कान्तियुक्त मसूरक नामे चोथुं भूषण, वरुणे लाल रंगनुं षट्कोण, अने जळना तरंग समान पांचमुं भूषण, वायुए मेघ समान नीलवर्ण अने मोरनी पांखोनुं वनावेल केयूर नामे छठ्ठं आभूषण, स्वामी कार्तिकेये अनेक रंगनुं पोतानुं केयूर सातमुं भूषण, अग्निए पोतानी ज्वालासमान रंगनुं अने गोळ आठमुं आभूषण, चन्द्रमाए वैदूर्य मणितुल्य कान्तिवाळुं ग्रैवेयक नामे नवमुं भूषण, त्वष्टानामी आदित्ये रथचक्रना आकारनुं अने प्रभायुक्त दशमुं आभूषण, विश्वेदेवाए कमलपुष्पतुल्य उद्वंश नामे अग्यारमुं आभूषण, मुनिओए नील-कमलतुल्य कान्तियुक्त निवंश नामे वारमुं भूषण आप्युं हतुं, अने बृहस्पति तथा शुक्रे कांइ नीचे उपर वनावेलुं उपरथी विशाल तेमज लाक्षा रस तुल्य रक्तवर्णनुं तेरमुं आभूषण इन्द्रध्वजना मस्तक उपर चढाव्युं हतुं.

पूर्वे देवताओए प्रसन्न थइ उपर मुजब जे आभूषणो इन्द्रध्वजने माटे बनाव्यां हतां ते सर्व विचित्ररुप पिटकनामे भूषण राजर्षि कुंते इन्द्रध्वजने धारण कराव्यां.

इन्द्रध्वजने माटे जे जे भूषण जे जे देवताओए बनाव्यां तेना अधिपति पण ते ते देवताओने जाणवा.

ध्वजप्रमाणना तृतीयांश जेटली परिधि प्रथम पिटक अर्थात् भूषणनी बनावी, प्रथम पिटकनी परिधिना प्रमाणथी अष्टमांश न्यून करी बीजा पिटकनी परिधिनुं प्रमाण सिद्ध कर्युं. ए रीते आगला आगला पिटकनी परिधिना प्रमाणथी अष्टमांश घटाडी तमाम पिटकनी परिधिनुं प्रमाण कर्युं.

शास्त्रने जाणनार राजर्षि कुंते अष्टमीथी चोथे दिवसे अर्थात् एकादशीने दिवसे पिटकोथी इन्द्रध्वजने पूर्ण कर्यो अर्थात् सर्व भूषण इन्द्रध्वजने पहेराव्यां अने पोते नीचे मुजब मंत्रोनो पवित्रपणे पाठ करवा लाग्या.

हरार्क वैवस्वत शक्रसोमैर्धनेशवैश्वानरपाशभृद्भिः। महर्षिसंघैः सदिगप्सरोभिः शुक्राऽङ्गिरः स्कन्द मरुद्गणै श्च ॥ यथा त्वमूर्जस्करनैकरूपैः समाचित स्त्वाभरणैरुदारैः। तथेह तान्याभरणानि देव शुभानि संप्रीतमना गृहाण ॥ अजोऽव्ययः शाश्वत एकरूपो विष्णु र्वराहः पुरुषः पुराणः। त्वमन्तकः सर्व हरः कृशानुः सहस्र शीर्षा शतमन्युरीड्यः ॥ कविं सप्तजिह्वं त्रातारमिन्द्रमवितारं सुरेशम्। ह्वयामि शक्रं वृत्रहणं सुषेण मस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु ॥

आ मंत्रोनो इन्द्रध्वजने पिटको धरावती वखते, इन्द्रध्वज उठावती वखते, नगरमां प्रवेश करावती वखते, स्नान करावती वखते, पुष्प चढावती वखते अने विसर्जन समये उपवास करी पाठ कराय छे.

छत्र, ध्वजा, दर्पण, फल, अर्धचन्द्र, अनेक प्रकारनी माळा, केळना अने इक्षुना दंड, काष्टना सर्प, सिंह, पिटक अने गवाक्ष अर्थात् झरोखा ए सर्व काष्टनां बनावी, इन्द्रध्वजनी आठे

दिशाओमां आठ दिग्पालोनी मूर्ति बनावी, आठे दिशाओमां आठ द्रढ रज्जु बांधी तेनी सहायताथी इन्द्रध्वजने उभो कर्यो, बन्ने तरफ आधारने माटे बहुज द्रढ काष्ठनी वे मातृका लगावी तेमज पाद तोरणमां यंत्रना अर्गलने द्रढताथी लगाव्यो अने सारवान् काष्ठनी घडेली अखंडित शक्रकुमारिका बनावी. इन्द्रध्वजने बरोबर स्थित कर्यो, लोकोमां मांगलिक, आशीर्वादात्मक अने प्रणामयुक्त शब्दो थवा लाग्या, सुंदर ढोल, मृदंग, शंख अने भेरी आदि वाद्यो वागवा लाग्यां. ब्राह्मणो वेदनो पाठ करवा लाग्या ते वखत क्याइथी पण अमंगळनो शब्द संभळातो नहोतो.

फळ; दधि, घृत, लाजा, मध अने पुष्पो हाथमां लइ शिर झुकावता तेमज स्तुति करता नगरना लोकोथी चारे तरफ घेराएला राजर्षि कुंते इन्द्रध्वजने उभो करी वक्रदंत आदि असुरोना वधने अर्थे मायाकृत देश तरफ कांइक नमतो राख्यो अर्थात् इन्द्रध्वजनो अग्र भाग शत्रुना शहेर तरफ झुकाव्यो.

आ क्रिया बहुज संभाळथी करवामां आवी कारणके बहु धीरे नहि तेम बहु उतावळथी पण नहि अने निष्कंप इन्द्रध्वज उभो करवामां आवे अने उभो करती वखते तेनां माळा अने पिटक आदि भूषण नीकळी न पडे तो शुभ थाय छे अने एथी विपरीत बने तो राजानुं अशुभ थाय छे. अशुभ फळने राज्य पुरोहित शान्तिथी निवृत्त करी शके छे.

इन्द्रध्वज उपर क्रव्याद अर्थात् मांस खावावाळा गीध आदि पक्षी तेमज उलूक, कपोत, काक अने वंक (एक जातनुं पक्षी जेनां पींछां बाणनी पछवाडे नंखाय छे ते) बेसे तो राजाने महान् भय थाय छे. चाप पक्षी बेसे तो युवराजने भय थाय छे अने श्येन इन्द्रध्वज उपर पडे तो नेत्र रोग थाय छे.

इन्द्रध्वजनुं उपरनुं छत्र त्रुटी जाय अथवा पडी जाय तो राजानुं मृत्यु, इन्द्रध्वजमां मधपुडो बंधाय तो प्रजामां चोरोनो उपद्रव, इन्द्रध्वज उपर उल्का पडे तो राजाना पुरोहितनुं मृत्यु अने अशनि पडे तो राजानी मुख्य राणीनुं मृत्यु थाय छे. इन्द्रध्वजनी पताका पडी जाय तो राणीनो विनाश थाय छे, पिटकना पडवाथी वर्षा थती नथी, इन्द्रध्वजनो मध्यभाग भांगे तो मंत्री, अग्रभाग त्रुटे तो राजा अने मूळ भाग त्रुटे तो नगरना लोक विनाश पामे छे.

जो इन्द्रध्वजने धूम्र घेरी लीए तो प्रजामां अग्निनो भय थायछे, इन्द्रध्वज उपर लगा-

वेला काष्ठना सर्प त्रुटी जाय अथवा नीचे पडी जाय तो मंत्रीओनो क्षय थायछे, इन्द्रध्वजनी उत्तर आदि चार दिशामां कांइ उत्पात थाय तो क्रमथी ब्राह्मण आदि चार वर्णोने पीडा प्राप्त थाय छे, अने शक्रकुमारी त्रुटी जाय तो व्यभिचारिणी स्त्रीओनुं मृत्यु थाय छे.

इन्द्रध्वज उठावती वखते एना दोरडां क्यांइ अटकी जाय अथवा त्रुटी जाय तो बाळकोने पीडा थाय छे, मातृका अर्थात् तोरणनी पडखे रहेल काष्ठनो भंग थवाथी राजानी माताने पीडा थाय छे;

इन्द्रध्वजनी समीपे बाळक अथवा चारण जेवी चेष्टा करे ते अनुसार आगळ उपर शुभाशुभ फळ थाय छे.

राजर्षि कुन्ते शुभ लक्षणोथी शुभ फळ आपनार इन्द्रध्वजने चार दिवस उभो राख्यो अने ए चारे दिवस तेनुं निरंतर पूजन कराव्युं, पांचमे दिवस पण उत्तम रीते पूजन करी पोताना मंत्री आदि सर्व परिकर सहित पोताना बळनी वृद्धिने अर्थे ए इन्द्रध्वजनुं विसर्जन कर्युं. त्यारबाद कुन्तराजर्षि बद्रिकाश्रम तरफ जवा उद्योग करी रह्या हता तेवामां मार्गना श्रमथी धूसरित शरीरवाळा तृषा अने सूर्यना तापथी सुकाइ गयेल ओष्ठवाळा बद्रिकाश्रममां वसनारा घणा ऋषिओ सभामां प्रवेश करी आशीर्वाद आपी उभा रह्या अने हाल पूछतां कहेवा लाग्या के "अमने सर्वने वक्रदंते महा परिताप पमाडी बद्रिकाश्रमथी बाहेर काढी मुक्या छे अने तेओ बद्रिकाश्रमना उत्तुंग पहाड उपर पोताना माया बळथी नविन शहेर अने बाग बगीचाओ बनावी निश्चितपणे विहार करे छे. ऋषिओनी पवित्र पर्णकुटीओनुं नाम निशान रहेवा दीधुं नथी, पवित्र स्थानोमां तथा अग्निकुंडनी जगोए अनंत अधम कर्मो आचरे छे, अमने तपोधनने मार्कंडेयना वंश सिवाय आ वखते कोइनो आधार नथी, माटे कृपा करी जल्दी पधारो अने असुरोनो नाश करी अभय आपो.

ऋषिओनां दीन वचन साभळतांज राजर्षि कुंतनां शरीरनां रोम खडां थइ गयां, अधर तथा बाहु फरकवा लाग्या; तुरतज सेनापतिने हुकम मळतां सेना तैयार थइ, सर्व शूरवीरो पोतानां अस्त्र शस्त्र सजी वाहनोपर बिराजवा लाग्या, तुरंगोना तीव्र अवाजथी गगनमंडळ गाजवा लाग्युं, सेना पेदल अने स्वारो भिन्न भिन्न रीते प्रयाण करवा लाग्या; डेरा, तंबूओ तेमज युद्धनो उपयोगी सामान म्होटां म्होटां वाहनोपर लादवामां आव्यो; महाराजाधिराजश्री कुंत राजर्षि शुभ

शकुन जोइ पोताना युवराजश्री धवलकुमार तेमज सर्व सभासदो सहित उत्तम रथ, गज अने अश्व आदि उपर स्वार थइ चाली निकळ्या, थोडा दिवसोमां लांबो पंथ उल्लंघी अनेक स्थानो उपर पडाव करता बद्रिकाश्रमना पहाडोनी समीपे पहोच्या; त्यां उत्तम अने विस्तीर्ण मेदानमां तंबुओ खडा कर्या, सर्व सेना पोतपोताना योग्य स्थाने उतरवा लागी, खानपानादि सर्व पदार्थोनी दुकानो तैयार करवामां आवी; भेरी, मृदंग अने नगारां आदि अनेक प्रकारनां वाद्यो सेनानुं आगमन सूचववा अर्थे वागवा लाग्यां, जे सांभळी वक्रदंत आदि राक्षसोनां हृदय भयभीन थयां.

राक्षसना राजा वक्रदंते सेनाना आगमननो संदेशो श्रवण करी पोतानी आसुरी मायाथी रचेल नगरना किल्लाने मंत्रबळथी विशेष मजबूत कर्यो, तेमज किल्लाना कोठाओ माथे पीतळ अने लोहथी बनावेल शतघ्नी यंत्र अर्थात् तोप आदि तैयार रखावी, पोतानी सेनाने युद्ध माटे सज्ज थवा आज्ञा आपी;

राजर्षि कुंतमहाराजना सेनापति शौर्यसागरे पोतानो तंबू मायाकृत किल्लानी सन्मुख उभो कर्यो; जेनी आसपासना मनोरम वननी शोभा घणीज मनोहर बनी रही हती, चारे तरफ पृथ्वी उपर लीली दुर्वा उगवाथी वनमां लीलुं वस्त्र बिछावेलुं होय एवी भ्रान्ति थती हती; विविध प्रकारनां पक्षीओ मीठी मीठी अने सुरीली बोलीओ बोली रह्यां हतां तेमज अन्नोदकनी शोध अर्थे पोतपोताना माळाओथी प्रेमथी उडता हता; चित्र विचित्र पुष्पोना खीलवाथी ते वन हसतुं होय एम जणातुं हतुं; ठेकाणे ठेकाणे वृक्ष, लताओ अने म्होटी म्होटी अद्भुत वेलो लागी रही हती तेमज शीत मंद अने सुगंधी वायु चाली रह्यो हतो; तेवामां विविध प्रकारना वाद्यो वागवा लाग्यां, जयजयकारना उच्चारथी गगनमंडळ गाजी उठयुं, सैनिको वक्रदंतनो विनाश करवा उत्साहित थइ पोतपोतानां अस्त्रशस्त्रो सज्ज करवा लाग्या, अश्वरक्षको प्रयाण तुरीना अवाजो सांभळी पोतपोताना घोडाओना शरीर मर्दन करी सामान कसवा लाग्या, अहींआ धामधूम चाली रही छे अने मायाकृत दुर्गमां वक्रदंत आनंद करी रह्यो हतो त्यां अचानक राजर्षि कुन्तनुं सेना सहित आगमन सांभळी तेणे म्होटा मायावी अवाजथी सेनापतिने बोलाव्यो; सैनिकोने सज्ज थवा हुकम आप्यो; तमाम राक्षसो पोतपोताना मायाकृत उरग आदि वाहनो उपर सवार थवा लाग्या, उंट अने गर्दभ आदि मायावी वाहनो उपर सवार थवा लाग्या, उंट अने गर्दभ आदि मायावी वाहनो उपर

नगारांओना निनाद थवा लाग्या; मायावी राक्षसोए रात्रिमां पोतपोताना मंत्र प्रयोगो सिद्ध कर्या. श्रीकुन्त महाराजनी सेना पण तैयार थइ; शंख, भेरी आदि वाद्यो वागवा लाग्यां; आखी रात बन्ने सेनाओए अनेक प्रकारे युद्धनी तैयारी करी; रात्री व्यतीत थइ, चन्द्रमा पोतानी तारा समुहनी सेना सहित न्हासी गया अने गगनमंडळमां सूर्यनो उदय थयो, बन्ने तरफथी सैन्य चाली निकळ्यां, रणभूमिमां दाखल थतां महान् कोलाहल थवा लाग्यो; ज्यारे बन्ने सेनाओ रणभूमिमां आवी पहोंची त्यारे व्यूह रचना थवा लागी; सेनापति व्यूहना द्वारोपर स्थित थइ धनुष्यना टंकार करवा लाग्या, ए समये बंदीजनो सेनाथी निकळी शूरवीरोने उत्साह आपी नाशवान् जगतनो बोध करी पुकारवा लाग्या के आजे सर्व पोतपोतानुं शौर्य बतावो अने शत्रुओनो संहार करी विजय मेळवी कीर्तिने वरो, उत्तम भाग्यनो उदय थवाथी आवो संयोग प्राप्त थाय छे. आ सांभळी सर्व शूरवीरो वीररसथी छलकाइ गया, कायरोना मुख मलिन थइ गयां, आ समये राक्षसनो राजा वक्रदंत पोतानां माया बळथी सर्पने उडाडतो तेना प्रतिपक्षीओने पडकारवा लाग्यो, श्री कुन्त महाराजा धनुष्य उपर बाण चढावी तेनी सन्मुख आवी उभा रह्या, वक्रदंते तेओ उपर तुरतमां नारिकेल अस्त्रनो प्रयोग कर्यो तेवामां राजर्षि कुन्ते महा मंत्र भणी ते अस्त्रने व्यर्थ करी नांख्युं, वक्रदंते मायाथी अनंत सिंहो प्रगट कर्या तेनो कुन्त महाराजे एक पछी एक तीक्ष्ण बाणोना प्रहारथी अंत कर्यो; आथी राक्षस सेनामां खळभळाट थयो, बन्ने सेनामां महा घोर युद्ध मच्युं; राक्षसो मायाथी अग्नि वरसाववा लाग्या, कुंत महाराजे वारुणास्त्र फेंकी अग्निने शांत कर्यो, तेवामां पाषाणनी वृष्टि थवा लागी; क्षात्रसेनावाळा महा पराक्रमथी राक्षसो उपर अस्त्र शस्त्रनो प्रहार करवा लाग्या. महा कोलाहल मची रह्यो. राक्षसो मूर्छित थइ पडवा लाग्या. तेओना मरणथी दिशाओमां अंधकार छवाइ गयो, आंधी चडवा लागी, मायावी अस्त्रोना प्रयोगो थवा लाग्या, ते तमामने मंत्र बळथी कुन्त महाराज तोडी पाडवा लाग्या; दारुण युद्ध चालतुं हतुं तेवामां वक्रदंतनी सहायता माटे महाबळ नामनो राक्षस विमानपर बेसी पोतानी अतुल सेना सहित माया बळथी अनेक प्रकारना चमत्कार प्रदर्शित करतो आवी पहोंच्यो; अकस्मात् रंगबेरंगी घटा अने अग्नि तेमज पाषाणनी वृष्टि थवा लागी; आ खबर वक्रदंतने मळवाथी ते अति उत्साहमां आवी गयो अने तुरत महाबळने आदर मान सहित मळ्यो; वक्रदंते सेनापतिने हुकम कर्यो के सेनानी व्यूह रचना करो, क्षात्र सेनाने घेरी लीओ, जो जो, एक पण आ वखते जीवतो जवा न पामे; सेनापतिए आज्ञा मुजब व्यूह रचना करी महाबळ आगळ वधी पडकारवा लाग्यो के मारी माये

युद्ध करवा कोनी इच्छा छे ? आ समये महा पराक्रमी श्री कुन्त महाराज पोताना वंशजोनी कीर्ति वधारवा खुल्ली कृपाणे तेनी सन्मुख धस्या. द्वन्द्व युद्ध थयुं; पृथ्वी कंपवा लागी, सूर्य बिम्ब मंद जणावा लाग्युं, देवगण गगन मार्गे विमानमां बेशी राजर्षि कुन्तनो विजय जोवा आतुर थइ रह्या हता अने अनेक प्रकारना आशीर्वादो आपता हता, घणो वखत द्वन्द्व युद्ध चाल्युं. अंते अमोघ बळवाळा श्री कुन्त महाराजे महाबळनुं मस्तक धडथी उडावी दीधुं. राक्षस सेनामां अति हाहाकार थइ रह्यो, वक्रदंत गभरायो; अने पराभवनी शंकाथी पीडावा लाग्यो; तेणे अति क्रोधथी पृथ्वीपर हाथ पछाडी घणा मायावी राक्षसो उत्पन्न कर्या. ए समये महाराजा कुन्त अने धवल कुमार महा पराक्रमथी सिंह पेठे गर्जना करता रणांगणमां बन्ने हाथमां खुल्लां खड्गो लइ खेलवा लाग्या. अनंत असुरोना मस्तको कापता कापता वक्रदंतनी समीपे पहोंच्या, पाछळथी क्षात्र सेनाना शूराओ पण शस्त्र अस्त्रोनी वषा करता अनंत राक्षसोने यमने द्वार पहोंचाडवा लाग्या; जेम जेम राक्षसो मरण पामवा लाग्या तेम तेम अनंत उत्पातो थवा लाग्या; कुन्त महाराज महा गंभीर गर्जना करी बोल्या के अरे ! दुष्ट वक्रदंत तैयार था, तारा अंतनो वखत आवी चुक्यो, "हुं महात्मा कुंडमालनो वंशज कुंत आजे तने यमलोकमां पहोंचाडया सिवाय पाछो फरवानो नथी." महावीर कुन्तना आवा शब्दो सांभळी राक्षस सेना भयभीत थइ भागवा लागी; वक्रदंत विह्वळ थइ विचारवा लाग्यो के मायाबळ अत्यार लगी कांइ काम न आव्युं. बाहुबळ सिवाय हवे बचवुं मुश्किल छे एम निश्चय करी कुन्त सामे आवी उभो रह्यो अने आवेशमां आवी महा भयंकर गर्जना करी बोल्यो के "हुं वीर वक्रदंत रणमां धैर्यने छोडुं तेम नथी, मारां अति घोर बाहुबळ पासे तुं केटलो वखत टके छे ए हुं जोउं छुं." आटलुं बोली सामसामुं असि युद्ध करवा लाग्या; बन्ने सेनामां एक पछी एक शूरवीरोए गर्जना करी द्वन्द्व युद्ध मचाव्युं, बन्ने तरफथी शस्त्र अस्त्रो चालवा लाग्यां, सेनानी छटा घनघटा समान जणावा लागी, शस्त्रो विजळीनी माफक चमकवा लाग्यां; रुंड मुंड कपावा लाग्यां, लोहीनी नदीओ चाली निकळी, अश्व आदि वाहनोना कपाएलां अंगो तेमां तणावा लाग्यां; तेमज रुंड मुंड, कूर्म, मत्स्य अने मकरनी माफक जणावा लाग्यां; आवुं महा दारुण युद्ध मच्युं, एक पछी एकने प्रहार करी पृथ्वीपर पाडवा लाग्या; राक्षसोए पण बळ बताववामां कचाश राखी नहि, घणा क्षात्र सैनिकोने घायल करी नांख्या; कुन्त महाराज अने वक्रदंत वच्चे घणो वखत घोर युद्ध चाल्युं; ए बन्ने एक बीजाथी ओछा उतरे एम नहोता, वक्रदंते महा द्वेषथी कुंत उपर सांग फेंकी, कुंत महाराजे ते सांगने अप्रतिम बळवान् बाहुथी पकडी लीधी

अने तेज सांग अति तीव्र बळथी वक्रदंत उपर फेंकी ते तेना भालचक्रने भेदी पृथ्वीमां पेसी गइ; वक्रदंत महा भयंकर शब्द करी घूमी पृथ्वीपर पडी गयो, तेना अन्धकारमय हृदय घरने छोडी चैतन्य चाल्युं गयुं, राक्षसी माया नष्ट थइ, वचेला भ्रष्टो कष्ट पामी भागी गया; क्षात्र सेनानो स्पष्ट रीते विजय थयो; व्योम स्वच्छ थयुं, आनंद मंगळना ध्वनि साथे विजय वाद्यो वागवा लाग्यां, देवांगनाओ आकाश मार्गेथी उतरी कुन्त महाराजने श्रमित जोइ रत्न जडित उशीरना वीजणाओथी वायु ढोळवा लागी, तमाम देवताओ प्रसन्न थया अने जय जयकारना उच्चार करता श्री कुन्त महाराजने पण अनंत प्रकारे आशीर्वाद आपता तेना उपर पुष्प वृष्टि करवा लाग्या. श्री कुन्त महाराजने पण पोतानो श्रम सफळ थयो जाणी आनंदनो पार रह्यो नहि. ऋषिगणो प्रसन्नता पूर्वक वेद मंत्रो भणी आशीर्वाद आपवा लाग्या. अने महात्मा कुंडमालना वंशनी वृद्धि चाहता उन्नत स्वरथी श्री कुन्त महाराजनो जय उचारवा लाग्या.

महात्मा कुंत वक्रदंतनो विनाश कर्या पछी चमत्कारपुर तरफ रवाना थवानी तैयारी करावता हता तेवामां तमाम ऋषिमंडळे आवी आशीर्वाद आपी विनति करी के महाराज! आपे अमारां महान् संकष्टो दूर कर्यां. आपना पूर्वजोनी माफक आप पण अमारा उपर घणी कृपा राखो छो; धर्म कर्ममां कैंक विघ्नो आव्यां ज करे छे. जेथी आप निकटमां विराजता हो तो अमो पण निर्भय बनी यज्ञयागादि स्वस्थ चित्ते कर्या करीए माटे आ विजय भूमि उपर आप आपना नामथी एक उत्तम शहेर वसावी अमारा आशीर्वादथी आनंद भोगवो.

ऋषिओनी आज्ञा माथे चडावी राजर्षि कुन्ते महात्मा विश्वकर्मानी स्तुति करी जेथी विश्वकर्मा ऋषिओनां संकष्ट दूर करनार कुन्त राजर्षिनी पासे पधार्या. कुन्ते घणा मानपूर्वक अर्घ्यपाद्य करी उन्नत आसने विराजवा विनति करी. भगवान् विश्वकर्मा आसने विराज्या बाद कुन्त महाराजे शहेर तथा किल्ला वगेरे केटला प्रकारना अने केवी रीते बांधवा ते सविनय पूछ्युं. महात्मा विश्वकर्माए प्रसन्न चित्ते कह्युं के—किल्लाओ चार प्रकारना छे. १ भूमि दुर्ग, २ जळ दुर्ग, ३ गिरि दुर्ग अने ४ गव्हर दुर्ग. आ चारमांथी गिरिदुर्ग सर्वोत्तम गणाय छे. किल्लानी उंचाइ सत्यावीश गज करवी तेमांथी बे ओछो अथवा बे गज वधारे किल्लो उंचो बनाववो. प्राकारनी पहोळाइना अर्ध भागमा कपिशीर्ष करवा. ए कपिशीर्ष एक बीजाथी आठ आठ आंगळ छेटे राखवां जोइए. किल्लाने कोष्टक करवानी ए रीति छे के कनिष्ट वर्गना कोष्टकनी पहोळाइ दश

गज तथा मध्यम कोष्टकनी पहोळाइ बार गज अने ज्येष्टमानना कोष्टको चौद गज पहोळाइवाळा बनाववा जोइए. ए बन्ने कोष्टकोना मध्यम भागमां चोरस विद्याधरी करवी, ए विद्याधरी अने कोष्टकोमां शूरवीरोने बेसवा माटे विविध प्रकारनां आसनो बनाववां, ए किल्लानी उंचाइ करतां बमणी पहोळी तेनी आसपास खाइ खोदाववी; विद्याधरी अने कोष्टकोनी वच्चे पांत्रीश बाहु (हाथनी आंगळीथी स्कंध खभानी संधि सुधी हाथ) नुं अंतर राखवुं जोइए, अथवा एथी पांच बाहु वधारे के ओछुं अंतर राखवुं; कनिष्ठ किल्लानी उंचाइ पंदर हाथ, मध्यमनी सत्तर हाथ अने ज्येष्टनी ओगणीश हाथ उंचाइ राखवी एम पण थाय छे; मध्यम वर्गना किल्लानी पहोळाइ दश हाथ, ज्येष्टनी बार हाथ अने कनिष्ठ वर्गना किल्लानी पहोळाइ आठ हाथ राखवी. आ तमाम जातना किल्लाओमां अन्न, घृत, जळ, तैल, लवण, इन्धन, तृण, यंत्रो, दारुगोळो, बाण, शस्त्रो अने योद्धाओ आदि पूर्ण रीते राखवां जोइए.

चतुरस्र नगरनुं नाम " माहेन्द्र, " लांबा साथे चोखंडा नगरनुं नाम " सर्वतोभद्र " गोळ नगरनुं नाम " सिंहविलोकन " लंबगोळ नगरनुं नाम " वारुण, " खाली खूणावाळा नगरनुं नाम " नंद, " स्वस्तिकाकार नगरनुं नाम " नंदावर्तक " जवना आकारवाळा नगरनुं नाम " जयंत, " पहाड उपर रहेला नगरनुं नाम " दिव्य, " अष्टदळ नगरनुं नाम " पुष्पपुर, " पुरुषाकार नगरनुं नाम " पौरुष, " गिरिनी कुखमां रहेल नगरनुं नाम " स्नाह, " लांबा नगरनुं नाम " दंडनगर, " नदीथी पूर्व दिशामां होय तेनुं नाम " शक्रपुर, " नदीथी पश्चिम दिशामां होय तेनुं नाम " कमलपुर " नदीथी दक्षिण दिशामां होय तेनुं नाम " धार्मिकपुर, " जेनी बन्ने बाजुए नदी होय तेनुं नाम " महाजय, " अने जे नदीथी उत्तर दिशामां होय तेनुं नाम " सौम्य नगर " कहेवाय छे.

जेने एक किल्लो होय तेनुं नाम " श्री नगर, " बे किल्लाओ होय तेनुं नाम " रिपुघ्न नगर " अने अष्टकोण नगरनुं नाम " स्वस्तिक " कहेवाय छे.

आ रीते नगरना वीश भेद छे. आवा नगरोमां मनुष्यो निवास करे तो ते नगरना नरपालने सुख, यश अने धननी प्राप्ति थाय छे तेमज तेनो प्रताप दिवसे दिवसे वृद्धि पामे छे.

जे नगर त्रिकोण होय तेमां अग्निनो भय थाय छे, जे नगर षट्कोण होय तेमां क्लेश उपजे छे, जे नगर वज्राकार होय तेमां विजळीनो भय थाय छे, जे नगर शकटने आकारे होय

तेमां रोगनो उपद्रव थाय छे, जे नगर त्रिशूलने आकारे होय तेमां युद्धनो भय रहे छे, जे नगर वे शकटना आकारवाळुं होय तेमां चोरनो भय अने जे नगरना चोरस भागथी खूणाओ वधारे पडता होय ते नगरमां धननो क्षय थाय छे. आ सात दोष गणाय छे. उपर कहेल नगरो त्रण प्रकारनां छे तेमां कनिष्ठ नगर एक हजार हाथना मापनुं, मध्यम नगर पंदरसो हाथना प्रमाणनुं अने उत्तम नगर वे हजार हाथना प्रमाणनुं वांधवुं जोइए; परंतु कनिष्ठ नगर सवा अग्यारसो हाथनुं, मध्यम नगर सवा सोळसो हाथनुं अने उत्तम नगर सवा एकवीशसो हाथनुं वनाववुं.

पूर्वोक्त उत्तम नगरमां सत्तर मार्गो, मध्यम नगरमां तेर मार्गो अने कनिष्ठ वर्गना नगरमां नव मार्गो करवा; जे नगरमां जेटला उभा मार्ग होय तेटलाज आडा मार्ग करवा;

नगरनुं अर्ध " ग्राम, " ग्रामनुं अर्ध " खेटक, " खेटकनुं अर्ध " कूट " अने कूटनुं अर्ध " खर्वट " कहेवाय छे.

राजाने रहेवानुं नगर चार, आठ अथवा सोळ हजार गजनुं करवुं पण ते नगरोना अवांतर भेदे एक एक हजार गज वधारवाथी दश प्रकार थाय छे.

पांच हजार गजनां, छ हजार गजनां, सात हजार गजनां, नव हजार गजनां, दश हजार गजनां, अगिआर हजार गजनां, वार हजार गजनां, तेर हजार गजनां, चौद हजार गजनां, अने पंदर हजार गजनां नगरो करवां, ए नगरोनी जेटली पहोळाइ होय तेथी लंवाइमां सवा आठमो तथा साडा आठमो भाग वधारवो; आ रीने तमाम नगरोना चार चार भेद छे ते ए रीते के.

१—लंवाइ अने पहोळाइमां समान.

२—पहोळाइनो अष्टमांश $\frac{1}{8}$ लंवाइमां वधारवो.

३—पहोळाइथी लंवाइमां सवा आठमो भाग $\frac{1}{64}$ वधारवो.

४—पहोळाइथी लंवाइमां $\frac{1}{62}$ वधारवुं.

आ रीते नगरनी रचना करवी.

पुरने विषे सत्तर मार्ग, ग्रामने विषे नव मार्ग, खेटकने विषे पांच मार्ग, कूटने विषे त्रण मार्ग अने खर्वटने विषे वे मार्ग करवा.

जे मार्ग वीश गज पहोळो होय ते ज्येष्ठ, सोळ गज पहोळो होय ते मध्यम अने वार गज पहोळो होय ते कनिष्ठ मार्ग जाणवो.

महात्मा विश्वकर्मोना मुखथी आ रीतें श्रवण करी श्री कुन्त महाराजे मजबूत किल्लावाळुं सर्वोत्तम शहेर वास्युं, जेमां तांबूलनी, फळोनी, दांतनी, अत्तर आदि सुगन्धि पदार्थोनी, पुष्पोनी अने मोती विगेरे रत्नोनी दुकानो राजद्वार पासे रचावी. शहेरनी अंदर पूर्व दिशामां ब्राह्मण, दक्षिण दिशामां क्षत्रिओ अने उत्तर दिशामां शूद्रोने तथा वैश्योने अने अन्य व्यापारी जनोने शहेरना मध्य भागमां चित्र विचित्र गृहो वनावी वसाववा निश्चय कर्यो.

शहेरना इशान कोणमां रंगकर, कुविंद अने रजकने; तथा अग्निथी पोतानी आजीविका चलावनार सोनी लुहार आदिने शहेरना अग्नि कोणमां अंत्यज, चर्मकार, वांझा अने कलालने दक्षिण दिशामां, नैऋत्य कोणमां वेश्याओने अने वायव्य कोणमां पाराधि लोकोने वसाववा नक्की कर्युं तथा पश्चिम दिशामां कूप, तलाव, वाव अने कुंड आदि जलाशयो वंधाव्यां; शहेरना चार सिंहद्वार कर्यां अने आठ खडकीद्वार वांध्यां, ते द्वारोने मजबूत अर्गला करी तेमज मजबूत अने सुशोभित कमाडो कर्यां, राजद्वार आगळ एक कीर्तिस्तंभ उभो कराव्यो; तथा राजगृह, देवप्रासाद, दुकानो अने हवेलीओ कळीचुनो छांटी उज्वळ वनाववामां आवी; शहेरनी पासे एक सुंदर वाग बनाव्यो ते वागमां एक जलाशय वांध्युं तेमज शहेरमां अने राजमहेल आगळ पण जलाशयो वंधाव्यां.

शहेरना रक्षण माटे जळ, अग्नि अने वायु वडे चलावी शकाय एवा यंत्रोने मांस मदिरानुं वलिदान आपी राखवामां आव्या.

यंत्रो आठ प्रकारनां छे तेमां जेनी लंबाइ आठ हाथनी होय तेनुं नाम "भैरव," जे यंत्रनी लंबाइ नव हाथनी होय तेनुं नाम "चन्द्र," जे यंत्रनी लंबाइ दश हाथ होय तेनुं नाम "अर्क," अग्यार हाथ होय ते "भीमगज," वार हाथ होय ते "युग्म," तेर हाथ होय ते "शिखी," चौद हाथ होय ते "यमदंड," अने जे यंत्रनी लंबाइ पंदर हाथनी होय ते "महाभैरव" कहेवाय छे. आ आठे जातनां भैरव यंत्रो तैयार करी राखवामां आव्यां.

आठ हाथना यंत्रने आठ हाथनी फणिनी वनावी तेना चाडानी पहोळाइ वार आंगळनी तथा स्तंभो वच्चे छ हाथनी पहोळाइ राखी, त्रण हाथनी मर्कटिका करी तथा त्रण हाथनुं पांजरुं कराव्युं.

यंत्रना पाछळना भागमां बत्रीश आंगळनी यष्टि करावी ते यष्टिनी पहोळाइ तथा जाडाइ आठ आंगळ समान राखी अने ते यंत्रने जे कुंडलवेणी मुकवामां आवे छे ते ऐंशी आंगळ बहार निकळती राखी.

यंत्रनी यष्टिमां मर्कटीने लोढाना खीलाथी द्रढ करी एक हाथनुं यंत्र करी तेने पंदर आंगळनुं पांजरुं करवुं एम केटलाएक आचार्योनो मत छे. श्री कुन्त महाराजे ते प्रमाणे कराव्युं. अग्नियंत्र, जलयंत्र अने वायुयंत्र ढींकुलीथी तैयार कराव्यां.

त्यार बाद भगवान् विश्वकर्मानी आज्ञा मुजब एकसो आठ हाथ पहोळो उत्तम राजमहेल बंधाव्यो, तेना प्रमाणथी आठ आठ हाथ घटाडी बीजां चार गृह पोताने माटे बनाव्यां; ए सर्व गृहोनी लंबाइ पहोळाइथी सवाइ राखी.[1]

१—गृहादिको विषे आय, ऋक्ष, व्यय, तारा, अंश, चंद्र, अने राशिनी रीत बतावीए छीए. कारणके तेओ श्रेष्ठ आव्येथी धान्य, सुख अने यशनी अधिक वृद्धि थाय माटे प्रथम आय विशे कहीए छीए. तेना आठ प्रकार छे. तेओनां नाम.

ध्वज, धूम, सिंह, श्वान, वृष, गर्दभ, गज अने ध्वांक्ष छे. तेमां पहेलो, त्रीजो, पांचमो अने सातमो, एटला आय देवमंदिर विषे श्रेष्ठ छे.

देवमंदिर अने राज्यगृह विषे शास्त्रमां कहेला हाथे माप करवुं तथा साधारण लोकोना घरोनुं माप शिल्पीना हाथे करवुं पण घास वडे छावानुं होय अर्थात् घास, पांदडां अने एवां बीजां तृणो वडे घर छाइ रहेनारा गरीब लोकोना घरनुं माप घरधणीना हाथथी लेवुं.

गृह करवानी भूमिने हाथ, अंगुल अने जवथी मापी ते भूमिनुं क्षेत्रफळ कहाडी हाथ, आंगुल अने जवनी गणतरी प्रमाणे आय मेळववो पण नगर अने पुरनुं माप दंडवडे करवुं वधारे श्रेयस्कर छे.

हाथ अने आंगुलो मापी तेनुं क्षेत्रफळ कहाडया पछी हाथ अने आंगुलो प्रमाणे आय कल्पवो कह्यो छे. पण खाटलो अथवा पलंगनी बे इसो अने बे उपळां मळी चारने मापमां न लेतां फक्त मध्यनो गाळो भरी आय लाववो अने तेज रीते घरना बे करा, एकमेवाळ अने पछीत ए चारना ओसारने मापमां न लेतां ए चारेनां अंतरनुं अर्थात् ए चारना मध्ये रहेला गाळानुं

राजाओने योग्य अनंत प्रकारनां कल्याणकारी अने समृद्धि आपनार सुशोभित गृहो बंधाववां शरु कर्या. तेमां त्रिशाल गृहनी त्रणे दिशाओमां वच्चे ह्रस्व, आगळना भागमां वीथि अने मध्यमां पट् दारुयुक्त प्रथम प्रकारनुं गृह बंधाव्युं.

त्रिशाल घरनी चारे दिशाओए त्रण त्रण अलिन्दो बंधावी, तेने एक द्वार तथा खूणाओमां गवाक्षो रखावी द्वितीय प्रकारनुं घर तैयार कराव्युं.

त्रिशाल गृहनां मुख आगळ माढ सहित भद्र रखावी " श्रीघर " नामे गृह बंधाव्युं.

पांच अने सात भूमिना गृहने जाळीओ अने बारीओ मुकावी, मंडप खुल्लो रखावी, चार द्वारयुक्त शत्रुनो विनाश करनार " राज्य वर्धन्य " नामे गृह तैयार कराव्युं. तेमां उंचाइ अने

माप लइ आय लाववो, पण देवमदिर अने मंडपनी बहारनी फरकेथी अर्थात् चारे तरफनी भींतना ओसारो सहित (जमीन अने पायाओमां दबाय ते सुद्धांत मापमां लेवानुं कह्युं छे) मापमां गणी आय लाववो.

छत्र (छत्र अने तेथी पण न्हाना दागीनाओ विषे गज अने आंगुलोनुं माप लेवाय नहि तेथी आंगुल, जव, यूका, लीख अने वाळनी अणीवडे माप लेवुं अने आय मेळववो कारणके हीरा आदि रत्नोनुं माप आंगुलेथी थाय नहि.) देवमंदिर, ब्राह्मणनुं घर, वेदिका, जलाशय, क्षेत्रो (क्षेत्र एटले गृह करवानी जमीन उपरांत ध्वजा, वावटा, निशान ए वगेरे वस्त्रोनुं जे कांइ करवुं होय ते वस्त्रनो क्षेत्रमां समावेश थाय छे) ना विस्तार, क्षेत्रोनी उंचाइ, वस्त्र, आभूषण अने यज्ञ-शाळा एटले ठेकाणे ध्वजआय श्रेष्ठ छे, तथा अग्निवडे जीवनारना घरमां अने होमना कुंड विषे धूम्रआय श्रेष्ठ छे अने सिंहद्वार (किल्लाना दरवज्जामां, राजाना दरबारनो दरवज्जो अने राजाना महेलनो दरवज्जो वगेरे सिंहद्वार कहेवाय छे;) मां, राजघरमां, शास्त्रोमां अने सिंहासनमां सिंहआय श्रेष्ठ छे.

चांडालना घरविषे श्वानआय उत्तम छे तथा वणिक्ना घरविषे, अश्वशालामां, व्यापारीनी दुकान विषे, लाकडां भरवाना गृह विषे अने भोजनशालाविषे वृषआय श्रेष्ठ छे, तथा वादित्रोना घर विषे अने गधेडांवडे जेनी आजिविका चालती होय तेना घरमां खरआय श्रेष्ठ छे, तथा शूद्रना घर विषे, यान अथवा पालखी विषे, स्त्रीयोना घरविषे, वाहन (रथ, गाडी, गाडां वगेरे) विषे शय्या (खाटलो, पलंग के कोच) विषे, अने गजशाळा विषे गजआय श्रेष्ठ छे.

नीचाणनी बरोबर संभाळ रखावी हती कारणके जे घर मध्य भागमां नीचुं अने आंगणा आगळ उचु होय ते गृह निरंतर पुत्रनो विनाश करनार थाय छे.

गृहस्तंभोनी ओळ मध्यम माननी करावी; कारणके ए मानथी ओछी वधती पंक्ति करावाथी गृहस्वामीने जगत् मान्यता के लक्ष्मीनी प्राप्ति थती नथी.

श्री कुन्त महाराजे भगवान् विश्वकर्मीना मुखथी सांभळ्युं हतुं जे "द्विशाल गृहमां शाळाना स्तंभथी बहारने पाटडे ओछो स्तंभ होवाथी वेध गणातो नथी, परंतु शाळामांज स्तंभनी एक पंक्तिमां स्तंभ ओछो के वधारे होवाथी वेध गणाय छे." माटे पोते तमाम गृहोमां तेवो वेध न लावतां गृहो एक भूमिथी अग्यार भूमि सुधी कराव्यां, ते भूमिओ सम नहि करतां विषम करावी.

शिल्पीना घर विषे अने तपस्वीना स्थान विषे ध्वांक्षआय सुखकारी छे. ए रीते बतावेलां आठे आयोनां मुखो पोतपोताना नामो जेवां छे, पण विशेष करी ध्वांक्ष आयनुं मुख कागडाना मुख जेवुं छे तथा धूम आयनुं मुख बिलाडाना मुख जेवुं छे, अने ध्वज आयनुं मुख मनुष्यना मुख जेवुं छे; परंतु सर्व आयोना पग तो पक्षीओना पग जेवा छे, तथा तेमनां गळां सिंहनां जेवा छे अने आयोना हाथो तो मनुष्यना हाथो जेवा छे. ए आयो पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर अने इशान. ए अनुक्रमे आठे दिशाओना स्वामी आठ आयो छे. ते सृष्टि मार्गे छे एटले जे दिशानो स्वामी जे आय छे ते दिशा सामे ते आयनुं मुख छे अर्थात् ध्वजनुं मुख पूर्व तरफ, धूमनुं मुख अग्नि कोणे, सिंहनुं दक्षिणे, श्वाननुं नैऋते, वृषनुं पश्चिमे, गर्दभनुं वायव्ये, गजनुं उत्तरे अने ध्वाक्षनुं मुख इशान कोण सामे छे.

पहेली भूमिमां वृषआय देवो, तथा बीजी भूमिमां सिंहआय देवो अथवा गजआय देवो, अथवा ध्वजआय देवो. आय आपनार सूत्रधारे याद राखवानुं छे के—"गजआय उपर सिंहआय अथवा ध्वजआय देवो तेमज सिंहआय उपर ध्वजआय देवो." पण डाह्या मनुष्ये कोइ पण आय उपर वृष आय लाववो नहि, कदाच घर विषे सिंहआय उपर गजआय अथवा वृषआय आवे तो ते मृत्यु प्राप्त करावे अने घरनुं द्वार आयना सामे होय तो ते शुभ छे. तेमज घरथी जमणी तरफ अथवा डाबी तरफ आय आवे तो ते पण श्रेष्ठ छे.

घर करवानी जमीन अथवा क्षेत्रनो विस्तार अथवा पहोळाइ जेटला गज होय तेटलाने क्षेत्रनी लंबाइना गजो साथे गुणतां जे पिंड आवे (क्षेत्रफळनो जेटलो अंक आवे) ते पिंडने आठे

राजाओने योग्य अनंत प्रकारनां कल्याणकारी अने समृद्धि आपनार सुशोभित गृहो बंधाववां शरु कर्यां. तेमां त्रिशाल गृहनी त्रणे दिशाओमां वच्चे ह्रस्व, आगळना भागमां वीथि अने मध्यमां पट् दारुयुक्त प्रथम प्रकारनुं गृह बंधाव्युं.

त्रिशाल घरनी चारे दिशाओए त्रण त्रण अलिन्दो बंधावी, तेने एक द्वार तथा खूणाओमां गवाक्षो रखावी द्वितीय प्रकारनुं घर तैयार कराव्युं.

त्रिशाल गृहनां मुख आगळ माढ सहित भद्र रखावी " श्रीधर " नामे गृह बंधाव्युं.

पांच अने सात भूमिना गृहने जाळीओ अने बारीओ मुकावी, मंडप खुल्लो रखावी, चार द्वारयुक्त शत्रुनो विनाश करनार " राज्य वर्धन्य " नामे गृह तैयार कराव्युं. तेमां उंचाइ अने

माप लइ आय लाववो, पण देवमंदिर अने मंडपनी बहारनी फरकेथी अर्थात् चारे तरफनी भींतना ओसारो सहित (जमीन अने पायाओमां दबाग ते सुद्धांत मापमां लेवानुं कह्युं छे) मापमां गणी आय लाववो.

छत्र (छत्र अने तेथी पण न्हाना दागीनाओ विषे गज अने आंगुलोनुं माप लेवाय नहि तेथी आंगुल, जव, यूका, लीख अने वाळनी अणीवडे माप लेवुं अने आय मेळववो कारणके हीरा आदि रत्नोनुं माप आंगुलेथी थाय नहि.) देवमंदिर, ब्राह्मणनुं घर, वेदिका, जलाशय, क्षेत्रो (क्षेत्र एटले गृह करवानी जमीन उपरांत ध्वजा, वावटा, निशान ए वगेरे वस्त्रोनुं जे कांइ करवुं होय ते वस्त्रनो क्षेत्रमां समावेश थाय छे) ना विस्तार, क्षेत्रोनी उंचाइ, वस्त्र, आभूषण अने यज्ञ-शाळा एटले ठेकाणे ध्वजआय श्रेष्ठ छे, तथा अग्निवडे जीवनारना घरमां अने होमना कुंड विषे धूम्रआय श्रेष्ठ छे अने सिंहद्वार (किल्लाना दरवज्जामां, राजाना दरबारनो दरवज्जो अने राजाना महेलनो दरवज्जो वगेरे सिंहद्वार कहेवाय छे;) मां, राजघरमां, शास्त्रोमां अने सिंहासनमां सिंहआय श्रेष्ठ छे.

चांडालना घरविषे श्वानआय उत्तम छे तथा वणिक्ना घरविषे, अश्वशालामां, व्यापारीनी दुकान विषे, लाकडां भरवाना गृह विषे अने भोजनशालाविषे वृषआय श्रेष्ठ छे, तथा वादित्रोना घर विषे अने गधेडांवडे जेनी आजिविका चालती होय तेना घरमां खरआय श्रेष्ठ छे, तथा शूद्रना घर विषे, यान अथवा पालखी विषे, स्त्रीयोना घरविषे, वाहन (रथ, गाडी, गाडां वगेरे) विषे शय्या (खाटलो, पलंग के कोच) विषे, अने गजशाळा विषे गजआय श्रेष्ठ छे.

नीचाणनी बरोबर संभाळ रखावी हती कारणके जे घर मध्य भागमां नीचुं अने आंगणा आगळ उच्चु होय ते गृह निरंतर पुत्रनो विनाश करनार थाय छे.

गृहस्तंभोनी ओळ मध्यम माननी करावी; कारणके ए मानथी ओछी वधती पंक्ति करावबाथी गृहस्वामीने जगत् मान्यता के लक्ष्मीनी प्राप्ति थती नथी.

श्री कुन्त महाराजे भगवान् विश्वकर्माना मुखथी सांभळ्युं हतुं जे "द्विशाल गृहमां शाळाना स्तंभथी बहारने पाटडे ओछो स्तंभ होवाथी वेध गणातो नथी, परंतु शाळामांज स्तंभनी एक पंक्तिमां स्तंभ ओछो के वधारे होवाथी वेध गणाय छे." माटे पोते तमाम गृहोमां तेवो वेध न लावतां गृहो एक भूमिथी अग्यार भूमि सुधी कराव्यां, ते भूमिओ सम नहि करतां विषम करावी.

शिल्पीना घर विषे अने तपस्वीना स्थान विषे ध्वांक्षआय सुखकारी छे. ए रीते बतावेलां आठे आयोनां मुखो पोतपोताना नामो जेवां छे, पण विशेष करी ध्वांक्ष आयनुं मुख कागडाना मुख जेवुं छे तथा धूम आयनुं मुख बिलाडाना मुख जेवुं छे, अने ध्वज आयनुं मुख मनुष्यना मुख जेवुं छे; परंतु सर्व आयोना पग तो पक्षीओना पग जेवा छे, तथा तेमनां गळां सिंहनां जेवा छे अने आयोना हाथो तो मनुष्यना हाथो जेवा छे. ए आयो पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर अने इशान. ए अनुक्रमे आठे दिशाओना स्वामी आठ आयो छे. ते सृष्टि मार्गे छे एटले जे दिशानो स्वामी जे आय छे ते दिशा सामे ते आयनुं मुख छे अर्थात् ध्वजनुं मुख पूर्व तरफ, धूमनुं मुख अग्नि कोणे, सिंहनुं दक्षिणे, श्वाननुं नैऋते, वृषनुं पश्चिमे, गर्दभनुं वायव्ये, गजनुं उत्तरे अने ध्वांक्षनुं मुख इशान कोण सामे छे.

पहेली भूमिमां वृषआय देवो, तथा बीजी भूमिमां सिंहआय देवो अथवा गजआय देवो, अथवा ध्वजआय देवो. आय आपनार सूत्रधारे याद राखवानुं छे के—" गजआय उपर सिंहआय अथवा ध्वजआय देवो तेमज सिंहआय उपर ध्वजआय देवो. " पण डाह्या मनुष्ये कोइ पण आय उपर वृष आय लाववो नहि, कदाच घर विषे सिंहआय उपर गजआय अथवा वृषआय आवे तो ते मृत्यु प्राप्त करावे अने घरनुं द्वार आयना सामे होय तो ते शुभ छे. तेमज घरथी जमणी तरफ अथवा डावी तरफ आय आवे तो ते पण श्रेष्ठ छे.

घर करवानी जमीन अथवा क्षेत्रनो विस्तार अथवा पहोळाइ जेटला गज होय तेटलाने क्षेत्रनी लंबाइना गजो साथे गुणतां जे पिंड आवे (क्षेत्रफळनो जेटलो अंक आवे) ते पिंडने आठे

गृहनी भूमिने साडात्रण भागे वेंहेंची तेना त्रण भागमां नव कोठाओ कराव्या अने बाकीना अर्ध भागमां बे बाजुए बे भींतो बंधावी, ते गृहमां चार भींतोना मळी चार स्तंभ अने मध्य भाग-मां चार स्तंभ मुकाव्या. गृहनी चारे दिशाओमां एक एक भद्र करावी तेमां चार चार स्तंभो मुकाव्या. आ रीते कुल बत्रीश स्तंभो मुकावी "प्रताप वर्धन" नामे गृह बंधाव्युं.

गृहना भद्रोमां बच्चे भूमिओ रखावी अने ते भूमि उपर माडो मुकावी देरेक भद्रने दश दश स्तंभो मुकावतां चार भद्रना चालीश स्तंभो थया, गृह भूमिना प्रथम मुजब साडात्रण भाग करावी पूर्वोक्त रीते सोळ स्तंभो मुकावी "लक्ष्मीविलास" नामे गृह तैयार कराव्युं.

गृहमां चारे भद्रोमां दश दश स्तंभो मुकावी ते गृहनी भूमिना मध्य भागना पांच विभाग

भागतां शेष जे रहे ते "ध्वजादि" आठ आय समजवा, त्यार पछी गुणेला पिंडने (क्षेत्रनी पहोळाइ साथे लंबाइने गुणतां जे अंक आव्यो होय तेने) आठे गुणतां जे अंक आवे ते अंकने सत्यावीशे भागतां शेष जे रहे ते अश्विन्यादि" नक्षत्र जाणवुं, अने ए जे नक्षत्र आव्युं होय ते नक्षत्रनो अंक आठे भागतां शेष जे रहे ते "व्यय" जाणवो. ते व्ययनो अंक आयना अंकथी ओछो आवे तो लक्ष्मीनी प्राप्ति करावे, पण आयनो अंक अने व्ययनो अंक सम आवे अर्थात् ओछो के वधारे न आवे तो तेने पिशाच जाणवो, अने ध्वजआय विना बीजा आयोना अंकथी व्ययनो अंक वधारे आवे तो ते राक्षस समजवो.

मूळ राशिनो जे अंक होय ते अंकमां आवेला व्ययनो अंक मेळववो तेमज ध्रुवादिक घरो-मांनुं जे घर होय ते घरना नामना जेटला अक्षरो होय तेटलो अंक पण तेमांज मेळववो. ए त्रणे बाबतो एकत्र करतां जे अंक अथवा जेटलो सरवाळो थाय तेटलाने त्रणे भागतां शेष जो एक वधे तो ते "इन्द्रांश" कहेवाय, तथा बे वधे तो ते "यमांश" कहेवाय अने त्रण अथवा शून्य वधे तो ते "राजांश" कहेवाय. ए त्रण अंशोमांनो इंद्रांश तो देवालय अने वेदिकामां श्रेष्ठ छे, तथा यमांश हाट विषे, नाग देवता विषे अने भैरव विषे श्रेष्ठ छे, तथा गजशालामां, अश्वशालामां, यानमां, नगरमां, राजाना घरमां अने बीजा साधारण लोकोना घरो विषे राजांश श्रेष्ठ छे.

घरधणीना जन्मनुं जे नक्षत्र होय ते नक्षत्रथी घरनुं जे नक्षत्र आव्युं होय ते नक्षत्र सूधी गणतां जेटलो अंक आवे तेटला अंकने नवे भागतां शेष जे रहे तेटलामी तारा समजवी, ए ताराओमांथी त्रीजी तारा आवे तो तेने सर्व काममां डाह्या मनुष्ये त्यागवी. तेज रीते पांचमी

करी तेमांथी बे भागनी भूमि मध्यमां राखी बाकीना त्रण भागोमांथी दोढ दोढ भागनी भूमि चारे बाजुए रखावी तथा ते गृहमां सोळ स्तंभो मूकाव्या. ते सोळ अने भद्रोना चाळीश स्तंभो मळी कुल छप्पन स्तंभोवाळुं निरंतर लक्ष्मीनी वृद्धि करनार "लक्ष्मीनर्म" नामे गृह बंधाव्युं.

गृहनी भूमिना पांच भाग करी तेमां छत्रीश स्तंभो मूकाव्या अने अर्ध भागनी भूमिमां भींतो तथा चारे तरफ चार द्वारो रखाव्यां. ते दरेक द्वारने नवपदना भद्रो मुकाव्या. ते दरेक भद्रोमां त्रण त्रण भूमिकाओ उपरांत अढार अढार स्तंभो रखाव्या एटले चार भद्रना मळी-कुल बहोंतेर स्तंभो थया तेमां मध्यनी भूमिना छत्रीश स्तंभो उमेरतां कुल एकसो आठ स्तंभवाळुं साडी पांच भूमितुं "श्रीनिवास" नामे गृह बंधाव्युं.

अने सातमी तारा पण सारी नथी. अने बाकी रहेली ताराओमां पहेली, बीजी, चोथी, छट्ठी, आठमी अने नवमी. एटली ताराओमांथी गमे ते तारा आवे तो ते श्रेष्ठ छे, तेओनां नाम, शांता, मनोहरा, क्रूरा, विजया, कुलोद्भवा, पद्मिनी, राक्षसी, वीरा अने आनंदा अनुक्रमे छे. नारचंद्र ग्रंथमां वीराने बदले बाला कहेल छे.

व्यय संबंधी एवी समजण छे के, घर करवानो आरंभ करतां पहेलां घरना काममां जे खरच करवुं धार्युं होय ते धारवा प्रमाणे न थतां वधारे अथवा ओछुं खरच थवानुं कारण आयना अंकथी व्ययनो अंक ओछो आवे तो ओछुं खरच थाय अने आयना अंकथी व्ययनो अंक वधारे आवे तो वधारे खरच थाय ए वात प्रथम बताववामां आवी छे. ते लक्षमां राखी गमे ते प्रकारे गणी व्ययनो अंक आयना अंकथी ओछो लाववो ए सारुं छे.

हवे जे अंकनुं नक्षत्र आव्युं होय (२६) ते अंकने आठे भागतां २६—८ शेष २ आवे तो ते बीजो व्यय समजवो. ते व्यय श्रेष्ठ छे. वळी अंश लाववानी एवी रीत छे के—

मूळ राशि (२६) एटले जे नक्षत्र आव्युं होय ते नक्षत्रमां व्ययनो आवेलो अंक मेळवतां (मूळ राशि २६ अने व्यय २) अठ्ठावीश थाय अने ध्रुवादिक घरोमांथी जे नामनुं घर उत्पन्न थयुं होय ते घरना नामना जेटला अक्षरो होय तेटला अंक प्रथम थएला (२८) अंकमां मेळववा. जेमके "मनोरम" घरना चार अक्षर छे ते मेळवतां बत्रीश थाय तेने त्रणे भागतां शेष एक वधे तो इन्द्रांश थयो जाणवो, तथा बे वधे तो यमांश अने त्रण वधे अथवा पूर्ण एटले शून्य आवे तो ते राजांश थयो एम जाणवुं.

गृहभूमिना त्रण भाग करी तेमां सोळ स्तंभो मुकाव्या. ए सोळ गृह भूमिना स्तंभो अने उपर मुजब चार भद्रोना बहोंतेर स्तंभो तेमां उमेरी अठ्याशी स्तंभो बंधावी, दरेक भद्रमां मंडप रचावी "श्रीनिवास" नामे बीजा प्रकारनुं गृह तैयार कराव्युं.

घरनी भूमिना सम अर्थात् आठ भागो करी तेमांथी अर्ध भागनी भींतो अने बाकीना साडासात भागनुं गृह कराव्युं. तेमां सो स्तंभो मुकाव्या अने चार द्वार रखाव्यां. ते दरेक द्वार आगळ भद्र कराव्युं अने ते भद्रना पहेला भागमां सात चोकीओनी पंक्ति करावी, बीजा भागमां पण सात चोकीओनी बीजी पंक्ति करावी. ए भद्रना प्रतिभद्रमां पांच चोकीओनी पंक्ति बंधावी अने ए प्रतिभद्रना आगळना मुखभद्रमां त्रण चोकीओ करावी. ए रीते एक एक भद्र थयुं ते आखा

जुओ मूळ राशिनो अंक २६+२= २८+४=३२÷ ३-शेष बे आव्या. ए बे यमांश आवे छे एटले ते अंश सारो नथी. माटे घर करवाना आरंभ उपर बतावेली रीतोमां प्रथम बाबतथीज फेरफार करतां सारी रीत आवे तेम करवुं. कदाच घरनी जमीननो कांइ भाग वधारवो घटाडवो पडे तो तेम करवुं. जेमके—

घर करवानी जमीन ओगणचाळीश गज अने अगिआर तसुओ लांबी छे एम मानो अने तेना आंगळो करो एटले नवसेंने सुडतालीश आंगळो थशे तथा ते जमीननो विस्तार नवगज अने पांच आंगळ छे तेना आंगळ करो एटले बसेंने एकवीश थशे. ए लंबाइ अने पहोळाइनी बन्ने रकमोने (९४७ अने २२१) ने गुणतां बे लाख नव हजार बसें अने सताशी आंगळ क्षेत्रफळ आव्युं. ए क्षेत्रफळने २०९२८७ आठे भागतां २०९२८७—८ शेष सात रहेशे माटे समजवुं के सातमी गज आय आवी. त्यार पछी नक्षत्र लाववानी एवी रीत छे के:—

जमीननी लंबाइ अने पहोळाइना आंगळोने गणतां जे पिंड आव्यो छे, ते २०९२८७ ने आठे गुणतां जे अंक आवे ते अंकने सत्यावीशे भागतां शेष जे रहे तेटलामुं नक्षत्र आवे एम जाणवुं. जुओ २०९२८७×८=१६७४२९६. आ सोळ लाख चौंओतेर हजार बसोने छन्नुने सत्यावीशे भागतां १६७४२९६—२७—शेष २६ छवीश रहेशे माटे समजवुं के छवीशमुं नक्षत्र आव्युं. ए नक्षत्र अश्विन्यादिथी गणवुं एटले उत्तराभाद्रपदा नामनुं ते नक्षत्र थयुं. ए रीते आय, व्यय अने नक्षत्रादि गणी लाववुं.

भद्रना सर्व मळी चोत्रीश स्तंभो थया. ए रीते चारे भद्रना कुल एकसो छत्रीश स्तंभो थया. तेमां गृहना सो स्तंभो मेळवतां कुल बसो छत्रीश स्तंभोवाळुं "कमलोद्भव" नामे गृह बंधाव्युं.

राजगृहनी उंचाइना नव भाग करी ते भागमांथी एक भागनी कुंभी, पोणा भागनुं भरणुं, पोणा भागनुं शरुं, सवा भागनो पाटडो अने सवापांच भागना स्तंभो मुकाव्या. ते स्तंभोनो गोळ करावी, पाटडानो पोणो भाग सादो रखावी उपरना अर्ध भागमां तंत्रक कराव्यो अने ते तंत्रक उपर जयंतिका रखावी.

गृहनी उंचाइना दश भागो करी तेमांथी त्रण भागोनी वेदी तथा वे भागोनुं कक्षासन कराव्युं अने ते कक्षासननो कंठ त्रीजा भागे नमेलो रखाव्यो, आ रीते गृहनी उंचाइना अर्ध भागमां पोताने वेसवा माटे पीठ तैयार कराव्युं.

कृत्तिकादिथी सात नक्षत्रो पूर्व दिशामां स्थापन करवां अथवा कल्पवां; तथा मघादि सात नक्षत्रो दक्षिणमां तथा अनुराधादि सात नक्षत्रो पश्चिममां, अने धनिष्ठादि सात नक्षत्रो उत्तर दिशामां स्थापवां अथवा कल्पवां. ए रीते दिशाओनो अनुक्रम लइ नक्षत्रोना अनुक्रमे दरेक दिशाना भागे सात नक्षत्रो स्थापन करतां घरनुं उत्पन्न थएलुं नक्षत्र जे दिशामां आवे ते दिशामां चंद्र छे एम समजवुं. पण ते चंद्र घरनी पाछळ आवे तो हानि करे; तथा घरना सामे आवे तो घरना आयुषनो क्षय करे, अने घरनी जमणी तरफ अथवा डावी तरफ आवे तो ते श्रेष्ठ छे. देवमंदिर अने राजाना घरनी सामे चंद्र आवे तो ते सारो छे.

घरधणीनी राशिथी घरनी राशि सातमी आवे तो ते प्रीति करे, तथा दशमी अथवा चोथी राशि आवे तो ते पण सारी छे, अगिआरमी अथवा त्रीजी राशि आवे तो ते पण सारी छे, परंतु घरधणीनी राशिथी घरनी बीजी अथवा बारमी राशि आवे तो ते दरिद्री करे, तथा छट्टी अथवा आठमी राशि आवे तो ते मरण प्राप्त करावे अने घरधणीनी राशिथी घरनी राशि पांचमी अथवा नवमी आवे तो ते क्लेश उत्पन्न करावे.

उपर कहेली राशिओनी गणतरी एवी रीते छे के—अश्विन्यादि त्रण नक्षत्रो घरनां आवे तो तेनी मेषराशि थाय, मघादि त्रण नक्षत्रो घरनां आवे तो ते सिंह राशि थाय, मूळादि त्रण नक्षत्रो घरनां आवे तो ते धनराशि थाय अने बाकी रहेली नव राशिओ जे छे, ते दरेक राशि बब्बे नक्षत्रोनी छे; पण ज्योतिष शास्त्रना मत प्रमाणे तो नक्षत्रना नवचरणनी एक राशि थाय छे. ते राशिओ घर विषे लेवाती नथी पण उपर बताव्या प्रमाणे ज्योतिषना मत प्रमाणे घरधणीनी राशि लेवी.

राजमेहेलना पाटडा उपरनी छातनी जाडाइ दरेक हाथे बे जव प्रमाणे रखावी ते छात पाषाणनी कराववामां आवी हती.

ईंटे चोटाडवाना काममां चुनामां कांकरी रहेवा देता नहि; परंतु कांकरीवाळो चुनो भूमितलमां चोक विगेरे बांधवाना काममां वपराव्यो, कारण के कांकरायुक्त चुनाथी तेवा कामनी मजबूती थाय छे.

तमाम गृहोमां होलो, गीध, वानर अने काक आदि भय आपनार पक्षीओने वरजी ते सिवायना पक्षीओना सुंदर चित्रो चितराव्यां.

नक्षत्रना नव चरणनी समजुती एवी छे के—एक नक्षत्रना चार भागो मानी, ते चारमांथी एक अथवा पा भाग लइ बे नक्षत्रो साथे मेळवो. ए बे आखा नक्षत्रोना आठ भाग अने एक नक्षत्रनो एक भाग मळी नव थाय, ते भागने चरण अथवा पद कहेवामां आवे छे. ते नवचरणमां सवा बे नक्षत्रो थाय एम ज्योतिषनो मत छे, पण शिल्पशास्त्रना मत प्रमाणे तो एक राशि बे नक्षत्रनी गणाय छे अने ज्योतिष प्रमाणे सवा बे नक्षत्रनी एक राशि गणाय छे.

वृश्चिक अने मेषनो स्वामी मंगळ छे, वृष अने तुलानो स्वामी शुक्र छे, मिथुन अने कन्यानो स्वामी बुध छे, कर्कनो स्वामी चंद्रमा छे, सिंहनो स्वामी सूर्य छे, मीन अने धननो स्वामी बृहस्पति छे अने मकर अने कुंभनो स्वामी शनैश्चर छे.

ए रीते राशिना स्वामी कह्या छे, सूर्य, मंगळ, चंद्र अने बृहस्पति ए चारे परस्परमां मित्रो समजवा, तथा बुध, शुक्र, शनैश्चर अने राहु ए चारे प्रथमना चारना (सूर्य, मंगळ, चंद्र अने बृहस्पतिना) वैरी छे. पण कोण कोनो मित्र छे अने कोण कोनो शत्रु छे ए विषे ज्योतिष शास्त्रनो नीचे प्रमाणे आधार छे.

मंगळ, बृहस्पति अने चंद्र ए त्रणे सूर्यना मित्रो छे तथा शुक्र अने शनि ए बन्ने सूर्यना शत्रु छे; अने बुध सूर्यने सम छे अर्थात् शत्रु नहि तेमज मित्र पण नहि. " बुध अने सूर्य ए बन्ने चंद्रने मित्र छे. " पण चंद्रनो शत्रु कोइ नथी. वळी बाकीना जे मंगळ, गुरु, शुक्र अने शनैश्चर ए चार चंद्रने सम छे तथा चंद्र, बृहस्पति अने सूर्य ए त्रणे मंगळना मित्र छे; पण बुध तो मंगळनो शत्रु छे. शुक्र अने शनैश्चर ए बे मंगळने सम छे अने शुक्र तथा सूर्य ए बे बुधना मित्र छे.

आ सिवाय भगवान् विश्वकर्माए श्री कुन्तमहाराजने राजमहेलना बीजा छ भेद तथा छाद्यना छ प्रकार बताव्या ते ए के—

१ जे प्रासादने अलिन्दो होय ते अलिन्दोनी सर्व भूमिओ वरंडी युक्त होय तेनुं नाम "शुद्ध" प्रासाद.

२ जे प्रासाद कक्षासन सहित होय अने ते प्रासादना विस्तारथी अर्ध उंचाइ राखी जेमां छाद्य वाळवामां आवे तेनुं नाम "माड" प्रासाद.

३ जे प्रासादना भद्रोनी चोकीओ माडथी आच्छादित होय तथा तेनी मध्य भूमिना विस्तार जेटलीज उंचाइ करी माथे शृंग करवुं अथवा मध्य भूमिना व्यास करतां सवागणुं उंचुं शृंग

बुधनो शत्रु चन्द्र छे अने गुरु, शनैश्चर अने मंगळ ए त्रण बुधने सम छे, तथा सूर्य, मंगळ अने चन्द्र त्रणे बृहस्पतिना मित्र छे, पण बुध अने शुक्र ए बे बृहस्पतिना शत्रु छे. तथा शनिश्चर तो बृहस्पतिने सम छे. बुध अने शनैश्चर ए बे शुक्रना मित्र छे पण सूर्य अने चन्द्र ए बे शुक्रना शत्रु छे. तथा मंगळ अने बृहस्पति ए बे शुक्रने सम छे. तथा शुक्र अने बुध ए बे शनैश्चरना मित्र छे. पण चंद्र, सूर्य अने मंगळ ए त्रणे शनैश्चरना शत्रु छे अने बृहस्पति तो शनैश्चरने सम छे.

हवे विचारवानुं थशे के ग्रंथकर्त्ताए बुधने चंद्रनो मित्र बताव्यो छे. अने बीजी वखत बुधनो शत्रु चंद्र छे एम कहेवामां आव्युं छे पण ए विरुद्धतानुं कारण ए छे के बुध चंद्रनो पुत्र छे एटले पिता सामे पुत्र वैर राखे पण पुत्र सामे पिता वैर राखे नहि.

श्रवण, पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, अनुराधा, स्वाति, रेवती, हस्त अने पुनर्वसु ए नव नक्षत्रो देवगणनां छे, तथा भरणी, रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वापाढा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तरापाढा, उत्तराभाद्रपदा अने आर्द्रा ए नव नक्षत्रो मनुष्यगणनां जाणवां तथा मूळ, विशाखा, कृत्तिका, मघा, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा, ज्येष्ठा अने अश्लेषा ए नव नक्षत्रो राक्षसगणनां छे माटे घरनुं नक्षत्र जो दैत्य अथवा राक्षसगणनुं होय अने घरधणीनुं नक्षत्र मनुष्यगणनुं होय, अथवा घरनुं नक्षत्र मनुष्यगणनुं होय अने घरधणीनुं नक्षत्र राक्षसगणनुं होय तो ते घरधणीनुं मृत्यु करे (मनुष्य अने राक्षस बेमां परस्पर विरोधभाव छे माटे) तथा घरनुं नक्षत्र देवगणनुं

करवुं पण ते शृंगनुं रुप खीलेला कमळनी कळी समान आकृतिवाळुं होय तेनुं नाम "मौड" प्रासाद.

४ उपर मुजब प्रासाद बनाववो परंतु तेमां शृंग मुकवानुं कहेल छे. ते न मुकतां तेने बदले देव मंदिर उपर जेवुं शिखर होय तेवीज आकृतिनुं शिखर करवुं तेनुं नाम "शेखर" प्रासाद.

५ प्रासादने लागेला भद्रो पासे जे खूणो नीकळे छे तेनुं नाम तवंग छे, ते तवंगो उपर घंटाओ अने कळशो होय तो तेनुं नाम "तुंगार" प्रासाद.

६ प्रासादना भद्रोना खूणाओने गोळ करवा ते ए रीते के प्रासादना जे भद्रो होय ते भद्रोने मथाळे खूणाओने गोळ करवा तेनुं नाम "सिंह कर्ण" प्रासाद.

होय अने घरधणीनुं नक्षत्र राक्षसगणनुं होय अथवा घरनुं नक्षत्र राक्षसगणनुं होय अने घरधणीनुं नक्षत्र देवगणनुं होय, तो ते क्लेश करे माटे एवां परस्पर विरोधी नक्षत्रोनो सर्वथा त्याग करवो.

घरनुं नक्षत्र देवगणनुं होय अने घरधणीनुं नक्षत्र मनुष्यगणनुं होय अथवा घरनुं नक्षत्र मनुष्यगणनुं अने घरधणीनुं नक्षत्र देवगणनुं होय तेमज घरनुं अने घरधणीनुं ए बन्ने नक्षत्रो देवगणनां होय अथवा ए बन्नेनां नक्षत्रो मनुष्यगणनां होय तो ते श्रेष्ठ छे.

उत्तरा फाल्गुनी अने अश्विनी ए बन्ने नक्षत्रोने परस्परमां वैर छे, स्वाति अने भरणी ए बे नक्षत्रोने वैर छे, रोहिणी अने उत्तराषाढा ए बे नक्षत्रोमां वैर छे, श्रवण अने पुनर्वसु ए बे नक्षत्रोने वैर छे, चित्रा अने हस्त ए बे नक्षत्रोमां वैर छे, तेमज पुष्य अने अश्लेषा वच्चे, अने ज्येष्ठा अने विशाखा वच्चे वैर छे माटे प्रासाद, घर, आसन अने शय्या विषे उपर बतावेलां नक्षत्रवैर तजवां.

कर्क, मीन अने वृश्चिक ए त्रण राशिनो ब्राह्मण वर्ण जाणवो, सिंह, मेष अने धन ए त्रण राशिनो क्षत्रिय वर्ण जाणवो, कन्या, मकर अने वृष ए त्रण राशिनो वैश्य वर्ण जाणवो, मिथुन, कुंभ अने तुला ए त्रण राशिनो शूद्र वर्ण जाणवो.

जेम स्वामीनी राशिना वर्णथी स्त्रीनी राशिनो वर्ण उत्तम होय तो तेवी स्त्रीने स्वामीए परणवी नहि, तेमज घरधणीनी राशिना वर्णथी घरनी राशिना उत्तम वर्णवाळुं घर करवुं नहि, पण

१ छाद्य तृणनुं. २ पर्णनुं. ३ पाटीयानुं. ४ वांसना खपेडा अथवा ट्ट्टानुं, ५ मृत्तिकानुं ६ पथ्थरनी शिलानुं.

महाराजा कुन्ते उपर मुजब प्रासादो तथा छाद्यो पण बंधाव्यां अने राज्यमहेलनी डावी तथा जमणी बाजु क्रीडा करवा माटे उत्तम बाग बनाव्या; ते बागना भगवान् विश्वकर्माए उत्तम, मध्यम, अने कनिष्ठ ए रीते त्रण प्रकार बताव्या; सो दंडनो कनिष्ठ, बसो दंडनो मध्यम अने त्रणसो दंडनो उत्तम. श्री कुन्त राजर्षिए त्रणसो त्रणसो दंडना ज्येष्ठमानना बाग बनावी तेमां मंडप रचाव्या अने ते मंडपमां जलयंत्र तैयार कराव्या. ते ए रीते के प्रथम फुहारा करवाना क्षेत्रना सात सात कोठाओ कर्या ते ओगणपचाश कोठाओमांथी चारे दिशाओ तरफ त्रण त्रण

राशिना ब्राह्मण वर्णवाळाने मीनराशिनुं घर करवुं, तथा राशिना क्षत्रिय वर्णवाळाने धन राशिनु घर करवुं, राशिना वैश्यवर्णवाळाए कन्याराशिनुं घर करवुं अने राशिना शूद्र वर्णवाळाए मिथुन राशिनुं घर करवुं.

अश्विनी, अने शतभिषा ए बन्ने नक्षत्रोनी अश्वयोनि, भरणी अने रेवती ए बे नक्षत्रोनी हस्तीयोनि. कृत्तिका अने पूष्य ए बे नक्षत्रोनी छागयोनि, रोहिणी अने मृगशिर ए बे नक्षत्रोनी सर्पयोनि. मूळ अने आर्द्रा ए बे नक्षत्रोनी श्वानयोनि, अश्लेषा अने पुनवसु ए बे नक्षत्रोनी मार्जारयोनि, अने पूर्वाफाल्गुनी अने मघा ए बे नक्षत्रोनी उंदिर योनि छे एम समजवुं.

उत्तराभाद्रपदा अने उत्तराफाल्गुनी ए बे नक्षत्रोनी गायनी, स्वाति अने हस्त, ए बे नक्षत्रोनी महिषी योनि, चित्रा अने विशाखा ए बे नक्षत्रोनी वाघनी योनि, ज्येष्ठा अने अनुराधा ए बे नक्षत्रोनी हरणयोनि, पूर्वाषाढा अने श्रवण ए बे नक्षत्रोनी वानरनी योनि, उत्तराषाढा अने अभिजीत ए बे नक्षत्रोनी नकुळयोनि, पूर्वाभाद्रपद अने धनिष्ठा ए बे नक्षत्रोनी सिंहनी योनि छे. ए रीते नक्षत्रनी योनिथी उत्पन्न थएलुं वैर जो घरनी जोडे घरना धणीने लोक वहेवारे लागु पडतुं होय तो ते तजवुं.

आयनो अंक, नक्षत्रनो, तारानो, व्ययनो अने अंशकनो ए सर्व अंकोने एकठा करतां जेटलो अंक थाय ते अंकने पंदर भागे भागतां शेष जे रहे ते घरनी तिथि छे एम समजवुं, तथा तेज अंकने (सर्व अंकोने एकठा करवे एकंदरे जे अंक थयो होय तेने) साते भागतां शेष जे रहे ते वार जाणवो अने वळी तेज अंकने बारे भागतां शेष जे रहे ते लग्न जाणवुं.

कोठाओना भद्रो कराव्यां. बाकी मध्यमां रहेला पचीश कोठाओनी चारे बाजुना कोठाओमां पाणी भराव्युं तेने फरतो होज बंधाव्यो. पूर्वोक्त ओगणपचाश कोठाओ मध्यना एक कोठामां वेदिका अर्थात् बेसवानो चोतरो कराव्यो. ए वेदिकानी आसपास आठ कोठाओना भागमां द्वादश स्तंभो बंधाव्या; ए फुहारा वहारना अर्थात् छेल्ला चार तरफना चार खूणाओ माथेना कोठाओ उपर स्वरुपवान् कोइना हाथमां मृदंग, कोइना हाथमां पिचकारी, कोइ नृत्य भाव बतावती एवी तेरहत्तार पुतळीओ तैयार करावी स्थपावी.

महाराजा कुन्ते आ रीते बाग तैयार कराव्या पछी तेमां वृक्षो तथा लताओ वाववा अने तेने उछेरवा माटे एक वृक्षायुर्वेद जाणनार माळीने बोलावी वृक्षो कइ कइ ऋतुमां शी रीते

घरनी लंबाइ साथे पहोळाइने गुणतां जे अंक आवे ते अंकने घरनी उंचाइना अंक साथे मेळवी सरवाळो करतां, जेटलो अंक आव तेटला अंकने आठे भागतां शेष जे रहे ते घरनो अधिपति वर्ग जाणवो. ते आठ वर्गोमांथी बीजो, चोथो, छठ्ठो अने आठमो वर्ग. ए चारमांथी कोइ पण वर्ग आवे तो ते श्रेष्ठ समजवो, पण पहेलो, त्रीजो, पांचमो अने सातमो ए चारमांथी कोइ पण वर्ग आवे तो ते शुभ गणातो नथी.

गरुड, बीलाडो, सिंह, श्वान, सर्प, मूषक, मृग अने मेंढो ए आठ वर्गो पूर्व दिशाथी अनुक्रमे सृष्टि मार्गे दिशाओ अने विदिशाओ मळी आठना स्वामी छे; माटे ते घरनी आठ दिशाओना आठ स्वामी समजवा अने हवे पाठांतरथी घरना धणीना वर्गो समजवाना छे. ते एवी रीते के:—

"अ" "इ" "उ" "ए" चार अक्षरोमांथी गमे ते अक्षर घरधणीना नामना आद्यमां होय तो तेनो **गरुड** वर्ग, "क" "ख" "ग" "घ" "ङ" ए पांच अक्षरोमांथी गमे ते अक्षर घरधणीना नामना आद्ये होय तो तेनो "**विडाल**" वर्ग छे, "च" "छ" "ज" "झ" "ञ" ए पांच अक्षरोमांथी गमे ते अक्षर घर धणीनानामना आद्ये होय तो तेनो "**सिंह**" वर्ग, "ट" "ठ" "ड" "ढ" "ण" ए पांच अक्षरमांथी गमे ते अक्षर नामना आद्ये होय तो तेनो "**श्वान**" वर्ग छे, "त" "थ" "द" "ध" "न" ए पांच अक्षरमांथी गमे ते अक्षर नामना आद्ये होय तो तेनो "**सर्प**" वर्ग छे, "प"

वाववाथी सारां फळे छे; तथा जमीनने केवी रीते खेडवी विगेरे प्रश्न कर्यो. महाराजनी आज्ञा माथे चडावी माळीए जवाब आप्यो के-सर्व वृक्षोने माटे कोमळ भूमि उत्तम गणाय छे; जे जगोए बाग बनाववो होय त्यां प्रथम तल वाववा. ते तल फूल्या बाद तेनुं मर्दन करी नांखवुं, त्यार पछी तेमां निम्ब, अशोक, पुन्नाग, शिरीष अने प्रियंगु ए शुभ वृक्षो प्रथम वाववां जोइए.

पनस, अशोक, केळ, जांबु, लकुच, दाडिम, द्राक्ष, पालीवत, बीजपूर अने अतिमुक्तक ए वृक्षोनी कलम लइ तेना उपर गोमय लेप करी तेमज बीजां वृक्षोने मूळथी अथवा डाळथी कापी तेना उपर गोमय लगावी वाववां जोइए.

जेने शाखा उगी न होय एवां वृक्षोनुं एक स्थानथी उठावी बीजे स्थाने पोतपोतानी दिशा मध्ये शिशिर ऋतुमां स्थापन कराय छे; जेने शाखा उगी गइ होय तेने हेमंत ऋतुमां अने उत्तम उत्तम शाखावाळां वृक्षोनुं वर्षा ऋतुमां रोपण करवुं जोइए.

"फ" "ब" "भ" "म" ए पांच अक्षरमांथी गमे ते अक्षर नामना आद्ये होय तो तेनो "मूषक" वर्ग छे, "य" "र" "ल" "व" ए चार अक्षरोमांथी गमे ते अक्षर नामना आद्ये होय तो तेनो "मृग" वर्ग छे, अने "श" "ष" "स" "ह" ए चार अक्षरोमांथी गमे ते अक्षर घरधणीना नामना आद्यमां होय तो तेनो "मेष" नो वर्ग छे. पण घरधणीना वर्गथी घरनो पांचमो वर्ग आवे तो ते शत्रु होवाथी तेने तजवो.

सर्पना आकारे त्रण नाडीनुं चक्र करी तेमां अश्विन्यादि सतावीश नक्षत्रो वेध करवां, (सर्पना नव भागो करी ते दरेक भागमां त्रण नक्षत्रो विंधवां) ए नक्षत्रो एवी रीते वींधवां के-सर्पाकृति चक्रमां एक नाडीमां वर अने कन्यानां नक्षत्रो आवे तो ते मृत्यु करे माटे ते सारां नहि, तेथी ते नक्षत्रोना अंश तजवा. पण स्वामी अने सेवकने, मित्रमित्रने, घरने अने घरना स्वामीने तेमज नगरने अने राजाने एटलाओना नक्षत्रोनो एक नाडीमां वेध थाय तो सारो छे. वळी प्रथमना भागमां घरो विषे आयादि नव प्रकार जोवा. पण तेमां विशेषे करीने त्रण प्रकार जोवा अथवा पांच, सात, के नव प्रकार जोइ घर करे तो घर करनार सुखी थाय छे.

जेमां घणा गुणो अने थोडा दोषो रहेला होय एवुं घर अने देवमंदिरादि करवामां कांइ हरकत नथी. जेमके घणा तापवाळो अग्नि पाणीना झीणा बिंदुवडे बुझाय नहि तेज रीते जे वस्तुमां घणा गुणो रहेला होय ते पदार्थने थोडा दोष वडे कांइ हानि थाय नहि.

घृत, उशीर, तिल क्षौद्र, विडंग, क्षीर, अने गोमय ए सर्वने पीसी मूळथी शाखा पर्यन्त वृक्षोने लेप करवो अने पछी तेने एक स्थानथी उठावी बीजे स्थाने रोपवां.

पवित्रपणे स्नान अने अनुलेपनथी वृक्षनी पूजा करी तेने बीजे स्थाने रोपवामां आवे तो ते वृक्ष एनां ए पत्रोथी उगी निकळे छे अर्थात् सुकातुं नथी.

रोपेलां वृक्षोने ग्रीष्म ऋतुमां सांज सवार बन्ने वखत जळनुं सिंचन करवुं जोइए, शीतकाळमां एक दिवसने अंतरे अने वर्षा ऋतुमां जमीन सुकाइ गया बाद पाणी पावुं जोइए.

जांबु, वेतस, वानीर, कदंब, गूलर, अर्जुन, बीजपूर, द्राक्ष, कालकुच, दाडिम, वंजुल, नक्तमाल, तिलक, पनस, तिमिर अने आम्रातक ए सोळ वृक्षो घणा जळवाळा देशमां थाय छे.

एक वृक्षथी बीश हाथने अंतरे बीजुं वृक्ष रोपाय ते उत्तम, सोळ हाथने अंतरे मध्यम अने बार हाथने अंतरे रोपाय ते कनिष्ठ गणाय छे.

जे वृक्षो अति समीप उगे अने परस्पर स्पर्श करे तथा तेओनी जड एक बीजाथी मळी जाय तो ते पीडित थाय छे अने ए कारणथी ते वृक्षो सारी रीते फळतां नथी.

बहु शीत, पवन अने आतपथी वृक्षोने रोग थाय छे, तेना पत्रो पीळां पडी जाय छे, अंकुर वृद्धि पामतां नथी, शाखाओ सुकाइ जाय छे अने रस टपकवा लागे छे.

रोगी वृक्षनी एवी रीते चिकित्सा करवी जोइए के प्रथम तेनां जे अंगमां सडो होय अथवा शुष्कता आदि देखाय तेने शस्त्रथी कापी तेना उपर वावडींग, घृत अने पंकने मिलावी चोपडवां, पछी दूध अने जळ मिलावी ते उपर सिंचवुं.

वृक्षमां फळ न लागतां होय तो कुलत्थ, माष, मुद्ग, तिल अने यव ए सर्वने दुधमां नांखी ते दूधने गरम करवुं. खूब उकाळ्या बाद ठंडु करी तेनाथी फळ अने पुष्पोनी वृद्धि माटे वृक्षने सिंचन करवुं.

अविका अने बकरीनी लींडीओनुं चूर्ण बे आढक, एक आढक तल, एक प्रस्थ सक्तु, एक द्रोण जळ अने एक तुला गोमांस ए सर्वने एक पात्रमां नांखी सात रात्रि पर्यन्त राखवां, आठमे दिवस तेनाथी वृक्ष, वेल, गुल्म अने लताओने फळ अने पुष्पोनी वृद्धि अर्थे सिंचन करवुं.

सोळ पलनो एक प्रस्थ, चार प्रस्थनो एक आढक, चार आढकनो एक द्रोण अने सो पलनी एक तुला थाय छे. आठ रतिनो एक मासो गणीए तो चाळीश मासानो एक पल थाय छे.

गमे ते वीजने घृतथी चीकणो हाथ करी चोपडवो, पछी ते वीजने दूधमां नांखवुं; ए रीते दश दिवस पर्यन्त हमेशां प्रयोग करी तेने गोमयथी घणो वखत रुखुं करवुं, ए वीजने सूकर अने हरिणना मांसनो धूप देवो, त्यारवाद मांस अने सूकरनी चरवी सहित ते वीजने तल वावी शुद्ध करेली भूमिमा वाववुं, ते उपर दूधयुक्त जळनुं सिंचन करवाथी ते वीजमांथी उत्पन्न थनार वृक्ष पुष्पो सहित उगे छे.

अति कठोर आंवलीनां वीजने व्रीहि, अडद, अने तलनुं चूर्ण तथा सक्तु अने सडेलुं मांस ए सर्वथी सिंचन करी तेने हळदरनो धूप देवाथी ते वीजमां नवां अंकुर निकळी आवे छे तो पछी वीज जामे एमां संदेह शो ?

कपित्थनां वीजथी वल्लरी करवानी इच्छा थाय तो आस्फोत, धात्री, धव, वासिक, पत्रो सहित वेतस तथा सूर्यवल्ली, श्यामा अने अतिमुक्तक ए आठेनी जड अने वेतसनां पांदडां लइ दूधमां नांखवां, ए दूधने खूव उकाळवुं पछी तेने ठंडुं करी तेमां कपित्थनुं वीज नांखवुं, वन्ने हाथथी सो ताल वजावीए एटला समय पर्यन्त दूधनी अंदर राख्या वाद पाछुं तेमांथी कहाडी तडके सुकाववुं. ए रीते एक महिना पर्यन्त हमेशां प्रयोग करवो; एक हाथ लांवो तथा एक हाथ पहोळो अने वे हाथ उंडो खाडो खोदी तेने दूधयुक्त जळथी भरी देवो. ज्यारे ए जळ सुकाइ जाय त्यारे ते खाडाने अग्निथी वाळी देवो अने मध, घृत तथा भस्म मिलावी तेने लींपवो, त्यारवाद प्रथम चार आंगळ माटी भरी ते उपर अडद, तल अने यवनां चूर्णथी ते खाडो पूरी देवो, पारी मत्स्य मांसयुक्त जळथी ते कठिन थाय त्यां सुधी तेने ठोकवो, पछीथी ते खाडामां चार आंगळ नीचे प्रथम सिद्ध करेल कपित्थनुं वीज वोवुं तेने मत्स्य, जळ अने मांस जळनुं सिंचन करवाथी तुरतज उत्तम पत्रोयुक्त वल्ली वनी जाय छे अने मंडपने ढांकी दे छे, जे जोवाथी सर्वना मनमां आश्चर्य उत्पन्न थाय छे.

अंकोलना फळनां कल्कथी, अंकोल फळनां तेलथी अथवा श्लेष्मातकनां फळथी अर्थात् तेना कल्कथी अथवा तेलथी गमे ते वृक्षना वीजने सो वार सींचवा, पछी तेने वरसादमां पडता

कराथी भींजाएली मृतिकामां वाववाथी तेज वखते बीज जामी फळोना भारथी झुकती लता बनी जाय छे. एमां कांइ पण आश्चर्य नथी.

श्लेष्मातकनां बीज लइ तेनी छाल उतारवी अने अंकोल फळनी अंदरनां जळथी ते बीजोने छायामां सात वखत सींचवां अर्थात् जळथी सींची सींची छायामां सुकावता जवुं, पछी तेने भेंसना छाणमां घसी पाछा तेनाज सुकेला गोमयना ढगलामां राखी मुकवां. ज्यारे करा पडे अने माटी भींजाय त्यारे ते माटीमां पूर्वोक्त बीजोने वोवाथी एकज दिवसमां वृक्ष बनी फळवा लागे छे.

आ रीते वृक्षायुर्वेद जाणनार माळीना मुखथी सर्व श्रवण करी महाराजा कुन्न पूर्णरीते प्रसन्न थया अने माळीने पोताना बागवान तरीके नीमी तेना हाथथी पोते तैयार करावेल बागमां चंपो, कुंद, जाइ, पुष्पवाळी वेलीओ, निर्मालिका, सुवर्ण सरखां पीळां पुष्पोवाळी जाइ, केतकी, धोळी पाडळ, नारंगीनां वृक्षो, लाल कणेर, वसन्तलतिका, लाल पुष्पोवाळां अनेक वृक्षो तेमज बीजी अनेक प्रकारनी वेलीओ, जंबीर, बोरडी, सोपारीनां वृक्षो, महुडां, जांबु, आम्र, मालूर, कदली, चंदन, वड, पींपळा, हरडे, आंबळी, आंबली, आसोपालव, कदंब, निम्बवृक्ष, खजूरी, दाडमी, कर्पूर, अगर, खाखरा, श्वेत कणेर, पुन्नाग, अनेक प्रकारनां लींबुनां वृक्षो, नागरवेल, बीजोरानां वृक्षो, तिन्दूकी, नाळीएरीओ, द्राक्षलताओ, इलायचीना रोपो, बोलसरी, धतूरा, कर्पूर-काचली, सादड, ताल, तमालवृक्ष, इंगोरी, मन्दार, पारिजातक अने ए सिवाय अनेक प्रकारनां श्रेष्ठ अने तरेहवार जातिनां पुष्पो उत्पन्न थाय एवां वृक्षो रोपाव्यां; उक्त बागनी अंदर बाला, मध्या अने प्रौढा ए त्रणे जातिनी स्त्रीओने मनोहर गान करवा अर्थे, तेओने हींचवा अर्थे हींचोळा बंधाव्या तेमज ग्रीष्म अने शरद ऋतुना दिवसोमां शीत जळमां क्रीडा करवा माटे श्रेष्ठ मंडपवाळा होजोमां पाणी भरावी राख्यां.

राजमेहेलथी डावी तरफ चोसठ हाथ लांबी ज्येष्ठमाननी अश्वशाळा बंधावी; तेनी पहो-ळाइ पंदर हाथ राखवामां आवी, भींतोनो ओसार एक गज पहोळो अने उंचाइ साडापांच हाथ रखावी.

जे अश्वशाळा पचाश हाथ लांबी, तेर हाथ विस्तारवाळी, भींतना एक गज पहोळा ओ-सारवाळी अने पांच हाथ उंचाइवाळी होय ते मध्यम, तथा जे चाळीश हाथ लांबी, अगियार

हाथ पहोळी, भीतोना एक गज पहोळा ओसारवाळी अने चार हाथ उंची होय ते कनिष्ठ गणाय छे.

पूर्वोक्त अश्वशाळामां घोडाओना मुख आगळ तेने खावानुं घास राखवा माटे ओदनकोष्ठकपण बे हाथ उंचो बंधावी तेना उपर कळश कराव्या अने ते पणना पायाथी शाळानी उंचाइ सुधी सात हाथ उंचुं तोरण कराव्युं.

पूर्वोक्त पट्ट प्रकारना राजमहेलने पंदर हाथ उंचा अने आठ हाथ पहोळा ज्येष्ठमानना दरवाजाओ बंधाव्या.

जे तेर हाथ उंचो अने सात हाथ पहोळो होय ते मध्यम तथा अगियार हाथ उंचो अने छ हाथ पहोळो होय ते कनिष्ठ कहेवाय छे.

महाराजा कुन्ते ज्येष्ठमानना सिंहद्वारना मुख आगळनी शाखाना स्तंभने मथाळे कोइ राजमहेलमां त्रण, क्यांइ बे अने क्यांइ एक मदळ गोठवाव्यां अने ते मदळोना रक्षण माटे तेना नीचे तुल्य अर्थात् पहोळाइ अने जाडाइमां समान टोडांओ मुकाव्यां. वयांइ सवायां तेमज क्यांइ दोढां रखाव्यां.

सिंहद्वारथी जमणी बाजुए मजबूत अने उंची एक हस्तिशाळा बंधावी अने तेना उपर कळश तथा घंटाओ मुकावी सुशोभित करी ने हस्तिशाळा सिंहद्वारथी डाबी बाजुए पण बंधावी शकाय छे.

हस्तिशाळानुं मुख बन्ने बाजुए सरखुं राखी गर्भे द्वार मुकाव्युं तेमज अश्वशाळाना बत्रीश भाग करी गर्भथी डाबी तरफ एक भाग वधारे राखी द्वार मुकाव्युं.

सेनापतिने माटे चोसठ हाथ पहोळुं उत्तम गृह तैयार करावी ए गृहना प्रमाणथी छ छ हाथ घटाडी बीजां चार गृह बनाव्यां. जे जे गृहनी जेटली पहोळाइ कही बतावी ते पहोळाइनो छट्टो भाग तेमां उमेरी ते ते गृहनी लंबाइ राखवामां आवी.

मंत्रीने माटे साठ हाथ पहोळुं उत्तम गृह तैयार कराव्युं. ते गृहना प्रमाणथी चार चार हाथ घटाडी बीजां चार गृह बंधाव्यां ते तमाम गृहोमां जे जे गृहनी जेटली पहोळाइ कही ते पहोळाइनो अष्टमांश तेमां उमेरी ते ते गृहोनी लंबाइ राखी. आ पांच गृहोनी लंबाइ पहोळाइथी अर्ध प्रमाण तुल्य लांबा पहोळां पांच गृहो राजराणी माटे तैयार कराव्यां.

युवराज माटे एंशी हाथ पहोळाइवाळुं उत्तम गृह बंधाव्युं. ते गृहना प्रमाणथी छ छ हाथ घटाडी बीजां चार गृह तैयार कराव्यां; ते तमाम गृहोमां जे जे गृहनी जेटली पहोळाइ कही ते पहोळाइनो तृतीयांश तेमां उमेरी ते ते गृहोनी लंबाइ राखी, आ युवराजना पांच गृहना मापथी अर्ध प्रमाणनां पांच गृहो युवराजना न्हाना भाइने निवास करवा बंधाव्या.

पोताना अने मंत्रीना पांच गृहोना अंतर प्रमाणे लंबाइ पहोळाइवाळां पांच गृह प्रधान पुरुषो माटे बंधाव्यां; मांडलिक राजा माटे पण आनां पांच गृह बनाववामां आवेछे. पोताना अने युवराजना पांच गृहोना अंतर तुल्य लंबाइ पहोळाइवाळां पांच गृह वेश्या, कंचुकी अने कलाकोविद पुरुषो माटे बंधाव्यां.

पोताना अने सेनापतिना गृहनी लंबाइ पहोळाइनां अंतर तुल्य लंबाइ पहोळाइवाळां कोश अने रतिगृह बंधाव्यां; ते कोश अने रति गृहना सरखां अश्वशाला गजशाला आदिना अध्यक्ष तेमज कार्याधिकारीओनां गृहो तैयार कराव्यां.

युवराजना अने मंत्रीना गृहनी लंबाइ पहोळाइना अंतर तुल्य कर्मशालाध्यक्ष अने दूतोना गृहोनी लंबाइ तथा पहोळाइ राखी.

दैवज्ञ, पुरोहित अने वैद्य माटे चाळीश हाथ पहोळाइवाळां उत्तम गृह बंधाव्यां, ते गृहना प्रमाणथी चार चार हाथ घटाडी बीजां चार गृहो तैयार कराव्यां. जे जे गृहोनी जेटली पहोळाइ कही ते पहोळाइनो षष्ठमांश तेमां उमेरी ते ते गृहनी लंबाइ राखवामां आवी.

चार शाळावाळा गृहोनी उंचाइ तेनी पहोळाइ प्रमाणेज अने एक शाळावाळा गृहोनी उंचाइ तेनी पहोळाइथी बमणी रखावी.

ब्राह्मण माटे बत्रीश हाथ पहोळाइवाळां प्रधानगृह बंधावी ते गृहना प्रमाणथी चार चार हाथ घटाडी बीजां चार गृहो तैयार कराव्यां, क्षत्रीय माटे अठ्यावीश हाथनी पहोळाइवाळां प्रधानगृह बंधावी तेना प्रमाणथी चार चार हाथ घटाडी बीजां चार गृहो तैयार कराव्यां; वैश्यने माटे चोवीश हाथ पहोळाइवाळां प्रधानगृह बंधावी ते प्रमाणथी चार चार हाथ घटाडी बीजां बे गृहो तैयार कराव्यां अने शूद्रने माटे वीश हाथ पहोळाइवाळां प्रधानगृह बंधावी ते प्रमाणथी चार हाथ घटाडी बीजुं एक एक गृह तैयार कराव्युं. आ रीते सोळ हाथनी पहोळाइ पर्यन्त गृहो बंधाव्यां

अने अत्यंत नीच जातिनां गृहो एथी पण ओछी पहोळाइवाळां बंधाव्यां; ब्राह्मणना गृहनी पहोळाइमां तेनो दशांश, क्षत्रियना गृहनी पहोळाइमां तेनो अष्टमांश, वैश्यना गृहनी पहोळाइमां तेनो षष्ठमांश अने शूद्रना गृहनी पहोळाइमां तेनो चतुर्थांश उमेरी ते ते वर्णना गृहोनी लंबाइ राखवामां आवी.

सेनापति अने ब्राह्मणना प्रथम गृहना अंतर प्रमाणे ब्राह्मण राजपुरुषनां गृह; सेनापतिनुं बीजुं गृह अने क्षत्रियना प्रथम गृहोना अंतर तुल्य क्षत्रिय राजपुरुषनां गृह; सेनापतिनुं त्रीजुं गृह अने वैश्यना प्रथम गृहना अन्तर प्रमाणे वैश्य राजपुरुषनां गृह अने सेनापतिनुं चतुर्थ गृह तथा शूद्रना प्रधान गृहना अन्तर प्रमाणे शूद्र राजपुरुषनां गृहो बंधाव्यां.

ब्राह्मणथी शूद्रा स्त्रीमां जे उत्पन्न थाय तेने पारशव कहे छे एवीज रीते बीजा पण अम्बष्ठ आदि वर्णसंकरोना घरनी लंबाइ तथा पहोळाइ तेना मातपिताना जे वर्ण होय तेना गृहनी लंबाइ पहोळाइने एकत्र करी तेनाथी अर्ध प्रमाण रखावी अर्थात् ब्राह्मण अने शूद्रना गृह प्रमाणनो सरवाळो करी तेनाथी अर्ध मापनी लंबाइ पहोळाइवाळां पारशव आदिना गृहो बंधाव्यां; मापनुं बराबर ध्यान रखाव्युं हतुं कारणके शास्त्रोक्त प्रमाणथी हीन अथवा अधिक मापनां गृहो अशुभ गणाय छे.

पशुओने माटे अने सन्यासी आदि आश्रमीओने माटे पोतानी इच्छा मुजब रमणीय गृहो बंधाव्यां कारणके तेनुं प्रमाण क्यांइ कहेल नथी. आ रीते धान्य, शस्त्र अने रत्निना गृहो पण इच्छा मुजब तैयार कराव्यां; दरेक गृहोनी उंचाइ सो हाथनी अंदर रखावी हती कारणके एथी वधारे उंचाइ करवानी भगवान् विश्वकर्माए ना कही हती.

सेनापतिगृह अने राजगृहनी पहोळाइमां सीत्तेर हाथ उमेरी तेना बे विभाग करी, तेमांना एक विभागने चौदे भागवाथी बाकी रहेल हाथ अने अंगुल प्रमाणे शाळाओ तैयार करावी; अने बीजा विभागने पांत्रीशे भागवाथी बाकी रहेल हाथ अने अंगुल प्रमाणे अलिन्द बंधाव्यां; शाळानी भींत बाहेर जाळीथी घेराएली आंगणा सामेनी खडकीने अलिन्द कहे छे.

बत्रीश हाथ आदि जे ब्राह्मण आदि वर्णोनां गृहनां प्रमाण कह्यां तेनी शाळाओनां प्रमाण नीचे मुजब रखाव्यां; ब्राह्मणना प्रधान गृहमां शाळानी पहोळाइ चार हाथ अने सत्तर आंगळ; बीजा गृहमां चार हाथने त्रण आंगळ, त्रीजा गृहमां त्रण हाथने पंदर आंगळ, चोथा

गृहमां त्रण हाथने तेर आंगळ अने पांचमां गृहनी शाळानुं प्रमाण त्रण हाथने चार आंगळ; ब्राह्मणनां बीजां गृहो तुल्य क्षत्रियनुं प्रधानग्रह, क्षत्रियना बीजा गृह तुल्य वैश्यनुं प्रधान गृह, अने वैश्यनां बीजां गृह तुल्य शूद्रनुं आ रीते सर्व प्रधानगृह वर्णना गृहोमां शाळानुं प्रमाण निर्मित कर्युं; ब्राह्मणना प्रधान ग्रहमां अलिन्दनुं प्रमाण त्रण हाथने ओगणीश आंगळ, बीजा गृहमां त्रण हाथने आठ आंगळ, त्रीजा ग्रहमां बे हाथने वीश आंगळ, चोथा ग्रहमां बे हाथने अढार आंगळ अने ब्राह्मणना पांचमां ग्रहमां अलिन्दनुं प्रमाण बे हाथने त्रण आंगळ रखाव्युं. शाळाना तृतीयांश तुल्य ग्रहनी बाहेर वीथी बनावी ते वीथिमांथी केटलीएक वास्तुनी आगळना भागमां राखी तेनुं नाम "सोष्णीश" केटलीएक पाछली तरफ राखी तेनुं नाम "सापाश्रय," केटलीएक जमणी बाजु राखी तेनुं नाम "सावष्टम्भ" अने केटलीएक वास्तुनी चोतरफ बनावी ते "सुस्थित" वास्तु कहेवाय छे. अने ए चारे शुभ लेखाय छे.

गृहनी पहोळाइना प्रमाणने सोळे भागतां बाकी रहेल प्रमाणमां चार हाथ उमेरी तेटली उंचाइवाळा ते ते गृहमां प्रथम खंड बंधाव्या, प्रथम खंडनी उंचाइना प्रमाणथी द्वादशांश घटाडी त्रीजा चोथा आदि खंडनी उंचाइ रखावी.

सर्व गृहोनी भींतोनुं प्रमाण ते ते गृहोनी पहोळाइ करतां षोडशांश रखाव्युं; आ प्रमाण पाकी इंटोना घरमां राखवानुं छे. काष्ठना गृहमां भींत, पहोळाइ, लंबाइ के उंचाइ आदिनो कांइ नियम नथी.

राजा अने सेनापतिना गृहनी पहोळाइमां तेनो अग्यारमो भाग उमेरी तेमां बीजां सत्तर नांखतां जे अंक थयो तेटला आंगळ तेना गृहद्वारनी उंचाइ अने ए उंचाइथी अर्धद्वारनी पहोळाइ रखावी.

ब्राह्मण आदि वर्णोना गृहनी पहोळाइनो पंचमांश लइ तेटला अंगुल मानी तेमां अढार आंगळ उमेर्या. फरी एनुं अष्टमांश तेमां उमेरतां जेटला आंगळ थया तेटली ते ते गृहद्वारनी पहोळाइ अने तेथी त्रण गणी द्वारनी उंचाइ रखावी.

द्वारना चोगठांनी बन्ने भुजाओने शाखा उपर नीचेना काष्ठने शिरधर अने उंबराने उदुम्बर कहे छे. द्वार जेटला हाथ उंचां बनाव्यां होय तेटला आंगळ शाखाओनी उंचाइ अने शाखाओथी दोढी उदुम्बरनी उंचाइ रखावी. ए उंचाइने सातथी गुणी ऐंशीथी भागतां जे बाकी रह्युं

तेटला आंगळ ए सर्वनी पहोळाइ राखी; स्तंभनी उंचाइने नवथी गुणी अेंशीथी भागतां जे बाकी रहुं तेटली स्तंभ मूळनी उंचाइ रखावी अने तेमांथी तेनुं दशांश घटाडी स्तंभना अग्रभागनी उंचाइ निर्मित करी.

जे स्तम्भ मध्य भागमां चतुरस्त्र होय ते "रुचक," अष्टास्त्र होय ते "वज्र," षोडशास्त्र होय ते "द्विवज्रक," मध्यमां बत्रीश कोणनो होय ते "प्रलीनक" अने जे वच्चेथी गोळ होय ते "वृत्त" कहेवाय छे.

स्तंभना सरखा नव भाग करी सर्वथी नीचेना भागनुं वहन तैयार कराव्युं, भूमिपर जेना उपर स्तंभ रहे छे तेने वहन कहे छे. वहननी उपरना एक भागमां गृह, तेथी उपरना भागमां कमल, अने तेनी उपरना भागमां उत्तरोष्ठ बनावी बाकीना पांच भागोने चतुरस्त्र आदि बनाव्यां; शोभाने माटे जेमां अनेक प्रकारनां चित्र बनाववामां आवे छे तेने उत्तरोष्ठ कहे छे.

स्तंभ उपर जे आडुं लाकडुं राखवामां आवे छे तेने भार तुला कहे छे अने भार तुलाना उपर उपरना भागमां जे काष्ठो लगाववामां आवे छे तेनी "तुलोपतुल" एवी संज्ञा छे; भार तुलानी उंचाइ स्तंभनी उंचाइ तुल्य राखवामां आवी अने तुलोपतुलनी उंचाइ उत्तरोत्तर चतुर्थांश घटाडी निर्मित करी.

चारे तरफ अलिन्दवाळां, चार द्वारोथी युक्त "सर्वतोभद्र" नामे गृहो देवसमुह तथा पोताने माटे बनाव्यां.

शालानी भींतथी लइ प्रदक्षिण क्रमवाळा अलिन्दयुक्त "नंद्यावर्त" नामे गृहो बंधाव्यां तेमां पश्चिम दिशा सिवाय बाकीनी त्रणे दिशाओमां त्रण द्वार रखाव्यां.

प्रधान गृहना द्वारनुं अलिन्द अन्तर्गत अर्थात् दक्षिणोत्तर शालाथी संलग्न, बीजां शुभ अलिन्द प्रदक्षिण अने एक अलिन्द छेडे रखावी दक्षिण दिशा सिवाय बाकीनी त्रण दिशाओमां द्वार निर्मित करी "वर्धमान" नामे गृहो बंधाव्यां; पश्चिम दिशाना अलिन्द दक्षिणोत्तर शाला संलग्न बंधावी तेथी उत्पन्न बीजा बे अलिन्द पूर्व दिशानी शाळाने लगता बंधावी ते बन्नेना मध्यमां चोथो अलिन्द तैयार करावी "स्वस्तिक" नामे गृह बंधाव्यां. तेमां पूर्व दिशानो त्याग करी बाकीनी त्रणे दिशाओमां द्वारो रखाव्यां.

पूर्व पश्चिमना बे अलिन्द दक्षिणोत्तर शालाथी अने दक्षिणोत्तरना बे अलिन्द पूर्व पश्चिम-

शालाथी संलग्न बंधावी "रुचक" नामे गृहो तैयार कराव्यां ते गृहोमां उत्तरना द्वार अशुभ गणाय छे एटला माटे तेनो त्याग करी बाकीनी त्रणे दिशाओमां द्वारो रखाव्यां.

नंद्यावर्त अने वर्धमान नामनां गृहो सर्व वर्णोने माटे श्रेष्ठ कह्यां छे, स्वस्तिक अने रुचक नामनां गृहो मध्यम गणाय छे अने सर्वतोभद्र केवळ राजा अथवा राजमंत्रीने माटे शुभ लेखाय छे.

भगवान् विश्वकर्माए कुन्तमहाराजने कह्युं के जे गृहमां उत्तर सिवाय बीजी दिशाओमां शाला होय ते त्रिशाल " हिरण्यनाभ " नामनुं गृह शुभ गणाय छे, जेमां पूर्व सिवाय बीजी त्रणे दिशाओमां शाला होय ते त्रिशाल " क्षेत्र " नामनुं गृह धन अने पुत्र आदिनी वृद्धि करे छे, जेमां दक्षिण सिवाय बीजी त्रणे दिशाओमां शाला होय ते त्रिशाल " चुल्ली " नामनुं गृह धननो नाश करे छे अने जेमां पश्चिम सिवायनी दिशाओमां शाला होय ते त्रिशाल "पक्षघ्न" नामनुं गृह पुत्रनाश अने वैर करावे छे.

जे गृहमां पश्चिम अने दक्षिणमां बे शाला होय ते " सिद्धार्थ " , पश्चिम अने उत्तरमा शाला होय ते " यमसूर्य " , उत्तरमां अने पूर्वमा शाला होय ते " दंड " , पूर्व अने दक्षिणमां शाला होय ते " वात " पूर्व पश्चिममां बे शाला होय ते " गृहचुल्ली " अने जे गृहमां दक्षिणोत्तर बे शाला होय ते द्विशाल गृहने " काचक " कहे छे. सिद्धार्थ नामना द्विशाल गृहमा धननी प्राप्ति, यमसूर्यमां गृहस्वामीनुं मृत्यु, दंडनामना द्विशाल गृहमां दंड तथा वध, वातनामना गृहमां सदा कलह तथा उद्वेग, गृह चुल्लीमां धननो नाश अने काचनामना द्विशाल गृहमां बंधुओथी विरोध थाय छे.

उपर कहेल त्रिशाल अने द्विशाल गृहोमांथी जे शुभ लक्षणवाळां हतां ते गृहो चारे वर्णोना निवास अर्थे महाराज कुंते बंधावी तैयार कराव्यां.

ते तमाम गृहोनी अंदर वळेलां वृक्ष, पोतानी मेळे उभा उभा सुकाइ गयेलां, पक्षिओना माळावाळां, देवालय पासेनां, भूत प्रेतादिना निवासवाळां, क्षीरवाळां, पवनना झपाटाथी पडी गयेलां, आंबलीना अने व्हेडांनां वृक्षोनो त्याग करी साग, शाळ, महुडो, सर्ज, खेर अने बियानां काष्ठ उपयोगमां लीधां, तथा सरल,

पनस, श्रीपर्णिका, शीशम, हळदरवो, चंदन, सुरतरु, पद्माक अने टींवरण एटलां वृक्षोमांथी अकेक जातिना काष्ठ तमाम गृहमां वपराव्यां कारण के उपरनां वर्थी काष्ठो एक घरमा वापरवां अशुभ गणाय छे.

उत्तम माप प्रमाणे कराओ तैयार थतां तमाम गृहोनां छ प्रकारे छापरां ढंकाव्यां ते एवी रीते के केटलांएक गृहोमां काकनां पक्षने आकारे छापरांना भाग ढंकाव्यां, केटलांएक गृहोनां कमळनी पांखडीने आकारे छापरां वंधाव्यां, केटलाएकने सुपडाने आकारे बधारे ढाळवाळां चोरशीवंध वंधाव्या; केटलांएक छापरांपर नळीयां नंखाव्यां, केटलांएक छापरांपर धावा वंधाव्या अने केटलांएक गृहोने पत्थरवडे ढंकाव्यां अर्थात् घर उपरनी छातो पत्थरवंध करावी; त्यारबाद पहेली " नंदा ", बीजी " भद्रा ", त्रीजी " जया ", चोथो " पूर्णा ", पांचमी " दिव्या ", छट्ठी " यक्षी ", सातमी " रत्नोद्भवा " अने आठमी "उत्पला" ए आठ प्रकारनी राजसभाओ तैयार करावी. ते ए रीते के प्रथम सभा करवाना क्षेत्रनी एक बाजुए चार विभाग करी ए चारे विभागना पाछा चार चार भाग करवाथी सोळ विभाग थया, ते सोळ मध्येना चार विभागनो एक भाग करी सभा आगळ एक अलिन्द वंधावी "नंदा" नामे सभा स्थापी, ते नंदानी आगळ एक भद्र मुकावी " भद्रा ", चारे तरफ भद्रो मुकावी "जयदा" अने चार बाजु लघु रखावी " पूर्णा " नामे सभा वंधावी; फक्त नव भागनी " दिव्या ", ते दिव्यानी चारे तरफ एक एक भद्र मुकावी " यक्षी ", तेज दिव्यानी चारे तरफ त्रण त्रण पदनां चार भद्रो मुकावी " रत्नोद्भवा " अने रत्नोद्भवाना दरेक भद्रो आगळ अकेक प्रतिभद्र मुकावी " उत्पला " नामे सभानुं स्थापन कर्युं; ते सर्व सभाओमां स्तभो, तोरण, मद्दळो, नर्जु अने छाद्य कराव्यां, ते छाद्य विषे लुंबो करावी तथा सभानी अंदर हस्ति, घोडा, सिंहनी सुशोभित प्रतिमाओ अने नृत्य करती होय एवा भावनी पुतळीओ तैयार करावी तथा ते सभा आगळ रत्नो अने स्फटिकोवडे जडेलो रंगभूमि वंधावी तथा ते रंगभुमि आगळ क्रीडा करवा माटे मंडप वंधाव्यो. अने सभानी जमणी तरफना भद्रमां सुशोभित वेदिका करावी. छेवटे शहेर तथा शहेरनी बहार चार प्रकारनी वावडीओ, दश प्रकारना कूप, चार प्रकारनां कुंडो तथा छ प्रकारना तळावो वंधाव्यां; चार हाथ पहोळाइवाळो " श्रीमुख", पांच हाथ पहोळो " वैजय," छ हाथ पहोळो " प्रांत." सात हाथ पहोळो " दुन्दुभि," आठ हाथ पहोळो " मनोहर," नव हाथ पहोळो " चूडामणि," दश हाथ पहोळो " दिग्भद्र," अगियार हाथ पहोळो " जय ", बार

हाथ पहोळो "नंद" अने तेर हाथ पहोळाइवाळो "शंकर" नामे कूप खोदाव्यो; चार हाथथी ओछी पहोळाइवाळी केटलीएक कुइओ पण खोदावी.

एक मुख अने त्रण कूट (वावडीमां खंडो आवेछे तेना उपर स्तंभो मुकी शिखरबंध देरियो करवामां आवेछे ते) वाळी "नन्दा," बे मुख अने छ कूटवाळी "भद्रा," त्रण मुख अने नवकूटवाळी "जया" तथा चार मुख अने बार कूटवाळी "विजया" नामे वावडी बंधावी.

अर्धचंद्राकारनुं "अर्धचंद्र", चारे तरफ बंधवाळुं "महासर", गोळ "वृत्त", चार खूणावाळुं "चतुष्कोण", एक भद्रवाळुं "भद्र" अने चार तरफ चार भद्रोवाळुं "समुद्र" नामे तळाव बंधाव्युं; ते तळावोने क्यांइ एक अने क्यांइ बे परिघ (परिधि—तळावमां उपर पहोळा पटवाळा चोतरा जेवो आकार होय छे ते) बंधाव्या. तेमज वच्चेना भागमां वकस्थलो (वगला आदि पक्षीओने रहेवा माटे माटीनो बेट—टींबो) पण कराव्यां;

एक हजार दंडनुं तथा पांचसो हाथ उंची पाळवाळुं ज्येष्ठमाननुं, पांचसो दंडनुं तथा अढीसो हाथ उंची पाळवाळुं मध्यममाननुं अने अढीसो दंडनुं तथा सवासो हाथ उंची पाळवाळुं कनिष्ठमाननुं तळाव बंधाव्युं.

"भद्र" नामे चोरसकुंड, "सुभद्र" नामे भद्रसहितकुंड, "नन्द" नामे प्रातिभद्र सहित कुंड अने "परिघ" नामे मध्य भागमां भिट्टवाळो कुंड तैयार कराव्यो. ते कुंडो आठ हाथथी मांडी सो हाथ पर्यन्त मापना बनाव्या. तेमां चारे तरफथी उतरवा माटे चार द्वारो तैयार कराव्यां. ते द्वारोमां दिशाओना भागमां गोखलाओ रखाव्या तेमज कुंडना खूणाओमां चोकीओ तथा पट्टशाळाओ बंधावी.

कुंडमां रहेला भिट्ट (एक प्रकारनो थर छे ते भिट्टमां गोखलाओ आवेछे जेमां मुर्तिओ स्थापन कराय छे) विषे गंगा आदि नदीओनी प्रतिमाओ, बार सूर्यनी प्रतिमाओ तथा बीजा अनेक देवोनी प्रतिमाओ तैयार करावी; अने कुंडद्वारना परथार उपर श्रीधर नामे मंडप बंधाव्यो.

ते जगोए यथाविधि उत्तम शहेर वांधी तेनुं पोताना नामथी "कुन्तलपुर" नाम राख्युं. थोडो समय व्यतीत थतां श्री कुन्त महाराजने यज्ञ करवानो विचार थयो अने तमाम ऋषिओने तेडावी पोतानी यज्ञ करवानी इच्छा प्रदर्शित करी. ऋषिओए प्रसन्नता पूर्वक कह्युं के महाराज! महात्मा कुंडमालथी आरंभी आज दिवस पर्यन्त यज्ञयागोनी आप रक्षा करता आव्या छो,

अने हजी पण आपथी तेमज आपना वंशजोथी ए उत्तम कर्मोनुं रक्षण थशे ए अमोने पूर्ण खात्री छे; आपे आवो श्रम उठाववानी आवश्यकता नथी; अमो सर्व अमारा यज्ञयागादिनां फळ आपने अर्पण करीए छीए तेमज आजथी आपना वंशने "मखवान" पद प्रेमपूर्वक आपीए छीए. बीजा भले गमे तेवा यज्ञयागादि आचरशे, तो पण "मखवान्" कहेवाशे नहि, पण आपनो वंश यावच्चन्द्र दिवाकर "मखवान्" ए रीते आजथी प्रसिद्ध थशे; परमात्मा आपनी तथा आपना वंशजोनी निरंतर वृद्धि करे एम अमो सर्व शुद्ध मनथी अने प्रसन्न चित्तथी आशीर्वाद आपीए छीए.

ऋषिमंडलनो आशीर्वाद माथे चडावी श्री कुन्त महाराज बोल्या के "अस्तु". तमारां यज्ञकर्मोमां आवता विघ्ननो विनाश करवो ए अमारो परंपरानो धर्म छे ते अमो कदिपण चूकशुं नहि; शिर जतां पण ऋषिगणने पराभव थवा देशुं नहि. ए खाते निश्चिंत रही तमारां शुभ कर्मो आनंदथी कर्या करो. महाराज कुन्तना मुखथी आवां उत्तम वचनो श्रवण करी धन्यवाद आपता अने जयजयनो पुकार करता अनेक आशीर्वादो आपी ऋषिओ पोतपोताने स्थाने विदाय थया. राजर्षि कुन्ते आनंदपूर्वक इश्वरना आराधन साथे प्रजानुं पालन करी योग्य वये स्वर्गवास कर्यो.
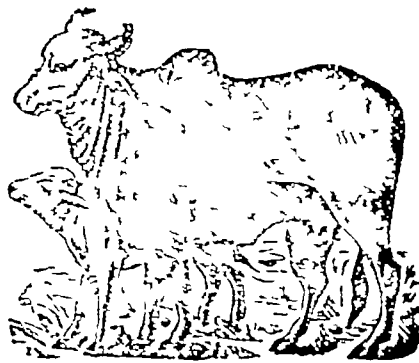
एकादश तरंग.
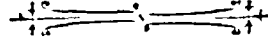
हरिगीत.

आरंभी धवल कुमारथी, चाचंगदेव सुधी सुखे,
पालक थया कुन्तलपुरीना, कदि दवाया नहि दुःखे;
नृप शूर सालणदेवजी, गढ सीकरीने सर करी,
सारंगधर सूधी रह्या, अमरेश! उत्तमता धरी.

महाराजा कुन्तना पुत्र राजर्षि धवलकुमारे पिताना स्वर्गवास पछी कुन्तलपुरना तख्तपर पाय धारण कर्यो त्यारवाद धर्म अने नीतिथी प्रजानुं पालन करी महान् यश मेळव्यो. तेने **सदाशिव** नामे कुमार थया, ते वाळवयथीज सिंहना वाळकनी पेठे वैरिरुपी करिन्द्रने विदारवानुं सामर्थ्य धरता हता. तेणे तमाम शस्त्रविद्याने साध्य करी युवावस्थामां उत्तम गुणोने मेळवी पिताना परलोक प्रयाण पछी कुन्तलपुरनी प्रजानुं शासन कर्युं, तेने **धनिक** नामे कुमार थया ते महा धर्मधुरंधर हता, पिता **सदाशिव**ना स्वर्गगमन पछी कुमार **धनिके** राजर्षिनी पदवी धारण करी ऋषिगणना संरक्षणनी साथे चारे वर्णनी चाहना मेळवी हती, तेने **वळधीर** नामे कुमार थया. तेणे वळ अने धैर्यथी पोताना नामने सार्थक करी पितानी गेरहाजरीमां अरि वर्गने उग्रताथी आधीन करी समग्र प्रजामां संतोष फेलाव्यो, तेने आनंदमूर्ति **इन्द्र** नामे कुमार थया; पिता **वळधीर**ना स्वर्गवास पछी सुशोभित श्वेत छत्रने धारण करीने राजर्षि **इन्द्रे** कुन्तलपुरने अमरावतीथी अधिक समृद्धिवान वनावी अवर्णनीय वैभवोथी सुरेन्द्रने शरमाव्यो हतो, तेने गुणभंडार **गगन** नामे कुमार थया, तेणे कान्तिथी कामदेवने लज्जित करी सुख शान्तिमां दिवसो गुजार्या, तेना **अनल** नामे कुमार थया, ते महान् बुद्धिशाळी अने वळवान् हता, तेणे अग्निसमान ओजथी शत्रुरुपी तृण समूहने समूळ सळगावी पिताना मृत्यु पछी कुन्तलपुरना पाटपर वेसी प्रजानी अपार प्रीति मेळवी, ते पछी तेना पुत्र राजर्षि **इन्द्र** दया अने दानथी विश्वमां विख्यात थया. तेना पुत्र **अडम्बे** पोताना प्रलंब भुज दंडथी अनेक दुश्मनोने दंड

दइ नवे खंडमां नामना मेळवी. त्यार पछी तेना पुत्र राजर्षि **जैश** कुन्तलपुरनी गादीए बेठा, तेने **असमान** नामे कुमार थया ते अस्त्रविद्यामां असमान हता अर्थात् तेना समान कोइपण नहोता, तेणे निर्मळ सुयशना निधान भरी पोताना कुमार **मुलकने** उत्तमरीते विद्याभ्यास कराव्यो; महिमंडलमां महान मान मेळवी **असमान** स्वर्गस्थ थतां राजर्षि **मुलके** कुन्तलपुरना तख्तने दीपाव्युं. तेने **श्याम** नामे पुत्र थया. धैर्यना धामरुप राजर्षि **श्यामे** पिता **मुलकनी** महायात्रा पछी कीर्तिवाळां काम करी कुंतलपुरनी गादी भोगवी, तेने **मान** नामे कुमार थया; तेणे राजर्षिपद धारण कर्या पछी दान अने सन्मानथी विद्वान् जनोने संतुष्ट कर्या हता, तेना पुत्र राजर्षि **इन्द्रे** बाप दादाओना विरदने पाळी प्रजावागनुं माळी पेठे संरक्षण कर्युं, तेना पुत्र राजर्षि **रत्न** थया, तेणे सपत्नना समुदायने पराजय आपी पोताना प्रयत्नने सफळ कर्यो हतो, तेने **श्रीपत** नामे कुमार थया, तेणे पोताना कुळनी पत राखवा माटे गत पूर्वजोना गुणोनुं स्मरण करी शरणागतनुं श्रेष्ठ रीते संरक्षण कर्युं, तेना पुत्र राजर्षि **सोमना** रोम रोममां क्षत्रियोने उचित वीरता विलसी रही हती, तेना कुमार राजर्षि **महेशे** कुन्तलपुरनी गादी उपर बेसी अनेक रीते प्रजानी आबादी करी कुमार **जयमलने** जन्म आप्यो; पिता महेशना मृत्यु पछी राजर्षि **जयमले** शत्रुवर्गनो क्षय करी प्रजाना भय दूर कर्या, ते पछी तेना पुत्र अक्षय राजर्षि थया, तेणे नय तथा विनय आदि उत्तम गुणोथी कुन्तलपुरनी प्रजाने आनंद आप्यो हतो. तेना पुत्र राजर्षि **भाण** थया. ते बाणविद्यामां विशेष वखणाया, तेना कुमार राजर्षि **यज्ञे** केटलांएक वर्ष कुन्तलपुरनो राजवैभव भोगवी कुमार **युवनाश्वने** जन्म आपी स्वर्गवास कर्यो. राजर्षि **युवनाश्व** अश्वविद्यामां अद्वितीय हता, तेना पुत्र राजर्षि **माणिके** प्रमाणिकपणे प्रजाने पाळी तमाम उपाधिओ टाळी हती. तेना कुमार राजर्षि **विट्ठल** थया, तेणे प्रजापालन साथे विविध विद्याविनोदमां जींदगी गुजारी हती, तेना राजर्षि **शान्तले** शान्त चित्ते कमलाकान्तनुं आराधन करी मुक्ति मेळवी, तेना कुमार राजर्षि **स्वराज (शिवराज)** कुन्तलपुरनी गादीए बेठा, तेणे ताज धारण कर्या पछी बाजनी माफक प्रतिपक्षीरुपी पक्षीओनां प्राण हर्या, तेने **शूरतान** नामे कुमार थया, ते पिता शिवराजना स्वर्गवास पछी राजा बन्या, तेना पुत्र राजर्षि **हमीरे** पितानुं पाट मेळवी वीरताथी वेरीओना वृन्दने विदार्या, ते पछी तेना कुमार राजर्षि **भाण** गौब्राह्मणोनुं परित्राण करी विशेष वखाणने पात्र

थया, तेना पुत्र **करण** राजर्षिए मरण पर्यन्त शरणे आवेलाओनुं संरक्षण कर्युं; ते पछी तेना कुमार **केशरे** राजर्षिपद धारण करी कुन्तलपुरनुं आधिपत्य उत्तम प्रकारे भोगव्युं, तेना पुत्र **कल्याण** राजर्षिए सुयशना अश्वो दिगन्त पर्यन्त दोडाव्या, ते पछी तेना कुमार राजर्षि **भीमे** असीम भुजबळथी ऋषिओना यज्ञयागादि सत्कर्मनुं षष्ठांश फल प्राप्त कर्यु; तेना कुमार राजर्षि **विजये** जीवित पर्यन्त क्षात्रधर्मनी धुरा वहन करी, त्यारबाद तेना पुत्र **बलदेव** राजर्षि बन्या, देवनी अनुकम्पाथी दृढ वळवाळा राजर्षि **बळदेवे** कविकोविदोनी कामनाओ पूर्ण करी हजारो आश्रितोनी हानिओ हरी हती, तेने **यशवंत** नामे कुमार थया, तेणे पितानुं पाट पाम्या पछी पोतानुं सुयश गानार भाट चारणोने अपार वित्त आप्युं हतुं; तेना पुत्र **युवनाश्व** राजर्षि थया तेणे षट्शास्त्रमां पारंगत कुमार **सारंगने** जन्म आप्यो, कुमार **सारंगे** राजर्षिपदने पामी स्वामी धर्मथी सेवकजनोने अद्वितीय सुख आप्यां, त्यारपछी तेना कुमार **शिवराज** राजर्षि थया, तेणे कुळनी मर्यादा यथास्थित निभावी, तेना पुत्र **देव** राजर्षिए पुण्यनी प्रवळ पाज बांधी निर्विघ्ने राज कर्युं, ते पछी तेना कुमार राजर्षि **बळवीर** थया, तेणे न्याय अन्याय रुपी क्षीरनीरने भिन्न करी हंसनी विलक्षणताने हरी हती. तेना पुत्र **मूळ** राजर्षिए कुळधर्म प्रमाणे कुन्तलपुरनुं प्रतिपालन कर्युं, तेने **अक्षय** नामे कुमार थया, राजर्षि पद धारण कर्या पछी ए **अक्षय** कुमारे पापीओनो प्रलय करी, आर्यमतने अनुसरी कुमार **अजीतनो** जन्म थया बाद योग्य वये स्वर्गवास कर्यो; राजर्षि **अजीते** युवावस्थानुं अवलंबन करी भ्रष्ट जनोने भयभीत बनावी अनेक रीते कष्ट आपी नष्ट कर्या अने उत्तम जनोना अन्तःकरणमां अपूर्व आनंद फेलाव्यो, तेना पुत्र **माणिक** राजर्षिए पण पिता अजीतनी पेठे सद्गुणोनुं संपादन करी प्रजासमूहमां प्रीति प्रसरावी हती, तेना कुमार **प्रताप** राजर्षि महान् प्रतापी थया, तेणे बाहुबळथी आखी मेदिनीने मापी, अरिगणने उथापी सर्व स्थळे कीर्त्तिने स्थापी हती, तेना कुमार **बळवीर** राजर्षिए पिता **प्रताप**ना स्वर्गवास पछी कुन्तलपुरनो राजवैभव भोगव्यो, तेने **करण** नामे कुमार थया, तेणे राजर्षिपद धर्या पछी राजनीतिथी प्रीति पूर्वक उत्तम काज कर्या, तेना कुमार **लखधीर** राजर्षिए लाखोनी लक्ष्मी दानमां लुंटावी महान् कीर्ति मेळवी. ते पछी **मालदेव, मूळराज** अने **शूरतान, सोमेश्वर, रणधीर** अने **रत्न** राजर्षिए क्रम पूर्वक कुन्तलपुरनुं राज भोगव्या बाद पराक्रमी पृथ्वीमल राजर्षिए राज तख्तपर पाय धारण कर्यो, तेना वैभवनी

बरावरी करी शके तेवो कोइपण ते वखते पृथ्वीपर नहोतो, तेना कुमार **विजयराज** बालवय व्यतीत कर्या बाद राजकाजमां निपुणता मेळवी पिता **पृथ्वीमलना** परलोक गमन पछी कुन्तलपुरनी गादीए बेठा, तेना कुमार **क्षेमराज** थया, तेणे प्रेमथी हजारो मुद्राओना दान कर्या, तेना पुत्र **अक्षयराज** पण दारिद्ररुपी दरियामां डूबता दीनजनोना जहाज रुप हता, तेना कुमार **शूरतान** म्होटा म्होटा महीपालोना मान खंडन करी मखवान कुलना मंडनमणि बन्या, तेना पुत्र **हमीर** क्षीरसागर समान शुभ्र यशथी अवनिने आच्छादित करी हठीला शत्रुओने हराव्या हता, तेना कुमार **धरणीधरे** उत्तम करणीथी धरणीनुं धणीपणुं धारी विश्वमां कीर्त्तिने विस्तारी; तेने **धीरसेन** नामे कुमार थया, तेणे गादीपति बन्या पछी गुणवानोने पोता पासे राखी आखी जींदगी आनंदमां वितावी- तेना पुत्र **पुष्पसेने** प्रजापालनुं पद धारण करी सर्व स्थळे प्रशंसनीय सुवास प्रसरावी; तेना कुमार **मणिकमहीपाले** कुळनी परंपरा प्रमाणे वर्त्तन करी धरातलमां विमलयश विस्तार्यो, तेने **पद्मसेन** नामे पुत्र थया, तेणे छद्मने छेदी प्रचंड बाहुबळथी शत्रुओनां सद्म स्वाधीन कर्या. तेना पुत्र **पातलसेने** घणां शत्रुओनी घात करी भातभातना वैभवो भोगव्या. तेने **प्रतापभानु** नामे पुत्र थया, तेणे अधमरुपी उलूकने भय आपी भानुसमान प्रताप धारण कर्यो, तेना कुमार **कर्मसिंहे** सिंहसमान कर्मथी शत्रुरुपी मृगसमुदायने जेर करी **जयमल** नामना कुमारने जन्म आप्यो. ए **जयमले** युक्ति प्रयुक्तिथी प्रजानां मन रंजन करी भक्तिभावथी महामूली मुक्ति मेळवी. तेना कुमार **यशराज** महान् यशस्वी थया, राजगादीए बेठा पछी ए यशराजे अलौकिक रीते प्रजानी प्रीति संपादन करी, तेने **शूरतान** नामे पुत्र थया. तेणे पोताना गुणोनुं गान करनार गुणवान लोकोने अतुल दान आप्यां, तेना कुमार **हमीरसिंहे** दानवीर बनी असंख्य रंक जनोने अमीर बनाव्या हता, तेने **हरपालसिंह** नामे पुत्र थया, ते बालपणथीज उत्तम ख्यालनुं अवलंबन करनारा होवाथी तेणे यौवनमां धर्मनी ढाल धारण करी कुकर्मीओने कराळकष्ट आपी पायमाल कर्या, तेना कुमार **हरराजे** राजगादीए बेठा पछी हरहमेशां निडरपणे शत्रुओनां स्थान शून्य करी प्रजावर्गमां प्रमोद प्रसराव्यो तेने **श्रीपति** नामे सुपुत्र थया; तेणे अतिशय रतिथी रतिपतिनी क्षति करनार सतीपतिनुं आग-

धन करी भवबाधने भस्म कर्यो हतो; तेना कुमार **वाघराज** श्लाघनीय वाघ जेवी वीरताथी विश्व विख्यात थया; तेना पुत्र **वैरसिंहे** तख्तनशीन थया पछी दीनजनोनां दुःखोने दूर करी महान् प्रतिष्ठा मेळवी, तेने **भीमसेन** नामे कुमार थया, तेणे प्रचंड भुजदंडना पराक्रमथी धरामंडलमां धाक फेलावी हती, ए **भीमसेनना** कुमार **भोजराज** राजगादीए बेसी कुळनी लाज प्रमाणे उत्तम काज करी सद्गतिने पाम्या, तेना कुमार सारंगदेवे सारासारना विचारथी प्रजानो पूर्ण प्यार मेळव्यो हतो, तेने **शिवराज** नामे कुमार थया, तेणे व्यवहारमां कुशळता मेळवी कुन्तलपुरनी प्रजाने उत्तम रीते केळवी हती. तेना पुत्र **मूळराज** सत्कर्मथी कुळनो उद्धार करवावाळा थया, ए **मूळराजना** पुत्र **माणिके** प्रबळताथी सर्व शत्रुओने पोतानां सत्ता सूत्रमां परोव्या; तेने **रुपराज** नामे कुमार थया, भूप पदवीने पाम्या पछी ए **रुपराजे** शीतवृष्टिने सहन करी प्रजा पालनरुपी विमल धर्मनुं वहन कर्युं हतुं; तेने **रणजीत** नामे पुत्र थया, तेणे कविकोविदोनां काज पूर्ण करी स्नेहीओना समाज साथे सुखपूर्वक राज कर्युं, तेना पुत्र **भोजराज** थया, तेणे अतुल ओजथी अरिओने अंध बनावी निर्विघ्नताथी राजवैभवनो उपभोग कर्यो. ते पछी कृपानिधि **करण,** करमी **केशरदेव,** आनंदी **अजयभूपाल,** दानी **देवपाल** पराक्रमी **अक्षयपाल** प्रतापी **अमृतपाल,** रणरागी **रत्नपाल,** दयाळु **देवपाल,** सद्गुणी **शूरपाल,** विद्याविनोदी **विजयपाल,** सुखसिन्धु **सोमपाल,** चतुर **चन्द्रपाल,** मस्त **मानपाल,** लहेरी **लक्ष्मणपाल,** लायक **लूणपाल,** लोभरहित **लाखणशी,** बहादूर **बळवीर,** बुद्धिशाळी **बळदेव,** विवेकी **वत्सराज,** न्यायी **नरभ्रमर,** नलिनाक्ष **नेतसिंह,** करुणाळु **कर्मसिंह,** समर्थ **सोमेश्वर,** हिम्मती **हमीर,** हर्षनिधि **हंसराज,** वीरवर **वत्सराज,** माननीय **मूळराज,** खड्गधारी **क्षेमराज,** सुशील **शूरतान,** उद्धत **अक्षयराज,** परोपकारी **पातलसेन,** प्रसिद्ध **प्रतापभानु,** धर्मधुरंधर **लखधीर,** जगजाहिर **जयमल,** प्रशंसनीय **पृथ्वीराज,** प्रमाणिक **पुंजराज,** मेधावी **माणिकराज,** योगवित् **यौवनाश्व,** धनुर्धर **धारंग,** धर्मरक्षक **धीरसेन,** पंडितराज **पुष्पसेन,** श्रद्धाळु **शहाभोज,** सत्यवादी **सोमेश्वर,** सुज्ञ

शिरोमणि शूरतान, उदार अमृतसेन, यशनामी यशवंतसेन, भाग्यशाळी भीमसेन रसज्ञ रत्नसेन, भयहरण भारमल, काव्यकोविद कीर्तिपाल, कार्यकुशल केशरदेव, बाणावळी बळदेव, सर्वोत्कृष्ट संग्रामसिंह, नमन योग्य नरभ्रमर, सहृदय रत्नसेन, श्रीमान् श्रीपति, शक्तिवान् शिवराज, कामावतार करण, युद्धवीर यशराज, अने त्यार-पछी मूळराज, सोमेश्वर, शान्तलसेन, वाघसेन, वैरिशाह, युवनाश्व, चन्द्र-पाल, मेघपाल, मूळराज, छत्रसाल, आनंदमेरु, सोमेश्वर, सारंगधर, शूरतान, करण, रत्नसेन, हमीर, रणमलसिंह, संग्रामसिंह, धीरसेन, पुष्पसेन, पृथ्वी-मल, भारमल. पद्मसेन, यशवंतसेन, इन्द्रसेन, अजयभूपाल, बलवीर, जोध-पाल, यशपाल, मानपाल, रत्नपाल, रणधीर, सालणदेव, शेषपाल, शान्त-लसेन, लखधीर, जयमल, युवनाश्व, माणिकराज, मूळराज, अक्षयराज, अमृ-तसेन, भीमसेन, भोजराज, पातलसेन, नरभ्रमर, भीमपाल, पृथ्वीपाल, प्रतापभानु, अभयराज, मेघराज, मूळराज, शिवराज, रणमल, क्षेमराज, अक्षयराज, अमृतसेन, भीमसेन, भोजराज, भारमल, रणजीत, रूपसिंह, रुक्मांगद, राजर्षि, रणधीर, धारंग, धीरसेन, पुष्पसेन, माणिकराज शूरतान, छत्रसाल, हमीर, करण, कर्मसिंह, कल्याणमल, केसरदेव, वलदेव, वैरिसाल, शान्तलसेन, संग्रामसिंह, सोमेश्वर, पृथ्वीमल, शार्ङ्गधर, सूरजभाण, पृथ्वीराज, पद्मसेन, अमृतसेन, अजयभूपाल जोध पाल, भीमसेन, लक्ष्मणसेन, रत्नसेन, विक्रमसिंह, समरसिंह, नरभ्रमर, भारमल, करणपाल, जगन्नाथ, श्रीपतिसेन, शत्रुसाल, सोमपाल, उदय-पाल, करणपाल, रत्नपाल, धर्मांगत, देवचक्र, झांझरसिंह, यज्ञेश, युवनाश्व, यशवंतसिंह, प्रतापभानु, पातलसेन, पुष्पसेन, भीमसेन, पृथ्वीमल, धीरसेन,

माणिकराज, जयमल, मूळराज, क्षेमराज, लाखणसिंह, लूणकरण, लख-धीर, पुंजराज. पृथ्वीराज, धनराज, सालणदेव, केसरदेव, करण, हरराज, हरपालसिंह, हमीर, शूरतान, सूर्यपाल, सोमेश्वर, शाहभोज, संग्रामसिंह, शेषपाल, खुमाणसिंह, इन्द्रसिंह, अमृतसेन, धरणीधर, अक्षयराज, अमृत-सेन, पद्मसेन, शार्ङ्गदेव, शिशुपाल, अजयभूपाल, देवपाल, भीमपाल, यश-पाल, सोमपाल, सूर्यपाल, इन्द्रसेन, अक्षयपाल, मानपाल, रत्नपाल, केशर-देव, चन्द्रपाल, अक्षयराज, शूरतान, हमीरसिंह, हरराज, अक्षयराज, अमृतसेन, भीमसेन, पुष्पसेन, भारमल, पृथ्वीराज, युवनाश्व, रत्नपाल, मूळ-राज, माणिकराज, क्षेमराज, जयमल, लखधीर, रणमल, भोजराज, सूरज-भाण, शार्ङ्गधर, सुन्दरपाल, सुजाणसिंह, विजयराज, विक्रमसिंह, यशराज, शीशळदेव, आनंदमेरु अने अमृतसेन ए सर्व क्रमपूर्वक कुन्तलपुरना राजाओ थया.

अमृतसेनजीने पांच कुमार थया तेमां चाचंगदेवजी, वाचकदेवजी, शिवराजजी अने वत्सराजजी ए चार कुमार यादवना भाणेज हता अने पांचमा कुमार मालदेवजीनुं मोसाळ हस्तिनापुरमां हतुं. पिता अमृतसेननो स्वर्गवास थतां पाटवीकुमार चाचंगदेवजी कुन्तलपुरनी गादीए बेठा, तेणे पोताना चारे भाइओने घणाज मान साथे अंगरक्षक तरीके पासेज राख्या; आगळना मरववान राजाओ क्षात्र-धर्मनी साथे ब्राह्य कर्म पण करता जेथी तेओनी वृत्ति सात्विक प्रधान राजस हती, परंतु अमृत-सेनजी पछीथी केवळ राजस वृत्तिनाज राजाओ थया जेथी मृगयानी पृथा अने अंदर अंदर कलह करवानी टेव प्रगट थइ. ए पाचे भाइओ योग्य उम्मरना थतां एक दिवस साथे सिंहनो शिकार खेलवा निकळ्या; अश्वोने हारबंध हांकी आनंदनी वातो करता अने पोतपोताना पराक्रमने प्रदर्शित करवा वारंवार भुजदंड पर नजर खेंचता जंगलमां घणे दूर जइ पहोंच्या. गीच झाडीनी अंदर प्रवेश करी पांचे भाइओ जुदा जुदा विखराइ वनराजनी शोध करवा लाग्या. घोडाओनो हणहणाट सांभळी असहनताथी गंभीर गर्जना करता मदोन्मत्त मृगराजने कुमार मालदेवजीए

दूरथी निहाळी पोताना चारे बन्धुओने एकत्र करी सन्मुख जइ सिंहने सावचेत कर्यो, मनुष्यनो अवाज काने पडतां वनराज उन्मत्तपणे भयंकर फाळ भरी, विकाळ वदन करी अश्वो उपर धसी आव्यो, नाहरने निकटमां आवेलो निरखी पांचे भाइओए एक साथे बाण फेंक्या. वनराजनुं वक्षः-स्थळ वींधाइ जवाथी ते जरा पाछो हठ्यो तेवामां तुरतज कुमार मालदेवजीए घोडा उपरथी कुदी करमां कटार लइ मृगराजना मस्तकपर प्रबळ प्रहार करी तेने पृथ्वीपर पाड्यो, मर्मस्थळ भेदाइ जवाथी पंचानन तुरतज प्राण रहित थयो. राज चाचंगदेव आदि चारे बन्धुओए निकटमां आवी कुमार मालदेवजीने कह्युं के न्हाना भाइ ! हवे व्यर्थ बहादुरी बतावबी रहेवा दो; अमारा चार बाण एकी साथे उरःस्थलमां लागवाथी आनां प्राण तो निकळी चुक्यां हतां. तमारी कटारे कांइ काम कर्युं होय एम धारी फुलाइ जशोमां. वडिल बन्धुओनां आवां अन्याय भरेलां वचनो सांभळी महान् क्रोधावेशमां मालदेवजी बोल्या के मारी कटार शुं काम करे छे ते हवे पछी खबर पडशे. छती आंखे जोया छतां मारा पराक्रमने वखोडो छो तो हवे हुं जोइश तमो कुन्तलपुरमां राज्य शी रीते करो छो ? राज चाचंगदेवजीए त्रणे सहोदर सहित अवळां वचनो उचारी न्हाना भाइ मालदेवजीना क्रोधाग्निमां घृतनी आहुति आपी, तेज वखते बे पक्ष पड्या, एक रस्ते राजा आदि चारे भाइओ चाली नीकळ्या अने बीजी बाजु मेरुसमान अडग मनवाळा कुमार मालदेवजी रवाना थया, सन्ध्या समये शहेरमां आवी पोतानां मातुश्रीने मळी वडिल बन्धुओनी साथे शिकारे जतां बनेली बधी हकीकत कही संभळावी, क्रोधमां ने क्रोधमां रात्री निर्गमन करी. प्रभात थतां मालदेवजी पोताना मातुश्री तथा माणसो सहित राज चाचंगदेवजीनी रजा लीधा सिवाय हस्ति-नापुर तरफ रवाना थया; त्यां पहोंच्यावाद पोताना मामाने मळी बन्धुओना पक्षपातनी बधी वात कुमार मालदेवजीए कही संभळावी. हस्तिनापुरपतिए पूरती रीते मदद आपवानुं वचन दइ सेनाने सज्ज थवा फरमान कर्युं, अने युद्ध करवा तैयार थवा माटे दूतने कुन्तलपुर मोकली आप्यो. राज चाचंगदेवजीए हस्तिनापुरथी आवेल युद्धनुं आमंत्रण स्वीकारी पोताना मोसाळ पक्षना यादवोने जाण करवा पत्र लखी मोकल्यो. अने सैनिकोने संग्रामनी सामग्री सज्ज करवा आज्ञा आपी; पोता पासे हाथी तथा घोडाओनो पुष्कळ जत्थो होवा छतां पण हस्ति-नापुरनी समृद्धिवान् फोज साथे टक्कर लेवा विशेष वाहनोनी अपेक्षा थतां मोसाळ पक्ष-माथी मगाववा माणसो मोकली आप्यां. कुमार मालदेवजीए हस्तिनापुरनी म्होटी फोज साथे कुन्तलपुरने कबजे करवा युद्धयात्रा शरु करी; राज चाचंगदेवजीए पण सहायनाए आवी पहों-

चेल यादवसैन्य तथा पोताना सैनिको सहित सन्मुख प्रयाण कर्युं, मार्गमां बन्ने फोजनुं मिलन थतां लडाइ शरु थइ, भयंकर युद्धमां बन्ने पक्षना केटलाएक शूरवीरो कपाइ मुवा, अश्वपर आरुढ थएला कुमार मालदेवजीए हाथीपर बेठेला वडिल बन्धुने विव्हळ करवा शरनुं अनुसंधान करी म्हावतनुं मर्मस्थळ वींधी नांख्युं, म्हावत नीचे पडता हाथी भाग्यो जेथी राजाने युद्धमांथी अलग थता जोइ कुन्तलपुरनुं सैन्य भयभीत बनी भाग्युं. वाचकदेव, शिवराज तथा वत्सराज ए त्रणे सहोदरे वेगथी बाणनी वृष्टि करी हस्तिनापुरना अनेक सुभटोने संहार्या, मालदेवजीए महान् विषवाळा त्रण बाणोथी त्रणे भाइओना अश्वनो अन्त करी पेदल बनाव्या अने तुरत तेओने असियुद्धमां घायल कर्या. हाथीपरथी कूदी अश्व उपर आरुढ थइ राज चाचंगदेवजी यादवसैन्य साथे प्रतिपक्षीओने प्रहार करवा लाग्या, मालदेवजीए वडिल बंधुना वाहन उपर बाण फेंकी बाहुबळ बताव्युं. वाहन विनाना राज चाचंगदेवे मालदेवजी उपर हल्लो कर्यो, मालदेवजीए तुरतज कटार काढी वडिल बन्धुना प्रहारथी बची तेनापर सिंह पेठे तराप मारी कह्युं के—म्होटा भाइ! तमारा उपर प्रहार करतां मारो हाथ अचकाय छे, परंतु आ कटारने जोइ ल्यो. राज चाचंगदेवजी शरमाइ गया, अने पोतानी हार स्वीकारी पाछा फर्या. कुमार मालदेवजीए कुन्तलपुर जइ विजयनां दुन्दुभि वगडावी शहेरमां पोतानी आण फेरवी. राज चाचंगदेवजी पोताना पुत्र सालणदेवजी सहित निकळी जवा तत्पर थया ते वखते मालदेवजीए तेने पूरती मदद आपी पूर्व तरफ मोकल्या. ते वखते पूर्व दिशामां "तुवर" जातना रजपुतो राज्य करता हता. तेओनी साथे कुमार सालणदेवे युद्ध करी "सीकरी" नुं राज्य स्वाधीन कर्युं. राज चाचंगदेवजी महान् विद्वान् हता, तेणे पोताना दीर्घदर्शी अमात्य, राज्य ज्योतिषी अने राज्यपुरोहितने बोलावी उत्तम दिवसे विधिपूर्वक कुमार सालणदेवजीने राजगादीए बेसाडवानो निश्चय कर्यो.

राजपुरोहिते कुमार सालणदेवजीने राजाओने अत्यन्त श्रेय आपनार, सुख, यश, धन, आयुष्य अने संताननी वृद्धि करनार सर्वोत्कृष्ट प्रथम पुष्य स्नान करावबा पोतानो विचार जाहेर कर्यो, कारणके प्रजारुपी वृक्षनुं मूळ राजा छे, राजाना अशुभथी प्रजानुं अशुभ अने राजाना शुभथी प्रजानुं शुभ थाय छे जेथी राजाना शुभ माटे यत्न करवो जोइए. आम धारी राज्यमां कोइ जातनो उत्पात थतां, महामारी आदि उपद्रव थतां, ग्रहण वखते, धूम्रकेतुनो उदय थतां तथा ग्रहयुद्ध थतां राज्यनी अने पुत्रनी इच्छावाळा राजाए पोषमासनी पूर्णिमा अने पुष्य

नक्षत्रमां राज्यनी लगाम हाथमां लेता पहेलां करवा लायक पुष्यस्नान करावना तमामे निश्चय कर्यो.

श्लेष्म, वहेडां, सकंटक, कटु अने तिक्त वृक्षोथी रहित, उलूक तथा गीध आदि अशुभ पक्षीओथी रहित नविन वृक्ष, गुल्म, वल्ली अने लताओना विस्तारथी वींटायेल, निरुपद्रव, कोमळ पत्रो तेमज रसभरित मिष्टफळवाळां वृक्षोथी युक्त वनमां, अयवा कुकुट, जीव, जीवक, शुक्र, मयूर, शतपत्र, चाप, हारीत, क्रकर, चकोर, कपिंजल, वंजुल, पारावत आदि पक्षीओना मधुर शब्दोथी मनोहर अने पुष्पोना रसपानथी मदोन्मत्त थएला भ्रमरो तेमज कोकिल आदि पक्षीओथी शब्दायमान वननी समीपे अथवा क्षेत्र अर्थात् पुण्यस्थानमां रहेला घरनी मध्ये, अथवा नदीरुपी नारीओना अति मनोहर जलपक्षीओना नखक्षतथी युक्त नेत्र अने मनने आनंद आपनार तीररुपी जघन स्थलमां; अथवा कारंडव, कुरर अने सारसरुपी गवैया जेनी पासे गायन करे छे, उडता हंसरुपी जेना उपर छत्र छे तेमज प्रफुल्लित नीलकमलो जेनां नेत्र छे एवा इन्द्रनी उपमाने धारण करनार सरोवरना किनारा उपर; अथवा प्रफुल्लित कमलरुप मुखवाळी, हंसना मधुर शब्दोरुप, वार्तालापवाळी अने उन्नत कमलनी कलिकाओरुप कुचवाळी पुष्करिणी रुपी वेश्या होय त्यां; अथवा ज्यां धेनुना रोमंथना फीण पड्यां होय, तेनुं छाण अने खरीनां चिह्न होय अने न्हाना न्हाना वाछडाओ आनंद पूर्वक कूदता हुंकार शब्द करता होय एवा गोष्ठ अर्थात् गायोना स्थानमां अथवा ज्यां कुशळता पूर्वक पहोंचेलां तेमज रत्नोथी भरेलां वहाणोनी भीड मची रही होय अने जेनो आसपासनो भाग वहु घाटां वेतस वृक्षोना मूळमां वेठेला जलजंतु तेमज श्वेत पक्षीओथी चित्रित होय एवा समुद्रना किनारा उपर; अथवा ज्यां हरिणी सिंहनो तिरस्कार करे छतां सिंह क्रोध न करे एवा क्षमाथी भरेला पक्षी अने मृग शावकोनां अभयरुप मुनिओना आश्रमोमां; अथवा काञ्ची कलाप, नूपुर अने सघन जघनना धारण करवाथी मंद गतियुक्त चरणोवाळी, मृगनयनी अने कोकिलाना शब्द समान मधुर वचनवाळी स्त्रीओथी सुशोभित तेमज लक्ष्मीयुक्त गृहमां; अथवा पवित्र देवालय, तीर्थ अने मनोहर स्थानमां; अथवा पूर्व अने उत्तरनी तरफ प्लव अर्थात् निम्न तेमज जेमां जळ दक्षिण तरफ व्हेतुं होय एवी भूमिमां; अथवा राख, कोयला, अस्थि, क्षार, तुप, केश, टींवा टेकरा, कर्कटावास, ज्याहुडी तेमज मूषका दर अने सर्पनी राफडीओ रहित भूमिमां अने जे भूमि घन अर्थात् अन्तःसार, सुगन्धयुक्त, स्निग्ध, मधुर अने सम होय त्यां पुष्यस्नान कराय छे.

उपर कहेल पुष्यस्नान करवानां स्थानोमांथी उत्तमोत्तम राज्यमहेलमां राजर्षि माल्हण-

देवजीने पुष्यस्नान कराववा तमाम तैयारीओ करवा मांडी; राज्य ज्योतिषी, राज्यमंत्री अने राज्य पुरोहित ए त्रणेए रात्रीनी वखते नगर बाहेर इशान कोणमां वलि आप्युं, पुरोहिते लाज, अक्षत, दधि अने पुष्पोथी पवित्रपणे नम्रतापूर्वक देवो विगेरेने नीचेना मंत्रथी आमंत्रण कर्युं.

"आगच्छन्तु सुराः सर्वे, येऽत्र पूजाभिलाषिणः। दिशोनागाद्विजाश्चैव, येचान्येऽप्यंशभागिनः"

आ रीते आवाहन करी पुरोहिते सर्वे देवोने विज्ञप्ति करी के "आप सर्व प्रातःकाळनी पूजा ग्रहण करी राजा कामिकने कल्याण आपी खुशीथी पधारजो, आवाहित देवोनुं पूजन करी उपर कहेल त्रणे जणे शुभाशुभ स्वप्न जोवाने माटे त्यांज रात्री निर्गमन कर्युं;

वीजे दिवस प्रभातमां वलि स्थाने जइ यथायोग्य सामग्री भेळी करी; उक्त स्थानमां मंडल रची अनेक समुद्रो सहित भूमि अने ए भूमिमां अनेक प्रकारना स्थानोनी कल्पना करी; फरी पुरोहिते यथास्थान नाग, यक्ष, देवता, पितृ, गन्धर्व, अप्सरा, मुनि अने सिद्धनुं तेमज नक्षत्रो अने ग्रहमातृकाओ सहित रुद्र, स्कन्द, विष्णु, विशाख, लोकपाल अने इन्द्राणी आदि देवांगनाओनुं स्थापन कर्युं; मनोहर अने सुगन्ध युक्त अनेक प्रकारना रंगोथी ए सर्वेनां स्वरुप बनावी गन्ध, माल्य अने अनुलेपनथी तेमज मोदक आदि अनेक प्रकारनां भक्ष्य, फल, मूळ, मांस जातजातनां उत्तम सुरा, दुग्ध अने आसव आदि पानथी यथाक्रम पूजन कर्युं.

मांस, भात अने मद्यथी पिशाच, दैत्य अने दानवोनुं अभ्यंजन अर्थात् शरीरे लेपन करवा लायक तिलोनुं तैल आदि, अंजन, तिल, मांस अने भातथी पितृओनुं साम, यजु; अने ऋग्वेदथी तेमज गंध, धूप अने पुष्पमालाओथी मुनिओनुं; श्लेषकवर्ण अर्थात् जेमां वहु रंगोनो योग न होय एवा पदार्थोथी तेमज घृत, मध अने खांडथी नागोनुं; धूप, घृतनी आहुति, माला, रत्न, स्तुति अने प्रणामोथी देवताओनुं, सुन्दर सुगन्धयुक्त गंध अने मालाओथी गन्धर्व तेमज अप्सराओनुं, अने बाकी रहेला देवताओनुं सर्व वर्णना वलिओथी पूजन कर्युं तथा मौलि, वस्त्र, ध्वज, भूषण अने यज्ञोपवीत मंडलमां स्थापेल सर्व देवताओने चढाव्यां, अने त्यारबाद ग्रहपूजा करी.

मंडलना पश्चिम अने दक्षिण भागमां वेदी बनावी तेना उपर अग्निनुं स्थापन कर्युं, सर्व सामग्री एकठी करी लांवा तथा गर्भ रहित कुश पण त्यां लावी राख्या.

लाज, घृत, अक्षत, दधि, मधु, श्वेत सर्षप, गन्ध, पुष्प धूप, गोरोचन, अंजन, तिल, चालती ऋतुमां उत्पन्न थयेलां मीठां फळ अने घृत सहित खीरथी भरेलां सकोरां ए सर्वेथी पुण्य स्नाननी पश्चिम वेदीमां पूजन कर्युं, ए वेदीने चारे खूणे रत्नजडित्र कलशोने कंठे द्रढ श्वेत सूत्र वींटी अंदर जल भरी क्षीरवृक्षना कोमल पर्ण तथा श्रीफळथी ढांकी तेमां मालकांकणा, त्रायमाण, हरडे, अपराजीता, जीवा, विश्वेश्वरी, पाठा, समंगा, विजया, सहा, सहदेवी, पूर्णकोशा, शतावरी, अरिष्टिका, शिवा अने भद्रा ए सर्व औषधिओ तेमज ब्राह्मी, क्षेमा, अजा, सर्व प्रकारनां बीज, कांचनी, अक्षत, पुष्प आदि मांगलिक वस्तु जेटली मळे तेटली सर्वौषधि, तमाम मधुर लवण आदि रस, रत्न, सुगन्ध द्रव्य, बिल्व, विकंकत वृक्षनुं फळ, उत्तम नामनी वनस्पतिओ जेवी के जयापुत्र, जीवा, पुनर्नवा इत्यादि औषधि, सुवर्ण, गोरोचन, श्वेत सर्षप, अने दुर्वा आदि मंगल वस्तुओ नांखी स्थापन कर्या. पुष्य नक्षत्रपर आवेल चंद्रमा तथा शुभ मुहूर्त जोइ उत्तम लक्षणोयुक्त वृद्ध थइ मृत्यु पामेल बळदनुं चर्म लइ प्रथम वेदीपर बिछाव्युं अने ते चर्मनी ग्रीवा पूर्व तरफ राखी तेना उपर योध वृषनुं लाल रंगनुं अखंडित चर्म, तेना उपर सिंहनुं चर्म अने तेना उपर व्याघ्रनुं चर्म बिछाव्युं.

सोनुं, चांदी, त्रांबु अने गुलर आदि क्षीर वृक्षना काष्टनुं भद्रासन थाय छे; तेमज असन, स्पंदन, चंदन, देवदारु, हरिद्र, तिन्दुकी, शाल, काश्मरी, अंजन, पद्मक, शाक अने सीसम ए वृक्षोनुं काष्ठ आसन बनाववा माटे शुभ गणाय छे;

वीजळी, जळ, पवन अथवा हाथीओए पाडेलां मधपुडा अने पक्षीओना माळावाळां, चैत्य, स्मशानभूमि अने मार्गमां उगेलां, उभा उभा सुकाइ गयेलां, जेना उपर लताओ लपटी रही होय ते कांटाओथीयुक्त तेमज महा नदीओना संगम उपर तथा देवमंदिरोमां उगेलां अने जे काप्या पछी पश्चिम अथवा दक्षिण तरफ पडे ते वृक्षो आसन बनाववामां अशुभ गणाय छे; आ अशुभ वृक्षोना काष्ठथी बनावेल आसन उपर बेसवाथी कुळनो विनाश, रोगनो भय, धननो व्यय, कलह अने अनेक जातना अनर्थ थाय छे.

जो काष्ट प्रथमथीज कापेलुं होय तो आसन बनावता पहेलां तेनी परीक्षा करवी, ए काष्ठ उपर कोइ बाळक चढे तो ते शुभ समजवुं अने ए काष्ठथी बनावेल आसन उपर बेसवाथी पुत्र अने पशुओनी प्राप्ति थाय छे.

आसन बनाववाना आरंभमां श्वेत पुष्प, मदोन्मत्त हाथी, दधि, अक्षत, पूर्ण कलश, रत्न अने दुर्वा आदि मंगल द्रव्य नजरे चडे तो ते शुभ गणाय छे.

श्रीपर्णी वृक्षना काष्ठनुं बनावेल आसन धन आपनार थाय छे, असनना काष्ठनुं बनावेल आसन रोग हरे छे; टेंभुरणीना काष्ठनुं बनावेल आसन धन दे छे; केवळ सीसमना काष्ठनुं बनावेल आसन शत्रुओनो विनाश करी धर्म, यश अने दीर्घ आयुष्य अर्पे छे; शाल अने सागना काष्ठनुं बनावेल आसन कल्याणकारी थाय छे; चंदनना काष्ठनुं आसन बनावी तेने सुवर्णथी मढी तेमां अनेक प्रकारनां रत्न जडी ते उपर बेसनार राजानुं देवताओ पण पूजन करे छे.

टेंभुरणी अने सीसमनी साथे बीजुं काष्ठ मिलावी बनावेल आसन अशुभ गणाय छे, केवळ टेंभुरणीना अथवा केवळ सीसमना काष्ठथी आसन बनाववुं; ए रीते आसन बनाववामां श्रीपर्णी, देवदारु अने आसनना काष्ठनी साथे पण बीजुं काष्ठ न मिलाववुं; साग अने सालना काष्ठने मिलावी आसन बनाववा इच्छा थाय तो ते बेमांथी एकनाज काष्ठनुं आसन बनाववुं शुभ अने उत्तम गणाय छे. एज रीते हरिद्र अने कदंब वृक्षना काष्ठने मिलावी आसन बनाववा इच्छा थाय तो ते बेमांथी एकनाज काष्ठनुं बनावेल आसन श्रेयस्कर थाय छे, एकला स्पंदनना काष्ठनुं बनावेल आसन अशुभ गणाय छे अने तेना पर बेसनार विनाश पामे छे, ए रीते आम्र वृक्षना काष्ठनुं बनावेल आसन पण बेसनारनो प्राण हरे छे; असन वृक्षना काष्ठनी साथे अन्य वृक्षनुं काष्ठ मिलावी बनावेल आसन तुरतज हानिकारक थाय छे.

उपर कहेल वृक्षोना काष्ठमां हाथीदांतनो योग होय तो शुभ गणाय छे एटला माटे उत्तम हाथी दांतना वेल अने बूटा काष्ठमां जडी आसनने अलंकृत करवुं.

हाथीदांतना मूळमां जेटलो फेलावो होय तेथी बमणो मूळ तरफनो भाग छोडी शेष दांत काममां लेवो, अनूपदेश (जलप्राय) ना हाथीदांतनो एथी पण अधिक भाग छोडवो अने पर्वतमां फरनार हाथीओना दांतमां मूळना फेलावानी द्विगुणताथी कांइक न्यून भाग छोडी बाकीनो दांत उपयोगमां लेवो.

हाथीनो दांत कापती वखते तेमां बिल्ववृक्ष, वर्धमान, छत्र, ध्वज अथवा चामरना आकारनुं चिह्न देखाय तो ते आरोग्य, विजय, धन, वृद्धि अने सुखदायक थाय छे; शस्त्रना आकारनुं चिह्न होय तो युद्धमां जय, नद्यावर्त नामक प्रासादना आकारनुं चिह होय तो नष्ट थयेल राज्यनी

फरी प्राप्ति; लोष्टना आकारनुं चिह्न होय तो पहेलां प्राप्त थएल अने पाछा हाथथी छूटी गयेल देशनी संप्राप्ति; स्त्रीना आकारनुं चिह्न होय तो घोडाओनो विनाश; भृंगारना आकारनुं चिह्न होय तो पुत्रनी उत्पत्ति; कलशना आकारनुं चिह्न होय तो निधिनो लाभ अने दंडना आकारनुं चिह्न होय तो यात्रामां विघ्न थाय छे, तेमज कृकलास, कपि अने सर्पना आकारनुं चिह्न होय तो दुर्भिक्ष अने व्याधिपूर्वक शत्रुने वश थवुं पडे छे; गीध, उलूक, काक अने श्येनना आकारनुं चिह्न होय तो मनुष्योमां मरकीनो उपद्रव थाय छे, अने पाश अथवा कबन्धना आकारनुं चिह्न होय तो राजानुं मृत्यु थाय छे.

कापती वखते हाथीना दांतथी रुधिर टपके तो मनुष्यो उपर आपत्ति आवे छे. छेदनुं स्थान कृष्ण वर्ण, रुक्ष अने दुर्गन्धयुक्त होय तो ते अशुभ गणाय छे.

राजा माटे उत्तम सिंहासन साठ आंगळनुं, मध्यम सिंहासन पचाश आंगळनुं अने कनिष्ठ सिंहासन चाळीश आंगळनुं करवुं, परंतु तेनी लंबाइथी पहोळाइमां एक दशांश १/१० ओछुं करवुं अथवा लंबाइथी पहोळाइमां एक अष्टमांश १/८ ओछुं करवुं अने तेवा सिंहासनोनी लंबाइना अर्ध भागनी १/२ उंचाइ करवी जोइए.

सिंहासननी पहोळाइना सात भाग करवा अने ते सात भागोमांथी त्रण भागोनुं भद्र करवुं, बन्ने भागोना कोण करवा. अथवा सिंहासननी पहोळाइना पांच भाग करवा, ते पांच भागोमांथी बे भागोनुं भद्र बनाववुं अने दोढ दोढ भागना कोण राखवा, एवा सिंहासनना उदयना छाशी (८६) भागो करवा तेमांथी आठ भागोनुं पीठ अथवा जाडवो करी पांच भागोनी वणी करवी तथा सात भागोनी ग्रासपट्टी, अगियार भागोनो गजथर, नव भागोनो अश्वथर, सात भागोनो नरथर, चौद भागोनी वेदी, छ भागोनुं छाद्य अने पंदर भागोनुं कक्षासन अथवा कठेडो करवो; एवा सिंहासनने चारे स्तंभो करवा तेने तोरण करवुं, उंचा प्रकारना रत्नो जडवां, राजाओने प्रिय आ रीतनुं ज्येष्ठमाननुं सिंहासन बनाववुं.

जे सिंहासनने गजथर, सिंहथर, नरथर अने कक्षासन होय एवुं सिंहासन कीर्तिनी वृद्धि करे छे;

त्रीजा प्रकारनुं सिंहासन नरथर वेदी, छाद्य, सुखासन अने तोरण सहित बनाववुं; चोथा प्रकारनां सिंहासनमां प्रथम कह्या प्रमाणेज पीठ, तेना उपर कुंभोनो थर, ते उपर कलशोनो

थर, ते उपर कपोतालीनो थर अने तेना उपर छाद्य बनाववुं; ए " उत्तुंग " नामनुं सिंहासन कहेवाय छे. पांचमा प्रकारना सिंहासनमां पीठ, गजथर, सिंहथर, वेदिका अने छाद्य होय तो तेनुं नाम " सुयश " छे तेमज छट्टा प्रकारनुं सिंहासन गजथर, मात्रिकाथर, वेदिका, आसन अने छाद्ययुक्त होय तो तेनुं नाम " दीपचित्र " कहेवाय छे.

पूर्वोक्त आसनोमांथी उत्तमोत्तम सुवर्णथी मढेल तथा रत्नोथी जडेल चंदन काष्ठना सिंहासननी वच्चे सुवर्ण राखी तेना उपर प्रसन्न चित्तपूर्वक मंत्री, आप्त मनुष्यो, पुरोहित ज्योतिषी अने मांगलिक नामवाळा नगरना लोकोथी वींटाएल राज सालणदेवजीने बेसाड्या. वंदीजनो बिरद बोलवा लाग्या, नगरना लोक अने ब्राह्मणो उंचे स्वरे पुण्याहवाचन अने वेदना उच्चार करवा लाग्या. मृदंग, शंख अने तुर्य आदि मंगलवाद्यो वागवा लाग्यां.

अभिषेक माटे आठ, अठ्यावीश अने एकसोआठ कलश स्थापन करवानो सामान्य विधि शास्त्रमां कहेल छे तेथी अधिक कलशोनुं स्थापन कर्याथी अधिक शुभ फळ प्राप्त थाय छे. एटला माटे राजर्षि कामिकना अभिषेक अर्थे वर्से सोळ कलशोनुं स्थापन कर्युं हतुं.

नविन वस्त्रनां नव भाग करतां खूणाना चार भागमां देवता, पाशांत अने दशांतना वे भागमां मनुष्य अने मध्यना त्रण भागमां राक्षसनो वास होय छे; वस्त्रना मूळने पाशांत अने अग्रभागने दशांत कहे छे.

नविन वस्त्र, श्याही, छाण अथवा पंकथी लिप्त थाय, कपाइ जाय, बळी जाय, अथवा फाटी जाय तो अति अशुभ फळ आपे छे; पुरातन वस्त्रनी उपर मुजब दशा थाय तो थोडुं अशुभ अने अति पुराणा वस्त्रनी उपर मुजब दशा थाय तो घणुंज थोडुं अशुभ फळ आपे छे.

वस्त्रना राक्षस भागमां छेद आदि होय तो तेनो पहेरनार रोग अथवा मृत्यु पामे छे, मनुष्य भागमां छेद आदि होय तो पहेरनारने कान्ति तथा पुत्र प्राप्ति थाय छे, देवताओना भागमां छेद आदि होय तो विलासनी वृद्धि थाय छे, सर्व भागने छेडे छेद आदि होय तो तेनुं फळ अनिष्ट समजवुं.

वस्त्रना देव भागमां कंकपक्षी, देडकुं, उलूक, कपोत, काक, मांसभक्षक गीध आदि पक्षी, जंबुक, गर्दभ, उंट अने सर्पना आकारनो छेद होय तो तेना पहेरनारने मृत्यु समान भय आपे छे, एवा छेद बीजा भागमां होय तो शुंज कहेवुं.

वस्त्रना राक्षस भागमां छत्र, ध्वज, स्वस्तिक, वर्धमान, विल्व वृक्ष, कलश, कमल अने तोरण आदिना आकारनो छेद होय तो तेना पहेरनारने तुरत लक्ष्मी प्राप्त थाय छे, जो एवा छेद बीजा भागोमां होय तो ते शुंज कहेवुं.

नविन वस्त्र अश्विनी नक्षत्रमां पहेरवाथी घणां वस्त्रो मळे छे, भरणी नक्षत्रमां पहेरवाथी वस्त्रोनी हानि थाय छे; कृत्तिकामां पहेरवाथी वस्त्रो बळी जाय छे, रोहिणी नक्षत्रमां पहेरवाथी धन प्राप्ति थाय छे, मृगशिरमां पहेरवाथी वस्त्रने मूषकनो भय रहे छे, आर्द्रामां नविन वस्त्र पहेरवाथी मृत्युज थाय छे, पुनर्वसुमां धनप्राप्ति अने पुष्यमां धनलाभ थाय छे, अश्लेषामां पहेरवाथी वस्त्र नष्ट थइ जाय छे, मघामां पहेरवाथी मृत्यु थाय छे, पूर्वा फाल्गुनीमां पहेरवाथी राजाथी भय थाय छे, उत्तरा फाल्गुनीमां पहेरवाथी धन मळे छे, हस्त नक्षत्रमां नविन वस्त्र धारण करवाथी कार्य सिद्ध थाय छे, चित्रामां पहेरवाथी शुभनी प्राप्ति थाय छे, स्वाति नक्षत्रमां पहेरवाथी उत्तम भोजन मळे छे, विशाखामां नविन वस्त्र धारण करवाथी प्रिय थाय छे, अनुराधामां पहेरवाथी मित्र समागम थाय छे, ज्येष्ठामां पहेरवाथी वस्त्रनो क्षय थाय छे, मूळ नक्षत्रमां नविन वस्त्र धारण करनार जळमां डूबी जाय छे, पूर्वाषाढामां पहेरवाथी रोग उत्पन्न थाय छे, उत्तराषाढामां पहेरवाथी मिष्ट भोजन मळे छे, श्रवण नक्षत्रमां पहेरवाथी नेत्ररोग थाय छे, धनिष्ठामां पहेरवाथी अन्ननो लाभ थाय छे, शतभिषकमां पहेरवाथी विषनो भय रहे छे, पूर्वा भाद्रपदामां पहेरवाथी जळथी भय थाय छे, उत्तरा भाद्रपदामां पहेरवाथी पुत्रप्राप्ति थाय छे अने रेवती नक्षत्रमां जे पुरुष नविन वस्त्र धारण करे तेने रत्ननो लाभ थाय छे.

ब्राह्मणनी आज्ञाथी खराब नक्षत्रमां पण नविन वस्त्र धारण करवाथी शुभ फळ मळे छे, राजाए आपेल अने विवाहमां मळेल वस्त्र खराब नक्षत्रमां पहेरवाथी पण शुभ फळ आपे छे.

पुरोहिते उपर मुजब विचार करी उत्तम लक्षणयुक्त नविन वस्त्रो उत्तम नक्षत्रमां राजर्षि सालणदेवजीने धारण कराव्यां.

राजानो मुकुट मध्य भागमां आठ आंगळ विस्तीर्ण शुभ गणाय छे, राजानी मुख्य राणीनो मुकुट मध्य भागमा सात आंगळ विस्तीर्ण अने युवराजनो मुकुट मध्य भागमां छ आंगळ विस्तीर्ण करवो जोइए; सेनापतिनो मुकुट चार आंगळ विस्तीर्ण अने प्रसादपट्ट अर्थात् राजा प्रसन्न थइ कोइ पोताना सेवक आदिने मुकुट आपे ते मध्यभागमां बे अंगुल विस्तीर्ण बनाववो.

सर्व मुकुट तेनी विस्तीर्णताथी बमणा लांबा करवा जोइए, जेम राजानो मुकुट मध्यभागमां आठ अंगुल विस्तीर्ण कहेल छे तो ते सोळ आंगळ लांबो बनाववो अने मध्यभागना प्रमाणथी अर्ध बेउ बाजु चोडो राखवो. जेम राजानो मुकुट मध्यभागमां आठ अंगुल चोडो कहेल छे तेम ते मध्यभागनी बन्ने बाजुए चार चार आंगळ चोडो करवो जोइए. उपरना सर्व मुकुट शुद्ध सुवर्णना बनाववाथी कल्याणनी वृद्धि थाय छे;

राजानो मुकुट पांच शिखाओथी युक्त, राणी अने युवराजनो मुकुट त्रण शिखाओथी युक्त, सेनापतिनो मुकुट एक शिखायुक्त अने प्रसादपट्ट शिखा रहित बनाववो अर्थात् एमां एकपण शिखा न राखवी.

मुकुट घडती वखते तेना मध्यमां जो छिद्र पडे तो राजानो अने राज्यनो विनाश थायछे, मध्यमां फाटेला मुकुटने तजी देवो तेमज मध्यना पार्श्व भागमां फाटेल होयतो राज्यमां विघ्न उत्पन्न थायछे माटे तेनो पण त्याग करवो.

राजर्षि सालणदेवजीने अगाउथी बनावी राखेल उत्तम लक्षणयुक्त सुवर्णनो पांच शिखावाळो मुकुट पुरोहिते धारण कराव्यो.

वज्र, इन्द्रनील, मरकत, करेकतन, पद्मराग, रुधिर, वैदूर्य, पुलक, विमलक, राजमणि, स्फटिक, चन्द्रकान्त, सौगन्धिक, गोमेदक, शंख, महानील, पुष्पराज, ब्रह्ममणि, ज्योतिरस, रस्यक, मोती अने प्रवाल ए सर्व रत्न कहेवाय छे.

वेणा नदीने किनारे शुद्ध अर्थात् श्वेतरंगना, कोशल देशमां शिरीषना पुष्प समान लीला रंगना, सुराष्ट्र देशमां आताम्र रंगना, सुपरिक देशमां कृष्णवर्ण, हिमालय पर्वतमां आताम्र, मातंग देशमां वल्लना पुष्प समान थोडा पांडुर रंगना, कलिंग देशमां पीळा रंगना अने पौंड्र देशमां श्याम वर्णना हीरा उत्पन्न थायछे.

जे हीरा षट्कोण अने श्वेतवर्ण होय तेना देवता इन्द्र, जे सर्पना मुखने आकारे कृष्णवर्ण होय तेना देवता यम, जे कदलीकांडना समान अर्थात् लीला अने पीळा मिश्रित रंगना गमे ते आकारना होय तेना देवता विष्णु, जे स्त्रीना गुह्यांगने आकारे कर्णिकारना पुष्प समान पीतवर्ण होय तेना देवता वरुण, जे सिंगोडाने आकारे वाघना नेत्र समान वर्णना होय तेना देवता अग्नि अने जे जवने आकारे अशोकना पुष्प समान रक्तवर्ण होय तेना देवता वायु होयछे.

नदी आदिनो प्रवाह, खाण अने प्रकीर्ण अर्थात् कोइ कोइ भूमि उपर विखराएल ए त्रण स्थानमां हीरा मळेछे.

रक्तवर्ण अने पितवर्णना हीरा क्षत्रीओने, शुकलवर्णना हीरा ब्राह्मणोने, शिरीषना पुष्प समान लीलावर्णना वैश्योने अने खड्ग समान नीलवर्णना हीरा शूद्रोने माटे शुभ गणाय छे.

पुत्रनी इच्छावाळी स्त्रीओए हीरो धारण करवो नहि, पण कदि इच्छा थायतो शृंगाटक, त्रिपुट, धान्यक अने श्रोणीना आकारनो हीरो तेओने माटे शुभ गणाय छे.

अशुभ लक्षणवाळो हीरो धारण करनार पुरुषना बंधु, ऐश्वर्य तथा आयुषनो क्षय करेछे अने शुभ लक्षणवाळो हीरो राजाओने विद्युत्, विष अने शत्रुओना भयथी निवृत्त करे छे.

हाथी, सर्प, छीप, शंख, वादळां, वांस, मत्स्य, अने सूकर ए सर्वथी मोती उत्पन्न थाय छे; परंतु ए सर्वमां छीपना मोती घणां अने उत्तम थाय छे.

सिंहलद्वीप, पारलौकिक देश, सौराष्ट्र देश, ताम्रपर्ण नदी, पारशव देश, कौवेर देश, पांड्यवाटक देश, अने हिमवान पर्वत ए आठ स्थान मोती उत्पन्न थवाना आकर छे.

सिंहलद्वीपमां उत्पन्न थयेलां मोती घणा आकारना, स्निग्ध, हंस तुल्य शुक्लवर्ण अने स्थूल होय छे, ताम्रपर्णी नदीनां मोती थोडां घणां ताम्र, श्वेत अने निर्मळ होय छे; पारलौकिक देशनां मोती काळां, श्वेत अने पीळां तेमज कंकरयुक्त तथा विषम होय छे; सौराष्ट्र देशनां मोती नहि म्होटां के नहि न्हानां, नवनीत तुल्य श्वेत रंगना होय छे; पारशव देशनां मोती तेजदार, श्वेतवर्ण, वजनदार अने म्होटां उत्तम गुणयुक्त होय छे; हिमवान पर्वतनां मोती हलकां, जर्जर दधिवर्ण अने वे आकारनां होय छे, कौवेर देशनां मोती विषम, कृष्णवर्ण, श्वेत, हलकां अने तेजदार होय छे; तेमज पांड्यवाट देशमा उत्पन्न थयेलां मोती निम्ब फळने आकारे त्रण पुटयुक्त, धान्यक समान अने चूर्ण होय छे.

अतसीना पुष्प समान श्यामवर्ण मोतीना देव विष्णु, चन्द्राकार मोतीना देव इन्द्र, हरिताल तुल्य वर्णना मोतीना देव वरुण; कृष्णवर्ण मोतीना देव यम, पाकेल दाडिमना दाणा तुल्य अथवा गुंजा तुल्य ताम्रवर्ण मोतीना देव वायु; तेमज निर्धूम अग्नि अथवा कमळ पुष्प समान जेनी प्रभा होय ते मोतीना देव अग्नि होय छे.

पाच रतिनो एक मासो, सोळ मासानो एक कर्ष अने चार कर्षनो एक पल थाय छे,

पलना दशमा भागने धरण कहे छे.

जो सारां पाणीवाळां तेर मोती तोलमां एक धरण थाय तो तेनुं मूल्य त्रणसो पचीश रुपिआ, सोळ मोती एक धरणमां चडे तो तेनुं मूल्य बसो रुपिआ, वीश मोती एक धरणमां चडे तो तेनुं मूल्य एक सो सीत्तेर रुपिआ, पचीश मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य एकसो त्रीश रुपिआ, त्रीश मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य सीत्तेर रुपिआ, चाळीश मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य पचाश रुपिआ, पचावन मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य चाळीश रुपिआ, ऍंशी मोती एक धरण भार थाय तो तेनी किम्मत त्रीश रुपिआ, सो मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य पचीश रुपिआ, बसो मोती एक धरणमां तळे तो तेनी किम्मत बार रुपिआ, त्रणसो मोती एक धरण भार थाय तो तेनी किम्मत छ रुपिआ, अने चारसो मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य पांच रुपिआ अने एक धरण तोलमां पांचसो मोती तळे तो ते सर्वनुं मूल्य त्रण रुपिआ होय छे.

एक धरण भारोभार थता, तेर मोतीने पिक्का, सोळ मोतीने पिच्चा, वीश मोतीने अर्घ, पचीश मोतीने अर्ध, त्रीश मोतीने रवक, चाळीश मोतीने सिक्थ पचावन मोतीने निगर, अने एथी आगळ ऍंशी आदि मोतीने चूर्ण कहेछे; एज आजकाल भूका मोती कहेवाय छे.

उपर प्रमाणे उत्तम गुणयुक्त एक धरणभार मोतीओनुं मूल्य कह्युं तेनी वच्चेना मोतीनुं मूल्य त्रिराशि करी जाणी लेवुं, जेम एक धरणभार तेर मोतीनी किम्मत त्रणसो पचीश रुपिआ अने एक धरणभार सोळ मोतीनी किम्मत बसो रुपिआ कहीछे तो तेनी वच्चे चौद मोती अथवा पंदर मोती एक धरणमां तळे तो तेनुं मूल्य त्रिराशि करी समजी लेवुं.

गुणहीन मोतीओनी किम्मत ओछी जाणवी.

जे मोती काळां, श्वेत, पीळां अथवा ताम्रवर्ण तेमज विषम होय तेनुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी जे नक्की थाय तेनो तृतीयांश घटाडी बाकीनी रकम जाणवी. जे मोती रंगे सारुं होय परंतु विषम होय तो तेनुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी षष्ठांशहीन समजवुं अने बहुज पीळां मोतीनुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी अरधुं समजी लेवुं.

ऐरावत हाथीना वंशमां जे हाथी उत्पन्न थाय छे अने भद्र जातिना हाथी पुष्प अने श्रवण नक्षत्रमां सोमवार अथवा रविवारे उत्तरायणमां सूर्य चन्द्रना ग्रहण वखते उत्पन्न थाय तेना

कुंभस्थळमां अने दंतकोशमां म्होटां म्होटां अनेक आकारनां तेमज प्रभायुक्त मोती नीकळे छे, ए मोती घणाज तेजदार होय छे माटे एनी किम्मत आंकवी नहि तेमज तेमां छिद्र पण न पाडवुं, ए मोती महा पवित्र होय छे, जे राजा ए मोती धारण करे छे तेने पुत्र, विजय, अने आरोग्य प्राप्त थाय छे.

सूकरोनी दाढमां चन्द्रनी कान्ति समान कान्तिवाळां अने घणा गुणयुक्त मोती निकळेछे. मत्स्यथी उत्पन्न थयेल मोती तेना नेत्र समान महा पवित्र अने उत्तम गुणयुक्त होय छे.

मेघमां उपलनी पेठे मोती उत्पन्न थाय छे ते सप्तम वायु स्कन्धथी पडे छे परंतु तेने देवताओ आकाशथीज हरी ले छे, ते मेघथी उत्पन्न थएल मोती विजळीनी माफक चमकदार होय छे.

जे तक्षक अने वासुकि नागना कुळमां उत्पन्न थयेल स्वेच्छाचारी सर्प छे तेनी फणना अग्रभागमां स्निग्ध अने नील कान्तिवाळां मोती थाय छे; ए मोती प्रशस्त भूमिमां चांदीना पात्र वच्चे राखवाथी अकस्मात् दृष्टि थाय छे.

राजा विना मूल्य ए सर्पना मोतीने धारण करे तो विष, अलक्ष्मी अने शत्रुओना क्षयपूर्वक अपार यश अने विजय पामे छे.

वांसमां उत्पन्न थएलां मोती कपूर अथवा स्फटिक समान श्वेत, चिपटा अने विषम तेमज शंखथी उत्पन्न थएलां मोती चन्द्रनी माफक कान्तियुक्त गोळ, चमकदार अने सुन्दर होय छे.

शंख, मत्स्य, वांस, हाथी, सूकर, सर्प अने मेघथी उत्पन्न थएल मोतीओमां छिद्र न पाडवुं कारण के ए सर्वना घणा उत्तम गुण छे एटला माटे एनुं मूल्य पण क्यांइ कहेल नथी. ए अमूल्य मोती पुत्र, धन, सौभाग्य तेमज यश आपनार थाय छे, रोग तथा शोकनो नाश करे छे अने राजाओने मनवांछित फळ आपे छे.

जे मोतीओनो हार चार हाथ लांबो अने एक हजार आठ लरनो होय ते देवताओनुं आभूषण बने छे तेनुं नाम इन्द्रच्छन्द छे; एथी अर्ध अर्थात् बे हाथ लांबो अने पांचसो चार लरनो विजयच्छन्द कहेवाय छे, एकसो आठ लरनो अने बे हाथ लांबो हार तेमज एक्यासी लरनो अने बे हाथ लांबो देवच्छन्द कहेवाय छे; चोसठ लरनो अर्ध हार, चोपन लरनो रश्मिकलाप, बत्रीश लरनो गुच्छ, वीश लरनो अर्ध गुच्छ, सोळ लरनो माणवक, बार लरनो अर्ध माणवक, आठ लरनो मन्दर अने पांच लरनो हार फलक कहेवाय छे. ए सर्व बे बे हाथ लांबा

होय छे; एक हाथ लांबी सत्यावीश मोतीओनी नक्षत्रमाला कहेवाय छे, ए एक लरनी वच्चे वच्चे मोतीओनी साथे मणि अथवा सुवर्णना दाणा परोव्या होय तो तेने मणिसोपान कहे छे; ए मणिसोपान मध्य भागमां तेजदार मणिथी युक्त होय तो चाटुकारक कहेवाय छे; हारनी वच्चे जो महान् मणि होय तो तेने तरलक कहे छे, एक हाथ लांबी गमे तेटली लरनी होय अने एनी वच्चे मणि न होय तो ते एकावली कहेवाय छे. अने जो एना मध्य भागमां मणि होय तो तेने यष्टि कहे छे.

सौगन्धिक, कुरुविंदक अने स्फटिक ए त्रण पाषाणो पद्मरागनां उत्पत्ति स्थान छे.

सौगन्धिकथी उत्पन्न थयेल पद्मराग भ्रमर, अंजन, मेघ अथवा जंबुफलना रसतुल्य कान्तिवाळो कुरुविन्दथी उत्पन्न थएल पद्मराग शबल अर्थात् श्वेत, कृष्ण आदि अनेक रंगथी मिश्रित, मंदकान्ति अने मृत्तिका आदि धातुओना दागवाळो तेमज स्फटिकथी उत्पन्न थएल पद्मराग कान्तियुक्त, अनेक रंगना अने निर्मळ होय छे.

स्निग्ध, पोतानी प्रभाथी अन्यने लेपनार, निर्मळ, कान्तियुक्त, वजनदार, सुन्दर आकृतिवान्, अन्तःप्रभायुक्त अने बहु रंगदार ए सर्व पद्मरागमणि अने रत्नोना गुण छे अर्थात् ए गुण जेमां होय ते उत्तम गणाय छे;

अनिर्मळ, मंद कान्ति, रेखाओथी व्याप्त, मृत्तिकाआदि धातुओथी युक्त, फाटेल, दुर्विद्ध अथवा सारी रीते नहि वींधेला, चित्तने आह्लाद नहि आपनार अने कंकरयुक्त इत्यादि दोषवाळा मणि अशुभ जाणवा.

सर्पोना मस्तक उपर भ्रमर अथवा मयूरना कंठ तुल्य रंगदार अने दीपकनी शिखा तुल्य कान्तियुक्त जे मणि थाय छे ते अमूल्य होय छे; जे राजा ए सर्पनो मणि धारण करे तेने विष के रोगथी कदिपण भय थतो नथी, तेना राज्यमां नित्य वृष्टि थाय छे अने ए मणिना प्रभावथी राजा पोताना शत्रुनो निश्चे विनाश करे छे.

जे पद्मराग एक पल अर्थात् चार कर्ष तोलमां होय तेनी किम्मत छव्वीश हजार रुपिआ, त्रण कर्ष होय तो वीश हजार, बे कर्ष होय तो बार हजार, एक कर्ष होय तो छ हजार, अर्ध कर्ष अर्थात् आठ मासा तोलमां होय तो त्रण हजार, चार मासा होय तो एक हजार अने बे मासा होय तो पांचशो रुपिआ. बाकीनानुं त्रिराशिथी मूल्य कल्पी लेवुं; गुणहीन अने अधिक गुणनां

मूल्य तेमज हानि अने वृद्धि पण समजी लेवी.

जे पद्मराग रंगमां न्यून होय तेनुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी अर्ध अने जे तेजहीन होय तेनुं मूल्य अष्टमांश जाणवुं.

जे पद्मरागमां गुण थोडा अने दोष वधारे होय तेनुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी वीशमे अंशे राखवुं.

जे पद्मराग जरा धूम्रवर्ण, बहु व्रणयुक्त अने अल्पगुण होय तेनुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी बसोमे भागे समजी लेवुं.

जे राजा अथवा मनुष्य शुक, वांसनुं पर्ण, कदली अथवा शिरीषना पुष्प समान लीला रंगनो अने उत्तम गुणोथीयुक्त मरकत देवकार्य अने पितृकार्यमां धारण करे तो अतिशय शुभ फळ आपे छे.

उपर बतावेल जवाहीरो उत्तम अने निर्दोष जोइ तेना शास्त्रोक्त विधिए अगाउथी बनावी राखेल, आयुष्य अने तेजनी वृद्धि करनार तेमज नविन अने राजस्योष आदि छ ऋचाओथी अभिमंत्रित अनेक जातनां अमूल्य आभूषणो राजर्षि सालणदेवजीए अंगे धारण कर्यां.

हंस, कुकुट, मयूर अने सारस पक्षीना पीछांओथी बनावेल, नविन वस्त्रथी चारे तरफ ढांकेल, सफेद मोतीओथी व्याप्त, चारे तरफ लटकती मोतीओनी माळाओथीयुक्त, रत्न जडित अने उन्नत छत्र राजाने कल्याणकारी तथा विजय आपनार थाय छे. छ हाथ लांबो एक काष्टनो दंड सुवर्णथी मढावी नव अथवा सात पर्वोथीयुक्त ते छत्रमां लगाववो अने छत्रनो व्यास त्रण हाथ राखवो तेमज ते छत्रना संधि सुश्लिष्ट होवा जोइए.

युवराज, राजानी राणी, सेनापति अने दंडनायकना छत्रनो दंड साडाचार हाथ लांबो अने अढी हाथ व्यास राखवो जोइए.

पूर्वोक्त रीते बनावेलुं छत्र सिंहासन उपर स्थापवामां आव्युं तेनुं राजर्षि कामिके यथा-विधि पूजन कर्युं.

देवताओए चामरोने माटे हिमालय पर्वतनी कन्दराओमां चमरी गायो उत्पन्न करेल छे तेना पुच्छना वाळ पीळा, काळा अने श्वेत होय छे.

जे चामरोना वाळ स्निग्ध, कोमळ, घाटा अने विशद होय तथा परस्पर गुंचायेला न

होय तेमज तेओनी वच्चे हड्डी न्हानी अने शुभ्र वाळथी युक्त होय ते शुभ तेमज विद्ध, न्हाना अने लुप्त होय ते अशुभ गणाय छे.

राजाओ माटे चामरनो दंड उत्तम काष्टनो बनावी तेने सुवर्ण अथवा चांदीथी मढी उपर रत्नो जडी तेनी लंबाइ दोढ हाथ, एक हाथ अथवा-रत्नि जेटली राखवाथी शुभ फळ आपे छे.

यष्टि, छत्र, अंकुश, वेत्र, धनुष, वितान, कुंत, ध्वज अने चामर ए सर्वना दंड पीळा अने लाल रंग मळेला क्षत्रीओने माटे शुभ गणाय छे; ए दंड बे पर्वनो होय तो माताने क्षय, चार पर्वनो होय तो भूमिक्षय, छ पर्वनो होय तो धनक्षय, आठ पर्वनो होय तो कुळक्षय, दश पर्वनो होय तो रोगोत्पत्ति अने बार पर्वनो होय तो मृत्यु करे छे. तेमज त्रण पर्वनो होय तो यात्रामां विजय, पांच पर्वनो होय तो शत्रुओनो विनाश, सात पर्वनो होय तो घणो लाभ, नव पर्वनो होय तो भूमिलाभ, अग्यार पर्वनो होय तो पशुओनी वृद्धि अने तेर पर्वनो होय तो अभिष्ट वस्तुनो लाभ आपनार थाय छे.

पूर्वोक्तरीते राजाने योग्य बनावेल चामरोना झपाटाथी राजर्षि सालणदेवजी सर्वोत्कृष्ट शोभवा लाग्या.

पचाश आंगळ लांबु खड्ग उत्तम गणाय छे, तेथी ओछुं अने पचीश आंगळथी अधिक लंबाइवाळुं खड्ग मध्यम गणाय छे; खड्गनी लंबाइमां विषम अंगुल अर्थात् पहेला त्रीजा अने पांचमा आदि आंगळमां व्रण होय तो ते अशुभ अने सम अंगुल अर्थात् बीजा, चोथा, अने छट्ठा आदि आंगळमां व्रण होय तो ते शुभ लेखाय छे.

खड्गनी वच्चे बिल्ववृक्ष, शराव, छत्र, शिवलिंग, कुंडल अने कमलना आकारनुं तेमज ध्वज, खड्ग आदि शस्त्र अने स्वस्तिकना आकारनुं व्रण होय तो ते शुभ समजवुं.

कृकलास, काक, कंकपक्षी, मांसभक्षक गीध आदि पक्षी, कबंध अने वृश्चिकना आकारनुं व्रण खड्गमां अशुभ गणाय छे; वंश अर्थात् खड्गनी मध्यना उंचा भागमां जो व्रण होय तो ते पण अशुभ लेखाय छे; भले उत्तम आकृतिना होय तोपण झाझा व्रण अशुभज गणाय छे.

फाटेलुं, न्हानुं, कुंठ अर्थात् जेनी धार तीखी न होय ते, वंशप्रदेशमां तूटेलुं देखातुं होय ते, दृष्टि अने मनने प्रिय न लागे तेवुं अने अस्वन अर्थात् जेना उपर अंगुलीनुं ताडन करतां अवाज न थाय ते खड्ग अशुभ जाणवुं; एथी विपरीत अर्थात् नहि फाटेलुं लांबु, तीक्ष्ण धारवाळुं,

वंशप्रदेशमां निर्दोष, नेत्र तथा मनने प्रिय लागनारुं अने अंगुलीना ताडनथी शब्दायमान खड्ग शुभ गणाय छे.

खड्गमां पोतानी मेळे अवाज थाय तो स्वामीनुं मृत्यु थाय छे, युद्धनी वच्चे खड्ग काढतां म्यानमांथी न नीकळे तो पराजय थाय छे, खड्ग पोतानी मेळे म्यानमांथी बाहेर निकळी आवे तो युद्ध थाय छे, युद्धनी वच्चे खड्गमांथी ज्वाळा नीकळे तो विजय मळे छे.

विना कारण तलवारने म्यानमांथी बाहेर काढवी नहि, कोइ वस्तु साथे अथडाववी नहि, खड्गमां मुख जोवुं नहि, खड्गनुं मूल्य कहेवुं नहि, खड्ग अमुक देशनुं बनेल छे एम पण प्रसिद्ध न करवुं; अंगुली आदिथी खड्गनो माप पण न करवो तेम राजाए अपवित्रपणे खड्गनो कदी स्पर्श करवो नहि.

गायनी जीभ, नीलकमलनुं दल, वांसनुं पत्र, कणेरनुं पत्र अने शूल समान जेनो अग्रभाग तीक्ष्ण अथवा गोळ होय ते खड्ग उत्तम गणाय छे.

घडती वखते खड्ग वधारे लांबु थइ जाय तो तेने कापवुं नहि पण रेतीथी घसी प्रमाण मुजब राखवुं; खड्गने मूळथी कापतां स्वामीनुं अने अग्रभागथी कापतां स्वामीनी मातानुं मृत्यु थाय छे.

जेम स्त्रीओना मुख उपर तिल जोइ एना गुह्यस्थानमां पण तिल जाणी शकाय छे तेम खड्गनी चोटी जे मूठनी अंदर रहे छे तेना मूळ, मध्य अने अग्रभागमां व्रण जोइ खड्गना पण मूळ, मध्य अने अग्रभागमां रहेल व्रण पारखी शकाय छे.

खड्ग धारण करनार पुरुष खड्गना व्रण पूछे तो ते पुरुष जे अंगनो स्पर्श करे ते जाणी तेने अनुसार म्यानमां रहेल खड्गनां व्रण कही शकाय छे.

प्रश्न करती वखते जे लग्न होय तेना केन्द्रमां जो पाप ग्रह होय तो नक्की खड्गमां व्रण होय छे.

प्रश्न करनार पोताना शिरनो स्पर्श करे तो खड्गना मूळमां पहेले आंगळ व्रण छे एम जाणी लेवुं, एवीज रीते ललाट, भ्रूमध्य, नेत्र, नासिका, ओष्ठ, कपोल, हनु, कर्ण, ग्रीवा, अंस, छाती, कक्ष, स्तन, हृदय, पेट, कुक्षि, नाभि, नाभिमध्य, कटि, गुह्य, उरु, उरुमध्य, जानु, जंघा, जंघामध्य, गुल्फ, एडी, पग, अने पगनी आंगळी एमांथी गमे ते अंगनो स्पर्श करे तो क्रमपूर्वक

बीजा आंगळथी त्रीशमा आंगळ पर्यन्त खड्गमां व्रण कही शकाय छे.

खड्गमां पहेले आंगळ व्रण होय तो तेना मालिकना पुत्रनुं मृत्यु, बीजे आंगळ व्रण होय तो धनप्राप्ति, त्रीजे आंगळ व्रण होय तो धनहानि, चोथे आंगळ व्रण होय तो संपत्तिनुं आगमन, पांचमे आंगळ व्रण होय तो बन्धन, छठ्ठे आंगळ व्रण होय तो पुत्र लाभ, सातमे आंगळ व्रण होय तो कलह, आठमे आंगळ व्रण होय तो हस्ति लाभ, नवमे आंगळ व्रण होय तो पुत्र मरण, दशमे आंगळ व्रण होय तो धनप्राप्ति, अग्यारमे आंगळ व्रण होय तो मरण, बारमे आंगळ व्रण होय तो स्त्रीप्राप्ति, तेरमे आंगळ व्रण होय तो चित्तमां दुःख, चौदमे आंगळ व्रण होय तो लाभ, पंदरमे आंगळ व्रण होय तो हानि, सोळमे आंगळ व्रण होय तो स्त्रीलाभ, सत्तरमे आंगळ व्रण होय तो वध, अढारमे आंगळ व्रण होय तो वंशवृद्धि, ओगणीशमे आंगळ व्रण होय तो मृत्यु, वीशमे आंगळ व्रण होय तो परितोष, एकवीशमे आंगळ व्रण होय तो धनहानि, बावीशमे आंगळ व्रण होय तो धनप्राप्ति, त्रेवीशमे आंगळ व्रण होय तो मृत्यु, चोवीशमे आंगळ व्रण होय तो धनप्राप्ति, पचीशमे आंगळ व्रण होय तो निधन, छव्वीशमे आंगळ व्रण होय तो संपदागमन, सत्यावीशमे आंगळ व्रण होय तो दारिद्य, अठ्यावीशमे आंगळ व्रण होय तो ऐश्वर्य, ओगणत्रीशमे आंगळ व्रण होय तो मृत्यु अने त्रीशमे आंगळ व्रण होय तो राज्यप्राप्ति थाय छे.

खड्गमां त्रीश आंगळथी उपरना भागमां व्रण होय तो तेनुं कांइ विशेष फळ नथी, परंतु सामान्य फळ ए छे के ते व्रण एकत्रीश तेत्रीश तेमज पांत्रीश आदि विषम अंगुलपर होय तो अशुभ अने बत्रीश, चोत्रीश तेमज छत्रीश अंगुलपर होय ते शुभ गणाय छे.

त्रीश आंगळथी आगळ खड्गना अग्र भाग पर्यन्त जे व्रण होय ते निष्फळ छे अर्थात् तेनुं कांइ शुभाशुभ फळ नथी एम केटलाएक मुनिओनो मत छे.

जे खड्गमां कणेरनुं पुष्प, नीलकमल, हाथीनो मद, घृत, केसर, कुन्दपुष्प अने चंपाना पुष्प समान गंध होय ते शुभ तथा गोमूत्र, पंक अने मेद समान गंध होय ते अशुभ गणाय छे.

जे खड्गमां कूर्म, वसा, रुधिर अने खार समान गंध होय ते भय अने दुःखदायक थाय छे.

जे खड्गनी प्रभा वैदूर्य, सुवर्ण अने विजळी समान होय ते आरोग्य अने अभिवृद्धि आपे छे.

देदीप्यमान लक्ष्मीनी चाहनावाळा पुरुषे शस्त्रने रुधिरथी पाणी चढाववुं अर्थात् शस्त्रने अग्निमां तपावी रुधिरमां बुझाववुं, गुणवान पुत्रनी इच्छावाळा पुरुषे घृतथी, अक्षयधननी इच्छा-

वाळा पुरुषे जळथी अने पापथी अर्थसाधन करवा इच्छता पुरुषे घोडी, उंटणी अने हाथणीना दुधथी पाणी चढाववुं.

जे पुरुष खड्गथी हाथीनी सुंढ कापवा चाहतो होय तेणे खड्गने मच्छीनुं पित्तुं, हरिणी, घोडी अने बकरीनुं दुध ए सर्वेमां हरताल अथवा तालद्रुमनो गर्भ मिलावी तेथी पाणी चढाववुं.

शस्त्रने तिल्लुं तेल चोपडी तेना उपर आकडानुं दुध, मेंढाना बाळेल सींगडानी स्याही, कबुतरनी चरक अने उंदरनी लींडी, ए सर्वने पीसी लेप करी पूर्वोक्त रीते पाणी पाइ धाराने साण उपर चढावे तो पत्थर माथे प्रहार करतां पण शस्त्रनी धार त्रूटती नथी.

केळाना खारमां मथेलुं दहीं मिलावी एक दिवस अने रात्रि राखी मुकवुं पछी लोढाने तेनाथी पाणी पाइ सारी धार कढाववी, ते धार पत्थर मारवाथी पण टूटती नथी अने बीजा लोढा उपर प्रहार करवाथी पण कुंठित थती नथी.

राजर्षि साळणदेवजी माटे अभिषेक पहेलांज उत्तम लक्षणोथी युक्त सर्वोत्कृष्ट पचाश आंगळ लांबुं खड्ग शस्त्रागारमांथी लावी तैयार राखवामां आव्युं हतुं; छत्र पूजन पछी राज साळणदेवजीए यथाविधि खड्गनुं पूजन करी ग्रहण कर्युं.

राज साळणदेवजीना हाथथी बलि अपावी तेमज पूजन करावी उननां वस्त्र दुशाला आदिथी तेओने आच्छादित करी पुरोहिते घृतथी भरेला कलशोथी यथाविधि अभिषेक कर्यो.

घृताभिषेक मंत्र.

आज्यं तेजः समुदिष्टमाज्यं पापहरं परम् ।
आज्यं सुराणामाहार आज्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः ॥
भौमान्तरिक्षं दिव्यं वा यत्ते किल्बिषमागतम् ।
सर्वं तदाज्य संस्पर्शात्प्रणाश मुपगच्छतु ॥

घृताभिषेक कर्या बाद राजा साळणदेवजी उपरथी उर्ण (उननां) वस्त्र उतारी पुरोहिते फळ तथा पुष्पो सहित पुष्प स्नानना द्रव्ययुक्त जळथी यथाविधि अभिषेक कर्यो.

जलाभिषेक मंत्र.

सुरास्त्वा मभिषिञ्चन्तु, ये च सिद्धाः पुरातनाः ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च, साध्याश्च समरुद्गणाः ॥
आदित्या वसवो रुद्रा, अश्विनौचभिषग्वरौ ।
अदितिर्देव माता च, स्वाहा सिद्धिः सरस्वती ॥
कीर्तिर्लक्ष्मी धृतिः श्रीश्च, सिनीवाली कुहूस्तथा ।
दनुश्च सुरसाचैव, विनता कद्रु रेव च ॥
देव पत्न्यश्च यानोक्ता, देव मातर एव च ।
सर्वास्त्वा मभिषिञ्चन्तु, दिव्याश्चाप्सरसांगणाः ॥
नक्षत्राणि मुहूर्ताश्च, पक्षाहो रात्रि संधयः ।
संवत्सरा दिनेशाश्च, कलाः काष्टाः क्षणालवाः ॥
सर्वे त्वामभिषिञ्चन्तु, कालस्यावयवाः शुभाः ।
वैमानिकाः सुरगणा मनवः सागरैः सह ॥
सरितश्च महाभागा नागाः किं पुरुषास्तथा ।
वैखानसा महाभागा द्विजा वैहायसाश्च ये ॥
सप्तर्षयः सदाचारा ध्रुवस्थानानि यानि च ।
मरीचि रत्रिः पुलहः पुलस्त्यः क्रतुरंगिराः ॥
भृगुः सनत्कुमारश्च, सनकोऽथ सनन्दनः ।
सनातनश्च दक्षश्च, जैगीषव्यो भलन्दनः ॥
एकतश्च द्वितश्चैव, त्रितौजाबालिकश्यपौ ।
दुर्वासा दुर्विनीतश्च, कण्वः कात्यायनस्तथा ॥
मार्कंडेयो दीर्घतपाः शुनः शेफो विदूरथः ।

और्वः संवर्तकश्चैव च्यवनोऽत्रिः पराशरः ॥
द्वैपायनो यवक्रीतो, देवराज सहानुजः ।
एते चान्ये च मुनयो, वेदव्रतपरायणाः ॥
सशिष्या स्तेऽभिषिञ्चन्तु, सदाराश्च तपोधनाः ।
पर्वता स्तरवो वल्यः पुण्यान्यायतनानिच ॥
प्रजापति र्दिति श्चैव, गावो विश्वस्य मातरः ।
वाहनानि च दिव्यानि, सर्वे लोकाश्चराचराः ॥
अग्नयः पितर स्तारा जीमूताः खं दिशो जलं ।
एते चान्ये च बहवः पुण्यसंकीर्तनाः शुभाः
तोयै स्त्वामभिषिञ्चन्तु, सर्वोत्पातनिवर्हणैः ।
यथाभिषिक्तो मघवाने ते मुदितमानसैः ॥

आ शिवाय अथर्वण कल्पमा कहेला अन्य मंत्रोथी एकादश अनुवाकना रुद्रथी, छ अनुवाकना कोष्माण्डिकथी, सत रोहिण तथा कुबेर हृदयमंत्रथी अने समृद्धि अर्थात् ऋचाथी सालणदेवजीने अभिषेक कर्यो.

त्यारबाद "आपोहिष्ठा" आदि त्रण ऋचा अने "हिरण्यवर्णा" आदि चार ऋचाओथी अभिमंत्रित करेल वे सूत्रनुं वस्त्र राज सालणदेवजीने धारण कराव्युं; पुण्याहवाचन अने शंखना शब्दोए सावर्तमान सालणदेवजीए आचमन करी देव, गुरु, ब्राह्मणो अने इष्ट देवनुं पूजन कर्युं.

बीजी वेदीमा प्रथम वृषनुं तेना उपर बिलाडानुं तेना उपर रु रु नामना मृगनुं तेना उपर पृषत नामना मृगनुं तेना उपर सिंहनुं अने तेना उपर व्याघ्रनुं चर्म बिछाव्युं हतुं. त्या जइ ए चर्म उपर राजर्षि सालणदेवजी विराजमान थया.

सुन्दर स्थान अर्थात् दक्षिण वेदीमां पुरोहिते समिध. तिल अने घृत आदिथी रुद्र, इन्द्र, बृहस्पति. विष्णु अने वायुनी ऋचाओ भणी अग्नि मध्ये हवन कर्युं.

सर्वे कार्य समाप्त करी पुरोहित नीचे मुजब विसर्जन मंत्र बोल्या.

यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय पार्थिवात् ।
सिद्धिंदत्वा तु विपुलां, पुनरागमनाय च ॥

संपूर्ण रीते पोतानो राज्याभिषेक थया बाद राज सालणदेवजीए ज्योतिषी तथा पुरोहितनुं घणा द्रव्यथी पूजन कर्युं तेमज अन्य श्रोत्रिय ब्राह्मणोने योग्य दक्षिणाओ आपी.

गढ सीकरीनुं छत्र धारण कर्या पछी राज सालणदेवजी नीतिथी प्रजाने पाळवा लाग्या. एक दिवसे पोते मात्र पंडितोनीज सभा भरी चोसठ कळाओ जाणवानी अपेक्षा बतावी तेज वखते कोइ एक महान पंडितराजे उभा थइ आशीर्वादयुक्त राजा आगळ चोसठ कळाओनुं कथन करवानो प्रारंभ कर्यो, राजा विगेरे तमाम विद्वानोए प्रसन्नता पूर्वक ए पंडितराज तरफ ध्यान आप्युं. पंडितराज बोल्या के—राजन् ! पहेली कळा गायननी छे तेना स्वरगाख्य, पदगाख्य, लयगाख्य, तथा चेतोविधानग ए रीते चार भेद छे, तेमां स्वरथी गवातुं वेद आदि स्वर गाख्य, पद (सुबन्त अने तिङन्त) थी गवातुं पदगाख्य, "सा,रि,ग,म," आदि लयथी गवातुं लय गाख्य, अने "डि ड डा डा" आदि चित्तमां छुपी रीते गवातुं गान चेतोवधानग कहेवाय छे. एनुं सविस्तर वर्णन "संगीत रत्नाकर" नामना ग्रन्थमां आपेल छे. बीजी कळा वाद्य वजाववानी छे, तेना पण आनद्ध, तत, सुषिर तथा घन नामना चार भेद छे; तेमां चर्मथी मढेलां मृदंग आदिने "आनद्ध," वीणा आदि तारवाळां वाद्योने "तत," वंसी तथा शंख आदि फुंकथी वगाडातां वाद्योने "सुषिर" अने झांझ तथा घंटा आदि कांसानां वाद्योने "घन" कहे छे रस, अंगहार अने विभावने आदि लइ छ भेदवाळी नाचवानी त्रीजी कळा छे, परंतु गान्धर्व वेदमां उपर कहेल त्रण भेदोनोज विस्तार छे. चोथी कळा आलेख्यनी छे. तेना छ भेद छे, तेमां प्रथम भेद रुप, तेना श्वेत, नील, पीत, रक्त, हरित, धूसर, तथा चित्रविचित्र एवा सात भेद छे; बीजो भेद प्रमाण तेना न्हानुं, लांबु, म्होटुं, पातळुं, चोखंडु तथा गोळ एवा छ प्रकार छे; त्रीजो भेद लावण्य; चोथो भेद आशय लाववो अर्थात् भाव बताववो, पांचमो भेद वर्णिकाभंग अर्थात् नील आदि रंगोना भेदोने जाणी श्याही बनाववी; अने छठ्ठो भेद साम्य छे ते ए छे के जेनुं चित्र बनाववामां आवे ते असल वस्तु प्रमाणेज थवुं जोइए एने माटे शिल्पशास्त्रमां विशेष विवेचन आपेलुं छे. पांचमी कळा पत्र छेद्य नामनी छे के जे कागळ अथवा केळ आदिना पत्तां उपर कातरी पशु पक्षी

तथा पुष्प आदिना सुन्दर चित्रो बनाववामां आवे छे, तेना छ भेद छे ते पण शिल्पशास्त्रमां बतावेल छे अथवा भोजपत्र आदिनी भात भातनी कातरेली टीकडीओ ललाट उपर लगाववी ते छट्ठी कळा पुष्पतंडुलबलिविकार नामनी छे, जेमां भींत आदि उपर रंगेला चोखाओथी पुष्प विगेरे चित्रो बनाववामां आवे छे. सातमी कळानुं नाम पुष्पस्तरण छे. जेमां पुष्पना बिछानाथी अनेक चित्रोवाळी सुन्दर शय्या बनाववामां आवे छे. आठमी कळा दंतपटवपुराग नामनी छे, ते मिस्सी आदिथी दात रंगवा, वस्त्र रंगवां, शरीरने रंगवुं अर्थात् महेंदी आदि चोपडवां के जे स्त्रीओने अति प्रिय छे, नवमी कळा मणिभूमिकर्म नामनी छे ते भींतो उपर मणिओ जडवाना चित्रामथी थाय छे. दशमी कळा तल्परचन नामनी छे ते देश अने काळने अनुसरी शय्यानी वस्तुना स्थापन करवाथी थाय छे. ए बहु आनन्ददायक होय छे. अग्यारमी कळा जलवाद्य नामनी छे. ते मृदंग आदि वाद्य समान श्रेष्ठ वाद्य जळमां छुपेलुं छे अर्थात् चीनी अथवा कांसाना कटो-रामां जल भरी ए कटोराओने वजाववाथी राग निकळे छे, अथवा तळाव आदिना जळमां हाथना आघातथी मृदंग आदिनी माफक वाद्य वजाववां ते. बारमी कळानुं नाम जलोपघात छे ते हाथ अथवा यंत्र द्वारा जलथी ताडन करवुं ते. तेरमी कळानुं नाम चित्रयोग छे, जेमां विरुप वलि (वृद्धावस्थामां शरीरनी चामडीमां वळीयुं पडी जाय छे तेवी वळीयुं पाडवी ते) अने केशने श्वेत करवा इत्यादि क्रिया थाय छे. चौदमी कळा माल्यग्रथन नामनी छे, जेमां पुष्पोनी माळा, गुच्छा तथा भूषण आदि बनाववामां आवे छे, अने ते शृंगार साधक छे. पंदरमी कळा आपीडशेखरयोजना नामनी छे, जेमां माथुं गुंथवुं तथा कलगी अने मुकुट आदि बनाववानां काम थाय छे. सोळमी कळा नेपथ्ययोग नामनी छे, ते वस्त्राभूषण धारण करवानी चतुराइथी शरीर शणगारवानी छे. सत्तरमी कळानुं नाम कर्णपत्रभंग छे, जेमां शंख तथा हाथीदांत आ-दिथी कर्णाभरण बनाववानी चतुराइ छे; अने तेने स्त्रीओ वधारे चाहे छे. अढारमी कळानुं नाम गन्धयुक्ति छे, जेथी अत्तर आदि गन्ध द्रव्य खेंचवामां आवे छे; ओगणीशमी कळा भूषण योजना नामनी छे, तेना बे भेद छे, तेमां एक तो हार आदिमां मणिओने परोववा तथा बीजो भेद कडां आदि बनाववां. वीशमी कळा इन्द्रजाल नामनी छे के जे जोवावाळा अनेक माणसोने आश्चर्य उपजावे छे. एकवीशमी कुचुमार योग नामनी सुन्दर कळा छे, जेथी वशीकरण अने शुभगकरण आदि थाय छे. बावीशमी कळा हस्तलाघव नामनी छे जेथी सर्व कार्योमां हाथनी फुर्तीथी थोडे खर्चे कार्यसिद्धि थाय छे. त्रेवीशमी कळानो विस्तार नीचे मुजब छे, रस, राग, पान, यूष, भक्ष्य

सर्व कार्य समाप्त करी पुरोहित नीचे मुजब विसर्जन मंत्र वोल्या.

यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय पार्थिवात् ।
सिद्धिंदत्त्वा तु विपुलां, पुनरागमनाय च ॥

संपूर्ण रीते पोतानो राज्याभिषेक थया बाद राज सालणदेवजीए ज्योतिषी तथा पुरोहितनुं घणा द्रव्यथी पूजन कर्युं तेमज अन्य श्रोत्रिय ब्राह्मणोने योग्य दक्षिणाओ आपी.

गढ सीकरीनुं छत्र धारण कर्या पछी राज सालणदेवजी नीतिथी प्रजाने पाळवा लाग्या. एक दिवसे पोते मात्र पंडितोनीज सभा भरी चोसठ कळाओ जाणवानी अपेक्षा बनावी तेज वखते कोइ एक महान पंडितराजे उभा थइ आशीर्वादयुक्त राजा आगळ चोसठ कळाओनुं कथन करवानो प्रारंभ कर्यो, राजा विगेरे तमाम विद्वानोए प्रसन्नता पूर्वक ए पडितराज तरफ ध्यान आप्युं. पंडितराज वोल्या के—राजन्! पहेली कळा गायननी छे तेना स्वरगारुय, पदगारुय, लयगारुय, तथा चेतोविधानग ए रीते चार भेद छे, तेमां स्वरथी गवातुं वेद आदि स्वर गारुय, पद (सुबन्त अने तिङन्त) थी गवातुं पदगारुय, "सा,रि,ग,म," आदि लयथी गवातुं लय गारुय, अने "डि ड डा डा" आदि चित्तमां छुपी रीते गवातुं गान चेतोवधानग कहेवाय छे. एनुं सविस्तर वर्णन "संगीत रत्नाकर" नामना ग्रन्थमां आपेल छे. वीजी कळा वाद्य वजाववानी छे, तेना पण आनद्ध, तत, सुषिर तथा घन नामना चार भेद छे; तेमां चर्मथी मढेलां मृदंग आदिने "आनद्ध," वीणा आदि तारवाळां वाद्योने "तत," वंसी तथा शंख आदि फुंकथी वगाडातां वाद्योने "सुषिर" अने झांझ तथा घंटा आदि कांसानां वाद्योने "घन" कहे छे रस, अंगहार अने विभावने आदि लइ छ भेदवाळी नाचवानी त्रीजी कळा छे, परंतु गान्धर्व वेदमां उपर कहेल त्रण भेदोनोज विस्तार छे. चोथी कळा आलेख्यनी छे. तेना छ भेद छे, तेमां प्रथम भेद रुप, तेना श्वेत, नील, पीत, रक्त, हरित, धूसर, तथा चित्रविचित्र एवा सात भेद छे; वीजो भेद प्रमाण तेना न्हानुं, लांबु, म्होटुं, पातळुं, चोखंडु तथा गोळ एवा छ प्रकार छे; त्रीजो भेद लावण्य; चोथो भेद आशय लाववो अर्थात् भाव वताववो, पांचमो भेद वर्णिकाभंग अर्थात् नील आदि रंगोना भेदोने जाणी श्याही वनाववी; अन छठो भेद साम्य छे ते ए छे के जेनुं चित्र वनाववामां आवे ते असल वस्तु प्रमाणेज थवुं जोइए एने माटे शिल्पशास्त्रमां विशेष विवेचन आपेलुं छे. पांचमी कळा पत्र छेद्य नामनी छे के जे कागळ अथवा केळ आदिना पत्तां उपर कातरी पशु पक्षी

तथा पुष्प आदिना सुन्दर चित्रो वनाववामां आवे छे, तेना छ भेद छे ते पण शिल्पशास्त्रमां वतावेल छे अथवा भोजपत्र आदिनी भात भातनी कातरेली टीकडीओ ललाट उपर लगाववी ते छठ्ठी कळा पुष्पतंडुलवलिविकार नामनी छे, जेमां भींत आदि उपर रंगेला चोखाओथी पुष्प विगेरे चित्रो वनाववामां आवे छे. सातमी कळानुं नाम पुष्पस्तरण छे. जेमां पुष्पना विछानाथी अनेक चित्रोवाळी सुन्दर शय्या वनाववामां आवे छे. आठमी कळा दंतपटवपुराग नामनी छे, ते मिस्सी आदिथी दांत रंगवा, वस्त्र रंगवां, शरीरने रंगवुं अर्थात् महेंदी आदि चोपडवां के जे स्त्रीओने अति प्रिय छे, नवमी कळा मणिभूमिकर्म नामनी छे ते भींतो उपर मणिओ जडवाना चित्रामथी थाय छे. दशमी कळा तल्परचन नामनी छे ते देश अने काळने अनुसरी शय्यानी वस्तुना स्थापन करवाथी थाय छे. ए बहु आनन्ददायक होय छे. अग्यारमी कळा जलवाद्य नामनी छे. ते मृदंग आदि वाद्य समान श्रेष्ठ वाद्य जळमां छुपेलुं छे अर्थात् चीनी अथवा कांसाना कटोरामां जल भरी ए कटोराओने वजाववाथी राग निकळे छे, अथवा तळाव आदिना जळमां हाथना आघातथी मृदंग आदिनी माफक वाद्य वजाववां ते. वारमी कळानुं नाम जलोपघात छे ते हाथ अथवा यंत्र द्वारा जलथी ताडन करवुं ते. तेरमी कळानुं नाम चित्रयोग छे, जेमां विरुप वलि (वृद्धावस्थामां शरीरनी चामडीमां वळीयुं पडी जाय छे तेवी वळीयुं पाडवी ते) अने केशने श्वेत करवा इत्यादि क्रिया थाय छे. चौदमी कळा माल्यग्रथन नामनी छे, जेमां पुष्पोनी माळा, गुच्छा तथा भूषण आदि वनाववामां आवे छे, अने ते शृंगार साधक छे. पंदरमी कळा आपीडशेखरयोजना नामनी छे, जेमां माथुं गुंथवुं तथा कलगी अने मुकुट आदि वनाववानां काम थाय छे. सोळमी कळा नेपथ्ययोग नामनी छे, ते वस्त्राभूषण धारण करवानी चतुराइथी शरीर शणगारवानी छे. सत्तरमी कळानुं नाम कर्णपत्रभंग छे, जेमां शंख तथा हाथीदांत आदिथी कर्णाभरण वनाववानी चतुराइ छे; अने तेने स्त्रीओ वधारे चाहे छे. अढारमी कळानुं नाम गन्धयुक्ति छे, जेथी अत्तर आदि गन्ध द्रव्य खेंचवामां आवे छे; ओगणीशमी कळा भूषण योजना नामनी छे, तेना बे भेद छे, तेमां एक तो हार आदिमां मणिओने परोववा तथा वीजो भेद कडां आदि वनाववां. वीशमी कळा इन्द्रजाल नामनी छे के जे जोवावाळा अनेक माणसोने आश्चर्य उपजावे छे. एकवीशमी कुचुमार योग नामनी सुन्दर कळा छे, जेथी वशीकरण अने सुभगकरण आदि थाय छे. वावीशमी कळा हस्तलाघव नामनी छे तेथी सर्व कार्योमां हाथनी फुरतीथी थोडे खर्चे कार्यसिद्धि थाय छे. त्रेवीशमी कळानो विस्तार नीचे मुजब छे, रस, राग, पान, यूष, भक्ष्य

अने शाक ए सहुना अनेक प्रकारना प्रयोग छे; तेना भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, पेय तथा चोष्य एवा पांच भेद छे; तेमां दांतोथी कटका करी चावीने खावा योग्य पदार्थने "भक्ष्य" कहे छे. हलवो, भात तथा शाकने आदिलइ रांधेला पदार्थोने भोज्य कहे छे. फळ, कांड पुष्प, पर्ण, मूळ, करीर, त्वक्, प्ररूढक, अग्र अने कांटा ए शाकना दश भेद उपर कहेल भेदोथी जरा जुदा प्रकारना छे. आयुर्वेद आदि ग्रन्थोमां तेनां अनेक भेदो छे. अहीं राग शब्द लेह्य पदार्थनो वाचक छे जेने पाक बनाववावाळा चतुर लोको पोतपोताना नामने अनुरुप द्रव, लेह्य अने चूर्ण ए रीते त्रण प्रकारनो कहे छे; पानना संधेय तथा असंधेय ए रीते बे भेद छे, तेमां असन्धयेना अनेक प्रकार छे; तेनुं ए एकज लक्षण के जेमां पेय पदार्थनुं सिद्धत्व छे अथवा कृत्रिम नहि परंतु स्वाभाविक छे. जेम दूध आदि सन्धेयना द्रावित तथा अद्रावित एवा बे भेद छे, तेमां अद्रावित तो असन्धेयना सरखुंज छे, अने द्रावितमां रस (स्वरस), यूष, पानक (पणा, अमररस, गुड, आंबलवाणुं आदि) तथा आसवनो समावेश थाय छे. चोवीशमी कळा सूचिकासन्धान नामनी छे, तेना सीवन, विरचन तथा भूनयन एवा त्रण भेद छे तेमां चोला आदि शीववाने "सीवन", हाथीनी झूल आदि बनाववाने "विरचन" अने फाटेलां अथवा त्रुटी गएलां वस्त्रोने थोगडी लगाडी अथवा तूनी नविन बनाववाने "भूनयन" कहे छे. पचीशमी कळा सूत्रक्रीडन नामनी छे ते पण प्राणी मात्रने विस्मय उत्पन्न करनारी छे; कारण के ए कळाथी जादूगर लोको कपडांने चीरी पाछुं साजुं करी दे छे अने वस्त्रने बाळी फरीथी जेवुं ने तेवुं नजरे बतावे छे. एज रीते बन्ने हाथोमां बे नळीओ लइ तेमां छिद्र करी बन्ने सूत्रोने एकनी माफक बतावी दे छे, ए बधा जादूइ खेल छे. छव्वीशमी कळा वीणा डमरु वजाववानी छे. ते प्रथम कहेल वाद्य वजाववानी कळाथी भिन्न छे; तेमां कंठ वगर पण कुशळताथी श्रुति, जाति अने रागनो उपदेश थाय छे. सत्यावीशमी कळा पहेली नामनी छे, जेमां छुपायेलो आशय मळी शके छे. अठ्यावीशमी कळा प्रतिमालिका नामनी छे. जेमां एक पद्यना अंत्य अक्षरथी बीजा पद्यनो प्रारंभ कराय छे. ओगणत्रीशमी कळा दुर्वाचक योग नामनी छे जेमां शब्दोनी वच्चे पद गुप्त रहेलां होय छे अर्थात् सन्धिआदिना छुपाववाथी पद जाणवामां आवतां नथी. त्रीशमी कळा पुस्तकवाचन नामनी छे जेथी कोइ दिवस नहि जोएलां पुस्तकोने पण जोएलांनी माफक वांची शकाय छे. एकत्रीशमी कळा आख्यायिका जेनी आदिमां छे एवा नाटक सहित नाटकाख्यायिका नामनी छे जेथी नाटक (ग्रन्थ विशेष) अने आख्यायिका (प्राचीन कथा अर्थात् वार्ता मळी जाय ते उपर गद्यात्मक ग्रन्थ रचवो ते) बनाववामां आवे छे.

बत्रीशमी कळा कवितामां समश्या पूर्तिनी छे ते पूछवावाळाना कथनपर आधार राखे छे. पट्टिका-वेत्रत्राणनामनी तेत्रीशमी कळा छे, तेनुं वेत्रत्राणपट्टिका एवुं पण नाम छे. ते कळा नेतरथी खुरशी तथा कोंच आदि भरवानी छे, चोत्रीशमी कळा तक्षकर्म नामनी छे जेमां शाण अने भ्रमिथी अंगहीन वस्तुओने सुधारी शकाय छे, पांत्रीशमी कळा तच्छन नामनी छे ते खातीना कामनी कुशळता सबंधी छे. छत्रीशमी कळा वास्तुवेदन नामनी छे, ते शिल्पवेदनी रचनामां कुशळता सबंधी छे जेने मकान बनाववानी कळा कहे छे. साडत्रीशमी कळा सोनुं, चांदी तथा जवाहिर आदिनी परीक्षा करवानी छे. आडत्रीशमी कळा धातुवाद नामनी छे, जेथी धातु, रस तथा मणि आदिने फूंकवानुं तथा वाळवानुं बनी शके छे. ओगणचाळीशमी कळा मणिराग—आकरज्ञान नामनी छे तेथी मणि उपर रंग चडाववानुं तथा खाणो तपासवानुं कार्य थइ शके छे. चाळीशमी कळा के जेमां बगीचा बनाववा विगेरे क्रिया थाय छे तेनो विस्तार सोमनृप आदि अने वराह मिहिर आदिना ग्रन्थोमां घणोए छे. एकताळीशमी कळा मेंढा, मुरगा तथा लवा आदि पशु पक्षीओने लडाववानी छे. बेताळीशमी कळा पोपट तथा मेनाने पढाववानी छे. त्रेताळीशमी कळा उत्सादन, संवाहन अने केशमर्दन ए रीते त्रण प्रकारनी छे; तेमां पगथी शरीर दबाववुं ते उत्सादन, हाथोथी शरीरने दबाववुं ते संवाहन अने केशनुं मर्दन करवुं ते केशमर्दन. चम्माळीशमी कळा अक्षरमुष्टिकाकथननामनी छे, तेना साभाषिका तथा नाभाषिका नामे बे भेद छे; तेमां आदिनो अक्षर सांभळतां पुरो शब्द जाणी लेवो ते साभाषिका अने आंगळीओना इशाराथी शब्दोने जाणी आशय समजी जवो ते नाभाषिका. पीस्ताळीशमी कळा म्लेच्छितविकल्प नामनी छे तेथी उलटा सुलटा अक्षरोथी प्रसिद्ध वातने छुपावी व्यवहार करी शकाय छे. सर्व देशोनी भाषाओ जाणवानी छेताळीशमी कळा छे. सडताळीशमी पुष्पशकटी नामनी कळा छे, जेथी पुष्पना चिन्तवन मात्रथी अभिप्रायना अक्षरोनुं ज्ञान करावी शकाय छे. अडताळीशमी कळानुं नाम निमित्त-ज्ञान छे तेमां शकुन, स्वरोदय, तथा अंग फरकवां आदिनुं वर्णन छे. तेनुं संपूर्ण वर्णन वसन्तराज आदि शकुनशास्त्रमां लखेल छे. ओगणपचाशमी कळा यंत्रमातृका नामनी छे, जेथी बन्दूक आदि यंत्रो बनाववामां आवे छे. पचाशमी कळानुं नाम धारणमातृका छे. ते एकवार सांभळेली वातने फरी भूली न जवा संबंधी छे. तोळवानी कळाने पण धारणमातृका कहे छे एम केटलाएकनो मत छे. एकावनमी कळा संपाठ्य नामनी छे, तेथी पूर्वे कोइ वखत नहि सांभळेला छन्दो मात्र एक वखत सांभळवाथी बोलनारनी साथे बोली शकाय छे. बावनमी

कळानुं नाम मानसी छे, जेमां स्वरोने व्यंजन तथा व्यंजनोने स्वर बनावी कविता रचवामां आवे छे एने इच्छालिपि पण कहे छे. त्रेपनमी कळा कविता बनाववानी छे ते भरतकारिका आदि साहित्यना ग्रन्थोमां आपेल छे. चोपनमी कळा अभिधान नामनी छे जेथी कोशनुं ज्ञान थइ जाय छे, एने पण कळा मानेल छे; छन्दोज्ञान नामनी पचावनमी कळा छे, जेथी वैदिक छन्दो सिवाय लौकिक छन्दोनुं ज्ञान थाय छे, छप्पनमी कळा क्रियाविकल्प नामनी छे, जेथी काव्यना अलंकारोनी परीक्षा अथवा काव्य अने आभूषणोनी परीक्षा थाय छे. केटलाएकनो एवो मत छे के तैयार करेल भोजन आदि सिद्ध पदार्थोनी परीक्षामां पण आ छप्पनमी कळानो प्रयोग थइ शके छे. सत्तावनमी कळानुं नाम छलितादि योग छे, के जेथी वेश बादलो करी बीजाने ठगी शकाय छे. वस्त्रगोपन नामनी अट्ठावनमी कळा छे, ते त्रण प्रकारनी छे, तेमां एक तो कान्तिथी शुद्ध वस्त्रने धारण करवां, बीजुं फाटेलां वस्त्रोने एवी चतुराइथी पहेरवां के जे नवांज देखाय अथवा मोटां वस्त्रने पण एवी रीते संकोची पहेरवुं के जे खराब न देखाय अने त्रीजुं वस्त्रने समेटी इस्त्री आदि दइ एवी रीते पहेरवां के जेथी कान्तिनी वृद्धि थाय. ओगणसाठमी कळा दाव लगावी जुगार रमवानी छे, जेमां शतरंज आदिनी रमत रमाय छे. साठमी कळा आकर्षक्रीडन नामनी छे, जेथी पोताना मनमां पासाना यथार्थ ज्ञानथी बुद्धिमान साथे आनंद लइ शकाय छे अर्थात् लागना पासा फेंकाय छे, ए कळानो केटलाएक मल्लयुद्धमां पण प्रयोग करे छे, बालक्रीडन नामनी एकसठमी कळाथी दडो फेंकवो तथा पुतळी आदिनी रचना विगेरे करी शकाय छे. बासठमी कळा वैनयिकी नामनी छे, ते नम्रताथी यश मेळववानी छे, एनुं विशेष वर्णन धर्मशास्त्रमां छे. त्रेसठमी कळा वैजयिकी नामनी छे जे हाथी, घोडा तथा आयुध आदिना ग्रंथोनुं ज्ञान करावनारी छे. चोसठमी कळा व्यायामिकी नामनी छे ते शिकार आदि महान फळने आपवावाळी छे. आ रीते पंडितराजना मुखथी राज सालणदेवजीए चोसठ कळाओनुं निरुपण सांभळी सानंदाश्चर्य पंडितराजने पूछ्युं के—आ वखते ए चोसठ कळाओने जाणनार कोइ पुरुष हशे के नहि त्यारे पंडितराज बोल्या के चोसठ कळाने संपूर्णरीते जाणनार एक पमार राजा विक्रम हतो. ते पछी एवो कळाकोविद आज पर्यन्त कोइ थयो नथी, परंतु ए तमाम कळाओने जाणनार जुदा मनुष्यो विश्वमां विद्यमान छे. सालणदेवजीए पंडितराजने एक लक्ष रुपीआ बक्षीश आपी अने बीजा एक लक्ष रुपीआ आपी देशविदेशमांथी तेवा कळाकोविद पुरुषोने एकठा करवा पोतानी इच्छा प्रदर्शित करी. राजानी आज्ञा पामी

पंडितराज उक्त कार्यमां प्रवृत्त थया, अने धननी सहायताथी स्वल्प समयमां कसोटी करेला कळा-कोविदने शोधी पाछा सीकरी आवी राज सालणदेवजीने जाण करी. राज सालणदेवजीए ते तमाम मनुष्योने आनंद पूर्वक सीकरीमां रहेवा उत्तम मकानो बंधावी आप्यां अने सर्वेने म्होटा माननी साथे पुष्कळ द्रव्य आपी पोतानी प्रजा तरीके राख्या, दिवसे दिवसे दीर्घ दृष्टिथी राज्यनी आबादी करी, गढ सीकरीनो घणोज विस्तार कर्यो, अने तेमां पांच लाख घर वसाव्यां, एक लक्ष उत्तम प्रकारना अश्वो एकठा कर्या, पांच हजार मदझर हाथीओथी शहेरनी शोभामां अलौकिक वृद्धि करी अने सात लाखनुं सैन्य जमाव्युं. ए सालणदेवजीना स्वर्गवास पछी तेना कुमार **जोम पालजी** सीकरीनी गादीए बेठा, त्यारबाद **जशराजजी, झालंगदेवजी, सारंगदेवजी** अने **शिवराजजी** ए क्रमपूर्वक राजाओ थया. शिवराजजीना कुमार **विजयराजजी** कुमारपदे गुजरी जता तेना कुमार **विक्रमादित्य** राजा थया ते पछी **समरसिंहजी, वनदेवजी, धनराजजी** अने **देवराजजी** क्रमपूर्वक सीकरीना तख्तपति थया. **देवराजजीना** पुत्र **अक्षयराजजी** कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां, तेना पुत्र **इन्द्रभाणजी** गादीए बेठा, ते पाछळ **उदयादित्य** तथा **श्रीपतसेन** क्रमपूर्वक सीकरीना स्वामी थया. **श्रीपतिना** पुत्र **सोमेश्वरजी** कुंवरपदे गुजरी जतां तेना कुमार **अक्षयराजजी** गादीए बेठा. त्यारबाद **मूळराजजी, क्षेमराजजी,** अने **जयमलजी** ए त्रण राजाओ क्रमपूर्वक थया. **जयमलजीना** पुत्र **लखधीरजी** कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना पुत्र **इन्द्रसेनजी** सीकरीना अधिपति थया. ते पछी **पुष्पसेनजी, पद्मसिंहजी,** अने **भीमसिंहजी** नामे त्रण राजाओ थया. भीमसिंहजीना कुमार **रत्नसिंहजी** कुंवरपदे स्वर्गस्थ थतां तेना पुत्र **मालदेवजी** गादीए बेठा. त्यारबाद **करणसिंहजी** तथा **हमीरसिंहजी** ए बे क्रमपूर्वक राजाओ थया. हमीरसिंहजीना पुत्र **सुरतानसिंहजी** कुंवरपदे गुजरी जतां तेना कुमार **पृथ्वीराजजी** तख्तपति थया. ते पछी **पातलसिंहजी** अने **प्रतापभाणजी** ए क्रमपूर्वक सीकरीनी प्रजानुं शासन कर्युं. **प्रतापभाणजीना** कुमार **इन्द्रश्यामजी** कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां, तेना पुत्र **अर्जुनसिंह** गादीए बेठा. त्यारबाद **यौवनसिंह, संग्रामसिंह**

शातऋसिंह, अने **सुरतपालजी** ए क्रमपूर्वक राजाओ थया. **सुरतपालजीना** पुत्र **भारमलजी** कुंवरपदे गुजरी जतां तेना कुमार **अजयभूपाल** सीकरीना पाटपर बेठा, ते पछी **मानपाल**, **नरभ्रमर** तथा **जोधपालजी** ए त्रण क्रमपूर्वक नरपति थया, **जोधपालजीना** कुमार **लखधीरजी** कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना पुत्र **भारमलजी** गादीए बेठा, त्यारबाद **जयमलजी**, **सोमपालजी**, **हंसराजजी** अने **मानपालजी** ए चार क्रमपूर्वक सीकरीना स्वामी बन्या. **मानपालजीना** पुत्र **लाखणसिंहजी** कुंवरपदे गुजरी जतां तेना कुमार **वीरसिंहजी** राजा थया. ते पछी **विनयसिंहजी**, **भारमलजी** अने **भोजराजजी** ए त्रण राजाओ यथाक्रम थया, **भोजराजजीना** पुत्र **केसरदेवजी** कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना कुमार **करणसिंहजी** राजगादीए बेठा, ते पछी **भीमसिंहजी** राजा बन्या. **भीमसिंहजीना** पुत्र **इन्द्रसिंहजी** कुंवरपदे गुजरी जतां तेना पुत्र **सूरसिंहजीए** सीकरीना राजतख्तपर पाय धारण कर्यो, त्यारबाद **संतोषभानु**, **उदयभानु** अने **अमृतसिंसजी** ए त्रण क्रमपूर्वक राजाओ थया, अमृतसिंहजीना कुमार **पातलसेनजी** कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना पुत्र **प्रतापभानु** गादीए बेठा, ते पछी **रणमलजी**, **अक्षयराजजी** अने **मूळराजजी** यथाक्रम सीकरीना स्वामी बन्या. **मूळराजजीना** कुमार **क्षेमराजजी** कुंवरपदे गुजरी जतां तेना पुत्र **मानपालजी** गादीए बेठा, त्यारबाद **भोजराजजी**, **रत्नसिंहजी** अने **सोमेश्वर** ए त्रण राजाओ यथाक्रम थया. **सोमेश्वरना** पुत्र **केसरीसिंहजी** कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना कुमार **गोवर्धनसिंह** राजगादी पर आव्या. ते पछी **गंगेवजी** राजा थया. **गंगेवजीना** पुत्र **समरसिंहजी** कुंवरपदे गुजरी जतां तेना कुमार **सूर्यमलजी** सीकरीना अधिपति थया, ते पछी **राजसारंगधरजीए** प्रतिपक्षीओना पराक्रमने तोडी पाडी सीकरीना राजवैभवनो अन्तिम उपभोग कर्यो.

द्वादश तरंग.
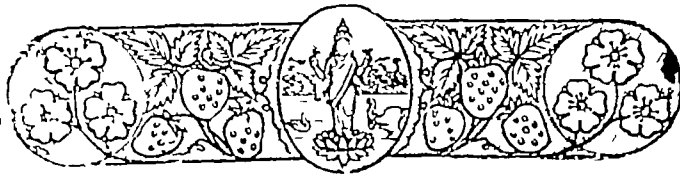
कुंडळीओ.

त्यागी गढ सीकरी तणो, महा भाग्य मकवाण,
कृपालदेव नृपे कर्युं, पश्चिम मांहि प्रयाण;
पश्चिम मांहि प्रयाण, लाभ करनारुं लेखी,
कीर्ति गढमां गया, स्थान उत्तम अवरेखी;
विघ्न रहित त्यां वस्या, व्यास लगि सर्व सुभागी,
कहुं अमर ! ए कथा, यथामति विलंब त्यागी.

राज सारंगधरजीना कुमार कृपालदेवजीए पोतानो घणोखरो मुलक प्रबळ प्रतिपक्षीओना पराक्रमथी भेळाइ गयेलो जोइ लश्करने वधारवा मांडयुं तथा राजज्योतिषने बोलावी पोतानी जन्मपत्रिका बतावी ग्रहदशा विषे पूछयुं. राजज्योतिषीए जन्मपत्रिका तथा ग्रह विगेर तपासी कह्युं के कृपानाथ ! आ धरतीथी आपनी लेणादेणी पूर्ण थइ छे, हवे आपे बीजो काइ विचार नहि करतां पश्चिममां जइ पराक्रम बतावावानुं छे. पश्चिमधरामां आपनुं पराक्रम सफळ थशे एम ग्रह उपरथी जणाय छे. राजज्योतिषीनां वचनोने मान्य राखी कुमार कृपालदेवजीए उत्तम शकुन जोइ पश्चिमनी धरा तरफ प्रयाण करवा निश्चय करी तुरतमां शकुनशास्त्रीने पोता पासे बोलाव्या. पंडिते आवी आशीर्वचन आप्या पछी कृपालदेवजीए कह्युं के पंडितराज ! अमारे पश्चिमधराना विजयार्थे प्रयाण करवुं छे तो प्रयाण करतां पहेलां शुभाशुभ शकुन आपना मुखथी सांभळवा मारी इच्छा छे जेथी ते सविस्तर कही संभळावो. कृपालदेवजीनी आज्ञाने माथे चढावी पंडितराज मुक्तकंठे बोल्या के पूर्व जन्ममां मनुष्योए जे शुभाशुभ कर्म कर्यां होय तेना फळनुं प्रयाण समये शकुन सूचन करे छे. ग्राम, वन, जळ, भूमि अने आकाशमां रहेवावाळा जीव, दिवसमां अने रात्रीमां तेमज दिवस रात्रि बन्नेमां विचरवावाळा जीव शब्द, गमन, इक्षण अने उक्त, स्त्री, पुरुष अथवा नपुंसक जणाइ आवे छे अर्थात् शकुन समये ए जीवोना शब्द आदिथी स्त्री छे के पुरुष छे के नपुंसक छे ए स्पष्ट जणाय छे; शकुन समये स्त्री

आदिनां दर्शन अने शब्द आदि थाय तेथी पण शकुन देवावाळा जीवने स्त्री, पुरुष अथवा नपुंसक समजी लेवां. पृथक् जातिनी अनवस्थिताति होवाने लीधे ए जीवोना स्वरूपमां स्त्री आदिनो भेद जाणी शकातो नथी, सामान्य लक्षणना उद्देशमां ए छे के जे पुष्ट, उंचा, विस्तीर्ण कांधवाळा, म्होटी ग्रीवावाळा, सुन्दर छातीवाळा, स्वल्प अने गंभीर शब्दवाळा तथा स्थिर पराक्रमवाळा जीव होय ते पुरुष, जेनां छाती, मस्तक तथा ग्रीवा न्हानां होय, मुख, पग अने पराक्रम लघु होय अने जे निरंतर शब्द बोले ते स्त्री; अने जे जीवोमां स्त्री तेमज पुरुष बन्नेना लक्षण मळतां होय तेने नपुंसक जाणवा. आ शकुनना जीव क्या गाममां अने क्या अरण्यमां रहे छे ते लोकोथी जाणी लेवुं. मार्गमां पोता उपर शकुननुं फळ जोवुं, सेनामां राजाना उद्देशथी शकुननुं फळ जाणवुं, नगरमां देवताने शकुननुं फळ प्राप्त थाय छे, घणा मनुष्योनी साथे जे प्रधान मनुष्य होय तेने शकुननुं फळ मळे छे, जो एमां कोइ पण मुख्य न होय अने सर्व सरखा होय तो जातिथी, विद्याथी तेमज अवस्थाथी जे म्होटो होय तेने ते फळ प्राप्त थाय छे. सूर्योदयथी आरंभी एक प्रहर दिन चढया पर्यन्त इशानी दिशा मुक्तसूर्या, पूर्व दिशा प्राप्तसूर्या अने आग्नेयी दिशा ऐष्यत्सूर्या होय छे; ए रीते आठे प्रहरमां सूर्योदयथी आरंभी एक एक प्रहर पूर्व आदि दिशाओमां घूमे छे; सूर्य जे दिशाने छोडी आव्यो होय ते मुक्तसूर्या दिशा अंगारिणी, जेमां स्थित होय ते प्राप्तसूर्या दिशा दीप्ता अने जेमां सूर्य जवावाळो होय ते ऐष्यत्सूर्या दिशा धूमिता कहेवाय छे; बाकीनी पांच दिशाओ शान्ता होय छे. मुक्तसूर्यामां अशकुन थयुं होय तो तेनुं फळ प्रथम थइ गयेलुं जाणवुं, प्राप्तसूर्यामां अशकुन थाय तो तेनुं फळ तेज दिवसे मळे छे अने जो ऐष्यत्सूर्यामां अशकुन थाय तो तेनुं फळ आगळ उपर मळशे एम जाणवुं.

अंगारिता आदि दिशाओथी पांचमी दिशानुं शुभ फळ त्रणे काळे सरखुं समजवुं अर्थात् अंगारिताथी पांचमी दिशामां अशकुन थाय तो तेनुं फळ भूत, दीप्ताथी पांचमी दिशामां शुभ शकुन थाय तो तेनुं फळ वर्तमान अने धूमिताथी पांचमी दिशामां शुभ शकुन थाय तो तेनुं फळ भविष्य अर्थात् आगळ उपर मळशे एम जाणवुं. बाकीनी बे दिशाओना शुभाशुभ फळ समीप दिशाने अनुसार समजी लेवां.

जे शकुन समीप अने नीम्न अर्थात् नीचा स्थानमां थाय तेनुं फळ शीघ्र तेमज जे शकुन दूर अने उंचा स्थान पर थाय तेनुं फळ विलंबथी मळे छे, ए प्रमाणे स्थाननी वृद्धि

अने उपघातथी पण फळ कही शकाय छे. अर्थात् जे वृक्ष आदि स्थान उपर ते शकुन स्थित होय तेनी जो नित्य वृद्धिथती होय तो शकुननुं फळ शुभ अने ते स्थाननो नित्य उपघात थतो होय तो शकुननुं फळ अशुभ समजवुं.

मुहूर्तदीप्त, नक्षत्रदीप्त, तिथिदीप्त, पवनदीप्त, अने सूर्यदीप्त, ए पांच प्रकारनां दीप्त शकुन देवदीप्त कहेवाय छे तेमज ए पांचे उत्तरोत्तर बळवान् छे. गमन, स्थिति, भाव, स्वर, अने चेष्टा एना दीप्त थवाथी क्रियादीप्त थाय छे, ए दश प्रकारनां दीप्त शकुन छे.

ए रीतें शांत शकुन पण मुहूर्त तिथि आदिना भेदथी दश प्रकारनुं थाय छे, जो ए शकुन तृण अथवा फळ खानार होय तो सौम्य, मांस अने विष्ठादिक अशुचि पदार्थ खानार होय तो रौद्र अने अन्न खानार होय तो मिश्र अर्थात् न सौम्य तेम न रौद्र (सामान्य) समजवुं.

जे शकुन हर्म्य, देवता आदिना महेल, ब्राह्मण अने गाय आदिनां मंगळ स्थान तेमज सुन्दर स्थानोमां स्थित होय, तेमज अमधुर क्षीरयुक्त अने फळ तथा पुष्प युक्त वृक्षोपर स्थित होय ते शुभ जाणवां.

दिवाचर जीव दिवसे पर्वत उपर स्थित होय अने रात्रिचर जीव रात्रिमां जळनी समीपे स्थित होय तो बळवान समजवां, तेमज ए जीवोमां नपुंसकथी स्त्री अने स्त्रीथी पुरुष बळवान होय छे.

जे शकुन देवावाळा जीव वेग, जाति, बळ, स्थान, हर्ष, सत्व अने स्वरथी युक्त पोतानी भूमिमां अनुलोम थइ स्थित होय ते बळवान अने वेग आदिथी हीन होय ते निर्बळ जाणवां.

कुक्कुट, हाथी, परिली मयूर, वंजुल, छिक्कर, सिंहनाद, कूटपूरी ए सर्व पूर्व दिशामां; शृगाल, उलूक, हारीत, काक, चक्रवाक, रींछ, पिंगल ए सर्व जीव तेमज रोदन, आक्रंदन अने क्रूरशब्द दक्षिण दिशामां, गाय, शश, क्रौंचपक्षी, लोमांश, हंस, उत्क्रोश, कपिंजल अने मार्जार आदिजीव तेमज विवाह आदि उत्सव, वाजां, गीत अने हास्य पश्चिममां; शतपत्र, हरिण, मूषक, मृग, घोडा आदि एक खरी वाळां जीव; कोकिल, चाष, अने शल्यक ए सर्व जीव तेमज पुण्याह शब्द, घंटा अने शंखनो शब्द उत्तर दिशामां बळवान होय छे.

गाममां रहेवा वाळां शकुन वनमां अने वनमां रहेवा वाळां शकुन गाममां तेमज दिवसे विचरवा वाळा जीव रात्रिमां अने रात्रिए विचरवा वाळा दिवसमां होय तो तेने स्वीकारवां न जोइए.

जे शकुनना जीव द्वन्द्व अर्थात् स्त्रीपुरुषनां जोडां, रोगपीडित, भययुक्त, कलह करवानी इच्छा वाळा, मांसनी स्पृहावाळा अने नदीना सामा किनारा उपर स्थित होय तेमज ऋतुने वश थइ मस्त थइ रह्या होय तेनां शकुन कयांइ पण लेवां नहि.

रोहित, घोडा, बकरा, गर्दभ, हरिण, उंट, मृग अने ससलां ए सर्व शिशिर ऋतुमां मस्त होवाथी ते दिवसोमां तेनां शकुन निष्फळ थाय छे तेमज वसन्त ऋतुमां काक अने कोकिलानां शकुन पण निष्फळ जाणवां.

भाद्रपदमां सूकर, श्वान अने वृक आदिना, शरद्ऋतुमां जलजंतुओनुं भक्षण करनारा वक आदि गाय अने क्रौंच पक्षीनां तेमज श्रावण मासमां हाथी अने चातकनां शकुन ग्रहण करवां नहि.

हेमन्त ऋतुमां व्याघ्र, रींछ, वांदरा, चित्ता, महिष, बिलमां रहेवा वाळां नकुल आदि अने बाळको विनाना मनुष्यो तेमज सर्व बाळकोनां शकुन निष्फळ थाय छे.

पूर्व अने अग्नि कोणना मध्यना त्रणभागमां प्रदक्षिण क्रमथी कोशाध्यक्ष, अग्निजीवी अर्थात् सोनी तथा लुहार आदि, अने तपस्वी ए त्रण स्थित छे.

अग्नि कोण अने दक्षिण मध्यना त्रण भागमां क्रमथी शिल्पी, भिक्षुक अने नग्न स्त्री स्थित छे.

दक्षिण अने नैर्ऋत्य वच्चेना त्रण भागमां हाथी, गोवाळ अने धर्मना आश्रित पुरुष स्थित छे.

नैर्ऋत्य अने पश्चिम वच्चेना त्रणभागमां क्रमथी उत्तम स्त्री, प्रसूता स्त्री अने चोर स्थित छे.

वायव्य अने पश्चिम वच्चेना त्रणभागमां क्रमथी शौंडिक, शाकुन अने हिंसक स्थित छे.

वायव्य अने उत्तर वच्चेना त्रणभागमां क्रमथी विषघातक, गायोना स्वामी अने इन्द्रजाळ जाणनारावाळा स्थित छे.

उत्तर अने इशान वच्चेना त्रणभागमां धनवान, दैवज्ञ अने माळी स्थित छे;

इशान अने पूर्वनी वच्चेना त्रण भागमां क्रमथी वैष्णव, चरक अने अश्वरक्षक स्थित छे; चोवीश भेद तो आ थया अने पूर्व आदि आठ दिशाओना आठ भेद मळवाथी कुल बत्रीश भेद थाय छे;

राजा, राजकुमार, सेनापति, दूत, श्रेष्ठी, चर, ब्राह्मण अने हाथीओना अध्यक्ष ए पूर्व आदि आठ दिशाओमां क्रमथी स्थित छे अने पूर्व आदि चार दिशाओमां क्रमथी क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अने ब्राह्मण स्थित छे एम समजवुं.

चालता अथवा स्थित थएला पुरुषने पूर्वोक्त बत्रीश दिग्विभागोमां जे दिग्विभागनी वच्चे रहेल शकुननो जीव शब्द करे ते दिवसे ते दिशामां जे प्रथम कोशाध्यक्ष आदि कह्यां तेनाथी समागम थाय छे

जे जीवोना स्वर भिन्न, भयंकर, दीन, पीडित. रुखा, क्षाम अने जर्जर होय ते अशुभ गणाय छे अने जे सहर्ष जीवोना स्वर शान्त होय ते शुभ जाणवा.

शिवा, श्यामा, रला, छछुंदर, गृहगोधिका, सूकरी, कोकिला अने जे पक्षी पुरुष नामे होय ते सर्व प्रयाण करनार पुरुषनी डावी बाजुए होय तो शुभ जाणवां.

स्त्रीसंज्ञकपक्षी, भासपक्षी, भषक, कपि, श्रीकर्णपक्षी, छिक्कर, मयूर, श्रीकंठपक्षी, पिप्पीक पक्षी, रुरुमृग अने श्येन ए सर्व जमणी बाजुए होय तो शुभ लेखाय छे.

क्ष्वेडा, आ स्फोटित, पुण्याहवाचननो ध्वनि, गीत, शंखनो शब्द, जळनो शब्द, तुरी नामना वाद्यनो ध्वनि, अने वेदपाठनो शब्द ए सर्व डावी बाजु अने ते सिवायना शब्दो जमणी बाजु शुभ जाणवा. प्रयाण वखते मध्यम, षड्ज अने गांधार ए त्रण ग्राम तेमज षड्ज, मध्यम, गांधार अने ऋषभ ए चार स्वर शुभ गणाय छे.

प्रयाण वखते भारद्वाज पक्षी, अज, मयूर, नकुल अने चाष पक्षी ए सर्वना शब्द, नामग्रहण तेमज दर्शन शुभ अने शरट आगळ आवे तो अशुभ फळ आपे छे.

प्रयाण समये जाहक, सर्प, शश, सूकर अने घो ए बधानां नाम लेवां शुभ छे, परंतु शब्द के दर्शन शुभ नथी; कपि अने रींछना शब्द तेमज दर्शन शुभ परंतु नाम लेवां ए शुभ नथी.

मृग, नकुल अने पक्षी एक त्रण तथा पांच आदि विषम होय अने डावी तरफथी आगळ थइ जमणी बाजु आवे तो शुभ अने नकुल सहित चापपक्षी जमणी बाजुथी डावी बाजु आवे तो शुभ लेखाय छे; केटलाएकनो एम मत छे के चाष अने नकुल अपरान्हमां डावी बाजु आवे तो शुभ थाय छे, परंतु पूर्वाह्नमां अशुभ गणाय छे.

छिक्कर कूटपुरी अने पिरली ए दिवसे दक्षिण तरफ आवे तो शुभ लेखाय छे.

दाढवाळा श्वान शृगाल आदि तेमज बिलमां रहेनारा ग्याहुडी अने नकुल आदि वामभागमां आवेतो शुभ होय छे.

घोडा अने श्वेत रंगना पदार्थ पूर्वमां, शव अने मांस दक्षिणमां, कन्या अने दधि पश्चिममां तेमज गौ,ब्राह्मण अने साधु उत्तरमां शुभ गणवां.

जे जाळथी पक्षी अने मत्स्य आदि पकडे अने श्वानथी मृग आदिने मारे ए बन्ने पुरुष पूर्वमां, शस्त्र अने घातकी पुरुष दक्षिणमां, मद्य अने नपुंसक पश्चिममां तेमज दुष्ट पुरुष, आसन अने हळ उत्तरमां अशुभ लेखाय छे.

कर्म, कोइ बंधुआदिथी समागम, युद्ध, गृहप्रवेश, खोवाएली वस्तुने गोतवी अने बधी वातोमां यात्राथी उलटां शकुन लेवां जोइए अर्थात् यात्रामां जे वाम शकुन शुभ कह्यां ते आ कार्योमां दक्षिण लेवां इत्यादि. आमां जे कांइ विशेष छे ते पण हुं कहुं छुं.

दिवस वखते हरिण, रुरुमृग, अने कपिनां शकुन प्रयाणनी माफकज ग्रहण करवां जोइए अर्थात् विपरीत ग्रहण न करवां, दिवसना प्रथम भागमां चाष, वंजुल अने कुक्कुटनां शकुन यात्रा तुल्य लेवां, रात्रीना पाछला भागमां नप्त्रुक, उलूक अने पिंगलानां शकुन पण यात्रा समानज जोवां, सर्व स्त्रीओनोज साथ होय तो शकुन उलटां जोवां जोइए.

राजाना दर्शन माटे राजगृहमां प्रवेश करती वखते प्रयाण तुल्यज शकुन जोवां, पर्वत अने वनमां प्रवेश करती वखते तेमज नदी उतरतां यात्रामां जे शकुन डावा जमणा कह्यां छे ते अग्र भागमां अने पृष्टभागमां क्रमथी होय तो शुभ फळ आपे छे,

प्रयाण करनार पुरुषने बे शकुन परिधसंज्ञक होय अर्थात् बन्ने तरफ स्थित होय अने पूर्वोक्त रीतिथी क्रियादीप्त होय तो यात्रा करवा वाळानो नाश करनार नीवडे छे, अने एज बेउ शकुन जो यथाभाग अर्थात् वामभागनां वामभागे अने दक्षिण भागना दक्षिण भागे स्थित होय तेमज ए शकुन शान्त शब्द अने चेष्टाथी युक्त होय तो प्रयाण करनार पुरुषनां सर्व कार्य सिद्ध करे छे.

एक जातिनां बे शकुन शांत शब्द अने चेष्टाथी युक्त थइ यात्रा करवावाळानी बन्ने तरफ स्थित होयतो शकुनद्वार थाय छे.

एक शकुन तो यात्रानी आज्ञा आपे अने बीजुं शकुन प्रयाण करतां रोके अर्थात् अशुभ होयतो ते यात्रा करवावाळाने माटे विरोध संज्ञक शकुन अशुभ लेखाय छे; अथवा ए बेमां जे बळवान् होय तेनुं ग्रहण करवुं जोइए.

प्रथम शकुन प्रावेशिक अर्थात् प्रवेश समये जेवुं शुभ शकुन कह्युं छे तेवुं होय अने पछीथी तेज शकुन प्रास्थानिक अर्थात् प्रयाण वखते जेवुं शुभ कह्युं छे तेवुं थइ जायतो यात्रा करवावाळाना तमाम कार्यनी सुखथी सिद्धि करे छे, प्रवेश वखते एथी विपरीत होय तो पण कार्यसिद्धि थाय छे.

प्रयाण समये जे शकुन प्रथम शुभ होय ते फरी अशुभ थइ जाय तो प्रयाण करनार पुरुषनुं शत्रुना हाथथी मृत्यु, शस्त्रकलह अने रोग थाय ए उक्त शकुन सूचवे छे.

जे शकुन अप्रदक्षिण अने दीप्त होय ते भयनुं सूचन करे छे, जे कार्यना आरंभमां दीप्त शकुन होय ते कार्यमां आखुं वर्ष भय रह्या करे छे.

तिथिदीप्त शकुन धननो, वायुदीप्त सेनानो, अर्कदीप्त बळनो, नक्षत्रदीप्त अंगनो, स्थानदीप्त इष्टनो अने चेष्टादीप्त शकुन कर्मनो भय उपजावे छे.

मेघोना शब्दथी दीप्त शकुन थाय तो पवनथी भय उपजे छे अने बन्ने संध्याओमां दीप्त शकुन थाय तो ते शस्त्रथी भय करनार बने छे.

चिता, केश अने कपाल उपर शकुन स्थित होय तो क्रमथी मृत्यु, बंधन अने अने वध करे छे, कांटावाळां वृक्ष, काष्ठ अने भस्म उपर रहेल शकुन क्रमथी कलह, परिश्रम अने दुःख आपे छे, निःसार अर्थात् सार वगरना पाषाण उपर रहेल अप्रसिद्धि अथवा भय करे छे आ फळ दीप्त शकुनोनुं छे, परंतु ए स्थानोमां शान्त शकुन स्थित होयतो याप्य अर्थात् स्वल्प फळ आपे छे.

विष्ठा करतुं शकुन कार्यसिद्धि नथी करतुं अने भोजन करतुं शकुन कार्यनी सिद्धि करे छे, शकुन ज्यां बेठुं होय त्यांथी शब्द करतुं गमन करे तो प्रयाणनी अनुमति आपे छे एम समजवुं अने लोटी फरी एज स्थान पर आवी जाय तो कोइनुं आगमन सूचवे छे.

स्वरथी दीप्त शकुन होय तो कलह अने स्थानथी दीप्त शकुन होय तो विग्रह थाय छे, शकुन प्रथम उंचा स्वरथी बोली पाछळथी नीचे स्वरे बोले तो प्रयाण करनारने चोरी थाय छे.

दीप्त शकुन निरंतर एक स्थाने बोलतुं रहे तो सात दिवसमां ग्रामनो विनाश थाय छे, बे महिनामां नगरनो, त्रण महिनामां देशनो अने चार महिनामां राजानो नाश करे छे.

सर्प, मूषक, मार्जार अने मत्स्योने छोडी बीजा तमाम जीव जो पोतानी जातिना जीवतुं मांस भक्षण करे तो दुष्काळ पडे छे.

सर्व जीव अन्य जातिनी योनिमां मैथुन करे तो देशनो नाश थाय छे ते खच्चरनी उत्पत्तिने तथा मनुष्योनां अन्य योनिमां मैथुनने छोडीने अर्थात् खच्चरनी उत्पत्तिने माटे घोडीथी गर्दभनुं मैथुन थाय छे अने मनुष्य पण कामपीडित थइ क्वचित् घोडी आदिथी मैथुन करे छे ए उत्पात लेखातो नथी.

शकुन पगनी समीपे आवी जाय तो बंधन, उरुओनी समीपे आवी जाय तो घात अने मस्तकनुं अतिक्रमण करे तो भय थाय छे, जळपान करतुं शकुन दृष्टिए पडे तो वृष्टि, घास खातुं शकुन देखाय तो चोरी, मांसखातुं शकुन शरीरमां क्षत अने अन्नखातुं शकुन दृष्टिए पडे तो गृह अर्थात् कोइ बंधुथी समागम थाय छे.

जो शकुन दीप्त दिशामां स्थित होय तो कोइ क्रूरनी साथे मनुष्यनुं आगमन, धूमिता दिशामां स्थित होय तो तीव्रतर दोषथी दुष्ट पुरुष सहित आगमन, शान्ता दिशामां स्थित होयतो प्रधान राजानुं वृत्तांत कहेवावाळा सहित पुरुषनुं आगमन अने जो अंगारिता दिशामां शकुन स्थित होय तो दीर्घ काळ सहित पुरुषनुं आगमन थाय छे.

जो शकुन कांइ भक्ष्य आदि द्रव्ययुक्त अने बळवान् होयतो ते दिवसे द्रव्य सहित मनुष्यनुं आगमन थाय छे; सौम्य शकुन पण जो नीचे दृष्टि करी रह्युं होयतो अति दारुण वृत्तान्त प्रगटे छे अर्थात् गमे ते उपद्रव करे छे.

दीप्त शकुन विदिशामां स्थित होय अने डावी बाजु रहेलुं बीजुं शकुन तेनी पाछळ शब्द करेतो ते दिशामां प्रसिद्ध जन्मवाळा पुरुषथी स्त्रीनी प्राप्ति थाय छे.

शान्त शकुनथी पांचमी दिशामां स्थित दीप्त शकुन तेनी पाछळ शब्द करतुं होयतो विजय अथवा ते दिशाना मनुष्यनुं आगमन अने एथी विपरीत होयतो दोष करे छे.

मध्यनुं शकुन वाम भागमां रहेला शकुनथी विरुत अर्थात् वाम भागनुं शकुन एनी पाछळ बोलेतो पोताना पक्षथी अने मध्यनुं शकुन दक्षिण भागना शकुनथी विरुत होयतो शत्रुथी भय

थाय छे. जो ए त्रणे एकी वखते शब्द करे तो मरणने सूचवे छे एम जाणवुं.

वृक्षना अग्र, मध्य अने मूळमां शकुन स्थित होय तो क्रमथी हाथीपर, घोडापर अने रथ उपर चढेला मनुष्यनुं, लांबी वस्तुपर शकुन स्थित होयतो मनुष्य उपर चडेला मनुष्यनुं; कमलआदि उपर शकुन स्थित होयतो नावपर चढेला मनुष्यनुं; अने जेनो अग्रभाग कापेल होय एवी वस्तु-पर शकुन स्थित होय तो पालखी उपर चढेला मनुष्यनु आगमन थाय छे.

शकुन उंचा स्थान पर स्थित होय तो शकट उपर चढेला मनुष्यनुं, छायामां बेठेल होय तो छत्रथीयुक्त मनुष्यनुं आगमन थाय छे; पूर्व दिशामां शकुन स्थित होवाथी शुभाशुभ फळ जे कोइनुं आगमन अथवा कोइथी संयोग कह्यो ते सर्व एक दिवसमां थाय छे, शकुन दक्षि-णमां स्थित होय तो तेनुं फळ त्रण दिवसे, पश्चिममां होय तो पांच दिवसे अने उत्तरमां स्थित होय तो सात दिवसमां एवुं फळ जणाय छे; एवीज रीते अग्नि आदि चारे कोणमां स्थित शकु-ननां फळपण क्रमथी एक त्रण पांच अने सात दिवसमां थाय छे.

पूर्व आदि आठे दिशाओना क्रमथी इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, सोम अने शिव ए आठ स्वामी छे; पूर्व आदि चार दिशा पुरुष अने आग्नेयी आदि चारविदिशा स्त्री छे.

बत्रीश भागे वेचायेल दिक्चक्रमां शकुन होय तो क्रमथी तरु आदि उपर कार्योनो लेख थाय छे अर्थात् पूर्वना भागमां शकुन स्थित होय तो वृक्षनी त्वचा अथवा पत्र उपर, अग्नि-कोणमां होय तो तालपत्र उपर, दक्षिणमां होय तो वांसनी त्वचा आदि उपर, नैऋत्यमां होय तो वस्त्र उपर, पश्चिममां होय तो जळथी उत्पन्न थएला कमल आदिना पत्र उपर, वायव्य कोणमां होय तो शरकांड उपर, उत्तरमां चर्म उपर अने इशान कोणमां शकुन स्थित होय तो पट्ट उपर कार्यनो शुभाशुभ लेख थाय छे;

पूर्वमां जे शकुन होय तेनुं शुभाशुभ फळ व्यायामना स्थानमां, अग्निकोणना शकुननुं फळ अग्निनी समीपे, दक्षिणना शकुननुं फळ निकूजित अर्थात् कोइनो शब्द सांभळीए तेनी समीपे, नैऋत्यना शकुननुं फळ कलहना स्थानमां, पश्चिमना शकुननुं फळ जळनी समीपे, वायव्य कोणमां शकुननुं फळ निगडनी समीपे, उत्तरना शकुननुं फळ वेदपाठना स्थानमां अने इशान कोणना शकुननुं फळ ज्यां गायोना शब्द थता होय ते स्थानमां थाय छे;

रक्त, पीत, कृष्ण अने श्वेत ए पूर्व आदि चार दिशाओना तथा रक्तपीत, पीतकृष्ण,

कृष्णश्वेत अने श्वेतरक्त मळी आग्नेयी आदि चार विदिशाओना रंग छे.

ध्वज, अग्निथी दग्ध, स्मशान, गुफा, जळ, पर्वत, यज्ञस्थान अने घोष ए आठ पूर्व आदि दिशाओनां चिन्ह छे; पूर्व आदि दिशाओमां शकुन थवाथी ए स्थानोमां संयोग अथवा भय थाय छे, बीजी पण स्थान वशथी कल्पना करी लेवी अर्थात् शुभ शकुननुं फळ शुभ स्थानमां अने अशुभ शकुननुं फळ अशुभ स्थानमां थाय छे.

ईशान कोणमां म्होटी स्त्री अने कुमारी, अग्नि कोणमां अंगहीन स्त्री अने दुर्गन्ध युक्त स्त्री, नैर्ऋत्य कोणमां लीलां वस्त्रो वाळी स्त्री अने खराब स्त्री, तेमज वायव्य कोणमां लांबी स्त्री अने विधवा स्त्री छे, जे दिशामां शकुन होय ते दिशानी स्त्रीथी संयोग थाय छे अथवा ते स्त्री चिन्ता उत्पन्न करे छे.

प्रश्न समये शकुन पूर्व आदि दिशाओमां स्थित होय तो क्रमथी चांदी, सुवर्ण, रोगी, स्त्री, पान करवानो पदार्थ, वाहन, यज्ञ अने गायोना समुहनी प्रश्न करवावाळा पुरुषने चिन्ता थाय छे; तेमज वड, रक्त वर्णनुं वृक्ष, लोध्रनुं वृक्ष, कीचक, आम्र, खदिरनुं वृक्ष, बिल्व वृक्ष अने अर्जुन वृक्ष ए आठ वृक्ष आठ दिशाओना छे अर्थात् जे दिशामां शकुन होय ते वृक्षनी नीचे चांदी सुवर्ण आदिनो लाभ अथवा हानि शकुनने अनुसार थाय छे.

शान्त पूर्व दिशामां शब्द करतुं शकुन राजाना आश्रित पुरुषनुं आगमन तथा पूजा अने मणि,रत्न तेमज सुवर्ण आदि द्रव्यनी प्राप्ति कहे छे; शुभ शकुन होय तो पूर्ण फळ, मध्यम होय तो मध्यम फळ अने अशुभ होय तो किंचित् फळ करे छे.

पूर्व दिशाना त्रण भागोमां आ प्रथम भागनुं फळ कह्युं, हवे बीजा भागमां शकुन होय तो सुवर्णनी प्राप्ति अने वांच्छित कार्यनी सिद्धि तेमज त्रीजा भागमां शकुन होय तो शस्त्र, धन अने सुपारीनी प्राप्ति थाय छे, चोथा भागमां शकुन होय तो पोताने प्रिय ब्राह्मणनां अने अग्नि होत्रीनां दर्शन थाय; अग्नि कोणमां शकुन होय तो पोताना अनुजीवी सेवक आदि अने भिक्षुक द्रष्टिए पडे तथा सुवर्णनी अने लोहनी प्राप्ति थाय.

दक्षिण दिशाना प्रथम भागमां शकुन होयतो राजपुत्रनुं दर्शन, कार्य सिद्धि अने इष्ट वस्तुनी प्राप्ति; बीजा भागमां शकुन होयतो स्त्री अने धर्मनी प्राप्ति तथा सरसव अने जवनो लाभ थाय छे.

कोणथी चोथा खंडमां शकुन होय तो प्रथम नष्ट थयेल द्रव्यनी फरी प्राप्ति थाय छे अने प्रयाण करनार पुरुषने थोडां घणां फळ मळे छे.

सम दक्षिण भागमां शकुन होय तो यात्रानी सिद्धि तेमज मयूर, महिष अने कुकुटनी प्राप्ति थाय छे; दक्षिणथी बीजा भागमां शकुन होय तो चारणोनो संग, शुभ अने प्रीति थाय छे; त्रीजा भागमां शकुन होय तो कार्यसिद्धि, कैवर्तथी समागम अने मच्छी तेमज तेतर आदिनी प्राप्ति थाय; चोथा भागमां शकुन होय तो सन्यासीनुं दर्शन तथा पक्वान्न अने फळनो लाभ थाय छे;

नैर्ऋत्य कोणमां शकुन होय तो स्त्रीनो लाभ तेमज घोडा, भूषण, दूत अने लेखनी प्राप्ति थाय छे; नैर्ऋत्यना आगला भागमां शकुन होयतो चर्म अने चमारनां दर्शन अने चामडाथी बनेल वस्तुनो लाभ थाय छे; नैर्ऋत्यथी त्रीजा भागमां शकुन होयतो कपि, भिक्षुक अने श्रमणनुं दर्शन तथा नैर्ऋत्य कोणथी चोथा भागमां शकुन होयतो फळ, पुष्प अने हाथी दांतथी घडेली वस्तुनी प्राप्ति थाय छे.

पश्चिममां शकुन होयतो समुद्रथी उत्पन्न थयेलां रत्न, वैदूर्य, अने मणिमय पदार्थोनो लाभ थाय छे; पश्चिमथी आगला भागमां शकुन होयतो भील, व्याध अने चोरनो संग तेमज मांसनो लाभ थाय छे; तेनाथी आगला भागमां शकुन होयतो वातनी व्याधिवाळानां दर्शन तेमज चंदन अने अगरनी प्राप्ति थाय छे; एनाथी पण आगळना भागमां शकुन होयतो शस्त्र अने पुस्तकनो लाभ तेमज शस्त्र अने पुस्तकवृत्ति करवावाळाथी समागम थाय छे.

वायव्यमां शकुन होयतो समुद्रफीण, चामर अने तेना वस्त्रोनी प्राप्ति तथा कायस्थनां दर्शन थाय छे.

वायव्यथी आगला भागमां शकुन होयतो मृत्तिकाथी बनेली वस्तुनो लाभ तेमज वैतालिक अने डिंडिभांडनां दर्शन थाय छे; जेमां पटह, मृदंग अने करारनामे वाद्य एक साथे वजाववामां आवे ते वाद्यने डिंडिभांड कहे छे.

वायव्य कोणना त्रीजा भागमां शकुन होयतो मित्रथी समागम अने धननी प्राप्ति थाय छे; एथी आगला भागमां शकुन होयतो वस्त्र अने अश्वनी प्राप्ति तेमज इष्ट मित्रथी समागम थाय छे.

उत्तर दिशामां शकुन होयतो दधि, अक्षत अने लाजानो लाभ तेमज ब्राह्मणनां दर्शन थाय छे, उत्तरथी पहेला भागमां शकुन होयतो धननी प्राप्ति अने सार्थवाहनां दर्शन थाय छे. एथी आगला भागमां शकुन होयतो वेश्या, बाळक अने दासथी समागम तेमज सुकायेलां पुष्प अने फळनो लाभ थाय छे; एथी पण आगला भागमां शकुन होयतो चित्र बनाववावाळानां दर्शन अने चित्रवस्त्रनी प्राप्ति थाय छे;

इशान कोणमां शकुन होयतो देवलनो समागम तेमज धान्य, रत्न अने पशुनो लाभ थाय छे.

पूर्व दिशाना पहेला भागमां शकुन होयतो वस्त्रनी प्राप्ति अने व्यभिचारिणि स्त्रीथी समागम थाय छे, एथी पण आगला भागमां शकुन होयतो रजकथी समागम अने जळथी उत्पन्न थएला द्रव्योनो लाभ थाय छे; एथी पण आगला भागमां शकुन होयतो हाथीथी आजीविका चलावनारनो समागम तेमज हाथी अने घोडानो लाभ थाय छे.

दिग्चक्रना बत्रीश भाग कह्या तेनी वच्चे आठ अर अने एक नाभि कल्पी तेना मध्यमां रहेलां शकुननां फळ नव प्रकारथी विचारवां जोइए.

शकुन नाभिमां स्थित होय तो बन्धु अने मित्रोथी समागम तेमज उत्तम तुष्टि, पूर्व भागना अर उपर शकुन स्थित होयतो लाल रेशमना वस्त्रनी प्राप्ति अने राजाथी समागम थाय छे;

अग्नि कोणना अर उपर शकुन होयतो कौलिक ,तक्षा, पारिकर्म, अश्व अने सूतनो समागम तेमज कौलिक आदिनां बनावेल वस्त्र आदिनो अथवा अश्वनो लाभ थाय छे.

नेमि भाग अने नाभिभागने समजी दक्षिणना अर उपर शकुन होयतो धर्मात्मा मनुष्योथी समागम अने धर्मनो लाभ थाय छे;

नैर्ऋत्यमां शकुन होवाथी बळदथी क्रीडा करवावाळा अने कापालिकथी समागम तेमज बळदनो लाभ थाय छे अने अडद, कळथी आदिनुं भोजन मळे छे;

पश्चिम दिशाना अर उपर शकुन स्थित होयतो खेडूतथी समागम तेमज समुद्रथी उत्पन्न थएल द्रव्यनसार, काचफल अने मद्यनो लाभ थाय छे.

वायव्य कोणना अर उपर शकुन होयतो भार उठाववावाळा, तक्षा अने भिक्षुकनो समागम तेमज तिलकवृक्षनां पुष्प, नागपुष्प अने पुन्नागपुष्पनो लाभ थाय छे.

शान्त उत्तर दिशाना अर उपर शकुन होयतो धननो लाभ तेमज वैष्णव साथे अने पीळा रंगनां वस्त्रो साथे समागम थाय छे.

इशान कोणना अर उपर शकुन होयतो व्रतवाळी स्त्री नजरे पडे छे अने लोह, काळां वस्त्र अने वजाववानी घंटानो लाभ थाय छे.

दक्षिण दिशाना अष्टमांशमां, पश्चिममां, नैर्ऋत्य कोणथी आरंभी बीजा, छट्ठा, त्रीजा सातमा अने आठमा अष्टमांशमां तेमज उत्तरमां बीजां अष्टमांशमां शांत शकुन होयतो यात्रा मध्यम फळ देनारी थाय छे अर्थात् यात्रा शुभ थती नथी तेम अशुभ पण थती नथी; अने शेष भागोमां शकुन होयतो यात्रा घणीज शुभ थाय छे; मध्यमां नाभिना छअरा उपर शकुन होयतो शुभ फळ देनारी अने वायव्य तेमज नैर्ऋत्य कोणमां अर उपर शकुन होयतो क्लेश देवावाळी यात्रा थाय छे; आ फळ शान्त दिशाओनुं कह्युं, हवे दीप्त दिशाओनुं कहुं छुं ते श्रवण करो.

पूर्व दिशामा शकुन होयतो राजाथी भय अने शत्रुओथी समागम थाय छे; पूर्वना आगला भागमां शकुन होयतो सुवर्णनो नाश अने सोनीथी भय; तेमज त्रीजा भागमां शकुन होयतो धननो क्षय, कलह अने शस्त्रनो कोप थाय छे; पूर्वना चोथा भागमां शकुन होयतो अग्नि-नो भय, अग्नि कोणमां शकुन होयतो चोरोथी भय अने अग्नि कोणना बीजा भागमां शकुन होय तो धननो क्षय तेमज राजपुत्रनुं मृत्यु थाय छे; अग्नि कोणना त्रीजा भागमां शकुन होयतो स्त्रीना गर्भनो नाश, चोथा भागमां होयतो हैरण्यक आदि अने कारुकनो नाश तेमज शस्त्रकोप, पांचमा भागमां शकुन होयतो राजाथी भय अने कोलेरा आदिथी मरण पामेला पुरुषनुं दर्शन; छट्ठा भागमां शकुन होयतो गांधर्व अने डोम्ब लोकोथी भय; सातमा भागमां दीप्त शकुन होयतो ढीमर अने शाकुनिकथी भय तेमज आठमा भागमां शकुन होयतो भोजननो नाश अने निर्ग्रन्थथी भय थाय छे;

नैर्ऋत्य कोणमां शकुन थाय तो कलह, रुधिरस्राव अने संग्राम थाय छे;

पश्चिमना प्रथम भागमां शकुन होय तो चामडाथी बनेली वस्तुनो नाश अने चमारोथी भय; बीजा भागमां शकुन होय तो सन्यासी अने श्रमणथी भय अने एथी आगला भागमां होय तो उप वासथी भय थाय छे. पश्चिममां शकुन होय तो वर्षानो भय, एथी आगळना भागमां शकुन होय तो श्वान अने चोर लोकोनो भय, एथी आगला भागमां शकुन होयतो वातव्याधिथी पीडाता पुरुषनो

नाश अने एथी पण आगला भागमां शकुन होय तो शस्त्र तेमज पुस्तकथी आजीविका चलावनाराओथी भय थाय छे.

वायव्य कोणमां शकुन होय तो पुस्तकनो नाश, बीजा भागमां शकुन होय तो विष अने एथी वायुनो भय, एथी आगला भागमां शकुन होय तो धननो नाश अने मित्रोथी कलह अने एथी त्रीजा भागमां शकुन होय तो अश्वनुं मृत्यु अने पुरोहितनो भय थाय छे.

उत्तरमां शकुन होय तो गायोनुं हरण अने शस्त्रथी घात, एथी त्रीजा भागमां शकुन होय तो सार्थ अने धननो नाश, एथी समीपना भागमां शकुन होय तो श्वानथी भय अने व्रात्य, द्विज, दास तथा वेश्याथी पण भय थाय छे; जे ब्राह्मणने उपनयनादि संस्कार नहि थयो होय तेने व्रात्य कहे छे.

इशान कोणनी समीपे शकुन होय तो चित्र वस्त्रो अने चित्रकारथी भय थाय छे; इशान कोणमां शकुन होय तो अग्निनो भय अने उत्तम स्त्रीओने दूषण लागे;

पूर्व दिशामां इशान कोणनी समीपे शकुन होय तो दुःखनी उत्पत्ति अने स्त्रीनुं मृत्यु; एथी आगला भागमां शकुन होय तो धोबी अने काच्छिकथी भय थाय छे;

बत्रीश भागमां वेचाएल दिग्चक्रनी समाप्ति उपर शकुन होय तो हाथीवाळाथी भय अने हाथीनुं मृत्यु थाय छे.

मध्यमां पूर्वना अर उपर दीप्त शकुन होय तो भार्यानुं मृत्यु निपजे छे.

अग्निकोणना अर उपर दीप्त शकुन होय तो शस्त्रकोप अने अग्निकोप तेमज अश्वनुं मरण अने कारीगरोथी भय थाय छे, दक्षिणमां शकुन होय तो धर्मनो नाश, नैऋत्य कोणमां शकुन होय तो अग्नि, अवस्कंद, चोर अने धूर्तथी मृत्यु; पश्चिमभागना अर उपर दीप्त शकुन होय तो काम करवावाळाओथी भय, वायव्य कोणना अर उपर शकुन होय तो गर्दभ अने उंटोनुं मृत्यु, अने एज कोणमां शकुन होवाथी मनुष्योने विषूचिका अने विषथी भय; उत्तर दिशामां शकुन होय तो धननो नाश अने ब्राह्मणोने पीडा, इशान कोणमां शकुन होय तो मनने संताप तेमज ग्रामीण अने गोवाळोथी पीडा अने नाभि उपर दीप्त शकुन होय तो यात्रा करवावाळानुं ज मृत्यु थाय छे.

पोतकी, श्येन, शशघ्न, वंजुल, मयूर, श्रीकर्ण, चक्रवाक, चाष, अंडीरक, खंजन, शुक, काक,

प्रचोदयाम्यहं यत्त्वां तन्मेव्याख्यातुमर्हसि ।
स्वचेष्टितेन कल्याणि, यथा वेद्मि निराकुलम् ॥

आ मंत्रो एवा स्वरथी भणवा जोइए के जे पिंगला श्रवण करे, मंत्रो भणी रह्या बाद वृक्ष उपर रहेल पिंगला जो "चिरिल्विरिलु" एवो शब्द करे तो कार्यसिद्धि, "दिशिकार" अथवा "कुचाकुच" एवो शब्द बोले तो अति व्याकुळता अने जो कांइ पण शब्द न बोले अर्थात् मौन रहेतो अभिष्ट कार्यनी सिद्धि थाय छे; बीजां विशेष फळ पूर्वोक्त बत्रीश दिग्विभागो अनुसार जाणवां; पिंगला उत्तम शाखा उपर बेठी होय तो उत्तम फळ, मध्यम शाखा उपर बेठी होय तो मध्यम फळ अने नीच शाखा उपर बेठी होय तो नीच फळ करे छे.

गृहगोधिकानुं फळ बत्रीश भागोमां वेचायेला दिक्चक्र अने मध्य भागना अनुसार जाणवुं अर्थात् जो शांत दिशामां स्थित गरोळी मधुर शब्द बोले तो शुभ अने दीप्त दिशामां स्थित थइ दीप्त शब्द करेतो अशुभ लेखाय छे; छछुंदर जो चिच्चिड एवो शब्द बोले तो दीप्त अने तित्तिड एवो शब्द बोले तो पूर्ण अर्थात् शुभ होय छे.

मनुष्य, हाथी, घोडा, घट, पर्याण, वड आदि क्षीरयुक्त वृक्ष, इंटोनो ढगलो, छत्र, शय्या, आसन, सांबेलु, ध्वज, चामर, लीली दुर्वायुक्त स्थल अथवा पुष्पोथी युक्त स्थान एमांथी गमे तेना उपर पिशाव करी श्वान प्रयाण करवावाळा पुरुषनी आगळ चाले तो कार्यसिद्धि थाय छे. तेमज लीला छाण उपर पिशाव करी चाले तो मिष्ट भोजन अने सुकेलां छाण उपर पिशाव करी श्वान यात्राळुनी आगळ चाले तो सूकुं अन्न, गोळ अथवा लाडु मळे छे.

जो श्वान विषवृक्ष, कांटावाळां वृक्ष, काष्ठ, पाषाण, शुष्कवृक्ष, हाडकुं अने स्मशान एमांथी हरकोइ स्थान उपर पिशाव करी अथवा एने पगोथी ताडन करी यात्राळु पुरुषनी आगळ चाले तो अशुभ सूचवे छे; शय्या अने कुंभार आदिनां बनावेलां नविन अने नहि फूटेलां पात्रो उपर पिशाव करे तो कन्याने तथा पुरातन पात्रोपर पिशाव करे तो यात्राळु पुरुषनी स्त्रीने दूषित करे छे; पगरखांनुं पण एज फळ छे. अर्थात् नविन जोडापर पिशाव करे तो कन्याने अने जुना जोडापर पिशाव करे तो यात्राळुनी पत्नीने दूषित बनावे छे.

जो गायना उपर पिशाव करी श्वान यात्राळुनी आगळ चाले तो वर्णसंकरनी उत्पत्ति करे छे.

मुखमां पगरखुं उपाडी आकाश भणी मुख राखी श्वान यात्राळुनी समीपे स्थित होय तो कार्यसिद्धि थाय छे;

जो श्वान यात्राळु पुरुषनी समीपे मुखमां मांस भरी स्थित थाय तो धननी प्राप्ति, लीलुं हाडकुं मुखमां लइ आवे तो शुभ, बळेलुं लाकडुं मुखमां लइ आवे तो यात्राळुनुं मृत्यु; बुझावेलुं वळेलुं लाकडुं मुखमां लइ आवे तो उपद्रव, पुरुषना हाथपग आदि अंग मुखमां उठावी लावे तो भूमिनो लाभ अने वस्त्र अथवा वस्त्रनो कडको आदि मुखमां लइ आवे तो विपत्ति थाय छे.

केटलाएकनो एम मत छे के जो श्वान मुखमां वस्त्र लइ आवे तो शुभ, सुकुं हाडकुं लइ घरमां प्रवेश करे तो ते घरमां प्रधान मनुष्यनुं मृत्यु अने लोढानी सांकळ, मृर्की वेल तेमज वरत्रा आदि मुखमां लइ श्वान यात्राळुनी समीपे आवे छे तो बंधन थाय छे.

जो श्वान यात्राळुना पग चाटे अथवा कान फफडावतो उपर आवे तो ते यात्राळुने विघ्न थाय छे, श्वान मार्ग रोकी वेसे अथवा पोतानुं अंग खंजोळे तोपण यात्राळुने विरोध करे छे, जो श्वान पग उंचो करे तो सदा दोषरुप समजवो.

एक अथवा घणा श्वान एकठा थइ सूर्योदय समये ग्रामनी वच्चे सूर्य तरफ मुख राखी रुदन करे तो तुरतज ग्रामनो स्वामी वीजो थाय छे.

अग्नि कोणमां स्थित श्वान सूर्यनी तरफ मुख राखी रुदन करे तो तुरतज चोरोथी अथवा अग्निथी भय उपजे छे; मध्याह्न समये सूर्य भणी मुख करी श्वान रुदन करे तो अग्निनो भय अने मृत्यु सूचवे छे; मध्यान्ह पछी सूर्य भणी मुख राखी रुदन करे तो जेमां रुधिर वहे एवुं युद्ध थाय छे.

सूर्यास्त समये सूर्य भणी मुख करी श्वान रुदन करेतो तुरतज खेती करवावाळाओने भय आपे छे; प्रदोष समये अग्निकोण तरफ मुख राखी श्वान रुदन करे तो पवनथी अने चोरथी भय थाय छे.

अर्ध रात्रिने वखते उत्तर तरफ मुख राखी श्वान रुदन करे तो ब्राह्मणोने पीडा अने गायोनुं हरण सूचवे छे; रात्रिनी समाप्ति वखते इशान कोण तरफ मुख राखी रुदन करे तो कन्याने दूषण, अग्निनो भय अने स्त्रीओनो गर्भपात थाय छे.

तृणोना ढगला उपर, प्रासाद उपर अथवा उत्तम घर उपर वेसी श्वान उंचा स्वरथी

वर्षाऋतुमां बोले तो प्रचंड वर्षा थवानुं सूचवे छे. जो वर्षाऋतुने छोडी बीजी ऋतुमां उपर प्रमाणे शब्द करे तो मृत्यु, अग्नि अने रोगथी भय थाय छे.

वर्षाऋतुमां वर्षानो अभाव थइ रह्यो होय ए वखते श्वान जळनी वच्चे प्रवेश करी वारंवार प्रत्यावर्त रेचकोथी युक्त जणाय अथवा जळने कंपावता जळपान करे तो बार दिवसनी अंदर वर्षा थाय छे; एक पार्श्वने बदलावी फरी व्यत्ययथी एज पार्श्वपर आववुं तेने प्रत्यावर्त रेचक कहे छे.

नरना द्वारनी डेली उपर पोतानुं शिर अने बाहेर शरीर राखी श्वान घरना स्वामीनी भार्या तरफ द्रष्टि करी रुदन करे तो तेने रोग थाय छे तेमज घरनी अंदर शरीर अने बाहेर मुख राखी रुदन करे तो ते स्त्री व्यभिचारिणी छे एम सूचन करे छे;

श्वान घरनी भींतने खोदे तो खानिक भय, गोष्ठने खोदे तो गायोनुं हरण अने ज्यां धान्य थाय ते भूमिने खोदे तो धान्यनो लाभ थाय छे.

श्वाननी एक आंख आंसुथी भरी होय, द्रष्टि दीन होय अने ते थोडुं भोजन करे तो जे घरमां ए रहेतो होय ते घरमां दुःख उपजावे छे.

श्वान गायोनी साथे क्रीडा करे तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य अने हर्षने सूचवे छे;

श्वान वाम जानुने सुंघे तो धननो लाभ, दक्षिण जानुने सुंघे तो स्त्रीओनी साथे कलह, वाम उरुने सुंघे तो इन्द्रियोना विषयोनो उपभोग अने जो दक्षिण उरुने सुंघे तो इष्ट मित्रोथी विरोध थाय छे;

जो श्वान यात्रा करवावाळा मनुष्यना पगोने सुंघे तो एम सूचवे छे के तुं यात्रा करमां, अहिंज मन मान्युं धन मळशे; अने स्थानमां रहेल पुरुषना पगरखांने सुंघे तो तुरत यात्रानी सूचना करे छे.

श्वान बन्ने भुजाओने सुंघे तो शत्रु अने चोरथी समागम थाय, जो भक्षण करवाना पदार्थ अपूप आदि, मांस अने हाडकांओने भस्ममां छुपावे तो तुरतज अग्निनो भय थाय छे;

श्वान प्रथम ग्राममां शब्द करी पछी बाहेर स्मशानमां जइ शब्द करे तो ग्राममां उत्तम पुरुषोनुं मृत्यु थाय छे अने यात्रा करवावाळानी सन्मुख रुदन करे तो यात्राने रोके छे.

जो श्वान स्वाभाविक " ऊ " एवो शब्द करे अने यात्रा करवावाळाना वामभागमां " ओ " एवो शब्द करे तो अर्थसिद्धि थाय छे. " ओ " एवो शब्द करे तो व्याकुळता अने यात्रा करनारनी पाछळ श्वानना सर्व प्रकारना शब्द यात्रानो निषेध सूचवे छे;

जो श्वान उंचा स्वरथी " खंख " एवो शब्द करे तो जाणे एने कोइ लाकडीथी मारे छे, अने मंडलने आकारे दोडे तो ते नगर आदिने शून्य करी मृत्युनो भय उत्पन्न करे छे;

जो श्वान दांत काढी पोतानी सृक्किणीने चाटे तो मीठां भोजननी प्राप्ति थाय छे; जो मुखनेज चाटे अने सृक्किणीने न चाटे तो सिद्ध भोजनमां पण विघ्न करे छे; अर्थात् भोजन मळतुं नथी.

ग्राम अथवा नगरनी वच्चे घणा श्वान भेळा थइ वारंवार शब्द करे तो ते ए ग्रामना अथवा नगरना स्वामीने क्लेश सूचवे छे;

जंगलमां स्थित श्वानना फळ मृगनां फळ तुल्य जाणवां; जो श्वान वृक्षनी समीपे शब्द करे तो वर्षा, द्वारना अर्गलनी समीपे शब्द करे तो राजाना मंत्रीने पीडा, घरनी वच्चे वायु कोणमां शब्द करे तो खेतीनो भय, नगरना द्वारमां शब्द करे तो नगरनेज पीडा, शय्या उपर शब्द करे तो शय्याना स्वामीओने भय अने प्रयाण वखते पाछळथी शब्द करे तो यात्रा करवावाळाने भय थाय छे; मनुष्योनी समीपे वामभागमां शब्द करता श्वान शत्रुओनो भय सूचवे छे;

शृगालोनां फळ श्वाननी समानज छे, परंतु एमां विशेषता एटली छे के शिशिर ऋतुमां शृगाल मस्त होय छे अर्थात् ते ऋतुमां तेना शब्द आदि निष्फळ होय छे, शृगाल " हू हू " एवो शब्द बोली पछीथी " टा टा " एवो शब्द बोले तो ते पूर्ण अने बीजा शब्द दीप्त जाणवा.

लोमाशिकानो स्वाभाविक " कक्क " एवो शब्द पूर्ण अने ते शिवायना तमाम शब्द कृत्रिम एटलाज माटे दीप्त कहेवाय छे;

पूर्व अने उत्तर दिशामां शिवा शुभ फळ आपे छे, शान्त स्वर बोले तो ते सर्व दिशाओमां शुभ छे, जो धूमिता दिशानी तरफ मुख करी दीप्त स्वर बोले तो ते दिशाना स्वामीओनो नाश करे छे; दीप्त शिवा सर्व दिशाओमां अशुभ छे; जो ते दिवसे बोले तो विशेषे करी अशुभज लेखाय छे;

जो शिवा नगरना अथवा सेनाना दक्षिण भागमां स्थित थइ सूर्यनी तरफ मुख राखी शब्द करेतो अशुभ फळनुं सूचन करे छे; "याहि" एवो शब्द बोले तो अग्निनो भय, "टाटा" एवो शब्द बोले तो कोइ बन्धु आदिनुं मरण, अने "धिग् धिग्" एवो शब्द बोले तो दुष्कृत ज णावे छे, बोलती वखते एना मुखथी अग्निनी ज्वाळा निकळती होयतो देशनो विनाश थाय छे; केटलाएक आचार्यो ज्वाला सहित शिवाने दारुण कहेता नथी, तेओ कहे छे के सूर्य आदि-मां जे रीते अग्नि जेवो प्रकाश देखाय छे ते रीते तेना मुखनी स्वाभाविक लालाशने लीधे अ-ग्नि जेवुं जणाय छे माटे ए दारुण नथी.

जो शिवा दक्षिण दिशामां शब्द करे अने एनी पाछळ बीजी शिवा बोले तो फांसीए लटकावेला मृतक मनुष्यनुं सूचन करे छे; दक्षिण दिशामां एक शिवा शब्द करे अने तेनी पाछळ बीजी पश्चिम दिशामां बोलेतो ते जळमां डूबी मरेल मनुष्यने सूचवे छे;

शिवा एक वार बोली चुप रही जाय तो अक्षोभ, बे वार बोलेतो सारी वार्तानुं श्रवण, त्रणवार बोलेतो धननी प्राप्ति, चारवार बोलेतो प्रियनुं आगमन, पांचवार बोलेतो क्षोभ, छवार बोलेतो प्रधान पुरुषोमां भेद अने सातवार बोलेतो वाहनोनी संपत्ति सूचवे छे; सातथी उपरांत जेटलीवार शिवा शब्द करे ते तमाम निष्फळ होय छे;

जो शिवा दक्षिण दिशामां स्थित थइ शब्द करेतो छठ्ठा अने पांचमा फळ शिवाय बाकी-नां तमाम फळ विपरीत थइ जाय छे.

जे शिवाना बोलवाथी मनुष्योने रोमांच थइ जाय, अश्व, मूत्र अने विष्ठा करे अने त्रास उत्पन्न थाय ते शिवा कल्याण करती नथी.

प्रथम शिवा बोले अने तेनी पाछळ मनुष्य, हाथी अथवा घोडो शब्द करे तेमज शिवा फरी नहि बोलतां मौन रही जायतो ते सेनामां अने नगरमा कल्याणकारी थाय छे;

जो शिवा "भे भे" एवो शब्द बोलेतो भय, "भो भो" एवो शब्द बोलेतो विपत्ति "फिफे" एवो शब्द बोलेतो मृत्यु अने बंधन, तेमज "हू हू" एवो शब्द बोलेतो सांभळनार मनु-ष्यनुं हित करे छे; शांत दिशामां स्थित थइ शान्त स्वरथी "अ" एवो शब्द करी "ओ" एवो शब्द करे अथवा "टा टां" एवो उद्भट शब्द करे अथवा प्रथम "टे टे" एवो शब्द करी पाछ-ळथी "थे थे" एवो शब्द करे ए शब्दो शिवानी प्रसन्नताना छे अर्थात् ए प्रसन्न होय छे त्यारे-

ज एवा शब्द बोले छे एटला माटे ए शब्दो शुभ छे;

जो शिवा प्रथम उंचा स्वरथी भयंकर अक्षरनो उच्चार करी पाछळथी शृगाल तुल्य शब्द करवा लागे तो शिवा क्षेम अने धननो लाभ अथवा विदेशमां गएला प्रियथी समागम सूचवे छे;

वनना मृग ग्रामनी सीमामां दीप्त थइ शब्द करता स्थित थायतो एज वखते भयनुं सूचन करे छे, जता होयतो व्यतीत भय अने आवता होय तो आगळ उपर प्राप्त थनार भयने सूचवे छे; अने ग्राम आदिनी चारे तरफ घूमेतो तेने शून्य करी दे छे;

ग्रामनी सीमामां स्थित ए दीप्त मृगोना शब्दनी पाछळ ग्रामना जीव शब्द करेतो भय उत्पन्न थाय छे, वननाज जीव एनी पाछळ शब्द करेतो नगर आदिने शत्रुओ घेरे छे, तेमज वनना अने ग्रामना बन्ने जीव तेनी पाछळ शब्द करे तो ते नगरथी मनुष्योने केद करी शत्रुओ लइ जाय छे;

वननो जीव नगरना द्वार उपर उभो रहेतो नगरने शत्रु घेरे, नगरनी अंदर प्रवेश करेतो नगरनो नाश, जो तेने प्रसव थइ जायतो मृत्यु; ने वननो जीव नगरमां आवी मरण पामे तो भय अने घरमां प्रवेश करेतो ते घरना स्वामीनुं बंधन सूचवे छे.

गाय दीन होय तो राजानुं अशुभ अने पोताना पगथी भूमि उपर ताडन करे तो रोग थाय छे; गायोना म्होटां म्होटां नेत्र अश्रुओथी भर्यां रहे तो ते स्वामीनु मृत्यु सूचवे छे अने गाय भयभीत थइ म्होटो शब्द करे तो चोर आवे छे.

जो गाय दिवसे बोले तो अनर्थ अने रात्रिए बोले तो भय थाय छे. बळद रात्रिने समये बोले तो अशुभ समजवो अने गायोनो धणी माखीओ तेमज श्वान घेरे तो तुरतज वर्षा थाय छे.

जो गाय "हेम्भा" एवो शब्द बोलती घरमां आवे अने घरनुं सेवन करे तो ते गायोना गोष्ठनी वृद्धि करे छे; जो गायोना अंग जळथी भींजायेला रोमांचयुक्त होय अने प्रसन्न होय तो ते शुभ लेखाय छे; आज रीते महिषीनां फळ जाणवां.

अश्वना पर्याण स्थानथी पश्चिम भागमां ज्वलन होय तो सामान्यथी अशुभ अने वाम भागमां पण ज्वलन होय तो अवश्य अशुभ लेखाय छे, एथी अन्य जगोए अर्थात् पर्याण स्थानना पूर्वमां अथवा दक्षिण भागमां ज्वलन होयतो शुभ, अश्वना सर्व अंगोमां ज्वलन होय तेमज

वे वर्ष पर्यंत तेना शरीरथी अग्नि कण अथवा धूम्र निकळे तो पण क्षय करे छे. उत्पातने लीधे अश्वना अंगोथी अग्नि ज्वाळानी माफक निकळतो देखाय ते ज्वलन कहेवाय छे.

घोडानुं गुह्यांग प्रदीप्त होय अर्थात् एमां ज्वलन होय तो राजाना अन्तःपुरनो नाश, पेट प्रदीप्त होय तो कोशनो क्षय, मूळ द्वार अने पुच्छ प्रदीप्त होय तो युद्धमां पराजय तेमज अश्वनां मुख अने शिर ज्वलन युक्त होय तो युद्धमां जय प्राप्त थाय छे;

स्कंध अर्थात् ग्रीवानां बन्ने पार्श्व, आसन अने अंस अश्वनां ए अंगोथी ज्वलन निकळतो होय तो जय अने पाछला पगनो ज्वलन होय तो स्वामीनुं बंधन सूचवे छे; ललाट, छाती, नेत्र अने भुजाथी धूम्र निकळे तो विजय थाय छे;

नासिकानां छिद्र, प्रोथ, मस्तक, अश्रुपात अने नत्रे ए अंगोमां रात्रिने समये ज्वलन थाय तो जय सूचवे छे; पलाशवर्ण, ताम्रवर्ण, कृष्णवर्ण, कर्बुर, शुक्रवर्ण अने श्वेतवर्ण अश्वोना अंगोमां ज्वलन थाय तो ते निरंतर शुभ लेखाय छे.

घास अने जळथी द्वेष, पतन, कारण विना प्रस्वेद आववो अथवा कंपवुं, मुखथी लोही पडवुं अथवा धुमाडो निकळवो, रात्रिए उंघ न आववी, परस्पर लडवुं, दिवसे निद्राथी आलस्य युक्त तेमज चिन्ता युक्त थवुं, साद अने नीचे मुख राखवुं ए सर्व चेष्टा अश्वोनी अशुभ गणाय छे;

पर्याण आदि युक्त अर्थात् कसेला अश्व उपर अन्य अश्व चडे तो ते अने निरंतर जेना उपर स्वारी करता होइए ते अश्व आरोग्यता युक्त होय अने तेने अकस्मात् रोग आदि कांइ विपत्ति आवी जाय तो ते पण अशुभ लेखाय छे;

जे अश्व क्रौंचपक्षी पेठे शब्द करे, ग्रीवाने स्थिर राखी मुख उंचुं उठावी शब्द करे, मधुर उंचा प्रतिध्वनी युक्त शब्द करे तेमज प्रसन्नता पूर्वक मुखमां ग्रास भरी शब्द करे तो शत्रुओथी जय मळवानुं सूचवे छे;

जे समये अश्व शब्द करे ते समये तेनी समीपे पूर्ण पात्र, दधि, ब्राह्मण, देवता, गन्ध, पुष्प, फळ अने सुवर्ण आदि अथवा बीजां कांइ सर्षप, गोरोचन आदि मंगळ द्रव्य होय तो अवश्य जय थाय छे.

जे भक्षण करवानां द्रव्य, पीवानां द्रव्य अने लगामने प्रसन्न थइ ग्रहण करे अथवा स्वामीने जे वात रुचती होय तेनुं आनंदथी ग्रहण करे अने जेनी द्रष्टि दक्षिण पार्श्व तरफ होय एवा

अश्वो अभिष्ट फळ आपे छे.

जो अश्व पोताना वाम चरणोथी भूमिनुं ताडन करे तो स्वामीनुं विदेशमां प्रयाण अने संध्याने वखते दीप्त दिशा तरफ मुख राखी शब्द करे तो स्वामीनो बंधनपूर्वक पराजय थाय छे.

अश्वो घणाज शब्द करे, पुच्छना वाळोने फेलावे अने शयन करे तो प्रयाणने सूचवे छे, जो रुवाडां खेरे, दीन अने रुखा शब्द करे तेमज धूळनुं भक्षण करे तो स्वामीने भय थवानुं सूचन करे छे.

जो अश्व जानुने भेळा करी संपुटने आकारे जमणे पडखे शयन करे अने जमणो पग उंचो करी उभा रहे तो स्वामीनो जय सूचवे छे; आ फळ बीजां वाहनोमां पण यथासंभव जाणी लेवुं.

जे समये राजा अश्व उपर चडवा तैयार थाय, ते समये अश्व विनयथी नम्र थइ जाय, अने जे दिशा तरफ प्रयाण करवानुं होय, ते दिशा तरफ चाले तेमज बीजा घोडानो शब्द सांभळी शब्द करे, अथवा पोताना जमणा पडखांनो स्पर्श करे, तो तुरतज पोताना स्वामीनी लक्ष्मीने वधारे छे;

जे अश्व वारंवार लाद अने पिशाव करे, प्रहार करवाथी पण सीधो न चाले, विना कारण चमके तेमज जेना नेत्र आंसुओथी भर्या होय एवा अश्व पोताना स्वामीनुं शुभ करता नथी.

हाथीना दात गळी जाय अथवा विवर्ण थइ जाय तो तेनां फळ दांतना त्रुटवा सरखांज छे;

हाथीना दांतना मूळ, मध्य अने अग्रभागमां देवता, दैत्य अने मनुष्य स्थित छे; ए भागोमां जो छेद आदि होय तो क्रमथी, पूर्ण, मध्यम अने स्वल्प फळ, शीघ्र, मध्यकाळ अने विलंबथी थाय छे.

हाथीनो जमणो दांत मूळ, मध्य अने अग्रथी त्रुटे तो क्रमथी राजाने, देशने अने सेनाने पलायन करवुं पडे छे, अर्थात् शत्रुना भयथी भागवुं पडे छे; तथा वामदंत मूळ, मध्य अने अग्रथी त्रुटे तो क्रमथी राजपुत्र, पुरोहित अने हस्तिओना स्वामीनो तेमज आटविक, राजानी राणी अने प्रधान पुरुषोनो पण क्षय थाय छे;

जो हाथीना बन्ने दांत त्रुटी जाय तो ते राजाना सर्व कुळनो क्षय थवानुं सूचवे छे;

सौम्य ग्रहनां लग्न, सौम्य तिथि अने सौम्य नक्षत्र आदिमां दंत भंग थाय तो ते शुभ फळनी वृद्धि थाय छे, अने क्रूर लग्न आदिमां दंत भंग थाय तो अशुभ फळ सूचवे छे;

क्षीरवृक्ष तथा फळ अने पुष्पयुक्त वृक्षोना उखेडवाथी अथवा नदी किनाराना विघट्टनथी जो हाथीना वामदांतना मध्य भागनो भंग अथवा खंडन थाय तो शत्रुनो विनाश सूचवे छे अने एथी विपरित होय तो शत्रुनी वृद्धि करे छे;

जे हाथी विना कारण चालतां ठोकर खाय, जेना कर्ण हालता बंध थाय, जे अति दीन होय, धीरे धीरे लांबा श्वास लीए, सुंढने भूमि उपर टेकावे, जेना नेत्र चकित अने मुकुलित होय, जे बहु उंघे, जे तरफ लइ जवो होय ते तरफ न जाय, न खावाना पदार्थो खावा लागे, अंगथी वारंवार रुधिर टपकावे अने विष्टा करे ते हाथी पोताना स्वामीने भय उपजावे छे;

जे हाथी पोतानी इच्छाथी वल्मीकस्थाणु, गुल्मक्षुप अने तरुओनुं मर्दन करे, जेनी द्रष्टि प्रसन्न होय, जे तरफ जवानुं होय ते तरफज उंचुं मस्तक उठावी शीघ्र गतिथी गमन करे, माथे होदो नांखती वखते सुंढथी वारंवार जळना बिन्दुओ उडावे अथवा गर्जना करे अथवा एज वखते मदयुक्त थइ जाय अने जे सुंढथी पोताना जमणा दांतने लपेटे ते हाथी पोताना स्वामीनो जय सूचवे छे;

जो ग्राह हाथीने पकडी जळनी अंदर लइ जाय तो राजानुं मृत्यु, अने हाथी जळनी अंदरथी ग्राहने पकडी बाहेर आवे तो राजानीवृद्धि थाय छे.

पूर्व देशमां रहेवावाळा मनुष्योने काक जमणी बाजु अने करायिका डावी बाजु होय तो शुभ लेखाय छे; बीजी दिशाओना देशोमां काक डावी बाजु अने करायिका जमणी बाजु होय तो शुभ थाय छे;

वैशाख महिनामां निरुपद्रव वृक्ष उपर काकनो माळो होय तो सुभिक्ष अने कल्याण, तथा ज्यां निन्दित काष्टोथी युक्त अने सुकां वृक्ष उपर काकनो माळो होय, तो ते देशमां दुर्भिक्ष अने भय थाय छे.

वृक्षमां पूर्व दिशानी शाखा उपर काकनो माळो होय, तो आश्विन अने कार्तिकमां, पश्चिम शाखा उपर होय तो श्रावण अने भाद्रपदमां, दक्षिण अथवा उत्तरनी शाखा उपर होय तो भाद्रपद अने आश्विनमां, तेमज वृक्षनी उपर मुख्य शाखामां काकनो माळो होय तो चारे

महिना वर्षा थाय छे; अग्निकोणनी शाखा उपर होय तो खंड वृष्टि थाय छे, नैर्ऋत्य कोणनी शाखा उपर होय तो शरदऋतुनी खेती सारी पाके छे, तेमज वायव्य अने इशान कोणनी शाखा उपर काकनो माळो होय तो सुभिक्ष, तथा वायव्य कोणमां होय तो उंदर घणाज थाय छे.

ज्यां शर, कुश, गुल्म, वेल, धान्य, देवप्रासाद, गृह अने खाडामां काकनो माळो होय ते देश चोर, अनावृष्टि अने रोगोथी पीडा पामी पामी शून्य थइ जाय छे.

काकने बे अथवा त्रण बच्चां थाय तो सुभिक्ष, अने पांच बच्चां थाय तो बीजो राजा बने छे. काक पोतानां इंडांने फेंकी दिए, एकज इंडु मूके अथवा प्रसवहीन होय तो अशुभ गणाय छे.

काकनां बच्चां चोर नामक गंधद्रव्यना समान रंगनां होय तो चोरथी भय, चित्रवर्ण होय तो मृत्यु, श्वेतवर्ण होय तो अग्नि भय अने अंग हीन होय तो दुर्भिक्षिनो भय सूचवे छे.

कागडाओ विना कारण ग्रामनी वच्चे भेळा थइ शब्द करे तो दुर्भिक्षथी भय थाय छे, चक्रने आकारे स्थित होय तो ग्रामने शत्रुओ घेरी ले छे अने केटलेक ठेकाणे काक टोळे वळी बेसे तो उपद्रव थाय छे.

काक निर्भय थइ पोतानी चांचथी, पगोथी अने पंजाओना प्रहारथी मनुष्योनो पराभव करे तो शत्रुओनी वृद्धि थाय छे; जो काक रात्रिने समये विचरे तो मनुष्योनो विनाश सूचवे छे.

आकाशमां दक्षिण क्रमथी अर्थात् पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर ए रीते काक भ्रमण करे तो पोताथीज अने वामक्रमथी भ्रमण करे तो शत्रुथी भय उपजे छे. तेमज काक घणी व्याकुळता पूर्वक आकाशमां भ्रमण करेतो अनव स्थिति थाय छे;

काक उंचु मुख करी पांखोने हलावतो होय तो मार्गमां भय, अन्नने चोरी लइ जाय तो दुर्भिक्ष; सेनाना अंगोपर बेसेतो युद्ध अने तेनी पांखो कोकिल तुल्य अति कृष्ण वर्ण होय तो चोरी थाय छे;

कागडो शय्या उपर भस्म, हाडकुं, केश अथवा पांदडा लइआवी राखे तो शय्याना स्वामीनुं मृत्यु. मणि, पुष्प अने फळ आदिथी शय्याने ताडन करे तो पुत्र जन्म, अनें बीजी कोइ वस्तुथी ताडन करे तो कन्यानो जन्म थाय छे;

जो काक रेती, धान्य, लीली मृतिका, पुष्प अने फळ आदिथी मुख भरी आवे तो धन-

नो लाभ अने मनुष्योनी समीपेथी कांइ वस्तु उठावी लइ जाय तो भय थाय छे;

वाहन, शस्त्र, जोडा, छत्र, शरीरनी छाया अने अंगनुं कुट्टन करे तो मृत्यु अने एनी पूजा करे अर्थात् एना उपर पुष्प आदि नांखे अथवा चरके तो अन्ननो लाभ थाय छे;

काक जे द्रव्य लइ आवे तेनो लाभ अने जे द्रव्य उपाडी जाय तेनो नाश थाय छे; पीत वस्तुथी सुवर्ण, कपासथी वस्त्र अने श्वेतवस्तुथी चांदी आदिनो लाभ तेमज हानि जाणवी;

जो काक वर्षाऋतुमां क्षीरवृक्ष, अर्जुन वृक्ष, अशोक वृक्ष अथवा नदीना बन्ने तरफना किनारा उपर बेसी शब्द करेतो वर्षा थवानुं सूचवे छे. अने अन्य ऋतुमां शब्द करेतो वादळां थाय छे; एज रीते धूळथी अथवा जळथी स्नान करेतो वर्षा ऋतुमां वर्षा अने अन्य ऋतुमां दुर्दिन थाय छे;

जो कागडो वृक्षना कोटरमां बेसी क्रूर शब्द बोले तो महा भयनुं सूचन करे छे अने जळने जोइ शब्द करे अथवा वादळ गरजी रह्या बाद बोले तो वर्षा थाय छे, लतामंडप उपर बेसी सूर्य भणी मुख राखी दुःखित थइ, चांचथी कूटतो पांखो हलावे तेमज लाल रंगनी वस्तु, बळेली वस्तु, तृण अथवा काष्ठने लइआवी घरमां राखे तो ए अग्निनो भय सूचवे छे.

जो काक घरमां सूर्य सामे मुख राखी पूर्व आदि चारे दिशाओ तरफ द्रष्टि करतो शब्द करे तो घरना धणीने क्रमथी राजभय, चोरभय, बंधन अने कलह तेमज चारे विदिशाओ तरफ द्रष्टि करी बोले तो पशुओने भय प्राप्त थाय छे;

शान्त पूर्व दिशा तरफ द्रष्टि करतो काक शब्द करे तो राजपुरुष अने मित्रनुं आगमन, सुवर्णनो लाभ तेमज शाळनो भात अने गोळ युक्त भोजन मळवानुं सूचवे छे; शान्त अग्निकोण तरफ द्रष्टि करतो काक शब्द करे तो अग्निथी आजीविका चलावनार सोनी आदि अने युवान स्त्रीथी समागम तेमज उत्तम धातुनो लाभ थाय छे; शांत दक्षिण दिशा तरफ द्रष्टि करतो काक बोले तो अडद अने कुलत्थनुं भोजन मळे छे, तथा गावावाळाओथी समागम थाय छे; शान्त नैर्ऋत्य कोण तरफ द्रष्टि करतो काक शब्द करे तो दूत, अश्वनां उपकरण दधि, तेल, मांस अने भोजन करवाना पदार्थोनो लाभ थाय छे; शान्त पश्चिम दिशा तरफ द्रष्टि करतो काक बोले तो मांस, मद्य, आसव, धान्य अने समुद्रोमां उत्पन्न थएला रत्नोनी प्राप्ति थाय छे; शान्त वायव्य

कोण तरफ द्रष्टि करतो काक शब्द करे तो, लोह, आयुध सरोवरमां उत्पन्न थयेलां द्रव्य, वेलनां फळ अने भोजननी प्राप्ति थाय छे; शान्त उत्तर दिशा तरफ द्रष्टि करतो काक शब्द करे तो घृतथी भींजाएलुं भोजन अने एक बळदनो पण लाभ थाय छे. आ सर्व फळ घर उपर बेसी काक बोले त्यारे ते घरना स्वामीने थाय छे.

प्रयाण समये प्रयाण करवावाळा पुरुषना काननी बरोबर थइ काक उडी जाय तो कल्याण करे छे, कार्यसिद्धि थती नथी अने शब्द करतो काक यात्रा करवावाळानी सन्मुख आवे तो प्रयाणथी पाछो वाळे छे.

जो काक यात्रा करवावाळाना वामभागमां प्रथम शब्द करी पछीथी दक्षिण भागमां शब्द करे तो धनने हरे छे अने प्रथम दक्षिणभागमां शब्द करी पछीथी वामभागमां बोले तो धननो लाभ थाय छे; केवळ वामभागमांज शब्द करी अनुलोम गति करे अर्थात् यात्रालुनी साथे चाले तो धननो लाभ करे छे;

पूर्व दिशामां रहेवावाळा मनुष्योने काक दक्षिण तरफ शब्द करे अने अनुलोम गति थाय तो धननो लाभ सूचवे छे;

यात्रालुना वाम भागमां शब्द करतो काग प्रतिलोम गति थाय अर्थात् तेनी सन्मुख आवे तो प्रयाणमां विघ्न करे छे. ते काक एम सूचवे छे, के यात्रा करवाथी जे फळनी चाहना छे ते घेर बेठांज मळशे.

यात्रालुना दक्षिण भागमां शब्द करी जो कागडो वाम भागमां शब्द करेतो कार्यनी मनमानी सिद्धि थाय छे. यात्रालुनी पाछळ शब्द करी जो शीघ्र गतिथी आगळ चाल्यो जाय तो प्रयाण करनारने आगळ उपर घणु धन मळे छे;

जो कागडो यात्रालुनी पाछळ शब्द करी दक्षिणतरफ थइ तुरत चाल्यो जाय तो यात्रालुना शरीरथी रुधिर निकळे छे अने जो एक पगे उभो रही सूर्य भणी द्रष्टि राखी शब्द करेतो पण यात्रालुना शरीरथी आगळ उपर रुधिर वहे छे; तेमज सूर्य तरफ जोइ एक पगे उभो रही चांचथी पोतानी पांखोने खणे तो आगळ उपर कोइ प्रधान पुरुषना वधने सूचवे छे.

खेतीयुक्त खेतरमां काक शान्त थइ शब्द करे तो खेती सहित भूमिनो लाभ अने ग्रामनी सीमाने छेडे स्थित थइ व्याकुळता पूर्वक शब्द करेतो यात्रा करवावाळाने कलेश थाय छे;

जो काक सुन्दर तथा स्निग्ध वृक्ष उपर, पत्र पल्लव, पुष्प अने फळोथी झुकेलां वृक्षो उपर तेमज सुगंधयुक्त मधुर फळोवाळा, क्षीरयुक्त, व्रण रहित, सारी रीते स्थित थयेला अने मनोहर वृक्षो उपर बेठेल होयतो अर्थसिद्धि सूचवे छे.

पाकेली खेती, लीली दुर्वायुक्त स्थल, गृह, देवप्रासाद, हर्म्य, लीला वर्गना स्थान, धन्यस्थान, उन्नतस्थान, अने मंगळस्थान एमांथी गमे ते स्थान उपर बेसी काक शब्द करे तो धननी प्राप्ति थाय छे.

गायनुं पुच्छ अथवा वल्मीक उपर बेसी कागडो बोलेतो सर्पनां दर्शन थाय छे अने महिष उपर बेसी काक शब्द करेतो तेज दिवसे ज्वर चडे छे; गुल्म उपर बेसी कागडो बोलेतो शुभाशुभ फळ स्वल्प जाणवुं.

यात्रा करवावाळाना वाम भागमां तृणोना ढगला उपर अथवा जळ उपर बेसी काक शब्द करेतो कार्यनो नाश अने उपरना भागमां अग्निथी बळेलां अथवा विजळीथी हणायेलां वृक्ष पर बेसी काक बोलेतो मृत्यु थाय छे.

कांटावाळां वृक्षोथी युक्त उत्तम वृक्ष उपर काक बेठो होयतो कार्यसिद्धि अने कलह सूचवे छे; कांटावाळां वृक्षपर काक बेठो होयतो क्लेश अने जे वृक्षने वेल लागी रही होय तेना उपर बेसी काक शब्द करेतो बंधन थाय छे.

जो काक उपरथी कपायेलां वृक्ष उपर बेठो होयतो यात्रालुनुं अंग कपाय, शुष्क वृक्षपर बेठो होय तो कलह अने यात्रा करवावाळानी आगळ अथवा पाछळ छाण उपर बेठो होयतो धननी प्राप्ति थाय छे.

मृतक पुरुषना शरीर उपर अथवा हाथ पग आदि कोइ अवयवो उपर बेसी काक यात्रालुनी सन्मुख शब्द करेतो मृत्युनो भय सूचवे छे; चांचथी हाडकांने तोडतो शब्द करेतो यात्रा करवावाळानुं हाडकुं त्रुटे छे.

जो कागडो रस्सी, हाडकुं, काष्ठ, कांटावाळी वस्तु, अने केश मुखमां लइ शब्द करे तो यात्रालुने क्रमथी सर्पनो, रोगनो, दाढवाळा जीवनो, चोरनो, शस्त्रनो अने अग्निनो भय थाय छे.

श्वेत पुष्प, विष्ठा आदि अमेध्य वस्तु अथवा मांस मुखमां लइ काक शब्द करे तो प्रयाण करवावाळानां कार्यनी मनमानी सिद्धि सूचवे छे अने उंचुं मुख करी पांखोने हलावतो वारंवार बोले तो यात्रायां विघ्न करे छे.

सांकळ, वरत्रा अथवा वेलनुं ग्रहण करी काक बोले तो यात्रालुने बंधन, अने पाषाण उपर बेसी शब्द करे तो भय, तेमज क्लेश युक्त अने अपूर्व पान्थथी समागम थाय छे.

बे काक परस्पर मुखमां भोजन आपे तो यात्रा करवावाळाने उत्तम संतोष, तेमज स्त्री अने पुरुष बन्ने काक भेळाज शब्द करे तो यात्रालुने स्त्रीनो लाभ थाय छे.

स्त्रीना शिरमाथे जळथी भरेला घडा उपर बेसी काक शब्द करे तो स्त्री अने धननो लाभ सूचवे छे; घटने चांचथी हणे तो पुत्र मरण अने घट उपर विष्ठा करे तो अन्ननो लाभ थाय छे.

स्कंधावारआदिना प्रवेश वखते पांखो हलावतो काक शब्द करे तो बीजा स्थान उपर जइ रहेवानुं अने पांखो हलाव्या शिवाय शब्द करे तो केवळ भयनुं सूचन करे छे.

सेना, नगर तेमज ग्रामआदिमां गीध तथा कंकपक्षीओ सहित मांस ग्रहण कर्या विना कागडो प्रवेश करे अने आपसमां विरोध न करे तो शत्रुनी साथे स्नेह बंधाय अने ते काक आदिपक्षी परस्पर विरोध करे तो शत्रुथी युद्ध थाय छे.

जो काक सूकर उपर बेठो होय तो यात्रा करवावाळाने बंधन, कर्दमलिप्त सूकर उपर बेठो होय तो धननो लाभ अने गर्दभ अथवा उंट उपर बेठो होय तो कल्याण थाय छे; केटलाएक आचार्योनुं एम कहेवुं छे के काक गर्दभ उपर बेठो होय तो प्रयाण करनारनुं मृत्यु थाय छे.

काक अश्व उपर बेसी शब्द करे तो ते अश्वआदि वाहनोनो लाभ सूचवे छे; प्रयाण करनारनी पाछळ गमन करतो काक शब्द करे अथवा बीजां कोइपण पक्षी गमन करे तो रुधिरपात थाय छे.

दिशाओना बत्रीश विभाग करी जे फळ जेवी रीते प्रथम कह्यां छे ते शुभाशुभ फळ तेवीजरीते यात्रा करवावाळाओए समजवां जोइए.

पोताना माळामां बेसी कागडो "का" एवो शब्द बोले तो ते शब्द निष्फळ अने "कव"

एवो शब्द बोले तो ते पोतानी प्रीतिने अर्थे थाय छे; "क" एवो शब्द बोलेतो प्रिय मित्रनी प्राप्ति, "का" एवो शब्द बोलेतो कलह "कुरु कुरु" एवो शब्द बोलेतो हर्ष, "कटकट" एवो शब्द बोलेतो दही भातना भोजननी प्राप्ति अने "केकव" अथवा "कुकु" एवो शब्द बोलेतो प्रयाण करनारने धननो लाभ सूचवे छे; "खरेखरे" एवो शब्द बोलेतो विदेशमां गयेल पथिकनुं आगमन, "कखाख" एवो शब्द बोलेतो प्रयाण करनारनुं मृत्यु, "आ" एम उच्चार करेतो यात्रामां विघ्न अने "खलखल" एवो शब्द करेतो तेज दिवसे वर्षा थाय छे; "काका" एवो शब्द बोलेतो यात्राळुनो विनाश अने "काकटी" एवो शब्द बोले तो भोजनमां विष आदि मळेलुं छे एम सूचवे छे; "कवकव" एवो शब्द करेतो कोइनी साथे प्रीति अने "कगाकु" एवो शब्द बोलेतो प्रयाण करनारनुं बंधन थाय छे; "करकौ" एवो शब्द बोलेतो वर्षा, "गुडव" एवो शब्द बोलेतो भय, "वड", एवो शब्द बोलेतो वस्त्रनो लाभ अने "कलप" एवो शब्द बोलेतो शूद्रनो ब्राह्मणो साथे समागम थाय छे, "फड्" एवो शब्द बोलेतो फळोनी प्राप्ति तेमज फळोने लइ जवावाळानां दर्शन, "टड्" एवो शब्द बोलेतो प्रयाण करनारा उपर प्रहार, "स्त्री" एवो शब्द करे तो स्त्रीनो लाभ, "गड" एवो शब्द करे तो गायोनो लाभ अने "पुड" एवो शब्द बोले तो पुष्पोनो लाभ, "टाकुटाकु" एवो शब्द बोले तो युध्ध, "गुहु" एवो शब्द बोले तो अग्निनो भय अने "कटेकटे" एवो शब्द बोले तो कलह थाय छे.

जो काक "टाकुलि, चिंटिचि, केंकेके अने पुरं ए शब्दो बोले तो ते केवळ दोषने माटेज छे.

आ एक काकनां कह्यां ए प्रमाणेज बे काकनां शब्द तेमज चेष्टा आदिनां फळ छे; बीजा पक्षीओनां फळ पण काक तुल्य जाणवां.

वनमां रहेनारा जीव अने उपरना भागमां जेने दाढ होय छे एवा सूकर आदि जीव ए सर्वेनां फळ श्वान तुल्य समजी लेवां.

वर्षा ऋतुमां स्थलचर अने जलचर जीवोनो व्यत्यय थाय अर्थात् स्थलपर रहेवावाळा बकरा आदि जीव जळमां प्रवेश करे अने जळमां रहेवावाळा मत्स्य आदि जीव स्थल उपर आवे तो घणीज वृष्टि थाय छे; वर्षा ऋतु विना अन्य ऋतुमां आवो व्यत्यय थाय तो भय उपजे छे.

जे घरमां मधमाखी मधपुडो बांधे ते घर तुरतज शून्य थइ जाय छे अने जेना शिर उपर लीली माखी बेसे तेनुं मृत्यु थाय छे.

जो कीडी पोतानां इंडाओने पाणीमां नांखे तो वर्षा रोकाय छे अने नीचा स्थानथी वृक्ष उपर अथवा उंचा स्थान उपर उपाडी लइ जाय तो वर्षा थाय छे;

यात्रामां कार्य मूळ शकुनने आधीन छे अर्थात् शुभ शकुन होय तो सफळ यात्रा अने अशुभ शकुन होय तो प्रयाण निष्फळ थाय छे; पूर्वोक्त रीतिथी अंतर शकुन होय तो निश्चय करी तेनुं फळ तेजदिवसे जाणवुं अने सर्व शकुन कार्यना प्रारंभमां, प्रयाण वखते अने प्रवेश समये जोवा जोइए; छींक थतां कोइ कार्य न करवुं कारणके छींक कोइ पण कार्यमा शुभ गणाती नथी.

जे राजा शकुनोने माने तेने ते शकुन शुभ, दशानुं फळ, निर्विघ्नपणे कार्यसिद्धि, मूळ स्थाननी रक्षा, सहायता करवावाळाओनो समागम, अभिष्ट कार्यनी सिद्धि अने आरोग्यनुं सूचन करे छे.

केटलाएक आचार्योनो एवो मत छे के पोताना स्थानथी एक कोश चाल्या गया बाद शकुननो शब्द थाय तो ते निष्फळ गणाय छे अर्थात् कोशनी अंदर शकुन होय तो सफळ थाय छे.

जो पहेलुं शकुन अशुभ होय तो अग्यार प्राणायाम करी राजाए प्रयाण करवुं, बीजुं शकुन अशुभ होय तो सोळ प्राणायाम करी प्रयाण करवुं, त्रीजुं शकुन पण अशुभ होय तो पोताना गृह तरफ पाछुं फरी आववुं; अर्थात् त्रण अशकुन होय तो प्रयाण न करवुं.

पूर्व आदि दिशा, स्थान, जीवनी चेष्टा, दीप्त अथवा शांत स्वर, वार, नक्षत्र, मूहूर्त, होरा, करण, लग्न, नवांश, द्रेष्काणआदि अंश, चर, स्थिर अने द्विस्वभाव आदि राशिओनां बल अबल ए सर्वनो विचार करी शकुनोना शब्दने जाणवावाळा तेनां फळ कही शके छे.

एक स्थानमां रहेला पुरुषोने शकुन बे प्रकारे कार्योनुं सूचन करे छे तेमां एक आगामी अर्थात् आगळ उपर थनारा अने बीजां स्थिर अथवा वर्तमान छे.

राजा, दूत अने चरथी उपजेलां कार्य अभिप्रात तथा बन्धुजन आदिथी समागम ए

सर्व कार्य आगामी संज्ञक छे.

उद्‌वद्ध अर्थात् गमन आगमन रहित त्यांज स्थित. कोइनी साथे संयोग, भोजन, चोर, अग्नि, वर्षा, उत्सव, पुत्रजन्म, मृत्यु, कलह अने भय ए कार्योनो समूह स्थिर कहेवाय छे. स्थिर राशि लग्न होय एमां चन्द्र वेठो होय तेमज ए लग्नमां शकुन होयतो स्थिर कार्य अने चन्द्रयुक्त चर लग्नमां शकुन होयतो चर कार्य जाणवुं.

पत्थर, मन्दिर अने देवालय आदि निश्चल स्थान उपर अथवा भूमि अने जळनी समीपे शकुन होयतो शुभ अशुभ स्थिर कार्य अने चल स्थान आदिमां शकुन स्थित होयतो चर कार्योनुं आगमन सूचवे छे.

जलचर राशि लग्न, जलनक्षत्र, जलमुहूर्त, जलदिशा अने जलयुक्त स्थानमां स्थित शकुन तथा अमावास्या अने पूर्णिमाने दिवस स्थित थएलां शकुन दीप्त थइ शब्द करेतो ते सर्व वर्षानुं सूचन करे छे अने जळमां रहेवा वाळां शकुन शांत होय तोपण वर्षा सूचवे छे.

अग्निदिशा, अग्निलग्न, अग्निमुहूर्त अने अग्निस्थानमां सूर्यप्रदीप्त शकुन शब्द करे तो अग्निनो भय उत्पन्न थाय छे.

विष्टिमां, मकर तथा कुंभ लग्नमां, कांटावाळां वृक्ष उपर अने पत्रहीन वल्लरी उपर वेसी शकुन शब्द करे तो चोरी थाय छे.

गाममा रहेवावाळां शकुन स्वर अने चेष्टाथी दीप्त तथा तीव्र थइ शब्द करता कांटावाळां वृक्ष उपर वेसी मेष अने वृश्चिक लग्नमां बोले तेमज दक्षिणवाम नजरे पडे तो क्लेश उपजावे छे.

कर्क लग्नमां, शुक्रना नवांशमां अथवा विदिशामां स्थित शकुन नीचुं मुख राखी शब्द करे अने ते दीप्त होय तो ते विदिशामां प्रथम जे स्त्रीनी उत्पत्ति कही गया ते स्त्रीनी साथे संयोग थाय छे.

पुरुष राशि लग्नमां, प्रतिपदा तेमज तृतीया आदि विषम तिथिमां अने चारे दिशाओमांथी गमे ते दिशामां स्थित पुरुषशकुन दीप्त थइ बोले तो पुरुषोथी संयोग तेमज पुरुष राशिआदि मिश्र होय तो नपुंसकथी समागम थाय छे; एवीज रीते सूर्यनी राशिनुं नवांश अथवा लग्न होय अथवा सूर्य पोतेज लग्नमा वेठो होय ए समये दीप्त शकुन शब्द करे तो ते मुख्य पुरुषनुं

आगमन सूचवे छे.

जे लग्नमां कार्यनो आरंभ करवो होय ते लग्न पर्यंत सूर्यनी राशिथी संपत् विपत् ए क्रमथी गणतरी करवी अर्थात् जे राशि उपर सूर्य होय ते स्थाने संपत्, बीजी राशि उपर विपत् त्रीजी उपर संपत् ए रीते लग्न पर्यंत् गणवाथी लग्ननी राशि उपर ए बेमांथी जे आवे ते प्रस्तुत कार्यमां संपत्ति अथवा विपति जाणवी;

आ रीते शाकुनज्ञ शास्त्रीना मुखथी शुभाशुभ शकुनोनुं श्रवण करी कृपालदेवजीए तेनी विद्वत्ता उपर प्रसन्न थइ पचीश हजार मुद्रानुं पारितोषिक आप्युं. पंडिते कुमार कृपालनेदेवजीने विनति करी के, वर्षाऋतु व्यतीत थइ शरदऋतुनो समारंभ थइ चुक्यो छे. शास्त्रमां कह्युं छे के विजयार्थी राजाओए आश्विन अथवा कार्तिक मासना शुक्लपक्षमां द्वादशी, अष्टमी अथवा पूर्णिमाने दिवसे अश्व, गज अने मनुष्योनुं विधिवत् पूजन करी प्रयाण करवुं के जेथी निसंशय जय प्राप्त थाय. कुमारकृपालदेवजीए ते वात कबुल राखी पंडितजीनी सलाह प्रमाणे गढ सीकरीथी इशानकोणमां उत्तम भूमिना मध्य भागमां श्रेष्ट काष्टनुं सोळ हाथ उंचुं अने दश हाथ पहोळुं एक तोरण तैयार कराव्युं; सर्ज वृक्ष, गूलर अने अर्जुन वृक्षना काष्टनुं शान्तिगृह बनावी तेमां कुशना ढगलाओ कराव्या अने वांसना मत्स्य, ध्वज तथा चक्रो बनावी शान्तिगृहनुं द्वार सुशोभित कर्युं. कार्तिक शुदि ८ ने दिवसे घोडाओनुं शान्तिगृहमां स्थापन कर्युं. तेओनी पुष्टिने माटे भिलामो, शाळ, कठोळ अने श्वेतसरसव पीळी दोरीवाळी पोटलीओमां नांखी ते पोटलीओ तेओने गळे वांधी. ए रीते सूर्य, वरुण, विश्वेदेवा, ब्रह्मा, इन्द्र अने विष्णुना मंत्रोथी शान्तिगृहनी वच्चे सात दिवस पर्यन्त अश्वोनी शान्ति करी, पूजन कराएला अश्वोने अनुचित वचनो नहि कहेतां, ताडन कर्या वगर पुण्याहवाचनना शब्द, शंख तुरीना नाद अने गीत आदिथी निर्भय कर्या. आठमे दिवस तोरणनी दक्षिण दिशामां उत्तराभिमुख कुश अने वृक्षोनी छालथी ढांकेलुं एक आश्रम बनाव्युं तथा तेनी सन्मुख वेदी बनावी ते उपर अग्निनुं स्थापन कर्युं; चंदन, कुष्ठ, मजीठ, हरताल, मनः शिला, प्रियंगु, वचदंती, गिलोय, अमृतांजन, हळदर, सुवर्णपुष्प, अग्निमन्थ, श्वेता, पूर्णकोशा, कुटकी, त्रायमाण, सहदेवी, नागकेसर, कौंचशतावरी अने सोमवल्ली ए सर्व वस्तुओने एकत्र करी कळशोनी अंदर नांखी तथा मध, खीर अने यावक आदि अनेक प्रकारना भक्ष्य पदार्थोथी सारी रीते बलि आप्युं. खदिर, पलाश,

गूलर काश्मरी अने पीपळना काष्ठना समिध बनाव्यां. श्रीमान कृपालदेवजी अश्ववैद्य, तथा ज्योतिषीने आगळ राखी अग्निनी समीपे पूर्व तरफ मुख राखी वाघना चर्म उपर विराजमान थया, उत्तम लक्षणोथी युक्त हाथी तथा घोडाने दीक्षा दइ, स्नान करावी नविन वस्त्र ओढाडी पुष्पमाळा, गन्ध तथा धूप आदिथी तेनुं पूजन करी, मिष्ट वचनोथी शान्त्वन आपी तेओने धीरे धीरे अनेक प्रकारनां वाद्य, शंख अने पुण्याहवाचनना शब्दोथी दिगंतने गजावता आश्रमना तोरण पासे लइ आव्या. तोरण समीपे आवेला हाथी तथा घोडाए पोतपोतानी मेळे जमणो पग उंचो करी उभा रही कुमारकृपालदेवजीनो विना यत्न शीघ्र विजय सूचव्यो. पुरोहिते अभिमंत्रण करी एक पिंड अश्वना मुख आगळ धर्यो ते पिंडनुं तुरत घोडाए भक्षण करी मखवानना जय प्रदर्शित कर्यो; प्रथम स्थापन करेला कलशोना जळमां गूलरनी डाळ आर्द्र करी शान्तिक अने पौष्टिक मंत्र भणता पुरोहिते ते डाळीथी घोडाओनो, राजानो अने हाथीओ सहित सैन्यनो स्पर्श कर्यो. राज्यनी वृद्धिने माटे फरी पण सर्वेनुं पूजन करी अथर्वण वेदमां कहेला अभिचार मंत्रोथी राज्य पुरोहिते माटीथी शत्रु मूर्ति बनावी तेनी छातीमां वरछीनो प्रहार कर्यो. पुरोहिते अभिमंत्रण करी लगामने घोडाना मुखमां चढावी, त्यारबाद नीराजन कराएला कृपालदेवजी ते अश्व उपर आरुढ थइ पोतानी सेना सहित उत्तम शकुन जोइ प्रथम इशानकोण तरफ रवाना थया. मृदंग अने शंखना ध्वनिओ, हर्षित हाथी अने मनुष्योथी घेराएला कुमार कृपालदेवजीए सीकरीनुं राज्य छोडी पोतानी प्रजा सहित पश्चिममां पधारी सिन्धुदेशनी अन्दर निर्विघ्ने कीर्तिगढमां राजधानी जमावी.

कृपालदेवजीए विधिवत् कीर्तिगढना तख्तपर पाय धारण कर्या पछी प्रजाने पुत्रवत् पाळी अनेक रीते राज्यनी आबादी करी; कवि पंडितोने मानपुरःसर दान आपी मखवान कुळनी महान प्रतिष्ठा वधारी, षट्शास्त्र सपंन्न विद्वज्जनोने पोताना सलाहकारक तरीके राख्या; प्रजाहित अर्थे केटलांएक विद्यालयो अने जलाशयो बंधाव्यां, प्रजा पण पोतपोताना वर्णाश्रम धर्म प्रमाणे वर्तन करी सुखशान्तिमां दिवसो गुजारवा लागी, **कृपालदेवजीना** स्वर्गवास पछी तेना कुमार **सारंगधरजी** कीर्तिगढनी गादीए बेठा. तेओए पण पोताना पितानी माफक राजधर्मनुं अवलंबन करी प्रजानो प्यार मेळव्यो, तेना कुमार **विजयपालजी** कुंवर पदे गुजरी जतां तेना कुमार **अजयभूपाले** दादाना स्वर्गवास पछी कीर्तिगढनो राजवैभव भोगव्यो. त्यारबाद **मानपालजी देवपालजी**, अने **जोधपालजी** क्रमपूर्वक गढ करेन्टीनी गादीए बेठा. **जोधपालजी**ना पुत्र

चन्द्रपालजी कुंवर पदे स्वर्गवासी थतां तेना कुमार सूर्यपालजी कीर्तिगढना अधिपति थया. ते पछी उदयभानु, धरणीधर अने धीरसिंहजी ए त्रण क्रमपूर्वक राजाओ थया, धीरसिंहजीना कुमार धारसिंहजी कुंवर पदे गुजरी जतां तेना पुत्र पातालसिंहजी करेन्टीना प्रजापति थया. त्यारबाद पृथीराज तथा मूळराजजी ए बे क्रमपूर्वक थया. मूळराजजीना कुमार अक्षयराजजी कुंवर पदे स्वर्गवासी थतां तेना पुत्र इन्द्रनाणजी कीर्तिगढनी गादीए बेठा. ते पछी लखधीरजीए श्वेतछत्र धारण करी कीर्तिगढनी प्रजानुं उत्तमरीने पालन कर्युं. लखधीरजीना पुत्र रणमलसिंहजी कुंवर पदे गुजरी जतां तेना कुमार क्षेमराजजी गादीपति थयो. त्यारबाद बागसिंहजी अने जयमलजी-ए क्रमपूर्वक कीर्तिगढनुं आधिपत्य स्वीकारी विश्वमां कीर्ति वधारी. जयमलजीना कुमार यौवश्वजी कुंवर पदे गुजरी जतां तेना पुत्र इन्द्रसिंहजी गादीए बेठा. ते पछी वनवीरसिंहजी, विक्रमसिंहजी अने हमीरसिंहजी क्रमपूर्वक कीर्तिगढना अधीश थया. हमीरसिंहना कुमार करणसिंहजी कुंवर पदे स्वर्गवासी थतां तेना पुत्र प्रतापसिंहजी राजा बन्या, त्यारबाद सूर्यसिंहजी, सुंदरसिंहजी, सुरतानसिंहजी, गंगेवजी, अने गोवरधनसिंहजी ए पांच राजाओ क्रम पूर्वक कीर्तिगढना अधिपति थया, गोवर्धनसिंहजीना पुत्र श्रीपतजी कुंवर पदे गुजरी जतां तेना कुमार धनराजजी गादीए बेठा. ते पछी, धीरसिंहजी, धरणीधरजी अने रत्नसिंहजी ए त्रण क्रम पूर्वक राजाओ थया. रत्नसिंहजीना पुत्र रणजीतसिंहजी कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना कुमार वैरीसालजीए कीर्तिगढना राजतख्तपर पादधारण कर्यो. त्यारबाद नारमलजी, भोजराजजी अने धीरसिंहजीए, क्रमपूर्वक प्रजानुं पालन कर्युं धीरसिंहजीना कुमार पुष्पसिंहजी कुंवर पदे गुजरी जतां तेना पुत्र देवराजजी राजा थया. ते पछी पृथ्वीराजजीए प्रजापालपद धारण करी गढ करेन्टीनी प्रजानुं सासन कर्युं. ए पृथ्वीराजजीना कुमार सालणदेवजी कुंवर पदे स्वर्गवासी थतां तेना पुत्र सूर्यभाणजी गादीपति बन्या. ते पछी सोमेश्वरजी अने शातलजी ए बे क्रमपूर्वक राजाओ थया. शातलजीना पुत्र सुंदरसिंहजी कुंवर

पदे गुजरी जतां तेना कुमार **लखधीरजी** गादीए बेठा, ते पछी **सुरतानसिंहजीए** गढ करेन्टीनो राजवैभव भोगव्यो, तेना कुमार **हमीरसिंहजी** कुंवर पदे स्वर्गवासी थतां नरपति **नरअमरजी** ए कीर्तिगढना राजतख्तपर पाय धारण करी प्रजापालनमां यश प्राप्त कर्यो. तेओने **जयमलजी, राणंगजी, वैरीसालजी, लुणंगजी, वापलजी, क्षेमराजजी, विक्रमसिंहजी, विठ्ठलजी** अने **हांफाजी** नामे नव कुमार थया, तेमां पाटवी कुमार **जयमलजी** कीर्तिगढनी गादी बेठा. ते समये मखवान शब्दनो अपभ्रंश "मकवाणा" ए प्रमाणे थतां राजर्षि **कुंडमालजीना** वंशजो "मकवाणा" पदने धारण करवावळा थया. नरपति **नरअमरजीए** पोतानी हयातीमांज **राणंगजी** आदि आठे भाइओने चाळीश गाम समभागे वहेंची आप्यां हतां, तेमां **राणंगजीए** राणंगपर वसाव्युं तेना वंशजो राणंग मकवाणा, **वैरीसालजीए** गढ वीलोर वसाववाथी तेना वंशजो वापल मकवाणा, **लुणंगजी** ए लुणंगपुर वसाव्युं जेथी तेना वंशजो **लुणंग** मकवाणा, **वापलजीए** गढ वालायच वसाववाथी तेना वंशजो **वालायच** मकवाणा, **क्षेमराजजी** गढखोड वसाववाथी तेना वंशजो खवड मकवाणा (जेओ हाल सुदामडा, सेजकपर अने धांधलपर तालुकदार खवड काठीओ छे ते), **विक्रमसिंहजी** ए बुहापुर वसाव्युं जेथी तेना वंशजो बुहा मकवाणा, **विठ्ठलजीए** विठ्ठलपुर वसाव्युं जेथी तेना वंशजो **विठ्ठल** मकवाणा अने **हांफाजीए** हांफानेर वसाव्युं जेथी तेना वंशजो **हांफा** मकवाणा कहेवाया. ए रीते आठे भाइओ पिताए आपेल गरासमांथी पोत पोताने नामे नवां गामो वसावी त्यां आनंद पूर्वक रह्या. कीर्तिगढना अधिपति मकवाणा **जयमलजीने वाघसिंहजी** नामे कुमार थया. पिता **जयमलजीना** स्वर्गवास पछी तेओए कीर्तिगढनी गादीए बेसी महान कीर्ति मेळवी. तेओने सूर्य समान तेजस्वी वैरीआश (व्यास) नामे घणाज भाग्यशाळी अने बुद्धिमान कुमार थया. बालपणथीज उत्तम गुण मेळववामां उत्सुक व्यासजीए युवावस्थानो आरंभ थतां राजनीति उपर विशेष लक्ष आप्युं, पिता **वाघसिंहजीनो** स्वर्गवास थवाथी गढ करेन्टीनी गादीए बेसी ए व्यास मकवाणाए पोताना बुद्धिबळथी राज्यने विशेष आबाद कर्यु बीजी तमाम रीते पोतानी प्रजा सुख वैभवमां दिवसो निर्गमन करती हती, परंतु जगत्‌ना प्राण अन्न छे अर्थात् अन्नविना कोइथी प्राण धारण करी शकातां नथी, ए अन्न

वर्षाऋतुने आधीन होवाथी वर्षाऋतुनुं यत्न पूर्वक भविष्य जाणवा साक्षर ज्योतिषीओने बोलावी पोते प्रश्न कर्युं; आज्ञा श्रवण करतांज तेमांना दीर्घदर्शी एक दैवज्ञे कह्युं के—मागशर महिनानी शुक्ल प्रतिपदा पछी ज्यारे चंद्रमा पूर्वाषाढा नक्षत्रपर स्थित थाय छे त्यारथी गर्भनी शरुआत थाय छे, ते गर्भनां शुभाशुभ लक्षण कहुं छुं ते श्रवण करो;—

जे नक्षत्रपर चन्द्रमा स्थित थतां गर्भ बंधाय ते गर्भनो एकसो पचाणु दिवसे अर्थात् चन्द्रमा पाछो एज नक्षत्रपर आवतां प्रसव थाय छे.

शुक्ल पक्षमां बंधाएला गर्भो साडा छ महिना पछी कृष्णपक्षमां प्रसवे छे, एज रीते कृष्ण-पक्षमां बंधाएला गर्भो शुक्लपक्षमां प्रसव पामे छे, दिवसे बंधाएला रात्रीए अने रात्रीए बंधाएला गर्भो दिवसे प्रसवे छे, संध्या काळना गर्भोनो संध्या काळेज प्रसव थाय छे परंतु प्रातः संध्यामां बंधाएला गर्भो सायंसंध्याए अने सायंसंध्याना प्रातःसंध्याए प्रसव थाय छे.

मागशर महिनानो पहेलो अर्थात् शुक्ल पक्षमां तेमज पोष महिनाना अजवाळीयामां उत्पन्न थएल गर्भो मन्द फळ आपे छे अर्थात् थोडा वरसे छे; आ गर्भ लक्षणमां पुर्णिमाथी महिनाओनी गणतरी करवी; पोष महिनाना कृष्ण पक्षमां बंधायेला गर्भो श्रावण मासना शुक्ल पक्षमां वरसे छे, माघना शुक्ल पक्षमां बंधाएला गर्भो भादरवा शुदमां वरसे छे, फागणना शुक्ल पक्षना गर्भो भादरवा वदमां एम उत्तरोत्तर गर्भथी साडा छ मासने अंतरे प्रसव थाय छे.

गर्भ वखते जो मेघ पूर्व दिशामां होय तो प्रसव वखते पश्चिमे वरसे छे अने जो गर्भ वखते पश्चिमे होय तो प्रसव वखते पूर्वमां थइ वरसे छे तेमज वायुनो पण विपर्यय थाय छे अर्थात् गर्भ वखते पूर्वनो वायु चालतो होय तो प्रसव वखते पश्चिमनो वायु चाले छे, अन्य दिशामां पण एवी-ज रीते विपर्यय समजी लेवो.

गर्भ वखते आह्लादकारक मंद मंद पवन उत्तर, इशान अथवा पूर्व दिशानो चालतो होय, आकाश निर्मळ होय, चन्द्र तथा सूर्य स्निग्ध, शुक्लवर्ण अने म्होटा परिवेष अर्थात् कुंडाळाथी घेराएला होय, म्होटा तेमज अति स्निग्ध वादळांओथी युक्त आकाश होय, मेघसूचि थाय अथवा क्षुरक अर्थात् सूचि समान लाल रंगना वादळांओथी व्याप्त आकाश होय, आकाशनो अति नील वर्ण होय, मेचक समान आकाशनो रंग होय, चन्द्रमा अने नक्षत्र निर्मळ होय; इन्द्रधनुष्य, मेघनी गं-

भीर गर्जना, विजळीनुं चमकवुं, प्रतिसूर्य अर्थात् बीजा सूर्यनुं देखावुं ए बधा लक्षण संध्यामां थाय तो ते संध्या शुभ होय छे. पक्षी अने मृगोना समूह उत्तर, इशान अने पूर्व दिशामां स्थित थइ सूर्य तरफ मुख राखी मधुर स्वरथी उच्चार करे, ग्रहबिंब म्होटां देखाइ नक्षत्रोनी उत्तर तरफ थइ गमन करे, अने तेनां किरणो निर्मळ, अने उत्पात रहित होय, वृक्षो पण निरुपद्रव अंकुरोथी युक्त होय, मनुष्यो अने पशुओ प्रसन्न होय गर्भोनी पुष्टि करनारा आ सर्व लक्षण मागशर महिनानी शुक्ल प्रतिपदाथी आरंभी वैशाखनी समाप्ति पर्यन्त जोवां जोइए.

मागशर अने पोषमां सन्ध्यानो रंग लाल, परिवेष सहित मेघ, मागशरमां बहु शीत न पडे अने पोषमां बहु हिम न पडे तो ते शुभ गणाय छे. माघमां प्रचंड पवन फुंके, सूर्य अने चन्द्रमानी कान्ति तुषारथी मलिन रहे, टाढ बहु पडे, तेमज वादळांथी ढंकाएल सूर्यनो उदय अने अस्त थाय तो ते शुभ जाणवां. फागणमां प्रचंड अने रुखो पवन फुंके, आकाशमां स्निग्ध मेघ उदय पामे, सूर्यचन्द्रना परिवेष खंडित होय, सूर्य कपिल वर्ण अथवा ताम्रवर्ण होय तो ते शुभ लेखाय छे. चैत्र महिनाना गर्भ पवन, मेघवर्षा अने परिवेषथी युक्त होय तो शुभ समजवा, वैशाखमां मेघ, पवन, वर्षा, विजळी अने वादळाओनी गर्जनाथी युक्त गर्भ होय ते शुभ गणाय छे.

जे गर्भ समये अति शुक्लवर्ण होय अथवा अति कृष्णवर्ण होय तेमज जेनी आकृति मत्स्य, मकर, कूर्म अने शिशुमार आदि जळजंतुओ समान होय ते मेघ प्रसव समये घणुं जळ वरसे छे.

जे मेघ गर्भ समये सूर्यना प्रचंड किरणोथी तपता होय अने ए वखते थोडो थोडो पवन चालतो होय तो ते मेघ प्रसव टाणे क्रोधथी अर्थात् म्होटी धाराओथी जळ वरसे छे.

गर्भ वखते उल्कापात थाय, विजळी पडे, धूळनी वृष्टि, दिग्दाह अथवा भूकंप थाय, गन्धर्वनगर देखाय, सूर्य मंडळमां कीलक जणाय, धूमकेतुनो उदय थाय, ग्रहयुद्ध तथा निर्घातना निनाद थाय, रुधिर आदिनी विकृत वर्षा थाय, परिघ अर्थात् उदय वखते सूर्य उपर वांकी मेघनी रेखा होय, इन्द्र धनुष देखाय, ग्रहण थाय इत्यादि उत्पातो अने बीजा दिव्य, आन्तरिक्ष अने भौम ए त्रण प्रकारना उत्पातो थवाथी गर्भ नष्ट थइ जाय छे अर्थात् प्रसव टाणे मेघ वरसतो नथी.

उपर कहेल सामान्य लक्षणोथी युक्त पोताना ऋतुस्वभावथी अर्थात् मागशर अने पोषमां बंधाएला गर्भोनी वृद्धि थाय छे अने एथी विपरीत जे गर्भ बंधाय तेनी हानि थाय छे.

पूर्वाभाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा, उत्तराषाढा, पूर्वाषाढा अने रोहिणी ए पांच नक्षत्रोमां पूर्वोक्त लक्षणोथी युक्त गर्भ ते ऋतुमां गर्भ बंधाय तेनी वृद्धि थाय छे अर्थात् ते बहु वरसे छे.

शत भिषक्, आश्लेषा, आर्द्रा, स्वाति, अने मघा ए पांच नक्षत्रोमां गर्भ बंधाय ते शुभ होय छे अने घणा दिवस पर्यन्त पूर्वोक्त लक्षणोथी पुष्टि पामे छे. दिव्य, भौम अने आन्तरिक्ष ए त्रण प्रकारना उत्पातोथी हणाएला गर्भो नष्ट थाय छे अर्थात् जेटला दिवस उत्पातोथी गर्भहत थाय तेटला दिवस सुधी वृष्टि थती नथी.

पूर्वोक्त पूर्वाभाद्रपदा आदि नक्षत्रोमां अने मागशर आदि महिनाओमां जे गर्भ वृद्धि पामे छे तेना वरसवाना दिवसोनी संख्या नीचे मुजब समजवी.

मागशरमां वृद्धि पामेलो गर्भ साडा छ महिना पछी आठ दिवस सुधी वरसे छे, पोष महिनानो गर्भ छ दिवस, माघनो सोळ दिवस, फागणनो चोवीश दिवस, चैत्रनो वीश दिवस अने वैशाख मासमां पूर्वोक्त नक्षत्रोनी वच्चे जे गर्भ पुष्ट थयेल होय ते प्रसव टाणे त्रण दिवस पर्यन्त वरसे छे. आ रीते शतभिषक् आदि जे पांच नक्षत्रो कह्यां एमांथी गर्भ ते एक नक्षत्रमां गर्भनी वृद्धि थाय तो वरसवाना दिवसोनी संख्या उपर मुजब जाणी लेवी.

जे नक्षत्रमां गर्भ बंधाय ते नक्षत्र क्रूर ग्रहयुक्त होय तो वरसती वखते करा तेमज वीजळी पडे अने जळनी साथे मत्स्य वरसे, एज नक्षत्रपर चन्द्रमा अथवा सूर्य बेठेल होय अने शुभ ग्रहयुक्त होय अथवा शुभ ग्रहोनी दृष्टि पडती होय तो घणीज वृष्टि थाय छे.

गर्भ समये जो विना कारण अति वृष्टि थइ जाय तो गर्भनो नाश थाय छे.

द्रोण एटले बसो पल तेनो अष्टमांश अर्थात् पचीश पलथी अधिक वर्षा थाय तो गर्भस्राव थइ जाय छे.

गर्भ वखते जो गर्भ पुष्ट होय अने प्रसव समये भौम आदि ग्रहोना रोहिणी श्रवण आदि नक्षत्रपर रहेवाथी अथवा बीजा कोइ उत्पात आदि निमित्तथी वरसवा न पामे तो ते फरी बीजा गर्भ ग्रहण वखते करा सहित जळ वरसे छे.

जेम गायनुं दूध घणो वखत रहेवाथी कठिन थइ जाय छे तेम जल पण वरसवाने समये नहि वरसवाथी कठिन थइ करा बनी ज.य छे.

पवन, जळ, विजळी, गर्जना अने मेघ ए पांच निमित्त छे. गर्भ समये ए पांचे निमित्त होय तो प्रसव टाणे ते मेघ सो योजन पर्यन्त वरसे छे, चार निमित्त होय तो पचाश योजन, त्रण निमित्त होय तो पचीश योजन, वे निमित्त होय तो साडावार योजन अने एकज निमित्त होय तो ते मेघ पांच योजन पर्यन्त वरसे छे.

एक हाथ लांबो अने एक हाथ पहोळो कुंड बनावी वृष्टिनो आरंभ थतांज वर्षा वच्चे राखी देवो, वर्षा थइ रह्या बाद एमां जेटलुं जळ भराय तेनो तोल करी जळनुं प्रमाण जाणवुं.

गर्भ समये पूर्वोक्त पांच निमित्त होय तो प्रसव टाणे एक द्रोण अर्थात् बसोपल जळ वरसे छे अर्थात् उपर कहेल कुंडमां द्रोण परिमाण जळ एकठुं थ.य छे, गर्भ समये पवन होय तो त्रण आढक अर्थात् दोढसो पल जळ वरसे छे, गर्भ वखते विजळी थती होय तो छ आढक, मेघयुक्त गर्भ होय तो नव आढक अने गर्भ समये मेघ गरजे तो प्रसव टाणे वार आढक जळ वरसे छे.

पचाश पलनो एक आढक अने चार आढकनो एक द्रोण थाय छे.

जे गर्भ पवन, जळ, वीजळी, गर्जना अने मेघ ए पांच रुपाथी युक्त होय तो घणुं जळ वरसे छे. परंतु एवो गर्भ जो गर्भ समयेज वहु वरसी जाय तो प्रसव टाणे घणीज थोडी वृष्टि थाय छे.

जयेष्ट महिनाना शुक्ल पक्षमां अष्टमीथी आरंभी चार दिवस पर्यन्त वायु धारण काळ छे अथवा वायुथी गर्भ धारण थाय छे, प्रसव थतो नथी. ए चारे दिवसोमां मंद अने उत्तम पवन होय तेमज आकाश स्निग्ध मेघोथी ढंकायु रहे तो शुभ गणाय छे.

जयेष्ट महिनामां शुक्ल पक्षमांज स्वाति आदि चार नक्षत्रोमां वर्षा थवाथी श्रावण आदि चार महिना धारणा परिस्रुत थइ गइ अर्थात् वृष्टि नहि थाय एम क्रमथी जाणी लेवुं. आनुं रहस्य ए छे के जयेष्ट शुक्ल पक्षान्तर्गत स्वाति नक्षत्रमां वर्षा थाय तो श्रावणमां थती नथी, विशाखामां वर्षा थाय तो भादरवामां थती नथी, एवीज रीते अनुराधा अने जयेष्ठामां वर्षा थाय

तो क्रमथी आश्विन अने कार्तिक मासमां वृष्टि थती नथी.

ए चारे धारणा अर्थात् अष्टमी आदि चारे दिवसो एक सरखा वीती जाय तो शुभ गणाय छे, अने ए चार दिवसोमां जो कांइक न्यूनाधिक थाय तो ते अशुभ लेखाय छे अने चोरथी भय थाय छे.

विजळी, जळना बिन्दुओ, धूळ उडाडतो पवन अने सूर्य चन्द्रनुं वादळाओमां ढंकाइ रहेवुं ए सर्व वात होय तो धारणा शुभ लेखाय छे. जो उत्तम विजळी शुभ दिशा अर्थात् उत्तर, इशान अने पूर्वमां चमके तोपण खेतीओनी वृद्धि थाय छे.

उपर कहेल चार दिवसोमां धूळ उडे, जळ वृष्टि थाय, बाळको शुभ खेल खेले, पक्षीओ मधुर बोल बोलता धूळ अने जळ आदिमां क्रीडा करे, सूर्य चन्द्रने स्निग्ध अने रमणीय परिवेष होय, तोपण खेतीनी वृद्धि करनार वृष्टि थशे एम समजी लेवुं. ए चारे दिवसोमां स्निग्ध सुश्लिष्ट अने प्रदक्षिण गमन करनारा वादळां होय अर्थात् पूर्वमां थइ दक्षिण तरफ जाय, दक्षिणथी पश्चिममां, पश्चिमथी उत्तरमां अने उत्तरथी पूर्वमां गमन करे तो सर्व खेतीओने सिद्ध करनारी घणी वृष्टि थाय छे.

हवे जयेष्ठ मासनी पूर्णिमा पछी पूर्वाषाढा आदि कोइ नक्षत्रमां पहेली वर्षा थाय तेनां शुभाशुभ फळ अने जळनो तोल आदि कहुं छुं ते श्रवण करो.

जे वर्षाथी भूमि उपर मुद्रा थाय अर्थात् धूळ दबाइ जाय अथवा तृणोना अग्र भाग उपर जळना बिन्दुओ स्थिर थाय ए पूर्वाषाढा आदि नक्षत्रमां थएली पहेली वर्षाथी जळनुं प्रमाण कही शकाय छे.

प्रवर्षण काळमां गमे तेवी वर्षा थाय तोपण आगळ वर्षा काळमां उत्तम वृष्टि थाय छे.

केटलाएक एम कहे छे के प्रवर्षण काळमां गमे त्यां दश योजनना मंडळमां वृष्टि थाय तो वर्षा काळमां सारी रीते वर्षा थाय छे, केटलाएकनो एम मत छे के प्रवर्षण काळमां बार योजनना मंडळमां वृष्टि थाय तो आगळ वर्षा काळमां घणीज उत्तम वर्षा थाय छे एथी न्यून वरसवाथी आगळ उत्तम वृष्टि थती नथी.

प्रवर्षण काळमां पूर्वाषाढा आदि जे जे नक्षत्रमां वर्षा थाय ते ते नक्षत्रमां आगळ प्रसव

काळे घणे भागे फरी वृष्टि थाय छे, जो ज्येष्ठ मासनी पूर्णिमा पछी पूर्वाषाढा आदि सत्यावीशे नक्षत्रोमां वर्षा न थाय तो आगळ प्रसव काळे पण वृष्टि वीलकुल थती नथी.

हस्त, पूर्वाषाढा, मृगशिर, चित्रा, रेवती अने धनिष्ठा ए नक्षत्रोमांथी प्रवर्षण काळे गमे ते नक्षत्रमां वृष्टि थाय तो प्रसव काळे सोळ द्रोण जळ वरसे छे अर्थात् पूर्वे कह्या प्रमाणे बनावी राखेल कुंडमां सोळ द्रोण जळ एकठुं थाय छे.

शतभिषक्, ज्येष्ठा अने स्वातिमां वरसवाथी चारद्रोण, कृत्तिकामां वरसवाथी दशद्रोण, श्रवण, मघा, अनुराधा, भरणी अने मूळमां वृष्टि थवाथी चौद द्रोण, पूर्वा फाल्गुनीमां वरसवाथी पचीश द्रोण, पुनर्वसुमां वीश द्रोण, विशाखा अने उत्तराषाढामां वृष्टि थवाथी पण वीश द्रोण, आश्लेषामां तेर द्रोण; उत्तराभाद्रपदा, उत्तराफाल्गुनी अने रोहिणीमां वरसवाथी पचीश द्रोण, पूर्वा भाद्रपदा अने पुष्यमां वृष्टि थवाथी पंदर द्रोण, अश्विनीमां बार द्रोण अने आर्द्रा नक्षत्रमां प्रवर्षण काळे वर्षा थाय तो प्रसव काळे अढार द्रोण जळ वरसे छे परंतु प्रवर्षण काळे जे नक्षत्रोमां वृष्टि थाय ते नक्षत्र निरुपद्रव अर्थात् कोइ प्रकारना उत्पात आदिथी पीडित न होय तो आ जळ परिमाण सारी रीते मळे छे, अने एथी वर्षाकाळे वर्षानी न्यूनता तेमज अधिकतानुं ज्ञान थाय छे.

प्रवर्षण काळनुं नक्षत्र सूर्य, शनि अने केतुथी पीडित होय अर्थात् ए एना उपर बेठा होय, मंगळथी अभिघातित होय अर्थात् मंगळे वक्र अति वक्रयोग तारकाभेदन आदि ए नक्षत्र पर करेल होय अथवा दिव्य, भौम अने आन्तरिक्ष उत्पातोथी पीडित होय तो अशुभ गणाय छे, अने प्रसव काळे वर्षा वीलकुल थती नथी. जो उपर कहेल नक्षत्र शुक्र, बृहस्पति, बुध अने पूर्ण चन्द्रथी युक्त होय तेमज कोइ प्रकारना उत्पातथी पीडित न होय तो शुभ लेखाय छे अने वर्षा उत्तम थायछे.

मागशरथी वैशाख पर्यन्त गर्भ तपासे, ज्येष्ठ मासना शुक्ल पक्षमां अष्टमी आदि चार दिवस वायु धारण निरखे, ज्येष्ठना शुक्ल पक्ष पछी पूर्वाषाढा आदि सत्यावीश नक्षत्रोमां प्रवर्षण अने जळ परिमाण तपासे तेमज बीजा पण तमाम उत्पातो उपर नजर राखे त्यारे श्रावण आदिथी कार्तिक पर्यन्त वर्षानुं ठीक ठीक ज्ञान थाय छे.

आषाढ महिनाना कृष्णपक्षमां रोहिणी नक्षत्रने चन्द्रमानी साथे संयुक्त जोइ तेथी थता शुभाशुभ योग जाणवा माटे नगरथी उत्तर अथवा पूर्व दिशामां जे उत्तम स्थळ होय त्यां ब्राह्मण अर्थात् ज्योतिषी जइ त्रण दिवस रहे अने हवन करे, अश्विनी आदि नक्षत्रो सहित सूर्य आदि

नव ग्रह आलेखी धूप दीप अने वलिथी एओनुं पूजन करे, पछी पद्मराग आदि रत्न जळ अने अनेक प्रकारनी औषधिओ युक्त आम्र आदि वृक्षोना कोमळ पत्रोथी ढांकेलां चंदन अक्षत आदिथी पूजित अने अकाल मूल अर्थात् जेना तळीयां फाळां न होय एवा कळशोथी चारे दिशाओमां सुशोभित अने जेना उपर दर्भ बिछावेल होय एवा स्थंडिल माथे ज्योतिषी रात्रीने वखते शयन करे.

सर्व प्रकारना बीजोने **महाव्रत** नामना मंत्रथी अभिमंत्रण करी कलशमां नांखी तेना उपर सुवर्ण अने कुशयुक्त जळ छांटी वायु, वरुण अने चंद्रमाना मंत्रथी होम करे.

प्रथम आठे दिशा आदिनी साधन रीतिथी साधना करी बार हाथ उंचा वांस उपर चार हाथ लांबी सूक्ष्म वस्त्रनी काळा रंगनी ध्वजा लगावी मध्यमां उभी करे, फरी ज्यारे रोहिणी उपर चन्द्मा आवे ए वखते ए ध्वजाथी पवनने जोवे के कइ दिशा तरफथी पवन आवे छे अने कइ दिशा तरफ जाय छे.

ए रोहिणीयोगमां वर्षानुं ज्ञान थवा माटे प्रहरोथी अर्धमास अर्थात् पखवाडीयाओनो विचार करे, आनुं तात्पर्य ए छे के जे अहोरात्रमां रोहिणीथी चन्द्रनो योग थाय ते दिवसे सूर्योदयथी आरंभी दरेक पहोरे जोया करवुं. जो पहेला प्रहरमां शुभ पवन होय तो श्रावणना प्रथम पक्षमां सारी वर्षा थाय छे अने अशुभ पवन होय तो ए पक्षमां वर्षा थती नथी. बीजा प्रहरना शुभ पवनथी श्रावणना बीजा पक्षनी वर्षा जाणे. ए रीते दिवस अने रात्रीना आठ पहोरना पवन उपरथी श्रावणथी कार्तिक पर्यन्त चार महिनाओना आठ पखवाडीयानी वर्षा जाणे तेमज प्रहरना विभाग करी पक्षना पंदर दिवसनी वर्षानुं ज्ञान मेळवे अर्थात् अर्ध प्रहरना पवनथी पक्षनुं अर्ध साडासात दिवसनी वर्षानो विचार करे. ए रीते बीजा विभागो करी प्रत्येक दिवसनी वर्षा जाणी लीए. कयांइ एम पण लखेल छे के रोहिणी योगवाळा दिवसना चार प्रहरना पवनथी श्रावण आदि चार महिनाओनी वर्षा जाणवी अने एक प्रहरना त्रीश विभाग करी महिनाना त्रीशे दिवसोनी वर्षा समजवी.

प्रदक्षिण अर्थात् पूर्वथी दक्षिण अने दक्षिणथी पश्चिम इत्यादि गमन करनार पवन शुभ गणाय छे. वायु जे दिशामां घणो काळ चाल्या करे तेने बळवान समजवो अर्थात् ए वायुथी ज्योतिषी शुभाशुभ विचार करे, जे वायु एकज वखत कोइ दिशा तरफ चाल्यो गयो होय तेनो

विचार करवो नरर्थक छे.

रोहिणी योग समाप्त थया बाद कुंभमां प्रथम राखेलां बीज तपासवां, एमां जे जे बीज अंकुरित थयां होय तेज धान्य ए वर्षमां थाय छे, जे बीजमां अंकुर न निकळ्यां होय तेनी उत्पत्ति थती नथी. ए बीजमां पण जे भाग अंकुरित थयो होय तेज भाग वृद्धि पामे छे.

रोहिणीनो चन्द्रथी योग थाय ते वखते शांत अर्थात् सूर्य तरफ मुख कर्या शिवाय पक्षी अने मृग मधुर शब्द करे, ए शब्दोथी दिशा शब्दायमान थइ रही होय, आकाश निर्मळ होय अने पवन उत्तम चालतो होय तो शुभ फळ प्राप्त थाय छे.

एवा म्होटा म्होटा मेघोथी आकाश व्याप्त होय के जेओ कयांइ श्वेत अने कृष्ण, कयांइ केवळ श्वेत अने कयांइ केवळ कृष्णवर्ण होय, विजळी चमकी रही होय, जे मेघोनो वर्ण शुद्ध होय, जेना समीपनो भाग सूर्यना किरणोथी रक्तवर्ण थएलो होय तेमज विद्युतयुक्त कृष्णवर्णना मेघोथी व्याप्त, अने इन्द्रधनुषथी युक्त आकाश देखाय तथा जे मेघो अंजनसमान अति कृष्णवर्णना सर्व आकाशने घेरी दिशाओमां पण लटकी जाय ते मेघ दुनिया उपर बहु वरसे छे.

पूर्वोक्त मेघथी त्रण दिवस, बे दिवस अथवा एकज दिवस आकाश घराएलुं रहे तो सुभिक्ष थाय छे, भूमि उपर मनुष्यो प्रसन्न रहेछे अने जळ पण घणो वखत रहेछे. जे मेघ आकाशमां रुखा, अल्प पवनथी उडाडेला अने मूक अथवा गर्जना हीन होय ते अशुभ होय छे अने वर्षा पण थती नथी.

मेघ रहित आकाशमां सूर्य प्रचंड किरणोथी तपे तो वर्षा थाय छे अथवा प्रफुल्लित कुमुदोथी सुशोभित सरोवर माफक रात्रीने वखते अति निर्मळ ताराओथी युक्त आकाश होय तोपण उत्तम वर्षा थाय छे.

मेघ पूर्व दिशानो होय तो खेती उत्तम थाय छे, अग्नि कोणनो होय तो अग्निकोप थाय छे अर्थात् बहु आग लागे छे, दक्षिणना मेघोथी खेतीनो नाश थाय छे, मेघ नैऋत्य कोणमां होय तो अर्ध खेतीनो क्षय थाय छे, पश्चिमनो होय तो वृष्टि उत्तम थाय छे, वायव्य कोणनो होय तो कयांइ कयांइ पवनयुक्त वर्षा थाय छे, उत्तर दिशानो होय तो घणी वर्षा थाय छे, इशान कोणनो होय तो खेती बहु सारी थाय छे, ए वखते जे दिशानो पवन चाले तेनुं फळ उपर प्रमाणे जाणी लेवुं.

उत्तर आदि दिशामां स्थापेला चार कलशनां प्रदक्षिण क्रमथी श्रावण मास आदि नाम राखवां अर्थात् उत्तर दिशानो कलश श्रावण, पूर्वनो भाद्रपद, दक्षिणनो आश्विन अने पश्चिमनो कार्तिक मास. जे महिनानो कलश जळथी भरेलो रहे ते महिनामां उत्तम वर्षा थाय छे. चारे कळश जळथी भरेला रहे तो चारे महिना वर्षा थाय छे. जे कळशनुं जळ टपकी जाय ते महिनामां वर्षा थती नथी. जेटलुं जळ न्यून थाय तेटली वर्षा पण न्यून जाणवी. बीजा पण घणा कलशो राजाओना अने देशोना नामथी स्थापन करी बीजे दिवसे जोवा जोइए. कलश फूटी जाय, एनुं जळ टपकी जाय, न्यून जळ थइ जाय अथवा कळश जळथी पूर्ण रहे ते अनुसार ए राजाओना अने देशोना भाग्य जाणवां जोइए. जेना नामनो कलश पूर्ण रहे तेने शुभफळ प्राप्त थाय छे, फूटी जाय तो नाश थाय छे, बधुंजळ निकळी जाय तो उपद्रव थाय छे अने थोडुं जळ निकळी जवाथी मध्यम फळ थाय छे.

दक्षिणनी तरफ दूर अथवा समीपे स्थित थइ गमे ते प्रकारे रोहिणी नक्षत्रथी चंद्रमा योग करे तो जगत्ने बधी रीते कष्ट पेदा थाय छे अर्थात् रोहिणीनी दक्षिणे चन्द्र रहे तो दुर्भिक्ष अने मरकी आदि रोगोथी प्राणीओ कष्ट पामे छे.

रोहिणीने स्पर्श करतो चन्द्र जो उत्तरनी तरफ थइ गमन करेतो अनेक उपद्रवो सहित सारी वर्षा थाय छे. जो चंद्र रोहिणीनो स्पर्श कर्या विना तेनी उत्तर तरफ गमन करे तो घणी वर्षा थाय अने जगत्मां सर्व प्रकारे कल्याण रहे.

आकाशमां जे रोहिणी नक्षत्रना शकटने आकारे पांच तारा छे तेने रोहिणीशकट कहे छे. जो चंद्रमा रोहिणी शकटना मध्य भागमां स्थित थाय तो सर्व मनुष्य शरणहीन थइ पोतानो देश छोडी क्यांइक चाल्या जाय, तेनां भुख्यां बाळको तेओनी पासे भोजन मागे छे अर्थात् अन्न दुर्लभ थइ जाय छे अने ए सर्व तपेला घडामां थोडां रहेलां जळनुं पान करे छे. अथात् जळ पण दुर्लभ थाय छे.

प्रथम चन्द्रनो उदय थाय अने पछीथी रोहिणी उदय पामी चंद्रनी पाछळ पाछळ गमन करे तो शुभ फळ प्राप्त थाय छे अने सर्व स्त्रीओ कामातुर थइ पुरुषोने वश रहे छे.

जे रीते कामी पुरुष पोतानी प्रिया पाछळ चाले छे ते रीते प्रथम रोहिणी उदय पामे

अने तेनी पाछळ चन्द्रमा उदय पामी गमन करे तो कामदेवना बाणोथी वींधाएला पुरुषो नारी-ओने वश रहे छे.

रोहिणी नक्षत्रथी अग्नि कोणमां चन्द्र रहे तो महान उपद्रव थाय छे, नैऋत्य कोणमां चन्द्र रहे तो अति वृष्टि अनावृष्टि आदि उपद्रवने पामेली खेती नष्ट थाय छे, वायव्य कोणमां चंद्र होय तो खेतीनो चय अर्थात् संग्रह मध्यम थाय छे अने रोहिणी नक्षत्रथी चंद्र इशान कोणमां होय तो खेती, धन, अने वर्षा आदि घणा लाभ थाय छे.

नक्षत्रोना सर्व ताराओमां जे तारा बहु तेज युक्त होय तेने योगतारा कहे छे. जो रोहि-णीना योगताराने चंद्रमा ताडन करे अर्थात् पोताना शृंगथी योगतारानो स्पर्श करे अथवा पोता-ना शरीरथी चंद्रमा ए योगताराने ढांकी दीए तो ताडन करवाथी प्रजामां दारुण भय अने ढांक-वाथी स्त्रीना हाथथी राजानुं मृत्यु थाय छे.

सायंकाळे गाय वनथी चरी आवे अने गाममां प्रवेश करे ते वखते एनी आगळ बळद होय अथवा काळा रंगना पशु बकरां आदि एनी आगळ आगळ चाले तो घणी वर्षा थाय तेमज श्वेत अने कृष्ण ए बन्ने रंगना पशु आगळ चाले तो मध्यम वर्षा थाय छे. शुक्ल वर्णना पशु आ-गळ चालेतो वर्षा बीलकुल थती नथी. ए रीते बीजा रंगना पशुओमां पण कल्पना करी लेवी अ-र्थात् ए पशुमां शुक्ल वर्ण अधिक होयतो न्यून वर्षा अने कृष्णवर्ण अधिक होयतो घणी वर्षा थाय छे.

जो मेघथी घेराएला आकाशमां रोहिणीयुक्त चंद्र न देखाय तो बहु भारी रोगनो भय प्राप्त थाय छे अने भूमि घणु जळ अने खेतीथी युक्त बने छे.

रोहिणीथी चन्द्रना योगनुं जे फळ कह्युं ते सर्व फळ आषाढ मासना शुक्ल पक्षमां स्वाति अने उत्तराषाढाथी ज्यारे चन्द्रमा योग करे ते वखते पण समजी लेवुं.

जे रात्रीमां चन्द्रनो स्वातिथी योग थाय ते रात्रीना त्रण विभाग करी फळ जोवुं. जो प्र-थम भागमां वर्षा थायतो सर्व खेतीनी वृद्धि समजवी, बीजा भागमां वर्षा थायतो तिल, मग अने अडदनी घणी पेदाश थाय छे अने त्रीजा भागमां वर्षा थायतो ग्रीष्म ऋतुनां अन्न जव, घउं ते-मज शरद ऋतुनां अन्न बाजरो, जुवार, अडद अने मग आदि थतां नथी. ए रीते दिवसना पहे-ला भागमां वर्षा थायतो आगळ उत्तम वर्षा थाय छे, बीजा भागमां वर्षा थाय तो पण आगळ

सारी वृष्टि थाय छे, परंतु ते कीडा अने सर्पो आदि जन्तुओ युक्त होय छे, अने दिवस रात निरंतर वृष्टि थया करेतो आगळ उपर तमाम उपद्रवोथी रहित घणी सारी वर्षा थाय छे.

चित्रा नक्षत्रना समसूत्र उत्तरमां अपांवत्स ए नामनो तारो छे, जो चन्द्र ए तारानी समीपे स्थित थाय तो स्वातिथी चंन्द्रनो योग शुभ होय छे.

माघ महिनाना कृष्णपक्षमां सप्तमीने दिवस स्वातियोगमां बरफ पडे अथवा प्रचंड पवन चाले, जळयुक्त मेघ वारंवार गरजे, आकाश वीजळीओनी पंक्तिथी व्याकुळ थाय अथवा वीजळी बहु चमके तेमज चन्द्र, सूर्य अने तारा न देखाय अर्थात् वादळांओथी ढांकया रहे तो वर्षा ऋतु उत्तम लेखाय छे. सर्व देश आनंदमां रहे छे अने वर्षी खेती घणी सारी थाय छे.

आ रीते फाल्गुन, चैत्र अने वैशाखना कृष्ण पक्षमां स्वाति योगनो विचार करवो तेमां पण विशेषे करी आषाढमां स्वातियोग जोवो.

उत्तराषाढा नक्षत्र युक्त आषाढ मासनी पूर्णिमाने दिवस पण स्वाति योगनी माफक सर्व विचार करवो, एमां विशेष कृत्य ए छे के सर्व बीजोनो बराबर तोल करी अने मंत्रथी अभिमंत्रण करी एक रात्री पर्यन्त राखी मुकवां; फरी बीजे दिवस एनो तोल करवो, जे बीज तोलमां वधे तेनी ए वर्षामां वृद्धि थाय छे. अने जे बीज तोलमां घटी जाय ते ए वर्षमां उत्पन्न थता नथी. नीचेना मंत्रोथी तुलानुं अभिमंत्रण करवुं.

स्तोतव्या मंत्रयोगेन सत्यादेवी सरस्वती:
दर्शयिष्यसि यत्सत्यं, सत्ये सत्यात्रताह्यसि ॥
येन सत्येन चन्द्रार्कौ, ग्रहाज्योतिर्गणास्तथा ।
उत्तिष्ठन्तीह पूर्वेण, पश्चादस्तं व्रजन्ति च ॥
यत्सत्यं सर्वदेवेषु, यत्सत्यं ब्रह्मवादिषु;
यत्सत्यं त्रिषु लोकेषु, तत्सत्यमिह दृश्यताम् ॥
ब्रह्मणो दुहिताऽसित्वमादित्येति प्रकीर्तिता ।
काश्यपी गोत्रतश्चैव नामतो विश्रुता तुला ॥

ए त्राजवाना बन्ने छावडां अलसीना कपडानां अने चार सूत्रथी बांधेलां बनाववां, ए चारे सूत्रोनुं प्रमाण दश दश आंगळनुं राखवुं अने बन्ने छावडां वच्चेनी कक्षा अर्थात् जे दोरी पकडी त्राजवुं उपाडाय छे ते दोरी छ आंगळ लांबी बनाववी.

सोनुं तोळवुं होय तो दक्षिण अर्थात् जमणी बाजुना छावडामां राखी तोळवुं अने बाकी-नी बधी वस्तु तेमज जळ उत्तर अर्थात् डाबी बाजुना छावडामां राखी तोळवुं जोइए. कुवानुं जळ तोलमां वधे तो थोडी वर्षा, झरणानुं जळ वधे तो मध्यम वर्षा, सरोवरनुं जळ वधे तो उत्तम वर्षा अने सर्व जळ वधे तो घणीज वर्षा थाय छे. कोइ पण जळ तोलमां न वधे तो वर्षा बीलकुल थती नथी, हाथीदांतना तोलथी, हाथीना रुवाडांना तोलथी, गाय घोडा आदि पशु तेमज सुवर्णना तोलथी राजा, मीणना तोलथी ब्राह्मण आदि वर्ण वर्ष महिना अने आठे दिशा तेमज बाकीनी वस्तुओनुं पोत पोताना तोलथी वधघट जाणी लेवुं; ए रीते सर्व वस्तुओनी हानि अने वृद्धि तो-लथी समजी शकाय छे.

सोनानी तुला उत्तम अने चांदीनी तुला मध्यम होय छे, जो ए बेउ न बनी शकेतो खदिरना काष्ठनी तुला बनाववी अथवा जे बाणथी कोइ मनुष्य वींधाएल होय ते बाणनी तुला बनाववी. तुलानी डांडीनी लंबाइ एक वितस्ति अर्थात् बार आंगळ राखवी जोइए.

जे वस्तु तोलमां घटे तेनो नाश अने जे वधे तेनी वृद्धि थाय छे, तथा जे चीज वधे नहि तेम घटे नहि तेनी हानि के वृद्धि थती नथी. आ तुला कोशनुं रहस्य रोहिणी योगमां पण मनुष्ये करी जोवुं.

स्वाति, उत्तराषाढा अने रोहिणी ए त्रण नक्षत्रोथी चन्द्रनो योग थाय ते वखते उक्त नक्षत्रो उपर भौम, शनि, राहु अने केतु ए पापग्रह बेठा होय तो ते अशुभ गणाय छे, परंतु बुध, शुक्र अने बृहस्पति ए शुभ ग्रह बेठा होय तो श्रेष्ठ लेखाय छे. जो अधिकमास थवाथी बे आषाढ थइ जाय तो उपवास राखी बन्ने महिनाओमां पूर्वोक्त योगोनो विचार करवो अर्थात् अधिक मासमां पण पूर्वोक्त रीतिथी योग जोवा.

जो रोहिणीयोग, स्वातियोग अने आषाढीयोग ए त्रणे फळमां सरखा आवे अर्थात् त्रणेनुं फळ शुभ अथवा अशुभ आवे तो निःसंदेहपणे शुभाशुभ फळ समजी लेवुं. जो त्रणेना फळमां भिन्नता रहे तो रोहिणीयोगनुं जे फळ होय ते विशेषे करी सिद्ध थाय छे.

आषाढी पूर्णिमा पछी कृष्णपक्षनी चतुर्थीने दिवस उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्रमां वर्षा थइ जाय तो आगळ उपर वर्षाऋतु उत्तम थाय छे, जो ए दिवस वृष्टि न थाय तो सारुं थतुं नथी.

आषाढी पूर्णिमाने दिवस सूर्यास्त समये जो इशान कोणनो पवन चाले तो खेती घणीज सारी थाय छे, एज वखते पूर्व समुद्रोना तरंगोना अग्रभागने ताडन करवाथी घूमतो तेमज सूर्य चन्द्रना किरणसमूहथी मिश्रित आकाशथी पूर्व दिशानो पवन चालेतो घणा नीलवर्णना मेघ समूहोथी युक्त शरद् ऋतुनी खेतीथी समृद्धिवान् अने वसन्त ऋतुनी उत्तम खेतीथी भूषित सर्व भूमि सुशोभित थाय छे.

जो उक्त समये आकाशमां अखंडित अग्नि कोणनो पवन चाले तो पृथ्वी उपर अग्निनो घणोज उपद्रव थाय छे; दक्षिण दिशानो पवन चाले अने एज योगमां बहुरुखो पवननो शब्द थाय तो कृपण मनुष्यनी माफक मेघ पण थोडा थोडा जळना बुन्द वरसे छे; समुद्रने किनारे इलायची, लवली अने लवंग लताओना समूहोने हलावतो नैऋत्य कोणनो पवन चालेतो क्षुधा तृषाथी मरेलां मनुष्योनी हड्डीओना टुकडाना समूह रुपी जेणे वस्त्र ओढेल छे एवी भूमि भयंकर अने चंचल मदोन्मत्त प्रेतवधू जेवी जोवामां आवे छे.

पश्चिम दिशानो पवन चालेतो भूमि खेतीथी सुशोभित रहे छे अने प्रधान मनुष्योना समूहोनुं ठेकाणे ठेकाणे युद्ध थाय छे तेमज वसा, मांस अने रुधिरथी वसुंधरा व्याप्त रहे छे.

वेगवाळो प्रचंड वायव्य कोणनो पवन चालेतो जळनी धाराथी खेतीनी वृद्धि रुपी उत्तम चिह्नवाळी भूमि घणी सुख समृद्धिथी सद्भाग्यनी सेना समान जोवामां आवे छे.

उत्तरनो पवन चाले तो विजळीनुं भ्रमण अने संपूर्ण कांतिनुं जे आकारज्ञान तेमां उद्यम युक्त मेघ उन्मत्त थइ जेमां चंद्र किरणो वादळाओथी ढंकाएल छे एवी भूमिने जळथी पूर्ण करी दे छे.

प्रचंड शब्द करतो इशान कोणनो पवन चाले तो जेमां पूर्ण जळनुं यौवन छे एवी पृथ्वी परिपक्व थएली खेतीथी भराइ जाय छे तेमज शत्रुओ जेने नमेला छे एवा धर्मात्मा राजाओ ब्राह्मण आदि चारे वर्णोनी रक्षा करे छे.

वृक्षोना फळ अने पुष्पोनी वृद्धिथी सर्व वस्तुओनी सुलभता अने खेतीनी निष्पत्ति जाणवी जोइए.

शाल वृक्षना फळ अने पुष्पोनी वृद्धिथी कलमशालिनी, रक्त अशोकथी रक्तशालिनी क्षीरिकाथी पांडूकनी अने नील अशोकथी सूकरकनी वृद्धि थाय छे; कलमशालि, रक्तशालि, पांडूक अने सूकरक ए बधा धान्यना भेद छे; वडनी वृद्धिथी यवक अने तेन्दुकनी वृद्धिथी षष्टिक थाय छे ए पण वेउ धान्यनी जाति छे, जांबुनी वृद्धिथी तल अने अडदनी, सिरसनी वृद्धिथी कांगनी, महुडानी वृद्धिथी घउंनी अने सप्तपर्ण वृक्षनी वृद्धिथी यवनी वृद्धि थाय छे.

अति मुक्तक अने कुन्द ए बन्ने पुष्पवृक्ष छे तेनी वृद्धिथी कपासनी वृद्धि थाय छे, असन वृक्षनी वृद्धिथी सर्षवनी, बोरडीनी वृद्धिथी कुलत्थनी अने चिरविल्व नामना वृक्षनी वृद्धिथी मगनी वृद्धि थाय छे.

वेतस वृक्षना पुष्पोनी वृद्धिथी अळसीनी, पलाशना पुष्पोनी वृद्धिथी कोद्रवनी, तिलक वृक्षनी वृद्धिथी शंख, मोती अने चांदीनी तेमज इंगुदी वृक्षनी वृद्धिथी शणनी वृद्धि थाय छे; हस्तिकर्ण वृक्षनी वृद्धिथी हाथीओनी, अश्वकर्ण वृक्षनी वृद्धिथी घोडाओनी, पाटला वृक्षनी वृद्धिथी गायोनी अने केळोनी वृद्धिथी बकरी तथा विकनी वृद्धि थाय छे.

चम्पक पुष्पोनी वृद्धिथी सुवर्णनी, बन्धुजीवना पुष्पोनी वृद्धिथी मगनी, कुरवक वक्षनी वृद्धिथी हीराओनी अने नन्दिकावर्त पुष्पोनी वृद्धिथी वैदुर्य रत्नोनी वृद्धि थाय छे.

सिन्दुवार वृक्षनी वृद्धिथी मोतीनी, कुसुंभवृक्षनी वृद्धिथी कारुक अथवा शिल्प जाणनारावाळाओनी, रक्तकमलनी वृद्धिथी राजाओनी अने नील कमलनी वृद्धिथी राजाओना मंत्रीओनी वृद्धि थाय छे.

सुवर्ण पुष्पोनी वृद्धिथी श्रेष्ठ पुरुषोनी, कमलनी वृद्धिथी ब्राह्मणोनी, कुमुदोनी वृद्धिथी राजपुरोहितोनी, सौगन्धिक पुष्पनी वृद्धिथी सेनापतिनी अने आकडानी वृद्धिथी सुवर्णनी वृद्धि थाय छे.

आम्रनी वृद्धिथी कल्याण, भिलामानी वृद्धिथी भय, पीलुनी वृद्धिथी आरोग्य, खेर अने शमी वृक्षनी वृद्धिथी दुर्भिक्ष अने अर्जुनवृक्षनी वृद्धिथी उत्तम वर्षा थाय छे; निम्ब अने नागकेसरना पुष्पनी वृद्धिथी सुभिक्ष थाय छे, कपित्थनी वृद्धिथी पवन चाले छे, निचुल वृक्षनी वृद्धिथी वर्षा न थवाथी भय उपजे छे अने कुटज वृक्षनी वृद्धिथी रोगनो भय पेदा थाय छे.

दुर्वा अने कुशना पुष्पोनी वृद्धिथी इक्षुनी वृद्धि थाय छे, कोविदार वृक्षनी वृद्धिथी बहु आग लागे छे अने श्यामलतानी वृद्धिथी व्यभिचारिणी स्त्रीओनी वृद्धि थाय छे.

जे वर्षमां वृक्ष गुल्म अने लता सचिक्कण तेमज छिद्र रहित पत्रोथी युक्त होय ते वर्षमां उत्तम वृष्टि थाय छे अने जो एनां पत्रो रुखा अने छिद्र युक्त होय तो स्वल्प वर्षा थाय छे.

कृष्णपक्षमां कोइ वर्षानुं प्रश्न करे ए वखते जलचर राशि अर्थात् कर्क, मकर अथवा मीनमां बेसी चन्द्रमा लग्नमां पडे अने शुक्लपक्षमां जलचर राशिमां बेसी चन्द्रमा कोइ केन्द्रमां पडे अने वर्षाऋतु होय तो तुरतज वृष्टि थाय छे, चन्द्रमाने शुभ ग्रह जोता होय तो बहु वर्षा अने पापग्रह जोता होय तो थोडी वर्षा थाय छे. चन्द्रनी माफक शुक्रथी पण वर्षानो विचार करवो. वर्षानुं प्रश्न करनार पुरुष आर्द्र द्रव्यनो, जळनो अथवा जळ तुल्य जेनुं नाम होय एवी वस्तुनो स्पर्श करे, जळनी समीपे उभो होय अथवा जळ संबंधी कार्य करवामां तत्पर होय तो निःसंदेह घणीज त्वराथी वर्षा थशे एम समजी लेवुं अथवा प्रश्न वखते जळ एवो शब्द कोइ तरफथी संभळाय तोपण अवश्य सद्योवृष्टि थाय छे.

वर्षाऋतुमां जे दिवसे सूर्य उदयाचल पर्वत उपर उदय वखते दीप्तिथी दुर्निरीक्ष्य अर्थात् जेनी सन्मुख नजर न करी शकाय एवो होय ते दिवसे वृष्टि थाय छे. अथवा आकाशना मध्य भागमां प्राप्त थइ सूर्य अति तीक्ष्ण तपे तोपण वर्षा थाय छे.

जळनो स्वाद जतो रहे, गायना नेत्र समान आकाशनो रंग होय, दिशा निर्मळ होय, लवणमां विकार थाय अर्थात् पात्रमां राखेलुं लवण ओगळवा लागे, आकाशनो रंग कागना इंडा जेवो होय, पवन चालतो बंध थइ जाय, माछलां पाणीमांथी उछळी किनारा उपर पडे, वारंवार देडका बोले ए सर्व लक्षण वर्षानां छे अर्थात् एमां कोइपण लक्षण विद्यमान होय तो वर्षा तुरत थाय छे.

बिलाडीओ पोताना नखोथी वारंवार भूमिने कोतरे, लोढांना शस्त्र अने पात्रमा काट लागे, के जेमां काची दुर्गन्ध आवे तेमज गलीओनी वच्चे बाळको बंध बांधे ए सर्व लक्षणोथी तुरत वृष्टि थाय छे.

पर्वतो अति नीलवर्ण होय, पर्वतोनी कंदरा वाष्पथी भराइ जाय अने चन्द्रनुं कुंडाळुं अति रक्तवर्ण होय तो शीघ्रवर्षा थाय छे.

कोइ पण जातना उपद्रव विना कीडी पोताना इंडाओने एकस्थानथी उठावी बीजे स्थाने लइ जाय, सर्पो मैथुन करे तेमज वृक्षो उपर चढे अने गायो कूदे ए सर्व शीघ्र वृष्टि थवानां कारण छे.

काकीडो वृक्षना अग्रभाग उपर स्थित थइ आकाश तरफ दृष्टि करे अने गायो उंचे सूर्य तरफ दृष्टि योजे तो घणीज उतावळे वर्षा थाय छे.

गाय भेस आदि पशु घरनी वाहेर जवा न इच्छे, कान अने खरीओने धूणावे अर्थात् कंपावे एवीज रीते श्वान पण घर वाहेर निकळवा न चाहे तेमज कान अने पगने हलावे तो वर्षा तुरत थाय छे.

घरनी छतो उपर वेसी आकाशनी तरफ मुख करी श्वानो बहु रुदन करे, दिवसे इशान कोणनी विजळी चमके तो पृथ्वी जळथी परिपूर्ण थइ जाय अर्थात् अति वृष्टि थाय छे.

चन्द्रमानो लाल रंग होय अथवा आकाशमां बीजो चंद्र देखाइ आवे तो पण आकाशथी तुरत जळ वरसे छे.

रात्रीए वादळां गर्जना करे, दिवसे अति रक्त वर्णवाळी विजळी दंडनी माफक सीधी देखाय, पूर्व दिशानो शीतळ पवन चाले, वल्लीना पत्रो आकाश तरफ उंचां थइ जाय, पक्षीओ जळ अथवा धूळथी स्नान करे अने सर्प आदि कीडाओ खडना अग्रभाग उपर चडी वेसे तो तुरतज वृष्टि थाय छे.

विविध रंगना तथा विविध आकृतिवाळा जेमां उपर नीचे घणा पुट होय एवा संध्याकाळना मेघ शीघ्र वृष्टि करे छे.

जे मेघ चारे तरफ शुक्लवर्ण होय अने मध्यमां अति श्याम होय, स्निग्ध अनेक पुटोथी युक्त होय, विन्दुओने टपकना सोपान अर्थात् पगथीयांनी माफक वनी रह्यां होय, पूर्व दिशामां उत्पन्न थइ पश्चिम तरफ जता होय अने पश्चिममां उत्पन्न थइ पूर्व तरफ जता होय ते भूमि उपर तुरत वरसे छे.

सूर्यना उदय अथवा अस्त समये इन्द्रधनुष, परिघ, रोहित बीजो सूर्य, विजळी अने सूर्य चद्रना कुंडाळां ए सर्व लक्षण होय तो तुरतज घणी वर्षा थाय छे.

दिवसे सूर्योदय समये अने रात्रीए सूर्यास्त समये जो आकाश तेतरनी पांख समान होय

अर्थात् मेघना पातळा पातळा अने न्हाना न्हाना टुकडाओथी भरेलुं होय तेमज पक्षीओ प्रसन्न थइ शब्द करता होयतो शीघ्र वृष्टि थाय छे.

सूर्यना अमोघ नामना किरणो एवा देखाय के जाणे अस्ताचळना हाथज उपर उंचा थइ रह्या छे अने वादळां भूमि पर्यन्त झूकी रहेतो ए घणी वर्षा थवानुं लक्षण छे.

वर्षा ऋतुमां शुक्रनी सप्तम राशि उपर चन्द्रमा होय अने एना उपर शुभ ग्रहनी द्रष्टि पडती होय अथवा शनिश्चरथी नवमे पांचमे अथवा सातमे चन्द्रमा होय अने एना उपर शुभ ग्रहनी द्रष्टि पडती होय तो वर्षा थाय छे.

सूर्यना उदय तेमज अस्त काळमां समागम अर्थात् चन्द्रनी साथे मंगळ आदि ग्रहोनो योग थवा वखते अने भरणी आदि नक्षत्रोना जे छ मंडळ शुक्रचारमां कह्यां तेना प्रवेशमां अर्थात् ग्रह एक मंडळथी निकळी बीजा मंडळमां प्रवेश करे ए सर्व समय उपर, अमावास्या अने पूर्णिमाना अंतमां, दक्षिणायन अने उत्तरायणनी समाप्तिमां घणे भागे वर्षा थाय छेः सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर आवे त्यारे तो अवश्य वृष्टि थाय छे.

बुध अने शुक्रनो, बुध अने बृहस्पतिनो अथवा बृहस्पति अने शुक्रनो समागम होय तो वर्षा थाय छे. मंगळ अने शनिश्चरनो समागम होय तेमज तेनी साथे शुभ ग्रह न होय अने एना उपर शुभ ग्रहनी द्रष्टि पण न पडती होय तो पवन अने अग्निनो भय थाय छे.

सूर्यावलंबी अर्थात् अस्त् थवानी इच्छावाळा ग्रह सूर्यथी आगळ अथवा पाछळ होय अर्थात् सूर्यथी पहेलां अथवा पछीथी अस्त पामे तो भूमिने जळमय करी दे छे; मन्द ग्रह सूर्यथी आगळ अने शीघ्र ग्रह सूर्यथी पाछळ अस्त थाय छे.

राजर्षि व्यासजीए उपर प्रमाणे दैवज्ञना मुखथी परम संतोषकारक वर्षाज्ञान श्रवण करी तेनी आज्ञा प्रमाणे उत्तम सत्य वक्ता अने उद्योगमां द्रढ एवा ब्राह्मणोने भविष्यनी वर्षाना ज्ञान माटे यथायोग्य स्थाने योज्या. तेमज हरवखत पोते जाते पण ए संबंधी विचार करवा लाग्या, थोडा काळमां पोतानी प्रजा उत्तम स्थितिने प्राप्त थइ.

तेओने उत्तरावस्थामां महान् प्रतापी **केसरदेवजी** नामे कुमार थया, जेथी कीर्तिगढमां अपूर्व आनंद फेलाइ रह्यो.
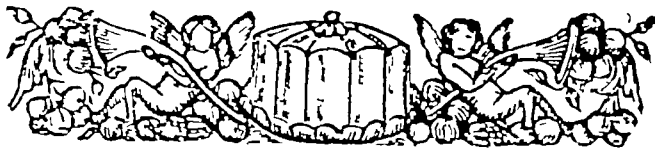
त्रयोदश तरंग.

" छप्पय "

केसरदेव कुमार, योग्य वय पाम्या ज्यारे;
राजधर्मनी रीत, स्नेहथी शीख्या त्यारे;
अति उत्तम अभ्यास, सर्व शास्त्रनो करीने;
गुरु आगळथी ज्ञान, मेळव्युं मोद धरीने;
कीर्तिगढनी गादीए, छापी अलौकिक छापने;
चरित चारु नथुराम ए, अमर ! कहुं छुं आपने.

मकवाणा व्यासजीए कुमार **केसरदेवजी** योग्य वयना थतां तेओने उत्तम गुरु पासे विद्याभ्यास करवा बेसाड्या. स्वल्प समयमां तीक्ष्ण बुद्धिवाळा कुमार **केसरदेव** व्याकरण, न्याय अने मीमांसा आदि अघरा ग्रन्थोने समजवामां शक्तिमान थया. व्यास **मकवाणा** जाते महा विद्वान् हता. तेओए एक दिवसे कुमारश्रीने पोता पासे बोलावी भिन्न भिन्न शास्त्रोनां प्रश्न कर्या. **केसरदेवजीए** यथास्थित प्रत्युत्तर आपी पिताश्रीने प्रसन्न कर्या, परंतु ज्यारे राजधर्म संबंधी प्रश्नो पिता तरफथी पूछवामां आव्या त्यारे कुमारश्रीए ए विषयमां पोतानी माहिति नथी एम प्रदर्शित कर्युं, त्यारे व्यासजीए कह्युं के आपणे राजाओने तो मुख्य राजधर्म जाणवानीज जरुर छे, कारणके अन्य शास्त्रो भणी आपणे कोइ साथे शास्त्रार्थ करवो नथी, तेमज कोइ पासेथी पारितोषिक मेळववानुं नथी, तेतो केवळ आपणा आनंदने माटेज छे, परंतु राजधर्मथी तो आपणने अपूर्व सुयश प्राप्त थाय छे के जे सुयश मनुष्यमात्रनुं जीवन छे. तमारो अन्य अभ्यास अति उत्तम छे, माटे हवे गुरुने प्रसन्न करी राजधर्मनुं ज्ञान मेळवो के जेथी आपणी प्रजा साथे आवी सृष्टि आपणने माननी नजरथी निहाळे. पिताना उपदेशने माथे चडावी बीजेज दहाडे कुमार **केसरदेवजीए** गुरुजीने प्रणाम पूर्वक नम्रताथी विनति करी के कृपाळु ! आजथी मने राजा-

ओना धर्म शीखवो, तेमां प्रथम आ पृथ्वी उपर राजा शब्द प्रचलित थइ रह्यो छे तेनो हेतु शुं छे ? अने ते शब्द शार्थी उत्पन्न थयो ते कृपा करी समजावो, कारण के सामान्य मनुष्य अने राजानां भुजा, ग्रीवा, बुद्धि, प्राण, आत्मा, सुख, दुःख, मुख, पीठ अने उदर आदि समान छे; वीर्य, मांस, अस्थि, रुधिर, श्वासनुं आववुं जवुं अने जन्म मरण एक सरखांज छे, छतां एक पुरुष कया कारणथी अनेक पुरुषोने आज्ञा करी शके छे ? अने एकाकी छतां कइ रीते शूरवीर अने श्रेष्ठ पुरुषोथी व्याप्त थइ सृष्टिनुं संरक्षण करे छे तेमज संसारनी प्रसन्नता चाहे छे ? ए एकना प्रसन्न थयाथी तमाम मनुष्य प्रसन्न थाय छे, अने ए एकने व्याकुळ जोइ सर्व व्याकुळ बने छे, तथा तमाम मनुष्यो देव समान तेने पूजे छे तेनुं कारण शुं छे ? गुरुए कह्युं के कुमार ! पूर्वे भीष्म पितामहे जे राजधर्म युधिष्ठिरने सविस्तर समजाव्यो हतो, ते हुं संक्षेपथी तमोने कहुं छुं, सांभळो. राजा शब्द सत्ययुगना प्रारंभमां उत्पन्न थयो छे, ते समये कोइ राजा के राज्य न हतां तेमज दंड के दंड देवावाळा नहता. परंतु संसारी लोको परस्पर धर्मथीज सुरक्षित हता. ज्यारे धर्मरक्षकोमां अन्योन्य वैमनस्य उत्पन्न थयुं त्यारे लोकोमां अज्ञानता प्रगट थइ अने ए अज्ञानताना प्राबल्यथी ज्ञाननो लोप थयो. तेनी साथे धर्म पण नाश पाम्यो. उत्तम ज्ञाननो अस्त थवाथी मोहने वश थएला मनुष्योमां लोभ प्रवृत्त थयो, त्यारबाद मनुष्यो असंभवित वातोनो विचार करवावाळा थया अने काम नामनी बीजी इच्छाए सर्वने स्वाधीन कर्या. कामने वश थएला मनुष्योने रागे दबाव्या, ए रागमां प्रवृत्त थएलां मनुष्योए कार्योमां योग्यायोग्यनो विचार तजी दीधो, अगम्या स्त्रीमां गमन, अभोज्यनुं भोजन अने अकथनुं कथन करवा मांडयुं. गुणनुं ग्रहण न करतां दुनियां दोषमां दबाइ गइ. ज्यारे लोको उक्त दशाने आधीन बन्या त्यारे वेद विलुप्त थया अने धर्म नष्ट थयो. तेम थवाथी देवताओमां भय फेलायो, भयभीत देवताओ ब्रह्माने शरणे गया अने महा व्यथित थइ हाथ जोडी ब्रह्माने प्रसन्न करी कहेवा लाग्या के-भगवन्! लोभ तथा मोह आदिनी उत्पत्तिथी नर लोकमां सनातन वेद अने धर्मनो विनाश थवाथी अमो सर्व भयभीत बन्या छीए. अमारी स्थिति पण नरलोक निवासी समान थइ गइ छे; कारण के स्वाहा आदिना अभावथी अमो भूखे मरीए छीए. जो के अमे नरलोकमां वृष्टि करीए छीए, परंतु ते वृष्टि करवावाळा मनुष्योज छे, तेओनी क्रिया नष्ट थवाथी अमारा मन संशयसिन्धुमां निमग्न थयां छे माटे आप कल्याणकारी कर्मोनो बोध करो जेथी आ अमारो नविन भय नाश पामे. ब्रह्माजीए देवताओने संतोषकारक जवाब आपी विदाय कर्या. त्यारबाद तेओए पोतानां बुद्धिबळथी एक लाख अध्याय बनाव्या, जेमां धर्म अर्थ तथा कामनुं

वर्णन कर्युं. ए त्रिवर्गथी पोतानां फळ अने साधनने भिन्न दर्शावनार चोथो मोक्ष छे. ते मोक्षनो त्रिवर्ग जुदो छे, इच्छाफळ रहित ए मोक्षनुं पण तेमां वर्णन करी बताव्युं. धर्म आदिना वैपरीत्यनुं कारण सत्वगुण, रजोगुण अने तमोगुण. धनुषथी व्यापारीओनो मार्गमां निवास, तपस्वीओनी वृद्धि अने चोरोनो नाश ए दंडथी उत्पन्न थनारो त्रिवर्ग तेमज वित, देश, काळ, साधन, कर्म अने सुहृद आदिने सुधारवा माटे नीतिथी उत्पन्न थनारो षड्वर्ग पण तेमां वर्णव्यो. अर्थात् नीतिना बळथी प्रजानी व्याकुळता मटे छे, कुदेश पण सुदेश थाय छे अने कळियुग पण सत्य-युग सरखो देखाय छे. कर्मकांड, ज्ञानकांड, वार्ता अर्थात् खेतीजीविका, व्यापार आदि कांड, दंडनीति अर्थात् प्रजानुं पोषण करवानी विद्या अने महाविद्या ए लाख अध्यायनी अंदर ब्रह्माजीए बताव्युं. मंत्री लोकोनी रक्षा अने तेओना उपर एवो गुप्त दूत नियत करवो के जे नाना प्रकार-नी युक्तिओने जाणवावाळो होय अर्थात् ब्रह्मचारी आदिनां रुप धारण करी शके तेवो होय. भिन्न भिन्न वेश पहेरवावाळा एवा त्रण त्रण दूत दरेक स्थळे योजवा. ए सर्व हकीकत तथा राजकुमारनां लक्षण पण तेमां सारी रीते वर्णव्यां. साम, दाम, दंड, भेद, अने पांचमी उ-दासीनता पण तेमां संपूर्ण रीते वर्णवी. एवीज रीते भेदने माटे सलाहने मिथ्या करवी तेमज मंत्रनी सिद्धि अने असिद्धिनुं जे फळ छे तेनुं पण तेमां वर्णन कर्युं. वळी तेमां भय, लेख तथा धनथी संबंध राखतो सन्धि अधम, मध्यम अने उत्तम ए रीते त्रण प्रकारनो छे अर्थात् भयथी थनार सन्धि अधम, लेखथी थनार सन्धि मध्यम अने धनथी थनार सन्धि उत्तम गणाय छे. पोताना मित्रोनी वृद्धि, भरपूर खजानो, शत्रुना मित्रोनो नाश अने शत्रुना खजानानी शुष्कता ए चार यात्राना समय छे. विजय त्रण प्रकारनो छे. धर्मविजय, अर्थविजय अने आसुरीविजय. मंत्री देश, गढ, सेना अने खजानो ए पंच वर्ग गणाय छे. अत्यन्त, साधारण अने न्यून ए त्रण प्रकार छे. सेनाना प्रकाशित अने अप्रकाशित एवा बे प्रकार छे. तेमां प्रकाशित सेना आठ प्रकारनी छे, अने अप्रकाशित सेना महा विस्तारवाळी छे. रथ, हाथी, घोडा, पैदल, भारकर, नौका, दूत अने उपदेशक गुरु ए सेनाना आठ अंग छे. विंछी आदिथी उत्पन्न थनारुं विष जंगम, चूर्णमां मळवावाळुं विष स्थावर, वस्त्र आदिना स्पर्शमां अने खानपाननी वस्तुओमां विष मेळववुं तथा मारण आदि प्रयोग ए त्रण प्रकारनो विषमेळ दंडरुप कहेल छे; शत्रु, मित्र अने उदासीन; ग्रह नक्षत्र आदि मार्गोना गुण, एवीज रीते पृथ्वीना गुण, मंत्र यंत्र आदिथी भयभीतनी रक्षा करवी, रथआदिनां कारखानां जोवां तेमज मनुष्य, हाथी, घोडा तथा रथने निरोगी अने पराक्रमी बनाववा

वाळी अनेक प्रकारनी युक्तिओ, घणी जातना व्यूह अने विचित्र युद्धनुं विज्ञान पण वर्णव्युं. उत्पात अने निपात अर्थात् ग्रहोने विरोध अने पृथ्वीनुं कंपन, उल्कापात, उत्तम युद्ध, भागवुं, शस्त्रोने तीव्र करवां, सेनानुं दुःख तेमज सैन्यने प्रसन्न करवुं तथा पीडा अने आपत्तिना समयनुं ज्ञान पण तेमां वर्णवी बताव्युं. एवीज रीते वाजांओना शब्द सांभळी चडाइ आदिनी चेष्टा समजी काम करवानुं, योग्य संचार, पताका अने मंत्र आदिनां श्रवण अथवा दर्शनथी मोह उपजाववो; चोर, उग्ररूप अने वनवासी मनुष्योनी सेनाथी शत्रुना देशने पीडा करवी विगेरे सर्व तेमां बताव्युं. आग लगाववावाळा, विष देवावाळा, मूर्ति बनाववावाळा अने सेनाना प्रधानोने पोताना पक्षमां मेळववा तेम खेती आदिने कापवी, हाथीओनो वध करवो, संदेह प्रकट करवो, नोकरोने पगार आपवा, विश्वास उत्पन्न करी प्रतिपक्षीना देशने पीडवो तेमज सात अंगवाळां राज्यनो नाश, वृद्धि अने समानता तथा दूतना उद्योगथी पोताना देशनी वृद्धिनुं सविस्तर वर्णन कर्युं. शत्रु, मित्र अने मध्यस्थोने केवी रीते फोडवा ते पण बताव्युं छे, एवीज रीते पराक्रमीओने पीडवा अथवा मारवा इत्यादि सूक्ष्म व्यवहार तेमज कांटाने उखेडवा अर्थात् दुष्टोने मारवा, मल्लक्रीडा, व्यायाम, शस्त्र चलाववानो अभ्यास, धननो संचय, आजीविका विनाना पुरुषोनुं पालन करवुं, सेवकोनी संभाळ राखवी, समय उपर धननुं दान करवुं, तथा व्यसनोमां प्रवृत्त न थवुं विगेरे सर्वनुं वर्णन कर्युं. एवीज रीते राजगुण अर्थात् चडाइ आदि सेनापतिना गुण, त्रिवर्गनो हेतु अने गुण दोष तमाम वर्णव्या. नोकरोनी अनेक प्रकारनी बदचाल तथा उत्तम चाल ए, सर्वमा संदेह करवो, भूलने तजवी, अप्राप्तनी प्राप्ति करवी अने प्राप्त वस्तुनी वृद्धि करवी, फरी ते सुपात्रोने दानमां आपवी ए सर्व बाबत तेमां बतावी. धर्म, अर्थ, काम अने मोक्षने माटे धनने खर्चवुं. एवीज रीते आपत्तिने दूर करवा माटे चोथुं दान तेमां वर्णव्युं छे. ब्रह्माए ए लक्ष अध्यायमां क्रोध अने कामथी उत्पन्न थवावाळां दश व्यसनो वर्णव्यां, अने आचार्योए शिकारबाजी, पासा, मद्यपान अने स्त्री ए चार व्यसन कामथी उत्पन्न थवावाळां कह्यां छे, क्रोधथी उत्पन्न थनारां कठोर वचन, उग्रता, दंडपारुष्य, देहने घायल करवो, देहनो त्याग करवो अने धननुं निरर्थक खर्च करवुं ए छ व्यसन बताव्यां. नाना प्रकारनां यन्त्र अने तेनी क्रिया पण वर्णवी. शत्रुनी सेनाथी देश आदिनी पीडा तेमज घायल थवुं, स्थानोने तोडवां, सीमाना वृक्षोने उखेडवां, राज्यनी आमदानीने अटकाववी, शस्त्र आदि सामान बनाववानी रीति; पणवानक, शंख अने भेरि आदि वाजांओ तेमज मणि, पृथ्वी, पशु, वस्त्र, दासी अने दास ए छ द्रव्योने पण संग्रह करवानुं

वर्णन करी बताव्युं. स्वाधीन थनारने शान्त करवा, सत्पुरुषोनुं पूजन करवुं, पंडितोने यज्ञ प्रसंगे दान आपवुं तथा होमना विधिनुं ज्ञान इत्यादि बावतो वर्णवी. मांगलिक वस्तु सुवर्ण आदिनो स्पर्श करवो, देहने शृंगारवो, भोजन करवुं, निरंतर ईश्वरने मानवा, एकलां चढाइ करवानी रीति, सत्यता, मीठुं बोलवुं, उत्सव, समाजोनी क्रिया अने एवीज रीते ध्वजा तथा धन आदिनुं वर्णन करी बताव्युं. चोतरा आदि बेसवानां स्थान, मनुष्योनां गुप्त अने प्रगट वृत्तान्तो तथा व्यवहारोने हमेशां जोवा, विजातियथी तथा गुणोथी उत्पन्न थनारी प्रतिष्ठा, पुरवासीओनी रक्षा, देशनी आवादी करवी अने बार राजाओथी संबंध राखवावाळा मंडळमां जे स्थिर चिन्ता छे तेनुं पण वर्णन कर्युं अर्थात् विजयने चाहवावाळा चारे तरफ चार शत्रु, चार मित्र अने चार उदासीन ए मंडलना बार राजाओ कहेवाय छे. बहोंतेर प्रकारना संस्कार, देह, देश, जाति अने कुळना धर्म उत्तम रीते वर्णव्या. धर्म, अर्थ, काम अने मोक्षनी युक्तिओ तथा अनेक प्रकारनी इच्छा अने धन आदि तेमां कह्यां. मूलकर्म अर्थात् मालना प्रवन्धनी रीति, माया, योग, नदी अने नियत प्रदेशोने दोषित करवानुं वर्णव्युं. जे जे रीत आ संसारथी अविरुद्ध मालुम पडी ते तमामनुं नीतिशास्त्रमां वर्णन कर्युं. ए रीते ब्रह्माजी उत्तम शास्त्र बनावी देवताओ के जेमां इन्द्र विद्यमान हता तेओने कहेवा लाग्या के संसारनी वृद्धि तथा धर्म, अर्थ अने कामने नियत करवा माटे आ सरस्वतीनो सार प्रगट कर्यो छे. ते लोकनी रक्षा करवावाळुं दंड अने इनामथी युक्त आ नीतिशास्त्र सदंड बनी विश्वमां विख्यात थशे. आ संसार दंडथी आधीन थाय छे अने दंटज पामे छे. आ शास्त्र दंडनीति नामथी त्रिलोकीमां व्याप्त थशे. अने षड् गुणथी भरपुर उक्त शास्त्र महात्माओनी आगळ नियत थशे.

त्यारबाद विशालाक्ष उमापति शंकरे संसारी जीवोनुं अल्प आयुष जाणी ब्रह्माए बनावेल ए लक्ष अध्यायनुं रहस्य दशहजार अध्यायमां युक्तिथी दाखल कर्युं. ए विशालाक्षनामना सारनो इन्द्रे पांच हजार अध्यायमां आशय लइ लीधो अने ते शास्त्रनुं नाम बाहुदन्तक राख्युं. त्यारबाद योगाचार्य शुक्रजीए एक हजार अध्यायमाज तेनुं संक्षेपथी वर्णन कर्युं. ए क्रमथी महर्षिओए अवस्थानी न्यूनता जोइ संक्षेप कर्यो. ते पछी देवताओए प्रजापति विष्णुने प्रार्थना करीके संसारी पुरुषोमाथी राज्यनुं शासन करी शके एवो एक योग्य पुरुष आपो. त्यारे नारायणे विचार करी रजोगुण रहित तेजस् नामनो मानसी पुत्र उत्पन्न कर्यो. परंतु ते निरंजन महात्माए पृथ्वीपर राज्य

करवानी इच्छा न करी, परंतु सन्यस्त धारण करवानी स्पृहा बतावी. तेना पुत्र कीर्तिमान पण जीवनमुक्त थया. ए कीर्तिमानना पुत्र कर्दमजी पण महातपस्वी बन्या. परंतु तेनो पुत्र अनंग साधुरक्षक अने दंडनीतिमां प्रवीण थयो. अनंगना पुत्र महानीतिज्ञ पराक्रमीए महान राज्यने प्राप्त कर्युं. तेनो पुत्र मानसी सुनेथा नामे त्रणे लोकमां प्रसिद्ध थयो, तेनो पुत्र वेणु रागद्वेषने वश बनी प्रजा उपर अधर्म करवावाळो थयो तेने ब्रह्मवादी ऋषिओए अभिमंत्रित कुशाओथी मार्यो अने तेनी डावी जांघने मंत्रोथी मथी त्यारे ते जंघाथी एक एवो पुरुष उत्पन्न थयो के जे ठींगणो, कद्रुपो, कोयला समान काळा रंगनो, लाल नेत्रवाळो अने काळा केशवाळो हतो, तेने जोइ ऋषिओए बेसी जवानुं कह्युं, तेनाथी सेंकडो निषाद उत्पन्न थया के जेओ निर्दय मनवाळा थइ वनमां अने पर्वतोमां निवास करी रहे छे. तेमज विन्ध्याचलवासी बीजा प्रकारना म्लेच्छ छे ते पण तेनाथीज उत्पन्न थया. फरी उक्त महर्षिओए वेणुनी जमणी जंघानुं मथन कर्युं, तेथी एक एवो पुरुष उत्पन्न थयो के जे रुपमां बीजो इन्द्र जणातो हतो, तेनां वस्त्रो सुवर्ण निर्मित हतां. हाथमां खड्ग तथा धनुषबाणने धारण करनार, वेदवेदांगने जाणनार अने धनुर्वेदमां पंडित हतो. दंडनीति सर्व तेने आधीन थइ. ए वेणुना पुत्र ऋषिओने हाथ जोडी कह्युं के धर्म अने अर्थने जाणवावाळी महा सूक्ष्म बुद्धि मारामां उत्पन्न थइ छे, ए बुद्धिने अनुसरी मारे शुं करवुं योग्य छे ते कहेवा कृपा करो. आप अर्थयुक्त जे काम कहेशो ते हुं करीश एमां कंइ पण संदेह राखशो नहि. त्यारे देव अने महर्षिओ बोल्या के जेमां बराबर निश्चय पूर्वक धर्म होय तेवां कृत्य करो, सर्व जीवोमां समदृष्टि राखी प्रिय अप्रियनो त्याग करी काम, क्रोध अने लोभने दूरथी तजी एवां कार्य करो के लोकमां जे कोइ मनुष्य धर्मभ्रष्ट थाय ते आपथी दंड पामे. मन, वाणी, अने कर्मथी एवा शपथ लीओ के "हुं निरंतर दंडनीतिशास्त्रथी सर्वने राखता धर्मने पाळीश, कदि पण इन्द्रिओने वश नहि बनुं" तेनी साथे समग्र संसारनुं रक्षण करवानी पण प्रतिज्ञा लिओ. वेणुना पुत्र पृथुए ते प्रमाणे प्रतिज्ञा लीधी. त्यारबाद वेदना भंडाररुप शुक्रजी ए पृथुना पुरोहित थया, वालखिल्य ऋषिओनो समूह अने सारस्वत ब्राह्मणो तना मंत्री बन्या तथा गर्गमुनिए ज्योतिषीनुंपद धारणकयु ए रीते पेहला विष्णु, बीजा विरज, त्रीजा कीर्तिमान, चोथा कर्दम पांचमा अनंग, छठ्ठा अवतल, सातमा वेणु अने आठमा पृथु थया. पृथुने सूत्र अने मागध नामे बे पुत्र थया ते बंन्ने उपर प्रसन्न थयला पृथुए सूतने अनूपदेश अने मागधने मागधदेश आप्यो. ते समये पृथ्वी असम हती तेने सरखी करावी. सर्व मन्वंतरमां पृथ्वीं असम थइ जाय छे. पृथुए

धनुषनी कोटिथी चारे बाजुओनी शिलाओना समूहने उठाव्यो जेथी पर्वतो म्होटा थया. पृथ्वीए पुष्कळ रत्नोथी पृथुनी सेवा करी. नदीओना स्वामी समुद्रे, पर्वतोना पति हिमाचले अने इन्द्रदेवनाए पृथुने असंख्य धन आप्युं. सुवर्णमय पर्वतोए सुवर्ण दीधुं तेमज यक्ष अने राक्षसोना अधिपति कुबेरे पण अक्षय धन अर्पण कर्युं. जेथी धर्म, अर्थ अने काम सिद्ध थया. पृथुए ध्यान मात्रथी घोडा, रथ, हाथी अने करोडो मनुष्यो उत्पन्न कर्या. ए समये कोइने वृद्धपणुं, देहरोग के दुर्भिक्ष आदि कोइ प्रकारनो व्याधि न हतो. पृथुनी उत्तम रक्षाथी सर्प के चोर आदिनो लेशमात्र भय नहोतो, तेनी यात्रा समये समुद्रना जळ स्थिर थयां. अने पर्वतोए मार्ग आप्यो. कोइ वखत तेनुं ध्वजापतन थयुं नहि, तेणे यक्ष राक्षस अने नाग आदि सहित पृथ्वीनुं दोहन कर्युं अने सत्तर प्रकारनी खेतीओ प्रगट करी. जे जेनुं अभीष्ट हतुं ते पण महात्मा पृथुए धर्मपूर्वक पूर्ण करी सर्व प्रजाने राजी करी जेथी "राजा" शब्द उत्पन्न थयो. ब्राह्मणोना क्षतनी रक्षाथी "क्षत्री" शब्द अने अतुल धर्मथी आ भूमि प्रख्यात थइ अने तेणे "पृथ्वी" एवुं नाम धारण कर्युं. भगवान् विष्णुए तमाम मर्यादा नियत करी अने "ताराथी कोइ विरुद्ध काम नहि करे" एम पृथुने कही तेना देहमां योगद्वाराए प्रवेश कर्यो. एथी ते नरदेव समान गणाय छे. एथीज जगत आखुं राजाने प्रणाम करे छे अने एथीज राजा दंडनीति पूर्वक राज्यनुं संरक्षण करवाने योग्य छे. देशनी दशाने जोनार अने तेनुं पोषण करनार राजाने कोइ पण पराजय आपी शकता नथी. आ लोकमां समदर्शी राजानां चित्त अने कर्मथी उत्तम कार्य अने उत्तम फळनी कल्पना करी शकाय छे. देवगण शिवाय सर्व लोको राजाने वश थाय छे एनुं कारण ए छे के प्रथम विष्णुना मस्तकमां सुवर्णनुं कमल उत्पन्न थयुं, अने तेनाथी बुद्धिमान धर्मनी रक्षा करवावाळा लक्ष्मी देवी उत्पन्न थयां. ए लक्ष्मीथी धर्मद्वारा अर्थ उत्पन्न थयो. ए रीते धर्मार्थ प्रगट थयां. ज्यारे लक्ष्मी राज्यमां नियत थाय छे त्यारे स्वर्गथी आवी दंडनीतिमां कुशळ बुद्धिवाळो राजा उत्पन्न थाय छे, ते मनुष्य विष्णुना महात्म्यने जाणवावाळो बुद्धिमान बनी प्रतिष्ठा मेळवे छे. देवताओए अभिषेक कराएल राजानुं उल्लंघन करी कोइपण मनुष्य कर्म करी शकता नथी. आ संसार एक राजानेज आधीन थाय छे ते विना आ जगत् कर्म करवा समर्थ थइ शकतुं नथी. राजा शुभ फळ माटे शुभ कर्म करे छे. विश्व आखुं ए एकनी आज्ञाने अनुसरे छे. जे मनुष्य तेना सौम्य मुखनुं दर्शन करे छे, ते तुरतज तेने आधीन थइ जाय छे. एटलाज माटे तेने सर्व लोको "राजा" कहे छे.

राजाए निरंतर उद्योग अने विचार करवो जोइए, कारण के स्त्री समान अविचारी राजानी प्रशंसा थती नथी. जेम बिलमां रहेनारा जीवोने सर्प गळी जाय छे, तेम पृथ्वी पण शिक्षायोग्य पुरुषोने शिक्षा नहि आपनारा राजानुं, वेदाध्ययन अर्थे विदेश नहि जनारा विप्रनुं अने अटन नहि करतां एक स्थाने स्थिर थइ रहेनारा सन्यासीनुं भक्षण करी जाय छे. एटला माटे राजाए सलाह करवा योग्य पुरुषथी सलाह करवी अने दंडने योग्य पुरुषोने दंड आपवो. जे पुरुष [1]सात अंगवाळा राज्यथी विपरीत काम करे, ते गुरु होय के मित्र होय तोपण मारवाने योग्य छे. कारण के प्राचीन समये कर्तव्य अने अकर्तव्यना योग्य कर्मने नहि जाणनारा गुरुने दंड देवाया छे. पूर्वे बाहुना पुत्र सगरराजाए नगरवासीओनी वृद्धिने निमित्त पोताना वडा पुत्र असमंजसनो परित्याग कर्यो हतो. अर्थात् ज्यारे असमंजसे पुरवासीओना बाळकोने सरयू नदीमां डबाड्या त्यारे सगर-राजाए क्रोधायमान थइ तेने देशनिकाल कर्यो, तेवीज रीते उद्दालक ऋषिए पण पोतानो प्यारो पुत्र महा तपस्वी श्वेतकेतु के जे ब्राह्मणोथी मिथ्या व्यवहार करतो हतो, तेने सत्वर तजी दीधो. आ लोकमां राजाओनो सनातन धर्म ए छे के संसारनी प्रसन्नता अने रक्षा पूर्वक सत्य बोलवुं. व्यवहारमां यथार्थ वर्तन करनार, बीजा आगळथी धन लइ ते धन पाछुं समय उपर योग्य पुरुषोने आपनार, पराक्रमी, क्षमावान् अने सत्यवक्ता राजा सुमार्गथी कदिपण भ्रष्ट थतो नथी. चित्तना क्रोधने रोकनार, शास्त्रार्थमां निपुण तेमज धर्म, अर्थ अने काममां प्रवृत्त अर्थात् दिवसना पूर्व भागमां धर्मनुं, मध्याह्न काळे अर्थनुं, रात्रीए कामनुं अने प्रभाते योगनुं कार्य करनार तथा विचारने गुप्त राखनार राजा राज्यने योग्य छे. गुप्त रक्षा अने सारा माणसनी सलाहथीज राजा उन्नति मेळवी शके छे. राजाए चारे वर्णना धर्मोनी रक्षा करी, उत्तम पुरुषोनो विश्वास करवो, परंतु हद उपरांत कोइनो विश्वास न राखवो; निरंतर बुद्धिथी छ गुणा गुण दोषने तपासवा, तेमां वळी शत्रुना दोषो तो खास दीर्घ दृष्टिएथी जोवा; धर्म, अर्थ, अने कामने जाणनार दूतोद्वारा केटलुं-एक काम कराववुं. तेमज गुप्त रीते धन आपी शत्रुओना मंत्रीओने पोताना पक्षमां मेळववा; निरा-धार मनुष्योने आजीविका आपी नोकरी उपर चडावी मंदहास्य पूर्वक तेओनी साथे वार्तालाप करी सर्वने संतोष आपवो. वृद्धिने सन्मान आपनार, आळस रहित, निर्लोभ, सर्व पुरुषोनां वर्त्तन उपर बुद्धिने स्थिर करनार, द्रढ स्वभाववाळा

१—राजा, अमात्य, मित्र, कोशाध्यक्ष, प्रजामांहेना मुख्य पुरुषो, किल्लादार अने सेनापति ए राज्यनी सात प्रकृति अथवा राज्यना सात अंग केहवाय छे.

अने मनोहर मूर्तिवाळा राजा कोइ दहाडो सत्पुरुषोने दंडता नथी, परंतु नीच लोकोने दंडी तेओ पासेथी लीधेलुं धन सत्पुरुषोने समर्पण करे छे. राजाए वखते लेनारा, वखते देनारा, शान्त चित्तवाळा, सुन्दर साधनोने सजनारा, उत्तम भोगोनो उपभोग करनारा, शुद्ध आचारवाळा, शूरवीर, भक्त, धन लइ शत्रुना पक्षमां नहि भळनारा, कुळवान, अन्यनुं अपमान नहि करनार, विद्वान्, सार असारने समजनार, धर्मज्ञ, उत्तम बुद्धिवाळा अने पर्वत समान अडग मनवाळा उत्तम जनोने पोताना सहायक बनाववा. पोताना तमाम माणसोने संदेह रहित नजरथी निहाळवा, कारण के सर्व उपर संदेह राखनारो राजा पोताना माणसोने हाथेज मार्यो जाय छे. संसारना चित्तने स्वाधीन करवानी इच्छावाळा राजाओ शत्रुथी नहि दबातां दिनप्रतिदिन अभ्युदयने पामे छे अने चारे तरफ पोतानी आज्ञाने द्रढ करवा समर्थ बने छे. क्रोध तथा व्यसन रहित जितेन्द्रिय राजाओ हिमालयसमान प्राणीमात्रना विश्वासपात्र थाय छे.

ज्ञानी, त्यागी, शत्रुओना छिद्रो जोवामां तत्पर, सुन्दर दर्शनवाळा, सर्व वर्णनी नीति अने अनीतिने समजनारा, क्रोधने शीघ्रताथी जीतवावाळा, सुगमताथी प्रसन्न थनारा, महा साहसिक, अहंकार रहित क्रिया करनारा अने पोताने मुखे पोताने नहि वखाणनारा राजाओ प्रजानो प्यार मेळवी शके छे. जेम पिताना घरमां पुत्र स्वच्छन्दताथी आनंद करे तेम तेवा राजाओना राज्यमां पण प्रजा निर्भयपणे विचरे छे. जे राजानां कर्म प्रारंभथीज उत्तम अने नीतियुक्त होय ते राजसमुदायमां विशेष वखणाय छे. राजाए परोपकारपरायण बनी पंडितोनो सत्कार करवो अने सत्पुरुषोए मान्य राखेला मार्गने अनुसरी पोतानो प्रजापालन धर्म पूर्ण प्रयत्नथी प्रचलित राखवो, कारण के दरेक मनुष्यो उपदेश नहि आपनारा आचार्यने, वेदविद्यार्थी रहित ऋत्विजने, रक्षण नहि करनारा राजाने, अप्रिय बोलनारी नारीने, गाममां रहेवानी इच्छावाळा गोवाळने अने वनमां वसवानी वांछनावाळा वाणंदने त्रुटी गएलां वहाणनी माफक संसार समुद्रमां तजी दे छे.

राजाए पोताना प्रदेशमा चारने नियत करवा अने तेओने प्रसन्नता पूर्वक मासिक पगार आपवा, युक्तिपूर्वक राजभाग लइ सत्पुरुषोनो संग्रह करवो; शौर्य, चातुर्य अने सत्यताथी प्रजानुं अभीष्ट करवुं. छल विद्याथी प्रतिपक्षीओने शिथिल करवा, जीर्ण थएलां स्थानोनो उद्धार करवो, साधु संतने संतोषवा अने कुलीन जनोना पोषणपूर्वक अन्नआदिनो संग्रह करवो. ज्ञानीओनी सेवा करनारा, सैन्यने प्रसन्न राखनारा, प्रजानी पीडा हरनारा, संसारी कर्मोमां

खेद नहि माननारा, खजानानी अभिवृद्धि करनारा, वैरीओने विश्वास रहित दृष्टिथी विलोकनारा, शत्रुओए व्यापार आदि छळथी वश करेला पुरवासीओने स्वाधीन करवामां कुशळ अने शत्रुनी साथे वसनार पोताना मित्रवर्गने बुद्धिबळथी तपासनार राजा कोइ दिवस दुःखी थता नथी. नीति अने धर्मने अनुसरी उद्योग करवो ए दरेक राजानी फरज छे, कारण के उद्योगथीज इन्द्रे अमृत मेळवी असुरोने हण्या. तेमज नरलोक अने सुरलोक बन्नेमां प्रतिष्ठा प्राप्त करी. जे पुरुष उद्योग करवामां निपुण छे, ते वाग्वीर पंडितथी पण प्रभुत्वने पामे छे. उद्योगी पंडित वीरोने प्रसन्न करी, तेओनी आराधना करे छे. उद्योग रहित राजा शत्रुथी पराजय पामे एमां नवाइ नथी, कारण के विषवाळो सर्प सबळ होय तोपण उद्योग विना शत्रुने मारी शकतो नथी. उद्योगथी अल्प अग्नि आखी दुनियाने बाळी भस्म करी शके छे. थोडुं झेर घणानो संहार करवानी शक्ति धरावे छे. उद्योगी सेनाना एक अंगथी पण शत्रुनो गढ तोडी म्होटां सैन्यथी सुसमृद्ध देशने पराभव आपी शकाय छे. केवळ कोमळताथी के केवळ कठोरताथी राजतंत्र चाली शकतो नथी, परंतु सत्य अने धर्मथीज उद्योगी राजा विजय मेळववा समर्थ बने छे.

राजाए प्रथम प्रजानी प्रसन्नता अर्थे देव अने ब्राह्मणोनुं पूजन करवुं जोइए, तेम करवाथी राजा धर्मना ऋणथी मुक्त बनी विश्वमां वंदनीय थाय छे. राजाए उद्योगनी साथे कर्म करवां उद्योग विना प्रारब्धथी अभीष्टनी सिद्धि थती नथी. राजाओने कार्यसिद्धिने किनारे पहोंचाडनार सत्यता शिवाय कोइ साधन नथी. सत्यनो स्नेही राजा आ लोक अने परलोक बन्नेमां प्रसन्न रहेछे. सत्यता एज ऋषिओनुं उत्तम द्रव्य छे, सत्यता शिवाय राजाओ उपर विश्वास उत्पन्न करावनार बीजुं एके कर्म नथी. गुणवान्, सदाचारी, स्थिर स्वभाववाळो, दयालु, धर्मपरायण, जितेन्द्रिय, सावधान, अत्यंत दानी, प्रसन्न मुखवाळो अने सत्पुरुषोने शरणे जनारो राजा कदि पण नाश पामतो नथी. पोताना दोष, शत्रुना दोषनो निश्चय अने उद्योगनो प्रारंभ ए त्रणे कर्म राजाए गुप्त राखवां तेनी साथे सलाहने पण गुप्त राखवी. अति कोमळ प्रकृतिवाळा राजानी आज्ञाने कोइ आदर आपतुं नथी तेम अति तीव्र प्रकृतिवाळा राजाथी प्रजा व्याकुळ रहे छे एटला माटे अति तीव्रता के अति कोमळता न राखवी.

मरुदेश, जल, पृथ्वी, वन, पहाड अने मनुष्य ए छ किल्लाओमांथी मनुष्योनो किल्लो दुर्गम अने अजेय छे. बुद्धिमान् राजाए चारे वर्णो उपर कृपा राखवी जोइए. जे राजा धर्मात्मा अने सत्यवक्ता होय ते प्रजाने प्रसन्न करी शके छे. दयालु राजाए पण शिक्षायोग्य पुरुषने शिक्षा आपती वखते दया न करवी जोइए, केमके हाथी समान क्षमाशील राजा नीच अने धर्मनो विरोधी थाय छे. नीच मनुष्यो क्षमाशील राजानी प्रतिष्ठामां खलेल पहोचाडे छे. एटला माटे राजाए वसन्त ऋतुना सूर्य माफक अति शीतलता के अति तीव्रता न राखवी. पोताना तथा परायां मनुष्योनी परीक्षा प्रत्यक्ष प्रमाणथी करवी. शिकार खेलवो, द्यूत रमवुं, दिवसे सूवुं, निन्दा, स्त्रीसंग, भांग पीवी, वाद्य वगाडवां तथा मद्यपान इत्यादि कर्मोथी उत्पन्न थनारां व्यसनोनो त्याग करवो. तेमां पण कठिन वचन, व्यर्थ धन लेवुं अने व्यर्थ दंड लेवो ए त्रण व्यसनो कठिन गणाय छे. ए कठिन व्यसनोवाळो राजा पोतानी प्रतिष्ठा गुमावे छे. राजाए निरंतर पोतानी परणेली राणी उपर प्रीति राखवी. अन्य प्रियवार्ताओनो परित्याग करी, जेमां संसारनो उपकार रहेलो होय एवी वातो उपर प्रथम लक्ष आपवुं, धैर्यनो कदि पण त्याग करवो नहि. नोकरोनी साथे कदि पण ठट्ठा मश्करी करवी नहि, कारण के एमां दोष छे. बहु हास्य आदि करवाथी सेवक लोको मालिकनुं अपमान करे छे. पोताना अधिकारनी फरज बराबर बजावता नथी. आज्ञानो पण भंग करे छे, करवा योग्य कर्मोमां संदेह उपजावे छे, गुप्त विचार बीजाने जणावी दे छे, अयोग्य वस्तुनी याचना करे छे, मालिके खावा योग्य वस्तु पोते खाइ जाय छे, क्रोध करी मालिकनी छाती उपर चडी बेसे छे, छळयुक्त वातोथी सांसारिक कार्यने बगाडी दे छे, पोते परभारा हुकम आपी मालिकना देशने निर्बळ बनावे छे, स्त्रीओना रक्षकोथी मळी जाय छे, मालिकना सरखो पोशाक पहेरवा लागे छे. मालिकनी सन्मुख थुंकाथुंक करे छे अने मालिके करेली गुप्त वातो निर्लज बनी प्रसिद्धिमां लावे छे. राजानो कोमळ स्वभाव होवाथी तथा तेओनी साथे पोतानुं मन मळी गयेलुं होवाथी नोकर लोको तेनुं अपमान करी तेओना घोडा, हाथी अने रथ आदि सवारीओपर स्वार थाय छे, जे जोइ सभामां बेठेला सुहृज्जनो अति खेद पामे छे. मोढे चडावेला माणसो मालिकनुं काम बगडवाथी हसे छे इनाम आदिथी प्रसन्न थता नथी, परस्पर ठट्ठामश्करी करे छे, मालिकनी आज्ञाने रमत अने अपमान पूर्वक उडावे छे, भय रहि- तथा निर्लज बनी जाय छे. पोताना अधिकारनी तुच्छता बनावी मुख बगाडी नांखे छे, पगारथी संतोष पामता नथी, राज्यनां धनने चोरी जाय छे अने मालिकनी साथे

चाहे छे अने तेओ बीजा माणसो पासे कहे छे के राजा तो अमारा गुलाम छे. आवां कारणोथी राजाए विशेष कोमळता न राखवी. तेमज हजुरमां रहनार माणसो साथे हद उपरांत हास्यविनोद न करवो.

प्रथम तो राजाए पोताना चित्तने वश करवुं, त्यारबाद शत्रुओनो विजय करी शकाय छे, चित्तने वश कर्या शिवाय राजा कदिपण शत्रुओनें वश करी शकतो नथी. पांचे इन्द्रिओने स्वाधीन राखवी एज चित्तनुं वश करवुं कहेवाय छे. जितेन्द्रिय राजा प्रतिपक्षीओने पीडी शके छे. गुल्म अर्थात् रक्षा करवावाळी सेनाने गढ, देश, नगर, वन अने उपवन आदि स्थानोमां राजाए नियत करवी. राजमहेल आदि स्थळोपर पेहरागीरोने राखवा. मनुष्योना मनने जाणवावाळा, बुद्धिमान्, भूखतृषाना परिश्रमने सहन करनार तेमज अज्ञान, अन्ध अने बधिरना रुपने धारण करी शके तेवा जासूसोने वातमी मेळववा सर्व स्थळे योजवा. जे काममां पोतानी बुद्धि न पहोंचे ते काममां मंत्रीनी सलाह लेवी, पराक्रमी राजाथी सन्धि करवो. जे राजा महान उत्साही, धर्मज्ञ अने सज्जन होय तेनी साथे राजाए सदा संपथी वर्तवुं. पोतानी प्रजा पासेथी छठ्ठो भाग लइ ते धन तेनी रक्षा निमित्ते वापरवुं, अरजदार, प्रजावर्गने न्याय आपवा माटे बुद्धिमान् अने सत्यशील मनुष्योने योजवा. कारण के तेमां राज्यनुं हित समाएलुं छे. सोनानी खाण, निमकनुं स्थान, अनाजनी बजार अने नदीना पूल आदि स्थानोपर आवक जावकनो विचार करवा वास्ते दीर्घदर्शी अधिकारीओने नियत करवा. निरंतर उत्तम प्रकारना दंडने धारण करवावाळो राजा धर्मात्मा गणाय छे. जे राजा वेदवेदांगने जाणनार पंडित, तपस्वी तथा दान अने यज्ञनो अभ्यासी होवा छतां व्यवहार कुशळ न होय तो तेने यश के सुखनी प्राप्ति थती नथी.

राजाए पोतानुं बळ स्वल्प होय अने सामा पक्षवाळो प्रबळ होय तो तुरतज तेनी साथे सन्धि करवो. बळवाळो प्रतिपक्षी कृपण होय तो तेने धन आपी शान्त करवो. पैसा आपी पंडितोने पोताना पक्षमां मेळववा, पोताना बळवान समयमां दया लावी छोडी मुकेला दुष्ट शत्रुने निर्बळता प्राप्त थया पहेलां मारी नांखवो अथवा मारवानी शक्ति न होय तो तेनी उपेक्षा करवी. दूत द्वाराए सामा पक्षवाळाओने जीती शकवाना समाचार मळे तो तुरतज गुप्त रीते सैन्य लइ तेओना उपर चढाइ करवी. चढाइ कर्या पहेलां पोताना तथा सामावाळाना बळनी तुलना करी श-हेरना संरक्षण माटे बराबर बंदोबस्त राखवो. वखते सामा पक्षवाळो प्रबळ होय तो पोताना देशनी

कइ वस्तुओ तेना देशमां नहि पहोंचवाथी ते वळरहित बनशे तेनो पुरतो तपास करी तेवी वस्तुओनो निकास थवा देवो नहि. प्रतिपक्षीना राज्यने पराभव आपवा माटे अग्नि आदि तमाम साधनोनो उपयोग करवो. तथा तेओना मंत्रीओने लालच आपी पोताना मित्र बनाववा; पराक्रमी प्रतिपक्षी पीडा करशे एवुं मालूम पडे तो तुरतज कुटुम्ब तथा मित्र वर्ग सहित कोइ एक मजबूत किल्लानो आश्रय लेवो अने तेमां साम, दाम, भेद अने दंड आदिनो विचार करवो. एवा संकटना समयमां सबळ शत्रु पोताना गामडांओमां उपद्रव फेलावतो होय तो तेवां गामडाओने उज्जड करी लोकोने शहेरनी समीपे वसाववा. धनाढय प्रजाने किल्लामां राखी तेओने निरंतर धीरज आपवी. पोताना प्रदेशमां निपजतुं तमाम धान्य किल्लामां स्वाधीन राखवुं, जे स्थानेथी अन्न लावी शकाय तेम न होय ते स्थानने युक्तिथी सळगावी देवुं, परंतु प्रतिपक्षीओने हाथ प्राप्त थवा न देवुं. कदाच तेवां खेतरोनी अंदर जइ शकाय तेम न होय तो शत्रुनां माणसोने खुटाडी आग लगावी देवी. जेम ते धान्य पोताने हाथे न आवे तेम शत्रुने हाथ पण न जाय. एवा विकट वखतमां नदीना पुलोने तोडी पडाववा, तळावोने जळ रहित करवां, कुवा तथा वावोना पाणीनी अंदर विष नखाववुं, शत्रुना शत्रु साथे मैत्री करी तेनी सहायता मेळववी- शत्रुनी निर्बळता मालूम पडे के तुरत तेनो विध्वंस करवो. वृक्षोना झुंडनो न्हानो सरखो दुर्ग होय अने ते शत्रुने हाथ जवा संभव होय अने ते दुर्ग तेना आश्रय-रुप थइ पडे तेम जणाय तो तुरतज ते दुर्गने कापी नांखवो, परंतु तेवा म्होटा दुर्गने तथा देव-वृक्षोने कापवां नहि. राजाए पोताने रहेवाना दुर्गनी चारे दिशाए उत्तम प्रकारना बुरजो बंधाववा, तेमां गोळाओने बहार फेंकवा माटे छिद्रो रखाववां, आसपास जळथी भरेली खाइ तैयार कराववी, श्वास लेवा माटे न्हानां न्हानां द्वार रखाववां अने त्यां पहेरागीरोने नियत करवा, द्वारो उपर म्होटी म्होटी तोपो तैयार राखवी, कुवाओ खोदाववा, प्रथम तैयार करावेला कुवाओने साफ कराववा, घासथी बांधेलां छापरांओने मृत्तिका आदिथी लींपाववां, काष्टनो संग्रह करी राखवो. तेवा समयमां चैत्र के वैशाख मास होय तो दिवसे पण अग्निने कोइ प्रज्वलित न करे तेवी चोकसी राखवी. सैन्यने खावानी वस्तुओ रात्रीए पकाववी, अग्निहोत्र शिवाय दिवसे अग्नि सळगाववा देवो नहि, लुहार आदिनी दुकानोमां अग्निनी पूरती संभाळ राखवी, घरोमां अग्निने राखमां दबावी राखवो, जो कोइ दिवसे घरमां अग्नि प्रज्वलित करे तेने पूरती शिक्षा आपवी. भिक्षुक, कुंभार, नपुंसक, प्रमत्त अने कुशील इत्यादि पुरुषोने बाहेर रजा आपी देवी, कारणके वखते तेओ हानिकारक

थइ पडे छे.

राजाए अमात्यथी आरंभी जंगलखाताना अधिकारी पर्यन्त अढार अमलदारो योजवा. अने तेओनी तपास राखनारा बीजा गुप्त अढार माणसोने राखवा जोइए. शहेरना रस्ताओ पहोळा राखवा. तेमज घोडार, हाथीखानुं, तोपखानुं, तोपाखानुं अने लडवैयाओने रहेवानां स्थान अजय राखवां. जोइए. किल्लानी अंदर कोइ न जाणी शके तेवा गुप्त रस्ताओ राखवा. दुर्गमां द्रव्यनो संग्रह करवो. काष्ठ, घास, तैल, घृत, मध, चरवी, तमाम जातनी औषधिओ, कोयला, डाभडानो जत्थो, खाखरानां पर्ण, जव, विषथी भरेलां बाणो, धनुष आदि शस्त्रो, शक्ति, बे धारवाळी तलवारो, बखतरो, फळ, मूळ, चार प्रकारना वैद्य (विषवैद्य, रोगवैद्य, शस्त्रवैद्य अने मंत्रवैद्य) नट, नर्तक, मल्ल, अने मायावी आदि मनुष्यो ए सर्वथी किल्लाने सुसमृद्ध करवो. राजाए पोतानो देह, मंत्री, खजानो, मित्र, दंड, देश, अने पुर ए सात रक्षा करवा योग्य छे, कारण के ते साते राजानां अंग गणाय छे. जे राजा षाड्गुण्य अने त्रिवर्गने जाणे छे ते पृथ्वीने भोगवी शके छे. सन्धि करवो, चढाइ करवी, शत्रुता करी सन्मुख उभा रहेवुं, शत्रुने भयभीत करवा माटे चढाइ करी छे एवुं बतावी पोताना स्थान उपरज स्थिर रहेवुं. बन्ने तरफथी सन्धि करवो अने एवीज रीते किल्ला आदिमां निवास करवो अथवा बीजा कोइ महान राजाने शरणे जवुं. ए षाड्गुण्य; तथा आमदानी, खर्च अने खजानानी वृद्धि तेमज धर्म, अर्थ, अने काम ए श्रेष्ठ त्रिवर्ग कहेवाय छे. धर्मपूर्वक राज्य करवावाळो राजा लांबा वखत सुधी पृथ्वीनो उपभोग करे छे. राजाए तप के यज्ञ आदि करवानुं कांइ प्रयोजन नथी, फक्त धर्मथी प्रजानुं पालन करनारो राजा धर्मज्ञ गणाय छे. दंड नीति चारे वर्णोने पोतपोताना धर्ममां प्रवृत्त करे छे. अने दंडनीतिने जारी राखनार राजानी प्रजा निर्भयपणे उद्योग करी सर्व प्रकारनां सुख पामे छे. राजानो हेतु काल अने कालनो हेतु राजा छे. ज्यारे राजा दंडनीतिथी परिपूर्ण कर्म करे छे त्यारे सत्ययुग नामनो काल उत्पन्न थाय छे, धर्म वृद्धि पामे छे, अधर्म नष्ट थाय छे, कोइ वर्णनुं दिल अधर्ममां दोरातुं नथी, तमाम गुण वृद्धिने अनुसरे छे, सर्व सुख अने ऋतुओ निर्विघ्न बने छे, मनुष्योना सर्व वर्ण अने चित्त शुद्ध थाय छे, रोग के अल्प अवस्था होती नथी, स्त्रीओमां कुपात्रता देखाती नथी, कोइ कृपण होतुं नथी, परिश्रम विना पृथ्वीमां अन्न आदि घणांज उपजे छे अने औषधि, फळ, फूल, त्वचा अने मूळ आदि महान सत्व वाळां थाय छे. ज्यारे राजा दंडनीतिनो चोथो भाग तजी त्रण

भागने ग्रहण करे छे त्यारे त्रेता युग प्रवृत्त थाय छे, ए त्रण भागनी सामे अधर्मनो चोथो भाग आवी उभो रहे छे, तेमां खेती सफळ थाय छे अने औषधिओ पण उपजे छे. ज्यारे राजा दंड नीतिना अर्ध भागने छोडी दे छे त्यारे द्वापर नामनो युग प्रवर्ते छे, ते समये अधर्मनो अर्ध भाग सन्मुख प्राप्त थाय छे; ए युगमां फळ, अन्न तथा औषधि आदि अरधां निपजे छे; ज्यारे राजा समग्र दंडनीतिनो त्याग करी वगर विचार्ये प्रजाने दुःख आपे छे त्यारे कलियुग नामनो काळ व्याप्त थाय छे, ए कलियुगमां घणा अधर्मीओ उत्पन्न थवाथी धर्मनी मर्यादा रहेती नथी, तमाम वर्णोनां चित्त पोतपोताना धर्मथी पृथक् थइ जाय छे, शूद्रो भिक्षाथी अने ब्राह्मणो सेवाथी पोतानी आजीविका चलावे छे, धननी प्राप्ति अने तेनुं रक्षण ए बन्ने नाश पामे छे, वैदिक कर्म निष्फळ थाय छे, सर्व ऋतुओ सुख रहित अने रोगोथी घेराय छे, मनुष्योना देह, स्वर अने चित्त मलिन बनी जाय छे; रोगोने लीधे मनुष्योनां अकाल मरण थाय छे, स्त्रीओ पाप बुद्धिथी खराब चाल चाले छे, निर्दय प्रजानी उत्पत्ति थाय छे, खंड वृष्टि अर्थात् कोइ कोइ जगो ए नथी फळती. ज्यारे राजाओ दंडनीतिथी सावधान थइ प्रजानुं पोषण नथी करता त्यारे तमाम रसो विनाश पामे छे, राजाज सत्य, त्रेता, द्वापर अने कलियुगना कारणरुप छे. सत्ययुगने प्रवृत्त करनारो राजा अक्षय स्वर्ग सुख भोगवे छे, त्रेताने प्रवर्तावनारो राजा अल्पकाळ स्वर्गनो उपभोग करी शके छे, द्वापरने उपजाव-नारो राजा भाग्य मुजब स्वर्ग भोगवे छे अने कलियुगने उत्पन्न करनारो राजा महान पापोनो भोक्ता थाय छे अर्थात् घणा समय सुधी नर्कमां निवास करी रहे छे, अने प्रजाना पापोमां डूबी अत्यंत अपयशने प्राप्त थाय छे. एटलामाटे क्षत्रीलोकोए पूर्ण दंडनीतिथी अप्राप्तने प्राप्त अने प्राप्त-नी रक्षा करवी. उत्तम प्रकारे प्रवर्तावेली दंडनीति मातापिता समान संसारनी स्थिति अने वृद्धि करवावाळी मर्यादारुप थइ पडे छे.

राजाए रागद्वेष रहित थवुं, आस्तिक बनवुं, तमाम धर्म उपर प्रीति राखवी, परलोकनुं चि-न्तवन करवुं, लोभ न करवो, दया युक्त थइ धनने भेळुं करवुं, धर्म अर्थ युक्त इन्द्रियोने प्रसन्न राखवी, उदारता पूर्वक प्यारां वचनो बोलवां, आत्मश्लाघा रहित पात्र कुपात्रनो विचार करी पात्रने दान देवुं, नीच मनुष्योथी स्नेह न करवो, बुद्धि पूर्वक बान्धवोथी द्वेष न बांधवो, अल्प आ-जीविका आपी दूतोने रखडाववा नहि तेम तेओने दुःख देवुं नहि, हलका लोको आगळ पोताना गुण के प्रयोजन कहेवां नहि, सत्पुरुषो पासेथी धन लेवुं नहि, अधम लोकोनुं रक्षण करवुं नहि, तपास कर्या शिवाय कोइने शिक्षा करवी नहि, विचारने गुप्त राखवा, लोभीने धन आपवुं नहि,

कृतघ्नी लोकोनो विश्वास न करवो. इर्षा न राखवी, स्त्रीओनी रक्षा करवी, शुद्ध रहेवुं, दया राखवी, घणी स्त्रीओनुं सेवन करवुं नहि, स्वच्छ भोजन करवुं, क्रियावान् पुरुषोने पूजवा, गायोनुं पूजन निश्चलपणे करवुं, यज्ञआदि धर्मोथी देवताओने प्रसन्न करवा, उत्तम लक्ष्मीनी चाहना राखवी, नम्रता पूर्वक इश्वरनी सेवा करवी, बुद्धिशाळी बनवुं, समयने समजवो, अपराध जाण्या विना वैरीने पण दंडवो नहि, अपराधी शत्रुओने मारवामां विचार न करवो, विना कारण क्रोध करवो नहि अने कृतघ्नीओ सामे नम्रता वतावची नहि. ए रीते छत्रीश प्रकारना सद्गुणोथी संपन्न राजा आ लोकमां अनेक ऐश्वर्यनो उपभोग करी स्वर्गमां सारी प्रतिष्ठा पामे छे.

राजाए पोताना पुरोहित आदिने दान दक्षिणा दइ राज्यनां कामो करवां, शुद्ध भावथी धैर्यने धारण करी राजभाग लेवो, मूर्ख के लोभीने कांइ काम सोंपवुं नहि. बुद्धिमान् अने लोभरहित पुरुषोने अधिकार सोंपवा; खेतीनो पवित्र षष्ठांश, अपराधिओनो दंड अने खंडीआ राजाओ पासेथी खंडणी शास्त्रनी रीते लइ धननी वृद्धि चाहवी, परंतु ज्यारे अन्न आदिनो छठ्ठो भाग लेतां प्रजाना वार्षिक खर्चमां वांधो आवे एम होय तो राजनीति प्रमाणे महेसूल आदि माफ करवां अने प्रजानी आजीविका तथा रक्षानो प्रथम विचार करवो के जेथी प्रजा पण एवा धर्मात्मा अने दानी राजाने अनेक प्रकारे आनंद आपे छे. राजाए अधर्म के लोभथी धननी इच्छा न करवी, शास्त्रथी विरुद्ध वर्तनार राजाना धर्म अने अर्थ बन्ने नष्ट थाय छे, धननी इच्छा राखनारो राजा शास्त्र उपर दृष्टि राखी शकतो नथी अने भूलथी प्रजाने पीडे छे, जेथी ते पोताने हाथेज पोतानुं मृत्यु उपजावे छे. जेम दूधनी इच्छावाळा पुरुषने गायोना थान कापवाथी दूध मळी शकतुं नथी, परंतु गायनी उपासना करे तो ते निरंतर दूधने प्राप्त करी शके छे; तेवीज रीते राजा पण देशने पीडवा मांडे तो सारुं फळ मळतुं नथी, परंतु विचार पूर्वक देशने भोगववाथी तेने उत्तम फळनी प्राप्ति थाय छे. रैय्यत पण आबाद बने छे अने तीजोरी पण तर थाय छे. सुरक्षित पृथ्वी राजाने तेमज प्रजाने अन्न, सुवर्ण अने रत्न आदि आपे छे; जेम माळी उत्तम वृक्षने उछेरे छे अने हानिकारक वृक्षोने उखेडी फेंकी दे छे तेवीज रीते राजाए पण प्रजानुं पालन करवुं जोइए. धर्मपूर्वक प्रजानुं पालन करनार राजा कदि पण शोकने आधिन थता नथी. तमाम धर्मो करतां प्रजापालन धर्म उत्तम गणाय छे. भयथी प्रजानुं रक्षण नहि करनारो राजा एक दिवसमां जे पाप करे छे, ते पापमांथी हजार वर्षे पण मुक्त थइ शकतो नथी अने धर्मपूर्वक प्रजाने पाळनारो राजा एक दिवसमां जे पुण्य करे छे ते

पुण्य दशहजार वर्ष पर्यन्त तेने स्वर्गमां आनंद आपे छे. राजाए बहुश्रुत, महानुभाव अने धर्म अर्थने जाणनार ब्राह्मणने पुरोहित बनाववो, तथा धार्मिक पुरुषोनुं दानपूर्वक सन्मान करवुं, राजा जे धर्मने मान्य राखे छे ते धर्म सर्व स्थळे मनाय छे, राजा जे जे कर्म करे छे ते कर्मने प्रजा सुखदाइ समजे छे. राजाए शत्रुओ माथे मृत्युसमान दंड धारण करवो, चोर आदिने मारवा अने अपराधिने क्षमा न आपवी. रक्षण कराएली प्रजा जे धर्म करे छे तेनो चतुर्थांश राजाने मळे छे. तेम प्रजाए करेल दान, यज्ञ, व्रत अने वेदपाठ आदि कर्मोमांथी पण राजाने चतुर्थांश प्राप्त थाय छे. अरक्षित प्रजा जे पाप करे छे तेनो पण चतुर्थांश राजाने मळे छे. निर्दय अने मिथ्यावादी मनुष्यो जे कर्म करे छे तेनो संपूर्ण अथवा अर्ध भाग राजाने प्राप्त थाय छे. राजाए कोइने दानथी, कोइने पराक्रमथी अने कोइने सत्य वचनोथी स्वाधीन करवा.

राजाना मंत्री चार प्रकारना होय छे. एकतो समान प्रयोजनवाळा, बीजा प्राचीन, त्रीजा सबन्धी अने चोथा बनावेल, धर्मात्मा मित्र पण पांचमा मंत्री गणाय छे. ते मंत्रीओ पक्षपात रहित होवा जोइए, बन्ने पक्ष तरफथी गुप्त धन लेनारा कपटी न होय, धर्ममां स्थिति करनारा होय पोतानी उदासीन अवस्थामां पण धर्मने तजनारा न होय, तेवीज रीते कार्यकुशळ अने दीर्घद्रष्टिवाळा होवा जोइए. ए चारे मंत्रिओमांथी मध्यना बे अर्थात् प्राचीन अने सबंधी श्रेष्ठ गणाय छे, समान प्रयोजनवाळा अने नवा बनावेल मंत्री सदा संदिग्ध अने बाकीना बधा शंकाने योग्य छे. मंत्रीओए बधां काम पोतानी आंखे जोइ, करवां अने निश्चित मंत्रो राजाने जणाववामां विलंब न करवो, कारण के असावधान राजानुं तमाम लोको अपमान करे छे, असाधु साधु बनी जाय छे अने साधु पुरुषो भय उपजावनारा थाय छे, शत्रु मित्र बने छे अने मित्र शत्रुता करे छे, कारण के मनुष्यनी बुद्धि निरंतर एक सरखी रहेती नथी; एटला माटे कोना उपर विश्वास राखवो ए कांइद्रढ करी शकातुं नथी. राजाए उत्तम कर्मो पोतानी हाजरीमां करवां अने कराववां, अत्यंत विश्वास करनार राजाना धर्म अने अर्थ नष्ट थाय छे, परंतु सर्व स्थळे अविश्वास राखवो ए मृत्युथी पण अधिक छे; विश्वास अकाल मृत्यु छे, विश्वासथी काम लेनार वखते आपत्तिमां पडे छे, राजा जेनो विश्वास करे छे तेनी इच्छाथी ते जीवी शके छे, माटे राजाए केटलाएक उपर विश्वास राखवो अने केटलाएक उपर संदिग्ध रहेवुं, सनातन नीतिनी रीति समजवा जेवी छे. राजाए पोताना मृत्यु पछी जे राज्यनो मालक थवानो होय तेनो विश्वास करवो नहि कारणके ज्ञानी लो-

कोए तेने शत्रु कहेल छे. बीजाना क्षेत्रना जलनी गति पोताना क्षेत्र तरफ थती होय तेनो विश्वास न करवो, कारणके ते बंध तोडी पाणीना अधिक प्रवाहने चलावे तो वखते देशने बरबाद करे छे. पोतानी सीमा समीपे रहेनारा राजानो पण विश्वास करवो नहि, कारणके ज्यां सुधी ते सीमा उपर प्रबंध न राखे त्यां सुधी पोताना देशमां व्यापार आदि उत्तम प्रकारे चाले छे. परंतु विपरीतपणाने धारण करे तो हानिकारक थइ पडे छे. मित्रनी वृद्धिथी संतुष्ट न थाय अने हानिथी महान् दुःखी थाय ते मित्र गणाय छे. जे एम माने के मारा नाशथी मित्रनो नाश थशे एवा मित्र उपर निश्चय पूर्वक पिता समान विश्वास राखवो. उक्त लक्षणवाला राजाने धर्म कर्मोमां विघ्न नडतां नथी. राजाए व्यसनोथी निरंतर भयभीत रहेनार अने पोताना राज्यनी वृद्धि माटे शत्रुता नहि करनार राजाने आत्मिक मित्र गणवो; तेमज रुप, वर्ण, अने स्वरथी संपन्न, क्षमावान, गुणमां दोषनी कल्पना नहि करनार अने कुलीन पुरुषने प्रधान बनाववो. शास्त्रोनुं स्मरण राखनार, बुद्धिनो स्वामी, याददास्तवाळो, चतुर, स्वभावे दयाळु, पोतानी प्रतिष्ठा रहे के न रहे तो पण कदापि हृदयमां शत्रुताने स्थान नहि आपनार ऋत्विज, आचार्य अथवा वखाणवा लायक मित्रने मंत्रीनुं स्थान आपवुं योग्य छे. एवा मंत्रीओ उपर पूर्ण विश्वास राखवो तथा तेओने पिता माफक पूज्य गणी तेना महान मंत्रने मान आपवुं. एक काम उपर बे अथवा त्रण अधिकारी कदि पण योजवा नहि, एक काम उपर एकज अधिकारीने नियत करवो, कारण के जीवोमां हमेशां विपरीतता थाय छे. एक काम उपर झाझा अधिकारीओ योजवाथी तेओमां परस्पर क्लेश उत्पन्न थवा संभव रहे छे. तेमां पण जेओ धर्मज्ञ अने मर्यादापूर्वक वर्तन करनारा होय छे तेओ समर्थ मनुष्यो साथे शत्रुता करता नथी अने इच्छा, भय, लोभ तथा क्रोध आदिने लीधे धर्मने छोडता नथी. चतुराइथी सर्वनुं प्रिय बोलनारा, कुलीन, श्रेष्ठ स्वभाववाळा, दयाळु, पोतानी प्रशंसा नहि करनार, शूरवीर, बुद्धिशाळी, कार्याकार्यनो विचार करवावाळा, सत्पुरुषोनी सोबत करनार अने उत्तम कर्मोमां प्रीति राखनार पुरुषो राजाना मंत्री थवाने योग्य छे, एवा पुरुषोज प्रजानुं कल्याण करी शके छे.

राजाए पोताना सजातीय पुरुषोनी अभ्युत्थान आदिथी प्रतिष्ठा वधारवी तथा तेओने उत्तम वचनोथी आनंद आपवो. जे पुरुष धननो रक्षक होय तेनी रक्षा राजाए करवी जोइए. कोइ दास अथवा नोकर मंत्रीए जप्त करेला अथवा नष्ट करेला खजानानी वात करे तो ते वात राजाए एकान्तमां सांभळवी अने एवा मंत्रीथी खजानानी रक्षा करवी. चोरी करनारा मंत्रीओ घणाओने

मारे छे. राज्यना खजानाने गुप्त रीते चोरनारा तमाम नोकरो भेळा थइ वखते खजानाना रक्षकने पीडे छे जेथी अरक्षित खजानो नष्ट थाय छे. राजाना सेवकोनी ए आजीविका पापरुप गणाय छे. एवा नोकरो अस्वस्थ चित्तवाळा राजाने वखते भूलथाप खवरावी दे छे, माटे राजाए सर्व दशामां स्वस्थ रही भूल करवी नहि. नोकरोनी गफलतथी राजा हानिना भोक्ता थाय छे अने हानिने प्राप्त थनार राजामां जीवन टकी शकतुं नथी. जेम देदीप्यमान अग्निमां जीव वळीने भस्म थाय छे तेम राजाने शिक्षा करवानी इच्छावाळा मनुष्य पण नाश पामे छे. अप्रिय वचन, फोकटनी उठवेश, यात्रा आदि इंगित अने देहना आंगिक कर्मोथी शंका करवावाळा मनुष्ये जीवननी आशा तजी निरंतर युक्ति पूर्वक राजानी सेवा करवी. प्रसन्न थएल राजा देवताओ समान इच्छित आपे छे अने क्रोधायमान थतां ते वैश्वानर अग्नि समान मूळ सहित वाळी भस्म करे छे.

जे पुरुष लज्जावान, जितेन्द्रिय, सत्यवक्ता, सन्मार्गगामी अने न्याय अन्याय समजवामां समर्थ होय तेज राजाना सभासद थवाने योग्य छे. राजाए महा शूरवीर, शास्त्रज्ञ, संतोषी अने श्रेष्ट कर्मवाळा मंत्रीओने सहायक बनावी आपत्तिमां तेओनी सलाह लेवी. ए मंत्रीओ कुलीन अने राजमान्य होवाथी पोताना सामर्थ्यने छुपावता नथी. तेओ प्रसन्न, अप्रसन्न, पीडित अने घायल आदि घणां मनुष्योने राजकाजमां प्रवृत्त करे छे. राजाए कुळवान, देशी, रुपवान, ज्ञानी, घणां शास्त्रने जाणनार बुद्धिशाळी अने स्वामीभक्त पुरुषोने नोकर राखवा. कुलीन छतां लोभी, निर्दय अने निर्लज नोकरो ज्यांसुधी पोताना हाथ लीला रहे त्यां सुधीज राजानी सेवा करे छे. कुळवान, आनंदी मनवाळा, आंख आदिना इशाराने ओळखनार, कोमळ स्वभाववाळा, देश कालनी रीतने जाणनारा अने राजानी उन्नति चाहनारा मंत्रीओने राजाए उत्तम अधिकार आपवा तथा तेओने न्हाना मोटा उपभोगथी सुखी राखवा. ज्ञानी, गुरुपूजन करनारा, नेक चलनवाळा, विविध वृत्त आचरनारा, सत्यवादी, अने निरंतर चाहनारा मंत्रीओ आपत्तिना वखतमां पण राजानो त्याग करता नथी. जे नीच, बुद्धिरहित, धर्माधर्मने नहि जाणनार अने मर्यादा रहित मनुष्यो होय तेनाथी राजाए बचता रहेवुं. समुदायने छोडी एक उपर वधारे प्रीति वतावती नहि. कदाच समुदायमांथी एकज स्वीकारवा योग्य होयतो तेवी अवस्थामां घणा मंत्रीओ करतां एकज राज्यनुं कल्याण करनारो थइ पडे छे. मंत्री हमेशां द्रढ मनवाळा होवा जोइए, कारणके अस्थिर मनना माणसो काम पूर्ण करवाने समर्थ थइ शकता नथी. निष्कपटी मनुष्य मीठां वचनथी प्राणीमात्रनो प्रीतिपात्र

थइ महान् कीर्ति मेळवे छे अने भ्रकुटी चढावी कडवुं बोलनारो माणस मीठा रहित भोजननी माफक, अरुचिकर थइ पडे छे. दंडधारी राजाए पण मिष्ट वचन बोलवां के जेथी राज्यनी वृद्धि- थाय. सर्व सद्गुण संपन्न पुरुष विरला होय छे, आ दुनियामां एक स्वभावना मनुष्यो महा महे- नतथी पण मळी शकतां नथी. राजाए पचास वर्षनी अवस्थाए पहोंचेला, बुद्धिशाळी, निर्लो- भ, तथा निर्व्यसनी पुरुषने मंत्रीओमां प्रधानपद आपवुं. न्यायखातामां पण धर्माधर्म- ने समजनारा प्रवीण पुरुषोने योजवा, कारण के न्यायाधीश राज्यने अधर्मथी उगारे छे. अधि- कार पामी उत्तम कर्म नहिं करनारा नोकरो पोतानी साथे राजाने पण अधोगतिए पहोंचाडे छे. संसारनो रक्षक राजा पराक्रमीओना वळथी घायल थएला तथा दुःखी अनाथोनो नाथ छे. न्याया- धीशे वादी प्रतिवादीना अपराधने साक्षीथी साबीत करी अपराध मुजब शिक्षा आपवी तथा वकील वगरना मुकदमा उपर विशेष ध्यान आपवुं. धनवान पासेथी दंड लेवो अने निर्धनोने केद आदिनी शिक्षा करवी. राजाए दुराचारी राजाओने पण चढाइ आदिथी भयभीत करवा. श्रेष्ठ पुरुषोनुं मीठां वचन अने इनाम आदिथी पोषण करवुं. जे पुरुष राजाने मारवानी इच्छावाळो होय, आग लगाडनारो होय अने वर्णसंकर करनारो होय तेनो अनेक प्रकारे नाश करवो. उत्तम प्रकारनी दंडनीति धरनारो अने शास्त्रानुसार कर्म करनारो राजा कदि पण अधर्मने प्राप्त थतो नथी. अज्ञानी राजा इच्छानुसार प्रजाने दंडे छे. जेथी ते आ लोकमां अपयशनो भागी थइ अन्ते नर्कमां निवास करे छे. राजाए अपराधीनेज दंडवो अथवा पिताना अपराधथी पुत्रने शिक्षा न करवी. आप- त्तिना वखतमां पण दूतने न मारवो, दूतने मारनारो राजा मंत्रीओ समेत अधोगतिने पामे छे, क्षमाधर्म उपर प्रीति राखनारा अने सन्मार्गगामी राजाए कोइपण अवस्थामां दूतनो वध न करवो. कुळवान वहोळा कुटुंबवाळा, प्रियवक्ता, चतुर, पोताना मालीकना कह्या मुजब वार्ता करनार, स्म- रण शक्तिवाळा अने रक्षण करनार पुरुषोने किल्ला तथा नगर आदिना दरवज्जापर नियत करवा अर्थात् उपरना सात गुणोथी संपन्न पुरुषोने दरवाननी जगो आपवी. सन्धि अने विग्रहनो विचार करनारा मंत्री धर्मशास्त्रने समजता होवाथी मंत्रोने गुप्त राखे छे. कुलीन सत्व- गुणी अने पवित्र मंत्री प्रशंसापात्र थाय छे. राजाए व्यूह, यंत्र अने आयुध आदि कळामां कुश- ळ, तत्वज्ञ, पराक्रमी, शीत धूप तथा वर्षा वायुने सहन करनार, शत्रुना दोषने जाणनार, शत्रुने विश्वास आपनार परंतु पोते कोइनो विश्वास नहि करनार जे पुरुष होय तेने सेनापतिनुं स्थान आपवुं.

राजाओए उत्तम प्रकारना किल्लाओ तथा शहेरो तैयार कराववां जोइए. किल्लाओ छ प्रकारना छे.

१ जे ठेकाणे पाणी थोडुं होवाथी शत्रु हेरान थाय एवा निर्जळ देशमां किल्लो बनावेलो होय ते " धन्वदुर्ग " २–जमीन उपर किल्लो बांधेल होयते " महीदुर्ग " ३–पर्वतनी टोच उपर किल्लो बांधेल होयते " गिरिदुर्ग " ४–मनुष्योनो महान समूह ज्यां रहेतो होयते " नरदुर्ग " ५–धूळनो किल्लो होयते " मृत्तिकादुर्ग " अने ६–घाटां वृक्षो वाळुं जंगल होयते, " वनदुर्ग " कहेवाय छे.

ए षट्दुर्गमांथी कोइ एक दुर्गवाळा नगरमां पोताना कुटुम्ब कबीला साथे निवास करवो. उक्त दुर्गमां धन, धान्य, शस्त्र, हाथी, घोडा, रथो, विद्वानो, शिल्पज्ञ, अनेक प्रकारना पदार्थो अने धार्मिक मनुष्योनो संग्रह करवो तेमज रस्ताओने रमणीय बनाववा, देवमंदिरो बंधावी तेमां कायमने माटे पूजारीओ राखवा, श्रीमन्तोने वसाववा, सुशोभित मकानो बंधाववां अने प्रधान तथा सेनापतिने स्वाधीन राखी खजानो, फोज अने मित्र आदिनी वृद्धि करवी. शस्त्र, यंत्र अने मंत्रना स्थानोने वधारवां. किल्लानी अंदर कायमने माटे काष्ठ, लोष्ठ, दारु, फोतरां, कोलसा, शृंग, अस्थि, वांस, वसा [1]मज्जा, तेल, मध, घृत, पण, औषध, राळ, आयुध, बाण, चर्म, तांत, नेतर, मुंज, [2]बळवज्र, विविध प्रकारनां वाद्य, जळाशय, अने दुधवाळां वृक्षोनुं संरक्षण करवुं, तथा आचार्य, ऋत्विज्, पुरोहित, धनुर्धर, कारीगर, ज्योतिषी, वैद्य, बुद्धिमान, विद्वान, चतुर, डाह्या, जीतेन्द्रिय शूरवीर, कुळवान, बहुश्रुत धैर्यवान अने तमाम काममां सावधान रहेनारा मनुष्योनो सारी रीते सत्कार करता रहेवुं. धर्मज्ञने पूजवा, अधर्मीओने दंडवा, तमाम वर्णाश्रमीओने योग्य कर्मोमां योजवा, दूत अथवा छुपी पोलीस द्वाराए पोताना तथा पराया नगर अने देशनी वार्ताथी वाकेफ थतां रहेवुं.

---

१ हाडकांओ उपर जामेली चरबी तथा हाडनी अंदर रहेली चरबी तेमज हाडकां लडाइ वखते घायल थएलाओने पाटा पींडी करवामां तथा तुटेलां हाडकांओने सांधवामां उपयोगी थइ पडे छे.

२ नदीने किनारे लांबा पर्णवाळी पानो थाय छे तेनी अंदर बाजराना कणसलां जेवां कणसलां होय छे तेने केटलाएक लोको रामबाण कहे छे. ए रामबाणना रेशाओ साधारण अस्त्र वडे कपाएल अंगमां भरवाथी तुरत या मळी जाय छे.

त्यारबाद योग्य उपायोनी रचना करवी. दूतोनी, मंत्रीओना मंत्रोनी, खजानानी अने दंड नीतिनी संभाळ हमेशां राजाए जाते लेवी जोइए. नगर अने देशमां योजेला दूतो पासेथी सामान्य शत्रु अने मित्रना अभिप्रायो जाण्या बाद तुरतमां बंदोबस्त करवो, राज्यभक्तोनो सत्कार करी राज्यद्रोहीओने, उचित शिक्षा आपवी, यज्ञ तथा दान आदि कार्य करवाने विशे कोइने पीडवां नहि, तेमज धर्मने बाध न लागे तेवी रीते वर्तन करी अनाथ, वृद्ध, विधवा अने गरीब लोकोने आजीविका आदिथी आश्रय आपवो.

राजा जेवी रीते एक गामनो प्रधान राखे छे, तेवी रीते तेणे दश, वीश, सो अने हजार गामना प्रधान जुदा जुदा राखवा जोइए. एक गामनो प्रधान पोताने हस्तक सोंपाएला देशना लोकोना गुण दोषनो निश्चय करी ए सघळी हकीकत दश गामना प्रधानने जणावे. ए दश गामोनो प्रधान वीश गामना प्रधानने, वीश गामनो प्रधान सो गामना प्रधानने अने सो गामनो प्रधान हजार गामना प्रधानने तमाम हकीकतथी वाकेफ करता रहे तेमज थएली उपज एक गामवाळो दश गाम वाळाने अने दश गामवाळो वीश गामवाळाने एम उपर उपरना अधिकारीओ द्वाराए मोकला रहे. सो गामनी उपज तथा खर्चने संभाळनारो निर्दोष प्रधान एक गामनी उपज भोगववाने योग्य गणाय छे, अने हजार गामनी व्यवस्था करनारो तथा राजाथी सत्कार पामेलो प्रधान एक परगणांनी उपजने भोगववा अधिकारी छे. ए प्रधान राजानो नायब थइ शके छे अने ते पोतानुं परगणुं अनाज अने धन अदिना उपभोगथी प्रजानुं पोषण करवा सामर्थ्य धरावे छे. उपर कहेला प्रधानोनुं काम जो युद्धनुं होय तो तेओ गामथी सबंध राखनारा, धर्मज्ञ अने सावधान बनी पोत पोताने सोंपाएला गामोनी चर्चा जोनारा अने दरेक बातनो विचार करनारा होवा जोइए. नगरनो स्वामी भयानक स्वरुप धारण करी उन्नत आसन उपर विराजमान थइ पोताना प्रतापथी चन्द्रमा जेम नक्षत्रोनुं तेज दबावी दे छे तेम उक्त सभासदोने आच्छादित करे. पोताना देशमां नियत करेला दूतो द्वारा सर्व प्रधानोनां वृत्तांत जाणवां. कदाच कोइ अधिकारी रुपी राक्षस मारवानी इच्छावाळो, पापात्मा, मूर्ख अने अन्यना धननुं हरण करनारो होय तो तेना खर्च तथा कारखानाओ उपर वारंवार तपास राखवी, व्यापारी अने कारीगरो उपर भारे न पडे तेवा कर नांखवा, पोताना देश रुपी मूळने कापवानी इच्छा न राखवी; तेम लोभथी बीजानी आजीविकारुप खेतीने अवरोध न करवो. जे राजा प्रजा पासेथी वधारे पडता वेरा आदि लेछे तेना साथे सर्व लोको शत्रुता करे छे. प्रजाए शत्रु समान गणेलो राजा कोइ दिवस कल्याणने प्राप्त थतो नथी. सावधान

बुद्धिवाळा राजाए वाछडानी माफक देशनुं दोहन करवुं जोइए. नोकर अने वाछडो जो हुज्जत करे तो ते पीडा पामे छे. दुःखदायक वत्सने तेनी माता दूध आपती नथी जेथी ते वत्स कार्य करवा शक्तिमान थइ शकतो नथी, तेम अत्यन्त दोहन कराएलो देश पण महान् कर्म करी शकतो नथी. जे राजा जाते देशनी रक्षा करे छे ते उत्तम प्रकारनां फळने पामे छे. देश एक खजानो छे. जेम खजानानी रक्षा महेलोमां थाय छे तेवीज रीते राजाए पुरवासी, देशवासी, सर्व शरणागत अने अल्प पराक्रमवाळा मनुष्योनुं महेरबानी साथे रक्षण करवुं अने तेओने चोर आदिना उपद्रवथी बचाववा. नीतिज्ञ राजा उपर प्रजा निरंतर प्रसन्न रहे छे. ज्यारे पैसानी बहुज जरुर पडे त्यारे समयने समजनारा राजाए आज्ञापत्रद्वारा प्रजाने जणाववुं के "अमुक शत्रुनी सेनानो भय महा आपत्तिरुप छे, जेम वांसना वृक्षमां फळनी उत्पत्ति थती नथी तेम आवी पडेली आपत्तिने पण अमे देशना विनाशनुं कारण समजीए छीए, शत्रु चोर लोकोनी साथे मळी आपणा देशने दुःख देवा उद्योग करी रह्या छे, आ घोर आपत्तिमां असह्य भय होवाथी तमारा रक्षणने माटे तमारा पासेथी धन लेवानी इच्छा छे. जो थोडा वखतमां भय दूर थइ जशे तो तमारुं धन तमोने पाछुं आपवामां आवशे, जो शत्रु लोको धन लइ जशे तो ते पाछुं मळवानुं नथी अने उलटा प्राण गुमावशो, तमारी वफादारीथी हुं प्रसन्न छुं, पुत्रना उदयथी जेम पिताने आनंद थाय तेम तमारी सारी स्थिति जोइ हुं खुशी थाउं छुं, सामर्थ्य अनुसार देशनी साथे तमारी पण हुं रक्षा करीश, जेम उत्तम बेल भार खेंचे छे तेम आ आपत्तिना वखतमां तमारे पण खर्चनो बोजो उठाववो जोइए" इत्यादि मिष्ट वचनो पूर्वक युक्ति प्रयुक्तिथी धन प्राप्त करवुं. ए रीते धन प्राप्त कर्या पछी नोकर आदिना पोषणनुं खर्च, युद्ध सबंधी भय, मनोरथनी सिद्धि अने प्रजानी रक्षानो उत्तम प्रकारे विचार करवो जोइए. वैश्योमां अति कोमळताथी काम करवुं अने तेओने मिष्ट वचनो, दान, मान तथा आश्वासन आपता रहेवुं, के जेथी तेओ देशमां व्यापार अने खेती आदिनी वृद्धि करे राजाए दारुडीआ, व्यभिचारी, जुगारी, कुटणी स्त्री अने नीच स्वभावथी धर्मने नष्ट करनारा पुरुषोने अवश्य शिक्षा आपवी जोइए, कारण के तेवा लोको देशमां वधवाथी कल्याणरुप प्रजाने पीडा उत्पन्न करे छे. आपत्ति विना कोइ कोइना पासे मागवाने योग्य नथी. राजाए पापी लोकोने अवश्य शिक्षा आपवी, तथा खेती, व्यापार, गाय अने ए रीतना बीजा उत्तम कर्मोनुं बगा अधिकारीओद्वारा रक्षण करता रहेवुं, धनवान लोकोने खावा पीवानी वस्तु तथा वस्त्र आदिथी प्रसन्न राखवा, कारण के धनवान मनुष्यो राज्यनुं

म्होटुं अंग गणाय छे. राजाए सर्व जीवोनुं प्रीति, अक्रोध, दया, अने मित्रताथी पालन करवुं जोइए. सत्यमां प्रवृत्ति राखनारा राजाओ मित्र, खजानो अने पराक्रमी सेनाथी पृथ्वीने लांबा वखत सुधी भोगवी शके छे. राजाए निरंतर तमाम प्रजाने ओळखवी जोइए. पोताना माणसोथी बीजानी अने बीजाना माणसोथी पोताना माणसनुं रक्षण करवुं अने तेओना उपर पण अमुक रक्षक नीमवो, पोते सुरक्षित थइ पृथ्वीनी रक्षा करवी, मारो प्रतिबन्धक कोण छे ? व्यसनी लोको साथे हुं शा माटे स्नेह राखुं छुं ? मार्या वगरनो शत्रु कोण छ ? अने मने कइ वातथी कलंक लागे छे ? ए सर्व बाबतनो हमेशां विचार करता रहेवुं. दूत लोको बराबर खबर आपे छे के नहि ? तेमज देश अने राज्यमां पोतानी कीर्त्ति गवाय छे के नहि ? धर्मज्ञ, धैर्यवान् तथा युद्धमां पीठ नहि बतावनारा क्षत्रीओ देशमां सुख पूर्वक गुजारो करे छे के नहि ? ए तमाम हकीकतथी वाकेफ थता रहेवुं. नोकर, मंत्री अने मध्यस्थ मनुष्योमां प्रशंसापात्र थवा प्रयत्न करवो. तमाम लोकोना मनने प्रसन्न करवुं ए काम कठिन छे, कारण के सर्व जीवोमां शत्रु, मित्र अने उदासीन ए त्रिपुटीए निवास करेलो होय छे.

चेष्टा करनारा जीवो स्थिर जीवोने खाइ जाय छे. दाढ राखवावाळा वगर दाढवाळां प्राणीने खाय छे अने क्रोधयुक्त थएलो विषधर नाग बीजा सर्पोनुं भक्षण करी जाय छे माटे तेवी प्रकृतिना पुरुषोथी अने शत्रुओथी राजाए हमेशां सावधान रहेवुं, वळी करनी वृद्धि करवाथी पीडाएला व्यापारी भयभीत तो नथी थता ? वनवासी मनुष्यो अल्प धन आपी वधारे वस्तुओ तो नथी लइ जता ? अने अत्यंत पीडाथी रुदन करनारा मनुष्यो देशनो त्याग करी चाल्या तो नथी जता ? ए बधी बाबतनो हमेशां तपास कर्या करवो. इच्छापूर्वक कर्म करवाने माटे नहि परंतु धर्मने अर्थेज राजा उत्पन्न थाय छे. ज्यारे जीव धर्ममां नियत थाय छे त्यारे धर्म राजामां स्थिति करे छे. ज्यां सुधी अधर्मने अटकाववामां आवतो नथी त्यां सुधी भय पण मटतो नथी. अहंकारनो त्याग करी सत्यपूर्वक धर्मनुं सेवन करनार राजा सुखी थाय छे. राजाए मद्यथी प्रमत्त थएला पुरुषथी, पाखंडी लोकोना संगथी, केद करेला मंत्रीथी तेमज स्त्री, पहाड, कुटिल मार्ग, अगम्यस्थान, हाथी, घोडा अने सर्प आदिथी सदा सचेत रहेवुं. रात्रीए फरवुं नहि, लोभ, अहंकार, कपट अने क्रोधनो त्याग करवो. देशमां नपुंसक अने स्वतंत्र लोको पराइ स्त्रीथी अथवा कन्याथी संभोग न करे तेवो बंदोबस्त राखवो, कारणके तेम थवाथी प्रजा नपुंसक, अंगहीन अने वर्णसंकर थाय छे, तेनो दोष राजाने लागे छे, अधर्म

वधे छे, ऋतुओमां विपरीतपणुं दाखल थाय छे, अनेक प्रकारना रोगो देखाव देछे, दृष्टि थती नथी अने अनेक जातना उत्पात देशमां व्याप्त थाय छे. राजाए निर्बळने कदिपण पीडवा नहि, बळात्कारथी गरीब लोकोना धननुं हरण करवुं नहि. ज्यारे राज्यनां माणसो उत्तम धर्मनुं अवलंबन करी कार्य करे छे, त्यारेज राजानो अभ्युदय थाय छे. दीर्घदर्शी मंत्रीओनी सलाहथी काम करनारा राजा विजय मेळवे छे. मंत्रीओनुं अपमान नहि करनार अने अहंकारी तथा पराक्रमीने पराभव आपनार राजा धर्मज्ञ गणाय छे. प्रजानां अश्रुने साफ करनार तथा अतिथिने आदर आपनार, निरर्थक विवादने तजनार अने माग्या विना भलाइ वापरनार राजाने प्रजा प्राण समान प्यारा गणे छे. राजाए इच्छा, क्रोध, के शत्रुता आदिथी धर्मनो कदि पण त्याग न करवो. कोइ प्रश्न करे तेने न्याय विरुद्ध उत्तर न आपवो. न कहेवा लायक वातने प्रकाशमां लाववी नहि, कोइ कार्यमां उतावळ न करवी, गुणोमां दोष लगाडवो नहि, मित्रनी साथे प्रसन्नता अने शत्रुनी साथे क्रोध बतावी प्रजानी वृद्धि चाहवी. जे राजा पोताना नोकर आदि माणसो उपर पोताना गुणथी भलाइ वापरे छे तेनां सर्व काम सिद्ध थाय छे. राजाए अस्वस्थ चित्तवाळा, लोभी, दुराचारी, मूर्ख, कपटी, दारुडीआ, जुगारी तथा शिकारमां प्रवृत्ति राखनार माणसोने कदि पण म्होटा अधिकार सोंपवा नहि, कदाच पराक्रमी राजा साथे शत्रुता बंधाइ गइ तो पछी तेनो एकदम विश्वास नहि करतां निरंतर सावधान रेहवुं, कारण के तेओ दूर छतां बाजनी पेठे दुःखदायक बने छे. किल्ला आदि बनाववा, युद्ध करवुं, धर्मनो उपदेश कराववो, सलाह करवी, अने समय उपर सुख आपवुं ए पांच प्रकारथी देशनी आबादी थाय छे. वखत विना विचारी व्यय नहि करनार, शत्रु उपर क्रोध के मित्र साथे अति प्रसन्नता नहि बतावनार तथा देहनां सुखदायक कर्ममां प्रवृत्त राजाए हमेशां राजाओना समूहमां क्यो राजा प्रीति करवा लायक छे, कोण भयथी शरणे आव्या अने कोण उदासीन थइ दोष राखवावाळा छे इत्यादि बाबतनो विचार करवो. जे पापात्मा मनुष्य सर्व सद्गुणसंपन्न तथा मीठां वचन बोलनार स्वामीथी शत्रुता करे छे, ते मनुष्य उपर राजाए कोइ दिवस विश्वास न राखवो. युद्ध विना विजय मेळववो ए उत्तम अने युद्धथी विजय मेळववो ए मध्यम गणाय छे. राज्यनां मूळ दृढ न होय तो अप्राप्तनी कदी पण इच्छा न राखवी, कारण के निर्बळ मूळवाळो राजा लाभ मेळवी शकवा समर्थ थइ शकतो नथी. जेनो देश धनाढ्य अने प्रसन्न मंत्रीओथी युक्त होय ते राजानुं मूळ दृढ गणाय छे. जेना योद्धाओ संतुष्ट अने प्यारां वचनोथी प्रसन्न थएला होय ते राजा अल्प दंडथी पृथ्वीनो विजय करी शके छे. जेना पुरवासी तथा

देशवासीओ धनवान्, अनाजनो संग्रह करनारा अने प्राणी मात्र उपर दया राखनारा होय ते राजानां मूळ द्रढ छे एम समजवुं.

क्षत्री राजाए क्षत्री राजानी साथे युद्ध करती वखते जेणे क्वच आदि धारण न कर्यां होय तेनी साथे युद्ध न करवुं, एके एकनी साथेज लडवुं, जो सामा माणसे कच धारण कर्युं होय तो पोते पण क्वच पहेरी युद्ध करवुं. जो ते सैन्य सहित सामे आवे तो पोते पण सैन्य साथे राखवुं, ए छळ कपटथी युद्ध करे तो पोते पण छळ कपटथी लडवुं, जो ए धर्मथी युद्ध करे तो पोते पण धर्मथी युद्ध करवुं, घोडेस्वार थइ रथवाळानी सन्मुख न जवुं, रथवाळाए रथवाळानी साथेज युद्ध करवुं, कोइ आपत्तिमां होय अथवा भयभीत थयेल होय अने वश थइ गयेला होय तेना उपर कदि पण शस्त्र प्रहार न करवो. धर्मथी विजय मेळववानी चाहना राखवी, अधर्मथी विजय मेळवनारा नीच अने पापात्मा गणाय छे. धर्मथी मरवुं ए श्रेष्ठ छे, परंतु अधर्मथी विजय मेळववो ए उत्तम नथी. हवाथी भरेल चामडानी मशक जेवो महान देह जो शुभ कर्ममां प्रवृत्त न थाय तो ते नदी किनारे रहेलां वृक्षनी माफक मूळ सहित विनाश पामे छे अने पाछळथी सर्व लोको निन्दा करे छे.

राजाए तुटी गएल क्वचवाळा, " हुं तमारे आधीन छुं " एवा वचनो कहेनारा, हाथ जोडी सामा उभेला अने शस्त्रनो त्याग करनारा शत्रुने पकडी तेना उपर प्रहार करवो नहि. राजा राजानी साथेज युद्ध करवा योग्य छे. राजा शिवाय कोइ पण वर्ण राजा सामे शस्त्र चलाववा योग्य नथी. जेनो देश वृद्धियुक्त, धनवान् अने आज्ञाकारी होय तेमज जेना मंत्री अने नोकर आदि प्रसन्न होय ते राजा सुखपूर्वक राज्य भोगवी शके छे. राजा लोको पापीओने दंडवाथी, पुण्यशाळीओनुं पोषण करवाथी तथा यज्ञ अने दान आदिथी पवित्र तेमज निर्मळ थाय छे. विजयनी इच्छावाळा राजा जीवोने पीडे छे अने पाछा विजय मेळवी प्रजानी अभिवृद्धि करे छे. तेमज दान, यज्ञ अने तप आदिना बळथी थएल पापनुं निवारण करी शके छे. युद्धमां जेटलां शस्त्र क्षत्रीना देह चर्मने छेदे छे ते छेदो तेने तेटलां उत्तम फळो आपे छे. युद्धमां क्षत्रीना देहथी जे रुधिर निकळे छे ते तेनां तमाम पापोने धोइ नांखे छे. युद्धमां संतप्त थएला क्षत्री जे कष्ट सहन करे छे ते बदले तेने महान तपनुं फळ मळे छे. युद्धमां बीजाने आगळ नहि करतां पोतेज आगळ रहेवुं ए महा पुण्य छे. फोजनी चढाइ थती वखते समान पुरुषोमां पण महान् तफावत पडी

जाय छे अर्थात् कोइ आगळ थाय छे अने कोइ नथी थता, शूरवीर पुरुषो स्वर्गनी चाहनाथी शत्रु सन्मुख उभा रहे छे अने भयभीत माणसो भागे छे, माटे राजाए एवा अधम मनुष्योने आगळ न करवा के जेओ साथीओने छांडी कुशळता पूर्वक घरभेळा थइ जाय. युद्ध समये जे पोताना प्राणनी रक्षा करवा चाहे तेने काष्ठ पाषाण आदिथी मारवा अथवा तृणना अग्निथी भस्म करवा जोइए.

जे क्षत्री कफ मूत्रनो त्याग करतो तेमज दुःखथी विलाप करतो शय्या उपर मरण पामे ते अधर्मी गणाय छे. शूरवीर अने अभिमान राखनारा क्षत्रीनो घरमां मरवाथी प्रशंसा थती नथी, परंतु युद्धमां शत्रुओनो नाश करी सजातीयथी घेराएल अने शस्त्रोथी पीडित शरीरे प्राण तजे तेज कीर्त्तिना पात्र थाय छे कठिन युद्ध करनार अने शस्त्रोना तीक्ष्ण प्रहारथी अलंकृत अंगवाळो क्षत्री रणभूमिमांज शयन करे तो ते इन्द्रनी बराबरी करवा शक्तिमान थइ शके छे. शत्रुओथी घेराएल जे घायल क्षत्री दुःख नथी मानतो ते अक्षय लोकने प्राप्त थाय छे.

क्षत्रीओ युद्धरुपी यज्ञथी परम कल्याणने पामे छे. अर्थात् कवच पहेरी शस्त्र धारण करी युद्ध करवानी दीक्षा लेनारा क्षत्री सैन्यमां अग्रेसर थइ युद्धरुपी यज्ञना अधिकारमां योजाय छे. युद्धरुपी यज्ञमां हाथी, ऋत्विज्, घोडा, अध्वर्यु, शत्रुओनुं मांस, हविष्य अने रुधिर घृत कहेवाय छे; शृगाल, गिद्ध अने काकोल आदि पक्षी सदस्य के जेओ यज्ञमां अवशेष रहेला घृत अने हविष्य (रुधिर—मांस) नुं भोजन करे छे; प्रकाशित अने तीक्ष्ण विषमां बुझावेल प्रास, तोमर, खड्ग, शक्ति अने फरशी ए युद्ध यज्ञनां शुच नामे पात्र गणाय छे; विषमां बुझावेल, वेगयुक्त, लांबा, पहोळां, परकायाने भेदनारां, सीधां अने वाकां बाणो महान् श्रुवा लेखाय छे; हाथीना चर्मथी मढेल, हाथीदांतनी मूठवाळां अने हाथीनो सुढ कापनार खड्ग युद्ध यज्ञना स्फिग् गणाय छे; चक्रचकित लोहमय तीक्ष्ण प्रास, शक्ति, बे धारवाळा खड्ग अने फरशीना प्रहार ए युद्ध यज्ञनां द्रव्य छे, युद्धमां समय विना वृद्धि पामनार अने कुळीनोना देहथी उत्पन्न थनार जे घणुंज रुधिर शीघ्रताथी पृथवीपर पडे छे ते सर्व मनोरथने पूर्ण करनारी पूर्णाहुति लेखाय छे; सैन्यनो आगळ " कापो छेदो " एवा जे शब्दो संभळाय छे तेने सामग ब्राह्मण यज्ञना साम मंत्रोथी यमलोकमा गाय छे; शत्रुओनुं सेनामुख ए यज्ञनुं हविर्धान अर्थात् साकल्य राखवानुं पात्र गणाय छे. कवचधारी हाथी, घोडा आदिनो जे समूह छे ते ए यज्ञमां श्येनचित्त नामनो अग्नि लेखाय छे, युद्धमां अनेकने मारी जे कबन्ध उठे छे तेज खदिरनो अष्ट कोण यज्ञस्तंभ कहेवाय छे, वचनथी बोला-

वेला अने अंकुशथी चलावेला हाथी वषट्काररुप तलनादथी पुकार करे छे, युद्धमां " ब्राह्मणनुं धन चोराइ जतां प्यारा देहने तजवामां आवे छे " ए शब्द जे गवाय छे तेज त्रिसामा नामनो दुन्दुभि छे. देहरुपी स्तंभने छोडी ते यज्ञ अत्यंत दक्षिणावाळो गणाय छे, जे शूरवीर स्वामी निमित्ते आगळ थइ पराक्रम करे छे अने भयथी पाछुं मुख फेरवता नथी ते उत्तम लोकने प्राप्त थाय छे. लीलां चर्मथी मढेलां खड्ग तथा परिघ नामनां अस्त्रो समान भुजाओथी युद्धयज्ञनी वेदी रचनार अने सहायकनी इच्छा नहि राखतां सेना वच्चे स्थित थइ युद्ध करनार इन्द्र लोकने पामे छे. युध्धमां जे लडवैयाओना रुधिररुपी जळने वहन करनारी भेरीरुप दादुर अने काचवाथी संयुक्त, हाडरुपी कंकरवाळी, उल्लंघन न करी शकाय तेवी, मांसरुपी किच्चडथी भरेली, खड्ग तथा ढालरुपी नौकावाळी, भयानक, कपाएलां मस्तकरुपी शेवाळवाळी, मरेला घोडा तथा त्रुटेल रथ पताका अने ध्वजारुपी वृक्ष तथा वेतसवाळी, मृतक हाथीरुपी मगरमच्छवाळी, परलोक तरफ गमन करनारी, गिद्धआदि पक्षीओरुपी तरंगवाळी अने भयभीतने मूर्छा प्रदान करनारी नदी चाले छे ते युद्धयज्ञनुं अवभृथ स्नान छे. जे क्षत्री युद्धयज्ञनी वेदी शत्रुओना शिरनी अथवा हाथी घोडानी कन्धरानी बनावे छे ते इन्द्रलोकने प्राप्त थाय छे. जेने शत्रुओनुं सेनामुख स्त्रीओथी भरेलो महेल छे एवी क्षात्रसेना युद्धयज्ञनुं हविर्धान अर्थात् साकल्यपात्र कहेवाय छे. युद्धकर्ता सदस्योनी दक्षिणा छे, उत्तर दिशा तेनो आग्निध्र छे. ज्यारे शत्रुसेनामां सर्व लोक स्थित थाय त्यारे व्यूहमां बन्ने तरफथी आकाश राखवामां आवे छे तेज ए युद्ध यज्ञनी वेदी अने तेमां त्रण वेद त्रण अग्निरुप छे. भयभीत तथा मुख मरडी युध्ध करनार जे क्षत्री शत्रुने हाथे मार्यो जाय ते प्रतिष्ठा रहित बनी निःसंदेह नर्कमां निवास करे छे. जेना रुधिरनी अधिकताथी युद्ध यज्ञनी वेदी डूबी जाय तथा कपाएलां शिर, हाड अने मांसथी भराइ जाय ते परम गतिने पामे छे. जे लडवैयो सेनापतिने मारी तेना वाहन उपर सवार थाय तेने विष्णु समान पूज्य गणवो. जे योद्धो सेनापतिने अथवा तेना पुत्रने अथवा तेवाज कोइ शत्रु सैन्यना मुख्य पुरुषने जीवतो पकडी लावे छे ते अवश्य इन्द्रलोकने प्राप्त थाय छे. युद्धमां मरवावाळा शूरवीरे कोइ पण अवस्थामां शोच न करवो. शोच रहित शूरवीर सर्व लोकमां प्रतिष्ठा मेळवे छे, तेवा शूरवीरोने वरवा माटे हजारो अप्सराओ अधीरी बनी दोडवा लागे छे, माटे एज तपनुं पुण्य अने एज सनातन धर्म छे एम समजवुं. जे नीति अनुसार युद्ध करे तेणे वृद्ध, बालक, स्त्री, मुख फेरवनार, मुखमां तृण राखनार अने " हुं तमारो छुं " ए वचन कहेनारने कदि पण मारवो नहि. क्षत्रीए शत्रुओने जीतवा परंतु प्रतिष्ठा रहित थइ नर्कमां निवास

न करवो. शूरवीरे स्वर्गीय सुख भोगववा माटे देहना स्नेहने तजी देवो. ज्ञानी पुरुषे युद्धमां सदा आगळ रहेवुं. हाथीओना मध्यमां रथोने, रथोना मध्यमां घोडेस्वारोने अने घोडेस्वारोना मध्यमां कवचधारी तथा पेदलोने राखवा, ए रीते व्यूह रचनारो राजा शत्रुओने जीती शके छे. जे योद्धाओ युद्धमां क्रोधयुक्त थइ शुभ कर्म करवानी चाहना राखे छे तेओ जेम सागरने मगर दोलायमान करे छे तेम शत्रुसैन्यने क्षोभ पमाडे छे. लडवैयाओए परस्पर व्याकुळ थएलाओने प्रसन्न करवा, जीतेली पृथ्वीनुं रक्षण करवुं, परास्त थएलानी पाछळ थवुं नहि, शूरवीरे भागेला उपर घा करवो न जोइए, शूरवीर त्रण लोकमां प्रतिष्ठापात्र थाय छे.

राजाए ज्ञाता वनी कुटिलोनो संग न करवो, आवेला माणसने ओळखवो. शत्रु लोको भेद कराववा राजा पासे घुमे छे माटे राजाए तुरतज तेने शिक्षा आपवी. हाथी, बळद, अजगरोना चामडां, सिळी बाण, तोमर, कंटक, सर्व धातु, कच, धोळां तथा पीळां रंगनां वस्त्र, पीळां तथा लाल बखतर, पताका, ध्वजा, विविध, रंगोथी रंगेल बे धारवाळां खड्गो, तीक्ष्ण फरशी अने ढाल आदि युद्धनो सामान सज्ज राखवो, ते उपरांत युद्धने वखते काम लागे तेवां शस्त्र तथा योद्धाओने मुकरर करवा. चैत्र के मागशर महिनामां सेनानी चढाइ उत्तम गणाय छे, कारण के ते वखते अधिक गरमी के अधिक शरदी होती नथी. पृथ्वी पाकेल धान्यवाळी तेमज जळथी परिपूर्ण होय छे. ए समये अथवा शत्रु व्यसनमां वळुंध्या होय ते वखते चढाइ करवी. जे मार्ग बुद्धिमान अने वनवासी दूतो द्वारा उत्तम रीते जाणेला होय तेमज आसपास जळ अने तृणथी संयुक्त होय ते मार्ग सेनाए गमन करवा लायक गणाय छे. विजयनी इच्छावाळा राजाए वनवासी लोकोनी सेनामां भरती करवी, कुलीन अने सामर्थ्यवाळा पेदलोनी सेना पण वधारवी. सेनाने रहेवानुं स्थान जळयुक्त, अगम्य अने एकज मार्गवाळुं श्रेष्ठ गणाय छे. एथी सामा आवेला शत्रुओने रोकी शकाय छे. सेनानो निवास मेदान करतां वनमां अधिक लाभकारक थइ पडे छे. ज्यां युद्धकुशळ घणा गुणी पुरुषो होय त्यां सेनानो निवास समीपेज राखवो. सेनाए निवास स्थानथी सन्मुख उतरवुं, पायदळने गुप्त राखवा अने समीपे आवेला शत्रु उपर घा करवो, रक्षा स्थान आपत्तिने माटे छे, सप्तर्षिओ तरफ पीठ राखी पर्वत समान निश्चल थइ युद्ध करवुं, ए रीते युद्ध करनार कठिनताथी पण विजय मेळवी शके छे, जे तरफ हवा अने सूर्य होय ते दिशापांज विजय रहेलो होय छे. युद्ध कुशळ मनुष्ये कीचड, जळ, ढाळ अने पुल आदिथी रहित पृथ्वी घोडेस्वारना युद्धमां; कीचड अने खाडा खडडा रहित पृथ्वी रथयुद्धमां; न्हाना वृक्ष अने जळ-

वाळी पृथ्वी हाथीनी सवारीना युद्धमां अने घणा गढ, जंगल, वांस तथा नेतरथी परिपूर्ण पहाड-वाळी सजळ पृथ्वी पायदळोना युद्धमां श्रेष्ठ समजवी. घणा पायदळवाळी सेना दृढ गणाय छे, घणा रथ अने अश्ववाळो सेना वर्षा रहित सूका दिवसोमां उत्तम लेखाय छे अने घणा पायदळ तथा हाथीवाळी सेना वर्षा ऋतुमां प्रशंसापात्र निवडे छे. ए बधी बाबतनो उत्तम रीते विचार करनार तथा देशकाळने समजनार राजा उत्तम प्रकारनी चढाइथी विजय मेळवे छे. सूतेला, प्यासा, शान्त चित्तवाळा अने युद्धथी जुदा पडेलाओने मारवा नहि; शस्त्र रहित, रुदन करता, भागेला अने भोजन करता लडवैयाओ उपर पण प्रहार न करवो; व्याकुळ, अचेत, घायल, अशान्त, कर्मनो प्रारंभ करनार गुप्त सुरंग अथवा अन्य युक्तिओथी तपेला, घास आदि लेवाने माटे घुमता, डेराओना रक्षक, पहेरागीरो अने निरंतर मकान उपर रहेनारा माणसोने मारवा नहि, जे लडवैयो शत्रुना सैन्यने परास्त करी पोतानी सेनाने नियत करे ते बमणा पगारने लायक छे. दश दश योद्धाओमां एक एक उपरी राखवो, सो सो लडवैयाओ उपर एक अधिपति अने महान पराक्रमी होय तेने हजार योद्धानो नियन्ता बनाववो. सर्व अधिकारीओए एकठा थइ राजाने कहेवुं जोइए के "अमे लोको प्रतिज्ञा पूर्वक शपथ लइए छीए के विजयने माटे परस्पर जुदा पडी युद्धनो त्याग नहीं करीए." जे भयभीत होय तेने रस्तामांथीज रजा आपी देवी. जे माणस पोताना उपर नीमाएला अधिकारीने मारी नांखे तेणे युद्धमां भागेला पोताना माणसोने कदिपण मारवा नहि, कारणके युद्धमां पोतानी रक्षाने चाहतो ते माणस पोताना पक्षनेज हणे छे. भागवामां धननो नाश अने मरण ए बन्नेनी साथे अपकीर्ति मळे छे. भागनारने दुःखदायी अने अघटित वचनो सांभळवां पडे छे. शत्रुओमां विपरीत दशावाळो, होठ उपर दांत राखनारो अने हथिआर छोडी देनारो जे माणस शस्त्रोथी घेराएलो होय तेने निरंतर धन हानि अने मृत्यु प्राप्त थाय छे. युद्धमां मुख फेरवनार नीच मनुष्यनो जन्म निरर्थक गणाय छे, ते आ लोक अने परलोक बन्नेथी भ्रष्ट थाय छे. प्रसन्न चित्तवाळो शत्रु भागनारनी सन्मुख दोडे छे, तथा विजयी मनुष्य नमस्कार अने प्रशंसाथी चित्तमां प्रसन्न थइ शत्रुनी पाछळ थाय छे. युद्धमां वर्तमान शत्रु जेनी बदबो करे छे ते दुःख मरवा करतां पण अधिक असह्य छे. विजय सर्व धर्म अने सुखनुं मूळ गणाछे. मृत्युनी सन्मुख शूरवीर पुरुषोज जाय छे. युद्धमां जीवननी आशा छोडी स्वर्गने चाहनारा विजयी अथवा मृतक मनुष्यो सिद्ध गतिने पामे छे. भय वगरना वीर पुरुषो शत्रुनी सेना वच्चे

स्थिर रहे छे अने भयानक शब्दो करता पराक्रमी शत्रुओने पीडे छे. सेनानी आगळ चालनारा मनुष्ये सिंहनाद तथा कलकलाक्रचक्र, गोविषाण, भेरी, मृदंग, पणव अने आनक आदि वाद्यो वगाडवां.

गंधार, सिन्ध अने सौवीर देशना लोको तीक्ष्ण भालांथी युद्ध करनारा, निर्भय अने महा पराक्रमी होय छे. एवा शूरवीरोनी सेना विजय मेळववा समर्थ थइ शके छे, त्यांना क्षत्रीओ शस्त्रविद्यामां निपुण अने पराक्रमी होय छे. पूर्व देशना लोको हाथीओना युद्धमां प्रवीण अने मायाथी लडनारा होय छे. यवन, कांबोज अने मथुरा देशना लोको बाहुयुद्धमां महा प्रबल होय छे अने दाक्षिणात्य लोको तरवार चलाववामां कुशळ गणाय छे. जेओनां वचन अने चाल सिंह समान तथा नेत्र कबूतर अने सर्प समान होय तेवा शूरवीर शत्रुओनुं मथन करी शके छे. मृग समान स्वरवाळा, हाथी समान नेत्रवाळा, निरभिमानी, प्रमादी, मुख उपर क्रोध राखनार, अल्प बुद्धिवाळा किंकिणी अने मेघ समान नादवाळा उंट समान वांकी डोक, नासिका अने जिह्वावाळा, घणे दूर सुधी पाछळ धनारा, बिलाडा समान कुबडा देहवाळा, मृतकने खानारा, सूक्ष्म केश अने त्वचावाळा, उतावळे गति करनारा अने चपलतायुक्त होय तेवा लोको कठिनताथी अर्थात् महा महेनते जीती शकाय छे. केटलाएक नीची आंखवाळा, कोमळ प्रकृतिवाळा, घोडा समान गति करनारा अने शब्दवाळा होय छे तेवा माणसो विजयी निवडे छे. जे मनुष्यो अत्यंत मजबूत शरीरवाळा, उन्नत कांधवाळा, पहोळी छातीवाळा अने स्थिर स्वभावना होय छे तेओ वाद्य वागतांज क्रोधयुक्त बनी जाय छे अने प्रसन्न मनथी युद्ध करे छे. जे मनुष्यो गंभीर, नोळीआ समान बहार निकळतां पीत नेत्रवाळां, भ्रकुटीयुक्त, देहनी प्रीति विनाना, शूरवीर, उन्नत ललाटवाळा, मांस रहित दाढीवाळा, भुजा उपर वज्र तथा आंगळीओ उपर चक्रनुं चिह्न धारण करनारा दुर्बळ अने हाडना माळारूप होय छे तेओ युद्ध शरु थतां तीव्रताथी सैन्यमां प्रवेश करे छे; तेमज हाथी समान मदोन्मत्त पुरुषो कठिनताथी कबजे थाय छे. जेनो वान घउंलो देदीप्य अथवा शान्त होय, जेनां गाल, दाढी तथा मुख म्होटां होय, कन्धरा उन्नत होय, गर्दन मोटी होय, रूप विकट होय, देह स्थूल होय तेमज जेओ उन्नत अने सुंदर सुग्रीवनामनो अश्व तथा गरूडनी पेठे उछळता होय, वक्र शिरवाळा, वृषभ समान मुख अने दांतवाळा. उग्र स्वरवाळा, क्रोधयुक्त, युद्धमां नाद करनारा. अधर्मी, क्रूर अने भयंकर होय ते पुरुषो देहनी प्रीति विनाना होय छे, माटे तेओने

सेनाना अग्र भागमां स्थापवा. तेवा लोको ज्यारे पोतानी इच्छा विरुद्ध कांइ पण जुए छे त्यारे शत्रुओने मारे छे. ए अधर्मी अने दुराचारी पुरुषो मात्र मीठां वचनोथीज वश थाय छे. तेओ वखते राजा उपर पण एवीज रीते क्रोधायमान थाय छे. जे सैन्यमां योद्धाओ अने वाहनो अत्यंत साहसिक होय ते निश्चे विजय प्राप्त करी शके छे. जेना पाछळना भागमां वायु गति करतो होय तेमज इन्द्रधनुष, सूर्यनां किरणो तथा वादळां पण पीठ तरफ होय अने शृगाल, काग तथा गिद्ध ए सर्व अनुकूळ थइ जे सेनातुं पूजन करे ते उत्तम प्रकारनी सिद्धि मेळवे छे. ज्यारे उपरना भागमां प्रकाशमान ज्वाला तथा दक्षिणावर्त शिखाने धारण करनार अग्नि आहुतिओना पवित्र सुगन्धयुक्त थाय त्यारे ते थनार विजयने सूचवे छे. ज्यां गंभीर अने महान शब्दवाळां वाद्यो वागे तेमज युद्धाभिलाषी जनो अनुकूळ होय त्यां पण विजय थशे एम समजवुं. मांगलिक पशुओ यात्रानी इच्छावाळा युद्धाभिलाषी जनोने चालती वखते पाछळ अथवा डावी बाजुथी जमणी बाजु तरफ जतां नजरे पडे तो तेओनी अवश्य सिद्धि थाय छे. उक्त पशुओ जो सामे आवतां होय तो युद्धनो निषेध समजवो, ज्यारे हंस, क्रौंच, शतपत्र अने चाव नामनां पक्षी मांगलिक शब्द करे त्यारे प्रसन्न अने पराक्रमी योध्धाओनो विजय थशे एम मानवुं. जे सैन्यना योद्धाओनां अस्त्रशस्त्र यन्त्र, कवच, ध्वजा अने मुख एवां प्रकाशित तथा प्रफुल्लित होय के जेने सामो माणस मुश्केलीथी जोइ शके तेओ पण अवश्य शत्रुओने परास्त करे छे. जे योद्धाओ वृध्धोनी सेवा करनारा, निरभिमानी, परस्पर मित्रभावने धारण करनारा, अन्तर बाहिरथी ऐक्यतावाळा होय ते पण विजय मेळवे छे. ज्यां मनने रुचे तेवा शब्द, स्पर्श अने गन्ध विद्यमान होय तेमज योद्धाओनां धैर्य वर्तमान होय त्यां विजयमुख समजवुं. युद्धमां प्रवेश करनार लडवैयाने डावी तरफनो काक श्रेयस्कर थाय छे, दक्षिणनो काक फलदायी गणाय छे, पाछळनो काक मनोरथने सिद्ध करे छे, अने आगळ थनारो काक युद्धनो निषेध करे छे एम समजवुं.

चतुरंगिणी सेनाने पारितोषिक आदिथी प्रसन्न करी प्रथमतो साम नामनी नीतिथी काम करवुं. त्यारबाद युध्धनो उद्योग करवो कारण के युध्ध छे ए साधारण विजय छे. युध्धमां विजयनो सिद्धान्त इश्वर शिवाय कोइ जाणी शकतुं नथी. जळनो महावेग अने भयभीत बनेला मृग समूहनी माफक पराजय पामेली म्होटी सेना महा मुश्केलीथी रोकी शकाय छे. केटलाएक पराक्रमी रू रू नामना मृग समूहनी माफक महान् सेनानो पराजय सांभळी बुध्धिमान लडवैयाओ पण जुदा थइ जाय छे. परस्पर ऐक्यतावाळा, प्रसन्न चित्तवाळा, प्राणनी परवा नहि राखनारा

अने युद्धमां दृढ संकल्पवाळा पचाश शूरवीरो पण शत्रुसेनाने संहारे छे. आ पृथ्वीमां पूजाएला कुलीन, हिम्मती अने ऐक्यता युक्त अढार योद्धाओ पण उत्तम प्रकारे शत्रुओने जीती शके छे. शत्रु समर्थ होय तो तेनी साथे कोई पण अवस्थामां युद्धनो स्वीकार न करवो जोइए, जे पुरुष साम, दाम ने भेदने अनुसरे छे, तेनुं युद्ध सर्वोत्तम गणाय छे. सेनाने जोतांज भयभीत मनुष्योने महादुःख उत्पन्न थाय छे. युद्धने समीपमां आवेल जाणी जे पुरुषो सन्मुख जाय छे ते योद्धाओनां विजय करनारां अंगो फरके छे ते समये स्थावर जंगम जीवो समेत समग्र देश पीडायमान बने छे अने अस्त्रोनी उष्णताथी मनुष्योना देहनी मज्जा पीडा पामे छे. शत्रुओ पासे वारंवार युद्ध संयुक्त सामना खबर पहोंचाडवा जोइए. शत्रुओथी अत्यंत पीडायमान थएला सर्व लोको सन्धिनी इच्छा राखे छे. शत्रुओना मित्र आगळ भेदने अर्थे दूतोने मोकलवा. जे राजा पोताथी समर्थ होय तेनी साथे तो सन्धि करवो एज अत्युत्तम छे. खरेखर सत्पुरुषोमां क्षमा अने धैर्य होय छे, असाधुमां ए बन्नेनो असंभव छे. राजाए धैर्य अने अधैर्यनां प्रयोजन समजवां जोइए. विजय मेळवी धैर्यने धारण करनारा राजानी कीर्त्ति अत्यन्त वृद्धि पामे छे. उग्र स्वभाववाळो राजा सर्वनो शत्रु थाय छे, अने कोमळ प्रकृतिनां राजानुं वधा अपमान करे छे एटला माटे राजाए उग्रता अने मृदुता ए उभयने उपयोगमां लेवां. दरेक अवस्थामां मीठुं बोलनार, धर्मज्ञ अने निर्भय राजा प्रजावर्गमां प्रीतिपात्र थाय छे, तमाम लोको तेनो विश्वास करे छे, लांबो वखत पृथ्वीने भोगववानी इच्छावाळा राजाए कपट रहित बनी प्राणी मात्रने विश्वास आपी सर्वनी रुडी रीते रक्षा करवी. शत्रुने पण युद्धथी स्वाधीन न करवा जोइए, कारण के ते काम तो क्रोधी, अधीर अने अज्ञानीओनुं छे. शत्रुने सावधान करवो ए अयोग्य गणाय छे. क्रोध, भय अने प्रसन्नताने हृदयमां छुपावी विश्वास रहित छतां विश्वासुनी माफक शत्रुनुं सेवन करवुं. निरंतर प्यारां वचनो कहेवां, कोइ अप्रिय वात न करवी, निरर्थक शत्रुताथी अलग रहेवुं अने अप्रिय वचनोनो एवी रीते त्याग करवो के जेम पाराधि लोको पक्षीओ जेवी बोली बोली तेओने वश करे छे, ए रीते राजाए शत्रुओने स्वाधीन करी मारवा, कारणके शत्रुओने परास्त करी सुखथी शयन थइ शकतुं नथी. दुष्टात्मा शत्रुओ निरंतर शंकर नामना अग्निनी माफक जागृत रहे छे. अल्प विजयने माटे युद्ध न करवुं जोइए. मनोरथनी सिद्धि इच्छनारा राजाए विश्वास आपी शत्रुने स्वाधीन करवा अने समय प्राप्त थतां तेनो नाश करवो. आदि, मध्य अने अन्तने जाणनार राजाए मन्त्रणाने गुप्त राखवी. पोताना सेन्यनी

संख्या जाणी शत्रु सैन्यमां भेद करावतो. ए रीते भेद, दान अने विष आदि औषधिओथी प्रयोजननी सिद्धि करवी. शत्रुओथी सन्धि करवानी इच्छा न होय तो घणा वखत सुधी मौन रही मोका उपर तेओने मारवा. सत्पुरुषोए कहेलां कर्मनो अंगीकार करी पराक्रमी थवुं, करेली मित्रता अन्त सूधी निभाववी; काम, क्रोध अने अहंकारनो त्याग करवो, वारंवार वैरीओना दोषथी वाकेफ थता रहेवुं. दंडमां मृदुता, सुस्ती, भूल अने उत्तम प्रकारे नियत करेली माया मूर्ख तथा अज्ञानीओने पीडा आपे छे, माटे ए चारेने दूर करी निष्कपट बनेलो नरेन्द्र विचार कर्या विना शत्रुओने संहारवा समर्थ थइ शके छे. जे शत्रु दूर होय तेना उपर पुरोहितद्वारा ब्रह्म दंडनो प्रयोग करावतो अने सन्मुख आवे तेना उपर चतुरंगिणीसेना मोकलवी. राजाए वखतो वखत ते ते शत्रुओ उपर सामआदि युक्तिओ अजमाववी. प्रथम भेद करी फरी सामने उपयोगमां लेवो, बळवान शत्रुनी आज्ञा स्वीकारी लेवी अने पोते सावधान कर्ममां प्रवृत्त थइ असावधान बनेला ते शत्रुने मारी नांखवो. प्रणाम, दान तथा मानपूर्वक मिष्ट वचनोथी वार्तालाप करी शत्रुनुं सेवन करवुं. तेना हृदयमां कोइ पण वखते शंका उत्पन्न थवा देवी नहि. राजाए शंकावाळा शत्रुनां स्थानोने निरंतर तजी देवां अर्थात् ते स्थळनो विश्वास न करवो, कारणके एथी विकट कर्म एके नथी. एकी वखते एक करतां वधारे शत्रुओ साथे युद्ध न करवुं, परंतु तेवा समयमां भेद करावी शत्रुओने परस्पर लडावी मारवा अने बाकीनाने युक्तिथी आधीन करवा.

लोभ अने क्रोध ए बंने समूह, गृहस्थ अने राजाओमां शत्रुता वधारनारा छे. राजा एकलो लोभ करे छे, त्यारे समूह तेना उपर क्रोधायमान थाय छे जेथी ते बन्ने भ्रष्टताथी नष्टताने प्राप्त थाय छे. आजीविका पूरी नहि मळवाथी राजा उपर गुस्से थइ शत्रुनी साथे भळी जाय छे जेथी शत्रुओ तेने सुगमताथी परास्त करी शके छे, माटे समूहना लोकोए तेम नहि करतां ऐक्यताथी उद्योग करवो, कारण के एकत्र थएला समूहना पराक्रम अने उद्योगथी सर्व मनोरथ सिद्ध थाय छे. सर्व साथे मळी आजीविका प्राप्त करनारनी संगे दूर देशनां मनुष्यो मित्रता करे छे. ज्ञानी पुरुषो परस्पर प्रीति राखनारनी प्रशंसा करे छे अने व्यवहार आदिमां एकमतवाळो समूह आनन्द पूर्वक वृद्धि पामे छे. शास्त्रने अनुसरी धर्मसंयुक्त व्यवहारोने नियत करनार, पुत्र अने भ्राताओनुं शासन तथा शिक्षापूर्वक पोषण करनार तेमज दूत अने सलाहना विषयनो विचार करी खजानानी वृद्धिमां प्रवृत्त थएलो समूह चारे तरफथी अभ्युदयने अनुभवे छे. महान् उत्साही अने स्वकर्मनिष्ठ समूहने बुद्धिमान लोको वखाणे छे. जो ए समूहमां क्रोध, विरोध, भय, दंड,

पीडा के घात आदि पोतानुं प्रबळ जणावे तो तुरतज ते समूहने शत्रुओ स्वाधीन करी शके छे. परस्पर विरोध करी केवळ पोतानाज सामर्थ्यथी कर्म करनार समूहनो धन आदि अर्थ नष्ट थाय छे, अने ते अनर्थनुं मूळ गणाय छे. कुलमां उत्पन्न थनार उपद्रवने कुळना वृद्ध जनो शान्त न करे तो आखो वंश विनाश पामे छे. माटे पंडित लोकोए अनर्थ करनार समूहने तुरत ठपको आपी उचित मार्गने अनुसरवा आज्ञा आपवी जोइए. समूहमां परस्पर मतभेद थाय एज विरोधनुं कारण समजवुं. ए विरोध रुपी दोष अति हानिकर्ता छे जेम बने तेम समूहनी रक्षा करवी ए राजाओनो मुख्य धर्म छे. राजाए बुद्धिथी काम करवुं ए उत्तम, वीरताथी काम करवुं ए मध्यम अने समूहनी सहायताथी कार्यसिद्धि करवी ए निकृष्ट गणाय छे. बुद्धिमान अने जितेन्द्रिय राजा पोताना राज्यने द्रढ करी शके छे. ज्यारे बळवान राजाना सैन्यनो वेग असह्य होय त्यारे विद्वान नरपतिए नेतरनी माफक नमी जवुं योग्य छे; कारण के अक्कड रहेवाथी नदी किनारे रहेलां वृक्षोनी माफक सैन्यना वेगमां तणाइ अंते विनाश प्राप्त थाय छे.

बुद्धिमान राजाए सत्यता, पवित्रता, स्वरुप, शास्त्रज्ञता, चलन, रीति, कुलीनता, शान्तपणुं, दया, पराक्रम, प्रभाव, प्रीति अने क्षमा आदि तमाम गुणोनो तपास करी नोकरने योग्य अधिकार आपवो अने तेनी उत्तम प्रकारे रक्षा करवी. परीक्षा कर्या शिवाय मंत्रीने पण अधिकारपर योजवो नहि, निरपराधी कुळवान नोकरने दंडनार राजा पापी गणाय छे. वगसग अथवा खुशामतथी दरज्जे चढेला साधारण मनुष्यो पोतानुं मनधार्युं न थतां तुरतज शत्रुताने धारण करे छे. माटे राजाए जे सुशिक्षित, कुलीन, बुद्धिशाळी, ज्ञान विज्ञानमां पूर्ण, सर्व शास्त्रोने जाणनार, क्षमावान, देशी, कृतज्ञ, बळवान, शान्त चित्त, नम्र, सुशील, निर्लोभी, मळता मासिकथी संतोष माननार, जीवोने प्रसन्न करनार, निरंतर पोताना काममां प्रवृत्त, शुभचिन्तक, निरालस्य, सदाचारी, देशना संधि विग्रह आदि विषयमां निपुण तेमज शहेरवासी अने देशवासीओनो प्रीतिपात्र होय तेने मंत्री बनाववो.

जे पुरुष शत्रुनी सेनाने छिन्नभिन्न करनार, व्यूहोनां मुख्यताने जाणनार, सैन्यने प्रसन्न करवामां प्रवीण, देह अने अंगोनी चेष्टाने समजनार, यात्रा कुशळ हाथीओने शिक्षण आपवामां शुद्ध, वेदने अनुसरी कर्म करनार, जितेन्द्रिय, पराक्रमी, योग्यायोग्य कर्मने ओळखनार, शुद्ध मनुष्योनी सोबत करनार, नीतिज्ञ अने प्रसन्न मुख तथा नेत्रवाळो होय तेने राजाए सेनाधिपतिनो अधिकार आपवो जोइए.

जे राजा शीघ्र कर्मी, सूक्ष्म आशयने समजनार, शुद्ध, मृदुभाषी, पंडित, शूर, धनवान अने देश काळने जाणनार मंत्रीने नियत करी तेनी प्रतिष्ठा वधारे छे ते राजानुं राज्य चन्द्रना किरणो समान वृद्धि पामे छे. पंडित, पवित्र, दयाळु, सेवक धर्मने सारी रीते जाणनार, शास्त्रोनुं श्रवण करनार, उत्तर प्रत्युत्तर तथा खंडन मंडनमां कुशळ, शास्त्रनुं स्मरण राखनार, धारण बुद्धिवाळो, न्यायने अनुसरी वार्तालाप करनार, जितेन्द्रिय, प्रिय बोलनार, शत्रुओ उपर पण क्षमावान, श्रद्धाळु, उदार, पीडितने सुख आपनार अने स्वामीना हितमां प्रीतियुक्त अमात्य जेम लोकप्रिय थाय छे; तेम कार्यमां सावधान, अहंकार रहित, सत्संगी, राज्योनां कामोने जोनार, मंत्रीओनां उत्तम कार्योथी प्रसन्न थइ इनाम देनार, सेवक लोकोना प्यार पात्र, मनुष्योने शिष्टाचार शिखवनार, स्थिर चित्तवाळो, प्रसन्न मुखवाळो, निरंतर नोकरोने चाहनार, क्रोध रहित, महा साहसी, योग्य दंडने धारण करनार, दूत रुपी नेत्रवाळो, प्रजानां वृत्तान्तने जाणनार, धर्म अर्थमां कुशळ अने सेंकडो सद्‌गुणोथी भरेल राजा पण मनुष्य मात्रने प्रिय थइ पडे छे. राजाए राज्यना पोषणमां सहायभूत उत्तम गुणोथी युक्त लडवैया तथा श्रेष्ठ मनुष्योने एकठा करवा अने निरंतर तेओनी वृद्धि चाहवी, तेओनुं कदि पण अपमान करवुं नहि, जे राजाना लडवैयाओ युद्धमां अहंकारी, कृतज्ञ, शास्त्रमां प्रवीण, धर्मज्ञ, निर्भय, हाथी अने रथनी सवारीमां कुशळ तेमज बाण अने अस्त्र विद्यामां पूर्ण होय छे ते राजानीज आ पृथ्वी छे. सर्वने प्रसन्न अने स्वाधीन राखवामां प्रवृत्त, उद्योग आदिनो अभ्यास राखनार तथा मित्र मंडळथी विंटायेल राजा सर्वोत्कृष्ट गणाय छे. आज्ञानुवर्ती एक हजार घोडेस्वारवाळो राजा आखी पृथ्वीनो विजय करी शके छे.

राजाए सिंहने सिंहना स्थान उपर, व्याघ्रने व्याघ्रना स्थान उपर, हाथीने हाथीना स्थान उपर, अश्वने अश्वना स्थान उपर अने श्वानने श्वानना स्थान उपर नियत करवा. जो एमां वगर तपास्ये विपरीत अधिकार आपवामां आवे तो तुरतज प्रजा पोतानी अप्रसन्नता प्रदर्शित करे छे.

जेवी रीते मयूर चित्रविचित्र पांखोने धारण करे छे तेवीज रीते राजाए पण अनेक प्रकारनां रुप धारण करवां जोइए. तीव्रता, कुटिलता, सत्यता अने सरलतानी साथे न्याय अने बुद्धिबलमां प्रवृत्त थनार राजा सुख भोगवी शके छे. जे प्रयोजनमां जे रुपथी मनोरथनी सिद्धि जणाय ते वर्ण अने रुप राजाए बताववुं. बहु रुप बतावनार राजाना सूक्ष्म अर्थ पण अवरोधने पामता नथी. शरद् ऋतुमां मौन रहेता मयूरनी माफक राजाए गुप्त वार्तानुं रक्षण करवुं. वर्षाथी उत्पन्न

थनार पर्वतो परनां जळ झरणमां वर्तमान थइ जेवां निर्मळ जणाय छे तेवीज रीते श्रीमान् राजाए वचन अने देहने शुद्ध राखवां जोइए. शरणे आवेला सत्पुरुषोनुं संरक्षण करवुं. दंडमां धर्मने ध्वजारुप बनावी अर्थने प्राप्त करवो. सावधानीथी लोकोनां आवक अने खर्च तपासी महान् वृक्षवाळां वनने निचोववुं अर्थात् धनरुपी रस मेळववो, पोताना समुदायमां शुद्ध मनथी वर्तन करवुं. शत्रुना क्षेत्रोनुं अश्व आदिना पगलांथी निकंदन करवुं, पोताना पक्षनी बराबर संभाळ राखवी. शत्रुना मित्रोने चाहना बतावबी, शिकार खेलवाने बहाने खूब भ्रमण करतां प्रतिपक्षीओने वननां पुष्पोनी पेठे प्रकंपित करवा, उन्नत अने वृद्धि पामता वैरिओनो तुरतमां विनाश करवो, अजाण्या स्थानमां प्रवेश करी गुप्त युद्ध करवुं, जेम वर्षाऋतुमां सायंकाले मयूर निर्जन स्थानमां गुप्त निवास करे छे तेम जनाना साथे महेलमां निवास करवो, परंतु कचनो त्याग करवो नहि, पोते पोतानी रक्षा करवी, आडा चालनार, झेरीला अने क्रोधी मनुष्योने मारवा, शत्रु सैन्यना पक्षमा भळनारनो अंत आणवो अने द्रढ मूळवाळा मंत्री तथा शूर लोकोने राज्यमां नियत करी पोते मयूरनी माफक इच्छानुसार उत्तम कर्मो करवां. जेम टीडनो समूह वनोमां प्रवेश करी तमाम वृक्षोने पर्ण रहित बनावी दे छे तेम शत्रुओनो संहार करवो; न्याय बुद्धि धारण करवी, पोतानी बुद्धिथी चित्तने वश करवुं, बीजानी बुद्धिथी निश्चयने द्रढ करवो, शत्रुने मीठां वचनोथी विश्वास आपवो अने पोतानुं बळ तपासवुं, तथा कार्याकार्यनो विचार करवो इत्यादि सद्गुणसंपन्न राजाने उपदेशनी जरुर होती नथी.

जेम भ्रमर क्रमपूर्वक रसनुं पान करे छे, ते रीते राजाए धननो संचय करवो, नियमथी अधिक धन प्राप्त थाय ते धर्म कर्ममां खरची नाखवुं, शास्त्रज्ञ अने बुद्धिमान राजाए खजानामांथी कोइने धन आपवुं नहि. अल्प धननुं अने शत्रुना माणसोनुं अपमान करवुं नहि, बुद्धिथी आत्माने ओळखवो, मूर्ख लोकोनो विश्वास न करवो, धैर्य राखवुं, चातुर्य बनाववुं, जितेन्द्रिय थवुं; बुद्धि, देह, पृथ्वी, पराक्रम अने देशकाळमा असावधान न रहेवुं, ए बधी बाबत धननी वृद्धि करनार छे. घृतनुं सिंचन करवाथी स्वल्प अग्नि पण अभिवृद्धि पामे छे अने एक बीजमांथी हजारो बीज उत्पन्न थाय छे. एटला माटे महान् आवक अने खर्च जोइ अल्प धननो अनादर करवो नहि. बाळक, तरुण अथवा वृद्ध शत्रु असावधान पुरुषने मारवा समर्थ थइ शके छे. श्रेयने इच्छनार राजाए शत्रुने मूळथी उखेडवो जोइए.

आ लोकमा लोभी पुरुष दोषथीज भरेला होय छे माटे राजाए तेवा पुरुषोने अधिकार-

पर योजवा नहि, प्रजाने दुःख आपनार युक्तिओनो त्याग करवो. तमाम मतनो निश्चय करी पुरुष जे जे शास्त्रो वांचे छे तेने तेवुं ज्ञान प्राप्त थाय छे, अज्ञानताथी आलस्य प्रगट थाय छे अने ज्ञानथी उद्योगनी सिद्धि थाय छे. ए युक्ति महान् ऐश्वर्यने उत्पन्न करनारी छे, खजानो खाली थवाथी सेनानो अभाव थाय छे एटला माटे राजाए जेम झरणांथी जळ एकटुं थाय छे, तेम धनने पेदा करवुं अने ते धनथी प्रजानुं पोषण करवुं.

ए रीते कुमार केसरदेवजी स्वस्थता पूर्वक गुरुना मुखथी राजधर्मनुं संक्षेपे श्रवण करी अत्यंत प्रसन्न थया. पोतानो अन्तसमय प्राप्त थतां मकवाणा व्यासजीए कुमार केसरदेवजी पराक्रमी छे के नहि ते जाणवा तेओने बोलावी कह्युं के सिन्ध देशनी अंदर शमी नामना शहेरमां मारो शत्रु हमीर सुमरो रहे छे तेनी साथे युद्ध करी कबजे करेला तेना अश्वो मारी उत्तर क्रियामां ब्राह्मणोने दानमां आपवानी प्रतिज्ञा करो तो मारो जीव सद्गति पामे. तुरतज कुमार केसरदेवजीए ए विकट प्रतिज्ञा लइ पोतानी पितृभक्ति प्रगट करी. वि. सं. ११०९ मां व्यास मकवाणानो स्वर्गवास थतां केसरदेवजी कीर्तिगढनी गादीए बेठा के तुरतज तेओए दश हजारना सैन्य सहित हमीर सुमरा उपर चढाइ करी, युद्धमां सुमराओने हरावी लुंटी लीधेला तेना अश्वो कीर्तिगढमां लइ आवी पितानी उत्तरक्रिया वखते भाट चारणोने बक्षीस आपी दीधा, त्यारबाद बे चार वखत युद्धमां हमीरने हरावी केसरदेवजीए पोतानुं पराक्रम बताव्युं हतुं, एथी हमीरना हृदयमां हमेशां भय रह्या करतो. केसरदेवजी यथास्थित राजधर्मने धारण करी निर्विघ्ने प्रजापालन करवा लाग्या.
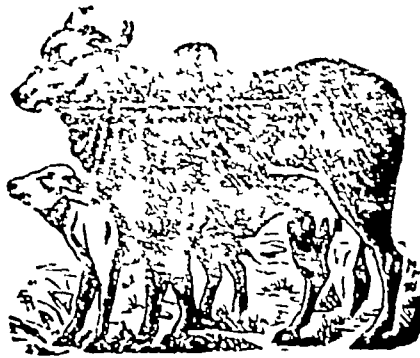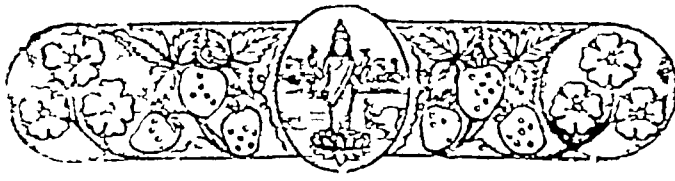
चतुर्दश तरंग.

"कुंडळिओ"

मंदिर नीतिना महद, केसरदेव कृपाळ,
वैरीआश करतां विवुध, निवडया श्रेष्ट नृपाल,
निवडया श्रेष्ट नृपाल, शेह सुमराने आपी;
सिन्धमांहि शिवतणी, श्रेष्ट प्रतिमाओ स्थापी;
सुणो अमर सुखधाम, सकल नृपगणमां सुंदर.
हर सरखा हरपाळ, अवतर्या एने मंदिर.

मकवाणा केसरदेवजीए गढ कोंटीना तख्तपर पाय धारण कर्या पछी बुद्धि अने पराक्रमथी पोतानां राज्यनी अपूर्व आबादी करी, उत्तम गुणवाळा पुरुषोने यथायोग्य अधिकार उपर योज्या, महान् बुद्धिशाळी अने कुलीन मंत्रीओनी सलाहथी राज्यतंत्र चलावी उत्तम प्रकारनी दंड नीतिथी खजानानी अभिवृद्धि करी, प्रजाना संरक्षण माटे पुष्कळ सैन्यनी जमावट करी, समग्र देशनी स्थिति जाणवा माटे सर्व स्थळे दूतोने नियत कर्या. पोते उत्तम गुरु पासेथी शिक्षण लीधुं हतुं तेमज तमाम शास्त्रोनो अभ्यास कर्यो हतो जेथी तेओने विद्याविनोद उपर विशेष रुचि हती, तेओ पंडितोनुं सारु सन्मान करता. पोताने भविष्यमां शंकरना अंशावतार हरपाळ देवजी नामे कुमार थवाना हता; जेथी शिव उपर तेओनी अनन्य भक्ति थइ अने एक उत्तमोत्तम शिवमन्दिर बनाववानी अभिरुचि थतां पोताना विद्यागुरुने बोलावी विनति करी के देवमन्दिरो केटला प्रकारनां होय छे अने ते कये स्थळे करवाथी श्रेयस्कार गणाय छे ते कृपा करी समजावो. केसरदेवजीना आवा उत्तम विचारथी गुरुने हर्षनो पार रह्यो नहि, तेओए तुरतज कह्युं के आयुष्मन्! प्रथम जळाशय तैयार कराववुं तेना तट उपर बगीचो बनावी ते स्थळे देवमंदिर करवुं.

मन्दिर करवाथी यश अने धर्मनी प्राप्ति थाय छे. यज्ञ आदि करवुं ए इष्ट तथा वाव, कुवा अने तळाव खोदाववां ए पूर्त कहेवाय छे, के जे उत्तम लोकोने आपनारां छे, देवालय बनावनार पुरुषने इष्ट तथा पूर्त ए बन्नेनां फळ मळे छे. कोइए तैयार करावेल अथवा स्वभाविक जळ अने उपवनथी युक्त स्थान होय त्यां देव निवास करे छे. जेमां कमलरुपी छत्रथी सूर्यनां किरणो दूर करातां होय, हंस पक्षीओनी पांखोथी प्रेरित श्वेत कमल रुपी मार्गमां निर्मळ जळ भरेलां होय, हंस, कारंडव, क्रौंच अने चक्रवाक आदि पक्षीओ कल्लोल करतां होय अने किनारे रहेलां वृक्षोनी छायामां जळ जन्तुओ विश्रान्ति लेतां होय एवा सरोवरमां देवता सदा विहार करे छे. क्रौंचपक्षीरुपी कांची कलापवाळी, हंसोना मधुर स्वररुपी शब्दोवाळी, जळरुपी वस्त्रवाळी, मत्स्यरुपी मेखलावाळी, किनारापर प्रफुल्लित थएलां वृक्षोरुपी कर्णाभरणवाळी, वे नदीओना संगमरुपी श्रोणिमंडळवाळी, तीरना उच्च प्रदेशरुपी स्तनवाळी अने हंसरुप हास्यवाळी निर्मळ नदी होय त्यां देवता रमण करे छे; तेमज वन प्रदेशमां, नदी, पर्वत अने झरणांनी समीपे तथा उपवनयुक्त नगरोमां पण देव विहार करे छे. देवमंदिरमां चोसठ पदनुं वास्तु करवुं जोइए अने तेमां मध्यम द्वार समदिशामां राखवुं ए श्रेष्ठ गणाय छे. देवमन्दिरनो जेटलो विस्तार होय तेथी बमणी तेनी उंचाइ होवी जोइए अने ए उंचाइना त्रीजा भागनी कटि बनाववी, सीडी उपर ज्यांथी देवगृहनो प्रारंभ थाय छे तेने कटि कहे छे विस्तारनो अर्ध गर्भ कहेवाय छे, ए गर्भ सिवायना अर्ध विस्तारमां चारे तरफनी भींत बनाववामां आवे छे. गर्भना चोथा भाग जेटलो द्वारनो विस्तार राखवो जोइए, द्वारनी उंचाइ तेना विस्तारथी बमणी होवी जोइए, द्वारनी उंचाइथी चोथा भाग जेटली शाखा अने उंबराना चोकठ उपरना काष्ठनी पहोळाइ राखवी जोइए. ए रीतनी शाखानी पहोळाइ वच्चे त्रण, चार, पांच, सात अथवा नव शाखा होय तो द्वार श्रेष्ठ कहेवाय छे. बन्ने शाखाओनी नीचेना चोथा भागमां देवताओना वे प्रतिहारोनी मूर्ति कोतराववी अने बाकीना त्रण भागमां दरेक स्थळ हंस आदि मांगलिक पक्षी, श्री वृक्ष स्वस्तिक, कलश, मिथुन, पत्रलता अने गण आदिथी सुशोभित करवां. अर्थात् तेओनां चित्र कोतराववां. द्वारनी उंचाइना प्रमाणमां तेनो अष्टमांश घटाडी जे शेष रहे ते पिंडिका अर्थात् देवताने स्थापन करवानी पीठ कहेवाय छे, ए पीठ सहित देवप्रतिमानी उंचाइनुं प्रमाण थाय छे अर्थात् देव मन्दिरमां पीठ सहित तेटली उंची प्रतिमा स्थापवी जोइए, पीठ सहित प्रतिमानी उंचाइना त्रण भाग करी वे भाग जेटली उंची प्रतिमा अने एक भाग जेटली उंची पिंडिका बनाववी जोइए.

तमाम जातना देवमंदिरमां ए रीते करवुं जोइए. देवमंदिरना मेरु, मंदर, कैलास, विमानच्छन्द, नन्दन, समुद्गक, पद्म, गरुड, नन्दिवर्धन, कुंजर, गुहराज, वृष, हंस, सर्वतोभद्र, घट, सिंह, वृत्त, चतुष्कोण, षोडशाश्रय अने अष्टाश्रय ए रीते वीश नाम छे. तेमां जे प्रासाद षट्कोण, बार खंडवाळो, अनेक प्रकारना कुहर अर्थात् अंदरना गवाक्षोथी युक्त, चारे दिशाओमां चार द्वारवाळो, बत्रीश हाथना विस्तारवाळो अने चोसठ हाथ उंचो होय ते मेरु, षट्कोण, त्रीश हाथ विस्तृत, दश खंडोथी युक्त अने शिखरवाळो होय ते मंदर; शिखरवाळो अठयावीश हाथ विस्तृत, आठ खंडोथी युक्त अने षट्कोण होय ते कैलास; जाळी जरोखाथी युक्त, एकवीश हाथ विस्तीर्ण, आठ खंडवाळो अने षट्कोण होय ते विमानच्छन्द; षट्कोण छ खंडवाळो, बत्रीश हाथ विस्तीर्ण अने सोळ खंडोथी युक्त होय ते नन्दन, गोळ होय ते समुद्गक, कमळने आकारे आठ दल युक्त होय ते पद्म, ए बन्ने प्रासाद आठ हाथ पहोळा, एक अंड युक्त अने बे खंडवाळा होय छे; गरुडने आकार पक्ष अने पुच्छ युक्त होय ते गरुड तथा पक्ष अने पुच्छ रहित गरुडने आकारे होय ते नन्दिवर्धन, ए बन्ने प्रासादो चोवीश हाथ विस्तीर्ण, सात खंडवाळा अने वीश खंडथी सुशोभित करवा जोइए. हाथीनी पीठ समान आकारवाळो, मूळथी चारे बाजु सोळ हाथ विस्तीर्ण होय ते कुंजर; सोळ हाथ विस्तीर्ण गुहने आकारे होय ते गुहराज, ए बन्ने प्रासादोनी वलभी त्रण त्रण चन्द्रशाळाओथी युक्त होय छे; बार हाथ विस्तीर्ण, चारे तरफथी वर्तुलाकार, एक खंड अने एक शृंगथी युक्त होय ते वृष; हंस पक्षीने आकारे चांच, पक्ष, तथा पुच्छ युक्त बार हाथ एक विस्तीर्ण, एक भूमिका अने एक शृंग युक्त होय ते हंस; कळश समान आकारवाळो, आठ हाथ विस्तीर्ण, अने खंड अने एक अंड युक्त होय ते घट; चारे दिशाओमां चार द्वारोथी युक्त, घणा शिखरोथी सुशोभित, सुन्दर चन्द्रशाळाओथी भूषित, छव्वीश हाथ विस्तीर्ण चतुरस्र अने पांच खंडथी युक्त होय ते सर्वतोभद्र; सिंहनी प्रतिमाथी सुशोभित, बार खूणा वाळो अने आठ हाथ विस्तीर्ण होय ते सिंह प्रासाद कहेवाय छे. बाकीना वृत्त चतुष्कोण, षोडशाश्रय अने अष्टाश्रयओए चार प्रासादो पोतपोताना नाम समान आकारवाळा होय छे, ए चारे अंजन रूप छे अर्थात् तेनी अंदर अंधकार रहे छे, बाहिरथी प्रकाश आवी शकतो नथी, कारण के ए चारे प्रासादोमां चारे तरफ भींत बनावी पश्चिम तरफ बाहेरनुं बारणुं मुकवामां आवे छे. अने ते भींतो उपरना भागमां वधारी प्रासादथी मेळवी देवामां आवे छे जेथी ते प्रासादथी जुदी जणाती नथी. ए प्रासादोनुं मुख्य द्वार पूर्वमां राखवुं. बाहिरना पश्चिम द्वारथी प्रवेश करी प्रासादना वाम भागथी

आवी मुख्य पूर्व द्वारे उभी देवनां दर्शन करवां. ए अंधकारवाळा प्रासादोमां मणिमय प्रतिमानुं स्थापन करवुं जोइए, के जेनी कान्तिथी अन्दरना भागमां प्रकाश रहे. ए चारे प्रासादो एक खंड अने एक अंडयुक्त करवा जोइए; चतुरस्र प्रासादने पांच शिखरथी सुशोभित करवो. तमाम प्रासादोमां एकसो आठ आंगळना दरेक खंड होवा जोइए, तेमज बाहेर निकळती कपोतपालि पण बनाववी जोइए. आ रीते गुरुना मुखथी प्रासादना लक्षण श्रवण करी मकवाणा केसरदेवजीए कैल्वस नामनुं उत्तम देवालय कीर्तिगढथी त्रण कोश छेटे तैयार कराव्युं. अने तेनी आजुबाजु केटलाएक देवालयो बंधाव्यां, प्रासादो तैयार थइ रह्या पछी गुरुए केसर देवजीने कह्युं के—तिन्दुकना काचां फळ, कैथनां काचां फळ, शाल्मलि वृक्षनां पुष्प, सल्लकी वृक्षनां बीज, बंधन वृक्षनी छाल अने वच ए सर्वनो एक द्रोण परिमाण जळमां काथ करी ज्यारे अष्टमांश शेष रहे त्यारे नीचे उतारी तेमां श्रीवास, रस, गुगळ, भिलामो, कुंदरु, राळ, अळसी अने बळदनुं छाण ए सर्व द्रव्यो मेळवी घुंटवाथी वज्र लेप नामनो कल्क थाय छे, ए वज्रलेप देव प्रासाद. हर्म्य, वलभी, शिवलिंग देवप्रतिमा, भींत अने कुवाओमां गरम करी लगाववाथी अर्थात् तेनो लेप करवाथी करोड वर्ष पर्यन्त कायम रहे छे. लाख, कुन्दरु. गुगळ, गृहधूम, कपित्थनां फळ, बळदनुं छाण, नागबलानां फळ, तिन्दुकनां फळ, मेनफळ, मधूकना फळ, मजीठ, राळ, रस अने आमळां ए सर्व चीजने प्रथमनी माफक सिद्ध करेला द्रोण परिमाण जळमां मेळववाथी बीजो वज्रलेप सिद्ध थाय छे, एमां पण प्रथमना वज्रलेप जेवोज गुण रहेलो छे. गाय, भेंस अने बकरांनां सींगडां, गर्दभ, महिष अने गाय ए त्रणेनां चर्म, निम्बफल, कपित्थफळ अने रस ए तमाम द्रव्यथी प्रथमनी माफक त्रीजो कल्क सिद्ध थाय छे, तेनुं नाम वज्रतर छे. आठ भाग सीसुं, बे भाग कांसु अने एक भाग पीतळ ए सर्वने एकटुं गळाववाथी वज्रसंघात नामे कल्क तैयार थाय छे. आ युक्ति सांभळी प्रसन्न थएला केसरदेवजीए तमाम देवालयोमां वज्रलेप कराव्यो. त्यारबाद दरेक देवालयोमां प्रतिमाओ स्थापवा माटे प्रथम प्रतिमाओनां लक्षण सांभळवा गुरु आगळ उत्सुकता बतावी. गुरुए कह्युं के—जाळीनी वच्चे सूर्यनो प्रकाश आवे छे तेमां जे सूक्ष्मतररज देखाय छे ते परमाणु कहेवाय छे अने ए परमाणु तमाम प्रमाणोमां प्रथम पद धारण करे छे अथात् सर्व प्रमाणोनो आरंभ परमाणुथी थाय छे. ए आठ परमाणुनुं रज, आठ रजनो वालाग्र, आठ वालाग्रनी लिक्षा, आठ लिक्षानी यूका, आठ यूकाना यव अने आठ यवनो एक अंगुल लेखाय छे. देव मंदिरना द्वारनी उंचाइनो अष्टमांश घटाडी जे शेष रहे तेनो त्रीजो भाग

पिंडिका अर्थात् मूर्तिनी पीठ बनाववानुं प्रमाण छे, मतलब एटली उंची पिंडिका बनाववी अने देव प्रतिमा एथी बमणी उंची होवी जोइए. प्रतिमानी जेटली उंचाइ होय तेना बार भाग करी ए दरेकना फरी नव नव भाग करवाथी एक अंगुल थाय छे, कारणके सर्व प्रतिमा पोतपोताना अंगुल प्रमाणथी एक सो आठ आंगळनी होय छे. प्रतिमानुं मुख पोताना अंगुल प्रमाणथी बार आंगळ पहोळुं अने चौद आंगळ लांबु राखवुं एम नग्नजित् आचार्ये कहेल छे अने ते प्रमाण द्रविड देशनुं छे. प्रतिमानां नासिका, ललाट, चिबुक, ग्रीवा अने कर्ण पोताना अंगुल प्रमाणथी चार चार आंगळ लांबा बनाववां जोइए. हनु बब्बे आंगळ लांबुं तेमज चिबुकनी चोडाइ पण बे आंगळ राखवी जोइए, ललाट आठ आगळ पहोळुं बनाववुं अने तेनी बन्ने बाजु बबे आंगळना शंख राखवा, ते शंखनी लंबाइ चार चार आंगळ होवी जोइए, कान बबे आंगळ पहोळा बनाववा. कर्णनो उपान्त अर्थात् अग्र भाग नेत्रांतथी लइ भ्रकुटिथी समसूत्र करी साडाचार आंगळनो बनाववो जोइए. कर्णस्रोत अर्थात् काननुं छिद्र अने सुकुमारक अर्थात् कर्णस्रोतनी समीपनो उन्नत भाग एक आगळ राखवो जोइए. नेत्र अने कर्णान्तनो अन्तर चार आंगळ राखवो जोइए, अधरोष्ठ एक आंगळ अने उपरनो ओष्ठ अर्ध आंगळ राखवो, गोन्छानो विस्तार अर्ध आंगळ करवो, मुख चार आंगळ लांबु अने दोढ आंगळ पहोळुं राखवुं जोइए अने नृसिंह आदिनुं फेलाएलुं मुख त्रण आंगळ पहोळुं बनाववुं, नासिकाना बन्ने पुट बब्बे आंगळना करवा अने पुटोनाअग्रथी नासिका पण बबे आगळ राखवी, नासिकानी उंचाइ बे आंगळ राखवी, अने बन्ने नेत्रो वच्चे चार आगळनो अन्तर राखवो, बे अंगुलनो नेत्रकोश बनाववो, बन्ने नेत्र बबे अंगुलनां करवा, नेत्रना त्रीजा भाग समान तारा अर्थात् नेत्रना मध्यनो कृष्ण भाग राखवो अने ताराना पंचमांश तुल्य दृक् अर्थात् नेत्रनी कनीनिका बनाववी तथा नेत्रनी पहोळाइ एक आगळ राखवी. एक भ्रकुटिना अन्तथी बीजी भ्रकुटीना अन्त पर्यन्त दश आंगळ राखवा जोइए भ्रकुटिनी पहोळाइ अर्ध आगळ अने तेनो मध्य भाग बे आंगळ अने एक एक भ्रकुटीनी लंबाइ चार चार आंगळनी करवी जोइए. ललाट उपर केशरेखा भ्रूबन्ध तुल्य अर्थात् दश आगळ विस्तीर्ण अने अर्ध अंगुल पहोळी राखवी. नेत्रने छेडे एक आगळनो करवीरक बनाववो. मूर्तिनुं शिर बत्रीश आगळ लांबु अने चौद आगळ पहोळुं बनाववुं जोइए, बार आगळना शिरवाळुं चित्र सर्व जोइ शके छे. अने वीश आगळना शिरवाळुं चित्र पाछली तरफ रहेलां माणसो जोइ शकतां नथी. केशरेखा सहित मुखनो विस्तार सोळ आं-

गळनो करवो एम केटलाएकनुं कहेवुं छे. ग्रीवानो विस्तार दश आंगळ अने लंबाइ एकवीश आंगळनी करवी जोइए, कंठना अर्ध भागथी हृदय पर्यन्त बार आंगळनो अंतर राखवो. हृदयथी नाभि पर्यन्त अने नाभिना मध्यथी लिंगना मध्य पर्यन्त बार बार आंगळनो अंतर राखवो जोइए. उरु अने जंघा चोवीश चोवीश आंगळ लांबां करवां जोइए. जानु कपित्थ चार आगळ अने पग पण चार आंगळना करवा अर्थात् टांकणानी नीचेनो भाग चार आंगळनो राखवो. बन्ने पग बार आंगळ लांबा अने छ आंगळ पहोळा करवा. पगना अंगूठा त्रण आंगळ पहोळा अने पांच आंगळ लांबा बनाववा तथा प्रदेशिनी त्रण आंगळ लांबी राखवी. बाकीनी त्रण आंगळीओ प्रदेशिनी करतां उत्तरोत्तर अष्टमांश घटाडी क्रमथी बनाववी, अंगुष्ठनी उंचाइ सवा आंगळ राखवी ए प्रमाणे बीजी आंगळीओनी पण उंचाइ जाणी लेवी. अंगुठाना नखनी लंबाइ पोणो आंगळ अने बाकीनी आंगळीओना नखोनी लंबाइ अर्ध अर्ध आगळनी करवी अथवा क्रमथी कांइ कांइ एवी न्यूनता होवी जोइए के जेथी आंगळीओ अने नखो सुंदर जणाय. जंघाना अग्रभागनी पहोळाइ चौद आंगळ अने विस्तार पाच आंगळ राखवो तथा जंघाना मध्य भागनो विस्तार सात आंगळ अने पहोळाइ एकवीश आंगळ करवी जोइए. जानुना मध्यनो विस्तार आठ आंगळ अने पहोळाइ चोवीस आगळनी होय छे. ऊरुना मध्य भागनो विस्तार चौद आंगळ अने परिधि अठ्यावीश आंगळनो करवो. कटिनो विस्तार अढार आंगळ अने घेर चमालीश आंगळनो राखवो. नाभिनो विस्तार अने वेध एक एक आंगळना प्रमाणथी करवां. नाभिने वचमां लइ मध्य भागनो घेर बेंतालीश आंगळ राखवो. बन्ने स्तन वच्चे सोळ आंगळनुं अन्तर राखी तेना उपर साडा छ छ आंगळने प्रमाणे कक्षा होय छे. ग्रीवाथी आरंभी अंसनी लंबाइ आठ आंगळ राखवी जोइए, अने बार बार आंगळ लांबा बाहु अने प्रबाहु बनाववा. बाहुनो विस्तार छ आंगळ अने प्रबाहुनो विस्तार चार आंगळ राखवो जोइए, खभाथी कोणी पर्यन्त बाहु अने कोणीथी नीचेनो भाग प्रबाहु कहेवाय छे. बाहुना मूळनो घेर सोळ आंगळ, अग्रहस्त अर्थात् प्रकोष्ठनी समीपनो घेर बार आंगळ अने हथेळीनी पहोळाइ छ आंगळ तथा लंबाइ सात आंगळनी राखवी जोइए. अंगुष्ठनी समीपे रहेली आंगळी प्रदेशिनी, तेना आगळनी मध्यमा, तेना आगळनी अनामिका अने तेना आगळनी अंगुली कनिष्ठिका कहेवाय छे. एक एक आंगळीमां त्रण त्रण पर्व होय छे. मध्यमा पांच आंगळ लांबी करवी, तेना वचला पर्वनो अर्ध भाग घटाडवाथी प्रदेशिनीनो लंबाइ सिद्ध थाय छे.

अनामिका पण प्रदेशिनी बराबर राखवी, अनामिकानुं एक पर्व घटाडी कनिष्ठिकानी लंबाइ बनाववी. अंगुठाना बे पर्व अने बाकीनी आंगळीओना त्रण त्रण पर्व करवां जोईए, तमाम आंगळीओना नखनी लंबाइ ते ते आंगळीना पर्वना अर्ध प्रमाणथी करवी. प्रतिमानां भूषण, वेष, अलंकार अने शरीर पोतपोताना देश रिवाज प्रमाणे करवां. लक्षण युक्त प्रतिमामां देवनुं सान्निध्य होय छे एटलाज माटे मूर्ति बनावनारनी सर्व प्रकारे अभिवृद्धि थाय छे, दशरथना पुत्र श्री रामचन्द्रजीनी अने विरोचनना पुत्र बलिनी प्रतिमा एकसो वीश आंगळ लांबी बनाववी. तमाम प्रतिमाओमां जे प्रतिमा एकसो आठ आंगळ लांबी होय ते उत्तम, छन्नु आंगळ लांबी होय ते मध्यम अने चोराशी आंगळ लांबी होय ते निकृष्ट गणाय छे. प्रथम जे अंगोनुं प्रमाण कह्युं ते एकसो आठ आंगळ लांबी प्रतिमानुं समजवुं. बीजी प्रतिमाओनुं अंग प्रमाण त्रिराशिथी सिद्ध थइ शके छे. विष्णु भगवाननी प्रतिमा अष्टभुज, चतुर्भुज अथवा द्विभुज बनाववी. ए प्रतिमाना वक्षः स्थलने श्रीवत्सनामक चिन्हथी अने कौस्तुभ मणिथी सुशोभित करवुं. तेनो रंग अळसीना पुष्प समान बनाववो, पीळां वस्त्र पहेराववां, प्रतिमानुं मुख प्रसन्न होवुं जोईए, तेने कुंडल अने किरीटथी अलंकृत करवुं. ए प्रतिमानां कंठ, छाती, अंस अने भुजा पुष्ट बनाववां. अष्टभुज प्रतिमाना जमणा त्रण हाथमां खड्ग, गदा अने बाण धारण कराववां तेमज चोथा हाथने अभय मुद्राथी युक्त बनाववो. डाबी बाजुना चारे हाथमां धनुष, ढाल, चक्र अने शंख धारण कराववां. चतुर्भुज मूर्तिना जमणा एक हाथने शान्तिप्रद मुद्राथी सुशोभित करवो अने बीजा हाथमां गदा आपवी तेमज डाबा बे हाथमां शंख अने चक्र धारण कराववां. द्विभुज मूर्तिना जमणा हाथने अभयमुद्रायुक्त बनाववो अने डाबा हाथमां शंख धारण कराववो.

बलदेवजीनी प्रतिमाना हाथमां हळ धारण कराववुं. नेत्र मदथी घूर्णित बनाववां तथा प्रतिमानो वर्ण शंख, चन्द्रमा अथवा मृणाल समान श्वेत करवो.

बलदेव अने श्रीकृष्णनी प्रतिमा वच्चे एकानंशा देवीनी मूर्ति बनाववी, ए देवीनो डाबो हाथ कटि उपर राखवो अने जमणा हाथमां कमळ धारण कराववुं. जो एकानंशानी मूर्ति चतुर्भुज बनाववी होय तो बन्ने वाम हस्तोमां पुस्तक तथा कमळ अने जमणा बन्ने हाथमां वरमुद्रा तथा माळा धारण कराववा. ए देवीनी मूर्ति अष्टभुज बनाववी होय तो डाबी बाजुना चारे हाथमां कमण्डलु, धनुष, कमल तथा पुस्तक अने जमणा चारे हाथमां बाण, दर्पण तथा अक्षसूत्र धारण कराववा.

साम्बनी प्रतिमाने गदा अने; प्रद्युम्ननी प्रतिमाने धनुष तथा बाण धारण कराववां, ए बन्ने मूर्ति द्विभुज अने सुरूपवाळी बनाववी. साम्ब अने प्रद्युम्ननी स्त्रीओनी प्रतिमा खड्ग अने खेटक युक्त करवी.

कमलरुपी आसनपर बेठेली ब्रह्मानी प्रतिमा बनाववी, तेना चार मुख करवां अने एक हाथमां कमंडलु धारण कराववुं, मयूरथी युक्त, ध्वजाने धारण करनार, शक्तिथी सुशोभित हस्तवाळी कार्तिकेयनी प्रतिमा बालक रुप बनाववी.

इन्द्रना हाथी ऐरावतनी प्रतिमा शुक्लवर्ण अने चार दांतोथी युक्त करवी. इन्द्रनी प्रतिमाना हाथमां वज्र धारण कराववुं अने ललाटनी वच्चे आडुं त्रीजुं नेत्र बनाववुं, कारणके ए उक्त प्रतिमानुं चिन्ह छे.

शंकरनी प्रतिमानुं मस्तक चन्द्रकलाथी चिन्हित करवुं, ध्वजामां वृषनुं चिन्ह बनाववुं, ललाटमां उभुं तृतीय लोचन करवुं, एक हाथमां त्रिशूल अने बीजा हाथमां पिनाक नामनुं धनुष्य धारण कराववुं. अथवा शिवनी प्रतिमाना वामार्ध भागमां पार्वतीजीनो वामार्ध भाग बनाववो अर्थात् अर्धनारीश्वरनी प्रतिमा बनाववी.

बुद्ध भगवाननी प्रतिमाना हाथ पग कमळनी रेखाओथी चिन्हित करवां. जगत्‌ना साक्षात् पिता समान पद्मासन उपर बेठेली ते मूर्त्ति अत्यन्त प्रसन्न बनाववी अने तेना केश नीचे पडता राखवा, अर्हतदेवनी प्रतिमाना भुज जानुपर्यन्त लांबा करवा अने ते मूर्त्ति श्रीवत्स नामना चिन्हथी सुशोभित, शान्तस्वरुप, दिगम्बर, तरुण अने उत्तम रुपवाळी बनाववी.

सूर्यनी प्रतिमानां नासिका, ललाट, जंघा, उरु, कपोल अने उरःस्थल उन्नत बनाववां. उत्तर दिशामां रहेनार मनुष्योना वेष जेवो सूर्यनी प्रतिमानो वेष करवो, पगथी छाती पर्यन्त प्रतिमा वस्त्रथी गुप्त राखवी. बन्ने हाथमां नखो सहित बे कमंडलु धारण कराववां, शिरपर मुकुट पहेराववो, मुखने कुंडलोथी मंडित करवुं, गळामां लांबो हार पहेराववो, कटि उपर कमरबंध वींटवो. मृणाल समान शुभ्र मुखनो वर्ण बनाववो, आखी प्रतिमाने वस्त्रथी आच्छादित राखवी. मन्द हास्य युक्त प्रसन्न मुखवाळी अने रत्न समान देदीप्यमान कान्तिवाळी सूर्यनी प्रतिमा बनाववी. सूर्यनी प्रतिमा एक हाथ उंची होयतो शुभ करे छे, बे हाथ उंची होय तो धन आपे छे, त्रण हाथ उंची होय तो क्षेम करे छे अने चार हाथ उंची होय तो सुभिक्ष करे छे. अधिक

अंगवाळी प्रतिमा राजाथी भय प्रगटावे छे. हीन अंगवाळी प्रतिमा बनावनार निरंतर रोगी रहे छे, कृश उदरवाळी प्रतिमा क्षुधाथी भय उपजावे छे, कृश अंगवाळी प्रतिमा बनाववाथी धननो नाश थाय छे, क्षतयुक्त प्रतिमा बनावनारनुं शस्त्रथी मृत्यु निपजे छे, डाबी तरफ झुकेली प्रतिमा बनावनारनी पत्नी नाश पामे छे अने जमणी तरफ झुकेली प्रतिमा बनावनारनुं आयुष क्षीण थाय छे, जो प्रतिमानी द्रष्टि उन्नत बनावी होय तो कर्ता आंधळो थइ जाय छे अने नीची बनावी होय तो कर्त्ताने चिन्ता रह्या करे छे, तमाम प्रतिमाओ ए प्रमाणे शुभाशुभ फळ आपनारी होय छे.

लिङ्गनी वृत्तरुप परिधिने लंबाइमां सूत्रथी मापी ते सूत्रना त्रण भाग करवा अने ए भाग सरखा लिंगना पण त्रण भाग करवा. त्यारबाद लिंगना नीचला तृतीयांशने चतुरस्र, मध्यना तृतीयांशने अष्टास्र अने उपरना तृतीयांशने वर्तुल बनाववो, लिंगनो चतुरस्र भाग पृथ्वीमां नांखी मध्यनो अष्टास्र भाग पिंडिकाना मध्य भागमां राखवो अने बाकीनो वर्तुल त्रीजो भाग उपर राखवो, ए वर्तुल भागनी उंचाइ तुल्य प्रमाणथी लिंगनी चारे बाजु पिंडिका बनाववी. जे शिवलिंग पातळुं अने न्हानुं होय ते देशनो नाश करे छे, बन्ने तरफथी हीन होय ते नगरनो नाश करे छे अने जे लिंगना मस्तक उपर क्षत होय ते स्वामीनो क्षय करे छे.

इन्द्र तुल्य इन्द्राणी तथा ब्रह्मा तुल्य ब्रह्माणी इत्यादि मातृगण थाय छे. परंतु तेनां स्तन आदि अंग पण बनाववां के जेथी स्त्री रूपनी शोभा जणाय. मृगया खेलनार परिकरवाळी अने अश्वपर आरूढ थएली रेवन्तनी प्रतिमा बनाववी महिषपर चढेल अने हाथमां दंडयुक्त यमनी प्रतिमा करवी, हंसपर चढेल अने हाथमां पाशयुक्त वरुणनी प्रतिमा बनाववी; वाम भागमां मुकुटयुक्त, महान् उदरवाळी अने मनुष्य उपर चढेली कुबेरनी प्रतिमा करवी, गणपतिनी प्रतिमानुं मुख हाथी सरखुं अने पेट लांबुं बनाववुं, हाथमां कुठार धारण करावो, गणपतिनी मूर्त्ति मूळकवान्द तथा नीलदलकान्दने धारण करनारी अने एक दंतवाळी पण थइ शके छे.

प्रतिमाओ बनावनार कारीगरने प्रतिमा बनाववा अर्थे काष्ठ लेवा अनुकूळ दिवसे अथवा ज्योतिषीए बतावेल दिवसे शुभ मुहूर्त्त होय त्यारे मांगल्कि शकुन जोइ वन प्रवेश करावो. स्मशान, मार्ग, देवालय, वल्मीक, उद्यान, तपस्वीओना आश्रम, चैत्य अने नदीओनां संगम इत्यादि स्थळे उत्पन्न थएला वृक्ष, घटजळथी सींचाएला वृक्ष, कुबडा वृक्ष, साथे उगेलां उभय वृक्ष, वेलोथी पीडित वृक्ष अर्थात् जेना उपर घणी लताओ लपटी रही होय एवा वृक्ष, जेना उपर वीज-

ळी पडी होय एवां वृक्ष, पवनथी तूटी पडेलां वृक्ष, पोतानी मेळे पडी गएलां वृक्ष, हाथीओए तोडेलां वृक्ष, शुष्क वृक्ष, अग्निथी दग्ध थएलां वृक्ष अने मधुनिलय अर्थात् जेमां मधपुडा लागेला होय एवां वृक्षोनो त्याग करवो, कारणके ए काष्ट प्रतिमा बनाववामां अशुभ गणाय छे. जेनां पर्ण, फूल अने फळ स्निग्ध होय तेज वृक्ष शुभ लेखाय छे. वनमां रहेलां एवां शुभ वृक्षनी समीपे जइ बलि अने पुष्पोथी तेनुं पूजन करवुं. प्रतिमा बनावनार ब्राह्मणने माटे देवदारु, चंदन, शमी अने मधूक ए चार वृक्षना काष्ट शुभ गणाय छे. अरिष्ट (लींबडो), पीपर, खेर अने बिल्व ए चार वृक्ष क्षत्रीओनी वृद्धि करनार छे. जीवक, खदिर, सिन्धुक अने स्यन्दन ए चार वृक्ष वैश्योनुं शुभ करनार छे तेमज तिन्दुक, नागकेसर, सर्ज, अर्जुन, आम्र अने साल ए छ वृक्षो प्रतिमा बनावनार शूद्रोने माटे शुभ लेखाय छे. लिंग अथवा प्रतिमानुं वृक्षोनी दिशा अनुसार स्थापन करवुं अर्थात् वृक्षनो जे पूर्व आदि भाग होय तेज प्रतिमा अथवा लिंगनो पण पूर्व आदि भाग होवो जोइए. एवीज रीते वृक्षना उपरना भागमां प्रतिमानुं शिर अने नीचली जडना भागमां प्रतिमाना पग बनाववा जोइए, एटला माटे कापतां पहेलां वृक्षमां चारे दिशाओनां अने उर्ध्व भाग तथा अधोभागनां चिह्न करी लेवां जोइए. खीर, लाडु, भात, दधि, मांस अने उल्लोपिका आदि भक्ष्य तथा मद्य, पुष्प, धूप अने गन्धथी वृक्षनी पूजा करवी तेमज रात्रीने समये देवता, पितृ, पिशाच, राक्षस, नाग, असुर अने गण आदिनी पूजा करी वृक्षनो स्पर्श करवो. वृक्षनो स्पर्श करती वखते–

> "अर्चार्थममुकस्यत्वं, देवस्य परिकल्पितः ।
> नमस्ते वृक्ष पूजेयं, विधिवत् संप्रगृह्यताम् ॥
> यानीह भूतानि वसन्ति तानि, बलिं गृहीत्वा विधिवत् प्रयुक्तम्;
> अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु, क्षमन्तु तान्यद्य नमोस्तुतेभ्यः ।

आ मंत्र बोलवो "अमुकस्य" ने बदले जे देवनी प्रतिमा बनाववी होय तेनुं षष्ठ्यन्त नाम बोलवुं. प्रभात समये ए वृक्षने जळथी सींची कुठारने मध तथा घृत चोपडी तेनाथी प्रथम ईशान कोणमां कापवुं अने पछीथी प्रदक्षिण क्रमथी बाकीनुं वृक्ष कापी लेवुं. कपाएलुं वृक्ष जो पूर्व, ईशान कोण अथवा उत्तर दिशामां पडेतो वृद्धि करनार थाय छे अने अग्निकोण आदि पांच दिशाओमां पडे तो क्रमथी अग्निदाह, रोग, रोग, रोग अने अश्वोनो नाश थाय छे.

आवुं उत्तम वृत्तान्त गुरुना मुखथी सांभळी प्रसन्न थएला मकवाणा केसरदेवजीए ज्योतिषी आ-
गळ उत्तम मुहूर्त जोवरावी, सारां शकुन लइ, कारीगरोने वन प्रवेश करावी, विधिवत शुभ वृ-
क्षनां काष्ठो कपावी जुदी जुदी देव प्रतिमाओ तैयार करावी; तेमां केटलीएक देव प्रतिमाओ का-
ष्ठनी, केटलीएक मृत्तिकानी, केटलीएक मणिनी, केटलीएक सुवर्णनी, केटलीएक चांदीनी, केट-
लीएक तांबानी अने केटलीएक शिला अथवा पाषाणनी बनाववा आज्ञा आपी; कारणके काष्ठ
अने मृत्तिकानी देव प्रतिमा आयुष, लक्ष्मी, बळ तथा जय आपे छे; मणिमय देवप्रतिमा लोको-
नुं हित करे छे. सुवर्णनी प्रतिमा शरीरे पुष्टि अर्पे छे, चांदीनी प्रतिमा सुयशने वधारे छे, तां-
बानी प्रतिमा संताननी वृद्धि करे छे अने पाषाणथी बनावेल देवप्रतिमा अथवा शिवलिंग घणी
भूमिनो लाभ करावे छे. केसरदेवजीने गुरुए कह्युं हतुं के शंकुथी उपहत अर्थात् जेना कोईपण
अंगमां खीला जेवो खाडो रही जाय ए प्रतिमा मुख्य पुरुषनो अथवा वंशनो नाश करनारी नि-
वडे छे अने जेमां गडा रही जाय ते असाध्य रोग अने अनेक प्रकारना उपद्रव पेदा करे छे ए-
टला माटे जाते देखरेख राखी तमाम रीते निर्दोष अने सुन्दर प्रतिमाओ तैयार करावी. त्यारबाद
पोते गुरुश्रीने पूछ्युं के प्रतिमाओनी प्रतिष्ठा क्यारे थाय अने क्या माणसो क्या क्या देवनी प्रतिष्ठा करवाने
योग्य गणाय ते विधिपुरःसर मने कही संभळावो. श्रद्धालु केसरदेवजीनां श्रेष्ठ वचनो
श्रवण करी गुरु बोल्या के—ज्यारे उत्तरायण होय, शुक्लपक्ष होय, चन्द्रमा बृहस्पतिना षड वर्गमां
स्थित होय, स्थिर लग्न तथा स्थिर नवांश होय, सौम्य ग्रह पांचमे, नवमे, चोथे, सातमे अथवा
दशमे स्थाने होय; पापग्रह त्रीजा, छट्टा, दशमा अथवा अग्यारमा स्थानमां होय; त्रणे उत्तरा,
रोहिणी, मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, पुष्य अथवा स्वाति नक्षत्र होय अने मंगळ
सिवायनो वार होय तेमज प्रतिष्ठा करनारनो दिवस अनुकूळ होय अर्थात् तेने चन्द्र अने तारानी
शुद्धि होय ए समये प्रतिमानुं प्रतिष्ठापन शुभ गणाय छे प्रतिष्ठा करनार विद्वाने उत्तर दिशामां
अथवा पूर्व दिशामां प्रतिमाना संस्कारने माटे अधिवासन नामनो मंडप बनाववो जोइए, ते मंडपने
चारे दिशाओमां चार तोरणोथी युक्त करवो अने उत्तम वृक्षोना कोमळ पर्णोथी ढांकी देवो, ए
मंडपनी पूर्व दिशामां चित्र विचित्र वर्णनी, अग्निकोणमां लाल रंगनी, दक्षिण तथा नैऋत्यकोणमां
कृष्णवर्णनी, पश्चिममां श्वेत रंगनी, वायव्यकोणमां पाडुर, उत्तरमां चित्रवर्ण अने ईशानकोणमां
शोभाने माटे पीळा रंगनी पुष्पमाला अने पताका लगाववी जोइए. ए अधिवासन मंडपनी वचे
स्थंडिल बनावी तेने गोमय आदिथी लींपी तेना उपर सिकता अने तेना उपर कुश बिछावी ते उपर

प्रतिमाने शयन करावबुं, प्रतिमानुं शिर भद्रासन उपर राखवुं अने पग उपधान उपर राखवा, त्यारबाद प्लक्ष, अश्वत्थ, उदुम्बर, शिरीष अने वट ए वृक्षोना पर्णोथी थएलुं कषाय जल; कुशने आदि लइ मंगळ नामवाळी जया, पुनर्नवा तथा विष्णुक्रान्ता आदि औषधि, हाथी अने वृषभे खोदेली मृत्तिका, कमल युक्त सरोवरनी मृत्तिका, नदीना संगम तटनी मृतिका, पर्वतनी मृत्तिका, वल्मीकनी मृत्तिका, पंचगव्यसहित तीर्थोनां जळ, सुवर्ण अने रत्नयुक्त जल तथा सुगन्धयुक्त जल, ए सर्व द्रव्यथी प्रतिमाने स्नान करावी तेना शिरनुं पूर्व तरफ स्थापन करवुं, ए समये विविध प्रकारना तुरीआदि वाद्यो वगडाववां, ब्राह्मणोने मुखे पुण्याह वाचन अने वेदघोष करावववां. उत्तम ब्राह्मणो पासे पूर्व दिशामां इन्द्रना अने अग्निकोणमां अग्निना मंत्र जपाववा तथा तेओनुं दक्षिणा पुरःसर पूजन करवुं, प्रतिष्ठा करनार ब्राह्मणे जे देवनी प्रतिष्ठा करवी होय तेना मंत्रोथी अग्निमां हवन करवुं, जो हवन समये अग्नि धूमथी आकुल होय, अपसव्य होय अर्थात् तेनी ज्वाळा डावी तरफ फेलाती होय, "मुहुमुहु" एवो शब्द करतो होय अने तेमां स्फुलिंग उडता होय तो ते अशुभ गणाय छे. जो हवन करनारनो स्मृतिलोप थइ जाय अर्थात् तेने मंत्र आदिनुं स्मरण न रहे अथवा तेनुं प्रसर्पण थाय अर्थात् प्रथम ज्यां हवन करवा बेठो होय त्यांथी खसी जाय तो पण अशुभ लेखाय छे. प्रतिमाने स्नान करावी, नवां वस्त्र पहेरावी, भूषण आदियी अलंकृत करी, पुष्प अने गंधथी तेनुं पूजन करवुं; त्यारबाद उत्तम प्रकारे बिछावेली शय्या उपर ते प्रतिमानुं प्रतिष्ठा करनार पुरुषे स्थापन करवुं. ए रीते प्रतिमाने शयन करावी नृत्य तथा गीत सहित जागरणोथी तेनुं उत्तम प्रकारे अधिवासन करी ज्योतिषीए बतावेला शुभ मुहूर्तमां स्थापना करवी. ते प्रतिमानुं पुष्प, वस्त्र अने चन्दन आदि अनुलेपनोथी पूजन करी अधिवासन मंडपथी उत्थापन करी प्रासादथी प्रदक्षिण थइ तेने प्रयत्न पूर्वक गर्भगृहमां लइ जवी. ए समये शंख, तुरी आदि वाद्यो वगडाववां, त्यां गया बाद सारी रीते बलिप्रदान करी ब्राह्मण अने सभ्य अर्थात् सभासदोनुं वस्त्र तथा दक्षिणा आदिथी अर्चन करी पिंडिकाना खाडामां सुवर्ण खंड नांखी तेना उपर प्रतिमानुं स्थापन करवुं, यजमाने स्थापक ज्योतिषी, ब्राह्मण, सभ्य अने स्थपति ए सर्वनुं विशेषताथी पूजन करवुं. ए रीते प्रतिष्ठा करनारो पुरुष आ लोकमां कल्याणने भोगवी परलोकमां स्वर्गीय सुख पामे छे. विष्णुनी प्रतिष्ठा वैष्णव, सूर्यनी प्रतिष्ठा भग, शिवनी प्रतिष्ठा भस्मधारी ब्राह्मण, ब्राह्मी आदि मातृकाओनी प्रतिष्ठा मंडलक्रम अर्थात् तेनां पूजन विधानने जाणनार ब्राह्मण, बुद्धनी प्रतिष्ठा शान्त चित्त शाक्य अने

जिननी प्रतिष्ठा नग्नने हाथे करावबी ए योग्य गणाय छे. अथवा जे मनुष्य जे देवतानो उत्तम भक्त होय ते ते देवनी प्रतिष्ठा आदि सर्व क्रिया पोतपोताना कल्पोक्त विधानथी करी शके छे. गुरुना मुखथी आवी उत्तम हकीकत सांभळी मकवाणा केसरदेवजी अत्यंत खुशी थया अने तेओए यथोचित विद्वान ब्राह्मणोने हाथे म्होटी धामधूमथी शंकर आदि देवप्रतिमाओनी विधिवत् प्रतिष्ठा करावी तथा ब्राह्मणोने अनेक प्रकारनां दान अने दक्षिणाथी संतुष्ट कर्या; तेमज तमाम कारीगरोने इनामो आप्या. अभिनव उपवन अने जलाशय आदिथी अलंकृत उक्त स्थळे हमेशां पोते जाते पधारी प्रेमपुरःसर पिनाकपाणिनुं पूजन करवा लाग्या. ए रीते शिवभक्तिमां अपूर्व स्नेह राखी प्रजापालन करनारा केसरदेवजीनी उम्मर चालीश वर्षनी थइ छतां तेओने कांई संतान प्राप्त न थयुं. कोईएक दिवसे प्रभातमां जागृत थई पोते राजमेहेलना झरुखामां डोकीयुं कर्युं, ते समये मार्गने साफ करती चांडालिनीनी दृष्टि अजाणतांथी ए तरफ खेंचाणी, तुरतज ते पीठ फेरवी उभी रही, आथी केसरदेवजीना मनमां अचंबो उत्पन्न थयो, तेओए तुरतज बहार पधारी चांडालिनीने अभय आपी पूछ्युं के तें मने जोई मुख शा माटे फेरव्युं ? त्यारे चांडालिनी बोली के अन्नदाता ! मारो अपराध क्षमा करजो, अपुत्र मुख प्रभातमां जोवाथी अनिष्ट थाय छे एटला माटेज में मुख फेरव्युं, बीजुं कांइ कारण नथी. आ सांभळी केसरदेवजीने राजवैभव छतां परितापनो पार रह्यो नहि, परंतु ए वात मनमां राखी नित्यकर्मथी फारेक थई पोतानी स्वारीना घोडाने सज्ज करवा अनुचरने आज्ञा आपी, अश्व हाजर थतां पोते एकला सवार थई चाल्या निकळ्या, हमेशा सायंकाळे स्वारी सहित शंकरना दर्शन करवा पधारता परंतु ते दिवसे सवारमां अने वळी एकला जता जोई अमात्य विगेरेना मनमां आश्चर्य जेवुं लाग्युं. परंतु कोई कांई बोली शक्या नहि, मकवाणा केसरदेवजीए महादेवना मंदिरमां प्रवेश कर्यो विचार्युं के अपुत्र रहेतां करतां शंकर उपर कमळपूजा खाई मरणने शरण थवुं एज उत्तम छे, कारण के नगरमां अधम लोको पण मारुं मुख जोवामां दोष समजे छे तो हवे दुनियाने मुख देखाडवुं नहि. एम दृढ निश्चय करी अश्वने एक बाजुना थांभला साथे बांधी हाथमां नग्न तलवार लई प्रतिमा पासे गई पहोंच्या अने हृदयमां अनन्य आस्था राखी अटगपणे अतुल्य धैर्यथी पोताना वीर नग्न शरीरना उतारी इष्टदेव उमापतिना लिंग उपर चढाव्या तथा तलवारथी पोताना शिर उपर प्रहार करता उपत थया तेटलामां अंदरथी "नाकार" नो गंभीर उच्चार थयो. एवो स्वच्छ शब्द सांभळी केसरदेवजीए विचार कर्यो के आ शुं ? हुं एकेक सेवकने साथे लाव्यो नथी तेमज तमाम पुजारीओने पण पुरमां रहेवा

हुकम कर्यो छे छतां आ " माकार " नो उच्चार कोणे कर्यो ? कदाच कोई माणस तो अहीं नहि आवी चड्युं होय ? शंकानुं समाधान करवा पोते देवालयना दरेक गृहो तपास्यां छतां कयां-इ माणस जोवामां न आव्युं, छेवटे मन्दिरना शिखर पर चढी दीर्घ द्रष्टिथी जोता आजु बाजु एक पक्षी सरखुं पण न जणायुं, जेथी पोताने खात्री थइ के नव नाडी अने वहोंतेर कोठामांथी जीव जतां आवो व्यर्थ वहेम उद्भवेलो हशे. एम विचारी वगर विलंबे बीजी वार तलवारथी शिरच्छेद करवा तत्पर थया तेवामां तुरतज आशुतोष उमापतिए प्रगट थइ तेओनो हाथ पकडी राख्यो अ-ने मधुर वाणीथी कह्युं के राजन ! वरं ब्रूहि, वरं ब्रूहि. मकवाणा केसरदेवजी पोताना इष्ट देवनुं साक्षात्वस्वरुप थोडीवार सुधी अनिमेष आंखे जोइ रह्या, त्यारबाद दंडवत् प्रणाम करी प्रेमाश्रु-लावी बोल्या के कृपानाथ ! आपना जेवा प्रतापी पुत्रनी मने आकांक्षा छे, पिनाकपाणिए प्र-सन्नवदने कह्युं के —राजन्! ए वरदानतो पूर्वे तारा पूर्वज कुंडमालजीने हुं आपी चुकयो छुं अने ते समयपण प्राप्त थयो छे, जा मारुं वचन छे के तारे त्यां दश पुत्रो थशे. तेमां ज्येष्ठ पुत्र हरपालदेवजीमां हुं मारो दशमो अंश अर्पण करीश, ते बाळक महा पराक्रमी अने प्रतापी थशे तेमज तेना कुंवरो टिकायत बनी " राज " पदवीथी प्रसिद्ध थशे. हरपालदेवनो संबंध तमो क्यांइ करशो नहि, कारणके एना माटे कन्या पण में तैयार करी राखेल छे अने ए कन्याने हरपालदेव पोतानी मेळे परणशे. एटलुं कही उमानाथ अदृश्य थइ गया. केसरमकवाणाए शिवजीनां एवां स्तुत्य वचनो श्रवण करी अपूर्व हर्षावेशमां अश्वपर आरूढ थइ पाछुं कीर्तिगढ तरफ प्रयाण कर्युं, थोडा समयमांज तेओने त्यां भिन्न भिन्न राणीओना उदरथी क्रमपूर्वक हरपालदेवजी, वजेपालजी, हमीरजी, पचाणजी, लाखाजी, सामंतसिंहजी, क्षेमराजजी, कर्मसिंहजी, शान्तसिंहजी अने देव-राजजी नामे दश पुत्रो जन्म पाम्या. कीर्तिगढमां अवर्णनीय आनंद फेलाइ रह्यो, प्रजा पण पोताना अपुत्र राजाने त्यां उपरा उपर दश कुमारनो जन्म जोइ इश्वरनो आभार मानवा लागी. केसर-देवजीए ब्राह्मण, भाट तथा चारणोने सोना रुपाना दानथी संतुष्ट कर्या. दशे कुमारो दिनप्रति-दिन वृद्धि पामवा लाग्या. तेओए विद्याभ्यासनी साथे युद्धकळानुं पण सारी रीते शिक्षण लीधुं, तमाम कुमारोमां हरपालदेवजी हिम्मत, पराक्रम अने तेजमां विशेष वखाणवा लायक थया. महा-राजा केसरदेवजीए कुळ बारोट झाझणसिंहजीने बोलावी पोतानी पवित्र वंशावळी सांभळ्या बाद दशे कुमारोनां नाम तेना चोपडामां नोंधावी लाख पसाव आप्या. कोइ एक समये केसरदेवजी राजकीय मनुष्योनी सभा भरी वार्ताविनोद करी रह्या हता. त्यां कोइ एक विदेशी ब्राह्मण आवी

चडणे, ते कांइ पण आशीर्वाद आप्या विना सन्मुख उभो रह्यो, तेनी भव्य मुखमुद्रा जोइ प्रसन्न थएला केसरदेवजीए पूछ्युं के–महाराज! तमे कोण छो? अने आंहीं शा माटे आव्या छो? त्यारे विदेशी विप्रे उत्तर आप्यो के राजन्! हुं ज्योतिषी छुं, राजाओने ज्योतिषीओ अति प्रिय होय छे एम धारी आप पासे आव्यो छुं; बीजा भिक्षुक ब्राह्मणोनी पेठे हुं आशीर्वाद आपवा आव्यो नथी, मारे धननी स्पृहा नथी, आप राजा छो अने वळी विद्वान छो एवुं सांभळी मे करेला अभ्यासनी आप आगळ परीक्षा आपवा इच्छुं छुं. केसरदेवजीए कह्युं के–जो तमो ज्योतिषी हो तो कहो जोइए के केवां लक्षण अने केटलां ज्ञानथी ज्योतिषी थइ शकाय छे तथा ते लोको राजाने शा कारणथी प्रिय थइ पडे छे ते पण समजावो. विदेशी ब्राह्मणे उत्तर आप्यो के–राजन्! ज्योतिः शास्त्रमा निपुण ज्योतिषी एवो होवो जोइए के जे कुलीन होय, जेने जोवाथी चित्त प्रसन्न थाय, जे उद्धट्टो वेष न राखतो होय, सत्यवादी होय, अन्यना गुणोमां दोषोनुं आरोपण न करतो होय, रागद्वेष रहित होय, जेना हाथ पग आदिनो बांधो सुश्लिष्ट अने पुष्ट होय, जे अंगहीन न होय, जेना हाथ, पग, नख, नेत्र, दाढी, दांत, कान, ललाट, भ्रकुटी अने शिर सुन्दर अर्थात् उत्तम लक्षणोथीयुक्त होय; जेनुं शरीर सुंदर होय, गंभीर अने उद्भट अर्थात् मेघ तथा मृदंगना ध्वनि समान जेनो शब्द होय, जे शुचि अर्थात् शास्त्रमां कहेल शौचनुं अनुष्ठान करनारो होय, परधन अने देवधन आदिमां अलुब्ध, चतुर, सभामां बोलवाने समर्थ, शास्त्रने अनुसरी वात करनार, प्रतिभानवान् अर्थात् प्रश्न करतां शास्त्रनो पूर्वापर विचार करी उत्तर आपनार, देश तथा काळने जाणनार, निर्मळ चित्तवाळो, सभामां निर्भय रहेनार, साथे भणनारा विद्यार्थीओथी विवादमा पराभव नहि पामनार, कुशळ, गीत नृत्य तथा द्यूत आदि व्यसनोमा अनासक्त, शान्तिक तथा पौष्टिक अभिचार अने पुण्य स्नान आदि विधाने जाणनार, देवपूजन, चान्द्रायण आदि व्रत अने एकादशि आदि उपवासमा तत्पर, पोताना रचेला तथा आश्चर्य उपजावनार स्वयंवह आदि अनेक यंत्र अथवा स्वतंत्र ग्रह गणितमां आश्चर्य उपजावनार ग्रहयुद्ध ग्रहोत्पत्ति अने ग्रहण आदिने प्रथमथी कही पृथ्वीमां पोतानो उत्कर्ष प्रगट करनार, प्रश्ननो जवाब देनार, अनेक प्रकारना उत्पातोथी जे अशुभ थाय तेने दैवात्यय कहे छे ए दैवात्यय विना तेना निवारणने माटे पूछ्या वगर पण शान्ति आदि कहेनार; ग्रहगणित, पंचसिद्धान्तिका आदि संहिता, बृहत्संहिता आदि होरा अने बृहज्जातक आदि ग्रन्थ तथा तेना अर्थने जाणनार होय तेमज जे ग्रह गणितमां पुलिश सिद्धान्त, रोमक सिद्धान्त, वसिष्ठ सिद्धान्त,

सूर्यसिद्धान्त अने ब्रह्म सिद्धान्त ए पांचे सिद्धान्तोने जाणतो होय; युग वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, रात्रि, प्रहर, मुहूर्त, घडि, पल, त्रुटि, अने त्रुटिना अवयवरूप काळने जाणतो होय ते उपरांत विकला, कला, अंश, राशि अने भगणरूप जे क्षेत्र तेनुं पण ज्ञान धरावतो होय, क्षेत्र विभाग अने कालविभाग ए बन्ने सरखा छे. सौर, सावन, नाक्षत्र अने चान्द्र ए चार प्रकारनां मानने तेमज अधिमास अने अवम संभव अर्थात् क्षय दिनना कारणने पण जाणतो होय; सौर आदि मानोनुं सदृशत्व प्रतिपादन करवामां प्रवीण होय अर्थात् सौर वर्ष ३६५ सावन दिन, १५ घडि, ३१ पल अने २२ विपलनुं थाय छे; सावन वर्ष ३६० सावन दिननुं थाय छे, एवीज रीते चान्द्र वर्ष अने नाक्षत्र वर्षनुं पण भिन्न भिन्न प्रमाण छे. ए सौर आदि मानोनुं असदृशत्व छे अर्थात् एकनुं मान बीजा तुल्य नथी. ए चार प्रकारनां वर्ष पोतपोतानां मानथी ३६० दिवसनां थाय छे, जेमके सौर वर्ष ३६० सौर दिवसनुं, चान्द्र वर्ष ३६० चान्द्र दिवसनुं ३० ए रीतें मानोनुं सदृशत्व अर्थात् एक मान बीजा मान तुल्य थयुं. जेवी रीते सौरमान युग, वर्ष, अयन, ऋतु अने दिननुं प्रमाण करवामां योग्य अने स्थानमा अयोग्य छे तेवीज रीते चान्द्र आदि मानोनुं पण योग्यायोग्यपणुं जाणतो होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे. पौलिश आदि सिद्धान्तना गणित भेदनुं प्रतिपादन करवामां कुशळ, ग्रहण तथा ग्रहयुद्ध आदिमा पण प्रवीण, दक्षिणायन अने उत्तरायणनी निवृत्तिनुं प्रतिपादन करवामां निपुण अर्थात् अमुक सिद्धान्तनी रीतिथी अमुक घडि उपर अयन निवृत्ति आवे छे अने प्रत्यक्षमां अमुक घडि उपर अयन निवृत्ति थइ तेनो अन्तर बराबर बतावी शके तेवो, पोताना देशमां जे सममंडलरेखा अर्थात् विषुवृत्त रेखा तेना ग्रहोनो जे संप्रयोग अर्थात् संप्रवेश त्यां उदित थएल जे अंश अर्थात् पोताना अहोरात्र वृत्त संबंधी दिन भाग अर्थात् दिन गत घटि अने शेष घटि तेना प्रतिपादनमां चतुर; सर्व सिद्धान्त भेद आदि पदार्थोनुं शंकुनी तात्कालिक छायाथी; चक्रचाप, तुरीय. गोल, यष्टि शंकु अने घटी आदि यंत्रोथी तथा द्रग्गणित साम्य अर्थात् गणितथी ज्ञात होय एज वेध आदिथ देखाइ आवे तेनाथी प्रतिपादन करवामां कुशळ; गणितथी जे ग्रह स्पष्ट आदि आवे तेने शंकुच्छाया अथवा यंत्रवेधथी प्रत्यक्ष बताववामां प्रवीण, सूर्य आदि ग्रहोनी शीघ्र मंद गति अर्थात् कयो ग्रह कया ग्रहने लीधे मंद गतिवाळो छे तथा कयो ग्रह शीघ्र गतिवाळो छे अने मंद शीघ्र गतिनुं शुं कारण छे ए जाणनार एवीज रीते ग्रहोनी दक्षिणोत्तर अने उच्च नीच गतिने पण ओळखनार, सूर्य अने चन्द्रमाना ग्रहणमां ग्रहणादि काल अर्थात् स्पर्शकाल तथा मोक्षकाल, दिशा अर्थात्

अमुक दिशाथी ग्रहणनो प्रारंभ थशे तथा अमुक दिशामां मध्य ग्रहण थशे इत्यादि, प्रमाण अर्थात् केटला बिम्बनो ग्रास थशे, विमर्द अर्थात् सम्मीलन तथा उन्मीलननो मध्यकाल, वर्ण अर्थात् ग्रहण समये सूर्य चन्द्रनो धूम्र, कृष्ण अने ताम्र इत्यादि रंग विगेरे आदेशने कही आपनार; अनागत अर्थात् प्राप्त नहि थएल ग्रह समागम अने ग्रहयुद्धनुं वर्णन करनार, चन्द्रमानी साथे भौम आदि ग्रह एक राशिमां होय तेने समागम कहे छे अने भौम आदि ग्रहो परस्पर एकज राशि अंशमां एकठा थाय तेने युद्ध कहे छे, ए समागम तथा युद्धने अगाउथी कही आपे अर्थात् अमुक दिवसे ग्रह समागम अने अमुक दिवसे ग्रह युद्ध थशे ए बधुं समय आव्ये आकाशमां बतावी देनार होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे, जे सूर्य आदि प्रत्येक ग्रहनुं भ्रमण योजन अर्थात् पृथ्वीथी कयो ग्रह केटला योजनने अंतरे फरे छे अर्थात् ग्रहोना योजनात्मक कर्णग्रहोनी कक्षाओनां प्रमाण अने प्रत्येक देशोना योजन अर्थात् अमुक देश अमुक देशथी आटला योजन छे अने ए योजनोने आ रीते जाणी शकाय छे ए सर्व वातोने जाणवामां चतुर होय, भूमि अने नक्षत्र गणना भ्रमण तथा संस्थान अर्थात् स्थितिने जाणतो होय; अक्षांश, अवलंबांश, दिवसना अहोरात्र, वृत्तनो व्यास, चरदलकाल अर्थात् चर खंडोथी सिद्ध थएलो काल, मेष आदि राशिओना लंकोदय अने स्वदेशोदय, छाया, नाडी, करण अर्थात् शंकुनी छाया ए सर्वने समजी तेनाथी दिनगत घटी अथवा दिनशेष घटी करवी इत्यादि तमाम विषयमां अभिज्ञ होय, क्षेत्र, काल, करण अर्थात् क्षेत्रथी काल अने कालथी क्षेत्र करवामां कुशल होय, इष्ट घटी परथी राशि अंश आदि लग्न करवां ए कालथी क्षेत्रकरण अने राशि आदि लग्नथी इष्ट घटी पल जाणवा ए कालथी क्षेत्रकरण कहेवाय छे. भगण, राशि, अंश, कला तथा विकला आदिने क्षेत्र अने वर्ष, मास, दिन, घटी, पल, तथा विपल आदिने काल कहे छे. बार राशिनो एक भगण थाय छे. अनेक प्रकारनां नोयनुं विपरीत प्रतिपादन करी तर्क करवो. कोइ कहे के कन्याना सूर्यमां दक्षिण दिशा बच्चे जे अति प्रकाशमान तारो देखाय छे. ते ध्रुव छे अने उत्तरमां जे सूक्ष्म तारो छे ते अगस्त्य छे ए नाम कहेवाय छे, कारण के ए विपरीत वात छे, खरी रीते उत्तरनी तरफनो तारो ध्रुव अने दक्षिणनो अगस्त्य छे ए गोलनी रीतिथी सिद्ध करी शके तेने ज्योतिषी जाणवो. एवी रीते अज्ञात अर्थने जाणवा माटे जे वचन ते प्रश्न कहेवाय छे. जे नाना प्रकारना तोय अने [illegible] [illegible] अर्थात् [illegible] होरा [illegible] अने [illegible] आदि होरा [illegible] ठीक ठीक परिमाणपूर्वक उत्तर आपवामां [illegible] प्राप्त करी निपुण, संवाद अने [illegible] [illegible] [illegible] होय [illegible]

सूर्यसिद्धान्त अने ब्रह्म सिद्धान्त ए पांचे सिद्धान्तोने जाणतो होय; युग वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, रात्रि, प्रहर, मुहूर्त, घडि, पल, त्रुटि, अने त्रुटिना अवयवरूप काळने जाणतो होय ते उपरांत विकला, कला, अंश, राशि अने भगणरुप जे क्षेत्र तेनुं पण ज्ञान धरावतो होय, क्षेत्र विभाग अने कालविभाग ए बन्ने सरखा छे. सौर, सावन, नाक्षत्र अने चान्द्र ए चार प्रकारनां मानने तेमज अधिमास अने अवम संभव अर्थात् क्षय दिनना कारणने पण जाणतो होय; सौर आदि मानोनुं सदृशत्व प्रतिपादन करवामां प्रवीण होय अर्थात् सौर वर्ष ३६५ सावन दिन, १५ घडि, ३१ पल अने २२ विपलनुं थाय छे; सावन वर्ष ३६० सावन दिननुं थाय छे, एवीज रीते चान्द्र वर्ष अने नाक्षत्र वर्षनुं पण भिन्न भिन्न प्रमाण छे. ए सौर आदि मानोनुं असदृशत्व छे अर्थात् एकनुं मान बीजा तुल्य नथी. ए चार प्रकारनां वर्ष पोतपोतानां मानथी ३६० दिवसनां थाय छे, जेमके सौर वर्ष ३६० सौर दिवसनुं, चान्द्र वर्ष ३६० चान्द्र दिवसनुं इ० ए रीतें मानोनुं सदृशत्व अर्थात् एक मान बीजा मान तुल्य थयुं. जेवी रीते सौरमान युग, वर्ष, अयन, ऋतु अने दिननुं प्रमाण करवामां योग्य अने स्थानमां अयोग्य छे तेवीज रीते चान्द्र आदि मानोनुं पण योग्यायोग्यपणुं जाणतो होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे. पौलिश आदि सिद्धान्तना गणित भेदनुं प्रतिपादन करवामां कुशळ, ग्रहण तथा ग्रहयुद्ध आदिमां पण प्रवीण, दक्षिणायन अने उत्तरायणनी निवृत्तिनुं प्रतिपादन करवामां निपुण अर्थात् अमुक सिद्धान्तनी रीतिथी अमुक घडि उपर अयन निवृत्ति आवे छे अने प्रत्यक्षमां अमुक घडि उपर अयन निवृत्ति थइ तेनो अन्तर बराबर बतावी शके तेवो, पोताना देशमां जे सममंडलरेखा अर्थात् विषुवृत्त रेखा तेना ग्रहोनो जे संप्रयोग अर्थात् संप्रवेश त्यां उदित थएल जे अंश अर्थात् पोताना अहोरात्र वृत्त संबंधी दिन भाग अर्थात् दिन गत घटि अने शेष घटि तेना प्रतिपादनमां चतुर; सर्व सिद्धान्त भेद आदि पदार्थोनुं शंकुनी तात्कालिक छायाथी; चक्रचाप, तुरीय, गोळ, यष्टि शंकु अने घटी आदि यंत्रोथी तथा दृग्गणित साम्य अर्थात् गणितथी ज्ञात होय एज वेध आदिथ देखाइ आवे तेनाथी प्रतिपादन करवामां कुशळ; गणितथी जे ग्रह स्पष्ट आदि आवे तेने शंकुच्छाया अथवा यंत्रवेधथी प्रत्यक्ष बतावबामां प्रवीण, सूर्य आदि ग्रहोनी शीघ्र मंद गति अर्थात् कयो ग्रह कया ग्रहने लीधे मंद गतिवाळो छे तथा कयो ग्रह शीघ्र गतिवाळो छे अने मंद शीघ्र गतिनुं शुं कारण छे ए जाणनार एवीज रीते ग्रहोनी दक्षिणोत्तर अने उच्च नीच गतिने पण ओळखनार, सूर्य अने चन्द्रमाना ग्रहणमां ग्रहणादि काल अर्थात् स्पर्शकाळ तथा मोक्षकाल, दिशा अर्थात्

अमुक दिशाथी ग्रहणनो प्रारंभ थशे तथा अमुक दिशामां मध्य ग्रहण थशे इत्यादि, प्रमाण अर्थात् केटला बिम्बनो ग्रास थशे, विमर्द अर्थात् सम्मीलन तथा उन्मीलननो मध्यकाल, वर्ण अर्थात् ग्रहण समये सूर्य चन्द्रनो धूम्र, कृष्ण अने ताम्र इत्यादि रंग विगेरे आदेशने कही आपनार; अनागत अर्थात् प्राप्त नहि थएल ग्रह समागम अने ग्रहयुद्धनुं वर्णन करनार, चन्द्रमानी साथे भौम आदि ग्रह एक राशिमां होय तेने समागम कहे छे अने भौम आदि ग्रहो परस्पर एकज राशि अंशमां एकठा थाय तेने युद्ध कहे छे, ए समागम तथा युद्धने अगाउथी कही आपे अर्थात् अमुक दिवसे ग्रह समागम अने अमुक दिवसे ग्रह युद्ध थशे ए बधुं समय आव्ये आकाशमां बतावी देनार होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे, जे सूर्य आदि प्रत्येक ग्रहनुं भ्रमण योजन अर्थात् पृथ्वीथी कयो ग्रह केटला योजनने अंतरे फरे छे अर्थात् ग्रहोना योजनात्मक कर्णग्रहोनी कक्षाओनां प्रमाण अने प्रत्येक देशोना योजन अर्थात् अमुक देश अमुक देशथी आटला योजन छे अने ए योजनोने आ रीते जाणी शकाय छे ए सर्व वातोने जाणवामां चतुर होय, भूमि अने नक्षत्र गणना भ्रमण तथा संस्थान अर्थात् स्थितिने जाणतो होय; अक्षांश, अवलंबांश, दिवसना अहोरात्र, वृत्तनो व्यास, चरदलकाल अर्थात् चर खंडोथी सिद्ध थएलो काल, मेष आदि राशिओना लंकोदय अने स्वदेशोदय, छाया, नाडी, करण अर्थात् शंकुनी छाया ए सर्वने समजी तेनाथी दिनगत घटी अथवा दिनशेष घटी करवी इत्यादि तमाम विषयमां अभिज्ञ होय, क्षेत्र, काल, करण अर्थात् क्षेत्रथी काल अने कालथी क्षेत्र करवामां कुशल होय, इष्ट घटी पलथी राशि अंश आदि लग्न करवां ए कालथी क्षेत्रकरण अने राशि आदि लग्नथी इष्ट घटी पल जाणवां ए कालथी क्षेत्रकरण कहेवाय छे. भगण, राशि, अंश, कला तथा विकला आदिने क्षेत्र अने वर्ष, मास, दिन, घटी, पल, तथा विपल आदिने काल कहे छे. बार राशिनो एक भगण थाय छे. अनेक प्रकारनां नोग्रनुं विपरीत प्रतिपादन करी तर्क करवो. कोइ कहे के कन्याना सूर्यमां दक्षिण दिशा वच्चे जे अति प्रकाशमान तारो देखाय छे. ते ध्रुव छे अने उत्तरमां जे सूक्ष्म तारो छे ते अगस्त्य छे ए नोग्र कहेवाय छे, कारण के ए विपरीत वात छे, खरी रीते उत्तरनी तरफनो तारो ध्रुव अने दक्षिणनो अगस्त्य छे ए गोळनी रीतिथी सिद्ध करी शके तेने ज्योतिषी जाणवो. एवी रीते अजाण्या, अर्थने जाणवा माटे जे वचन ते प्रश्न कहेवाय छे. जे नाना प्रकारना नोग्र अने प्रश्नोना भेदनी उपलब्धि अर्थात् वादीए करेल नोग्र अने शिष्य आदिए करेल प्रश्नोनो ठीक ठीक परिहारपूर्वक उत्तर आपवाथी वक्तृत्वशक्ति प्राप्त करी निपक्ष, संताप अने अभिनिवेश आदिथी अत्यन्त निर्मळ करेल सुवर्णनी

सूर्यसिद्धान्त अने ब्रह्म सिद्धान्त ए पांचे सिद्धान्तोने जाणतो होय; युग वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, रात्रि, प्रहर, मुहूर्त, घडि, पल, त्रुटि, अने त्रुटिना अवयवरुप काळने जाणतो होय ते उपरांत विकला, कला, अंश, राशि अने भगणरुप जे क्षेत्र तेनुं पण ज्ञान धरावतो होय, क्षेत्र विभाग अने कालविभाग ए बन्ने सरखां छे. सौर, सावन, नाक्षत्र अने चान्द्र ए चार प्रकारनां मानने तेमज अधिमास अने अवम संभव अर्थात् क्षय दिनना कारणने पण जाणतो होय; सौर आदि मानोनुं सदृशत्व प्रतिपादन करवामां प्रवीण होय अर्थात् सौर वर्ष ३६५ सावन दिन, १५ घडि, ३१ पल अने २२ विपलनुं थाय छे; सावन वर्ष ३६० सावन दिननुं थाय छे, एवीज रीते चान्द्र वर्ष अने नाक्षत्र वर्षनुं पण भिन्न भिन्न प्रमाण छे. ए सौर आदि मानोनुं असदृशत्व छे अर्थात् एकनुं मान बीजा तुल्य नथी. ए चार प्रकारनां वर्ष पोतपोतानां मानथी ३६० दिवसनां थाय छे, जेमके सौर वर्ष ३६० सौर दिवसनुं, चान्द्र वर्ष ३६० चान्द्र दिवसनुं ३० ए रीतें मानोनुं सदृशत्व अर्थात् एक मान बीजा मान तुल्य थयुं. जेवी रीते सौरमान युग, वर्ष, अयन, ऋतु अने दिननुं प्रमाण करवामां योग्य अने स्थानमां अयोग्य छे तेवीज रीते चान्द्र आदि मानोनुं पण योग्यायोग्यपणुं जाणतो होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे. पौलिश आदि सिद्धान्तना गणित भेदनुं प्रतिपादन करवामां कुशळ, ग्रहण तथा ग्रहयुद्ध आदिमां पण प्रवीण, दक्षिणायन अने उत्तरायणनी निवृत्तिनुं प्रतिपादन करवामां निपुण अर्थात् अमुक सिद्धान्तनी रीतिथी अमुक घडि उपर अयन निवृत्ति आवे छे अने प्रत्यक्षमां अमुक घडि उपर अयन निवृत्ति थइ तेनो अन्तर बराबर बतावी शके तेवो, पोताना देशमां जे सममंडलरेखा अर्थात् विषुवृत्त रेखा तेना ग्रहोनो जे संप्रयोग अर्थात् संप्रवेश त्यां उदित थएल जे अंश अर्थात् पोताना अहोरात्र वृत्त सबंधी दिन भाग अर्थात् दिन गत घटि अने शेष घटि तेना प्रतिपादनमां चतुर; सर्व सिद्धान्त भेद आदि पदार्थोनुं शंकुनी तात्कालिक छायाथी; चक्रचाप, तुरीय, गोल, यष्टि शंकु अने घटी आदि यंत्रोथी तथा दृग्गणित साम्य अर्थात् गणितथी ज्ञात होय ए वेध आदिथ देखाइ आवे तेनाथी प्रतिपादन करवामां कुशळ; गणितथी जे ग्रह स्पष्ट आदि आवे तेने शंकुच्छाया अथवा यंत्रवेधथी प्रत्यक्ष बतावबामां प्रवीण, सूर्य आदि ग्रहोनी शीघ्र मंद गति अर्थात् कयो ग्रह कया ग्रहने लीधे मंद गतिवाळो छे तथा कयो ग्रह शीघ्र गतिवाळो छे अने मंद शीघ्र गतिनुं शुं कारण छे ए जाणनार एवीज रीते ग्रहोनी दक्षिणोत्तर अने उच्च नीच गतिने पण ओळखनार, सूर्य अने चन्द्रमाना ग्रहणमां ग्रहणादि काल अर्थात् स्पर्शकाळ तथा मोक्षकाल, दिशा अर्थात्

अमुक दिशाथी ग्रहणनो प्रारंभ थशे तथा अमुक दिशामां मध्य ग्रहण थशे इत्यादि, प्रमाण अर्थात् केटला बिम्बनो ग्रास थशे, विमर्द अर्थात् सम्मीलन तथा उन्मीलननो मध्यकाल, वर्ण अर्थात् ग्रहण समये सूर्य चन्द्रनो धूम्र, कृष्ण अने ताम्र इत्यादि रंग विगेरे आदेशने कही आपनार; अनागत अर्थात् प्राप्त नहि थएल ग्रह समागम अने ग्रहयुद्धनुं वर्णन करनार, चन्द्रमानी साथे भौम आदि ग्रह एक राशिमां होय तेने समागम कहे छे अने भौम आदि ग्रहो परस्पर एकज राशि अंशमां एकठा थाय तेने युद्ध कहे छे, ए समागम तथा युद्धने अगाउथी कही आपे अर्थात् अमुक दिवसे ग्रह समागम अने अमुक दिवसे ग्रह युद्ध थशे ए बधुं समय आव्ये आकाशमां बतावी देनार होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे, जे सूर्य आदि प्रत्येक ग्रहनुं भ्रमण योजन अर्थात् पृथ्वीथी कयो ग्रह केटला योजनने अंतरे फरे छे अर्थात् ग्रहोना योजनात्मक कर्णग्रहोनी कक्षाओनां प्रमाण अने प्रत्येक देशोना योजन अर्थात् अमुक देश अमुक देशथी आटला योजन छे अने ए योजनोने आ रीते जाणी शकाय छे ए सर्व वातोने जाणवामां चतुर होय, भूमि अने नक्षत्र गणना भ्रमण तथा संस्थान अर्थात् स्थितिने जाणतो होय; अक्षांश, अवलंबांश, दिवसना अहोरात्र, वृत्तनो व्यास, चरदलकाल अर्थात् चर खंडोथी सिद्ध थएलो काल, मेष आदि राशिओना लंकोदय अने स्वदेशोदय, छाया, नाडी, करण अर्थात् शंकुनी छाया ए सर्वने समजी तेनाथी दिनगत घटी अथवा दिनशेष घटी करवी इत्यादि तमाम विषयमां अभिज्ञ होय, क्षेत्र, काल, करण अर्थात् क्षेत्रथी काल अने कालथी क्षेत्र करवामां कुशल होय, इष्ट घटी पलथी राशि अंश आदि लग्न करवां ए कालथी क्षेत्रकरण अने राशि आदि लग्नथी इष्ट घटी पल जाणवां ए कालथी क्षेत्रकरण कहेवाय छे. भगण, राशि, अंश, कला तथा विकला आदिने क्षेत्र अने वर्ष, मास, दिन, घटी, पल, तथा विपल आदिने काल कहे छे. बार राशिनो एक भगण थाय छे. अनेक प्रकारनां नोद्यनुं विपरीत प्रतिपादन करी तर्क करवो. कोइ कहे के कन्याना सूर्यमां दक्षिण दिशा वच्चे जे अति प्रकाशमान तारो देखाय छे. ते ध्रुव छे अने उत्तरमां जे सूक्ष्म तारो छे ते अगस्त्य छे ए नोद्य कहेवाय छे, कारण के ए विपरीत वात छे, खरी रीते उत्तरनी तरफनो तारो ध्रुव अने दक्षिणनो अगस्त्य छे ए गोळनी रीतिथी सिद्ध करी शके तेने ज्योतिषी जाणवो. एवी रीते अजाण्या अर्थने जाणवा माटे जे वचन ते प्रश्न कहेवाय छे. जे नाना प्रकारना नोद्य अने प्रश्नोना भेदनी उपलब्धि अर्थात् वादीए करेल नोद्य अने शिष्य आदिए करेल प्रश्नोनो ठीक ठीक परिहारपूर्वक उत्तर आपवाथी वक्तृत्वशक्ति प्राप्त करी निपक, संताप अने अभिनिवेश आदिथी अत्यन्त निर्मळ करेल सुवर्णनी

माफक निषक, संताप अने अभिनिवेश आदिथी निःसंदेह करेला ज्योतिःशास्त्रनुं प्रतिपादन करनारो तथा तंत्रज्ञ अर्थात् गणितने जाणनार होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे. महर्षि गर्गे कह्युं छे के–जे पुरुष शास्त्रनिबद्ध अर्थनुं प्रतिपादन न करे, संदेहनी निवृत्ति माटे शिष्ये पूछेला एक प्रश्ननो पण उत्तर न आपे अने विद्यार्थीओने भणावे पण नहि तेने शास्त्रज्ञ शी रीते समजवो ? अर्थात् एवा पुरुषने पंडित नहीं परंतु मूर्खज समजवो जोइए.

जे पुरुष ग्रन्थमां आचार्यनो आशय कांइ होय अने तेनो अर्थ कांइनो कांइ करे तेमज गणितमां गुणाकार भागाकार विगेरे पण होय कांइ अने करे कांइ अर्थात् ग्रन्थनो आशय समज्या विना अर्थ करवा मंडी जाय अने गणित कर्मनुं तात्पर्य जाण्या विना गणित करवा लागे ते मूर्ख पुरुषनुं उक्त साहस अत्यंत अनुचित अने हास्यजनक छे.

गणितस्कन्ध सारी रीते समज्या बाद जेणे तात्कालिक लग्ननो पण शंकुच्छाया, जलघटी अथवा अन्य कोइ यंत्रथी निश्चय करेलो होय अने जेना हृदयमां जातक शास्त्रनो अर्थ पण द्रढ थइ रह्यो होय ते आदेष्टा दैवज्ञनी वाणी कदिपण मिथ्या थती नथी. आचार्य विष्णुगुप्ते पण कह्युं छे के—वखते तरतो पुरुष पवनना वेगने लइ समुद्रनो पार पामी शके छे, परंतु आ कालपुरुष (ज्योतिः शास्त्र) नामना महा समुद्रनो पार ऋषि शिवाय बीजो पुरुष मनथी पण कोइ दिवस पामी शकतो नथी, केवळ ऋषिओज एनो पार पाम्या छे.

होराशास्त्र जातकशास्त्रनो एक भेद छे तेमां पण राशि स्वरूप होरा तथा राशिनो अर्ध द्रेष्काण अर्थात् राशिनो तृतीयांश, नवांश, द्वादशांश, त्रिशांश, राशिओनुं बलाबल, ग्रहोना दिक्स्थान, काल तथा चेष्टाथी अनेक प्रकारना बलनो विचार, ग्रहोनी वात पित्त आदि प्रकृति, रस रुधिर आदि सप्तधातु, द्रव्य, जाति, तथा चेष्टा आदि शब्दथी ग्रहोना सत्व आदि गुण रस स्थान तथा वस्त्र ए सर्वेनुं ग्रहण, गर्भाधान समय अने जन्म समयना आश्चर्य जनक प्रत्ययनुं कथन अर्थात् गर्भाधान अथवा जन्म समये दीपक अमुक दिशामां हतो, एथी ए घरनुं द्वार अमुक दिशामां छे, शय्या अमुक रीते हती, प्रसव समये पिता समीपे हतो के नहि विगेरे चमत्कारिक चिन्हो कही आपवां. सद्योमरण, आयुर्दाय, दशा, अन्तर्दशा, अष्टक वर्ग, राजयोग, चन्द्रयोग, द्विग्रहादि रोग तथा नाभसयोग आदिनां फळ; आश्रयभाव अने द्रष्टिनां फळ, निर्याण अर्थात् मरणनिमित्त, मरण पछी शुभाशुभ गति, अनूक अर्थात् पूर्व जन्म, तात्कालिक प्रश्नकथनां शुभाशु-

भ फळ, शुभ अशुभनुं सूचन करनारां निमित्त, तेमज विवाह, यज्ञोपवीत अने चौल आदि कर्मोनुं करवुं ए सर्व भेद ज्योतिःशास्त्रना बीजा स्कन्ध (होरा शास्त्र) मां होय छे यात्रा शास्त्रना भेद ए द्वितीय स्कन्धान्तर्गत छे.

यात्राशास्त्रमां नन्दा आदि तिथि, सूर्य आदि वार, बव आदि करण, अश्विनी आदि नक्षत्र तथा शिव आदि त्रीश मुहूर्त ए सर्वेनां फळ; लग्न अने योग, देह फरकवानां फळ, स्वप्ननां शुभाशुभ फळ, विजय आपनार स्नाननुं विधान, ग्रहयज्ञ, गणयाग अर्थात् गुह्यक पूजन, हवन समये शुभाशुभ सूचक अग्निनां चिह्न, हाथी अने घोडाओनी चेष्टा, सैनिकोनो प्रवाद अर्थात् परस्परनी वातचीत, सैनिकोनी चेष्टा अर्थात् उत्साह तथा अनुत्साह, ग्रहोना बळाबळथी संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध अने आश्रय ए छ गुणोनी तथा साम, दाम, दंड अने भेद ए चार उपायोनी सिद्धि अने असिद्धिनो विचार; यात्रा वखते शुभाशुभ सूचक शकुन, सेनाना रहेठाण माटे शुभ अशुभ भूमिनुं कथन, यात्रा समये शुभाशुभ सूचक हवनाग्निना रंग, मंत्री, चर अने आटविक अर्थात् वनमां वसनारा भील आदि एओने यथाकाल अर्थात् पोतपोताना समयपर कार्यमां योजवा अने शत्रुना दुर्ग लेवाना उपाय विगेरे सर्व बाबतो वर्णवेली छे.

आचार्योए कह्युं छे के जेनुं शास्त्र जाणे गणितस्कन्ध सहित संपूर्ण जगत्‌मां प्रसरेल, बुद्धिमां आळखेल अने हृदयमां स्थापेल होय नहि शुं ? एवा दैवज्ञनुं कथन कदापि निष्फळ थतुं नथी. अर्थात् त्रण स्कन्ध युक्त ज्योतिःशास्त्रने जाणनारनी वाणी मुनिओनी वाणी माफक सत्य होय छे. संहितानो पारगामी अर्थात् संहिताना पदार्थोने सारी रीते समजनारो पुरुष दैवचिन्तक होय छे अर्थात् पूर्व जन्मकृत शुभाशुभ कर्मोनां फळ जाणी शके छे.

संहितामां वर्णवेल सूर्य आदि ग्रहोना चार, ए चारेनी वच्चे ग्रहोना स्वभाव, विकार, बिम्बनां प्रमाण, शुक्ल आदि वर्ण, किरण, कान्ति, आकार, अस्तोदय, दक्षिण, उत्तर तथा मध्यमार्ग, मार्गमध्य, वक्रमार्ग, नक्षत्रोनी साथे ग्रहोनो संयोग अने नक्षत्रोमां ग्रहोनी स्थिति इत्यादिथी फळनुं कथन; नक्षत्रकर्म विभागथी अर्थात् सत्यावीश नक्षत्रोनो भारतवर्षना नवखंडोमां विभाग करी देशोना शुभाशुभ फळनुं कथन, अगस्त्यचार, सप्तर्षिचार, ग्रहभक्ति अर्थात् ग्रहोनां देश, द्रव्य तथा जीवोपर आधिपत्य, नक्षत्रव्यूह अथवा देशद्रव्य आदिपर नक्षत्रोनुं स्वामीत्व, ग्रहशृंगाटक अर्थात् भौमआदि पाच ग्रहोशृंगाटक आदिरुपे स्थित थवाथी शुभाशुभज्ञान, ग्रहयुद्ध, ग्रहसमागम,

ग्रहवर्षफळ मेघना गर्भलक्षण, रोहिणी, स्वाती अने अषाढीयोग अर्थात् रोहिणी स्वाती अने पूर्वाषाढानी साथे चन्द्रना समागमथी थतां शुभाशुभनो विचार सद्योवृष्टिलक्षण, कुसुमलतालक्षण अर्थात् वृक्षोनां फळ तथा पुष्प जोइ जगत्नां शुभाशुभनुं ज्ञान; परिधि, परिवेष, परिघ, पवन, उल्कापात, दिग्दाह, भूकंप, संध्याराग, गन्धर्वनगर, पांसुवृष्टि अने निर्घात आदिनां लक्षण तथा शुभाशुभ फळ; अर्धकांड अर्थात् अन्नआदिना भावनुं ज्ञान, सस्यजन्म अर्थात् ग्रहोथी खेतीना शुभाशुभनुं ज्ञान, इन्द्रध्वजपूजा, इन्द्रधनुष्यनुंलक्षण, वास्तुविद्या, अंगविद्या अर्थात् अंगस्पर्शथी थतुं शुभाशुभ ज्ञान, वायसविद्या अर्थात् काकनी चेष्टाथी थतां फळ, अन्तर चक्र शकुनमां मृगचक्र, अश्वचक्र अर्थात् मृग अने अश्वोनी चेष्टानां फळ, वातचक्र अर्थात् आठे दिशाओना पवननुं फळ, प्रासादलक्षण, प्रतिमालक्षण, प्रतिष्ठापन, वृक्षायुर्वेद अर्थात् वृक्षोनी चिकित्सा, उदकार्गल अर्थात् भूमिमां जळनुं ज्ञान, नीराजनशान्ति, खंजनपक्षीनांलक्षण तथा फळ, उत्पातशान्ति, मयूरचित्रक, घृतकम्बल अर्थात् पुष्यस्नान, खड्गलक्षण, राजाओना मुकुटनुं लक्षण, कुक्कुट, कूर्म, गौ, अजा, अश्व, हस्ती, पुरुष अने स्त्री ए सर्वनां शुभाशुभलक्षण; अन्तःपुरचिन्ता अर्थात् राजाना अन्तःपुरमां अनुरक्त स्त्रीओनी चेष्टा, पिटकलक्षण, उपानच्छेद अने वस्त्रच्छेद अर्थात् पगरखां अने वस्त्रना कपावा आदिथी थतां शुभाशुभफळ; चामर, दंड, शय्या अने आसननां लक्षण, हीरा आदि रत्नोनी परीक्षा, दीपलक्षण दंतकाष्ठ अर्थात् दातणना शुभाशुभ फळ आदि, शब्द उपरथी कर्तांना शुभाशुभ फळ के जे जगतना सर्व मनुष्योने माटे सामान्य छे तेमज सेनापति आदि प्रत्येक पुरुषमां तथा राजामां जे शुभाशुभफळ होय छे ते तमामनो प्रतिक्षण एकाग्र चित्तथी ज्योतिषीए विचार करवो जोइए. उक्त निमित्तोने एकज ज्योतिषी रात्रि दिवस जोइ शक्तो नथी एटला माटे राजाए पुष्कळ द्रव्य आपी पोषण कराएला मुख्य ज्योतिषीए पोताना हाथ नीचे घरनो पगार आपी बीजा चार ज्योतिषीओ राखवा जोइए; ए चारमांथी एक ज्योतिषी पूर्वदिशा अने अग्निकोणमां, बीजो दक्षिणदिशा अने नैरूत्यकोणमां, त्रीजो पश्चिमदिशा अने वायव्यकोणमां तथा चोथो ज्योतिषी उत्तरदिशा अने इशानकोणमां सावधानीथी तपास करतो रहे, कारणके उल्कापात आदि निमित्त प्रगट थइ एकदम अदृश्य थइ जाय छे, ए निमित्तोनां फळनो विचार, आकार, वर्ण, स्निग्धता तथा प्रमाण आदिथी ग्रह तथा नक्षत्रोना अभिघात आदिथी थइ शके छे, एटला माटे ए तमाम बाबतो ज्योतिषीए सावधानीथी जाणवी जोइए.

गर्ग महर्षिए कह्युं छे के ज्योतिः शास्त्रनां अंग अने उपांगमां कुशळ तथा जातक शास्त्र

अने गणितमां निष्ठावाळा ज्योतिषीनो जे राजा सत्कार नथी करतो ते नष्ट थाय छे. ग्रह, नक्षत्र तथा राशि आदिनो जे विचार ते ज्योतिःशास्त्रनां अंग अने स्त्री पुरुष लक्षण, वस्त्रच्छेद तथा दीपलक्षण विगेरे सर्व उपांग कहेवाय छे.

निष्परिग्रह अने निरहंकार तपस्वी वनमां रहे छे तो पण ज्योतिषीने पूछे छे तो पछी संसारी मनुष्यो शा माटे न पूछे ? दीपक विनानी रात्रि अने सूर्य विनाना आकाशनी माफक ज्योतिषी विनानो राजा शोभतो नथी. ज्योतिषी रहित पुरुष पोतानां कार्योमां संशययुक्त थइ अंधनी पेठे मार्गमां भ्रमण कर्या करे छे. जो ज्योतिषी न होय तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु तथा अयन आदि सर्व आकुल थइ जाय अर्थात् ज्योतिषी विना ए सर्व ठेकाणे पडतां नथी; एटला माटे जय, यश, लक्ष्मी, भोग अने कल्याणने चाहवावाळा राजाए सर्व कार्य विद्वान् मुख्य ज्योतिषीनी सम्मतिथी करवां जोइए. जे देशमां ज्योतिषी न होय ते देशमां संपत्तिनी इच्छावाळा पुरुषे निवास न करवो. जे देशमां नेत्रनी माफक तमाम पदार्थोने प्रत्यक्ष बतावनारो ज्योतिषी रहेतो होय त्यां पाप रही शकतुं नथी. ज्योतिः शास्त्रने भणनारो पुरुष नरकमां जतो नथी; परंतु ते दैवचिन्तक ब्रह्मलोकमां प्रतिष्ठा अर्थात् स्थिति पामे छे. जे ब्राह्मण संपूर्ण ज्योतिःशास्त्रनो पाठ अने अर्थ जाणतो होय ते श्राद्धमां अग्रभुक् अर्थात् सर्वथी पहेलां जमाडवा योग्य छे अने ते पूजित ब्राह्मण पंक्तिपावन होय छे अर्थात् जे पंक्तिमां बेसे ते पंक्तिने पवित्र करी शके छे.

यवनाचार्य आदि म्लेच्छ होवा छतां पण वशिष्ठ, पराशर अने मयासुर आदि पासेथी यथास्थित ज्योतिः शास्त्रनो अभ्यास करी ऋषिओ समान पूज्य गणाया तो पछी दैवज्ञ ब्राह्मण ज्योतिःशास्त्रने जाणतो होय तो केम न पूजाय ?

जे कुहक अर्थात इन्द्रजाल आदिथी फळ कहे, भूत आदिना आवेशथी अर्थात् धुणीने शुभाशुभ कहे, पिहित अर्थात् कोइ जगोए छुपाइ वातचीत सांभळी लिए अने फरी ते सभामां जइ कही बतावे, कर्णोपश्रुति अर्थात कर्ण पिशाची आदिना मंत्रथी अथवा पोताना बाळकने सभामां मोकली तमाम हकीकतथी वाकेफ थइ सभामां जइ सर्वनो आशय मेळवी आपे अने हेतु अर्थात् तर्क पूछनारनो अभिप्राय समजी जे प्रश्न कहे तेने कदिपण पूछवुं नहि, कारणके ते लोको ज्योतिषी नहि पण ठगारा छे एम समजवुं.

ज्योतिः शास्त्रने भण्या शिवाय जे ज्योतिषी बनी बेसे ते पापी अने पंक्तिदूषकने नक्षत्र-

सूचक जाणवो जोइए, जेना वेसवाथी पंक्ति अपवित्र थइ जाय ते पंक्तिदूषक कहेवाय छे नक्षत्र सूचकना कहेवाथी जे पुरुष एकादशी आदि उपवास करे ते नक्षत्रसूचक सहित अंधतामिस्त्र नामना नरकमां पडे छे. जेम पत्थरनी प्रार्थना वखते सत्य थाय छे अर्थात् फळ आपनारी निवडे छे एमां पत्थरनी महत्ता नहि परंतु इश्वरनी महत्ता समजवी. तेवीज रीते मूर्खोए कहेलो फलादेश वखते साचा जेवो जणाय छे, परंतु बुद्धिमान पुरुष कदि पण एम नहि समजे के शास्त्र भण्या शिवाय फलादेश सत्य थाय, सत्य फलादेश तो एज कही शके छे के जे त्रिस्कन्ध ज्योतिः- शास्त्रने सारी रीते भण्यो होय.

जे ज्योतिषी संपत्तिने लइ योजितादेश होय अर्थात् कोइ राजसेवक आदि पुरुषने धन दइ पोताना पक्षमां मेळवी राखे अने तेने साक्षी बनावी कहेके में प्रथमथीज आ माणसने कह्युं हतुं के अमुक पुरुषने ऐश्वर्य प्राप्त थशे अथवा अमुकने पुत्रप्राप्ति थशे त्यारे राजसेवक आदि पुरुष कहेके हा, ज्योतिषी महाराजे प्रथमथी मने कह्युं हतुं. आ शिवाय जेने ज्योतिःशास्त्र शिवायनी कथा प्रिय होय, ज्योतिः शास्त्रनी चर्चा सारी न लागे तेमज जे शास्त्रनुं मात्र एकज प्रकरण भणी अहंकारथी उभराइ गयो होय तेवा ज्योतिषीनो राजाए त्याग करवो. गणित, होरा अने संहिता ए त्रण स्कन्धोवाळा ज्योतिः शास्त्रने सारी रीते समजतो होय एवा ज्योतिषीने जयनी इच्छावाळा राजाए पूजवो (सत्कारथी संतुष्ट करवो). राजानुं जे कार्य हजार हाथी अने चार हजार अश्व नथी करी शकता ए कार्य देश काळने जाणनारो एक ज्योतिषी करी शके छे.

खराब स्वप्न आव्युं होय, बुरी वातनुं चिन्तवन कर्युं होय, अमंगलनुं दर्शन थयुं होय अने दुष्ट कर्म करायुं होय ए सर्व चन्द्रमानो नक्षत्रसंवाद सांभळवाथी नष्ट थाय छे, अर्थात् तिथिवार तथा नक्षत्र आदिनुं श्रवण करवाथी दुःस्वप्न आदिनुं फळ थतुं नथी.

पोताना यशनी वृद्धि माटे सेना सहित राजानुं कल्याण जेवुं शास्त्रना तत्वने जाणनार ज्योतिषी चाहे छे, तेवुं तेना माता पिता, बंधुजन के मित्र पण चाहता नथी. एटला माटे पोताना कल्याण अर्थे राजाए सदा उत्तम ज्योतिषीने सत्कार पूर्वक पोतानी पासे राखवो अने एना कहेवा- पर चालवुं; कारणके राजानो शुभचिन्तक ज्योतिषी उपरांत बीजो कोइ नथी.

आ रीते ज्योतिष संबंधी सूक्ष्म अने अगत्यनी हकीकत सांभळी प्रसन्न थएला केसरदेवजीए ते पंडित ब्राह्मणने घणा सन्मान पूर्वक पोताना शहेरमां राख्या, फरी कोइ एक

दिवसे ते पंडितने एकान्त भुवनमां बोलावी पोतानी जन्मपत्रिका बतावी पूछयुं के—महाराज ! मारुं मृत्यु क्यारे थशे ए कहो. पंडिते ग्रह विगेरे जोया बाद कह्युं के राजन् ! मृत्युनी वात कोइने मोढे कहेंवा शास्त्रकारोए ना कहेली छे. परंतु आप धैर्यस्वरूप अने द्रढ मनना छो जेथी आ जन्म पत्रिका उपरथी भविष्य जणावुंछुं के आजथी एक वर्ष पछी अर्थात् आवता ज्येष्ठ मासमां आपनुं मृत्यु थशे. माटे जे कांइ करवानुं होय ते एक वर्षनी अंदर करी लेवुं. केसरदेवजीए पंडितने पारितोषिक आपी स्वस्थाने विदाय कर्या बाद विचार्युं के—साधारण मनुष्यनी माफक घरमां प्राण त्याग करवो ए क्षत्रीओने छाजती वात नथी, परंतु रणसंग्राममां सामे पगले चाली युद्ध यज्ञमां प्राणनी आहुति आपवी एज उत्तम छे. हमीर सुमरो हालमां शान्त थइ बेठो छे. परंतु पाछळथी मारा सन्तानोने निर्बळ जाणी सिन्धमां सुखथी रहेवा न आपे ए संभवित छे. माटे महान् शत्रुने निर्मूळ करवा तेनी साथे प्रचंड युद्ध करवुं, जो तेमां विजय मळशे तो पुत्र पौत्रादिक कीर्तिगढनुं राज्य निष्कंटक आनंदथी भोगवशे अने कदाच तेम करतां प्राण जशे तोपण अक्षय कीर्ति प्राप्त थशे. आ रीते द्रढ निश्चय करी मकवाणा केसरदेवजी सैन्यने सज्ज करवा लाग्या, पोते जाणता हता के भयभीत हमीर कहेवराव्यां छतां सन्मुख आवे एवो संभव नथी, पण एवो प्रसंग मळे के तेने लडवा आववुंज पडे, तो कार्यसिद्धि थाय, एम अनेक प्रकारे निरंतर तर्क वितर्क करता हता, तेवामां दूते खबर आप्या के हमीरनी सांढोनुं म्होटुं टोळुं आपणी सीमनी आसपास चरे छे. ए सांभळी केसरदेवजी तुरतज सो घोडेस्वार सहित त्यां जइ पहोंच्या अने तमाम सांढोने कीर्तिगढमां लइ आव्या. ए वात हमीरे जाण्या छतां केसरदेवजी साथे क्लेश करवा हाम भीडी नहिं; फरी कोइ एक समये हमीरना कुटुम्बनी आशरे सवासो सुमरीओ समुद्र (सिन्धु) किनारे पर्वणी स्नान अर्थे आव्यानां खबर मळतां पांच हजार स्वारोने साथे लइ केसरदेवजीए ते तरफ प्रयाण कर्युं, त्यां हमीरना जमाना साथे आवेला माणसोने प्रहारथी भयभीत करी भगाड्या अने तमाम सुमरीओने वाहनो सहित पोताना शहेरमां दाखल करी दीधी, आ हकीकत हमीरना सांभळवामां आवतां ते अत्यंत क्रोधायमान थयो, तेणे सलाह माटे केटलाएक वृद्ध लोकोने कीर्तिगढ मोकली केसर मकवाणाने कहेवराव्युं के आपे वारंवार आवी उपाधि करवानुं कारण शुं छे ? जो आपने विशेष देशनी इच्छा होयतो ते आपवा हुं तैयार छुं; मारा जनानाने आवेल माणसो साथे मोकलावी आपशो. केसरदेवजीए जवाब आप्यो के तारी सुमरीओने में आंही सत्कार पूर्वक सारी रीते राखेल छे, तेना उपर कोइ जातनो जुल्म गुजारवा मारी इच्छा नथी, मारेतो फक्त तारी

साथे युद्ध करवुं छे, युद्ध करी खुशीथी तारी स्त्रीओने तुं लइ जा. ए शिवाय सोंपवामां नहि आवे. आवेला माणसोए शमीजइ हमीरने सर्व समाचार आप्या. त्यारे हमीरे फरी कहेवराव्युं के—जो आपनी एमज इच्छा छे तो भले, परंतु उनाळानो समय होवाथी अमोने घणी हरकत आवशे, माटे चोमासामां युद्धनुं मुकरर करो तो सारुं. त्यारे केसरदेवजीए कह्युं के—हुं तमारा माटे खोराक पाणीनो पूरतो वंदोवस्त राखीश, तमोने मारा मिजमान समजी युद्ध शिवाय वीजी कोइ वाबतमां दुःखी नहि थवा दउं. आ रीते केसरदेवजीनो अत्यंत आग्रह जोइ हमीरने "हा" कह्या शिवाय एके रस्तो न सूज्यों. केसरदेवजीए युद्ध अर्थे आवनार अतिथिओना आतिथ्य माटे पाणी तथा जवनी जरुर होवाथी कइ कइ जगोए खोदवाथी पाणी निकळशे ते जाणवा माटे पेला ज्योतिर्विद पंडितने वोलावी पूछयुं त्यारे पंडिते कह्युं के—मनुष्योना अंगमां जे रीते नाडीओ रहेली छे ते रीते पृथ्वीमां पण केटलीक उंची अने केटलीएक नीची नाडीओ छे. वर्षा काळमां आकाशमांथी सर्व जळ एकज रंगनुं एकज स्वादनुं पडे छे, ते जळ भूमिना संयोगथी अनेक रंग अने अनेक स्वादवाळुं थाय छे, एनी परीक्षा पृथ्वी प्रमाणे करवी जोइए. अर्थात् जेवी पृथ्वी तेवुं जळ होय छे.

इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, सोम अने इशान ए आठ देवताओ क्रमपूर्वक पूर्व आदि आठ दिशाओना स्वामी छे. ए आठ दिशाओना स्वामीओना नामथी आठ शिरा प्रसिद्ध छे, जेमके ऐन्द्री, आग्नेयी, याम्या इत्यादि. तेमज वचमां एक म्होटी नाडी "महाशिरा" ए नामथी प्रसिद्ध छे, एथी अधिक वीजी पण सेंकडो शिराओ निकळेली छे अने ते पोतपोताना नामथी प्रसिद्ध छे.

जे शिरा पातालथी सीधी उपरना भागमां नीकळती होय ते तथा पूर्व आदि चारे दिशाओमां जे शिरा होय ते शुभ अने अग्नि कोण आदि चारे कोणमां जे शिरा होय ते अशुभ जाणवी.

जो जलहीन देशमां वेतसनां वृक्ष होय तो तेनी पश्चिमे त्रण हाथ उपर दोढ पुरुष नीचे जळ होय छे अने त्यां पश्चिम शिरा वहे छे. मनुष्य पोताना हाथ उंचा करी उभा रहे एटली लंबाइने एक पुरुष कहे छे अने ते एकसो वीश आंगळ होय छे. ते जगोए नीचे मुजब चिन्ह होय छे. अर्ध पुरुष जेटलुं खोदतां पांडु रंगनुं देडकुं तेमज पीळा रंगनी माटी नीकळे छे पछी पुटभेद पथ्थर नीकळे छे अने एना नीचे पाणी होय छे.

निर्जळ देशमां जो जांबुनुं झाड होय तो तेनी उत्तरे त्रण हाथ उपर बे पुरुष नीचे पूर्व शिरा वहे छे, त्यां खोदवाथी लोढाना गंधवाळी माटी नीकळे छे, ते नीचे पांडुर रंगनी माटी नीकळे छे अने एक पुरुष नीचे खोदतां देडकुं नीकळे छे. जांबुना झाडथी पूर्व दिशामां समीपे सर्पनो राफडो होय तो ते वृक्षथी दक्षिणे त्रण हाथ उपर बे पुरुष नीचे खोदतां मीठुं जळ नीकळे छे, ते जगोए अर्ध पुरुष खोदतां माछलुं अने कबुतरना जेवा रंगवाळो पत्थर नीकळे छे, त्यां नीली माटी होय छे, अने पाणी घणुं नीकळे छे तेमज ते लांबा वखत सुधी रहे छे.

निर्जळ देशमां उदम्बरनुं वृक्ष होय तो तेनी पश्चिमे त्रण हाथ उपर अढी पुरुष नीचे शिरा होय छे, एक पुरुष नीचे खोदतां श्वेत सर्प नीकळे छे. पछी अंजन समान अति काळा रंगनो पत्थर नीकळे छे. एनी नीचे सुंदर जळवाळी शिरा होय छे.

अर्जुनना वृक्षनी उत्तरे जो राफडो होय तो ते वृक्षनी पश्चिमे त्रण हाथ उपर साडा त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे. अर्ध पुरुष जेटलुं खोदतां श्वेत रंगनी घो नीकळे छे. एक पुरुष नीचे भुखरा रंगनी अने ते नीचे काळी पीळी तेमज श्वेत रेतीथी मिश्रित थएली माटी नीकळेछे. एनी नीचे घणुं जळ होय छे.

राफडावाळुं निर्गुंडी वृक्ष होय तो तेनाथी दक्षिणे त्रण हाथ उपर सवा बे पुरुष नीचे मीठुं अने कोइ दिवस न सुकाय एटलुं जळ होय छे. अर्ध पुरुष खोदतां रोहित मत्स्य नीकळे छे अने ते नीचे अनुक्रमे, कपिल तेमज पांडुरंगनी माटी नीकळे छे अने पत्थरना सूक्ष्म कणोथी युक्त रेती नीकळे छे. ए नीचे पुष्कळ जळ होय छे.

बोरडीना झाडथी पूर्वे जो राफडो होय तो ए वृक्षथी पश्चिमे त्रण हाथ छेटे त्रण पुरुष नीचे जळ नीकळे छे, तेनुं चिन्ह प्रथम अर्ध पुरुष नीचे खोदतां श्वेतरंगनी छिपकली नीकळे छे.

निर्जळ देशमां पलाशना वृक्षयुक्त बोरडीनुं वृक्ष होय, तो तेनी पश्चिमे त्रण हाथ उपर सवा त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे. तेनुं चिन्ह एक पुरुष खोदतां डुंडुभ अर्थात् एक प्रकारनो निर्विष-सर्प नीकळे छे.

ज्यां बीली तथा उमरानुं झाड साथे होय तेनाथी दक्षिणे त्रण हाथ उपर त्रण पुरुष नीचे पाणी होय छे. तेनुं चिन्ह अर्ध पुरुष खोदतां काळा रंगनुं देडकुं नीकळे छे.

काकोदम्बरिकाना वृक्षनी अति समीपे राफडो होय तो ए राफडानी नीचे सवा त्रण पुरुष खोदवाथी पश्चिम दिशामां वहेनारी शिरा नीकळे छे. ते जगोए पांडु अने पीळा रंगनी मृत्तिका नीकळे छे, गोरस समान श्वेत रंगनो पत्थर नीकळे छे, अने अर्ध पुरुष नीचे कुमुदपुष्पसमान श्वेत रंगनो मूषक देखाव दे छे.

निर्जळ देशमां कपिलक वृक्ष जोवामां आवे तो ते वृक्षथी पूर्वे त्रण हाथ उपर सवात्रण पुरुष नीचे दक्षिण शिरा वहे छे. तेनुं चिह्न प्रथम नीलकमल जेवा रंगनी मृत्तिका नीकळे छे. पछी कपोत जेवा रंगनी मृत्तिका जोवामां आवे छे, अने एक हाथ नीचे मच्छी नीकळे छे. जेमां बकराना जेवो दुर्गंध होय छे, त्यां थोडुं खाराशवाळुं जळ नीकळे छे.

निर्जळ देशमां श्योनाक वृक्ष जोवामां आवे तो तेनाथी वायव्य कोणमां बे हाथ उपर खोदतां त्रण पुरुष नीचे शिरा नीकळे छे, ए शिरानुं नाम कुमुदा छे.

विभीतकना वृक्ष समीप दक्षिण तरफ राफडो होय तो ए वृक्षथी बे हाथे पूर्वे दोढ पुरुष नीचे शिरा होय छे.

बेहेडाना वृक्षथी पश्चिम दिशामां राफडो होय तो ए वृक्षथी एक हाथ उत्तरे साडाचार पुरुष नीचे शिरा होय छे. तेनां चिह्न प्रथम एक पुरुष खोदवाथी श्वेत रंगनो विश्वंभरक जोवामां आवे छे. फरी केसरीरंगनो पत्थर नीकळे छे, एनी नीचे पश्चिम दिशानी शिरा नीकळे छे, परंतु त्रण वर्ष पछी ए शिरा नष्ट थइ जाय छे.

कोविदार वृक्षना इशान खुणामां कुशथी युक्त श्वेत रंगनी माटीनो राफडो होय त्यां ते वृक्ष अने राफडानी मध्यमां साडाचार पुरुष नीचे पुष्कळ जळ होय छे, तेनुं चिन्ह प्रथम एक पुरुष खोदतां कमळपुष्पना मध्य भाग समान रंगनो सर्प नीकळे छे, लालरंगनी भूमि देखाय छे, अने पछी कुरुविंदनामनो पत्थर नीकळे छे.

निर्जळ देशमां राफडावाळुं सप्तपर्णनुं वृक्ष होय तो तेनाथी एक हाथ उत्तरमां पांच पुरुष नीचे जळ होवुं जोइए. तेनां चिह्न प्रथम अर्ध पुरुष खोदतां लीलुं देडकुं नीकळे छे, पछी हरिताल-ना जेवी पीळा रंगनी पृथ्वी देखाय छे, फरी मेघ समान काळा रंगनो पत्थर नीकळे छे, ए सर्वनी नीचे मीठां जळने वहन करनारी उत्तर शिरा होय छे.

चाहे ते वृक्षनी नीचे देडको बेठेल जोवामां आवे तो ए वृक्षथी एक हाथ उत्तरमां साडा चार पुरुष नीचे जल होय छे. तेनुं चिह्न एक पुरुष नीचे खोदतां नकुल नीकळे छे, पछी क्रमथी नीली, पीळी अने श्वेत माटी नीकळे छे, तेमज देडका समान रंगनो पत्थर नीकळे छे.

जो करंज वृक्षनी दक्षिणमां राफडो जोवामां आवे तो ए वृक्षथी बे हाथ दक्षिण दिशामां साडात्रण पुरुष निचे शिरा होय छे, तेनुं चिह्न अर्ध पुरुष खोदतां काचबो नीकळे छे, अने पछी पूर्वनी शिराथी प्रथम जळ नीकळे छे, अने बीजी स्वादिष्ट जळवाळी उत्तर शिरा वहे छे. प्रथम नीला रंगनो पत्थर नीकळे छे, अने तेनी नीचे जळ होय छे.

मधुक वृक्षथी उत्तरमां राफडो होय तो ते वृक्षथी पश्चिममां पांच हाथ पछी साडासात पुरुष नीचे जळ होय छे. तेनुं चिन्ह प्रथम एक पुरुष खोदवाथी म्होटो सर्प देखाय छे, धूम्र वर्णनी पृथ्वी नीकळे छे, फरी कळथी जेवा रंगनो पत्थर नीकळे छे. त्यारबाद जेमां निरंतर फीणवाळुं पाणी वहे छे एवी पूर्व शिरा निकळे छे.

तिलकवृक्षथी दक्षिण दिशामां कुश अने दुर्वाथी युक्त स्निग्ध वल्मीक होय तो ते वृक्षथी पांच हाथ पश्चिमे पांच पुरुष नीचे जळ होय छे, त्यां पूर्व शिरा वहे छे.

कदंब वृक्षथी पश्चिममां राफडो होय तो ते वृक्षथी त्रण हाथ दक्षिणमां पोणाछ पुरुष नीचे जळ होय छे त्यां उत्तर शिरा वहे छे, जळ घणुं नीकळे छे, परंतु एमां लोहना समान गन्ध आवे छे.तेनुं चिह्न एक पुरुष जेटलुं खोदवाथी सुवर्ण जेवा रंगवाळो देडको अने पीळी माटी नीकळेछे,

राफडाथी घेराएल ताल अथवा नाळीएरनुं वृक्ष होय तो तेनाथी छ हाथ पश्चिममां चार पुरुष नीचे दक्षिण शिरा होय छे.

कपित्थ वृक्षथी दक्षिणमां राफडो होय तो ते वृक्षथी सात हाथ उत्तरे खोदवाथी पांच पुरुष नीचे जळ नीकळे छे. तेनुं चिह्न एक पुरुष नीचे चित्रवर्णनो सर्प अने काळी माटी तथा सांधीओ पत्थर नीकळे छे. फरी श्वेत मृत्तिका निकळ्या पछी उत्तरशिरा नीकळे छे.

अश्मंतक वृक्षथी डाबी तरफ बोरडीनुं झाड अथवा राफडो होय तो ते वृक्षथी छ हाथ उत्तर दिशामां साडात्रण पुरुष नीचे जळ होय छे, तेनुं चिह्न प्रथम एक पुरुष खोदवाथी काचबो नीकळे छे, फरी धूसर वर्णनो पत्थर अने रेतीथी मिश्रित थएली माटी नीकळे छे ते पछी दक्षिण शिरा निकळ्या बाद ईशान कोणनी शिरा निकळे छे.

हरिद्रना वृक्षथी डावी बाजुए राफडो होय तो ते वृक्षथी त्रण हाथ पूर्वे एक तृतीयांश सहित पांच पुरुष नीचे जळ होय छे. तेनुं चिह्न एक पुरुष नीचे नीलो सर्प नीकळे छे. फरी पीळी माटी, लीला रंगनो पत्थर अने काळी भूमि निकळ्या पछी प्रथम पश्चिम शिरा अने पछी दक्षिण शिरा नीकळे छे.

निर्जळ देशमां ज्यां घणा जळवाळा देश जेवां चिह्नो जोवामां आवे अने ज्यां वीरण तथा दुर्वा अति कोमळ होय त्यां एक पुरुष नीचे जळ होय छे.

भार्गी, त्रिवृता, दन्ती, सूकरपादी, लक्ष्मणा, नवमालिका ए औषधि ज्यां होय त्यांथी बे हाथ दक्षिणे त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे.

ज्यां स्निग्ध अने लांबी शाखाओथी युक्त वामन अर्थात् न्हानां न्हाना अने फेलाएलां वृक्ष होय त्यां जळ समीपें होय छे, अने ज्यां छिद्रवाळां भांग्यां तुट्यां पर्णवाळां सुकाइ गएलां वृक्ष होय त्यां पाणी बीलकुल होतुं नथी.

ज्यां तिलक, आम्रातक, वरुणक, भल्लातक, बिल्व, तिन्दुक, अंकोल पिंडार शिरीष, अंजन, परूषक, अवंजुल अने अतिबला ए वृक्षो बहु स्निग्ध राफडाओथी वीटाएलां होय त्यां ए वृक्षोथी त्रण हाथ उत्तरमां साडाचार पुरुष नीचे जल होय छे.

जे भूमिमां बीजे कोइ ठेकाणे तृण न होय अने फक्त वचमां तृणयुक्त देखाय अथवा सर्व भूमिमां तृण होय परंतु फक्त एक स्थान तृणहीन होय तो ते जगोए साडाचार पुरुष नीचे शिरा होय छे, अथवा त्यां धन दाटेलुं होय छे.

ज्यां कांटावाळा वृक्षोमां एक कांटा वगरनुं वृक्ष होय अथवा कांटा विनाना वृक्षोमां एक वृक्ष कांटावाळुं होय तो ए वृक्षथी त्रण हाथ पश्चिमे एक तृतीयांशयुक्त त्रण पुरुष खोदवाथी जळ अथवा धन नीकळे छे.

ज्यां पगना प्रहारथी पृथ्वीमां गंभीर शब्द थाय त्यां साडात्रण पुरुष नीचे जळ होय छे, अने उत्तरशिरा नीकळे छे.

वृक्षनी एक शाखा पृथ्वी तरफ झुकी रही होय अथवा पीळी पडी गइ होय तो ते शाखा-नी नीचे त्रण पुरुष खोदवाथी जळ नीकळे छे.

जे वृक्षनां फळ तथा फूलमां विकार न होय अर्थात् कोइ जुदीज तरेहनां होय ए वृक्षथी त्रण हाथ पूर्वे चार पुरुष नीचे शिरा होय छे.नीचे पत्थर नीकळे छे अने भूमि पीळा रंगनी होयछे.

ज्यां कंटकारिका कांटाथी रहित अने श्वेत पुष्पोथी युक्त देखाय त्यां तेना नीचे साडा त्रण पुरुष खोदवाथी जळ नीकळे छे.

निर्जळ देशमां जो बे माथावाळुं खजूरीनुं वृक्ष होय तो ते वृक्षथी वे हाथ पश्चिमे त्रण पुरुष नीचे जळ होवुं जोइए.

श्वेत पुष्पयुक्त कर्णिकार वृक्ष अथवा पलाश वृक्ष होय तो ते वृक्षथी वे हाथ दक्षिणे त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे.

भूमिमां ज्यां गरमी अथवा धुंवाडो नीकळतो देखाय त्यां वे पुरुष नीचे घणुं जल वहन करनारी शिरा होवी जोइए.

जे खेतरमां खेती उत्पन्न थइ नष्ट थइ जाय अथवा वहु स्निग्ध खेती होय तेमज खेती उत्पन्न थइ पीळी पडी जाय त्यां वे पुरुष नीचे महा शिरा होय छे, अर्थात घणुं जळ नीकळे छे.

तद्दन निर्जळ देशमां उंटनी ग्रीवा माफक भूमिमां नीची उंची शिरा वहे छे.

पीलुवृक्षना इशान खूणामां जो राफडो होय तो ते राफडाथी साडाचार हाथ पश्चिमे पांच पुरुष नीचे उत्तर दिशा तरफ वहेनारी शिरा होय छे त्यां खोदवाथी एक पुरुष नीचे देडकुं नीकळे छे, फरी कपिल अने लीला रंगनी माटी तेमज पत्थर नीकळे छे, ए वधां चिह्न हेठे जळ होय छे.

पीलुवृक्षथी पूर्वे राफडो होय तो ते वृक्षथी साडाचार हाथ दक्षिणे सात पुरुष नीचे जळ होवुं जोइए, त्यां एक पुरुष नीचे खोदतां श्वेत अने काळा रंगनो एक हाथ लांवो सर्प नीकळे छे. ते नीचे घणुंज खारुं जळ वहन करनारी दक्षिण शिरा नीकळे छे.

करीर वृक्षथी उत्तर दिशामां राफडो होय तो ते वृक्षथी साडाचार हाथ दक्षिणे दश पुरुष नीचे मीठुं जळ होवुं जोइए, त्यां एक पुरुष खोदवाथी पीळा रंगनुं देडकुं नीकळे छे.

रोहितक वृक्षनी पश्चिमे जो राफडो होय तो ते वृक्षथी त्रण हाथ दक्षिणे बार पुरुष नीचे खोदतां खारुं जळ वहन करनारी पश्चिमशिरा नीकळे छे.

इन्द्रतरुनी पूर्वे जो राफडो देखाय तो ए वृक्षथी एक हाथ पश्चिमे चौद पुरुष खोदवाथी शिरा नीकळे छे, त्यां एक पुरुष खोदतां कपिलरंगनी घो जोवामां आवे छे.

जो सुवर्णवृक्षनी डावी बाजुए राफडो होय तो ए वृक्षथी बे हाथ दक्षिणे पंदर पुरुष नीचे खारुं जळ होय छे, अर्ध पुरुष नीचे नकुल नीकळे छे, त्रांबाना रंगनो पत्थर नीकळ्या बाद लाल रंगनी भूमि नीकळे छे, अने ते नीचे दक्षिणशिरा वहे छे.

बोरडी अथवा रोहिडा ए बे वृक्ष राफडा विना पण जो भेळा देखाय तो ए वृक्षोथी त्रण हाथ पश्चिमे सोळ पुरुष नीचे घणुंज मीठुं पाणी नीकळे छे, पहेलां दक्षिण शिरा अने पछी उत्तर शिरा वहे छे,लोटना समान श्वेत रंगनो पत्थर तथा तेवीज माटी नीकळे छे, अने अर्ध पुरुष नीचे वींछी देखाय छे.

जो केरडाना वृक्ष सहित बोरडीनुं झाड होय तो ते वृक्षोथी त्रण हाथ पश्चिमे अढार पुरुष खोदवाथी जळ नीकळे छे, त्यां घणुं जळ वहन करनारी इशानशिरा होय छे.

पीलुवृक्षयुक्त बोरडीनुं झाड होय तो ते वृक्षोथी त्रण हाथ पूर्वे वीश पुरुष नीचे खारुं जळ होय छे, जे कदी पण सुकातुं नथी.

ज्यां अर्जुनवृक्ष अने करीरवृक्ष अथवा अर्जुनवृक्ष अने बिल्व वृक्ष बन्ने एकत्र होय तो ते वृक्षोथी बे हाथ पश्चिमे पचीश पुरुष नीचे जळ होय छे.

जो राफडानी उपर दुर्वा अने श्वेतरंगनो कुश होय तो ते राफडानी मध्यमां कूप खोदवाथी एकवीश पुरुष नीचे जळ नीकळे छे,

ज्यां कदंबना झाडयुक्त भूमि होय अने राफडा उपर दुर्वा देखाती होय तो त्यां ए कदंब वृक्षथी बे हाथ दक्षिणे पचीश पुरुष नीचे जळ नीकळे छे.

त्रण राफडानी वचमां त्रण प्रकारना त्रण वृक्षो सहित रोहिडानुं वृक्ष होय तो त्यां जळ होवुं जोइए. मध्यमां रहेल रोहीडाना वृक्षथी चार हाथ अने सोळ आंगळ उत्तरे चाळीश पुरुष खोदवाथी पत्थर नीकळे छे अने एनी नीचे शिरा वहे छे.

ज्यां घणी गांठोवाळुं शमीवृक्ष होय एनी उत्तर दिशामां राफडो होय तो ते वृक्षथी पांच हाथ पश्चिमे पचाश पुरुष नीचे जळ होय छे.

पांच राफडा एक ठेकाणे होय अने तेनी मध्यनो राफडो श्वेत होय तो ते श्वेत राफडानी वच्चे पंचावन पुरुष खोदवाथी जळनी शिरा नीकळे छे.

ज्यां पलाशवृक्षयुक्त शमीवृक्ष होय त्यां ए वृक्षोथी पांच हाथ पश्चिमे साठ पुरुष नीचे जळ होय छे. प्रथम अर्ध पुरुष खोदतां सर्प नीकळे छे, अने पछी रेतीथी मळेली पीळी माटी नीकळे छे.

ज्यां राफडाथी घेराएलुं श्वेतरंगनुं रोहीडानुं वृक्ष होय त्यां ते वृक्षथी एक हाथ पूर्वे सत्तर पुरुष नीचे जळ होय छे.

ज्यां बहु कांटाथी युक्त शमीवृक्ष होय त्यां ते वृक्षथी एक हाथ दक्षिणे पच्चोतेर पुरुष नीचे जळ होय छे, अने अर्धपुरुष खोदतां सर्प नीकळे छे.

मरुदेशमां जलज्ञाननां जे चिह्नो कह्यां ते चिन्होथी जांगल देशमां पाणी होतुं नथी.जांबु, वेतस आदि वृक्षोनां चिन्होथी प्रथम जे जलज्ञान कह्युं ते चिन्हो जो मरुदेशमां देखाय तो निर्जळ देशमां जेटला पुरुषनुं प्रमाण कह्युं तेथी मरुदेशमां बमणा पुरुष खोदवाथी पाणी नीकळे छे.

जे देशमां पाणी घणुं होय ते अनुप, ज्यां जळनो अभाव होय ते मरुस्थल अने ज्यां बहु झाझुं नहि तेम बहु थोडुं पण नहीं अर्थात् सामान्य जळ होय तेने जांगल देश कहे छे. ए रीते त्रण प्रकारना देश छे.

जांबु, श्वेत नसोतर, मूर्वा शारिवा, शिवा, श्यामा, वाराही, ज्योतिष्मती, गरुडवेगा, सूकरिका, मापपर्णी अने व्याघ्रपदा ए औषधिओ जो राफडा उपर होय तो ते राफडाथी त्रण हाथ उत्तरे त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे; आ प्रमाण अनुपदेशमां जाणवुं, जांगल देशमां उपर कहेलां चिन्हो देखाय तो पांच पुरुष नीचे अने मरु देशमां देखाय तो सात पुरुष नीचे जळ होयछे.

भूमि एक रंगनी होय अने ज्यां तृण, वृक्ष, वल्मीक के गुल्म न होय एवी भूमिमां जो विकार अर्थात् अन्य प्रकारनी भूमि देखाय तो त्यां पांच पुरुष नीचे जळ होय छे. भूमिमां एकज मूळथी घणी शाखाओनो समुह उत्पन्न थाय तेने गुल्म कहे छे.

ज्यां स्निग्ध अने नीचाणमां रेतीवाळी अथवा पग राखवाथी शब्दायमान थती पृथ्वी होय त्यां साडाचार अथवा पांच पुरुष नीचे जळ होय छे.

ज्यां घणां स्निग्ध वृक्षो होय त्यां ए वृक्षोथी दक्षिणे चार पुरुष नीचे बहु जळ होय छे, तेमज घणा वृक्षोमां एक वृक्ष विकारवाळुं होय अर्थात् एनां फळ अने पुष्प जुदी तरहनां होय तो ते वृक्षथी दक्षिणमां पण चार पुरुष नीचे जळ नीकळे छे.

जांगल अथवा अनुपदेशमां ज्यां पग मूकवाथी भूमि दबाइ जाय, त्यां दोढ पुरुष नीचे जळ होय छे तेमज ज्यां घणां कीट देखाय अने तेओने रहेवानुं क्यांइ बिल न होय त्यां पण दोढ पुरुष नीचे जळ होवुं जोइए.

ज्यां बधी भूमि उष्ण होय अने एक भागमां शीतल होय तथा ज्यां बधी भूमि शीतल होय अने एक भागमां उष्ण होय त्यां साडात्रण पुरुष नीचे जळ होय छे.

जांगल अने अनुप देशमां ज्यां इन्द्रधनुष, मत्स्य अथवा वल्मीक जोवामां आवे त्यां चार हाथ नीचे जळ होय छे.

जांगल अथवा अनुपदेशमां ज्यां घणा राफडाओनी पंक्ति होय अने ते राफडाओमां एक राफडो सर्वथी उंचो होय ते उंचा वल्मीक नीचे चार हाथ खोदवाथी शिरा नीकळे छे. तेमज ज्यां खेती उत्पन्न थइ सुकाइ जाय अथवा उत्पन्न थायज नहि त्यां पण चार हाथ नीचे जळ होयछे.

वड, खाखरो अने उमरो ए त्रण ज्यां एकत्र उभेलां होय त्यां ए वृक्षोनी नीचे त्रण हाथ खोदवाथी जळ नीकळे छे, तेमज ज्यां वड अने पीपळो बन्ने साथे होय त्यां पण ते वृक्ष नीचे त्रण हाथ खोदवाथी जळ नीकळे छे. उपरना बन्ने स्थानमां उत्तरशिरा वहे छे.

जे भूमिमां वृक्ष, गुल्म अने लताओ स्निग्ध तेमज छिद्रहीन पर्णोथी युक्त होय त्यां त्रण पुरुष नीचे शिरा होय छे, स्थलपद्म, क्षुर, उशीर, कुलगुन्द्र, काश, कुश, नालिका अने नल ए तृणो तेमज खजूरी, जांबुडी, अर्जुन अने वेतस ए वृक्षो होय त्यां अथवा जेमांथी दूध नीकळतुं होय तेवां वृक्ष, गुल्म के लताओ ज्यां होय त्यां तेमज छत्रा, इभ, नाग, शतपत्र, नीप, नक्त-माल, सिन्दुवार, विभीतक अने मदयन्तिका ज्यां होय त्यां त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे. ज्यां एक पर्वत उपर बीजो पर्वत होय त्यां पण ए उपला पर्वतना मूळमां त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे.

जे भूमि मौंजक अने दर्भथी युक्त होय तेमज ज्यां पत्थरनी कणिकाओथी मळेली नीली माटी होय त्यां घणुंज मीठुं जळ होय छे. ज्यां काळी अथवा लाल माटी होय त्यां पण बहु मधुर जळ होय छे.

पत्थरना कणोथी मळेली त्रांवाना रंग जवी भूमि होय तो तेमां (कषाय) कसाएला स्वादतुं, कपिलरंगनी भूमि होय तो खारुं, पांडुरंगनी भूमि होय तो लवणना स्वादतुं अने नीला रंगनी भूमिमां मीठुं जल होय छे. ज्यां शाक, अश्वकर्ण, अर्जुन, बिल्वसर्ज, श्रीपर्णी, अरिष्ठ अने ए बधां छिद्रवाळां पर्णोथी युक्त होय अन ज्या वृक्ष, गुल्म अने लताओ पण छिद्रवाळा पर्णोथी युक्त तेमज रुक्ष होय त्यां जळ घणेज दूर होय छे.

जे भूमि सूर्य, अग्नि, भस्म, उंट अने गदर्भना रंग समान होय ते भूमि निर्जळ होय छे. जो लाल रंगनी भूमिमां लाल रंगना अंकुरोथी युक्त करीरनां वृक्ष होय अने ए वृक्षोमांथी दूध नीकळतुं होय तो त्यां पत्थर नीचे जळ होय छे.

जे शिला वैदूर्यमणि, मुद्ग अने मेघ समान कृष्ण वर्णनी अथवा पाकेल गूलरना फळ समान रंगनी होय अने जेने तोडवाथी अंजन समान अति कृष्ण वर्ण नीकळे अथवा कपिलवर्ण जणाय तो ते शिलानी समीपमांज घणुं जळ होय छे.

जे शिला पारावत, क्षौद्र, घृत, रेशमी कपडुं अथवा सोमवल्लीना समान रंगनी होय ते शिला पण तुरतमां जळने अक्षय बनावे छे.

जे शिला त्रांवाना रंगना बिन्दु अथवा विचित्र बिन्दुओथी युक्त होय, पांडु रंगनी होय, भस्म, उंट, गर्दभ अने भ्रमरना समान रंगनी होय; अंगुष्ठिक वृक्षना पुष्प समान नीली अन लाल होय अथवा अग्नि समान रंगनी होय ते शिला निर्जळ जाणवी.

जे शिला चन्द्रनी चांदनी, स्फाटिक, मोती, सुवर्ण अने इन्द्रनील मणिना समान वर्णनी होय, हिंगळा समान बहु लाल, अथवा अंजन समान बहु कृष्ण वर्ण होय, उदय थता सूर्यना किरणो समान बहु लाल अने चमकदार होय अथवा हरितालना समान पीळा रंगनी होय ते शिला शुभ होय छे.

शुभ शिला कही ते सर्व अभेद्य छे अर्थात् एने तोडवी नहि. ए शिलाने हमेशां यक्षो अने नागो सेवे छे, जे राजाओना राज्यमां एवी शिला होय त्यां कदिपण अवृष्टि थती नथी.

कूप आदि खोदती वखते शिला नीकळी आवे अने जो ए न तूटती होय तो तेना उपर

पलाश अने तिन्दुकनां काष्ठ सळगावी तेने लाल करवी फरी ए उपर कळी चुनाथी मळेलुं जळ छांटवाथी तुरत त्रुटी जाय छे.

मोक्षकनी भस्म मेळवी पाणीने उकाळवुं. पछी एमां शरनो खार मिलाव्या पछी तपावेली शिला उपर सातवार छांटवाथी त्रुटी जाय छे.

तक्र, कांजी, मद्य, कळथी अने बोरां ए सर्वने एक पात्रमां सात रात्री पर्यन्त राखवां, पछी ए उपर कह्या प्रमाणे तपावेली शिला उपर वारंवार छांटवाथी फाटी जाय छे.

लींवडाना पर्ण तथा छाल, नलनुं नाळ, अपामार्ग, टेंभुरणीनां फळ, गुडूची ए सर्वनी भस्मने गौमुत्रथी गळीने, पत्थरने तपावी तेना उपर छ वखत छांटवाथी ते त्रुटी जाय छे.

पूर्व पश्चिम लांवा सरोवरमां जळ घणा समय सुधी रहे छे अने दक्षिण उत्तर लांवा सरोवरमां पाणी रहेतुं नथी, कारणके पवनथी उत्पन्न थएला म्होटा तरंगोथी त्रुटी जाय छे.

जो दक्षिण अने उत्तरमां लांबु चतुष्कोण सरोवर बनाववुं होय तो जळनी चोटथी बचावना माटे किनाराओने मजबूत काष्ठथी बांधवा अथवा पत्थर अगर इंटोथी चणी लेवा. ए चणती वखते तेनी पाळनी माटीना भागने घोडा अने हाथी आदिना पगथी कचराववा जेथी माटी दबाइ जाय अने जळना धक्काथी टूटे नहीं.

ते वापीना किनारा उपर ककुभवट, आम्र, प्लक्ष, कदंब, निचुल, जांबु, वेतस, नीप, कुरवक, ताल, अशोक, मधूक अने वकुल इत्यादि वृक्षो वाववां.

ते वापीमांनुं वधारानुं जळ नीकळी जवा माटे एक तरफ मार्ग राखवो, ए मार्गने पत्थरोथी पाको करवो, अने छिद्र रहित काष्ठना कपाटथी बंध करी उपर माटीथी दबाववुं.

कुदरतथी थएला पद्मयुक्त अगाध जलाशयने पद्माकर अने तडाग कहेवां, कृत्रिम जलाशयने कासार, सरसी अने सर कहेवां. जेमां थोडुं पाणी होय तेने वेशंत, पल्वल अने अल्पसर कहेवा तेमज बेउ तरफ लांवां जळाशयने वापी नाम आपवुं.

अंजन, मुस्ता, उशीर, राजकोशातक, आमळां, अने निर्मळी ए सर्वनुं चूर्ण करी कुवामां नांखवाथी मेलुं, कडवुं, खारुं स्वादरहित अथवा दुर्गन्ध युक्त पाणी होय ते निर्मळ, मीठुं सुगन्धदार अने उत्तम गुणवाळुं थइ जाय छे.

हस्त, मघा, अनुराधा, पुष्य, धनिष्टा, त्रण उत्तरा अने शतभिषक्, ए नक्षत्रो कूपारंभमां श्रेष्ठ छे.

वरुणने बलिदान आपी वड अथवा नेतरना लाकडानी खीलीनुं गन्ध, पुष्प, धूप आदिथी पूजन करी ते खीली शिराना स्थानमां नांखवी.

आ रीतें सविस्तर जलपरीक्षा जाण्या पछी मकवाणा केसरदेवजीए शत्रुसैन्यने आववाना मार्गमां छ छ गाउने छेटे निर्मळ अने पुष्कळ जळवाळां नवाणो खोदाव्यां अने शत्रुओना अश्व विगेरेने चारो पुरो पाडवा माटे नवाणोनी आसपास यवना जवरां क्षेत्रो ववराव्यां. राजधर्ममां कह्युं छे के शत्रुओने युध्धनुं आमंत्रण आप्या पछी क्षणमात्र विलंब करवो नहि, छतां मकवाणा केसरदेवजीने भाविए एवो भूलावो खवडाव्यो के जे शत्रुना नगर पर पोताने चढाइ करी जवुं जोइए, तेने पोताना नगर पर चढी आववानी तक आपी, धान्य वगेरेथी भूमि सुसमृध्ध होय तोपण शत्रुना आगमन पहेलां एक तणखलुं पण एमां न रहेवा देवुं जोइए तेने बदले पोते शत्रुना सैन्यने पाणी तेमज चारो पूरो पाडवानी पंचातमां पड्या. शस्त्र अस्त्रने सज्ज करी सैन्यनी जमावट करवी जोइए तेने बदले कथा वार्ताना श्रवण मननमां केटलोक वखत विनाववा लाग्या. जाणे केम कोइ अंगित स्नेहीओ आववाना होय अने तेने सरभराथी संतुष्ट करवाना होय ! मकवाणा केसरदेवजी राजनीतिमां परम प्रवीण छतां गफलतमां ने गफलतमां रह्या. एनुं कारण मात्र "भावि" जे काळे जे बनवानुं होय छे ए बन्या विना रहेतुंज नथी. भावि आगळ म्होटा म्होटा महात्माओ पण भूल खाइ गया छे. तो पछी केसरदेवजीनुं शुं कहेवुं ?

"अवश्यं भावि भावानां, प्रतीकारो भवेद्यदि;
तदा दुःखै र्न लिप्येरन्नलरामयुधिष्ठिराः ॥ "

जे वात अवश्य बनवानी छे, तेनो उपाय जो आगळथी सूजतो होत तो नळ, राम अने युधिष्टिर जेवा महात्माओ कदी पण दुःखथी लेपात नहीं; वळी—

" नथी खरो आ मृग आसुरी छे, हण्यानी इच्छा मनमां करी छे;
वने फरे राम गुमावी नार, थनार ते थाय न ना थनार. "

ए नियमानुसार मकवाणा केसरदेवजी पण शत्रुने युद्धनुं आमंत्रण आपी कुवाओ खोदाववामां तेमज यवनां क्षेत्रो ववराववामां रोकाया. तेटला समयमा हमीरे पोतानी निर्बळ सेनाने सबळ

वनावी लीधी, चारामां काम आवे एवडा यत्न थतां केसरदेवजीए फरी शत्रुने कहेवराव्युं के तमो वगर विलंबे युद्ध करवा आवो, तमारी दरेक मजलमां जोइए तेथी विशेष जळवाळां नवाणो तैयार करावी राख्यां छे. तेमज अश्व आदिना चाराने माटे पण पूरतो बंदोबस्त कर्यो छे. आ समाचार सांभळी सैन्यना जमावथी हिम्मतमां आवेला हमीर सुमराए कीर्तिगढ तरफ प्रयाण कर्युं. मकवाणाओना मनमां एम हतुं के शौर्य रहित सुमराओ आपणने शुं करवाना छे? मजल दर मजल मकवाणा केसरदेवजीनी मिजमानीनो लाभ लेतुं सुमराओनुं सैन्य कीर्तिगढ नजीक आवी पहोच्युं. क्षत्री वीरोए गढ उपर चढी दृष्टि करी त्यां असंख्य योद्धाओए वर्षा ऋतुमां वादळांओए घेरेला आकाशनी माफक कीर्तिगढने चोमेरथी घेरेलुं जोयुं. पराक्रमी केसरदेवजीए गढनी अंदर रही तोपोथी युद्ध शरु करवा सैनिकोने आज्ञा आपी, सामसामुं यन्त्रयुद्ध शरु थयुं, विद्युत् समान वेगवाळा गोळाओ छूटवा लाग्या, परस्पर योध्धाओना अंगो तुटवा लाग्या, अन्योन्य आयुधना खजानाओ खुटवा लाग्या, कीर्तिगढना किल्लानो केटलोएक भाग तोपोना तीव्र माराथी जर्जरित थइ पडवा लाग्यो तेमतेम वीर पुरुषोना नेत्रोमां शौर्यनो रंग चडवा लाग्यो,ए रीते सात दिवस पर्यंत किल्लानी अंदर रही मकवाणा केसरदेवजीए सुमराओ साथे युद्ध कर्युं. अंते कीर्तिगढनो किल्लो तद्दन तुटी गयो अने दारुगोळो पण खुटी गयो छतां शत्रु सैन्यनुं प्रबळ जोर विचार्युं के हवे पाछा हठवुं ए क्षत्रीओनो धर्म नथी. कांतो मरवुं अने कांतो मारवुं आम दृढ निश्चय करी वस्त्रोने केसरीआ रंगमां बोळी पोताना तमाम सुभटो तथा कन्हैया जेवा कुमारो सहित खुल्ली कृपाणे शत्रुसैन्यमां कूदी पड्या, परस्पर कापाकापी चाली, दिशाओ अंधकारथी व्याप्त थइ गइ, भिन्नभिन्न जातनां रणवाद्यो वागवां लाग्यां, जोरमां आवेला शूरवीरो जागवा लाग्या, भय पामेला कायर पुरुषो भागवा लाग्या, कोइना हाथ, कोइना पग, कोइनां शिर, अने कोइनां धड पृथ्वी पर पडवा लाग्यां, रुधिरनी धाराओथी अलंकृत अंगवाळा योद्धाओ तलवार, कटार, अने बरछी आदि आयुधोथी भय रहित बनी लडवा लाग्या. परस्पर अथडाती असिओमांथी अग्निना अंगार नीकळवा लाग्या, अक्षयधामनी यात्राए जता शूरवीरो सामसामा महा आनंदथी मळवा लाग्या; गवैयाओ सिन्धु राग ललकारवा लाग्या, लडवैयाओ शत्रुओने संहारवा लाग्या, पोतपोताना पूर्वजोने तारवा लाग्या; गीध आदि पक्षीओ मनगमता मांसने पामी व्योम मार्गे विनोदथी विचरवा लाग्या. भयंकर प्रहारोथी प्रगट थएली रक्तनी नदीमां कपाएलां कबन्धो तरवा लाग्यां, कालिका आनंदयुक्त बनी रक्त पान करवा लागी, जोगणीओ पोतपोतानां खप्परो भरवा लागी, आकाशमार्गे

युद्ध जोवा आवेली अप्सराओ एक एकथी चडता वीरवरोने मनथी वरवा लागी, प्रेतपिशाचनी पंक्ति रणांगणमां फावे तेम फरवा लागी, डाकिनीओ गमन करतां असंख्य शव आडा आवतां मार्गनी विकटताने लीधे दिलमां डरवा लागी, अगणित मुंडमाळाओ प्राप्त थवाथी भूतपतिना हृदयमां भारे हर्ष फेलायो, अर्ध रात्रि पर्यन्त प्रचंड युद्ध जारी रह्युं, मकवाणा केसरदेवजी सात कुमार तथा अनेक उमरावो सहित काम आव्या, हमीर सुमराना अनंत योद्धाओ युद्धयज्ञमां स्वाहा थइ गया. कीर्तिगढना सैन्यमांथी फक्त केसरदेवजीना ज्येष्ठ कुमार हरपालदेवजी घा रहित शरीरे शत्रु सैन्यनो पार पाम्या, तेओना न्हाना भाइ वजेसिंहजी तथा हमीरजी घायल थइ रणभूमिमां पड्या हता, तेमां विजयसिंहजीने कोळी लोको लइ गया तेना वंशजो "कोळी मकवाणा" कहेवाया, जेओ हाल कटोसण अने पनार गाममां रहे छे; अने हमीरजीने मुसलमान लोकोए लइ जइ सारवार करी साजा कर्या. तेना वंशजो "मोली सलाम मकवाणा" कहेवाया, जेओ हाल महीकांठामां लालदेना मांडवा अने पुनाद्रामां रहे छे.

वि. सं. ११४९मां केसरदेवजी विगेरे युद्धमां काम आव्याना खबर प्रभातमांज कीर्तिगढ पहोंची गया. ते वखते आशरे सातसोएक क्षत्राणीओ पोतपोताना पति पाछळ सतीओ थइ; अने कीर्तिगढनो कबजो सुमरा हमीरना हाथमां गयो.

पंचदश तरंग.

मनहर.

युद्धमां बचेला हरअंश हरपालदेव,
गहन वनोमां पगे गमन करी गया;
पूर्वजना दर्श पामी सुण्यो धर्म आपदनो,
दिव्य पुत्रमाटे करी मुनिए खरीं दया;
सुणो अमरेश वक्रपुरना नरेश आवुं
केसरना पुत्र विना संकट सहे कया !
पाटण पधार्या मळया करणने मोदधारी,
धनुर्वेदना प्रभावें माननीय त्या थया.

राज हरपालदेवजीए पोताना तमाम कुटुम्बना क्षयथी उदय पामेला शोकरुपी सूर्यने हिम्मतना महान् अभ्रोथी आच्छादित करी एकाकी गहन वनमां प्रवेश कर्यो, तेओना दैवी देहरुपी क्षेत्रमां यौवनना अंकुरो फुट्या हता, अंग प्रत्यंगरुपी क्याराओ पराक्रमरुपी पाणीथी परिपूर्ण भरेला हता, तेमां कुविचार कंटकतरुने प्रथमथीज स्थान मळ्युं न हतुं, बुद्धिना हळथी खेडाएलुं ए क्षेत्र आगळ उपर उत्तम फळने आपनारुं जणाइ आवतुं हतुं; शत्रुनुं शरण स्वीकार करतां मरणने उत्तम माननारा हरपालदेवजीनी प्रताप वह्निथी विशुद्ध थएली कुन्दन सरखी काया मायाना महत्वने चरणमां राखी वनदेवीना आभरणरुप थइ पडी. रवि समान रुपवाळा, सोमसमान क्षात्रधर्मरुपी औषधिनी वृद्धि करनारा, मंगळ समान रक्त नेत्रवाळा, बुधसमान बुद्धिवाळा, गुरुसमान गौरववाळा, शुक्रसमान दुश्मनरुपी दानवोने नमावनारा अने शनिसमान शत्रुओना सुखने हरनारा हिम्मती हरपालदेवजी कुळना कल्याण माटे वारंवार विचार करवा लाग्या. हवे शुं करवुं ? विगेरे तर्क वितर्क करतां पोताने याद आव्युं के मारा पूर्वज मार्कंडेयजी अजरामर छे. तेमज योगबळथी

सर्व स्थळे गति करी शके छे, जो तेओ प्रत्यक्ष दर्शन दइ कांइ रस्तो वतावे तोज जीवितनी साथे उदयनी अभिलाषा राखी शकाय, ए शिवाय अन्य उपाय नथी. माटे आ घोर वनमां निराहार वनी ए योगीराजनुं आराधन करुं, एम निश्चय करी तेओ कोइएक शिला उपर द्रढताथी आसन लगावी मुनिवर मार्कंडेयना ध्यानमां लीन थया, त्रण दिवस पर्यन्त पाणी पण पीधुं नहि,अजरामर वनी अवनिमां अटन करता मार्कंडेये योगवळथी पोताना वंशज हरपालदेवजीनुं अतुल धैर्य तथा प्रशंसनीय भक्ति जोइ,तेओने संकटसागरमांथी तारवा संकल्प कर्यो, तुरतज पोते ते स्थळे पधार्या; ते ऋषिराजनुं तेजोमय शरीर आसपासना अंधकारने अलग करतुं हतुं, शिर उपर पिंगळी जटा सुवर्णना तंतुओ समान शोभी रही हती, ब्रह्मचर्यने लीधे भव्यताथी भरेलुं विशाल भाल सूर्यना किरणोनी सरखामणी करतुं हतुं, पुण्यना अस्खलित प्रवाहवाळी तेमज दयाना तरंगथी डोलती निर्मळ नदी समान दीर्घ दृष्टि स्पर्शमात्रथीज पाप पंकथी मलिन थएला हृदयपटने स्वच्छ करवानुं सामर्थ्य धरावती हती; गौर ग्रीवामां धारण करेल स्फाटिकनी माळा उदय पामता अर्क आगळ स्थित थएली नक्षत्र पंक्तिनुं भान धरावती हती; त्रिलोकीना मननुं आकर्षण करनार त्रितंतु युक्त उपवीतथी स्कंध, हृदय तथा कोट प्रदेश कोइ अपूर्व कान्तिनुं विश्रान्ति स्थान जणातुं हतुं, उत्तरिय वस्त्रथी उभय अंस आच्छादित हता, कटिए वींटेलुं पीत वस्त्र प्रेक्षकनी आंखने आनंद आपनारुं हतुं अने चरण पादुकानो शब्द कर्णप्रिय थइ पडे तेवो हतो. ए रीते करमां दंडकमंडलुने धारण करी पधारेला मुनिराज मार्कंडेये ध्यानमां निमग्न थएला राज हरपालदेवजीना मस्तकपर हाथ मुक्यो. कर स्पर्शथी जागृत थएला हरपालदेवजीए नमन करी पूछ्युं के—आप कोण छो ? मार्कंडेय आशीर्वाद आपी वोल्या के भाइ ! हुं ब्रह्मचारी छुं. संसारनो त्याग करी निरंतर निर्जन स्थानमां रही इश्वरनुं आराधन करुं छुं. परंतु तुं कोण छे ? आ अघोर वनमां शा माटे आव्यो छे? तारुं नाम शुं ? मुखमुद्रा जोतां तुं कोइ राजकुमार होय एम जणाय छे. हरपालदेवजीए सविनय उत्तर आप्यो के महाराज ! मारुं नाम हरपाल, मारा पिता मकवाणा केसरदेवजी सिन्धना राजा हमीर सुमरा साथेना युद्धमां सपरिवार काम आव्या. मात्र हुं एकज शक्ति प्रमाणे शत्रुओनो संहार करी आ तरफ निकळी आव्यो छुं, हवे शुं करवुं ए कांइ सूजतुं नथी, मारा पूर्वज मार्कंडेयने मळवा माटे तेओनुं ध्यान धरी आज त्रण दिवस थयां निर्जळ अने निराहार उपवास करी अहीं वेठो छुं. ज्यांसुधी ते महात्मा मने नहि मळे त्यां सुधी हुं आज स्थितिमां रहेवानो छुं. प्राण जाय तेनी मने परवा नथी. जो पोतानो वंश राखवो हशे तो महात्मा मार्कंडेय अवश्य मळशे

पंचदश तरंग.

मनहर.

युद्धमां वचेला हरअंश हरपाळदेव,
गहन वनोमां पगे गमन करी गया;
पूर्वजना दर्श पामी सुण्यो धर्म आपदनो,
दिव्य पुत्रमाथे करी मुनिए खरीं दया;
सुणो अमरेश वक्रपुरना नरेश आवुं
केसरना पुत्र विना संकट सहे कया !
पाटण पधार्या मळया करणने मोदधारी,
धनुर्वेदना प्रभावें माननीय त्या थया.

राज हरपालदेवजीए पोताना तमाम कुटुम्बना क्षयथी उदय पामेला शोकरुपी सूर्यने हिम्मतना महान् अभ्रोथी आच्छादित करी एकाकी गहन वनमां प्रवेश कर्यो, तेओना दैवी देहरुपी क्षेत्रमां यौवनना अंकुरो फुट्या हता, अंग प्रत्यंगरुपी क्याराओ पराक्रमरुपी पाणीथी परिपूर्ण भरेला हता, तेमां कुविचार कंटकतरुने प्रथमथीज स्थान मळ्युं न हतुं, बुद्धिना हळथी खेडाएलुं ए क्षेत्र आगळ उपर उत्तम फळने आपनारुं जणाइ आवतुं हतुं; शत्रुनुं शरण स्वीकार करतां मरणने उत्तम माननारा हरपालदेवजीनी प्रताप वह्निथी विशुद्ध थएली कुन्दन सरखी काया मायाना महत्वने चरणमां राखी वनदेवीना आभरणरुप थइ पडी. रवि समान रुपवाळा, सोमसमान क्षात्रधर्मरुपी औषधिनी वृद्धि करनारा, मंगळ समान रक्त नेत्रवाळा, बुधसमान बुद्धिवाळा, गुरुसमान गौरववाळा, शुक्रसमान दुश्मनरुपी दानवोने नमावनारा अने शनिसमान शत्रुओना सुखने हरनारा हिम्मती हरपालदेवजी कुळना कल्याण माटे वारंवार विचार करवा लाग्या. हवे शुं करवुं ? विगेरे तर्क वितर्क करतां पोताने याद आव्युं के मारा पूर्वज मार्कंडेयजी अजरामर छे. तेमज योगबळथी

सर्व स्थळे गति करी शके छे, जो तेओ प्रत्यक्ष दर्शन दइ कांइ रस्तो बतावे तोज जीवितनी साथे उदयनी अभिलाषा राखी शकाय, ए शिवाय अन्य उपाय नथी. माटे आ घोर वनमां निराहार बनी ए योगीराजनुं आराधन करुं, एम निश्चय करी तेओ कोइएक शिला उपर द्रढताथी आसन लगावी मुनिवर मार्कंडेयना ध्यानमां लीन थया, त्रण दिवस पर्यन्त पाणी पण पीधुं नहि,अजरामर बनी अवनिमां अटन करता मार्कंडेये योगबळथी पोताना वंशज हरपालदेवजीनुं अतुल धैर्य तथा प्रशंसनीय भक्ति जोइ,तेओने संकटसागरमांथी तारवा संकल्प कर्यो, तुरतज पोते ते स्थळे पधार्या; ते ऋषिराजनुं तेजोमय शरीर आसपासना अंधकारने अलग करतुं हतुं, शिर उपर पिंगळी जटा सुवर्णना तंतुओ समान शोभी रही हती, ब्रह्मचर्यने लीधे भव्यताथी भरेलुं विशाल भाल सूर्यना किरणोनी सरखामणी करतुं हतुं, पुण्यना अस्खलित प्रवाहवाळी तेमज दयाना तरंगथी डोलती निर्मळ नदी समान दीर्घ दृष्टि स्पर्शमात्रथीज पाप पंकथी मलिन थएला हृदयपटने स्वच्छ करवानुं सामर्थ्य धरावती हती; गौर ग्रीवामां धारण करेल स्फाटिकनी माळा उदय पामता अर्क आगळ स्थित थएली नक्षत्र पंक्तिनुं भान धरावती हती; त्रिलोकीना मननुं आकर्षण करनार त्रितंतु युक्त उपवीतथी स्कंध, हृदय तथा कोट प्रदेश कोइ अपूर्व कान्तिनुं विश्रान्ति स्थान जणातुं हतुं, उत्तरिय वस्त्रथी उभय अंस आच्छादित हता, कटिए वींटेलुं पीत वस्त्र प्रेक्षकनी आंखने आनंद आपनारुं हतुं अने चरण पादुकानो शब्द कर्णप्रिय थइ पडे तेवो हतो. ए रीते करमां दंडकमंडलुने धारण करी पधारेला मुनिराज मार्कंडेये ध्यानमां निमग्न थएला राज हरपालदेवजीना मस्तकपर हाथ मुक्यो. कर स्पर्शथी जागृत थएला हरपालदेवजीए नमन करी पूछ्युं के—आप कोण छो ? मार्कंडेय आशीर्वाद आपी बोल्या के भाइ ! हुं ब्रह्मचारी छुं. संसारनो त्याग करी निरंतर निर्जन स्थानमा रही इश्वरनुं आराधन करुं छुं. परंतु तुं कोण छे ? आ अघोर वनमां शा माटे आव्यो छे? तारुं नाम शुं ? मुखमुद्रा जोतां तुं कोइ राजकुमार होय एम जणाय छे. हरपालदेवजीए सविनय उत्तर आप्यो के महाराज ! मारुं नाम हरपाल, मारा पिता मकवाणा केसरदेवजी सिन्धना राजा हमीर सुमरा साथेना युद्धमां सपरिवार काम आव्या. मात्र हुं एकज शक्ति प्रमाणे शत्रुओनो संहार करी आ तरफ निकळी आव्यो छुं, हवे शुं करवुं ए कांइ सूजतुं नथी, मारा पूर्वज मार्कंडेयने मळवा माटे तेओनुं ध्यान धरी आज त्रण दिवस थयां निर्जळ अने निराहार उपवास करी अहीं बेठो छुं. ज्यांसुधी ते महात्मा मने नहि मळे त्यां सुधी हुं आज स्थितिमां रहेवानो छुं. प्राण जाय तेनी मने परवा नथी. जो पोतानो वंश राखवो हशे तो महात्मा मार्कंडेय अवश्य मळशे

ए जे रस्तो बतावशे ते रस्ते वंशवृद्धि करीश अने बाहुबळथी राज्यलक्ष्मीने वरीश. आ सांभळी मार्कंडेय बोल्या के–राजकुमार ! हठ छोडी दे, मार्कंडेयनुं मिलन तने दुर्लभ छे, कारणके एवा देवकोटिना ऋषि मुनिओ मर्त्य लोकना मनुष्योने मळी शकता नथी. जो फलाहारनी इच्छा होय तो लावी आपुं, जलपान करी कोइ शहेर तरफ चाल्या जाओ तो सारुं. हरपालदेव बोल्या के–लीधेली प्रतिज्ञा अपूर्ण राखवी ए क्षत्रिओनो धर्म नथी,जल के फलनी मारे कांइ जरुर नथी, अने मार्कंडेयना दर्शन कर्या विना आंहीथी जवानो पण नथी. आ रीते पोताना वंशज हरपालदेवजीनी उत्तम टेक जोइ प्रसन्न थएला मुनिराज मार्कंडेये कह्युं के भाइ! हुं पोतेज मार्कंडेय छुं. तमारी दृढता जोवा माटेज में आटला वखत सुधी प्रश्नोत्तर कर्या. हरपालदेवजीए तुरतज हाथ पग जोडी दंड-वत् प्रणाम कर्या, अने पूछयुं के—कृपाळु ! आवा आपत्तिना समयमां हवे मारे शुं करवुं, ते समजावो. आजे आपना दर्शनथी हुं कृतार्थ थयो छुं. त्यारे मार्कंडेय बोल्या के–कुमार ! तमो अ-हींथी गुजरात देशमां अणहिलपुरपाटण नामे शहेर छे त्यां जाओ, त्यांनो राजा सोलंकी करण वाघेलो तमारो माशीआइ भाइ छे तेने जइ मळो. हरपालदेवजीए कह्युं के–हुं क्षत्री उठी कोइने शरणे जाउं ए दुनियामां केवुं हलकुं देखाय तेनो आपज तोल करो. हरपालदेवजीना आवा उत्तम विचारो सांभळी धन्यवाद आपता मार्कंडेय बोल्या के–कुमार ! राजाओ उपर अनेक प्रकारनी आपत्तिओ आवे छे तेमां कइ आपत्तिमां कइ रीते वर्तवुं ए समजाववा माटे भीष्पजीए युधिष्ठिरने करेलो आपद्धर्म संबंधी उपदेश हुं तमोने संक्षेपे कहुं छुं ते श्रवण करो.

जो चढाइ करनारो राजा धर्म अर्थमां कुशळ अने विजयनी इच्छावाळो होय तो तुरतज तेनी साथे सन्धि करी लेवो, जो शत्रुए पोताना प्राचीन पुरुषोना ग्राम तथा नगरो जीती लीधां होय तो तेने सामनीतिथी छोडाववां अने जे अधर्मथी विजय करवानी इच्छावाळो पराक्रमी अने पापात्मा होय तेने पोतानां थोडां घणां ग्राम दइ तेनी साथे सन्धि करवो अथवा राजधानीनो त्याग करी धन द्वाराए आपत्तिथी बचवुं, फरी आयुर्बळने धारण करी राजगुणोथी संयुक्त धननो संग्रह करवो. जो धन अने सेनाना त्यागथी आपत्ति दूर थती होय तो धर्म अर्थने जाणनार एवो क्यो पुरुष छे के जे धनने माटे पोताना प्राण गुमावे ? अर्थात् एवा समयमां धन आदिनो त्याग करी पोतपोताना प्राणनी रक्षा करवी एज उचित छे, भले खजाना तथा राजमहेल आदि शत्रुने हाथ जाय परंतु पोते समर्थ बनी शत्रुना पंजामां सपडावुं नहीं. मंत्री आदि क्रोधयुक्त थवाथी देश गढ आदि शत्रुने आधीन थवाथी, खजानो नष्ट थवाथी अने गुप्त मंत्रो प्रगट थइ जवाथी जो मंत्री आदि धर्मज्ञ

होय तो तुरतज सन्धिनी इच्छा करवी अथवा सत्वर पराक्रम बतावबुं, तेम करवाथी शत्रुओ शीघ्र हठी जाय छे अथवा धर्मयुद्ध करी मरवाथी पण परलोकनी प्राप्ति थाय छे, तमाम पृथ्वीनो रक्षक राजा शौर्य भरेल स्वल्प सैन्यथी पण पृथ्वीनो विजय करी शके छे. जे युद्धमां प्रीतियुक्त अने प्रसन्न चित्त होय ते मरी स्वर्गमां जाय छे अथवा शत्रुओने मारी विजय मेळवे छे. मृदुतानो गुण प्राप्त करवा माटे लोक प्रसिद्ध शास्त्रने बुद्धिथी प्रकट करी विश्वासथी विश्वासने मेळववो. जो मंत्रिओना क्रोधथी साम थवानो असंभव होय अर्थात् मेळ थवो कठिन होय तो किल्लामांथी भागी जवानी इच्छा; करवी अने थोडा दिवस देशने छोडी उत्तम सलाहद्वारा फरी पराक्रम बतावबुं. ज्यारे सर्वोपकारी उत्कृष्ट राजधर्म नष्ट थइ जाय, तमाम पृथ्वीनी आजीविका चोर लोकोने आधीन थाय अने एवा अधम समयने लीधे ब्राह्मण लोको स्नेहथी पोताना पुत्र पौत्रादिनो त्याग न करे तेवी दशा प्राप्त थतां विज्ञानना पराक्रममां नियत थइ निर्वाह करवो, कारणके सर्व संसारी वस्तुओ साधुओने माटे छे, असाधुओने माटे कांइपण नथी. जे नीच लोको पासेथी धन लइ सत्पुरुषोने आपे छे एज आपद्धर्मने जाणवावाळो छे एम समजवुं. संसारना रक्षकनुं धन छे, एटला माटे "आ मारुंज छे." एम विचारी पोताने अर्थे धनने नहि चाहनार अने पालन धर्ममां तत्पर राजाए आप्या सिवाय पण धनने लइ लेवुं. जे पूर्ण बुद्धिवाळा, बळथी पवित्र अने निन्दित कर्मोमां पण प्रवृत्त थनारा मनुष्यो छे ते आजीविकानी प्राप्तिमां पूर्ण बुद्धिशाळी अने विद्वान् होय छे, जेथी तेनी निन्दा कोइपण करी शकता नथी.जेनी आजिवीका बळथी उत्पन्न थनारी छे, तेने बीजी आजीविका उत्तम जणाती नथी. बळवान् मनुष्य पोताना बळथी सन्मुख थइ जाय छे. पोतानो अथवा शत्रुनो कोइ पण माणस दंडने योग्य होय तो तेना पासेथी धन लेवुं जोइए. राजाए आपत्ति काळमां पण शुभकर्मी ऋत्विज्, पुरोहित अने आचार्य विगेरे पूज्य ब्राह्मणोने खंडणी आदि शिवाय मारवा नहि, कारणके तेओने मारवामां दोष गणाय छे. ए लोकमर्यादा अने सनातन नेत्र छे एटला माटे मर्यादाने माननार तेओने देशोमां फेरवे, चाहे ते उत्तम होय अथवा अनुत्तम होय; घणा ग्रामवासीओ परस्पर क्रोधयुक्त थइ कांइ कहे तो राजाए वचनोथी तेओनी अप्रतिष्ठा न करवी तेम मारवा पण नहि. गुरु आदिनी निन्दा न करवी जोइए तेम कोइ दशामां सांभळवी पण नहि, एवा स्थळ उपर बन्ने कान आंगळीओथी बंध करी देवा एज योग्य छे. निन्दा करवी ए नीच लोकोनोज स्वभाव छे, संतजनो सत्पुरुषोना गुणोनेज गाय छे. जेवी रीते सुन्दर बोलनार, सीधा, सुशिक्षित, अने उत्तम लोकोने स्वार करनारा बे बेल धोंसरी उठावी लइ चाले छे तेवीज

रीते राजाए कर्म करवां, जेमजेम तेने सहायको वधता जाय छे, तेमतेम बीजां मनुष्यो राजाना धर्मरूप आचारनी वृद्धि थएली माने छे.

पोताना अथवा पराया देशमांथी धन पेदा करवुं, कारणके धनथीज धर्म थइ शके छे. अने राज्यनी पण धनथीज दृढता थाय छे. एटला माटे धनने एकठुं करवुं अने तेनी उत्तम प्रकारे रक्षा करवी, फरी तेने सारा काममां वापरवुं ए सनातन धर्म छे. पवित्र तथा शौच क्रियावाळाथी अथवा निर्दय मनुष्यथी धन भेळुं थतुं नथी. साधारण स्थानपर नियत थइ धनने एकत्र करवुं; पराक्रम विना धन प्राप्त थतुं नथी. धन विना सैन्य, सैन्य विना राज्य अने राज्य विना राज लक्ष्मी मळी शकेज नहि. आचारवाळा पुरुष आगळ लक्ष्मी न होय ए मरण बरावर छे, एटला माटे राजाए खजानानी, सैन्यनी अने मित्रोनी उत्तम प्रकारे वृद्धि करवी. खाली खजानावाळा राजानुं अपमान थाय छे, नोकर चाकर थोडा पगारथी भग्न चित्त थइ उत्साहपूर्वक काम पण करता नथी, लक्ष्मीनी सहायताथी राजाओ घणी सत्क्रिया करी शके छे, जेम वस्त्र स्त्रीओनां गुप्त अंगोने ढांके छे, तेम ते ते सत्क्रियाओ राजानां पापोने ढांकी दे छे, प्रथम अपमान कराएलां मनुष्यो जेना ऐश्वर्यने जोइ दुःखी थाय छे अने श्वान आदिनी पेठे जेने मारवा तत्पर थइ रह्यां होय छे एवा राजाने सुख क्यांथी मळी शके ? राजाए उद्योग करवो, सुस्ती न राखवी, कारणके युक्ति पूर्वक उद्यम करवो ए प्राणी मात्रनो धर्म छे. असमर्थ अवस्थामां अथवा पडतीमां भागी जवुं, परंतु कोइनी साथे निकृष्ट कर्म न करवां, वनमां जइ मृगना टोळांओनी साथे घूमवुं अथवा मर्यादा छोडी चोरोनी साथे फरवुं, दुष्ट कर्मोमां चोरोनी सेना सुगमताथी प्राप्त थइ शके छे, अतुल बेमर्यादाथी तमाम मनुष्यो व्याकुळ बने छे, अने निर्दय कर्म करनारा चोर पण शंका करे छे.एटला माटे प्राणी मात्रना चित्तने प्रसन्न करनारी मर्यादाने नियत करवी, ए मर्यादा आ लोकना न्हाना अर्थोमां पण पूजाय छे. प्राकृत पुरुषोनो ए निश्चय छे के नथी आ लोक के नथी परलोक, परंतु नास्तिक अने भयभीत लोकोने एवो विश्वास थवो कठिन छे, जेम सत्पुरुषोने चोरोनो विश्वास होतो नथी. जेवी रीते चोरोनी मर्यादाथी सर्व प्राणी प्रसन्न थाय छे ,तेवीज रीते युद्ध न करनारने मारवो, बीजानी स्त्रीना धणी थवुं, उपकारने भूली जवो, सर्वस्व हरी लेवुं, कन्याने चोरी जवी, गायोने स्वाधीन करी तेना स्वामी बनी जवुं अने पराइ स्त्रीथी संभोग करवो ए तमाम निन्दनीय टेव चोरोमां होय छे, चोरोए एवी कुटेवनो त्याग करवो जोइए. जे मनुष्य विश्वासने अर्थे चोरनी साथे

मळे छे, ते मनुष्यना हृदयमां विश्वास बेसाड्या वाद चोर तेनां स्थान, धन, अने बालबच्चां आ-दिनो विनाश करे छे एवो निश्चय करी स्वाधीन थएला चोरोने जीवता न जवा देवा जोइए. पोताने पराक्रमी समजी जो तेओने छोडी देवामां आवे तो ते अवशेष रहेला चोरो नाशकर्तानो विनाश कर्या शिवाय रहेता नथी. उत्तम बुद्धिवाळा क्षत्रियने धर्म तथा अर्थ दृष्टिगोचर थाय छे,माटे एवा स्थान उपर आ धर्म छे के आ अधर्म छे एवो विचार न करवो, कारणके मेंढीना पुच्छ माफक धर्मनो उपदेश गुप्त फळवाळो छे. कोइ माणसे क्यांइ पण धर्म अधर्मनां फळने जोयुं नथी, जेथी पराक्रमनेज प्राप्त करवानी इच्छा राखवी. आ समग्र संसार पराक्रमीनेज आधीन छे ए वात निःसंशय छे. आ लोकमां पराक्रमी राजा लक्ष्मी, सैन्य तथा मंत्रिओने मेळवी शके छे. जे धन रहित होय ते पतित गणाय छे अर्थात् धन विना धर्म कर्म थइ शकतां नथी जेथी पतित दशा प्राप्त थाय छे, एनाथी पण अल्प होय ते उच्छिष्ट समान लेखाय छे. कुमार्गगामी पराक्रमी कोइ-नो भय टाळी शकतो नथी. पराक्रम अने धर्म ए बन्ने साचा अधिकार उपर नियत थइ महान् भयथी सर्वेनुं रक्षण करे छे. धर्मथी पराक्रम अधिक छे, कारणके पराक्रमथीज धर्मनी स्थिति छे. जेम धूमाडो हवाने आधीन छे, तेम पृथ्वीमां चेष्टा करनारा जीवोना धर्म पराक्रममां वर्तमान छे. पराक्रमीने कोइ वस्तु अप्राप्य नथी, एनी आगळ तमाम पवित्र छे. कुमार्गी अने निर्बळनी रक्षा होइ शकती नथी, कारणके तेनाथी सर्व व्याकुळ थाय छे. अपमान पामेलो अने राज्यथी भ्रष्ट थएलो मनुष्य दुःखरुप जीवनने भोगवे छे. निन्दित जीवन मरण समान छे. कोइ एम कहे के पापथी अथवा वदमासीने लीधे फलाणाने बान्धवोए त्याग कर्यो एथी बीजुं कष्ट क्युं होय ? एवां वचनरुपी भालांथी घायल थएलाने पापथी निवृत्त थवानो एज उपाय छे के तेणे त्रणे वेदनो पाठ करवो, ब्राह्मणोनी उपासना करवी, नेत्र, वचन अने क्रिया आदिथी सर्वेने प्रसन्न करवा, महान् उदारपणुं प्रकट करी उत्कृष्ट कुळमां परणवुं, पोतानी हीनता अने बीजानी प्रशंसा करवी अथवा स्नान, जप, तथा स्तोत्र आदिथी प्रसन्न चित्त, पवित्र अने कोमळ स्वभावयुक्त बनी अन्यने प्रसन्न करवा; कोइनुं बुरुं न करवुं, पोते महा कठिन काम कर्युं होय अने ते संबंधी लोकोए कराती प्रशंसा सांभळी,न सांभळता होइए तेवुं वतावबुं तेमज ब्राह्मण अने क्षत्रीओनी वच्चे निवास करवो. एवी रीतनां आचरणोथी पाप रहित थएलो पुरुष सर्वेने प्रिय थइ शके छे अपूर्व सुखने भोगवतो गुणवान राजा परोपकारथी आ लोकमां प्रतिष्ठापात्र थाय छे, अने परलोकमां पण उत्तमोत्तम

फळनो भोक्ता बने छे. मर्यादा युक्त चोर पण नरकमां जतो नथी. शिकार करनार, बुद्धिमान, शूरवीर, शास्त्रज्ञ थइ शास्त्रनी रीति प्रमाणे हिंसा करनार अने वेद ब्राह्मण तथा आश्रम धर्मोनुं रक्षण करनारो क्षत्रिय कदाच आपत्तिने लीधे चोरोमां भळे तो तेणे देश काळने जाणी भयभीत स्त्रीने, बाळकने, तपस्वीने अने सामे हथिआर छोडी देनारने मारवा नहि, स्त्रीओ पराक्रमथी कदि पण पकडवा योग्य नथी, तमाम दशामां जीवोनी मध्ये स्त्रीओ अवध्य छे. सत्यनो कदिपण त्याग न करवो जोइए, कोइना विवाह आदि कार्यमां विघ्न न करवुं, कारणके तेमां देवता, अतिथि अने पितृओनुं पूजन करवामां आवे छे, जो व्यापारी लोको धन न आपे तो तेओने कहेवुं के अमे चोरीने तमारुं धन लइ लेशुं, कारणके ए दंड खजानानी वृद्धिने माटे नहि, परंतु कुकर्मीओना नाशने माटे नियत करेल छे. जे श्रेष्ठ लोकोने पीडे छे तेओने मारवा एवुं नामज दंड छे, जे कोइ देशना नाशथी पोतानी वृद्धि करे छे ते मुडदानी साथे वळी मरता कीडाओनी माफक नष्ट थाय छे, जे चोर धर्मशास्त्रने अनुसरी कर्म करनारो होय ते तुरतज चोर जातिमां पण सिद्धिने पामे छे.

राजाए यज्ञ करनाराओनुं तेमज देवताओनुं धन कदि पण न हरवुं जोइए. क्षत्रिय राजा चोरोनुं अने यज्ञ न करनाराओनुं धन हरी शके छे, कारणके ए प्रजा अने राज्यभोग क्षत्रीओनाज छे, धन पण क्षत्रीओनुं छे, बीजा कोइनुं नहि, ते धन तेना पराक्रमने माटे, सैन्यने माटे अने यज्ञने अर्थे होय छे. जे पुरुष हविष्यान्नथी देव, पितृ अने मनुष्योनुं पूजन नथी करतो, तेना धनने धर्मज्ञ पुरुषोए निष्फळ मानेल छे. जे धर्मज्ञ राजा प्रथम धननुं हरण करे छे अने त्यारबाद लोकोने प्रसन्न करे छे, ते शोकने प्राप्त थता नथी. जे पुरुष पोताना देहने सेतु बनावी असाधुओ आगळथी धन लइ साधुओने आपे छे एज सर्व धर्मोनो ज्ञाता छे; अने तेणे जेम कीडी आदि जन्तुओ धीरेधीरे घणे दूर चाल्या जाय छे तेम संसारनो विजय करवो. जेम डांस अने मच्छर आदि जन्तुओनां इंडां पोतपोतानी मेळे उत्पन्न थाय छे तेम यज्ञ न करनारा पुरुषो पण वारंवार पेदा थाय छे. जेम डांस आदि जीवोने पशु अलग करे छे तेम यज्ञ न करनारा पुरुषोनो पण त्याग करवो जोइए.जेम बहु पीसावाथी पृथ्वीनी रेणु झीणी थइ जाय छे तेम धर्म पण सूक्ष्मतर बनी जायछे. जे मनुष्य भविष्य बातने प्रथमथी करवावाळो होइ समय प्राप्त थतां बुद्धि अनुसार कर्म करे छे ते सुखपूर्वक वृद्धिने पामे छे अने दीर्घसूत्री होय ते नष्ट थाय छे.आपत्ति उत्पन्न थतां बीजो अवरोध

न आवी पडे तेटला वखतमा अन्य स्थाने चाल्या जवुं एज उत्तम छे. जे पुरुष सन्मुख आवेली हरकोइ आपत्तिने श्रेष्ठ नीतिथी निवृत करे ते संशयरहित थाय छे. सन्मुख आवेला समयने नहि जाणनार दीर्घसूत्री शीघ्र मृत्यु पामे छे अने जे पोताने बुद्धिमान् समजी प्रारंभमां निजनुं कल्याण नथी करतो ते पाछळथी महान् संदेहमां पडे छे. काष्ठा, कला, मुहूर्त, दिन, रात, मास, पक्ष, षड्ऋतु, कल्प, चार प्रकारनां वर्ष, पृथ्वी, देश अने काल, ए सर्व समयना विभाग छे, एनो सूक्ष्मता दृष्टिगोचर थती नथी. देश अने काळ चित्तना रोचक छे अने तेनाथीज फळनी प्राप्ति थाय छे.

कार्यना सामर्थ्य योगथी शत्रु मित्र अने मित्र शत्रु थाय छे, ए रीत परंपराथी चाली आवे छे, एटला माटे देश काळने जाणी योग्यायोग्य कर्मनो निश्चय करवामा विश्वास राखवो जोइए. बुद्धिमान् अने शुभचिन्तक लोकोथी निरंतर मिलाप अने स्नेह राखवो, शत्रुओथी पण सन्धि करवो, कारणके पोताना प्राणनी रक्षा करवी ए कर्तव्य घणुं अगत्यनुं छे.जे मूर्ख शत्रुओथी हमेशने माटे मिलाप नथी राखतो ते कोइ प्रकारना अर्थ के फळने पामी शकतो नथी. जे पुरुष पोताना अर्थने समजी शत्रुथी सन्धि करे अने मित्रथी शत्रुता करे ते अत्यंत महान् फळने प्राप्त थाय छे, जे मित्र भयकारी समान मळनारा अने भयथी हित करनारा होय तेनाथी विचारीने कार्य करवुं. जे पुरुष पराक्रमी लोकोथी मिलाप करी पोतानी रक्षा नथी करतो तेनी वात भोजन करेल कुपथ्यनी माफक प्रयोजन सिद्धि करवामां समर्थ थइ शकती नथी. कोइ कोइना मित्र के कोइ कोइना शुभ चिन्तक नथी, मात्र प्रयोजनथी मित्र अने शुभचिन्तक बने छे. जेम हाथीओ द्वारा जंगली हाथीओ बंधाय छे, तेम प्रयोजनथी प्रयोजनने बांधी शकाय छे. कार्य पूर्ण थया बाद कोइपण उपकारने ध्यानमां राखता नथी. मित्र शत्रुरुप छे अने शत्रु मित्ररुप छे. तेओ काम क्रोधथी संयुक्त छतां ओळखी शकाता नथी. प्रत्यक्षमां कोइ शत्रुए नथी अने मित्र पण नथी.ज्यां सुधी पोताना प्रयोजनने माटे जेनी पासे दुःख रहित जीवन गुजारवामां आवे छे, त्यांसुधी मित्रता बनी रहे छे, ज्यारे जरापण तेमां विपरीतपणुं जणाय छे, त्यारे तेज शत्रुतानुं रुप धारण करे छे. मित्रता स्थिर नथी तेम शत्रुता पण अविनाशी नथी, मित्र अने शत्रु सर्व अर्थ युक्तिओथी उत्पन्न थाय छे. कोइ समयनी विपरीततामां मित्र शत्रु अने शत्रु मित्र बनी जाय छे. पोतानुं प्रयोजन महा बळवान छे. जे मित्रो पर विश्वास अने शत्रुओ पर अविश्वास राखे छे, तेमज अर्थ युक्तिने जाण्या सिवाय जे प्रीति करनारा उपर प्रीति दर्शावे छे, तेनी बुद्धि शत्रु अथवा मित्र वर्गमां अवश्य

चलायमान थाय छे. अविश्वासु लोको उपर अधिक विश्वास न राखवो. विश्वासथी उत्पन्न थनारो भय समूळ उच्छेदन करे छे. अर्थयुक्तिथीज माता, पिता, पुत्र, मामा, भाणेज अने वान्धव आदि संवंधीनी उत्पत्ति छे. पतित थयेला पुत्रने माता पिता पण तजी दे छे. समग्र संसार प्रथम आत्मानी रक्षा करे छे. आ जीवलोक स्वार्थपरायण छे. कोइ कोइनो प्यारो नथी. सगाभाइ अने स्त्री पुरुषोमां पण स्वार्थने लीधेज परस्पर प्रीति प्रचलित रहे छे. आ दुनियामां कोइ धनथी, कोइ मिष्ट वचनोथी, कोइ मंत्रथी, कोइ होमथी अने कोइ जप आदिथी प्रसन्न थाय छे. तमाम मनुष्य कार्यवशात् प्रीति करे छे. सन्धि अने विग्रहमां स्थिर स्वभाव धारण करी प्रयोजनना मित्रथी अलग रहेवुं. वादळनी पेठे क्षणक्षणमां स्वरुपने वदलावनार मित्र अने शत्रुथी सावचेत रहेवुं. तमाम वस्तु जायतो भले पण शत्रुने हाथ आत्मा न सोंपवो, कारणके आत्मा होइने संतान, राज्य, रत्न अने धन आदि छे, माटे तमाम धननो त्याग करीने पण बुद्धि अनुसार शरीरनुं संरक्षण करवुं. धन अने रत्नोना ऐश्वर्यने पामी मित्रनी पासे रहेवुं तथा धननी प्राप्ति अनुसार पोताना जीवननो निर्वाह करवो. धन अने रत्नो समान देहने आपी देवानी कोइपण इच्छा करता नथी. धनथी पण अधिक आत्मानी रक्षा करवी, जे पुरुष आत्मरक्षणमां प्रवृत्त थइ उत्तम परीक्षा पूर्वक कर्म करे छे, तेने पोताना दोषथी प्राप्त थएली आपात्तिने कदि पण वाध करती नथी. जे निर्वळ पोताना पराक्रमी शत्रुने सारी रीते ओळखे छे, तेनी बुद्धि चलायमान थती नथी. मित्रथी शत्रुता करवी ए महा निन्दित कर्म छे. शत्रुनो कदिपण विश्वास न करवो, ज्ञानी पुरुषे विना प्रयोजन शत्रुने आधीन न थवुं. साधारण वैरवाळा पराक्रमीनी साथे मिलाप करी युक्ति पूर्वक सावधानीथी कर्म करवां अने मनोरथ सिद्ध थया पछी फरी तेनो विश्वास न करवो. अविश्वासीनो विश्वास अने विश्वासीनो अधिक विश्वास न करवो. निरंतर वीजाने पोतानो विश्वास आपवो, परंतु पोते कोइनो विश्वास न करवो. दरेक दशामां आत्मानुं संरक्षण करवुं, कारणके आत्माथीज धन अने पुत्र आदिनी उत्पत्ति छे. अविश्वास एज नीतिशास्त्रनो उत्तम आशय छे, कोइनो विश्वास न करवो एज पोतानुं महान् हित छे, विश्वास नहि करनारो निर्वळ पण पराक्रमीने हाथे हणातो नथी अने विश्वासने वश थएलो पराक्रमी पण निर्वळने हाथें मार्यो जाय छे. एटला माटे निर्भयसमान भयभीत अने विश्वासु समान विश्वास नहि करनार सावधान पुरुष वनतां सुधी चलायमान थतो नथी अने ज्यारे ते चलायमान थाय छे त्यारे विनाश पामे छे. वखते शत्रुथी सन्धि अने मित्रथी विरोध पण करवो जोइए. शास्त्रार्थना निश्चय पूर्वक कर्ममां प्रवृत्त तथा प्रसन्नचित्त थइ भयथी पहेलांज भय-

भीतनी माफक कर्म करवां, कारणके भयपूर्वक सावधानीथी उद्योग करनारो पुरुष बुद्धिमान गणाय छे. सन्मुख न आवेला भयमां भयभीत थनारो पुरुष भयने प्राप्त थतो नथी. विश्वास युक्त निर्भयथी पण वखते बहु भारी भय उपजे छे. राजाओमां मिलाप के प्रीति होती नथी, राजा लोको कारणने लीधे मीठां वचनो बोली दमदिलासा आप्या करे छे अने पोतानो मनोरथ सिद्ध थया बाद तजी दे छे, कोइ रीतना उपकारने नहि जाणनार अने अकृतज्ञ राजाओनो विश्वास न करवो जोइए. प्रथम बुराइ करी पाछळथी दिलासो देनार होय तेनाथी हमेशां दूर रहेवुं, परस्पर शत्रुता करनारना पुत्रपौत्रादि मरण पामे छे. अने पुत्रपौत्रादिना मृत्युथी परलोकनी कदि पण प्राप्ति थती नथी. शत्रु उपर अविश्वास राखवो एज तमाम रीते सुखकारी छे. विश्वासघातीनो तेमज अप्रमाणिकनो कदि पण विश्वास न करवो. प्रमाणिकनो पण वधारे विश्वास न करवो. बांधव वर्गमां माता अने पिता सर्वथी श्रेष्ठ छे तेमज स्त्री वीर्य गृहण करनारी अने पुत्र वीर्य रुप होवाथी श्रेष्ठ गणाय छे. भाइ शत्रु छे कारण के तेने धनथी प्रसन्न करवो पडे छे. आ संसारमां एकलो आत्माज मित्र थइ सुख दुःखने भोगवनार छे. परस्पर शत्रुता करनारनो स्नेह शुद्ध होतो नथी. प्रथम बुराइ करनार प्राणीनुं चित्त हमेशां विश्वास रहित होय छे. जे स्थळे प्रथम प्रतिष्ठा होय अने पाछळथी अपमान थयुं होय ते स्थळे बुद्धिमान पुरुषे फरी गमे तेटली प्रतिष्ठा प्राप्त थाय तो पण कदी न रहेवुं शत्रुता पांच प्रकारे उत्पन्न थाय छे. एक स्त्रीने माटे, बीजी पृथ्वीने माटे, त्रीजी कुवचनोथी, चोथी स्वभावथी अने पांचमी अपराधथी. शत्रुताना स्थान उपर बल अने अबलना दोषने जाणी विशेषे करी क्षत्रिय तरफथी प्रकट अथवा अप्रकट वांछित वस्तु आपनार मनुष्य मारवा योग्य नथी. आ लोकमां शत्रुता करनार मित्रनो पण विश्वास न करवो जोइए. जेम लाकडीमा पण अग्नि गुप्त रीते रहेलो होय छे तेम शत्रुता पण गुप्त रहेली होय छे. धन आपवाथी अगर कठोर के मीठां वचनोथी क्रोधाग्नि शांत थतो नथी परंतु शास्त्रथीज शान्त थाय छे. शत्रुताथी प्रकट थएल अग्नि अने अपराधथी उत्पन्न थएलां कर्मो पण शत्रुनो नाश कर्या सिवाय शान्त थतां नथी. करवा योग्य तेमज न करवा योग्य अनेक कार्यो काळने लइ कराय छे. आलोकमां कोइ कोइनो अपराध करता नथी. जन्म अने मृत्यु बन्ने बराबर वर्तमान छे. उत्पत्ति अने अंत काळज करे छे. केटलाएक लोको एकी वखते परस्पर मार्या जाय छे अने केटलाएक भिन्न भिन्न वखते मरण पामे छे. जेम अग्नि काष्ठने भस्म करे छे तेम काळ पण सर्वने भस्म करे छे. काळज संसारना सुख दुःखने उत्पन्न करनार छे. वेदवेत्ताओए दुःखने मृत्युना उत्पातथी उत्पन्न थनारुं कह्युं छे. प्राण अने पुत्र सर्वने

प्रिय छे, दुःखथी तमाम लोको डरे छे अने सुखथी संतुष्ट थाय छे. बुढापो आववो अने हाथथी धन जवुं ए पण दुःख छे. अप्रियनी साथे निवास करवो अने हेतु तथा बान्धवोथी दूर रहेवुं ए पण दुःख छे, घात अने बंधनथी उत्पन्न थनारुं दुःख छे. स्त्रीथी संबंध राखनारुं दुःख छे अने एवी रीते देहथी उत्पन्न थनारुं पण दुःख ज छे तेमज विरोधी पुत्रथी निरंतर दुःख छे. एवा एवा दुःखोने जाण्या छतां पण तेमां प्रवृत्त थयेला केटलाएक अज्ञानी लोको बीजाना दुःखने दुःख नथी मानता. जे दुःखने नथी जाणता तेज मोटा मनुष्योथी वाद करे छे. जे मनुष्य सर्व दुःखोना स्थानरूप पोताना देहने जाणे छे ते बीजा साथे कदीपण तेम करतो नथी. तुटेल माटीनुं पात्र जेम संधातुं नथी तेम शत्रुता थया पछी मित्रना थाती नथी. जे जीव शत्रुओना सत्यवचन तथा मिथ्यावचन उपर श्रद्धा राखे छे ते अवश्य विनाशपामेछे. सामा माणसनुं अपमान करी फरी तेनों विश्वास करवो ते दुःखनी निशानी छे. जेना बन्ने पगमां फोल्ला पड्या होय ते चालतां पीडा पामे छे. रोगवाळी आंखथी पवन तरफ जोनार पुरुष पीडा पामे छे. जे पुरुष कुमार्गमां प्राप्त थइ पोताना पराक्रमना अभिमानथी पाछो वळतो नथी तेनुं जीवन ते मार्गमांज समाप्त थाय छे. वृष्टि नहिं थाय एम जाण्या छतां जे खेतर वावे छे तेने कदापि फळनी उपलब्धि थती नथी. जे पुरुष तिक्त, कषाय अने मधुरादि रसोने विचार पूर्वक पथ्यनी रीते खाय छे ते निरोगी थाय छे. अने जे पथ्य भोजननो त्याग करी परिणामने जाण्या छतां अज्ञानताथी कुपथ्य करे छे ते मृत्यु पामे छे. प्रारब्ध अने उद्योग परस्पर एकबीजानी रक्षामां वर्तमान छे. महान् साहसिक पुरुषो कर्मने श्रेष्ठ गणे छे अने नपुंसक लोको रात्री दिवस प्रारब्धनेज रोया करे छे. सर्व जनोए पोतानी वृद्धि करनारां कर्मो करवां जोइए. चाहेते सुगम होय या कठिन होय, कारणके नकामो निर्धन मनुष्य निरंतर अनर्थोथी ग्रसित थाय छे. एटला माटे सर्वनो त्याग करी पराक्रम करवुं एज योग्य छे. मनुष्ये पोताना हितनी खातर तमाम धननो पण त्याग करवो जोइए. विद्या, शूरता, विज्ञता, वैराग्य अने धैर्य ए सर्व देहनी साथे उत्पन्न थनारा मित्र गणाय छे. अर्थात् आ लोकमां उक्त गुणोद्वारा गुणवान् गणाइ शकायछे. सुवर्ण, रत्न, छत्र, स्त्री अनेसुहृज्जनो ए सर्व हितकारी छे. मनुष्यने ए सर्व स्थळे मळी शके छे. तेवा पुरुषने कोइए डरावी शकतुं नथी अने कदाच कोइ डरावे छे तो पण भयने प्राप्त थतो नथी. बुद्धिमाननुं थोडुं धन पण वृद्धिने पामे छे अने असावधान पुरुषोना कर्म अचेतपणाथी अटकी जाय छे. प्रीतिमां बंधाएला मुर्ख मनुष्योना मांसने खोटी स्त्रीओ पोताना अपराधोथी पीडा उपजावे छे अर्थात् शुष्क बनावी दे छे.

अमुक घर, क्षेत्र, मित्र अने देशना ममत्वथी मनुष्य पीडायमान थाय छे, कारणके रोग अने दुर्भिक्षने लीधे पोताना देशने छोडी वीजे स्थळे रहेवा जवुं पडे छे अने त्यां रक्षण पण मळे छे. जूठी भार्या, कुपात्र पुत्र, अन्यायी राजा, जूठी मित्रता, जूठो नातो, अने जूठो देश ए सर्वनो दूरथीज त्याग करवो. कारणके कुपात्र पुत्र विश्वास लायक होतो नथी.कुभार्यामां रति होती नथी, खोटा राज्यमां आजिविकानो अभाव छे, निरंतर निर्मूळ मित्रतावाळा कृत्रिम मित्रमां मिलाप होतो नथी. धननो नाश थवाथी जूठी नातादारीमां अपमान प्राप्त थाय छे. जे प्यारां वचनो कहे तेज भार्या. जेनाथी सुख मळे तेज पुत्र. जेमां विश्वास होय, एज मित्र अने जेमां जिवन होय एज देश कहेवाय छे. जे देशमां अन्याय अने भय नथी, तेमज कठिन आज्ञा आपनार राजा निर्धनोनुं रक्षण करवानी इच्छा राखे छे एवा गुणवान अने धर्मज्ञ राजाने भार्या, देश, मित्र, पुत्र, स्नेही अने वान्धव प्राप्त थाय छे. अधर्मी राजाना दंडथी प्रजा नष्ट थाय छे, कारणके धर्म अर्थ अने कामनुं मूळ राजा छे एटला माटे अति सावधान थइ तेणे प्रजानुं रक्षण करवुं जोइए. जे प्रजा-नी रक्षा न करे ते राजा नहीं पण चोर गणाय छे. जे राजा पोते पोतानी निर्भयताने प्रकट करी धनना लोभथी उक्त वातनुं प्रमाण नथी करतो, ते अधर्मी सर्व प्रकारना लोभथी पापी वनी नर-कमां जाय छे; अने जे राजा पोतानी निर्भयता प्रकट करी प्रमाण पूर्वक धर्मथी प्रजानुं परिपालन करे छे ते राजा सर्वने सुख आपनारो नीवडे छे. माता, पिता, रक्षक, गुरु, अग्नि अने कुवेर ए वधाना गुण राजामां होवा जोइए. प्रजा उपर पितानी पेठे कृपा करवी, मातानी माफक तेनी वृद्धि चाहवी तेमज पीडितनुं पोषण करवुं. अग्नि माफक शत्रुओने एवा भस्म करवा के जेम यमराजा पापीओने दंड आपे छे. कुवेरनी माफक मित्रोने जरथी तर करवा, गुरुनी माफक प्रजाना सर्व मनोरथ पूर्ण करी धर्मनो उपदेश करवो अने रक्षक वनी चारे तरफथी रैयतनुं रक्षण करवुं. जे राजा पोताना गुणोथी पुरवासी अने देशवासीओने प्रसन्न करे छे तेमज देशना संरक्षणथी जेनी प्रजा दुःखी थती नथी, ते राजा लोकप्रिय थइ आ लोक अने परलोकमां अवर्णनीय आनंद भोगवे छे. जेनी प्रजा प्रतिदिन वृद्धि पामता करोथी पीडित थइ भयभीत वनी अनर्थने लीधे नष्ट थाय छे, ते राजा पण विनाश पामे छे. वळवानथी कदी पण विरोध करवो नहीं. कारणके तेम थवाथी राज्य अने सुख एक साथे नष्ट थाय छे. दंडधारी राजाए उद्योग करवो. दोषथी दूर रहेवुं अने शत्रुओना दोषो देखी तेओने कवजे करवा जोइए. सदैव दंडने जारी राखनार राजाना मनुष्य अत्यंत भयभीत थाय छे. एटला माटे तमाम जीवोने दंडथी स्वाधीन करवा. मुख्यताने जोनारा

पंडित लोको दंडनीज प्रशंसा करे छे, जेम वृक्षनुं बीज नष्ट थवाथी शाखा तथा फळ आदिनी आशा राखी शकाती नथी, तेम देशनुं मूळ कपावानी साथे तेमां रहेलां प्राणीमात्रनुं जीवन नष्ट थाय छे.बुद्धिमान् राजाए प्रथमज शत्रुपक्षनी जड कापी नांखवी. त्यारबाद तेना सहायकोने मारवा अने तेना मूळने स्वाधीन करवुं. आपत्तिकाळ प्राप्त थतां नेक-सलाह अने सुंदर पराक्रम साथे युद्ध करी वखत मळ्ये कांइपण विचार कर्या सिवाय युक्तिथी भागी छूटवुं. वातो तो कोमळता पूर्वक करवी; परंतु हृदयमां छरा समान तीव्रता राखवी. सफाइदार वार्तालाप करवो अने काम, क्रोधने तजी पोतानुं कार्य शत्रुने आधीन थइ जता तेनी साथे विश्वासयुक्त बनी संधि न करतां बुद्धिबळथी पोतानुं काम सिद्ध करी तुरतज तेनाथी जुदा थइ जवुं. मित्रोनी माफक मीठा वचनो थी शत्रुने विश्वासयुक्त करी सर्पयुक्त घरनी पेठे तेनाथी निरंतर बीता रहेवुं. शत्रुओनो बुद्धि अनुसार विजय करवो अने तेओने व्यतित वृत्तान्तोथी दृढता करावबी. मुर्ख लोकोने भविष्यमां थनारा वृत्तान्तोथी विश्वासयुक्त करवा अने पंडितोने समयानुकुल वचनोथी धीरज आपवी, हाथ जोडवा, शपथ खावा, मीठां वचन बोलवा अने शिर झूकावी नमन पण करवुं. आपत्तिमां ऐश्वर्यने इच्छवावाळाए शत्रुना सामे अश्रुपात करवो; ज्यांसुधी समय अनुकूळ न होय त्यांसुधी शत्रुने पोतानी कांध उपर उपाडी चालवामां पण कशी अयोग्यता नथी.

नानुकूळ समय प्राप्त थतां ए शत्रुने एवी रीते मारवो के जेम घडाने पत्थरपर पछांडी टुकडे टुकडा करी नाखवामां आवे छे. घणा मनोरथोने संपूर्ण करवानी इच्छावाळा पुरुषोए कृतघ्नी मनुष्योथी सबंध न करवो. राजाए कोकिला, सुकर, पर्वत, खाली मकान, नट अने भक्त मित्रनी माफक कल्याणकारी कर्म करवां अर्थात् कोकिला जेम पोताना बालबच्चांओनुं पोषण बीजा पासे करावे छे तेम राजाए पण रक्षा आदि कर्म प्रजाथी कराववुं. वराह जेम जडने खोे छे, तेम राजाए पण शत्रुनी जड उखेडी नांखवी. मेरु पर्वतमां जेम दृढता अने गौरव छे, तेम राजाए पण पोतानी बुद्धिने द्रढ राखी, गौरवनो त्याग न करवो. खाली मकानना जेम भाडां उपजाववामां आवे छे तेम धननी आवक वधारवी. नटनी माफक घणां रुप धारण करवां, अने भक्तमित्र जेम पोताना मालीकनो उदय चाहे छे, तेम राजाए पण पोतानी प्रजानो उदय करवो.मेळाप करवानी इच्छावाळा पुरुषे निरंतर उठी उठी शत्रुना घरमां जइ तेने क्षेम कुशळ पूछवा. कदाच ते अकुशळ होय तोपण तेम पूछवामां फायदोज छे. सुस्त, नपुंसक, बीकण, अने प्रारब्धजनोज भरोसो राखनार मनुष्योना मनोरथ कदि पण सिद्ध थता नथी. राजाए पोताना दोषने गुप्त राखी

शत्रुना दोषोथी वाकेफ थता रहेवुं. काचबा समान अंगोने छुपावी पोतानी रक्षा करवी. बगला समान अर्थोनो विचार करतां रहेवुं.सिंहनी समान पराक्रम करवुं अने वरुनी माफक वैरीने विदारी ससला माफक भागी जवुं. मद्यपान, पासा, स्त्रीसंग, शिकार अने गीतवाद्य आदिनुं सेवन युक्ति-पूर्वक करवुं. वखते देखता, वखते आंधळा अने वखते व्हेरा पण बनी जवुं अने बुद्धिबळथी देश-काळने अनुकूळ जाणी पराक्रम बतावबुं; कारणके देशकाळ प्रतिकूळ होय तो पराक्रम निष्फल निवडे छे; एटला माटे पोतानुं बळ अबळ, देशकाळ अने परस्परना बळनी तुलना करी कर्ममां प्रवृत्त थवुं. जे राजा दंडद्वारा झुकेला शत्रुने स्वाधीन नथी करतो ते गधेडीना गर्भ समान पोतानुं मृत्यु प्राप्त करे छे. सुंदर रीते पुष्पित थइ अफळ थवुं तेमज फळवान् थइ कठिनताथी चडवा योग्य थवुं ए रीते काचा पाका आम्रनी छवि धारण करवी. परंतु कोइ दिवस शुष्क थवुं नहि. आशाने समय उपर पूर्ण थनारी समजवी अने तेने विघ्नमां न नांखवी. विघ्ननुं निमित्तद्वारा अने निमित्तनुं हेतुद्वारा वर्णन करवुं. ज्यांसुधी भय सन्मुख न आवे, त्यांसुधी भयभीत समान कर्म करवां अने भयने सन्मुख आवेल जोइ निर्भय समान तेने दूर करवो. संशयने अनुभव्या सिवाय मनुष्य कल्याणने प्राप्त थतो नथी.ज्यारे संशय उपर चढी सजीवन रहे छे,त्यारेज कल्याणने जोइ शके छे.सन्मुखमां वर्तमान सुखनो त्याग करी पाछळथी तेनी आशा राखवी ए बुद्धिशाळीनुं काम नथी. शत्रुनी साथे मिलाप करी विश्वासपूर्वक सुखे सुइ रहेवुं ए वृक्षोनो सर्वोपरी टोंच उपरथी सूता पडी सावधान थवा जेवुं छे. जेम बने तेम कोमळ अने कठोर कर्मद्वारा पोताना दीन आत्मानुं रक्षण करवुं अने समर्थ बनी धर्ममां प्रवृत्त थवुं.शत्रुओना शत्रुनी साथे स्नेह बांधवो अने शत्रुए नियत करेला दूतोथी तेमज पोताना जासुसोथी हरघडी वाकेफ थता रहेवुं ए अगत्यनुं छे.पोताना जासुसोने शत्रु न जाणे तेम गुप्त रीते नियत करवा जोइए. पाखंडी तपस्वीओने शत्रुओना देशमां दाखल करावबा. उद्यान, विहारस्थान, प्याबा आदि जळपानना स्थान, प्रवेशस्थान, तिर्थस्थान अने सभा आदि स्थानोमां मारण आदि कर्मरुप धर्मने धारण करनारा महा पापी अने संसारना कंटकरुप एवा मनुष्यो आव छे तेने ओळखी ओळखी स्वाधीन करवा अथवा प्राणरहित करवा. परीक्षा कर्या सिवाय कोइनो पण विश्वास करता भय प्राप्त थाय छे. सिद्धांतरूप कारणथी शत्रुने विश्वासयुक्त करी फरी कोइ समये राज्य चलायमान थतां तेने ठार करवो. असंदिग्धमां पण संदेह करवो अने संदिग्ध मनुष्य उपर तो सदाय संदेहवाळा रहेवुं. असंदिग्धथी पण उत्पन्न थनारो भय समूळ उच्छेदन करी शके छे. सावधानी, मौनता, काशाय वस्त्र, जटा अने मृगचर्म आदिथी शत्रुओना हृदयमां

विश्वास वेसाडी वरुनी पेठे तेओनो घात करवो. प्रयोजनमां हानि पहोंचाडनार पुत्र, भ्राता, पिता, अने मित्र आदिने पण ऐश्वर्यने चाहनारो राजा मारे तो ए अयोग्य नथी. अहंकारी, कार्याकार्यने जाणनार, अने कुमार्गगामी गुरु पण दंडने योग्य छे. तिक्ष्ण चांचवाळा पक्षीनी पेठे अभ्युत्थान नमस्कार अथवा कांइ आपीने पण शत्रुना फळ फूलोनो नाश करवो. शत्रुना मर्मस्थानने न कापतां तेमज अन्य भयकारी कर्म न करतां मच्छीमारनी माफक जाळमां पकडी तेओनो जीव लेवो. ए सिवाय उत्तम लक्ष्मीनी उपलब्धि थती नथी. शत्रु अने मित्र जन्मथी नहि परंतु केवळ सामर्थ्यथीज उत्पन्न थाय छेः शत्रु कदाच शोकयुक्त वचनो बोलतो होय तोपण ते छोडवा योग्य नथी. अपराधीने मारवामां लेश पण दुःख न मानवुं अने बीजाना गुणोमां दोषनुं आरोपण न करनारा मनुष्योने एकठां करी तेओना उपर कृपा करवी जोइए. ऐश्वर्यने इच्छनारो राजा तेओने युक्तिपुर्वक दंड पण आपी शके छे. हारेला शत्रुने कदि पण छोडवो नहि, कारणके ते ध्यान दीधा सिवाय वधवा आपेला रोगनी माफक महान् भय उपजावे छे. सारी रीते नहीं काढेलो कांटो पण घणा वखत पर्यन्त पीडा करे छे. विपरीत रीतिथी कर्म कदिपण न करवां.मनुष्योने मारवा, मार्गोने वगाडवा अने स्थानोने तोडवा आदिथी शत्रुना देशने नष्ट न करवो; परंतु गीध समान दीर्घ दृष्टि, वगला समान चेष्टा रहित ध्यान, श्वान समान जागृति, चोर समान विज्ञान, अने सिंह समान पराक्रमने धारण करी, काग समान बीजाओनी अंगचेष्टाओने जाणी सर्पनी माफक अकस्मात् शत्रुना गढ विगेरेमां प्रवेश करवो. शूरवीरने हाथ जोडवाथी अथवा भेदथी अने लोभीने धनथी पोताना पक्षमां मेळववा. वडीआ साथे युद्ध करवुं योग्य छे. विद्वाननी साथे विरोध करी एम न समजवुं के हुं दूर छुं, कारणके बुद्धिमाननी वन्ने भुजाओ लांबी होय छे.ते घायल छतां पण वन्ने भुजाओथी प्रहार करी शके छे. जेनो पार पामवो कठिन छे तेने तरवानी कदिपण इच्छा न करवी. जेनुं बीजो हरण करी जाय तेने पोते न लेवुं. जेनी जड उखेडवामां न आवे तेने न खोदवुं अने जेनो शिरच्छेद करवामां न आवे तेना उपर प्रहार न करवो. आपत्तिमां पडेला राजाए शत्रु तरफथी युध्दनुं आमंत्रण आवतां अवश्य ए प्रमाणे करवुं जोइए.

आपत्तिना समयमां प्राणीनी प्रथम रक्षा करवी, मृत्यु करतां जीवन उत्तम गणाय छे, कारणके जीवनथीज धर्म थइ शके छे. राजाए अनेक शास्त्रोद्वारा घणुं ज्ञान मेळववुं जोइए, आ लोकयात्रा एक देशीय धर्मथी जारी रहेती नथी. महात्मा लोकों दुष्टता करनारनी सामे शत्रुता प्रकट करता नथी, परंतु धीरेधीरे पोतानो पुरुषार्थ वतावे छे. बुद्धिरहित मनुष्ये बुद्धिथी जीवन

करनार मनुष्य साथे शत्रुता न करवी, कारणके उक्त वर्त्तन घासमां अग्नि नांखी सामे पवने सूवा जेवुं छे. जे पुरुष हानि अथवा लाभमां शोक के हर्षने प्राप्त थतो नथी, तेमज ममता अने अहंकार रहित समदर्शी छे ते दृढ पराक्रमीने हानि, लाभ, सुखदुःख, प्रिय अप्रिय अने जीवन मरण व्याकुळ करी शकतां नथी. आटलुं कही मार्कंडेये घडिभर मौन धारण कर्युं. मुनिराज मार्कंडेयना वचनामृतनुं पान करी भूख तृषाने भूली गएला हरपालदेवजीना हृदयमां हिम्मते निवास कर्यो, चिन्ता दूर थइ, उत्साहथी तेओना तमाम अंगो फूली गयां. चरणो चालवा माटे, बाहूबळ बताववा माटे, मुख ऋषिराज आगळथी अणहिलपुर पाटण जवानी आज्ञा मागवा माटे, वक्षःस्थळ करणवागेलाने भेटवा माटे, नेत्र मुनिराजनी निर्मळ छवि निरखवा माटे अने श्रवण मार्कंडेयना मुखथी आशीर्वचन श्रवण करवा माटे एक साथे आतुर थएल होय एम जणायुं. योगनी पराकाष्टाए पहोंचेला महात्मा मार्कंडेये तुरतज तेओना आन्तरिक विचारो जाणी मधुर वाणीथी कह्युं के पुत्र हरपाल ! तुं तारा स्वरुपने ओळख, साधारण मनुष्योनी माफक तुं आ संसारमां अवतर्यो नथी; तुं साक्षात् शंकरनो अंशावतार छे, तारा उपर परमात्मानो पूर्ण प्यार छे, तने सहायता आपवा माटे ते हरवखत तैयार छे, तारे कोइनी मदद नहि लेवी पडे. तुं सर्व कोइने आश्रय आपीश. कारणके पूर्वे प्रसन्न थएला पिनाकपाणिए कुंडमालने वरप्रदान करेल छे के–"हुं तारा कुळमां अवतरीश, हरपाल नाम धारण करीश अने शक्तिने वरीश." माटे वीरपुत्र ! तुं सत्वर पाटण सिधाव अने सर्व स्थळे तारी बहादुरी बताव. त्यां गया बाद शक्ति तने वरशे अने अनेक प्रकारे आपणा कुळनुं कल्याण करशे. आ रीते वडिल मार्कंडेयना वचनो सांभळी हर्षावेशमां आवेला हरपालदेवजी ऋषिराजने दंडवत् प्रणाम करी बोल्या के प्रभु ! जवा तैयार छुं, मात्र आपना मुखथी आशीर्वाद मळे एटलोज विलम्ब छे. "अविनाशी अजन्मा सतीपतिनो आशीर्वाद तने मळी चुक्यो छे. ते उपरांत हुं पण आशीर्वाद आपुं छुं के तारा सर्व मनोरथ सिद्ध थशे अने तारी सिंह सरखी गंभीर गर्जना सांभळी गमे तेवो बळवान् हशे ते पण बळरहित बनी जशे." आटलुं बोली मुनिवर मार्कंडेय अदृश्य थया अने राज हरपालदेवजीए अणहिलपुर पाटण तरफ प्रयाण कर्युं.

ए वखते ग्रीष्मना गौरवने गाळी महाराणी वर्षाए अखिल अवनिमां पोतानो अमल जमाव्यो हतो. गलीचा समान सुकोमळ लीलां घासथी भूमंडल छवाइ रह्युं हतुं. प्रिय दर्शनथी हर्षघेला बनेला मयूरो मधुर ध्वनिथी सर्व स्थळने शब्दायमान करी रह्या हता, अवरने नहि याच-

वानो टेकने प्राण साटे पाळनारा चातको " पीयु पीयु " करता व्योमपथमां विनोदथी विचरता हता, करिवृन्दना कुंभस्थळमांथी निकळता मुक्तानी शोभाने धारण करनार श्यामघनथी स्रवता जल बिन्दुओ भूमिना भूषणरुप थता हता, चन्द्रहासनी माफक चोर कोर चपला चमकी रही हती, शीतळ समीरनी लहरीओथी वनवेल्लीओ झूली रही हती, झिल्लीना झणकार, कोकिलाओना कळरव, जूगनूनी ज्योति अने सुखदायक सौरभथी वसुधा विविध प्रकारे विलसी रही हती. रमणीय ऋतुराजना आनंदप्रद आगमनथी कोकिलाओ कूकवा लागी, भ्रमरगण भय रहित बनी गुंजवा लाग्या, दशे दिशाओमां सुगन्धी समीर प्रसरी रह्यो, लवंग आदि लताओ प्रफुल्लित थइ, कदम्ब आदि वृक्षोनी डाळीओ डोलवा लागी, शुको मनोरंजक शोर करवा लाग्या, शब्दायमान सारिकाओ आनंद उपजाववा लागी तेमज गुलाबनी चटक, पंकजनी लटक अने मरालनी खटक कामदेवना कटकनी पेठ विरहीजनोने व्याधिना वारिधिमां डुबाववा लागी, गगनमंडलमां श्याम घनघटा नीचे छटाथी गमन करती बकपंक्ति नीलमना पहाड पर पडेला स्फाटिकनी शोभाने धारण करती हती. पतिने मळवा आतुर थएली प्रेमी प्रमदाओनी पेठे नीरथी छलकाती नदीओ पोताना स्वामी समुद्रने भेटवा अति उत्कंठा पूर्वक त्वराथी गति करवा लागी. ठामठाम दादुरना मनोहर स्वर संभळावा लाग्या, पथिकजन विह्वळ बनी पोतपोताने स्थाने विदाय थवा लाग्या; पृथ्वीना भाग्यनी महत्ता प्रदर्शित करनार, संयोगीओने सुख आपनार, विरही जनोना तनमां ताप उपजावनारु, कंजना पुंजनुं गंजन करनार, रसिक जनोने रंजन करनार अने मानिनीओना माननुं भंजन करनार अंजन समान वर्णवाळां वादळोथी छवाएल आकाश तरफ दृष्टि करतां मुनिओनां मन पण डोलवा लाग्यां. जगत् आखुं जलमय बनी गयुं, मन्दमन्द गर्जना करता वारिधरथी व्योमपथ व्याप्त थतां अवनिमां अतुल अन्धकार फेलायो; घनमां विद्युत, विरहीना मनमां व्याकुळता अने वन उपवन तेमज पर्वतनी टोच उपर मयूरो एकी साथे नृत्य करवा लाग्यां. संसारमां स्नेह छवाइ रह्यो, जीवननी वृद्धिथी जल जन्तुओ कल्लोल करवा लाग्या, उत्तंगगिरिशृंगथी पडता जलना अभंग प्रवाह अनंगना अंगनुं अस्तित्व जणावी रसिक लोकोना हृदयने रंगवा लाग्या, हर जगोए हरियाली जोइ हर्षित बनेला प्रेमी जनो हजारो कोशथी दोडी आवी पोतपोतानी प्रिया पासे हाजर थवा लाग्या, मात्र पत्थर समान छातीवाळा पुरुषोज परदेशमां पड्या रह्या. घरोघर मलारनी धुन मची रही, कोइ कोइ प्रमदाओ गाजवीजथी गभराइ प्रियतमने गळे लपटावा लागी, कोइ झूलवा लागी, कोइ झूलाववा लागी, कोइ गावा लागी अने कोइ रमणीओ रस-

भरी वातो करवा लागी; शहेरमां रहेनारा स्त्री पुरुषो समी सांजमां व्यालु करी मेघळी रात्रीमां बाहेर नहि निकळतां गृहना द्वार बंध करी अमलचेन उडाववा लाग्यां. महीमंडलनी मलिनता दूर थइ, रस्ताओ स्वच्छ बनी गया, छमछम पडता बिन्दुओथी तमाम मनुष्योना कर्णपुट तृप्त थवा लाग्या. विविध प्रकारना विनोदने आपनारी वर्षाऋतुमां केटलीएक सुभागिणी स्त्रीओ प्रेमथी आर्द्र थएला पतिना हृदयमां रसबीज बोवा लागी अने केटलीएक अभागिणी विरहिणी वामाओ लांबे रागे रोवा लागीं, केटलीएक सुभागिणी श्यामाओ मेहेंदीने पीसी कर कमळने विशेष रक्त करवा लागी अने केटलीएक अभागिणी अंगनाओ विरहनी महा व्यथाथी करने परस्पर मसळवा लागी, केटलीएक सुभागिणी सुंदरीओ हृदय वल्लभना हृदयथी हृदय लगावी वर्षानी यामिनीमां अपूर्व सुख अनुभववा लागी अने केटलीएक अभागिणी युवतिओ विदेशमां वळुंधी रहेला कान्त प्रत्ये कठोर वचनो कहवा लागी. पवनरुपी वजीर, दादुररुपी शूरवीर सिपाहीं, पावसरुपी मुसाहिब, श्यामघनरुपी द्विरद, गर्जनारुपी रणवाद्य, विद्युतरुपी निशान, इन्द्रधनुष्यरुपी कृपाण, मयूररुपी स्वार अने बकनी पंक्तिरुपी पैदलवाळुं सैन्य सज्ज करी जल रहित बनेला श्वेत पयोदरुपी तंबुओने ताणतो तेमज कोकिलारुपी वन्दीजनोए बिरदावेलो कामदेवरुपी राजा, स्वामी विनाना सूना घरमां विरह व्यथित वामाओने विशेष व्याकुळ करवा तत्पर थयो होय तेम जणावा लाग्युं. श्याम शरीरे विद्युतरुपी पीताम्बर पहेरी इन्द्र धनुपरुपी वनमालाने धारण करनार मन्द गर्जनारुपी मीठा शब्द संभळावनार, बकनी पंक्तिरुपी मोतीओनी माळाओथी मनोहर जणाता, मोरना शोररुपी वंसी वजावता अने जुगनूरुपी हीराओना हारथी आसपास प्रकाश फेलावता आकाशमां रहेला अम्बुद कृष्ण कन्हैयानुं स्वरुप धरी शोभवा लाग्या; एज वारिधरो विमळ वायुरुपी वृषभना वाहनवाळा, विशद बकना समूहरुपी शेषहारने धारण करनारा, शुभ्र अभ्ररुपी विभूतिथी विराजित अंगवाळा, दादुरना उमंग भरेला ध्वनिरुपी डमरुने वजावनारा, श्यामघटारुपी गजचर्मवाळा जळधारारुपी विशाल जटावाळा अने विद्युत्‌नी छटारुपी त्रिशूळने धरनारा विश्वपति शंकरने स्वरुपे विराजवा लाग्या. क्यांइ सीधा, क्यांइ वांका, क्यांइ गोळ, क्यांइ लांबा, क्यांइ त्रिकोण, अने क्यांइ चोखंडा मेघो गर्जनारुपी नोवत वजावी, दामिनीरुपी दिवाओ करी, जलबिन्दुरुपी सुमननो समूह तथा इन्द्रधनुपरुपी विशाळ माळा लइ, अभिनव अम्बुना बोजाथी झुकवारुप प्रणामपूर्वक मोरना शोररुपी स्तुति बोली तेमज पवनना झकोररुपी आसपास चमर ढोळी अपूर्व प्रीतिनी रीतिथी पूजन करता परमेश्वरना दासनी माफक दीपवा लाग्या. क्यांइ डोलता, क्यांइ झुकी प-

हता अने क्यांइ धूमीधूमी भूमिथी अथडाता, वारंवार गर्जना करता, मूसळधारारुपी अनहद मद जळथी मनोहर जणाता वक पंक्तिरुपी दंतोशळथी रमणीयताने धरता अने समीररुपी अंकुशने नहि गणकारता श्यामवर्णना सघनघन मदोन्मत्त मतंग जेवा जणावा लाग्या. सांज सवार नदी नाळाओमां नीर निर्झरना झणझणाट अंतःकरणमां अवर्णनीय आनंद उपजाववा लाग्या. झिल्ली गणरुपी झांझ घुरवाना ध्वनिरुपी मृदंग, विद्युतरुपी मसाल, सारिकाना शब्दरुपी सारंगी तथा दादुरना नादरुपी डफ विगेरे समयानुकूळ साजने सज्ज करी मयूररुपी गोपगणने नचावतो वर्षारुपी रासधारी रसिकजनोना हृदयने रिझाववा लाग्यो. घनथी दामिनीनो संयोग जोइ कामिनीओ पोतपोताना मनमोहनने आठे प्रहरभावथी भजवा लागी. सागर साथे सत्वर समागम करती नदीओने निहाळी असंख्य युवतीओ अधीरी बनी पोतपोताना मनभावनने भेटवा लागी; केटलांएक आनंदी जोडलां हरियाली भूमिमां पुष्पना भारथी नमी गएल वृक्षनी डाळीओ उपर हींचका बांधी शीत, मन्द अने सुगन्धी समीरनी लहेरो लेता हींचवा लाग्यां. तेमज केटलाएक प्रेमवश बनी वरसादथी भींजाता वस्त्रोनी दरकार नहि राखतां विनोदथी वन विहार करवा लाग्या. जे स्त्रीओना पति परदेशमां हता तेओने पश्चात्तापनो पार रह्यो नहि. विरहिणी स्त्रीओना धैर्यरुपी गढने तोडवा माटे महाराजा रतिपतिए वकना समूहरुपी निशानने फरकावता चपलारुपी कृपाणने चमकावता, गर्जनारुपी शंखनाद करता, अने शीतळ बुन्दरुपी बाणोने वरसावता पावसने पृथ्वी पर पठाव्यो होय एवुं अनुमान थवा लाग्युं. क्यांइ काळां, क्यांइ रातां, क्यांइ पीळां, क्यांइ श्वेत, क्यांइ रंगबेरंगी अने क्यांइ धूमस जेवां वर्णनां वादळांओ परोपकारीपणाना प्रबल प्रभावथी दिनकरनी द्युतिने दबावता आमेतम दोडादोड करतां दृष्टिगोचर थता हता. आवा उत्तम अवसरमां केटलीएक फूलवेली माफक फूलेली नवेली तथा अलबेली अंगनाओ सुखदायक किंकणीओनो शोर फेलावती, उरने उछाळती, वक्र दृष्टिथी भुजबन्धने भाळती अने लंकने लचकावती, विपरीत रतिनी शैली शीखवा माटे हर्षथी हिंडोळे हींचवा लागी. प्रेमना रंगथी रंगाएली रसभरी रमणीओ पोतपोतानी साहेलीओ संगे निर्मळ नखोमां मनोहर महेंदीनो रंग लगावी उमंगथी झूलाओ उपर झूलती हती. ते समये तेओना मनमां मार, हृदयपर हार अनेअणिआळी आंखोमां भाविक भरथार झूलवा लाग्या. केटलाएक रसिक जनो कुंजवनमां मनोभवना मदथी मस्त बनेला अने मलारनो मधुर आलाप करता पोतपोतानी प्रमदाओने झूलाववा लाग्या, परस्पर आसवना प्याला भरी पीवा लाग्या. मुखथी मुख मिलावी मन्दहास्य करवा लाग्या. तेमज स्नेह-

सागरमां निमग्न थइ सुखना भंडारो भरवा लाग्या. आ रीते वर्षाऋतुनी विविध वहार क्षितिमंडलमां छवाइ रही हती. परंतु राज हरपालदेवजीना हृदयमां तो ग्रीष्मनोज वासो हतो. विधिनो तमासो विचित्र छे, अगणित अनुचरोए आश्वासन कराएल राजपुत्र आजे एकाकी प्रवास करवा प्रवृत्त थएल छे, विविध प्रकारनां अमूल्य वाहनो पर विराजनारो वीरनर आजे पैदलनी स्थिति अनुभवे छे, श्वेत छत्रने शिरपर धारण करनारो धीर पुरुष आजे जलधाराथी भींजातो चाल्यो जाय छे, जुदीजुदी जातना जरकसी जामाओने पहेरनारो प्रतापी पृथ्वीपति आजे अन्य परिधानने अभावे आर्द्र वस्त्रोने हाथे नीचोवी वायुना वेगमां सूकवे छे; मनोहर महेलोमां निवास करनारो महीपति आजे वनवासी वनी वखत वितावे छे, दासी दासथी वींटाएलो दिव्य पुरुष आजे उदासीमां गरकाव वनी आमतेम गोथां खाय छे, हजारो हथिआरवंध योद्धाओए सुरक्षित शूरवीर आजे मात्र ढाल तलवारने सहायक वनावी धैर्यने धारण करी रहेल छे, भातभातनां भोजन करनारो भूपति प्रारब्धथी प्राप्त थतां कन्दमूळ अथवा फूलना आहारथी क्षुधाने शान्त करे छे, सुन्दर मखमलना बिछानापर शयन करनारो श्रेष्ठ पुरुष आवा आपत्तिना समयमां पृथ्वीरुपी पलंग माथे करतुं शीर्षक वनावी अध वींचायली आंखे रात्रि निर्गमन करी प्रभातमां मार्गनी मापणी शरु करे छे, जेणे पोतानी जींदगीमां जरापण तकलीफ न्होती उठावी, ते तेजस्वी नर दैवे दीधेला दुःखमय दिवसो अविच्छिन्नगमनमां गाळे छे, खाडा खवडा, नदी नाळां, अने वन पर्वत आदिना विकट रस्ताओने ओळंगता तेमज चिन्तारुपी सूर्यना तीव्र तापथी परितृप्त थएला राज हरपालदेवजी वर्षामां ग्रीष्मने अनुभववा लाग्या, मार्गने आच्छादित करी रहेला लीलां तृणो तेओने कंटक समान संकट उपजावनार निवड्यां, धूम्र वर्णनां वादळां उडेला धूलि समूह समान धैर्य तजावनार वन्यां. मयूरना मधुर अवाज कानना कोलाहल पेठे कर्णकटु जणावा लाग्या, चातकना चेष्टितथी राजहरपालदेवजीना हृदयमां विशेष व्याकुळता व्याप्त थइ, तेओ जल विन्दुओने जोइ प्रस्वेदना प्रवाहनी कल्पना करवा लाग्या, अने चपळाना चमकाराथी सूर्यना किरणोनी संभावना करता आगळ वध्या, सुसमृद्ध वनवेलीओने विलोकी तेओने स्वकीय राजसमृद्धिनुं स्मरण थवा लाग्युं, दशे दिशाओमां दृष्टिगोचर थता जलसमूहने तेओ झांझवानुं पाणीज समजता हता, शीतल समीर तेओना शोकतप्त शरीरनो स्पर्श करी उष्णताने धारण करतो हतो, जुगनूनी ज्योति तेओने ज्वाला समान जणाती हती, भ्रमरना पुंज धूम्रनी भ्रान्ति भरता हता, वृष्टि वंध थया वाद वृक्षोथी जलविन्दुओ खरतां हतां ते जाणे उक्त राजकुमारने आपत्तिमां अवशेष अश्रुपात करतां होय एम जणातुं हतुं, वन-

वेलीओ वायुथी नहि पण दुःखथी डोलती होय एम देखातुं हतुं, राज हरपालदेवजी तो एमज मानता हता के नारी आवी स्थिति जोइ विचारी कोकिलाओ आर्त स्वरे रुदन करे छे, दादुर आदि जलजन्तुओ दयार्द्र हृदयथी पुकार करता मने आश्वासन आपे छे, वकनी पंक्तिओ पाटणमां मारा समाचार पहोंचाडवा आकाशमार्गे उडी जाय छे, शुक सारिका आदि पक्षीओ मने आशीर्वचन संभळावे छे, हरपालदेवजीनुं मन संभ्रमथी घेराएलुं हतुं, जो के साक्षात् मार्कंडेये दर्शन दइ तेओने बोध आप्यो हतो, छतां पोताने शक्ति वरशे, ए वात तेओ दृढताथी साची मानी शक्या नहि, एने तो एटले सुधी शंका उपजी के ए मार्कंडेयज नहि, मार्कंडेयने वेशे कोइ ब्राह्मण आपत्तिमां धैर्य आपवा आवेल हशे एवा तर्कतरंगमां घडिभर तणाया, वळी घडिमां एवा निश्चय उपर आव्या के ए मुनि मार्कंडेयज, बीजुं कोइ नहि, ब्राह्मणने शी गरज के अघोर जंगलमां आवी मने आश्वासन आपे ? बस, एज अजरामर योगीराज. जे योगबळथी परकाया प्रवेश करवा शक्तिमान छे, ते हर-जगोए हाजर थइ शके एमां नवाइ शी ? आम शंका अने समाधान करता मजल दर मजल नवा नवा शैलो, सर, सरिताओ, कूप, वापी अने वृक्षोनी घटाओने विलोकता केटलाएक दिवसे परम सुखप्रद गुर्जर देशमां आवी पहोंच्या. सायंकाळनो समय होवाथी देवमन्दिरोमां थता झालरोना झणझणाट अने मनुष्योनो महान् कोलाहल सांभळी, पोताने खात्री थइ के हुं कोइ शहेरनी समीपे आवी पहोंच्यो छुं, तेओ तुरतज हिम्मतमां आवी गया, दीर्घ पंथना परिश्रमने लीधे बहुज थाकी गएला होवाथी बे घडी विश्रान्ति लेवा एक वृक्षनी नीचे आसन लगावी बेठा, तेओना संकटने साथे लइ सूर्यनारायण अस्त पाम्या अने चन्द्ररुपी मुखवाळी झिल्ली गणना नादरुपी मधुर उच्चार-वाळी, ताराओरुपी मन्द हास्यवाळी, चार प्रहररुपी उत्तम अंगवाळी अने चांदनीरुपी श्वेत साडीथी सुशोभित शरीरवाळी, रमणीय रात्री दासीनी माफक राज हरपालदेवजीनी सेवामां हाजर थइ, दैव सानुकूळ थतां सर्व कोइ सुखदायक बने छे, जे निद्रादेवी उपासना कर्या छतां पण आटला दिवस अलग रहेती हती ते आजे विना आमंत्रणे हरपालदेवजीना नयनद्वारमां दाखल थइ. अवि-च्छिन्न उंघथी पूरतो आराम लइ, ब्राह्म मुहूर्त्तमां जागृत थएला हरपालदेवजी स्नान सन्ध्या आदि नित्यकर्म करी फराकत थया तेवामां पुण्यमय प्रभात प्रगट्युं, सूर्यनारायण असंख्य किरणोरुपी करथी दुनियाने कल्याणनुं दान देता होय तेम रक्त स्वरुपे उदयाचळपर आरूढ थया, मित्रनो उदय जोइ कमळकोश विकसवा लाग्या, ब्राह्मणो वेद मंत्र भणी, पुरना परमाणुओने पावन करवा लाग्या, पक्षीओ पोतपोताना माळाओमांथी कल्लोल करतां आजीविका अर्थे उडवा लाग्यां, चारे

वर्ण पोतपोताना कार्यमां प्रवृत्त थया, देवालयोमां आरतिना मधुर अवाज थवा लाग्या, सुभागिणी स्त्रीओ गृहांगणने रंगोलीथी शृंगारवा लागी, केटलीएक सुंदरीओ अवनवा शृंगार सजी, शिरपर त्रांबा पितळना चकचकित बेडांओ लइ समान वयनी साहेलीओ साथे जल भरवा माटे गजगतिथी गमन करवा लागी, व्यापारी लोको पोतपोतानी दुकानो खोली लक्ष्मी देवीनी आराधना करवा लाग्या, अने खेडु लोको बळद्द समेत खेतीनी आबादी माटे कृषिना साधनोने सज्ज करी पोतपोताना क्षेत्र भणी चाली निकळ्या, असंख्य जनोने आवागमन करता जोइ हरपालदेवजीनुं हृदय प्रफुल्लित थयुं. पूछपरछ करतां तेओने पूर्ण खात्री थइ के नयनोने शान्ति सागरमां निमग्न करतुं ए परम सुशोभित शहेर अणहिलपुरपाटणज छे, दूरथी दृष्टि करतां फरकती ध्वजाने धारण करनारां उन्नत देवालयो जाणे आकाशमां अदृश्य रहेल अमरगणने धर्मनी उन्नतिना समाचार संभळावतां होय एम जणातुं हतुं, हवनाग्निना धूमथी अग्नि होमी विप्रोनां गृह सहजमां ओळखी शकाय तेम हतुं, राजमन्दिर अने धनाढ्यनां भुवनो पण भारे ठाठमाठथी शोभी रह्यां हतां, पहेरेगीरो पण पोतपोताना पहेरा उपर नियत थइ, प्रजावर्गने समय सूचववा माटे घंटानाद करवा लाग्या. राज हरपालदेवजीए विचार कर्यो के हवे शी रीते शहेरमां दाखल थवुं अने कोने त्यां अतिथि बनी उतारो करवो. तेवामां कोइएक वृद्ध पुरुषने हाथमां होको लइ पोता तरफ आवतो जोयो, जो के ए वृद्धजन कटिप्रदेशथी वांको वळी गयो हतो, तोपण तेनी गति जुवान जेवी जणाती हती, तेना नेत्रो अमलना केफथी नीचां नमी गएलां हतां. तोपण तेमां शौर्यनो रंग तेवोने तेवोज प्रकाशी रह्यो हतो, दाढी, मूछ अने भ्रकुटीना वाळ सफेद बनी गया हता, तोपण तेनो चहेरो कोइ बहादुर रजपूतनुं भान करावतो हतो. दांत पडी जवाथी गाल बेसी गया हता तोपण दाढी अने मूछनी जटाथी तेनुं मुख विशाल अने मनोहर जणातुं हतुं. पाघडीना पेच ढीला पडी गया हता तोपण तेनी करडाइमां कांइ न्यूनता जणाती न्होती, शरीरनो वर्ण श्याम हतो, तोपण तेनी कान्ति अबाध हती, पासाबंध अंगरखापर जरा मेल चडेलो हतो, तोपण तेनुं गौरव हृदयने रुचे तेवुं हतुं, पहोळा पायजामा उपर पछेडी अने तेना उपर भेट बांधी कोइ खानदान अमीरनी खूबी जणावतो ए वृद्धजन जेम जेम आगळ चाल्यो आवतो हतो तेम तेम हरपालदेवजीना हृदयमां " ए कोण हशे ? शा माटे आवता हशे ? " विगेरे तर्कवितर्क थवा लाग्या. प्रौढ अवस्थाए पहोंचेला पंचानननी पेठे गंभीरताथी गमन करतो ए वृद्ध पुरुष ज्यारे अति निकटमां आव्यो, त्यारे हरपालदेवजी आसनपरथी उठी चार डगलां सामे चाल्या, परस्पर रामराम करी उभा रह्या, आवेल वृद्ध पुरुषे

हरपालदेवजीने हाथ जोडी विनति करी के आजे मारा धनभाग्य के आपना दर्शन थयां, आप शुध्ध रजपूत छो, मारे घेर पधारो, हुं आपने तेडवा माटेज आंही आव्यो छुं. " आप कोण ? मने क्यांथी ओळखो ? " हरपालदेवजीए आश्चर्यथी पूछयुं "अने हुं रजपूत छुं ए तमोए शा उपरथी जाण्युं ?" त्यारे ते वृद्धजने तुरतज जवाब आप्यो के–मारी दीकरीना कहेवा उपरथी, तेणीए गइ काले मने कह्युं हतुं के प्रभातमां आपणे त्यां अतिथि आवनार छे, जाते रजपूत छे, माटे तमो सामा जइ मानपूर्वक तेओने आपणे घेर बोलावी लावजो. मारी दीकरीना वचन उपर मने पूर्ण श्रद्धा छे, ए जे जे वखते जे जे भविष्य कहे छे, ते साचुंज पडे छे. हुं सोलंकी जातनो रजपूत छुं अने मारुं नाम प्रतापसिंह छे. वृद्ध पुरुषनी आवी विवेकभरेली वाणी श्रवण करी राज- हरपालदेवजीने मुनिराज मार्केडेयना वचनोनुं स्मरण थवा लाग्युं, ए भविष्यने जाणनारी बाळा शक्ति तो न होय ? जे हशे ते देखाशे; अत्यारे विशेष चर्चा चलाववानो वखत नथी. चालो आपने त्यां आववा हुं तैयार छुं. " हरपालदेवजीए वृद्ध क्षत्रीना वचननुं मान राखी, तेना मिजमान बनवानी कबुलात आपी. " बन्ने जण त्यांथी शहेर तरफ चाली निकळ्या. थोडा समयमां पाटणना दरवाजामां प्रवेश करी, सोलंकी प्रताप घेर पहोंची गया.वर्तमान समयमां तो ए मकाननी स्थिति कांइ विलक्षण जणाइ, परंतु विचार करतां पूर्वे ए कोइ भव्य राजदरबार होय एम भान थतुं हतुं, जो के डेलीनां कमाड जर्जरित थइ गयां हतां, तोपण तेनुं किम्मती काष्ठ पूर्वनी उत्तम स्थितिने प्रदर्शित करतुं हतुं, छापरां उपरनी वळीओ विगेरे छिन्नभिन्न थइ गयां हतां, तोपण तेनी नमूनादार बांधणी नेत्रने आनंद आपती हती; बारी, बारणां, जाळी तथा झरोखा विगेरे जीर्ण बनी गएल हतां, तोपण तेमां करेलुं कोतरणीनुं काम भूतकाळनी श्रेष्ठ समृद्धिने सूचवतुं हतुं. मकाननी आसपास खाली पडेलां विशाळ खंडो पूर्वे अश्वशाळा अने गौशाळा अर्थे बंधावेला होय एम अनुमान थतुं हतुं, भींतोमां कोइ कोइ जगोए खाडा पडी गएला हता, तोपण ते उपरनुं चित्र काम मनोरंजक जणातुं हतुं, डेलीनी अंदर बन्ने बाजु सोसो माणसो सुखेथी बेसी शके तेवा विशाल छोबंध ओटाओ बांधेला हता. भोजननो समय थवाथी हरपालदेवजी एम समजता हता के रजपूतनी रीति प्रमाणे थाळी पीरसाइ डेलीए आवशे, परंतु तेम न थयुं, अंदरना ओरडामां तमाम तैयारीओ करवामां आवी. सोलंकी सुताए इच्छित अतिथि माटे अपार उत्साहथी भात- भातना भोजन बनाव्यां हतां, सर्व सामग्री सिद्ध थतां अंदरथी जमवानुं आमंत्रण आव्युं, वृद्ध सोलंकी राज हरपालदेवजीने ओरडामां लइ गया. त्यां सामसामा भरत भरेल मखमलना बे

चाकळाओ अगाउथी नांखी राखेल हता, अने वच्चे मनोहर बाजोठ मूकेलो हतो. घणा वर्षो पहेलां तैयार करावेला चाकळाओमां चोर कोर छिद्र पडी गएलां हतां अने बाजोठ पण पोतानी पुरातन अवस्थाने प्रगट करतो हतो, सोलंकी सुता विविध प्रकारनां व्यंजन अने शाक पाक आदि पीरसवा लागी, हरपालदेवजीनी शुद्ध दृष्टि तेनी मनोहर मूर्ति तरफ खेंचाणी, लज्जानो अपार भार लाध्या छतां पण तेना निर्मळ नेत्रो नावनी माफक रूप समुद्रमां सुखमय सफर करतां हतां, परम पवित्र कर्णपुट हरपालदेवजीनी सुधामय वाणी श्रवण करवा माटे आतुर बनी रह्यां होय एम जणातुं हतुं, निष्कलंक वदनचन्द्रनी ज्योति आसपासना अंधकारने अलग करती हती, पृथ्वीनो स्पर्श नहि करता तेजस्वी चरणतल दैवी तनुनी प्रतीति करावता हता, संक्षेपमां ते बाळानी तमाम अंगचेष्टाओ अमानुषीय होवाथी हरपालदेवजीनुं हृदय मुनिराज मार्कंडेयना वचनो पर दृढ विश्वासवाळुं थयुं. तेओ आनंदथी जमी उठ्या अने वृद्ध सोलंकीनी साथे पाछा डेलीए पधार्या, त्यां सोपारी खाइ होका पाणी पीधा पछी प्रतापसिंहे हरपालदेवजीने पूछयुं के आपे मारी दीकरीने केवा स्वरुपमां जोइ? "स्त्रीना स्वरुपमां" हरपालदेवजीए खात्रीथी जवाब आप्यो. पण आम पूछवानुं प्रयोजन शुं? त्यारे प्रतापे खुलासो कर्यो के मारां दीकरी लायक उम्मरनां थतां घणा रजपूतो तेना सगपण माटे मागुं करवा आववा लाग्या, परंतु सर्व कोइ तेनुं सिंहण जेवुं विक्राळ स्वरुप जोइ भयभीत बनी भागी जतां, ए वात पवनवेगे आखा पाटणमां प्रसरी, क्षत्री तो शुं पण हरकोइ मनुष्य मारी डेलीए आवता बंध थया, आखुं गाम मारुं दुश्मन बनी बेठुं, आ कौतुकनी कहाणीथी कोइ माणसे करण राजाना कान भंभेर्या जेथी तेणे क्रोधायमान बनी मारा गिरासनां चार गाम हतां ते पडावी लीधां अने गुजरान माटे जुज रकमनो दरमायो बांधी आप्यो, आथी हुं महान संकटमां आवी पड्यो, मारां स्त्री आठ वर्ष अगाउ स्वर्गवासी थयां, पूर्वनां पापने लीधे पुत्र प्राप्ति तो न थइ, परंतु परमात्माए पुत्री आपी ते पण आवी भय उपजावनार निवडी; एक दिवस में मारी पुत्रीनें पुछयुं के बेटा! आपणा रजपूतोनी जातिमां एवो रिवाज नथी, तमो योग्य उम्मरनां थयां जेथी मने बहु चिन्ता थाय छे, त्यारे तेणे कह्युं के—तमो चिन्ता नहि करशो, रजपूतोमां ए नवो रिवाज दाखल करवा माटेज आपने त्यां मारो जन्म थयो छे, जे पुरुष मने स्त्रीना स्वरुपमा जोशे एज मारो पति छे, एम आपे समजी लेवुं. मारी दीकरीए भाखेलुं ए भविष्य आजे आपना आगमनथी हुं साचुं मानुं छुं, बस, आपज मारी पुत्रीना पति, वृध्ध सोलंकीनां आवा वचनो सांभळी हरपालदेवजीना विचारो क्षणवारमां बदलाइ गया, तेने तो

एमज थयुं के आ डोसो मारे गळे पडवा मागे छे, तेनी कन्या म्होटी थवाथी अने सर्व कोइ तेना संबंधनो अस्वीकार करता होवाथी तेने मारी साथे परणाववा धारे छे, बेशक ए बाळा मने तो दैवीरूप गुणथी संपन्न देखाय छे, परंतु बीजां माणसो तेने सिंहणने स्वरुपे निहाळे ए केवुं कौतुक? अने केटलुं बधुं भय भरेलुं ? आवी आफतमां पडवानुं आपणने शुं प्रयोजन छे. हुं रजपूत छुं ए तो आकृति उपरथी पण जाणी शकाय, विशेष चमत्कार जोया विना ए शक्ति छे एम शी रीते साबीत थाय ? आंही हरपालदेवजी आ प्रमाणे तर्कवितर्क करे छे अने अंदरना ओरडामां बेठेला शक्ति ज्यारथी मिजमान जमी उठ्या त्यारथी तेना मनोविचार जाणी मंदहास्यपूर्वक विचारवा लाग्यां के-हरपालदेवजी अवश्य आशुतोषना अंशावतार छे, परंतु तेनी तमाम चेष्टाओ मानुषी छे, हजी ए मारा स्वरुपने ओळखी शक्या नथी, जेम ए मारो चमत्कार जोवानी इच्छा राखे छे तेम हुं पण तेनो चमत्कार जोया पछी तेओने मारा प्रियतम बनावीश. हरपालदेवजीने बे घडी आराम लेवा अर्थे डोसाए डेलीमां रंगित ढोलीआ उपर रेशमी गादलुं नांखी आप्युं, जेना उपर जरा वार लेटी उठेला राज हरपालदेवजीने प्रताप सोलंकीए नम्रताथी पूछयुं के—आप क्यांना रहीश अने आपना पितानुं नाम शुं ? त्यारे हरपालदेवजीए उत्तर आप्यो के जेणे "हुं रजपूत छुं" एवुं भविष्य आपने संभळाव्युं ए अन्य हकीकतथी पण आपने वाकेफ करशे; परंतु मारे आंहीना महाराजा करणने मळवा विचार छे तो कचेरी क्यारे भराय छे ? अने विदेशी माणसने तेओनी मुलाकात लेवी होय तो शी रीते लइ शकाय छे? ते आपना जाणवामां हशेज. "हा बधुंए मारा जाणवामां छे" सोलंकीए गंभीरताथी प्रत्युत्तर आप्यो. आंही हमेशां रात्रीए रोशनी टाणे भभकादार दरबार भराय छे अने एज वखते महाराजा करण, कवि, पंडित, गवैया विगेरे गुणीजनो अने कळाकुशळ पुरुषोनी मुलाकात ले छे. मात्र बे घडि दोढिए बेसी चोपदार साथे अंदर खबर आपवा जोशे. सायंकाळनो समय थवा आव्यो हतो, राज हरपालदेवजी पोशाक पहेरी केडे लांबी तलवार लटकावी हाथमां बरछी लइ शुभ शकुन जोइ कचेरीमां जवा रवाना थया; मार्गमां अगणित जनोनी आवजा थइ रही हती, रमणीय अश्वरथोमां बेसी बाग बगीचामां फरवा गएला गृहस्थ लोको पोतपोताना घर भणी जता हता, केटलाएक अमीर उमरावो पालखी तेमज तावदान आदि यान पर आरूढ थइ दमामथी राजदरबारनो रस्तो लेता हता, सर्व स्थळे रोशनी थवा लागी, बजारनी बहार कांइ ओरज हती; अनाज, कापड, सोनुं अने चांदी विगेरेनी खरीदी धमधोकार चाली रही हती, मकानोनी बांधणी मनोरंजक जणाती हती, दरेक व्यापारीओ भिन्नभिन्न

वस्तुओनो संग्रह करी खरीदनार पासेथी मन मान्या दाम मेळवता हता, आसपासना गामडांओ-मांथी हटाणुं करवा आवेला हजारो माणसो सायंकाळनो समय थइ जवाथी अति उतावळ दर्शा-वता उन्नत स्वरे एक बीजाने एकत्र करवा शोर बकोर मचावी रह्या हता, गवळी लोको दूधनो विक्रय करवा माटे चौटामां हारदोर बेसी गया हता,ज्यां ग्राहको वगर बोलाव्ये आवी पोतपोतानी इच्छानुसार पयःप्राप्ति करी पाछा फरता हता, केटलाएक भाविक जनो प्रभुना दर्शन अर्थे देव-मन्दिरो भणी दोडादोड करी रह्या हता अने केटलाएक लोको चौटा वच्चे दृढ आसन लगावी परस्पर सुखदुःखनी वातो संभळावी रह्या हता. राज हरपालदेवजी अति उत्सुकताथी छटादार पाटण शहेरनी प्रभाने जोता जोता राजमन्दिरनी समीपे आवी पहोंच्या, त्यां विशाळ दरवाजा आगळ हजारो हथिआरबंध योद्धाओ, माल मलीदा खाइ मची गएला मल्ल लोको अने भाट चारणो विगेरेनी भीड मची रही हती, अमीर उमरावो तथा दरबारी नोकरो दमामथी अंदर दाखल थता हता, नोबतना नाद अने शरणाइना मधुर स्वरथी श्रोताओना मनमां प्रसन्नता छ-वाइ रही हती. दीप मालिकानी द्युतिथी रात्रि छतां दिवसनी प्रतीति थती हती, मसालची लोको सोना रुपानी मसालो सळगावी उतावळी गतिथी गमन करता हता, बन्दीजनो उन्नत स्वरे महा-राजा करणनां गुणगान करी रह्या हता. राज हरपालदेवजीए विचार कर्यो के हवे कोना साथे महाराजाने संदेशो कहेवरावबो तेवामां अंदरथी अंसपर सुवर्णनी सुशोभित छडीने धारण करनार एक वृद्ध जनने बाहेर आवतो जोयो, ए छडीदारे पोताना नियम प्रमाणे द्वार आगळ उभा रही "कोइ विदेशी माणस महाराजानी मुलाकात लेवा इच्छा राखे छे ?" एम उन्नत स्वरे पूकार कर्यो, राज हरपालदेवजीए तेओनी समीपे जइ कह्युं के हुं महाराजाने मळवानी इच्छा राखुं छुं, छडीदारे पूछ्युं के तमे जाते कोण छो अने शुं हुन्नर जाणो छो ? हरपालदेवजीए जवाब आप्यो के हुं जाते रजपूत छुं अने धनुर्विद्या के जे आजकाल सर्व जनोथी अज्ञात छे ते उत्तम रीते जाणुं छुं, छडीदारे तुरतज अंदर जइ महाराजा करणने जाहेर कर्युं, जेथी करणवाघेलाए अति उत्कंठा-पूर्वक हरपालदेवजीने कचेरीमां दाखल करवानी आज्ञा आपी; छडीदार सत्वर बाहेर आव्यो अने विदेशी रजपूतने अपूर्व आदर सहित अंदर लइ गयो. कचेरीमां रोशनीनो झाकझमाक थइ रह्यो हतो, आजुबाजु गादी तकीयानी बेठको गोठवेली हती तेना उपर अमीर उमरावो तेमज दरबारी जनो पोतपोताना दरज्जा प्रमाणे एक पछी एक बेठेला हता अने मध्य भागमां एक रत्नजडित उन्नत सिंहासन पर महाराजा करण वासवनी पेठे विराजी रह्यो हतो, पाछळना भागमां सेवकजनो

चामर ढोळता हता, तेनी सामे कलित अने नाजुक अंगवाळी कंचनी नखराथी नृत्य करती हती तेमज गवैयाओ कल्याण रागनो मधुर आलाप करी रह्या हता; सिंहासनना अग्र भागमां उभेला छडीदारो "महाराजा करणने घणी खम्मा" उंचा स्वरथी उच्चार करी कचेरीनी शोभामां अभिवृद्धि करता हता, समृद्धिनो सागर छल्यो होय तेवो देखाव जोइ राज हरपालदेवजी प्रसन्न थया अने महाराजा करणनी सन्मुख जइ अनमीपणे उभा रह्या, तेओनी क्षात्र तेजथी छवाएली भव्य मुखमुद्रा जोइ वाघेला करणनुं अन्तःकरण आकर्षायुं, ते अति प्रेमपूर्वक बोल्यो के-आजकाल लय पामेल धनुर्विद्यानी सजीवन स्थिति बताववा आवेल बहादुर रजपूत बेसो. महाराजा करणनी आज्ञाने मान्य राखी राज हरपालदेवजी आसनपर बेठा, ते वखते तेओए पोताना दक्षिण भुजमां रहेली वरछी भूमिमां भोंकी, जेथी जाजमनी अंदर छिद्र पडयुं, विदेशी रजपूतनी आरंभमांज आवी वर्तणुक जोइ तमाम अमीर उमरावो क्रोधायमान बनी गया अने तेनी छाया महाराजा करणना मुख माथे कांइक पडी. परंतु तेने तो अप्राप्य धनुर्विद्यानुं विवेचन सांभळवानी अभिलाषा होवाथी हरपालदेवजीना उक्त अपराधमां तेणे गुणनी कल्पना करी, शौर्यथी भरेला शुद्ध रजपूतो हमेशां बेदरकार होय छे, बळरुपी समृद्धिवाळा बहादुर पुरुषो इन्द्रने पण तुच्छ गणे छे तो पछी राजा महाराजाओथी निडर रहे एमां शी नवाइ? एवा शूरवीरोनी सहायताथी "राजा" एवुं नाम धारण करी शकाय छे. आवा वीर जनो जे कांइ कर्म करे छे ते उद्धताइ नहि परंतु पोतानुं बाहुबळज बतावे छे. घडिभर आवा उत्तम विचारो करी महाराजा करणे धनुर्विद्या सांभळवानी उत्सुकता बतावी, त्यारे हरपालदेवजीए कह्युं के—महाराजा! धनुर्विद्यानो विषय कांइ न्हानो सुनो नथी के हुं आपने घडि अधघडिमां संभळावी दउं, एमां वधारे वखतनी जरुर छे; ए विद्या गुप्त अने समजवा जेवी छे, राजाओने माटे तो ते अखूट समृद्धिनो खजानो छे. आटला बधा मनुष्योनी हाजरीमां ए वंदनीय विद्यानुं विवेचन करवुं ए घणुंज अयोग्य गणाय, आप तथा आपना अंगरक्षकोनी सन्मुख कहेवामां मने कशी हरकत नथी. महाराजा करणने पण ए वात उचित जणातां तेणे तुरतज कचेरी बरखास्त करावी, मात्र पोताना अंगरक्षकोने पासे राख्या. आथी दरबारी लोकोना मनमां विशेष माठुं लाग्युं, परंतु महाराजा करणनुं मन धनुर्विद्यानो नविन विषय श्रवण करवाने एटलुं बधुं आतुर बनी रह्युं हतुं के तेणे तुरतज अति सन्मान पूर्वक राज हरपालदेवजीने सिंहासननी समीपना आसन पर बेसवा आज्ञा आपी. स्वस्थ बनेला हरपालदेवजीए सद्‌गुरुनुं ध्यान धरी बोलवानी शरुआत करी के—महाराजा करण! प्रसन्न थएला महादेवजीए परशुरामने

कहेली वशिष्ठ गुरुए विजयनी इच्छावाळा राजर्षि विश्वामित्रने कहेली अने मारा गुरुए मने कहेली यजुर्वेद अने अर्थवेदना रहस्यवाळी धनुर्विद्या हुं आप आगळ संक्षेपथी कही संभळावुं छुं, धनुर्वेदना चार पाद छे, तेमां प्रथम पादनी अंदर धनुर्वेदनो दिक्षा विधि, बीजा पादमां अभ्यास करवानो विधि, त्रीजा पादमां प्रक्षेपण आदि विधि अने चतुर्थ पादमां अस्त्र सन्धान आदि प्रयोगनो विधि छे. धनुर्वेदनो अभ्यास कराववामां गुरुपदने लायक ब्राह्मण छे, धनुर्वेदथी युद्ध करवानो अधिकार तो क्षत्रिय तथा वैश्य ए बे वर्णनेज छे अने शूद्रोने पोतपोतानी इच्छानुसार शिकार आदि करवानो अधिकार छे. मुक्त अर्थात् चक्र आदि जे हाथथी फेंकी शकाय तेने अस्त्र कहे छे. खड्ग आदि अमुक्त, बरछी आदि मुक्तामुक्त अने शर तथा गोळी आदि यन्त्र मुक्त ए चार प्रकारनां आयुध गणाय छे; दुष्ट लोको, डाकू अने चोर आदिथी उत्तम पुरुषोनी रक्षा करवी तथा धर्मथी प्रजानुं पालन करवुं, एज धनुर्वेदनो हेतु छे. जे शहेरमां सुप्रसिद्ध एक पण धनुर्धारी होय ते शहेरथी शत्रुओ हमेशां दूर रहे छे, धनुर्विद्या उत्तम रीते परीक्षा कराएला ब्राह्मणनेज अर्पण करवानुं शास्त्रमा कहेल छे; लोभी, धूर्त, अने आपेल विद्यानो उपकार नहि माननारा पुरुषने तेमज मन्द बुद्धिना मनुष्यने कदिपण धनुर्विद्यानुं दान देवुं नहि. ब्राह्मणने धनुषथी, क्षत्रियने तलवारथी, वैश्यने भालाथी अने शूद्रने गदाथी युद्ध करतां शिखडाववुं, धनुष, चक्र, भाला, खड्ग, छरी, गदा अने हाथेथी मल्लयुद्ध ए रीते सात प्रकारनां युद्ध प्रसिद्ध छे. जे सात प्रकारना युद्ध जाणतो होय ते आचार्य, चार प्रकारनां युध्द जाणतो होय ते भार्गव, बे प्रकारना युद्ध जाणतो होय ते योध अने एक प्रकारनुं युद्ध जाणतो होय ते गण एवो संज्ञाथी ओळखाय छे. हस्त, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, त्रण उत्तरा, अनुराधा, अश्विनी अने रेवती ए दश नक्षत्रो धनुर्विद्या शीखवाना मुहूर्त छे, चन्द्रमा पहेले , त्रीजे, छट्ठे, सातमे, दशमे तथा अग्यारमे होय त्यारे आचार्य धनुर्विद्याना शुभ कार्यमां शिष्यने प्रवर्तावे छे, धनुर्विद्या शीखवाना प्रारंभमां तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, द्वादशी अने त्रयोदशी ए तिथिओ तेमज रवि, शुक्र अने गुरु ए त्रण वार शुभ गणाय छे, ए दिवसोमां दान अने होम पूर्वक देवताओने तृप्त करी गुरु शिष्यने शस्त्र आपे, ते वखते त्या अनेक ब्राह्मण अने कन्याओने भोजन कराववुं जोइए तेमज ते दिवसे शिवभक्त योगीजनोनुं प्रेमथी पूजन करवानुं पण शास्त्रमां कहेल छे, त्यारबाद गन्ध, माला, अन्न आदि,वस्त्र अने आभूषण विगेरेथी गुरुने तृप्त करी तेओनी पूजा करवी. कृतोपवास शिष्ये मृगचर्म धारण करी हाथ जोडी गुरु आगळ धनुषनी याचना करवी, त्यारबाद आचार्य शिष्यनी कार्यसिद्धि अर्थे शिवजीए

कहेलो पाप अने विघ्नोनो विध्वंस करनार अङ्गन्यास करे. शिखाना स्थानपर ज्यां ब्रह्मरन्ध्र छे त्यां शंकरनुं, बन्ने बाहुओ पर भगवाननुं, नाभिना मध्य भागमां ब्रह्मानुं अने जंघाओ उपर श्री गणेशजीनुं स्थापन करवुं, त्यारपछी " ॐ ह्रौं शिखास्थाने शंकराय नमः । ॐ ह्रौं बाह्वोः केशवाय नमः । ॐ ह्रौं नाभि मध्ये ब्रह्मणे नमः ॐ ह्रौं जंघयोर्गणपतये नमः ॥ ए चार मंत्रोथी चारे देवताओना ध्यान पूर्वक शिखा आदिने करथी स्पर्श करता जवुं. आ रीते अंगन्यास करनार तथा करावनार बन्नेनुं कल्याण थाय छे अने तेओने मारण आदि दुष्ट मंत्रो पराभव करी शकता नथी. गुरुए शिष्यने "काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषः परि " ए वेदमंत्रथी वेद विधिपूर्वक मानुष धनुष अभिमंत्रित करी आपवुं, त्यारबाद प्रथम फळ रहित बाणथी पुष्पवेध कराववो, पछी फळ सहित बाणथी मत्स्यनुं छेदन कराववुं, अने छेवट मांसवेध सिद्ध कराववो, ए रीते त्रण प्रकारना वेध सिद्ध थतां बाण सर्व साधक बने छे अर्थात् तमाम निशानोने वींधी शके छे. मांसनो वेध करती वखते वेध न थतां जो बाण पूर्वदिशामां जइ पडे तो ते योध्धाने विजय अने सुख प्राप्त थाय छे, दक्षिण दिशामां पडे तो बहुज क्लेश अने परदेशगमन थाय छे, पश्चिममां पडे तो धन अने धान्य मळे छे, उत्तरमां पडे तो सर्व कार्यनी उत्तम प्रकारे सिद्धि थाय छे, इशान कोणमां बाण पडे तो पवन प्रचंडताने धारण करे छे अने नैऋत्य, वायव्य, तथा अग्निकोणमां पडे तो आनंदनी साथे श्रेष्ठ फळनी समुपलब्धि थाय छे. शंख अने दुन्दुभिना शब्दनी साथे त्रण वेध सिद्ध करी, धनुष अने बाण प्रणाम पूर्वक गुरु आगळ राखी देवां अने गुरु दक्षिणा आप्या बाद पाछां ग्रहण करवां. प्रथम अभ्यास करवाने माटे यौगिक धनुष के जेनाथी बाहुबळ बंधाय अर्थात् प्रथम साधारण धनुषथी निशान पाडतां शीखवुं, अने त्यारबाद शींगडानुं धनुष पोताना बाहुबळनो तोल करी तेनाथी कांइक न्हानुं धारण करवुं. धनुर्धारी पुरुष राजाने प्राणथी पण प्यारो थइ पडे छे, प्राणथी अधिक धनुष नथी एटला माटे एवा वजननुं धनुष धारण करवुं के जेथी सुखपूर्वक बाण फेंकी शकाय, एवुं कठिन, बळवान के वजनदार धनुष धारण न करवुं के जेथी छाती फाटी जाय, कारणके धनुषथी पीडित थएलो धनुर्धारी सरलताथी निशानने ताकी शकतो नथी; धनुष खेंचवानी अने तेनो बोजो उठाववानो चिन्ताथीज स्तब्ध बनी हार पामे छे. पोताना बळथी न्यून बळवाळुं चाप हमेशां श्रेयस्कर छे. साडा पांच हाथनुं धनुष श्रेष्ठ अने दिव्य गणाय छे अने ते देवताओने माटे छे के

जे प्रथम महादेवे धारण कर्युं हतुं; चोवीश आंगळनो एक हाथ अने चार हाथनुं धनुष कहेवाय छे, उत्तम लक्षणोथी युक्त एज धनुष मनुष्ये धारण करवुं जोइए. त्रण, पांच, सात अथवा नव पर्वनुं धनुष सर्वदा शुभ करनारुं छे अने चार, छ अथवा आठ पर्वनुं धनुष वर्जित गणाय छे. केटलाएकनो एवो मत छे के नव वितस्तिनुं पण धनुष थाय छे. अति जीर्ण, काचुं, वांसनी जातिथी विरहित, बळेलुं, छेद्रवाळुं, वीधाएलुं, जेना खेंचवाथी हाथ बाहेर चाल्यो जाय अथवा अंदर रही जाय, गुण रहित अने गुणथी आच्छादित अर्थात् म्होटा अने पहोळा गुणथी ढंकाएलुं, कांडदोषथी युक्त अर्थात् उत्तम स्थानमां उत्पन्न थएल वांसनुं बनावेल न होय, तथा जेना गळामां तेमज तळीए गांठ होय ते धनुष वर्जित गणाय छे. अरुख वांस अथवा शींगडानुं, सुवर्णनुं, चांदीनुं, त्रांबानुं अने लोष्ठ आदिनुं धनुष टुटी जाय छे, जो धनुषनी प्रथम अजमायश न करी होय तो तेनो भंग थाय छे, अति जीर्ण धनुष कठिनताथी धारण करे छे, जे धनुष जातिना वांसनुं बनावेल न होय ते युद्ध समये उद्वेग उत्पन्न करे छे अर्थात् मनने भ्रमित बनावी दे छे अने बन्धुजनोनी साथे लडावी मारे छे, दग्ध धनुषने धारण करवाथी घर बळी जाय छे, सछिद्र धनुषथी युद्धनोज नाश थाय छे, कारणके मनमां एवी चिन्ता रहे छे के कदापि ए टुटी तो नहीं जाय ? युद्ध समये अन्य चिंता थवाथी उतावळे बाण फेंकी शकातां नथी अने एथी पराजय प्राप्त थाय छे, धनुषनी बाहेर हाथ चाल्यो जवाथी निशान पर दृष्टि पडती नथी, एवीज रीते हाथ अंदर रही जाय तोपण निशान जोइ शकातुं नथी, जो बाणने ओछुं चढाववामां आवे तो संग्राममां भंग पडे छे, अने जो बाण प्रत्यचा साथे चोटी जाय तो ते दृढ लक्ष्यमां सिद्ध थतुं नथी तेमज गलग्रन्थि तथा तलग्रन्थिवाळुं धनुष हमेशां हानिकारक छे, एटला माटे उक्त दोषोथी रहित उत्तम धनुष कार्यसिद्धि करावी शके छेः विष्णु भगवाननुं परम दिव्य आयुध शार्ङ्ग नामनुं धनुष विश्वकर्माए सात वितस्तिनुं बनाव्युं हतुं. ते धनुष विष्णु भगवान सिवाय स्वर्ग, पाताळ के पृथ्वीपर कोइने हाथ चढयुं नथी अने कोइने वश थतुं नथी. ए धनुष अति उत्तम अने घणुंज पुरातन गणाय छे. छ वितस्ति उपरांत छ आंगळनुं बनावेल धनुष अर्थसिद्धिमां उपकारक थाय छे. घणे भागे शार्ङ्ग धनुष हाथी अने घोडा उपर स्वार थनार पुरुषोए धारण करवा योग्य छे. रथी अने पेदल लोकोए तो वासनुंज धनुष धारण करवुं. लोह, शृंग अने काष्ठ ए त्रण द्रव्यथीज धनुष बने छे; लोहमां सुवर्ण, चांदी, त्रांबु, अने श्याम लोष्ठनो समावेश थाय छे. शृंगमां महिष, शरभ अने रोहित (मृगनी एक जाति छे, तेने चार उपर अने चार नीचे मळी कुल आठ पग होय छे, तेनां शृंग विशाळ होय

छे, ते उंट समान उंचा थाय छे, निरंतर वनमां रहे छे अने कश्मीर देशमां रहेनारा मनुष्यो तेने जाणे छे) ना शृंगनुं ग्रहण थाय छे, तथा काष्टमां चन्दन, वेतस धान्वन, शाल, शालमलि, शाक, ककुभ, वांस अने अंजनवृक्ष एटलाओनो समावेश थाय छे. धनुपनी प्रत्यंचा रेशमना दोरानी बनावत्री. न्हानी आंगळी जेवी जाडी धनुपना प्रमाणमां शोभे तेवी स्वच्छ करेला दोराने त्रेवडो वणी त्रिकूणी बनावेली प्रत्यंचा युद्धमां विजय आपे छे, तेने गमे तेटला वळथी ताणीए तोपण ते तुटनी नथी. जो रेशमनो दोरो न मळे तो हरिणना स्नायुनी तांत, महिषना आंतरडाओनो तांत अथवा तुरतमा मारेला वकरानां आंतरडांओनी प्रत्यंचा वहु उत्तम वने छे. रोम रहित तांतनी अथवा पाकेला वांसनी छालनी प्रत्यंचा पण मजबूत होय छे परंतु रेशमना दोरानी प्रत्यंचा युद्धमां सर्वोत्कृष्ट गणाय छे. भाद्रपद मास प्राप्त थतां आकडानी त्वचा पण प्रत्यंचा बनाववामां उपयोगी थइ पडे छे, तेना उपर फक्त मजबूत दोरो वींटवो जोइए. क्षत्रीओए कपास, मुंज, भंग, स्नायु अने अर्कनी प्रत्यंचा वनाववी. स्थूल नहि तेम सूक्ष्म पण नहि, पक्व अने उत्तम भूमिमां उत्पन्न थएलां वाणोने ग्रहण करवां. हीन ग्रन्थिवाळुं अने फाटी गएलुं शर कदिपण उपयोगमां न लेवुं, पूर्ण ग्रन्थिवाळुं, श्रेष्ठ, पक्व अने पीळां रंगनुं वाण अनुकूळ समये प्राप्त करवुं. शरदऋतु समये अर्थात् मार्गशीर्ष मासमां वृश्चिक राशिना सूर्य होय त्यारे वाण वनाववा माटे शरनो वांस लइ आववो. कठिन, गोळ, अने श्रेष्ठ भूमिमा उत्पन्न थएलो शरवंश लावी एक वाण वे हाथ लांबु अथवा वे हाथमां एक मुष्टि ओछा प्रमाणनुं वनाववुं अने तेनी जाडाइ फक्त कनिष्ठिका जेटली राखवी,एवा वाण वनाव्या वाद यंत्र अर्थात् धनुपपर चढाववां. काक हंस, पारावत, वक, क्रौंच पक्षी. मयूर, गृध्र, अने कुरर उपर शरनुं अनुसंधान श्रेष्ठ गणाय छे, सामान्य वाणमां छ आंगळना प्रमाणथी पक्षच्छेद करवो. अने शार्ङ्ग धनुपपर चढाववाना वाणमां दश आंगळना प्रमाणथी पक्षच्छेद करवो, दरेक वाणना चार चार खाडा स्नायुना तन्तुथी वांधवा जोइए. स्त्री, पुरुष, अने नपुंसक ए रीते त्रण प्रकारना वाण होय छे. जे अग्र भागमां स्थूल होय ते स्त्री वाण, पाछला भागमा स्थूल होय ते पुरुष वाण अने सम होय तेने नपुंसक वाण जाणवुं, ए नपुंसक वाण मात्र निशान राखवाने माटेज छे, स्त्री वाण आगळथी वजनदार होय छे जेथी ते दूर जइ प्रहार करी शके छे अने पुरुष वाण गमे तेवा दृढ पदार्थनुं पण छेदन करे छे. वाणना फळानां मुख्य दश भेद छे. आरा समान मुखवाळुं, खरपा जेवुं, गायना पुच्छ समान आकारवाळुं, अर्धचन्द्राकार, सूची समान मुखवाळुं, वरछी समान आकारवाळुं, वत्सना दांत जेवुं, वे भालावाळुं, कर्णिक अथवा पुष्पनी पांखडी जेवुं, अने काकनी चंचु

समान आकारवाळुं फळुं होय छे. आ दश भेद उपरांत बीजा अनेक प्रकारना आकार थइ शके छे. ए फळांओ लोष्टनां तीव्र धारवाळां बनाववां.

ढालनुं छेदन करवामां आरामुख, हाथ कापवामां क्षुरप्र, निशान मारवामां गोपुच्छ, शिर, गरदन, धनुष तथा बाणने कापवामां अर्धचन्द्र, कच तोडवामां सूचीमूख, हृदय वींधवामां भल्ल, धनुषनी दोरी कापवामां वत्सदंत, बाण रोकवामां द्विभल्ल, लोष्टनुं बाण कापवामां कर्णिक अने अन्य वेधनमां काकतुंड नामना शरनो उपयोग करवो. गोपुच्छ बाण शुद्ध काष्टनुं बनावेल होवुं जोइए, अने तेना अग्र भाग उपर त्रण आंगळनो वींधेल लोढानो कांटो राखवो जोइए. बाणना फलक स्थान उपर साही कांटो लगाववाथी गोपुच्छ बाण बने छे. तेनाथी बाण फेंकवानो अने निशान ताकवानो अभ्यास करवो जोइए. बाणना फळां उपर शरवंशनी जडनो लेप करवाथी घाव असाध्य बने छे अर्थात् ते शरना प्रहारथी थएलो घाव कोइपण औषधिथी रुझातो नथी, ए शरवंशनी ओळखाण मात्र एटलीज छे के, जेना समूहपर स्वातिना बुन्दो पडतां श्वेत पीळां बनी जाय, तेनी जडमां विष उत्पन्न थाय छे, ए जडने उपयोगमां लेवी. सर्व स्थळे पवन बंध होय तो पण जे निरंतर कंप्या करे ते शरवंश छे एम समजवुं, दिव्य औषधिओथी लेपन कराएलां फळां-ओ कोइपण प्रकारे नहि कपातां कवचोने वृक्षोना पर्णोनी पेठे छिन्नभिन्न करी नांखे छे. पीपळ, सैन्धव अने कुष्ट ए त्रणेने गोमुत्रमां खुब पीसी तेनाथी शस्त्रने लेप करवो अने पछीथी ए शस्त्रने मोरनी डोक समान नीलुं थइ जाय त्यां सुधी अग्निमां तपाववुं, ज्यारे ते तमाम औषधिने शोषी जाय, त्यारे स्वच्छ जळमां तेने बुझावी नांखवुं. जे बाण आखा लोढाना बनावेल होय, ते नाराच कहेवाय छे, ते पांच महान् पक्षयुक्त होय तो कोइने हाथे सिद्ध थइ शके छे. जे नळयन्त्रथी फेंक-वामां आवे छे ते लघु अर्थात् न्हानां बाण कहेवाय छे, तेनुं नाम नालीक छे अर्थात् गोळीनुं नाम नालीक बाण छे, अने नळयंत्र नाम बन्दूकनुं छे ते घणे उंचे अने दूर फेंकवामां तथा गढ-

आरामुख

छुरप्र

गोपुच्छ

अर्धचंद्र

सूचीमुख

भल्ल

वत्सदन्त

द्विभल्ल
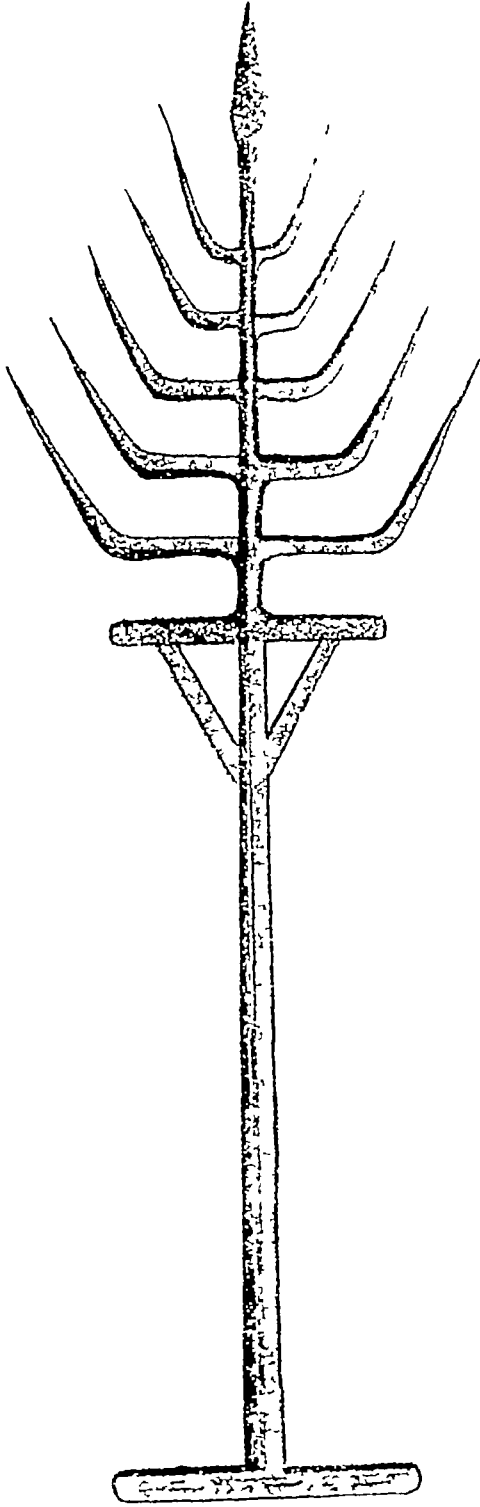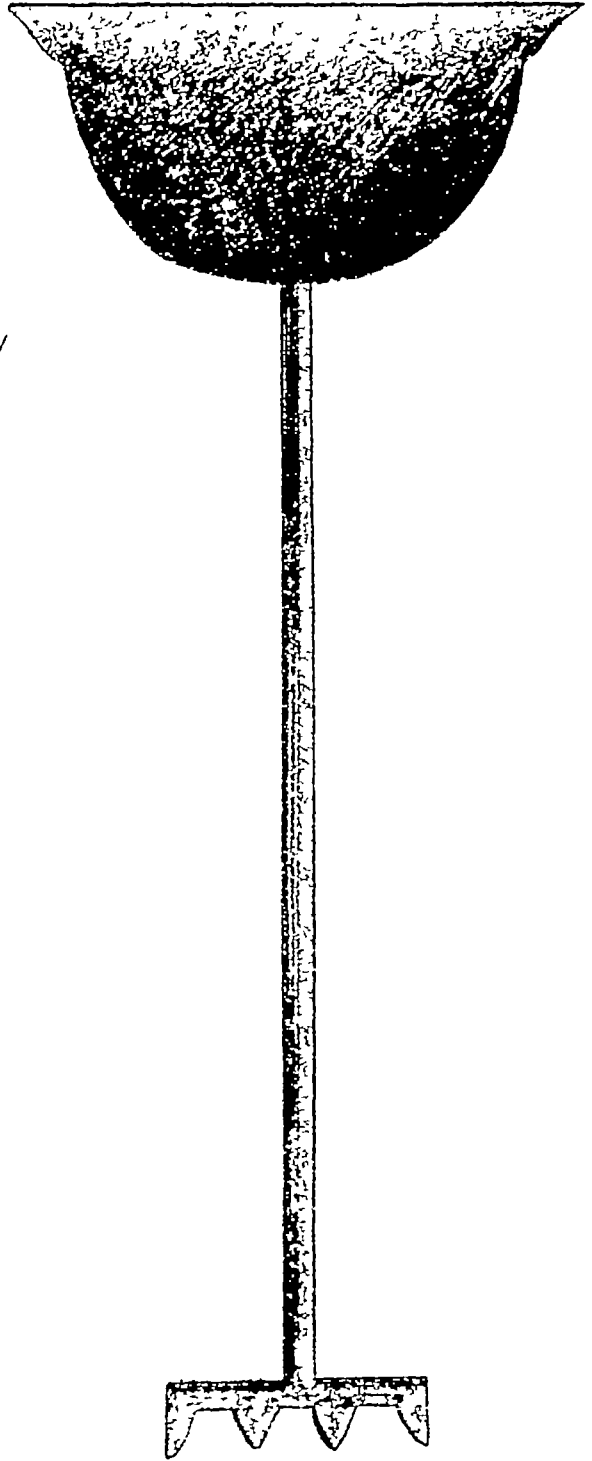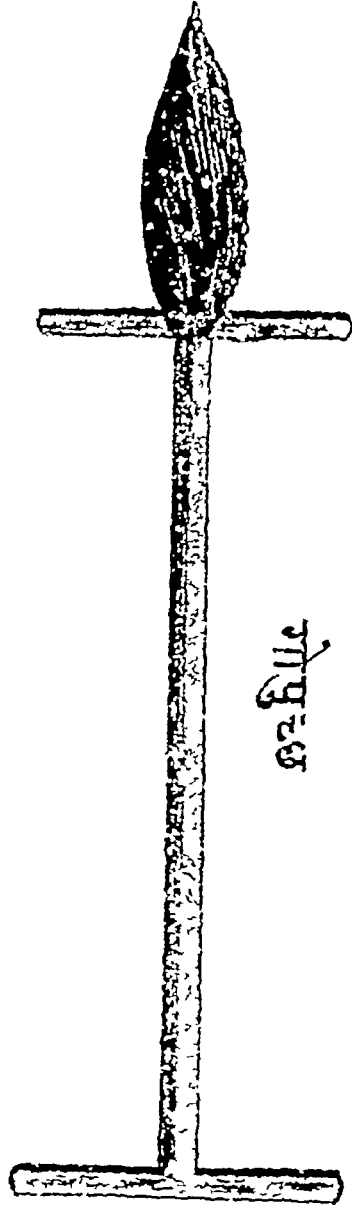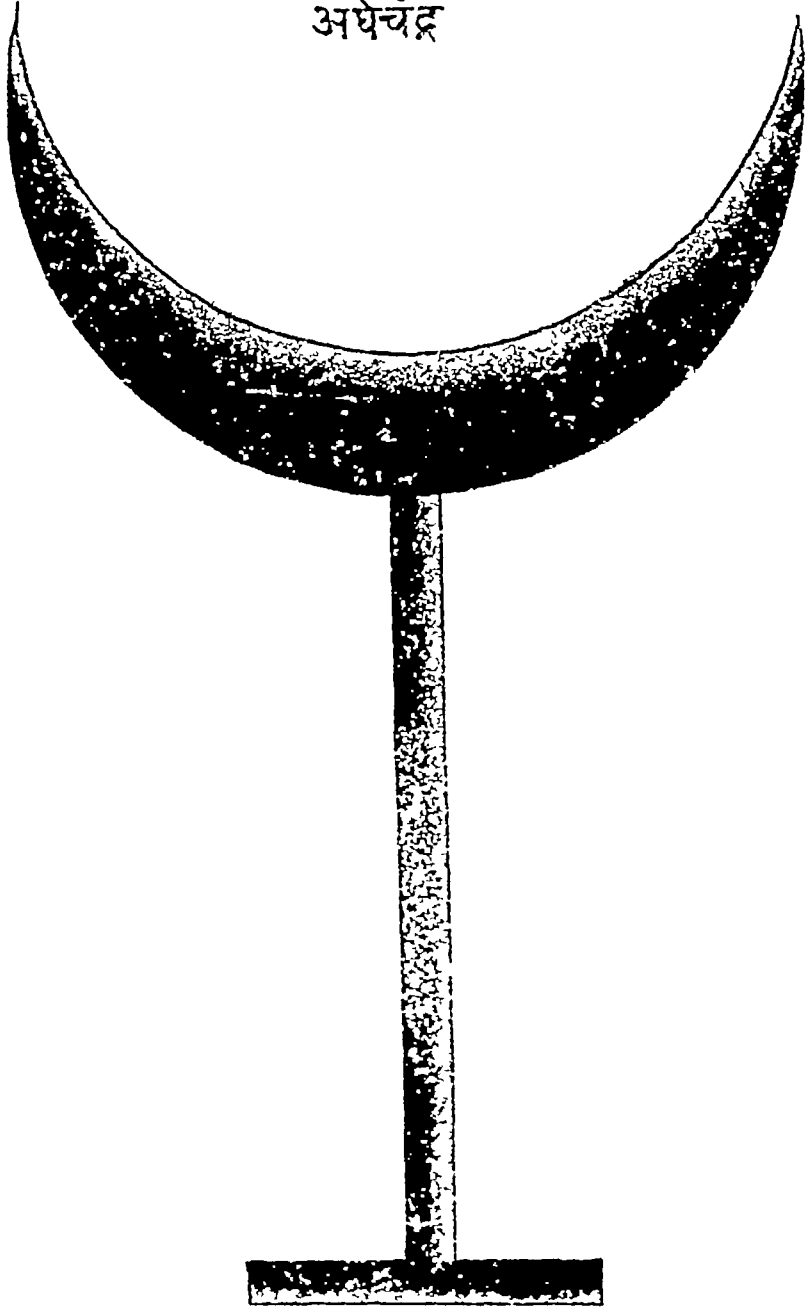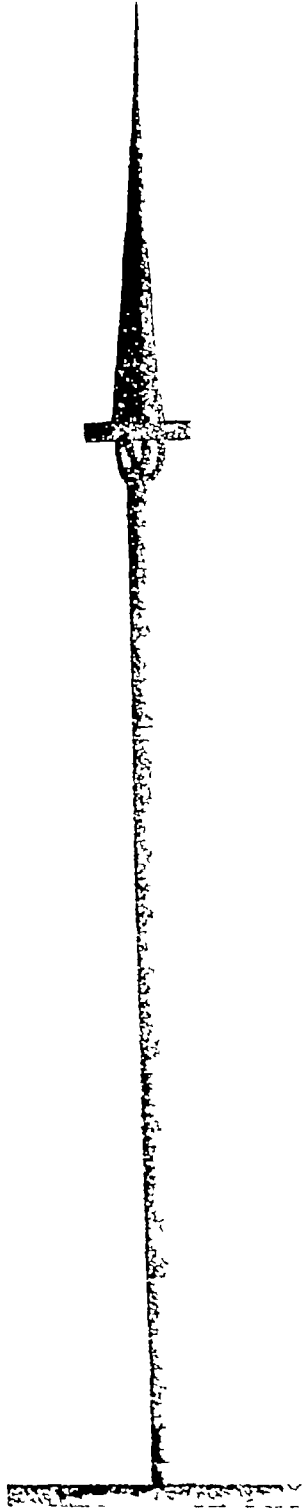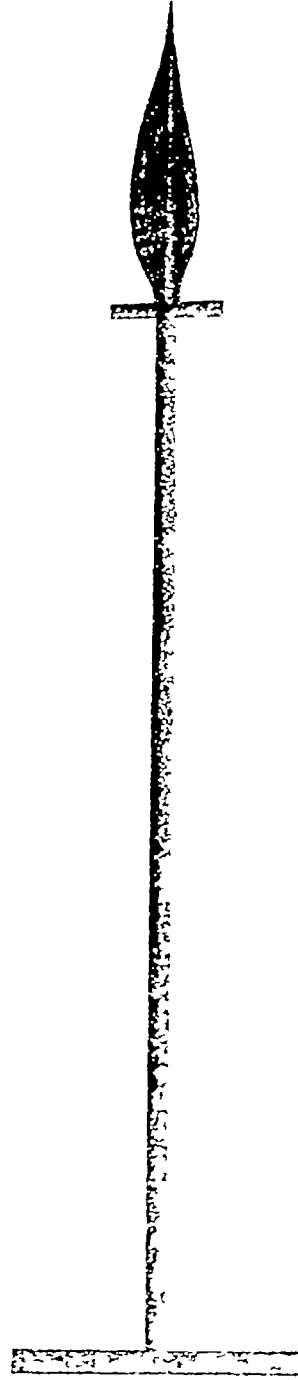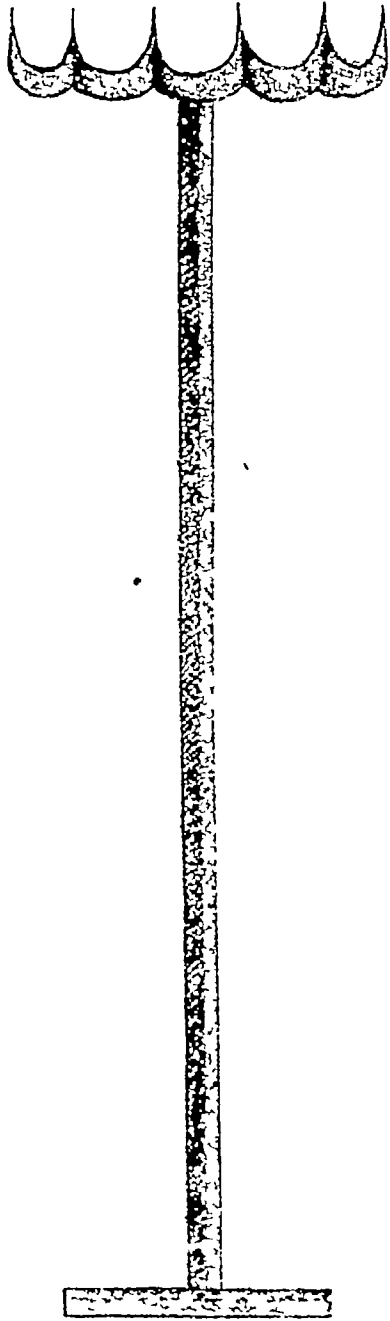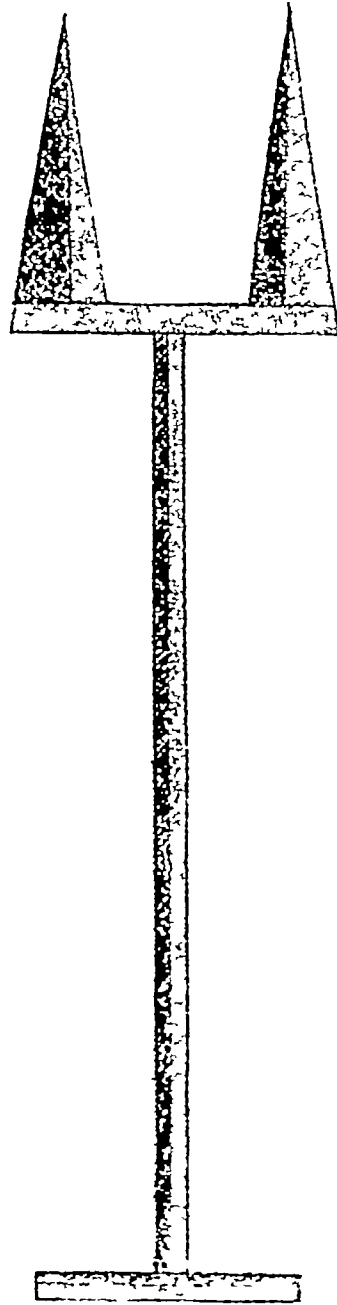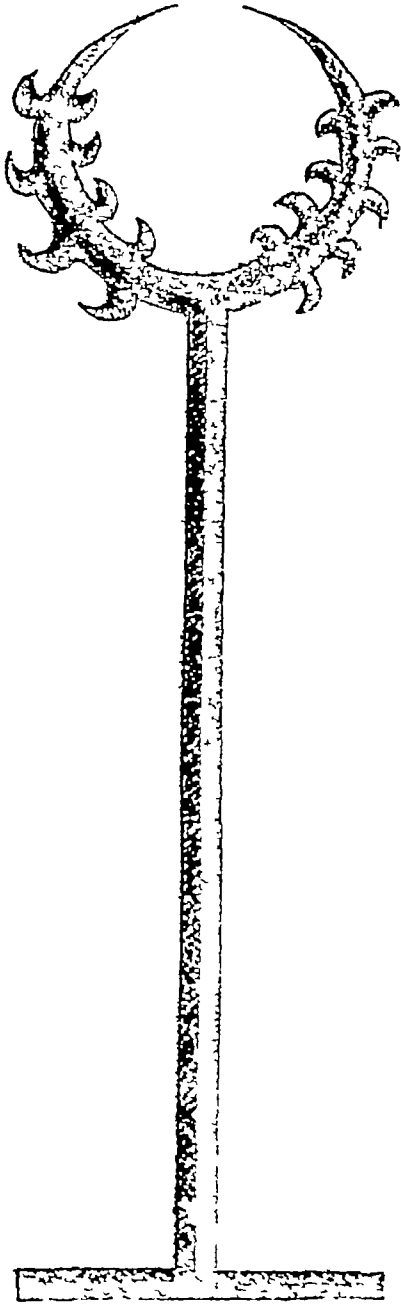
कर्णिक
काक तुंण्ड
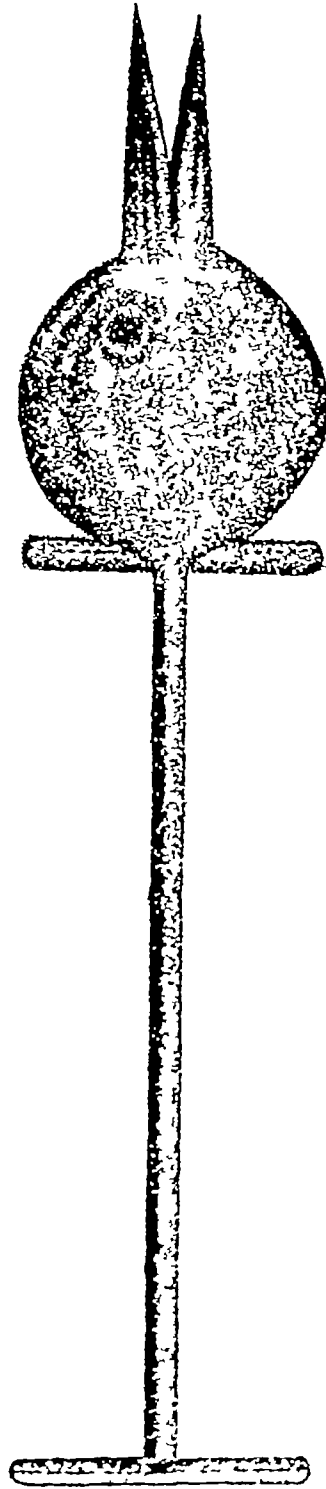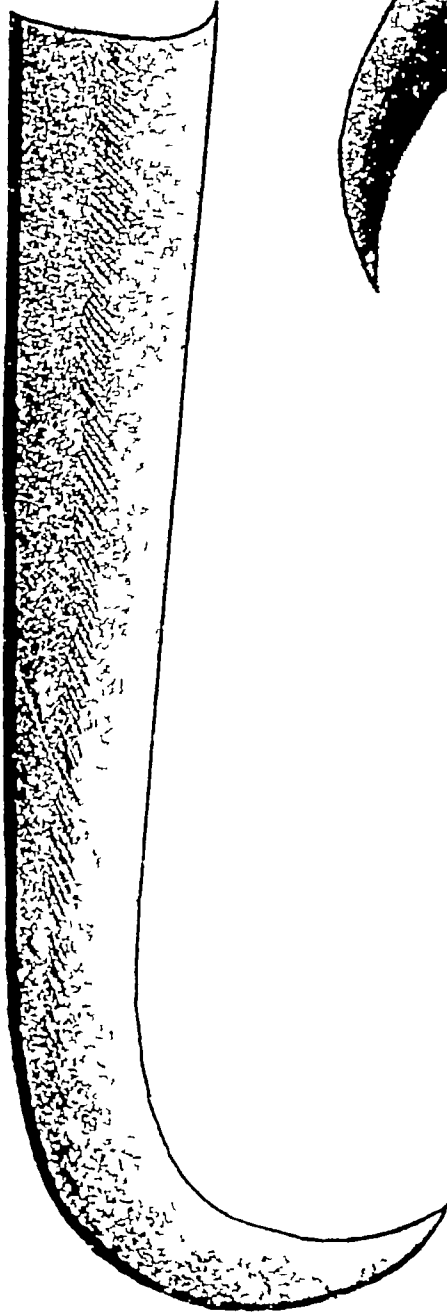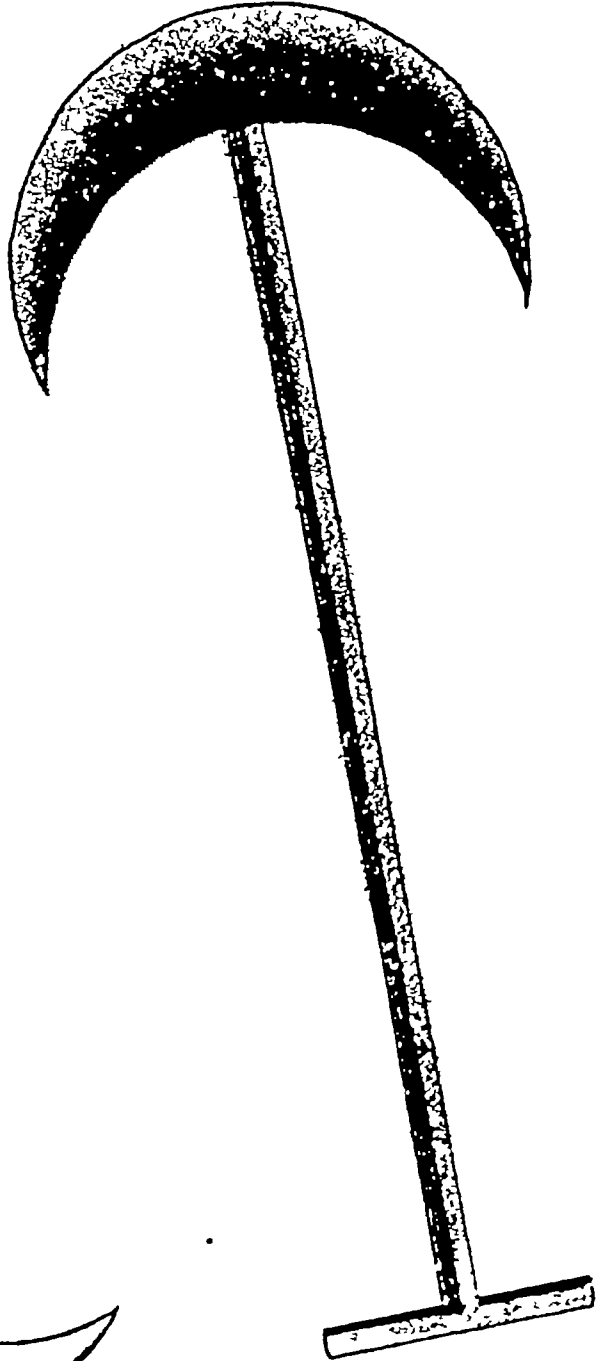
अप्य
तोमर
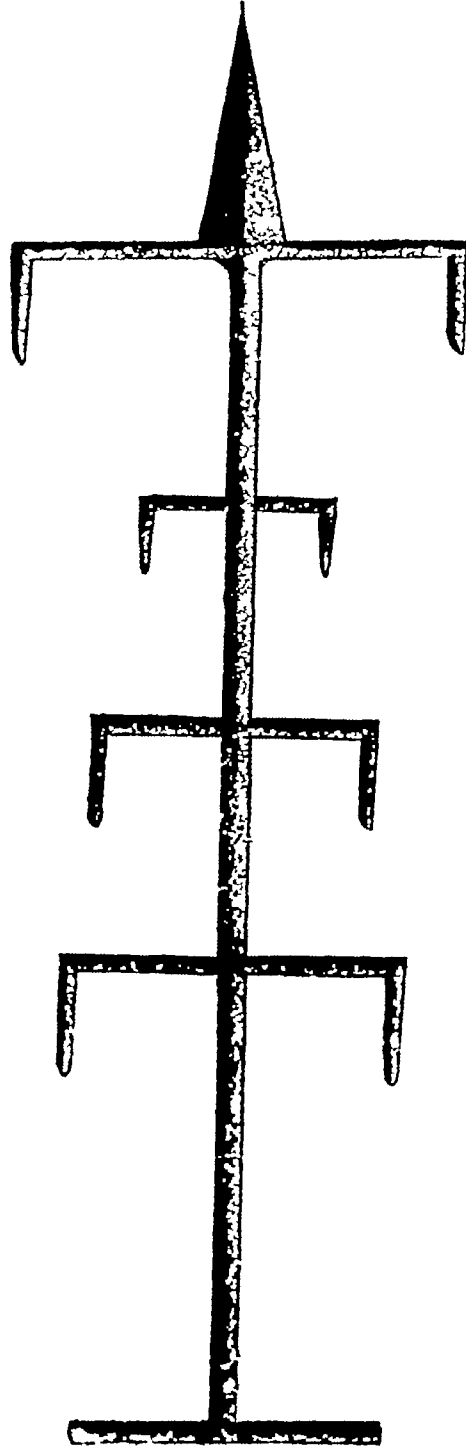
प्रास्दीपाग्र　　　　नतपर्व
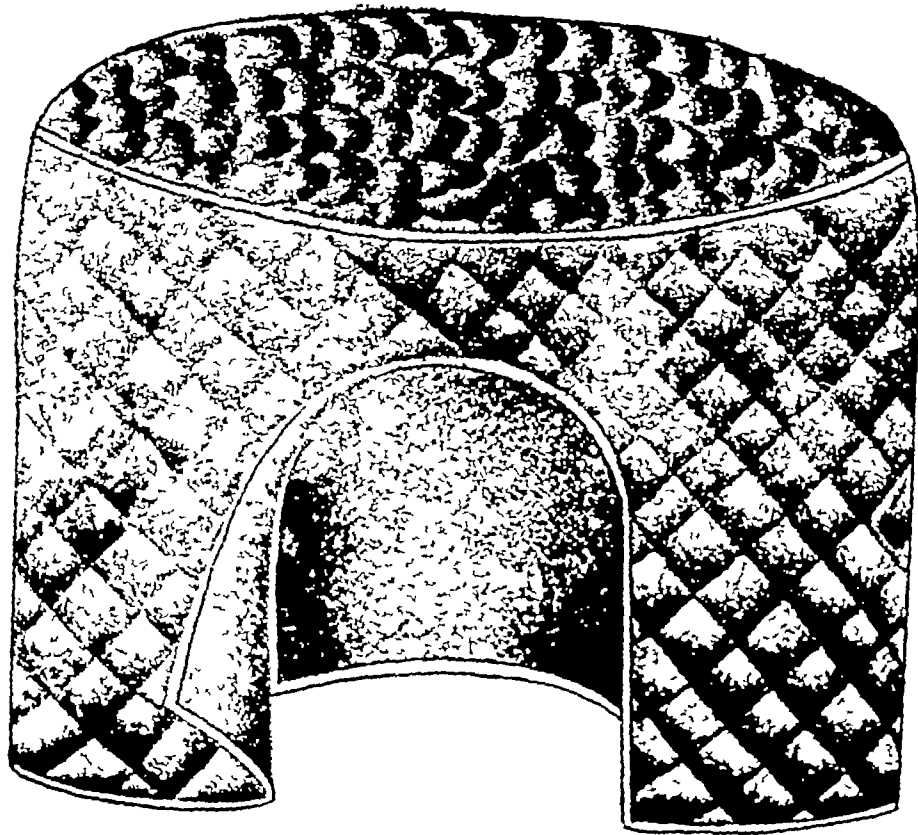
झिल्लमटोप-शिरस्त्राण

युद्धमां काम आवे छे. सिंहासनना संरक्षण माटे गढमां शतघ्नीनुं स्थापन करवुं जोइए. अने दारु गोळानो समूह पण राखवो जोइए. जुदाजुदा कार्यमां बाणनो प्रयोग करवा माटे आठ प्रकारनां स्थान, पांच प्रकारनी मुष्टि अने पांच प्रकारनां व्याय धनुर्वेदमां कहेल छे. तेमां डावो पग आगळ अने जमणो पग पाछळ खेंचवो. ते बे हाथनी प्रत्यालीढ गति कहेवाय छे. आलीढ गतिमां धनुर्धारी डावो पग संकोची तथा जमणो पग आगळ राखी बाण फेंके तो घणे दूर जाय, पगना विस्तार जेटलोज हाथ लंबावे तेनुं विशाख गति छे, तेनो उपयोग कूट लक्ष्यने वींधवामां थाय छे; कंप रहित उभय चरणने सरखा तेमज सुश्लिष्ट राखी बाण फेंकवामां आवे ते समगति अने डावा पगने एक हाथ आगळना भागमां राखी नत शरीरे बाण फेंकवामां आवे ते असमगति कहेवाय छे. ज्यां बन्ने उरूने आकुंचित करी जानुओने धरणीपर टेकाववामां आवे तेनुं नाम दर्दुर क्रम छे. दृढ लक्ष्यवेधनमां ए स्थान उत्तम गणाय छे; डावो पग जानु पर्यन्त पृथ्वीपर राखी जमणाने संकोचवामां आवे ते गरुडक्रम कहेवाय छे, पद्मासन प्रसिद्ध छे, तेनो जे क्रम छे ते प्रमाणे बेठक करी बाण मारवुं तेने शुभ लक्षण नामनुं स्थान कहे छे.

पताका, वज्रमुष्टि, सिंहकर्ण, मत्सरी अने काकतुंडी ए प्रमाणे गुणमुष्टिना पांच प्रकार छे. ज्या तर्जनीने लंबावी अंगुष्टना मूळ पासे राखवामां आवे ते पताका नामनी मुष्टि कहेवाय छे, तेनाथी नलिका नामनुं बाण के जेमां रंजक अने लोहकण भरेला होय तेने दूर फेंकी शकाय छे; तर्जनी अने मध्यमानी वच्चे अंगुष्टनो प्रवेश थाय ते वज्रमुष्टि, म्होटां लोहनां बाण फेंकवामां एनो उपयोग कराय छे. अंगुष्टनी वच्चे तर्जनीनो अग्रभाग राखवामां आवे तेनुं नाम सिंहकर्ण,दृढ लक्ष्यने भेदवामां ए सिंहकर्ण सहायक थइ पडे छे; अंगुष्टना नखनी जडमां तर्जनीनो अग्रभाग राखतां मत्सरी नामनी मुष्टि थाय छे अने तेनो उपयोग चित्रलक्ष्यवेधनमां कराय छे; ज्यां तर्जनीनो अग्रभाग अंगुष्टनी आगळ राखवामां आवे ते काकतुंडी नामनी मुष्टि कहेवाय छे अने ते सूक्ष्म लक्ष्यने वींधवामां उपयोगी थाय छे. संधान त्रण प्रकारनां छे. अधःसन्धान,ऊर्ध्वसंधान अने समसन्धान.ए त्रणेने यथाक्रम त्रण प्रकारे योजवां. बाणने दूर फेंकवामां अधःसन्धान,अचल वस्तु पर फेंकवामां समसन्धान अने बीजी वस्तुओना वेधनमां ऊर्ध्व सन्धान करवुं. कैशिक शर केशोना मूळ पर्यन्त, सात्विक शर शृंगपर्यन्त,वत्सकर्ण कानपर्यन्त, भरतग्रीवापर्यन्त अने स्कन्ध कन्धरा पर्यन्त.ए रीते व्याय अथवा बाण खेंचवाना पांच प्रकार छे.चित्रयुद्धमां कैशिक, अधोलक्ष्यमां सात्विक तथा वत्सकर्ण, गूढभेदन तथा

दृढ भेदनमां भरत अने दूर प्रक्षेपणमां स्कन्ध नामना व्यायनो उपयोग करवो. स्थिर, चल, चलाचल अने द्वय चल ए रीते लक्ष्य चार प्रकारनां छे, तेनो क्रमपूर्वक वेध करवो. जे बुद्धिशाळी पुरुष पोताना शरीरने स्थिर राखी त्रण प्रकारना सन्धानथी लक्ष्यने वींधे छे, ते स्थिरवेधी कहेवाय छे. चलायमान वस्तुने पोताना स्थानपर वेसी वींधनार पुरुष चल लक्ष्यवेधी कहेवाय छे. ज्यां लक्ष्य स्थिर होय अने धनुर्धारी चलायमान होय ते चलाचल, ए लक्ष्य अप्रमेय अने अचिन्तित होय छे; ज्यां धनुर्धारी तथा लक्ष्य बन्ने चलायमान होय ते द्वयचल कहेवाय छे अने ते महा महेनते सिध्ध थइ शके छे. श्रमथी छोडेलुं निशान अति दूरनुं भेदन अने महेनत करी मर्यादा पूर्वक खेंचेलुं वाण शीघ्र संधानने प्राप्त थाय छे. श्रमथीज चित्रयोधापणुं अने जय मळे छे एटला माटे सुज्ञ जने गुरुनी समक्षमांज परिश्रम करवो जोइए. जे मनुष्य प्रथम डावा हाथथी परिश्रम करे ते तुरतज धनुषनी कार्यसिद्धिने किनारे पहोंची शके छे. वामहस्त सिद्ध थया पछी दक्षिण करथी श्रम करवो अने पछी वन्ने हाथथी नाराच तथा वाणो फेंकवां,रथीए कैशिक नामना व्यायथी वैशाख गति अने असमपाद गतिमां स्थित थइ,दक्षिण हस्त सिध्ध थइ गया वाद वामहस्तथीज श्रम करवो. सूर्योदय थया पछी वे प्रहर पर्यन्त पश्चिम दिशामां अने अपराह्ण वखते पूर्व दिशामां लक्ष्य साधन करवुं.अवश्य अवरोधक लक्ष्य होय तेने उत्तर दिशाथी सदा सिध्ध करवुं,युद्धना प्रसंग शिवाय दक्षिण दिशामां कदिपण लक्ष्यनुं स्थापन करवुं नहि, मतलब ए के वाण फेंकती वखते सूर्य पीठ तरफ अथवा जमणी वाजुए रहेवो जोइए.धनुषने माटे साठ वाण राखवां ते ज्येष्ठलक्ष्य, चाळीश वाण राखवां ते मध्यम लक्ष्य अने वीश वाण राखवां ते कनिष्ठ लक्ष्य कहेवाय छे. चाळीश,त्रीश अने सोळ नाराचोने राखनार पुरुष क्रमथी उत्तम,मध्यम,अने कनिष्ठ कहेवाय छे.सूर्योदय समये अथवा सूर्यास्त समये जे चारसो वाणोथी लक्ष्य फेंके ते धनुर्धारीओमां म्होटो गणाय छे.त्रणसोथी मध्यम अने बसो वाणोथी लक्ष्य फेंकनार मनुष्य कनिष्ठ कहेवाय छे.ऊर्ध्व अर्थात् शिरनो भेद करनार ज्येष्ठ, नाभिनो भेद करनार मध्यम अने पादनो भेद करनार धन्वी कनिष्ठ गणाय छे, धनुर्विद्यानो अभ्यास करवामां अष्टमी, अमावास्या अने चतुर्दशी ए त्रण तिथिओ वर्जित छे अर्थात् ए त्रण दिवसपर्यन्त अभ्यास वंध राखवो जोइए. पूर्णिमानो अर्ध दिवस तमाम कामने माटे निषिद्ध छे. समय वगर मेघनी गर्जना थाय, वादळांओथी आकाश छवाइ जाय अने पहेलुंज वाण लक्ष्य पर न लागे तो ते दिवसे अनध्याय पाळवो. अनुराधा नक्षत्रथी आरंभी सोळ नक्षत्रोमां सूर्य विचरण करे त्यांसुधी धनुर्विद्यानो अभ्यास न करवो,कारणके वृश्चिक राशिना सूर्यथी आरंभी ज्येष्ठ मास पर्यन्त

असमय कहेवाय छे. आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन अने कार्तिक ए पांच मास धनुर्विद्याना अभ्यास माटे तथा पठन पाठन माटे उत्तम गणाय छे. जे दिवसे प्रातःकाळ लाल वादळांओथी व्याप्त होय अने ते वादळांओ सूर्योदय थतां गर्जना करे तो ते दिवसे पण अनध्याय पाळवो. प्रथम अभ्यासनो प्रारंभ करतां जो सर्प देखाय, धनुष भांगी जाय, अथवा पहेलाज शरनुं अनुसन्धान करतां प्रत्यंचा त्रुटी जाय तो बुद्धिमान धनुर्धारीए शिष्यने धनुषनो के कोइ अन्य शास्त्रनो अभ्यास कराववो नहि. प्रथम धनुषनुं आरोपण करवुं अने पछी चूलिका बांधवी, त्यारबाद यथायोग्य स्थान उपर स्थित थइ बाण माथे हाथ राखवो, धनुषनो तोल डावे हाथे करवो. वजननुं अनुमान कर्या बाद तेना उपर शरानुसंधान करवुं. प्रथम चढावेला धनुषथी पृथ्वीनो वेध न करवो. महादेवने, गुरुने, धनुषने अने बाणोने नमस्कार करवा, त्यारबाद गुरु आगळ बाण खेंचवानी आज्ञा मागवी. प्राणवायुने प्रयत्नथी प्राणनी साथे पूरक करवो अने ते पछी कुंभक करी तेने हुंकारथी रेचक करवो; सिद्धि चाहनार धनुर्धारीए ए रीते अभ्यासनी क्रिया करवी जोइए. छ महिनामां मुष्टि अने एक वर्षमां बाणसिद्ध थइ शके छे, जेना उपर परम कृपाळु महादेवजी प्रसन्न होय एज नाराचने सिद्ध करवा समर्थ बने छे. जे पुरुषने सिद्धिनी स्पृहा होय तेणे बाणने पुष्पनी माफक धारण करवुं, धनुषने सर्पनी पेठे पीडवुं अने लक्ष्यनुं धननी माफक चिन्तवन करवुं. आचार्य क्रियानी, भार्गव बाण दूर जवानी, राजाओ दृढ वस्तुना छेदननी अने सामान्य जनो लक्ष्य उपर सारी रीते शर लागवानी इच्छा करे छे. जे शरथी लक्ष्यपात थतां मनुष्योनां मन प्रसन्न थाय तेथी पण न्हाना बाणथी लक्ष्यने वींधवुं ए उत्तम गणाय छे. कारणके लघुशरथी लक्ष्यनुं वेधन सारुं थाय छे. विशाख स्थानेन वरजी, समसन्धान करी गोपुच्छ मुख बाणने सिंहकर्ण मुष्टिथी अने कैशिक नामना व्यायथी खेंचनार, शिखाने पण नहि हलावनार, पूर्वापर सम रहेनार, वक्ष अंसने बराबर राखनार, उभय करने अडग राखी, चक्षुने लेशपण चलित नहि करनार, दृष्टिने निशान पर स्थापनार अने लक्ष्यने ढांकी मुष्टिने बाणना अग्रभाग पर योजनार धनुर्धारी निशान पर दृढ थएली दृष्टिमां मनने स्थिर करी जो बाण फेंके तो ते कदिपण व्यर्थ जाय नहि; कारणके उक्त लक्षणवाळा पुरुषे प्रयत्नथी लक्ष्यने जीती लीधेलुं होय छे. भाथामांथी बाण लइ संधान करवुं, खेंचवुं अने तुरतज फेंकवुं एवी रीते निरंतर अभ्यासमर्था मनुष्य शीघ्र संधान करी शके छे. पताका नामनी मुष्टिथी स्त्री चिह्नवाळां बाणने फेंकवामां आवे तो ते दूर पडे छे. प्रत्यालीढ स्थान पर स्थित थइ अधःसंधान करवाथी, दर्दुर स्थानपर स्थित थइ ऊर्ध्व संधान

करवाथी, स्कन्ध व्यायथी वज्रमुष्टि अने पुरुष वाणना समसन्धानथी घणी सारी रीते हाथोने दृढ भेदननी शक्ति प्राप्त थाय छे. बाणोनी सूचीमुख, मीनपुच्छ अने भ्रमरी ए त्रण गति प्रशंसा-योग्य छे. जे बाण पक्षवाळुं अथवा पक्षरहित होय, तेनी गति सूचीमुख थाय छे; जे बाणनुं धनुष कठिन होय अने ते हीनमुष्टिथी खेंचवामां आवे तो तेनी गति मत्स्यपुच्छा थाय छे अने जे बाण फेंकता वक्रगमन करे, ते भ्रमरी गतिनुं कहेवाय छे, ए बाण तिर्यग्गत लक्षवेधनमां श्रेष्ठ गणाय छे. श्री महादेवजीए बाणोना स्खलन माटे डावी बाजु जनारी, जमणी तरफ जनारी अने नीचे जनारी ए रीते चार गति कही छे. जो प्रत्यंचानी मुष्टि बाणना पृष्ठथी कंपायमान थाय अने धनुषनी मुष्टि सन्मुख थाय तो बाण सीधुं जइ लक्षमां लागतुं नथी, परंतु ते डावी तरफ गति करे छे, एटला माटे प्रत्यंचानी मुष्टिने कंपवा देवी नहि. जे बाण शिथिलताथी ग्रहण कराएल होय अने ऋजुत्वथी रहित होय ते निःसंदेह जमणी बाजु चाल्युं जाय छे. धनुष्यनी मुष्टि ऊर्ध्व भागमां होय तो बाण लक्ष्यने छोडी उपरना भागमां चाल्युं जाय छे. जो बाण फेंकती वखते धनुषनी मुष्टि निशानथी नीचे होय अने प्रत्यंचानी मुष्टि उपर होय तो बाणनी गति अधोभागमां थाय छे. ज्यारे चापमुष्टि अने प्रत्यंचामुष्टि एकी साथे लक्ष्यने ढांकी लीए त्यारेज लक्ष्यभेद थइ शके छे, अन्यथा श्रम निष्फळ निवडे छे. लक्ष्य, बाणनो अग्रभाग अने दृष्टि ए त्रण ज्यारे एकत्र थाय त्यारे फेंकेलुं बाण अवश्य लक्ष्यपात करे छे. दोष रहित, शब्दहीन अने प्रत्यंचा तथा धनुष ए बन्नेनी समदृष्टिथी फें-केलुं शर कठिन वस्तुओनुं पण विदारण करी शके छे. जे बाण सारी रीते खेंचेलुं, जित, शुद्ध, दृढपक्ष अने गाढ मुष्टिथी फेंकेलुं होय ते धनुष्य, हाथी अने अश्वोना अंगमां रही शकतुं नथी; अर्थात् तेओने वींधी आरपार चाल्युं जाय छे.जेने शरो तृण समान, धनुष इन्धन समान अने प्रत्यंचा प्राण समान होय ते धनुर्धारी सर्वोत्कृष्ट गणाय छे. जे बाण लोह, चर्म, घट अने मृत्तिकाना पिंडनुं भेदन करे छे ते बाणने वज्र पण कापी शकतुं नथी. दोढ आंगळ प्रमाणना जाडा लोहपत्र करावी तेने एक बाणथी वींधनार पुरुष दृढघाती थाय छे. जे मनुष्य एक बाणथी चोवीश चर्म एक साथे भेदे, तेनुं बाण महान मदोन्मत्त हाथीना शरीरने वींधी आरपार चाल्युं जाय छे.पाणीमां घूमतो घट, कुंभकारना चक्रपर फरतो मृत्तिकानो पिंड अने एवीज भ्रमणशील अन्य वस्तुओने वींधनार पुरुष द्रढभेदी कहेवाय छे. लोहनी वस्तुनो काकतुंडथी, ढालनो आरामुखथी अने मृत्तिकाना पिंडनो तथा घटनो सूचिमुख नामना शरथी वेध करवो. जे पुरुष बाणने तोडवानो विधि, काष्ठ-च्छेदन तथा विन्दुक अने बे गोळाओने वींधवानुं जाणतो होय ते शत्रुसैन्यनो विजय करी शके छे.

जे पुरुष लक्ष्य स्थानपर प्रेरित वाणनो सामेथी आवतां आवतां वचमांज विच्छेद करी नांखे, कांइक पोतानी मुष्ठिवाळी तिर्यक् थइ जाय, बे फळवाळां वाणथी अथवा अर्धचन्द्रथी शत्रुना शिरनुं मध्य भागथी छेदन करे, सन्मुख आवता वाण सामे तिर्यग् वाण न चलावे, परंतु पोतेज तिर्यग् थइ जाय अने वाणथी वाणने कापे ते वाणच्छेदी कहेवाय छे. जे पुरुष लाकडीए घोडानो वाळ वींटी तेमां लटकावेली भ्रमणशील कोडीने वाणथी पाडी दे तेने साचो धनुर्धारी समजवो. जे निशाननी जगोए लीली लाकडीने काळी बनावी राखे अने तेनुं क्षुरप्र नामना वाणथी छेदन करे ते पुरुष तमाम काष्ठने कापनारो वनी काष्ठछेदीना पदने प्राप्त करे छे. जे पुरुष लक्ष्यनी जगोए कुन्दना पुष्प समान बनावी राखेल श्वेत बिन्दुनो वेध करे ते चित्रयोधा कहेवाय छे. काष्ठना बे गोळाओने शीघ्रताथी आकाशमां उडाडी ते पृथ्वी पर न पडे तेटला वखतमां ते बन्नेनी पीठने शीघ्र संधानना योगपूर्वक गोपुच्छमुख नामना बे वाणथी वींधी नांखे तेने उत्तम धनुर्धारी जाणवो, दरेक राजाए तेवा पुरुषोनो सत्कार करवो जोइए. रथस्थ, गजस्थ, हयस्थ तथा पैदळ पुरुषे दोडतां लक्ष्यने पाडवानो प्रयत्न करवो.जे निशान डावा हाथ तरफथी आवी जमणी बाजु तरफ दोडयुं जतुं होय, तेने धनुष खेंची जमणा हाथथीज मारवुं, एवीज रीते दक्षिण तरफथी आवतां लक्ष्यने आलीढ क्रमथी भेदवुं अने वाम अथवा दक्षिण तरफ गति करता वायुनुं वळ पण तपासवुं. वाम बाजुथी वायु विचरण करतो होय तो धनुषने दक्षिण तरफ झुकावी देवुं अने दक्षिणनो वायु होय तो वाणने डावी बाजु फेंकवुं; जेना पृष्ठ तरफ अथवा दक्षिण भाग तरफ वायुनी गति होय ते अवश्य विजय पामे छे अने जेनी सामे अथवा वाम भागमां वायु गति करतो होय तेनो पराजय थाय छे, कारणके ए चिह्न सुभटोना भंगनुं सूचन करनारुं छे. निशानना स्थानमां कांसानुं पात्र बे हाथने अंतरे राखी तेना उपर रेतीनी कांकरीओथी ताडन करतां शब्द उत्पन्न थाय छे, ए उत्पन्न थएला अवाजने सारी रीते ध्यानमां राखी कर्णेन्द्रिय अने मनना योगथी निशाननो निश्चय करी शरानुसन्धान करवुं; ज्यारे बे हाथने अंतरे थता शब्दने सांभळी लक्ष्यसिद्धिनो अभ्यास संपूर्ण थाय, त्यारे ते कांस्यपात्रने जरा दूर राखवुं एम दिनप्रतिदिन वधारे दूर मूकी शब्दवेधन शीखवुं. शब्दवेधननो अभ्यास अंधकारवाळा प्रदेशमां करवो. दुष्कर शब्दवेधनने कोइ भाग्यशाळीज सिद्ध करी शके छे. जेमां रंजकनी नलिकाओ लागी होय एवुं खग नामनुं वाण वायुनी सन्मुख फेंकतां ते कार्यसिद्धि करी पाछुं आवे छे. ज्यांसुधी सिद्ध थाय त्यांसुधी श्रम जारी राखवो, त्यारबाद दर्पाङ्कनुमा धनुषने धारण करवुं नहि. पूर्वे करेलो अभ्यास वृथा न जवाय एटला माटे

बे महिना पर्यन्त परिश्रम करवो; दरेक वर्षे शरदृतुमां अथवा आश्विन शुदी नवमीने दिवसे इश्वरी चंडिका, गुरु, हथिआर अने अश्वोनी राजाए अथवा अभ्यासी पुरुषे पूजा करवी, ब्राह्मणोने दक्षिणा देवी, कन्याओने भोजन कराववुं, देवीने अर्थे पशुनुं बलिदान आपवुं अने मांगलिक वाद्योना निनाद साथे वेदोक्त अथवा शास्त्रोक्त अस्त्रोनी कर्मसिद्धि माटे जप अने होमना विधिथी मंत्र साधन करवुं. ब्राह्म, नारायण, शैव, ऐन्द्र, वायव्य, वारुण, आग्नेय अने गुरुए आपेल अस्त्रोने साधवां. पवित्र पुरुषे मन, वाणी अने कर्मथी अनुभव करवो. अस्त्रोने मेळवी जे तेना प्रयोग तथा उपसंहारने जाणे तेज ते धनुर्धर कहेवाय छे. सामान्य कार्यसिद्धि माटे बुद्धिमान् पुरुषे अस्त्रोनो प्रयोग न करवो. पहेलुं ब्रह्मास्त्र, बीजुं ब्रह्मदंड, त्रीजुं ब्रह्मशिर, चोथुं पाशुपतास्त्र, पांचमुं वायव्यास्त्र, छठ्ठुं आग्नेयास्त्र अने सातमुं नारसिंह ए सर्वेने उपसंहारनी साथे जाणवां जोइए. तमाम अस्त्रोने गायत्री मंत्रथी ग्रहण करवां अथवा दीप्यमान बनाववां. ब्रह्मास्त्रनो प्रयोग एवो छे के प्रथम "द"ने आदि लइ "द" ना अन्त पर्यन्त सावित्रिनो विपरीत जप करवो, ए रीते विधिपूर्वक एक निखर्व मंत्रजापथी अभिमंत्रित शर शीघ्र शत्रुओ उपर फेंकतां बाळक, वृद्ध, गर्भस्थ अने जे कोइ युद्ध करवा सन्मुख आवेल होय ते सर्व नष्ट थाय छे. ब्रह्मदंडना प्रयोगमां प्रथम प्रणव(ॐ)नो उच्चार करवो, ते पछी **प्रचोदयात्** पछी **नो योधियो** एम क्रमपूर्वक **धीमहि देवस्य भर्गोवरेण्यं सवितुः** तेनी साथे अमुक शत्रुनुं नाम जोडी, छेवट **हन हन हुंफट्** ए रीते बोलवुं. एवा बे लक्ष मंत्रजपथी अभिमंत्रित बाण शत्रुओ उपर फेंकतां कदाच तेओ यमराज जेवा बळवान् होय तो पण विनाश पामे छे; ए ब्रह्मदंडनो उपसंहार करवो होय त्यारे उक्त मंत्रनो विपरीत जप करवो. ब्रह्मशिर अस्त्रना प्रयोगमां प्रथम प्रणवनुं उच्चारण करी **तत्सवितुर्वरेण्यं-शत्रून्मे हन हन हुंफट्** एवा त्रण लक्ष मंत्रना पवित्रता पूर्वक पुरश्चरणथी अभिमंत्रित बाण फेंकता देव के असुर गमे ते शत्रु होय ते सर्व नाश पामे छे; ए ब्रह्मशिरनो उपसंहार करवो होय त्यारे कथित मंत्रनो विपरीत जप करवो. पाशुपतास्त्रना प्रयोगमां "द" ने आदि लइ "द"ना अन्त पर्यन्त प्रणवनो उच्चार करी **श्लीं पशु हुंफट अमुक शत्रून् हन हन हुंफट्** एवा बे लक्ष मंत्रथी अभिमंत्रित शर फेंकतां समस्त शत्रुओनो संहार थाय छे, तेनो उपसंहार करवो होय त्यारे विपरीत मंत्रजप करवो. आ पाशुपतास्त्र सर्व शस्त्रोना निवारणने माटे छे. वैरीओना विध्वंसने माटे वायव्यास्त्रनो प्रयोग करवो होय त्यारे **ॐ वायव्यया वायव्ययान्योर्वाय-**

व्यया अमुक शत्रून् हन हन हुंफट् एवा बे लक्ष मंत्रथी अभिमंत्रित शर शत्रुओना संहार अर्थे फेंकवुं अने एज मंत्रथी उपसंहार करवो. वायव्यास्त्र देवताओने पण हठावी दे छे. शत्रुओथी उत्पन्न थनार भयने बाळी भस्म करनार अग्न्यास्त्रना प्रयोगमां ॐ अग्निस्त्यता हृदु भूंच शिवंवनाश्वाविणिच हगादशरूपनः सदवेति हादतितोयति राममसो हि वावान सुसेदवेदया अमुक शत्रून् हनहन हुंफट् एवा बे लक्षमंत्रजपथी अभिमंत्रित बाण शत्रुओ उपर फेंकवुं अने उक्त मंत्रना विपरीत जपथी तेनो उपसंहार करवो. नारसिंहास्त्रना प्रयोगमां अग्न्यास्त्रना एक लक्ष मंत्रनो जप करवो अने उपसंहार पण एज मंत्रना विपरीत जपथी करवो. नारसिंह बाण सिंहनुं स्वरुप धारण करी शत्रुरुपी वनमां दाखल थइ सर्वेने छिन्नभिन्न करी नांखे छे. हस्त नक्षत्रमां रविवारने दिवसे जळ पीपळनो कन्द लइ तेनो शरीरे लेप करनार कायर पुरुष पण रणभूमिमां शूरवीरना अभिमानने उतारी शके छे. पुष्यनक्षत्र, रविवार अने सिद्धियोगमां अपामार्गनी जड लइ राखवी, जे दिवसे कोइनी साथे युद्ध करवानुं बने ते दिवसे तेनो लेप करवाथी अंग उपर शस्त्रनो घाव लागतो नथी. अधःपुष्पी, शंखपुष्पी, लज्जालु, गिरिकर्णिका, नलिनी, सहदेवी अने विष्णुकान्ता ए सर्वेनी जड तथा मुंज अने आकडाना पर्ण रविवारे लइ हाथे बांधवाथी अथवा तेनो शरीरे लेप करवाथी सर्व प्रकारना शस्त्रो दूर रहे छे, सर्प तेमज व्याघ्र आदि हिंसक प्राणी कांइ बाध करी शकतां नथी अने अष्टमाताओ रक्षक बनी रहे छे. हस्त नक्षत्रमां छछुंदरथी उत्पन्न थएलुं चूर्ण ग्रहण करवुं, तेना प्रभावथी मनुष्यनी सामे हाथी आवी शकतो नथी. सिंहनुं मांस लइ अश्वने चालवाना रस्तापर गर्त्ता दीधुं होय तो ते रस्ते ताडन कर्या छता पण अश्व आवता नथी. छछुन्दर अने श्रीफळना पुष्पनुं चूर्ण शरीरे लगाडवाथी सिंहना शरीरनो गन्ध सुंघ्यानी माफक मनुष्यना शरीरनो गन्ध सुंघी मदोन्मत्त हाथी मदनो परित्याग करे छे. श्वेत विष्णुकान्तानी जड हाथमां राखनार मनुष्यथी हाथी हमेशा दूर रहे छे, श्वेत कंटारिका व्याघ्र आदिना भयने हरे छे. पुष्यनक्षत्रमां रविवारे पाठानी जड उखेडी मुखमां राखवाथी तीव्र तलवार अथवा चक्रनी धारथी शरीर फाटतुं नथी गायारोनुं उत्तरफळ मुखमां होय तो ते मुख आवता शस्त्रना समूहने हठावी दे छे, ए गायारोनुं उत्तरफळ विचित्र अर्थात् उपवास करी पुष्यनक्षत्रमां रविवारे लाववुं. श्वेत शरपुंखानी जड अथवा नीलीनी जटा, हाथ, शिर अथवा

मुखमां राखवाथी सर्व शस्त्रोनुं निवारण करे छे. तेमज राजा, चोर अने सर्पना भयने दूर करे छे; ए जड तथा जूटा पण पुष्पनक्षत्र अने रविवार होय त्यारे लाववी जोइए.

शरुआतमां शत्रुना सैन्य सन्मुख उभा रही मुद्रा करवी अने त्यारबाद युद्धनो प्रारंभ करवो, जे प्रथम सर्पमुद्रा करे ते अवश्य विजय पामे छे. प्रथम रुद्रनुं ध्यान धरी गायत्री मंत्रनो जप करवो अने त्यारबाद भगवती हैमवतीनुं प्रणाम पूर्वक ध्यान करी युद्धनो आरंभ करवो.

" ॐ ह्रीं श्रीं हैमवतीश्वरीं ह्रीं स्वाहा । ॐ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा "

आ मंत्रनुं उच्चारण करी वज्रयोगिनी देवीनुं ध्यान करवुं, अने सिंहपर आरूढ थएल रुद्राणीनुं पण ध्यान धरवुं. अपूर्ण स्वरमां शत्रुनी सामग्री होय अने पूर्णमां पोतानी सेनाने सत्वथी परिपूर्ण करी स्थित थएलो एकज योद्धो आखी दुनियाने जीती शके छे.जेना पृष्ठ भागमां तेमज दक्षिण बाजुए राहु सहित योगिनी होय ते एकलो लक्ष शत्रुओनो संहार करे छे. एवीज रीते सूर्य पाछळ अथवा जमणी बाजुए होय तथा रात्रिए चन्द्रमा सन्मुख अथवा वाम भागमां होय अने वायु जमणी बाजु-ए होय अथवा पृष्ठ भागमां गति करतो होय तो लडवैयो तत्काळ वैरीओने विनष्ट करे छे. अंगमां जे नाडी वहेती होय अने तेनो अधिदैव सन्मुख होय तो ते अधिदैवनी दिशा सामे मुख राखवाथी सर्व कार्य सफळ थाय छे, जेना देहमां जे दिशानो वायु गति करतो होय ते दिशामां युध्ध प्राप्त थाय तो ते पुरुष निःसंदेह सामे इन्द्र आव्यो होय तोपण तेने जीती शके छे.जो सूर्यस्वर चालतो होय तो पूर्व तथा उत्तरमां अने चन्द्रस्वर चालतो होय तो पश्चिम तथा दक्षिण दिशामां सेनापतिए सैन्यने आदर साथे युद्ध अर्थे जवा आज्ञा आपवी. जे नाडीमां वायु विचरण करतो होय एज अं-गमां प्राणनी स्थिति होय छे, ए प्राणने कर्णपर्यन्त खेंची चालनारा पुरुष इन्द्रने पण पराजय आपे छे. जे प्रतिपक्षना प्रहारोथी पूर्ण अंगोनी रक्षा करे छे, ते बळवान् शत्रुओथी पण हणातो नथी.युद्ध समये अंगुष्ट अने तर्जनीना वंशमा तेमज पगना अंगुष्ठमां ध्वनि करनार पुरुष एक लक्ष योद्धाओने हरावे छे. ज्यारे पृथ्वीनुं तत्व होय त्यारे शास्त्रनी चोट उदरमां लागे छे, एटला माटे भूतत्व समये ढाल आदिथी उदरनुं रक्षण करवुं; जलतत्व होय त्यारे चरणनुं, वह्नितत्व होय त्यारे उरूनुं, वायु-तत्व होय त्यारे करनुं अने व्योमतत्व होय त्यारे शिरनुं संरक्षण करनार सुभट निरंतर विजयी निवडे छे. सूर्य स्वर होय त्यारे पूर्व तथा उत्तरमां अने चन्द्र स्वर होय त्यारे दक्षिण तथा पश्चिममां मुख राखवाथी विजय मळे छे. लांबा वखत सुधी युध्ध करवुं होय तो चन्द्रस्वर अने सत्वर युद्ध

करवुं होय तो सूर्य स्वर श्रेष्ठ गणाय छे. दूरना युद्धमां चन्द्रस्वर अने समीपना युद्धमां सूर्यस्वर विजय आपनारो होय छे. प्राणवायुने खेंची अर्थात् कुंभक करी वाहनपर आरूढ थनार वीरनर रेचक करतो पृथ्वीपर पग मूके तो तेनां सर्व कार्य सिद्ध थाय छे. शून्य स्वरमां स्थित क्रूर स्वभावना काळ, सर्प, शस्त्र, शत्रु, व्याधि, अने चोर आदि नाश करवाने समर्थ थइ शकता नथी.जे पुरुषनो दक्षिण स्वर उत्तरायणसूर्यनीतिथि, सूर्यस्वर अग्नितत्व अथवा वायुतत्व युक्त थइ कदाच पोतानी मेळे चाले तो ते स्वरना स्पंदन मात्रथी ते पुरुष शत्रु सैन्यने जीती शके छे, अने तेने विष्णुलोक-मा पण विघ्न प्राप्त थतुं नथी. स्वरथीज शस्त्रने बांधे, स्वरथीज भाथामांथी बाहेर काढे अने स्वरथी-ज फेंके तो युद्धमां सदा विजय मळे छे. ज्यारे वाम स्वर चालतो होय त्यारे चन्द्रमाने वामभागमां अथवा सन्मुख राखवो जोइए तेमज सूर्यस्वर चालतो होय त्यारे सूर्यने पृष्ठ भागमां अथवा दक्षिण तरफ राखवो. क्रूर कार्यमां पर तरफ सदा नाडीने निर्जीव अने शान्त कर्ममां सजीव बनाववाथी कार्य सिद्ध थाय छे तत्वज्ञान तो महा कठिन छे, ए तो कोइ विरलानेज थाय छे, परंतु ए तत्व-बळथी नाडीबळ अधिक छे ए वात जटाजूटने धारण करनारा शिवजीए परशुराम पासे कही हती. स्वरनी गतिने सारी रीते जाणी कार्यमां प्रवृत्त थएलो पुरुष महा निपुण मतिवाळो गणाय छे. आ धनुर्विद्या क्रूरने. कुबुद्धिवाळाने, अशान्तने, गुरुद्रोहीने तेमज अभक्तने कदिपण आपवी नहि, परंतु तेनुं दान ब्रह्मचारीने, धर्मथी प्रजानुं पालन करनारने, दुष्ट पुरुषोने दंडनारने अने साधु जनोनुं संरक्षण करनारने देवुं एज महादेवजीनुं महा वाक्य छे. प्रतिपदा अने नवमीने दिवसे प्रथमना अर्ध प्रहरमां राहु सहित योगिनी पूर्व दिशामां स्थित थाय छे. द्वितीया अने दशमीने दहाडे पांचमा अर्ध प्रहरमां पश्चिमे उदय थाय छे, तृतीया अने एकादशीने दिवसे त्रीजा अर्धप्रहरमां दक्षिणे घूमे छे, चतुर्थी अने द्वादशीने दिवसे सातमा अर्धप्रहरमां उत्तर दिशाए उगे छे, पंचमी अने त्रयोदशीने दहाडे आठमा अर्धप्रहरमां बीजा नैऋत्य कोणमां रहे छे. षष्ठी अने चतुर्दशीने दिवसे बीजा अर्धप्रहरमां वायुकोणमां चाले छे, सप्तमी अने पूर्णिमाना चोथा अर्धप्रहरमां इशान कोणमां अटन करे छे तथा अष्टमी अने अमावास्याना छट्टा अर्धप्रहरमां राहु सहित योगिनी अ-ग्निकोणमां देखाव दे छे.

राजाए राजपुत्र, सामन्त, आप्तजन अने शुद्ध बुद्धिना सेवकजनोने पोतानी आजुबाजु रक्षा अर्थे राखवा. जे योद्धाओ परस्पर प्रेम राखनारा, शार्ङ्ग धनुषने धारण करनारा, युद्धनी रीति-

ने जाणनारा अने रथपर आरूढ थएला होय, तेओ शत्रूओने रणमां जीती शके छे. सैन्यमां एक पण कायर अने भागेडु होय तो महान् सैन्य छतां पराजय प्राप्त थाय छे अने एवा भागी जनार कायर पुरुषने जोइ म्होटा शूरवीरो पण भयभीत बनी भागे छे. एटला माटे राजाए कायर सेनापति अथवा पदाति आदि नोकरोनी सेनामां भरती करवी नहि. योगयुक्त सन्यासी अने संग्राममां सामे पगले मरनार ए बन्ने महात्माओ सूर्यमंडलने भेदनारा थाय छे अर्थात् तेओ सूर्यथी उपरना लोकमां जाय छे. ज्यां ज्यां शूरवीर शत्रुओथी घेराएली स्थितिमां मरण पामे, ते अक्षयलोकने भोगवनारो थाय छे. युद्धमां हीन वचन बोलवां नहि, जे शत्रु मूर्छावश होय गभराइ गएलो होय, शस्त्र रहित होय, बीजा साथे लडाइ करी रह्यो होय, भागी निकळेलो होय अने शरणे आवेल होय तेना उपर कदिपण प्रहार न करवो.बळवान् पुरुषे भागेला शत्रु पाछळ थवुं नहि कारणके ते मरणीओ बनी वखते मारी दे छे. एटला माटे पलायित शत्रुनी शोध अर्थे परिश्रम लेवो नहि. घणा सैन्येने एकत्र करी चतुरंगिणी अर्थात् हाथी, रथी, घोडेस्वार अने पैदलनी सेनाथी व्यूह रचना करवी. विजयनी इच्छावाळा राजाए शूरवीरोने सर्वथी आगळ राखवा. वायुनुं विचरण, सूर्यनो उदय, पक्षीओनुं उडवुं अने वृष्टि जे सैन्यनां पृष्ठ भागमां थतां होय ते युद्धमां जय मेळवेछे. अपूर्ण स्वरमां रहेला शत्रुओ मरता नथी अने पूर्ण स्वरमां प्राप्त थएला प्रतिपक्षीओ जीवी शकता नथी एटला माटे धैर्य धारण करी शत्रुसैन्यनो संहार करवो. युद्धमां विजय मळे तो लक्ष्मी प्राप्त थाय अने मृत्यु थाय तो स्वर्ग मळे तथा पृथ्वीपर यश गवाय ए बन्ने लाभनो विचार करी धैर्यपूर्वक वैरीओनो विध्वंस करवो जोइए. रोगी बनी घरमा मरवुं ए क्षत्रीओने माटे घणुंज शरम भरेलुं अने अधर्म मृत्यु गणाय छे, कारणके रणभूमिमां प्राणनो परित्याग करवो ए क्षत्रीओनो सनातन धर्म छे. युवास्वरवाळी मध्य सेना भ्रमण करती सामे उपस्थित थएला शत्रुओ साथे युद्ध करे, बे सेना पडखाना भागमां तथा एक सेना पृष्ठ भागमां रक्षा माटे नियत करवी अने विकटसेना दूर सावधपणाथी फर्या करे एवी योजना करवी जोइए.

प्रथमारंभव्यूह.

दंडने आकारे होय ते दंड व्यूह, शकटने आकारे होय ते शकट व्यूह, वराहने आकारे होय ते वराह व्यूह, मत्स्यने आकारे होय ते मत्स्य व्यूह, सोइने आकारे होय ते सूचीव्यूह, गरुड पक्षीने आकारे होय ते गरुडव्यूह, तथा कमलने आकारे कमलव्यूह इत्यादि व्यूहोनी रचना करी सेनापतिए गति करवी अने बलाध्यक्षने सर्व दिशामां योजी देवा.
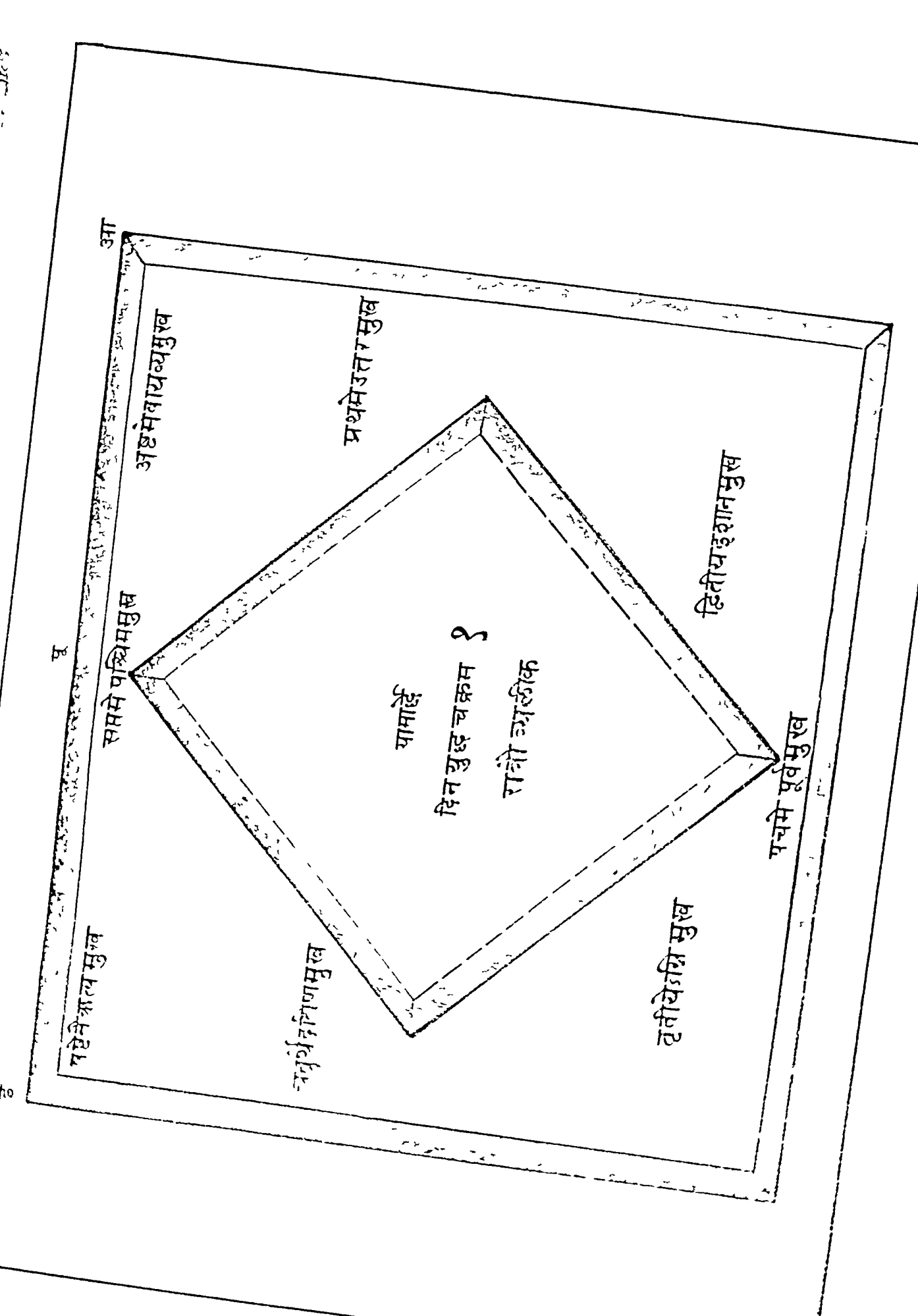
पू
आ
षष्ठेनैऋत्य मुख
सप्तमे पश्चिममुख
अष्टमेवायव्यमुख
चतुर्थेदक्षिणमुख
प्रथमेउत्तरमुख
यामार्द्ध
दिन युद्ध चक्रम १
रात्रौ अलीक
तृतीयेअग्नि मुख
द्वितीयइशानमुख
पचमे पूर्वमुख

प्रथमारम्भ व्यूह

दण्ड व्यूह

पतिक व्यूह

वराह
व्यूह

मकरव्यूह

सूचीव्यूह

गरुड व्यूह
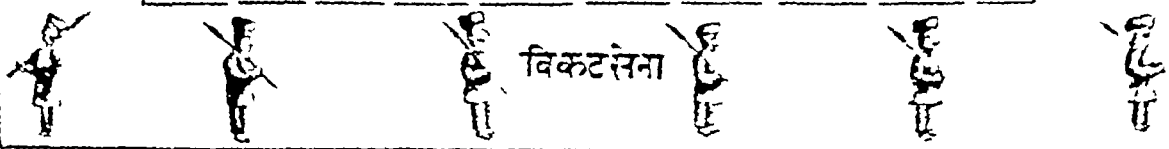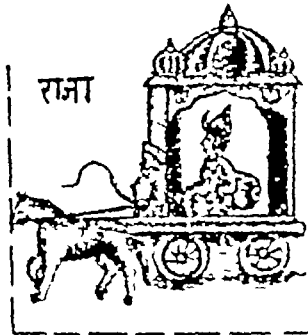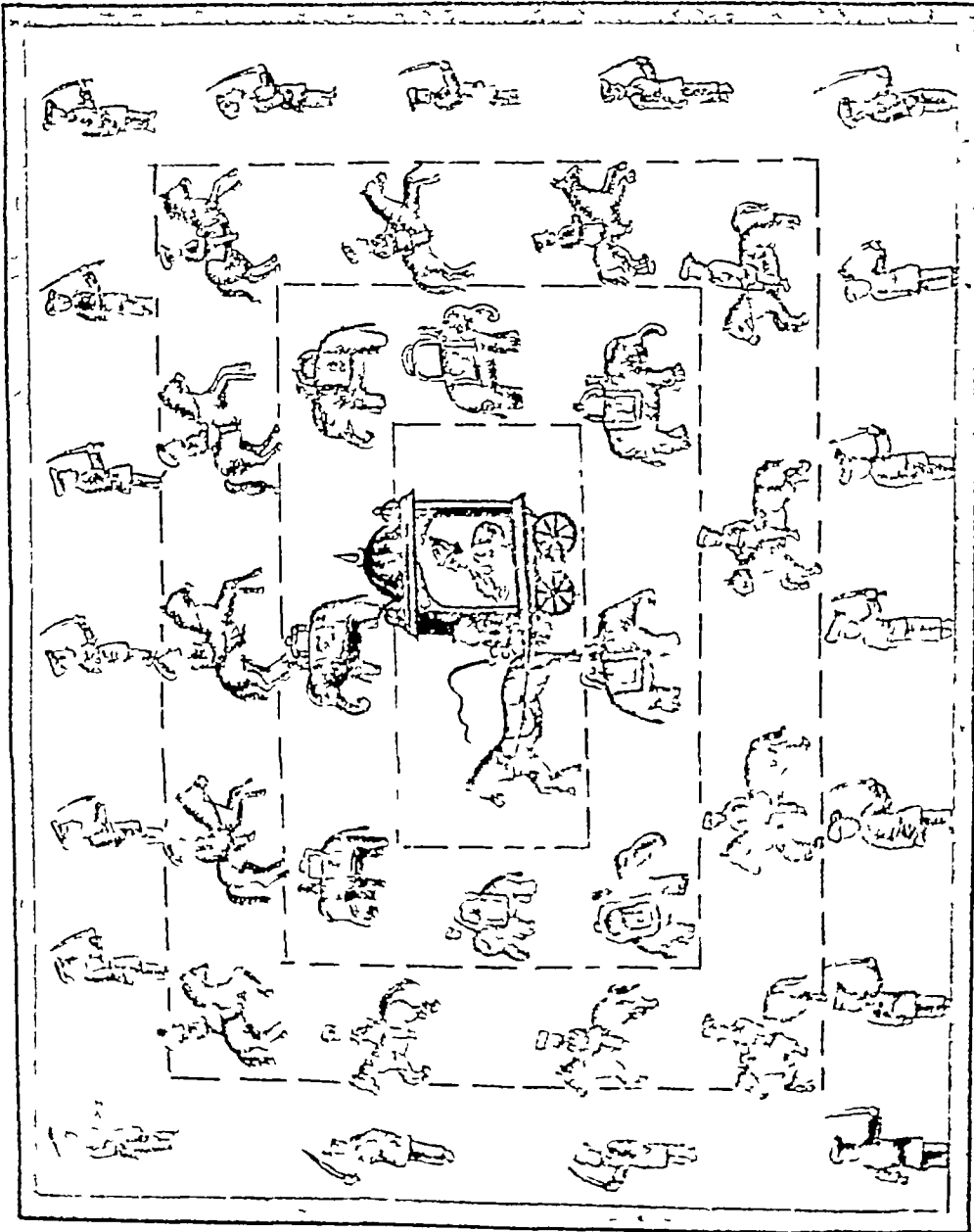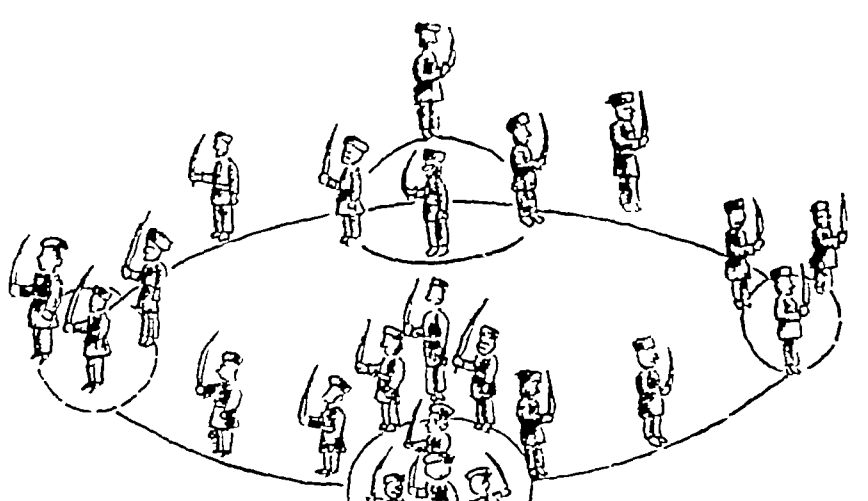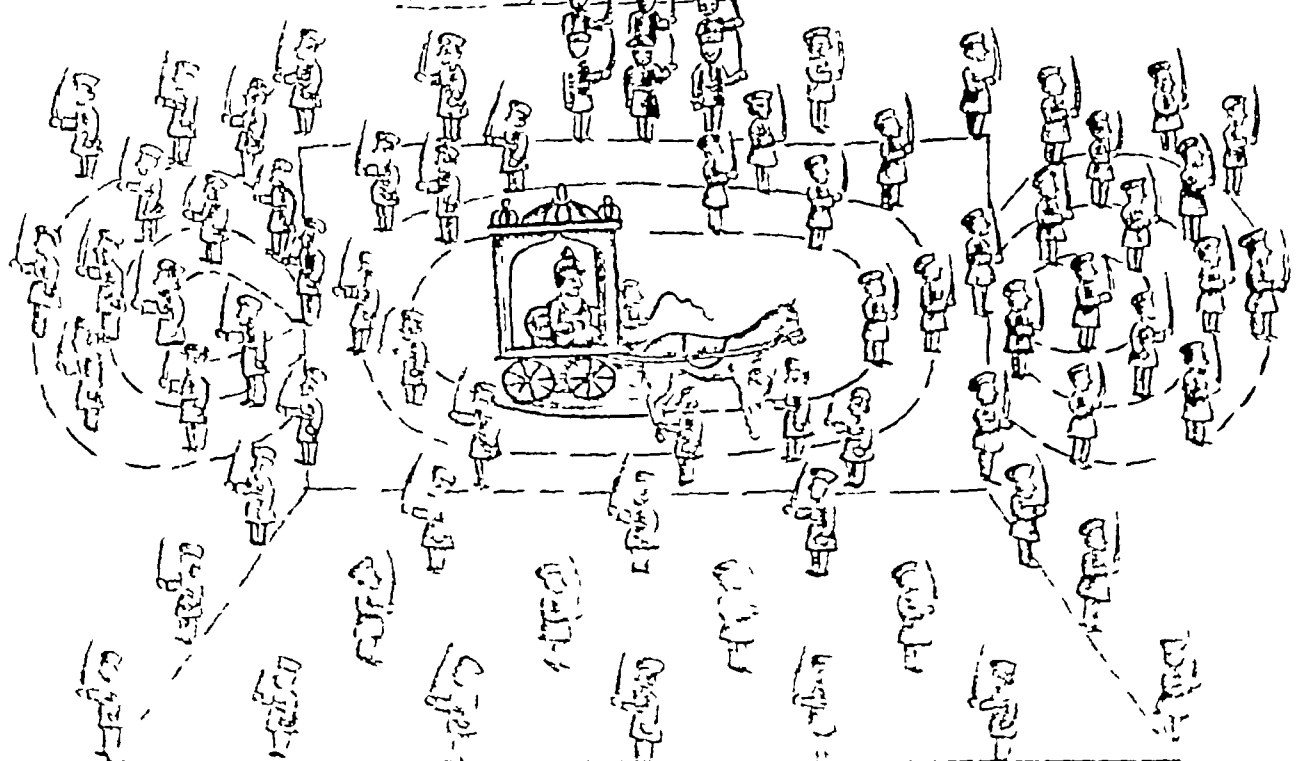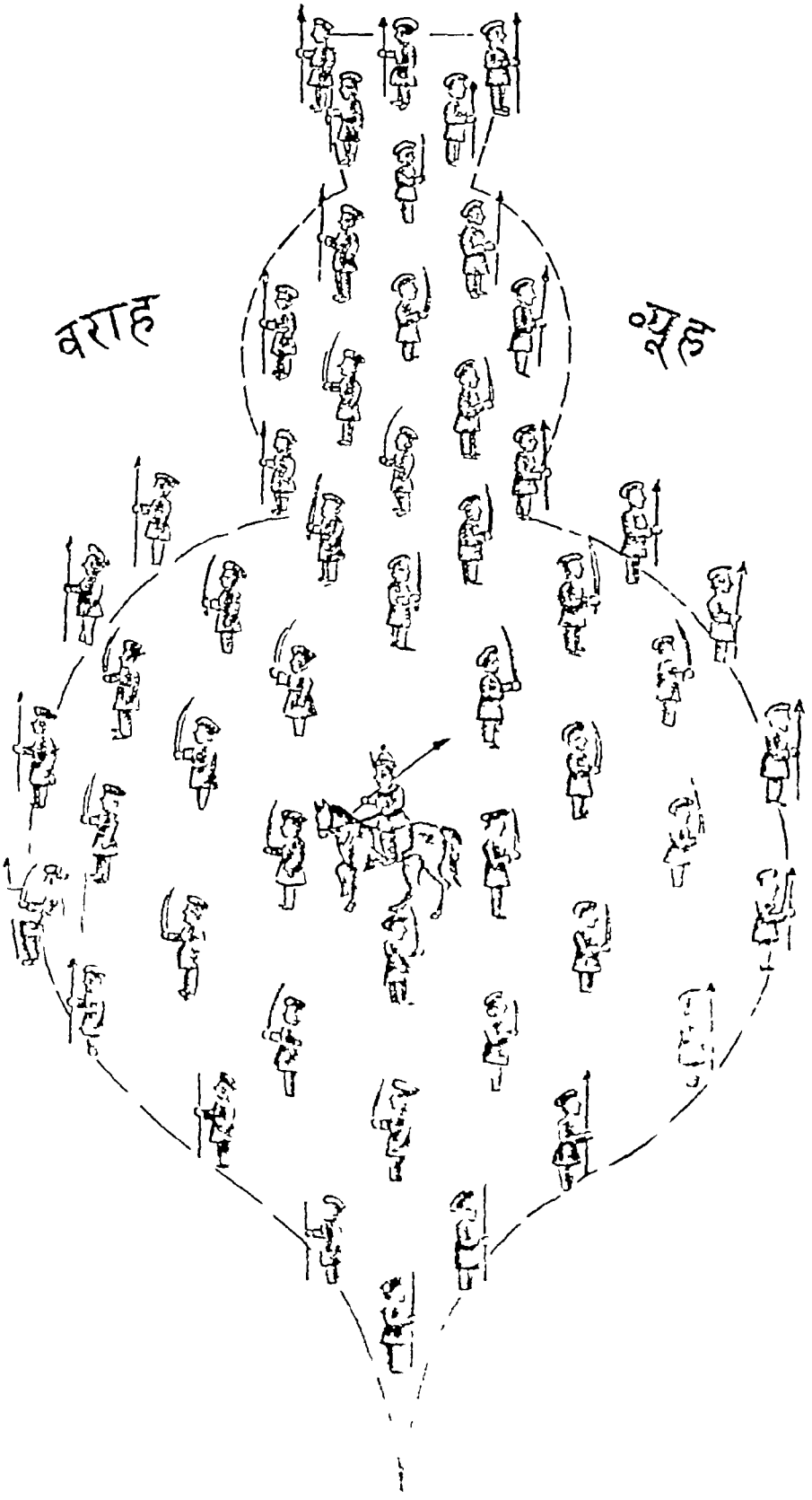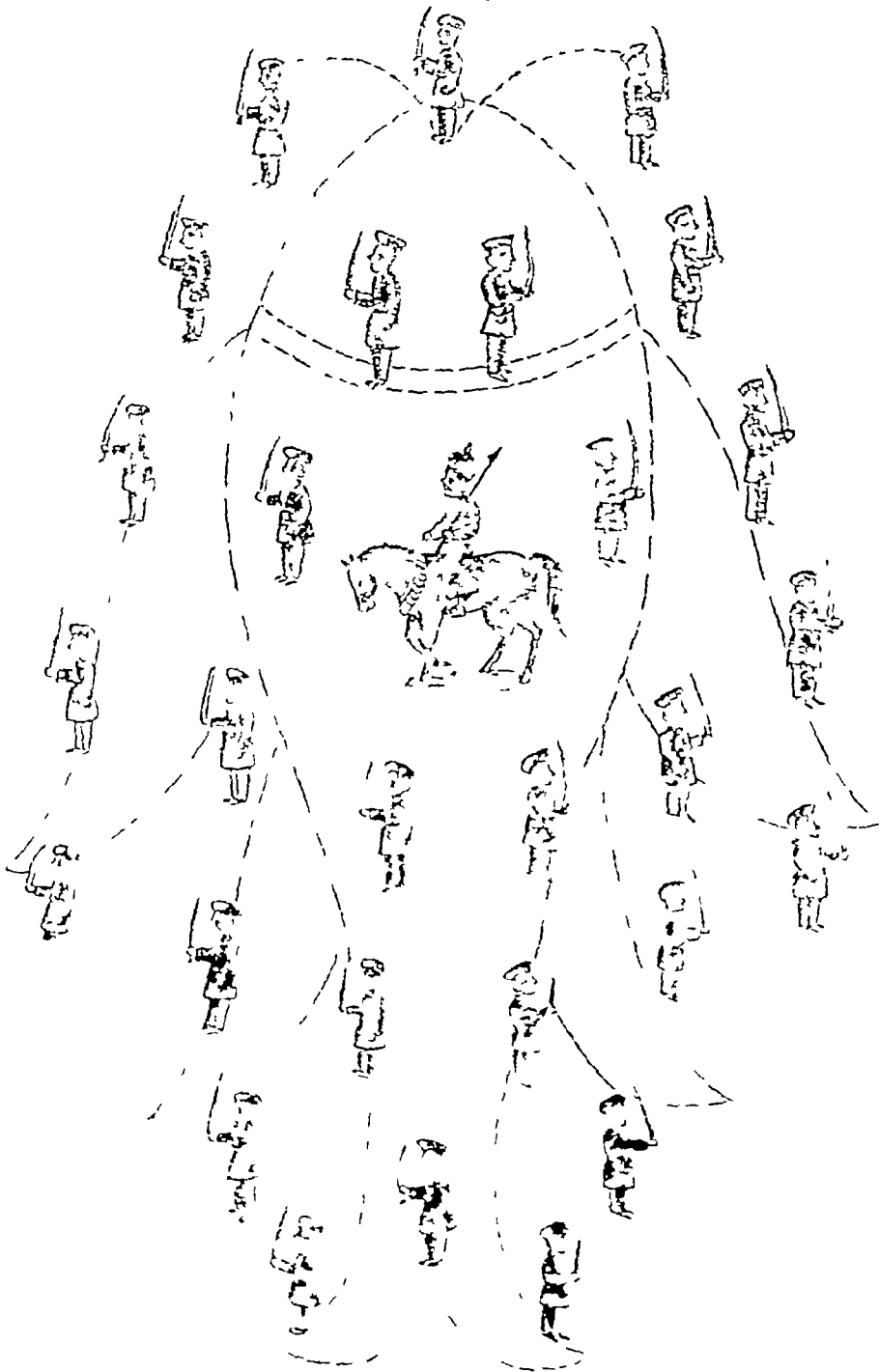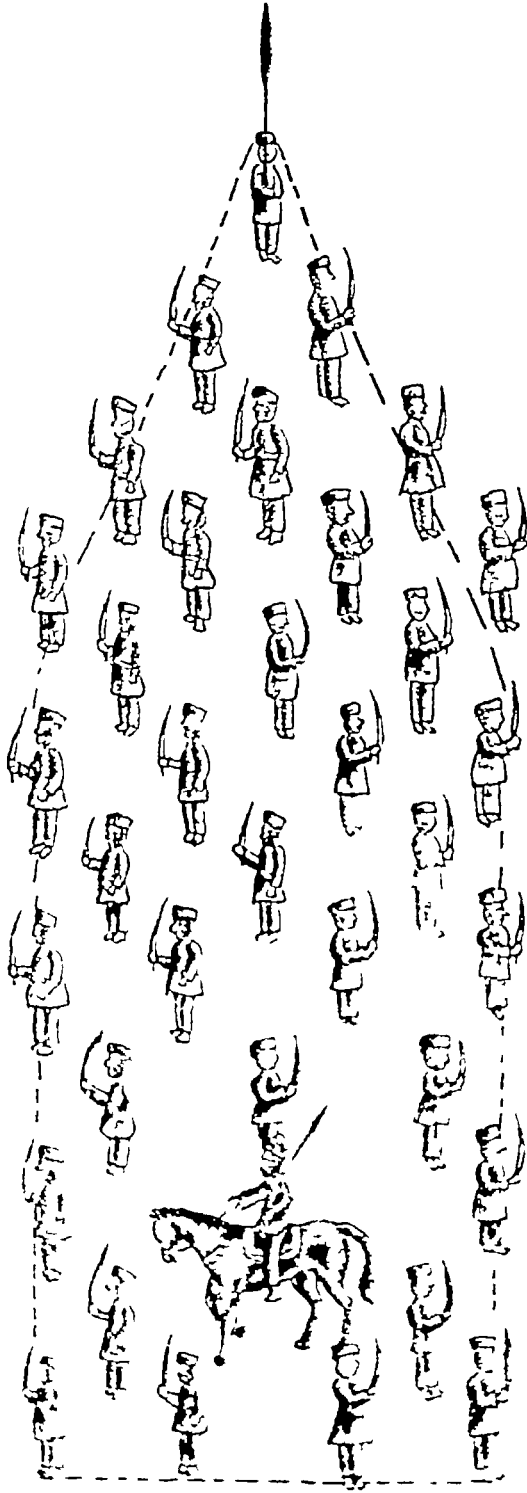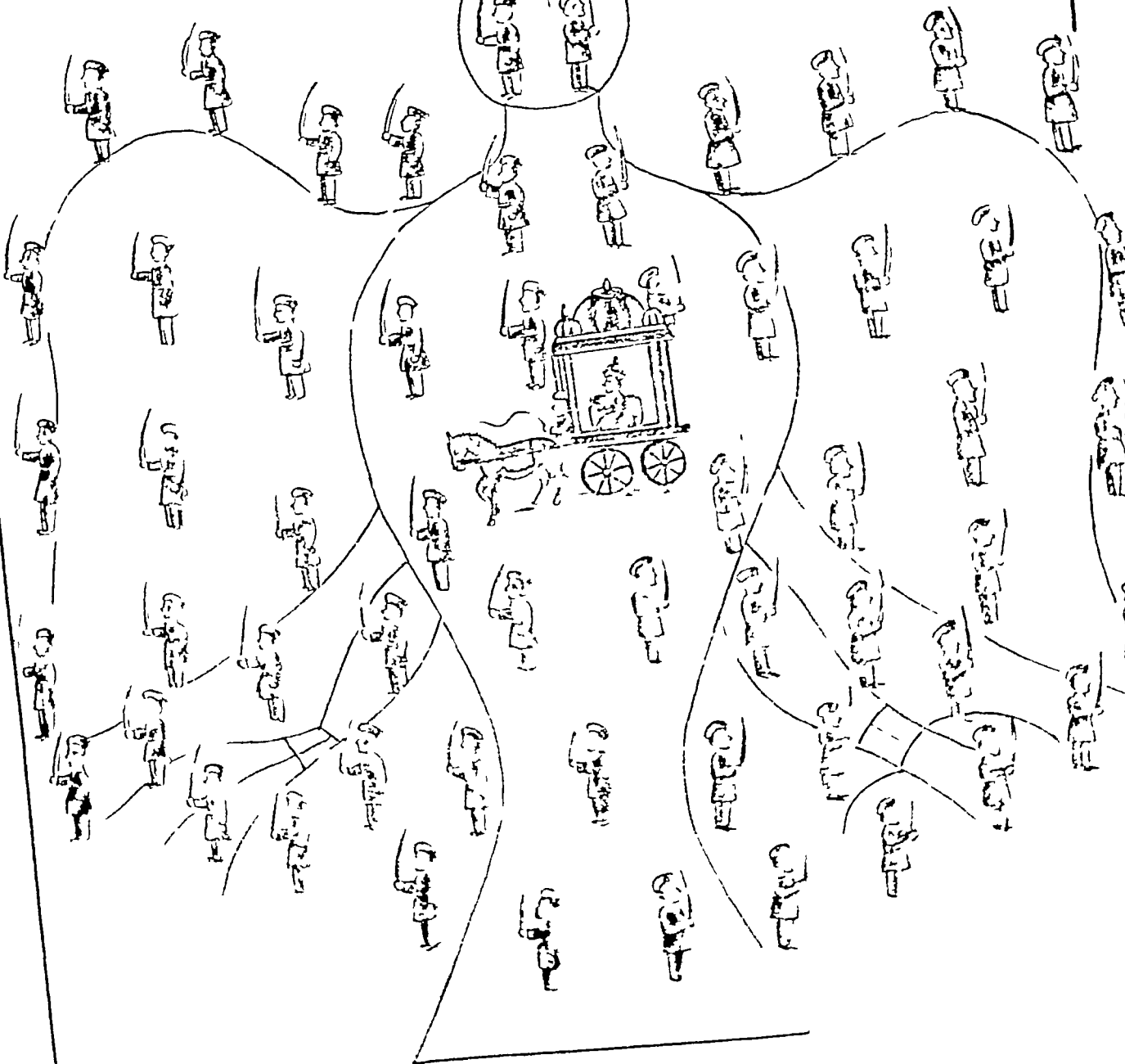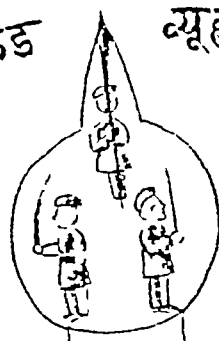
पद्म व्यूह
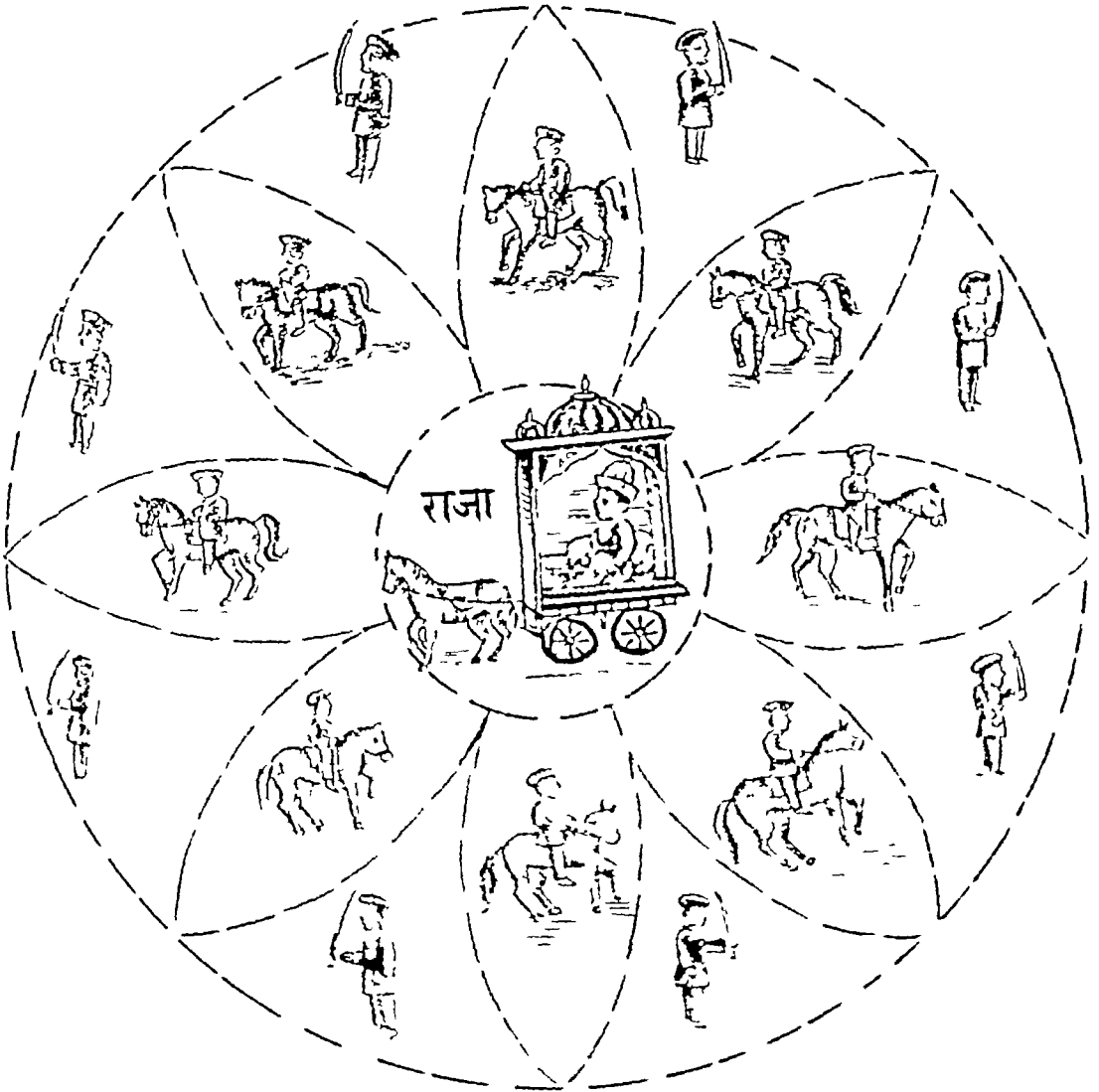
पिपीलिका व्यूह
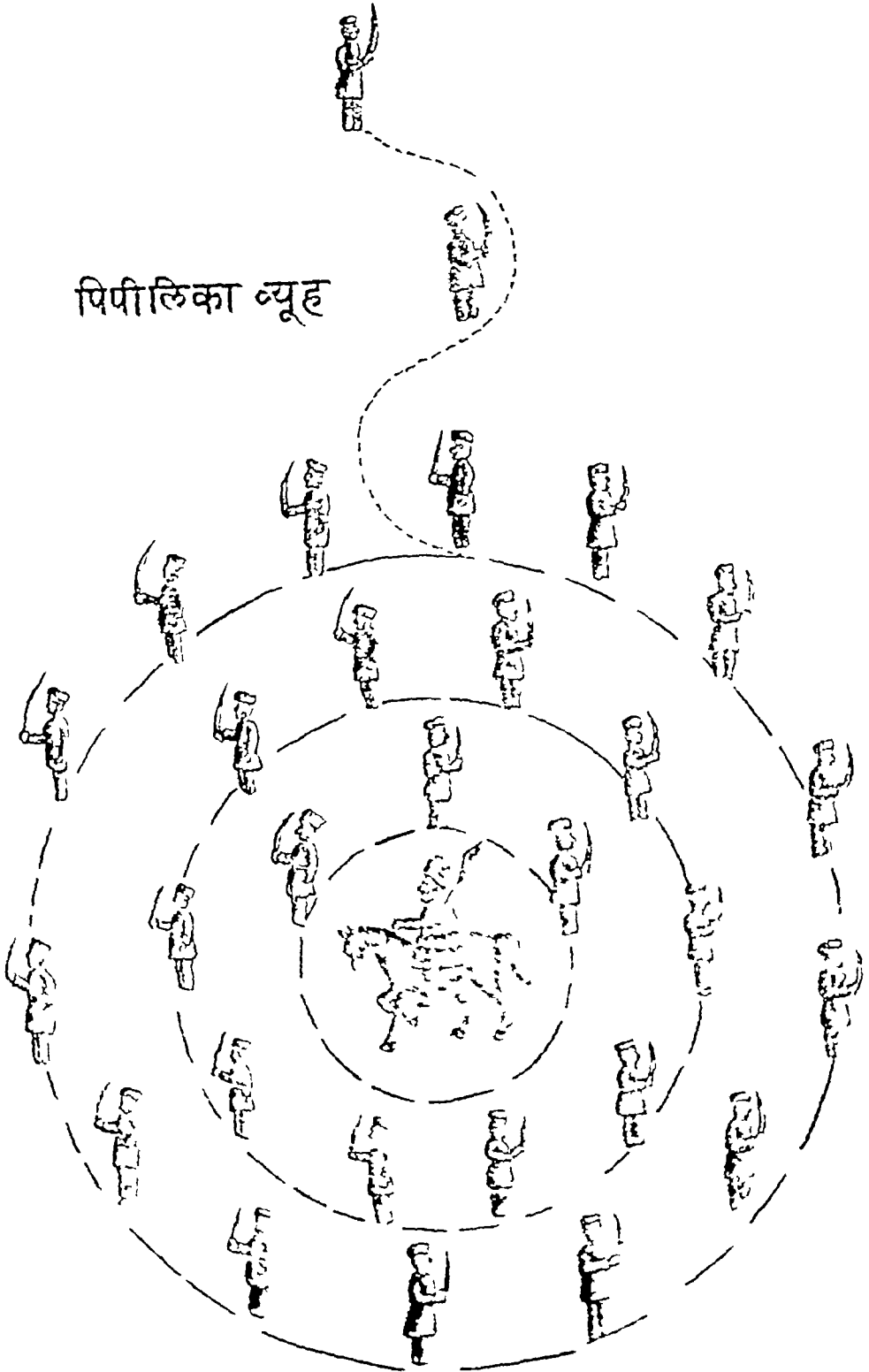
चतुष्पथ व्यूह
राजा
सर्वतोभद्र

दिग्व्यूह
अर्धचंद्र
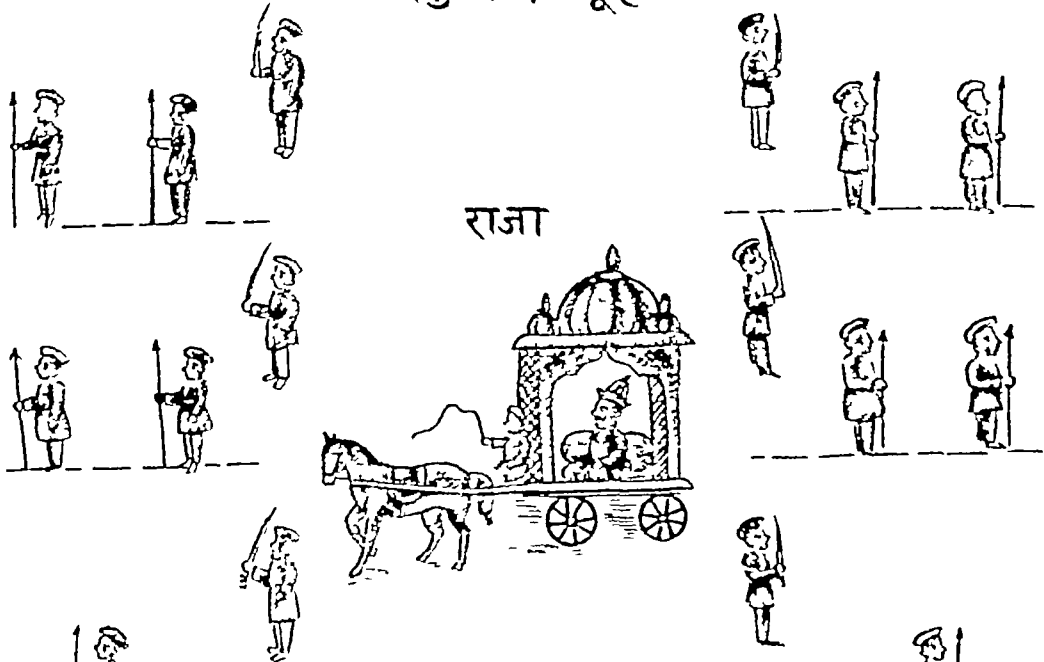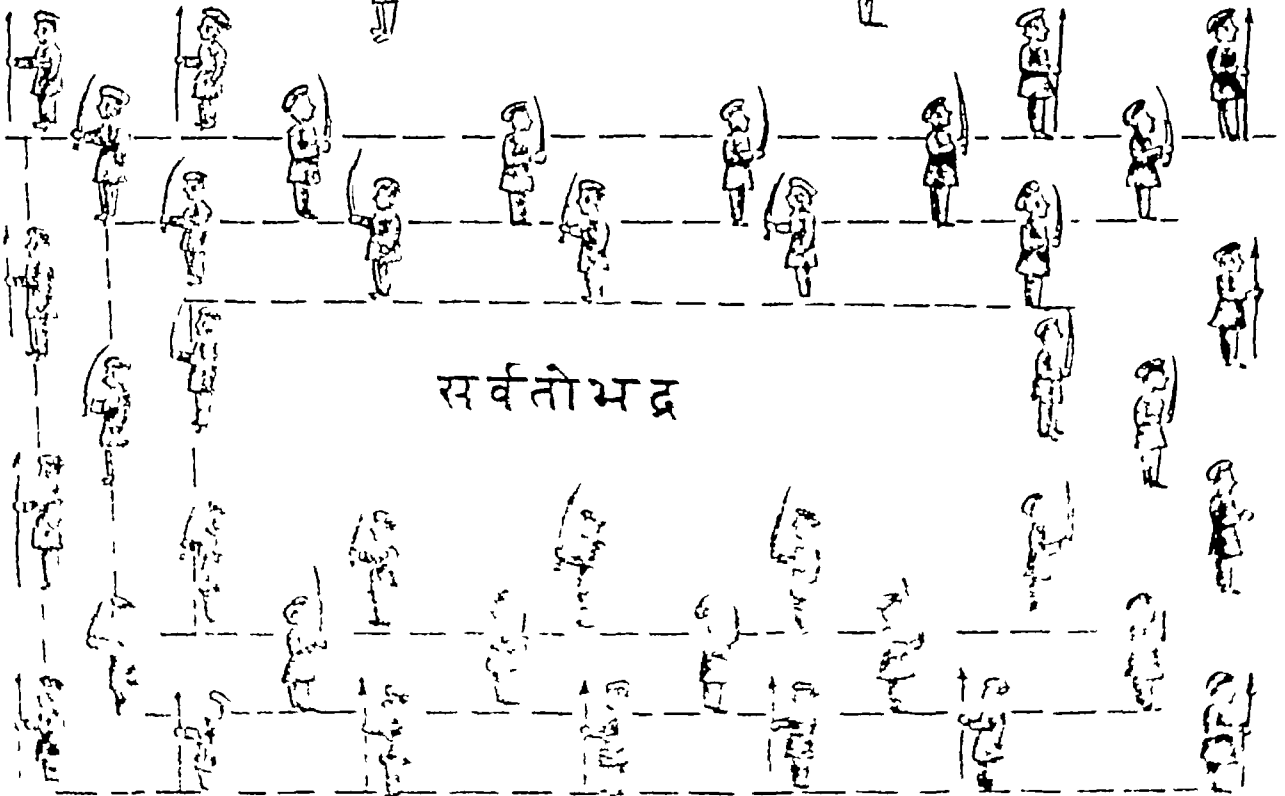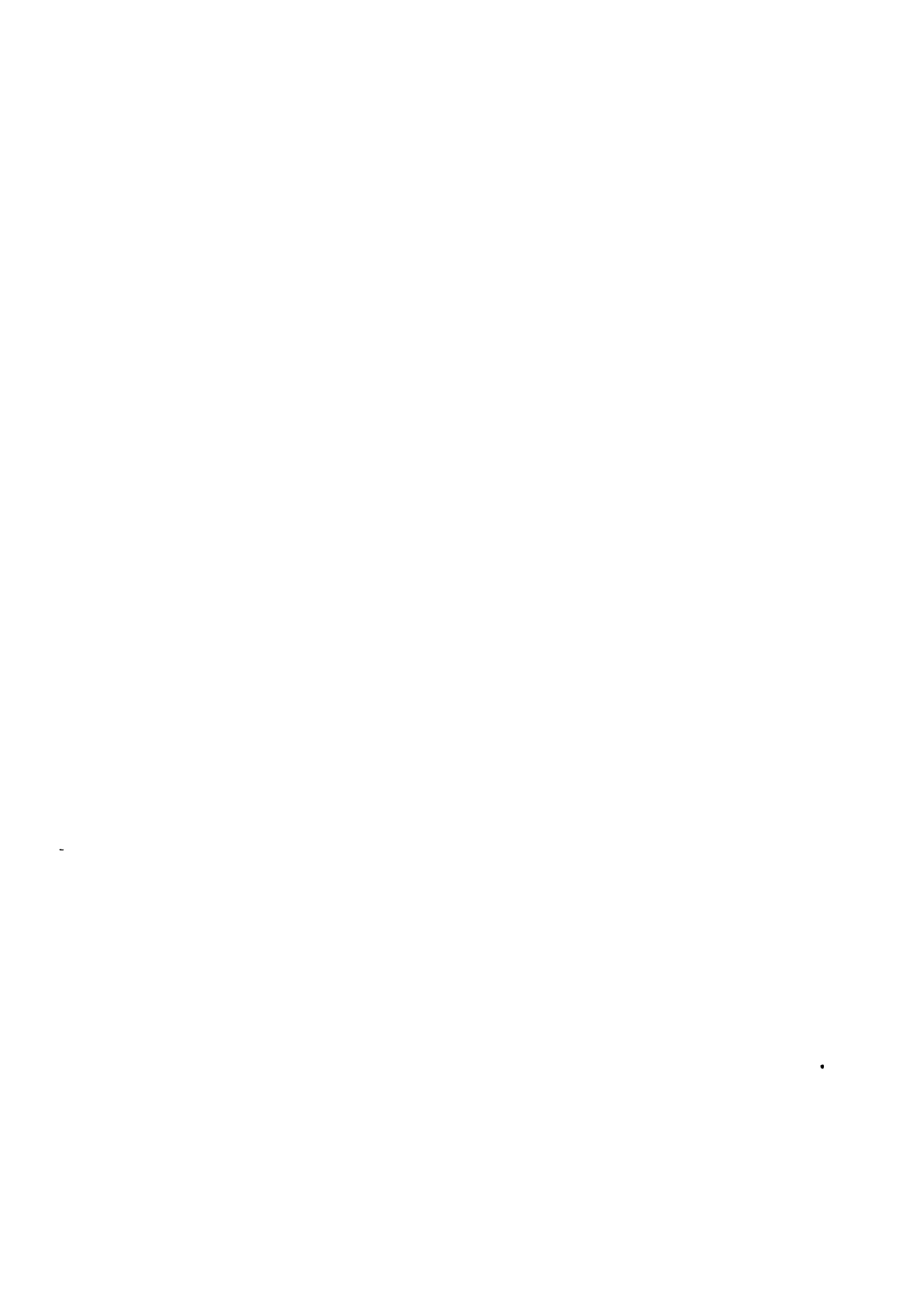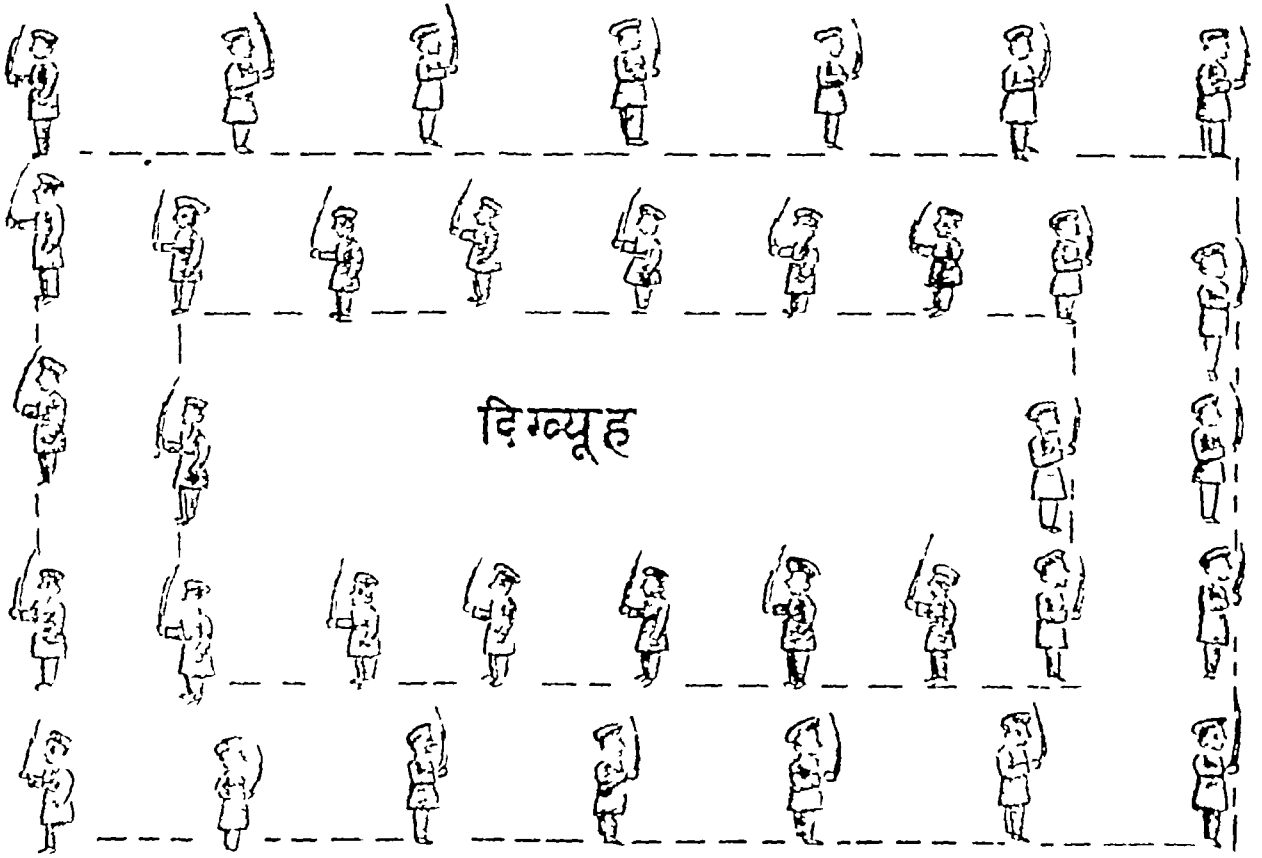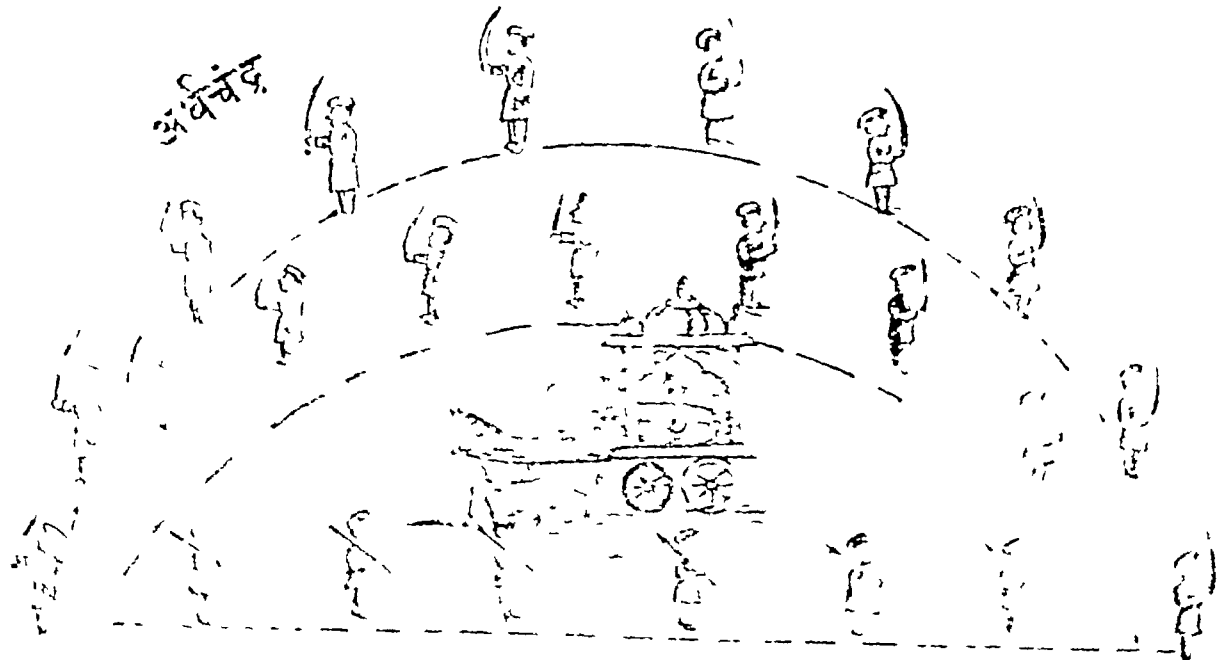
सेना शयन व्यूहम्
द्वारपाल
२ सेनापति
३ सेनानी
राजा
नायक
पदाति
पदाति
पदाति
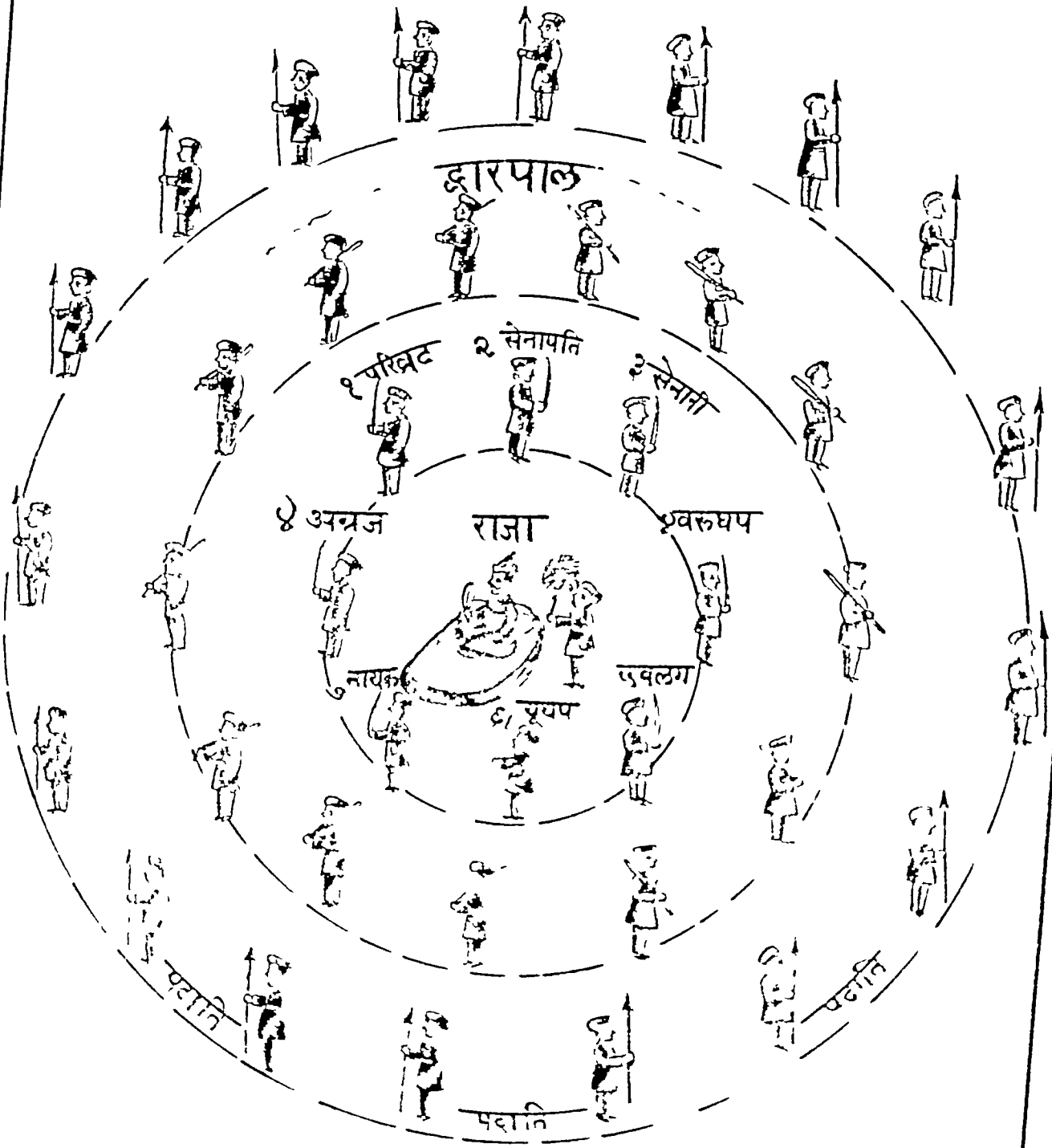
स्वल्प सेना बहती रहे अने विपुल सैन्य चारे तरफ फरतुं रहे. समान भूमिमां अश्ववारोए युद्ध करवुं. पाणीमां हाथी, तुंबी, मसक अथवा नावपर चढी लडाइ करवी; पदाति लश्करे हाथमां बन्दूक अथवा धनुष लइ वनमां वृक्षोनी ओथे अथवा तेना उपर चढी युद्ध करवुं अने उंची नीची पृथ्वी होय त्यां तो ढाल, तलवार, भालां तेमज बरछी आदियी लडाइ करवी; युद्धमां अहंकारी लोकोने आगळ स्थान आपी अन्यने पाछळ राखवा. राजाए व्याकरणनो अभ्यास अवश्य करवो जोइए, नव लकारनां रूपोने छोडी केवळ लोट्लकारनां रूपोने कार्यनी सिद्धि अर्थे कंठाग्र करवां जोइए. जे सेनापतिए लोट्लकारनां मध्यम पुरुषनांज रूपो याद कर्यां होय तेनो कोइ पण पराभव करी शकतुं नथी. मध्यम पुरुषना बहु वचननो प्रयोगज सर्व; सिद्धि आपनार छे अने एथीज न्हाना न्हाना हुद्देदारो राजानी अथवा पोतानी आज्ञानुं पालन करे छे.

कवायदने माटे,

अथोदाहरण सहितो धातुपाठः

१ भूसत्तायां (भू धातुनो अर्थ थवुं होवुं)
भव–तुं था,
भवतम्–तमे बे थाओ.
भवत–तमे थाओ.

२ चल्–चलने (चल एटले चालवुं.)
चल–तुं चाल.
चलतम्–तमे बे चालो.
चलत–तमे चालो.

३ ष्ठा गतिनिवृत्तौ (ष्ठा–उभा रहेवुं).
तिष्ठ–तुं उभो रहे.
तिष्ठतम्–तमे बे उभा रहो.
तिष्ठत–तमे उभा रहो.

४ दा दाने (दा–आपवुं).
देहि–तुं आप.
दत्तम्–तमे बे आपो.
दत्त–तमे आपो.

५ पत्लृ पतने (पत्=पडवुं)
पत–तुं पड.
पततम्–तमे बे पडो.
पतत–तमे पडो.

६ डुकृञ् करणे (कृ–करवुं.
कुरु–तुं कर.
कुरुतम्–तमे बे करो.
कुरुत–तमे करो.

७ चित्ती संज्ञाने (चित्—जाणवुं चेतवुं)
चेत—तुं जाण, चेत.
चेततम्—तमे बे जाणो, चेतो.
चेतत—तमे जाणो, चेतो.

८ गम्लृ गतौ (गम्—जवुं)
गच्छ—तुं जा.
गच्छतम्—तमे बे जाओ.
गच्छत—तमे जाओ.

९ श्रु श्रवणे (श्रु—सांभळवुं).
शृणु—तुं सांभळ.
शृणुतम्—तमे सांभळो.
शृणुत—तमे सांभळो.

१० दृशिर् प्रेक्षणे (दृश—जोवुं)
पश्य—तुं जो.
पश्यतम्—तमे बे जुओ.
पश्यत—तमे जुओ.

११ ग्रह उपादाने (ग्रह्—ग्रहण करवुं).
गृहाण—तुं ग्रहण कर.
गृह्णीतम्—तमे बे ग्रहण करो.
गृह्णीत—तमे ग्रहण करो.

१२ पृच्छ ज्ञीप्सायाम् (पृच्छ पूछवुं).
पृच्छ—तुं पूछ.
पृच्छतम्—तमे बे पूछो.
पृच्छत—तमे पूछो.

१३ ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (ब्रू—बोलवुं)
ब्रूहि—तुं बोल.
ब्रूतम्—तमे बे बोलो.
ब्रूत—तमे बोलो.

१४ भक्ष् भक्षणे (भक्ष्—खावुं).
भक्षय—तुं खा.
भक्षयतम्—तमे बे खाओ.
भक्षयत—तमे खाओ.

१५ पा पाने (पा—पीवुं).
पिब—तुं पी.
पिबतम्—तमे बे पीओ.
पिबत—तमे पीओ.

१६ इषु इच्छायाम् (इष्—इच्छवुं).
इच्छ—तुं इच्छा कर.
इच्छतम्—तमे बे इच्छा करो.
इच्छत—तमे इच्छो.

१७ ज्ञा अवबोधने (ज्ञा—जाणवुं.)
जानीहि—तुं जाण.
जानीतम्—तमे बे जाणो.
जानीत—तमे जाणो.

१८ आप्लृ व्याप्तौ (आप्—पामवुं, मेळववुं.)
आप्नुहि—तुं पाम.
आप्नुतम्—तमे बे पामो.
आप्नुत—तमे पामो.

१९ कुथि हिंसायाम् (कुथ्—मारवुं.)
कुन्थ—तुं मार.
कुन्थतम्—तमे बे मारो.
कुन्थत—तमे मारो.

२० त्यज् त्यागे (त्यज्—तजवुं.)
त्यज—तुं तजी दे.
त्यजतम्—तमे बे तजी दो.
त्यजत—तमे तजी दो.

२१ हन् हिंसा गत्योः (हन्-हणवुं.)
जहि-तुं हण.
हतम्-तमे बे हणो.
हत-तमे हणो.

२२ शासु अनुशिष्टौ (शास्-शासन करवुं हुकम चलाववो.)
शाधि-तुं शासन कर.
शिष्टम्-तमे बे शासन करो.
शिष्ट-तमे शासन करो.

२३ इण गतौ (इण्-जवुं.)
इहि-तुं जा.
इतम्-तमे बे जाओ.
इत-तमे जाओ.

२४ विद् ज्ञाने (विद्-जाणवुं.)
विद्धि-तुं जाण.
वित्तम्-तमे बे जाणो.
वित्त-तमे जाणो.

२५ अस्-भुवि (अस्-थवुं, होवुं.)
एधि-तुं हो, था.
स्तम्-तमे बे हो, थाओ.
स्त-तमे हो, थाओ.

२६ रुधि रावरणे (रुध्-रुंधवुं, रोकवुं.)
रुन्धि-तुं रोक.
रुन्द्धम्-तमे बे रोको.
रुन्द्ध-तमे रोको.

२७ शीङ् स्वप्ने (शी-सुवुं)
शेष्व-तुं सूइ जा.
शयाथाम्-तमे बे सूइ जाओ.
शेध्वम्-तमे सूइ जाओ.

२८ अजगतौ क्षेपणेच (अज्-जवुं, फेंकवुं.)
अज-तुं जा, फेंक.
अजतम्-तमे बे जाओ, फेंको.
अजत-तमे जाओ, फेंको.

२९ व्रज् गतौ (व्रज-जवुं.)
व्रज-तुं जा.
व्रजतम्-तमे बे जाओ.
व्रजत-तमे जाओ.

३० क्रमुपाद विक्षेपे (क्रम्-चालवुं, पगलुं भरवुं.)
क्राम्य-तुं चाल, पगलां भर.
क्राम्यतम्-तमे बे चालो, पगलां भरो.
क्राम्यत-तमे चालो, पगलां भरो.

३१ दह् भस्मी करणे (दह्-बाळवुं.)
दह-तुं बाळ.
दहतम्-तमे बे बाळो.
दहत-तमे बाळो.

३२ मिह सेचने (मिह्-सींचवुं, छांटवुं.)
मेढ-तुं छांट,
मेढम्-तमे बे छांटो.
मेढ-तमे छांटो.

३३ णीञ् प्रापणे (नी-लइ जवुं.)
नय-तुं लइ जा.
नयतम्-तमे बे लइ जाओ.
नयत-तमे लइ जाओ.

३४ गै शब्दे (गै-गावुं.)
गाय-तुं गायन कर.

७ चित्ती संज्ञाने (चित्–जाणवुं चेतवुं)
चेत–तुं जाण, चेत.
चेततम्–तमे बे जाणो, चेतो.
चेतत–तमे जाणो, चेतो.

८ गम्लृ गतौ (गम्–जवुं)
गच्छ–तुं जा.
गच्छतम्–तमे बे जाओ.
गच्छत–तमे जाओ.

९ श्रु श्रवणे (श्रु–सांभळवुं).
शृणु–तुं सांभळ.
शृणुतम्–तमे सांभळो.
शृणुत–तमे सांभळो.

१० दृशिर् प्रेक्षणे (दृश–जोवुं)
पश्य–तुं जो.
पश्यतम्–तमे बे जुओ
पश्यत–तमे जुओ.

११ ग्रह उपादाने (ग्रह–ग्रहण करवुं).
गृहाण–तुं ग्रहण कर.
गृह्णीतम्–तमे बे ग्रहण करो.
गृह्णीत–तमे ग्रहण करो.

१२ पृच्छ ज्ञीप्सायाम् (पृच्छ पूछवुं).
पृच्छ–तुं पूछ.
पृच्छतम्–तमे बे पूछो.
पृच्छत–तमे पूछो.

१३ ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (ब्रू–बोलवुं)
ब्रूहि–तुं बोल.
ब्रूतम्–तमे बे बोलो.
ब्रूत–तमे बोलो.

१४ भक्ष् भक्षणे (भक्ष्–खावुं).
भक्षय–तुं खा.
भक्षयतम्–तमे बे खाओ.
भक्षयत–तमे खाओ.

१५ पा पाने (पा–पीवुं).
पिब–तुं पी.
पिबतम्–तमे बे पीओ.
पिबत–तमे पीओ.

१६ इषु इच्छायाम् (इष्–इच्छवुं).
इच्छ–तुं इच्छा कर.
इच्छतम्–तमे बे इच्छा करो.
इच्छत–तमे इच्छो.

१७ ज्ञा अवबोधने (ज्ञा–जाणवुं.)
जानीहि–तुं जाण.
जानीतम्–तमे बे जाणो.
जानीत–तमे जाणो.

१८ आप्लृ व्याप्तौ (आप्–पामवुं, मेळववुं.)
आप्नुहि–तुं पाम.
आप्नुतम्–तमे बे पामो.
आप्नुत–तमे पामो.

१९ कुथि हिंसायाम् (कुथ्–मारवुं.)
कुन्थ–तुं मार.
कुन्थतम्–तमे बे मारो.
कुन्थत–तमे मारो.

२० त्यज् त्यागे (त्यज्–तजवुं.)
त्यज–तुं तजी दे.
त्यजतम्–तमे बे तजी दो.
त्यजत–तमे तजी दो.

२१ हन् हिंसा गत्योः (हन्-हणवुं.)
जहि-तुं हण.
हतम्-तमे वे हणो.
हत-तमे हणो.
२२ शासु अनुशिष्टौ (शास्-शासन करवुं हुकम चलाववो.)
शाधि-तुं शासन कर.
शिष्टम्-तमे वे शासन करो.
शिष्ट-तमे शासन करो.
२३ इण गतौ (इण्-जवुं.)
इहि-तुं जा.
इतम्-तमे वे जाओ.
इत-तमे जाओ.
२४ विद् ज्ञाने (विद्-जाणवुं.)
विद्धि-तुं जाण.
वित्तम्-तमे वे जाणो.
वित्त-तमे जाणो.
२५ अस्-भुवि (अस्-थवुं, होवुं.)
एधि-तुं हो, था.
स्तम्-तमे वे हो, थाओ.
स्त-तमे हो, थाओ.
२६ रुधि रावरणे (रुध्-रुंधवुं, रोकवुं.)
रुन्धि-तुं रोक.
रुन्द्धम्-तमे वे रोको.
रुन्द्ध-तमे रोको.
२७ शीङ् स्वप्ने (शी-सुवुं)
शेष्व-तुं सुइ जा.
शयाथाम्-तमे वे सुइ जाओ.
शेध्वम्-तमे सुइ जाओ.
२८ अजगतौ क्षेपणेच (अज्-जवुं, फेंकवुं.)
अज-तुं जा, फेंक.
अजतम्-तमे वे जाओ, फेंको.
अजत-तमे जाओ, फेंको.
२९ व्रज् गतौ (व्रज-जवुं.)
व्रज-तुं जा.
व्रजतम्-तमे वे जाओ.
व्रजत-तमे जाओ.
३० क्रमुपाद विक्षेपे (क्रम्-चालवुं, पगलुं भरवुं.)
क्राम्य-तुं चाल, पगलां भर.
क्राम्यतम्-तमे वे चालो, पगलां भरो.
क्राम्यत-तमे चालो, पगलां भरो.
३१ दह् भस्मी करणे (दह्-बाळवुं.)
दह-तुं बाळ.
दहतम्-तमे वे बाळो.
दहत-तमे बाळो.
३२ मिह सेचने (मिह्-सींचवुं, छांटवुं.)
मेह-तुं छांट.
मेहतम्-तमे वे छांटो.
मेहत-तमे छांटो.
३३ णीज प्रापणे (नी-लइ जवुं.)
नय-तुं लइ जा.
नयतम्-तमे वे लइ जाओ.
नयत-तमे लइ जाओ.
३४ गै शब्दे (गै-गावुं.)
गाय-तुं गायन कर.

गायतम्—तमे बे गायन करो.

गायत—तमे गाओ.

३५ जिजये (जि—जीतवुं.)

जय—तुं जीत.

जयतम्—तमे बे जीतो.

जयत—तमे जीतो.

३६ कृष्—विलेखने (कृष्—खेंचवुं, खेडवुं.)

कृष—तुं खेंच.

कृषतम्—तमे बे खेंचो.

कृषत—तमे खेंचो.

३७ मुच्लृ मोचने (मुच्—मूकवुं.)

मुञ्च—तुं मूक.

मुञ्चतम्—तमे बे मूको.

मुञ्चत—तमे मूको.

३८ सिञ्च सिञ्चने (सिञ्च—सींचवुं, छांटवुं.)

सिञ्च—तुं छांट.

सिञ्चतम्—तमे बे छांटो.

सिञ्चत—तमे छांटो.

३९ कृन्त कर्तने (कृन्त—कापवुं.)

कृन्त—तुं काप.

कृन्ततम्--तमे बे कापो.

कृन्तत--तमे कापो.

४० क्षिप् प्रेरणे (क्षिप्--फेंकवुं)

क्षिप्--तुं फेंक.

क्षिपतम्--तमे बे फेंको,

क्षिपत--तमे फेंको.

४१ कृ विकिरणे (कृ--विखेरवुं.)

किर--तुं विखेर.

किरतम्--तमे बे विखेरो.

किरत—तमे विखेरो.

४२ मिल मिलने (मिल--मळवुं, भेटवुं.

मिल—तुं मळ.

मिलतम्—तमे बे मळो.

मिलत--तमे मळो.

४३ लिख लिखने (लिख्--लखवुं.)

लिख—तुं लख.

लिखतम्--तमे बे लखो.

लिखत--तमे लखो.

४४ मनुज्ञाने (मन्—मानवुं, जाणवुं.)

मन्यस्व--तुं मान.

मन्येथाम्—तमे बे मानो.

मन्यध्वम्--तमे मानो.

४५ व्यध्वेधने (व्यध्—वींधवुं.)

विध्य—तुं वींध.

विध्यतम्--तमे बे वींधो.

विध्यत- तमे वींधो.

४६ रच्रचने (रच्--रचवुं.)

रचय--तुं रच.

रचयतम्--तमे बे रचो.

रचयत--तमे रचो.

४७ गण--संख्याने (गण्--गणवुं.)

गणय--तुं गण.

गणयतम्—तमे बे गणो.

गणयत--तमे गणो.

४८ तनु विस्तारे (तन्--पाथरवुं.)

तनु- तुं पाथर

तनुतम्--तमे पाथरो.
तनुत--तमे वे पाथरो.

४९ भुज पालनाभ्यवहारयोः (भुज्--भोगववुं, खावुं.)
भुङ्धि--तुं भोगव.
भुङ्क्तम्--तमे वे भोगवो.
भुङ्क्त--तमे भोगवो.

५० भिदिर् विदारणे (भिद्--फाडवुं, चीरवुं)
भिन्धि--तुं फाड.
भिन्तम्--तमे वे फाडो.
भिन्त--तमे वे फाडो.

५१ या प्रापणे (या -जवुं.)
याहि--तुं जा.
यातम्--तमे वे जाओ.
यात--तमे जाओ.

५२ अद् भक्षणे (अद्--खावुं.)
अद्धि--तुं खा.
अत्तम्--तमे वे थाओ.
अत्त--तमे जाओ.

५३ जागृ निद्राक्षये (जागृ--जागवुं)
जागृहि--तुं जाग.
जागृतम्--तमे वे जागो.
जागृत--तमे जागो.

५४ विश प्रवेशने (विश--प्रवेश करवो, पेसवुं.)
विश--तुं प्रवेश कर.
विशतम्--तमे वे प्रवेश करो.
विशत--तमे प्रवेश करो.
विश धातुनी पूर्वे उपसर्ग आववाथी प्रवेश करवानो अर्थ जतो रहे छे अने "वेसवुं" एवो अर्थ थाय छे.
उपविश--तुं वेस,
उपविशतम्--तमे वे वेसो,
उपविशत तमे वेसो.

इति धातुपाठ.
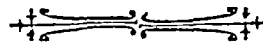
हवे ते धातुओना उदाहरणानोनो क्रम वतावे छे.

कोटं वेष्टयत--तमे कोट (किल्ला) ने वींटो
कोटं प्रविशत तमे कोटमां प्रवेश करो.
कोटमुपरियात--तमे कोटनी उपर जाओ.
अश्वानुपर्यारोहत- तमे अश्वोपर चडो.
अश्वांश्चारयत--तमेअश्वोने चारो खवरावो
अश्वान् जलं पाययत -तमे अश्वोने जलपाओ.
अश्वपतयो मल्लैर्नववाटिकाभोजनं पाचयत जलं पिवत--हे घोडे स्वारो तमे भाला वगेज वाटीनुं भोजन रांधो अने जळ पीओ
द्विजातय श्रणकान्नं चर्चयत, तथा जलं पिवत - हे ब्राह्मणो तमे चणा रुप अन्नने खाओ अने पाणी पीओ.
जलाऽभावे शीतली कुरुत--जळने अभावे शीतळ (थंडा) करो.

अश्वानारुह्य धावत--घोडापर चडीने तमे दोडो
पदातयः समीकं परवाहिनीं यात--हे पत्ति-
ओ, तमे शत्रुनी सेना समीप जाओ.
खड्गैः कृन्तत भल्लै विध्यत--खडगोवडे कापो,
भाला वडे वींधो.
रंजकं दत्त शितं च हत--रंजक आपो अने ठं-
डोने हणो.
कपाटे कुन्तै स्त्रोटयत- तमे भाला वडे कमाडने
तोडो.
वटिका आयान्ति निपतत--वाटिका (गोळी)
आवे छे. (माटे) पडी जाओ.
दुष्टान् कुन्थत--दुष्टोने हणो.
डमरुं वादयत--डमरु वगाडो.
गीतं गायत- गीत गाओ.
वामपार्श्वे अयत--डावी बाजु जाओ.
दक्षिण पार्श्वे इत--जमणी बाजु जाओ.
सपदि व्रजत--जलदी जाओ, जलदी चालो.
शनै व्रजत--धीमे धीमे जाओ.
अनुव्रजत- पाछळ जाओ.
अग्रे व्रजत -आगळ जाओ.
तूर्ष्णीं भवत--मुंगा रहो.
भीरुं त्यजत- बीकणने छोडी दो.

शूरान् विध्यत--शूरवीरोने वींधो.
चर्मणा वटिकां रुन्ध--चर्मवडे वटिकाने रोको.
रंजकंदत्त--रंजक आपो.
उपागच्छत--पासे आवो.
दूरंगच्छत--दूर जाओ.
शेध्वम्--सूइ जाओ.
जाग्रत--जागो.
वस्त्राणि परिधारयत--वस्त्रो पहेरो.
कटिंबध्नीत--केड बांधो.
शस्त्राणि धारयत -शस्त्रो धारण करो.
प्रधनार्थं गच्छत--युद्धने माटे जाओ.
पदातयोऽग्रे--पत्तिओ आगळ चालो.
अश्वपतयः पश्चात्--घोडेस्वारो पाछळ जाओ
गजारुढा स्तदनु--तेनी पाछळ हाथीना स्वारो
चालो.
रथिनोऽन्तिमस्था--छेल्ला रथिको चालो.
पदातयस्तिष्ठत समीके--पत्तिओ समीकमां रहो
अश्ववाराः प्राच्यामित--घोडेस्वारो पूर्व दिशामां
जाओ.
गजपाः पश्चिमे चलत--हाथीना स्वारो पश्चिममां
जाओ.

धीवत प्रकारः

अश्वेषु पल्याणमारोपयत--घोडाओपर पर्याण नांखो.

प्रगहं प्रतिहत--चोकठुं खेंचो.

अंकुशेन हस्तिनं रुन्ध--अंकुशवडे हाथीने रुन्धो-रोको.

अश्वेश्वारोहयत--घोडाओपर आरुढ थाओ.

हस्तिपका ध्वजान् गृह्णीत--हाथीना रक्षको ध्वजाओ ग्रहण करो.

अश्वपतयो युध्यत--घोडेस्वारो युद्ध करो.

अनश्वैर्भारं वहत--खच्चरोवडे भार वहन करो.

उष्ट्रैर्भारोद्वहनं विदधत--उंटोवडे भार वहन करो

उष्ट्रपका उष्ट्रान्नयत--उंटना रक्षको उंटोने लइ जाओ.

अश्वपा मेहत--अश्वना रक्षको छांटो.

सारथिनः शकटेषु वस्तूनि स्थापयत--सारथीओ गाडामां वस्तुओ नांखो.

वृषभान् योजयत--बळदो जोडो.

चलत--चालो.

दासाः कबंधान् दोलासु क्षिपत--चाकरो मडदांने डोळीयोमां नांखो.

व्रणसहितानपि--घायल थएलाने पण डोळीयोमा नांखो.

सूर्यपृष्ठगाश्चलत--सूर्यनी पाछळ चालो.

सूर्यदक्षिणगाश्चलत--सूर्यनी जमणी बाजु चालो.

वायुपृष्ठगाश्चलत--वायुनी पाछळ चालो.

वायुदक्षिणगाश्चलत--वायुनी जमणी बाजु चालो

चन्द्राभिमुखाश्चलत--चन्द्रनी सन्मुख चालो.

चन्द्रवामगाश्चलत--चंद्रनी डावी बाजु चालो.

अन्यश्च.

ऋजवः संप्रयात आलीढम्, प्रत्यालीढम्, चलत, तिष्ठत, प्राङ्मुखाः, प्रत्यङ्मुखाः, अवाङ्मुखाः उत्तरास्याः--पूर्व तरफ मुख राखीने, पश्चिम तरफ मुख राखीने, दक्षिण तरफ मुख राखीने, उत्तर तरफ मुख राखीने सीधा चालो, वांका चालो, सन्मुख उभा रहो.

आग्नेय्याम्, वायव्याम्, नैऋत्याम्, ऐशान्याम्--अग्निखूणामां, वायव्यमा, नैऋत्यमां, ईशानमां

एकस्य प्रत्यक् एको गच्छतु पूर्ववत्--एकनी सन्मुख एक जाओ, बाकी पूर्वनी जेम.

कमलाकाराः--कमलने आकारे.

व्यलीक कमलाकाराः--खोटा कमलने आकारे.

धनुरारोपणम्--धनुष्य धारण करो.

तोलनं लस्तकं गृहाण--तोलन अने लस्तकने ग्रहण करो.

प्रहारम्--प्रहार करो.

अवहारम्--खेंची लो.

भुशुण्डी लक्ष्यम्--भुशुंडीनुं लक्ष्य करो.

अस्त्राघातम्–शस्त्रनो घा करो.
संहरास्त्रम्–शस्त्रानो संहार (करो)
नृपाभिमुखाःप्रणम्यगच्छतस्वस्व शिबिरम्–राजानी सन्मुख प्रणाम करीने पोतपोताना निवासस्थानमां जाओ.
सन्ध्याकालो जातो युद्धेतालम्–संध्यासमय थयो छे, माटे युद्ध बंध करो.

अन्यः

धनुराकाराः–धनुषना आकारवाळा.
उत्तिष्ठत–तमे उठो.
निपतत–तमे पडो.
मारयत–तमे मारो.
भवत–तमे थाओ.
कुरुत–तमे करो.
गच्छत–तमे जाओ.
तिष्ठत–तमे उभा रहो.
पश्यत–तमे जुओ.
गह्णीत–तमे ग्रहण करो.
ब्रूत–तमे बोलो.
पिबत–तमे पीओ.
जानीत–तमे जाणो.
कुन्थत–तमे मारो.
हत–तमे हणो.
इत–तमे जाओ.
चलत–तमे चालो.
धावत–तमे दोडो.
ध्वंसध्वम्–तमे सृइ जाओ.
पतत–तमे पडो.
चेतत–तमे चेतो.
अयत–तमे जाओ.
श्रृणुत–तमे सांभळो.
दत्त–तमे आपो.
पृच्छत–तमे पूछो.
भक्षयत–तमे खाओ.
इच्छत–तमे इच्छो.
आप्नुत–तमे मेळवो.
त्यजत–तमे तजो.
शिष्ट–तमे शासन करो.
वित्त–तमे जाणो.
स्त–तमे थाओ.
दत्त–तमे आपो.
रुन्ध–तमे रुंधो.
अजत–तमे जाओ.
व्रजत–तमे जाओ.
क्राम्यत–तमे चालो.
दहत–तमे बाळो.
मेहत–तमे छांटो.
नयत–तमे लइ जाओ.
मारयत–तमे मारो
क्रीडत–तमे क्रीडा करो.

जयत--तमे जय पामो.
कृषत–तमे खेंचो.
मुञ्चत--तमे मूको.
सिञ्चत--तमे छांटो.
कृन्तत--तमे कापो.
क्षिपथ–तमे फेंको.
किरत–तमे विखेरो.
मिलत–तमे मळो.
लिखत–तमे लखो.
मन्यध्यम्–तमे मानो.
विध्यत–तमे वींधो.
रचयत–तमे रचो.
गणयत–तमे गणो.
तनुत–तमे विस्तारो.
भुङ्क्त–तमे भोगवो.
भिन्त–तमे भेदो.
यात–तमे जाओ.
अत्त–तमे खाओ.
जागृत–तमे जागो.
रोहत–तमे चडो.
उपविशत–तमे वेसो.

इति सेनानी पाठः

अथावश्यकाव्ययानांपाठः

आइ–मर्यादा, हद, उलटुं.
मा–नहीं.
नो–नहीं.
आम्–ठीक.
वाढम्–बहु सारुं.
अद्य–आज.
सायम्–सांजे.
प्रति–तरफ.
श्वः–आवती काले.
ह्यः–गइ काले.
परश्वः–परम दिवसे
अन्येद्युः–कोइ दिवस.
उभयेद्युः–बन्ने दिवसे.
युवाम्–तमे बे.
अहम्–हुं.
वयम्–अमे
सः–ते.
ते–तेओ.
सपदि–तत्काळ.
उपरि–उपर.
अ–कोमलताना अर्थमां.
अनु–पाछळ.

त्वम्–तुं.	अलम्–परिपूर्ण.
यूयम्–तमे.	तूर्णम्–जलदी.
आवाम्–अमे वे.	अधः–नीचे.
संज्ञा–नाम.	प्र–आगळ.
तौ–ते वे.	उप–पासे.

जे पदाति उंचाइमां एक सरखा होय, लांबा टुंका न होय अने कूदवामां तथा दोडवामां समान होय तेओ कार्यसाधक बने छे, तेओने पश्चाद्गमन अने स्थिरीकरण अर्थात् पाछा हठवानुं अने स्थिर रहेवानुं शीखाडवुं तेमज सूवुं, भागवुं अने शत्रुनी सेनामां चालवुं विगेरे पार्श्व दिशामां कराववुं.

जेना छठ्ठा स्थानमां क्रूर (रवि—मंगळ) अने पाप (शनि—राहु—केतु) ग्रह पड्या होय ते वीर युद्धमां लडे, बाकीना कार्यसाधक नीवडता नथी. अथवातो प्रथम व. भ. ध. ड. छ अने क ए व्यंजन डावी तरफ लखो तेमां स्वर वर्ण मेळववो अने ते पथी यथाक्रमे व्यंजनो योजवाथी जे नाम थाय तेने युद्धमां स्थापित करवा. जे सेनानो युवा स्वर होय, ते प्रथम युद्ध शरु करे. जेमके विवस्वान्, भरत, धन्वुमार, डित्थ, छत्रपति अने कुक्षि एवा नामना योद्धाओ युवास्वरमां युद्धनो आरंभ करे तो जय मेळवे. सैनिकोनां वस्त्र पीळां तेमज ध्वजा पण पीळी राखवी अने एवीज रीते युद्ध यज्ञने म्होटी अने चतुरस्र चिह्नवाळी ध्वजा ज्यां उभी करवामां आवे, त्यां सैन्ये स्थिति करवी. जय, लाभ अने सुखनी इच्छावाळा राजाए श्वेत, रक्त, हरित, कृष्ण अने पीत वर्णवाळी पांच सेना सज्ज करवी जोइए. ब्रह्मा, विष्णु, महेश, चन्द्र अने सूर्य ए पांचे देवो पांच सेनाओना स्वामी छे. महादेवना बळथी ब्रह्मा, चन्द्रना बळथी विष्णु, सूर्यना बळथी महादेव, ब्रह्माना बळथी चन्द्र अने विष्णुनुं बळ पामी सूर्य नारायण विजय मेळवे छे. युद्धशास्त्रमां चतुर राजाओए हमेशां अ ने ब्रह्मा, इ ने विष्णु, उ ने शंकर, ए ने चंद्र तथा ओ ने सूर्य समजी लेवा. पूर्वोक्त सेना जो पोतपोतानुं बळ मेळवी युद्धमां जाय तो अर्ध क्षणमांज शत्रुओनो संहार करी शके छे.

मंडळ, चतुरस्र, गोमूत्र, अर्धचन्द्र अने नागपाश ए अश्वक्रमनी पांच गतिओ छे.

आ पांच गतिओथी जे अश्वने फेरवे (कवायद करावे) तेनो अश्व क्यांइ पण अटकतो नथी.

मंण्डलं
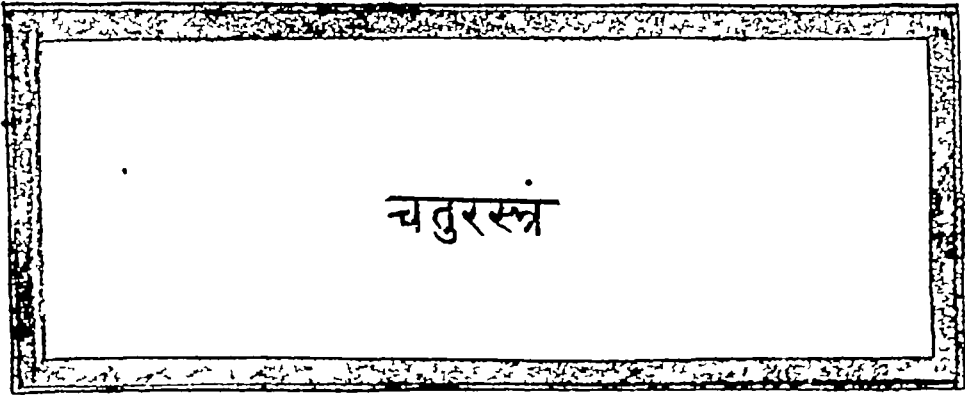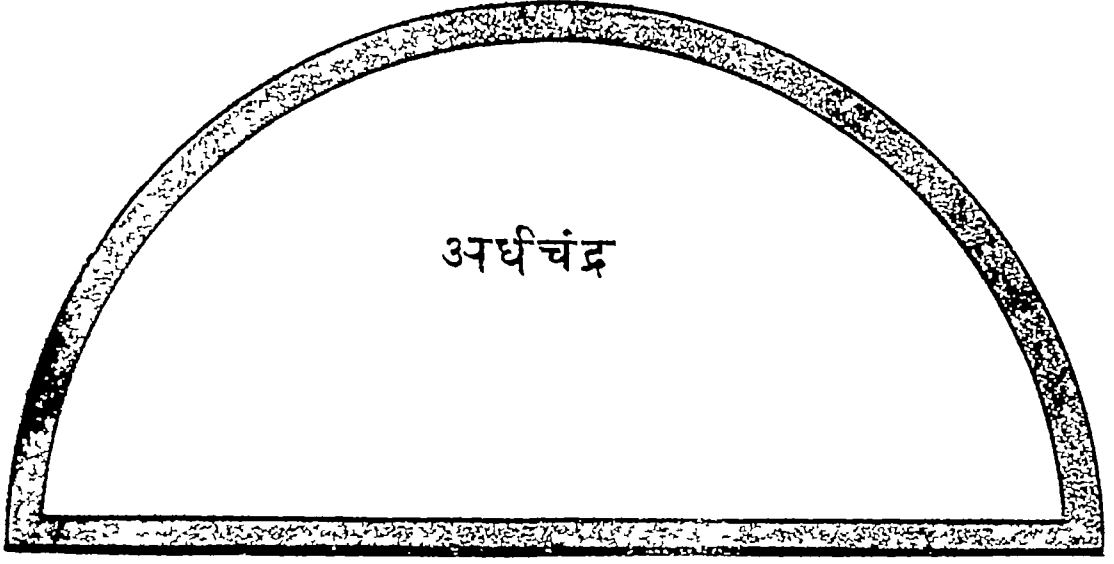
चतुरस्त्रं

गोमुत्राकार
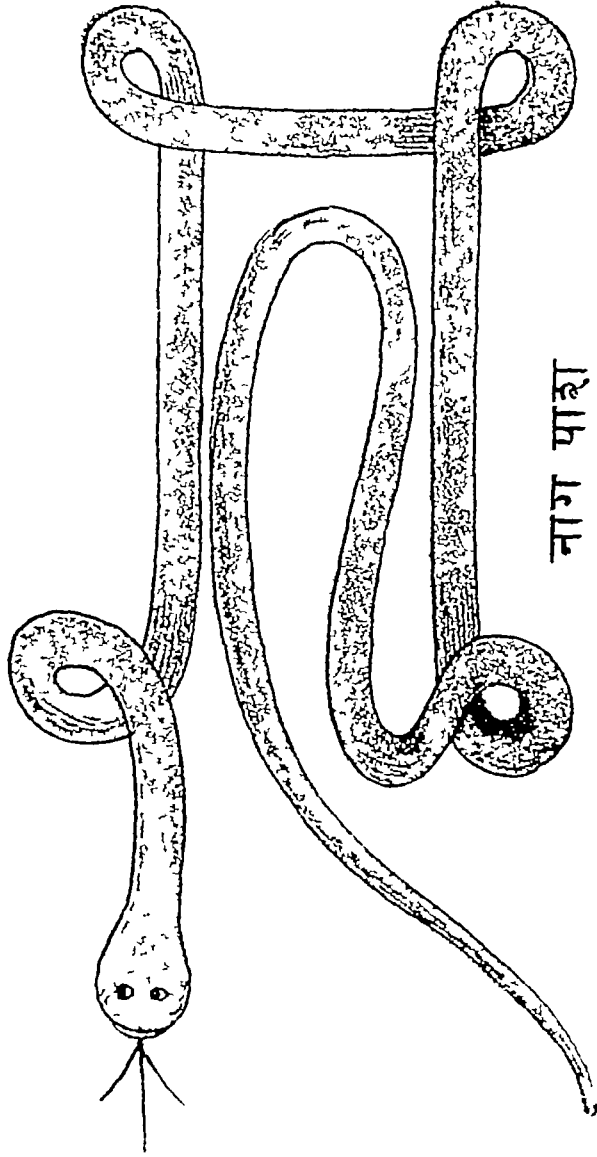
नाग पाश
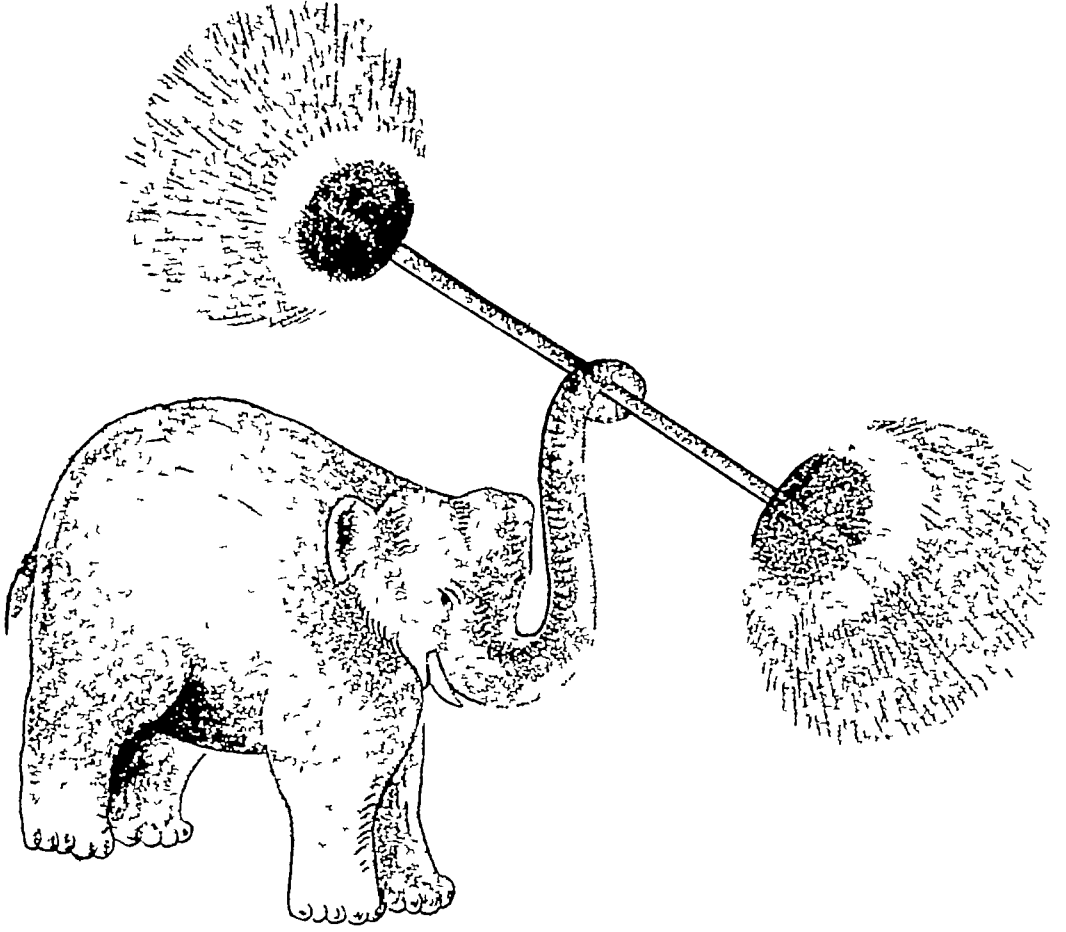
अलात चक्र रूपम्

हाथीओने पहाडो पर चढाववा, जळमां फेरववा, दोडाववा, उठाडवा, तथा वेसाडवा तेमज अलातचक्र आदिथी निर्भय वनतां शीखववुं.

रथना अश्वोने सम आदि स्थळमां साधवा अर्थात् गतिनो अभ्यास कराववो.

जे सर्व सैन्यने समदृष्टिथी जोनार, पदाति आदिने तेओना परिश्रम प्रमाणे अधिकार आपनार, व्यूह रचनामां अति चतुर तेमज आकार, विद्या अने वळथी युक्त क्षत्रिय होय तेने सेनापति वनाववो जोइए.

प्रथम तो क्षात्रकोश व्याकरण सूत्रनो अभ्यास करवो अने त्यारपछी मनुस्मृतिना सातमो तथा आठमो ए वे अध्याय, व्यवहाराध्याय, मिताक्षरा, धर्मशास्त्र, ज्यार्णव, विष्णुयामल, विजयाख्यतंत्र अने स्वरशास्त्र भणी सरहस्य धनुर्वेदना अभ्यासनो आरंभ करवो जोइए.

धर्मात्मा पुरुषे सूतेलाने, गाढनिद्रामां पडेलाने, नशाथी उन्मत्त थएलाने, कच्छ रहितने, जेनी पासे शस्त्र न होय तेने, वाळकने अर्थात् वार वर्षथी न्हानी अवस्थावाळाने, स्त्रीने, दीन वचन वोलनारने तेमज रणभूमि छोडी भागेलाने कदिपण मारवा नहि. धर्मने अर्थे जे प्राणनो परित्याग करे छे, तेने तीर्थे के व्रत करवानी कांइ जरुर नथी, ते तो स्वर्गनो अधिकारी थाय छे तेमज जे वीर पुरुष ब्राह्मण, गाय, स्त्री अने वाळकने अर्थे प्राण अर्पे छे ते पण मोक्ष पामे छे.

आ रीते राज्यनी उन्नतिना मूळरुप यथास्थित धनुर्वेदनुं श्रवण करी आश्चर्य चकित थएला करणवाघेलाए राजहरपालदेवजीने पोताना दरवारमां रहेवा गोठवण करावी आपी अने पोताना भायात वर्गना तेमज अन्य क्षत्रिय वाळकोना गुरु वनी तेओने धनुर्वेदनो अभ्यास करावा विनति करी त्यारे हरपालदेवजीए कह्युं के ब्राह्मण सिवाय गुरुपद धारण करवाने कोई योग्य नथी, तो पण आपनी ईच्छा छे तो ते वाळकोने मारा मित्र तरीके शस्त्रविद्या शीखडावीश. अस्त्रविद्यानो अभ्यास अति कठिन छे अने आ कलिकाळमां तेनो प्रचार करवा मारा गुरुए मने ना कहेली छे जेथी ए शिवायनी युद्धकळा विगेरेनो अभ्यास हुं सारी रीते करावीश. रात्री वधारे व्यतीत थवाथी महाराजा करण भोजनअर्थे राजभुवनमां पधार्या; अने हरपालदेवजी पण रजा लई पोताना उतारा तरफ विदाय थया.

षोडशतरंग.

"मनहर"

पाटणना भूपपासे मेळवी प्रतिष्ठा पूर्ण,
प्रबल प्रभावतणी स्पष्ट छाप छापीने;
राखी कुळलाज रूडी, राज हरपालदेवे,
बांध्यो बाबराने कष्ट करणनां कापीने
शक्तिने वरीने करी स्वाधीन वसुंधराने
अभयनां दान कैंक आश्रितने आपीने
पूर्वज पराक्रमी ए आपना अमर नृप !
व्हालें पाटडीमां वश्या श्रेष्ठ राज्य स्थापीने.

अणहिलपुरना महाराजा करण वाघेलाए उत्तम प्रकारना मासिकथी राज हरपालदेवजीने जे कार्यपर नियत कर्या ते कार्य तेओए अति उत्साह पूर्वक बजाववा मांडयुं, क्षत्रियना बाळकोने ब्राह्य मुहूर्तमां स्नान, सन्ध्या आदि नित्य कर्म करावी हमेशां पुरथी जरा दूरना प्रदेशमां लइ जता अने त्यां क्रमपूर्वक अचल, चल, चलाचल अने द्वयचल, ए चारे प्रकारनां लक्ष्य केम पाडवां ते प्रथम जाते करी बतावी पछीथी बाळकोने हाथे लक्ष्य वेध करावता; धनुषने शी रीते धारण करवुं, बाणने केवी रीते फेंकवा तथा प्रत्यंचाने केम खेंचवी विगेरे बाबतो शीखववामां घणो श्रम लेवा लाग्या; ज्यारे क्षत्रीपुत्रो चारे लक्ष्यवेधमां चतुर थया त्यारे राज हरपालदेवजीए तेओने शब्दवेध शीखववानो समारंभ कर्यो. स्वल्प समयमां ए विकट प्रयोग पण क्षत्रिओना बाळकोए सिद्ध कर्यो. एक दिवसे आनंदमां बेठेला महाराजा करणे राज हरपालदेवजीने पूछयुं के–

तमारा शिष्यो धनुर्विद्यामां केटलेक सुधी पहोंच्या ? त्यारे हरपालदेवजीए कह्युं के शब्दवेध सुधीनी सिद्धि सर्वने प्राप्त थई चुकी छे. हवे तो मात्र युद्धमां विजयी थवा माटे व्यूहरचना विगेरे शीखववानुं अवशेष रह्युं छे. आ सांभळी करण अत्यंत खुशी थयो अने तेणे शब्दवेधनो प्रयोग जोवानी उत्सुक्ता बतावी, समय मुकरर करवामां आव्यो, सांकेतिक स्थानपर जइ राज हरपालदेवजीना शिष्योए करेल शब्दवेध जोई पूर्ण प्रसन्न थएला महाराजा करणनी प्रीति हरपालदेवजी उपर दिन प्रतिदिन वधवा लागी, तेओनो दरज्जो वधारवामां आव्यो; आथी जुना अधिकारीओ ईर्षारुपी अग्निथी सळगी उठ्या, ताजेतर आवेलो विदेशी रजपूत महाराजानी साथे हरे फरे अने महाराजा तेनी सलाह लइ सर्व काम करे ए कोईथी सहन थयुं नहि. जेथी तमाम मंडळे एकत्र थइ अमीर उमरावोने पण उश्केर्या, तेओ महाराजा करण पासे जइ कहेवा लाग्या के एक अजाण्या माणस उपर आप आटलो बधो विश्वास राखो छो ए परिणामे दुःखदायक निवडशे. जुना अने अनुभवी अधिकारीओ जेवुं आपनुं हित इच्छशे एवुं अजाण्यो पुरुष कदि पण नही इच्छे. अमीरोना आवां वचनो सांभळी महाराजा करणने घणोज कंटाळो उपज्यो, राज हरपालदेवजी जेवा बाहोश सरदारने दूर करवा ए तेओने कोई रीते उचित जणायुं नहि. महाराजाने मौन रहेला जोई अमीरोए वातने आगळ चलावी के अन्नदाता ! आप भले एना वळ उपर मोहित थया, परंतु आम जंगलीपणे हमेशां नवी नवी जाजमनें भालो भोंकी चीरे ए केटला वखत सुधी जोयुं जाय. भूमिमां भालुं खोडवुं एथी कांइ वळनी परीक्षा थती नथी जो आपनी इच्छा होय तो आजे कचेरी वखते जे जगोए ए विदेशी रजपूत हमेशां भालुं खोडे छे ते स्थळे जाजम नीचे लोढाना केटलाक पतरां रखावीए, पछी एना वळनी परीक्षा थशे, जो भालुं तवाने नही वींधे तो ए शरमनो मार्यो वगर कह्ये विदाय थइ जशे. अमीरोना आवा विचारोथी महाराजा करणनुं मन अत्यंत खिन्न थयुं, तोपण हरपालदेवजीना वळनी विशेष परीक्षा करवा माटे ते वात तेणे कबुल करी के तुरतज अमीरोए पोतानी योजना पार पाडी, बीजे दिवसे राज हरपालदेवजी कचेरीमां पधार्या अने नित्यना नियम मुजब भालाने जमीनमां भोंक्युं, परंतु नीचे लोढानी पाट होवाथी अवाजनी साथे भालुं उंचे आव्युं के तुरतज पगनां अंगुष्ठ तथा तर्जनीनी भींस मारी लोष्ठने भेदी नांख्युं अने भालुं एक हाथ पृथ्वीमां पेसी गयुं. राज हरपालदेवजीनुं आवुं बेहद वळ जोई अमीर उमरावो तेमज खटपटमां सामेल थनार राजकीय पुरुषोना मुख श्याम थइ गयां. महाराजा करणनुं हृदय जो के हर्षथी छवाई गयुं, तोपण सूतेला सिंहने छंछे-

षोडशतरंग.

" मनहर "

पाटणना भूपपासे मेळवी प्रतिष्ठा पूर्ण,
प्रबल प्रभावतणी स्पष्ट छाप छापीने;
राखी कुळलाज रूडी, राज हरपालदेवे,
बांध्यो बाबराने कष्ट करणनां कापीने
शक्तिने वरीने करी स्वाधीन वसुंधराने
अभयनां दान कैंक आश्रितने आपीने
पूर्वज पराक्रमी ए आपना अमर नृप !
व्हालें पाटडीमां वश्या श्रेष्ठ राज्य स्थापीने.

अणहिलपुरना महाराजा करण वाघेलाए उत्तम प्रकारना मासिकथी राज हरपालदेवजीने जे कार्यपर नियत कर्या ते कार्य तेओए अति उत्साह पूर्वक बजाववा मांडयुं, क्षत्रियना बाळकोने ब्राह्य मुहूर्तमां स्नान, सन्ध्या आदि नित्य कर्म करावी हमेशां पुरथी जरा दूरना प्रदेशमां लइ जता अने त्यां क्रमपूर्वक अचल, चल, चलाचल अने द्वयचल, ए चारे प्रकारनां लक्ष्य केम पाडवां ते प्रथम जाते करी बतावी पछीथी बाळकोने हाथे लक्ष्य वेध करावता; धनुषने शी रीते धारण करवुं, बाणने केवी रीते फेंकवा तथा प्रत्यंचाने केम खेंचवी विगेरे बाबतो शीखववामां घणो श्रम लेवा लाग्या; ज्यारे क्षत्रीपुत्रो चारे लक्ष्यवेधमां चतुर थया त्यारे राज हरपालदेवजीए तेओने शब्दवेध शीखववानो समारंभ कर्यो. स्वल्प समयमां ए विकट प्रयोग पण क्षत्रिओना बाळकोए सिद्ध कर्यो. एक दिवसे आनंदमां बेठेला महाराजा करणे राज हरपालदेवजीने पूछयुं के—

तमारा शिष्यो धनुर्विद्यामां केटलेक सुधी पहोंच्या ? त्यारे हरपालदेवजीए कह्युं के शब्दवेध सुधीनी सिद्धि सर्वेने प्राप्त थई चुकी छे. हवे तो मात्र युद्धमां विजयी थवा माटे व्यूहरचना विगेरे शीखववानुं अवशेष रह्युं छे. आ सांभळी करण अत्यंत खुशी थयो अने तेणे शब्दवेधनो प्रयोग जोवानी उत्सुक्ता बतावी, समय मुकरर करवामां आव्यो, सांकेतिक स्थानपर जइ राज हरपालदेवजीना शिष्योए करेल शब्दवेध जोई पूर्ण प्रसन्न थएला महाराजा करणनी प्रीति हरपालदेवजी उपर दिन प्रतिदिन वधवा लागी, तेओनो दरज्जो वधारवामां आव्यो; आथी जुना अधिकारीओ इर्षारुपी अग्निथी सळगी उठ्या, ताजेतर आवेलो विदेशी रजपूत महाराजानी साथे हरे फरे अने महाराजा तेनी सलाह लइ सर्व काम करे ए कोईथी सहन थयुं नहि. जेथी तमाम मंडळे एकत्र थइ अमीर उमरावोने पण उश्केर्या, तेओ महाराजा करण पासे जइ कहेवा लाग्या के एक अजाण्या माणस उपर आप आटलो बधो विश्वास राखो छो ए परिणामे दुःखदायक निवडशे. जुना अने अनुभवी अधिकारीओ जेवुं आपनुं हित इच्छशे एवुं अजाण्यो पुरुष कदि पण नही इच्छे. अमीरोना आवां वचनो सांभळी महाराजा करणने घणोज कंटाळो उपज्यो, राज हरपालदेवजी जेवा बाहोश सरदारने दूर करवा ए तेओने कोई रीते उचित जणायुं नहि. महाराजाने मौन रहेला जोई अमीरोए वातने आगळ चलावी के अन्नदाता ! आप भले एना बळ उपर मोहित थया, परंतु आम जंगलीपणे हमेशां नवी नवी जाजमने भालो भोंकी चीरे ए केटला वखत सुधी जोयुं जाय. भूमिमां भालुं खोडवुं एथी कांइ बळनी परीक्षा थती नथी जो आपनी इच्छा होय तो आजे कचेरी वखते जे जगोए ए विदेशी रजपूत हमेशां भालुं खोडे छे ते स्थळे जाजम नीचे लोढाना केटलाक पतरां रखावीए, पछी एना बळनी परीक्षा थशे, जो भालुं तवाने नही वींधे तो ए शरमनो मार्यो वगर कह्ये विदाय थइ जशे. अमीरोना आवा विचारोथी महाराजा करणनुं मन अत्यंत खिन्न थयुं, तोपण हरपालदेवजीना बळनी विशेष परीक्षा करवा माटे ते वात तेणे कबुल करी के तुरतज अमीरोए पोतानी योजना पार पाडी, बीजे दिवसे राज हरपालदेवजी कचेरीमां पधार्या अने नित्यना नियम मुजब भालाने जमीनमां भोंकयुं, परंतु नीचे लोढानी पाट होवाथी अवाजनी साथे भालुं उंचे आव्युं के तुरतज पगनां अंगुष्ठ तथा तर्जनीनी भींस मारी लोष्टने भेदी नांख्युं अने भालुं एक हाथ पृथ्वीमां पेसी गयुं. राज हरपालदेवजीनुं आवुं बेहद बळ जोई अमीर उमरावो तेमज खटपटमां सामेल थनार राजकीय पुरुषोना मुख श्याम थइ गयां. महाराजा करणनुं हृदय जो के हर्षथी छवाई गयुं, तोपण सूतेला सिंहने छंछे-

डवा रुपी साहसथी तेना मुखरूपी सूर्यपर भयरूपी राहुनी छाया पडी, केटलाएक दरवारीओ राज हरपालदेवजीनां रक्त नेत्र जोई थरथर ध्रुजवा लाग्या, केटलाएकनां हाजां गगडी गयां अने केटलाएक उमरावोने तो एमज थइ गयुं के जे पुरुषे पगनां अंगुष्ठ मात्रथी आवुं असीम वळ प्रदर्शित कर्युं तेना बाहुमां केटलुं वळ होवुं जोईए ? खरेखर आ कोई दैवी पुरुष छे, मनुष्य नथी. तेवामां राज हरपालदेवजी भ्रकुटी चढावी बाहु ठोकी बोल्याके—महाराजा ! रजपूतोना पारखां आम न लेवाय, जड वस्तुनो वेध करवामां जोर बतावत्रुं ए व्यर्थ छे, परंतु ज्यारे दुश्मनोनुं दळ आपाढना अभ्रनी माफक चोमेरथी चढी आवे त्यारेज बाहुवळनी खरी परीक्षा थाय; तमारा जेवा वेकदर राजा पासे रही मोज शोख उडाडवा करतां गरीवीमां दिवसो गुजारवा एज उत्तम छे, आटलुं कही राज हरपालदेवजी जमीनमांथी भालांने खेंची एकदम उभा थया, जेथी आखी जाजम पण तनी साथे तणाइ, गादी तकीयापर वेठेला अमीर उमरावोना पग उंचा अने शिर नीचे थई गयां तेमज जे लोको उभा हता तेओ पृथ्वीपर पछडाया, आ हास्यजनक बनाव जोई महाराजा करणना अन्तः करणमां हर्ष अने खेद बन्ने एकी साथे उत्पन्न थयां. राज हरपालदेवजी जवा तत्पर थया के तुरतज महाराजा करण सिंहासन उपरथी उतरी तेओने घणी आजीजी साथे जतां अटकावी मधुर वचनोथी शान्त्वन करता अंदरना ओरडामां लइ गया. अने अमीर उमरावो विगेरे दरवारी जनोनुं मंडल पोते करेला साहस सवंधी पश्चाताप करतुं सहु सहुने स्थाने विदाय थयुं. जरा स्वस्थ थया पछी महाराजा करणे हरपाल देवजीने कह्युं के—हुं तो तमारा वळथी परिपूर्ण वाकेफ हतो, परंतु अन्यजनों एथी अज्ञात होवाने लीधे तथा तमारा उपर दिन प्रतिदिन मारी प्रीति वधती जवाने लीधे दरेक दरवारीओना दिलमां इर्षा उत्पन्न थइ, ए इर्षाने निर्मूळ करवा माटे तथा तमारा पराक्रम विशे सर्वने जे कांइ संदेह हतो ते दूर करवा माटे माराथी आ साहस थइ गयुं छे, तो क्षमा करशो; हवे तमारी खरी हकीकतथी अज्ञात रहेवा हुं इच्छतो नथी, तमारा मात पिताना पवित्र नाम सांभळवा मारा श्रवण आतुर थइ रह्या छे, तमारुं कुळ पण उत्तम होवुं जोईए. कहो, कहो वीरनर ! सत्वर कहो. हरपालदेवजीए विचार्युं के हवे सत्य वातने छुपाववाथी कशो लाभ नथी, तेओ तुरतज कहेवा लाग्या के महाराजा ! हुं कीर्तिगढना राजा केसरदेवजीनो पाटवी पुत्र छुं, मारुं नाम हरपालदेव छे, अमारी "मखवान" अवटंक मशहूर छे, आप मारा मासीआइ भाई थाओ छो. आटलुं सांभळतांज करण अधीर बनी बोली उठ्यो केः—हा, हा, मारा मातुश्रीए मने कह्युं हतुं के तमारां एक मासी सिंधमां कीर्तिगढ नामनुं शहेर छे त्यांना महाराजा

केसरदेवजी वेर वरावेलां छे, ए वात मने वरावर याद छे. मारा व्हाला वन्धु! आटला वखत सुधी तमोए मने शा कारणथी जाहेर न कर्यु ? आवो, आवो, आपणे प्रेमथी भेटीए. राज हरपालदेवजी तथा करण वाधेलो उभा थइ परस्पर भावथी भेट्या, आ वखते वन्नेनां नयनोमां प्रेमाश्रु भराइ आव्यां. निकटनो संबंध होवा छतां दूर देशना निवासने लीधे आटला दिवस एक बीजा अपरिचित हता; एकनो हरपालदेवजी जाते अत्यंत वहादूर अने वळी पोताना संबंधी निकळ्या जेथी महाराजा करणने अवर्णनीय आनंद थयो, तेणे राज हरपालदेवजीने कह्युं के—आपे मने प्रथमथीज ओळखाण आपी होत तो हुं आपने कोईपण कार्यमां नहि योजता मुकुटना मणि माफक राखत; पण खेर, जे काळे जे वनवानुं होय ते वने छे, कीर्तिगढमा सर्व कुशळतो छे नां ? हरपालदेवजीए व्यथित हृदयथी जवाव आप्यो के—जो कीर्तिगढमां कुशळता होयतो हुं आटले दूर शा माटे आवुं ? आथी करणने वधारे संदेह उत्पन्न थयो. तेणे पृछयुं के—शुं त्यारे कोई शत्रुओ तरफथी भय उपज्यो छे ? अने आप अमारी मदद लेवा अत्रे पधार्या छो ? हरपालदेवजी वोल्याके—कोईनी मदद मेळवी विजयनी अभिलाषा राखवी ए रिवाज अमारा मखवान कुळमां प्रथमथी ज नथी. मारा पिताश्रीनी इच्छा थई के रणभूमिमां प्राण त्याग करवो, जेथी सिंधना राजा हमीर सुमरा साथे युद्धनी मागणी करी, भयंकर युद्ध थयुं. अने तेमां, मारा पिताश्री तथा वन्धुओ विगेरे आखा कुटुम्बनो अन्त थयो, शत्रुओनो संहार थवामां पण कांइ कचाश न रही; तोपण तेना सैन्यनी संख्या अधिक होवाथी जय मळवो अशक्य जाणी हुं आ तरफ चाल्यो आव्यो. आवा खेदजनक समाचार सांभळी करणनुं अन्तःकरण अति व्याकुळ वनी गयुं. तेणे फरी हरपालदेवजीने कह्युं के मारो अपराध क्षमा करजो. हुं आपनी योग्यता प्रमाणे कांइ सन्मान करी शक्यो नथी त्यारे हरपालदेवजीए जवाव आप्यो के—सबंधथी प्राप्त थता सन्माननें हुं श्रेष्ठ नथी गणतो, एटला माटेज गुणथी आपना मननें प्रसन्न करी आ स्थितिए पहोंच्यो छुं. संबंधथी तो सर्वकोइ सन्मान मेळवे छे पण गुणथी सन्मान मेळववुं एमांज मनुष्यनी महत्ता छे; केटलोएक वखत विविध वार्तालाप करी महाराजा करणे थाळी मंगावी अने राज हरपालदेवजीनी साथे एक पात्रमां भोजन कर्युं. तेमज ते दिवसथी तेओने माटे पोताना सहोदरने घटे तेवा सन्माननी योजना करावी. हाथी, घोडा, गाडीओ तथा केटलाएक परिजनो राज हरपालदेवजीनी सेवामां सुप्रत कर्या; तेओने हमेशां पोतानी साथे गाडीमां वेसाडी फरवा लइ जवानो नि-

यम राख्यो तथा कायमने माटे जमवानुं पण पोतानी साथेज राख्युं; जेथी राज हरपालदेवजी अमलचेनमां दिवसो गुजारवा लाग्या.

वर्षाकाळ व्यतीत थतां शरदृतुए पृथ्वीमां शीतलता प्रसरावी, आकाश स्वच्छ थयुं, चन्द्रनी ज्योति वधवा लागी, नदीओना तरंगोए निर्मळता धारण करी, अगस्त्यनो उदय थयो, वारिना प्रवाहो मन्द मन्द वहेवा लाग्या, ज्यां त्यां पथिक लोको प्रयाणनी तैयारी करवा लाग्या, सखीओनी साथे हास्यविनोदमां दिवसने सरलताथी वितावनारी प्रोषित पतिकाओने रात्रिना चार याम चार जुग जेवा जणावा लाग्या, देवदीवाळीना दिवसो लगभग आवी पहोंचवाथी सर्व मनुष्यो दीपमालिकाथी देव मन्दिरोने देदीप्त करवा लाग्या, दंपति द्यूत खेली हृदयमां हरखावा लाग्यां, वेश्याना वृन्द रसिक जनोने रिझाववा माटे शरीरने शृंगारी मंद हास्य पूर्वक अनुरागने वरसाववा लाग्या; वाट, घाट, गृह अने अटारीओ पर रसीली रोशनी छवाइ रही, पति विनानी प्रमदाओ द्विजराजने पापी कही दिवाळीनी रात्रीने अराति समान गणवा लागी, शीत काळमां पतिनुं परदेशगमन सांभळी केटलीएक स्त्रीओ रुदन करवा लागी, अने कोइपण रीते पति घेर रोकाय एटला माटे देवताओनुं पूजन करी तेओनी स्तुति करवा लागी, बीजो एके उपाय न सूजतां सज्ज थइ वीन वजाववा लागी अने मधुर स्वरे मेघ मलारनो आलाप करी गावा लागी; चोतरफ कांस प्रफुल्लित थयां, कादवनी क्यांइ पण निशानी न रही, कमलना दल उपर मधुकरो गुंजवा लाग्या, वर्षाऋतुमां वल्लभना वियोगथी जेनां शरीर पीळां हळदर जेवां थइ गयां हतां ते स्त्रीओ शरद्‌नी चांदनी जोइ वधारे व्यथा पामवा लागी. चन्द्ररुपी मुखथी चन्द्रिका रुपी मन्द हास्य करी सर्व स्थळने उज्वळ बनावतो, कुन्दनी कळीओ रुपी निर्मळ दंत पंक्तिने धारण करतो, खंजन रुपी मनरंजन नयनवाळो, कमनीय कंज रुपी करने डोलावतो, षट्पदना गुंजनरुप मधुर शब्दवाळो अने हंस गतिथी गमन करनार नन्दलालनी शोभा धरी आवेलो शरद् काल विरहिणी दाराओना दरदने वधारवा लाग्यो. अंगोअंगमां तारागण रुपी आभूषणने धारण करनारी, चन्द्रना मयूखरुपी वसनथी विभूषित थएली, कुमुदरुपी दन्तनी चमकथी चित्तने चोरनारी चन्द्ररुपी मुखवाळी अने मालतीना सुगन्धरुपी अतरथी तरबतर बनेली शरदनी रात्रि विरहिणी स्त्रीओने सपत्नीनी माफक सालवा लागी. गगन रुपी मार्गमां गमन करनारा, मौन व्रत धरी अहींथी तहीं फरनारा, श्यामतारुपी तमोगुणने तजी श्वेतपणारुपी सत्व गुणने धरनारा, द्विजने जीवन देनारा अने विद्युत् रुपी स्त्रीना संगथी

अलग थएला शरद्‌ना अंबुदो जाणे यतिने वेषे देश देशमां दरदी दाराओने योगनो उपदेश आपता होय एम जणावा लाग्युं. चन्द्रना प्रकाशमां, चन्द्रमुखीना हास्यमां, आकाशमां, कासमां, सरमां, सरिताओमा, पहाडोमां, वनना प्रदेशोमां, चंचरीकना समूहमां, कदंबनी डाळीओमां, मालतीना कयाराओमां, फूलेली फूलवाडीओमां, खूबीदार खेतीओमा अने नदीओनी रेतीओमां रमणीय शरदृऋतु समाइ रही, चन्द्रथी रात्रि, काश तृणोथी पृथ्वी, हंसोथी नदीओनां नीर, कमळना समूहथी सर, सातवणना पुष्पोथी वन प्रदेश अने मनोहर मालतीना प्रफुल्लितपणाथी वागवगीचाओ धवल वनी गया; क्यांइ शंखसमान श्वेतपणाने धारण करनारा अने क्यांइ मृणाल माफक गौर वनो मंद मद विचरण करता पाणी वगरना पयोद आकाशरुपी राजा आगळ अनुचरनी पेठे अनुसरवा लाग्या; जळनो उन्माद दूर थयो, पण विरहिणी स्त्रीओनो उन्माद अलग थयो नहि; आकाशमां चन्द्र निर्मळ थयो, पण विरहीणी स्त्रीनो मुखचन्द्र विमळ थयो नहि; चातके "पियुपियु" उच्चारने परहर्यो, परंतु प्रोषित पतिकाओए ते उच्चारने तज्यो नहि; आकाशमां मेघ निवृत्त थया, पण विरहीणी वामाओनां नयनोनी जलधाराओ निवृत्त न थइ. घुंटेला अंजन समान सुशोभित आकाश, बन्धुकना पुष्पोथी छवाएला पृथ्वीना प्रदेशो अने परिपक्व धान्यथी प्रसन्नताने प्रदर्शित करतां क्षेत्रो कामनुं उद्दीपन करवामा कांइ न्यून वळवाळां न हता, मंद प्रभंजनथी डोलती डाळीओ, पुष्पना भारथी प्रकंपित थतां पुष्पो अने मधुपानथी मस्त वनेला मधुकरो विरहव्यथित युवतीओना उरमां क्लेश उपजाववा लाग्या. काकचंचुथी खंडित थएला तरंगवाळी, हारवंध वेठेला हंसोथी प्रकाशमान पुलिनवाळी अने चोतरफ फेलाता पद्मना परागपुंजथी सौरभ युक्त वनेली सरिताओ सर्व कोइनुं मन हरवा लागी. कणना भारथी नमनशील सांठाओने कंपावतो सुमनना गुच्छ समेत शाखाओने झुकावतो अने प्रफुल्लित थएला पद्मना पुंजने नचावतो शरद्‌नो समीर विरहिणी स्त्रीओने विह्वळ वनाववा वेगथी गति करवा लाग्यो. सुधाकरना स्वच्छ किरणोथी जगत् वधाने श्वेत वनावती, कुमुदिनीना वृन्दने विकसावती, चाहक चकोरना हृदयमां हर्ष उपजावती तथा विरही जनोना धैर्यने तजावती शरद्‌नी रात्रि संयोगीओने अवर्णनीय आनंद आपवा लागी. मरालदंपतिनी रतिक्रीडाथी रमणीय जणातां विकाश पामेला वारिजवृन्दथी विराजमान अने प्रभातना पवनथी तरल वनेल तरंगोने धारण करनारां तळावो विरहिणी तारुणीओना तनमां त्रास उपजाववा लाग्यां. इन्द्रधनु अदृश्य थयुं, चपळानो चळकाट

यम राख्यो तथा कायमने माटे जमवानुं पण पोतानी साथेज राख्युं; जेथी राज हरपालदेवजी अमलचेनमां दिवसो गुजारवा लाग्या.

वर्षाकाळ व्यतीत थतां शरदऋतुए पृथ्वीमां शीतलता प्रसरावी, आकाश स्वच्छ थयुं, चन्द्रनी ज्योति वधवा लागी, नदीओना तरंगोए निर्मळता धारण करी, अगस्त्यनो उदय थयो, वारिना प्रवाहो मन्द मन्द वहेवा लाग्या, ज्यां त्यां पथिक लोको प्रयाणनी तैयारी करवा लाग्या, सखीओनी साथे हास्यविनोदमां दिवसने सरलताथी वितावनारी प्रोषित पतिकाओने रात्रिना चार याम चार जुग जेवा जणावा लाग्या, देवदीवाळीना दिवसो लगभग आवी पहोंचवाथी सर्व मनुष्यो दीपमालिकाथी देव मन्दिरोने देदीप्त करवा लाग्या, दंपति द्यूत खेली हृदयमां हरखावा लाग्यां, वेश्याना वृन्द रसिक जनोने रिझाववा माटे शरीरने शृंगारी मंन्द हास्य पूर्वक अनुरागने वरसाववा लाग्या; वाट, घाट, गृह अने अटारीओ पर रसीली रोशनी छवाइ रही, पति विनानी प्रमदाओ द्विजराजने पापी कही दिवाळीनी रात्रीने अराति समान गणवा लागी, शीत काळमां पतिनुं परदेशगमन सांभळी केटलीएक स्त्रीओ रुदन करवा लागी, अने कोइपण रीते पति घेर रोकाय एटला माटे देवताओनुं पूजन करी तेओनी स्तुति करवा लागी, वीजो एके उपाय न सूजतां सज्ज थइ वीन वजाववा लागी अने मधुर स्वरे मेघ मलारनो आलाप करी गावा लागी; चोतरफ कांस प्रफुल्लित थयां, कादवनी क्यांइ पण निशानी न रही, कमलना दल उपर मधुकरो गुंजवा लाग्या, वर्षाऋतुमां वल्लभना वियोगथी जेनां शरीर पीळां हळदर जेवां थइ गयां हतां ते स्त्रीओ शरद्‌नी चांदनी जोइ वधारे व्यथा पामवा लागी. चन्द्ररुपी मुखथी चन्द्रिका रुपी मन्द हास्य करी सर्व स्थळने उज्वळ बनावतो, कुन्दनी कळीओ रुपी निर्मळ दंत पंक्तिने धारण करतो, खंजन रुपी मनरंजन नयनवाळो, कमनीय कंज रुपी करने डोलावतो, षट्पदना गुंजनरुप मधुर शब्दवाळो अने हंस गतिथी गमन करनार नन्दलालनी शोभा धरी आवेलो शरद् काल विरहिणी दाराओना दरदने वधारवा लाग्यो. अंगोअंगमां तारागण रुपी आभूषणने धारण करनारी, चन्द्रना मयूखरुपी वसनथी विभूषित थएली, कुमुदरुपी दन्तनी चमकथी चित्तने चोरनारी चन्द्ररुपी मुखवाळी अने मालतीना सुगन्धरुपी अतरथी तरवतर बनेली शरदनी रात्रि विरहिणी स्त्रीओने सपत्नीनी माफक सालवा लागी. गगन रुपी मार्गमां गमन करनारा, मौन व्रत धरी अहींथी तहीं फरनारा, श्यामतारुपी तमोगुणने तजी श्वेतपणारुपी सत्व गुणने धरनारा, द्विजने जीवन देनारा अने विद्युत् रुपी स्त्रीना संगथी

अलग थएला शरद्‌ना अंबुदो जाणे यतिने वेषे देश देशमां दरदी दाराओने योगनो उपदेश आ-
पता होय एम जणावा लाग्युं. चन्द्रना प्रकाशमां, चन्द्रमुखीना हास्यमां, आकाशमां, कासमां,
सरमां, सरिताओमां, पहाडोमां, वनना प्रदेशोमां, चंचरीकना समूहमां, कदंबनी डाळीओमां, माल-
तीना क्यारामां, फूलेली फूलवाडीओमां, खूबीदार खेतीओमां अने नदीओनी रेतीओमां
रमणीय शरदृऋतु समाइ रही, चन्द्रथी रात्रि, काश तृणोथी पृथ्वी, हंसोथी नदीओनां नीर,
कमळना समूहथी सर, सातवणना पुष्पोथी वन प्रदेश अने मनोहर मालतीना प्रफुल्लितपणाथी
बागबगीचाओ धवल बनी गया; क्यांइ शंखसमान श्वेतपणाने धारण करनारा अने क्यांइ मृणाल
माफक गौर बनो मंद मंद विचरण करता पाणी वगरना पयोद आकाशरुपी राजा आगळ अनु-
चरनी पेठे अनुसरवा लाग्या; जळनो उन्माद दूर थयो, पण विरहिणी स्त्रीओनो उन्माद अलग
थयो नहि; आकाशमां चन्द्र निर्मळ थयो, पण विरहीणी स्त्रीनो मुखचन्द्र विमळ थयो नहि;
चातके "पियुपियु" उच्चारने परहर्यो, परंतु प्रोषित पतिकाओए ते उच्चारने तज्यो नहि; आ-
काशमां मेघ निवृत्त थया, पण विरहीणी वामाओनां नयनोनी जळधाराओ निवृत्त न थइ. घुंटेला
अंजन समान सुशोभित आकाश, बन्धुकना पुष्पोथी छवाएला पृथ्वीना प्रदेशो अने परिपक्व
धान्यथी प्रसन्नताने प्रदर्शित करतां क्षेत्रो कामनुं उद्दीपन करवामां कांइ न्युन बळवाळां न हता,
मंद प्रभंजनथी डोलती डाळीओ, पुष्पना भारथी प्रकंपित थतां पुष्पो अने मधुपानथी मस्त ब-
नेला मधुकरो विरहव्यथित युवतीओना उरमां क्लेश उपजाववा लाग्या. काकचंचुथी खंडित थए-
ला तरंगवाळी, हारबंध बेठेला हंसोथी प्रकाशमान पुलिनवाळी अने चोतरफ फेलाता पद्मना
परागपुंजथी सौरभ युक्त बनेली सरिताओ सर्व कोइनुं मन हरवा लागी. कणना भारथी नमन
शील सांठाओने कंपावतो सुमनना गुच्छ समेत शाखाओने झुकावतो अने प्रफुल्लित थएला
पद्मना पुंजने नचावतो शरद्‌नो समीर विरहिणी स्त्रीओने विह्वळ बनाववा वेगथी गति करवा लाग्यो.
सुधाकरनां स्वच्छ किरणोथी जगत् बधाने श्वेत बनावती, कुमुदिनीना वृन्दने विकसावती, चाहक
चकोरना हृदयमां हर्ष उपजावती तथा विरही जनोना धैर्यने तजावती शरद्‌नी रात्रि संयोगीओने
अवर्णनीय आनंद आपवा लागी. मरालदंपतिनी रतिक्रीडाथी रमणीय जणातां विकाश पामेला
वारिजवृन्दथी विराजमान अने प्रभातना पवनथी तरल बनेल तरंगोने धारण करनारां तळावो
विरहिणी तारुणीओना तनमां त्रास उपजाववा लाग्यां. इन्द्रधनु अदृश्य थयुं, चपळानो चळकाट

चाल्यो गयो. मोरना शोर बंध थया. तेमज आकाशने पक्षवायुथी प्रकंपित करता बको पण बळ रहित बनी छुपाइ बेठा; सोळ कळाथी सुशोभित शशिनो आकाशमां उदय थवाथी सोळ वर्षनी सुंदरीओ सोळे शृंगार सजी दीपमाळाओथी देदीप्त बनेला देवमन्दिरोमां वीणा समान मधुर स्वरथी गीतो गावा लागी; नृत्ये मयूरनो संग मूकी मरालनो आश्रय लीधो अने प्रफुल्लितपणानी प्रभाए कुटज, अर्जुन, सर्ज तथा नीप आदिनो त्याग करी सालवणोनी साथे अनुराग जोडयो. तमाम विलासी जनो रतिपूर्वक रासनी तैयारीओ करवा लाग्या, सौरभथी छवाएला मालती अने मल्लिकाना मनोहर लतामंडपमां लहेरी लालाओ ललित ललनाओ साथे विविध विहार करता फरवा लाग्या, अनंगने आधीन थएली केटलीक अंगनाओ अंगे अत्तर लगावी अभिसार करवा लागी, केटलांएक दंपति अन्योन्य आलिंगन वखते हीराओना हारमां प्रतिबिम्बित थवा लाग्यां. शेफालिकाना सुमनथी सुंदर जणाता वनोनी अंदर विहंगना वृन्दो कल्लोल करवा लाग्या; चतुर जनो चोकपर चातुर्यथी चांदनी बांधी गृहने शोभाववा लाग्या. श्वेत बिछात, पुष्पथी आच्छादित पलंगो, हीराओना हार, रेशमी वस्त्र अने चन्द्रमुखीनां मुखो शरद्नी चांदनी साथे एकमेक थइ विरहीजनोने व्याधि उपजाववा लाग्यां. कल्हार तथा कंजना कुसुमने हलावतो, मन्दगतिथी परागने प्रसरावतो अने पत्र पर पडेलां हिमवारिने विखेरी नांखतो वायु विलासी जनोना विनोदमां वृद्धि करवा लाग्यो. केटलाएक शोखीन लोकोए अबरखथी लीपेलां उज्वळ आगारने विचित्र चित्रोथी चित्रित बनाव्यां, छजांपर छवाएल मालतीनी; लताओथी भभकी उठतां सुगन्धवडे विहार-भुवनो भराइ गयां. रासमंडलमां रमणीओना करकंकणनो खणखणाट, गायनना निर्दोष घोष अने गृहमरालना मनोहर उच्चारथी पडता प्रतिध्वनि श्रवणेन्द्रियने तृप्त करवा लाग्या. आकाश, अवनि, अंबु, आलय, विटप अने अचल आदि कोइथी न परखी शकाय एवी रीते एकरूप बनी गयां; अबरखथी पण अधिक प्रकाशने धारण करनारी दश दिशाओ श्वेत बनी गइ, चन्द्रनी प्रभाथी चमकता चन्द्रकान्त विरहीजनोनां चित्तने चमकाववा लाग्या; विश्वकर्माए धरामंडलने धवल बनाववा माटे तेनापर चांदीना वरकनो लेप करवा शरद्रुपी कळा कुशळ कामिनीने मनुष्य लोकमां मोकली होय एम अनुमान थवा लाग्युं. प्रशंसनीय प्रमदाओनी गतिने हंसोए हरी लीधी, मनहरणी मानिनीओना मुखनुं माधुर्य पद्म समूहे पडावी लीधुं, मद्यपानथी मत्त बनेलां लोचनोनुं लालित्य राजिवगणे स्वाधीन करी लीधुं, भ्रकुटिना विलासनी भव्यता जलना तरंगोए जीती लीधी,

कलापीओए उच्चारमां कृपणता धारण करी, चातको प्रमादरुपी रोगना भोगी थया, पृथ्वीमां पंकनो अंक न रह्यो, नदीओए उन्मत्त गतिनो त्याग कर्यो; जळ, स्थळ तेमज उज्वळ अटारीओ-पर चांदी समान चमकती शरद्‌नी चांदनी जोइ प्रवासीजनो गृहवासी बन्या. रसिक पुरुषोनी साथे भ्रमरना समूह पण राजिवनो रस लुंटवा लाग्या, कुंजमां मालतीना पुंजथी मकरंदना प्रवाह छूटवा लाग्या, खंजनना वृन्द आनंद पाम्या अने मनरंजन मयूरोनुं उन्मत्तपणुं अळगुं थयुं. चकोरना चित्तने प्रमोदथी प्रफुल्लित करनारो, अन्धकारने हरनारो, दिगन्तने श्वेत बनावी कुमुदरुपी संतसमूहने कर प्रसारी भावथी भेटनारो,त्रैलोक्यना सौन्दर्यने समेटनारो, वारिधिना वारिमां वृद्धि करनारो अने कोकना उरमां शोक भरनारो शरद्‌नो चन्द्र विरह व्यथित श्यामाओना शरी-रमां ग्रीष्मना सूर्य समान ताप उपजाववा लाग्यो. जाणे समग्र भूमंडल पारदथी भर्युं होय तेम श्वेत जणावा लाग्युं; दरेक पर्वतो हिमालय जेवा बनी गया, तमाम तरुओ तूलनी तुलना करवा लाग्या, नीर क्षीर समान बनी गयुं अने कुमुद्‌नी प्रफुल्लित कळीओथी चकोरनां चित्त अत्यंत प्रसन्न थयां. वादळ विनानुं व्योम चन्द्र अने तारागणना सुखप्रद समागमथी अमित सुखमाने वहन करवा लाग्युं, कुमुद्‌नां कुसुम अने मरालना रहेठाणथी जलाशयो रमणीय जणावा लाग्यां, वारि रहित बनेल वादळांओ वळने हारी बेठां, नदीओनां नीर घटवा लाग्यां, प्रवासी पुरुषोने पीडवा माटे कुसुमायुध कटिबद्ध थयो. कृषीवलोए क्षेत्रमां तैयार करेला धान्यना ढगलाओथी निश्चिंतपणे चोतरफ तृणने चरता गोकुलथी तथा सारस अने हंसना मधुर शब्दोथी समग्र शहेरना सीमाडाओ शोभवा लाग्या, अंगथी रंगबेरंगी वादळरुपी वस्त्रोने उतारी, झिल्लीना नादरुपी झांझर, कोकिला अने कलापीना शब्दरुपी करकंकण, दामिनीरुपी देहनी द्युति तथा घनगर्जनरुपी मदभरी वाणीनो त्याग करी शान्तपणे मौनव्रतने धरनारी वर्षा विरहव्यथित रागिणी दाराओनी दशा जोइ वैरा-ग्यथी जोगण बनी होय एम जणावा लाग्युं. आवा शरदृऋतुना रमणीय समयमां राज हरपाल-देवजी राजमहेलनी उन्नत अटारीओ पर गान तान आदि गम्मतमां रात्रि निर्गमन करवा लाग्या, तेओने हमेशां कमल दर्शनथी सोलंकी सुतानां नयनोनी यादी आवती, हंसोना स्वर सांभळी वलयनादनुं स्मरण थतुं अने बंधुक पुष्पने जोतां तेना अभिनव ओष्टनी लालिमा याद आवती हती. पाटणमां प्रवेश करती वखते पोते प्रथम जेना मिजमान थया हता ते सोलंकीने घेर महाराजा करणनी मुलाकात थया पछी कोइकोइ वखते जता, परंतु जेम जेम राज तरफथी मान वधतुं गयुं तेम

तेम पोतानी प्रतिष्ठा जाळववा माटे तेओए त्यां जवुं बंध कर्युं आथी वृद्ध सोलंकीना मनमां तेम तेम पोतानी पुत्रीए भाखेला भविष्य माटे शंका उत्पन्न थइ, शक्ति पण पोतानी देवी साहेलीओ साथे प्रतापसिंहना पुरातन भुवननी अटारी पर अदृश्यपणे शरद्‌नी चांदनीमां विविध प्रकारना विहार करतां हतां. कोकिलना कंठने लज्जित करनार गरवी अने रासडाओना मधुर स्वरनी धुन मची रही हती, करकंकणना खणणाट अने झांझरना झणकार आजुबाजुना प्रदेशमां आश्चर्यने प्रसराववता हता, जाणे शरदृऋतु पोतेज सोलंकी सुतानुं सुरूप धरी आनंद उडावती होय एम अनुमान थतुं हतुं. दीकरीने दिन प्रतिदिन म्होटी थती जोइ वृद्ध सोलंकी विह्वळ बनी गयो तेणे एक दिवस पोतानी पुत्रीने कह्युं के बेटा ! तमोए भाखेल भविष्य प्रमाणे जे रजपूत आपणे घेर अतिथि बनी आव्या हता तेतो महाराजा करणने अत्यंत प्रिय थइ पड्या छे अने राजमां हाल्ल कर्ता हर्ता पण एज छे. आटले मोटे दरज्जे चढ्या पछी ए आपणने विसरी गया होय एम जणाय छे, तमारा संबंध माटे शुं करवुं ए मने समजावो, हवे तो हद थाय छे, लोको न बोलवानुं बोले छे. धन तो गयुं, परंतु धर्म पण तेनी साथे जवा बेठो छे. आ रीते विह्वळ बनेला पोताना वृद्ध पिताने शान्त्वन आपवा शक्तिए कह्युंके–पिताश्री ! आप जरा धीरज राखो, वखत वखतनुं काम कर्या करे छे, एज रजपुत के जे मने स्त्रीना स्वरुपमां जोइ गयेल छे ते पोतानी मेळे थोडा वखतमां आपणे त्यां आवशे; आ घरनुं स्मरण तेना हृदयमां तेवुं ने तेवुं ताजुं छे, ए अचानक आवी डेलीनां कमाड खखडावशे अने आपने सूता जगाडशे एज वखते सगाइ अने लग्न बन्ने साथे थइ जशे. माटे आप गफलतमां नहि रहेतां विवाह वखने जोइती चीज वस्तुओ आजथी धीरे धीरे एकठी करो. पुत्रीनां आवां वचन सांभळी वृद्ध सोलंकीए धैर्यनुं अवलंबन कर्युं. राज हरपालदेवजीनी हिम्मत बहादुरी अने विद्वत्ता उपर महाराजा करण एटला बधा आसक्त थया हता के तेओने घडिभर पोतानी आंखथी अलग न राखता,खंजन दर्शननो समय प्राप्त थतां अनुचर अने अमीर उमरावोना स्वल्प समुदाय साथे अणहिलपुरना अधिपतिए पुर बाहेर प्रयाण करी खंजन दर्शन कर्यां अने त्यांथी पाछा फरी शहेरनी अति समीपे रहेला एक उपवनमां सर्व दे घडी बेठा, त्यां महाराजा करणे उमरावो तरफ दृष्टि करी पुछ्युं के आ दिवाळी घोडा जोवा जवानुं शुं प्रयोजन हशे ? त्यारे एक वृद्ध उमराव जवाब आप्यो के पूर्वे राजा महाराजाओ शरद् ऋतुमां मोटी स्वारी सजी खंजन दर्शन अर्थे निकळता अने विद्वान् ब्राह्मणो तेओने खंजन दर्शनथी उद्‌भवतुं शुभाशुभ भविष्य

संभळावता, परंतु आजकाल ए वातनुं विस्मरण थतां मात्र खंजन दर्शननोज रिवाज रही गयो छे. आ वात सांभळी वाघेला करणे एज उमरावने पुछयुं के त्यारे आ वखते करेल खंजन दर्शन भविष्यमां केवुं फळ आपशे ? वृद्ध उमरावे प्रत्युत्तर आप्यो के ए अमे न जाणीए, कोइ ब्राह्मणना जाणवामां होय तो भले अथवा आ हरपालदेवजी बधी विद्यामां प्रवीण छे. एनाथी कांइ अजाण्युं नहि होय. महाराजा करणनी दृष्टि पोता तरफ खेंचातां राजहरपालदेवजी बोल्या के माराथी कांई अजाण्युं नथी. आ वखतनुं खंजन दर्शन महाराजाना आन्तरिक भयने दूर करशे. आ सांभळी तमाम उमरावो एकी साथे बोली उठ्या के—तद्दन जूठी वात, जे वस्तुनी स्थिति होय तेनो अभाव थाय, परंतु महाराजाने भय छेज नहि तो ते दूर थवानी वात साची शी रीते मनाय ? असंख्य राजाओ जेना चरणकमलमां मुकुट नमावे छे, जेनी आज्ञानुं कोइपण उल्लंघन करता नथी, जेनी कृपादृष्टि सृष्टिमां अमृत वृष्टिनी उपमाने धारण करे छे, जेना क्रोधथी सबळ शत्रुओ पण कंपी उठे छे; जेना अनुग्रहनी सर्व कोइ श्लाघा करे छे, जेनी धर्मपरायण वृत्तिने विद्वज्जनो वखाणे छे, जेनो प्रताप जग जाहिर छे, जेनी बुद्धि अगाध छे तेमज जेनुं सूर्यसमान तेज अने वायु सरखुं बळ छे ए महाराजा करणने कोनो भय होय ? राजहरपालदेवजीए कह्युं के—भय छे के नहि ए बाबतमां महाराजानुं अन्तःकरण साक्षी पूरतुं हशे, बीजाने शुं खबर पडे. आथी महाराजा करण राजहरपालदेवजी उपर विशेष श्रद्धावान थया अने तेओने एकांतमां पोताना आन्तरिक भयनी वात कहेवा एज वखते संकल्प कर्यो, तेणे तुरतज हरपालदेवजीने पूछयुं के खंजन दर्शननो शुं माहिमा छे, ते मने संभळावो. त्यारे हरपालेदवजीए कह्यु के मने मारा गुरुश्रीए संहितानो सारी रीते अभ्यास कराव्यो छे, तेमां खंजन दर्शननी बाबत पण आवेल छे. गर्गआदि मुनिओना मत प्रमाणे श्रावण आदि चार महिनामां जे खंजन देखाय तेने प्रथम दर्शन कहे छे. जे खंजनपक्षी स्थूल, उन्नत कंठवाळुं तथा कृष्णवर्ण होय, तेने भद्र कहे छे अने ते कल्याण करे छे. मुखथी कंठपर्यन्त जेनो वर्ण काळो होय ते खंजन संपूर्ण कहेवाय छे अने ते आशाने पूर्ण करे छे. जे खंजन पक्षीना कपोल श्वेत होय तथा गळामां कृष्णवर्णनुं बिन्दु होय ते रिक्त कहेवाय छे अने तेना दर्शनथी सर्व फळ शून्य थइ जायछे, पीळा रंगना खंजनने गोपीत कहे छे अने तेनां दर्शनथी क्लेश उपजे छे. जेमा फळ तथा पुष्प लाग्यां होय एवा मधुर अने सुगन्धयुक्त वृक्षोपर, पवित्र जलाशय, वाव तथा तळाव आदिपर; हाथी, अश्व तथा सर्पना मस्तकपर; प्रासाद अथवा देवमन्दिर अथवा राजमन्दिरपर, बाग उपर, हर्म्य अर्थात् धनाढ्य मनुष्योनां घर उपर; सुरभिने

रहेवानां स्थान, सत्पुरुषोनो समागम, यज्ञ, उत्सव, राजा अने ब्राह्मणनी समीपे; हस्तिशाला, अश्वशाला, छत्र अने चामर आदि उपर; सुवर्णनी समीपे; श्वेतवस्त्र, कमल, उत्पल, पूजित अने उपलिप्त अर्थात् गोमय आदिथी लीपेला स्थानमां; दहींना पात्र उपर तेमज धान्यना ढगला उपर बेठेल खंजनपक्षी देखाव देतो लक्ष्मी प्राप्त थाय छे. दर्शन वखते खंजनपक्षी पंकपर बेठुं होय तो उत्तम भोजन मळे छे, गोमयपर बेठुं होय तो गोरसनी प्राप्तिमां वृद्धि थाय छे, लीली दुर्वापर बेठुं होय तो वस्त्रनी प्राप्ति थाय छे, गाडीपर बेठुं होय तो देशनो नाश थाय छे, घरनी छतपर बेठुं होय तो धननो नाश थाय छे, वध्र अर्थात् चामडानी वाधरीपर बेठुं होय तो बन्धन थाय छे, अपवित्र स्थानमां बेठुं होय तो रोगने जन्म आपे छे, बकरो अथवा गाडरनी पीठपर बेठुं होय तो प्रियनो समागम थाय छे. महिष, उष्ट्र, गर्दभ, अस्थि, स्मशान, घरना खूणा, कंकर, पर्वत, प्राकार, अर्थात् नगर आदिनो किल्लो, भस्म अने केश उपर बेठेलुं खंजन देखाव देतो ते अशुभ गणाय छे अने रोग तथा भयने उत्पन्न करे छे. बन्ने पांखोने हलावतुं खंजनपक्षी देखाय तो अशुभ अने नदीने किनारे बेसी जळ पीतुं होय तो शुभ गणाय छे; खंजनदर्शन सूर्योदय समये शुभ अने सूर्यास्त समये अशुभ लेखाय छे. नीराजन थइ रह्या बाद राजा खंजनपक्षीने जे दिशामा जतुं जुए ते दिशावडे चढाइ करवाथी शत्रुओने शीघ्रताथी वश करी शके छे. खंजन जे स्थळे मैथुन करे ते स्थळ नीचे निधि अर्थात् दाटेलु धन होय छे, जे स्थळे वमन करे ते स्थळ नीचे काच होय छे अने जे स्थळे विष्टा करे ते स्थळ नीचे अंगार होय छे एम कश्यप आदि मुनिओनी मान्यता छे, ए आश्चर्यनी निवृत्ति माटे भूमि खोदी तपासी जोवुं. मरेल, विकळ, घायल अथवा रोगी खंजन पक्षी प्रेक्षकने पोताना शरीर तुल्य फळ आपे छे अने जोतां जोतां ते पोताना माळामां प्रवेश करे तो धननी प्राप्ति थाय छे. आकाशमां उडतुं खंजन प्रेक्षकने बन्धुनो समागम करावे छे. राजाए शुभखंजनने शुभ स्थानमां जोई भूमि पर गन्ध, पुष्प अने धूप युक्त अर्घ आपवो, ए रीते अभिनंदित शुभ फळ वृद्धिने पामे छे. कदाच अशुभ फळ आपनार खंजन द्रष्टिए पडे तो पण राजा सात दिवस पर्यन्त मांस खाधा शिवाय जो ब्राह्मण, गुरु, साधु अने देवताओना पूजनमां तत्पर थाय तो अशुभ फळ प्राप्त थतुं नथी. खंजनना प्रथम दर्शननुं फळ एक वर्षनी अंदर मळे छे अने प्रतिदिन खंजन दर्शननुं फळ ते दिवसनी समाप्ति पर्यन्त प्राप्त थाय छे. दिशा, स्थान, शरीर, लग्न, नक्षत्र, शान्तदिशा अने दीप्त दिशा इत्यादि सर्व बाबतोनो विचार करी खंजन दर्शनथी थतुं शुभाशुभ जाणी शकाय छे. आ रीते उपवनमां थोडो

वखत वार्ताविनोद करी सर्व शहेरमां दाखल थया. अमीर उमरावो पोतपोताने घेर गया पछी महाराजा करणे राज हरपालदेवजीने एकान्तना ओरडामां लई जई कह्युं के भाई ! मने एक महान भय छे ते तमारा शिवाय दूर करवाने कोइ शक्तिमान नथी, हुं थोडा समय पहेलां [१] झांझमेर तळाजाना राजानी कुंवरी फुलादेना रुप तथा गुण उपर मोहित थई तेने परण्यो छुं, ए तमारां भाभीने भयंकर बावरो भूत वळगेल छे, ज्यारे ज्यारे हुं तेओने ओरडे जाउं छुं त्यारे ए पापात्मा न होय त्यांथी आवी पहोंचे छे अने तुरतज मने बाथमां घाली घणे दूर फेंकीदे छे, तेमज राणीने रंजाडवामां कांई बाकी राखतो नथी. आज दिवस सुधी ए सद्गुणी सुंदरीना समागम सुखनो लाभ लेवा हुं भाग्यशाळी थयो नथी, अनेक भुवा भराडाओने आमंत्रण करी मंतरजंतर तथा दोराधागा कराव्या, ब्राह्मणोने चंडीपाठ करवा बेसाडया अने असंख्य जादुगरो आवी पोत पोतानी विद्याने अ-

---

१ श्री झालावंशना वडवा भाट कालुभाइना चोपडामां एवी हकीकत छे के करणने प्रथमनी सोळ राणीओ हती, छतां सतरमी वखत शिरोहीमा तेओनुं सगपण थयुं अने त्यां तेओ हयेवाळे परणवा पधार्या हता, पोतानां बाइ उपर राजानी प्रीति रहे एटला माटे ए बाइना माणसोए आबु उपर रहेनारा कोइ एक यतीने तेडावी बे तोला अत्तरने मंत्रावी बे शीशीओमां भर्युं, अत्तर लगाडतांज राजा आधीन थइ जशे एवा यतीना वचन पर विश्वास राखी बाइए रथमां बेसती वखते ए बन्ने शीशीओ पोता आगळ राखी. ज्यारे वरात गढ शिरोहीथी पाछी फरी अणहिलपुर तरफ आवती हती त्यारे शिरोहीथी चोवीश माइल चालतां भाभरा नामे गाम आव्युं. त्यां बपोरा गाळवा वरात रोकाणी, रस्तामा जे स्थळे बावरो भूत रहेतो हतो, ते स्थळे चालतां राणीनो रथ उंधो पडयो जेथी अत्तरनी शीशीओ फुटी गइ अने ते अत्तर बावराना मस्तक पर ढोळायुं एटले तुरतज ते बाइने आधीन बनी गयो. वरात चाली त्यारे बावरो पण राणीना रथनी साथेज अणहिलपुर आव्यो अने ज्यारे करण ए राणीने ओरडे जतो त्यारे तेना हाथ पग हीरनी दोरीए बांधी दूर फेंकी देतो. आवुं दुःख करणने घणा वखत पर्यन्त रह्युं हतुं. अंते राजहरपालदेवजीए बावराने हण्यो अने करणनुं कष्ट काप्युं. आ उपरांत उक्त बारोटजीना चोपडामां राजहरपालदेवजी करण वाघेलाना भाणेज हता एवुं लखेल छे अने "करणघेलो" आदि इतिहासोमां बन्ने मासीआइ भाइ हता एवो लेख छे, ए बेमांथी सत्य शुं छे? ए प्रमाणोना अभावथी समजी शकवुं अशक्य छे, अमे पण राजहरपालदेवजी करण वाघेलानी मासीना दीकरा भाइ हता एम लखेल छे सत्यासत्यनुं निराकरण करवुं ए शोधकना कबजामां छे.

जमावी गया, परंतु कोई उपाय काम न लाग्या, आज सुधी आ वात कोई दरबारी माणस आगळ में कही नथी, कारणके ए भय मारी सेनाथी के प्रधान आदिथी निवृत्त थइ शके तेम नथी. संक्षेपमां ए भूत आगळ मनुष्यनुं वळ नकामुं छे, दैवी बळ विना कार्य सिद्धि थवी कठिन छे एम धारी आपने विनति करुं छुं के आ मारी उपाधि अलग करो. आपनी सहायता विना मारो भय मटवानो नथी. महाराजा करणने धैर्य आपी राजहरपालदेवजीए कह्युं के आजे काळीचतुर्दशी छे तो आप नवां राणीजीने ओरडे पधारो, हुं आपनी साथे आवीश, पछी ए पापी केवी रीते पराभव करे छे ए हुं जोइ लइश. राजहरपालदेवजीना हिम्मत भरेलां वाकयोथी करणने कांइक शांन्तिनी आशा तो उपजी, परतुं बावरानो भय तेना हृदयथी एकदम निकळी शके तेम नहोतुं. सूर्यनो अस्त थयो, काळसमान काळी रात्रीए सृष्टिनुं सौन्दर्य हरी लीधुं, जाणे आकाशथी अंजननी वृष्टि थती होय तेम सर्वत्र श्यामता छवाइ रही, हाथे हाथ न सूजे एवा अन्धकारे आंखवाळाओने पण आंधळाओनी दशानो अनुभव कराव्यो, केटलाएक लोको समीसांजमांज भूतप्रेतना भयथी पोतपोताना भुवनोमां भराइ बेठा हता, शियाळ आदिना भयंकर शोर संभळावा लाग्या, केटलाएक भुवाओ मंत्र साधनाअर्थे भूतोने आपवाना बळिदान सहित करमां खुल्ली कृपाण लइ स्मशान भणी जवा लाग्या. राजमहेलमां हमेशना करतां विशेष दीवाओ करवामां आव्या हता. रात्रीना बारेक वाग्या सुधी राज हरपालदेवजीनी साथे विविध वार्तालाप करी महाराजा करणे नवां राणीजीने ओरडे जवा विचार कर्यो, तेना मुखनी कान्ति मलिन जणावा लागी, चरण चैतन्य विनाना बनी गया, छाती थडकवा लागी, घणी म्हेनते पोते उभा तो थया, परंतु जाणे ठामठाम बावराने जोता होय तेम भयभीत आंखोने आमतेम फेरववा लाग्या. पाटणना धणीनी आवी दशा जोइ राजहरपालदेवजीने दया उपजी, तेओए करणने कह्युं के महाराजा ! गभराओछो शा माटे ? ज्यांसुधी हरपालदेव हयात छे, त्यांसुधी तमने भय आपनार त्रिलोकीमां कोइपण नथी. आप निशंक बनी पधारो, हुं आपनी पाछळ पाछळ चाल्यो आवुंछुं, आ वखते राज हरपालदेवजीए पोताना हमेशना नियम प्रमाणे भेंठमां जमैया, केडे तलवार अने हाथमां बरछी धारण करी हती, तेने हथिआरनी कशी जरुर नहोती, कारण के तेना बाहु एटला बधा मजबूत हता के ते सिंह जेवा विक्राळ प्राणीने मच्छरनी माफक मुठीमां ममळी नांखता; तेओनां विशाळ नेत्र ज्यारे क्रोधथी रक्त थतां त्यारे म्होटाम्होटा शूरवीरो पण तेना सामुं जोवानी हिमत धरी शकता नहीं, तेओनी

हाकलमां एटलुं वधुं सामर्थ्य हतुं के सांभळनारनो देह तुरतज श्वास रहित बनी जतो, तेनी करणने पण पूरेपूरी खात्री हती. जेथी तेणे फुलाराणीना अवास भणी जवा पग मुक्यो, परंतु बेउ पग जाणे पाछळ पडता होय तेम वारंवार भयथी तेनी गति अटकवा लागी, तो पण धीरेधीरे हरपालदेवजीनो हाथ पकडी राणीना ओरडा नजीक आवी पहोंच्या. हरपालदेवजीए ओरडा आगळना चोकमां उभा रही करणने कह्युं के–आप सुखेथी अंदर पधारो अने ज्यारे बावरो आवी कांइपण हरकत करे त्यारे उंचे स्वरे बूम पाडजो एटले हुं तुरत हाजर थइ ए हरभीने हाथ बतावीश. करण उपर एक करतां वधारे वखत वीती चूकी हती, छता तेणे अंदर जवा हाम भीडी, परंतु पग आगळ चालवानी अशक्ति बनावता होय तेम स्थिर थइ रह्या, तेवामां ओरडानी अंदर पलंगपर पछडाटीओ खाती राणीनो आर्तस्वर संभळायो, आथी आरंभमांज करणना अन्तःकरणमां विशेष भय व्याप्यो, तेना हाथ पग कंपवा लाग्या, शरीर संकोचावा लाग्युं, छाती धुजवा लागी, तमाम अंगो प्रस्वेदथी आर्द्र थइ गयां, कंठे शोष पडवा लाग्यो तेमज रोम खडां थइ गयां, जाणे हमणां पूर्वमांथी, पश्चिममांथी, उत्तरमांथी के दक्षिणमांथी बावरो प्रगट थइ पोताने पराभव करशे एवी शंकाथी तेनां नयनो चोतरफ चंचलताथी गति करवा लाग्यां त्यारे राज हरपालदेवजी बोल्या के–भाइ! रजपूत बनी आम काचा हृदयना केम थाओ छो? जाओ अंदर, हुं अहीं सावध थइने आपनी सहायतामां उभो छुं. करणे ओरडामां प्रवेश कर्यो, अने प्रकंपित अंगे राणीना पलंग पासे जइ पूछ्युं के–तमारी तबीयत केम छे? राणीए कांइ पण ज्वाब न आप्यो, परंतु तेनां सजळ नेत्रोए अगाध व्याधिनुं निवेदन कर्युं. करणे विचार कर्यो के, कांतो आजे काळीचतुर्दशी होवाथी बावरो बळिदान लेवा समशान भूमिमां गयो हशे, माटे बे घडी रोकाई राणीनी आश्वासना करुं, एम धारी ज्यां पलंगपर बेसवा जाय छे तेवामां अचानक ओरडाना एक खूणामां विजळी जेवो प्रकाश तेना जोवामां आव्यो, तुरतज फुलाराणीए पडखुं फेरवी चीश पाडी अने करण सामी आंखो काढी पलंगपर कूदवा लागी, मरणनी दशाने प्राप्त थएला करणनो कंठ बंध थइ गयो, राड पाडवानी शक्ति तेनामां न रही, बावराए हीरनी दोरी वडे तेना हाथ पग बांधी एक बाजुए रेडवी मूक्यो. आ वखते करणना मुखमांथी महा महेनते फक्त "राम राम राम" एवो उच्चार निकळ्यो. अने ते राजहरपालदेवजीना सांभळवामां आव्यो, जेथी तेओए क्रोधना आवेश साथे गंभीर गर्जना करी के—आ अर्ध रात्रिने समये क्यो अधम महाराजा करणना महेलमां तोफान मचावी रह्यो छे? त्यारे बावराए अभिमानथी ज्वाब

आप्यो के-ए तो हुं बावरो, अहीं हमेशां आवुं छुं, पण तमो नवा सवा आजे क्यांथी आव्या अने कोण छो? हरपालदेवजीए हिम्मतथी जवाब आप्यो के, हुं मकवाणा केसरदेवजीनो कुंवर हरपालदेव कीर्तिगढथी तारी साथे युद्ध करवा आव्यो छुं. अधम! मारा सन्मुख आव, छुपीने उभा रहेवुं ए कायरनुं काम छे. हरपालदेवजीनां आवां तिरस्कारयुक्त वचनो सांभळी बावरो अत्यंत क्रोधायमान थयो अने विकाळ स्वरुप धारण करी बाहेर आव्यो, तेना वाळ वाका तथा पीळा हता, आंखना डोळाओ गोळ तथा बाहेर निकळी जता होय तेवा भयंकर जणाता हता, ते शरीरे अत्यंत श्याम हतो, तेनो चेहेरो अने चेष्टा आदि जोइ साधारण मनुष्यो व्ही मरे एमां नवाइ जेवुं न हतुं. राजहरपालदेवजी ए काळ स्वरुप बावरानी साथे बाथ भीडवा सज्ज थया. ए वखते सोलंकी सुता शंकरना अंशावतार अने पोताना भविष्यत् प्रियतमनुं बळ जोवा माटे अदृश्यपणे आवी एक बाजु उभां रह्यां, जे समयनी पोते राह जोइ रह्यां हतां ते समय प्राप्त थवाथी तेओने अति आनंद थयो. बावराए हरपालदेवजीने कह्युं के-तमो तमारां हथियार हेठां मुकी दिओ अने मारी साथे बाहु युद्ध करो. राज हरपालदेवजीए ए वात कबुल राखी. हथिआरने एक बाजु मूक्यां के तुरतज बळना घुमंडथी ब्रह्माने डोलाववाना मिथ्याभिमानथी मस्त बनेला बावराए पोताना प्रलंब बाहुथी जेम हाथी सुंढ वडे वृक्षनी शाखाने प्रकंपित करे तेम हरपालदेवजीना बन्ने बाहुने पकडी हचवचाव्या, हरपालदेवजीए जेम पर्वतपर वज्र पडे तेम बावरानी छातीमां माथुं मारी हाथ छोडाव्या अने ए पापीनी मातेला महिष जेवी पुष्ट कन्धरापर मुष्टिनो प्रहार कर्यो, जेथी ते बे डगलां पाछो हठी विचारवा लाग्यो के-आ कोइ दैवी प्राणी छे, मनुष्यमां आटलुं बधुं सामर्थ्य न होय, फरी तेणे असह्य चोटथी हरपालदेवजीना चरण पकडया, छतां लेश पण चलायमान नहि थतां जेम निर्दय बनी जळोने निचोवे तेम करनी दशे आंगळीओथी बावराना कंठने एवो दाब्यो के तेना श्वासनुं रुन्धन थइ गयुं, तेणे तुरतज हरपालदेवजीना चरण छोडी दीधा, ए जोइ शक्ति अत्यंत प्रसन्न थयां. क्रोधाग्निथी प्रज्वलित थएला अने क्रूर स्वभाववाळा बावराए एकदम कूदी हरपालदेवजीने कटि प्रदेशथी पकडी अद्धर उपाडी पृथ्वीपर पछाड्या, आ समये जाणे धरतीकंप थयो होय तेम आखो राजमहेल ध्रुजी उठ्यो, राजहरपालदेवजीने जो के जबरी पछडाट लागी तो पण तेओ उत्साहपूर्वक उभा थइ असुरनुं दमन करवा आगळ धस्या, अनेक दावपेच अजमाव्या छतां बावरो वश न थयो, एक प्रहर पर्यन्त बाहु युद्धनी अविच्छिन्न झपाझपी चाली ओरडाना अग्रभागमां बंधीवान बनी महद् भयथी मूर्छित दशाने प्राप्त

थएला महाराजा करण तथा अति दीन तेमज दयाजनक स्थितिमां पलंगपर पडेलां फुला राणी पण युद्धनुं अवलोकन करतां हतां; बावराए अचानक हरपालदेवजी उपर हल्लो कर्यो अने तेओने हेठे पाडी छातीपर चढी प्रचंड बळथी पीडवा लाग्यो, हरपालदेवजीए ए दुष्ट दानवने दूर करवा अमाप बळनो उपयोग कर्या छतां पहाडनी माफक बावरानो देह जरापण डग्यो नहि, आथी शक्तिनुं हृदय शंकित थयुं, तेणे सत्वर गुप्तरीते हरपालदेवजीना कानमां कह्युं के हाकल मारो एटले असुर आघो खसी जशे. आ वखते राज हरपालदेवजीने पोताना पूर्वज मार्कंडेयना वचननुं स्मरण थयुं तेमज शक्ति पण सहायताए आवी पहोंच्यां एम खात्री थवाथी तेओए बमणा उत्साहथी गर्भिणी स्त्रीओना गर्भने गलित करनार अस्खलित अवाजे म्होटी हाकल मारी, जेथी बावरो बारहाथ छेटे उडी पडयो अने बेहोश स्थितिमां जमीन पर लोटवा लाग्यो, हरपालदेवजी तलवार लई तेनी छाती पर गोठण मुकी शिरच्छेद करवा सज्ज थया, त्यारे बावराए आर्तस्वरे अरज गुजारी के, प्रतापी पुरुष ! कृपा करी मने जीवितदान आपो, ईष्टना शपथ लई कहुं छुं के हवेथी हुं कोई वखत अहीं आवीश नहि. तमो मने प्राणदान आपशो ए उपकारना बदलामां जे जे वखते मने याद करशो ते तमाम वखते आपनी सेवामां हाजर थईश अने गमे तेवां विकट काम सोंपशो ते अति उत्साहथी करी आपीश. राज हरपालदेवजीए रजपूतनी रीति प्रमाणे बहुज दीनता बतावता बावराने अभयदान आप्युं, जेथी ते हरपालदेवजीने नमन करी तुरतज त्यांथी विदाय थइ गयो. आसुरी कळानी वृद्धि करनारी रात्रि लगभग व्यतीत थवा आवी हती, दैवी प्रभाने पुष्टि आपनार प्रभातनां चिह्नो प्रगट थइ चूक्यां, अरुणोदय थवाने मात्र एक प्रहरनी ढील हती. युद्धना अमित श्रमथी स्वेद-युक्त शरीरवाळा राजहरपालदेवजीए महाराजा करणने बंधनथी मुक्त कर्या, अने कह्युं के आजथी आपनो भय निर्मूळ थयो, बावरो कदि पण आपना महेलनी अंदर आवशे नहि, पण मने क्षुधा बहु व्यापी छे, जेथी जमवानो बंदोबस्त तुरत थवो जोइए. महाराजा करणे उभा थइ राज हर-पालदेवजीना चरणमां मस्तक नमाव्युं अने राणीने धैर्य आपी तुरतज तेओ पोतानां दरबारमां आव्या, त्यां हाजर रहेला हजुरीआओमांथी एकने आज्ञा आपी के–हरपालदेवजी माटे कोठारमांथी भातभातनां पकवानोनी थाळी पीरसी एकदम अहीं लइ आवो. आ वखते राज हरपालदेवजीए करणना कानमां कह्युं के–अत्यारे राक्षस साथे युद्ध कर्युं छे, माटे आसुरी खोराक जोईए, पकवा-नोथी पेट न भराय, अश्वशाळामांथी बे घेटा मंगावी आपो, करणे तुरतज तेओनी इच्छा मुजब

वे घेटा मंगावी आप्या. ए घेटाओने लइ राज हरपालदेवजी एकला नदीने किनारे स्मशान भणी जवा विदाय थया, जतां जतां मार्गमां पोताने शंका थइ के शुं वावरानी साथे युद्ध करतां मने हाकल मारवानी याद्दी आपनार सोलंकी सुता हशे? ना, ना, ए राजमहेलनी अंदर शी रीतें आवी शके? ए तो रात दिवस मने तेनुं स्मरण थया करे छे, जेथी ए वखते पण भणकारामां में तेनी कल्पना करी लीधी, परंतु तेमां एक रीतें लाभ थयो, भला ए व्हाने मने मारा पूर्वजनां वचनोनी स्मृति थइ आवी अने एथीज वावरा जेवा भयंकर भूत साथेना युद्धमां हुं विजय मेळवी शक्यो. आ वखते शक्ति पण अदृश्यपणे तेओनी साथेज गमन करतां हतां, रात्रिना पहेला महरमां लोकोए ठामठाम असंख्य कुंडाळांओ काढी भूत प्रेतादि अर्थे वळिदाननां कुंडांओ मुकेलां हतां, कोइमां मांस, कोइमां लाडु, कोइमां साकरकोळुं अने कोइमां लाफसी विगेरे पदार्थो दृष्टिगोचर थता हता, राजहरपालदेवजी नदीना तीर निकट जइ पहोंच्या, रात्रिना त्रीजा प्रहरनो अमल जरा अव- शेष हतो, गवैयानी माफक तीव्र स्वरथी गायन करता तमरांओ जाणे नदीरुपी महाराणीने रीझ- वता होय तेम जणातुं हतुं, रात्रिनी श्यामताने पुष्टि आपनार वृक्षोनी घटाओथी नदीना किनारा रमणीय छतां भयप्रद भासता हता, शियाळना शोरनुं जोर जरा पण नरम नहोतुं पड्युं, उलूकना बीहामणा अवाजो वंध नहोता पड्या, जळ अने स्थळनो वर्ण एक थइ जवाथी मात्र खळखळ वहेतो प्रवाहज आपगानी ओळखाण आपतो हतो, जरा दूर सळगता चिताना वह्निथी स्मशान- भूमिनुं भान थतुं हतुं, भयरुपी दूतने आगळ करी राक्षसी जेवी रात्रिए दशे दिशाओने स्वाधीन करी हती, राजहरपालदेवजी शिवाय आवी काळ समान काळी रात्रिमां वहार निकळवानी कोण हिम्मत करे? तेओ मृत्युथी बिलकुल डरता नहि, तेओनुं मन केटलुं बधुं द्रढ अने निडर हतुं, तेनी खात्री करवा माटे एक काळी चतुर्दशीनी रात्रिनुं चरित्र ज बस छे; उभय घेटाओनो अन्तकाळ नजीक आव्यो, राजहरपालदेवजीए परम पवित्र अने निर्मळ सरस्वतीना जळथी स्नान सन्ध्या करी तीक्ष्णधारवाळा छरा वडे घेटांओनां शिर धडथी जुदां कर्यां, त्यारबाद त्वचाने उखेडी मांसने जळथी धोयुं तथा सार विनानां अस्थिओने एक बाजु फेंकी स्मशान तरफ चाली निकळ्या, शक्तिए तेनो संग छोडयो नहि, तेओ जेम जेम स्मशान नजीक जवा लाग्या, तेम तेम भूत पिशाच आदि निशाचरोनी भयंकर कीकी- यारीओ संभळावा लागी, केटलीएक डाकिनीओ अर्धदग्ध शवनां आंतरडांओ काढी आनंद पूर्वक आमतेम दोडादोड करी रही हती, केटलीएक पिशाचिनीओ चितामांथी शवना हाथ पग

खेंची तेना नीचे मुडदाओनां मस्तक चोडी आंतरडांओनां तार बनावी तंबूरनी माफक तुनतुन करती विचित्र हावभाव साथे नाचती हती, जाणे यमराजाअे स्मशानरुपी यज्ञभूमिमां चितारुपी अग्निकुंड विषे मनुष्यनी आहुति आपवा महान यज्ञ कर्यो होय अने ते यज्ञमां दक्षिणा लेवा माटे भूत पिशाच आदिनी भीड मची होय एवो भास थतो हतो, अत्यंत अघोर अने भयानक स्थळमां प्राप्त थया छतां पण राजहरपालदेवजीनुं हृदय वज्र सरखी द्रढताने प्रदर्शित करतुं हतुं, तेओए एक प्रज्वलित चिता पासे जइ छरानी अणीथी मांसने शेकवा मांडयुं अने प्रथम ग्रास मुखमां मूकयो के तुरत पाछळथी सुवर्णनी चुडीवडे सुशोभित तेमज सुकोमळ उभयकर अग्र भागमां वर्तमान थइ कांइ याचना करता होय तेम तेओना जोवामां आव्युं, छतां पाछळ कोण छे अने ए कोना हाथ छे तेनी लेश पण दरकार नहि करतां पोतानी पेठे कोइ क्षुधार्त प्राणी हशे एम धारी तेने पण मांसना परिपक्व कवल आपवा मांडया. ए रीते केटलाअेक कोळीया पोते खाधा अने केटलाएक ग्रास पृष्ठ भागमां अद्रश्यपणे बेठेलां शक्तिना करकमलमां समर्प्या, थोडी वारमां बेउ घेटाओनुं मास खलास थयुं, छतां शक्तिए पोताना कमनीय करने आगळ प्रसार्या, राजहरपालदेवजीनी प्रकृति एवी उदार हती के तेओ कोइने " ना " कही शकता नहि; तेणे तुरतज पोतानी जांघ चीरी मांसनो लोचो काढयो, रुधिरनी धारा जोशबंध वहेवा लागी, छतां ए जखम तरफ नहि जोतां मांशने शेकी आनंद पूर्वक शक्तिना हाथमां आप्युं, आथी बेहद प्रसन्न थएलां शक्ति बोल्यां के—वीरनर ! वरंब्रूहि, वरंब्रूहि (माग, माग). त्यारे राजहरपालदेवजीए जवाब आप्यो के—हुं एवी रीते वरदान लेवानी इच्छा राखतो नथी, मारी सामे आवी जे कहेवुं होय ते कहो, आ वखते शक्ति अलौकिक अवाजनी साथे राजहरपालदेवजीनी सन्मुख सोळ वर्षनी सुन्दरीने स्वरुपे प्रगट थया, तेनां अद्वितीय लावण्यनुं वर्णन करवा शेषनाग सरस्वतिना शब्द निधिनो सहस्त्र मुखे उपयोग करे अने गणपति आठे प्रहर अविच्छिन्नपणे लख्या करे तोपण अन्ते शब्दनी अप्राप्ति अथवा गजाननना करनो कलम जाहिर थया विना रहे नहि, राजहरपालदेवजीनुं मन तेना रुप माधुर्य साथे मोहित थयुं, फरी शक्तिए " माग माग " ए प्रमाणे कहुं त्यारे तेओ बोल्या के—तमे कोण छो ए जाण्या शिवाय हुं कांइपण मागी शकुं नहि; शक्तिए कह्युं के हुं तारा वंशनुं श्रेय करनारी शक्ति छुं अने तारी वीरता विलोकी बहुज प्रसन्न थइ छुं माटे जे जोइए ते माग. पूर्वे मुनिराय मार्कंडेये पोताने कह्युं हतुं के पाटण गया पछी शक्ति तने वरशे ए वाक्यनी सफळतानो समय समजी राजहरपालदेवजीए मागणी करी के तमो मने वरो; तमारी आशाथी आज दिवस

सुधी में कोइनी साथे उद्वाह कर्यो नथी. शक्तिए कह्युं के आ दैवीदेहे वरी शकुं तेम नथी, परंतु तमो प्रभातमां प्रतापसोलंकीने घेर जाजो एटले तमारी मनकामना पूर्ण थशे. राजहरपालदेवजीए आश्चर्येथी पूछ्युं के ए प्रताप कोण ? " वस एटली वारमां भूली गया ? पाटणमां प्रवेश करती वखते जेने त्यां तमो प्रथम मिजमान बनी मान पाम्या हता ए प्रताप सोलंकी अने जेणे तमने भातभातना भोजन जमाडयां हतां ए हुं पोते " आटलुं कही शक्ति अदृश्य थयां. राजहरपालदेवजी उतावळथी शहेरमां आव्या अने तेओने शंकरनो अंशावतार समजी सन्मान आपवा आवेलो भूतप्रेतनो समाज पण सहु सहुने स्थाने विदाय थयो. संयोगिणी स्त्रीओना सुखने सहन नहि करनारी पूर्वदिशा सपत्नीनी माफक लालचोळ बनी गइ. अन्धकारने लीधे अदृश्य थएली दिग्देवीओ प्रकाशमां आवी, शियाळने शैथिल्य, उलूकने अन्धत्व अने तस्करने त्रास आपनार आदित्यनो उदय थयो. दिवाळीनो मांगलिक दिवस होवाथी बधा मनुष्यो महोत्सवनी तैयारीओ करवा लाग्या. राजहरपालदेवजी वस्त्र परिवर्तन करी रात्रिना जागरण पूर्वक राक्षस साथेना युद्धमां श्रमित थया छतां प्रसन्न वदने महाराज करणने मळवा पधार्या. भयना भारथी निवृत्त थयेला करणे तेओने पोतानुं अर्ध आसन आपी यत्किंचित् उपकारनो बदलो वाळवानी शरुआत करी. आ वखते राजहरपालदेवजीनुं मन प्रताप सोलंकीने घेर सत्वर पहोंचवा माटे अधीर बनी रह्युं हतुं, तेओए महाराजा करणने कह्युं के—आजे भोजन समये आप मारी राह न जोता. कारण के जरुरी काम प्रसंगे हुं जरा बाहेर जवानो छुं, आवती काले आपने मळीश. करणनो एवो नियम हतो के ते राजहरपालदेवजीनी रुचिमां अवरोधरुप वचननो कदि पण उच्चार करतो नहि. तेणे कह्युं के बहु सारुं, जेवी आपनी इच्छा, हरपालदेवजी त्यांथी विदाय थया. जो तेओए पोताना लग्न संबंधी वात करणने कही होत तो करण पुष्कळ धन खरची तेओनां लग्न म्होटी धामधूम साथे करत, परंतु ए वात अत्यंत गुप्त राखवा जेवी हती. राज हरपालदेवजीए प्रभात समये प्रताप सोलंकीनी डेलीनां कमाड खखडाव्यां. प्रतापसिंहे एकदम कमाड उघाड्यां, हरपालदेवजीने जोइ तेने हर्षनो पार रह्यो नहि. बन्ने राम राम करी बेठा, शक्तिए आगली रात्रिए पोताना वृद्ध पिताने सघळी सूचना करी राखी हती. राजहरपालदेवजीए कह्युं के—हुं आपना पुत्री साथे उद्वाह करवानी इच्छा राखुं छुं. आ वचन प्रताप सोलंकीने अमृतनी माफक आनंद आपनारा बन्यां. जे जीवनने पोते निष्फळ अने कलंकित समजी व्याधिना वारिधिमां डबकां मारता हता तेज जीवनने आजे सफळ अने निष्कलंक लेखी जाणे पुनर्जन्म पाम्या होय, तेवुं मनथी मानवा लाग्या, तेणे तुरतज घणी खुशीथी हा कही. हर-

पालदेवजीने विनति करी के हवे मात्र मुहूर्त जोवरावीए एटलोज विलंब छे. राजहरपालदेवजी बोल्या के मुहूर्त जोवराववानी कशी जरुर नथी. मात्र कोइ एक ब्राह्मणने बोलावी तेनी, अग्निनी अने सूर्यनी साक्षिथी लग्नविधि करवानो छे. कोइ जातनो आडंबर करी दुनियाने देखाडवानुं नथी. वृद्ध सोलंकीए जेने पूर्वे महाराजा मूळराज तरफथी मसालीयुं गाम दानमां मळेलुं हतुं, एवा मसालीआ रावळनी अवटंकवाळा ब्राह्मणने बोलाव्यो. ते नित्य कर्ममां निपुण अने धर्मीष्ट होय एवुं तेनी मुखमुद्रा जोतां जणातुं हतुं. डेलीमां आशीर्वाद आपी उभा रहेला ए विप्रने सोलंकी प्रतापसिंहे तथा हरपाल-देवजीए प्रणाम करी आसन आप्युं, शक्तिए मायाथी उत्पन्न करेली स्त्रीओ मंगलगीत गावा लागी; देवताओए प्रस्तुत कार्यमां पोतानो आनंद प्रदर्शित करवा माटे पुष्पनी वृष्टि करी. प्रतापसिंहे प्रेम-पुरःसर कन्यादान दीधुं. तात्कालिक शुभ मुहूर्त जोइ लग्ननो समारंभ कर्यो. विधिवत् विवाह थइ रह्या बाद राजहरपालदेवजीए मसालीआ रावळने पुष्कळ दक्षिणा आपी, अने तेना पग धोइ ते दिवसथी पोताना कुळगोरनी पदवी आपी. त्यारबाद तेओ शक्तिने साथे लइ पोताने महेल पधार्या. सायंकाळनो समय समाप्त थतां रात्रिनो समारंभ थइ चुक्यो हतो. दिवाळीनो दिवस होवाथी आखा शहेरमां हमेशना करतां विशेष दीवाओ करवामां आव्या हता. ठाम ठाम लक्ष्मीपूजन अर्थे धूप, दीप अने नैवेद्यनी तैयारीओ थती हती, दक्षिणा लेवा माटे ब्राह्मणो आम तेम दोडादोड करी रह्या हता. राजहरपालदेवजीए केटलीक अगत्यनी बाबतमां शक्तिनी सलाह लीधा पछी पू-छ्युं के आपनी सहायताथी हुं महाराजा करणना महान् संकटने दूर करी शक्यो छुं, जेथी ते अव-श्य ए उपकारनो बदलो वाळवा कांइ पण मागवानुं कहेशे, त्यारे मारे शुं मागवुं? शक्तिए कह्युं के–मात्र एटलुंज मागवुं के–एक रात्रिमां जेटलां गाममां गागर बेडां अने तोरण बांधीए तेटला गाम अमारां, आ मागणी कांइ करणना मनने विशेष लागशे नहि, ए कबुलात आपे के तुरत तमो वा-वराने याद करी बोलावजो, हुं पण तेनी मददमां रहीश अने एक रात्रिमां पाटण तावाना तमाम गामडाओमां गागर बेडां तथा तोरण बांधी दइश. आ वात राजहरपालदेवजीने उत्तम लागी. बीजे दिवसे बेसतुं वर्ष होवाथी परंपराना नियम प्रमाणे चडते प्होरे भारे ठाठमाठथी दरबार भर्यो. महाराजा करणे राजहरपालदेवजीने म्होटा मान साथे बोलाववा केटलाएक अमीर उमरावोने अगाउथी मोकल्या हता, तेओ बधाए वखतसर दरबारमां आवी पोतपोतानां स्थानने अलंकृत कर्यां. कविओनी कविताओ, गायकोनां गान तथा नर्तकीओनां नृत्य विगेरे थइ रह्या बाद करणे राजहरपालदेवजीने कह्युं के–बन्धु! आपे मारा उपर एक म्होटो उपकार कर्यो छे, तेनो यत्किं-

चित् बदलो वाळवा आप कहो ते आपवा तैयार छुं; राजहरपालदेवजी बोल्या के—जो आपनी एमज इच्छा छे तो एक रात्रिनी अंदर हुं जेटलां गामोने गागर वेडां तथा तोरण बांधुं तेटलां गामो मारां. करणने आ मागणी कांइ विशेष न लागी, एक रात्रिमां वधारेमां वधारे दश वार गामने गागर वेडां तथा तोरण बांधी शकशे एवो विचार करी तेणे तुरतज ते वातनो स्वीकार कर्यो. राजहरपालदेवजीए उतारे आवी शक्तिने सघळी हकीकतथी वाकेफ कर्यां अने वावराने याद कर्यो जेथी ते सत्वर आवी हरपालदेवजीनी सेवामां हाजर थयो, शक्तिए वावराने कह्युं के— तुं मारी साथे चाल, आजनी रात्रिमां सूर्योदय थतां पहेलां करणवाघेलाना कबजामां जेटलां गामो छे, तेटलां तमामने झांपे गागर वेडां अने तोरण बांधवाना छे. राजहरपालदेवजीए वावराने सूचना करी के कोइ गाम बाकी रहेवुं न जोइए. वावराए राक्षसी मायानुं अवलंबन करी एक क्षणमां असंख्य गागरवेडां एकत्र कर्यां अने शक्तिए पण आम्रपाल्लवना संख्यावंध तोरणो तैयार करी पोतानो दैवी चमत्कार वावराने वताव्यो. देव अने दानव बन्ने राजहरपालदेवजीना हितमां प्रवृत्त थया. वावराए दरेक गामने झांपे त्वराथी गागर वेडां तथा तोरण बांधवा मांडयां अने शक्तिए ते ते गामना मुखीने स्वप्नामां दर्शन दइ सूचना करी के तमो प्रभातमां महाराजा करण पासे पहोंची खबर आपजो के राजहरपालदेवजी अमारा गामने झांपे गागर वेडां तथा तोरण बांधी गया छे. दरेक गामना पटेलीयाओ नविन प्रकारना स्वप्नथी झबकी उठया अने आश्चर्यने लीधे एकदम आंखो चोळता गामने झांपे दोडया गया, त्यां बहुज रमणीय गागर वेडां अने तोरण बांधेल जोइ स्वप्नने साचुं मानी आ अजब कौतुकनी कहाणीथी महाराजा करणने वाकेफ करवा उतावळा अणहिलपुर भणी रवाना थया. ए रीते शक्तिए तथा वावराए मळी एक रात्रिमां त्रेवीशसो गामनें गागरवेडां अने तोरण बांध्यां, आ वात प्रभातमांज महाराजा करणने काने पडी राज हरपालदेवजीए करेला उपकारना बदलामां कदाच ते पोतानुं सर्वस्व अर्पण करीदिए तो पण कांई विशेष नहतुं; छतां एक पछी एक दरेक गामना पटेलीआओ आवी जेम जेम उक्त वातने जाहेर करता गया, तेम तेम तेना मनमां आश्चर्य वधतुं गयुं, तेणे राजहरपालदवजीने बोलावी पोतानुं समग्र राज्य समर्पण कर्युं. आ वखते राजहरपालदेवजीए भालनां पांचसो गाम पोतानां भाभी फुलाराणीने काप-डा तरीके आपवा ईच्छा वतावी. जेथी करणे तेनो स्वीकार कर्यो. त्यारबाद

[1]हरपालदेवजीए शक्तिनी सलाह लइ वि. सं ११५६ ना अरसामां पाटडीनी अंदर पोतानी राजधानी स्थापी अने बावराने हाथे ए शहेर फरतो मजबूत गढ बंधाव्यो. प्रजावर्गनुं पुत्रवत् परिपालन करता राजहरपालदेवजीने केटलाएक हाथी, घोडा अने गाय आदि चतुष्पदनी वृद्धिथी राज्यने सुसमृद्ध करवानो विचार थयो. पशुओनां शुभाशुभ लक्षणने पोते सारी रीते समजता हता, जेथी प्रथम हाथीनी खरीदी माटे जे विश्वासपात्र माणसोने मोकलवाना हता तेओने पोता पासे बोलावी सूचना करी के–हाथी चार प्रकारना होय छे. भद्र, मंद, मृग अने संकीर्ण; तेमां जेना दांत माक्षिक रंगना होय, अवयव सुविभक्त होय, जे अति जाडा के अति पातळा न होय, क्षम होय, समान अंगवाळा होय अने जेनी पीठ धनुष जेवी तथा जंघा वराह जेवी होय ते "भद्र," जेनी छाती तथा कक्षावलि ढीली होय, उदर लांबुं होय, चामडी, गळुं, कुक्षि तथा पुच्छमूल स्थूल होय अने दृष्टि सिंह जेवी होय ते "मंद"; जेनां अधर, वाळ, गुह्य, कंठ, दांत, सुंढ तथा कर्ण लघु अने नेत्र म्होटां होय ते "मृग"; तेमज उपरनां चिह्नो जेनामां मिश्रित होय ते "संकीर्ण" जातना हाथी कहेवाय छे. "मृग" नी उंचाइ पांच हाथ, पुच्छनां मूळथी कुंभस्थळ सुधी लंबाइ सात हाथ अने मध्यभागनी उंचाइ आठ हाथ होय छे; तेमां एक हाथनुं प्रमाण वधारवाथी "मंद" अने बे हाथनुं प्रमाण वधारवाथी "भद्र" जातिना गजने ओळखी शकाय छे. "संकीर्ण" ना प्रमाणनो कांइपण नियम होतो नथी. "भद्र" नो मद हरित वर्णनो, "मंद" नो मद हळदर जेवो अने "मृग" नो मद कृष्ण वर्णनो होय छे, "संकीर्ण" नो मद भिन्न भिन्न वर्णनो होय छे. जेनां ताळवुं तथा वदन त्रांबा जेवां होय, नेत्र चकली जेवां होय, दांतना अग्रभाग स्निग्ध अने उन्नत होय, मुख विस्तीर्ण अने लांबुं होय, धनुषनी माफक उन्नत पीठ निगूढ अने निमग्न होय, कुंभस्थळ कूर्म समान होय; कर्ण, नाभि, ललाट तथा गुह्य विस्तीर्ण होय, कूर्म जेवा उन्नत अढार के वीश नख होय, त्रिरेखा युक्त गोळ सुंढ होय अने जेना मदथी सुंढना झपाटानो पवन सुगन्धित थतो होय ते हाथी उत्तम गणाय छे. जेनां उरःस्थल अने जघन संकुचित होय, पीठ उन्नत होय, प्रमाणहीन होय अने नाभि उंची होय ते "कुब्ज" कहेवाय छे. लंबाइ तथा परिमाणमां बराबर छतां जेनी उंचाइ अति अल्प

---

[1]श्री झालावंशना वडवा भाटनी पोथीमां लखेल छे के हरपालदेवजी पारकरना सोढामां परण्या हता अर्थात् तेओने बे राणी हतां. सोढी राणीने काइ संतति थइ होय एम जोवामां आवतुं नथी.

होय तेने "वामन" कहे छे. हाथीना संपूर्ण लक्षणोथी सुशोभित छतां जेने दांत न होय ते मत्कुण अर्थात् मकनो हाथी कहेवाय छे. चालतां जेनां पग भेळा थाय तेने "षंढ" कहे छे. जे मद रहित, अधिक के हीन नख तथा अंगवाळो अने वामन अथवा कुब्ज जातिनो होय, तेमज जेनां दांत मेंढाना शिंगडा जेवां होय, अंडकोष देखाता होय, पुष्कर हीन होय अने ताळवुं श्याम, नील, चित्र अथवा कृष्णवर्णनुं होय, जातिए मत्कुण अथवा षंढ होय तेवा हाथीने अने हाथी तुल्य लक्षणवाळी तेमज गर्भिणी करिणीने राजाए परदेशमां मोकली आपवां जोइए एम शास्त्रमां कहेल छे, माटे बराबर तपास करी शुभ लक्षणवाळा हाथी लावजो. आ रीते भलामण आपी माणसोने हस्तिनी खरीदी माटे रवाना कर्या—त्यारपछी एक विशाळ

— राजपुतानामां खेतडी नामनुं गाम छे, त्यांना रहीश मीठुमीयां इलाहीबख्श के जेओ हाल वांकानेरमां दश अग्यार वर्ष थयां हाथीना फोजदारनी जगोपर छे के जेओ वंशपरंपराथी हाथीना डाक्तर तरीके घणुंज उमदा काम करे छे. तेओनी पासे एक "सुखदर्शन" नामनुं प्राचीन पुस्तक छे, ते पुस्तकनी अंदर हाथी सबंधी पुष्कळ हकीकत छे, के जे कोइपण स्थळे आज सुधी प्रसिद्ध थएल नथी, फोजदार मीठुमीयांए अमारी मागणी उपरथी ते ग्रन्थ अमोने बताव्यो, तेमांथी हाथी सबंधी केटलीक जाणवाजोग बीना मळी छे, ते नीचे मुजब छे.

हस्तिओनां क्षेत्रफल १२ छे; तेमांथी बार क्षेत्र दक्षिणनां अने बार क्षेत्र पूर्वनां कहेवाय छे, तथा बे क्षेत्र एथी भिन्न छे, तेनां नाम—

दक्षिणमां.

क्षेत्र.		उपक्षेत्र.
१ सीलहट.	दरेक क्षेत्र नंबरवार उपक्षेत्रथी मळतां होय छे, अर्थात् एक बीजानी जोड गणाय छे.	१ वेळिया.
२ रीख.		२ मगभार.
३ मलवार.		३ भंवरमाळ.
४ मोरंग.		४ कोकला.
५ सेलान.		५ कछाड.
६ धनाश्री.		६ रंगा.

अश्वशाळा बंधाववा पोतानो विचार थयो. पाटडीमां एक न्हानी सरखी पुरातन अश्वशाळा हती, परंतु ते राज हरपाळदेवजीने पसंद न पडवाथी तेओए तुरत कारीगरोने बोलावी कह्युं के—जे स्थळे विशेष रेती, कांकरा के ठंडक न होय, तेमज जे स्थळ स्वच्छ तथा कीडा, मच्छर विगेरे जन्तुओथी रहित होय त्यां एक एवी उत्तम अने विशाळ अश्वशाळा बनावो के जेमां पूरतो हवा प्रकाश आवी शके अने ए हवा प्रकाश आववा माटे मकाननी चारे बाजुए द्वार राखजो तथा तेनी अंदर अश्वने रहेवा माटे तथा न्हाना न्हाना विभाग बनावजो. ए विभागनी

पूर्वमां.

क्षेत्र.	उपक्षेत्र.
१ जटाजूट	१ पींगा
२ पोंगा.	२ मुखजोड.
३ तीपरा.	३ मुहार.
४ गीडा.	४ मुंगा.
५ मनीयारी.	५ तव्वाल.
६ कुभींडीया.	६ भींडीया.

दरेक क्षेत्र नंबरवार उपक्षेत्रथी मळतां होय छे अर्थात् एकबीजानी जोड गणाय छे.

आ उपरांत पचीशमुं क्षेत्र "दरियाई" अने छव्वीशमुं "दरियाई गीडा" नामे प्रसिद्ध छे. जे क्षेत्रमां हस्ति उत्पन्न थयो होय, ते क्षेत्रनां नामथी ज ते ओळखाय छे.

हस्तिओनी २६ जातिनां लक्षण.

१ सीलहट—सीलहट क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो पोणा सात, सामान्य सात अने वधारेमां वधारे सवा सात हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणा छ सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवा छ हाथनी होय छे तेना पगनुं तळीयुं पहोळुं, शिर म्होटुं अने मन प्रफुल्लित होय छे.

२ रीख—रीखक्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो सवा छ, सामान्य साडा छ अने

अंदर अश्वनी वगलथी कांइक उंची भींत चणजो, दरेक विभागनी उपर एक कवयलानी टोकरी लटकावजो के जे दश पंदर दिवसने अंतरे बदलावी शकाय. जे तरफ अश्वना पाछला पग रहे

वधारेमां वधारे पोणा सात हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंवाई ओछामां ओछी पांच, सामान्य सवा पांच अने वधारेमां वधारे साडा पांच हाथनी होय छे, तेना दांत पातळा, माथुं लांबुं अने वदनमां धोळी धोळी चितरी होय छे.

३ मलवार–क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछा पोणा आठ, सामान्य आठ अने वधारेमां वधारे सवा आठ हाथ उंचो होय छे. तथा तेनी लंवाई ओछामां ओछी पोणा सात अने वधारेमां वधारे सवा सात हाथनी होय छे; तेना मोरानो भाग मृगनी माफक उन्नत होय छे अने दांत बहु जाडा होय छे.

४ मोरंग–मोरंग क्षेत्रमां उत्पन्न थएला हाथी साडा पांच हाथ उंचा होय छे तथा तेनी लंवाइ ओछामां ओछी पांच, सामान्य साडापांच अने वधारेमां वधारे पोणाछ हाथनी होय छे; तेना मुख उपर चित्र होय छे, माथानो भाग उन्नत, सुंढ लांबी अने मोरानो भाग पण मृगनी माफक उन्नत होय छे तथा पुच्छ सावज जेवुं अने कान न्हाना होय छे.

५ सेलान–सेलान क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो पोणाछ, सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंवाइ ओछामां ओछी सवा पांच, सामान्य साडा पांच अने वधारेमां वधारे पोणा छ हाथनी होय छे; ते हमेशां विमार जेवो रहे छे, रात्रिए बहु उंघे छे, तेना पेटनो भाग दुर्वळ देखाय छे; तेना अवयवो पैकी पुच्छ सुरागाय जेवुं, पगना गट्टा जाडा, पंजा पातळा अने पीत वच्चे रेखा होय छे.

६ धनाश्री–धनाश्री क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो साडा पांच, सामान्य पोणा छ अने वधारेमां वधारे सवा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंवाइ ओछामां ओछी पांच अने वधारेमां वधारे साडा पांच हाथनी होय छे; तेनी सुंढ न्हानी अने पुच्छ उपर घणा वाळ होय छे.

७ वेलिया–वेलिया क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो पोणा सात, सामान्य सवा सात अने वधारेमां वधारे साडा सात हाथ उंचो होय छे, तथा तेनी लंवाइ ओछामां ओछी सवा छ,

ते तरफ ढाळ राखजो तथा पिशाव आदि बाहेर जवाने माटे बीजी भींतमां एक म्होटुं छिद्र पाडी

सामान्य साडा छ अने वधारेमां वधारे पोणा सात हाथनी होय छे; तेना कान म्होटां वदन कावरचित्रुं, सुंढ जाडी, कदम लांबा अने पुच्छ उपर घणा वाळ होय छे.

८ मगभार—मगभार क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो छ, सामान्य सवा छ अने वधारेमां वधारे साडा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पांच, सामान्य सवा पांच अने वधारेमां वधारे साडा पांच हाथनी होय छे; ते रात्रिए प्रसन्न रहे छे अने निद्रामां गरमी लागतां चमकी उठे छे, तेनो स्वभाव तेज, शरीर शुष्क, दांत पातळा अने गंडस्थळ चोखंडु होय छे; ते हाथणीथी अत्यंत प्रसन्न रहे छे.

९ भँवरमाल—भँवरमाल क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो साडासात, सामान्य पोणा आठ अने वधारेमां वधारे आठ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाई ओछामां ओछी सवा छ, सामान्य साडा छ अने वधारेमां वधारे पोणा सात हाथनी होय छे, तेनुं वदन काळुं अने पातळुं, सुंढ पण पातळी, नख अढार तथा तालु श्याम होय छे.

१० कोकला—कोकला क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो सवा पांच, सामान्य साडा पांच अने वधारेमां वधारे पोणा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाई ओछामां ओछी पांच, सामान्य सवा पांच अने वधारेमां वधारे साडा पांच हाथनी होय छे; ते झाडथी वधारे प्रीति राखनार, अमीरनी माफक धीरे धीरे खानार तृषातुरनी माफक घणुं पाणी पीनार अने रात्रिए सुई रहेनार होय छे; तेमज तेना मस्तकनो भाग उन्नत अने वदनमांथी लाल झांई नीकळती होय छे.

११ कछाड—कछाड क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो साडा पांच, सामान्य पोणा छ अने वधारेमां वधारे छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाई ओछामां ओछी सवा पांच अने वधारेमां वधारे साडा पांच हाथनी होय छे, तेनी छातीनो भाग पहोळो, कुख मांसथी भरेल, मोढुं कावरचित्रुं तेमज तेना शरीरमां पण कोई कोई जगोए कावरचित्रो रंग होय छे, चारे पग गोळ, तळीयां न्हानां अने पुच्छ टुंकुं होय छे तथा ते चालती वखते पुच्छने चमरनी माफक हलावे छे.

नाळुं वांधजो अने एथी जरा दूर बिमार अश्वोने राखवा माटे एक जुदु मकान वांधजो. आ रीते

१२ रंगा—रंगा क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो सवा पांच, सामान्य साडा पांच अने वधारेमां वधारे पोणा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाई ओछामां ओछी पोणा पांच अने वधारेमां वधारे सवा पांच हाथनी होय छे. तेनुं जडवुं लांबुं, पेट म्होटुं गंडस्थळ चोखंडुं, दांत पातळा, वांदरानी माफक उभा कान, आकृति सुवर जेवी अने शरीरे वाळ घणा होय छे; ते तीव्र अथवा खारा स्वभाववाळो होय छे, रात्रिए बहु उंघे छे, बळात्कारे जगाडीए त्यारे जागे छे अने धूळ खावानी ईच्छा कर्या करे छे. आ जातिना हाथीओमांथी हजारे एक सारो निकळे छे, घणे भागे ते गांडा होय छे.

१३ जटाजूट—जटाजूट क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो साडा पांच, सामान्य पोणा छ अने वधारेमां वधारे सवा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाई ओछामां ओछी पांच अने वधारेमां वधारे सवा पांच हाथनी होय छे, तेना दांत लांबा तथा सीधा, पगना गट्टा जाडा तथा टुंका अने अंग उपर घणा वाळ होय छे, तेनी चाल भ्रमर जेंवी होय छे अने ते चालती वखते सावजनी माफक पुच्छने अधर राखे छे.

१४ पोंगा—पोंगा क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो सवाछ अने वधारेमां वधारे पोणा-सात हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणापांच अने वधारेमां वधारे सवापांच हाथनी होय छे; तेनुं पीत उन्नत, पेट जाडुं अने पग पातळा होय छे.

१५ तीपरा—तीपरा क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो सवाछ, सामान्य सात अने वधारेमां वधारे सवासात उंचो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणाछ, सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवाछ हाथनी होय छे; तेनां पग बहु मजबूत, कान लांबा, पीत वेठेलुं अने मोढा उपर कावरचित्रो रंग होय छे, तथा ते स्वभावे बहु खराब होय छे.

१६ गीडा—गीडा क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी साडापांच हाथ उंचो होय छे, तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणापांच, सामान्य पांच अने वधारेमां वधारे सवापांच हाथनी होय छे; वखते आथी न्यूनाधिक मापनो पण थाय छे; तेनुं शरीर मजबूत, कान म्होटा, फळ जाडुं अने चाल लांबी तथा मधुरी होय छे.

१७ मनीयारी–मणियारी क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो साडाछ, सामान्य पोणासात अने वधारेमा वधारे सवासात हाथ उंचो होय छे, तथा तेनी लंवाइ ओछामां ओछी पोणाछ, सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवाछ हाथनी होय छे; ते अति उन्नत, दुवळो नहि तेम जाडो पण नहि. प्रथमथी शान्त स्वभाववाळो अने पाछळथी क्रोधी थाय छे, तथा तेनी कमर सांढीआ जेवी होय छे.

१८ कुभींडीआ–कुभींडीआ क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो पोणापांच, सामान्य पांच अने वधारेमां वधारे सवापांच हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंवाइ ओछामां ओछी पोणापांच अने वधारेमां वधारे पांच हाथनी होय छे; तेनी गरदन नीची, पग जाडा तथा आंख गुलावी अने क्रोधी होय छे.

१९ पींगा–पींगा क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो सवापांच, सामान्य साडापांच अने वधारेमां वधारे पोणाछ हाथनो होय छे तथा तेनी लंवाइ ओछामां ओछी पोणापांच, सामान्य पांच अने वधारेमां वधारे सवापांच हाथनी होय छे; तेनां कदम न्हाना, गुह्य जाडुं, दांत पातळा, कान म्होटा, स्वभाव तीव्र अने अंग उपर घणा वाळ होय छे. आ जातना हाथीमां कोई कोईने विलकुल दांत होता नथी.

२० मुखजोड–मुखजोड क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो पोणाछ, सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवाछ हाथ उंचो होय छे, तथा तेनी लंवाइ ओछामां ओछी पोणापांच, सामान्य पांच अने वधारेमां वधारे सवापांच हाथनी होय छे; तेनो उपरनो भाग (पेट आदि) जाडो अने नीचेनो भाग (पग आदि) पातळो होय छे; ते स्वारने लइ एकदम दोडे छे, तेनुं पीत मध्यमां रेखावाळुं तथा उन्नत होय छे; ते सूती वखते कदिपण चमकतो नथी, हमेशां शान्तिथी शयन करे छे.

२१ मुहार–मुहार क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो साडाछ, सामान्य पोणासात अने वधारेमां वधारे सात हाथ उंचो होय छे. तेनी आंख क्रोधी, जडवुं जाडुं, अंग स्थूल, गट्टा जाडा अने म्होडानो भाग कावरचित्रा रंगनो होय छे; ते कदम लांवो भरे छे छतां ज-

मीन थोडी कापी शके छे, तोफान बहु करे छे अने चालवामां हाथणीनी माफक दोडे छे.

२२ मुंगा–मुंगा क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो सवापांच अने वधारेमां वधारे साडा-पांच हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणापांच अने वधारेमां वधारे साडापांच हाथनी होय छे; तेना चक्षु अल्प तेजवाळां, घुंटी रेखायुक्त, पंजा जाडा अने चारे पग कावरचित्रा होय छे; ते कोई कोई वखते रात्रि दिवस निद्रावश रहे छे अने उंघमां चमकी चमकी पाछो सूइ जाय छे.

२३ तव्वाल–तव्वाल क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो साडाछ, सामान्य सात अने वधारेमां वधारे साडासात हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणाछ, सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवाछ हाथनी होय छे; तेनी सुंढ बहु लांबी तथा सुंढनी अणी पण लांबी होय छे, ते शरीरे दुर्बळ होय छे, अने सांकळथी ताणीने वांधतां तेनुं मांस वृद्धि पामे छे.

२४ भींडीया–भींडोया क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी पांच अथवा सवापांच हाथ उंचो होय छे अने तेनी लंबाइ पोणापांच हाथनी होय छे; तेना गट्टा न्हाना, पेट म्होटुं, गुह्य दीर्घ अने गरदन नीचेना भागमां झुकती रहे छे. आ जातना हाथी घणा काळ सुधी मस्तीमां रहे छे.

२५ दरियाइ–दरियाइ क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी मात्र दर्शनीय होय छे, स्वारीने लायक होता नथी, तेना कान म्होटा अने मकरी सुधी पहोंचे तेटला लांबा होय छे; तेनी पीठनुं हाडकुं वच्चेथी बेठेलुं अने सुंढ अत्यंत लांबी होय छे; तेना आगळ कोई जइ शकतुं नथी, कारणके ते निरंतर मस्तीमां रहे छे.

२६ दरियाईगीडा–दरियाईगीडा जातिनां हस्ति शिकारना कार्यमां उपयोगी बने छे, तेओ बहु तोफानी होवाथी अन्य कार्यमां उपयोगी थता नथी.

दक्षिणना क्षेत्रोमां उत्पन्न थएली मादा त्यांना नर करतां सवा हाथ नीची अने पूर्वना क्षेत्रोमां उत्पन्न थएली मादा त्यांना नर करतां दोढ हाथ नीची होय छे.

तथा अक्षिकूट दीर्घ होय, कटिभाग तथा हृदय पर विस्तीर्ण होय, तालु, जीह्वा अने ओष्ट ताम्रतुल्य

आ छव्वीश जाति उपरांत अर्ध जाति गेंडानी कहेवाय छे, कारण के तेना केटलाक अवयवो हाथीने मळता होय छे.

शुभ गजनां लक्षण.

लाल जिह्वावाळो, कृष्णतालु (ताळवुं काळुं छतां तेमां गुलाबी छांटा होय ते), अढार नखवाळो, गुलाबी आंखवाळो, बहु वाळ युक्त अंगवाळो, छत्र भंग, दोषरहित घुंटी पर्यन्त लांबा पुच्छवाळो, सुलेमानी रंगना उभय चक्षुने धारण करनारो, आसन सिद्ध (बेसवानी जगोए अथवा गरदन उपर चक्र न होय ते), चक्रवाळां उभय नेत्रथी अलंकृत, रुक्ष शरीरवाळो अने वाळथी विशेषताथी सुशोभित शिरवाळो हाथी शुभ गणाय छे.

अशुभ गजनां लक्षण.

काळी जिह्वावाळो, श्याम तालुवाळो, सोळ नखवाळो, आंखमां "छत्रभंग" दोषवाळो (जेनी एक आंखमां चक्र होय अने बीजी आंख लाल होय ते), ठोकर खाइ बेसनारो तथा जेना पुच्छनी अणी लचकणी होय अने तेनो छेडो सर्पना मुख जेवो होय अगर ते सावरणीनी माफक पृथ्वीने अडकतुं जतुं होय तथा तेमां एक अथवा त्रण ग्रन्थि होय ते अशुभ लेखाय छे; तेमज जेना ताळवामां पानना आकार जेवो काळो डाघ होय अने आसन अर्थात् गरदन उपर चक्र होय ते हाथी पण अशुभ गणाय छे.

क्रोधी गजनुं लक्षण.

म्होटा पेटवाळो, सुवर जेवी आकृतिवाळो, कपि जेवा कर्णवाळो, उन्नत पीतवाळो, चोखंडा गंडस्थलवाळो, अति उंघनारो, कांकरीना प्रहारने पण सहन नहि करनारो अने जेना पगना गट्टा न्हाना होय ते हाथी क्रोधी छे एम समजवुं.

हस्ति संगम तथा वयोज्ञान.

ज्यारे हाथणी अढार वरसनी अवस्थाए पहोंचे छे, त्यारे तेने विविध प्रकारना जंगली

रक्त होय; त्वचा अने केशवाळी सूक्ष्म होय, गति तथा मुख सुंदर होय, कर्ण, पुच्छ अने ओष्ठ

मेवा खावाथी गरमी वधे छे अने ऋतु प्राप्त थाय छे, ते वखते तेनुं गुह्यांग उपरना भागमां खेंचाइ आवे छे अने ते मदोन्मत्त हाथी पासे जइ नीचाणना भागमां उभी रहे छे, तेनी साथे हस्ति अश्वनी माफक संगम करे छे; ए संगम एक घटिका पर्यन्त रहे छे. हाथणीने गर्भ रह्या बाद नव के दश महिना पछी प्रसव थाय छे. जन्म वखते हाथीना दांत बिलकुल बहार देखाता नथी, परंतु ज्यारे ते अढी अथवा त्रण वर्षनो थाय छे त्यारे तेनी दंतली बाहेर नीकळे छे; ए दंतली ज्यारे जरा जाडी थाय त्यारे तेनी अवस्था सात अथवा आठ वर्षनी; नखोनी खोळ उतरे तथा पुच्छना वाळ खरी फरी जाडा वाळ उगे त्यारे तेर वर्षनी; शरीर उपर सळ पडे अने चहेरा उपर सफाइ तथा गफरी आवे त्यारे अढार वर्षनी; दांत वधारे जाडा तथा कापवा लायक थाय अने कर्णनी लोळ वळी जाय तेमज जरा जरा मद निकळवा लागे अने गंडस्थ-लमां खाडा पडी जाय त्यारे त्रीश वर्षनी अवस्था जाणवी; हाथी त्रीश वर्षनो थया छतां जो मद न झरे तो ते कपटी छे एम समजवुं. ज्यारे हाथी चाळीश वर्षनो थाय छे त्यारे तेना दांत अत्यंत जाडा थई जाय छे, गलोफां बेसी जाय छे, अने शरीर भारे तथा सखत बने छे. पचास वर्षनी अवस्थाए पहोंचेलो हाथी मदविनानो होय त्यारे धीरे चाले छे, अने मद झरती वखते उतावळो कदम उठावे छे तथा ते निरोगी छतां तेना आगला पगना सांधा बे वर्षनी अंदर उपरा उपर बंधाई जाय छे; ज्यारे आंखोनुं तेज ओछुं थाय, काननी लोळ कठिन छतां वळी जाय तथा नख उपर पीळां चाठां पडे त्यारे तेनी अवस्था साठ वर्षनी; ज्यारे समग्र शरीर ढीलुं पडी जाय अर्थात् खळखळी जाय, नशाखोरनी माफक नयनो नीचां ढळी जाय अने पुच्छना वाळ वधता बंध थाय त्यारे सीतेर वर्षनी, चाल बिलकुल मन्द थई जाय अने वारंवार रोगनो उपद्रव थवा लागे त्यारे एंशी वर्षनी, चालतां अति श्वास चडे, चारो बराबर चरी न शके तेमज तमाम दाढो पडी जाय त्यारे नेवुं वर्षनी अने ज्यारे मद तद्दन नष्ट थाय, नेत्र अने शरीर बिलकुल क्षीण बनी जाय तथा पाचनशक्ति जरा पण न रहे त्यारे तेनी अवस्था शतवर्षनी थई छे एम समजवुं. शतवर्ष उपरनी अवस्थाए पहोंचेला हाथीनुं शरीर तमाम जर्जर बनी जाय छे, ते दाणा के चाराने चावी शकतो नथी, तेनामां तोफान-नुं तो नाम पण रहेतुं नथी. ते अनंत प्रकारना व्याधिथी घेराय छे, वधारे व्याकुळताथी तथा

ह्रस्व होय; जंघा, जानु अने उरु गोळ होय; दांत सम अने श्वेत होय तथा जे आकार अने रुपथी सर्वांग सुंदर होय ते अश्व उत्तम गणाय छे. घणे भागे अश्व बे प्रकारना होय छे. उत्तम अने अधम. तेमां गति आदिने सहजमां शीखी जनारा, नम्र स्वभाव वाळा तथा सारी रीते काम करी शके तेवा अश्व उत्तम अने बाकीना अधम अर्थात् खराब होय छे, तेओ महा महेनते वश थाय छे, स्वभावे घणाज नीच होय छे अने काम टाणे अवळाइ करे छे. जे अश्वना बन्ने ओष्ठ ताम्र वर्ण होय, त्वचा कोमळ, जीभ लाल, दांत घणा बेठेला तेमज जोवामां सुंदर अने उंचाइमां बराबर होय, तालु लाल, नाक लाल, शरीर सारा डोळवाळुं अर्थात् अति जाडुं नहि तेम अति पातळुं पण नहि, आंख पहोळी तथा लाल, सुंदर कीकीओ, सुशोभित शिर, केशवाळी लांबी, कोमळ अने घाटी; कान न्हाना, रोम सूक्ष्म, न्हानां अने चीकणां; ग्रीवा न्हानी नहि तेम मोटी पण नहि, वक्षः स्थळ प्रशस्त, जानु म्होटा, खुर द्रढ अने म्होटा, पीठ लांबी नहि तेम टुंकी पण नहि, आकृति जरा बांकी अने कटिगोळ होय ते अश्वने शुभ लक्षण वाळो समजवो. बार बानी-वाळो अश्व पण उत्तम लेखाय छे. उत्साहथी भरेल उरवाळा, युद्ध भूमिना आभूषण रुप अने शरीरना उत्तम रंगथी सुशोभित जे अश्वनां कनोटी, कम्मर, जाली तथा गाळा ए चार अंग न्हानां; गरदन, पगना नळा, केशवाळी तथा चक्षु ए चार अंग लांबा अने खुर, छाती, पेशानी तथा पीठ ए चार अंग पहोळां होय अर्थात् बार बानीमां चार न्हानी. चार लांबी अने चार पहोळी होय ते अश्वने उत्तम जाणवो. केशवाळीना शेष भागथी पृष्ठनी सामेना भागने ककुद् अर्थात् डील कहे छे, जो ए डीलपर आवर्त अर्थात् भमरी होय तो तेने (अश्वने) " ककूदी " कहे छे, जे अश्वनी जीभ काळा रंगनी होय ते " कृष्ण जिह्वा " जेनुं ताळवुं काळा रंगनुं होय ते " कृष्ण तालुक, " जेना दांत विषम अने भिन्न भिन्न होय ते " क-

---

कांई चेन न पडवाथी अंते प्राणने तजे छे. हस्तिनुं परम आयुष शत वर्षनुं अंकाय छे. जन्म पाम्या पछी दांतवाळो हाथी छ वर्ष पर्यंत धावे छे. अर्थात् माताना पयनुं पान करे छे अने मकनो हाथी दांतवाळा हाथी करतां चार वर्ष वधारे अर्थात् जन्म्या पछी दश वर्ष पर्यंत धावे छे.

" सुख दर्शन " नामना ग्रन्थमां आ विषय बहु विस्तारथी आपेलो छे अने ते पुस्तक हिन्दी भाषामां हस्तलिखित छे, जो ए ग्रन्थ छपावी बहार पाडवामां आवे तो राजा महाराजाओने अति उपयोगी थई पडे ए निःसंदेह छे.

राली, " जेना छेदन दन्त चार अथवा पांच होय ते " हीन दन्त " अने सात अथवा आठ होय ते " अधिक दन्त, " जेना पग तथा गामचीमां भिन्न भिन्न रंगनी रेखा होय ते " मार्जारपाद, " जेना काननी पासे आवर्त होय ते " शृंगी ", जेनुं आखुं शरीर एक रंगनुं होय अने फक्त शिर काळुं होय ते " त्रीसरी ", जेना अंडनी वे बाजुमां वे स्तन होय ते स्तनी, जेनुं तमाम वदन एक रंगनुं अने फक्त एक पग बीजा रंगनो होय ते " मुसली ", जेनो एक पग श्वेत अने बीजा त्रण पग अन्य रंगना होय ते " आर्ज्जिल " कहेवाय छे. ककूदीथी आरंभी आर्ज्जिल पर्यन्तना अश्वो अशुभ लक्षणवाळा लेखाय छे; चालती वखते पुछडाने हलावनारो तथा मारती वखते बन्ने पग उपाडी एकाएक कूदनारो अश्व अधम गणाय छे; जेनी एक आंखनी पुतळी काळी अने बीजी आंखनी पुतळी पिंगळी होय ते अधम जातिनो अश्व " ताखी " कहेवाय छे; जे अश्वना खुर सफेद होय ते पण अधम गणाय छे, कारणके सफेद खुर बहुज नरम होय छे. अने जे अश्वना जानुमां व्रण होय ते पण अकर्मण्य अर्थात् काममां निरुपयोगी लेखाय छे, जेनो अवाज कठोर होय, तथा जेना पगनी घुंटीमां कांईपण नुकशान न होय ते अश्व अधम गणाय छे. घणे भागे आवर्त जोईने अश्वना शुभाशुभ लक्षण जाणी शकाय छे, जे जगोए आवर्त होवाथी प्राचीन पंडित लोको शुभ जाणता ते शुभावर्त अने जे जगोए आवर्तनी स्थिति जोई अशुभ जाणता ते अशुभावर्त. नासिकाना अग्रभागमां एक, ओष्ठना वे प्रान्तमां वे अने ललाटमां एक अथवा वे, तेमज त्रण अथवा चार आवर्त होय तो शुभ गणाय छे. कदाच ते स्थळे बराबर नीचेथी उपरनी तरफ त्रण आवर्त होय तो तेने " निश्रेनी " कहे छे. जे अश्वना शिर तथा केशवाळीना शेष स्थानमां, हृदय तथा कंठनालीना संयोग स्थानथी कांईक ते उपरना भागमां अने कंठनी नीचे एक एक आवर्त होय ते " देवमणि " तथा कंठना उपर आवर्त होय ते " कंठमणि " कहेवाय छे. कर्णमूळमां वे, केशवाळीना अन्त भागमां एक, मस्तकमां एक, वक्षःस्थलमां चार, स्कन्धना पार्श्वमां वे तथा नितम्बमां पण वे आवर्त होय अने आवर्त वृश्चिकनी माफक घूमी गएला रोग के जेने शुक्ति कहे छे तेमां होय तो शुभ गणाय छे, कोई कोई वखते रोम लाठीनी माफक घूमी जाय छे, अने तेने दंडावर्त कहे छे, ए दंडावर्त अश्वनी जमणी बाजुए होवाथी शुभ लेखाय छे. अश्वना प्रपान, कंठ, कर्ण, पीठिका, मध्यभाग नेत्र, ओष्ठ, साथळ, भुज, कुक्षि, पार्श्व अने ललाटमां एक एक अने रन्ध्र, उपरन्ध्र, मस्तक तथा छातीमां बबे मळी कुल दश आवर्त अश्वना शरीर उपर अवश्य होय छे.

नासिकाना बन्ने रन्ध्रनी वच्चे, नासिकाना छेद उपर, गंडस्थळ तथा आंखना खूणामां ओष्ठथी बे आंगळ दूर, बन्ने भ्रकुटि पर, दक्षिण ग्रीवा, कक्षद्वय, हृद्य, चिबुक, कर्णद्वय अने हृदयमां जो आवर्त होय तो ते अशुभ गणाय छे अने तेने " हृदावाल " कहे छे. हृदय तथा कंठनालीना संयोग स्थानमां आवर्त होय तो " वाळक " अने क्रोड, ककुद्, जंघा, नाभि, पुच्छ मूल, खुर तथा आसनमां आवर्त होय तो " छत्र भंग " कहेवाय छे अने ते बन्ने अशुभ लेखाय छे, अश्वनी दंत पंक्तिमां बे दाढ वच्चेना छ दांत तेनी अवस्थानुं सूचन करे छे. जो बन्ने दंत पंक्तिमां श्वेतवर्णना शुक्ल छ दांत होय तो एक वर्षनो वछेरो अने दांत कषाय रंगना होय तो बे वर्षनो वछेरो छे एम जाणवुं. बन्ने दंत पंक्तिना वचला बे बे सरखा दांतने " संदंश " कहे छे, ते संदंशनी बन्ने बाजुना एक एक दांत " मध्यम " अने मध्यम पासेना एक एक दांत " अन्त्य " कहेवाय छे; जो संदंश पडी जइ फरी उगे तो चार वर्षनी, अंत्य पडी फरी उगे तो पांच वर्षनी; संदंश उपर कृष्ण विन्दु होय तो छ वर्षनी, मध्यम उपर कृष्ण विन्दु होय तो सात वर्षनी, अन्त्य उपर कृष्ण विन्दु होय तो आठ वर्षनी; संदंश उपर पीत विन्दु होय तो नव वर्षनी, मध्यम उपर पीत विन्दु होय तो अग्यार वर्षनी; संदंश उपर शुक्ल विन्दु होय तो बार वर्षनी, मध्यम उपर शुक्ल विन्दु होय तो तेर वर्षनी, अन्त्य उपर शुक्ल विन्दु होय तो चौद वर्षनी; संदंश उपर काचना रंग जेवुं विन्दु होय तो पंदर वर्षनी, मध्यम उपर तेवुं विन्दु होय तो सोळ वर्षनी, अन्त्य उपर तेवुं विन्दु होय तो सत्तर वर्षनी, संदंश उपर माक्षिक रंगनां विन्दु होय तो अढार वर्षनी, मध्यम उपर तेवां विन्दु होय तो ओगणीश वर्षनी, अन्त्य उपर तेवां विन्दु होय तो वीश वर्षनी; संदंश उपर शंख जेवां विन्दु होय तो एकवीश वर्षनी, मध्यम उपर तेवां विन्दु होय तो बावीश वर्षनी; संदंशमां छिद्र होय तो चोवीश, मध्यमां छिद्र होय तो पचीश, अन्त्यमां छिद्र होय तो छवीश; संदंश डगतो होय तो सत्यावीश, मध्यम डगतो होय तो अठ्यावीश, अन्त्य डगतो होय तो ओगणत्रीश; संदंश पडी गया होय तो त्रीश, मध्यम पडी गया होय तो एकत्रीश अने अन्त्य पडी गया होय तो बत्रीश वर्षनी अवस्थावाळो अश्व लेखाय छे. अश्वनुं परम आयुष बत्रीश वर्षनुं गणाय छे. जेना मुख पर मांस थोडुं होय, केशवाळीना वाळ सूक्ष्म अने घाटा होय, ग्रन्थि अर्थात् अंगना संयोग स्थान द्रढ होय, खुर गोळ होय, पगना गाळा पातळा होय अने कर्ण सीधा तथा न्हाना होय ते अश्व बळवाळो होय छे. संस्कृत भाषामां भिन्न भिन्न वर्णने लीधे अश्वनां नाम पण भिन्न भिन्न छे जेमके:—

१ कोकाह–श्वेत वर्णनो होय ते.

२ कियाह–रक्त वर्णनो होय ते.

३ खुगाह–कृष्ण वर्णनो होय ते.

४ हरिय–पीळा रंगनो होय ते.

५ कयाह–पाकेला ताडना रंगनी माफक जेनो रंग होय ते.

६ हालक–पीत अने हरित वर्णथी मिश्रित होय ते.

७ उकनाह–पीतरक्त अथवा कृष्णरक्त वर्णथी मिश्रित होय ते.

८ हलाह–चित्रित होय ते.

९ सारंग–विविध वर्णना मिश्रणथी मनोहर जणातो होय ते.

१० नीलक–लीला रंगनो होय ते.

११ सुरूहक–गर्दभ समान जेनो वर्ण होय ते.

१२ पिशंग–पिंगल वर्णनो होय ते.

१३ शिलह–वादळ जेवा वर्णनो होय ते.

१४ स्नुवालथि–पांडु रंगनी केशवाळी युक्त होय ते.

१५ वेरुहान–पाटल रंगनो होय ते.

१६ कुलाह–शरीर पीळुं, जानु पर्यन्त चार पग काळा अने मुखथी पीठ सुधी काळी रेखा होय ते.

१७ दुकुलाह–लाल अने पीळा वर्णथी मिश्रित होय ते.

१८ चक्रवाक–जेनुं वदन पीळुं अने पग श्वेत रंगना होय ते.

१९ मल्लिका–जे अश्वनी वरौनी काळी होय ते.

२० अष्टमंगल–जे अश्वना चार पग, पुच्छ, मुख, वक्षःस्थळ तथा केशवाळीनो रंग सफेद होय अने वदननो रंग बीजो होय ते.

२१ पंचकल्याण–जेना चार पग अने मुख सफेद होय तथा शरीरनो रंग जुदो होय ते.

२२ श्यामकर्ण–जेनुं शरीर श्वेत परंतु कान काळा रंगना होय ते.

२३ उराह–जेनुं तमाम वदन पांडु रंगनुं अने चार जानु काळा रंगना होय ते.

यावनी भाषामां पण रंगना भेदथी अश्वना जुदां जुदां नामो पडेलां छे. जेमकेः—

१ नोकरा–जेना तमाम अवयवो सफेद होय ते.

२ बुज–जेनी त्वचा तथा आंखना वाळ काळा अने तमाम वदनना रोम सफेद होय ते.

३ नीलाकबुद–जेनी त्वचा काळी अने रोम बधा श्वेत होय ते.

४ तालिया सुरंग–जेना बधा अवयवो लाल अने काळा होय ते.

५ लाखी सुरंग–जेना बधा अवयवो लाल अने श्वेत होय ते.

६ गर्रा–जेना अवयवो श्वेत लाल वर्णथी मिश्रित होय ते.

७ सन्दली–श्वेत चन्दन समान जेनो रंग होय ते.

८ माकसी–जेना तमाम वदननो रंग एक सरखो होय, परंतु न्हानी न्हानी आंखो जुदा रंगनी होय ते.

९ खनक–जेनो रंग पीळो होय ते.

१० अवलक–जेनो रंग अनेक प्रकारनो होय ते.

११ सब्ज–जेना वदननो रंग श्वेत अने श्याम होय ते.

१२ गोलदार–जेना समग्र शरीरनो रंग एक होय अने म्होटी म्होटी आंखो जुदा रंगनी होय ते.

१३ तालिया कुमेद–जेनुं शरीर लाल अने काळा रंगथी मिश्रित होय, परंतु चारे पग अयाल अने पुच्छ काळा रंगनुं होय ते.

१४ लाखी कुमेद–जेनुं शरीर लाल, परंतु पुच्छ अने जानु पर्यन्त पग काळा होय ते.

१५ जानुयाकुमेद–जेनुं तमाम वदन लाल होय परंतु चारे पगमां खुरथी जानु पर्यन्त एक एक काली रेखा होय ते.

१६ जवजिकुमेद–जेनो रंग तालियाकुमेदना जेवो होय, परंतु केशवाळीना छोडथी आरंभी समग्र पीठमां पुच्छ पर्यन्त लाल अने काळा रंगथी मिश्रित एक रेखा होय छे.

१७ सिरगा–जेनुं समग्र शरीर काळुं होय, परंतु केशवाळी अने पुच्छ श्वेत होय ते.

१८ सरखा–जेना रोम श्वेतपणामां अधिक अने श्यामतामां अल्प होय ते.

१९ समंद–जेनुं आखुं शरीर श्वेत होय, परंतु केशवाळीथी आरंभी पुच्छ पर्यन्त पीटपर एक काळी रेखा होय ते.

२० कुमेद पंच कल्याण–जेना चार पग जानु सुधी श्वेत होय अने शिरथी नासिका पर्यन्त एक श्वेत रेखा होय ते.

२१ सुरंग पंच कल्याण–जेनुं ललाट तथा चार पग श्वेत होय ते.

२२ सिया–जेनो रंग अत्यंत काळो होय ते.

२३ मुस्की–मृगनी नाभि माफक जेनो रंग काळो होय ते.

संस्कृत भाषामां अश्वनी गति पांच प्रकारनी लखेल छे.

१ आस्कंदित–क्रोधित व्यक्तिनी माफक चारे पगने उंचा उछाळी चालवुं ते.

२ धौरितक–आ गति चार श्रेणीओमां विभक्त छे.

१ नकुलनी माफक गति करवी ते–धौरितक,

२ कौवारी पक्षीनी माफक गति करवी ते–धौर्य.

३ मयूरनी माफक गति करवी ते–धोरण.

४ वराहनी माफक गति करवी ते–धोरित.

३ वाल्गित–मुख उंचुं राखी रीर दबावीने चालवुं ते.

४ प्लुत–हरिणनी माफक गति करवी ते.

५ रेचित–बहु तेज नहि तेम बहु सुस्त पण नहि अर्थात् सामान्य रीते गति करवी ते.

यावनी भाषामां पण अश्वनी गति पांच प्रकारनी लखी छे:—

१ रपट–उछळीने बहु जोरथी गति करवी ते.

२ छारतक–उछळीने थोडा जोरथी गति करवी ते.

३ दुलकी--आखुं शरीर हलावीने गति करवी ते.

४ कूदना—आगळना बे पग उंचा उछाळी चालवुं ते.

५ कदम—कदमना चार प्रकार छे.

१ कोई मनुष्य प्रथमथी हाथमां पाणी लई स्वार थयो होय अने अश्व चाले छे छतां तेना हाथनुं पाणी नीचे न पडे तेवा कदमने " सागाम " कहे छे.

२ गळुं उंचु करी आगळना पगने घुमावी गति करवी तेने " ईनूगा " कहे छे.

३ गळुं अने शिर एवुं उंचुं राखीने चाले के स्वारनी पाघडी पण न देखाय. एवा कदमने " आविया " कहे छे.

४ एकी वखते चारे पगने उपाडी पाछा एकी वखते फेंकवा तेने रहीवाल कहे छे.

घोडीने गर्भ धारण कर्या पछी अग्यारमे महीने प्रसव थाय छे. बच्चांनो जन्म थतांज तेने खुरथी जानु पर्य्यन्त मापतां जेटली उंचाइ जणाय, तथी त्रण गुणी उंचाइ तेनी युवावस्थामां थाय छे. वछेरानो अथवा वछेरीनो जन्म थती वखते तेना मुखनी सामेना भागमां एक दांत होतो नथी, परंतु जडवाने बन्ने किनारे वे दाढ अने वीजा वे मळी कुल चार पेषण दन्त निकळे छे तेमां एकने प्रथम पेषणदन्तनी अने वीजाने द्वितीय पेषणदन्त कहे छे. अश्व वालनी अवस्था एक अठवाडीआनी थतां तेना मुखाग्र भागमां उपरना वे तथा नीचेना वे मळी कुल चार छेदन दन्त उगे छे अने पांच अठवाडीआ वाद अर्थात् सवा महीना पछी मुखना अग्र भागमां वीजा वे छेदन दन्त अने त्रीजो पेषण दन्त निकळे छे. आठमा महिना सुधीमां एज स्थळे वीजा वे छेदन दन्त उगे छे. ए सर्व दांत अत्यंत श्वेत अने चोख्खा होय छे अने तेना उपर एक न्हानो सरखो काळो खाडो पण होय छे. एक वर्ष पूर्ण थतां चोथो पेषण दन्त, वीजा वर्षमां पांचमो अने त्यारवाद स्वल्प समयमांज छठ्ठो पेषण दन्त निकळे छे; ज्यारे वे वर्ष उपर आठ अथवा नव महिनानी अवस्था थाय त्यारे वच्चेनी वे खीली पडी तेनी जगोए वीजा वे स्थायी दांत निकळे छे, ते श्वेत अने उपर खाडावाळा होय छे; छ महिना पछी तेनी पासेना वे दांत पडी वीजा वे म्होटा स्थायी दांत उगे छे अने चार वर्ष उपरांत छ महिनानी अवस्था थतां वाकीना वे दांत पडी जाय छे अने ते स्थळे वीजा वे म्होटा दांत निकळे छे अने एज अरसामां नेश उपर तथा नीचे अर्थात् बन्ने जडवामां उगे छे. जो नेश न निकळे, तो दरेक जडवामां अढार अने नेश निकळे तो वीश दांत होय छे. आ लक्षणथी जन्मथी आरंभी पांच वर्ष पर्य्यन्तनी अवस्था वतावी शकाय छे; छठ्ठे वर्षे वचला वे स्थायी छेदन दन्त उपरना खाडामां भराइ आवे छे अने तेनो काळो रंग नाश पामे छे. सातमा वर्षमां तेनी वाजुना वीजा वे स्थायी छेदन दन्त उपरना खाडा भराइ जाय छे अने तेनी काळाश तदन नष्ट थइ जाय छे. आठमा वर्षमां वाकीना छेदन दन्तनी एज स्थिति थाय छे. नवमे वर्षे वधा दांत पीळा थवा मांडे छे ते अग्यार वर्ष सुधी साव पीळा वनी जाय छे, फरी ते चौदमा वर्षथी श्वेत थवा लागे छे अने सोळ वर्ष सुधीमां तमाम शीशानी माफक सफेद वनी जाय छे; सत्तरमा वर्षथी मक्षिका जेवो रंग थवा मांडे छे अने वीशमा वर्षमां शंखनी माफक शुभ्र वनी जाय छे. अश्वना स्थायी दांत निकळ्या पछी दर वर्षे जरा जरा वृद्धि पामता जाय छे अने ते त्रेवीश वर्षनी अवस्थाए वहु मोटा जणाई आवे छे; छवीशमा वर्ष पछी

अश्वना दांत डगवा लागे छे. अने ओगणत्रीशमे वर्षे तमाम दांत पडी जाय छे. * केटलाएक पंडित लोको चाळीश वर्ष पर्यन्त अश्वनुं परम आयुष कहे छे. जन्मथी चार वर्ष पर्यन्त अश्वनी वाल्यावस्था गणाय छे, माटे त्यांसुधी तेने कोईपण कार्यमां योजवो नहि, कारण के वाल्यावस्थामां काम करावनाथी ते युवावस्थामां सारुं काम करी शकतो नथी अने तुरतज निर्बळ वनी जाय छे. अश्वने वाल्यावस्थामां मात्र मुखमां लगाम आपवानो अभ्यास करावनो जोईए, पांचथी आठ वर्ष पर्यन्त तेनी युवावस्था गणाय छे, पांच वर्षनो अश्व थाय के तुरत तेने काम शीखडाववानी शरुआत करवी जोईए. नवथी वीश वर्ष पर्यन्त तेनी प्रौढ अवस्था लेखाय छे अने त्यारवाद तेने वृद्धा अवस्था प्राप्त थाय छे. जो युवावस्थामां अश्व पासेथी हद उपरांत काम न लेतां तेनी सारी रीते सेवा करी होय तो ते चौद पंदर वर्षनी अवस्थाए पण यौवननी माफक काम करी शके छे. सूकुं घास अश्वने माटे उत्तम खोराक छे. अने हरहमेशां तेने एज आपवामां आवे छे. प्रथम घासने पाणीमां धोई सुकावी पछीथी अश्वने खावा आपवुं जोईए. अश्वना उदरमां वहु झाझी जगो होती नथी अने एथीज ते एकदम वधारे खाई शकतो नथी; एटला माटे एकदम वधारे घास नहि आपतां थोडा थोडा समयने अन्तरे थोडुं थोडुं घास आपवुं एज लाभकारक छे. कोई कोई वखते तेने थोडां गाजर आपवा ए पण उत्तम छे, परंतु वधारे न आपवा. कारण के वधारे गाजर खावाथी अश्वनुं उदर फुली जाय छे. हमेशां अश्वने वे वखत दाणा देवा, दरेक दाणाओमां चणा सर्वोत्तम छे, परंतु तेनी साथे जव अथवा जई मेळवी खावा अपाय छे. वीजा दाणानी साथे जरा निमक आपवुं ए श्रेयस्कर छे. अश्वने स्वच्छ पाणी पावुं जोईए. कदाच ते तळाव आदि जलाशय उपर तेनी खुशीथी पाणी न पिए तो तेने दिवसमां त्रण अथवा चार वखत वासणमां पाणी भरी पावुं जोईए अने पाणी पाया वाद थोडा वखत सुधी आम तेम फेरववो. दररोज सांज सवार वन्ने वखत अश्वने खुल्ली हवा खवराववा माटे अमुक वखत पर्यन्त फेरववो जोईए. जो आखो दिवस तेने छायामां वांधी राखवामां आवे तो जोखम विगेरे थई आवे छे, कोई कोई वखते तेने तापमां पण टेलाववो जोईए. अश्वने तापमां राखवो ए लाभकारक लेखाय छे. सदैव सन्ध्या समये अश्वने अर्थे

---

* अश्व पच्चीशथी त्रीश वर्ष पर्यन्तनुं वधारेमां वधारे आयुष्य भोगवे छे एम केटलाएक अंग्रेज लोकोनी मान्यता छे.

नरम अने सूकां घासनी शय्या बनावी देवी, ते शय्या आठ अथवा नव आंगळ म्होटी होवी जोईए, एमां कांईपण कठिन द्रव्य रहेवा न देवुं, फरी प्रभातमां ते शय्याने उपाडी लेवी. रातमां पिशाव अने लादथी जेटलुं घास बगडयुं होय, तेटलुं बदलावी बीजे दिवसे नवी शय्या निर्मित करवी. शीतकालमां टाढथी बचाववा माटे अश्वने कामळ अथवा एवा कोइ गरम कपडांथी ढांकी लेवो जोइए अने वर्षाना दिवसोमां पण मच्छर आदिथी बचाववा, तेना बदनने कोइ महीन वस्त्रथी ढांकवुं जोइए. अश्वना चारे पगमां नाल लगाववी, खुरनी नीचेना कठिन स्थानने छरीथी छोली नाल बांधवी, जो नरम स्थानमां खीलो वेसी जाय, तो तेने लंगडापणुं प्राप्त थाय छे. अश्वना शरीरमांथी प्रस्वेद वहे छे, कदाच तेमां धूळ अथवा कादव चोटी जाय अने जो तेने साफ करवामां न आवे तो अवश्य हानि उपजे छे; एटला माटे हमेशां सांज सवार खरेरो अने पीछी लइ तेना शरीरने साफ करवुं जोइए; खरेरो लगावतां पहेलां मुखमां लगाम दइ गरदनने जरा खेंची राखवी. कदाच ते अश्व दुष्ट अर्थात् बदमाश होय तो लगामने ताणी पुच्छनी साथे बांधी देवी, प्रथम गरदनने अने त्यारबाद अन्य अवयवोने खरेराथी साफ करवा, खरेराने जोरथी न चलाववो, खरेरो जमणा हाथमां राखवो जोइए, शरीर जरा स्वच्छ थाय के तुरतज खरेराने पण पीछीथी साफ करी लेवो, खरेराथी शरीर साफ कर्या बाद पीछी पण फेरववी, त्यारबाद स्वच्छ वस्त्रथी शरीरने लूइ नांखवुं अने पछीथी तेना उपर गादी फेरवी केशवाळी तथा पुच्छने कंघीथी साफ करवां जोइए. वर्षमां बे वखत अर्थात् कार्तिक अने फाल्गुन मासमां अश्व रोमने बदलावे छे, एटला माटे ए बे मास लगी तेना शरीरपर खरेरो फेरववो नहि. जो अश्वपर दररोज स्वारी न थती होय तो तेने खुल्ला मेदानमां चार अथवा पांच घटिका पर्यन्त बराबर परिश्रम कराववो, कारणके त्रण चार दिवस बांध्यो रहेवाथी तेने ज्वर अथवा एवो कोइ अन्य व्याधि लागु पडे छे. त्रण चार दिवस बांधी राखेला अश्वने पांचमे दिवस वधारे परिश्रम आपवाथी तेना बदन, पग अने फेफसांमां व्याधिनी उत्पत्ति थाय छे. परिश्रमथी अश्वना शरीरमां बळ वधे छे. दोडादोडना अने शिकारना अश्वोने पूर्ण परिश्रम लेतां शीखववुं जोइए. निरंतर महेनत करनारो अश्व कोइ कोइ वखते वधारे परिश्रमवाळुं काम पण सारी रीते करी शके छे. अश्वने व्यायाम वखते प्रथम धीरे धीरे चलाववो, अने पछी जोरथी जवा देवो, त्यारबाद तेने एकदम नहि रोकतां धीरे धीरे रोकवो. अश्व आगळ धीरे धीरे काम कराववाथी सहेलाइथी बधुं शीखी शके छे; तेन जम्या बाद आराम नहि आप्याथी, बिमारीनी हालतमां बांध्यो राखवाथी,

वरसाद वरसती वखते विशेष गरमीमां काम कराववाथी अने थाकेलाने एकाएक पाणी पावाथी कठिन पीडा उत्पन्न थाय छे, एटलुंज नहि परंतु वखते ते मरी पण जाय छे. महेनत कराव्या वाद अश्वने एकाएक अश्वशाळामां लइ जइ बांधवो नहि, परंतु लवणना पाणीथी अथवा स्वच्छ पाणीथी मुखना फीण, अंड अने तेनी आसपासना फीण धोइ टेलाववो जोइए, पसीनो दूर थया वाद अश्वशाळामां लावी पयाल घासथी तेना शरीरने साफ करी पाणीथी धोइ नांखवुं अने वस्त्रथी कोरुं करी गादी फेरववी, त्यारवाद तेने खावापीवा आपवुं, जेथी तेनुं कष्ट नष्ट थाय छे.

मनुष्यनी माफक जन्मभूमिना भेदथी अश्वो पण भिन्न भिन्न नामथी प्रसिद्ध छे. जे देशमां ते उत्पन्न थाय छे, ते देशनुं नाम तेने आपवामां आवे छे. जेमके " अरव्वी, दक्षिणी " इत्यादि. अरब देशमां उत्पन्न थवाथी अरव्वी कहेवाय छे, तेनां वार क्षेत्र प्रसिद्ध छे.

१ नजदी. २ खेलान. ३ अनीजा. ४ वद्ध. ५ एराकी. ६ गल्फ.
७ सिकलावी. ८ मेफाकी. ९ सावी. १० त्रेदी. ११ मनाकी. १२ साहुदी.

असल अरव्वी हिंदुस्थानमां वहु थोडा आवे छे, घणे भागे इरानी अने अरव्वी ए वन्नेथी मिश्रित वर्णसंकर अश्वो हिंदुस्थानमां आवे छे, कारणके असल अरव्वी उक्त स्थळे आव्या वाद घणे भागे थोडा जीवे छे. अरव्वीना वंशमां ईरानी, काबुली अने वार्वे पण गणाय छे. ईरानी अश्व घणा सारा होय छे अने ते ईरानमां उत्पन्न थाय छे. काबुलथी पण सोदागर लोको काबुली अश्वने वेचवा लावे छे. प्राचीन समयथी अरव, ईरान अने काबुलथी अश्वनी सोदागरी चाली आवे छे. भारत वर्षीय अश्वोनां पण अनेक क्षेत्र अने नाम छे. काठीआवाडथी काठीआवाडी अश्वो आवे छे अने ते अगीयार प्रकारना होय छे. जेमके—

१ वादरिया. २ माणकिया. ३ मांगलिया. ४ ताजणिया. ५ रेडिया. ६ लखमिया.
७ रेशमियां. ८ केशरिया. ९ हरणिया. १० वोदलिया. ११ मोटरिया.

मारवाडथी मारवाडी अश्वो आवे छे, अने तेना चार क्षेत्र प्रसिद्ध छे. १ गडहा. २ राजघडा. ३ वालोवडा. ४ तलवाडा.

दक्षिणमांथी जे अश्वो आवे छे ते दक्षिणी कहेवाय छे, परंतु ते वर्णसंकर अर्थात् अरव्वी अने काठियावाडी ए वेनो मिळाप थतां उत्पन्न थएला होय छे; तेमां "भीमरा" "मकुन्दासी" "छन्दासी" अने "नागपुरी" ए चार उत्तम क्षेत्रना गणाय छे.

सिन्ध देशना अश्वो "सिन्धी" कहेवाय छे.

पंजाबना अश्वो पंजाबी कहेवाय छे, परंतु सिन्धी अने पंजाबी बन्ने वर्णसंकर होय छे, कारणके तेओ इरानी अने हिंदुस्थानी अश्वोथी उत्पन्न थाय छे, तेनां पण चार क्षेत्र छे. १ धन्नी, २ धेप, ३ सायबू, अने ४ भढंडा.

मालव देशना अश्वो " मालवी " कहेवाय छे. परंतु ते स्थळे घणे भागे मारवाडी, काठिआवाडी अने भिन्न भिन्न प्रकारना अश्वो रहेता होवाथी घणा वर्णसंकर अश्वो उत्पन्न थाय छे.

नाजुक अने सुन्दर अश्वोने " टांघन " कहे छे, ते छ प्रकारना होय छे.

१ " बर्मापेगू " घणे भागे बर्माथी आवे छे.

२ " मनीपुरी टांघन " मणीपुरथी आवे छे.

३ " काफरीगुट " भूटानथी आवे छे.

४ " नेपालीटांघन " नेपालथी आवे छे. नेपालमां "दैवीपाटन" नामनुं क्षेत्र प्रसिद्ध छे.

५ " तुर्कीटांघन " तुर्कस्थानथी आवे छे.

६ " यारकन्दी टांघन " यारकन्दथी आवे छे.

कुर्दीस्तानथी " कुर्दी " अश्वो आवे छे.

अवधमां " टेढी " नामथी एक प्रकारना अश्वोनुं क्षेत्र प्रसिद्ध छे, ते टेढी नदीनी आसपास उत्पन्न थाय छे अने बहराइचना मेळामां वेचावानुं आवे छे.

पटनानी आसपास " जंगली " नामना अश्वो मळे छे.

भिन्न भिन्न देशोमां अश्वोनां भिन्न भिन्न क्षेत्र छे, जेम आफ्रिकामां मोरक्की अने बर्बेरिया देशमां " बार्ब " जातिना अश्वो मळे छे, तुर्कस्तानमां "तुर्की" अने तातारमां "तातारी", परंतु खास बंग देशमां अश्वनुं कोइ प्रसिद्ध क्षेत्र नथी अने त्यांना अश्वो सारा होता नथी, परंतु ते स्थळे पण अनेक देशी अश्वो विद्यमान होय छे. ×

× आजकाल हिन्दुस्थानमां अंग्रेजी राज्य होवाथी "वेलर" आदि घणा विलायती घोडाओ जोवामां आवे छे, अंग्रेज लोकोए हिन्दुस्थानमां अंग्रेजी अने अरबी अश्वोथी " स्पडब्यूड " नामनी नविन जाति उत्पन्न करी छे. हिन्दुस्थानमां प्राचीन समयथी पशुओना विक्रय अर्थे अनेक

पाटडी शहेरमां उत्तम प्रकारनी अश्वशाळा तैयार थतां राज हरपाळदेवजीए जे माणसोने अश्वनी खरीदी अर्थे मोकलवा निश्चय कर्यो हतो; तेओने पोता पासे बोलावी सूचना आपी के- अश्वनी परीक्षा मात्र वाळ अने आवर्त उपर ध्यान आपवाथीज थती नथी, परंतु तेना हाथ, पग अने गोठण विगेरे अवयवो तपासवा; कारणके तेमां एब होवाथी अश्व दूषित गणाय छे. अश्वना सोदागर तमोने ठगे नहि एटला माटे मारे कहेवुं जोइए के तमारामांथी कोइ पण अश्व खरीद करवा तवेलामां जाय त्यारे पोते एकलाए अश्व आगळ उभो रही तेना गुणदोष तपासवा, जो अश्वनो मालीक अथवा तेनो कोइ पण माणस साथे होय तो ते अवश्य पोताना अश्वना दोष छुपाववानी चेष्टा कर्या विना रहेशे नहि. ज्यारे अश्वने तवेलामांथी बाहेर काढवामां आवे त्यारे खरीदनारे सर्वथी पाछळ रहेवुं, कारणके सोदागरनी एक एवी प्रथा होय छे के तेओ अश्वने पाछळथी कोइ न जाणे तेवी रीते चमकावे छे अने तेथी अश्व घणो तेज मालूम पडे छे, परंतु खरी रीते जोतां ते निरुपयोगी निवडे छे. अश्वनी केशवाळीपर पण बराबर ध्यान आपवुं जोइए. जेनी गरदन पर झाझा वाळ होय ते सुस्त अने स्वल्प वाळ होय ते तेजदार छे एम समजवुं. जो गरदनना वाळ खरी पडता होय अथवा वाळ बिलकुल नज होय तो एम जाणवुं के ते अश्वनी गरदनमां कीडा अथवा खारिस्त होवा जोइए. एक तन्दुरस्त अने उत्तम प्रकारना अश्वनी ओळ-

---

स्थळे मेळाओ भराय छे अने ए मेळाओमां तमाम जातना पशुओ वेचावा आवे छे. हाल हिन्दुस्थानमां जे जे महिनामां पशुना विक्रय अर्थे मेळा भराय छे, तेनां नाम नीचे मुजब छे.

स्थळनुं नाम.	महिना.	स्थळनुं नाम.	महिना.
पोखर.	कार्तिक.	तलवारे.	फाल्गुन.
नेकमद.	वैशाख.	हरिहरक्षेत्र.	कार्तिक
वटेश्वर.	फाल्गुन.	भृगुआश्रम.	कार्तिक.
हरद्वार.	वैशाख.	दैवीपाटन.	फाल्गुन.
तकिया महमदशाह.	माघर वैशाख.	सीतामढी.	वैशाख.
वहिराइच.	ज्येष्ठ.	मकनपुर.	फाल्गुन.
अमृतसर.	आश्विन कार्तिक.	ददरीक्षेत्र.	कार्तिक.
चन्द्रशेखर.	फाल्गुन.	ब्रह्मपुत्र.	कार्तिक.

खाण ए छे के जेना पृष्ठनी रीर पहोळी अने सीधी होय, पांसळीओ सुंदर अने वाहेर निकळेली होय, पुठनो भाग सीधो, मजबूत, मांसळ अने अने पहोळो होवो जोइए, उदरनो भाग लटकतो होय परंतु ते पांसळीओथी आच्छादित होवो जोइए. जेना अंडकोप फूलेला न होय ते अश्व उत्तम गणाय छे. चक्षुनी पण परीक्षा करवी. जेना चक्षुनी श्वेतता नीचेनी तरफ लाल अथवा शुष्कपर्णना रंग समान देखाय ते अश्वने कदिपण खरीदवो नहि, जेनां नेत्र गोळ, म्होटां,काळां अने चमकदार होय ते अश्व उत्तम लेखाय छे; श्वेतने वदले अत्यन्त श्याम नेत्रवाळो अश्व पण उत्तम होय छे. जेनी आंखमांथी पाणी वहेतुं होय ते अश्वने खरीदवानी इच्छा करवी नहि; नेत्रना खूणामां नख जेवो पडदो मालूम पडे, तोपण वर्ज्य गणवो. उत्तम अश्वनी आंखो वहु सुन्दर होय छे अर्थात् वहु म्होटी के वहु न्हानी होती नथी, तेनां श्याम चक्षु अत्यंत निर्मळ होवां जोइए, जे अश्वनी आगळनी जांघ सुडौल अने मांसयुक्त होय ते वळवान निवडे छे. जेनो एक पग म्होटो अने जाडो होय तथा वीजो पग न्हानो अने पातळो होय ते अश्वमां कांइ एव छे एम समजवुं अथवा वन्ने पग म्होटा होय तो तेने वातनो व्याधि छे एम जाणवुं; जेना पगमां घावनां चिन्ह होय ते अवश्य चालतां ठोकर खाय छे. जेनी छाती पहोळी तथा वाहेरना भागमां फूलेली होय अने तेमां अनेक प्रकारनां चित्र देखातां होय तो जाणवुं के ते अश्व वळवान् छे, जेनुं उरः स्थल अल्प पहोळाइवाळुं होय ते वळहीन छे एम समजवुं अने एवो अश्व चालतां अवश्य ठोकर ले छे. जेनी नासिकानां छिद्र खुल्लां, शुष्क, पहोळां अने म्होटां होय; मुख न्हानुं होय अने ओष्ठ मळेला होय ते अश्वने निरोगी जाणवो, परंतु सीधारन्ध्रवाळो अने म्होटा मुखवाळो अश्व सुस्त होय छे. जे अश्वना मुखनो घेर अल्प होय अने तेमां जे सुगमताथी लगाम न लइ शकतो होय तेमज जेनो अधरोष्ठ उपरना ओष्ठथी अलग रहेतो होय ते अश्व वृद्ध थइ गयो छे अने सत्वर मृत्युवश थशे एम समजवुं. तेज, उभा, अने निरंतर चळायमान कर्णवाळो अश्व उत्तम गणाय छे; परंतु जेना कर्ण म्होटा, पहोळा अने निश्चल होय ते अश्व सुस्त निवडे छे, जेनुं ललाट पातळुं, वाहेरनी तरफ फूलेलुं अने म्होटा तथा सुन्दर चिह्नयुक्त होय ते अश्व उत्तम लेखाय छे. जाडा अने मलिन चहेरापर न्हाना चिह्नने धारण करनारो अश्व निन्दनीय गणाय छे. काळां, चिकणां, कठिन, चपटां अने गहेरां सुमवाळो अश्व प्रशंसनीय होय छे. अश्वनुं शिर गरदननी साथे सुडोळ छे के नहि ते तपासवा माटे तेनी एक वगलमां उभा रही द्रष्टि करवी अने ते वखते अश्वने पण मेदानमां उभो राखवो. अश्वनी गरदन न्हानी तेमज लांवा, कोमळ अने अंगूठीदार केशयुक्त होय

तो श्रेष्ठ गणाय छे. कार्य करवामां समर्थ अश्वने चालीश दांत होवा जोइए, जेमांना सोळ दांत उपरथी तेनी अवस्था जाणी शकाय छे, अश्विनीने कुल छत्रीश दांत होय छे. ज्यारे अश्वनी युवावस्था होय छे, त्यारे तेना दांत सीधा अने एक बीजाथी मळेला होय छे. परंतु जेम जेम ते वृध्ध थतो जाय छे तेम तेम तेना दांत बहारनी तरफ वांका वळी निकळी जाय छे. यौवनवाळा अश्वनुं मुख मांसथी भरेलुं अने ओष्ठ कठिन होय छे, परंतु ज्यारे वृद्ध थाय छे त्यारे तेनुं मुख शुष्क (मांस रहित–पातळुं) अने ओष्ठ कोमळ बनी जाय छे. आ उपरांत अश्व लंगडो छे के नहि ते तपासवा माटे तेने मधुरी दुलकी चालथी मेदानमां दोडावी जोवो. आ रीते बराबर समजावी अश्वनी खरीदी अर्थे माणसोने रवाना कर्या. राजहरपालदेवजी गौब्राह्मण प्रतिपाल होवाथी तेओने ब्राह्मण अने गाय उपर विशेष श्रद्धा हती, तथा तमाम जातिना पशुओने पाळवानो पूर्ण शोख हतो, तेमां पण गाय के जे पशुओमां परम पूज्य गणाय छे, तेनी पोते जाते कोइ कोइ वखते गौशाळामां जइ सेवा करता अने उत्तम प्रकारनां भोज्य तैयार करावी स्वहस्ते सुरभिवृन्दना मुखमां आपता. एक दिवसे तेओए सुरभि आदि चतुष्पद समूहना अखिल रक्षकोने एकत्र करी कह्युं के तमोए पुरती काळजीथी निरंतर पशुओनुं पोषण करवुं, हालमां केटलीएक गाय, भेंस तेमज रथमां जोडवा माटे थोडा घणा बळदोने खरीदवानी जरुर छे. धेनु आदिनो जेटलो जोइए तेटलो जत्थो आपणा पासे नहि होवाथी तेनी वृद्धि करवा मारो विचार थयो छे अने ए कार्यमां तमोनेज योजवानो छुं, माटे तमारे जाणवुं जोइए के गायो तो हमेशां शुभज गणाय छे. परंतु केटलाएक शास्त्रकारोना केहवा प्रमाणे सर्व सुरभिओ शुभ लक्षणवाळी होती नथी. अश्रुथी भरेल, उंडां, रुक्ष अने मूषक समान नेत्रवाळी, चलायमान अने चिपटां शृंगवाळी; करट अने गर्दभ जेवा रंगवाळी; दश, सात अथवा चार दांतवाळी; लांबा मुखवाळी, शृंगोथी रहित शिरवाळी, नमेली पीठवाळी, सामान्य ग्रीवावाळी, यव तुल्य अर्थात् वच्चेथी म्होटा मध्य भागवाळी, अत्यंत फाटेला खुरवाळी, बहु नाना अथवा बहु म्होटा गुरफवाळी, उन्नत ककुद्वाळी, दुर्बळ देहवाळी अने न्यून अथवा अधिक अंगवाळी धेनु अशुभ गणाय छे. गाय तथा भेंस बन्ने एक सरखां प्राणी छे, अने तेओ घणे भागे वीश वर्षनुं आयुष भोगवे छे. गाय तथा भेंस आदि शृंगवाळां पशुओना दांत बे प्रकारना होय छे. १ छेदन दन्त, २ पेषण दन्त; तेमां छेदन दन्त कापवामां अने पेषण दन्त चाववामां सहायक बने छे; धेनु आदिना उपरना जडबामां छेदन दन्त बिलकुल निकळता नथी, मात्र नीचेना जडबामां आठ छेदन दन्त उगे छे, एथी न्यूनाधिक छेदन

दन्त निकळे तो ते अशुभ गणाय छे. शृंगीओने कुल बत्रीश दांत होय छे; तेमां चोवीश पेषण दन्त के जे पडया पछी फरी उगता नथी, अने बाकीना आठ छेदनदन्त पडया पछी पण पुनः प्रगट थाय छे. ते ए रीते के अढी वर्षनी अवस्थाए पडया पछी त्रीजे वर्षे बे, त्रीजा अने चोथा वर्षमां बे, पांचमे वर्षे बीजा बे अने छट्ठे वर्षे बाकीना बे दांत पडी फरी उगे छे. गाय अथवा भेंसनी युवावस्थानो घणे भागे छट्ठा वर्षथी आरंभ थाय छे. तेनी निशानी ए के नवा निकळेला दांत पूर्वना अर्थात् पडी गएला दांतथी म्होटा अने कठिन होय छे, अने तेथी सहजमां तेनी अवस्था जाणी शकाय छे. वृद्धपणुं प्राप्त थतां तमाम दांत घसाइ जाय छे अने छेवटे पडी पण जाय छे. चार दांत पडया पछी फरी उगे त्यारे घणे भागे गाय गर्भने धारण करे छे, परंतु कोइ कोइ वखते ए पहेलां पण गर्भवती थाय छे. तेना पेटमां बच्चुं नव महिना उपरांत दश दिवस रहे छे, तेमां वखते बे चार दिवसनो फेर पण पडे छे. बच्चुं एक वर्षनुं थाय त्यारे तेने शृंग नीकळे छे, त्यार बाद दर वर्षे फाल्गुन अथवा चैत्रमां ते शृंग उपर गोळ चिह्न देखाइ आवे छे, बाल्यावस्थामां जेवो व्यवहार शीखेल होय, तेवो तेनो स्वभाव थाय छे.

जेनुं मस्तक मोटुं, रोम झीणा, छाती तथा कटि पहोळी, पेट म्होटुं, त्वचा कोमळ, लांगुल लांबु अने स्तन म्होटां होय ते गाय दुग्धवती अर्थात् घणुं दूध आपनारी होय, काळी गायने पण केटलाएक दुग्धवती कहे छे.

अत्यंत म्होटा मस्तकवाळी, पश्चिम देशमां जन्म पामेली अल्प रोमयुक्त देहवाळी तथा जेनां स्तन गायना स्तनथी म्होटां, वक्षःस्थल अने कटि विस्तृत, त्वचा कोमळ अने लांगुल लांबु होय ते भेंस अवश्य अधिक दूध आपे छे.

नागोर, हांसी, हरियाना अने क्षौर इत्यादि देशनी गायो सर्वोत्तम गणाय छे. नागोरनी गाय सर्वथी उंची अने बळवान् होय छे, हांसी अने हरियानानी गाय अधिक दूध आपवामां प्रसिद्ध छे. तथा मथुरा-वृन्दावननी धेनु जोवामां सुन्दर तेमज दुग्धवती होय छे.

अशुभ धेनुना लक्षण समान लक्षणवाळो वृषभ पण अशुभ गणाय छे. जेना वृषण स्थूल अने अत्यंत दीर्घ होय, क्रोड अर्थात् आगला बन्ने पगनो भाग नाडीओथी व्याप्त होय अने कपोल पण स्थूल शिराओथी छवाएला होय तथा जेना त्रिस्थानमांथी पाणी वहेतुं होय, नयनो मार्जार जेवां होय अने अंगनो रंग करट अथवा कपिल होय ते वृषभ तमाम मनुष्ये त्यागवा लायक छे. जेना ओष्ठ, तालु अने जिह्वा कृष्ण वर्ण होय तथा जे त्रसन अर्थात् डरकणो होय ते वृषभ

वखते समुदायनो संहार करनारो निवडे छे. जेना शृंग, मणि अने गोमय स्थूल होय; उदर श्वेत अने शरीरनो वर्ण कृष्ण तथा श्वेत रंगथी मिश्रित होय ते वृषभ गृहे जन्म पाम्यो होय तो पण तेने तजी देवो, कारण के ते पण यूथनाशक कहेवाय छे. जेना शरीरमां काळां फूल पडी गयां होय, जेनो वर्ण भस्मारुण होय अने नेत्र मार्जार जेवां होय ते वृषभ चारे वर्णने माटे अशुभ लेखाय छे. रथ अथवा भार विगेरे खेंचवामां योजेलो जे वृषभ पोताना चरणने पंकमां खुंची गयेला पगनी माफक महा महेनतथी उठावे, जेनी ग्रीवा दुर्बळ, पीठ न्हानी अथवा दबाएली अने आंखो काचर होय ते भार खेंचवामां समर्थ होतो नथी. जेना ओष्ठ कोमळ, मळेला अने तांबाना रंग जेवा होय, स्फिक् न्हाना, होय, तालु अने जिह्वा ताम्र वर्ण होय, कर्ण न्हाना, पातळा अने उंचा होय, पेट सुंदर होय, जंघा सीधी होय, खुर ताम्रवर्ण अने सुश्लिष्ट होय, वक्षः– स्थल दृढ होय, ककुद् म्होटी होय, त्वचा अने रोम स्निग्ध, कोमळ अने सूक्ष्म होय, शरीर अने शृंग ताम्रवर्ण होय, पुच्छ पातळुं अने भूमिने स्पर्श करनारुं होय, नेत्रना छेडा लाल होय, स्कंध सिंह जेवा होय, कंबल पातळी अने न्हानी होय, गति सुन्दर हाय अने जे दीर्घ श्वास लेनारो होय ते वृषभ उत्तम गणाय छे. जेना वाम भागमां डाबी बाजु वळेलुं आवर्त होय अने दक्षिण भागमां जमणी बाजु वळेल आवर्त होय तथा जेनी जांघ मेंढानी जंघा समान मांसथी पूर्ण होय ते वृषभने शुभ समजवो. जेनां नेत्र वैदूर्य मणितुल्य, मल्लिकाना पुष्प जेवां अथवा जल बुद् बुद् जेवां तेमज स्थूल होय, शरीर पण स्थूल होय अने जेना खुरनो पाछलो भाग सुश्लिष्ट होय ते तमाम वृषभ सारी रीते भार खेंची शके छे. जेनी नासिकामां वलि पडती होय, जेनुं मुख मार्जार जेवुं होय, जेना देहनो दक्षिण भाग श्वेत होय; कमळ, नीलकमल अथवा लाक्षा समान जेनी कान्ति होय, जेना वृषण लांबा, गति अश्व जेवी, पुच्छ सुन्दर, पेट मेंढा जेवुं, वंक्षण तथा क्रोड संकुचित होय ते वृषभ भार खेंचवामां अने मार्ग कापवामां समर्थ गणाय छे; जेनी गति अश्व जेवी होय तेवा वृषभ हमेशां शुभज होय छे; जे वृषभनो वर्ण श्वेत होय, जेना नेत्र पिंगल अने ताम्रवर्ण होय, शृंग पण ताम्रवर्ण होय अने मुख म्होटुं होय तेने "हंस" कहे छे; ते शुभ होय छे अने जे यूथमां रहे छे तेनी वृद्धि करे छे. जेनुं पुच्छ जमीनने अडकतुं होय, जेना शृंग ताम्रवर्ण होय, नेत्र लाल होय, जे ककुद्मी अर्थात् कोढवाळो होय अने जेनो वर्ण कल्माष अर्थात् श्वेत, रक्त, पीत अने काळा रंगथी मिश्रित होय ते वृषभ पोताना स्वामीने स्वल्प समयमां लक्ष्मीपति बनावी दे छे. वृषभ गमे ते रंगनो होय, परंतु जेना चारे पग श्वेत होय ते शुभ गणाय छे; जो केवळ शुभ लक्षणवाळो

वृषभ न मळे तो मिश्र फल अर्थात् जेमां कोई लक्षण शुभ अने कोइ अशुभ होय तो तेने खरीदवामां कशी हरकत होती नथी, परंतु अशुभ लक्षण करतां शुभ लक्षण विशेष होवां जोइए.

आ प्रमाणे धेनु विगेरेना रक्षकोने जे वखते राज हरपालदेवजी बोध आपता हता, ते वखते अजापालक पण त्यां आवी उभेल्ा हता. तेना तरफ दृष्टि करी हरपालदेवजीए कह्युं के,— जेम आ लोकोने गाय विगेरेनां शुभाशुभ लक्षण अने अवस्थाज्ञानथी मे वाकेफ कर्या तेम तमारे पण जाणवानी जरुर छे के—जेने नव, दश अथवा आठ दांत होय ते छाग शुभ अने जेने सात दांत होय ते अशुभ गणाय छे. जे छागनो वर्ण श्वेत होय अने तेना दक्षिण पार्श्वमां काळा रंगनुं मंडल होय ते शुभ तथा जे छागनो वर्ण ऋष्यमृगनी माफक काळो अथवा लाल होय अने तेना दक्षिण पार्श्वमां श्वेत मंडल होय ते पण शुभ लेखाय छे. छागना कंठमां जे स्तननी माफक लटके छे तेने मणि कहे छे. जेने एक मणि होय ते छाग शुभ फळने आपे छे तथा जेने बे अथवा त्रण मणि होय तेने तो अति उत्तम जाणवा. जे शृंग रहित शिरवाळा होय, जेनुं आखुं शरीर धोळुं अथवा काळुं होय, अथवा अर्ध शरीर काळुं अने अर्ध श्वेत होय, अथवा अर्ध काळुं अने अर्ध कपिल वर्ण होय ते छाग शुभ लेखाय छे. जे पोताना यूथमां आगळ चाले अने सर्वथी पहेलां पाणीमां प्रवेश करे, ते छाग पण शुभ गणाय छे. जेनुं शिर श्वेत होय अथवा जेना शिरमां कृत्तिका नक्षत्रनी माफक छ बिन्दु होय ते " कुट्टक " कहेवाय छे. जेना कंठ तथा शिरमां अन्य रंगनां बिन्दु होय अने बाकीना अंगनो रंग श्वेत तथा पीत वर्णथी मिश्रित होय अने जेनां नेत्र ताम्रनी माफक लाल होय ते छागने शुभ लेखवो; जेना शरीरनो रंग श्वेत होय अने चारे चरण काळा होय अथवा जेनुं शरीर काळुं होय अने चारे पग श्वेत होय ते छाग " कुटिल " कहेवाय छे. जेना शरीरनो वर्ण श्वेत अने वृषण श्याम होय तथा मध्य भागमां काळा पट्टा होय ते छाग पण शुभ छे एम समजवुं; जे धीरे धीरे चरे अने चरती वखते शब्द थाय ते छाग " जटिल " कहेवाय छे. जेना शिरोरुह अने पग ऋष्य मृगना रंग समान कृष्ण वर्ण होय तथा जेनो अग्र भाग पांडुर अने पाछळनो भाग नील वर्ण होय ते छाग " वामन " कहेवाय छे. ज्यां कुट्टक, कुटिल, जटिल अने वामन जातिना छाग रहे त्यां लक्ष्मीनो निवास होय छे. जे छागनुं शरीर विवर्ण होय, पुच्छ प्रदीप्त अर्थात् वांकुं होय अथवा बहु उष्ण होय, नख खराब होय, कान कापेल्ा होय, शिर हाथी सरखुं होय, तालु तथा जिह्वा कृष्ण वर्ण होय, अने जेनो शब्द गर्दभना जेवो होय ते छाग अशुभ गणाय छे.

आ प्रमाणे यथोचित बोध आपी सर्वेने पोतपोताने स्थाने विदाय कर्या. राज्यसमृद्धिनी वृद्धिमां लक्ष्य आपवानी साथे प्रजाना हितमां प्रवृत्त रहेनारा राजहरपालदेवजीनो यश दिनप्रति-दिन वृद्धि पामवा लाग्यो. तेओए स्वल्प समयमां पुष्कळ द्रव्य खरची केटलाएक महेलो, देव-मन्दिरो, बाग बगीचाओ, अने उत्तम जलाशयो आदिथी शहेरने अनेक प्रकारे सुशोभित कर्युं. पोतानुं राज्य न्हानुं छतां सर्वोत्कृष्ट समृद्धिथी म्होटां म्होटां राज्योने शरमावनारा राजहरपाळदेव-जीथी ए अरसामां कोइ पण राजा विरुद्ध थइ युद्ध करवा तत्पर थाय तेवा संजोगो न हता तो-पण तेओए राज्यनां संरक्षण माटे परंपराना नियम प्रमाणे सारा सारा सैनिकोने एकत्र कर्या. पाट-डीनी प्रजा आनंद वैभवमां दिवसो गुजारवा लागी अने राजहरपालदेवजी एक उत्तम राजकर्त्ता तरीके पृथ्वीमां प्रख्यात थया.

सप्तदश तरंग.

"छप्पय"

सोढो मांगु शखेराज, शक्तिना जाया;
मुद मन्दिर मखवान, कलित झाला कहेवाया.
सोढाजीने राज्य, सोंपी राच्या उपरामे;
शक्ति अने शिवरूष, सुता सह गयां स्वधामे.
अमर आपना वंशनो, महिमा महद् जणाय छे;
हाम धरी नथुराम कवि, गुण झालाना गाय छे.

राज हरपालदेवजीने स्त्रीओमां सर्वोत्कृष्ट साक्षात् शक्ति वर्यां हतां, जेथी तेओनां आनंद वैभव के सुखमां कोइपण प्रकारनी न्यूनता न हती, शक्ति पण पोताना पराक्रमी पतिनां उत्तम आचरणथी सर्वदा संतुष्ट रहेतां, स्त्रीनुं मान केवी रीते जाळववुं ते राज हरपालदेवजो सारी रीते समजता हता, कारणके तेओए उत्तम गुरु पासेथी संहिता वगेरे शास्त्रोनुं श्रेष्ठ रीते शिक्षण लीधेलुं हतुं, तेओनी निरंतर एवीज मान्यता हती के संपूर्ण पृथ्वीनो विजय कर्या बाद तेमां पोतानी राजधानीनुं शहेरज साररुप छे. ए शहेरमां पण पोतानो महेल अने महेलमां पण पोताने रहेवानुं एक मुख्य स्थान अने तेमां पण साररूप शय्या[१] अने ए शय्या उपर पण रत्नोथी अ-

---

१ आसन बनाववामां जे जे काष्ठ अने जे जे प्रकारनो हाथीदांत शुभ गणाय छे, ते शय्या बनाववामां पण शुभ लेखाय छे. तुप रहित आठ जवनो मध्य भाग बराबर मेळवी राखतां एक कर्मांगुल थाय छे, राजाओने माटे एकसो आंगळ लांबी शय्या विजय आपनारी निवडे छे. नेवु आंगळ लांबी शय्या राजपुत्रनी, चोराशी आंगळ लांबी शय्या राजाना मंत्रीनी, अठ्योतेर आंगळ लांबी शय्या सेनापतिनी अने बहोंतेर आंगळ लांबी शय्या राजाना पुरोहितनी

लंकृत उत्तम स्त्री साररुप छे. दीर्घदृष्टिथी विचारतां राज्यसुखमां एटलोज सार छे. बाकीना सघळा पदार्थो निःसार छे. रत्नोने स्त्री सुशोभित करे छे, परंतु रत्ननी कान्ति स्त्रीने विभूषित करवामां कारणभूत नथी, कारणके स्त्रीओ तो रत्नोने धारण कर्या विना पण हृदयने हरी ले छे, परंतु रत्नो स्त्रीओना अंगनो संग कर्या विना चित्तने हरी शकतां नथी. हर्ष तथा शोक आदिना आकारने छुपावनारा, शत्रुना सैन्यने जीतवा माटे कटिबद्ध थएला, करेला तथा नहि करेला सेंकडो व्यवहारोनी शाखाओथी व्याकुळ राजतंत्रनुं चिन्तवन करनारा मंत्रीओए कहेल नीतिपर चालनारा

बनाववी जोइए. शय्यानी लंबाइना अर्ध भागनो अष्टमांश घटाडी बाकी जेटलुं प्रमाण रहे तेटली तेनी पहोळाइ राखवी अने आयामना तृतीयांश तुल्य पायानी उंचाइ कुक्षि अने शिर सहित राखवी. श्रीपर्णी वृक्षना काष्ठनो बनावेल पर्यंक धन आपनार थाय छे, असनना काष्ठनो बनावेल पर्यंक रोग हरे छे, टेंभुरणीना काष्ठनो बनावेल पर्यंक धन दे छे, केवळ सीसमना काष्ठनो बनावेल पर्यंक अनेक प्रकारनी उन्नति आपे छे, चंदनना काष्ठनो बनावेल पर्यंक शत्रुओनो विनाश करी धर्म, यश अने दीर्घायु आपे छे; शाल अने सागना काष्ठनो बनावेल पर्यंक कल्याणकारी थाय छे, चंदनना काष्ठनो पलंग बनावी तेने सुवर्णथी मढी तेमां अनेक प्रकारनां रत्नो जडी तेना पर शयन करनार राजानुं देवताओ पग पूजन करे छे. पर्यंकनी चारे तरफना काष्ठने इषा कहे छे; ए रीते पर्यंकनी बाजुनां बे काष्ठ तथा ओशीका तथा पांगतना बे काष्ठनो ज्यां योग होय तेने ईषायोग कहे छे; ए इषायोगमां काष्ठनो प्रदक्षिण अग्र होय तो ते श्रेष्ठ गणाय छे अर्थात् ओशीकावाळा काष्ठना अग्रभागनी साथे दक्षिण तरफना काष्ठनुं मूळ मेळववुं ए रीते चारे काष्ठने मेळववा ए शुभ लेखाय छे. एथी विपरीत क्रमे काष्ठनो योग थाय अथवा शिरःपाद काष्ठनो अग्रभाग एकज दिशामां होय तो ते पर्यंकपर शयन करनारने भूतथी उत्पन्न थयेलो भय प्राप्त थाय छे; जे पलंगनो एक पायो अधोमुख होय अर्थात् मूळनी तरफ पायानो अग्रभाग बनावेल होय अने काष्ठना अग्रभागनी तरफ पायानुं मूळ होय एवा पलंगपर शयन करनारना पग विकळ बनी जाय छे. जे पलंगना बे पाया अधोमुख होय तेनापर शयन करनारने अन्न पचतुं नथी अने त्रण अथवा चारे पाया अधोमुख होय तो तेनापर शयन करनारने क्लेश मृत्यु अथवा बन्धन प्राप्त थाय छे, पायानुं शिर छिद्रयुक्त होय अथवा तेमां विवर्ण ग्रन्थि होय तो व्याधि उत्पन्न थाय छे अने तेना कुंभमां ग्रन्थि होय तो उदर रोग थाय छे. कुंभनी नीचे

पुत्र तथा स्त्री आदिथी पण शंकित रहेनारा अने दुःखसमुद्रमां डूबता राजाओने उत्तम स्त्रीनुं आलिंगन करवुं एज कांइक सुख छे. विधाताए स्त्री शिवाय कोइ स्थळे एवुं कोइ पण रत्न नथी बनाव्युं के जेना श्रवणथी, स्पर्शथी, दर्शनथी अथवा स्मरणथी चित्तमां आह्लाद उत्पन्न थाय; धर्म अने अर्थनुं सेवन पण स्त्रीने माटेज छे, संततिनो अने विषय सुखनो लाभ स्त्रीथीज थाय छे, स्त्री गृहलक्ष्मी छे, एटला माटे मान अने ऐश्वर्यथी निरंतर तेनो सत्कार करवो जोइए. जे स्त्रीओना गुणोने एक बाजु मूकी वैराग्य मार्गथी तेना दोषोने प्रगट करे छे ते पुरुष दुष्ट छे एम समजवुं, दुष्ट पुरुषोनां वचनो पण अप्रमाणिक होय छे. एवो स्त्रीओमां कयो दोष होय छे के जे दोष पुरुषो-

---

जंघा होय छे, पायानी जंघामां ग्रन्थि होय तो शयन करनारनी जंघामां रोग उत्पन्न थाय छे. जंघानी नीचे आधार होय छे, ए आधारमां ग्रन्थि होय तो धननो नाश थाय छे. आधारनी नीचे पायामां खुर होय छे, ए खुरमां ग्रन्थि होय तो अश्व आदि खुरवाळां जीवथी उपाधि थाय छे. दरेक इषाना तृतीयांश भागपर ग्रन्थि होय तो ते अशुभ गणाय छे. काष्ठमां निष्कुट, कोलाक्ष, सूकर नयन, वत्सनाभ, कीलक अने धुन्धुक ए रीते षट् प्रकारनां छिद्र घटनी माफक अंदरथी विस्तृत अने मुखना भागमां संकट होय ते निष्कुट कहेवाय छे. जे छिद्र मटर अथवा अडद तुल्य अने नीलवर्ण होय तो कोलाक्ष; जे छिद्र विषम, विवर्ण अने दोढ पर्व लांबुं होय ते सूकरनयन; जे छिद्र वामावर्त, भिन्न अर्थात् आरपार रन्ध्र होय अने एक पर्व लांबु होय ते वत्सनाभ, जे छिद्र कृष्णवर्ण होय ते कीलक अने जे छिद्र कृष्णवर्ण अने भिन्न होय तेने धुन्धुक कहे छे ! निष्कुट नामनुं छिद्र द्रव्यनो क्षय करे छे, कोलाक्ष नामनुं छिद्र कुळनो नाश करे छे. सूकरनयन नामनुं छिद्र शस्त्रथी भय उपजावे छे, वत्सनाभ नामनुं छिद्र रोगथी भय उत्पन्न करे छे, तेमज कीलक अने धुन्धुक नामनां छिद्रो पण अशुभ लेखाय छे. कीडाओए पाडेलुं छिद्र पण अशुभ गणाय छे. जे काष्ठ सर्वत्र गन्थिमय होय ते कोइपण वस्तु बनाववामां शुभ लेखातुं नथी. पूर्वोक्त शुभ वृक्षोना काष्ठथी बनावेल पर्यंकने शुभ समजवो. बे वृक्षोना काष्ठथी बनावेल पर्यंक अत्यंत शुभ गणाय छे, त्रण वृक्षोना काष्ठथी बनावेल पर्यंक संताननी वृद्धि करे छे, चार वृक्षोना काष्ठथी बनावेल पर्यंक धन अने उत्तम यशनी प्राप्ति करावे छे, पांच वृक्षोना काष्ठथी बनावेल पर्यंक पर शयन करनार मृत्युने प्राप्त थाय छे अने छ अथवा सात वृक्षोना काष्ठथी बनावेल पर्यंक कुळनो क्षय करे छे.

ए प्रथम न करेल होय? अर्थात् प्रथम पुरुषोज तमाम दोषोनुं आचरण करे छे. अने स्त्रीओ तेना पासेथी शीखे छे. पुरुषोए धृष्टताथी स्त्रीओने जीती लीधी अर्थात् स्त्रीओनी अपेक्षाथी पुरुष अधिक धृष्ट थाय छे, खरी रीते पुरुषोनी अपेक्षा करवी. स्त्रीओमां अधिक गुण छे; धर्मशास्त्रना मुख्य आचार्य श्री मनुए पण आ विषयमां कह्युं छे के स्त्री-ओने चन्द्रमाए शुद्धता, गन्धर्वोए सुशिक्षित वचनो अने अग्निए सर्व भक्षित्व अर्पण कर्युं छे ए-टला माटे स्त्रीओ सुवर्णनी माफक शुद्ध गणाय छे. ब्राह्मणोना पग पवित्र, गायोनी पीठ पवित्र, अजा तथा अश्वोनुं मुख पवित्र अने स्त्रीओना सर्व अंग पवित्र लेखाय छे. स्त्री एवी पवित्र छे के एना समान बीजो कोइ पदार्थ पवित्र नथी, कारण के तेने दर महिने प्राप्त थतो ऋतु तेना तमाम पापोने हरी ले छे. अनादर कराएली कुळ स्त्री जे गृहने शाप दे छे ते-गृह चारे तरफथी विनष्ट थाय छे. पत्नी होय अगर माता होय, परंतु पुरुषोनी उत्पत्ति स्त्रीओथीज थाय छे. अर्थात् भार्याथी पुत्र रुपे अने मताथी साक्षात् पोते उत्पन्न थाय छे; पत्नी अने मातानी निन्दा करवाथी कोइनुं कल्याण थतुं नथी. स्त्रीपुरुषोना परस्पर व्युत्क्रममां अर्थात् पुरुषोने परस्त्री संगमां अने स्त्रीओने परपुरुषना संगमां सरखोज दोष लागु पडे छे. परंतु पुरुषो परस्त्रीना संगमां कांइ दोष देखता नथी अने स्त्रीओ परपुरुषना संगमां दोष देखे छे एटला माटे पुरुषोथी स्त्री उत्तम छे. जे पुरुष दारातिक्रम करे अर्थात् पोतानी पत्नीनो त्याग करी पराइ स्त्रीनो संग करे ते पुरुष गर्दभना बहिर्लोभ चर्मने ओढी छ महिना पर्यंत " भिक्षांदेहि " एम कहे अर्थात् भीख मांगतो फरे त्यारे शुद्ध थाय छे. सो वर्ष वीती जाय तोपण पुरुषोनी विषयवासना निवृत्त थती नथी, परंतु शरीरनी शक्ति घटी जवाथी ते निवृत्त थाय छे अने स्त्रीओ तो धैर्यथीज निवृत्त बने छे. निर्दोष स्त्रीओनी निन्दा करनारा पुरुषो महा पापी गणाय छे. कामातुर थएलो पुरुष एकान्तमां स्त्री आगळ जेवां मिष्ट वचन उचारे छे तेवां वचन ते पछीथी बोलतो नथी, परंतु स्त्री तो पोतानी कृतज्ञताने लीधे मृतक पतिने आलिंगन आपी अग्नि प्रवेश करे छे. जे पुरुषना घरमां उत्तम स्त्री होय ते निर्धन छतां पण राजा छे एम समजवुं कारण के राज्यनो सार भोजन अने उत्तम स्त्री ए बेज छे. हाथी, घोडा, रत्न अने सुवर्ण आदि सामग्री तृष्णारुपी अग्निने प्रज्वलित करनारां काष्ठ छे अर्थात् तेओना लाभथी तृष्णा वधती जाय छे. नविन यौवनथी युक्त,, मन्द, सुन्दर, कोमल अने स्तब्ध शब्दोनो उच्चार करती-तेमज उन्नत उरोज-वाळी अंगनाना आलिंगनथी जे सुख उद्भवे छे ते सुखनो ब्रह्मलोकमां पण अभाव छे. ब्रह्म-लोकमां देवता, मुनि, सिद्ध अने चारण मान्योने मान आपे छे अने सेव्योनुं सेवन

करे छे, एथी अधिक ब्रह्मलोकमां एवुं क्युं सुख छे के जे एकान्त स्थळमां अंगनाना आलिंगनथी प्राप्त न थाय ? ब्रह्माथी आरंभी कीट पर्यन्त तमाम जगत् पुरुष अने स्त्रीना योगथी बंधाएलुं छे. एमां शी लज्जा छे के ज्यां जगदीश्वर महादेवजी पण स्त्री दर्शननी लालसाथी चतुर्मुख बन्या. (कोइएक वखते महादेवजी पार्वतीजीने अंकमां लइ कैलासपर विराजमान हता, ते वखते तिलोत्तमा नामनी अप्सरा तेओनी प्रदक्षिणा करवा लागी, त्यारे महादेवजी पार्वतीजीना भयथी चारे तरफ मुख फेरवी ते अप्सरानुं मनोहर रुप न जोइ शक्या, परंतु जे जे दिशामां ते गइ.ते ते दिशामां नूतन मुख उत्पन्न थतां गयां. ए रीते महादेवजी चतुर्मुख थया.)

राजहरपालदेवजीमां सुभग पुरुषनां सर्वोत्तम लक्षणो विराजमान हतां अने ते लक्षणोनुं तेओ यत्न पूर्वक रक्षण करता, पोते बराबर जाणता हता के सुभग पुरुष काम संबंधी सर्व सुखने उत्तम रीते प्राप्त करी शके छे. अर्थात् सुभग पुरुषनी साथे रतिक्रीडा करती वेळाए स्त्रीनुं चित्त ठेकाणे रहे छे. मतलब सुभग पुरुष उपर तेनुं चित्त अनुरक्त रहे छे. जेथी पूर्ण सुखनी प्राप्ति थाय छे. स्त्रीनु चित्त अनुरक्त न होय तो दुर्भग पुरुषने रतिमां सुखनो मात्र आभास थाय छे, वास्तव सुखनी प्राप्ति थती नथी; रति समये स्त्री दूर उभेली होय तोपण चित्तथी जे पुरुषनुं ध्यान करे छे तेना जेवोज तेने गर्भ रहे छे. जे वृक्षनुं बीज अथवा कलम जमीनमां वावी होय तेज वृक्ष उगे छे, अन्य वृक्ष उगतुं नथी. अेवीज रीते स्त्रीओमां फरीने पण संतानरुपे आत्माज उत्पन्न थाय छे. केवळ क्षेत्रना योगथीज तेमां कांइ विशेषता अगर न्यूनता जणाइ आवे छे. जेम कोइ क्षेत्रमां वावेलां वृक्ष उत्तम, कोइमां सामान्य अने कोइमां निकृष्ट उत्पन्न थाय छे, तेम स्त्रीओमां पण समजी लेवुं. आत्मा मननी साथे, मन इन्द्रियनी साथे अने इन्द्रिय पोताना विषयनी साथे जाय छे; ए आत्माने जवानो शीघ्र क्रम एज योग छे; मनने कोइ स्थान अगम्य नथी अने ज्यां मन जाय त्यां आत्मा पण चाल्यो जाय छे. अत्यंत सूक्ष्म ए जीवात्मा हृदयनी अंदर परमात्मानी वच्चे स्थित छे, निरंतर अभ्यासथी चित्तने स्थिर करी तेनुं ग्रहण करवुं जोइए. जे जेनुं चिन्तवन करे छे ते तन्मय बनी जाय छे, एटला माटे स्त्री पण सुभग पुरुषनुंज चिन्तवन करे छे. दाक्षिण्य अर्थात् स्त्रीओना चित्तने अनुकूळ आचरण सुभगपणानो मुख्य हेतु छे, स्त्रीओना चित्तथी विपरीत आचरण करनारो पुरुष विद्वेषण अर्थात् दुर्भग बनी जाय छे. वशीकरण आदिने माटे मंत्र, औषध अने इन्द्रजाल विगेरे कुहक प्रयोगो करवाथी अनेक दोषोनी उत्पत्ति थाय

छे, कल्याण थतुं नथी, अर्थात् स्त्रीने वश करवानो मुख्य उपाय दाक्षिण्य छे, मंत्र के औषध आदि नथी. अहंकारनो त्याग करवाथी मनुष्यने सर्वे प्रिय थइ पडे छे अने अहंकारथी सर्वेने दुर्भग थाय छे. अभिमानी पुरुष पोताना कार्यने कष्टथी साधी शके छे अने मिष्ट वचन बोलनार मनुष्यनुं कार्य सहेजमां सिद्ध थाय छे. प्रिय साहसत्व अर्थात् वगर विचार्ये कार्य करवामां प्रीति अने दुष्टोए कहेलां दुर्वचन तेज नथी अर्थात् साहसी अने दुर्वचन बोलनार तेजस्वी गणाता नथी. जे पुरुष कार्यने समाप्त कर्या छतां पण अभिमान नथी करतो ते खरो तेजस्वी लेखाय छे विकत्थन अर्थात् वाचाल पुरुष पण तेजस्वीनी गणनामां आवतो नथी. जे पुरुष सर्वेने प्रिय थवा इच्छतो होय तेणे परोक्षमां सर्वेनी स्तुति करवी जोइए. जे निरन्तर पराइ निन्दामां तत्पर रहे छे तेना विषे अन्य मनुष्यो अनेक असत् दोषोनुं आरोपण करे छे. जे पुरुष सर्वेना उपर उपकार करवामां तत्पर रहे छे तेना पर सर्व मनुष्यो उपकार करे छे; विपत्तिना वखतमां वैरी उपर उपकार करवाथी जे यश प्राप्त थाय छे, ते अल्प पुण्यनुं फळ नथी. दुष्ट मनुष्यो गमे तेटला सज्जनोना सद्गुणोने छुपावे परंतु ते गुणो तृणना समूहथी आच्छादित करेला अग्निनी माफक वृद्धिज पामे छे. जे पराया गुणोने हणवा धारे छे ते केवळ दुर्जनतानेज प्राप्त थाय छे.

राजहरपालदेवजीए पाटडीमां राज्यनुं स्थापन कर्या बाद स्वल्प समयमांज पतिभक्ति परायण शक्तिने मखवान वंशना महोदयने दर्शावनारो गर्भ रह्यो, ते गर्भनुं सगर्भाए वर्त्तवा लायक सर्वोत्कृष्ट वर्त्तनथी शक्तिए संरक्षण करवा मांड्युं अने समय प्राप्त थतां सूर्यना बिम्ब समान तेजोमय आकृतिवाळा कार्त्तिकेय जेवा कुमारने जन्म आप्यो. पोताना महाराजाने त्यां पाटवी कुंवरनो जन्म थतां पाटडीनी समग्र प्रजा आनंद समुद्रमां अवगाहन करवा लागी, राज मन्दिरनी रमणीयतामां अभिवृद्धि करनार मांगलिक वाद्योना मधुर निनाद गगन मंडलने गजाववा लाग्या, राजकीय पुरुषोना हृदय पण प्रसन्नताने प्रदर्शित करवा लाग्यां. आ आनंदना अवसरमा राजहरपाळदेवजीए विविध प्रकारनां पारितोपकथी विप्र अने बन्दीजनोने संतुष्ट कर्या. दिनप्रतिदिन कुमारनी अवस्था शुक्लपक्षना शशी समान वृद्धि पामवा लागी अने तेनुं सोढोजी ए प्रमाणे नाम राखवामां आव्युं. त्यारपछी शक्तिने पेटे अनुक्रमे मांगुजी तथा शखेराजजी नामे बे पुत्र तथा उमादे नामनां एक पुत्रीनो जन्म थयो; शक्तिथी उत्पन्न थएला त्रणे कुमारो बाल्यावस्थामां विविध प्रकारनी क्रीडा करवा लाग्या. राजहरपालदेवजीए तेओना संरक्षण माटे कुलीन अने निमकहलाल मनुष्योनी

योजना करी; जो के ते त्रणे कुमारोने खेलवा माटे जातजातनां अमूल्य जत्थाबंध रमकडांओ खरीदवामां आव्यां हतां, परंतु ते जड वस्तुथी तेओने जोइये तेवो आनंद न आववाथी केटलांएक शुक, सारिका तथा गृहमयूर आदि पक्षीओने पाळवा मांडया के जे कुमारोने प्रसन्न करवाना सबळ साधनरुप थइ पडया, ज्यारे कुमारो चालवा शीख्या त्यारे राजभुवननी अंदर तेओने आनंद आपवा माटे विविध प्रकारनां वृक्ष अने लताओथी अलंकृत एक सुंदर गृहवाटिका बनाववामां आवी अने तेनी वच्चे एक विशाल तथा रमणीय होज तैयार कराव्यो अने तेमां जातजातनां रंगबेरंगी मत्स्यो नांखवामां आव्या; तेनी साथे राज्यनी तेमज राजाना महत्वनी वृद्धि करनार शुभ लक्षणवाळा कूर्मोने पण तेमां राखवामां आव्या, तेमां केटलाएक कूर्म स्फटिक अने चांदी समान शुक्ल वर्णवाळा श्याम रेखाओथी चित्रित शरीरवाळा, कलश समान कमनीय आकृतिवाळा अने सुशोभित वंशवाळा हता, केटलाएक रक्तवर्णवाळा तेमज सर्षपनी माफक चित्रित अवयवोथी युक्त हता, केटलाएक अंजन तथा भ्रमरनी माफक श्याम शरीरवाळा, बिन्दुओथी चित्रित, पूर्ण अंगवाळा, सर्प समान शिरवाळा, स्थूल कंठवाळा, त्रिकोण आकृतिवाळा, गुप्त छिद्रवाळा अने सुंदर वंशवाळा हता; गृहवाटिकामांविहार करती वखते मच्छकच्छनी मनोहर क्रीडाथी कुमारोना मनने प्रसन्न थतां जोइ केटलाएक परिजनोए तेओ पासे कुक्कुटनी आकृति तथा चेष्टा संबंधी चर्चा चलावी, जेथी त्रणे कुमारोने कुक्कुट दर्शननी सत्वर स्पृहा थइ, आ वातनी राजहरपालदेवजीने खबर पडतां तेओए पोताना एक प्रवीण हजुरीने हुकम आप्यो के कृश शरीरवाळा, मन्द शब्दवाळा अने पगे लंगडा कुक्कुट अशुभ गणाय छे माटे ते नहि लेतां जेनी पांखो तथा आंगळीओ सीधी होय; मुख, नख अने चोटी ताम्रनी माफक लाल होय; शरीरनो वर्ण श्वेत होय अने जे रात्रिनी समाप्ति थतां सुंदर स्वरथी आलाप करता होय तेवा कुक्कुट खरीद करी लावो, कारण के ए शुभ लक्षणवाळा कुक्कुटो राज्यनी तथा अश्वनी अभिवृद्धि करे छे. जे कुक्कुटनी ग्रीवा जवना जेवी आकृतिवाळी होय, जेनुं मस्तक म्होटुं होय अने जेना शरीरनो वर्ण रक्त होय अथवा विचित्र होय तेमज जेनो देखाव सुंदर होय तेवा कुक्कुट युद्धकुशळ अने शुभ गणाय छे; मधु अथवा मधुप तुल्य वर्णवाळा कुक्कुट पण युद्धमां विजय मेळवे छे, माटे तेवा कुक्कुट पण खंतथी खरीद करवा, तेनी साथे राजाओने चिरकाल पर्यन्त लक्ष्मी, यश, विजय, बळ अने संपत्ति आपनारी; मृदु अने मनोहर शब्द करनारी, स्निग्ध शरीरवाळी तथा जेनां नेत्र अने मुख सुंदर होय एवी कुक्कुटीओ पण लाववी के जेथी तेनो परिवार निरंतर वृद्धि पामतो रहे. आ रीते राजेहर-

पालदेवजीना हुकमथी उक्त लक्षणोथी युक्त कुकुटो आव्या बाद कुमारोने क्रीडामां अधिक आनंद आववा लाग्यो, कोइ कोइ वखते तेओना परस्पर युद्धनुं निरीक्षण करी पोते पण आवेशमां आवी युद्ध करवा उत्साह बतावता होय तेम अचानक कुदी उठता हता. ए प्रमाणे विविध बालचेष्टाना विनोदमां दिवसोने व्यतीत करनारा त्रणे कुमारोना अनुपम अवयवो क्षात्रीय रुधिरथी प्रफुल्लित थवा लाग्या.

मनुष्य गमे तेवा निमकहलाल होय तोपण निमकनी शरत पाळवामां शास्त्रकारोए श्वानने सर्वोत्कृष्ट गणेल छे अने एथीज मनुष्यनां बत्रीश लक्षणोनी अंदर तेनां लक्षणोनी पण गणना करवामां आवी छे, एटला माटे राजहरपालदेवजीए पण गृहलक्ष्मीनी वृद्धिने अर्थे केटलाएक शुभ लक्षणवाळा श्वानोनो संग्रह कराव्यो हतो. ते श्वानोना त्रण पगमां पांच पांच नख अने आगळना जमणा पगमां छ नखो हता, ओष्ट अने नासिकानो अग्र भाग ताम्र तुल्य लाल रंगना हतो, तेओ सिंहनी माफक गतिथी भूमिने सुंघता चालता हता, तेओनां नेत्र रींछ जेवा, पुच्छ अधिक वाळयुक्त अने बन्ने कान कोमळ तथा लांबा हता, तेनी साथे राज्यनी रक्षा अर्थे केटलीएक कुकुरीओ पण राखवामां आवी हती के जेना त्रण पगोमां पांच पांच नख अने आगला वाम चरणमां छ नखो हता, तेना नेत्रना बहिर्भागमा मल्लिकाना सुमन सरखी श्वेत रेखा हती तेमज शरीरनो वर्ण पिंगल, पुच्छ वांकु अने कर्ण दीर्घ हता.

कोइएक समये राजहरपालदेवजीना सोढाजी आदि त्रण कुमारो तथा केशरीआ चारणनो दीकरो राजमन्दिरनी समीपे रहेलां विशाळ चतुष्पथमां गेदथी रमता हता, तेओ पोताना अंगनुं केवी रीते रक्षण करवुं ते सबंधी थोडुं घणुं ज्ञान धरावी शके तेटली अवस्थाए पहोचेला होवाथी कांइक निष्फिकर बनेला परिजनो जरा दूर उभा रही कुमारोए करातां क्रीडानुं अवलोकन करी रह्या हता, तेवामां हस्तिशाळामाथी लोहमय बन्धनोने तोडी द्वार आडी दीधेली भोगळना भूकेभूका करी म्हावतना अति तीव्र अंकुशप्रहारने नहि गणकारतो कोइएक कुपित थएलो मदोन्मत्त हाथी प्रलयकाळना मेघनी माफक गर्जना करतो विद्युत् जेवा वेगथी छुट्यो, आ वखते आखा शहेरमां हाहाकार थइ रह्यो, व्यापारी लोको बजारमां पोतपोतानी दुकानोनां द्वार बंध करी अंदर घुसी गया; मार्गमां गमन करता केटलाएक मनुष्यो पाछळना भागमां "भागो भागो" ए रीतना पुकारने सांभळी भयनामार्या सांकडी गलीओ भणी भागवा लाग्या अने केटलाएक थरथरते

देहे उन्नत अलिन्दोनो आश्रय कइ आंखोने चकरवकर करता विचारवा लाग्या के आहीं तो सरलताथी हाथीनी सुंढना सपाटामां सपडाइ जशुं एम धारी फरी अलिन्द उपरथी उतरता पछडाना आम तेम दोडादोड करवा लाग्या; हाथी राजमंदिर भणी ज चाल्यो आवतो हतो अने तेनी पाछळ जत्थाबंध लोको शोर बकोर मचावी रह्या हता. आवो महान् कोलाहल सांभळी राजकुमारोना अंगरक्षको एकदम चोंकी उठ्या अने तेओने एकत्र करवा उतावळथी दोड्या, परंतु नविन रुधिरथी उछळता अवयवोवाळा कुमारो तेओना हाथमां न आव्या, ज्यारे हाथी अति निकटमां आव्यो त्यारे अत्यंत विह्वळ हृदयथी परिजनो पुकारवा लाग्या के "हाथी गांडो थयो छे, आ तरफ आवे छे, आपने इजा करशे तो अमो सर्वस्व हारी जशुं माटे हवे हडीयुं काढवी बंध करो" परंतु गणकारे कोण ? कुमारो तो पोताना आनंदमां मस्त हता, भय शुं कहेवाय ? ते जन्मथीज तेओना जाणवामां न हतुं, तेओतो हाथीने आवतो जोइ सिंहना बाळकनी माफक निर्भयताथी सामा धस्या, तेओना अंगरक्षको बहुज गभराया अने दोडी जेवा तेओने पकडवा जाय छे तेवामां तुरतज ते तमाम उपर हाथीए हल्लो कर्यो. आ समये परम सुशोभित शक्ति राजभुवनना सातमा माळने गोखे बेठां बेठां बधी गम्मत जोतां हतां; गांडो हाथी कुमारोने अवश्य इजा करशे, एम धारी पोते सत्वर चतुर्भुज स्वरुपने धारण कर्युं अने मायाथी कनकवलयवडे कमनीय जणाता कदलीना गर्भ जेवा सुकोमळ चारे करने लंबावी त्रण करथी त्रणे कुमारोने झाली लीधा अने चतुर्थ करथी चारणना छोकराने टापली मारी जेथी ते अति दूर उडी पड्यो. शक्तिना अतुल प्रभावथी हाथी शक्तिहीन बनी गयो अने महावतो तेने वश करी हस्तिशाळामां लइ गया. आटला वखत सुधी अर्थात् राज हरपालदेवजी सुधी "मखवान" अवटंकथी मार्कंडेयना वंशजो ओळखाता हता, परंतु ज्यारथी सोढाजी विगेरे कुमारोने शक्तिए झाल्या त्यारथी तेओ "झाला" ए रीते उपअवटंकथी प्रख्यात थया अने जे चारणना बाळकने शक्तिए टापली मारी हती तेना वंशजो "टापरीआ" एवी अवटंकथी आज पर्यन्त ओळखाय छे के जेओ झालाकुळना "दसोंदी" तरीकेना तमाम हकने भोगवे छे.

राज हरपालदेवजीना वंशजोनुं गोत्र मार्कंडेय, वेद यजु, शाखा माध्यन्दिनी, त्रिप्रवर (भार्गव, और्व अने जामदग्न्य), कुळदेवी शक्ति, अवटंक मखवान तथा उप अवटंक झाला, इष्टदेव चतुर्भुज, हनुमान एकदंडी, भैरव केवडीओ, दसोंदी टापरीओ अने गोर मसालीओ रावळ गणाय छे.

राज हरपाळदेवजीए ज्यारे पोताना त्रणे कुमारो योग्य अवस्थाए पहोंच्या त्यारे राज्य-

ज्योतिषी आगळ उत्तम नक्षत्र, तिथि, वार आदि जोवरावी म्होटी धामधूम साथे तेओने उत्तम गुरु पासे विद्याभ्यास करवा मोकल्या, तेमां सोढाजी के जे पाटवीकुमार हता ते तीक्ष्ण बुद्धिना होवाथी स्वल्प समयमां ज केटलाएक अघरा ग्रन्थोनुं अध्ययन करी बराबर कार्यकुशळ थया. अने मांगुजी तथा शखेराजजीए पण जोइतुं ज्ञान मेळव्युं* राज हरपालदेवजीनी अवस्था दिन प्रतिदिन वृद्ध थवा लागी. तेओ पोताना स्वरुपने सारी रीते समजता हता, जेम अधम मनुष्यो रोगग्रस्त थइ असह्य व्याधिने वेठता मृत्युवश थाय छे तेम उत्तम कोटिना प्राणीओनुं थतुं नथी. परंतु मृत्यु सर्वने शिर छे, नाम तेनो नाश छे, प्रभुए पण जो देह धारण कर्या तो तेने पण काळना कवलरुप थवुं पडयुं, मृत्युनी महत्ता कांइ ओछी नथी, ते पोतानी सत्तानो कयारे उपयोग करशे ए आगळथी कोइ जाणी शकतुं नथी अने एथीज प्रमादी पुरुषो कर्तव्य करी शकता नथी, सांसारिक व्यवहारोमां रच्यापच्या रही एक क्षण पण परलोकने सुधारवाना साधनरुप श्रीहरिनुं ध्यान धरी शकता नथी; आम अनेक प्रकारना तर्कवितर्क करता राज हरपालदेवजीने खबर मळ्या के मृत्युनी परीक्षा करवामां महा प्रवीण कोइ एक विदेशी वैद्य पाटडीमां आवेल छे, तुरतज पोते उक्तवैद्यराजने घणा मान साथे दरबारमां तेडाव्या; ज्यारे वैद्यराज आशीर्वचन आपी आसनपर वेठा त्यारे राज हरपालदेवजीए तेओनी साथे केटलीएक वातचीत कर्या वाद पूछयुं के अमुक वखते मृत्युनुं आगमन थशे एम अगाउथी शी रीते जाणी शकाय ? ते कृपा करी संभळावो. त्यारे वैद्यराज बोल्या के–चरक, सुश्रुत अने वाग्भट आदि ग्रन्थोमां आयुर्वेदनुं उत्तम रीते विवेचन आपेलुं छे, ए ग्रन्थोने आधारे मृत्यु परीक्षानो विषय हुं आप आगळ निवेदन करुं छुं. निरोगी अने रोगी ए बन्नेने मृत्युना आगमन पहेलां भिन्न भिन्न चिह्न थाय छे. रोगीनुं आयुष्य प्रत्यक्ष, अनुमान अने आप्तोपदेश ए त्रणे प्रमाणोथी जाणी शकाय छे. आत्मा, इन्द्रियगण अने मन तथा इन्द्रिओना विषय ए सर्वनो अत्यंत सन्निकर्ष अर्थात् एकत्र योग थवाथी जे बुद्धि प्रगट थाय छे तेने प्रत्यक्ष प्रमाण कहे छे. प्रथम प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करी कार्यलिङ्गानुमान, कारणलिङ्गानुमान अने कार्यकारणलिङ्गानुमान एवा त्रण प्रकारथी भूत, भविष्य अने वर्तमान ए त्रिकाल संबंधी अनुमान करवुं तेने अनुमान कहे छे; जेम धूम्रदर्शनथी गुप्त अग्निनुं ज्ञान थाय

---

* केटलाएक ऐतिहासिक ग्रन्थो परथी एम जणाय छे के राजहरपालदेवजी जे पारकरना सोढानी कुंवरी राजकुंवरने परण्या हता तेनाथी नव पुत्रोनी उत्पत्ति थइ हती, जेमांना आठना वंशजो अद्यापि भिन्न भिन्न स्थळे वर्तमान छे.

छे तेमां कार्य अग्नि अने लिङ्ग धूम्र जेथी कार्यलिङ्गानुमान थयुं; गर्भने जोइ पूर्वकृत मैथुननुं जे अनुमान थाय छे तेने कारण अनुमान कहे छे अने बीजने जोइ थनार फळोनुं जे अनुमान करवामां आवे छे तेने कार्यकारणलिङ्गानुमान कहे छे. जे रजोगुण तथा तमोगुणथी निर्मुक्त होय, तपोवल अने ज्ञानवलथी युक्त होय, त्रिकालने जाणता होय तेमज जेनुं विशुद्धज्ञान निरंतर अखंडित होय एवा पुरुषोज आप्त, शिष्ट अथवा ज्ञानी कहेवाय छे, तेना वचनो सन्देह रहित होय छे, तेओ सत्यज बोले छे; कारणके तेओमां रजोगुण के तमोगुण होतो नथी, एवा ऋषिओनो जे उपदेश तेने आप्तोपदेश कहे छे. शरीरनो वर्ण, स्वर, गन्ध, रस, स्पर्श, नेत्र, कर्ण, नासिका, जिह्वा, त्वचा, शरीरनुं अन्तरात्मीय वल, भक्ति, शौच, शील, आचार, स्मृति, आकृति, वल, ग्लानि, तन्द्रा, आरंभ, गौरव, लाघव, आहार, आहारनुं परिणाम, उपाय, चिकित्सानुं फळ, रोग, रोगनुं पूर्वरुप, रोगनी पीडा, रोगनो उपद्रव, छाया, प्रतिच्छाया, स्वप्नदर्शन, दूतविकार, मार्गना उत्पात, रोगीना भिन्न भिन्न भाव अने अवस्था, औषधिना गुण, अवगुण अने रोगीना भिन्न भिन्न रोगोमां भिन्न भिन्न औषधिओनुं साफल्य अथवा नैष्फल्य ए सर्वनी उत्तम रीते प्रथम कहेला त्रण प्रमाणोथी परीक्षा करवी जोइए; ए परीक्षाओमांनी केटलीएक परीक्षा पुरुषाश्रित नथी जेमके आत्मीयवल इत्यादि; अने केटलीएक परीक्षा पुरुषाश्रित छे, जेमके क्षुधा आदिनी वाधा. जे परीक्षाओ पुरुषाश्रित नथी अर्थात् ज्यां थनार मृत्युना उपद्रवनी पोताने प्रतीति नथी थती त्यां तेनी परीक्षा आप्तोपदेशद्वारा करवी अने ज्यां प्रतीति थाय छे त्यां प्रकृति अने विकृतिद्वारा तेनी परीक्षा करवी. विरुद्ध प्रकृति थवाथी बुद्धिमान् मनुष्ये जाणी लेवुं के जन्मथी पडेलो स्वभाव वदलावाथी अवश्य कोइ विकृति उत्पन्न थई छे. अमुकनी वातप्रकृति होय छे, अमुकनी पित्तप्रकृति होय छे अने अमुकनी कफप्रकृति होय छे; ते प्रकृति जातिप्रसक्ता, कुलप्रसक्ता, देशानुपातिनी, कालानुपातिनी, वयोनुपातिनी अने प्रत्यात्मनियता ए रीते पट् प्रकारनी छे. जेमके—

१ जातिप्रसक्ता (जाति—स्त्री पुरुषादि) स्त्री जातिने प्रसवकाळमां वातविनाशक औषध आपवुं जोइए, कारणके ते समये तेने वातनो प्रकोप होवानो संभव होय छे.

२ कुलप्रसक्ता—कुळनी परंपराथी कुष्ट तथा मृगी आदि रोगनी उत्पत्ति थाय ते.

३ देशानुपातिनी—अमुक देशना मनुष्योनी प्रकृति गरम अने अमुक देशना मनुष्योनी प्रकृति शीतल होय छे.

४ कालानुपातिनी—वैशाख अने ज्येष्ठने ग्रीष्मऋतु कहे छे, ए बन्ने महिनामां वायुनो संचय थाय छे, अने ए संचित वायुनो अषाढ तथा श्रावणमां कोप थाय छे अने एवीज रीतें भाद्रपद अने आश्विन मासने वर्षाऋतु कहे छे. ए महिनाओमां पित्तनो संचय थतां कार्तिक अने मार्गशीर्षमां कोप थाय छे. कालानुरुप प्रकृतिनो सारांश ए छे के जे ऋतुमां जेवी प्रकृति होवी जोइए तेथी विपरीत थवाथी अरिष्ट थएल छे एम समजवुं.

५ वयोनुपातिनी–वृद्धावस्थामां मनुष्यने कफप्रकृति थाय छे ते.

६ प्रत्यात्मनियता–क्षुधा पियासा आदि.

मनुष्य मात्रनी क्षुधा पिपासा आदि प्रकृति एक सरखी ज होय छे. पोतपोतानी जाति, कुळ, देश, समय, आयु अने आत्माना कारणथी मनुष्योनी भिन्न भिन्न प्रकृतिना भाव जणाय छे.

विकृति त्रण प्रकारनी होय छे. एक लक्षणनिमित्ता, बीजी लक्ष्यनिमित्ता, त्रीजी निमित्तानुरुप शरीरमां जे विकृतिनां चिह्नो सकारण विकृत थइ शरीरना कोइ कोइ अवयवोमां बंधाइ जाय अने फरी एज चिह्न वखतोवखत एज स्थानमां प्राप्त थाय तेने लक्षणनिमित्ता विकृति कहे छे; जे विकृति निदानोक्त निमित्तोने मळती होय ते लक्ष्यनिमित्ता कहेवाय छे, अने निमित्तार्थने अनुकरण करनारी विकृतिने निमित्तानुरुपा कहे छे. कदाच ए विकृति अकारण उत्पन्न थइ होय तो ते आयुष्यनुं प्रमाण जाणवामां निमित्तरूप थइ पडे छे. विना कारण रोगनी उत्पत्ति थवी ए वात असंभवित छे, एवीज रीते आयुनो क्षय अने मृत्युना चिह्नने अनुरूप ए निमित्तानुरुपा विकृति अन्तर्गत आयुनुं ज्ञान करावनारी गणाय छे. मनुष्योना शरीरनो वर्ण बे प्रकारनो होय छे, एक प्राकृतिक अने बीजो वैकारिक, तेमां " कृष्ण वर्ण " " कृष्ण श्याम " " श्याम गौर " तथा " गौर " विगेरे प्राकृतिकवर्ण गणाय छे अने " नीलश्याम " " ताम्रवर्ण " तथा हरित अने श्वेत ए बधा वर्ण वैकारिक छे. प्राकृतिक वर्णथी भिन्न अने प्रथम कोइ वखत शरीरमां नहि उद्भवेला वर्णोने पण वैकारिक समजवा. जे मनुष्यना अर्ध शरीरमां प्राकृतिक वर्ण अने अर्धमां वैकारिक वर्ण होय तथा जेनुं वामअंग अने दक्षिणअंग अथवा शरीरनो पूर्वभाग अने पश्चिमभाग तेवीज रीतनो होय अर्थात् अर्ध शरीर प्राकृतिक वर्णथी अने अर्ध शरीर वैकारिक वर्णथी युक्त होय ते मनुष्य मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे मनुष्यना मुख उपर अथवा नीचेना भागमां

वाम अथवा दक्षिण अंगमां तथा आगळ अथवा पाछळ वैकारिक वर्ण होय तेनुं पण मृत्यु थाय छे. एवीज रीते जेना एक अंगमां ग्लानि अने बीजा अंगमां हर्ष तथा एक अंगमां रौक्ष्य अने बीजा अंगमां स्निग्धता होय ते पण मरी जशे एम समजवुं. जे मनुष्यना मुखपर रंग बेरंगी झांइ देखाइ आवे अथवा तिल अने न्हानी न्हानी फोडलीओ उपडी आवे ते पण मृत्युवश बने छे. जे मनुष्यना नख, नेत्र, शरीर, मूत्र, विष्ठा, हाथ, पग, तथा होठ आदि विकृत वर्णथी युक्त होय अने वर्ण तथा इन्द्रिय बळहीन बनी गयां होय तेनुं आयुष्य तुरतमां क्षय पामे छे; अथवा अकस्मात् प्रथम न थएलो विकृतवर्ण रोगीना शरीरमां उत्पन्न थाय तो अवश्य ते मृत्युने प्राप्त थाय छे. मनुष्यनो स्वाभाविक स्वर हंस, कौंच, नेमि, दुन्दुभि, कलविङ्क, काक अने कपोतना स्वर जेवो होय छे. एडकग्रस्त, अव्यक्त, गद्गद्, क्षाम, दीन अने अनुकीर्ण स्वर वैकारिक गणाय छे; ए रीतना बीजा स्वरो तथा अभूत विपरीत स्वरनुं अकस्मात् उच्चारण थइ जाय ते पण वैकारिक स्वर लेखाय छे. जे स्वरोनी प्रकृतिमां विकार थइ जाय छे, ते स्वरोनी उत्पत्ति अनेक प्रकारे अत्यंत शीघ्रताथी थाय छे अने एक स्वर बोलवा जतां तेनी साथे अनेक स्वरनी प्रतीति थाय छे ए अमंगलसूचक छे जे मनुष्यना संपूर्ण अथवा अर्ध शरीरमां कोइ कारणथी अथवा कारण विना विकृत वर्ण देखाइ आवे तो तेने मृत्युनुं चिह्न मानवुं; जेम कोइ मनुष्यनुं मुख अर्ध भागमां नील, श्याम, ताम्रवर्ण अथवा रक्त होय, कोइनुं मुख अर्ध भागमां हर्षान्वित अने अर्ध भागमां ग्लानियुक्त होय तथा कोइनुं मुख अर्ध भागमां स्निग्ध अने अर्ध भागमां शुष्क होय तो तेवा चिह्नवाळा मनुष्यने मृतक समजवो. मरनार मनुष्यना मुख उपर अनेक प्रकारना तिल, रंग बेरंगी झांइ अथवा एक रंगनी रेखा तुरतमां ज उत्पन्न थाय छे. दांत तथा नखो उपर पुष्पना जेवो आकार प्रकट थाय तेमज दांतोमां कादवना तुल्य मेल अथवा रेती जेवुं चूर्ण भराएलुं जोवामां आवे तो तेने मृत्युनु लक्षण लेखवुं. बलहीन मनुष्यना होठ, हाथ, पग, नेत्र, मूत्र, विष्ठा अने नख विगेरेमां श्याम अथवा नीलादि रंग प्रकट थाय ते मृत्युसूचक छे. जे मनुष्यना उभय ओष्ठ परिपक्व जांबु जेवा वर्णने धारण करे ते मनुष्यने मृतक समजवो. जे रोगीना कंठमांथी एक स्वरनो उच्चार करतां अनेक स्वर निकळवा लागे ते पण मृत्युने प्राप्त थाय छे. क्षीण मनुष्यना स्वर तथा वर्णमां कोइ प्रकारनो विकार उत्पन्न थाय ते पण मृत्युनुंज चिह्न छे. जेम थनार फळनुं पूर्व रूप पुष्प होय छे, तेम मरनार मनुष्यनुं पूर्व रूप "अरिष्ट" एवा नामथी ओळखाय छे. केटलाएक पुष्प एवां होय छे के जेनां फळ थतां नथी अने केटलांएक फळ पण एवां होय छे के जेनां पुष्प होतां नथी, परंतु मृत्युना पूर्व रूपमां अरिष्ट

अर्थात् मृत्युनो उपद्रव अवश्य पुष्पनी पेठे वर्त्तमान होय छे. पूर्वरूप अरिष्टनी उत्पत्ति विना कदि पण मरण थतुं नथी. अरिष्टनी पाछळ अवश्य मृत्यु होय छे. वैद्यवर महर्षि वाग्भट्टे पण पोतानी संहितामां विवेचन आप्युं छे के जेम फळनी उत्पत्ति पहेलां पुष्प, अग्निनी उत्पत्ति पहेलां धूम्र अने वर्षानी उत्पत्ति पहेलां वादळांओ उदय पामे छे, तेम मृत्युना आगमन पहेलां अरिष्ट उदय थया विना रहेतो नथी. ए अरिष्ट दोषोना प्रकोपथी थाय छे. तेना बे भेद छे. एक स्थायी अने बीजो अस्थायी; तेमां दोषोनी शान्ति करवाथी ज्वर आदि नामनो अस्थायी अरिष्ट शान्त थाय छे. परंतु स्थायी अरिष्टनो विकार सूक्ष्म बनी शरीरना आन्तरिक अंगोपांगोमां पोतानो प्रभाव जमावी मनुष्यने प्राणरहित करे छे अर्थात् स्थायी अरिष्टथी अवश्य मृत्यु थाय छे. अरिष्टनुं मिथ्याज्ञान हमेशां हानिकारक छे, अरिष्ट न होय तेने अरिष्ट जाणनारा मनुष्ये पुष्पित अरिष्टद्वारा मृत्युज्ञान मेळववुं जोइए. जे मनुष्यना देहमांथी रात्रि दिवस अनेक वृक्ष तथा लताओथी भरेला वननां विविध पुष्पो समान सुगन्ध छुटतो होय तेने "पुष्पित अरिष्ट" वाळो समजवो अने ते एक वर्षनी अंदर देहनो त्याग करे छे. जेना शरीरमांथी उत्तम अथवा अधम कोइएक पुष्पना सरखो गन्ध निकळे ते पण एक वर्षनी अंदर मृत्युने प्राप्त थाय छे. जेना देहमांथी अनेक प्रकारनो दुर्गन्ध छूटे तेनी पण एज गति थाय छे. जेना स्वच्छ अथवा अस्वच्छ शरीरमांथी कारण विना सुगन्ध अथवा दुर्गन्ध निकळे ते पुष्पित अरिष्टवाळो मनुष्य एक वर्षथी अधिक जीवी शकतो नथी. जेना देहमांथी चंदन, कुष्ठ, अगर, तगर, मध्य, माल्य, मूत्र, परीष तथा शवना जेवो अथवा ए सर्वथी अतिरिक्त गन्ध कारणसर प्रकट थाय तो तेने पूर्वोक्त अनुमानद्वारा पुष्पित अरिष्टवाळो जाणी ते एक वर्षनी अंदर मरी जशे एम मानवुं. प्रकृतिस्थ मनुष्योना देहमां जे रस उत्पन्न थाय छे ते रस मरण समये बे प्रकारनो बनी जाय छे. कोइना देहमां अत्यंत माधुर्य होय छे अने कोइना देहमां अत्यंत विरसता व्यापे छे. विकृत रसने अनुमानथीज जाणी शकाय छे. मरण समये मनुष्यना देहमां वैरस्य उत्पन्न थवाथी मक्षिका, यूका, डांस अने मच्छर आदि दूर भागी जाय छे. ज्यारे मरण समय निकटमां आवे छे त्यारे मनुष्यना देहनो रस अत्यंत मधुर बनी जाय छे. एटला माटे स्नान करावेला अने चन्दनथी चर्चेला देह पर चारे तरफथी मक्षिकाओ आवी बेसे छे. घणे भागे स्पर्शथी रोगीना आयुष्यनुं प्रमाण थइ शके छे. प्रकृतिस्थ अर्थात् रोग रहित मनु-

ष्यना हाथथी रोगीना देहनो स्पर्श कराववो. शरीरना निरंतर स्पन्दमान अंगोनुं बन्ध थवुं, निरंतर उष्ण रहेनारा हाथ, पग, शिर अने छाती आदि अंगोनुं शितळ थवुं; कपोल तथा जंघा आदि मृदु अंगोनुं कठोर थवुं; ओष्ठ, मुख, हाथ तथा पग आदि स्निग्ध अंगोनुं रूक्ष थवुं; एक सरखा अंगोनुं विना कारण वधघट थवुं, सन्धिओनुं स्रंश, भ्रंश अने च्यवन थवुं; शरीरमां मांस तथा रक्तनी न्यूनता थवी, समग्र देहनुं कठिन थवुं, प्रस्वेदनुं बंध थवुं, शरीरनुं स्तंभन थवुं तथा स्पर्शने अयोग्य अंगोमां अकारण अत्यंत विकृतिनो उद्‌भव इत्यादि लक्षणो आसन्न मृत्युनां समजवां. रोगीना पग, जांघ, छाती, स्फिक्, उदर, पांसळी, पीठनुं हाडकुं, ग्रीवा, तालु, ओष्ठ अने ललाट आदि पृथक् पृथक् अंगो प्रस्वेदयुक्त अथवा शीतळ थइ जाय तो ते रोगीने मृतक समजवो अथवा ते थोडा समयमां मरी जशे एम मानवुं. जो पिंडिओनुं मांस अस्थिनो परित्याग करे अथवा जांघनुं मांस पोतानी जांघना अस्थिने छोडी दिए अथवा छातीनुं मांस छातीना अस्थिओने तजी दिए अर्थात् उक्त स्थानोनुं मांस शुष्क थइ जाय, गुदा बाहेर निकळी जाय, वृषण पोताना स्थानने छोडी दिए, गुह्येन्द्रिय पोताना स्थानने छोडी वांकु वळी जाय, नाभि पोताना स्थानने छोडी नीचे नमी जाय, अंस, स्तन, मणिक, हनु, नासिका, कर्ण, नेत्र, भ्रकुटी अने शंख आदि अवयवो पोतपोताना स्थानथी स्रस्त, व्यस्त अथवा च्युत थइ जाय तो तेवां लक्षणवाळो पुरुष स्वल्प समयमांज मरणने प्राप्त थाय छे. एवीज रीते श्वास, मन्या, दांत, पापण, नेत्र, केश, रोमावलि, उदर, नख अने आंगळीओनी पण परीक्षा करवी जोइए. जे रोगीनो श्वास अति दीर्घ अथवा अति मन्द होय तेने मृतक समजवो. जे मनुष्यना कंठनी नाडी फरकती बंध पडी जाय ते कदि जीवी शकतो नथी, तथा जे रोगीनां दांत श्वेत रंगना मेलथी भरेला होय अने तेना पर रेती जेवुं चूर्ण जामी गयुं होय ते रोगी मृत्युने आधीन थयो छे एम मानवुं. जे रोगीनां नेत्र प्रकृतिहीन अर्थात् स्वभावथी विलक्षण, विकृतियुक्त, अत्यंत बहार निकळेलां, अंदरना भागमां बहुज बेसी गएलां, अत्यंत वांकां, अत्यंत भ्रमित अथवा अश्रुधाराथी अति शिथिल बनी गएलां, निरंतर उघडेलां, निरंतर विंचाएलां अथवा वारंवार खुलतां अने वारंवार बंध थतां

---

१ बन्ने हाथनी नाडी, बन्ने पगनी नाडी, कंठ नीचेनी नाडी, नासिका नीचेनी नाडी, बन्ने कर्णनी नाडी अने जीहानी नाडी विगेरे फरकवानां स्थान छे. २ सरी जवुं. ३ बिलकुल तुटी जवुं. ४ शिथिल थवुं.

भ्रमयुक्त दृष्टिवाळां, विपरीत दृष्टिवाळां, हीन दृष्टिवाळां, व्यस्तदृष्टिवाळां, नकुळ जेवां; तथा पीत, अलात, कृष्ण, नील, श्याम, ताम्र, हरिन्द्र अने शुक्र आदि वैकारिक वर्णवाळा होय तो तेने गतायु समजवो; जो एवी दृष्टिवाळा रोगीनां पक्ष्म परस्पर चोटी गएलां होय तो पण तेनुं मृत्युज थाय छे. जेना केश तथा लोम उखडवा मांडे अने ते शा कारणथी उखडे छे ते जाणवामां न आवे त्यारे ते मनुष्यने मृत्यु प्राप्त थशे एम समजवुं. मूर्च्छा अथवा बेहोंशीना वखतमां आ परीक्षा करवानी नथी. जे रोगीना पेट उपर नसो चमकती होय अने ते नसोनो श्याव, ताम्र, हारिद्र अथवा शुक्लवर्ण होय तो ते मनुष्य मृतक समजवो. जे रोगीना नख, मांस अने रुधिर रहित होय तथा तेनो रंग पाकेला जांबु जेवो होय तो ते रोगीने गतायू गणवो. जे रोगीनी आंगळीओना टचाका न फूटे तेने पण मृतक मानवो. जे मनुष्यने आकाश पृथिवी जेवुं तथा पृथिवी घनयुक्त आकाश जेवी जोवामां आवे ते तुरतमां ज मरणने शरण थाय छे; आकाशनो वायु जेना जोवामां आवे, जे पासे पडेला प्रज्वलित अग्निने देखी न शके, जे निर्मळ जळनी अंदर जाळ देखे, जे स्थिर जळने चलायमान देखे, जे जागृतिमां मृतक मनुष्यने भयानक रूपवाळा राक्षसने अथवा बीजा कोई अद्‌भूत पदार्थने देखे तथा जे मनुष्य यथार्थ अग्निने नील, कान्तिहीन, काळो अथवा श्वेत देखे ते सात रात्रिथी वधारे वखत जीवी शकतो नथी. जे मनुष्य किरण रहित आकाशमां किरण देखे, वादळ रहित आकाशमां वादळांओ देखे अने वादळ विना विजळी जेना जोवामां आवे ते मनुष्य मरी जशे एम मानवुं. जे शुद्ध चन्द्र तथा शुद्ध सूर्यने नील वस्त्रथी आच्छादित करेल मृत्तिकाना पात्र तुल्य देखे, दिवसे अनुदित चन्द्रने देखे, अग्नि विना धूम्रने देखे, प्रभाहीन द्रव्यने प्रभायुक्त तथा प्रभायुक्त द्रव्यने प्रभाहीन देखे अने रात्रिमां अंगारने न देखे ते मनुष्यने मृतक समजवो. आयुनो क्षय थवाथी मनुष्यने दरेक द्रव्य विकृतरूपे देखाय छे, अर्थात् कांइने बदले कांइ जोवामां आवे छे. तेमज जे विकृतवर्ण, विकृत संख्या, विनिमित्त अने अदृश्य[१] पदार्थने देखे तथा सन्मुख स्थित थएला पदार्थने न देखे ते मनुष्य मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे मनुष्य शब्द विना शब्द सांभळे अने शब्द थता होय तेने बधिरनी

---

१ जे वस्तु आंख आगळ न होय, पोताथी दूर होय छतां कहेके अमुक मनुष्य पोताना घर अथवा गाममां फलाणु काम करी रह्यो छे अथवा आवते दिवसे एवुं बने के तेनुं कथन सत्य थाय ए अदृश्य.

पेठे न सांभळे तेमज कर्णना उभय छिद्रमां आंगळीओ नांखतां ज्वाला शब्द न सांभळे तेने गतायु गणवो. जेने दुर्गन्धमां सुगन्धनी तथा सुगन्धमां दुर्गन्धनी प्रतीति थाय अथवा सुगन्ध तथा दुर्गन्ध बन्नेनुं ज्ञान न थाय ते मनुष्य मृत्युथी बची शकतो नथी, परंतु एक एवो पण रोग थाय छे के मनुष्यने सुगन्ध के दुर्गन्ध बन्नेनु भान होतुं नथी छतां बलहानि के मृत्यु थतुं नथी. जे मनुष्यने मुखपाक विना खानपानमां विपरीत स्वाद आवे अर्थात् खाटाने बदले खारुं अने खारांने बदले गळ्युं लागे ते पण मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे मनुष्यने उष्ण, शीत, शुष्क, स्निग्ध, मृदु अने दारुण विगेरे पदार्थोना स्पर्शथी विपरीत भावना पेदा थाय तेनुं आयु क्षीण थयुं छे एम समजवुं. जेम मनुष्यने तीव्र तप कर्या शिवाय तथा विधिवत् योगने साध्या विना [1]अतीन्द्रीय पदार्थोनुं ज्ञान थाय तेमज जे पुरुष स्वस्थ छता चलायमान बुद्धिने लीधे पोतानी समस्त इन्द्रिओमां वैपरीत्य देखे ते स्वल्प समयमांज यमपुर भणी प्रयाण करे छे.

स्वप्नना सात प्रकार छे.

१ दृष्ट–जागृत अवस्थामा जोएल पदार्थनुं दर्शन थाय ते.
२ श्रुत–सांभळेला पदार्थ जोवामां आवे ते.
३ अनुभूत–अनुभवेला पदार्थ जोवामां आवे ते.
४ प्रार्थित–इच्छित पदार्थ जोवामां आवे ते.
५ कल्पित–कल्पेला पदार्थो जोवामां आवे ते.
६ भाविक–आगळ उपर थनारी वात पूर्वे जोवामां आवे ते.
७ दोषज–वात, पित्त अने कफना कोपथी जे स्वप्न थाय ते.

आ सप्त स्वप्नोमांथी प्रथमनां पांच निष्फळ अने बाकीनां बे सफळ गणाय छे दिवसे थएलुं अति न्हानुं, अति दीर्घ तथा रात्रिना प्रथम भागमां अथवा पाछला भागमां जोएलुं स्वप्न हमेशां निष्फळ होय छे. जे स्वप्न जोया पछी उंघ न आवे ते तात्कालिक फळने आपनारुं छे. अमंगल स्वप्नने जोया पछी एज निद्रामां उत्तम स्वप्न देखाय तो प्रथम थएला अशुभ स्वप्ननुं फळ व्य-

---

१ जे इन्द्रिय द्वारा जे वस्तुनुं ज्ञान थवुं जोइए ते न थता तेथी अतिरिक्त ज्ञान थाय तेने अतीन्द्रिय कहे छे. जेमके रुपनुं ज्ञान नेत्रथी थवुं जोइए तेने बदले शब्द सांभली कही आपवुं के बोलनारनुं रुप अमुक प्रकारनुं छे. इत्यादि.

र्थताने धारण करे छे. वात, पित्त, अने कफ ए त्रिदोषना कोपथी मनोवाही प्रवाहोने पूर्ण करी दारुण अने अदारुण एम बे प्रकारनां स्वप्न थाय छे. मनुष्यने निद्रामां मनना कारणथी जे अनेक प्रकारनां स्वप्नो जोवामां आवे छे, ते वखते सफळ थाय छे अने वखते निष्फळ पण थाय छे. जे मनुष्यनुं बळ घटतुं जतुं होय अने जेने प्रतिश्याय नामनो रोग लागु पड्यो होय एवो माणस कदाच स्त्रीसंग करे तो तेनुं शोष नामना रोगथी मृत्यु थाय छे. जे मनुष्य स्वप्नमां श्वान, उंट अथवा गर्दभ उपर चढी दक्षिण दिशा तरफ जतो होय तेनुं यक्ष्मा नामना रोगथी मृत्यु थाय छे. जे मनुष्य मरेला मनुष्यनी साथे मद्यपान करे अने जेन स्वप्नमां श्वान खेंचता होय ते माणस तुरतज प्रबळ ज्वरना वेगथी मृत्युवश थाय छे. जे मनुष्य स्वच्छ आकाशने लाक्षानी माफक लाल देखे ते रक्तपित्तना रोगथी मृत्यु पामे छे. जे मनुष्य स्वप्नमां लाल पुष्पोनी माळाने धारण करी पोताना समग्र देहने रक्तवर्णथी रंगे अने लाल वस्त्रोने धारण करी हसतो हसतो स्त्रीओने हाथे हराइ जाय तेनुं पण रक्तपित्तथीज मृत्यु थाय छे. जे मनुष्यने स्वप्नमां उदरशूल थाय, पेटे आफरो चढे, दुर्बळता प्राप्त थाय, अथवा नखो विवर्ण बनी जाय तेमनुं गुल्म नामना रोगथी मृत्यु थाय छे. स्वप्ननी अंदर जेमनी छातीमां कंटकनी वेल उत्पन्न थाय ते मनुष्यनुं मरण पण गुल्म रोगथी थाय छे. हाथ अडाडतांज जेनी त्वचा फाटी घाव पडी जाय, ते मनुष्यनुं कुष्ठ नामना रोगथी मरण थाय छे. जे स्वप्नमां नग्न थइ देहमां घृतनुं लेपन करे अथवा प्रज्वलित नहि थएला दहनमां हवन करे अथवा पोतानी छातीमांथी उत्पन्न थएल कमळवृक्षने प्रफुल्लित देखे ते मनुष्यनुं पण कुष्ठथीज मृत्यु थाय छे. जे मनुष्ये उत्तम रीते स्नान करी चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थोथी शरीरे लेप कर्यो होय छतां तेना शरीरपर मक्षिका आदि जंतुओ बेसतां होय तो ते मनुष्यनुं प्रमेह नामना रोगथी मृत्यु थशे एम समजवुं. जे मनुष्य स्वप्नमां चांडालनी साथे अनेक प्रकारना स्निग्ध पदार्थोनुं भोजन करे ते पण प्रमेहथीज मृत्यु पामे छे. जेने अस्थानसंभव ध्यान, आयाम, उद्वेग, मोह, अरति अने बलहानि थाय तेनुं मृत्यु उन्मादथी निपजे छे. जे मनुष्य भोजनथी द्वेष करे अर्थात् खाइ न शके

---

१ मुख, कर्ण, नासिका, गुदा, मूत्रस्थान, नेत्र, तथा प्रस्वेदथी रुधिर वहे अने आखा शरीरमां धारां पडी जाय एवा रोगने रक्तपित्त कहे छे.

२ उदरमां एक गांठ थाय छे अने तेनी पीडा अति असह्य थइ पडे छे, तेमज भूख न लागे अने शरीर सुकातुं जाय तेवा रोगने गुल्म कहे छे. ३ मनने क्यांइ चेन न पडे ते.

अने जेनुं चित्त चलायमान रह्या करे एवो [1]उदर्द नामना रोगवाळो पण उन्मादथीज मरण पामे छे. अति क्रोधी, अति भीरु, निरंतर हसमुखो, वारंवार मूर्छित तथा पिपासायुक्त थनारो तेमज स्वप्नमां राक्षसो साथे नृत्य करनारो मनुष्य उन्मादना व्याधिथी मृत्युवश थाय छे. जे मनुष्य वगर अन्धकारे अंधारुं देखे, कोइए बोलावेल न होय छतां पोताने कोइ बोलावे छे एम धारी निद्रामांथी जागी उठे अने जागृत थया छतां पण नाना प्रकारना स्वरोने सांभळे ते मृगी नामना रोगथी मरण पामे छे. जे मनुष्य स्वप्नमां मदोन्मत्त थइ नाचवा लागे अने ते समये कोइ मृतक मनुष्य तेने मारवा लागे एनुं पण मृगी रोगथीज मृत्यु थाय छे. जागृत मनुष्यनी हनु, मन्या अने नेत्रो स्तब्ध बनी जाय अर्थात् बीलकुल हले नहि त्यारे समजवुं के ते माणस धनुर्वात[2] नामना रोगथी पीडित थइ मृत्यु पामशे. जे मनुष्य स्वप्नमां पुरी तथा मालपुआ आदि पक्वान्न खाय ते पण धनुर्वात नामना रोगथीज वमन करी मरण पामे छे. जेना शिरकेशमां वंश, गुल्म अथवा लता आदिनी प्रतीति थाय, जेना शिर अथवा शरीर माथे काक आदि पक्षी बेसे; स्वप्नमां जेनुं शिर मुंडाय, जेने स्वप्नमां गृध्र, उलूक, श्वान अने काक आदि दुष्ट पक्षी रोके, जेने राक्षस, प्रेत, पिशाच, स्त्री, चांडाल अने असुरसमूह स्वप्नमां रोकी राखे. जे स्वप्नमां वंश, वेत्र, लता, पाश, तृण तथा कंटक आदिथी पीडित थाय अर्थात् संकटमां मुंझाइ चाल्या करे अथवा पडी जाय; जे स्वप्नमां रेताळ जमीन उपर, सर्पना राफडा उपर, भस्ममां, श्मशानमां, देवस्थानमां, खाडामां, मूत्र तथा पुरीष आदिथी युक्त खराब जळमां, कादवमां, अथवा जल रहित कूपमां पडी जाय, जे मनुष्य स्वप्नमां नदीनी अंदर स्नान करतो करतो तणाइ जाय, जे घृत अथवा तेलनुं पान करे, जे मनुष्य स्वप्नमां शरीरे तेलनुं मर्दन करे, वमन करे, जुलाब लिए, जेने स्वप्नमां सुवर्ण मळे, जे स्वप्नमां कोइनी साथे युद्ध करे, बन्धन पामे, हारी जाय, पगरखां खोवे, पोता उपर धूळ अथवा पगरखांने पडतां जोवे, जेने स्वप्नमां पोताना मृतक मनुष्यो द्वारा त्रास उत्पन्न थाय, जे स्वप्नमां दांत, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र, अग्नि आदि देवता, दीपक, चक्षु अथवा पर्वत आदिने पडतां, नष्ट थता अथवा त्रुटी जता जोवे; जे पुरुष स्वप्ननी अंदर लाल पुष्पोना वनमां, वध भूमिमां अथवा अन्धकारमय गुफामां

---

१ अतरडाना प्रहारथी जेम त्वचामां छालां पडी जाय छे तेम आखा शरीरमां छालां पडी जाय अने तेमां चळ आवे, सोइ भोंकवा जेवी पीडा थाय, वमन थाय, दाह थाय अने उक्त छालांओ रक्तवर्ण बनी जाय तेने उदर्द–पित्ती कहे छे. २ शरीर वारंवार धनुष्यनी माफक नमी जाय, वारंवार मूर्छा आवे अने जेमां ताण थाय तेने धनुर्वात कहे छे.

प्रवेश करे; जे मनुष्य स्वप्नमां लाल पुष्पोने धारण करी खडखडाट हसे अथवा नग्न थइ दक्षिण दिशामां जाय अथवा वानरनी साथे घोर वनमां प्रवेश करे; जे पुरुष स्वप्नमां नग्न, दंडधारी, कृष्णवर्ण, अने रक्त नेत्रवाळा तथा भगवां वस्त्रने धारण करनार असौम्य मनुष्यने देखे अने जेने स्वप्ननी अंदर काळी पापिणी, दुराचारिणी, लांबा केशवाळी, लांबा नखवाळी, दीर्घ स्तनवाळी तथा कुत्सितमाळा अने कुत्सित वस्त्रोने धारण करनारी स्त्रीनां दर्शन थाय ते मनुष्यनुं मृत्यु थाय छे; कारण के ए बधां स्वप्नो दारुण गणाय छे. दारुण स्वप्नने देखी रोगी मरण पामे छे अने निरोगी रोग युक्त थाय छे. दुष्ट स्वप्नने देखी तेना दुष्ट फळथी भाग्येज बची शकाय छे. जे मनुष्यने बोलवाथी हृदय उपर अत्यंत पीडा थाय, जम्या पछी स्वल्प समयमांज वमन थाय, कदाच भोजन करेलुं अन्न उदरमां रहे तो पण ते पचे नहि, पोतानुं बळ निरंतर घटतुं जणाय, तृषा वधती जाय अने हृदयमां शूळ पेदा थाय ते वधारे वखत जीवी शकतो नथी, वैद्ये एवा रोगीने त्याज्य गणवो. कारणके कोइ पण औषध एवा रोगने अटकावी शकतुं नथी. जेने गंभीरा[1] नामनी हेडकी उत्पन्न थाय अने मळ निकळवाना द्वारथी रुधिर वहेवा लागे तेवा रोगीने आत्रेयी आज्ञानुं स्मरण करी वैद्ये औषध आपवुं नहि. कारणके मृत्यु निकट आवे त्यारेज गंभीरानी उत्पत्ति थाय छे. जो दुर्बळ देहवाळा मनुष्यने आफरो चढे अथवा अतिसार थइ आवे तो तेनुं जीवन कठिन थइ पडे छे. जे रोगी दुर्बळ होय अने आफरो तथा पिपासानी वृद्धिथी पीडित थतो होय ते अवश्य मरण पामे छे. जेना शरीरमां निरंतर बे प्रहर पर्यंत ज्वर रहेतो होय, शुष्क खांसी दिन प्रतिदिन वृद्धि पामती होय अने मांस घटतुं जतुं होय एवा रोगीने मृतक मानवो जोइए. जेना मळ तथा मूत्र ग्रन्थि युक्त थइ निकळतां होय अने शरीर हर वखते थंडुं पडी जतुं होय एवा मनुष्यने कदाच उदरनो रोग होय तो तेनुं श्वासथी मृत्यु थाय छे. जेनो कुक्षिस्थ श्वयथु हाथे अथवा पगे उतरे ते पोताना कुटुम्बिओने क्लेश आपी श्वासरोगथीज प्राण रहित बने छे. जे रोगीना पगमां सोजा होय अने ए सोजा पिंडीए तथा जांघ उपर चडे तो ते कदिपण बचवा पामतो नथी. जे मनुष्यना हाथ, पग, गुह्य अने उदर उपर सोजा चडी गया होय तथा जेना आहार, वर्ण अने बळ मन्द

१ जे हेडकी नाभि पासेथी उत्पन्न थइ गंभीर शब्द करे तेने "गंभीरा" कहे छे अने तेनाथी पिपासा, ज्वर, अन्न उपर अरुचि, शोथ, कृशता, बकवाद, श्वास, अतिसार, प्रस्वेदनुं आधिक्य, कंठमां कफनुं बोलवुं, शरीरे शीतलता प्राप्त थवी अने अन्तर्दाह आदि अनेक उपद्रव थाय छे.

थइ गयां होय ते रोगी त्याज्य गणाय छे. जे मनुष्यने कासनी साथे लीलो, पीळो अथवा लाल कफ पडतो होय, जेने सान्द्रप्रमेहनी साथे रोमोद्गम थतो होय, सोजा चडी गया होय, खांसी तथा ज्वर पण लागु पडेल होय अने मांस सुकाइ जवाथी मात्र अस्थिओज देखातां होय एवो रोगी पण त्याज्य गणाय छे. अर्थात् एवा रोगीनी चिकित्सा न करवी, कारणके जेने सान्द्रप्रमेहनो रोग लागु पड्यो होय ते माणस कदि पण जीवी शकतो नथी. बळहीन अने दुर्बळ मनुष्यना त्रणे दोषो कुपित थइ ज्यारे कोइएक प्रकारना रोगने प्रगट करे त्यारे ते मनुष्यनुं जीवन दुर्बळ छे एम जाणवुं जे दुर्बळ मनुष्यने प्रथम ज्वर तथा अतिसार थयेल होय अने पाछळथी सोजा चडे तेनुं मृत्यु पण तुरतमां थाय छे. जे अत्यंत कृश होय, जेने तृषा बहुज लागती होय, जेनी आंखनी कीकी स्थिर थइ जती होय अने जेने श्वास पण उपडी चुक्यो होय एवा पांडुरोगी तथा उदररोगीनुं जीवन दुर्लभ छे. जे रोगीनां हनु तथा मन्या जकडाइ गयां होय, जेने तृषा वधती जती होय, जे निर्बळ होय अने जेना प्राणनी स्थिति मात्र छातीमांज होय ते रोगी त्याज्य गणाय छे. जेनुं शरीर शिथिल थइ गयुं होय, जेने कोइपण रीते चेन न पडतुं होय अने जेनुं मांस, बळ तथा आहार क्षीण थइ गयां होय ते कदिपण मृत्युथी बची शकतो नथी. जेने विरुद्ध कारणोथी रोग उत्पन्न थयो होय अने तेनी चिकित्सा पण विपरीत थइ होय एवा रोगीने शीघ्रताथी वृद्धि पामेलो दारुण रोग प्राण रहित करे छे. जे मनुष्यनुं बळ, ज्ञान, आरोग्य तथा मेद, मांस अने रक्त क्षीण थइ गयेल होय ते तुरतमांज मरण पामे छे. जेना शरीरमां विविध रोगो हमेशां वृद्धि पामता जता होय अने जेनो स्वभाव क्षणे क्षणे बदलतो होय तेवा रोगीना प्राण मृत्यु सहजमां हरी ले छे. जे मनुष्यने पोतानी अथवा अन्यनी छाया जोवामां न आवे परंतु ए छाया सिवाय बीजी वस्तुओ जोवामां आवे ते मनुष्य चिकित्सा करवा योग्य रहेतो नथी. जे मनुष्य चन्द्रनी चांदनीमां, सूर्यना तापमां, दीपकना प्रकाशमां, जलमां, दर्पणमां अथवा एवा कोइ अन्य पदार्थोमां पोतानी छाया न देखे ते तथा जे उक्त स्थळोमां छायाने विकृत अर्थात् आडीअवळी, वांकीचुकी वे मस्तकवाळी अने हाथ तथा पग आदि

---

१ सन्ध्या समये पात्रमां भरेलुं मूत्र आखी रात्री राखी मुकवामां आवे अने प्रभातमां तेनी जेवी स्थिति थाय तेवी रीतनुं मूत्र जे मनुष्यनुं होय अर्थात् डोळुं, फाटेलुं, मेलुं अने जेमां कांइ रेती जेवो भाग नीचे बेसी गयो होय तेवुं अने दुर्गन्धियुक्त जेटुं मूत्र होय तेने सान्द्रप्रमेह लागु पड्यो छे एम जाणवुं, एवा रोगीने निरंतर निर्बळता वधती जाय छे.

अवयवोना वधघटवाळी देखे ते मनुष्य अवश्य मरण पामे छे. जे मनुष्यनी छाया छिन्नभिन्न, भांगीतुटी, आकुळव्याकुळ, न्हानी म्होटी, नष्टभ्रष्ट, स्थूलसूक्ष्म, बे भागमां विच्छिन्न, शिरहीन, लांबी अथवा कोइ बीजी रीते विकृत देखाइ आवे ते मनुष्य वगर विलंबे मृत्युवश थशे एम मानवुं. नेत्र आदिना रोगने लीधे अथवा दर्पण आदि स्थानना विकारने लीधे कदाच विकृत छाया जोवामां आवे तो ते कांइ मृत्युना कारणरुप थती नथी. जे मनुष्यने स्वप्नमां पोतानी छायानो आकार, प्रमाण, वर्ण तथा प्रभा विकृत देखाय ते पण मृत्यु पामे छे. छायानी आकृति सुषमा अने विषमा ए रीते बे प्रकारनी छे तथा तेनुं प्रमाण मध्य, अल्प अने महत् ए रीते त्रण प्रकारनुं छे. जे सामान्य प्रमाण अने आकृतिने अनुसरी जळ, दर्पण अथवा आतप आदिमां छाया पडे तेने प्रतिच्छाया कहे छे अने तेमां वर्ण तथा प्रभानी पण स्थिति होय छे. आकाश आदि [1]पंचमहाभूतोने अनुसरी मनुष्यनी छाया पांच प्रकारनी होय छे. कारण के ए पंचमहाभूतथीज शरीरनी उत्पत्ति छे, एटला माटे छायाना नाम पण एने अनुसरीनेज आपवामां आव्यां छे जेमकेः—

१ आकाशीय छाया–निर्मळ, नीलवर्ण, सचिक्कण अने प्रभावाळी होय छे.

२ वायवी छाया–रुक्ष, काळी, लाल अने प्रभाहीन होय छे.

३ आग्नेयी छाया–विशुद्ध, लाल, कान्ति युक्त अने जोवामां मधुरी होय छे.

४ आंभसी छाया–शुद्ध, स्फाटिक समान निर्मळ अने स्निग्ध होय छे.

५ पार्थिवी छाया–स्थिर, स्निग्ध, घन, श्लक्ष्ण, श्याम अने श्वेत होय छे.

वायवी छाया क्लेश अने विनाशने आपनारी होवाथी निन्दनीय छे, बाकीनी चारे छायाओ सुखनो उदय करनारी गणाय छे.

सर्व प्रभा तैजसी होय छे अने ते रक्ता, पीता, सिता, श्यावा, हरिता, पांडूरा तथा असिता ए रीते सात प्रकारनी गणाय छे. तेमां जे प्रभा विकासवाळी स्निग्ध अने विस्तृत होय ते शुभ अने रुक्ष, मलिन तथा संक्षिप्त होय ते अशुभ लेखाय छे. छाया वर्णनो पराभव करे छे अने प्रभा वर्णने प्रकाशमां लावे छे. छाया समीपना भागमां देखाय छे अने प्रभा दूरथी पण देखाय छे. कोइ मनुष्य एकी वखते छायाहीन के प्रभाहीन होतो नथी, प्रभानो आश्रय करी रहेली छायाज मनुष्यना शुभाशुभ भावोने प्रकट करे छे. जे मनुष्योनी आंखोमां कमळो होय,

---

१ पृथ्वी, जळ, तेज, वायु अने आकाश ए पंचमहाभूत कहेवाय छे.

मुख तथा गंडस्थळ मांसथी पूर्ण होय, मन बेचेन होय अने शरीर उष्ण होय ते रोगीने बचाववा-नो एके उपाय नथी. जे मनुष्यने शय्या उपरथी उठाडतां मूर्च्छा आवी जती होय अने जे वारं-वार प्रलाप करतो होय एवो मनुष्य सात दिवसथी अधिक आयुष्य भोगवी शकतो नथी. जेने प्रतिलोमगामी अने अनुलोमगामी ए बन्ने प्रकारना रोग लागु पड्या होय तथा जेनो मेद पण दूषित थइ गयो होय ते मनुष्य पंदर दिवसथी वधारे जीवतो नथी. जे मनुष्य रोगोथी उपरुद्ध अथवा आकर्षित होय, बहुज थोडुं खाइ शकतो होय छतां मळमूत्रनी अधिक प्रवृत्तिवाळो होय तो तेनी चिकित्सा कदि पण करवी नहि अर्थात् एवो रोगी मृत्यु पामे छे. बळनी वृद्धि करनार घृत तथा दुग्ध आदि पदार्थोनुं सेवन कर्या छतां पण जेनुं बळवर्ण समेत क्षीणता पामतुं जाय ते मनुष्य जीवी शकतो नथी. जे रोगी दुर्बल छतां प्रथम करतां वधारे भोजन करे अने तेना मळ मूत्रनी प्रवृत्ति अल्प होय तो तेनुं मृत्यु समजवुं. जे रोगीना कंठमां घुरघुर शब्द थतो होय ते तथा जेने श्वास, शिथिलता, अतिसार, बलहीनता, तृषा अने मुखमां शुष्कता होय ते सत्वर मरण पामे छे. जे रोगीनो श्वास मंद पडी गयो होय अने जे कुटिल भावथी व्याधिविद्ध होय अर्थात् जेने बुरी रीते बेचेनी लागु पडेली होय तेने मृतक समजवो. जेने उर्ध्वश्वास अने कफनी अधिक-ता होय तथा जेनां वर्ण, बळ अने आहार क्षीण थइ गयां होय ते पण जीवतो रही शकतो नथी. जेनां नेत्रोनो अग्रभाग उंचो होय, जेना शरीरमां कंप होय तथा जे तृषित, निर्बळ अने शुष्क मुखवाळो होय ते मृत्युथी बची शकतो नथी, जेनां गंडस्थळ उंचा थइ गयां होय तथा जे दारुण ज्वर, कास अने शूळथी पीडित थतो होय तथा जेने अन्न उपर अरुचि होय ते कदि पण बचतो नथी. जेनां नेत्र, शिर अने जिह्वा फाटी जतां होय; भ्रकुटी ढळी पडी होय तथा जिह्वा कंटकित थइ गइ होय ते मनुष्य मरण पामे छे. जेनी गुह्येन्द्रिय संकोचाएली होय अने अंडकोश लटकता होय अथवा गुह्येन्द्रिय लटकती होय अने अंडकोश संकुचित होय ते रोगीने मृतक मान-वो. जेनुं मांस क्षीण थतां केवळ त्वचा अने अस्थिज बाकी रहे तथा जेनो आहार पण घटी गयो होय एवो रोगी एक महिनाथी अधिक जीवी शकतो नथी. जे रोगीने पोतानी छायानुं शिर नीचुं अथवा वाकुं देखाय अथवा छाया शिरहीन देखाय ते मनुष्य चिकित्साने योग्य रहेतो नथी. कोइ-पण प्रकारना नेत्र रोग विना जे रोगीना पलक दृष्टिने अवरोध थाय तेवी रीते परस्पर चोटी गयां होय तेने मृतप्राय समजवो. जेने सोजा तथा फेफसांनो रोग होय तथा जेनी आंखना डोळा एवा फूली गया होय के नीचे उपरनी पापणो परस्पर मळी शकती न होय अने ते डोळाओ चीपडाथी

भरेला रहेता होय तो ते मनुष्यने मृतकनी माफक मानवो. जेना शिरमां अथवा भ्रकुटीमां प्रथम कदी पण न थएल एवी मांग अथवा वर्तक एकाएक देखाइ आवे तेने पण मृतक समजवो. केशने खेंची काढतां जेना शिरमां कोइपण प्रकारनो क्लेश न थाय ते मनुष्य भले रोगी होय के निरोगी होय, परंतु छ रात्रिथी अधिक जीवी शकतो नथी. जे मनुष्यना वाळ तेल चोपडया विना स्निग्ध देखाता होय, ते रोगीने काळनो कोळीओ समजवो. जेना नाकनी डांडी अति स्थूल थइ गइ होय अने तेना उपर सोजो न चडयो होय छतां सोजा जेवुं मालुम पडतुं होय ते रोगी बचवा पामतो नथी. जेनी जिह्वा अत्यंत लांबी अथवा अत्यंत टुंकी थइ जाय ते अने जेनी नासिका अत्यंत सुकाइ गएली होय ते मनुष्यनुं जीवन दुर्लभ जाणवुं. जेनां मुख, नासिका अने ओष्ठ अत्यंत श्वेत, काळां अथवा लोहित थइ जाय अथवा कोइ पण विकारने लीधे अति नीलवर्ण थइ जाय ते रोगी रोगथी मुक्त थतो नथी. जेना दांत अस्थिनी माफक अकस्मात् श्वेत बनी जाय अथवा ए दांत उपर कोइ पण प्रकारनुं मंजन लगाड्या शिवाय अथवा दातण कर्या शिवाय पुष्पना जेवी आकृति जोवामां आवे तेमज जेनां दांत पंकथी संवृत्त होय एवो रोगी बची शकतो नथी, जेनी जिह्वा स्तब्ध, निश्चेतन, म्होटी, कंटकित, कृष्णवर्ण, अने शुष्क थइ जाय ते रोगी अवश्य मरण पामे छे. लांबा श्वास लेनारो जे रोगी मन्द श्वास लेवा लागे अने चेष्टा रहित बनी जाय तेने त्याज्य गणवो. जे रोगीना हाथ, पग, मन्या अने तालु अत्यंत ठंडा पडी जाय अथवा कठिन बनी जाय अथवा कोमळ थइ जाय तेने गतायु समजवो. जे रोगी पोतानी जंघाओने परस्पर घसे, पगने उंचा करी पछाडे अने मुखने वारंवार वांकु करे ते पण मरण पामे छे. जे रोगी नखोने दांतथी कापे तथा नखोथी केशने खेंची काढे तेमज काष्ठथी पृथ्वीपर लीटा काढे ते मनुष्य रोगथी मुक्त थतो नथी. जे मनुष्य जागृत होवा छतां दांतोने खाय अर्थात् दांतोने परस्पर चावी कडकडाटी बोलावे, निष्प्रयोजन रुदन करे अथवा हसवा लागे अने जेने पोताना दुःखनुं भान न होय ते रोगी जीवी शकतो नथी. जे रोगी वारंवार हसतो होय, उंचे अवाजे पुकार करतो होय, पगथी शय्याने प्रहार करतो होय अने हाथ उंचा करी नासिकानां तथा कर्णनां छिद्रोनो वारंवार स्पर्श करतो होय ते रोगीनुं जीवन स्वल्प छे एम समजवुं. जे रोगीने पूर्वे सघळा पदार्थोमां रुचि होय अने पछीथी तेमां अरुचि उत्पन्न थाय ते रोगी पण बचतो नथी. जेनी ग्रीवा मस्तकना भारने उपाडी न शके, जेनी पीठ आत्माना भारनुं वहन न करी शके अने हनू मुखमां रहेली वस्तुने संभाळी न शके अर्थात् चावी न शके एवा मनुष्यने शवतुल्य समजवो. मरनार मनुष्यने प्रथम एकदम ज्वरनो

संताप थाय छे, तृषा वधे छे, मूर्छा आवी जाय छे, बळनी क्षीणता थाय छे अने संन्धिओ त्रुटता होय तेम पीडा उपजावे छे. प्रलेपक ज्वरवाळा रोगीने जो प्रभात समये प्रस्वेद आवतो होय तो ते रोगीनुं जीवन दुर्लभ जाणवुं. जेना कंठमां आहार न उतरतो होय, जेनी जिह्वाए कंठमां प्रवेश कर्यो होय अने जेनुं बळ दिनप्रतिदिन क्षीण थतुं जतुं होय ते रोगी तुरतज मरण पामे छे. जे बन्ने प्रपाणिने हलावी मस्तकने पण हलावे अने एवुं करवाथी तेना ललाट उपर प्रस्वेद आवी जतो होय तो ते रोगी मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे रोगीनां, बन्ने नेत्रो श्याम, शिथिल अथवा हरित वर्णनां बनी जाय ते जीवी शकतो नथी. जे रोगी मूर्छित, शुष्कमुख अने व्याधिओथी संविद्ध होय ते पण बचतो नथी. जे रोगीनी शिरा हरित वर्णनी होय, जेना लोमकूप संवृत्त होय अर्थात् पृथ्वी उपर जेम घास छवाइ जाय छे तेम रोमावलि छवाएली होय अने जेने खाटा पदार्थो खावानी अभिरुचि होय तेवो रोगी पित्तना आधिक्यथी प्राण रहित थाय छे. जे मनुष्यना हाथ पग तथा मुख आदि अवयवो सुशोभित होय अने शरीर शुष्क थतुं जाय तेमज बळ घटतुं होय एवो रोगी राजयक्ष्मा नामना रोगथी मरण पामे छे. जेनी कन्धरामांथी आगनी माफक ताप निकळतो होय, जेने हेडकी उपडी होय, जे रुधिरनुं वमन करतो होय, जेने आफरो चढतो होय अने जेना पडखांमां शूळ प्रगट थतुं होय ते पुरुष शोष नामना रोगथी मृत्यु पामे छे. शोष

---

१ माधवनिदानमां लख्युं छे के कम्प, प्रलाप, परितापन, शीर्षपीडा, प्रौढ प्रभाववाळी पवित्रतामां तत्परता, अन्य चिन्ता, प्रज्ञानो नाश, अने विकळतापूर्वक प्रचुर प्रवाद ए वधां प्रलापज्वरनां लक्षण छे. ए प्रलापज्वरवाळो पुरुष तुरतज पितृपालना पदने प्राप्त थाय छे अर्थात् विनाश पामे छे.

२ शोप नामना रोगमां श्वास, हाथ पगमां अशक्ति, कफनुं नीकळवुं, तालुमां शुष्कता, वमन, मन्दाग्नि, उन्मत्तता, पीनस, कास, अहर्निश निद्रा, चक्षुमां श्वेतता अने मांस खावानी तथा स्त्रीसंगनी इच्छा वगेरे थाय छे; तेमज उभय अंसमां अभिताप, हाथपगमां दाह, सर्व अंगमां ज्वर, अवाजनुं बेसी जवुं, दाह, अतिसार, मुखथी रुधिरनुं नीकळवुं, मस्तकनुं भारे रहेवुं, अन्नथी द्वेष, शुष्क कास अने जटां स्वप्नोनुं जोवुं, वगेरे लक्षणो शोप रोगनां छे, तेने राजयक्ष्मा पण कहे छे. रुधिर अने मांसने शोपी जाय छे एटला माटे ते रोगनुं नाम "शोप" ए रीते प्रसिद्ध थएल छे.

भरेला रहेता होय तो ते मनुष्यने मृतकनी माफक मानवो. जेना शिरमां अथवा भ्रकुटीमां प्रथम कदी पण न थएल एवी मांग अथवा वर्तक एकाएक देखाइ आवे तेने पण मृतक समजवो. केशने खेंची काढतां जेना शिरमां कोइपण प्रकारनो क्लेश न थाय ते मनुष्य भले रोगी होय के निरोगी होय, परंतु छ रात्रिथी अधिक जीवी शकतो नथी. जे मनुष्यना वाळ तेल चोपडया विना स्निग्ध देखाता होय, ते रोगीने काळनो कोळीओ समजवो. जेना नाकनी डांडी अति स्थूल थइ गइ होय अने तेना उपर सोजो न चडयो होय छतां सोजा जेवुं मालुम पडतुं होय ते रोगी बचवा पामतो नथी. जेनी जिह्वा अत्यंत लांबी अथवा अत्यंत टुंकी थइ जाय ते अने जेनी नासिका अत्यंत सुकाइ गएली होय ते मनुष्यनुं जीवन दुर्लभ जाणवुं. जेनां मुख, नासिका अने ओष्ठ अत्यंत श्वेत, काळां अथवा लोहित थइ जाय अथवा कोइ पण विकारने लीधे अति नीलवर्ण थइ जाय ते रोगी रोगथी मुक्त थतो नथी. जेना दांत अस्थिनी माफक अकस्मात् श्वेत बनी जाय अथवा ए दांत उपर कोइ पण प्रकारनुं मंजन लगाडया शिवाय अथवा दातण कर्या शिवाय पुष्पना जेवी आकृति जोवामां आवे तेमज जेनां दांत पंकथी संवृत्त होय एवो रोगी बची शकतो नथी, जेनी जिह्वा स्तब्ध, निश्चेतन, म्होटी, कंटकित, कृष्णवर्ण, अने शुष्क थइ जाय ते रोगी अवश्य मरण पामे छे. लांबा श्वास लेनारो जे रोगी मन्द श्वास लेवा लागे अने चेष्टा रहित बनी जाय तेने त्याज्य गणवो. जे रोगीना हाथ, पग, मन्या अने तालु अत्यंत ठंडा पडी जाय अथवा कठिन बनी जाय अथवा कोमळ थइ जाय तेने गतायु समजवो. जे रोगी पोतानी जंघाओने परस्पर घसे, पगने उंचा करी पछाडे अने मुखने वारंवार वांकु करे ते पण मरण पामे छे. जे रोगी नखोने दांतथी कापे तथा नखोथी केशने खेंची काढे तेमज काष्ठथी पृथ्वीपर लीटा काढे ते मनुष्य रोगथी मुक्त थतो नथी. जे मनुष्य जागृत होवा छतां दांतोने खाय अर्थात् दांतोने परस्पर चावी कडकडाटी बोलावे, निष्प्रयोजन रुदन करे अथवा हसवा लागे अने जेने पोताना दुःखनुं भान न होय ते रोगी जीवी शकतो नथी. जे रोगी वारंवार हसतो होय, उंचे अवाजे पुकार करतो होय, पगथी शय्याने प्रहार करतो होय अने हाथ उंचा करी नासिकानां तथा कर्णनां छिद्रोनो वारंवार स्पर्श करतो होय ते रोगीनुं जीवन स्वल्प छे एम समजवुं. जे रोगीने पूर्वे सघळा पदार्थोमां रुचि होय अने पछीथी तेमां अरुचि उत्पन्न थाय ते रोगी पण बचतो नथी. जेनी ग्रीवा मस्तकना भारने उपाडी न शके, जेनी पीठ आत्माना भारनुं वहन न करी शके अने हनू मुखमां रहेली वस्तुने संभाळी न शके अर्थात् चावी न शके एवा मनुष्यने शवतुल्य समजवो. मरनार मनुष्यने प्रथम एकदम ज्वरनो

संताप थाय छे, तृषा वधे छे, मूर्छा आवी जाय छे, वळनी क्षीणता थाय छे अने संन्धिओ त्रुटता होय तेम पीडा उपजावे छे. प्रलेपक ज्वरवाळा रोगीने जो प्रभात समये प्रस्वेद आवतो होय तो ते रोगीनुं जीवन दुर्लभ जाणवुं. जेना कंठमां आहार न उतरतो होय, जेनी जिह्वाए कंठमां प्रवेश कर्यो होय अने जेनुं बळ दिनप्रतिदिन क्षीण थतुं जतुं होय ते रोगी तुरतज मरण पामे छे. जे बन्ने प्रपाणिने हलावी मस्तकने पण हलावे अने एवुं करवाथी तेना ललाट उपर प्रस्वेद आवी जतो होय तो ते रोगी मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे रोगीनां, बन्ने नेत्रो श्याम, शिथिल अथवा हरित वर्णनां बनी जाय ते जीवी शकतो नथी. जे रोगी मूर्छित, शुष्कमुख अने व्याधिओथी संविद्ध होय ते पण बचतो नथी. जे रोगीनी शिरा हरित वर्णनी होय, जेना लोमकूप संवृत्त होय अर्थात् पृथ्वी उपर जेम घास छवाइ जाय छे तेम रोमावलि छवाएली होय अने जेने खाटा पदार्थो खावानी अभिरुचि होय तेवो रोगी पित्तना आधिक्यथी प्राण रहित थाय छे. जे मनुष्यना हाथ पग तथा मुख आदि अवयवो सुशोभित होय अने शरीर शुष्क थतुं जाय तेमज बळ घटतुं होय एवो रोगी राजयक्ष्मा नामना रोगथी मरण पामे छे. जेनी कन्धरामांथी आगनी माफक ताप निकळतो होय, जेने हेडकी उपडी होय, जे रुधिरनुं वमन करतो होय, जेने आफरो चढतो होय अने जेना पडखांमां शूळ प्रगट थतुं होय ते पुरुष शोष नामना रोगथी मृत्यु पामे छे. शोष

---

१ माधवनिदानमां लख्युं छे के कम्प, प्रलाप, परितापन, शीर्षपीडा, प्रौढ प्रभाववाळी पवित्रतामां तत्परता, अन्य चिन्ता, प्रज्ञानो नाश, अने विकळतापूर्वक प्रचुर प्रवाद ए बधां प्रलापज्वरनां लक्षण छे. ए प्रलापज्वरवाळो पुरुष तुरतज पितृपालना पदने प्राप्त थाय छे अर्थात् विनाश पामे छे.

२ शोष नामना रोगमां श्वास, हाथ पगमां अशक्ति, कफनुं नीकळवुं, तालुमां शुष्कता, वमन, मन्दाग्नि, उन्मत्तता, पीनस, कास, अहर्निश निद्रा, चक्षुमां श्वेतता अने मांस खावानी तथा स्त्रीसंगनी इच्छा वगेरे थाय छे; तेमज उभय अंसमां अभिताप, हाथपगमां दाह, सर्व अंगमां ज्वर, अवाजनुं वेसी जवुं, दाह, अतिसार, मुखथी रुधिरनुं नीकळवुं, मस्तकनुं भारे रहेवुं, अन्नथी द्वेष, शुष्क कास अने जटां स्वप्नोनुं जोवुं, वगेरे लक्षणो शोष रोगनां छे, तेने राजयक्ष्मा पण कहे छे. रुधिर अने मांसने शोषी जाय छे एटला माटे ते रोगनुं नाम "शोष" ए रीते प्रसिद्ध थएल छे.

रोग शरीरनी पाचन आदि तमाम क्रियाओनो क्षय करे छे. एटला माटे तेने क्षय पण कहे छे; पूर्वे कोइ चन्द्र नामना राजाने ए रोग थयो हतो जेथी तेनुं राजयक्ष्मा ए रीते नाम पडेल छे. वात रोग, अपस्मार रोग, कुष्ठ रोग, शोफ रोग, उदर रोग, गुल्म रोग, मधुप्रमेह रोग, अने राजयक्ष्मा रोग, मनुष्यना बळ तथा मांसने क्षय करनारा होवाथी असाध्य थइ पडे छे. जे मनुष्यने अन्य विकारो उत्पन्न थाय अर्थात् एक रोग विद्यमान छतां अन्य रोगनो प्रादुर्भाव थाय तो ते रोगी जीवनने भोगवी शकतो नथी. जे रोगीने प्रथम आफरो चढ्यो होय, ते मटाडवाने माटे विरेचन आपवामां आवे परंतु ए विरेचनने अंते अत्यंत तृषा वधे अने फरी आफरो चढे तो ते रोगीने शव तुल्य समजवो. जे रोगी कंठ, मुख, तथा हृदयनी शुष्कताने लीधे जल आदि पेय पदार्थोने पी शके नहि ते मरण पामे छे. जे रोगीनो स्वर क्षीण थइ गयो होय, बळ तथा वर्ण विकृत थइ गयेल होय अने दिनप्रतिदिन रोग वधतो जतो होय ते पण मृत्युवश थाय छे. जे रोगीने उर्ध्व श्वास होय, शरीर शीतळ पडी जतुं होय, पडखांनी पांसळीओमां शूळ थतुं होय, अने बेचेनीने लीधे जेने कोइ पण प्रकारे शांति न थती होय तेवो रोगी मरण पामे छे. तथा जे वारंवार "हाय हाय हुं मरी जइश" एवा अपशब्दनो उच्चार करे छे ते पण मृत्युने वश थाय छे. जे दुर्बळ रोगीने एकाएक रोग छोडी दिए तेनुं जीवन संशयात्मक होय छे. जे मनुष्यनां कफ, विष्ठा अने वीर्य जलमां डूबी जाय ते रोगी मरण पामे छे. जेना कफमां रक्त, पीत, श्याम, हरित, अने धूम्र आदि अनेक वर्ण देखाइ आवे तथा ते कफ जळनी अंदर डूबी जाय तो ते रोगी अवश्य मृत्युवश थाय छे. उष्मानुगामी पित्त मनुष्यना शंखनी अंदर प्राप्त थइ शंखक[1] नामना रोगने प्रगट करे छे अने त्रण दिवसनी अंदर ते मनुष्यना प्राणने हरी ले छे. जेना मुखमांथी वारंवार फीणवाळुं लोही निकळे अने जेनी कुक्षिमां शूळ निक-

---

१ दूषित थएल पित्त, रुधिर अने वायुनी वृद्धिथी कर्णनी अंदर भयंकर सोजो चढे छे अने तेथी घोर पीडा, अति दाह तथा नेत्र रुधिरनी माफक रक्तवर्ण बनी जाय छे; ए सोजो विषनी पेठे शिरमां प्रवेश करी कंठनुं रून्धन करे छे, जेथी श्वास पण रोकाइ जाय छे अने मनुष्यनो प्राणान्त थाय छे अर्थात् जेम विष रुधिर आदिमां प्रवेश करी मनुष्यने तुरत मारी नांखे छे, एवीज रीते आ शंख नामनो रोग पण कंठमां प्रवेश करी मनुष्यने प्राण रहित करे छे. जेने शंख नामनो रोग थाय ते त्रण दिवसथी अधिक जीवी शकतो नथी.

ळतुं होय ते रोगी मरण पामे छे. जेने बळ अने मांसनी क्षीणता, अस्थितुं देखावुं, रोगनी तीव्र वृद्धि अने सर्व पदार्थोमां अरुचि होय ते रोगी त्रण दिवसमां मरण पामे छे. जे रोगीने सर्व लक्षणयुक्त वातष्ठीला नामनो रोग हृदयमां उत्पन्न थइ त्यांज घर करी रहे अने एवा रोगीने तृषानी अधिकता होय तो ते तुरत मरी जाय छे जे मनुष्यना शरीरमां पिंडिओने शिथिल करी, नासिकाने वांकी वाळी वायु संचार करे ते तुरत प्राण रहित थाय छे. जेनी भ्रकुटि स्थानथी भ्रष्ट थइ होय अर्थात् नीची नमी गइ होय, जेने दारुण अन्तर्दाह थतो होय अने जेने हेडकी पण उपडी होय ते सत्वर मरण पामे छे. जेना रुधिर अने मांस आदि धातु क्षीण थइ जाय अने वायु कपाळमां स्थिर थइ मन्याओने पीडित करे ते रोगी पण पंचत्वने प्राप्त थाय छे. जे रोगीना शरीरमां वायु अधोद्वारथी प्रवेश करी नाभिनी पासे पहोंची आंतरडाओमां व्याधि उपजावे ते रोगी मरण पामे छे. जे रोगीना हृदयमां वायु प्रवेश करी पशुकना अग्रभागने नमावी दे अने रोगीने टाढ जणाय तथा आंखो फाटी गइ होय तेम स्तब्ध बनी जाय एवो रोगी शीघ्र मरणने शरण जाय छे. बळवान् वायु विशेषे करी निर्बळ रोगीना अधोद्वार तथा हृदयनुं ग्रहण करी अत्यंत पीडा उपजावे त्यारे रोगीनुं सत्वर मृत्यु थशे एम समजवुं. जे रोगीना अधोद्वारने मार्गे बळवान वायु प्रवेश करी आंतरडाओमां भराइ जाय अने ते पाछो निकळे नहि तथा तेवा कारणने लीधे श्वासनी उत्पत्ति थाय त्यारे तुरतज ते मरण पामे छे. ए रोग घणे भागे कृश मनुष्यने लागु पडे छे. जेना शरीरमां वायु प्रवेश करी मळ मूत्रने एवी रीते बंध करे के तेनी कोइपण रीते प्रवृत्ति न थइ शके अने एकी वखते नाभि, वस्ति तथा शिरमां शूळ उत्पन्न थाय ए रोगीनुं जीवन दुर्लभ जाणवुं. जे मनुष्यने वायुनी प्रबळताथी हृदय, पांसळी, कम्मर, कम्मरना सांधा तथा वस्तिमां शूळ उत्पन्न थाय, मळनी प्रवृत्ति बिलकुल न थाय अने तृषा वधती जाय ते रोगी तुरत मृत्युना मुखमां प्रवेश करे छे. वायुना ८४ रोगो छे, तेमांथी आजे अमुक तो काले बीजो ए रीते अनेक प्रकारना वायु रोगथी घेराएला मनुष्यने झाडो फाटेलो आववा लागे अने तृषानुं प्रबळ वधे तो ते वगर विलंबे मरण पामे छे. जे मनुष्यने सोजा चंचल होय अने जे

---

१ जे नाभि नीचे उत्पन्न थइ चारे तरफ संचार करे छे अथवा स्थिर पण रहे छे जे गोळ पत्थरना टुकडा समान कठोर होय छे अने जेनी उत्पत्तिथी विष्ठा, मूत्र तथा अधोवायुनुं रुन्धन थाय छे ए रोगने वातष्ठीला कहे छे; तेनो उर्ध्व भाग कांइ लांबो अने वांको तथा उन्नत होय छे.

स्थळे सोजा होय ते स्थळनी त्वचा पातळी थइ जाय, सोजानी जगोए दाववाथी कठिनता मालूम पडे, त्वचा लाल अथवा काळा रंगनी थइ जाय, शोप स्थान शून्य (स्पर्श करतां मालूम न पडे तेवुं) वनी जाय, भिन्न भिन्न पीडा उत्पन्न थाय अर्थात् क्यांइ अधिक अने क्यांइ ओछो व्याधि थाय, रोम खडां थइ जाय, औषध कर्या विना एनी मेळे घडिमां आराम थइ जाय अने पुनः तेनो प्रादुर्भाव थाय, दाव्या पछी तुरतमांज पाछो उपडी आवे, दिवसे अधिक होय अने रात्रिए शान्ति रहे एवा वातशोफी मनुष्यने झाडो फाटेलो आववा लागे अने तृषानी वृद्धि थाय तो तुरतज मरण पामे छे. जे मनुष्यने आमाशयमां पीडा थती होय, तृषा बहु लागती होय अने अधोद्वारमां उग्र शूळ थतुं होय एवो रोगी वचतो नथी. वायु जे मनुष्यना पक्काशयमां प्रवेश करी संज्ञाने हरी कंठमां घुरघुर एवा शब्दने उत्पन्न करे ते रोगी मरण पामे छे. जेना दांतो उपर कीचड तथा चुना जेवी रेती जामी गइ होय, जेनुं मुख पण चूर्णक जेवुं होय, कृशता अने निर्वळताने लीधे जेनी काया कंपती होय, जेना शिरकेशमांथी श्वेत रेती जेवुं चूर्ण खरतुं होय, तेवुंज चूर्ण मुखपरथी खरतुं होय अथवा आखा शरीरपरथी खरतुं होय ते रोगीना प्राण तुरतज परलोक तरफ प्रयाण करे छे. जे रोगीने तृषा, श्वास, माथानो दुखावो, मोह, दुर्बळता, कूजन तथा मळ, मेद अने झाडानुं अधिक्य, होय ते सत्वर पंचत्वने पामे छे. जे मनुष्य कान्तिहीन, मंदाग्नि युक्त, व्याकुळ चित्तवाळो, विकृत छायावाळो, अने कुत्सित मनवाळो अर्थात् दुष्ट वार्ताओनुं चिन्तन करनारो होय ते हमेशां दुःखी रह्यां करे छे अने वीश दिवसनी अंदर मरण पामे छे. जे मनुष्यना हाथना पदार्थोनुं वलि वैश्वनुं भक्षण करनारा जीवो भक्षण न करे ते मनुष्य एक वर्षनी अंदर लोकान्तरमां शरीरना भोगोनो उपभोग करे छे अर्थात् मरी जाय छे. जे मनुष्य आकाश मार्गमां रहेल। सप्तऋषि नामना ताराओनी वच्चे रहेल अरुन्धतीने बराबर ओळखतो होय छतां न देखी शके ते एक वर्ष पछी तुरतज मृत्युवश थाय छे. जे मनुष्य कांइ पण कारण विना एका एक सौन्दर्य, पुष्टता अने धनने प्राप्त थाय अथवा विना कारण ते त्रणे वस्तुओने गुमावे ते एक वर्षनी अन्दर मरण पामे छे. मतलब एके कोइ मनुष्य मन्द तेजवाळो होय अने सुंदर थवा माटे शरीरे कोइ पण औषधिनो लेप न कर्यो होय छतां ते स्वतः शोभायमान बनी जाय, एवीज रीते पुष्टिकारक रसायण आदिनुं सेवन न कर्युं होय तेमज घृत तथा दुग्ध आदि पदार्थो पूर्वथी विशेष प्रमाणमां न खाधा होय छतां स्वतः पुष्ट वनी जाय अने कांइ पण परिश्रम अगर धारणा विना हद उपरांत धननी प्राप्ति थाय अथवा कांइ पण रोग विना शोभा

बळ तथा चोरी आदिथी समग्र धन नष्ट थाय एवा मनुष्यनुं एक वर्षनी अंदर मृत्यु निपजे छे. जे मनुष्यनां कोइ पण कारण विना भक्ति, शील, स्मृति, त्याग, बुद्धि अने बळ चाल्यां जाय ते छ महिनानी अंदर मरण पामे छे. जे मनुष्यना ललाट उपर अपूर्व अर्थात् पूर्वे न होय तेवो नसोनो समूह उत्पन्न थाय तो ते पण छ महिनामां मरण पामे छे जेना ललाट पर अपूर्व चन्द्रमा जेवी आडी रेखानो प्रादुर्भाव थाय ते मनुष्य छ मासनी अंदर मृत्यु पामे छे. अरुन्धती, ध्रुव, विष्णुना त्रिपद अने मातृमंडलने हीन आयुष्यवाळो मनुष्य जोइ शकतो नथी. जीभने अरुन्धती, नासिकाना अग्रभागने ध्रुव, बन्ने भ्रकुटिना मध्यभागने विष्णु त्रिपद अने बन्ने भ्रकुटिने मातृमंडल कहे छे. जेना शरीरमां कम्प तथा मोह होय अने जेनी चाल तथा वाणी विक्षिप्त अर्थात् उन्मत्तना जेवी होय ते मनुष्य एक मासनी अंदर मरण पामे छे. जेनुं वीर्य, मूत्र तथा विष्ठा जळमां डूबी जाय अने जे पोताना इष्ट मित्रो साथे द्वेष राखवा लागे ते मनुष्य एक मासनी अंदर मृत्युरूपी जळमां स्नान करे छे अर्थात् मरी जाय छे. दाहने लीधे अगर विना दाहे जेना हाथ, पग अने मुख अत्यंत शुष्क थइ जाय ते पण एक महिनामां मृत्युने पात्र थाय छे. जेना ललाट, मस्तक अथवा वस्तिमां चन्द्रमा समान आडी निलवर्णनी रेखा उत्पन्न थाय ते एक महिनानी अंदर परलोक प्रयाण करे छे. जेना समग्र शरीर उपर चणोठीनी माफक शीतला उत्पन्न थइ तुरतमां शान्त न थाय तो ते मनुष्य सत्वर मरण पामे छे. जेनी ग्रीवामां पीडा थती होय, जिह्वामां सोजो चड्यो होय अने गळुं तथा मुख पाकी गयां होय ते शीघ्रताथी प्राण रहित थाय छे. जे रोगीने भ्रम, अतिप्रलाप, दाह अने अस्थिभेद थाय तेनुं जीवन दुर्लभ जाणवुं. जे रोगी अचेतन अवस्थामां पोताना शिरकेशने पकडी खेंचे अने स्वस्थनी माफक आहार करे तथा वळ पण स्वस्थ जेवुं वतावे ते कदि पण वचतो नथी. जे रोगी आंखोनी आसपास आंगळीओथी कांइ शोधतो होय एम देखाय अने उन्मत्तनी माफक आंखो फाडी विस्मय पूर्वक जोया करे, मटकुं मारवुं छोडी दिए अने शयन, वमन, अंग, कोष्ठ तथा कुड्यमां कांइ पण वस्तु खोवाएल न होय छतां मिथ्या शोध कर्या करे अने ए वखते मोहने प्राप्त थाय ते तुरत मरी जाय छे. जे रोगी अचेतन अवस्थामां विना प्रयोजन हस्या करे, होठने चाटे अने जेना हाथ, पग तथा श्वास टाढा पडी गया होय ते जीवतो रही शकतो नथी. जे पोतानी पासे वेठेला कुटुम्बीओने वोलावतो होय, जेनी संज्ञा जती रही होय अने जे आंखो फाडी जुए छतां कांइ न देखी शकतो होय ते रोगी मरण पामे छे. जे मनुष्यना शरीरमां आकाश आदि पंचतत्त्वनो अयोग अथवा अतियोग

होय ते रोगी त्याज्य गणाय छे. आकाश, वायु, अग्नि, जळ अने पृथिवी ए पंच महाभूतोना शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गन्ध ए क्रमपूर्वक पांच गुण छे; अर्थात् आकाशनो गुण शब्द, वायुनो गुण स्पर्श, अग्निनो गुण रूप, जळनो गुण रस अने पृथ्वीनो गुण गन्ध छे. आकाशमां केवळ शब्दगुण छे. वायुमां शब्द अने स्पर्श, अग्निमां शब्द, स्पर्श, अने रूप. जळमां शब्द, स्पर्श, रूप अने रस, तथा पृथ्वीमां शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गन्ध ए पांचे गुण छे. परंतु एक एक भूतमां एक एक गुण प्रधान छे. जेमके आकाशनो प्रधान गुण शब्द इत्यादि. जेना शरीरमां शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गन्ध ए जाणवानी शक्ति न रहे तेनामां पंचतत्त्वनो अयोग छे एम जाणवुं. जे मनुष्य शब्दादि शक्ति उपरांत अनुभवी शके अर्थात् सूक्ष्ममां सूक्ष्म कोइ न सांभळी शके एवा शब्दने सांभळे तेनामां पंचतत्त्वनो अतियोग छे एम समजवुं. ए अयोग तथा अतियोग जन्मना स्वभाव रूप न होय अने तेनुं ज्ञान पण कोइ युक्तिद्वारा न मेळववुं होय तो ते बन्ने मृत्युना कारण रुप थइ पडे छे. रोगोनी अत्यंत वृद्धि थवाथी अने मनोबळ क्षीण थवाथी आत्मा देह संज्ञावाळा निवासस्थाननो परित्याग करे छे. आयुष्य क्षीण थवानी साथे वर्ण, स्वर, जठराग्निनुं बळ, वाणीनुं बळ अने मनोबळ पण क्षीण थाय छे. मृत्युनो समय समीप आवतां रोगीने वैद्य, औषध, अन्न, जळ, गुरु अने मित्र विष जेवा जणाय छे. वैद्ये एवा रोगीओना अन्न जळनो स्पर्श न करवो जोइए; कारण के असाध्यनी चिकित्सा न करवी एम पण नथी, तेना कुटुम्बीओने अगाउथी कही आपवुं के आ रोगीनो रोग असाध्य छे. कारण के " **यावत्कंठगतः प्राणस्तावत्तेषां चिकित्सकाः** " कंठगत प्राणवाळा रोगीनी चिकित्सा करवी, परंतु असाध्य रोगी मोतथी बचतो नथी. कारण के साधक गुणोथी युक्त चिकित्साना चार पाद गतायुने माटे व्यर्थ गणाय छे. जेम द्रव्यने आश्रये गुण छे. तेम चिकित्साने आश्रये आयुष्य छे, जे रोगमां चिकित्सा निष्फळ निवडे ते रोगीनुं आयुष्य नष्ट थयुं छे एम मानवुं. वैद्य, औषध, सेवक अने रोगी ए रीते चिकित्सानां चार पाद छे. जे मनुष्यना शिर उपर गोमय जेवुं चूर्ण उत्पन्न थाय अने ते तेल चोपडवाथी दूर थइ जाय एवो एक महिनाथी अधिक जीवी शकतो नथी. जे मनुष्य बन्ने पगने परस्पर अथडावतो चाले अने तेना उभय अंसस्थान भ्रष्ट थइ गया होय तथा विकृत रीते दोडतो होय ते मनुष्य आ लोकमां वधारे दिवस वास करतो नथी. स्नानथी अनुलिप्त थएला जे मनुष्यनुं उरःस्थल प्रथक सुकाइ जाय अने बीजां बधां अंगो आर्द्र होय ते पंदर दिवसथी वधारे

आयुष्य भोगवी शकतो नथी. जे रोगीने माटे वैद्य अत्यन्त परिश्रम कर्या छतां पण औषध तैयार न करी शके ते भाग्येज जीवे छे. जे औषध अनेक वखत सफळ निवड्युं होय अने तेनुं उत्तम रीते सेवन कराव्युं होय छता रोगीने असर न करे त्यारे ते रोग असाध्य छे एम समजवुं. कदाच वैद्य सूपशास्त्रने आधारे रोगीने व्यंजन खावा आपे छतां एथी कांइ पण फळ प्राप्त न थाय तो ते रोगीनुं जीवन दुर्लभ थइ पडे छे. मृत्यु वखते मनुष्यनां प्राण तपायमान थाय छे, ज्ञान जतुं रहे छे, अंगना हाथ पग आदि अवयवो निर्बळ बनी जाय छे, चेष्टा जती रहे छे, इन्द्रिओ निष्क्रिय थाय छे, चैतन्य जतुं रहे. सत्त्वसंज्ञक मन उत्सुक थाय छे, चित्तमां भय प्रवेश करे छे, स्मरणशक्ति अने बुद्धि अलग जती रहे छे, लज्जा अने कान्ति भागी जाय छे, मन पापोथी व्यथित थाय छे, ओज अने तेज नष्ट थाय छे, भक्ति दूर जाय छे, कान्ति (मुखनी चेष्टा) अने प्रभा (शरीरनी शोभा) विकृत बनी जाय छे, तेमज शुक्र पोताना स्थानथी अर्थात् समग्र शरीरमांथी निकळी जाय छे. वीर्यनुं कोइ स्थान नथी कारण के " **सप्तमी शुक्रधरानाम सर्व प्राणिनां सर्व शरीर व्यापिनी** " सातमी कळा शुक्रधरा नामनी छे ते समग्र शरीरनी अंदर रहेली छे. जेम दूधना सर्व परमाणुओमां घृत अने इक्षुना सर्व विभागोमां मिष्ट रस गुप्त रीते रहे छे तेवीज रीते समग्र शरीरमां वीर्यनी स्थिति छे एटला माटे समस्त शरीर वीर्यनुं स्थान छे. केटलाएक लोको कहे छे के वीर्यनुं स्थान मस्तकमां, स्तनोमां अथवा वृषणोमां छे ए वात असत्य छे; कारणके वीर्यनुं स्खलन थती वखते वायु उर्ध्व गती करे छे अर्थात् श्वास शरीरमां समाइ शकतो नथी अने आवतांज उपरथी अने उपरथी चाल्यो जाय छे. मांस अने रुधिर क्षीण थइ जाय छे; शरीरनी उष्णता जती रहे छे, सन्धिओ शिथिल पडी जाय छे, शरीरनो गन्ध विकृत बनी जाय छे, वर्ण अने स्वरमां अंतर पडी जाय छे. शरीरनो रस बगडी जाय छे. देहनां छिद्रो शुद्ध होवाने लीधे शिरमांथी धुमाडा निकळे छे अने दारुण नामनुं चूर्ण उत्पन्न थाय छे. अर्थात् माथामां पापडी जेवो जमाव थाय छे अने ते वाळोनी अंदर रेतीनी माफक उडे छे तथा केशभूमि कठिन अने खडबचडी बनी जाय छे; शरीरना हालता चालता तथा स्फुरायमान अवयवो झलाइ जाय छे. आ बधां लक्षण मरनारनां समजवां. शरीरनां शीतल, उष्ण, मृदु अने कठिन अवयवो वैपरीत्यने पामे अर्थात् शीतल अंग गरम अने गरम अंग शीतल बनी जाय इत्यादि, नखो उपर पुष्प जेवां चिह्न प्रकट थाय, दांतोमां कीचड जेवो जमाव थाय, पलकना तथा शिरना वाळ गुंथाइ जटा जेवा बनी जाय तेवा रोगीने अभीष्ट औषधिओ मळती नथी अने मळ्या

छतां पण पोताना वीर्यने अनुसार काम आपती नथी, परंतु उलटा अनेक प्रकारना विकारोने प्रकट करे छे. अनेक प्रकारनी औषधिओथी शान्ति प्राप्त न थाय, वळ अने ओजना नष्ट थवाथी अनेक प्रकारना शब्द, स्पर्श, रूप, गन्ध, चेष्टा अने विचारो उत्पन्न थाय, चिकित्सा करती वखते अनेक प्रकारना अशुभ फळनी उत्पत्ति थाय, अनेक प्रकारना भयंकर स्वप्नो देखावा लागे, दुरात्मापणुं उत्पन्न थाय, सेवकजनो विमुख वनी जाय, शवनी माफक आकृति थइ जाय, प्रकृति नष्ट थाय, विकृति वधती जाय अने घोर उत्पातो अरिष्टनी सूचना करे ए बधां लक्षणो मरनार मनुष्यनां जाणवां. जे रोगीना शिर उपर काक आदि पक्षी आवीने वेसे ते मरण पामे छे. जे नेत्र रोग विना चन्द्रमाने अत्यंत सुंदर अने कलंक रहित देखे ते पण मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे ध्रुव तथा आकाश गंगाने न जोइ शके ते एक वर्षनी अंदर पंचत्वने प्राप्त थाय छे. आकाशमां जे घणा ताराओनो समुदाय प्रवाह जेवो जणाय छे तेने आकाशगंगा कहे छे.

काल अने अकाल मृत्युना विषयमां महर्षि चरक कहे छे के जे जे मरे छे ते काळथीज मरे छे, काळ विना कोइनुं मृत्यु थतुं नथी; कारण के काळमां छिद्रता अथवा अछिद्रता कांइ पण नथी, केमके काल स्वलक्षण स्वभाव छे अर्थात् छिद्र रहित छे. केटलाएक कहे छे के जे जे वखते मरे छे, तेज तेनो नित्य काळ छे एवीज रीते तेना संपूर्ण भाव पोतपोताना मृत्युना विषयमां नियत काळ छे, परंतु ए वात पण योग्य नथी. कारण के अकाल आहार, वचन अने कर्मनुं अनिष्ट फळ प्रत्यक्ष जोवामां आवे छे माटे तेथी विपर्यय एज इष्ट छे. काल तथा अकालनी युक्ति ते ते अवस्थामां ते ते अर्थनी समीक्षाथी उद्भवे छे. जेमके अमुक व्याधिना आहारनो, औषधनो, प्रतीकारनो अने मोक्षनो अमुक काळ अने अमुक अकाळ छे; एज युक्ति समग्र संसारमां व्याप्त छे. मेघनी वृष्टि, शीत, सूर्यनो ताप अने पुष्प तथा फळ जेम काळ अने अकाळ बन्नेमां थाय छे तेम मनुष्यना मृत्युनुं पण समजवुं. केवळ काळेज मृत्यु थाय छे एम न मानवुं. जो अकाळ मरण न थाय तो तमामनी आयुष्यनुं प्रमाण नियत होवुं जोइए अने एम थाय त्यारे हिताहितनुं ज्ञान व्यर्थ जाय अने प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आप्तोपदेश पण अप्रमाण रुप थइ पडे, परंतु आ वातमां तो सर्व शास्त्रो प्रमाणभूत छे. अने एथीज आयुष्य अने अनायुष्यनी उपलब्धि थाय छे. खरी रीते जोतां अकाल मृत्यु थतुंज नथी, एतो कहेवा मात्रज छे. समय विना प्राप्त थएल मृत्युने अकाल मृत्यु कहे छे.

श्वास लेवो तथा छोडवो पापणोने उघाडवी तथा वीडवी, मननी गति, एक इन्द्रियनो अन्य इन्द्रियमां संचार, प्रेरणा, धारणा, स्वप्न, दर्शन, पंच महा भूतोनुं ग्रहण, जमणी आंखे

जोएला पदार्थोनुं डावी आंखथी ज्ञान थवुं, इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, प्रयत्न, चेतना, धृति, बुद्धि, स्मृति, अहंकार अने आत्मा ए जीवनना लक्षण छे. उक्त लक्षणो मृतक मनुष्यमां देखातां नथी एटला माटे महर्षिओए ए लक्षणोने आत्मानां चिह्न कहेल छे, ए आत्माना निःसरणथी शरीर चैतन्य रहित बनी निर्जन गृहनी माफक पड्युं रहे छे, केवळ पंच महाभूतोनो विकार शेष रहे छे, एटला माटेज अमुक मनुष्य पंचत्वने प्राप्त थयो एम कहेवाय छे.

आ रीते मृत्यु परीक्षानी सविस्तर हकीकत स्वस्थ चित्ते श्रवण कर्या पछी राजहरपाळ देवजीए वैद्यराजने घणा सन्मान पूर्वक विदाय कर्या अने पोते विचार्युंके मारा शरीरनगर उपर जरा रुपी महाराणीए बराबर साम्राज्य जमाव्युं छे अने ते थोडा वखतमां पोताना काळ रुपी युवराजने तेनो कबजो सोंपी देशे माटे ते पहेलां हुं पण मारा युवराजने आ राज्यनी लगाम स्वहस्ते सोंपी निवृत्त थाउं, आवो निश्चय करी सुलक्षणा शक्तिनी सलाह लइ तुरत राज्यज्योतिषीने बोलाववामां आव्या अने उत्तम मुहूर्त जोइ वि. सं. ११८६ मां युवराज सोढाजीनो पाटडीनी गादी उपर विधिवत् राज्याभिषेक कर्यो, तेथी न्हाना कुमार मांगुजीने जांबु सहित चोराशी गामो गिरासमां आप्यां अने तेथी न्हाना कुमार शखेराजजीने पण वीरमगामनी पासे रहेला सचाणा सहित चोराशी गामो आप्या. पाछळथी कुटुंबमां क्लेश न थाय एटला माटेज राजहरपालदेवजीए पोतानी हयातीमांज आ उत्तम कृत्य स्वहस्तेज करी लीधुं. त्यारबाद तेओ पोताना पटराणी शक्तिने साथे राखी वानप्रस्थ अवस्थाने धारण करी ध्यान, धारणा तथा वेदान्त विचारमां दिवसोने निर्गमन करवा लाग्या; तेओ संसारने मृगजळनी माफक अनित्य समजता होवाथी पारमार्थिक कर्मोमां प्रवृत्त थया, विषवल्लरी जेवी कामवृत्तिनुं समूळ उच्छेदन करी त्रिविधि तापनुं शमन करनार आत्मज्ञानरुपी कल्पवृक्षने आश्रये अखंडानंदने अनुभववा लाग्या, क्रोधरुपी काळा नागने नाथी मति शुद्ध करनार श्री कृष्णनी कृति उपर रति राखी नित्यप्रति निष्काम कर्म करवा लाग्या, मनने क्षोभ पमाडनार लोभरुपी मदोन्मत्त हाथीने संतोषरुपी लोहनी सांकळे बांधी सांसारिक उपाधिओथी अलग थया, मोक्ष मार्गनो द्रोह करनारा मोहथी विमुख रही अपूर्व सुखमां अवशिष्ट आयुष्यने वितावबा लाग्या, महद् अनर्थना मूळरुप मदने देहनगरथी हद पार करी विनोदना नदमां निमज्जन करवा लाग्या अने मत्सरने तो मूळबीज ज्ञान रुपी धननुं हरण करनारा तस्कर तुल्य गणी तिरस्कारता हता. पोते योगवासिष्ट आदि उत्तम ग्रन्थोनुं अवलोकन करेलुं होवाथी मन एज संसारनी उत्पत्तिना हेतुरुप छे एम मानता हता, मनना निग्रह शिवाय पारमार्थिक सुखनी प्राप्ति थती

नथी, मन एवुं प्रबळ छे के तेने म्होटा म्होटा पराक्रमीओ के ऋषि मुनिओ पण वश करी शक्या नथी, ए मन गन्धर्व नगरनी माफक वास्तविक छे नहि; छतां भासे छे, पोतानो स्वभाव अस्थिर होइ बीजाने पण स्थिर रहेवा देतुं नथी, कंचन अने कामिनीमां विशेष रति राखे छे, गतिमां विद्युतथी पण वधी जाय छे, प्रपंचमां प्रवीण अने सुखना रंचथी रहित दुर्वासना भणी दोडनारुं ए मन दर्पण पर रहेला पारदनी पेठे पल पण स्थिरताने प्राप्त थतुं नथी, लोक तथा परलोकनी कल्पना कर्या ज करे छे, अजाना गलस्तनमां रहेला पयनी पेठे अविद्यमान छतां विद्यमान बनी व्योमवनने विलोकवानी इच्छा करे छे. भूलना भवन रुप स्थूल भोगमां अत्यंत रति राखनारुं, प्रतिकूल बीजने वोनारुं, सत्य रुपनो त्याग करनारुं, अने असत्यमां अनुराग धरनारुं दुर्भागी मन दुष्ट छे के तेणें मारेला राजाथी रंक पर्यन्त अनन्त जनो आज लगी योनिजालमां भ्रमण कर्या करे छे. श्रीकृष्ण परमात्माए पण गीतामां कह्युं छे के "**मन एव मनुष्याणां, कारणं बन्ध मोक्षयोः॥**"

आवा प्रबळ मनने ज्ञानाग्निथी दग्ध करी राजहरपालदेवजी जीवन्मुक्तनी दशाने प्राप्त थया. तेवामां अचानक अनेक प्रकारना उत्पातो थवा लाग्या, ए जोइ राजहरपालदेवजीने लेश पण क्षोभ थयो नहि, तेओ जाणता हता के ए उत्पातो राजाना जीवनने अवश्य हानि, लाभ अने हर्ष शोक विगेरेने देहना[1] धर्म मानी सत्, चित अने आनंदमय आत्मरुप बनेला शक्तिए सहवर्तमान राजहरपालदेवजीनी स्थितिमां लेश पण फेरफार न थयो, परंतु युवराज तथा अमात्य आदिना अन्तःकरणमां भय फेलायो, तेओए तुरत राज्यज्योतिषीने बोलावी पृथ्वी तथा आकाश आदिमां देखाइ आवता विपरीत चिह्नो संबंधी सघळी हकीकत सांभळवानी इच्छा बतावी. त्यारे राज्यज्योतिषीए कह्युं के आ जे कांइ आकाश आदिमां विपरीत चिह्नो देखाय छे ते उत्पात कहेवाय छे अने ते दिव्य, आन्तरिक्ष अने भौम ए रीते त्रण प्रकारना होय छे. ग्रह तथा नक्षत्रोना विकारने दिव्य उत्पात कहे छे, उल्का, निर्घात, पवन, परिवेष, गन्धर्वनगर अने इन्द्रधनुष आदि आन्तरिक्ष उत्पात लेखाय छे तेमज भूमि उपर चर तथा स्थिर वस्तुओमां थनारा उत्पातो भौम कहेवाय छे. भौम उत्पात शान्ति करवाथी निवृत्त थाय छे, परंतु दिव्य उत्पात शान्ति करवाथी निवृत्त थता नथी तेम मन्द पण थता नथी एम केटलाएक मुनिओनी मान्यता छे. केटलाएक ऋषिओनुं कहेवुं एवुं छे के अत्यंत सुवर्ण, अन्न, गौ, अने भूमिना दान करवाथी तेमज शिवालयमां भूमि उपर गोदोहन कर-

---

१ देह अनित्य होवाथी ए देहना धर्म पण अनित्य छे.

वाथी तथा करोडो होम करवाथी दिव्य उत्पाततनुं पण शमन थइ शके छे. दिव्य उत्पाततनुं फळ राजा, राजपुत्र, कोश, वाहन, नगर, राणी, पुरोहित अने प्रजा ए आठेने प्राप्त थाय छे. शिवलिङ्ग, देवमूर्त्ति अने देवमन्दिर विना कारण भांगी जाय, चलायमान थाय अथवा तेने प्रस्वेद आवे, मूर्तिनां नेत्रोमांथी अश्रुपात थाय अथवा मूर्ति आदि बोली उठे तेमज नृत्य करवा लागे इत्यादि अन्यविकारो पण उत्पन्न थाय तो राजानो तथा देशनो नाश थाय छे. देवना उत्सवमां जेमां देवनी मूर्ति विराजमान होय ए शकटनां धुर, चक्रयुग अने ध्वज भांगी जाय, पडी जाय, उंधा वळी जाय, क्षतयुक्त थाय अथवा अटकी जाय तो देशनुं अने राजानुं अशुभ थाय छे. ऋषि, धर्म, पितृ अने ब्रह्माथी उत्पन्न थएला उत्पाततनुं फळ ब्राह्मणोने प्राप्त थाय छे. रुद्र अने इन्द्र आदि दिक्पालोना उत्पातथी पशुओनुं अशुभ थाय छे. बृहस्पति, शुक्र अने शनैश्चरना उत्पातथी पुरोहितनुं अशुभ थाय छे, विष्णुनी मूर्ति आदिमां कांइ उत्पात थाय तो तेनुं फळ प्रजाने प्राप्त थाय छे. कार्तिकेय अने विशाखना उत्पाततनुं फळ मांडलिक राजाओने मळे छे. वेदव्यासना उत्पाततनुं फळ राजाना मंत्रीने थाय छे. गणपतिनी प्रतिमामां कांइ उत्पात थाय तो तेनुं अनिष्ट फळ सेनापति भोगवे छे. ब्रह्मा अने विश्वकर्मानी मूर्तिमां विकार थतां प्रजा विनाश पामे छे. देवताओना कुमार, कुमारी, स्त्री अने सेवकोनी मूर्तिमां कांइ उत्पात थाय तो ते क्रम पूर्वक राजाना कुमार, कुमारी, राणी अने सेवकोनुं अनिष्ट करे छे. एवीज रीते राक्षस, पिशाच, गुह्यक अने नागोना कुमार, कुमारी, स्त्री तथा सेवकोमां उद्भवेलो उत्पात क्रमपूर्वक राजाना कुमार, कुमारी, राणी तथा सेवकोनुं अनिष्ट करनारो थाय छे. ए बधा उत्पातोनुं फळ आठ महिना पछी प्राप्त थाय छे. देवविकारने जाणी राजाना पुरोहिते पवित्र थइ स्नान करी त्रण दिवस पर्यन्त उपवास करवा अने जे प्रतिमामां उत्पात थयो होय ते प्रतिमानुं स्नान, पुष्प, अनुलेपन अने वस्त्रोथी पूजन करी मधुपर्क, अनेक प्रकारना मोदक आदि भक्ष्य पदार्थ अने बलि विधिपूर्वक समर्पण करवां तेमज देवताना मंत्र भणी अग्निमां यथाविधि स्थालिपाकनुं हवन करवुं. देवनी मूर्ति आदिमां विकार जोइ जे राजा सप्त रात्रि पर्यन्त शांति करावे, देवब्राह्मणोनुं विधिवत् पूजन करे अने गीत तथा नृत्य आदिनी साथे महोत्सव करे तेमज ब्राह्मणोने दक्षिणा आपे ते राजाने उत्पाततनुं अनिष्ट फळ बाध करी शकतुं नथी. जे राजाना राज्यमां अग्नि वगर अग्निनी ज्वाळाओ जोवामां आवे अने काष्ठथीयुक्त अग्नि पण प्रज्वलित न थाय तो राजा अने देश उभय पीडा पामे छे. जल, मांस अने आर्द्र पदार्थ अकस्मात् वळी जवाथी राजानो वध थाय छे. खड्ग आदि शस्त्र

सळगी उठे तो भयंकर युद्ध थाय छे. सैन्य, ग्राम अने नगरमां अग्नि न रहे अर्थात् बधाना घरमां आग बुझाइ जाय तो अग्निथी भय उपजे छे. प्रासाद अर्थात् देवमन्दिर अथवा राजमन्दिर, गृह, तोरण अने ध्वज आदि अग्नि वगर बळी जाय अथवा विजळी पडवाथी दग्ध बनी जाय तो छ महिना पछी परचक्र अर्थात् शत्रुसैन्यनुं आगमन थाय छे. विना अग्नि धूम्र जोवामां आवे अने दिवसे धूलि अथवा अन्धकार फेलाय तो अति भय उपजे छे. रात्रिए वादळां न होय छतां ताराओ न देखाय अथवा दिवसे ताराओ देखाय तो पण अनिष्ट थाय छे. नगर, गो आदि चतुष्पद, पक्षी अने मनुष्य बळतां देखाय तो भय उत्पन्न थाय छे अने जेना शय्या, वस्त्र अने वाळनी अन्दर धूम, अग्नि अथवा अग्निना तणखा जोवामां आवे तेनुं मृत्यु थाय छे. खड्ग आदि शस्त्रोनुं बळी जवुं, चलायमान थवुं, शब्दायमान थवुं, कोश निर्गमन अर्थात् म्यानथी बहार निकळवुं, कंपवुं अथवा कोइ अन्य विकारनी उत्पत्ति थवाथी भयंकर युद्ध थाय छे. क्षीरवृक्षना समीधने प्रज्वलित करी तेमां अग्निना मंत्रो भणी श्वेत सरसव अने घृतनो होम करवाथी तेमज ब्राह्मणोने सुवर्णनी दक्षिणा आपवाथी अग्निनी विकृतिना दोषोनी शान्ति थाय छे. वृक्षनी शाखा अकस्मात् भांगी पडवाथी युद्धनो उद्योग शरु थाय छे. वृक्ष हसवा लागे तो देशनो नाश अने वृक्ष रुदन करवा लागे तो रोगनी अत्यंत वृद्धि थाय छे. ऋतु वगर वृक्ष पुष्पित थाय तो राज्यमां भेद उद्भवे छे, न्हानां वृक्षो अत्यंत पुष्पित थाय तो बाळकोनुं मृत्यु निपजे छे अने वृक्षथी दूध टपकवा लागे तो तमाम द्रव्यनो क्षय थाय छे. वृक्षथी मद्य टपकवा लागे तो अश्व आदि वाहननो नाश, रुधिर टपके तो युद्ध, मध टपके तो रोग, तेल आदि स्नेह टपके तो दुर्भिक्षनो भय अने जळ टपके तो महान् भय उत्पन्न थाय छे. शुष्क वृक्षो एकाएक अंकुरित थाय अने रोग रहित वृक्षो विना कारण शुष्क बनी जाय तो बळ तथा अन्ननो क्षय थाय छे. पडी गएलां वृक्ष पोतानी मेळे उभां थाय तो दैवथी भय उपजे छे. प्रसिद्ध वृक्षमां ऋतु वगर पुष्प तथा फळ लागेलां जोवामां आवे तो राजानुं मृत्यु थाय छे तथा एज वृक्षमां धूम्र निकळे अथवा अग्निनी ज्वाळा देखाइ आवे तो पण राजा मरण पामे छे. वृक्ष चालवा लागे अथवा बोलवा लागे तो मनुष्योनो क्षय थाय छे. आ वृक्षविकृतिनुं फळ दश महिने मळे छे. पुष्पमाळा, गन्ध, धूप अने वस्त्रथी पूजेला वृक्षनी उपर छत्र राखी रुद्रना अग्यार अनुवाकोनो जप करवाथी तेमज "**रुद्रेभ्यः स्वाहा**" ए मंत्र भणी षडंग होम करवाथी जो राजा ब्राह्मणोने घृत तथा मधुयुक्त पायसान्ननुं भोजन करावे तो पण वृक्षविकृतिनी शान्ति थाय छे. केटलाएक महर्षिओ वृक्षविकृतिनी शान्ति माटे

ब्राह्मणोने भूमिदान आपवानुं पण कहे छे.कमळ, यव अने घउं आदिना एक नाळमां बेत्रण कमळ आदि- उद्‌भवे तो तेना स्वामीनुं मरण थाय छे. तथा एक स्थानमां उभय पुष्प अथवा उभय फळ उद्‌भवे तो पण तेना स्वामीनुं मृत्यु समजवुं. खेतीनी अत्यंन्त वृद्धि थाय अने एक वृक्षमां अनेक प्रकारनां फळ फूल उत्पन्न थाय तो अवश्य शत्रुसैन्यनुं आगमन थाय छे. जेटला तल होय तेमांथी अर्धे भागनुं तेल निकळे अर्थात् जेटलुं निकळवुं जोइए तेनुं अरधुं निकळे अथवा तलमांथी तेल बिलकुल नि- कळेज नहि अने अन्नमां स्वाद न रहे तो अवश्य महान् भयनी उत्पत्ति थाय छे. विकारयुक्त पुष्प अथवा फळने गाम बाहेर फेंकी देवुं अने सोम देवतानो चरु करवो तेमज शान्तिने माटे पशुनुं अथवा बकरानुं बळिदान देवुं, खेतिमां विकृति जोइ प्रथम तो ए क्षेत्र ब्राह्मणोने आपी देवुं अने पछीथी ते क्षेत्रनी वच्चे भूमिदेवताओनो चरु करवो; सस्य विकृतिनो दोष निवृत्त करवा माटे महर्षिओए ए उपाय बतावेल छे. वृष्टि न थाय अथवा बहुज वृष्टि थाय तो दुर्भिक्ष पडे छे, अने शत्रुसेनानुं आगमन थाय छे. वर्षाऋतु विना अन्य ऋतुमां वृष्टि थाय तो रोगनी उत्पत्ति अने वादळ विना वृष्टि थाय तो राजानुं मरण थाय छे. गणितनी रीति प्रमाणे शिशिर आदि ऋतुनुं आगमन न थयुं होय छतां शीत उष्णनो विपर्यय थइ जाय अर्थात् शीतकाळमां उष्णता जणाय अने उष्णकाळमां शीत पडे तो छ महिनानी अंदर राज्यमां भय फेलाय छे अथवा दैवज- नित रोगथी भय उपजे छे. वर्षाऋतु विना अन्य ऋतुमां अविच्छिन्न सात दिवस पर्यन्त वृष्टि थाय तो मुख्य राजा मरण पामे छे. रुधिरनी वृष्टि थाय तो युद्ध; मांस, अस्थि अथवा वसा आदिनी वृष्टि थाय तो मरकी; धान्य, सुवर्ण, वृक्षनी छाल, पुष्प अथवा फळ आदिनी वृष्टि थाय तो ते नगरनो नाश थाय छे. वादळां वगर उपल पडवा लागे अथवा गर्दभ, उंट, मार्जार तथा जम्बुक आदि प्राणी विकार युक्त देखाय अने अतिवृष्टिमां पण छिद्र होय अर्थात अति वृष्टि थया छतां कोइ कोइ स्थानमां बुन्द पण न पडे तो क्षेत्रोमां टीड आदिनो उपद्रव थाय छे. दूध, घृत, मध, दधि, रुधिर अथवा उष्णजळ वरसे तो देशनो नाश थाय छे. रुधिरनी वृष्टिथी राजाओ वच्चे युद्ध पण थाय छे. सूर्य निर्मळ छतां वृक्ष आदिनी छाया न पडे अथवा अवळी छाया पडे अर्थात् सूर्यनी तरफ छाया पडे तो देश म्होटा भयमां आवी पडे छे. वांदळांओ वगर आकाशनी अंदर दिवसे अथवा रात्रिए पूर्व अगर पश्चिममां इन्द्रधनुष देखाइ आवे तो महा दुर्भिक्ष थाय छे. वृष्टिविकृति वखते तेनी शान्ति माटे सूर्य, चन्द्र, मेघ अने वायुनो याग करवो तथा भोजनना पदार्थ, गाय

अने सुवर्णनुं दान करवुं जोइए. नदी नगरनी समीपे वहेती होय अने ते दूर खसे तो नगर उज्जड बनी जाय छे. हृद्, सरोवर अने झरणां आदि जे कोइ दिवस सुकातां न होय ते शुष्क बनी जाय तो पण नगर शून्यताने प्राप्त थाय छे. जे देशनी अंदर नदीओमां तेल आदि स्नेह, रुधिर अथवा मांस वहेवा लागे, नदी न्हानी बनी जाय, निर्मळ न रहे अथवा विपरीत प्रवाहने धारण करे तो छ महिनामां ते देश उपर परचक्र अर्थात् शत्रुसैन्य चडी आवे छे. कुवाओना मध्य भागमां अग्निनी ज्वाळा उठे, धूम्र निकळे, कुवाओनुं जळ उबळवा लागे, अथवा कुवाना मध्य भागमांथी गीत अने मंजलपन जेवा शब्द संभळाय तो मनुष्योमां मरकीनो उपद्रव थाय छे. खाडो खोद्या विना जळ निकळी आवे, जळनो स्वाद तथा गन्ध बदली जाय अने तळाव तथा कूप आदि जलाशयमा कांइ विकार उत्पन्न थाय तो महाभय उपजे छे. जळ विकृतिनी निवृत्तिने माटे वरुणनी पूजा तथा तेना मंत्रोनो जप अने होम पण करवो जोइए, स्त्रीओना प्रसवमां विकार होय अर्थात् श्वान तथा मार्जार आदि जेवी आकृतिवाळां बाळको उत्पन्न थाय, एकी वखते बे त्रण चार अथवा पांच बाळकोनो जन्म थाय, तेमज प्रसवकाल पहेलां अगर पछीथी प्रसव थाय तो देश अने कुळनो क्षय थाय छे. घोडी, सांढणी, भेंस, गाय अने हाथणीने एकसाथे बे बच्चां अवतरे तो तेनुं मृत्यु थाय छे. जे स्त्रीओना प्रसवमां विकार थयो होय तेओने पोतानुं हित चाहनारा पुरुषे बीजा देशमां रजा आपवी अने विविध प्रकारना मनोरथथी ब्राह्मणोने तृप्त करी शान्ति कराववी. घोडी आदि पशुओना प्रसवमां विकार होय तो तेने तेना समुदायथी अलग करी अन्य देशमां मुकी आववां, जो तेम न करवामां आवे तो नगरना स्वामीनो अथवा पशुना युथनो नाश थाय छे. एक जातिनुं पशु पोतानी जातिने छोडी अन्य जातिनां स्त्री पशुथी संभोग करे तो अशुभ थाय छे. बे गायो परस्पर स्तनपान करे, बे बळद स्तनपान करे अथवा गोवत्सना स्तनने श्वान चुसवा लागे तो त्रण महिनामां अवश्य ते स्थळे शत्रुनी सेना आवी पहोंचे छे. आ उत्पातोनी शान्ति माटे एवो लेख छे के जे पशुमां उत्पात थयो होय, तेनो त्याग करवो, विवासन अर्थात् तेने अन्य स्थळे मोकली आपवां, अथवा ब्राह्मणने दानमां आपी देवां, एथी शीघ्र शुभ थाय छे. पशु विकृतिनी निवृत्तिने माटे ब्राह्मणोने तृप्त करी जप तथा होम करवो जोइए अने राजाना पुरोहिते प्रजापत्य मंत्र भणी स्थालीपाक, पशु, अन्न अने दक्षिणा आदिथी प्रजापतिनुं पूजन करवुं जोइए, रथ आदि यान अने अश्व आदि वाहन जोडया वगर चालवा लागे अथवा अश्व

आदि जोडया छतां पण न चाले तेमज रथ आदितुं चक्र पृथ्वीमां धुंची जाय अथवा भांगी जाय तो राज्यने भय थाय छे, ढोल आदि वाद्यो वगाडया विना वागवा लागे अथवा वगाडया छतां शब्द न करे अथवा व्युत्पत्ति अर्थात् एक वाद्यमांथी अनेक प्रकारना शब्दो निकळवा लागे तो शत्रुतुं आगमन अथवा राजातुं मृत्यु थाय छे. आकाशमां गीतनो शब्द अथवा ढोल आदि वाद्यनो शब्द संभळाय, चलनशील रथ आदि न चाले अने नहि चालनारां वृक्ष आदि चालवा लागे तो मृत्यु अथवा रोगनी वृद्धि थाय छे. ढोल आदि वाद्य वगाडतां तेमांथी कोइ अन्य प्रकारनो ध्वनि निकळे तो शत्रुथी पराजय थाय छे. वळद अने हळ परस्पर मळी जाय, तथा छज्जां आदि गृहना उपस्करोमां कांइ विकार जणाय अने तेमांथी शृगालना शब्द जेवो शब्द संभळाय तो शस्त्र भय अर्थात् युद्ध थाय छे. ए वायव्य उत्पातनी शांतिने माटे राजाए सक्तुथी वायुतुं पूजन करवुं जोइए तथा पवित्र ब्राह्मणोद्वारा "आवायो:" इत्यादि पांच वैदिक ऋचाओनो जप कराववो जोइए, तेमज पायसान्न तथा दक्षिणाथी ब्राह्मणोने तृप्त करी वहु भोजनवाळा अने वहु दक्षिणावाळा होम पण करवा जोइए. नगरमां रहेनारां पक्षीओ वनमां चाल्यां जाय अथवा वनमां रहेनारां पक्षीओ निर्भय वनी नगरमां प्रवेश करे, दिवसे विचरनारां काक आदि पक्षी रात्रिए विचरे अथवा रात्रिए विचरनारां उलूक आदि पक्षी दिवसे विचरे अने मृग अथवा पक्षी वन्ने संध्या समये मंडल वांधे अथवा एकत्र थइ दिप्त दिशामां शब्द करे तो अवश्य भयनी उत्पत्ति थाय छे. श्येनपक्षी जाणे रुदन करतां होय तेम जणाय, शृगाल सूर्यनी तरफ मुख राखी द्वार उपर शब्द करे, राजाना महेलमां कपोत अथवा उलूक प्रवेश करे, प्रदोष समये कुकुट शब्द करे, हेमन्त आदि ऋतुमां कोयल वोले अने श्येन आदि मांसभक्षक पक्षीओ आकाशमां अवळुं अर्थात् अप्रदक्षिण मंडल वांधी विचरण करे तो भय उपजे छे. गृह, चैत्य, तोरण अने द्वार उपर पक्षीओतुं टोळुं वेसे; गृह आदिनी वच्चे मधमाखीओ मधपूडो वांधे अथवा गृह आदिनी वच्चे कमळनां पुष्प उत्पन्न थाय तो ते गृह आदिनो विनाश थाय छे. जो श्वान गृहनी अंदर अस्थि अथवा मृतक मनुष्यनां हाथ पग आदि अंग उपाडी लावे तो राजातुं मृत्यु थाय छे. मृग आदिना विकारनी शान्तिने माटे दक्षिणा सहित होम करवा, " देवाकपोत " इत्यादि मंत्रनो पांच ब्राह्मणो पासे जप कराववो, एक ब्राह्मण पासे " सदेवा " इत्यादि मंत्रनो जप कराववो अने ए ब्राह्मणोने गोदान आपवुं. शाकुन सूक्तनो, मंत्रनो अने अथर्वशीर्ष आदिनो पण

जप करावत्रो जोइए. इन्द्रध्वज, इन्द्रकील अर्थात् द्वारनी अगळा स्तंभ, द्वार अने एवी ज रीते कपाट, तोरण तथा ध्वज आदि भांगी जाय अथवा नीचे पडी जाय तो राजानुं मृत्यु थाय छे. बन्ने संध्यानो समय दीप्त होय, वनना मध्य भागमां अग्नि विना धूम्र देखाइ आवे, छिद्र विना भूमि फाटी जाय अथवा भूकंप थाय ए बधा उत्पातो भयप्रद गणाय छे. जे देशनो राजा पाखंड अने नास्तिकोनो भक्त होय तेमज सदाचार रहित, क्रोधी, इर्षायुक्त, क्रूर तथा जेनुं चित्त लडाइमां भागी रहेलुं होय ते देशनो नाश थाय छे. जे स्थळे बाळको शस्त्र, लाकडी अथवा पत्थरने हाथमां लइ परस्पर प्रहार करे, पडावी लिए वे टुकडा करी नांखे अने “ छेदो भेदो ” इत्यादि शब्द बोले तो तुरतज भय उपजे छे. जे गृहनी भींत उपर अंगार अथवा गेरु आदिथी भयंकर जीवोनां मृतक मनुष्योनां चित्र आळेखवामां आवे अथवा गृहनां स्वामीनुं ज चित्र अंगार आदिथी आळेखवामां आवे तो ते गृह तुरतज विनाश पामे छे. जे गृह मकरीना जाळां अने मकरीओथी व्याप्त होय, बन्ने सन्ध्या वखते जे गृहनुं पूजन न थतुं होय, जे गृहमां निरन्तर कलह वर्तमान होय तेमज स्त्री पण सदा उच्छिष्ट रहेती होय, ते गृह विनाशने प्राप्त थाय छे. जो राक्षस प्रत्यक्षपणे मनुष्योना जोवामां आवे, तो मरकीनो उपद्रव थाय छे. महा शान्तिओ करवाथी, बलि आपवाथी घणां भोजन करावबाथी तेमज इन्द्र अने इन्द्राणीनुं पूजन करावबाथी उक्त उत्पातोनी शान्ति थाय छे.

प्रथम आन्तरिक्ष उत्पातोमां उल्का, निर्घात, पवनपरिवेष, गन्धर्वनगर अने इन्द्रधनुष्य आदि गणाव्यां, तेमां स्वर्गनी अंदर शुभ कर्मनुं फळ भोगवी जीव भूमिपर जन्म लेवा माटे उल्का रूपे पडे छे, तेने उत्कापात कहे छे; ए उल्कानाधिष्ण्या, उल्का, अशनि, विद्युत अने तारा ए रीते पांच भेद छे. उल्कानुं तथा धिष्ण्यानुं फळ पंदर दिवसे अर्थात् एक पखवाडीए, अशनिनुं फळ त्रण पखवाडीए अने विद्युत तथा तारानुं फळ छ दिवसे प्राप्त थाय छे. तारा तथा धिष्ण्या अर्ध फळ अने विद्युत्, उल्का तथा अशनि संपूर्ण फळ आपे छे. महान् शब्दथी युक्त भूमिनुं विदारण करती मनुष्य, हाथी, घोडा, मृग, पाषाण, गृह, वृक्ष अने पशु उपर पडे छे तेने अशनि कहे छे. ए अशनिनो आकार चक्र जेवो होय छे. जे जीवोने भय आपती तडतड शब्द करती वांकी तेमज म्होटी जीवोना समूह उपर तथा काष्ठआदि इन्धन उपर पडे छे, तेने विद्युत कहे छे. पातळी न्हाना सरखा पुच्छयुक्त, प्रज्वलित अंगार तुल्य देदीप्यमान अने बे हाथ लांबी होय ते धिष्ण्या

कहेवाय छे ते जे स्थानथी चाले छे त्यांथी दश धनुष अर्थात् चालीश हाथ पर्यंत अधिक देखाय छे. एक हाथ लांबी, श्वेतवर्ण, अथवा ताम्रवर्णवाळी, कमळना तन्तु समान अत्यंत पातळी अने जाणे आकाशमा खेंचाती होय तेम तिर्यकपणे उपर अथवा नीचे जाय तेने उल्का कहे छे. जेनुं शिर म्होटुं होय, जे पडतां पडतां वृद्धि पामती जाय, जेनुं पुच्छ लघु होय अने जे प्रमाणमां एक पुरुष लांबी होय तेने पण उल्का कहे छे. ए उल्काना घणा भेद छे. जे उल्काओनुं रूप प्रेत अथवा मृतक मनुष्य, खड्ग आदि शस्त्र, गर्दभ, ऊंट, मगर, वानर, दाढवाळां सूकर आदि प्राणि, हळ, मृग, घो, सर्प अथवा धूम्र तुल्य होय ते अशुभ गणाय छे, तेमज जेने बन्ने तरफ शिर होय ते उल्का पण अशुभ लेखाय छे. ध्वजा, मत्स्य, हाथी, पर्वत, कमल, चन्द्रमा, अश्व, गाळेली चांदी, हंस, श्रीवत्स नामनुं चिह्न, वज्र, शंख अने स्वस्तिकना तुल्य आकृतिवाळी उल्का कल्याण अने सुभिक्ष करे छे आकाशना मध्य भागमांथी घणी उल्का पडे तो राजानो तथा देशनो नाश थाय छे. उल्का आकाशमां अति भ्रमण करे तो लोकमां व्याकुळता वधे छे. जे उल्का चन्द्र सूर्यनो स्पर्श करती अथवा चंद्र सूर्यथी निकळी पृथ्वीपर पडे अने एज वखते भूकंप थाय तो, ते उल्का शत्रु सैन्यनुं आगमन, राजभय, दुर्भिक्षभय, अने अवृष्टिभयने उत्पन्न करे छे. सूर्यने अपसव्य करी अर्थात् जमणी बाजु राखी उल्का पडे तो पौर अर्थात् नगरमां रहेवावाळा राजानो नाश थाय छे. तेमज चन्द्रने अपसव्य राखी उल्का पडे तो चढाइ करी जनारा राजानो नाश थाय छे अने सूर्यथी निकळेली उल्का चढाइ करी जनारा राजानी समीप पडे तो शुभ फळ आपे छे. श्वेत, रक्त, पीत अने कृष्ण वर्णनी उल्का क्रमपूर्वक ब्राह्मण आदि चारे वर्णोनो नाश करे छे. जे उल्कानुं शिर पृथ्वी साथे अथडाय ते ब्राह्मणोनो नाश करे छे. जेनी छाती पृथ्वीनो स्पर्श करे ते उल्का क्षत्रीओनो, जेनां पार्श्व भूमिनो स्पर्श करे ते उल्का वैश्योनो अने जेनुं पुच्छ भूमिनो स्पर्श करे ते उल्का शूद्रोनो नाश करे छे उत्तर, पूर्व, दक्षिण अने पश्चिम दिशामां रूक्ष अर्थात् रुखी उल्का पडे तो ब्राह्मण आदि चारे वर्णनुं अशुभ करे छे. एज उल्का सीधी, निर्मळ, अखंडित अने आकाशना अर्धा भागमां जनारी होय तो पोतपोतानी दिशा अनुसार ब्राह्मण आदि चारे वर्णनी वृद्धि करे छे. जे उल्का श्याव, अरुण, नील, असित, रुधिर तुल्य, अग्नि तुल्य अथवा भस्म जेवा वर्णवाळी अने रूक्ष होय; दिवसे अथवा सन्ध्या समये पडी होय अने ते वांकी तेमज खंडित होय तो शत्रु सैन्यथी भयनी उत्पत्ति थाय छे. उदय तथा अस्त समये जो उल्का सूर्यने ताडन करे तो पौरनुं अने चंद्रने ताडन करे तो पापी राजानुं मृत्यु थाय छे. जो उल्का पूर्वा फाल्गुनी, पुनर्वसु, धनिष्ठा

अने मूळ नक्षत्रने ताडन करे तो स्त्रीओने; पुष्य, स्वाति अने श्रवणने ताडन करे तो ब्राह्मण तथा क्षत्रिओने; रोहिणी, त्रण उत्तरा, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा अने रेवतीने ताडन करे तो राजाओने त्रणपूर्वा, भरणी, मघा, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा अने मूळ नक्षत्रने ताडन करे तो तस्करोने; तथा अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित, कृत्तिका अने विशाखाने ताडन करे तो गीत, नृत्य आदि कळाने जाणनाराओने पीडा थाय छे. ए उल्का कोइ देवतानी मूर्ति उपर पडे तो राजाने अने देशने भयभीत करे छे, इन्द्रनी मूर्ति उपर पडे तो केवळ राजानेज भय उपजावे छे, गृह उपर पडे तो गृहना स्वामीने पीडा करे छे. उल्का जे दिशाना स्वामी गृहने ताडन करे ते दिशाना निवासी मनुष्योने पीडा थाय छे. धान्यना खळामां उल्का पडे तो खेती करनाराओ पीडा पामे छे. प्रधान वृक्ष उपर उल्का पडे तो प्रतिष्ठित मनुष्यो पीडित थाय छे. नगरना द्वार उपर उल्का पडे तो नगरनो क्षय थाय छे. द्वारनी अर्गला पर उल्का पडे तो प्रजानो क्षय थाय छे. ब्रह्माना मन्दिरपर उल्कापात थाय तो ब्राह्मणो नाश पामे छे अने गायोना स्थानमा उल्का पडे तो जे मनुष्य घणी गायोनो स्वामी होय ते पीडा पामे छे. उल्का पडती वखते क्ष्वेडा अर्थात् युद्धनी वच्चे, वीरपुरुषो जे सिंहनाद करे छे ते, आस्फोटित अर्थात् मल्ल पोतानी एक भुजा उपर बीजा हाथना आघातथी जे शब्द करे छे ते, वाद्यना शब्द अने गीत आदिना महान शब्द थाय तो राजा अने देश भयभीत बने छे. जे उल्का आकाशमां लांबा वखत सुधी स्थिर रहे अने तेनो आकार दंड तुल्य होय तो ते राजाने भय आपे छे. जे उल्का जाणे दोरीथी बांधेली होय तेम आकाशमां लटकती जोवामां आवे अथवा जेनो आकार इन्द्रध्वज तुल्य होय ते पण राजाने भय उपजावे छे. जे उल्का ज्याथी निकळी त्यांज अवळी चाली जाय ते श्रेष्ठीओनो क्षय करे छे. वक्र गति करनारी उल्का राजानी राणीनो नाश करे छे. उल्कानुं मुख नीचुं होय तो राजा अने उंचु होय तो ब्राह्मण नाश पामे छे. मयूरना पीच्छ समान जे उल्कानी आकृति होय ते लोकनो क्षय करे छे. जे उल्कानी गति सर्प जेवी होय ते स्त्रीओनुं अनिष्ठ करे छे. छत्र तुल्य आकृतिवाळी उल्का पुरोहितनो नाश करे छे. वांसना गुल्म समान आकृतिवाळी उल्का देशमा दोषने उत्पन्न करे छे. जे उल्का सर्प अथवा सूकर तुल्य आकृतिवाळी होय अने जेमां अग्निकण उडता होय अथवा जे उल्का खंड खंड थइ जाय अने शब्द पण करे ते अशुभ फळ आपे छे. जे उल्का इन्द्रधनुष जेवी होय ते राज्यनो क्षय करे छे. जे उल्का उत्पन्न थइ आकाशमांज लीन थइ जाय ते मेघोनो नाश करे छे. अर्थात् वृष्टि थती नथी. पवन सन्मुख गमन करनारी, वक्र गतिवाळी अथवा जरा दूर चाली पाछी फरनारी उल्का अशुभ गणा-

य छे. जे दिशामां नगर अथवा सेना उपर उल्का पडे ते दिशाथी राजाने भय उपजे छे. अने जे दिशामां देदीप्यमान उल्का पडे ते दिशापर चढाइ करनारा राजा सत्वर शत्रुओने जीती शके छे.

पवनथी मंडलीभूत अर्थात् गोळ थएलां सूर्य चन्द्रनां किरणो स्वल्प मेघयुक्त आकाशमां प्रतिबिम्बित बनी अनेक प्रकारनी रंगबेरंगी आकृतिवाळा देखाइ आवे तेने परिवेष कहे छे. रक्त आदि रंगना परिवेष इन्द्र आदि देवताओ करे छे अर्थात् परिवेषनो रक्तवर्ण होय तो इन्द्रकृत, नीलवर्ण होय तो यमकृत, जरा श्वेत होय तो वरुणकृत, कपोतवर्ण होय तो नैर्ऋतकृत, मेघसदृशवर्ण होय तो वायुकृत, कृष्ण तथा श्वेतवर्णथी मिश्रित होय तो शिवकृत, हरितवर्ण होय तो ब्रह्मांकृत अने शुक्लवर्ण होय तो अग्निकृत परिवेष छे एम जाणवुं. कुबेरे करेलो परिवेष श्यामवर्ण होय छे. एवीज रीते इन्द्र आदि अन्य देवताओ पण रक्त आदि जे गुण कह्या तेना परस्पर आश्रयथी परिवेष करे छे अर्थात् एकना रंगमां बीजानो रंग मळे छे अने एथी परिवेषमां अनेक रंग दृष्टिगोचर थाय छे. जे परिवेष वारंवार प्रगट थइ लय पामे छे ते पण वायुकृत होय छे अने ते अल्प फळ आपे छे. शिशिर आदि छ ऋतुओमां क्रमपूर्वक चाषपक्षी, मयूर, रजत, तेल, दूध, अने जळ जेवा रंगनो परिवेष स्निग्ध अने अखंडित वृत्तवाळो होय तो ते प्रजामां कल्याण अने सुभिक्ष करे छे. जे परिवेष अखिल आकाशमां गमन करे अर्थात् उदयथी आरंभी अस्त पर्यन्त सूर्य अथवा चन्द्रनी साथे रहे ते तथा जे अनेक वर्णवाळो, रुधिरतुल्य वर्णवाळो, रूक्ष, खंडित, गाडी, धनुष, अथवा शृंगाटकनी माफक त्रिकोण आकृतिवाळो होय ते परिवेष अशुभ गणाय छे. मयूरना कंठ जेवा वर्णवाळो परिवेष होय तो अत्यंत वृष्टि थाय छे. घणा रंगयुक्त परिवेष होय तो राजानुं मृत्यु थाय छे. परिवेष धूम्रवर्ण होय तो भय उपजे छे. इन्द्रधनुष जेवा वर्णवाळो अथवा अशोकवृक्षना पुष्प समान रक्तवर्ण परिवेष होय तो युद्ध थाय छे. जे परिवेष एक रंगनो, गहेरो, निर्मळ, पोताना ऋतुने अनुसरता रंगवाळो अने क्षुर वादळांओथी व्याप्त होय ते शीघ्र वृष्टि करे छे अने जे परिवेष पीतवर्ण होय तेमज जेना मध्यभागमां अति देदीप्यमान सूर्य होय ते पण शीघ्र वर्षा करे छे. दीप्त अर्थात् सूर्य तरफ मुख राखी पक्षी अने मृग परिवेषने वखते शब्द करे अने परिवेष मलिन होय तेमज अति म्होटुं होय अने प्रातःकाळ, मध्यान्हकाळ अथवा सायंकाळनो समय होय तो भयनी उत्पत्ति थाय छे. जो परिवेष विद्युत् तथा उल्का आदिथी ताडित होय तो शस्त्रथी राजानुं मृत्यु थाय छे. हमेशां दिवसे सूर्य तथा रात्रिए चन्द्रमा रक्तवर्ण रहे तो राजानुं मृत्यु थाय छे. उदय अने अस्त समये सूर्य तथा चन्द्र वारंवार परिवेषयुक्त थाय तो पण राजानुं मृत्यु समजवुं. जे

परिवेषनां बे मंडल होय ते सेनाना स्वामीने भय उपजावे छे. बहु युद्ध करावतां नथी, त्रण मंडलनो परिवेष होय तो युद्ध, चार मंडलनो परिवेप होय तो राजाना युवराजने भय अने पांच मंडलनो परिवेष होय तो राजाना नगरने शत्रु घेरी ले छे. चन्द्रमाना परिवेप वच्चे भौम आदि कोइ ग्रह होय तो त्रण दिवसमां वृष्टि अथवा एक महिनानी अंदर युद्ध थाय छे. जे राजाना जन्मलग्ननो स्वामी, जन्मराशिनो स्वामी, अने जन्मनक्षत्र परिवेपनी वच्चे आवी जाय तो ते राजानुं अशुभ थाय छे. सूर्य चन्द्रना परिवेपनी अंदर शनैश्चर होय तो कांग आदि लघु अन्ननो लय करे छे, पवनयुक्त वृष्टि करे छे अने वृक्ष आदि स्थावर पदार्थ तेमज खेती करनाराओ नाश पामे छे. जो परिवेपनी वच्चे मंगळ होय तो राजकुमार, सेनापति अने सेनाने व्याकुळता प्राप्त थाय छे. तेमज अग्नि अने शस्त्रथी भय उपजे छे. जो परिवेपमां बृहस्पति होय तो पुरोहित, राजाना मंत्री अने राजाने पीडा थाय छे. जो परिवेषमां बुध होय तो राजाओना मंत्री, वृक्ष आदि स्थावर अने लेखक वृद्धि पामे छे तथा वृष्टि पण सारी थाय छे. जो परिवेषमां शुक्र होय तो चढाइ करी जनारा क्षत्रिय राजा तेमज राजानी राणी पीडा पामे छे अने दुर्भिक्ष पण थाय छे. जो परिवेपमां धूमकेतु होय तो दुर्भिक्ष, अग्नि, मरकी, राजा अने युद्धथी प्रजाने भय थाय छे. जो परिवेपमां राहु होय अर्थात् चन्द्र गृहण समये परिवेप होय तो गर्भने भय, रोगनी उत्पत्ति अने राजाने पण भय थाय छे. भौम आदि गृहोमांथी कोइ बे गृह सूर्य अथवा चन्द्रना परिवेप वच्चे होय तो घणां युद्धो थाय छे. जो परिवेपमां त्रण ग्रह होय तो दुर्भिक्षथी अने अवृष्टिथी भय उत्पन्न थाय छे. जो परिवेपमां चार ग्रह होय तो मंत्री अने पुरोहित सहित राजा मृत्यु पामे छे. जो परिवेपमां पांच अथवा छ ग्रह होय तो प्रलयनी माफक जगत्नी स्थिति बनी जाय छे. भौम आदि ताराग्रह अने अश्विनी आदि नक्षत्र एमांथी कोइ एकनो परिवेप अलग होय अर्थात् सूर्य चन्द्रनी साथे न होय तेमज ते परिवेप थया पछी जो केतुनो उदय न थाय तो राजानुं मृत्यु थाय छे. जो केतुनो उदय थाय तो परिवेपनुं फळ प्राप्त थतुं नथी परंतु केतुनुंज फळ प्राप्त थाय छे. प्रतिपदा आदि चार तिथिओमां परिवेप होय तो ब्राह्मण आदि चारे वर्णो क्रमपूर्वक पीडा पामे छे, पंचमी आदि तिथि विषे परिवेप होय तो क्रमपूर्वक श्रेणी, नगर अने कोशनुं अशुभ थाय छे. अष्टमीने दिवसे परिवेप होय तो युवराजने तथा नवमी आदि त्रण तिथिओमा परिवेप होय तो राजाने दोपकर थइ पडे छे, द्वादशीने दिवसे परिवेश होय तो नगरने शत्रुओ घेरी ले छे, त्रयोदशीने दिवसे परिवेश होय तो सेनामां क्षोभ थाय छे. चतुर्दशीने दिवसे परिवेप होय तो राजानी राणीने पीडा थाय छे अने अमावास्या अथवा पूर्णिमाने दिवसे परिवेप

होय तो पण राजानेज पीडा करे छे. परिवेषमां त्रण रेखाओ होय छे. तेमां अंदरनी रेखाथी नगरमां रहेला राजानुं, बाहिरनी रेखाथी चढाइ करी जनारा राजानुं अने मध्यनी रेखाथी आक्रन्दसारनुं शुभाशुभ विचारवुं. जेनी रेखा रक्तवर्ण, श्यामवर्ण तथा रूक्ष होय तेनो पराजय अने जेनी रेखा निर्मळ, श्वेत तथा कान्तियुक्त होय तेनो जय थाय छे.

वादळांओथी व्याप्त थएला आकाशमां पवने रोकेलां सूर्यनां किरणो धनुषने आकारे रंग बेरंगी देखाइ आवे तेने इन्द्रधनुप कहे छे. केटलाएक आचार्योनुं कहेवुं एवुं छे के अनंतनागना कुळमां उत्पन्न थएला सर्पोना श्वासथी इन्द्रधनुप बने छे. चढाइ करी जनारा राजा सामे ए इन्द्रधनुप होय तो तेनो पराजय थाय छे. ए इन्द्रधनुप अखंडित पृथ्वीनो स्पर्श करी रहेलुं, कान्तियुक्त, स्निग्ध, गहेरुं अनेक वर्णोथी युक्त अने बे भागमां स्थित चढाइ करी जनारा राजाना पृष्ठ भागमां रहेलुं होय तो शुभ फळ आपे छे अने वृष्टि पण करे छे. अग्निकोण आदि विदिशामां इन्द्रधनुप उत्पन्न थाय तो ते दिशाना स्वामीनुं मृत्यु थाय छे. मेघरहित आकाशमां इन्द्रधनुप होय तो शस्त्रथी भय अर्थात् युद्ध थाय छे. पीळा रंगनुं इन्द्रधनुप होय तो आग लागे छे अने नीलरंगनुं इन्द्रधनुप होय तो दुर्भिक्ष पडे छे. जळनी वच्चे इन्द्रधनुष देखाइ आवे अर्थात् इन्द्रधनुपनो अग्र भाग जळ उपर होय तो वर्षा थती नथी. जो इन्द्रधनुष भूमि उपर होय तो खेतीनो नाश थाय छे. वृक्ष उपर होय तो प्रजामां रोग वधे छे. सर्पनी वांवी उपर होय तो शस्त्रभय थाय छे अने जो रात्रिने वखते इन्द्रधनुष दृष्टिगोचर थाय तो राजानो मंत्री मृत्यु पामे छे. वृष्टि थती होय अने पूर्व दिशामां इन्द्रधनुप देखाइ आवे तो वृष्टि निवृत्त थाय छे तथा वृष्टि न होय अने पूर्वमां इन्द्रधनुप देखाय तो वृष्टि थाय छे पश्चिममां इन्द्रधनुष होय तो निरंतर वृष्टि करे छे. जो रात्रि वखते इन्द्रधनुप पूर्वमां देखाय तो राजाने पीडा थाय छे. दक्षिणमां देखाय तो सेनापतिनुं मृत्यु, पश्चिममां देखाय तो नायक अर्थात् प्रधानपुरुषनुं मृत्यु अने उत्तरमां देखाय तो राजाना मंत्रीनो नाश थाय छे. रात्रि समये श्वेत, रक्त, पीत अने कृष्णवर्णनुं इन्द्रधनुप देखाय तो क्रमपूर्वक चारे वर्णने पीडा करे छे. जे दिशामां रात्रि वखते इन्द्रधनुप होय ते देशनो मुख्य राजा सत्वर पंचत्वने पामे छे.

उत्तर आदि चार दिशामां गन्धर्व नगर देखाय तो ते क्रमपूर्वक राजानो पुरोहित, राजा,

---

१ नीतिशास्त्रमां बार प्रकारना राजाओ लख्या छे. तेमां एक आक्रन्दसार पण छे.

सेनापति अने युवराजनुं अशुभ करे छे. श्वेत, रक्त, पीत अने कृष्ण वर्णनुं गन्धर्वनगर क्रमपूर्वक ब्राह्मण आदि चार वर्णोनो नाश करे छे. उत्तर दिशामां गन्धर्वनगर होय तो नगरना राजानो जय थाय छे, आग्नेय आदि कोणमां होय तो वर्णसंकरोनो नाश थाय छे, शान्त दिशामां तोरणयुक्त गन्धर्व नगर होय तो विजय थाय छे. समग्र दिशाओमां निरंतर गन्धर्व नगर देखाय तो ते राजा अने देश ऊभयने भय आपे छे. धूम्र, अग्नि, अथवा इन्द्रधनुप तुल्य कान्तिवाळुं गन्धर्वनगर होय तो चोर अने वनमां रहेनारा भील आदि मार्या जाय छे. पांडुर रंगनुं गन्धर्व नगर होय तो अशनि पडे छे अने प्रचंड पवन चाले छे. दीप्त दिशामां गन्धर्व नगर होय तो राजानुं मृत्यु थाय छे. सेनानी अगर नगरनी डावी बाजु गन्धर्व नगर होय तो शत्रुभय अने जमणी बाजु होय तो जय आपे छे. जे वखते ध्वज अने तोरणयुक्त अनेक वर्ण अने अनेक आकृतिनां गन्धर्वनगर आकाशमां देखाइ आवे त्यारे भूमि युद्धनी वच्चे हाथी, मनुष्य, अने अश्वोना रुधिरनुं पान करे छे.

एक पवन बीजा पवनथी ताडित थइ ज्यारे आकाशथी पृथ्वी पर पडे ते समये जे शब्द थाय तेने निर्घात कहे छे. ए निर्घात समये सूर्य तरफ मुख राखी पक्षी शब्द करे तो अशुभ फळनी प्राप्ति थाय छे. सूर्योदय समये अर्थात् बे घडि दिवस चड्या पर्यन्त निर्घात थाय तो राज्यना अधिकारी लोको, राजा, धनवान, लडवैयाओ, स्त्री, वणिक अने वेश्याओ विनाश पामे छे. एक प्रहर दिवस चड्या पर्यन्त निर्घात शब्द थाय तो बकरी, भेड, शूद्र अने नगरना निवासीओनो क्षय थाय छे. बे प्रहर पर्यन्त निर्घात शब्द थाय तो राजाना सेवको अने ब्राह्मणो पीडाने प्राप्त थाय छे. त्रीजा प्रहरमां निर्घात थवाथी वैश्य तथा मेघनो क्षय थाय छे. चोथा प्रहरमां निर्घात थवाथी चोर लोको पीडा पामे छे, सूर्यास्त समये निर्घात थवाथी नीच पुरुषोनो नाश थाय छे; रात्रिना प्रथम प्रहरमां थयेलो निर्घात खेतीनो नाश करे छे, रात्रिना बीजा प्रहरमां थयेलो निर्घात पिशाचोना समूहने पीडा करे छे, रात्रिना त्रीजा प्रहरमां थयेलो निर्घात हाथी तथा अश्वोनो नाश करे छे अने रात्रिना चतुर्थ प्रहरमां थयेलो निर्घात शत्रु पर चढाइ करनारा राजानो क्षय करे छे. भयंकर अने जर्जर अर्थात् खोखरो निर्घात शब्द जे दिशामां जाय ते दिशानो नाश करे छे.

सूर्यनी समीपे बीजो सूर्य देखाइ आवे तेने प्रतिसूर्य कहे छे. ते प्रतिसूर्य जे ऋतुमां सूर्यनो जेवो रंग होवो जोइए तेवाज रंगनो होय तथा स्निग्ध, वैदूर्यमणि तुल्य वर्णवाळो, निर्मळ अने श्वेत होय तो कल्याण तथा सुभिक्ष करे छे. पीळा रंगनो प्रतिसूर्य होय तो प्रजामां रोग उत्पन्न करे छे.

अशोकना पुष्प जेवो रक्तवर्ण प्रतिसूर्य होय तो शस्त्रकोप अर्थात् युद्ध थाय छे. प्रतिसूर्योनी माला जोवामां आवे तो चोरभय, रोग अने राजानुं मृत्यु थाय छे. सूर्यबिम्बनी उत्तरे प्रतिसूर्य देखाय तो वृष्टि थाय छे, दक्षिणे देखाय तो पवन चाले छे; सूर्यबिम्बनी बन्ने बाजुए बे प्रतिसूर्य होय तो राजानुं मृत्यु अने नीचे होय तो प्रजामां मरकीनो उपद्रव थाय छे.

अन्धकारनी माफक अत्यंत कृष्णवर्णवाळी धूलिथी पर्वत, नगर तथा वृक्ष आदि कांइ पण न देखाय तेवी रीते सर्व दिशाओ आच्छादित थइ जाय तो राजानुं मृत्यु थाय छे. धूमसमूह अथवा धूलि जे दिशामां प्रथम उत्पन्न थाय अथवा जे दिशामां प्रथम निवृत्त थाय ते दिशामां सात दिवसनी अंदर अक्षय भयनी उत्पत्ति थाय छे. धूलिरूप मेघसमूह श्वेतवर्णनो होय तो राजाना मंत्री तथा देशोने पीडा, शीघ्रयुद्ध अने अति कष्टथी कार्यसिद्धि थाय छे. सूर्योदय समये आकाशने आच्छादित करतो धूलिसमूह एक दिवस अथवा बे दिवस पर्यन्त वृद्धि पामे तो महान् भयनी उत्पत्ति थाय छे. एक रात्रि निरन्तर धूलिनी वृद्धि थती जाय तो मुख्य राजानुं मृत्यु थाय छे अने बाकीना बुद्धिमान राजाओने शुभ फळ आपे छे. जे राज्यमां बे रात्रि पर्यन्त घाटी अने घणी धूलि फेलाय ते राज्यमां परचक्र प्रवेश करे छे. त्रण अथवा चार रात्रि पर्यन्त पांशुनी वृष्टि थाय तो अन्न अने लवण आदि रसो नाश पामे छे. पांच रात्रि पर्यन्त धूलि वरसे तो राजाओनी सेनामां क्षोभ थाय छे. पांशुनी वृष्टि थइ रह्या पछी धूमकेतुना उदय आदि कांइ उत्पात न थाय तो तीव्र भय उपजे छे, अर्थात् अन्य उत्पात थवाथी पांशुवृष्टिनुं फळ प्राप्त थतुं नथी, परंतु पाछळथी थएल उत्पातनुंज फळ प्राप्त थाय छे. शिशिर ऋतु विना अन्य ऋतुमां पांशुवृष्टि थाय ते हमेशां फळ रहित होय छे.

अर्ध सूर्य अस्त पाम्या पछी ज्यां सुधी आकाशमां ताराओ स्पष्ट न देखाय त्यां सुधी सन्ध्या अने एवीज रीते सूर्योदय पहेलां तारानी प्रभा मन्द थइ जाय त्यांथी आरंभी सूर्योदय पर्यन्त प्रातः सन्ध्या गणाय छे. मृग, पक्षी, पवन, सूर्य चन्द्रना परिवेष, परिधि अर्थात् प्रतिसूर्य, परिघ, अभ्रवृक्ष अर्थात् वृक्षाकार मेघ, इन्द्रधनुष, गन्धर्वनगर, सूर्यनां किरणो, दंड अने रज ए सर्वनी स्निग्धता अने रंग उपरथी सन्ध्यानुं शुभाशुभ फळ समजी शकाय छे. सन्ध्या समये जो मृग वारंवार भयंकर शब्द बोले तो ग्रामनो नाश थाय छे. सेनाना दक्षिण भागमां रहेलो मृग सूर्य तरफ मुख राखी महान् शब्द करे तो सेनानो क्षय करनारो थइ पडे छे. जो मृगसमूह अथवा पवन दीप्त

अर्थात् सूर्याभिमुख अने सैन्यना वाम भागमां स्थित होय तो युद्ध थाय छे तथा दक्षिण भागमां स्थित होय अने शान्त अर्थात् सूर्याभिमुख न होय तो सैन्यनो समागम थाय छे अने मृगसमूह तथा पवन शान्त अने दीप्त ए उभयथी मिश्रित होय तो वृष्टि थाय छे. प्रातःसन्ध्या वखते मृग तथा पक्षी सूर्य तरफ मुख राखी रूक्ष शब्द करे तो देशनो नाश अने जे नगरनी दक्षिण दिशामां स्थित थइ सूर्य भणी मुख राखी मृग तथा पक्षी रूक्ष शब्द करे ते नगरने शत्रु स्वाधीन करी ले छे. गृह, वृक्ष अने तोरणने तोडी पाडनारो धूळ अने मृतिकाना टुकडाओने उडाडनारो, भयंकर शब्द करनारो, रूक्ष तथा आकाशथी पक्षीओने पछाडतो प्रचंड पवन सन्ध्या समये प्रचलित थाय तो ते सन्ध्या अशुभ गणाय छे. जे सन्ध्या मन्द पवनना ताडनथी चलायमान पत्रवाळा वृक्षोथीयुक्त अथवा पवनथी रहित अने जेमां शान्त दिशा भणी मुख राखी मृग तथा पक्षीओ मधुर उच्चार करता होय ते सन्ध्या शुभ लेखाय छे. सन्ध्या समये दंड, विद्युत, मत्स्याकार मेघ, प्रतिसूर्य, सूर्य चन्द्रनो परिवेष, इन्द्रधनुष, ऐरावत अने सूर्यना किरणो ए सर्व स्निग्ध होय तो वृष्टि थाय छे. विच्छिन्न, विषम, नष्टवर्ण, विकृत, कुटिल, अपसव्य परिवृत्त अर्थात् डावी वाजुए झुकेलां, सूक्ष्म, न्हानां, उष्णताथी रहित अने कलुष अर्थात् स्वच्छताथी रहित सूर्यनां किरणो सन्ध्या समये देखाय तो युद्ध थाय छे. अने वृष्टि थती नथी. अन्धकार रहित आकाशमां जो दीप्तियुक्त, निर्मळ, सीधां, लांवा अने दक्षिणावर्त सूर्यना किरणो होय तो जगतनुं कल्याण थाय छे. जे सूर्यना किरणो शुक्लवर्ण आकाशमां आदि, मध्य अने अंत पर्यन्त गमन करनारां अर्थात् संपूर्ण आकाशमां व्यापी रहेलां, स्निग्ध, अखंडित अने सीधां होय ते "अमोघ" किरणो कहेवाय छे अने ते वृष्टि करनारां होय छे. सन्ध्या समये जो सूर्यनां किरणो कल्माप, कांइक कपिल अथवा साधारण कपिल, विचित्र वर्ण, रक्तवर्ण, हरित अथवा शवल अने संपूर्ण आकाशमां व्यापी रहेलां होय तो वर्षा थती नथी अने सात दिवस पछी स्हेजस्हाज भयनी उत्पत्ति थाय छे, सूर्यना किरणो ताम्रवर्ण होय तो सेनापतिनुं मृत्यु, पीत अने रक्त होय तो सेनापतिने दुःख, हरित होय तो पशु अने खेतीनो नाश, धूम्रवर्ण होय तो गायोनो नाश, मजीठ समान रक्तवर्ण होय तो शस्त्रभय अने अग्निभय, कपिलवर्ण होय तो पवनयुक्त वर्षा, भस्म सदृश होय तो अवृष्टि अने श्वेत,कृष्ण अने पीत तथा नील आदि वर्णथी मिश्रित होय तो पण अवृष्टिज थाय छे. वन्धूकना पुष्प समान अति रक्तवर्ण अथवा अंजनना चूर्ण जेवी अति कृष्णवर्णनी धूळ उडी सन्ध्या समये सूर्य तरफ जाय तो सेंकडो रोगोथी प्रजा पीडित थाय छे अने श्वेतवर्णनी धूळ उडी

सूर्य तरफ जाय तो प्रजानी वृद्धि थाय छे तथा सर्वत्र प्रजामां शान्ति फेलाय छे. सूर्यनां किरणो मेघ अने पवन मळी दंडनी आकृतिने धारण करे छे, तेने दंड कहे छे. ए दंड आग्नेय आदि चार खूणामां स्थित होय तो ब्राह्मण आदि चारे वर्णने अशुभ फळ आपे छे. ए दंड सूर्योदय, मध्यान्ह अने सायंकाळे देखाइ आवे तो शस्त्रभय अने रोगनी वृद्धि करे छे. श्वेत, रक्त, पीत अने कृष्णवर्ण दंडक्रमथी ब्राह्मण आदि चारे वर्णोनो नाश करे छे. दंडनुं मुख जे दिशा तरफ होय ते दिशा नष्ट थाय छे. सूर्यनी समीपे जे अग्र होय ते दंडनुं मूळ अने बीजी तरफ तेनुं मुख होय छे. जेनो अग्रभाग दधि सदृश श्वेत होय ते, नीलवर्ण, सूर्यने आच्छादित करी रहेल अने आकाशना मध्यमां स्थित अभ्रतरु अर्थात् वृक्षाकार मेघ अथवा पीत रंगथी रंगाएला अने अनेक मूळथीयुक्त मेघ होय ते अत्यन्त वृष्टि करे छे. जे राजा शत्रुपर चढाइ करी जतो होय अने अभ्रतरु तेनी पाछळ पाछळ चाली अकस्मात् शान्त थइ जाय तो ते राजानुं मृत्यु थाय छे. अभ्रतरु लघुवृक्ष जेवी आकृतियुक्त होय अने ते अकस्मात् शान्त थइ जाय तो युवराजनुं तथा राजाना मंत्रीनुं मृत्यु थाय छे. नीलकमल, वैदूर्यमणि अथवा कमलना तन्तुओ समान वर्णवाळी पवनथी रहित अने सूर्यना किरणोथी प्रकाशित सन्ध्या शीघ्र वृष्टि करे छे. गर्दभ तथा उष्ट्रआदि अशुभ आकृतिवाळा मेघ, गन्धर्वनगर, नीहार, धूलि अने धूमयुक्त सन्ध्या वर्षाऋतुमां होय तो वृष्टिनो अभाव करे छे; एवीज सन्ध्या वर्षा विना अन्य ऋतुमां होय तो शस्त्र कोप करे छे अर्थात् युद्ध थाय छे. शिशिर आदि छ ऋतुओमां सन्ध्यानो स्वाभाविक रंग क्रमपूर्वक रक्त, पीत, श्वेत, चित्र, कमलसदृश अने रुधिरतुल्य होय छे. ऋतु अनुसार सन्ध्यानो वर्ण होय तो शुभ अने अन्य ऋतुना रंगने धारण करनारी सन्ध्या होय तो ते विकृत अर्थात् अशुभ गणाय छे. शस्त्रधारी मनुष्यनी आकृतिवाळो मेघनो टुकडो जो सूर्यनी समीपे होय तो शत्रुथी भय उपजे छे. श्वेतवर्णनुं गन्धर्वनगर जो सूर्यने ढांकी दिए तो जे राजानुं नगर घेराएलुं होय ते तेने फरी प्राप्त थाय छे. जो सूर्य गन्धर्वनगरनुं भेदन करे तो नगरनो नाश थाय छे अर्थात् शत्रु ते नगरने लूंटी लेछे. शुक्लवर्णना अने शुक्ल अन्तवाळा मेघ दक्षिण तरफथी सूर्यनुं आच्छादान करे तो वृष्टि थाय तथा वीरणनामे तृणना गुल्म सरखा अने शान्त दिशामां उत्पन्न थएला मेघ सूर्यनुं दक्षिण तरफथी आच्छादन करे तो पण वृष्टि थाय छे. सूर्यना उपर जे आडी मेघनी रेखा होय तेने परिघ कहे छे, ते परिघ सूर्योदय समये श्वेतवर्ण होय तो राजाथी सैन्य विमुख थाय छे अने जो सुवर्णना सरखावर्णवाळुं परिघ होय तो सेनानी वृद्धि करनार थइ पडे छे. जो सूर्यनी बन्ने

वाजुए प्रतिसूर्य होय अने ते सूर्यबिम्बथी संयुक्त होय तो घणीज वृष्टि करे छे. जो प्रतिसूर्य सर्व दिशाओमां व्यापी रहेला होय तो जलनुं एक बुन्द पण पडतुं नथी. सन्ध्या समये ध्वज, छत्र, पर्वत हाथी तथा अश्वोना रूपने धारण करनारा मेघ होय तो राजाओनो जय थाय छे. रक्तवर्णनो मेघ होय तो युद्ध थाय छे. पलाल अर्थात् धान्यतृणना धूमसमूह तुल्य रंगना तथा स्निग्ध मेघ राजाना सैन्यनी वृद्धि करे छे, लटकता वृक्ष समान आकृतिवाळा अत्यंत रक्तवर्णना मेघ सन्ध्या समये होय तो शुभ गणाय छे अने नगरने आकारे मेघ आकाशमां सन्ध्या समये स्थित होय तो ते पण शुभ समजवा. जे सन्ध्यामा सूर्यनी तरफ मुख राखी पक्षी, शिवा तथा मृग शब्द करे अने दंड, धूलि तथा परिघ आदि देखाइ आवे तेमज निरंतर सूर्यमां कांइक विकार होय एवी सन्ध्या देशनो, राजानो अने सुभिक्षनो नाश करे छे. प्रातः सन्ध्या पोतानुं शुभाशुभ फळ एज वखते आपे छे, अने सायं सन्ध्या रात्रिए अथवा त्रण दिवसनी अंदर फळ आपे छे. सूर्य चन्द्रनो परिवेष, धूलि अने परिघ एज समये फळ न आपे तो सात दिवसनो अंदर तेनुं शुभाशुभ फळ मळे छे, एवीज रीते सूर्यनां अमोघ आदि किरणो, इन्द्र धनुप, विद्युत्, प्रतिसूर्य, मेघ अने वायु जो एज समये फळ न आपे, तो तेनुं फळ पण सात दिवसनी अंदर प्राप्त थाय छे. पक्षी पोताना शब्दोनुं शुभाशुभ फळ एज दिवसे अथवा आठ दिवसनी अंदर आपे छे. अने मृगना शब्दनुं शुभाशुभ फळ सात दिवसनी अंदर प्राप्त थाय छे. सन्ध्या पोतानी दीप्तिने लीधे एक योजनमां प्रकाशित थाय छे, अने एटला माटे एक योजननी अंदर सन्ध्यानुं शुभाशुभ फळ मळे छे. विजळी पोतानी प्रभाथी छ योजन पर्यन्त प्रकाश करे छे जेथी छ योजननी अंदर तेनुं फळ प्राप्त थाय छे जेथी तेनुं फळ पांच योजननी अंदर प्राप्त थाय छे. केटलाएक मुनीश्वरोना कहेवा प्रमाणे उल्का पडती वखते केटला योजन पर्यन्त प्रकाश करे छे तेनो कांइ नियम नथी एटला माटे उल्कापातनुं फळ सर्वत्र अस्तित्वने भोगवे छे. जेनी प्रतिसूर्य एवी संज्ञा छे ए परिधिनी प्रभा त्रण योजन पर्यन्त देखाय छे एटला माटे त्रण योजनमां वीश प्रतिसूर्यनुं शुभाशुभ फळ प्राप्त थाय छे. परिघ पांच योजन पर्यन्त देखाय छे. जेथी तेनुं फळ पांच योजनमांज पोतानुं प्रावल्य जणावे छे. सूर्य चन्द्रनो परिवेप पांच अथवा छ योजन पर्यन्त जोवामां आवे छे जेथी तेनुं फळ पण तेटला योजनमांज मळे छे, तेमज इन्द्रधनुप दश योजन पर्यन्त देखाय छे, जेथी तेनुं शुभाशुभ फळ दश योजननी अंदर पोतानुं अस्तित्व वतावे छे.

पीतवर्णनो दिग्दाह होय तो राजाओने भय, अग्निसदृश वर्णवाळो दिग्दाह होय तो

देशनो नाश तथा लाल रंगनो दिग्दाह होय अने तेनी जमणी बाजुए वायु गति करे तो खेतीनो नाश थाय छे. जे दिग्दाह पोतानी दीप्तिथी महान् प्रकाश करे अने जेमां सूर्यनी माफक समग्र वस्तुओनी छाया जोवामा आवे ते दिग्दाह राजाने अत्यंत भय आपनारो थइ पडे छे, रुधिर तुल्य दिग्दाहनो रंग होय तो युद्ध थाय छे, पूर्व दिशामां दिग्दाह जोवामां आवे तो राजाओ-समेत क्षत्रीयोने पीडा थाय छे, अग्निकोणमां दिग्दाह होय तो शिल्पज्ञ अने बाळको पीडा पामे छे, दक्षिणमां दिग्दाह होय तो क्रूर पुरुषो सहित वैश्यो पीडाय छे, नैरूत्यकोणमां दिग्दाह होय तो दूत अने पुनर्भू अर्थात् जेनो बीजी वखत विवाह थाय छे एवी स्त्रीओ पीडा पामे छे. पश्चिम-मां दिग्दाह होय तो शूद्र अने खेती करनाराओ पीडाने प्राप्त थाय छे, वायव्य कोणमां दिग्दाह होय तो चोर अने अश्वो पीडाय छे, उत्तरमां दिग्दाह होय तो ब्राह्मणोना भुंडा हाल थाय छे, अने इशान कोणमां दिग्दाह होय तो पाखंडी अर्थात् वेदमतने नहि माननारा तेमज वाणियाओ-ने पीडा प्राप्त थाय छे. दिग्दाह समये आकाश निर्मळ होय, नक्षत्र निर्मळ होय, प्रदक्षिण पवन चालतो होय अने दिग्दाह पण सुवर्ण सरखा स्वच्छ रंगनो होय तो प्रजा सहित राजानुं शुभ थाय छे.

केटलाएक मुनिओ कहे छे के समुद्रना जळमां जे म्होटा म्होटा मकर, मत्स्य तथा शिशु-मार आदि जीव छे ते ज्यारे चलायमान थाय छे त्यारे भूकम्प थाय छे; केटलाएक मुनिओ कहे छे के भूमिना भारथी थाकी ज्यारे दिग्गज विश्रान्ति ले छे त्यारे भूकम्प थाय छे, केटलाएक मुनि-ओ कहे छे के आकाशमां रहेलो वायु ज्यारे अन्य वायुथी ताडन पामी पृथ्वीपर पडे छे त्यारे शब्द सहित भूकम्प थाय छे. केटलाएक मुनिओ कहे छे के शुभाशुभ कर्मथी भूकम्प थाय छे अर्थात् धर्मनी वृद्धि होय तो शुभ फळ करनारो अने पापनी वृद्धि होय तो अशुभ फळने आपनारो भूकम्प थाय छे, केटलाएक मुनिओ एम पण कहे छे के–पूर्वे पर्वतोने पांख हती, ए पर्वतो ज्यारे उडी आकाशथी पृथ्वीपर पडता अने पृथ्वीथी आकाश तरफ उडता ए समये पण भूकम्प थतो. ए रीते पर्वतोना उडवाथी प्रकंपित थएली पृथ्वी एक समये देवताओनी सभामां जइ लज्जित थइ ब्रह्मा आगळ प्रार्थना करवा लागी के महाराज! आपे मारुं नाम अचला राख्युं छे, परंतु उडता पर्वतो मारा ए नामनी योग्यता रहेवा देता नथी, आ खेद माराथी सहन नथी थतो. आ रीते गद् गद् वाणी सहित अधरोष्ठने फरकावती, मस्तकने जरा नीचेना भागमां झुकावती अने अश्रुपात करती वसुंधरानुं वदन विलोकी ब्रह्माए

इन्द्रने कह्युं के आ पृथ्वीना क्रोधने निवृत्त करो, अने पर्वतोनी पांखो कापवा माटे वज्र फेंको. उक्त आज्ञानो तुरत अमल करवानुं ब्रह्माने वचन आपी इन्द्रे पृथ्वीने कह्युं के हवे तुं भय राखमा, पर्वतो चलायमान थइ शकशे नहिं, परंतु वायु, अग्नि, इन्द्र अने वरुण शुभाशुभ फळनुं सूचन करवा माटे दिवस तथा रात्रिना पहेला, बीजा, त्रीजा अने चोथा भागमां तने कंपित करशे; (प्रातःकालथी बे प्रहर पर्यन्त वायुनो, बेथी चार प्रहर पर्यन्त अग्निनो, चारथी छ प्रहर पर्यन्त इन्द्रनो अने छथी आठ प्रहर पर्यन्त वरुणनो समय होय छे.) उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, मृगशिर अने अश्विनी ए सात नक्षत्र वायु मंडलमां छे अर्थात् एमांथी कोइपण नक्षत्र उपर भूकम्प थाय तो ते वायव्य भूकंप कहेवाय छे. वायव्य मंडलमां भूकम्प थवानो होय त्यारे सात दिवस पहेलांथी धूम्रथी व्याप्त दिशाओवाळा आकाशनी वच्चे भूमिनां रजने उराडतो अने वृक्षोने तोडतो प्रचंड पवन चाले छे, सूर्यनां किरणो मन्द थइ जाय छे. वायव्य भूकम्प थवाथी खेती, जळ, वन अने औषधिओनों क्षय थाय छे. प्रजामां सोजा, श्वास, उन्माद, ज्वर अने कासना रोग फेलाय छे, वणिक लोको पीडाय छे, वेश्या, शस्त्रधारी, वैद्य, स्त्री, काव्य करनारा कवि, गवैयाओ, व्यापारी अने शिल्पज्ञ लोको पण पीडाने प्राप्त थाय छे तेमज सौराष्ट्र, कुरु, मगध, दशार्ण अने मत्स्य देशना निवासीओ पण पीडाय छे. पुष्य, कृतिका, विशाखा, भरणी, मघा, पूर्वाभाद्रपदा अने पूर्वा फाल्गुनी ए सात नक्षत्र अग्निमंडलनां छे. ए मंडलमां भूकम्प थवानो होय ते पहेलां सात दिवसथी तारापात, उल्कापात अने दिग्दाहथी युक्त आकाश चारे तरफ बळतुं होय तेम देखाइ आवे छे, पवन सहित अग्नि विचरण करे छे अर्थात् सात दिवस आग लागे छे अने ते वखते पवन फुंके छे आग्नेय भूकम्प थवाथी मेघोनो नाश थाय छे, वाव, कूप अने तळाव आदि जळाशयो सुकाइ जायछे; राजाओमां परस्पर वैर थायछे; दद्रु, विचर्चिका, ज्वर, विसर्पिका अने पांडुरोग प्रजाने व्याकुळ करे छे. तेजस्वी अने क्रोधी मनुष्यो पीडा पामे छे; तेमज अश्मक, अंग, वाह्लीक, तंगण, कलिंग, वंग, अने द्रविड देशना रहेवाशीओ तेमज भीलोनी अनेक जातिओ पीडाय छे. अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराषाढा अने अनुराधा ए सात नक्षत्र इन्द्रमंडलनां छे, ए मंडलमां भूकंप थवानो होय ते पहेलां सात दिवसथी चालता पर्वतो समान शरीरवाळा, गंभीर गर्जना करता, विद्युत्थी युक्त अने महिषीना शृंगसमान, भ्रमरना समूहसमान अथवा सर्पसमान अति नीलवर्णना मेघ जळनी वृष्टि करे छे. आ ऐन्द्रभूकम्प थवाथी उत्तम कुळना मनुष्यो, प्रसिद्ध पुरुष, राजा अने समूहनो अधिपति विनाश पामे छे. प्रजामां अतिसार, गलग्रह अने मुखरोग

फेलाय छे तेमज वमननो उपद्रव थाय छे. काशी, युगंधर, पौरव, किरात, कीर, अभिसार, हलमद्र, अर्बुद, सुवास्तु तथा मालव देशना लोको पीडाय छे, अने वर्षा सारी थाय छे. रेवती, पूर्वाषाढा, आर्द्रा, अश्लेषा, मूळ, उत्तराभाद्रपदा अने शतभिषक् ए सात नक्षत्र वरुण मंडलनां छे. जो ए मंडलमा भूकम्प थवानो होय तो सात दिवस अगाउथी नीलकमल, भ्रमर अने अति नीलवर्ण, काजळ समान कान्तिवाळा, मधुर ध्वनिथी गर्जना करता तेमजविद्युत्थी प्रकाशमान देहवाळा घणा मेघो जलधारारुपी अंकुरोनी वृष्टि करे छे. वारुण भूकम्प थवाथी समुद्र अने नदीओना आश्रयमां रहेनाराओनो नाश थाय छे; प्रजामां वैरभाव प्रगटे छे, अति वृष्टि थाय छे, तेमज गोनर्द चेदि, कुकुर, किरात अने विदेहना निवासीओ मार्या जाय छे. भूकम्पनुं फळ छ महिनानी अंदर अने निर्घातनुं फळ बे महिनानी अंदर प्राप्त थाय छे. ग्रहण तथा उल्कापात आदिनुं फळ वायव्य आदि मंडलोथी जाणी शकाय छे अर्थात् ए चार मंडलोमां जे मंडलनी वच्चे उत्पात होय तेने अनुसरी शुभाशुभ फळ समजी लेवुं. उल्का, गन्धर्वनगर, पांशुवृष्टि, निर्घात, भूकम्प, दिग्दाह, प्रचंड पवन, सूर्य चन्द्रनुं ग्रहण, नक्षत्र तथा ताराओनो विकार, वादळांओ विना वृष्टि, वर्षाना अन्य विकार, अति वृष्टि, अग्नि विना धूमाडो थवो, अग्निना तणखा उडवा, ज्वाळा उठवी, वनना मृगोनुं ग्राममा आगमन, रात्रिने वखते इन्द्रधनुष, सन्ध्याना विकार, परिवेष खंड, नदीओनी विपरीत गति अने आकाशमा तूर्य आदि वाद्योनो नाद थवो इत्यादि सर्व उत्पात अने बीजा पण स्वभावथी विपरीत होय ते उत्पातोनुं फळ उक्त मंडलो अनुसार जाणी लेवुं, इन्द्रमंडलमां थयेलो भूकम्प वायव्यमंडळनी वेळामां थएल भूकम्पना फळनो अने वायव्यमंडलमां थयेलो भूकम्प इन्द्र मंडलनी वेळामा थएल भूकम्पना फळनो नाश करे छे. एवीज रीते वारुण अने आग्नेय भूकम्प पण परस्पर फळनो नाश करनारा छे. अग्निमंडळनो भूकम्प वायव्यमंडल वखते अने वायव्यमंडलनो भूकम्प अग्निमंडल वखते थाय तो प्रसिद्ध राजाओनुं मरण अथवा तेओ विपत्तिने आधिन बने छे तेमज दुर्भिक्ष, मरकी अने अवृष्टिथी प्रजा पीडाय छे. वारुण मंडळनो भूकम्प इन्द्रमंडल वखते अने इन्द्रमंडलनो भूकम्प वारुण मंडळ वखते थाय तो लोकमां सुभिक्ष, कल्याण, वर्षा अने प्रसन्नता वधे छे तेमज गायो घणुंज दूध आपे छे. तथा राजाओमां अन्योन्य व्यापेला वैरनी शान्ति थाय छे. अंगस्फुरण आदि जे उत्पातोना फळनो समय नथी कह्यो ते जो वायव्यमंडलमां थाय तो तेनुं फळ बे महिनानी अंदर मळे छे. अग्निमंडळमां थाय तो दोढ महिनानी अंदर, ऐन्द्र मंडलमां थाय तो सात दिवसनी अंदर, वारुणमंडलमा थाय तो तत्काळ फळ आपे छे. वायव्यमंडलमां

वसो योजन पर्यन्त, अग्निमंडलमां एकसो दश योजन पर्यन्त, वारुण मंडलमां एकसो ऐंसी योजन पर्यन्त अने ऐन्द्रमंडलमां एकसो साठ योजन पर्यन्त भूकम्प थाय छे. भूकम्प थइ रह्या वाद त्रीजे चोथे, सातमे, त्रीशमे, पंदरमे अथवा पीस्तालीशमे दिवसे फरी भूकम्प थाय तो मुख्य राजाओनो विनाश करे छे.

आ रीते अनेक प्रकारना उत्पातो अने ए उत्पातोथी थता शुभाशुभ फळनुं राजज्योतिषीना मुखथी श्रवण करी युवराज सोढाजी तथा अमात्य विगेरेना मनमां दृढ निश्चय थयो के चालता उत्पातो अवश्य छत्रपतिनो क्षय करे तेवा छे. आम एक तरफ युवराज विगेरे चिन्ताथी विशेष व्याकुळ थवा लाग्या, अने बीजी वाजु शक्तिए पण राजहरपालदेवजीने सूचव्युं के हुं सर्वत्र प्रसिद्ध थइ चूकी माटे हवे अहीं रहेवा मारी इच्छा नथी, त्यारे राजहरपालदेवजीए कह्युं के हुं कोइ प्रकारे आ देहे तमारो संग छोडवानो नथी. ज्यां तमो जशो त्यां हुं पण साथे आवीश. कृतसंकल्प शक्तिए कुमार सोढाजीने आशीर्वाद आपी तेओनी रजा लइ पोताना पवित्र पति सहित श्री "धामा" गाम तरफ प्रयाण कर्युं, दीकरी उमादे पण साथे सिधाव्या. ए त्रणे दैवी शरीरो "धामा" गामने पादर पहोंचता पृथ्वीए वेर आपवाथी वि. सं. ११८६ ना चैत्रशुदि १३ ने दहाडे अन्तर्धान थइ गयां; जेथी ए ढोकळीया तेरशनो तहेवार आज दिवस लगी झाला तेमज मकवाणाने घेर थतो नथी.

अष्टादश तरंग.

"मनहर"

पाटडीए राजधानी रणमल सुधी रही,
छत्रसाले मांडल वसावी मोज माणी छे.
राजजेतसिंहे राज कुवागढमांही कर्यु,
हळवद राज रायधरनी कमाणी छे.
राजमानसिंहे खेड्युं बारवटुं बादशा'थी,
गएलो गिरास लेवा तीखी तेग ताणी छे.
कहे नथुराम सुणो अमर नरेश शाणा,
पाणीवाळा पूर्वजनी केवी श्रेष्ठ कहाणी छे.

राज हरपाळदेवजीना पाटवीकुमार सोढाजी वि. सं–११८६ मां पाटडीनी गादीए बेठा, तेणे प्रजानुं उत्तम प्रकारे परिपालन करी त्रीश वर्ष पर्यन्त निर्विघ्नपणे राज्यसुखनो उपभोग कर्यो वि. सं–१२१६ मां तेओनो स्वर्गवास थतां तेना कुमार दुर्जनसालजी तख्तनशीन थया, तेणे पचीश वर्ष पर्यन्त पाटडीनी प्रजा उपर एक सरखो अमल कर्यो. वि. सं–१२४१ मां तेओनुं परलोक प्रयाण थतां तेना कुमार झालणदेवजीए राज्यासनपर पाय धर्यो. वि. सं–१२६६ मां तेओ पंचत्वने प्राप्त थया त्यारे कुमार द्वारिकादासजी उर्फे अर्जुनसिंहजीने पाटडीना प्रकाशमान सिंहासन पर बेसाडवामां आव्या, तेओए दानवीर बनी राजा महाराजाओमां म्होटुं मान मेळव्युं अने

१–श्री झालावंशना बारोट काळुभाना चोपडामां एवो लेख छे के झालणदेवजी दुर्जनसालजीनी हयातीमांज स्वर्गस्थ थवाथी तेओना कुमार द्वारिकादासजी उर्फे अर्जुनसिंहजीने गादीए बेसाडवामां आव्या हता.

त्रीश वर्ष लगी हर्षभर उत्कर्ष पामी वि. सं–१२९६ मां कैलासवास कर्यो; तेओना कुमार देवराजजीए पाटडीमां गादीए बेसी पचीश वर्ष पर्यन्त निरन्तर सन्त सुरभिनुं संरक्षण करी सुयशना भंडार भर्या अने यज्ञ यागादि सत्कर्मोद्वारा अनंत ब्राह्मणोने संतुष्ट कर्या. वि. सं–१३२१ मां तेओ असार संसारनो त्याग करी वैकुंठ वाटे विचर्या त्यारे तेओना कुमार दुदाजीने अमीर उमरावो तरफथी पाटडीनो तेजस्वी ताज पहेराववामा आव्यो; तेओए राज मळ्या पछी एकंदर पंदर वर्ष लगी आ दुनियानी अंदर अस्तित्व भोगव्युं अने केटलांएक सुंदर देवमंदिरो बंधावी धर्मना तत्वनी अभिवृद्धि करी अंत राजसमृद्धिने झांझवाना जळ जेवी मानी वि. सं–१३३६ मां प्राणनो परित्याग कर्यो; तेना कुमार शुरसिंहजी पाटडीना पाटपर पाय धरी प्रजाने पुत्रवत् पाळी तमाम उपाधिओने टाळी आनंद वैभवमां पचीश वर्ष वितावी भावि योगे वि. सं–१३६१ मां गुणना गेहरूप देहने तजी सुरलोकमां सिधाव्या; त्यारबाद तेओना कुमार शांतलजी राजगादीपर विराजमान थया, तेओ स्वभावे शान्त हता तो पण प्रजाना हितअर्थे नेत्रना उपान्तने कोइ कोइ वखते रक्त करता, उमाकान्तना उपासक बनी विनोदथी वेदमार्गमां विचरता, एकान्तमां उत्तम बुद्धिवाळा अमात्योनी सलाह लइ तेओना कहेवा प्रमाणे अनुसरता अने राजधर्मनी धुराने धैर्यथी धारण करी हरहमेश आश्रितजनोनी उपाधिओने हरता हता. ए नीतिनिपुण नरपालना समयमां सुरपतिए आपनी अने सूर्यनारायणे तापनी नियमित बक्षीश आपी जेथी अन्ननो परिपाक मापी न शकाय तेम उत्तरोत्तर वृद्धि पामवा लाग्यो; खेती करनारां सर्वजन सुखीयां थयां अने धनथी राज्यना खजानाओ भराइ गया; जेथी वि. सं–१३६२ मां तेओए "शांतलपुर" नामे एक सुशोभित शहेर बंधाव्युं अने पाटडीनी समग्र प्रजाने प्रेमपुरःसर त्यां लइ जइ रमणीय राजधानी जमावी तथा वि. सं–१३६३ मा ए शहेरनी समीपे "शान्तलपूर" नामे म्होटुं तळाव तैयार कराव्युं अने विविध प्रकारना वृक्षोथी तेना चारे किनाराओने अलंकृत कर्या तेमज चोतरफ पाका पत्थरना मनोहर घाट बंधाव्या; वर्षा ऋतुनुं आगमन थतां जलनी समृद्धिथी ए सरोवर छलकावा लाग्युं, मकर अने मत्स्य आदि अनंत जलजंतुओए तेमां नेहथी निवास कर्यो; पोतानी प्रतिष्ठाथी प्रसन्न थएल शान्तलसर पवनथी ताडन पामेला तरल तरंगरुपी करोवडे जल बिन्दुरुपी मुक्ताफळोथी जाणे शान्तलपुरने व्हालथी वधावतुं होय तेम सहु कोइ उत्प्रेक्षा करवा लाग्या. जे शहेरनी आसपास विशाळ जलाशयो विद्यमान होय ते शहेरनी प्रजा इन्द्रलोकना वैभवनी पण आकांक्षा करती नथी. श्री झालानरेश शान्तलजीना सर्वोत्कृष्ट सद्गुणोथी संतुष्ट थएली प्रजा तेओने अनेक प्रकारे आशीर्वाद आपवा लागी. जेने परि-

णामे स्वल्प समयमांज राजशांतलजीने त्यां एक पछी एक परम पराक्रमी कुमार विजयपालजी सांगाजी अने सूरजमलजीनो जन्म थयो. ते त्रणे कुमारोए थोडो घणो विद्याभ्यास करी युद्ध कुशळ थवा अर्थे शरीरना सकल अवयवोने कसरतथी केळववा मांडया, हजी मूछना कोंटा फूटया न हता, छतां तेओ पोताना बाहुबळथी भरजुवानीवाळा भडपुरुषोने चपटीमां चोळी नांखवानी हिम्मत धरावता हता. ज्यारे राजशांतलजी गढशान्तलपुरमां सुखपूर्वक राज करता हता त्यारे तेओना साळा वाघेला लूणकरण त्यां अतिथि बनी आव्या. राजशांतलजीए तेनो सारी रीते सत्कार कर्यो. एक दिवसे कचेरीमां त्रणे कुमारो अने अमीर उमरावो सहित राजशान्तलजी बेठा हता त्यां वाघेला लूणकरणे पोताना वंशनी वडाइनो उच्चार कर्यो अने झालाकुळने मश्करीमां उडाववा मांडयुं त्यारे केटलाएक अमीर उमरावो बोली उठया के साळा बनेवीना संबंधने लीधे अन्योन्य स्हेज स्हाज मश्करी करो त्यांसुधी अमारे कहेवा जेवुं नथी, परंतु आम मर्यादा मुकी जो वचनवाहिनीना वेगने नहि रोको तो तेनुं परिणाम विकट आवशे. पोताना भाणेज अने बनेवीने अबोल बेठेला जोइने वाघेला लूणकरणे उमरावोना उपदेश उपर ध्यान आप्युं नहि अने वधारे पडतां तीव्र वचनोनी वृष्टि करवा मांडी. ते कुमार विजयपालथी सहन न थयुं, सांगाजी तथा सूरजमलजीने पण क्रोध व्याप्यो. मामाने मारवा माटे त्रणे कुमारो आसनथी अकेक हाथ उंचा उछळवा लाग्या, तेओनां रक्तनयनोमांथी प्रलयना दहन समान दाह उपजावती उष्मा निकळवाथी आसपास बेठेला उमरावो आकुळव्याकुळ बनी आघा खसवा लाग्या. मामाना मस्तकने लीला मात्रथी मरडी नाखवानुं सामर्थ्य धरावता त्रणे कुमारोए करडी नजर करी कह्युं के झालाओना बळने झीलनारा दीकराओ तो जनुनी हवे जणशे. आ सांभळी वाघेला लूणकरणने दाझ्या उपर डाम अने घा उपर लुण छांटे तेवी असह्य पीडा उपजी " सींदरी बळे तो पण तेनो वळ न टळे " ए कहेवत अनुसार कुटिल स्वभाववाळा लुणकरणे मूछपर हाथ नांखी तलवार काढवानी तैयारी करवा माडी, त्यारे राजशांतलजी बोल्या के बस, हवे हद थाय छे. तलवारने म्यानमांज राखो. शुं करुं के तमो अमारा मिजमान बनी आव्या छो, पण जो हवे झालाओना बळनी परीक्षा करवी होय तो पुष्कळ सेनाने साथे लइ इच्छा होय त्यारे आवजो; एकला उपर घा करतां अमोने शरम आवे छे. बनेवीना आवा बोल सांभळी लुणकरणनो जुस्सो जरा नरम तो पडयो परंतु भाणेजोनी वांकी वळेली भ्रकुटिए तेना स्वभावने गरम करवा तिरस्कारनी दृष्टिरुपी घृतनी आहुति आपी. तेणे क्रोधमां ने क्रोधमां पोताना पुरभणी प्रयाण कर्युं. राजशांतलजीए एज व[illegible]ते

अमीर उमरावोने आज्ञा आपी के तमो सर्व तैयारीमां रहेजो अने आपणी सबळ सेनाने आजथीज सज्ज थवा सूचवी देजो, कारणके लूणकरणना चहेरा उपर जती वखते जे चिह्नो जोवामां आव्यां छे ते जरुर कांइने कांइ उपाधि कर्या विना रहेशे नहि. आ वखते अखिल उमरावोए एकी साथे हिम्मत भरेलां वचनोनो उच्चार कर्यो अने पाटवीकुमार विजयपालजीए प्रलंब भुजदंड ठोकी पिता सन्मुख प्रतिज्ञा करी के मामाना मस्तकने तो हुं मारे हाथेज छेदीश. आम अरसपरस वीरतानी वातो करता सहु पोतपोताने स्थाने विदाय थया. वाघेला लूणकरण पासे झाझुं सैन्य नहि होवाथी तेणे बादशाहना सूबा पासे जइ मदद मागी अने भीमसमान भुजवाळा भाणेजोने भय आपवानी खटकथी शाहनुं जबरुं कटक लइ शान्तलपर उपर वि. सं. १३८१ मां चढाइ करी. राजशांतलजी पण पोतानी सागर सरखी सेना लइ तेना सन्मुख चाल्या. रणवाद्योना गंभीर घोषथी आकाश गाजी उठयुं. आषाढना अंबुद माफक अति श्यामवर्णना उन्नत हाथीओनी हारना भारथी कमठनी पीठ कडकवा लागी अने शूरवीरोना चहेरा उपर चोगणी कान्ति चळकवा लागी. रणांगणमां कलित कंचनी समान नृत्य करनारा तेमज लगीर लगाम खेंचवाथी मृगनी माफक चारे चरणथी कुदनारा तरल तुरगोना दावडाओनी धडबडाटीथी धरामंडल धृजवा लाग्युं. बन्ने सैन्यनो समागम थतां दुश्मनोने डसवा आतुर थइ रहेली कृपाणरूपी काळी नागणो सटोसट म्यानरुपी राफडाओमांथी नीकळवा लागी, ते जोइ कायर पुरुषोनी काया विना अग्निए बळवा लागी. वीर पुरुषोने बंदी वंदीजनो शौर्यथी भरेला छन्दो भणवा लाग्या. अने प्रबळ योद्धाओ परस्पर एक बीजाने हिम्मतथी हणवा लाग्या. जेम वर्षानी यामिनीमां दामिनी दमकती होय तेम झाला तथा वाघेलानी चमूमां झालरो समान झणझणाट करती कठिन करवालो चारेकोर चमकवा लागी अने हद उपरांत वीरहाक थवा लागी; केटलांएकनां कलेजांओ कवच साथे तडातड तुटी पृथ्वी उपर पडवा लाग्यां अने केटलाएकना रुधिरथी रगदोळाएल हाथ पग आदि अंगो रणांगणमां आमतेम रडवां लाग्यां. केटलांएक कबन्धोमांथी छूटती लोहीनी पीचकारीओने योगिनीओ पात्रमां झीलवा लागी अने केटलीएक पिशाचिनीओ प्राण रहित बनी पडेला योद्धाओना आंतरडांओ खेंची पोताना छिद्रवाळां परिधानोने खुबीथी खीलवा लागी; केटलांएक वीरपुरुषो प्रतिज्ञानी साथे शत्रुओना मस्तकने श्रीफळनी माफक हाथमां लइ रणयज्ञमां होमवा लाग्या अने घणा शूरवीरो घायल बनी घेनमां घेराएला होय तेम घडि घोडापर अने घडि मेदानमां मस्त बनी घूमवा लाग्या. वडवाइए लटकता वांदराओनी माफक केटलाएक वीरपुरुषो हाथीओना आंतरडां-

ओने वेउ हाथे झाली झूलवा लाग्या. अने नशामां चकचूर होय तेम झाटकाओनी झपाझपीमां पोताना तेमज परायानुं भान भूलवा लाग्या. केटलाएक योद्धाओ कवाडीनी माफक वैरीओना देहरुपी वृक्षने कटोकट कापवा लाग्या अने केटलाएक क्षात्र वीरो रुधिरनी अंजलिओ भरी सूर्यनारायणने अर्घ आपवा लाग्या. उभय सैन्यना अनेक लडवैयाओ छिन्नभिन्न थइ गया, अने मनमानती मुंडमाळाओ मळवाथी महादेव परिपूर्ण प्रसन्न थया. आ भयंकर युद्धथी गिद्ध आदि पक्षीओनी मनकामना सिद्ध थइ अने रक्तथी रंगाएल अंगवाळा योद्धाओने वरवा माटे नवयौवनथी सुसमृद्ध अप्सराओ प्रेमपूर्वक प्रसिद्ध थइ. जेम श्रीकृष्णे मामा कंसनो विध्वंस कर्यो हतो तेम कुमार विजयपालजीए हाथीने होदे चढेला वाघेला लूणकरणना अंस उपर असिनो प्रहार करी वृक्षनी डाळी माफक तेना जमणा हाथने हेठो पाडयो तेमज कुमार सांगाजीए तथा सूरजमलजीए पण रणभूमिमां तेने खूब रंजाडयो. अंते राजशांतलजी सेंकडो शत्रुओनो संहार करी सुरलोकमां सिधाव्या अने सांगोजी तथा सूरजमलजी पण छेवटे काम आव्या. वाघेला लूणकरणे शान्तलपुरने स्वाधीन करवाथी राज विजयपालजीए पाछी पाटडीमां राजधानी स्थापी. तेओने मेघपालजी, अक्षयराजजी, सारंगजी, शगरामजी अने दूदाजी नामे पांच पुत्रो थया हता. पाटडीमां राजधानी स्थाप्या पछी मात्र एक वर्ष प्रजाने अभयदान आपी राज विजयपालजी स्वर्गवासी थया; जेथी वि. सं-१३८२ मा तेओना पाटवीकुमार मधुपालजीने पाटडीनी गादीए वेसाडवामां आव्या; तेथी न्हाना भाइ अखेराजजीने बार गाम साथे "गोरीयावाड," तेथी न्हाना सारंगजीने बार गामथी "देकावाडा," तेथी न्हाना शगरामजीने बारगामथी "कोकथा" (लखतर पासे छे) अने सौथी न्हाना दुदाजीने बारगामथी गाम "वांसवा" नो गिरास आप्यो. राज मधुपालजीने पद्मसिंहजी, केशरजी, भीमजी, मेघजी तथा जयमलजी नामे पांच कुमार थया हता. मधुपालजीए पांच वर्ष राज्यसुख भोगवी वि. सं-१३८७ मां परलोक प्रयाण कर्युं त्यारे तेओना कुमार पद्मसिंहजी पाटडीना तख्तपति थया. केशरजीने बारगामथी गाम "जरवला," भीमजीने बारगामथी गाम "नगवाडुं," मेघजीने बारगामथी गाम "करकथल" अने जयमलजीने बारगामथी गाम "जखवाडा," नो गिरास आपवामां आव्यो. राज पद्मसिंहजीना पगमां पद्म हतुं. तेओ बहुज भाग्यशाळी हता; तेओनी नव वर्षनी कारकीर्दिमां प्रजाने असंतोष उपजे एवुं एके कार्य करवामां आव्युं न हतुं. परमप्रतापी राज पद्मसिंहजीने उदयसिंहजी नामे एकज कुमार हता. ते घणाज डहापणवाळा, कार्यकुशळ अने राजनीतिनां सूक्ष्म तत्वोने समजवामां शक्तिमान थया. वि. सं-१३९६

मां राज पद्मसिंहजीनो स्वर्गवास थतां उदयसिंहजीए पाटडीनी गादीए बेसी दान अने दया आदि सद्गुणोथी वडिलोनी विमळ कीर्तिमां वधारो कर्यो, तेओने पृथुराजजी तथा वेगडजी नामे बे कुमार हता, तेमां वेगडजीनुं सगपण चितोडना राणा लाखाजीना कुंवरी चन्द्रकुंवरबा वेरे करवामां आव्युं हतुं. राज उदयसिंहजी वि. सं-१४०८ मां स्वर्गवासी थतां पाटवी कुमार पृथीराजजी गादीए बेठा. ए बन्ने बन्धुओ राम अने लक्ष्मण समान परस्पर सद्भाव राखता होवाथी पाटडीनी प्रजा निरंतर अवनवा आनंदने अनुभववा लागी. ज्यारे चित्तोडथी लग्नपत्रिका आवी त्यारे राज पृथीराजजीए न्हाना भाइ वेगडजीने हथेवाळे परणाववा माटे तमाम तैयारीओ करावी दीर्घदन्तवाळा हाथीओने सोना रुपाना अभिनव आभरणोथी शणगारी तेओनी विशाळ पीठपर हेमनी अंबाडीओ कसावी अश्वोने पण उत्तम प्रकारना साजथी अलंकृत कर्या, रमणीय रंग बेरंगी रथोने खिनखावथी मढावी तेना घुमट माथे मनोहर सुवर्णनां इंडाओ मुकाव्यां, तेमज दरेक चक्रमां मधुर ध्वनिथी मनने प्रसन्न करे तेवां कांसाना चकरडांओ नंखाव्यां, परम शोभायमान पालखीओ, म्यानाओ, निशान अने डंका सहित वरातने चित्तोड तरफ रवाना करी, साथे केटलाएक अमीर उमरावो, भायातो, अमलदारो अने पाटडीना प्रतिष्ठित महाजनो होवाथी वरातनो ठाठ कांइ जुदोज जोवामां आवतो हतो; ज्यारे राजवेगडजीनी जुगितदार जान चित्तोडने पादर पहोंची त्यारे लाखाराणाए स्नेहपूर्वक सामैयुं मोकली सर्वेने पुरमां पधराव्या अने रमणीय राजमहेलोमा उतारा आप्या. आ आनंदना अवसरमां लाखाराणा तरफथी लाखो रुपिया खर्चवामां आव्या हता, आखा चित्तोड शेहरने ध्वजा, पताका अने दीपमाळा आदिथी शणगारवामां आव्युं हतुं. चन्द्रकुंवरबा साथे राजवेगडजीना विधिवत् विवाह थइ रह्या बाद बीजे दिवसे कसुंबो लेवा माटे डायरामां झाला तथा शिशोदिआनुं मंडळ मळ्युं त्यारे राणाजीए पूछ्युं के राजउदयसिंहजीना बे कुमारमांथी म्होटा कोण ? त्यारे झाला भायातमांथी कोइ एके जवाब आप्यो के, बे भाइमां मोटा पृथीराजजी अने न्हाना वेगडजी. ए वखते तो राणाजी कांइ न बोल्या, परंतु ज्यारे वरातने पाटडी तरफ वोळावी त्यारे पोताना विश्वासु उमरावो साथे पांच हजार स्वारो मोकली आप्या अने तेओने भलामण करी के गमे ते प्रकारे पृथीराजजीने गादी परथी उठाडी पाटडीनी स्वतंत्र सत्ता वेगडजीने सोंपजो. आ वातनी वेगडजीने बिलकुल खबर न हती; तेओ तो एमज समजता हता के वरातने वळाववा माटेज राणाजीए पोतानुं सैन्य साथे मोकल्युं छे. ज्यारे जान पाटडीना द्वार पासे आवी पहोंची त्यारे राणाना उमरावोए राजपृथीराज-

जीने कहेवराव्युं के आप जाते सामैयामां पधारशो तो अमोने घणोज संतोष थशे. चित्तोडवासीना वाक्चातुर्यथी भोळवाइ भाइने भेटवा आतुर थइ रहेला राज पृथीराजजी त्यां पधार्या के तुरत राणाना उमरावोए तेओने कपटथी केद करी लीधा अने शहेरमां दाखल थइ वि. सं–१४११ ना अरसामां वेगडजीने राजगादीए वेसाडी दीधा. आथी वेगडजीने घणो खेद थयो, तेणे राणाना उमरावोने कही वडिल बन्धुने केदथी मुक्त कराव्या; राज पृथीराजजीने खात्री हती के पोताने पदभ्रष्ट करावबामां बन्धु वेगडजी कदि पण अभिप्राय न आपे, परंतु राणाएज पोताना उमरावोने उश्केरी आ अन्याय आचर्यो छे एम धारी तेओए राणा साथे वारवट्टुं करवा मांडयुं. पाछळथी राज वेगडजीए समजावी तेओना क्रोधने शान्त कर्यो अने मान पुरःसर पाटडीमां पधरावी तावानां १२० गाम सहित "थळा" नो भोगवटो लखी आप्यो. राज पृथीराजजीनो विस्तार हजी सुधी वांटावाळा छे अने ते थळेचा झाला कहेवाय छे. राज वेगडजीने रामसिंहजी, मेलकजी, खेंगारजी, मालजी, भाणजी, अने प्रतापजी नामे छ कुमार थया. वि. सं–१४२४ मां राज वेगडजीनो स्वर्गवास थतां पाटवी कुमार रामसिंहजीने पाटडीनी गादीए वेसाडवामां आव्या; तेथी न्हाना कुमार मेलकजीने वारगाम साथे " कुमरखाण ", खेंगारजीने वारगामथी " वणली ", मालजीने वारगामथी " सोलम तथा खोडु ", भाणजीने वारगामथी " कमला " अने प्रतापजीने वारगामथी " गुरीया वावडी " नो गिरास आप्यो. राज रामसिंहजीना वेरीसालजी, केशरजी, भोजराजजी, शेषमालजी, नारणजी अने लाखाजी नामे छ कुमारो थया. वि. सं–१४४१ मां राज रामसिंहजीए परलोक प्रयाण कर्युं. त्यारे पाटवी कुमार वेरीसालजीए पाटडीना तख्तपर पाय धारण कर्यो. केशरजीने सात गामथी " गोरीयावड ", भोजराजजीने सातगामथी " कलम ", शेषमालजीने सात गामथी " नांगडकुं ", नाराणजीने सात गामथी " गोवल " अने लाखाजीने सात गामथी गाम " सीतापर " गीरासमां मळ्युं. राज वेरीसालजी उर्फे वीरसिंहजीने रणमलजी, रामसिंहजी, कलोजी, कर्मसिंहजी, प्रतापसिंहजी अने पुंजाजी नामे छ पुत्रो थया. वि. सं–१४४८ मां राज वीरसिंहजीए वैकुंठवास कर्यो त्यारे राज रणमलजी पाटडीनी गादीए बेठा; रामसिंहजीने सात गामथी " शंखेश्वर " कलाजीने सात गामथी " कारेला " कर्मसिंहजीने सात गामथी " कटुडा " प्रतापसिंहजीने सात गामथी गाम " कांत्रोडी " अने पुंजाजीने सात गामथी गाम "गोरीयावाड" नो गिरास आपवामां आव्यो. राज रणमलसिंहजीने छत्रसालजी, शोडसालजी अने वलदीरजी नामे त्रण कुमार थया. राज रणमलसिंहजी मारवाडमां "जालोनेर कोटडा" नामे गाम छे त्यां परण्या

जता हता ते कंकावटीने पादर थइ निकळ्या. राजवाघजीए तेओनी साथे धींगाणुं कर्युं अने तीक्ष्ण तलवारोना प्रहारथी शिरबंधीओने तोबाह पोकरावी खजानो लुटी लीधो. ए खबर बोडीया नवाबने मळतां पचास हजारनी फोज लइ कंकावटी उपर चडी आव्यो. राज वाघजीए पण पोताना सैन्यने सज्ज कर्युं. अमदावादना बादशाह महमद बेगडाए पण पोतानुं केटलुंएक लश्कर नवाबनी मददे मोकली आप्युं; यवन सेनाए तोपो चलावी कंकावटीना गढने तोडवा मांडयो. झालाओए पण गढनी अंदरथी यवनसेना उपर तोपोनो मार शरु कर्यो, ए रीते सात दिवस पर्यंत युद्ध जारी रह्युं, आठमे दिवसे राजवाघजीए विचार कर्यो के आप मुआ विना स्वर्गे जवातुं नथी अने बाहुबळ विना विजयी थवातुं नथी, माटे शहेरना दरवज्जाओ खुल्ला मुकी असियुद्ध करवुं एमांज लाभ छे. एम नक्की करी पोते जनानामां पधार्या अने तमाम राणीओने सूचना करी के तमो सर्व महेलना उपला माळ उपर चढी मारा निशान भणी नजर राखजो. जो ए निशान पडे तो शत्रुने हाथे मारुं मोत थयुं एम तमारे समजी लेवुं. आटलुं कही राजवाघजी कंकावटीना दरवज्जाओ खुल्ला मुकावी पोताना समस्त सुभटो सहित "हरहर महादेव" नो पुकार करता, रणमेदानमां कूदी पडया, युद्धनो आरंभ थयो, खोटो दंभ राखनारा दुश्मनो भयभीत बनी पाछले पगे पलायन करवा लाग्या. कुंभकारना चक्र उपरथी मृत्तिकाना पिंड उतरे तेम रुंढथी मुंड अलग थवा लाग्यां, केटलाएक हठीला क्षात्रवीरो पोताना अमोल बाहुबळनो तोल करवा अजगर जेवी अति स्थूल मदोन्मत्त हाथीनी सुंढने असिना एकज प्रहारथी उडाववा लाग्या अने तेने केटलाएक गनिक धडो अप्सरानी जंघा जाणी आलिंगवा लाग्या, केटलाएक घायल वीरोने अप्सराओ त्वराथी एक तरफ लइ जइ राइ तेमज लूण उतारवा लागी अने तेओना कमनीय कंठमां अति उत्कंठा पूर्वक वरमाळाओ पहेरावबा लागी, केटलांएक कबन्धो अप्सराओने गाढ आलिंगन आपी मस्तक कपाइ जवाना कारणने लीधे कंठथीज चुंबन करवा लाग्या अने केटलाएक शव रुधिरनी तरंगिणीमां काष्टनी माफक तरवा लाग्या, केटलाएक शूरवीरो योगिनीओने अप्सराओ जाणी तेओना गळामां हाथ नांखवा लाग्या अने केटलाएक तृषातुर योद्धाओ शत्रुओना रुधिरनुं पान करी मनुष्यना मांसनो स्वाद चाखवा लाग्या. केटलाएक अश्वोनी कपायेली कन्धरा वीरपुरुषोना कबन्ध उपर जइ पडवाथी एकी वखते अनेक हयग्रीवअवतारोनी प्रतीति थवा लागी अने वरमाळा पहेरावती वखतेज शूरवीरोना शिरच्छेद थतां "हाय हवे हुं कोने वरीश" एवी अप्सराओना मनमां भ्रान्ति उपजवा लागी; केटलाएक प्रेत रणक्षेत्रमां कपायेली हा-

थीनी सुंढोने वाघनी माफक वगाडवा लाग्या अने मांसभक्षक पक्षीओ अणीदार चंचुओथी रणमां पडेलां वीरपुरुषोनां उरःस्थल चीरी आंतरडाओ कहाडवा लाग्यां. बावन वीर अने चोसठ योगिनीओ मन गमतां भोजन मळवाथी महोत्सवनो दिवस मानी अट्टाट्ट हास्य करवा लाग्यां अने सतीसहवर्तमान भूतपतिने वीर पुरुषोनां कलेजांओतुं नैवेद्य धरवा लाग्या. त्रण महर पर्यन्त मचंड युद्ध चाल्युं, एक महर जेटलो दिवस अवशेष रह्यो तेवामां राजवाघजीना निशानवाळाने अत्यंत तृषा लागी, तेने गळे शोष पडयो. जीव डंडोडंडो उतरी जवा लाग्यो. अने आंखे अंधारा आववाथी तेनो हाथ ध्रुजवा लाग्यो, तेणे तुरतज निशानने वावना आगला स्थंभने आधारे उभुं मुक्युं अने पोते पाणी पीवा अंदर मवेश कर्यो, पाछळथी अचानक पवननो झपाटो लागतां निशान पृथ्वीपर पडी गयुं के तुरतज राजमहेलना छेल्ला माळ पर बेठेलां राजवाघजीनां तमाम राणीओ बोली उठयां के " भुंडुं थयुं, भुंडुं थयुं; राजसाहेव रणभूमिमां पडया, हवे आपणे जीवी शुं करवुं " आटलुं कहेतांज ३५० राणीओए एकी साथे राजमहेलना छेल्ला माळथी नीचे रहेला विशाळ कुवानी अंदर कुदको मार्यो. सायंकाळनो समय थतां रणक्षेत्रमां राजवाघजीनो विजय थयो. जेथी तेओ घोडाने ठेकावता बचेला वीश बावीश सुभटो सहित शेहेरमां पधार्या, त्यां तो सर्व स्थळे हाहाकार फेलाइ रह्यो हतो, पूछपरछ करतां जनानामां बनेली भयंकर विना जाणवामां आवी, राजसाहेवे तुरतज पाछुं रणभूमि तरफ मयाण कर्युं अने मरवानो दृढ निश्चय करी पाछा यवनोनी पाछळ पडया अने फरी कापाकापी चाली तेमां राजवाघजी पोताना छ कुंवर सहित काम आव्या, तेओना पांच हजार भायातो ए युद्धमां मार्या गया, यवननी फोजमां बारहजार माणसो हतां तेमांथी एक पण बच्यो नहि. आ बनाव वि० सं० १५४१ ना अरसामां बन्यो हतो. ज्यारे राजवाघजीनां ३५० राणीओए एकी साथे कुवामां पडी माणनो परित्याग कर्यो त्यारथी " कुवानो केर " कहेवायो अने शेहेरनुं नाम पण "कंकावटी" मटी "कुवा" कहेवायुं. आ युद्धथी थोडा समय पहेलां राजवाघजीनुं सगपण गढ 'कालरी'नी अंदर साहेवकुंवरबा साथे करवामां आव्युं हतुं, हजु विवाह नहोतो थयो; संबंधनोज निश्चय थयो हतो, परंतु ज्यारे सती साहेवकुवरबाए "कुवानो केर" सांभळ्यो त्यारे तुरतज ते राजसाहेवनी पाघडी मंगावी तेनी साथे पोताना पियरमांज बळी मुवा. राजवाघजीने नाथोजी, मेघजी, सगरामजी, जोधाजी, अजोजी, रामसींहजी, वीरमदेवजी, गयधरजी, लाखोजी, शरतानजी, वजेराजजी तथा जगमालजी नामे बार कुंवरो हता. आदिना छ कुंवरो " कुवाना केर " वखतेज काम आव्या हता, सातमा कुंवर वीरमदेवजी वि. सं–१५४०

मां पोताने सासरे " रेवर " मिजमान बनी गया हता, त्यां " समीमुजपर " ना काठी लोकोए गायोने घेरी जेथी पोताना ससरा कानडदेवजी सहित कुमार वीरमदेवजीए काठी लोको उपर चडी धींगाणुं कर्युं अने तेमां ससरो जमाइ बन्ने काम आव्या.+ पाटवी कुमार रायधरजी राजपदवीने धारण करी वि. सं–१५४१ मां "कुवा" नी गादीए बेठा. लाखाजीने सात गामथी गाम " वडीयाणुं", शरतानजीने सात गामथी गाम "नारेचाणुं," वजेराजजीने सात गामथी गाम "अंकेवाळीयुं" अने जगमालजीने " धुडकोट " तथा " घांटीला " गाम गिरासमां मळ्या. राजरायधरजी गढ "कुवा" मां सुखपूर्वक राज्य करवा लाग्या, एक वखते तेओ केटलाएक रजपूत सरदारो अने चारणो साथे घोडे चढी शिकारे निकळ्या; त्यां एक ससलो पोतानी दृष्टिए पडतां तेना पाछळ पूर जोसथी घोडाओ दोडाव्या. घणे दूर निकळी गया बाद ज्यारे ससलो समीपमां जणायो त्यारे रायधरजीए शिकार करवा भालाने सज्ज कर्युं; जेवो पोते प्रहार करवा गया तेवो ससलो निडर बनी सामे उभो रह्यो, आथी राजसाहेबना मनमां आश्चर्य उपज्युं, तेओए साथेना सरदारोने तेमज चारणोने पुछ्युं के आ ससलो भय रहित बनी आ स्थाने आपणा सन्मुख उभो रह्यो तेनुं शुं कारण? त्यारे कोइएक चारणे कह्युं के–कृपानाथ ! आ वीरभूमि छे. जो आ स्थळे राजगढ अथवा दरबारगढ बंधाय तो आपनामदारना महाराणीओ परम सतीत्वने पाळनारां थाय अने कुमारो पण महान पराक्रमी पाके एवो आ भूमिनो महिमा छे. राज रायधरजी तुरत ते स्थळे निशान करावी पाछा शहेरमां पधार्या अने त्यांथी वि. सं–१५४४ ना महा वदि १३ सोमवारे श्री हळवदमां राजधानी स्थापी, परंतु जे स्थळे ससलो उभो रह्यो हतो अने पोते निशान कराव्युं हतुं ते निशान भुंसाइ जवाथी दरबारगढ अन्य स्थळे बंधाव्यो अने निशानवाळी भूमिमां भावि योगे मोची लोकोने रहेवा माटे घर बांधवामां आव्या, जेथी मोचीनी केटलीएक स्त्रीओ सती थइ, जेना पाळीआओ हजी सुधी हळवदमां छे. राज रायधरजीए वि. सं–१५५० मां हळवदने पादर पोताना नामथी "रायसर" (राघवसर) नामे जबरुं तळाव बंधाव्युं. तेओने अजोजी, सजोजी अने राणाजी नामे त्रण कुंवरो

× राज वाघजीना कुमार वीरमदेवजीनो पाळीओ " वीरपरीनाथ " तरीके आज पण पूजाय छे, ते पाळीओ " रेवर " नी धरतीमां " आडपोदर " नामे गाम छे त्यां हजु मोजुद छे. १ लाखाजीना वंशना हाल मोरबी तथा चोटीलामां रहे छे. २ वजेराजजीनो विस्तार हाल मोढवाणा, शवलाणा अने शादादमां वांटाखाय छे.

थया. वि. सं–१५५६ मां राज रायधरजीनो स्वर्गवास थतां तेओने अग्निसंस्कार करवा माटे म्होटा कुंवर अजोजी तथा सजोजी स्मशानभूमि सुधी गया, ते बन्ने कुमारो इडरना अने न्हाना कुमार राणाजी "मुळीना" भाणेज थता हता. राज रायधरजीना स्वर्गवास पहेलां थोडा दिवस उपर तेओना मंदवाड संबंधी समाचारनो एक पत्र "मुळी" लखी मोकलवामां आव्यो हतो, जेथी त्यांना परमार (कुमार राणाजीना नाना लखधीरजी) आ दुःखकारक बनावने दहाडेज सुख पूछवा हळवद आव्या, तेओ चडये घोडे परबारा दरबारगढमां गया, जोके मार्गमांज तेओने राजरायधरजी देवलोक पाम्याना खबर मळ्या छतां स्मशान नहि जतां सीधा पोताना दीकरी पासे जइ पहोच्या, त्यां हृदयभेदक रोककळ थइ रही हती; रणवासमा सर्वनां नयनोमांथी वर्षानी वादळीओ समान अश्रुजळनी अस्खलित धाराओ चाली रही हती. परमारे पोतानां कुंवरीने धैर्य आपी कह्युं के आम रुदन करवाथी राजसाहेब पाछा पधारवाना नथी, माटे जो कांइ पासे जरतुं जोर होय तो कहो एटले कुमार राणाजीने गादीए बेसाडी दइए. स्वार्थमां अंध बनेलां परमार राणीए पितानां वचन उपर विश्वास लावी पोताना कबजामां नव लाखनो खजानो हतो तेनी तुरत चावी काढी आपी.परमारे खजानो खोली नव लक्ष रुपिया एकी वखते लांचमां लुंटावी दीधा अने शहेरमां रहेलां तमाम दरबारी माणसोने पोताना पक्षमां मेळवी लीधा. शहेरना बधा दरवाज्जाओ बंध कराव्या अने कुमार राणाजीने गादीए बेसाडी तेना नामनी आण फेरवी आपी. कुमार अजोजी तथा सजोजी विगेरे सर्व स्मशानथी शहेरमां आवतां दरवाजोए तेओने अंदर दाखल थवा दीधा नहि अने कह्युं के अहीं तो राजराणाजीनी आण फरी चुकी. त्यारे अजाजीए राणाजीने कहेवराव्युं के बापुना दाडा सुधी अमोने हळवदमां रहेवा आपो, पछीथी अमो बीजा मुलकमां चाल्या जइशुं, छतां अंदरथी एवो जवाब मळ्यो के तेम थइ शकशे नहि. त्यारे अजोजी तथा सजोजी केटलाक माणसो सहित 'वेगडवाव' आव्या अने त्यां सवामास पर्यंत रही राजराधयरनी विधिवत् उत्तरक्रिया करी; त्यांथी तेओ अमदावाद जवा तैयार थया त्यारे तेओनी साथे राजना दसोंदी टापरीआ चारण रायधर तथा शार्दुलजी अने 'बोरडी' गामना रहीश वहीवंचा बारोट सामंतसंग उपरांत चारसो रजपूतो पोतपोतानो गिरास वगेरे छोडी चाली निकळ्या. ते पहेलां मुळीना परमार लखधीरे अमदावाद आवी त्यांना सुबाने बे लाख रुपिआनुं नजराणुं कर्युं अने हळवदना कुमार अजाजी तथा सजाजीने मदद न आपवानुं ए सुबा पासेथी वचन मागी लीधुं. ज्यारे अजोजी तथा सजोजी अमदावाद आव्या त्यारे सुबाए तेओने

बिलकुल सहायता न आपी, जेथी ए बन्ने भाइओ जोधपुर गया, त्यांना राजा मालदेवजी वेरे तेओनां ब्हेन आपेलां हता. हळवदथी कुमार अजोजी तथा सजोजी पधार्या छे एवा खबर जोधपुरना जनानामां जइ पहोंचता राजरायधरजीनां कुंवरी रथमां बेसी पोताना भाइने मळवा पधार्या. कुमार अजाजीए बधी वात ब्हेन पासे कही संभळावी त्यारे बाइए जवाब आप्यो के तमारा बनेवी गांडा होवाथी कोइपण प्रकारनी सहायता आपे एवो संभव नथी, परंतु आपणा जुना संबंधी चितोडना राणाजी छे. तेओ पासे जवाथी जरुर मदद मळशे. कुमार अजोजी तथा सजोजी त्यांथी मेवाड भूमिमां गयां अने चितोड जइ राणा रायसिंहजीने मळ्या. राणा तरफथी तेओने अति आदर सत्कार आपवामां आव्यो. थोडा दिवस पछी अजाजीए राणा पासे पोतानी सघळी हकीकत रोशन करी अने हळवदने हाथ करवा माटे सैन्यनी मदद मागी त्यारे राणाजीए कह्युं के जो कोइ बीजा शत्रुए हळवद दबाव्युं होत तो हुं अवश्य तमोने पूरती सहायता आपत, परंतु त्यांतो तमारा नाना भाइ गादीए बेठा छे, माटे नाहक राजरायधरजीना कुटुम्बनो नाश करावबामां निमित्तरुप नहि थाउं. जेम आप मारा सगा छो तेम ते पण मारा सगा छे, आटलुं कही राणा रायधरजीए कुमार अजाजी तथा सजाजीने "जाडोल" तथा "कानोड" ना बे प्रगणां आप्यां अने त्यारपछी वि० सं० १६२१ मां "सादडी" तथा "देलवाडा" नी रयासत आपी. ए अजाजी तथा सजाजीना वंशजो हजी पण सादडी, देलवाडा, ताणा, जाडोल अने सूरजगढ आदि स्थळे विद्यमान छे. राजराणाजी वि० सं० १५५६ मां हळवदनी गादीए बेठा अने त्यां तेओए त्रेवीश वर्ष पर्यन्त राज भोगव्युं, तेओना कुमार मानसिंहजी महामदोन्मत्त थया. वि० सं० १५७९ मां दसाडाना मलेक बकनी साथे धींगाणुं करी ज्यारे राज राणाजी काम आव्या त्यारे मानसिंहजीए हळवदनी गादीए बेसी पोताना पितानुं वैर लेवा माटे दसाडा उपर चढाइ करी अने मलेक बकना दीकराने मार्यो, ए वातनी अमदावादना बादशाह बहादुरशाहने जाण थतां तेणे म्होटी फोज मोकली मानसिंहजी पासेथी हळवदनुं राज्य पडावी लीधुं. राज मानसिंहजीए पोताना न्हाना भाइ वरशाजी तथा उदेसिंहजीने कांइ पण गिरास आप्यो न हतो, जेथी ते बन्ने भाइओ राज मानसिंहजी उपर बारवटे नीकळी गया हता. हळवदनो कबजो हाथथी गया बाद राजघेला मानसिंहजी कच्छमां जइ "मानकुवा" नामे गाम वसावी त्यां रह्या अने बार वर्ष पर्यन्त अमदावादना बादशाह साथे बारवटुं खेडी वीरमगाम सुधीना केटलाएक प्रदेशने खेदान मेदान करी नांख्यो. राज मानसिंहजी पासे एक भागजी नामे महा पराक्रमी रजपूत रहेतो हतो एनी निमकहलाली तथा पराक्रम उपर

प्रसन्न थएला मानसिंहजी तेंने पोतानी जमणी वांह वरावर जाणता हता; एक वखत राज मान-सिंहजी उपर एवी आफत आवी के तेओ वादशाहना केटलाएक सिपाहीओ साथे अचानक भेटो थइ जतां धींगाणुं करता हता, तेवामां एकदम अमदावादथी वे एक्काओ वादशाही लश्कर सहित घोडाओने पवन वेगे दोडावता थोडा वखतमांज त्यां आवी पहोंचे एवी वकी हती, परंतु ए वधा-ओने दूरथी आवता जोइ निमकहलाल भागजीए राजसाहेबने सत्वर सूचना आपी दीधी, जेथी राजमानसिंहजीए पोताना सर्व साथीओ सहित घोडाओने दावी मूक्या, कोइ क्यांइ ने कोइ क्यांइ एम जेम आवे तेम नदीनाळाओमा भराइ जवाने माटे वधा जुदे जुदे रस्ते रवाना थया. राजमान-सिंहजीनो घोडो घणे दूर नीकळी गयो अने पोताना धणीने मृत्युना मुखमांथी वचाववा खातर हद उपरांत वेगथी दोडी अधवचमा अचानक परपोटानी पेठे फाटी पड्यो. आवा अडाकडीना वख-तमां पोताना नेक अश्वनो नाश थतां राजसाहेवनुं हृदय वज्र जेवुं द्रढ छतां आंखमां जळजळीयां आवी गयां, तेओ दुश्मनोथी लेश पण डरता नहोता, परंतु एक पोताना साचा सहायक अने व-खाणवा लायक वेगवाळा अश्वनो अंत थतां तेओनुं हृदय भराइ आव्युं. त्यां आसपास कापणीनो वखत होवाथी केटलाएक ढेढ लोको पोतानी वैरीओ सहित मोल वाढता हता तेमांथी ऐक ढेढे राजमानसिंहजीने ओळख्या. तेणे विचार्युं के आ हळवदनो धणी आ वखते दुःखी हालतमां छे. तेओ पाछळ वादशाहनी वार फर्या करे छे, कदाच ए लोको अहीं आवी चडशे तो भुंडुं थशे, एम धारी तुरत ते राजसाहेव पासे आव्यो अने सलाम करी वोल्यो के खाविंद ! मारा लायक सेवा चाकरी होय तो फरमावो. राजाथी ते रंक पर्यन्तने समय शुं शुं चमत्कार वतावे छे तेनो आ एक अद्भुत चितार छे. राजमानसिंहजी वोल्या के वादशाही एक्काओ अमारी पाछळ पड्या छे ते ह-मणांज अहीं आवी पहोंचवा जोइए, जो आ वखते मारो पराक्रमी भागजी एकज मारी पासे होत तो अमो वे मरणीया वनी शत्रुओने समशेरनो स्वाद चखाडत, परंतु अत्यारे वचवानो एके उपाय नथी, त्यारे ढेढ वोल्यो के जो हरकत न होय तो आ दातरडुं लइ मोल वाढवा मंडी जाओ. जो वादशाहना माणसो अंही आवी पूछपरछ करशे तो हुं जवाव आपी दइश. आपद् धर्मनो विचार करी राजमानसिंहजीए ढेढनी वात कवुल राखी अने हाथमां दातरडुं लइ मोल वाढवा मंडी गया. घारवटे निकळेला होवाथी तेओनां कपडां वहुज मेलां थइ गयां हतां, जेथी कोइना कळवामां आवे एम नहोतुं. थोडीवार थइ त्यां वादशाही वार आवी पहोंची, ते लोकोए ढेढने पूछवा मांडयुं के अहीं कोइ नवा माणसो आवेल छे ? त्यारे एक ढेढडी उतावळी थइ वोली उठी के—हा, आ सामे उभो

ते एक नवो माणस क्यांकथी आवेल छे; आ वखते पेला समयसूचक ढेढे तुरतज तेणीने जोशथी ठोंठ लगावी कह्युं के रांड ! आ टाणे देरनी ठेकडी कराय ? मश्करी करी देरनुं माथुं कपाववा धार्युं छे के शुं ? " साहेब " कांइ नथी, ए तो देरनी ठेकडी करे छे" एवुं ज्यारे बादशाही लश्करने ते ढेढे सोगंद लइ कह्युं त्यारे ते रवाना थया; तेवामां रजपूत प्रागजी पोताना मालिकने शोधतो शोधतो त्यां आवी चड्यो. राजसाहेबे तेने बनेली बीनाथी वाकेफ कर्यो अने पोताना प्राण बचावनार ढेढने कह्युं के वखत आव्ये तारा उपकारनो बदलो वाळवा हुं चुकीश नहि. प्रागजी पोताना घोडा उपर राजसाहेबने बेसाडी मानकुवे लइ आव्यो. ए रीते प्रागजीए राजसाहेबने अनेक वखत मृत्युना मुखमांथी उगार्या हता, जेथी राजमानसिंहजी पण प्रागोजी कहे एटलाज पगलां भरता अने वारंवार कविलोकोनी पेठे प्रशंसा करता. बारवट्टुं कर्या छतां पोतानो मनोरथ कोइरीते सफळ नहि थवाथी तेओए प्रागजीने कह्युं के हवे अमदावाद जइ छेल्लो दाव अजमावीए ! आमे मरवुं तो छेज माटे बादशाहने मारी मरीए तो दुनियामां आव्या देखाइए. प्रागाजीए राजमानसिंहना ए विचारने उत्तेजन आप्युं अने बीजे दिवसे प्रभातमांज बन्ने अमदावाद तरफ रवाना थया. वर्षाऋतुनो समय होवाथी झीणो झीणो वरसाद वरश्या करतो हतो, मार्गमां अमुक कोशने अंतरे विश्रान्ति लेता त्रीजे दिवसे तेओ अमदावाद नजीक आवी पहोंच्या, सूर्यनारायण अस्ताचळना शिखरपर आरूढ थइ चुकया हता; मेघली रात्रीने लीधे मार्ग न सूजे तेवुं गाढतम काजळनी पेठे पृथ्वीपर पथराइ रह्युं हतुं; आकाशने आच्छादित करी रहेला अंबुदो ए अन्धकारने अपार पुष्टि आपता हता, अतुल जलधाराथी राफडाओ धोवाइ जवाने लीधे पाणीना प्रवाहमां तणाइ आवेला फणीधरो आम तेम दोडादोड करी रह्या हता ते मात्र तेओना मस्तकपर चळकता मणिथीज जाणी शकातुं हतुं, तमराओना तीव्र स्वरथी दशे दिशाओ शब्दायमान थइ रही हती, जळ अने स्थल एकसरखां बनी गयां हतां, जोशबंध वहेता जळना घुघवाटथी साबरमतीमां पुर आव्युं होय एवी प्रतीति थती हती. राजमानसिंहजीए तथा प्रागाजीए कुळदेवीनुं स्मरण करी मरणनी भीति छोडी साबरमतीना अगाध पूरमां घणे दूर जइ घोडाओने झंपलाव्या. घोडाओ घणा केळवाएला होवाथी जळमां पडतां जराए भडक्या नहि अने तुरत तरी पेलेपार जइ पहोंच्या. ज्यारे तेना दाबडाओ साबरमतीना तटने ताडन करवा लाग्या त्यारे ए बन्ने बहादुरना हृदयमां हिम्मत आवी अने काळसमान काळी रात्रिमां कार्यसिद्धि करवा माटे महानदीए मुदितम-

नथी अनुमोदन आप्युं होय एम मानी आर्द्र वस्त्रोने निचोवता किल्लानी निकट आवी पहोंच्या अने कइ जगोएथी गढपर चडवानी सुगमता पडशे एनो विचार करता अहींथी तहीं आस्ते आस्ते फरता हता, तेवामां गढ उपर एक उन्नत अटारी जोवामां आवी, जेथी ते स्थळे जरावार अश्वने उभा राख्या. आ वखते दीनदयाळु परमेश्वरे ए उभयवीरने संकटना सिंधुथी तारवा माटे वारंवार विद्युत्नो प्रकाश करवा मांडयो, आसपास द्रष्टि करतां राजमानसिंहजीने खात्री थइ के आ महेल बादशाहनोज छे, माटे हवे केवी रीते कार्यसिद्धि करवी एम प्रागाजीने पूछवानी तेओ तैयारी करता हता, तेवामां ए महेलनी अटारीमां कोइ स्त्रीपुरुष वार्ताविनोद करता होय एवो अवाज सांभळवामां आव्यो, बन्नेए ए अवाज उपर बराबर ध्यान आप्युं, त्यां बादशाह अने बेगम प्रस्तुत समय संबंधी प्रश्नोत्तर करी रह्यां हतां. बेगमे बादशाहने कह्युं–आहा ! आजनी रात केवी अंधारी छे ? जे प्रदेश दिवसे अति आनंद आपनारा छे ते अत्यारे केवा बीहामणा बनी गया छे ? दिवसे एकी वखते अनेक रंगने अवेरखनारी द्रष्टिने अत्यारे अनेक वखत सृष्टिपर दोडावुं छुं छतां एकज रंग जोवामां आवे छे, जो आ विजळी न थती होय तो पृथ्वी अने आकाशने पारखवुं ए पण महा मुश्कील थइ पडे. आवा अन्धकारमां कोइ पण प्राणी पोतानां स्थानने छोडी बहार निकळवा हिम्मत तो न धरे, परंतु कोइ चोर चोरी करवा निकळेलो होय अने जो नदीनां नीरमां " खळखळ " एवो शब्द न थतो होय तो जरुर तेओ जळने स्थळ जाणी पग मूकतां पाणीना प्रबळ प्रवाहमां तणाइ मरे, त्यारे बादशाह बोल्या के तमारुं कहेवुं खरुं छे, परंतु सहुने पोतपोतानो जीव प्यारो होय छे, बेशक चोर अने व्यभिचारी लोकोने कार्यसिद्धि करवा माटे रात्रि एक आशीर्वादरुप छे, परंतु आवी भयंकर रात्रि के जेमां पशु पक्षी पण पोत-पोताना स्थानमां भराइ बेठां छे तो पछी मनुष्य जातिनो शो मकदूर के बहार निकळे ? जेने मर-णनो भय न होय, अथवा तो जे असह्य दुःखने लीधे जीववा करतां मरवामांज लाभ मानतो होय ते कदाच आवे वखते आम तेम आथडतो होय तो कांइ नवाइ जेवुं न गणाय. बेगमे पूछयुं के–एवुं म्होटुं दुःख कयुं हशे के जे जीवन करतां मरणना मार्गने पसंद करावे ? बादशाहे जवाब आ-प्यो के " गिरासनुं छूटवुं." जे माणसनो गिरास जाय तेना जेवो दुःखी दुनियामां कोइ नथी, कारणके एक अंगुल जेटली जमीन माटे रजपूत लोको युद्धभूमिमां असंख्य मनुष्योना रुधिरनी आहुति आपे छे, तेओ गिरास आगळ प्राणने कांइ गणतीमां गणता नथी. रुवाडां जेटली जमीन जतां तेओना तमाम रोम सळगी उठे छे. आ सांभळी बेगमना दिलमां दया उपजी, स्त्रीओनो

स्वभाव हमेशां कोमळ होय छे, तेणीए पोताना खाविंदने कह्युं के ज्यारे गिरास जतां रजपूत लोकोने आटलुं बधुं दुःख उपजे छे, त्यारे तमो शा माटे तेओना गिरास क्रूर बनी कबजे करो छो ? बादशाहे उत्तर आप्यो के ए तो राजकर्ताओनी रीतभात छे, परंतु अत्यारे जो कोइ गुमावेल गिरासवाळो माणस गढनी बाहेर उभो मारा पासे अरज गुजारे तो हुं अवश्य एनी आशाने पूर्ण करुं. प्राप्त थएल शुभ समयनो लाभ लेवा राजमानसिंहजी एकदम उंचे अवाजे बोली उठ्या के जो आप दयाळु बादशाह आवुं वचन आपो छो तो हुं हळवदनो धणी अत्यंत कफोडी हालतमां आ वखते आपना महेलनी अटारी हेठळ आवी उभो छुं, माटे मने मारुं राज्य पाछुं मळवुं जोइए. आ सांभळी बादशाह अने बेगम एकी साथे चोंकी उठयां. बादशाहे राजमानसिंहजीने जबाब आप्यो के–घणी खुशीथी हुं तमोने तमारुं राज्य सुप्रीत करीश. सवारमां शहेरनी अंदर दाखल थइ आनंदनी साथे कचेरीमां आवजो. राजसाहेबे बादशाहनो योग्य वचनोथी आभार मानी साबरमतीने किनारे रहेला एक देवळमां प्रागाजी साथे भयंकर रात्रिनो अवशेष भाग विताव्यो. प्रभातमां दातणपाणी करी, कपडां बदलावी, कटिए लांबी तरवार लटकावी, अश्वोने एज देवालयमां बांधी बन्ने बहादुरो बहादुरशाहनी कचेरीमां गया, त्यां सामेज उन्नत सिंहासन उपर बहादुरशाह बेठेल हता अने आसपास अमीर उमरावो भभकाबंध पोशाक पहेरी पोतपोताना दरज्जा प्रमाणे स्थानने शोभावता हता, तेवामां अचानक राजमानसिंहजीने तथा प्रागाजीने हथिआरबंध आवता जोइ तमाम दरबारीओने देहेशत लागी, बादशाहे गम्मत जोवा माटे बे घडि मौन धारण कर्युं, तेना उमरावो शोरबकोर करवा लाग्या अने बादशाह सलामतथी बारबटुं करनारो आ हळवदनो राजा अहीं अचानक क्यांथी आवी चडयो एम अरसपरस वातो करता उश्केराइ गया. राजसाहेब जेमजेम बादशाहनी निकट आववा लाग्या तेम तेम तेओना मनमां व्हेम वधतो गयो. प्रागाजी सहित राजमानसिंहजीने पकडवा ते लोको ज्यारे तत्पर थया; त्यारे बादशाहे कह्युं के सबुर करो मेंज राजसाहेबने अहीं आववा फरमान आपेल छे, हुं एनी हिम्मत अने बहादुरी उपर बहुज प्रसन्न थयो छुं; आटलुं बोली तुरतज तेओए राजमानसिंहजीने तथा प्रागाजीने मानपूर्वक योग्य स्थाने बेसाडया अने हळवदमां रहेल पोताना सूबा उपर रुको लखी आप्यो, ते लइ राजसाहेब उतारे आव्या अने सत्वर अश्वो सज्ज करी हळवद तरफ रवाना थया. हळवदमां लगभग बार वर्ष लगी बादशाही हकुमत रहेवाथी त्यांनी केटलीएक धनाढय प्रजा आजुबाजुना मुलकमां निवास करवा माटे निकळी गइ हती अने खेतीवाडीनी

पण हद उपरांत दुर्दशा थइ हती. राजमानसिंहजी तथा मागोजी हळवद आव्या, अने सूबाने मळी बादशाही रुक्को वंचाव्यो, सूबाए तुरतज बादशाहना हुकमनो अमल करी हळवदमांथी थाणुं उठावी लीधुं, जेथी वि. सं. १५९४ मां फरी राजमानसिंहजी हळवदनी गादीए बेठा. तेओए मागाजीने प्रेम पूर्वक कह्युं के तमारी सेवाना बदलामां हुं जे आपुं ते थोडुं छे, तमारी सहायताथीज मने राज्य मळ्युं छे. परंतु खजानाओ खाली होवाथी हवे राज्यनी आबादी शी रीते करवी ए सूजतुं नथी. बादशाहे तो आपणा हळवद शहेर उपरथी पोतानो हाथ उठावी लीधो, परंतु क्षुधा देवीए जमावेला जोरने तोडवा माटे आ वखते पैसानी पूरती जरुर छे, पैसा विना सैन्यनी जमावट शी रीते थाय ? संक्षेपमां धन विना धार्युं काम सत्वर पार पाडी शकातुं नथी, माटे तमो गमे तेम करी आपणी धनाढय प्रजाने शोधी समजावी अहीं वसावो तो आपणे मन मान्या दाम मेळवी शकीए. मागजीए पोताना मालिकनुं मन वित्त विना अत्यंत विह्वल जोइ तेओनी आज्ञा उठाववा माटे एकदम कम्मर कसी अने ते पराया प्रदेशमां निवास करतां नंदवाणाओने जइ मळया. ए नंदवाणा लोको हळवदना मूळ वतनी हता अने तेओए राज्यना आश्रयथीज अढळक धन मेळव्युं हतुं. मागाजीए तेओने कह्युं के राजमानसिंहजीए हळवदना राज्यनी लगाम हाथमां लीधी छे, माटे हवे तमे दयाल्यां रहेवा चालो, त्यारे एक नंदवाणे जवाब आप्यो के अत्यारे राज बहुज नबळी हालतमां होवाने लीधे वखते राजसाहेब अमारी मिल्कत उपर हाथ नांखे तो पछी अमारे कोना पासे जइ फरियाद करवी.आप जाणो छो के सत्ता आगळ शाणपण नकामुं छे. जेम पैसो वैभव आपे छे तेम माथां पण ए पैसोज कपावे छे. माटे एक पुरातन कहेवत छे के ‘ चेतता मुखी ते सदाय सुखी ’ पाछळथी पस्तावुं पडे एवो रोजगार नंदवाणानो दीकरो न करे. आवा स्वार्थपरायण नंदवाणा प्रत्ये मागाजीना अंतःकरणमां तिरस्कार उपज्यो. तो पण तेणे मालिकना हित खातर सर्वने समजाववा मांडया अने कह्युं के जे प्रजानां सद्भाग्य होय तेनोज पैसो राजाना उपयोगमां आवे छे. राजानी प्रीतिमां निरंतर लक्ष्मी निवास करे छे; पैसो तो आज छे अने काले नथी, परंतु राजानी प्रीति होय तो पेढी दर पेढी आनंदनी साथे अमीराइनां सुख भोगवी शकाय छे. पैसा करतां प्राण कोटि दरज्जे किम्मती गणाय छे, छतां ए प्राण आपीने पण केटलाएक पुरुषो राजानी प्रीति संपादन करे छे; ए प्रीतिनो लाभ मरनारना परिवारने मळ्या विना रहेतो नथी. तेओनुं यावच्चन्द्रदिवाकर राज्य तरफथी पोषण करवामां आवे छे. एवी अमूल्य राजानी प्रीति आगळ धनना ढगलाओ कांइ गणतरीमां नथी. तमो पण राजानी प्रीतिथीज तरतीमां आव्या छो. ज्यारे तमारा बापदादाए

प्रथम हळवदमां प्रवेश कर्यो त्यारे पासे फुटीवदाम पण न हती. राजमानसिंहना वडवाओनी कृपा मेळवी पांचपैसा प्राप्त कर्या अने पछी जेजे वखत राज्य उपर आपत्ति आवती तेते वखते एज पैसा धी रता हता अने अने सारो समय प्राप्त थतां व्याज उपरांत इनामो पण मेळवता, एथीज आजपर्यंत तमारा घरमां स्तुति करवा लायक संपत्ति टकी रही छे. माटे तमो सर्वे मारुं कह्युं मानी हळवद चालो, हुं तमोने कोइ रीते हरकत आववा नहि दउं. त्यारे बीजो नंदवाणो बोल्यो के–अमे राज्यने पैसो धीरवामां पाछो पग नहि दइए, परंतु वखते राजसाहेब अमारी इच्छा विरुद्ध जोरजुलमथी पैसा पडावी लेवा तत्पर थाय त्यारे अमारे शुं करवुं ? जो तमो जामीनगीरी आपता हो तो अमे वधा त्यां आववा तैयार छीए, तमारा वचन उपर अमने पूरतो विश्वास छे अने तमारा कहेवा प्रमाणेज राजसाहेब करे छे ए अमाराथी अजाण्युं नथी. आ वखते मागाजीए तमाम नंदवाणाओने वचन आप्युं के ज्यांसुधी मारा धडपर माथुं छे त्यांसुधी तमारो वाळ वांको नहि थवा दउं. आवां अभय वचन सांभळी वधा नंदवाणाओ माल मिलकत अने कुटुंब कबीला सहित मागाजीनी साथे हळवदमां आव्या. राज मानसिंहजीए तेओने मानपूर्वक राख्या अने ए वधानी मिलकतना संरक्षण माटे पूरतो बंदोबस्त करी आप्यो. आम अनेक प्रकारे राज तरफथी बरदास थवा लागी, छतां निष्ठुर मनना नंदवाणाओ पोतानी मेळे राज मानसिंहजीने पैसा सबंधी मदद आपवानुं एक वचन पण न बोल्या, दरबारी माणसो पगार विना दुःखी थवा लाग्या, जोगाणनी जोगवाइ न होवाथी अश्वोनुं लोही उतरवा लाग्युं, देशनी दशा दिन प्रतिदिन बहुज बगडवा लागी, वाटिकाओ वेरान जेवी बनी गइ अने छेवटे राजभुवनमां पण खोराकनी खामी आववा लागी त्यारे राज मानसिंहजीए मागाजीने कह्युं के हवे नंदवाणाने समजावो तो सारुं. नाणा विना राज्यनी उन्नति कोइ रीते थवानी नथी. राजसाहेबनी आज्ञाथी मागाजी नंदवाणा पासे गया. अने राज्यने पैसा धीरवा माटे सर्वने एकठा करी समजाव्या, छतां एकेना मनमां असर न थइ अने तेओ उलटा मागाजीने गळे पड्या के तमो अमने अभय वचन आपी अहीं लइ आव्या ए शुं आटला माटे ? मागाजीए कह्युं के हा, ज्यारे नाणानी जरुर हती त्यारेज तमोने धनाढ्य धारी आंही वसाववा उद्योग कर्यो छे, अने तमोए जोइतुं धन धीरवा माटे प्रथम वचन आपेलुं छे, छतां आ वखते बदली बेठा ए तमाराथीज बने. अमो रजपूत लोको वचननी खातर प्राण आपतां लेश पण विचार न करीए. हवे हुं छेवटना शब्दो कहुं छुं के राज मानसिंहजी निरुपाये जोरजुलमथी तमारी मिलकत छिनवी लेशे अने मारे वचननी खातर धणीनी साथे धींगाणुं करवुं पडशे; माटे कोइ रीते समजो

तो सारुं, राजा आ नरलोकना इश्वर लेखाय छे, तेनी सेवा शुद्ध मनथी करी होय तो ए अवश्य महान फळ आपे छे. आटलुं कह्या छतां राज्यने नाणां धीरवा माटे नंदवाणाओना मुखमांथी चोक्खी "ना" निकळी, त्यारे भागाजीए राज मानसिंहजी पासे जइ कह्युं के अन्नदाता ए कृपण लोको कोइना समजाव्या समजे तेम नथी, माटे आप तेओना घरपर हल्लो करी द्रव्यने दरबारगढमां घसडी लावो, ए शिवाय एके इलाज नथी. राज्यनी उन्नति अर्थे सगा भाइनो संहार करवो पडे तो पण एमां अपकीर्ति थवानी नथी, कारण के एतो रजपूतोनी अनादि रीत छे. माटे आप-जेम बने तेम उतावळथी कार्य सिद्धि करी लिओ अने मने बहारगाम जवानी आज्ञा दिओ. राज मानसिंहजी बोल्या के तमारे बहारगाम जवानुं शुं प्रयोजन छे? भागाजीए उत्तर आप्यो के जे वखते ए नंदवाणाओने अहीं निवास करवा हुं लइ आव्यो, त्यारे में तेओने वचन आपेल छे के "ज्यांसुधी मारा धडपर माथुं छे त्यांसुधी तमारो पराभव थवा नहि दउं" माटे मारी गेरहाजरी-मां आपे ए कार्य करी लेवानुं छे. राजमानसिंहजीने पण ए वात योग्य लागी. भागोजी तरतज त्यांथी पसार थइ गया अने वेश बदली ढाल तरवार सहित नंदवाणाना वासमां हाजर थया. राज मानसिंहजीए पोताना हथियार बंध पचास माणसोने रात्रीने वखते हल्लो करवा हुकम आप्यो ए बधाए नंदवाणाना वास नजीक आवी हुमलो कर्यो ते वखते भागाजीए तलवार खेंची पोताना मालिके मोकलेल माणसो साथे धींगाणुं करवा मांड्युं अने वीरताथी वीश बावीशनां माथां धडथी जुदां करी नांख्यां, आ वखते एक माणसे राज मानसिंहजीने खबर आप्या के नंदवाणाना समुदायमांथी एक एवो शूरवीर निकळ्यो छे के तेणे आपणां केटलांएक माणसोने कापी नांख्या अने हजी पण ए हारे एवुं लागतुं नथी. आ सांभळी राजसाहेब अत्यंत क्रोधना आवेशमां घोडे चडी खुल्ली तलवारे त्यां पधार्या. पोताना धणीने हाथे मृत्यु पामी मुक्ति मेळववा आतुर थइ रहेला भागाजीए प्रथम आवेला माणसोमांथी घणाखरानो घाण वाळी राजसाहेब सन्मुख प्रयाण कर्युं ने राजसाहेबे आवेशमां ने आवेशमां एक झटकाथी एने हेठो पाडी दीधो, नंदवाणाओ निर्बळ बनी गया, राज मानसिंहजीना रक्त नयनो जोइ बधा थर थर ध्रुजवा लाग्या अने नाइलाजे नेतरनी माफक वाळ्या वळवाने हाथ जोडी उभा रह्या. ज्यारे राजसाहेबे तेओना द्वार तोडी तमाम मिलकतने कबजे करवा अनुचरोने आज्ञा आपी त्यारे एक नंदवाणो नम्र बनी बोली उठयो के कृपानाथ! आप कहो तेम करवा अमो बधा तैयार छीए. राज्यने जेटलुं जोइए तेटलुं धन काढी आपवा बाप-दादाना बोलथी कबुलात आपीए छीए, माटे आप अमारा उपर क्रोधने तजी दिओ. राजमानसिं-

हजी गमे तेवी स्थितिमां हता तो पण पोताना "गौब्राह्मण प्रतिपाल" धर्मने याद करी त्यांथी तुरत पाछा फर्या. मसालोने प्रगटावी धींगाणामां काम आवेला माणसो केवी हालतमां छे ते जोवा लाग्या. फरतां फरतां प्राण जवानी तैयारीमां पडेला प्रागाजीने जोइ भला माणस! तुं अहीं क्यांथी? प्रागाजीए जवाब आप्यो के–मारुं वचन पाळवा अने धणीनुं दुःख टाळवा. आप जरा पण शोच करशो नहि. मारो तो मोक्ष थइ चुक्यो समजो, राज्यनी सेवा बजाववाना कर्तव्यमां हुं सर्वांशे सफळ थयो छुं. आ वखते राजमानसिंहजीनी आंखमांथी दडदड अश्रुनी धाराओ चालवा लागी, तेओ गद्‌गद् कंठे बोल्या के जो मने प्रथमथी खबर पडी होत तो हुं कदी पण आ कार्य न करत. जेणे जींदगी पर्यन्त राज्यनी शुद्ध मनथी सेवा बजावी अने जेणे आ शरीरपर आवेली अनंत आफतोने अळगी करी एवा एक निमकहलाल सरदारनो नाश करवाथी दुनिया आखी मने दोष देशे अने आ कलंकनो काळो डाघ मारा समस्त कुळने चोटया विना रहेशे नहि. माटे हवे जीववा करतां मरवुं एज उत्तम छे. आटलुं कही राजमानसिंहजी पोताना मस्तक उपर तलवार मुकवा तत्पर थया, तेवामां प्रागाजीए त्रुटित अवाजे कुळदेवीना अने पोताना शपथ आपी तेओने तेम करतां अटकाव्या अने कह्युं के जे लोको मूर्ख हशे ते कदाच आपनी निंदा करशे; परंतु विद्वान लोको कदी पण आपना आ कृत्यने वखोडशे नहि. आटलुं बोली निमकहलाल प्रागाजीए पोताना धणीने छेली वखतना रामराम करी मोक्ष [1]मेळव्यो. नंदवाणाओ पासेथी पोताने जोइतां नाणां मळवाथी दिवसे दिवसे राज्यनी

---

१ ए संबंधी नीचे लखेलो दोहो सामान्य रीते बोलाय छे.

झालाहुंदी नोकरी, वे श्याहुंदो नेह;
माने प्रागो मारीयो, कये अवगुण एह.

खरी हकीकतने नहीं समजनारा मूर्ख लोको "झालानी नोकरी वेश्याना स्नेहनी बराबर छे." एवो अर्थ करे छे. परंतु खरी हकीकत एवी छे के कोइएक विदेशी चारणे झालाना बारोटने पूछयुं के–झालानी नोकरी ते बादशाहनी मित्रता बराबर छे. छतां राज मानसिंहजीए निमकहलाल प्रागजीने मार्यो ए कया अवगुणथी? त्यारे झालाना बारोटे ज्वाब आप्यो के—

अवगण प्रागामें नहीं, प्रागो गुणभंडार;
आप वचन हित श्यामरो, समज लड्यो सरदार.

प्रागजीमां एके अवगुण नहोतो, एने राजमानसिंहजीए जाणीजोइने मार्यो नथी, परंतु एज पोतानुं वचन पाळवा अने धणीनुं हित करवा मरवा तत्पर थयो हतो.

स्थिति सुधरवा लागी. थोडां वर्षो थयां त्यां राज्य एकदम आबादी उपर आवी गयुं, जेथी राजमान-सिंहजीए सौथी पहेलां नंदवाणाओनां नाणा व्याज शीखे चुकवी आप्यां. सैन्यनी जमावट पण सारी रीते थइ गइ. हाथी, घोडा, गायो, भेंसो, विगेरे जत्थाबंध खरीदवा मांड्या. ज्यारे खजानाओ तर थया, त्यारे जेणे जेणे विपत्तिना वखतमां पोताने मदद आपी हती, ते लोकोने इनाम इकरार अने जागीरो आपवामां राजमानसिंहजीए अति उदारता बतावी, तेमज जे ढेढे बुद्धिबळ वापरी बादशाही दळथी पोताने बचावी लीधा हता तेने बोलावी "चराडी" नामनुं गाम इनाममां आप्युं. हळवद हाथथी छूटयुं ते अरसामां राज मानसिंहजी केटलोएक वखत "शातलपर" तथा "आडेसर" मां रह्या हता. त्यांना जाडेजाओए राजसाहेबनी बहुज खातर बरदास करी हती, ए उपकारना बदलामां जाडेजाओ साथे दीकरीओ लेवा देवानो संबंध राजमानसिंहजीए पहेलवहेलोज बांध्यो हतो; ते पहेलां जाडेजानी के झालानी दीकरीओ अरसपरस आपवामां आवती नहि. तेओए वि. सं-१६१८ मां एक "मानसर" नामे म्होटुं तळाव बंधाव्युं. तेओने रायसिंहजी, रामसिंहजी, तथा गोविंदजी नामे त्रण कुमारो थया हता. पोताना भाइ वरसाजी तथा उदेसिंहजी साथे राजमानसिंहजीए छेवटे सलाहसंप कर्यो हतो अने तेओने राज्यमांथी ⅓ भाग उदार दिले वहेंची आप्यो हतो. प्रागाजीना मरण पछी राजमानसिंहजीनुं शरीर दिनप्रतिदिन क्षीण थवा लाग्युं, वि० सं० १६७० मां तेओनो स्वर्गवास थतां पाटवी कुमार रायसिंहजी हळवदनी गादीए बिराजमान थया; तेओए पोताना न्हाना भाइ रामसिंहजीने सात गामथी गाम "जीवा" तथा गोविंदजीने सात गामथी गाम "डेरवाळुं" जीवाइमां आप्युं.

आ रीतें काव्यमां घणी जगोए अर्थना अनर्थ थाय छे. मूळ कर्तानो उद्देश "वे शा'हुंदो नेह" ते बादशाहनी मित्रता एवो छे, छतां हालना लेभागु लोको "वेश्याहुंदो नेह" अर्थात् वेश्यानो स्नेह एवो मिथ्यावाद करे छे. ते मानवा लायक नथी.

१ हजी पण ए गाम "ढेढचराडी" ए नामथी प्रख्यात छे.

२ राजमानसिंहजीए पोताना भाइ वरसाजी तथा उदेसिंहजीने राज्यनो ⅓ भाग आप्यो हतो एवो केटलीएक जगोए लेख छे. ए वरसाजी तथा उदेसिंहजी चावडाना भाणेज हता अने तेना वंशजो अद्यापि कोंढ सतापर, कोपरणी, जेहडा मेंथाण, अंकेवाळीआ अने चराडवा आदि स्थळे विद्यमान् छे.

एकोनविंशत् तरंग.
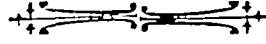
" मनहर "

आप्युं लक्ष उभयनुं दान कवि इश्वरने,
ध्रोळनी धरामां गया धारण करी धृति.
दीधा नथुराम डंका राजवट राखवाने,
झाला कुळने दीपाव्युं करी वीरनी कृति.
भालानी अर्णीथी हणी हालाने हराव्या पछी,
दिल्ही दरबारमां प्रसारी करनी द्युति.
परम पवित्र रायसिंहनुं चरित्र रूडुं,
आपने सुणावुं आज अमर महीपति.

राजरायसिंहजी वि० सं० १६७० मां श्री हळवदनी गादीए बेठा, तेओ ध्रोळना ठाकोर जसाजीना भाणेज थता हता; तेओए पराक्रमथी आजुबाजुना मुलकने कबजे करवा मांड्यो अने राज्यनी आवक जेम जेम वृद्धि पामवा लागी, तेम तेम सैन्यने वधारवा मांडयुं. " मारवुं यातो मरवुं " ए बे शब्द उपर तेओनी विशेष अभिरुचि हती; छतां ऋतु अनुसार भोगविलास भोगववामां पुष्कळ द्रव्यनो व्यय करता, दीर्घसूत्रीपणुं पोताने बीलकुल पसंद न हतुं, छतां दीर्घदृष्टिवाळा मनुष्योनी सलाह मुजब राज्यनो कारोबार चलावता; तेओनी प्रकृति अत्यंत साहसिक हती, छतां शक्तिने लीधे सर्वत्र विजयी निवडता; पोते एक एवी गहन प्रतिज्ञा लीधी हती के जे स्थळे जवा निश्चय थइ चुक्यो होय ते स्थळे जतां गमे तेवां विघ्न आवी नडे तो पण पाछो पग न भरवो. संक्षेपमां राजरायसिंहजीनां नयनो वीररसने रहेवानां अनुप आलयरुप हतां, अन्तःकरण उत्साहरुपी मल्लने खेलवाना अखाडारुप हतुं, करतल समशेररुपी नर्तकीने नृत्य करवानी रमणीय रंगभूमिरुप हतां; ललाट क्षात्र तेजस्‌ने विहार करवाना विशाळ क्षेत्ररुप हतुं, मूछना छेडाओ

वृश्चिकना आंकडानी माफक निरंतर वळेला रहेता, वदन सरस्वतीना सुंदर सदनरुप हतुं, वज्रथी पण विशेष द्रढताने धारण करनारुं वक्षःस्थल प्रतिपक्षीओना मनोरथरुपी पर्वतोने दर्शनमात्रथीज विच्छिन्न करवामां वखाणवा योग्य हतुं अने भुजदंड गजसुंढनी स्थूलताना गर्वने गंजन करनार हता. आवा अतुल पराक्रमी राजरायसिंहजीना अमलमां प्रजाने कोइ पण प्रकारनो भय नहोतो. याचक वनी अवेला अभणजनोने पण मों माग्युं आपवामां आवतुं त्यारे कविकोविदोनी केवी कदर थती हशे ए वाचकव्रन्देज पोतानी मेळे विचारी लेवुं. एक वखत एवो बनाव बन्यो के सिन्धमां व्यापार करनारा चारणो पासेथी वार महिने वेराना एक लाख रुपिआ लेवा गुजरातना वादशाहनी इच्छा थइ अने तेणे चारणोने अनेक रीते सतावत्रानी शरुआत करी. आ वखते मारवाडना रहीश वारोट इसरदान त्यां आवी चड्या अने एक लाख रुपिआ अषाढी बीजने दीवसे आपवातुं वादशाहने वचन दइ तमाम चारणोने सहु सहुना रोजगार उपर चडावी दीधा. वादशाहे इसरदानने कह्युं के तमे अषाढी बीजने दहाडे रुपिआ आपवा वंधाओ छो, परंतु त्यां सुधी तमारा पुत्रने अहीं बंधीवान तरीके राखवो पडशे अने जो मुदतसर रुपिआ नहि मळे तो अमो तेने मुसलमीन बनावीशुं. ए वात पण वारोट इसरदाने कबुल करी अने पोतानो दीकरो वादशाहने सोंपी दीधो. दिवस उपर दिवस जवा लाग्या, तेम तेम इश्वरना भक्त इसरदान वधारे व्याकुळ थवा लाग्या, तेओए वे चार रजवाडामां फरी पोतानी उत्तम कवित्व शक्तिथी राजाओनुं मन रिझव्युं. परंतु एक लक्ष रुपिआ एकठा थया नहीं, आषाढी बीज आवी के तुरत तेओ अमदावाद जइ पहोंच्या अने वादशाहने मळ्या. वादशाहे कह्युं के जो आज चंद्रोदय पहेला एक लाख रुपिया नहि चुकावो तो तमारा पुत्रने आवती काले सवारमां अमारा इस्लामी धर्मनो अंगीकार करावशुं. इसरदान अत्यंत गभराया, तेओए प्रभु प्रार्थना करी जेथी चन्द्रनो उदयज न थयो. आथी वादशाहना मनमां अचंबो उपज्यो, तेणे वारोटने पूछयुं के आजे चन्द्रोदय न थयो तेनुं कारणशुं ? त्यारे इसरदाने जवाब आप्यो के ज्यांसुधी आपने आपवा माटे एक लाख रुपिआ मने नहीं मळे त्यांसुधी चन्द्रना दर्शन थवां दुर्लभ छे; परंतु जो फरी एक मासनी वधारे मुदत आपता हो तो आवती काले तमोने चन्द्रना दर्शन थाय. वादशाहे ए वात कबुल राखी अने बीजीयाने दहाडे द्वितीयानो चन्द्र देखायो. इसरदाने राजरायसिंहजी अत्यंत उदार छे एवुं कोइ कविना मुखथी सांभळ्युं हतुं, जेथी तेओ बीजा रजवाडामां नहि रोकाता सीधा हळवद आव्या अने राजरायसिंहजीने मळी वीतेली वातथी वाकेफ कर्या. राजसाहेबे

एज वखते इसरदानने अभय वचन आपी कह्युं के तमो निश्चित रहो. भाट, ब्राह्मण, अने चारणोनी उपाधि अलग करवाने माटे मारा खजानाओ निरंतर खुल्लाज छे. राजरायसिंहजीनी आवी सुधा सरखी वाणी श्रवण करी इसरदानना अन्तःकरणमां अपार शान्ति उपजी. नित्य नवां नवां खानपान आदिथी सन्मान पामतां वीश दिवसो एक निमिषनी माफक नीकळी गया. एकवीशमें दिवसे राजरायसिंहजीए पोताना माणसो द्वाराए इसरदानना नामथी एक लाख रुपिआ अमदावाद मोकली आप्या. मुदतने आगले दहाडे रुपिआ मळी जवाथी बादशाहे बारोट इसरदानना पुत्रने बंधनथी मुक्त कर्यो. राजरायसिंहजीए एक लाख रुपिआ उपरांत बीजा एक लाख रुपिआ-

---

१ एक लाख रुपीआ आपी बादशाहना बंधनथी पोताना पुत्रने छोडाव्यो ए वखते बारोट इसरदाने राजरायसिंहजीना संबंधमां नीचे मुजब काव्यो बनाव्यां हतां.

दोहा.

काळाग्रहसुं काढीओ, वेळा दूजी वार;
आयो राया संगरा, गुणहुंदाउपकार ॥

गीत. १

तरक मगर ताणी जते सहुकोए समरीओ, सर अवर नर नहकाज सीधा,
करण संभारीयो नाम तामक रणा क रण, कवीराए संघ दस साद कीधा;
बंदण गजेन्द्र इ बान ग्रही आबने, हेवेने मगर लेजाय हेला,
धाओरे धाओ हे राण ! धरणी धरण, वाघहर सारीखी हुइ वेला.
वरण अन्द्र वजपालदे वीरभद्र, राई तन देव सह देख रहीआ,
मह महण मानाजत तार मूकावीआ, गजेन्द्रकर ग्रहीरीए ग्राह ग्रहीआ;
पात्र पट हथ दस देस पोकारीआ, जल अने हुआ रण बोल जारां;
सपोह वइकंठ जाई तारे आसेवगु, तरंडथीओ पाटडी राओ तारा ॥

गीत. २

राए संघराण रणरीधे रोद्रां, छोडावीआ चारण छोगाल;
वेळाजेण वेहडीओ वीभो, वेळाजेण वथको वजपाल;

नो शिरपाव आपी बारोट इसरदानने संतुष्ट कर्या हता. कोइ वखत राजरायसिंहजी ध्रोळ जइ पोताना मामा जसाजीना मिजमान थया हता, त्यां आनंद वैभवमां केटलोएक समय व्यतीत करी एक दिवस मामो भाणेज चोपाट खेलवा बेठा, रमत बराबर जामी उपराउपर दाव लेवा लाग्या, तेवामां दील्हीथी द्वारिका तरफ जवा निकळेली महाराज मकनभारथीनी जमात ध्रोळने पादर आवी. तेनी साथे नगारां, निशान, हाथी, घोडा, पालखी, छत्र, छडी तथा चामर विगेरे म्होटो आडंबर हतो, दरेक मनुष्योनां अंग विभूतिथी विलसी रह्यां हतां, सर्वना शिर उपर पिंगळी जटा कुंडलाकार वेठेला सर्पनी शोभाने धारण करती हती; दाढी, मुछ, तथा भ्रकुटिपर भुंसेल भस्मने लीधे युवान पण दूरथी वृद्ध जेवा देखाता हता; कंठमां रुद्राक्षनी माळाओ अने कटिए आडबंध तथा कोपीन शिवाय कशुं जोवामां आवतुं नहोतुं. आवा त्यागी छतां अनुरागीनी माफक लक्ष्मी देवीना उपासक बनेला नागाओ हाथमां विविध शस्त्रो धारण करवाने लीधे शंकरना गणनी पेठे शोभता हता. साथे केटलाएक भगवां वस्त्रोथी भव्य जणाता अतीतो म्यानामां बेठेला म्हाराज मकनभारतीने चम्मर ढोळता हता, तमामे ढाल तलवार धारण करी हती. तोपो, बन्दूको अने दारुगोळो पण जमातनी साथे जत्थाबंध जोवामां आवतो हतो. कदाच कोइ साथे युद्ध करवानो प्रसंग आवी चडे तो पण जीत मेळवी शके एटली सामग्रीनो संग्रह करेलो हतो. दरेक शहेरनी समीपे पहोंचता पुरवासीओने जाण करवा माटे महाराज मकनभारथीए जमातना नगारशीने

वंजे अने आसार वीरभद्र, सत्रसल हरासजस सरसाय;
कडतल जो कव वारन करत, मुआहत भाखसीआ मांय;
उंडे अतग बूडताईअण, साहीवांहांए काढी आसीह;
दीहजण राओल ओत डगीओ, दुदाओत झुकोजण दीह;
वदरे तुझतणे सींघ वधा, चारण छुटा चतर चकोर;
सरवही एकी अग्थ न सीधो, जाडेजीकी न हूवो जोर;
मुकावीआ तेहीज मानाओत, दुथी वरन अगादरवेस;
मोदल राओ हूओ जइ मागे, नवल हूवो जइ काछ नरेश;

डंको वजाववानी आज्ञा आपेली होवाथी तेणे धोळने पादर पण डंकानी धणधणाटी बोलाववा मांडी. ते सांभळी ठाकोर जसाजीना कान चमक्या, तेओए रमतने तुरत पडती मूकी अने कोईएक किंकरने हुकम कर्यो के मारी हदमां नगारांनो नाद करनार कोण छे ? तुरत तपास करो, तेवामां बीजा माणसे आवी खबर आप्या के ए बावानी जमात छे, छतां जसाजीनो क्रोध शान्त न थयो, लोचनोए लालाशने लेश पण न तजी, भ्रकुटिनो मरोड अने खडां थयेलां रोम घडिभर एमनाएम रह्यां. आ वखते राजरायसिंहजी बोल्या के मामा ! शुं तमे तमारी हदमां कोईने नगारुं वगाडवा न आपो ? ठाकोर जसाजीए जवाब आप्यो के बिलकुल नहि. राजरायसिंहजीए कह्युं के कदाच कोई आवी वगाडे तो शुं करो. जसाजी बोल्या के—फोडी नांखुं. आवां अभिमानना वचन सांभळी राजरायसिंहजीने क्रोध चड्यो अने तेओ तुरत बोली उठ्या के मामा ! त्यारे हवे जोइ लेजो मजा ! आ तमारो भाणेज थोडा वखतमां धोळनी हदमां नगारां लावी धणेणाटी बोलावशे. पछे तमो नगारांओने शी रीते फोडो छो ए जोयुं जाशे. ठाकोर जसाजी पण साहसमां राजरायसिंहजीथी उतरे तेवा न हता, तेणे पण वज्र जेवा कठिन वचनो उच्चारवा मांड्या. आगळना रजपूतो वातवातमां वैर बांधी संबंधीओनो घात करतां जरा पण विचारता नहि अने परस्पर बाहुबळनी परीक्षा करवा युद्ध भूमिमां कुदी पडता ए आ उपरथी स्पष्ट समजी शकाय छे. राजरायसिंहजी एज वखते धोळनुं पाणी हराम करी हळवद तरफ रवाना थया अने त्यां पहोंच्या बाद तुरत सैन्यने सज्ज करवा मांडयुं. प्रथम तो धोळके माणसो मोकली कसबातीनां बावन जोडी नगारां मंगाव्यां अने बीजां राज्यमां हतां तेटलां समा नमा कराव्यां. त्यारबाद साहसना सिन्धुरुप असीम बळवाळा हळवदना धणीए दश हजारनुं सबळ दळ साथे लइ दैवी दमामथी धोळनी धरा तरफ प्रयाण कर्युं विविध रंगथी रंगेला मदोन्मत्त हाथीओना झुंड उपर फरकती ध्वजाओ होळीनी जाळ समान झळकती हती. केटलाएक हाथीओ उपर सिंहना मोरावाळा सुवर्णना होदाओ मेरुपर्वतनी माफक शोभता हता, केटलाएक करिवरो सुंढना अग्रभागने सर्पनी फणो समान डोलावता वृक्षोनी डाळीओने तोडवा लाग्या, केटलाएक मतंगजो पृथ्वीपर पडती पोतानी छायाने चोतरफथी ताडन करता दिङ्मूढनी माफक आम तेम दोडवा लाग्या; केटलाएक हाथीना दंतोशळमां सोना रुपानां वक्र चक्रो चडावेल हतां, ते जाणे युद्धमां क्रोध करी वक्र गतिवाळा राहुए पूर्णिमाना चन्द्रने घेरी लीधो होय एवी उत्प्रेक्षाने उपजावतां हतां. भद्र, मन्द, मृग अने मिश्र जातिना अनेक हस्तिओ चंचलताथी भूमिने नीची नमाववा लाग्या; तेमां केटलाएक " मकना ", " बाल ", " पोत ",

"विक्र", "यूथनाथ", "प्रभिन्न", "मेंगळ", "व्याल" अने केटलाएक मध्य यौवनवाळा हस्तिओ पण हता. छटादार गमनथी घननी घटाने लज्जित करनारा ते तमाम हस्तिओ मस्तीमां आवी सुंढना अग्रभागथी जलबिन्दुओनी वृष्टि करता सृष्टिसौन्दर्यने पुष्टि आपवा लाग्या. ए हस्तिओना आंखना गोळा, बन्ने दांतो बन्नेनुं स्थान, गंडस्थल, ग्रीवा, पुच्छनो मूळ प्रदेश, ललाट, कुंभस्थलनो अधो भाग, कर्णना मूळ अने कुंभस्थलनो मध्य भाग विगेरे अवयवोने विविध रंगथी अलंकृत कर्या हता; जेथी तेनो देखाव सायंसन्ध्यानी शोभानुं सर्वांशे अनुकरण करवामां विजयी निवडे एमां कांइ नवाई जेवुं न हतुं. केटलाएक करिवरो यौवनना मावल्यथी भालाना अग्र भागने तेमज अंकुशनी तीक्ष्ण अणीने नहि गणकारता अतुल आवेशथी अंगोने उछाळी महावतोने स्थानथी भ्रष्ट करवा लाग्या अने केटलाएक गज गर्जना करता तेमज केटलाएक अन्यना तेजनी तर्जना करता होय तेम कदलीना फलनी आशाए अथवा तो अत्यंत क्रोधने वश बनी आगळ पग भरवा लाग्या. साथे सर्प समान लांबी केशवाळीवाळा अने नमेली कन्धरावाळा अत्यंत शोभायमान अश्वो पृथ्वीनो स्पर्श करतां पग दाझता होय तेम नाचता गाढ जलद जेवा हस्तिओना युत्थमां चमकती चपळा पेठे चंचल चालथी चाली स्वार थएला सुभटना आन्तरिक उत्साहने उत्तेजन आपवा लाग्या. केटलाएक अश्वो नखरा करनारी वेश्यानी माफक वक्रगतिथी मार्गने मापवा लाग्या. पारस, कच्छ, वाह्लीक अने वनायु देशमां उत्पन्न थएला एव वगरना केटलाएक अश्वो हावभाव सहित नृत्य करती नर्तकीनी पेठे नाचवा लाग्या, केटलाएक अश्वो आवेशमां आवी एक बीजाथी आगळ थवा लाग्या. केटलाएक अश्वो भूमिने बाथ भरी नालोथी अग्निकणने उपजाववा लाग्या, केटलाएक अश्वो कुलटा स्त्रीनी आडीअवळी चालती चंचल दृष्टि समान गति करी युद्धभूमि तरफ जवा लाग्या, पोतानी छाया जोती वखते केटलाएक अश्वोना कर्ण केवडाना पर्णनी पेठे शोभवा लाग्या अने ग्रीवा नमावती वखते तेमां हाडकुं हशे के नहि होय तेवा तर्क वितर्क स्वारोना मनमां थवा लाग्या. अष्टमंगल[1] पंचभद्र[2] अने चक्रवाक[3] जातिना अनेक चंचल अश्वो उपरांत श्वेतवर्णथी सुशोभित चक्षुवाळा, नविन यौवनवाळा अने वेगमां वायु सरखा केटलाएक तुरगो जवाहिरथी जडेला जीन तथा पाखरने अंग उपर धारण करी राजरायसिंहजीना सैन्यने सुरपतिना दळनी माफक

---

१ जेना चार पग, वालडा, मदद्रू, याल अने ललाट श्वेत होय ते अश्व "अष्टमंगळ". २ जेना चार पग अने ललाट उपर श्वेत तिलक होय ते "पंचभद्र". ३ जेनुं शरीर पीळुं अने पग तथा नेत्र श्वेत होय ते "चक्रवाक" कहेवाय छे.

दीपाववा लाग्या. केटलाएक जशनामी झालाकुळमां जन्म पामेला प्रतापी सुभटो अगाउथीज खड्गना दावो खेलवा लाग्या, केटलाएक शूरवीरो होडमां पोताना अश्वने आगळ करवा माटे लगामने ढीला मेलवा लाग्या. केटलाएक अश्वो वेगथी दोडती वखते वच्चे आवना हाथीओ साथे टक्कर लइ चक्कर खवराववा लाग्या, केटलाएक शूरवीरो पराइ भूमिमां पग मूकतां "आ भूमिने क्यारे स्वाधीन करीए" एवा उत्साहमां आववा लाग्या. केटलाएक सुघड स्वारो दोडते घोडे बन्दूको फोडी लक्ष्य सिद्ध करवा माटे वृक्ष आदिने गोळीथी वींधी आनंदथी उमगवा लाग्या. अतुल भारने लीधे वसुमतीने धारण करनार शेषना सहस्र शीश एकी वखते डगवा लाग्यां. आम अनेक प्रकारना कौतकथी अलौकिकपणाने प्रदर्शित करतुं राजरायसिंहजीनुं सैन्य ध्रोळनी सरहदमां आवी पहोंच्युं. सेंकडो नगाराना गंभीर नादथी गगन गाजी उठयुं, धरणी धूजवा लागी. ए खबर ध्रोळना धणी ठाकोर जसाजीने मळतां मगजने असहनताना वायुए वींटी लीधो, रोम खडां थयां, भ्रकुटिए धनुषनुं रुप धारण कर्युं, नयनोमां प्रज्वलित क्रोधाग्निए निवास कर्यो अने बाहु आदि अन्य अंगो पण फरकी उठयां; तेओए तुरतज जाडेजाओना जबर सैन्यने सज्ज करी राजरायसिं-हजी सन्मुख प्रयाण कर्युं. गाढ अंबुद जेवा अथाह आडंबरने लीधे रजोगुणथी दबाएला सत्व गुणनी माफक आकाश रजथी छवाइ गयुं, आखुं जगत् अन्धकारने आधीन थयुं. दरेक दिशाओमां शेषनागनी जिह्वा पेठे न्हानी मोटी ध्वजाओ फरकवा लागी. पराणे शौर्य चडावी साथे लीधेला भीरु पुरुषोनी छाती थडकवा लागी. हस्तिओनी पीठपर लटकावेला घंटना मनोहर नाद सैन्यनी अविच्छिन्न गतिने प्रसिद्ध करवा लाग्या. भेरी आदि रणवाद्योना अवाज वीर पुरुषोना हृदयमां विशेष उत्साह भरवा लाग्या. सुभटना कवचोनी कडीओ पण वाद्यनी माफक वागवा लागी, अश्वनी पंक्ति पण पोताना अंगपर रहेला पाखरना सुंदर शोर श्रवण करी त्वराथी युद्धभूमिमा जवा अनुरागवा लागी. स्वल्प समयमां उभय सैन्यनो समागम थयो. उत्साहरुपी पूर्णचन्द्रना उदयथी वीररसनो वारिधि छलकाइ गयो. राजवंशी सुभटोने शौर्य चडाववा माटे उन्नत अवाजे वन्दीजनो विविध छन्दो बोलवा लाग्या, केटलाएक योद्धाओ विजयरुपी धन मेळववा माटे एकबीजाना उरःस्थलरुपी कपाटने कृपाणरुपी कुंचीथी खोलवा लाग्या. परस्पर अथडाती तीक्ष्ण तलवारोमांथी झगमगता अग्निना तणखा झरवा लाग्या, महीपर मचेला महान् कोलाहलने लीधे पातालमां निवास करनारा नाग आदि डरवा लाग्या. झाला अने जाडेजाओनुं युद्ध जोवा सूर्यनारायणे आकाशना मध्य भागमां पोताना रमणीय रथने उभो राख्यो. सुरना समुदाये पण

विमानमां बेसी व्योमपथमां पोतानो पडाव नांख्यो जेम पुरंदर वज्रना प्रहारथी पर्वतना उन्नत शृंगने भेदी पृथ्वीपर पाडे, तेम केटलाएक सुभटो अनहद हिम्मतथी हाथीने होदे बेठेल सरदारोना भालमां भालानी अणी भोंकी अचेत अवस्थाए अवनिपर पाडवा लाग्या. केटलाएक मल्लनी माफक बाहु युद्ध करी प्रतिपक्षीओने पत्थर साथे पछाडवा लाग्या. केटलाएक योद्धाओ असह्य कोपने लीधे दंतथी ओष्ठने करडता कठिन करवालो चलावी लोहना टोपने तोडवा लाग्या, केटलाएक प्रतापी वीरो अतुल पराक्रमथी म्होटा म्होटा शूरवीरोनुं मान मोडवा लाग्या. राजरायसिंहजीना सैन्यमां उन्नत अवाजथी गगनमंडलने गजावनार डंकाओ वजवा लाग्या, तेने तोडवा माटे ठाकोर जसाजी अनेक उपायो योजवा लाग्या. वीरपुरुषोना अंग उपर चन्दननी माफक रुधिरनुं अनुलेपन थवा लाग्युं. ए जोइने अप्सराओना अंगमां अनंगनुं जोर वधवा लाग्युं. झालाओनी हाकथीज हालाओनुं बळ केटलेक अंशे हराइ गयुं, मांसना टुकडाओथी युद्धनुं मेदान भराइ गयुं; जोशभर वहेती रक्तनी वाहिनीनी अंदर वीरनरोए विदारेल करिवरना कुंभस्थलमांथी पडतां मोतीओ सरस्वतीना प्रवाहमां प्रतिबिम्बित थता उडुगण पेठे ओपवा लाग्या. केटलाएक रणरागी पुरुषो प्रचंड पराक्रमथी गजदंतना खंड करी बकपंक्तिनी पेठे आकाश मार्गे उडाववा लाग्या. केटलाएक शूरवीरो गहेरा अवाजथी सिन्धुरागने ललकारवा लाग्या. केटलाएक पिशाचो महादेवने प्रसन्न करवा माटे रणभूमिमां कपाइ पडेला मतंगजोना मस्तकोने पोताना शिरपर धरी गणपतिरूपे गमन करवा लाग्या, केटलाएक अश्वो जंगनी जमावट वखते हरिणनी माफक फलंग मारवा लाग्या, केटलाएक घायल वीरो तुरग आदिना पगतळे कचराइ मरवा लाग्या, रुधिरथी खरडाएल मुखवाळा भूत, प्रेत, आदि भयंकररूपे युद्धभूमिमां फरवा लाग्या. पराक्रमी पुरुषोना प्रलंयकर पवन, विद्युत् अने मन करतां पण वधारे वेगथी तेगने चलाववा लाग्या, केटलाएक शूरवीरो शस्त्रो तुटी जवाने लीधे चीराइ गएला अश्व आदिना चरणोने उपाडी शत्रु सन्मुख आववा लाग्या. भयंकर कापाकापीमां केकनो कन्चरघाण वळी गयो; ठाकोर जसाजीनां मनोरथ धूळमां मळी गयो. ज्यां त्यां घायल वीरोना घोरशोरने सांभळी प्रेत लोको चारेकोर तोरमा आवी परस्पर ताळीओ देवा लाग्या. क्षुधाना शमनथी जोरमा आवेला पिशाचो "फरी आवो समय मळशे के नहि ?" एवा भयथी मृतभक्षनो लाभ लेवा लाग्या. झालाओए हालाओनी वरामानने मात करी, चोसट योगिनीओए नृत्यनी शरुआत करी अने तीक्ष्ण तलवारोना प्रहार पामता हस्तिओनी प्रचंड चीशथी दशेदिशना दिग्गजो डरवा लाग्या. टिमटिम नामना वाद्यने

पगाहती डाकिनीओनां मन प्रसन्न थवा लाग्यां, त्रंबकना नादनी साथे त्र्यंबके तांडव अर्थे तैयारी करी, अप्सराओए युद्धवीरो साथे अपूर्व स्नेहथी यारी करी. मृत्तिकाना पिंडनी माफक हस्तिओना मस्तको भेदावां लाग्या. असंख्य सुभटोना हाथ पग आदि अवयवो पादपनी शाखा पेठे छेदावा लाग्या. जत्थाबंध खड्गना खंड खरवा लाग्या. मृतक मतंगजना गंजपर अश्वना पुंज प्राण तजी पडवा लाग्या. जयजयकारनो उच्चार करती योगिनीओ रुंडपरथी उडता मुंडने झीली भूतपतिने भेट आपवा लागी, रुधिरनी पिचकारीओथी रसत्रोळ थता वीरपुरुषोना हृदयमां विशेष वीरता व्यापवा लागी. भैरवना भयंकर शब्दथी चुडेलो चोंकवा लागी, रक्तना अथाह प्रवाहमां कीचडनी माफक मांसनी भरती थवा लागी. केटलाएक सुभटो आडी आवती लोथोने ओळंगी छलंग मारी शत्रुओने छुंदवा लाग्या. केटलांएक कवन्धो उछळता लोहीने लीधे यन्त्रथी बनावेल क्रियावान पुरुषनी पेठे कूदवा लाग्या. जाणे वैशाख मासमां किंशुकनां कुसुमो खील्यां होय तेम वीरपुरुषोनी कन्धरापर मांसना खंडो प्रकाशवा लाग्या, आकाशमां उडतां सुभटना मस्तको कालिकाए करातो कन्दुक क्रीडा समान भासवा लाग्या. योगिनीए फेंकी दीधेल खप्परनी माफके अरधां कपाएल मस्तको कवन्धपर लटकवा लाग्यां, कापाकापी जोइ कंपायमान थता कायर जनो समीर वेगे रणभूमिमांथी सटकवा लाग्या, पवनना झपाटाथी पडती पताकाओनी पेठे शूरवीरोनी कपाएल शिखाओ आम तेम उडवा लागी, हाला रजपूतोनी आशारुपी होडी संगर समुद्रमां दीन बनी डुबवा लागी. तोपो साथे अथडातां तूटती तलवारो फण वगरना सर्पनी शोभा धरवा लागी, केटलाएक सुभटोनी मूळ सहित कपाएली नासिकाओ आश्विन मासमां खीलेलां तिलपुष्पनी भ्रान्ति भरवा लागी. केटलाएक योद्धाओना असह्य असि प्रहारथी रक्तने वहन करता ओष्ठ प्रवालना पुंज जेवी अथवा परिपक्व बिम्बफळ जेवी द्युति दर्शाववा लाग्या, केटलाएक वीरनरो वीरहाकनी वृष्टि वरसाववा लाग्या. केटलाएक योद्धाओनी अखंड दंतपंक्ति खंडित थइ हीराओना खंडनी माफक खरवा लागी, रुधिरनां पुरमां तणाती ढालो सरस्वतीना जळमां तरता कच्छपोनी कान्तिनुं अनुकरण करवा लागी. केटलाएक सरदारोना मुक्ताभरणो सहित कपाता कर्णो मुक्ताओ सहवर्तमान छीपनी शोभाने हरवा लाग्या. जेम जेम घाव ठरवा लाग्या तेम तेम वीरजनो अप्सराओने वरवा माटे स्वर्गनी वाटे संचरवा लाग्या. डाकिनीओ भयंकर दांत देखाडी भीरुजनोने डराववा लागी, साकिनीओ अग्नि लावी शूरवीरोना शबने सळगाववा लागी. गिद्ध आदि पक्षीओए युद्धमां मळेला अपूर्व भक्षणथी परम तृप्तिने प्रगट करी. अनंत शत्रुओनो संहार कर्या बाद राजरा-

यसिंहजीए ठाकोर जसाजी सामे मृगराजनी माफक फाळ भरी. मामा भाणेज बन्नेए एकी वखते मूछपर हाथ नांख्यो, सूर्यनारायणे ए तुमुल युद्ध जोवा माटे पोताना रथने अस्ताचल उपर रोकी राख्यो. बन्नेए केसरीआं परिधानो पहेरेलां हतां, बन्नेना चक्षुओने वैरना वह्निए घेरेलां हतां; बन्ने अनुरूप अप्सराओने रिझाववा तत्पर थया, बन्ने रणांगणमां जयस्तंभनी पेठे अत्यंत द्रढताथी उभा रह्या. बन्नेए मुंडमालना दानथी महादेवनुं दारिद्र्य टाळवा कम्मर कसी, बन्नेना हृदयमां मांसभक्षक प्राणीओना उपर विशेष उपकार करवानी इच्छा वसी. बन्नेए पोतपोताना शीशपर तुलसीनुं पर्ण धर्युं, बन्नेए उमंगथी गंगाजळनुं पान कर्युं, बन्नेनी बुद्धिए संसारना मोहने तृणनी माफक तजी दीधो, अद्भुत रसने उत्पन्न करवा अर्थे उभय अवनिपतिए कोइनो मत न लीधो, राजरायसिंहजी मामाने हाथ वताववा माटे प्रथम तो तीक्ष्ण तलवारना एकज प्रहारथी तेना तुरगना पाछला बेउ पग अलग कर्या, अश्वनी पीठ नमतां ठाकोर जसाजी गेंदनी माफक पृथ्वीपर गबडी पड्या, तेओए अतुल बळ नजरे भाळ्या छतां तेने हराववानी हिम्मत धरी बन्ने बहादुरो छटाथी पटानी माफक खड्गना दावो खेलवा लाग्या, प्रळयनी मेघधारा समान असह्य असिधारना प्रहारने आतपत्र तुल्य आकृतिवाळी विशाल ढालपर झीलवा लाग्या. झपाझपीमां उभयनी तलवारोना टुकडे टुकडा थइ गया. आकाशमार्गमां स्थिर थइ युद्धनुं अवलोकन करता आदित्य आदि देवताओना अन्तःकरण जुगल भूपतिनो जयाजय जोवा अति आतुर थया. तेवामां जेम घनथी विद्युत्, नभथी द्वितीयानी चन्द्रकळा, अग्निथी ज्वाळा, व्याकरणथी शब्द, कुलटाना द्रगथी कटाक्ष, कलिन्द नामना पर्वतथी यमुना, बिलथी सर्प, यमराजना मुखथी दाढ, सूर्यथी किरणो, सरोजथी पट्पदनो समुदाय, प्रजापतिथी प्रजा, महादेवनी जटामांथी प्रमथ आदि गण, वराहना वदनथी दन्तयुग्म, स्तंभथी गरदनना केशने धुजावता नृसिंह, उदयगिरिथी आदित्यनुं ओज, पाराशरना मुखथी पुराण, अर्जुनना गांडिव नामना धनुषथी बाण, लयने जाणनार गायकना मुखथी आलाप, सत्व, रज अने तम ए त्रणे गुणोथी महदादि चोवीश तत्वो, हिमगिरिथी गंगना तरंग, शेषनागना मुखथी जिह्वा, नवोढाना उरथी उरोज, अंजनीना उदरथी हनुमान, वासवना करथी वज्र, कपिलदेवना मुखथी शाप, मेघथी जलधार, श्रीकृष्णथी कामदेव, शिवना करथी त्रिशूल, अने छीपथी मुक्ता, प्रगट थाय तेम राज रायसिंहजी तथा ठाकोर जसाजी परस्पर बरछीओ काढी रणांगणमां प्रळयना अनलनी पेठे चक्राकार फरवा लाग्या अने शीघ्रताथी परस्पर प्रहार करवा लाग्या. राज रायसिंहजीए ठाकोर जसाजीना एक बे प्रहारथी अंगने अलंकृत करी बरबा

आतुर थइ रहेली रंभाना आन्तरिक आशाबीजने अंकुरित कर्युं, पण फरी तुरतज विक्राळरुप धरी मामाना मस्तकने टोप सहित तोडी नांख्युं अने अनेक दावपेचथी ठाकोर जसाजीने रणमां रोळी तेना शरीरने चांचडनी माफक चोळी नांख्युं, जाडेजाओनुं समग्र सैन्य काम आव्युं, देवताओए जयजयकारना उच्चारथी गगनमंडलने गजाव्युं, राजरायसिंहजी उपर इन्द्रआदि देवोए पुष्पनी वृष्टि करी, झालाओनी अवशेष रहेली सेना हळवद तरफ पाछी फरी. आ भयंकर युद्ध वि. सं. १६३७ ना अरसामां थयुं हतुं अने तेमां झालाओनी हार थतां झालाओनुं पाणी रह्युं हतुं. ध्रोळना ठाकोर जसाजीए मरती वखते मात्र एटलोज उच्चार कर्यो के " हे साहेबधणी तुं मारी खबर लेजे " आ वाक्य समीपे उभेला कोइ एक चारणना सांभळवामां आव्युं. जो के ठाकोर जसाजीए तो साहेबधणी अर्थात् इश्वर प्रत्ये प्रार्थना करी, परंतु पेला चारणे तुरतज कच्छना राओ खेंगारजीना भाइ सातलपर तथा आडेसरना ठाकोर साहेबजी आगळ जइ युद्धनी सघळी हकीकत संभळाव्या बाद कह्युं के ध्रोळना धणी ठाकोर जसाजी मरती वखत मात्र एटलुंज बोल्या छे के राजरायसिंहजीए भले मार्यो तथा मारा सैन्यनो संहार कर्यो, पण मारा जाडेजा कुळमां सिंहरुप साहेबजी ए वैरनो बदलो एने आप्या विना रहेशे नहि, " आम चारणे घरना शब्दो घाली वधारेल वाक्यथी तेमज भ्रातृभावना सज्जड स्नेहने लीधे साहेबजीनुं लोही तपी आव्युं अने तओए हळवदपर चढाइ करवा माटे सैन्यनो जमावट करवा मांडी.

राजरायसिंहजीए हळवदमां आवी शरद, हेमंत, शिशिर ऋतुना छ मास विविध विलासमां विताव्या, त्यारबाद वसंत ऋतुए जगत् आखामां पोतानो अमल जमाव्यो, प्रवासी पुरुषोए पोतपोतानी प्रमदाने आपेल मिलननो अवधि पूर्ण थयो, मन्दिरो मुदप्रद जणावा लाग्यां; शीत, मन्द अने सुगन्धी समीर विरहीनाहृदयमां विष समान व्याधि उपजाववा लाग्यो. सुभग स्वादने लीधे भोजन भाववा लाग्यां, योगिजनोना अन्तःकरणमां जाग्रत थएला पंचशरे प्रवेश कर्यो, वननी अंदर पलाश प्रफुल्लित थया, समग्र विलासनो समय समीप आव्यो, पादपना पर्णोए पीळा रंगने पसंद कर्यो, सूर्यनो ताप शरु थयो. उत्तरोत्तर वासरना प्रमाणमां वृद्धि थवा लागी. रंगबेरंगी वल्लरीओ विकाश पामी विटपने वींटावा लागी, कोकिलाओ कलित कंठथी तंतवगर दिगंतमां प्रसरेला वसंतना गुणगान गावा लागी; मनोहरनिकुंजना मलिन्दना पुंज गुंजवा लाग्या, सखिओना समुदायमां विविध परिहास थवा लाग्या; संयोगिनी स्त्रीओए वसंती वस्त्रोथी अगने अलंकृत करी कंठ, कर्ण, नासिका अने हाथ, पग आदि अवयवोमां रत्नजडित आभूषणो पहेर्यां, घातकी पंचबाणे

पीडवा माटे प्रोषित पतिकाना हृदय घरने घेर्यां. वसंत रागनो आलाप सांभळी संतजनो पण रति-
कंतने वश थया, बाग अने वननी अंदर आठे प्रहर ऋतुराजना विजयवाद्य वागी रह्यां. संत अने
असंतना समुदाय उपर कामदेवरुपी महाराजानी बादशाही दृढ करवा माटे वसंतरुपी मुसदीए
वनवीथिनो दरबार बनावी नवपल्लवना गलीचाओ तथा गुलाबनी गादीओ बिछावी, कील अने को-
किलाओ रुपी नवा कारकुनोने केटलोएक कार्यभार सोंप्यो, पतझाररुपी जुना दफतरोने रद कर्या
अने जनसमाजमां प्रेमनो रुक्को बतावी धीरे धीरे चतुराइथी चोमेर पोतानी सबळ सत्ता स्थापी,
पलाशना विस्तृत तंबूओ ताणीने पडेला वसंतरुपी वडा कारभारीए पट्पद्ना शब्द मिषे आखी
दुनियामां महाराजा कामदेवनी दुहाइ फेरवी दोधी, पुष्पनी महोर छापवाळो केकी, कीर
अने कोकिलाना कल्लोलरुपी हजुरकोर्टनो हुकम विरहीजनोने व्याकुळतारुपी दंड देवा मांडयो,
अने शीतल समीररुपी सरवेयरद्वाराए सृष्टिना सर्व विभागोनी मापणी करी. ज्यारे मनोजरुपी
महाराजाए विटप अने लतारुपी चाप उपर परागरुपी विषथी छवाएलां सुमनरुपी शर चडाव्यां
त्यारे विरहिणी वनिताओ अत्यंत व्याकुळ बनी पल्लवरुपी पावकशिखाने पकडी प्राणनो परित्याग
करवा लागी, नाथना आगमननो संदेशो श्रवण करवा बहार निकळेली केटलीएक कामिनीओ र
क्तथी खरडाएला नाहरना नख सरखी कान्तिवाळा किंशुकना कुसुमोने पृथ्वीपर पडतां जोइ डरवा
लागी.वसंतना आगमनथी अवनि,अंबर,अनिळ अने अनलनी आभामां कांइ जुदीज खुबी जणावा लागी,
दशे दिशाओ शान्त थइ गइ, जगजन्तुओनी मति कोइ जुदाज प्रवाहमां वही; भोगी जनोना हृदयमां आनंद
भरनारी अने वियोगीओने व्यथित करनारी वसंतनी लहरोओए विटप तथा वल्लरीओना वृन्दमां
नाना प्रकारना रंगने प्रगट कर्या, सुमननो समाज विकाश पाम्यो, आकाश निर्मळ थयुं,
मारुत मन्द गतिथी गमन करवा लाग्यो, तमालना जाल लताओथी लपटाया, मधुर मोर आववाथी
रसालनां वृक्षोए रमणीयता धारण करी, सांज सवार चारेकोर चकोर आदि पक्षीओना मनोहर
शोर संभळावा लाग्या. कुंजनी मंजरी पर बेठेला मधुकरो मकरन्दनुं पान करी मदोन्मत्तनी माफक
मुदना महोदधिमां नेहथी न्हावा लाग्या. मनमोहनना मिलन वखते जेम रमणीओ रोमाचित थाय
तेम तमालना तरुरुपी तरुण नायकनो समागम थतां ललित लतारुपी ललनाओनां ललित अ-
वयवो कंटकित थया. वसंतरुपी योद्धाओ वियोगी जनोनां हृदयने वींधवा माटे भ्रमरनी पङ्क्तिरुपी
धनुषने हाथमां धारण करी आम्रना नविन अंकुरोरुपी तीक्ष्ण तीरनो मार शरु कर्यो; ज्याप-
विरहिणी सुंदरीओने नविन राग वैराग्य समान, सुमननो समुदाय दहन समान अने गृह स्मशान

समान भासवा लाग्यां. पुष्परुपी समृद्धि पामी विराजतां वृक्षो, सजळ कमळ, सकाम स्त्रीओ, सुगन्धी पवन अने रमणीय तथा सुखमय प्रदेशो सर्व स्थळे वसंतना गौरवने प्रगट करवा लाग्यां. कमळनी कलिकाओरुपी कमनीय कमंडलुने करमा धारण करनारो, किंशुकनां कुसुमोरुपी परिधानने पहेनारो, शिलिमुखनी श्रेणीरुप जपमाळने आठे प्रहर फेरवतो, आम्रना मोररुपी जटाथी भव्य जणातो अने कीर, कोकिल तथा कपोत आदि शिष्योए स्तवन करातो ऋतुराज वसंत संतनी माफक शोभवा लाग्यो. रसालनी मंजरीओरुपी मुकुटथी मनोहर जणातो, कोकिलाना नादरुपी वंसुरीने वजावतो, सुमनना समूहरुपी वनमाळाथी विराजतो, अलिनी आवलिरुपी घुघराळा केशवाळो, रतिपतिरुप दूतने निरंतर साथे राखनारो अने परागना पुंजरुपी पीतपटथी प्रकाशित अंगवाळो, ऋतुराज वसंत पृथ्वीपर पूज्य थवा माटे राधारमणनुं रुप धरी आव्यो. वसंतरुपी माळी वापिकाना जळोने, मणिमेखलाओने, सुंदरीना समूहने, मृगांकना माधुर्यने अने पुष्पना भारथी नम्रपणाने धारण करता आम्रतरुओने अधिक शोभा आपवा लाग्यो. कसुंबी रंगथी रंगेलां वस्त्रो नारीओना नितंबने दीपाववा लाग्यां अने कंचूकीओ विलासिनी स्त्रीओना स्तनोने शोभाववा लागी. युवतीना कर्णोने रंगबेरंगी कळीओ, शिवनी जटा समान विराजती वेणीने विविध कुसुमो अने शरीरने प्रफुल्लित माळतीनां पुष्पोए अधिक सौन्दर्य अर्प्युं. वृक्ष अने वल्लरीनां नव पल्लवरुपी पताकावाळा, कोकिलाना नादरुपी डंकावाळा, चोमेर दोडा दोड करता मोर अने षटपदरुपी छडीदारथी सुशोभित ऋतुराज वसंतरुपी महाराजा सुमनना सैन्यनी आगेवानी कामदेवने सुपीत करी शीत, मन्द, अने सुगन्धी समीरनां वाण चलावी अनाथ अवळाओनां प्राण लेवा सज्ज थयो. पुष्पना रसमां रोळाएलो, गंगा स्नान करी परम पवित्र थएलो, दंपतिने सुख देनारो अने स्मरनी संपत्तिने वधारनारो दक्षिण दिशा तरफथी आवतो वसंतनो वायु नवोढा नारीनी माफक मन्द गतिथी मरालनुं मान उतारवा लाग्यो. महाराज ऋतुराजे पोतानां आगमन पहेलांज पत्ररुपी परवानाओ मोकली आप्या हता, तरुवरनी छायारुपी तंबुओ तणावी राख्या हता, मोर अने चकोर आदि छडीदारोना शोरथी दिशाओने शब्दायमान करी हती, मधुकरना नादरुपी नगारांओथी गगनमंडळने गजावी मुक्युं हतुं. पवनरुपी फरासने पुष्पनी सेज विछावी राखवानी आज्ञा आपेली हती तेमज पक्षीओरुपी आरवलोकोनी वेरख पण तरुरुपी तंबुओना संरक्षण अर्थे स्थापेली हती. शिशिर अने हिमंतनी रात्रि करतां ज्यारे वसंतनी रात्रि घटी त्यारे प्रभंजने पण पोताना रुपनुं परिवर्तन कर्युं. जाही, जुही तथा कुन्दकुन्दनी कलिकाओने विकाश पामती जोइ मुनिवरोनां मन पण सकाम थयां. पतिनी साथे वसनारी

प्रमदाओ पळे पळे उत्सुकताने प्रगट करवा लागी; अनंगनी वृद्धिथी तरुणीओना अंगपर रहेलां वस्त्रो घडिघडिमां तंग थवा लाग्यां, कनकनी कटिमेखलाथी विराजमान नितंबवाळी तथा मुक्ताहारथी मनोहर जणाता उन्नत उरोजवाळी अंगनाओ अनंगना आधिक्यथी उत्पन्न थती आळसने लीधे अंगोने मरडी पुरुषोनां मनने पोता तरफ खेंचवा लागी. वसंतरुपी झवेरी बाग अने वनरूपी डब्बामां परिमलरुपी पाणिथी प्रकाशमान सरसवनां प्रसूनरुपी पुखराज, मोतीयारुपी मुक्ताफळ, सेवतीरुपी सरस हीरा, बदरीफळरुपी पन्ना तथा कुसुभरुपी माणिक विगेरे झवेरात भरी जाणे भूमिना राजा महाराजाओने भेट आपवा आव्यो होय एवी प्रतीति थवा लागी. कोइ कोइ वखते तोतळाता बाळकनी पेठे शीतोष्ण वायु वावा लाग्यो, कोइ कोइ वखते तरुणपणाने पामी सौरभथी छलकावा लाग्यो, कोइ कोइ वखते भूमंडलमा अमाप तापने भरवा लाग्यो. आरीते बहुरुपीनी माफक पोतानी छबीने क्षणे क्षणे बदलावतो वसंत अत्यंत आनंद उपजाववा लाग्यो. भावथी भरेली भामिनीओ पोतपोताना रसिक प्रियतमनां नयनोथी नयनो मिलाववा लागी, हिंडोल राग गावा लागी, मृदंग वजाववा लागी अने अन्योन्य ताल सुरमा हसाहस थवा लागी. केटलीएक गोरीओ गुलाबनी मुठी भरी मनमोहनने मारवा लागी अने सखीओना समुदायने रंगनी पिच-कारीओ भरी पलाळवा लागी, अनंगना तरंगमां तणाता तरुण नायको अंगनानां उरोजरुपी तुंब-डानो आश्रय ग्रही अवर्णनीय आनंदरुपी समुद्रमां तरवा लाग्या, आवा उत्तम अवसरमां कर्महीन कामिनीओना प्राणपति परदेश प्रयाण करवा लाग्या. विरहिणी वनिताओनो विनाश करवा कटिबद्ध थएल वसंतरुपी बादशाहना प्रबळ दळमां सहकाररुपी शूरवीरो, मयूरनी वाणीरुपी रणवाद्य, कामरुपी सेनापति, कोकिलारुपी बिरद बोलनारा वन्दीजन, किंशुकनां फूलरुपी शूल उपजावनारां त्रिशूल अने त्रिविध समीररुपी तीक्ष्ण तीरोनो माप करवो ए बहु कठिनता भरेलुं कार्य थइ पडयुं. पतझार दशाने प्राप्त थएला झाडोमां, किसलयथी देदीप्यमान जणाती डाळोमां, विविध पुष्पोथी प्रकाशी रहेला पहाडोमां, त्रिविध समीरमां, यमुनाना तीरमां, उडता अबीरमां, षट्पदना पुंजमां, निर्मळ निकुंजमां, आम्रना मोरमां, चकोरना शोरमां, गायकजनोना गानमां, योगीओना ध्यानमां, रमणीओना रागमा, बाग तथा तडागमां, सरिताना प्रवाहमां, रमणीय राहमां, सुशोभित शहेरमां अने लताओनी लहेरोमां वसंत ऋतुए विनोदथी वास कर्यो. विजय आपनारा वसंतना समयमां उडुगणरुपी योद्धाओ, कोकिलना नादरुपी नगारां, चकोरनी पंक्तिरुपी पैदळ, शिलिमुखनी श्रेणी-रुप समशेरो, स्मररुपी सेनापति अने पवनरुपी प्रधानने साथे लइ निशाकररुपी नरेन्द्र मानिनी

स्त्रीओना गुमानरुपी गढने तोडवा माटे तैयार थयो. वसंतमां खीलेलां सरसवनां क्षेत्रो सुवर्णनी बिछात समान शोभवा लाग्यां, रसिकजनो सुवर्णना पलंगपर वसंती वस्त्रो पहेरी बेठेली प्रिय-तमाने माधवी मद्यथी पुखराजनो प्यालो पूरी पावा लाग्या अने हृदयवल्लभाना हृदयपर विहार करती सोनजुहीनी माळाना सुगन्धथी मगजने तर बनावी वसंतराग गावा लाग्या. प्रमदाओ नित्य नवां नवां वस्त्रो पहेरी रसने विस्तारवा लागी, बकुलनी सुवास बरछी समान तीक्ष्ण बनी विदारवा लागी, तुंबडाना वृन्दरुपी "बीन" नामनां वाद्यने वगाडतो, कोकिलाना टौंकारुपी सप्त स्वर ने साधतो, षट्पदना शब्दरुपी सारंगी अने मोरना शोररुपी मृदंग साथे गुलाबनी चटकरुपी तालना अवाजने प्रगट करतो वसंत कलावंतनी पेठे रसिक दंपतिने रिझाववा लाग्यो. जाणे काम-देवरुपी पाराधी विरहीनां प्राणरुपी पंखीनो शिकार करवा माटे एक बाण धनुषपर चढावतो होय, अन्यने एक बाजु मुकतो होय अने त्रीजुं बाण बराबर ताकीने निशानपर फेंकतो होय तेम बाग अने वननी अंदर कयांइ खीलेलां, कयांइ नहि खीलेलां अने कयांइ अध खीलेलां कुसुमो कोइ जुदीज रीते जनसमुदायमां आश्चर्य उपजावतां हतां. समग्र सृष्टिमां अनंगना अध्यक्ष-पणा नीचे फागनी शरुआत थइ चुकी हती, ठाम ठाम नर्म वाक्य अने मारामारी मची रही हती, परस्पर ताळीओ आपता प्रेमी जनो परिहासमां पोतानुं पाडित्य वापरता हता अने वळथी एकबीजाने रंगमां बोळी पोते पण रसबोळ थता हता. राज रायसिंहना दरबारमां पण विविध प्रकारना रंगराग उडी रह्या हता, अमीर उमरावोना राग भरेलां नयनाने गुलाल छांटी विशेष रक्त करवानी कोशीश चाली. करमां रहेली कनकनी पिचकारीमा कसुंबी रंग भरी स्नेही-ओना समुदायने भींजावती वखते राज रायसिंहजीने रणांगणमां युद्धवीरोना अंगथी निकळता रुधिरनुं स्मरण थइ आव्युं. उमरावोना भाल साथे अथडाइ फडोफड फूटता कुमकुमाओ युद्ध वखते यन्त्रनालिकाथी छूटती गोळीना प्रहारने लीधे वींधाएल भालमांथी निकळता मांसना लोचाओनी भ्रान्ति भरवा लाग्या. केसरीआ रंगना कुंडो आठे प्रहर भर्याज राखवामां आवता, तेमा जे कांइ दरबारगढ पासेथी निकळे तेने पराणे न्हवरावी थोडो घणो परिहास कर्या पछी विदायगिरि आपवामा आवती. कोइ कोइ वखते राज रायसिंहजी भायातोने भेळा करी कसुंबी रंगनी डोल भरी युद्धकळामां विशेष कुशळ थवा माटे शहेरनी समीपे रहेला बागरुपी रणमेदानमां फाग खेलता, त्यारे अथाग वळथी लाग जोइ परस्पर थता डोलचीना प्रहार तलवारनी तीक्ष्ण धार समान तननी त्वचाने चोरी जाणे आन्तरिक रंगनुं आकर्षण करता होय तेम असह्य छतां क्षात्र

मंडलना मनरुपी महासागरने शौर्यनी छोळ्योथी छलकाववा लाग्या. आखा हळवद शेहरमां रंग-
नी रेलमछेल अने केसरनो कीच मचवाने लीधे वसंत छतां वर्षाना वहेमथी आनंद पामी मयूरना
वृन्द उन्नतवृक्षनी डाळीए चढी "मे आव मे आव" एवा उच्चार करवा लाग्या अने चाहथी
कळा चढावी चित्तने हरती ढेलोना समुदाय साथे फरवा लाग्या. राज रायसिंहजीना समस्त सैन्य
समेत सरदारोए, भायातवर्गे, पुरवासीओए अने दासदासीओए अनुराग पूर्वक फाग खेलतां
केसरीआ रंगथी रंगाएल वस्त्रोने हजु बदलाव्यां न हतां, तेवामां कच्छ आडेसरथी आवेला कोइ
एक कासदे खबर आप्या के "राओ खेंगारजीना भाइ ठाकोर साहेबसिंहजी हळवदने हाथ करवा
माटे चालाक योद्धाओ सहित आडेसरथी चाली चुक्या छे अने तैयारीमां रहेवा कहेवराव्युं छे."
आ सांभळी राज रायसिंहजीए डोलचीने दूर फेंकी दइ तुरतज तलवार उठावी अने सैनकोने
सज्ज थवा आज्ञा आपी. भायातोने भेळा करतां थोडो घणो वखत लागे, परंतु आ अवसरमां ते
तमाम होळी खेलवा माटे हळवदमां आवेल हता, जेमांना केटलाएक राजरायसिंहजीनी आग-
ळज उभा हता. एवां ए वस्त्रोथी अलंकृत अंगवाळा झालाओ ढाल तरवार भालां तथा बरछी
विगेरे विविध शस्त्रोने धारण करी उत्साहथी आगळ थया. जाडेजाओ हळवदनी हद जोवा माटे
अत्यंत आतुरताथी घोडाओने दोडावता हता, परंतु राज रायसिंहजीए पुष्कळ सैन्य साथे सत्वर
प्रयाण कर्युं अने ठाकोर साहेबसिंहजी सामे टक्कर लेवा टीकर नामना गाम नजीक वायुवेगे
पहोंची पोतानो पडाव नांख्यो. खुल्लीकृपाणे केसरीआं करी युद्ध करवा आतुर थइ रहेल सैन्यनो
देखाव ज्वाळायुक्त दावानळ जेवो जणातो हतो अने एज भ्रान्तिथी राज रायसिंहजीना सैनि-
कोने दूरथी जोइ जाडेजाओनुं सैन्य स्तब्ध थइ गयुं; तो पण अश्वनो वेग रोकतां रोकतां आगळ
धसी अवायुं. आ वखते जेम अबोधपर ज्ञान, मनना निरोधपर गान, वनवृक्षना वृन्दपर दावानळ,
दावानलपर जल, जलपर वडवानल, पहाडपर वज्र, मातंगना झुंडपर मृगराज, शीतपर सूर्यनो
ताप, अरविन्दपर चन्द्र अने चन्द्रपर राहु पोतानुं पावल्य बतावबा प्रयत्न करे तेम जाडेजाओना
समूहपर झालाओ एकदम तुटी पड्या. आ वखते वीररसे पोतानी पूर्णता प्रदर्शित करी, वीरहा-
कनी साथे तीक्ष्ण तलवारो कठिन कवचोने तोडवा लागी, कोइना हाथ, कोइना पग, कोइना
मस्तक, कोइनां उरःस्थल अने कोइना पृष्ठ भागमाथी निकळतुं रुधिर समरभूमिने शोभाववा
लाग्युं. शूरवीरोना तन तलवारमां, मन परमेश्वरमां, प्रतिज्ञा स्वामीनुं कार्य सिद्ध करवामां अने
मस्तको शंकरनी माळामा परोवायां, "मारो मारो" ना महान् शोरथी आकाश छवाइ गयुं, वीरपु-

रुषो एक श्वासे अनेक सुभटोनो शिरच्छेद करवा लाग्या, अप्सराओ आक्रोश मार्गमां तमासो जोवा माटे आवी पहोंची, अरसपरस तालीओ आपतां कालना करालकिंकरो साथे क्षुधाना आधिक्यथी किलकिलाट करती कालिकाए रणांगणमां प्रवेश कर्यो, दांतने पीसता खवीसो पण त्यां दोडता आव्या, गीध, काक अने शृगाल आदि पण उमंगथी जंगमां दाखल थया, असह्य कापाकापीने लीधे लोथपर लोथ पडवा लागी. ज्यारे राजरायसिंहजीए भ्रकुटी चढावी भुजदंडने फरकाव्या त्यारे हर्षावेषमां आवेला महादेवे युद्धभूमिमां सत्वर आवी पहोंचवा माटे मुखमांथी भांग काढी नांखी, भुजाथी भुजंगने फेंकी दीधा अने अर्धांगथी गौरीने अलग कर्यां; झालाओना मारुत अने मार्तंड जेवा प्रचंड पराक्रमथी केटलाएक प्रतिपक्षीओ तूलनी माफक उडवा लाग्या, केटलाएक तरुवरनी माफक नमवा लाग्या, केटलाएक तणखलांनी माफक तूटवा लाग्या, केटलाएक वादळनी माफक वींखावा लाग्या, केटलाएक अंधकारनी माफक नाश पामवा लाग्या, केटलाएक उडुगणनी माफक अदृश्य थवा लाग्या, केटलाएक चन्द्रनी माफक निस्तेज थवा लाग्या अने केटलाएक जळनी माफक शोषावा लाग्या. योगिनीओ रुधिरने घुंटडे मांसना कोळीआओ गळवा लागी, उभय सेनाओ एक सरखा उत्साहथी लडवा लागी. विजयनी बूटी समान विराजनारी वीरपुरुषोनी समशेरोए म्यानमांथी छुटी केटलाएक योद्धाओने कूटी नांख्या, खोपरी तूटी जवाने लीधे पृथ्वीपर पडता शूरवीरोने अप्सराओए वरवानी चाहनाथी चुंटी राख्या, मुंड वगरना रुंडना झुंडोना कुंडो बनावी केटलीएक पिशाचिनीओ अंगूरना आसव समान रुधिरनुं पान करी कवावनी माफक मृतक सुभटोना कर्णोने तोडी तोडी खावा लागी. जत्थाबंध कवन्धो मळवाथी कालिका अपार आनद पामी, मुंडनी माळाओ मळवाथी शंकर पण संतुष्ट थया. तेवामा कोइ एक योगिनी खोपरीमां श्रोणित भरी पान करवा लागी ए वखते जाणे मुगलनी मानिनी दंत पंक्तिने रंगवा माटे चीनाइ प्यालामां मजीठनो रंग भरी पीती होय एवी प्रतीति थती हती, जाडेजाओनां सागर सरखां सैन्य उपर झालाओनी समशेरो वाडवानल समान झपटथी लपटवा लागी, खळ पुरुषोनी छाती थडकवा लागी, नंदी, गण, भैरव अने भूत मदोन्मत्त बनी ज्यां त्यां फरवा लाग्या, योगिनीओना युथ्थ पण विनोदथी विचरवा लाग्यां, प्रेत लोको नाचवा लाग्या, पिशाचो पुकारवा लाग्या. राजरायसिंहजीनी तलवार प्रलयना सूर्य समान तेजोमय किरणोने प्रसारी अरिरुपी अन्धकारनो अंत करवा लागी, प्रतिपक्षीओना कटकने कापी महाकाळने मांसना कोळीआओ आपवा लागी अने उपरा उपर मुंडनी माळाओ अर्पण करी रुद्रने रिझाववा

लागी. रणरुपी वनभूमिमा राजरायसिंहजीनी करलतिका पर चढेली ए कृपाणरुपी काळी नागण जे दुश्मनने डसनी तेना प्राण तुरतमांज निकळी जता, एतुं विषम विष उतारवाने कोइ यन्त्र, मंत्र के तंत्र सार्थक निवडे एम नहोतुं; ए समशेरे असंख्य सुभटोना रुधिरनुं पान कर्युं छतां तेनी प्यास न टळी, एतुं उदर एटलुं बधुं विशाळ हतुं के केटलाएक प्रतिपक्षीओनां कलेजां तथा मस्तकोना अगणित ग्रास मळ्या छतां पेट भरायुं नहि, मदोन्मत्त गजराजना आहार विना कोइ रीते एनी क्षुधानुं शमन थइ शके तेम नहतुं, कारण के एने काळरुपी कारीगरे वज्रना हथोडाथी घडेली हती, शेषनागनी फुंकरुपी धमणथी धमेल काळकूटरुपी कोयलामां वाडवानलनुं तेज प्रगट करी तेमा तावी तैयार करेली ते तलवार शिवना त्रिशूल पासेथी अने विष्णुना चक्र पासेथी वैरीना विध्वंसनो पाठ विधिपूर्वक भणी होय एवो भास थतो हतो. दाहथी द्विगुणी, त्रिशूलथी त्रिगुणी, चक्रथी चोगणी, पविथी पांचगुणी, पावकथी पचीशगुणी, प्रळयनी प्रणालीथी पचाशगुणी, शेषथी शतगुणी, शापथी सहस्त्रगुणी, लूकथी लाखगुणी अने कालिकाथी क्रोडगुणी तीव्र तलवार कालथी पण कराल शंकरना तृतीय नेत्रनी ज्वाळा होय नहि शुं ? वज्रनी बाळा होय नहि शुं ? विष्णुना चक्रनी चेली होय नहि शुं ? शिवना त्रिशूलनी साहेली होय नहि शुं ? तेम दरेक योद्धाओना उरमा आश्चर्य उपजावती महाकाळनी महाराणी बळभद्रना मूसळनी मासी, प्रचंड यमदंडनी जनेता अने विषनी व्हेन समान बनी भीमसेननी गदाना गौरवनुं खंडन करती होय तेम दुश्मनोने दड देवा लागी; परशुरामना कुठार करता पण विशेष कठिनताने धारण करनारी ए कृपाण अर्जुनना बाण समान अमोघ शक्तिथी प्रतिपक्षीओना प्राण हरवा लागी. वीरपुरुषोना पराक्रमरुपी पवनथी हस्तिओनो समुदाय शरदनी घनघटा समान छिन्न भिन्न थइ गयो. श्रोणितनी नदीओ चाली, रणभूमिनी अंदर रजनुं निशान पण न रह्युं. निष्काम युद्ध करी काम आवेला शूरवीरो शंकर स्वरुपे स्वर्ग भणी गमन करवा लाग्या. ए वखते रखेने भूलथी तेओना भेळो पोतानो पोटीओ चाल्यो जाय एवा भयथी भूतपतिए नन्दीनुं पुन्छ पकडी राख्युं. वीरनरोने वरवा आकाशमाथी उतरती अनंत अप्सराओने जोइ गणपतिए पार्वतीने पकडी राख्या, कारण के तमाम अप्सराओनो वर्ण गौरी समान गौर हतो, जेथी "खरी गौरी" कया ए पछीथी ओळखी शकाय एम न हतुं; रुधिरनी नदीमा केटलाएक करिवरोना मस्तको तणाता हता, तेमा कदाच पोतानो पुत्र तणाय तो पछी ओळखवो शी रीते ? एवा भयथी पार्वतीए पण गणपतिने बराबर पकडी राख्या. ठाकोर साहेबसिंहजी त्रण हजार सुभटो साथे प्राणरहित थया, हळवद तरफना बे हजार

योद्धाओ काम आव्या अने राज रायसिंहजी पण घणा घाव लागवाथी मूर्छित अवस्थाने प्राप्त थइ रणभूमिमां पड्या. जो युद्ध वधारे वखत जारी रह्युं होत तो एके माणसने बचवानी आशा नहोती, धरणी धूज्या विना रहेत नहि, पेडानी माफक पहाडो तुटी पडत, जळेबीनी माफक शेषनी कुंडलीना खंडेखंड थइ जात अने कमठनी पीठना पतासांनी पेठे चूरेचूरा थात, एमां कांइ संशय जेवुं नहोतुं. बन्ने पक्षना थोडा घणा माणसो बच्या हता, परंतु ते बधा पडेला प्रहारनी व्यथाथी व्याकुळ होवाने लीधे पोतपोताना मालिकने उपरा उपर पडेली लोथोमांथी शोधी कहाडवा समर्थ न थया. मात्र मरण दशाने अनुभवता, पडता, आखडता आजुवाजुना गामडाओमां विश्रान्ति लेता मांडमांड स्थान भेळा थया. "राज रायसिंहजी काम आव्या" एवा शोकजनक समाचार मळतां हळवदमां हाहाकार फेलाइ रह्यो, तमाम राणीओए चुडाकर्म कर्युं, रणवासमां थतुं आर्तरुदन सांभळी वज्रसमान दृढ छातीवाळा मनुष्यो पण विह्वळ बनी गया अने सर्व कोइनां नयनोमांथी चोधार अश्रुनो प्रवाह चाल्यो. आ बनाव थोडा दिवस पछी बनवा पाम्यो हतो. परंतु रणभूमिमां तो युद्धनी पूर्णाहुति थया बाद तुरतज जत्थाबंध शृगाल आदि पशुओए प्रवेश करी शूरवीरोनां शबने आमतेम घसडवा मांड्यां; राज रायसिंहजीनां कलेवरनो प्राणवायुए परित्याग कर्यो न हतो, तेओए अत्यंत व्यथाने आधीन बनी रणांगणरुपी राजमहेलनी अंदर पृथ्वीरुपी पर्यंकपर आळोटतां प्राप्त थयेली रात्रिने महा मुशीबतथी व्यतीत करी. बीजे दिवसे प्रभातमांज जे मकनभारथीनी जमात द्वारिका तरफ गएली हती ते "नारायणसर कोटेसर" नी यात्रा करी फरी दिल्ही जवा माटे त्यां थइने निकळी, सूर्यनारायणे पोताना तेजोमय किरणोथी सृष्टिने प्रकाशित करी, गीध आदि पक्षिओ युद्धभूमिमां आवी पहोंच्यां अने तिक्ष्णचंचुओथी मृतक योद्धओनां उरःस्थल चीरी आंतरडांओ लइ आकाशमां उडवा लाग्यां, तेनी शोभा करतां लटकता सर्पने लइ गगनमां यथेच्छ गमन करता गरुड जेवी जणावाथी जमातनी अंदर उन्नत हस्तिओपर आरूढ थएला मनुष्योनी दृष्टि ते तरफ खेंचाणी. ए वखते राजरायसिंहजीए पगमां पहेरेलो सुवर्णनो तोडो सूर्यना प्रकाशने लीधे विद्युत् समान झबकवा लाग्यो, एथी ए कोइ राजवंशी पुरुष छे एम निश्चय थवाथी ते लोकोए म्यानामां बेठेला मकनभारथी आगळ जइ जोएली विना जाहेर करी. मकनभारथीए आज्ञा आपी के जो ए पुरुष जीवतो होय तो जल्दी अहीं उपाडी लावो. गुरुनो हुकम थतां जमातमांथी आठ दश आदमी त्यां दोड्या गया. राज रायसिंहजी बहुज गंभीर हालतमां श्वासोच्छ्वास भरता हता, जेथी तेओने निःशंक बनेला

जमातना जनो जाळवीने मकनभारथी पासे लइ आव्या. मकनभारथी जाते महान् वैद्य हता अने जरथावंध औषधो साथे राखता, तेओए राज रायसिंहजीना दरेक घाव उपर औषध लगावी पाटा बंधाव्या अने अन्य उपचारो पण शरु कर्या, एक सुशोभित सुखपालमां मखमलनी गादी बिछावी घायल राजाने घणा मानपूर्वक बेसाडवामां आव्या. मकनभारथी क्षणे क्षणे तेओनी संभाळ लेता हता. अमुक अमुक गामने अंतरे मुकाम करती जमात थोडा वखतमां दिल्ही जइ पहोंची, ए मास बे मासनी मुसाफरी दरम्यान राज रायसिंहजीना दरेक घाव मळी गया अने तमाम रीते तेओ तंदुरस्त थया. मकनभारथीना मठमां मळता तमाम सुखवैभवथी हळवदना राज्यसुखनी तेओने स्वप्ने पण स्पृहा न थती; घणा दिवसना सहवासने लीधे ए हळवदना धणी राज रायसिंहजी छे एवुं मकन-भारथीना जाणवामां आव्युं हतुं जेथी तेओनो मान मरतबो पूरती रीते जळवाय एवो बंदोबस्त करवामां आव्यो हतो. भगवां वस्त्रोने धारण करनार भूपतिनी भव्य मूर्ति मठना दरेक मनुष्यो करतां प्रकाशमां प्रथम पदवीने भोगववा लागी. तेओना हृदयमां हळवद जवानी इच्छा छे के नहि ए जाणवा माटे मकनभारथी वखतोवखत प्रश्न करता, परंतु तेना प्रत्युत्तरमां “ ना ” शिवाय कशुं मळतुं नहि. मठनी अंदर केटलाएक विद्वान साधुओ पण वसता हता, तेओना मुखथी धर्मो-पदेश श्रवण करतां राज रायसिंहजीए केटलोएक काळ विताव्यो; तेवामां ग्रीष्मऋतुए आखी दुनिया उपर गजब गुजारवा मांड्यो, सूर्यना तीव्र तापथी तमाम प्राणीओ तपायमान थयां. अत्यंत गरमीने लीधे वन तथा उपवन सळगी उठ्यां, ज्वाळा समान प्रजाळनारी लुए पण पशु पक्षीओना लोही पीवामां मणा न राखी. तळाव तथा नदीनाळांनां नीर आंधणनी माफक उछळवा लाग्यां. जाणे समुदायमांथी निकळेला वाडवानले जठराग्निनी साथे मळी तापनो भडको कर्यो होय तेम दरेक प्राणीनां अंगोमां दाह उपजवा लाग्यो, महादेवे उघाडेल तृतीय लोचननी माफक सूर्यनो ताप अ-सह्य थइ पडयो, विरहीजनोनी हाय समान अने विरहाग्निनी लाय समान अपराह्ननी उष्णता दशे दिशाने दग्ध करवा इच्छती होय तेम पवनमां प्रवेश करी पथिकोने हद उपरांत पीडवा लागी. तापनी वेदनाने लीधे समग्र रोम स्वेदने मिषे अश्रुपान करतां होय एवो भास थवा लाग्यो, तृषानुं जोर पण दिवसे दिवसे वधवा लाग्युं, जळथी आर्द्र करेला खसना व्यंजनो मुलाववाथी पण स्वेद सुकाय तेम नहोतुं, दावानळ समान दगवनारी गरमीने लीधे प्राणी मात्रनां गात्र बळवा लाग्यां. स्थावर तथा जंगमने सतावनारो ग्रीष्मनो सूर्य उ-दय पामतांज जीवननुं शोषण करवा लाग्यो; तळाव, वाव अने कुवाओ जळ विना भयंकर जणा-

वा लाग्यां. धूळिथी आकाशने आच्छादित करतो, तमालना वृन्दने तोडतो, अन्य तरुवरोनी छाया ने क्षीण करतो अने उष्णतारुपी सुंढथी सर तथा सरितानां नीरनुं शोषण करतो ग्रीष्मऋतु मदोन्मत्त हाथीनी माफक घरोघर घूमवा लाग्यो. निर्धूम अग्नि समान लूनो स्पर्श थताज शरीरमांथी स्वेदनां बुंदो झरवा लाग्यां, जाणे अगस्त्यनी शक्तिए प्राणी मात्रना घटवरमां निवास कर्यो होय तेम कुंड, कूप, नदी, नद अने समुद्र आखानुं पान करवाथी पण तृषानुं शमन थइ शके तेम न हतुं, केटलाएक लोको कोरा कुंभनी अंदर आगळ पाछळ भरी राखेल जळनुं पान करवा लाग्या, तो पण पापिणी प्यासनुं माचलन तिल मात्र शिथिल न थयुं. मेष तथा वृष राशिनो सूर्य जेम जेम तीव्र तापथी त्रास आपवा लाग्यो तेम तेम शीतलता पलायन करवा लागी. प्रथम तहखानामां पेठी परंतु उष्णता एनी पाछळ पडी जेथी तहखानानो त्याग करी सरोवरमां संताणी, त्यांथी कमळमां, कमळने छोडी चंदनमां, चंदनने तजी कपूरमां, कपूरनो त्याग करी चंद्रमां, चन्द्रने तजी चांदनीमां, चांदनीने छोडी शरबतमां अने शरबतने तजी ओरामां छुपाइ बेठी, त्यां पण गरमीए आवी दुःख देवा मांडयुं त्यारे शत्रुने हाथे मरवा करतां आपघातने उत्तम गणी विचारी शितलताए हिमालये जइ हाड गाळ्यां बादशाहना दरबारमां तैयार करावेल खसना बंगलाओ उपर गुलाबजळ छंटावा लाग्यां, चन्दनना चहलमां कपूरनो चूरो भेळवी अनेक प्रकारना अतरथी राज्य भुवनोने सुगन्धित करवामां आव्या, बरफनी खरीदी वधी, आमळां आदिना मुरब्बानो व्यापार पण वृद्धि पाम्यो. कमळना बिछाना पर बेठेला राजा महाराजाओ ने कमळ सरखां मुखवाळी अने कमळ सरखां नयनोवाळी कामिनीओ कमळ सरखा करथी कमळानाज व्यंजन वडे वायु ढोळवा लागी. आवा उत्तम विलासवाळाओने ज्येष्ठ मास जरा पण त्रास आपी शकतो नहि. केटलाएक अमीर उमरावोए बरफ शिलानी बिछायत बनावी सन्दलनी सेज उपर कंजदल पथराव्यां अने खसनी टट्टीओ पर गुलाबजळ छंटावी आसपास गुलाबजळना फुहाराओ गोठवाव्या; सुंदर सुरामां शरबत नांखी तेमां ओराना रसने एकमेक करी तृषाने दाटवा मांडी. केटलाएक रसिक जनो चन्द्रवदनी चतुराना हृदयथी हृदय लगावी ग्रीष्मनी ज्वाळाथी उपजेल कष्टने नष्ट करवा लाग्या. केटलाएक सुभागी जनो कस्तूरना चूर्णने घनसारमा घोळी तहखानाने लींपाववा लाग्या अने तेमां पुष्पनो न्हानो सरखो प्रासाद बंधावी अतर, अगजा तथा केसर आदि सुगन्धी पदार्थोनी साथे शीतळ वस्तुओनुं सेवन करी ग्रीष्मना तापनी साथे कामाग्निने पण शान्त करवा लाग्या; वाटी छायामां सुलभ निद्रावाळा, गुलाबना संसर्गथी सुगन्धीदार वनवायुवाळा अने जेमां पाणीमां पड्या रहेवानी चाहना थाय एवा

ग्रीष्मना दिवसो परिणामे (सायंकाळे) रम्य जणावा लाग्या. चन्द्रना शीत किरणोथी अन्धकार रहित बनेली रात्रीओ, जलयंत्रो अने शीतल तथा सुंदर चंदन तथा केसर आदिनां अनुलेपन तनना तापने अलग करवा लाग्यां. विलासी जनो रात्रीने वखते गायनतुं उपासन करनारी नवोढाना गाढ उरोजनो स्पर्श करी अधरोष्ठने चूमता प्रासादना पृष्ठनु (अगाशीनु) सेवन करवा लाग्या. सूक्ष्म वस्त्रोथी आच्छादित अंगवाळी अंगनाओ सुगन्धथी म्हेकता केशपाशथी, विविध परिहासथी अने अनेक प्रकारना विलासथी तरुण पतिना ताप हरवा लागी. रात्रीए स्वच्छ अगाशी पर सुखथी सूतेलां प्यारी तथा प्रियतमनां सशंक मुख जोइ शशिमंडल प्रभात वखते फीकुं पडवा लाग्युं. अपराह्नना प्रचंड तापथी परितप्त थएलां अने प्यासथी पीडातां हरिणो झांझवाना जळने सत्य जळ समजी दोडवा लाग्या. सर्प मयूरनी समीपे जाय नहि अने कदाच जाय तो तेने मयूर मार्या विना रहे नहि छतां सूर्यना किरणोथी तपायमान थएली धूलिमां अर्ध दग्धनी स्थितिने अनुभवता सर्पो अत्यंत विह्वळ बनी फणने नीची नमावी केकीना पगतळे विश्रान्ति लेवा लाग्या, केकी पण प्रज्वलित पावक समान पतंगनी प्रभाथी संतप्त बनी पोताना मुख पर उभय पक्षने प्रसारी पगतळे पडेला सर्पने संहारवानुं सामर्थ्य गुमावी देता. जळ नहि मळवाथी शुष्क थएल कंठवाळा करिवरो शरीरनुं भान भूली सिंहनी समीपे चालवा लाग्या, छतां तृषाथी सामर्थ्यहीन थएला, चलित जिह्वावाळा, उडती केशवाळीवाळा अने दीन मुखथी हद उपरांत हांफता सिंहो निकटमां चालता जता गजने विदारवानी वात विसरी गया. विभाकरना तीव्र तापथी व्याकुळ बनेल वराहनां युथो समग्र परिवार सहित जाणे पाताळमां प्रवेश करवानी इच्छा राखता होय तेम सुकाइ गएलां सरोवरने खोदवा लाग्यां. शैल अने कुंजमां पादपना पुंजने पत्र रहित जोइ पक्षीओ पीडावा लाग्यां. पवननी साथे नवांकुर उडवा लाग्या, तृणना अङ्कुरो बळी गया. फेनथी खरडाएल मुखवाळी तृषाकुळ महिषीओ अग्र जिह्वाने मुख बहार काढनी जळने शोधवा लागी. पंकनना पुंजने उखेडता, मीनना कुटुंबने मारता अने किनारे बेठेला सारसने उडाडता करिवरो केलिसरोवरने डोळवा लाग्या. दिनकरना तीक्ष्ण करथी दाझता दादुरो कादवदार जळनो त्याग करी कूदवा लाग्या अने फणीना फणने छत्र जाणी तेना नीचे छुपावा लाग्या छतां ए दादुरोने गळी जवा माटे तृषातुर सर्पो अशक्त बनी गया. जोके आवा उष्णकाळमां महान् मदना अतिरेकथी प्रियाओनी साथे अनेक प्रकारना शीतोपचारथी केटलेक अंशे शारीरिक सुखने प्राप्त कर्युं, तो पण तृषाना तापथी तरायमान थएला तेओ शुष्क कंठथी पोताना शिष्योने कहेवा लाग्या के में दरेक स्थळना जळनुं पान कर्युं तो पण तृषानुं शमन थयुं नहि;

हवे तो जो कोइ वादशाहे खास पोता माटे सुंदर आरस पत्थरथी वंधावेली वावनुं जळ भरी लावे तोज ग्रीष्मना भयथी मुक्त थवाय; आ वखते समग्र शिष्यो एकी साथे वोली उठ्या के गुरुमहाराज ! ए वादशाही वावनुं जळ अलभ्य छे, कारण के त्यां वे एकाओ आठे प्रहर खडी चोकी भर्या करे छे. त्यां जीवन लेवा जतां जीवन खोइ वेसवा जेवुं छे. जेथी अमारी हिम्मत तो नथी चालती; शिष्योनां सभय वचनोने सांभळी मकनभारथीए राज रायसिंहजीने कह्युं के वीरनर ! आप शिवाय मारी इच्छाने पूर्ण करनार कोइ नथी. रायसिंहजी वोल्या के खुशीथी आपनी आज्ञा उठावुं, परंतु ए वादशाही एकाओनी गाळो हुंथी सहन नहि थाय, नाहकनुं युद्ध थशे अने तेनुं परिणाम आपने वेठवुं पडशे. मकनभारथीए कह्युं के मारा खातर तमो एकसो गाळोने सहन करजो. रायसिंहजीए ए वात कबूल करी अने सुशोभित सुवर्णनी सराइ लइ तेओ वादशाही वावनुं जळ भरवाने सिधाव्या, सन्ध्यानो समय समाप्त थतां रजनीरुपी महाराणीए समग्र सृष्टिने पोतानां सत्ताना सूत्रमां परोवी, उग्र प्रतापवाळा राज रायसिंहजी पोताना कार्यमां अन्धकारने सहायभूत करी सौरभथी सुसमृद्ध थएल विविध प्रकारनां वृक्षोथी अत्यंत शैत्यने वहन करता प्रदेशमां परम रमणीय आरसी समान प्रकाशता आरसना पत्थरथी उत्तम कारीगरोए निवृत्तिने वखते निर्मेली, चांदनीना खंड समान चमकती, शुक तथा सारिका आदि पक्षीओना मधुर स्वरथी शब्दायमान कमनीय किनारावाळी, विस्तृत आतपत्र समान विराजता खसना वितानथी आच्छादित शिरो भाग वाळी अने वरफथी पण विशेष शीतळ जळथी भरेली वादशाही वापिकामां उभय एकाओनी नजर चुकावी दाखल थया अने वहुज सावचेतीथी प्रथम तो सराइमां समाय तेटलुं जळ भरी लीधुं, त्यारवाद पोते पण यथारुचि पीधुं, जेथी हृदयमां हद उपरांत थंडक थइ, छेवटे राज रायसिंहजीए ए उत्तम जळथी पोताना शिरःकेशने आर्द्र करी पाद प्रक्षालन करवा मांडयुं, आ रीतना अपमानथी आकुळ थएली वापिका जाणे मंद मंद "खळखळ" ध्वनिने धारण करता जळने मिशे आर्त रुदन करती होय एम अचानक गाजी उठी, एथी वहार उभेल वन्ने एकाओना कान चमक्या, तेओए गंभीर नादथी पूछयुं के अंदर कोण छे ? राज रायसिंहजीए विलकुल जवाव न आप्यो, जेथी फरीने एकाओए उपर मुजव अवाज मार्यो; छतां प्रत्युत्तर न मळवाथी वहुज क्रोधायमान वनेला ए वन्ने एकाओ जेम आवे तेम अपशब्दो उचारवा लाग्या, गुरु महाराज मकनभारथीए सो गाळो सहन करवानी आज्ञा आपेली होवाथी राज रायसिंहजी एक अक्षर पण न वोल्या, गाळो गणता गया ने पगथीआं चडता गया, तेओ वापिकानी वहार आवी पहोंच्या तेटला

वखतमां सो गाळोनी समाप्ति थइ चुकी. बादशाही एक्काए जेवो एकसो एकमी गाळनो उच्चार कर्यो तेवोज राज रायसिंहजीए ए यवनना मस्तक पर वज्रवत् वामबाहुनो प्रहार कर्यो. त्रुटित मस्तकवाळो ते यवन मूळथी कापेला वृक्षनी माफक पृथ्वी पर पडी गयो अने आर्त नादनी साथे तेनो प्राणवायु आकाशमार्गे उडी गयो. आवा पराक्रमी पुरुषना प्रचंड प्रतापथी सामर्थ्यहीन बनेलो अन्य एक्को पोतानां प्राण बचाववा खातर त्यांथी भागी छूट्यो. राज रायसिंहजी निर्भयपणे सिंह समान फाळो भरता मठमां आवी पहोंच्या. तेओए प्रथम तो महाराज मकनभारथीने बादशाही नावना जळथी संतुष्ट कर्या अने पछीथी त्यां बनेली तमाम विनाथी वाकेफ कर्या; जे सांभळी मकनभारथीना मतमां बादशाही एक्काना मरणथी विपरीत परिणाम प्राप्त थवानो क्षोभ थयो अने बादशाह प्रभात थताज कचेरीमां बोलावी कोण जाणे केवी शिक्षा करशे? एवा अनेक प्रकारना तर्कवितर्क थवा लाग्या. छेवटे तेओ एवा निश्चय उपर आव्या के बादशाह पोताना एक्काना मरणने लीधे क्रोधायमान थशे तेना करतां विशेष राज रायसिंहजीनी बहादुरी उपर प्रसन्न थशे, जे हशे ते सवारे जणाशे, अगाउथी कंइ पण अनुमान करवुं ए व्यर्थ छे एम धारी निद्रा देवीने आधीन थया. प्रभातना प्रथम प्रहरमांज एक्काना मरणनी वात बादशाहना काने पडी; क्रोधने बदले आश्चर्य सिंधुमां निमग्न थएल बादशाहना मनमां एक्काने वाम मुष्टिना एकज प्रहारथी प्राण रहित करनार वीरपुरुषने विलोकवानी आतुरता वधी, तेओए तुरतज मकनभारथीना मठमांथी गुन्हेगारने पकडी लाववा केटलाएक सिपाहीओने मोकली आप्या. राज रायसिंहजी तथा मकनभारथी सारी रीते समजता हता के सवार थतांज बादशाही कचेरीमां हाजर थवुं पडशे जेथी ब्राह्म मुहूर्तमां जागृत थएला ए बन्ने महात्माओ पोतपोताना नित्यकर्मथी निवृत्त थइ राजकीय आमंत्रणनी राह जोइ रह्या हता, तेवामां बादशाहे मोकलेल माणसो मठमां आवी चडया अने मकनभारथी तथा राज रायसिंहजी वगर कह्ये तेओनी साथे चाली निकळ्या. हवे त्यां बादशाहे एक्काने मारनार वीरपुरुषना बळनी विशेष परीक्षा करवा माटे कोइएक हस्तिने मद्यपान करावी तैयार रखाव्यो हतो, ज्यारे सिपाहीओ राजरायसिंहजी तथा मकनभारथी सहित बादशाही मोहोलात नजीक आव्या त्यारे बादशाहे हाथीने छुटो मूकवा फरमान कर्युं, मद्यपानथी मस्त थएलो हाथी विक्राळ स्वरुप धरी यमदूतनी माफक राजमार्गमां दोडादोड करवा लाग्यो. मदांध सुंढथी उष्णवारिनुं वमन करतो रजने उडाडी दशे दिशाओने भ्रमित करवा धारतो होय तेम प्रलयकाळना मेघनी माफक गर्जवा लाग्यो. मार्गमां गमन करता दरेक

मनुष्यो ए दिवाना हाथीने दूरथी देखी आडा अवळा भागवा लाग्या, महाराज मकनभारथी पण भयभीत बन्या, तेओए राज रायसिंहजीने कह्युं के महीपाल ! आ मदोन्मत्त हाथी हवे जरुर आपणने हानि पहोंचाडशे, कारणके ते आवेशमां ने आवेशमां आपणा सामेज दोड्यो आवे छे. राज रायसिंहजी बोल्या के गुरु महाराज ! सामे पगले चालवुं ए अमारा क्षत्रीओनो धर्म छे, पाछो पग भरीए तो क्षत्राणीनुं दूध लजाय. आप साधु छो, जो आपने भय जेवुं जणातुं होय तो भागी छूटो, जो ए हाथी मारा उपर हल्लो करशे तो हुं एना हाड केवी रीते भांगु छुं ए आप जोइ लेजो. मकनभारथीने राज रायसिंहजीना पराक्रम उपर प्रथमथीज विश्वास हतो. तो पण साधु स्वभावने लीधे तेओए बे चार वखत शरीरना संरक्षण अर्थे रायसिंहजीने समजूती आपी, छतां तेनुं परिणाम शून्यता रुपे प्रसिद्ध थतां पोते सत्वर पलायमान कर्युं अने एक उन्नत अलिन्दने आश्रये सकम्प शरीरे अत्यंत भयथी अवयवोने संकोची उभा रह्या. अरिवृन्द रुपी करिवरोना मदने लीला मात्रथी गलित करनार केसरी समान विशाल वक्षःस्थलवाळा राज रायसिंहजीने अस्खलित गतिथी गमन करता जोइ गोखमां बेठेला बादशाह सानन्दाश्चर्य पाम्या अने पोताना अमीर उमरावोने कहेवा लाग्या के जुओ, आ बहादुर नरनुं धैर्य जुओ; आते कोइ वीर छे के कोइ पीर छे ? आ वखते अमीर उमरावो बीजुं शुं बोले ? कारणके प्रत्यक्ष प्रमाण थतां सत्यासत्यनी कसोटी तुरतमांज थइ जाय छे. हद उपरांत छकेलो हाथी अत्यन्त निकटमां आव्यो तो पण निर्भयताना निवासरूप राज रायसिंहजीए पोतानी गतिने रंच पण न रोकी, परंतु ज्यारे उद्धत हस्तिए मारवा माटे मस्तकने नीचुं नमावी मोरो कर्यो त्यारे तेना गंडस्थळ उपर राज रायसिंहजीए जरा अवयवोने उछाळी दक्षिण भुजदंडथी एवी थप्पड मारी के ते मदोमत्त मातंग चिकार करतो पृथ्वीपर लोटी पड्यो, कर्णना विवर उपर अपत्य आघात थतां तेना उभय चक्षुमां अन्धकार छवाइ गयो अने उत्थान शक्तिथी विहीन बनेलो तेनो देह काळमींढ पत्थरना टेकरा समान ते स्थळेज टकी रह्यो. आ अद्भुत बनाव जोइ बादशाहे निश्चय कर्यो के आ बहादुर कोइ देवांशी राजपूत होवो जोइए, ए विना आवुं बाहुबळ क्यांथी होय ? राज रायसिंहजी बादशाही झरोखानी समीपे आवी अनमीपणे उभा रह्या, महाराज मकनभारथी पण त्यां आवी पहोंच्या. बादशाहे ए बन्ने महात्माओने मानपुरःसर पोता पासे बोलाव्या अने चित्रभुवनमां राखेली गुजरात तथा काठिआवाडना राजा महाराजाओनी छबिओ लइ आववा अनुचरने आज्ञा आपी, प्रसंगोपात वातचितमां कदरदान बादशाहे राज रायसिंहजीना बाहुबळ विषे बहुज तारीफ करी अने मकनभारथीए योग्य

शब्दोमां तेनो प्रत्युत्तर वाळ्यो, तेवामां पेला अनुचरे आवी राजाओनी संख्याबंध छबिओ बादशाह आगळ धरी; बादशाह दरेक छबिने राज रायसिंहजीना मुख भणी दृष्टि करी मेळववा लाग्याः ज्यारे हळवदना नरेशनी छबि हाथमा लीधी त्यारे तेना हृदयमां अनहद हर्ष थयो अने तेओ नामदार एकदम बोली उठ्या के हळवदना राजसाहेब तो नहीं ? "हा, एज आपनो शुभेच्छक" राज रायसिंहजीए चारज शब्दोमां एवो ते प्रत्युत्तर आप्यो. एक तो पराक्रमी अने वळी प्रशंसनीय कुळमां प्रगट थएल राज रायसिंहजी साथे मैत्री बांधवानो निश्चय करी बादशाहे बार मास पर्यन्त तेओने पोता पासे राख्या अने त्यारबाद म्होटी फोज साथे मित्र तरीके मान्य करेला महाराजाने हळवद जवा अनुमति आपी. राज रायसिंहजी बादशाहनी तथा महाराज मकनभारथीनी आज्ञा लइ हळवद आव्या. रणवासमां विधवा वेषे प्रभुस्मरण आदि सत्क्रियाथी अवशेष आयुष्यने वितावती तमाम राणीओए स्वामीना आगमन संबंधी शुभ समाचार सांभळ्या, तो पण कोइए करकंकण आदि सौभाग्य चिन्होने धारण न कर्या, एथी राजरायसिंहजी नाराज न थता क्षात्र धर्मने पाळनारी पत्नीओनां कर्तव्यथी अत्यंत प्रसन्न थया; मात्र मूळीना परमारनी पुत्री के जे पोताना पत्नीनी गणनामां गणाएल हतां तेओ समग्र सौभाग्य चिन्हथी अंगने अलंकृत करी पतिने प्रसन्न करवा तत्पर थयां; ए जोइ राज रायसिंहजीने ते राणी उपर अति तिरस्कार उपज्यो अने तेओए तुरतज पोतानी वंशपरंपरामा फरीथी कोइ पण मूळीना परमारनी पुत्री साथे न परणे एवो प्रतिबंध बांध्यो.

एटला वखत सुधीमा राज रायसिंहजी एकावन युद्धो करी चूक्या हता, छतां तेओनुं पराक्रम अने साहस लेशमात्र ओछुं थयुं न हतुं. तेओ सुखशान्तिपूर्वक राज्य करता हता तेवामां देदाओ फरी हळवद उपर चढाइ करवा तैयार थया. दूत द्वाराए युद्धना समाचार सांभळी राज रायसिंहजीए समग्र सामन्तोने एकत्र करी कयुंके दुश्मनो आपणी भूमिमां दाखल न थाय ते परेलाज आपणे ए लोकोने अटकाववा जोइए. सामंतोए पण एज सम्मति आपी, परंतु ए वखते राज्य ज्योतिषीए नम्रता पूर्वक अरज करी के—नामदार ! हाल ग्रहयुद्धनो गडबडाट चाले छे. जो पाच दिवस पछी युद्ध अर्थे प्रयाण करवामा आवे तो वधारे सारुं; कारण के अत्यारे बृहस्पति नामना ग्रहे शुक्र नामना ग्रहने जीत्यो छे अने एनुं फळ एवुं छे के चढाइ करी जनार राजानो विनाश थाय. तो अन्नदाता ! आपनुं शुभ इच्छवुं ए अमारुं मुख्य कर्तव्य छे. आ सांभळी एकाएक आश्चर्यवश थएला राज रायसिंहजीए पूछ्युं के ग्रहयुद्ध एटले शुं ? आ विषय तो आजेज

मारे काने पडयो छे माटे ग्रहोनुं युद्ध शी रीते थाय छे अने तेनुं शुं फळ छे ते संक्षेपथी कही संभळावो. महाराजानी आज्ञा थतां राज्य ज्योतिषी बोल्या के–नामवर !

गगनमां गमन करनारा तथा उपर उपर पोतपोतानी कक्षामां रहेली भौम आदि पांच ग्रह अत्यन्त दूर होवा छतां समताने प्राप्त थएला मालुम पडे अने एनो निकटना क्रमथी जे संयोग थाय तेने युद्ध कहे छे. एनो सारांश ए छे के भौम आदि ग्रहोनो परस्पर घणोज अन्तर छे, पण ज्यारे ए ग्रहो पोतपोतानी कक्षामां गमन करता करता समसूत्रमां आवी जाय त्यारे मनुष्योने एम मालूम पडे के बन्ने ग्रह मळी गया. बस एनुंज नाम युद्ध छे. पराशर आदि मुनिओए ए युद्धना **भेद, उल्लेख, अंशुमर्दन** अने **अपसव्य** एवा चार प्रकार कहेला छे.

ज्यारे बन्ने ग्रह एकज देखाय अर्थात् उपरना ग्रहने नीचेनो ग्रह आच्छादित करे–ढांकी दिये ए युद्धनुं नाम **भेद.**

ज्यारे एक ग्रह बीजाग्रहबिम्बना परिधि मात्रनो स्पर्श करे, परंतु ढांके नहि ए युद्धनुं नाम **उल्लेख.**

बन्ने ग्रहोनो स्पर्श तो न थाय, परंतु ए एटला समीपे आवी जाय के एक बीजाना किरणो परस्पर मळेला जणाय ए युद्धनुं नाम **अंशुमर्दन.**

ग्रहोना किरणो पण न मळे, परंतु एक ग्रह बीजा ग्रहनी दक्षिणे बराबर रहे अने बीजो ग्रह उत्तरे रहे ए युद्धनुं नाम **अपसव्य.**

भेद नामनुं युद्ध होय तो वर्षा न थाय अने मित्रोमां तथा उत्तम कुळोमां परस्पर विरोध जामे. **उल्लेख** नामनुं युद्ध होय तो शस्त्रथी भय थाय, राजाओना मंत्रीओमां परस्पर भेद थाय अने दुर्भिक्ष पडे. **अंशुमर्दन** नामनुं युद्ध होय तो राजाओमां परस्पर युद्ध थाय तथा शस्त्ररोग अने क्षुधाथी प्रजावर्ग पीडाय. **अपसव्य** नामनुं युद्ध होय तो पण राजाओमां परस्पर लडाइ थाय.

जे राजा शत्रुने जीतवा माटे चढाइ करी जनो होय अने तेना सहायक तरीके पाछळना भागमां जे बीजो राजा रहे तेने **पार्ष्णिग्राह** कहे छे तेमज पार्ष्णिग्राहनी पाछळ जे राजा रहेलो होय तेने **आक्रन्द** कहे छे.

मध्यान्हने समये सूर्य आक्रन्द छे. पूर्व अथात् मध्यान्हथी पहेलां दिवसना तृतीयांशमां सूर्य पौर होय छे अने अपर अर्थात् मध्याह्न पछी दिवसना तृतीयांशमां सूर्य यायी होय छे.

बुध, बृहस्पति अने शनैश्चर यायी छे, चन्द्रमा, निरंतर आक्रन्द छे; केतु, मंगल राहु अने शुक्र ए चार ग्रह यायी छे. ए ग्रहो जो युद्धमां पराजय पामे तो आक्रन्द, यायी अने पौरोनो नाश करे छे अने जय पामे तो पोताना वर्गने अर्थात् आक्रन्द, यायी अथवा पौरने जय आपे छे. मतलब जे ग्रहनो पराजय थाय तेना वर्गनी हानि अने जे ग्रह जय पामे तेना वर्गनी वृद्धि थाय छे.

जो युद्धमां पौरग्रह पौरग्रहने जीते तो पौरराजा पौरराजाओने जीते छे. एज रीते यायी अने आक्रन्दनो जय पराजय तथा पौर अने यायीनो जय पराजय ग्रहयुद्धने अनुसार जाणी लेवो अर्थात् जे ग्रह जीते तेना वर्गनो जय अने जे ग्रह हारे तेना वर्गनो पराजय थाय छे.

जे ग्रह युद्धने वखते दक्षिण दिशामां रहेलो होय, रुक्ष होय, कंपायमान होय, बीजा ग्रहनी समीपे पहोंचता पहेलांज पाछो फरे अर्थात् वांको थइ जाय, सूक्ष्म थइ जाय, बीजा ग्रहथी दबाइ जाय, कोइपण प्रकारना विकारने प्राप्त थाय तेमज निष्प्रभ अर्थात् विवर्ण–कान्तिहीन बनी जाय ते ग्रह पराजय पाम्यो एम समजवुं. अने एथी विपरीत लक्षणवाळो जे ग्रह होय ते विजयी समजवो.

दक्षिण दिशामां रहेलो ग्रह पराजय पामे अने उत्तर दिशामां रहेलो ग्रह जीते एवो कांइ खास नियम नथी जो दक्षिण दिशामां रहेलो ग्रह म्होटो देखाय, स्निग्ध जणाय अने कान्तिवाळो होय तो तेने जययुक्त जाणवो. आ वात केवळ शुक्रमां होय छे बीजा ग्रह तो उत्तरमां होय त्यारेज जय मेळवी शके छे, परन्तु शुक्र तो दक्षिणमां पण विजयवान थाय छे.

जो बन्ने ग्रह समागम समये किरणोथी युक्त, म्होटा तथा स्निग्ध होय तो एओनी परस्पर प्रीति थाय छे अने एथी विपरीत अर्थात किरणोथी हीन, सूक्ष्म तथा रुक्ष होय तो पोताना पक्षनो नाश करे छे.

भौम आदि पांच ग्रहोनु परस्पर युद्ध थाय छे अने ए ग्रहो चन्द्रमानी साथे मळे तो समागम कहेवाय छे. जो युद्ध अथवा समागम लक्षणोथी स्फुट न होय अर्थात युद्धमां ग्रहनां जय पराजयनो निश्चय न थाय. बन्ने ग्रह तुल्य रूपे रहे अने समागममां चन्द्रमा ग्रहनी उत्तरे अथवा दक्षिणे न थइ जाय, परन्तु ग्रहनी उत्तर तरफ गमन करे तो भूमिपक्षना राजाओने एवुंज योग्य

फळ कहेवुं जोइए अर्थात् राजाओने पण युद्धमां जय पराजयनो निश्चय न थाय अने चन्द्रमाना समागमनुं फळ पण शुभ अशुभ न थतां मध्यम थाय.

जो युद्धने वखते मंगळने बृहस्पति जीते तो वाह्लीक देशना निवासी, यायी अर्थात् शत्रु पर चढाइ करवावाळा राजा अने अग्निथी आजीविका चलावनारा सुवर्णकार आदि पीडा पामे छे. मंगळने बुध जीते तो सूरसेन, कलिंग अने साल्वदेशना निवासीओ पीडाय छे शनैश्चर मंगळने जीते तो नगरना निवासीओनो विजय थाय छे अने प्रजावर्ग पीडाय छे तेमज शुक्र मंगळने जीते तो कोष्ठागार, म्लेच्छ तथा क्षत्रीओने संताप थाय छे.

जो मंगळ बुधने जीते तो वृक्ष, नदी, तपस्वी, अश्मक देशना निवासीओ, राजाओ, उत्तर दिशामां रहेनाराओ अने जेणे यज्ञनी दिक्षा ग्रहण करेली होय ए तमाम संतापने प्राप्त थाय छे बृहस्पति बुधने जीते तो म्लेच्छ, शूद्र, चोर, धनवान्, नगरनिवासी अने त्रिगर्तदेश तथा पर्वतमा रहेनाराओ पीडाय छे. शनैश्चर बुधने जीते तो नाव चलाववावाळा, लडवैया, जळथी उत्पन्न थता द्रव्य, धनवान् अने गर्भिणी स्त्रीओ ए सर्व पीडाय छे. शुक्र बुधने जीते तो अग्निकोप थाय अर्थात् दुनियामां जगोजगो उपर आग लागे तथा खेती, वादळ अने चढाइ करी जनारा राजाओ नाश पामे छे.

शुक्र बृहस्पतिने जीते तो कुलूत, गांधार, कैकय, मद्र, साल्व, वत्स तथा वंग नामना देश अने खेतीनो विनाश थाय छे. मंगल बृहस्पतिने जीते तो मध्यदेश, राजा अने गायो पीडाय छे. शनैश्चर बृहस्पतिने जीते तो आर्जुनाय, नवसाति, यौधेय अने शिवि देशनां माणसो तथा ब्राह्मणो नाश पामे छे. बुध बृहस्पतिने जीते तो म्लेच्छ, सत्यवादी पुरुष तथा शस्त्रधारी पीडाने प्राप्त थाय छे अने मध्यदेशनो क्षय थाय छे.

बृहस्पति शुक्रने जीते तो चढाइ करनारा श्रेष्ठ राजाओ नाश पामे छे, ब्राह्मण तथा क्षत्रिओमां विरोध जामे छे, वर्षा पण थती नथी, अने कोशल, कलिंग, वंग, वत्स, मत्स्य, मध्य कळीब अने सूरसेन नामना देश महान् पीडाने प्राप्त थाय छे. मंगळ शुक्रने जीते तो राजानो सेनापति मार्यो जाय अने राजाओमां परस्पर युद्ध थाय. बुद्ध शुक्रने जीते तो पर्वतमां रहेनाराओनो क्षय थाय, दुग्धनो नाश थाय अने वर्षा थोडी थाय. शनैश्चर शुक्रने जीते तो समूहमांनो प्रधान पुरुष, शस्त्रथी आजीविका चलावनारा क्षत्रीओ अने जळथी उत्पन्न थनारां द्रव्यो पीडा पामे छे.

शुक्र शनैश्वरने जीते तो अर्घवृद्धि थाय अर्थात् तमाम वस्तु किफायत भावे वेचाय, सर्प, पक्षी अने मानीपुरुषोने पीडा थाय. मंगल शनैश्वरने जीते तो तंगण, आन्ध्र, उडूकाशी अने वाल्हीक देशना निवासीओ पीडाय छे. बुध शनैश्वरने जीते तो अंगदेश, वणिक, पक्षी, पशु अने सर्प पीडाने प्राप्त थाय छे. तेमज बृहस्पति शनैश्वरने जीते तो जे देशोमा स्त्रीओ वधारे होय ते देश तथा महिपक अने शत्रु पीडा पामे छे. आटलुं कही राज्य ज्योतिषीए बोलवुं बंध कर्युं. राजरायसिंहजीनी याददास्त घणीज उत्तम हती. तेओए "बृहस्पति शुक्रने जीते तो चढाइ करनारा श्रेष्ठ राजाओ नाश पामे छे" ए वाक्यनुं बराबर मनन कर्युं, परंतु पांच दिवसनी ढीलथी प्रतिपक्षीओ हळवदनी हदमां प्रवेश करे एवो संभव होवाथी "भावि हशे तेम थशे." एवा निश्चय पर आवेला राज रायसिंहजी इष्टदेवने स्मरी एज वखते सैन्यने सज्ज करी शत्रुओ सामे चाली निकळ्या. घाटीलाना मेदानमां उभय पक्षनो भेटो थयो. झालाओनी झपटथी प्रथम तो देदाओ दम खाइ गया, परंतु पाछळथी ए लोकोए अवर्णनीय पराक्रम करी बताव्युं. शत्रुओना दळने छिन्नभिन्न कर्या छतां हळवदना सैनिकोनी हार थतां राज रायसिंहजी पण अगणित प्रहारोथी अचेत बनी युद्धभूमिमांज प्राणरहित थया.

जामना आश्रित तथा इश्वरना अनन्य भक्त बारोट इसरदान के जेणे "हरिरस काव्य" नामनु इश्वरभक्तिनुं पुस्तक रचेलुं छे एणे राजरायसिंहजीना स्वर्गगमन संबंधमां चारणी भाषानी अंदर घणां गीतो बनावेला तेमांथी जेटलां मळ्यां तेटला आ स्थळे दाखल कर्या छे.

गीत १.

राणाहर भला जनसीओ राता. तुज न वड भड जोध त्रसींग;
जूना वेर टाळ जाडेजा. घोडी किआ हेकटा धींग;
वगसे लाखो तमण वगसीयो, भले हाल हर देदांभीर;
खेंचे वेर तणे कज खाधे, हालाने वगसीओ हमीर;
मोहोड वीरभद्र खेंगो मलिया. मन वीसारी जके मुआ;
हालो देदो होअे हेकटा, हालो राएधण हेक हुआ;
मांहो मांहे वेर न्हे मुका, दळ झाले हाला दमीआ;

हाला त्रणरा मली हेकठा, एको कणी न आगमीआ;
जासे नहीं दिअरडे जाते, वीसह घणा दिन रहेसे वात;
राहां त्रण तणे सररासो, अणभंग राखी गिओ अखिआत.

गीत २.

खेधी लग क्षत्री खडग हथ खारा, मदही इन्द्र सभा मलिया;
बीजी वार सरगपर बेंवे, साएवरासो साफलिया;
एथ कज अलाओथीकज अपछर, सुरनर रहीआ करी समास;
कडतल राण राएधण कीधो, कलह वलीं दूजो कवलास;
आडा अमर हुवा अनीयारा, जोध न सकी आकरी जुआ;
हालो देदो होए हेकठा, हालो राएधण हेक हुआ;
राएधण राज वाजेआ रुके, सघलेई संसार सुओ;
मोटो जूध हुवो मालीए, हेक वली जुध सरग हुओ.

गीत ३.

आधी आधी चाओर आपे, सथरा इन्द्र किया समझाव;
साना ओत हामा ओर मलीया, इन्द्र सभा वच वेठा आव;
कर झालां गोलो घडसप काढां, धखते तेले हाथ धरां;
रायासंघ सरीखो राजा, कोए होए तो धीज करां;
प्राझलती झलझंगां पेसे, तीर न खावकरां गमतोय;
जणाणी कणे होए जो जायो, कडतल सारीखो नर कोय;
अकलंक माथा फूल उतारां, पेसव मरमा कोस पीआं;
मानाओत जेहडो मेसाझल, दूजो होए तो सीसदीआं;

कल पांत्रीश तणी वहु वांकल, जायो होए तो वोलो जीह;
देव जकरां होए जो दोइ जो, सपोह कोए सारीखो सीह;
परख रतन अणखूट पृथीपड, त्रेवीरातन वावन वीर;
कस चाटां जो राण जसो कोइ, हिन्दु होए के होए हमीर;

गीत ४.

रत कडवो केम सकत पूछे रुद्र, पडतां में लीधो अपड;
लागुआतणा लागते लोहां, भडते राआसंग भड;
आगें दोए वेला आचरीयो, मेंताए कमंध तणा रणमांय
त्रीजी वार कहोने त्रिनेयण, सोअण हुवो केम कडवे साय;
सपरा सात गंगतट सोलह, तेम दसह वल भीमा तीर;
तें तेत्रींश पीआ पात्र सकत, खाटीथीए छठे पात्र खीर;
होए मन चोंक सकत सव हसीया, वलद हुए मन कीओ वचार;
आलाघाव हुआ अगलूणा, ओतणलींव तणो अपगार;
रतन महेस जसो गणरासो, वीसहर्थी धारुं जणवास;
ईसर तुं सव धारी अमर, कल सपेख गया कवलास.

[1] राजरायसिंहजी वि. स. १६४० मा घाटीला पासे देदा रजपुतोनी साथे भयंकर युद्ध

---

१ राज रायसिंहजीना पराक्रम संबंधी वर्णन करतां कोइ एक हिन्दी कविए दोहो बनाव्यो छे.

" कटारी अमरेशरी, लींवारी तलवार;
हाथल रायसींगरो, दिल्हीरे दरवार. "

क्यांइ क्यांइ " तोगारी तलवार " एवो पन पाट छे.

करी स्वर्गे सिधाव्या, तेओने छत्रसालजी, चन्द्रसिंहजी तथा सूरजभाणजी नामे त्रण कुमारो हता, तेमां पाटवीकुमार छत्रसालजी माळीआना मीआणा साथे धींगाणुं करतां वि. स. १६३८ मांज स्वर्गवासी थया हता, जेथी कुमार चंद्रसिंहजी शौर्यसागर पिताना स्वर्गगमन पछी वि. स. १६४० मां रमणीय "राज" पदवीने धारण करी हळवदनी गादी पर विराजमान थया.

राजरायसिंहजीना परिचयमां आवेल बादशाह "अकबर" होवा जोइए एम विक्रमना सोळमा शतक उपरथी एक रीते सिद्ध थइ शके छे, परंतु बीजी बाजु विचार करीए तो शहेनशाह अकबरे पोताने हाथे पोतानुं जीवनचरित्र लखेल छे तेमां झीणामांझीणी बाबतो पण जोवामां आवेछे, छतां तेओने राजरायसिंहजीनुं मिलन थयुं एवो लेख कयांइ द्रष्टिगोचर थतो नथी.

१ वढवाणना इतिहासमां राजरायसिंहजीने चंद्रसिंहजी तथा सरतानजी नामे बेज कुमार हता एवुं दर्शाव्युं छे अने ए सरतानजीए आडेसरना ठाकोर साहेबजीने मार्या हता तथा पोते पण मरणने शरण थया हता.

विंशत् तरंग.
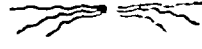
सवैया.

भूपति चन्द्रतणे भुवने, प्रकटेल वडा प्रथिराज प्रतापी;
शाप थतां विचर्या सुरलोक, सिहाणी नरेशतणुं शिर कापी;
शूर थया सुरतान पछी, निज गादी सुवंकपुरीमहिं स्थापी;
मान महीप लगी नथुराम, अहीं अमरेश ! हकीकत आपी.

राजचन्द्रसिंहजीए वि० सं० १६४० मा हळवदनी गादीए बेसी पोतानी कुळपरंपरा प्रमाणे प्रजानुं पालन करी औदार्य आदि सद्गुणोथी महान् सुयश मेळव्यो. ए एक बहादुर नरेश हता, तेओना लग्न जोधपुरना राठोड सूर्यसिंहजीना कुंवरी सत्यभामा साथे थयां हतां; ए सत्यभामानी न्हानी व्हेननो विवाह बादशाह अकबरना शाहजादा सलीम साथे करवामां आव्यो हतो. कहे छे के—राजचन्द्रसिंहजी तथा शाहजादो सलीम एक लग्ने जोधपुर परणवा गया हता. राजचन्द्रसिंहजीनी बराते जोधपुर जतां वेगडवाव मुकाम कर्युं हतुं. ए वेगडवावना आयर अरजण सोनाराए हळवदनी जबरी जानने ममताथी रोकी मिजमानी आपी अने राज चन्द्रसिंहजीना सैन्य सहित सर्वनी घणीज सारी खरभरा करी. अरजण सोनाराने शूरवीर तथा समजु माणस समजी श्रीमान् राजसाहेबे तेनी परोणागत अत्यन्त स्नेहथी स्वीकारी अने पगथी एने छेक डोक सुधी पोशाक आपी दरबारमां साथे लीधो. ए विषे भाट लोको नीचे मुजब दोहो बोले छे.

" अरजणीए अखियार, पहेली कीधी पांचालीये;
राख्यो एकज रात, जातो चंद जमाईओ. "

बरात जोधपुर पहोंचा, हवे ए रीते म्होटा कुंवरीनो संबंध राजचन्द्रसिंहजी साथे थएलो होवाथी हिन्दुस्थानना नियम मुजब प्रथम तेओ पोंखावा तोरण. छतां शाहजादा सलीमे

ए बाबतमां तकरार उठावी. अंते एवो निर्णय थयो के भालांनी अणी उपर एक नाळीएर राखवुं अने ए नाळीएरने घोडा दोडावी जे प्रथम लइ ले ते पहेला पोंखाय. दिल्ही तथा हळवद तरफथी ए वात मंजुर राखवामां आवी. एक विशाळ मेदाननी अंदर जमीनमां भालुं खोडी तेना उपर नाळीएर मूकवामां आव्युं. नियमित स्थळेथी बन्ने पक्षना अश्वो एक साथे दोड्या, तेमां हळवदना अश्वोए हेरत पमाडे एवा वेगथी आगळ वधी श्रीफळने हस्तगत कर्युं; आथी बादशाही वरातनो मनोरथ पार पडी शक्यो नहि. बन्ने वरात तोरणे पहोंचतां प्रथम राज चन्द्रसिंहजी पोंखाया अने पछीथी शाहजादा सलीमने पोंख्या बाद अनुक्रमे पाणिग्रहणनी क्रियानो प्रारंभ करवामां आव्यो. राज चन्द्रसिंहजीए उतारो जाळववा अर्थे एक जसाजी नामना लींबड शाखाना वृद्ध राजपूतने राखेला हता, अने बाकीना समग्र मनुष्योने पोतानी साथे लीधेला हता. एक स्वाभाविक नियम छे के ज्यारे कोइ माणस एकलो बेठो होय त्यारे तेना हृदयमां अनेक प्रकारना विचार स्फुरे छे. हळवदना उतारामां होको गुडगुडावता राज्यभक्त जसाजी पण एज हालतमां आवी पड्या. पासे कोइ माणस न हतुं, जेथी मनमां ने मनमां विचारवा लाग्या के हळवदना अश्वो पाणीवाळा होवाथी शरुआतमां तो श्रीहरिए मारा मालिकनी लाज राखी, पण हवे मूछ उंची रहेवी ए बहुज अशक्य छे; कारण के परणी रह्या बाद वतनमां विदाय थती वखते बादशाही वरात तरफथी भाट चारणो वगेरेने जेटली दात आपवामां आवशे तेटली राजसाहेबथी आपी शकाशे नहि; कारण के क्यां दिल्ही अने क्यां हळवद. बळनी परीक्षामां तो हजु पण पाछा हठीए तेम नथी, पण समृद्धिमां कोइ रीते एनी सरखामणी करी शकाय तेवुं नथी. माटे बीजुं कांइ नहि करतां आ वखते जो उताराने लूंटावी दीधो होय तो जेजेकार थइ जाय. बादशाही वरातवाळाथी एवुं बनी शकशे नहि, कारण के एना उतारामां तो करोडोनो माल होय, ए शिवाय ए गमे तेटलुं द्रव्य उडाडशे तो पण हळवदनी तोले नहि आवे. आ हळवदना उतारामां बहु तो बे चार लाखनो माल असबाब हशे. अत्यारे ए लूंटावी देवाथी जे नामना मळशे ते पछीथी करोडो रुपिआ खर्चवाथी पण मळी शके तेम नथी. मात्र वांधो एटलो छे के जो मारां आ साहस उपर महाराजा राजसाहेब नाराज थाय तो मारे मरवुं पडे. घडिभर आवा तर्कवितर्क करी छेवटे लींबड जसाजीए दृढ संकल्प कर्योके—भले मारे मरवुं पडे, पण मारा मालिकनुं नाम तो अमर रही जशे ? एना नाम करतां मारां प्राण कांइ किम्मतदार नथी. बस एज वखते जसोजी बहार निकळ्या, अने भाट चारणोने भेळा करी उन्नत अवाजे बोलवा लाग्या के—" चालो बाप-

ला ! चालो, आ हळवदनो उतारो लूंटाय छे हालो, अमारा राजसाहेबे हुकम दीधो छे के माग-णथी वधारे मारे कांइ नथी, माटे हालो, जेने जे जोइए ते उपाडो, वार न लगाडो." आ शब्दो सांभळतांज असंख्य मागण लोको त्यां आवी पहोंच्या अने उतारामां प्रवेश करी कोइ घोडा, कोइ हाथी, कोइ उंट, कोइ बळद, कोइ पेटी, कोइ पटारा, कोइ पलंग, कोइ तावदान, कोइ म्याना कोइ पालखी, कोइ गाडी, एम जेने जे गम्युं ते लइ लइने चालवा लाग्या अने मार्गमां म्होटे अवाजे "भले बाप लींबड, भले बाप लींबड, भले हळवद भले, भले हळवद भले" एवा शोरबकोर करता पोतपोताने स्थाने जता हता, त्यां परणेतर पूर्ण थइ रहेवाथी उतारा भणी वळेला हळवदना जानैयाओ पोतपोताना घोडा वगेरेने ओळखवाथी मागण लोकोने अटकावी आसपास घेरी वळ्या अने कहेवा लाग्या के–"आ अमारी मालमत्ता तमो क्यां लइ चाल्या ?" आनो काइ जवाब नहि आपतां मागण लोको तो "भले लींबड भले, भले हळवद भले, बाप ! हळवद ते क्यांइ थावुं छे ?" आम वारंवार हर्षघेला बनी बोली रह्या हता. आ वात बीजा माणसोना ध्यानमां तो एकदम न बेठी, पण परम चतुर राज चन्द्रसिंहजी समजी गया के लींबड जसाजीए हळवदनो उतारो लूंटावी आ वाह वाह कहेवरावी छे. तुरतज तेओ नामदारे मागण लोकोने अटकावी उभेला पोताना माणसोने ठपको आपी सीधा उतारे जवा सूचव्युं, अने पोते पण मनथी ने मनथी दीर्घदर्शी जसाजीने धन्यवाद देता देता उतारे पधार्या. जसोजी तो बन्दूक भरीनेज बेठेला हता, मालिक तरफथी अपमान थता आपघात करवो एज तेनु छेल्लुं कर्तव्य हतुं, परंतु ज्यारे तेणे श्रीमान् राजसाहेबनां निर्मळ नयनोने पोता तरफ हसतां जोयां त्यारे तेने खात्री थइ के मारुं आ कार्य मारा एज मालिकने संतोषकारक जणायुं छे. राजसाहेबे अश्वपरथी नीचे उतरी तुरतज वृद्ध जसाजीने धन्यवाद आप्यो अने कह्युं के–"आटला बधा माणसोमा तमे एकज खरा निमकहलाल अने राज्यभक्त छो. जो तमोए आ युक्ति न वापरी होत तो मारी शी ताकात हती के बादशाही बरातनी स्पर्धामा आवी प्रख्याति पामी शकु ? बस तमेज हळवदनी लाज राखी छे." आटलुं बोली राज चन्द्रसिंहजीए लींबड जसाजीने केटलोक उमदा पोशाक आप्यो. बादशाही बराते भाट चारणोने दान आपती वखते अढळक द्रव्य उडाव्युं, पण तेनाथी हळवदनी तुलना थइ शकी नहि; कारण के ए वखते पण मागण लोकोना मुखमां "भले लींबड भले, भले हळवद भले" एवा उद्‌गारो जारी हता.

उपरना अवसरनो एक पाजीओ दोहो हजु पण जनसमुदायमां सामान्य रीते नीचे

मुजब बोलाय छे.

" जाण्युं टाणुं तें जसा, करमी ग्रह केवा;
पारकी पथारीए लींबड जस लेवा, जाण्युं टाणुं तें जसा "

राज चन्द्रसिंहजी जोधपुर शिवाय बीजी पांच जगोए परण्या हता अने तेनाथी पृथीराजजी, आशकरणजी, अमरसिंहजी, अभेराजजी, राजसिंह, राणोजी, भोजराजजी, सुरसिंहजी अने प्रतापसिंहजी नामे नव कुमारो थया. तेमां म्होटा कुमार पृथीराजजी " भडली " ना सरवैयाना भाणेज थता हता. आशकरणजी तथा अमरसिंहजी " जोधपुर " ना राठोड सूर्यसिंहजीनां कुंवरी सत्यभामाना उदरथी जन्म पाम्या हता. अभेराजजी " शीहोरना ", राजसिंहजी " खीलोस " ना, राणोजी तथा भोजराजजी " पेथापरमाणसा, " ना अने सूरजसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी " कुण " ना दौहित्र हता. मतलब राज चन्द्रसिंहजीनां लग्न भडली, जोधपुर, शीहोर, खीलोस, पेथापरमाणसा तथा कुण वगेरे स्थळे थयां हतां, तेओनुं आखुं कुटुंब निरंतर अवनवा आनंद मंगळने अनुभवतुं हतुं, परंतु दुःखमय संसारना अनित्य वैभवोनी प्राप्तिथी पोताने सुखी समजनार प्राणीने प्रभु न होय त्यांथी उपाधिनो खजानो अर्पण करे छे. ए अनादि नियमानुसार स्वर्गस्थ राज रायसिंहजीए ध्रोळनी धरामां वावेलुं वैरबीज अंकुरित थयुं. जामनगरना जाम ध्रोळ ठाकोरना कुटुम्बी होवाथी तेओए एक म्होटुं लश्कर हळवदने कबजे करवा माटे मोकल्युं. राज चन्द्रसिंहजीए जामना लश्करनी साथे युद्ध करी विजय मेळव्यो अने पाछळथी पोतानां एक कुंवरी हतां तेनो जाम सत्ताजीना कुमार लाखाजी साथे विवाह कर्यो, जेथी वैरनी पण शान्ति थइ.

राजचन्द्रसिंहजी वि. सं. १६४२ मां गुजरात खाताना बादशाही सूबा खानअजीजकोकाने वीरमगाम मुकामे मळ्या हता, तेओए पोताना चोथा पुत्र अभेराजजीने 'थान' तथा " लखतर " सहित [1]चोवीश गामो आप्यां हतां अने एथी न्हाना पांच कुमारोमांथी एकने सात अने बाकीनाने चौद चौद गामनो गिरास आप्यो हतो.

शीआणीना ठाकोर अदाजीने अमदावादना बादशाही सूबा साथे अणबनाव थवाथी

---

[1] श्री झालावंशना बारोट कालुभीना चोपडामां अभेराजजीने सात गाम सहित थान तथा लखतर मळ्यानुं लखेल छे

तेओ पोताना कुटुंबकबीला सहित हळवदमां राज चन्द्रसिंहजीने आश्रये ताजेतर आवी रह्या हता; एक वखत कुमार पृथीराजजी अश्वारूढ बनी फरवा निकळ्या हता, फरीने पाछां वळतां तृषातुर अश्वने पाणी पावा शहेरनी समीपे रहेला अवाडा पासे आव्या. ए समये अदोजी पण आगउथी आवी पोताना अश्वने पाणी पाता हता; तेओने आसपास उभेला केटलाएक पुरवासीओए प्रथमथीज कह्युं हतुं के कुमार पृथराजजी निकटमां आवेल अन्यना अश्व उपर चाबुकनो प्रहार कर्या शिवाय रहेता नथी. छतां अदाजीए कोइना कहेवा उपर ध्यान नहि आपतां पोताना मननुं धार्युं कर्युं. नवयौवनना आगमनथी समग्रसृष्टिना दळने तुच्छ समजनार कुमार पृथीराजजीए अदाजीना अश्व उपर चाबुक उगाम्यो. अदाजीए पण पूर्वापरना विचारनो परित्याग करी कुमारना हृदयमां भालुं भोंकवानी हाम भीडी ए वखते कुमार पृथीराजजी पोता पासे कांइ हथियार नहि होवाथी वधारे जोखममां उतरवानुं अनुचित धारी सत्वर सक्रोध आकृतिने प्रदर्शित करी शहेरमां सिधाव्या. स्वल्प समयने अन्तरे अदोजी पण उतारे आवी पहोंच्या. हवे अदाजीने केवी रीते पायमाल करवा एज विचारने हृदयघरमां मुख्य स्थान आपी कुमार पृथीराजजीए माणसोने एकत्र करवा मांडयां. ए वात राज चन्द्रसिंहजीना जाणवामां आवतां तेओए पृथीराजजीने पोता पासे बोलावी कह्युं के "कुमार! अदोजी आपणे आश्रय आवी रहेला छे, एनुं अनिष्ट करवुं ए आपणो धर्म नथी." छतां क्रोधने वश बनेला पृथीराजजीए पितानां वचननुं वजन नहि राखतां एकदम अदाजीना मुकाम उपर हुमलो कर्यो. तेवामां राज चन्द्रसिंहजी त्यां आवी चडया अने कुमारने साहस न करवा सूचव्युं, परंतु एथी पृथीराजजीनो क्रोध अभिवृद्धि पाम्यो, तेओ तुरतज त्यांथी रिसाइ [1]वढवाण तरफ चाली निकळ्या. त्यां पहोंच्या बाद तेओए पराक्रमथी आजुबाजुना प्रदेशने स्वाधीन करी वि. सं. १६६० मां वढवाणनुं स्वतंत्र राज्य स्थाप्युं तथा पोताना नामथी बादशाहने वार्षिक पेशकशी मोकलवा मांडी अने स्वल्प समयमांज बे हजार योद्धाओनुं सैन्य एकत्र कर्युं तेवामां बनाव एवो बन्यो के केटलाएक लश्करी सिपाहीओ उंट आदि वाहनो उपर बादशाही खजानो लइ जूनागढथी अमदावाद तरफ जता हता ते वढवाणने पादर थइ नीकळ्या, ए वातनी पृथीराजजीने खबर पडतां तुरतज तेओए सब्याबंध स्वारो सहित त्यां आवी बादशाही सिपाहीओ साथे धींगाणुं कर्युं, अने खजानो लूंटी लीधो. ज्यारे ए समाचार बादशाहने मळ्या त्यारे बादशाहे पृथीराजजीनुं मस्त-

---

[1] राजचन्द्रसिंहजीना अमल दरम्यान वढवाण हळवदना कबजामां हतुं एम केटलाएक इतिहासोना आधारथी कही शकाय छे.

क कापी लावनारने म्होटुं इनाम आपवानुं सर्व स्थळे जाहेर कराव्युं अने एक मूवाने बे हजार स्वारो साथे पृथीराजजीने परास्त करवा वढवाण तरफ रवाना कर्यो. ए सूबाए पृथीराजजीना अद्भुत वळ संबंधी केटलीएक वातो सांभळेली होवाथी तेओनी साथे मुकाबलो करवानो विचार मार्गमांज मांडी वाळ्यो अने कपट क्रियाथी वीरनरने वश करवानो दृढ निश्चय करी पोताना माणस मारफत तेओने कहेवराव्युं के हुं खास बादशाही खंडणी उघराववा माटे निकळेलो छुं, तो आप मारा उक्त कार्यमां मददगार थशो तो म्होटो उपकार मानीश. ए रीतनो मूबानो संदेशो सांभळी पृथीराजजीए पोताना दूतद्वारा मूबाने कहेवराव्युं के–तमो हाथमां कुरान लइ मारी साथे कपट न करवाना शपथ ल्यो तो हुं खुशीथी तमोने सहायता आपवा तैयार छुं. सूबाए ए वातने स्वीकारी लीधी, परंतु साथे एटलो करार कर्यो के जो पृथीराजजी प्रथम कपट करशे तो पछी हुं पण तेम करीश अने जो तेओ मारी साथे निष्कपटताथी वर्तशे तो हुं पण तेओनी साथे एज रीते वर्तन करीश. आ रीते अन्योअन्य कबुलात थया बाद पृथीराजजी पोताना सैन्य सहित सामा जइ सूबाने रूव्या अने अदोजी शीयाणीमां आव्या छे एवा समाचार सांभळतां ए बन्नेए प्रथम शीआणी उपरज हल्लो कर्यो. अदाजी उपर उपाधिनुं वादळुं तूटी पडयुं. कुंजर सरखा पृथीराजजी सामे पिपीलिकानी दशाने प्राप्त थएला अदोजी पोताना थोडा घणा स्वारो सहित कम्मर कसी क्षात्रधर्म प्रमाणे सन्मुख आवी उभा रह्या, तीक्ष्ण तलवारो चमकती चपळा समान म्यानमांथी निकळी अने भयंकर कापाकापी चाली; परंतु आदित्यना उग्र प्रकाश आगळ जेम दीपकनी ज्योति निस्तेज बनी जाय तेम स्वपक्षनो संहार थतां अदोजी वळहीन बनी गया. तुरतज पृथीराजजीए तेओनुं मस्तक छेदी एक उन्नत वृक्षनी डाळे लटकावी दीधुं. ए शोकजनक समाचार सांभळतांज अदाजीना राणीने सत चढयुं अने पोताना पति साथे बळी मरवा तैयार थयां, तेणे कुंकुम तथा अक्षतथी भालने अलंकृत करी सतीने योग्य सकल शृंगारो सज्या बाद पृथीराजजीने कहेवराव्युं के मारा स्वामीनुं मस्तक मने सुप्रीत करो. पृथीराजजीए सतीनी याचनानो अस्वीकार करी प्रत्युत्तर पाठव्यो के जो तारे तारा धणीनुं माथुं जोइतुं होय तो में वृक्षनी डाळे टांग्युं छे त्यां तुं जाते आवी लइ जा. आ रीतना अनादरथी सतीनुं हृदय अधिक संतप्त थयुं छतां अन्य उपायने अभावे ते पृथीराजजी पासे गयां. ए वखते पृथीराजजीए सती सन्मुख अदाजीने संबोधी केटलांएक अघटित वचनोनो उच्चार करवा मांड्यो, परंतु ते तरफ लक्ष नहि आपतां सतीए पोताना प्राणेशनुं मस्तक हस्तगत करवा वाच्छो वाळ्यो अने आवेशने लीधे थरथरतां अंगोने घडि बे घडि स्थिर

राखी वृक्ष पर चढवा मांडयुं. पृथीराजजीनो वचनप्रवाह चालुज हतो. भावि आगळ भलभलेरा मनुष्यो पण बुद्धिबळने गुमावी बेसे छे. म्हावरो नहि छतां सत्य वृतना प्रभावथी वृक्ष पर चढेली सतीए अन्तिम शाखा सूधी पहोंची स्वामीना शिरने प्राप्त कर्युं. ए वखतनो देखाव घणोज दयाजनक होइ पाषाण सरखा कठिन हृदयमां पण कारुण्य प्रगटाववा सामर्थ्य धरावतो हतो, छतां पृथीराजजीना हृदयमां विशेष काठिन्ये वास कर्यो. स्वामीना शिर साथे विविध वातो करती तेमज तेने हृदयथी चांपती सती वृक्षथी नीचे उतरवा लागी. जो के ए पतिव्रतानी वृत्ति पतिना शिरमांज संलग्न हती, छतां तेना चरणोनी नियमसर थती गति सतीत्वनो अवर्णनीय चितार आपती हती. पतिनुं मस्तक लइ वृक्षथी नीचे उतरेली सती असह्य वचनबाणोनी वृष्टि वरसावता पृथीराजजी प्रत्ये बोली उठी के मने तो मारा प्राणेशनुं मस्तक प्राप्त थयुं, पण तारी स्त्री एटली बधी अभागिणी थशे के " तारी शी गति थइ " ए पण नहि जाणी शके, आटलुं कही सती तो अद्दाजीनी साथे बळी मुवां अने पृथीराजजी पेशकसी उघराववा निकळेल बादशाही सूबा साथे चाली निकळ्या. हवे जे स्थळे लश्करनो पडाव नांखवानो निश्चय करवामां आव्यो हतो ते स्थळे प्रथमथीज बंदोबस्त करवा सूबाए पृथीराजजीने मोकली आप्या. पृथीराजजीए त्यां जइ आसपास जळनी तंगी होवाने लीधे एक कुवा उपर पोतानो तंबू तणाव्यो, तेनी चारे बाजुए पोताना माणसो माटे गोठवण करी अने बादशाही लश्कर माटे जरा दूरना भागमां तंबूओ नंखाव्या. लश्कर आवी पहोंच्युं, पाणीनी ताण पडवा मांडी, सूबाए पृथीराजजीने पूछ्युं के पाणीने माटे शो बंदोबस्त कर्यो ? त्यारे पृथीराजजीए जवाब आप्यो के आ स्थळनी आजुबाजुए तपास करावतां जळ क्यांइ पण जडतुं नथी, आथी लश्करी सिपाहीओ आपत्तिमां आवी पडया. तेओ बिचारा छ सात माइल पर एक तळाव हतुं त्यां जइ जळ भरी लाववा लाग्या अने ज्यांसूधी ए स्थळे रहेवुं पडयुं त्यां सूधी सूबाना समग्र सैन्ये हद विनानी हाडमारी वेठी. तेवामां खापरा कोडीया सरखा कोइ एक सिपाहीए सूबाने खबर आप्या के पृथीराजजीना तंबूमां एक कुवो छे, छतां " आटलामां पाणी नथी मळतुं " एवुं असत्य बोल्या. तपास करावतां सूबाने ए सिपाहीनी वात सत्य जणाइ, जेथी तेणे पृथीराजजीना उक्त कर्तव्यने विश्वासघात तेमज छळभेदरूप समजी लीधुं, ते लीधेला पदथी मुक्त थयो अने तुरतज पृथीराजजीने कैद करी उपाडी गयो. पाछळथी पृथीराजजीनुं शुं थयुं ए कोइना जाणवामां न आव्युं.

पृथीराजजीना संबंधमां वळी एम पण कहेवामां आवे छे के श्री हळवदना गादी गादी

सत्यभामाजी के जे जोधपुरना राठोड सूर्यसिंहजीनां कुंवरी, राज चन्द्रसिंहजीनां पत्नी अने कुमार आशकरणजी अने अमरसिंहजीनां मातुश्री हतां; तेओना अन्तःकरणमां स्वार्थवृत्ति उद्भवी; तेओए पोतानां न्हानां व्हेन के जेने दिल्हीना शहेनशाह साथे परणाव्यां हतां तेने एक पत्र लखी जणाव्युं के-तमो अमारा हितनी खातर गमे ते प्रकारे बादशाहने समजावी अहींना पाटवी कुमार पृथीराजने तुरतमां त्यां तेडावी मारी नंखावो तो भविष्यमां तमारा भाणेज आशकरणजी तथा अमरसिंहजी हळवदनी गादीना हकदार थइ शके. ए रीतनो पोतानां व्हेननो पत्र वांची ए बाइए बादशाहने समजाव्या अने अमदावादना सूबा उपर पृथीराजजीने सत्वर पकडी दिल्ही मोकलावी आपवा संबंधी हुकम लखाव्यो. ए हुकम मळतांज सूबाए म्होटी फोज लइ हळवद उपर चढाइ करी. राज चन्द्रसिंहजीए बादशाही लश्कर साथे छ मास पर्यन्त युद्ध कर्युं, उभय पक्षना केटलाएक योद्धाओ काम आव्या. अन्ते सूबो एवी समाधानी उपर आव्यो के जो मने पांच लाख रुपिआ मळे तो हुं अहींथी अमदावाद चाल्यो जाउं. ए वात उचित जणातां राज चन्द्रसिंहजीए तेज वखते त्रण लाख रुपिआ सूबाने गणी आप्या अने कह्युं के बाकीना बे लाख रुपीआ बनती उतावळे तमारा तरफ मोकली आपशुं. सूबाए कह्युं के ए वात कबुल छे, परंतु ज्यांसुधी ए बेलाख रुपिआनुं अमारुं लेणुं न पते त्यांसुधी तमारा पाटवी कुमार पृथीराजजी अमारी पासे रहे, तमारा तरफथी बे लाख रुपिआ मळ्या बाद अमो पृथीराजजीने पाछा हळवद मोकली आपशुं. राठोडराणी सत्यभामाए पाथरेली प्रपंचजाळथी राज चंद्रसिंहजी तद्दन अजाण्या हता, जेथी तेओए पोताना पाटवीकुमार पृथीराजजी के जेओ ते अरसामां वढवाण हता तेओने त्यांथी तेडावी सूबा साथे मोकली आप्या. बादशाही सूबो पृथीराजजीने प्रथम तो अमदावाद लइ गयो, त्यांथी तेने दिल्ही मोकलवामां आव्या अने त्यारबाद लाहोरना किल्लामां तेओनुं दगाथी मृत्यु थयुं× ए वखते पृथीराजजी साथे एक निमकहलाल नोकर हतो; तेणे गुप्त रीते वढवाण आवी पृथीराजजीनां राणीने खबर आप्या के आपना खाविंदने बादशाहे दगाथी मारी नंखाव्या छे अने वखते आपना कुमारोने पण ए लोको हानि पहोंचाडे एवुं अनुमान थाय छे, माटे आप अहींथी निकळी अन्य स्थळे विदाय थाओ तो वधारे सारुं. आवा शोकजनक समाचार सांभळी पृथीराजजीना राणीनुं हृदय अपार व्याधिने वहन करवा लाग्युं, सहन न थइ शके तेवी, दुःखरुपी दहननी

× पृथीराजजीने दिल्ही बोलाव्या हता, त्यांथी हळवद आवतां शोशण मुकामे तेओने झेर देवायुं हतुं एवुं एक जुनी नोट उपरथी जणाय छे.

ज्वाळाथी तेना तमाम अंगो तपायमान थयां. आ वात ज्यारे राज चन्द्रसिंहजीने काने गइ त्यारे तेओनां हृदयमां पण असह्य आघात थयो. तपास करतां राठोड राणी सत्यभामाए करेलो सघळो प्रपंच खुल्लो पड्यो. सत्यभामाना उक्त कर्तव्य उपर तिरस्कारने प्रदर्शित करता राज चन्द्रसिंहजी अत्यन्त क्रोधायमान थया अने तेनुं काळुं मुख कदी पण न जोवा दृढ संकल्प कर्यो. पतिनी वधती जती इतराजीथी वखते विकट परिणाम आवशे एम धारी सत्यभामाए कुमार आशकरणजी तथा अमरसिंहजीने उश्केर्या. आशकरणजीना हृदयमां स्हेजसहज पितृभक्तिनो आभास होवाथी तेओए उक्त कार्यमां अनुमति आपी नहि, परंतु न्हाना कुमार अमरसिंहजीए मातानां वचनने मान आपी पोताना पिताने मारी नाख्या; अने म्होटा भाइ आशकरणने वि. सं. १६८४ मां श्री हळवदनी गादीनुं आधिपत्य अर्पण कर्युं.

राज आशकरणजीए अमरसिंहजीने बार गाम सहित "मालवण" आप्युं. ए पहेलां तेओना लघुबन्धु राजसिंहजीने "कुडा" तथा 'शोलडी,' राणाजी तथा भोजराजजीने सात गामथी "माथक" अने सुरसिंहजीने "वेगडवाव" नो गरास मळ्यो हतो.

ज्यारे राज पृथीराजजीना मरण समाचार मळ्या त्यारे तेओनां राणी जाडेजी के जेनुं पीयर जामनगर तालुकाना गाम जालुडामां हतुं ते भयना मार्यां कुमार सरतानसिंहजी, रामाजी, वलुजी तथा उदयभाणजीने लइ पोताना दियर अभेराजजीने आश्रये गढथान आव्यां. ए समाचार हळवदमां अमरसिंहजीने मळता तेणे "पृथीराजनो परिवार हयात हशे तो वखते हळवदनी गादीनो हक मेळववा हिम्मत धरशे" एम धारी तेनुं निकंदन करवा गढथान उपर एक म्होटी फोज मोकली ठाकोर अभयराजजीए पृथीराजजीना राणीने कह्युं के–हवे हुं आपने अहीं राखी शकीश नहि, कारण के हळवदना सैन्य साथे मुकाबलो करी शके तेटला माणसो मारी पासे नथी. दियरना आवा दिलगीरी भरेलां वचनो सांभळी पृथीराजजीना राणीनुं अन्तःकरण अत्यन्त पीडायुं, परंतु तेणे केटलाक समय अगाउ चोटीला आणंदपरना काठी मूळुओने राखडी बांधी बन्धु मानेल हता त्यां एक माणस मोकली पोतानी दुःखकर दशानुं दिग्दर्शन कराव्युं. काठी मूळुओ[1] तेमने

---

[1] लखा मूळु नामना काठीए १२०० स्वार सहित अगराणी त्यां जइ पृथीराजजीना परिवारने मदद आपी हती एवो लेख इंग्रेज भाषामां लखायेल वांकानेरना इतिहासमां छे.

मदद आपवा माटे तुरतज पोताना सोळसो घोडेस्वार लइ गढथान आवी पहोंच्या अने तेओए कुमार सरतानसिंहजी विगेरेने निर्विघ्ने जांबुडे पहोंचाडो दीधा. ए वखते जामनगरमां जाम लाखाजी राज्य करता हता. कुमार सरतानसिंहजीनी उम्मर पण सोळ सत्तर वर्षनी थइ हती, जेथी जामसाहेबे तेओने म्होटी धामधूम साथे गढ इडर सबंध करी परणाव्या. कुमार सरतानसिंहजी जाम लाखाजीनी कचेरीमां बेठा हता त्यां कोइएक माणसे मश्करी करी के नागी कटार उपर थाप मारे एवो कोइ राजपूत हशे ? आ शब्दो सांभळतांज सरतानसिंहजीने शौर्य चढयुं; तेओए एज वखते मूछपर हाथ नांखी नागी कटारपर जोरथी थाप मारी, जेथी धकधकाट करती निकळेली रुधिरनी धारा वडे आसननो अग्र भाग भींजाइ गयो, परंतु ते तरफ लेश पण लक्ष नहि आपतां वीरताथी छवाएली मुखमुद्रा वडे मूछपर मूकेला कठिन करथी यमराजनी सहोदरी यमुना समान श्यामवर्णवाळी तीक्ष्ण तलवार म्यानमांथी तुरतज खेंची कहाडी. लघुवयमां भाणेजनुं आवुं भडपणुं जोइ जाम लाखाजीने अपार संतोष उपज्यो. कचेरीमां बेठेला सर्वकोइ स्तब्ध बनी गया. ए वखते कुमार सरतानसिंहजी बोल्याके—हजु तो मोसाळमां रही उदरपूर्ति करीए छीए परंतु जो कोइ यत्किंचित् मदद आपनार मळे तो अमारो गएल गिरास पाछो शा माटे न वळे ? जाम लाखाजीए जवाब आप्यो के—तमे जे धारो ते करी शको, एनी मने संपूर्ण खात्री थइ चूकी. तमारे शी मदद जोइए छीए ? खुशीथी कहो. जामसाहेबनी पोता प्रत्ये अपूर्व लागणी जोइ कुमार सरतानसिंहजीए एकहजार स्वारोनी मागणी करी, ए मागणीने जाम लाखाजीए प्रसन्नता पूर्वक मंजुर राखी. कुमार सरतानसिंहजी केटलाएक घोडेस्वारोने साथे लइ महान् हिम्मतथी हळवद उपर व्हारवटुं खेडवा लाग्या. ए अरसामां गढीआ उपर एक वांकानेर नामनुं न्हानुं सरखुं गामडुं हतु, तेनी अंदर बाबरीया अने महीया लोको आजुबाजुना मुलकनो माल लूटी लावी अमलचेन उडावता हता. राजकुमार सरतानसिंहजीए पण तेओनी साथे मैत्री बांधी गढीआपर रहेठाण राख्युं. " **विनाश काले विपरीत बुद्धि** " ए नियमानुसार एक दिवसे बधा बाबरीयाओए तथा महीयाओए मळी कुमार सरतानसिंहजीने संहारी तेओनी तमाम मील्कतने स्वाधीन करवानो संकल्प कर्यो अने तुरतमांज तेओने गढीआपर घेरी लीधा. पामर लोकोए रचेला प्रपंचनी खबर पडतां कुमार सरतानसिंहजीए एक घोडेस्वारने सत्वर नगर तरफ रवाना कर्यो, ए माणसे जामनगर पहोंची, जाम लाखाजी आगळ सघळी हकीकत जाहेर करी, एज वखते जामे गढवी रोडीआ राजवीर साथे एक जबरी फोज सरतानसिंहजीनी मददे मोकली आपी. जामना सैनिकोए अत्यन्त उतावळथी

गमन करी मद्दीका तथा गारीआना मध्य प्रदेशमां पडाव नांख्यो अने गढीआपर कये रस्तेथी चढी शकाय छे तथा कइ तरफ तोपोनो मोरचो मांडवाथी गढने तुरतमां तोडी शकाशे वगेरे बाबतोनो तपास कर्या बाद सिंधावदर तरफना विशाळ मेदानमां तोपोने बराबर गोठवी गढीआपर गोळाओनो मारो शरु कर्यो. अचानक उद्भवेल दैवी कोप समान तोपनी गर्जना सांभळी बेबाकळा बनेला बाबरीआओ अत्यन्त क्षोभ पाम्या. जामना सैनिको स्वल्प समयमाज गढने छिन्न भिन्न करी गढीआ पर चढी गया अने तेओए बाबरीआओने वीणी वीणी कापवा मांडया. त्यारे तेमांना केटलाएक कंपते शरीरे हथियार छोडी बे हाथ जोडी बोली उठ्या के अमोने न मारो, अमारो अपराध माफ करो अने अमारो खरो धणी कोण छे ए कृपा करी बतावो एटले अमो तेने पगे पडी अपराधनी माफी मागीए. ए वखते रोडीया गढवीए रहेम लावी बचेला बाबरीआओने अभयवचन आपी कह्युं के आजथी राज सरतानसिंहजी तमारा धणी छे. जाओ, तेओने पगे पडी माफी मागो अने हमेशां हुकम प्रमाणे वर्तन करो. बाबरीआओ रोडीआ राज-वीरना कह्या प्रमाणे राज सरतानसिंहजीने पगे पडी अपराधनी माफी मागी अने तेओने पोताना मालिक तरीके मान्य राख्या.

कोइ एम पण कहे छे के राजकुमार सरतानसिंहजीए जामनी मददथी नहि परंतु पोताना पराक्रम तथा बुद्धिबळथीज वांकानेर स्वाधीन कर्युं हतुं. तेओ वढवाणथी निकळी सीधा वांकानेर आव्या. वांकानेर ए वखते बाबरीआना कबजामां हतुं. सरतानसिंहजी तथा राजाजीए ए बाबरीआ लोकोने कहेवराव्युं के अमोने तमारा गाममां रहेवा आपो त्यारे ए लोकोए चोखी ना कही. जेथी सरतानजी पोताना कुटुंब सहित वांकानेरथी थोडे दूर तंबूओ ताणी रह्या. केटलाएक दिवसो वीत्या बाद सरतानजी तथा राजाजीए बाबरीआ लोकोने कहेवराव्युं के अमारे अमुक काम प्रसंगे अमदावाद जवानुं छे जेथी अमारा कुटुंबने तमारा रक्षण तळे राखी जइए तो जाळवशो के केम ? त्यारे बाबरीआओए वचन आप्युं के जो तमारा कुटुंब उपर कोइ पण आपत्ति आवशे तो अमो तेने जीव साटे जाळवशुं. सरतानसिंहजी तथा राजाजीने एज जोइतुं हतुं, तेओ पोताना हथियारबंध माणसो सहित जनानाना तंबूमां छुपाया अने एक दिवसनो अंतर नांखी पछी अफवा उडाडी के—गइ रात्रीए कोइ हरामखोरे अमारा उपर हुमलो करवा आव्या हता, अमो अहीं पहच्या नहीं सर्वोए एवुं नथी. आ खबर बाबरीआओने मळता तेओ तुरतज सरतानजीने मुकामे आव्या अने तंबूमां जनानखानुं हशे एम जाणी तमामने मुजरा पूर्वक गढीआपर लइ गया; त्यां सर्वने रहेवा

माटे एक सारुं मकान आप्युं. बनतां सूधी क्षत्रीओए मेदिनी मेळववा माटे सामे पगले युद्ध करी जयने प्राप्त करवो जोइए, परंतु ते क्यारे के ज्यारे पोता पासे वधती या ओछी सैन्य विगेरे सामग्री होय त्यारे. आपत्तिना वखतमां तो गमे तेवा छळभेद वगेरे उपायो योजीने पण कार्यसिद्धि करवानी छुट छे एम धारी सरतानसिंहजी तथा राजाजीए साथेना माणसो सहित खुल्ली समशेरे अचानक उतारोंथी बाहेर निकळ्या. बावरीया तथा मईया लोकोमांना जे पुरुषो अग्रगण्य हता तेओने झपटथी कापवा मांडया. धोळे दिवसे धाड पडी होय तेम बावरीआओना शोरबकोरथी गढीआनी भूमि गाजी उठी, सरतानजी तथा राजाजीनी कठिन कृपाणोए स्त्री बाळक तथा वृद्धोने अभयदान आपी घणा खरा कुटिल जनोनो कच्चरघाण वाळी नांख्यो. हृदयभेदक हाहाकारथी गढीआपर रहेनारी गोरीओ पोतानी अवनतिने प्रकट करवा लागी. आजुबाजुना प्रदेशमां लुंटफाट आदि घातकी कृत्यो करनार बावरीआ लोको जे गढीआना आश्रयथी निर्भय बनी सुखे जींदगी गुजारता हता, ते गढीआ पर राज पृथीराजजीना कुमार सुरतानसिंहजीए वि० सं० १६७० मां पोतानी स्वतंत्र सत्ता स्थापी. *

ए समये शरदऋतुना सुंदर दिवसो समाप्तिने प्राप्त थया हता, हृदयनी हिम्मतने तजावनार हिमंत ऋतुनो समय शीतल समीरनी सहायताथी धाममां बेठेला धीर पुरुषोने ध्रुजाववा लाग्यो, प्रवीण दंपतिनी मति काममां मेरावा लागी, सुशोभित शय्या पर श्याम विना शयन करनारी स्त्रीओ भारे संकष्ट भोगववा लागी, तृणना समुदाये नवपल्लवने धारण कर्या, लोध्रनां वृक्षो परम प्रशंसनीय प्रकाशने प्राप्त थयां, सरोजना समूह शुष्क थवा लाग्या, विरहिणी अंगनाओनां अंतःकरण उदासीनताने वहन करवा लाग्यां, परिपक्व थएल इक्षुना दंडरुपी धनुष्यने करमां धारण करी हिमंतरुपी हठीलो राजा पालारुपी पणछवाळां बाणवडे वियोगीओनां उरने वींधवा लाग्यो, दिवस लघु थयो, रजनीए दीर्घताने धारण करी, भामिनीओ यामिनीने एकान्तमां वितावबा लागी, संयोगिणी स्त्रीओ साटिननी सुरख शय्या बिछावी विविध क्रीडाओ करवा लागी, आलिंगन अने चुंबनना श्रमथी शरीरे प्रस्वेद छवाइ जतां टाढनो लेश मात्र भय न रह्यो; पीन स्तनवाळी प्रमदाओ कुचकुंभ माथे कुमकुमनो लेप नहि करता, कपोलपर कर्पूरनुं चूर्ण नहि धरतां, कुन्दननी माळाने कायाथी अलग

---

* राज सरतानजीए बांकानेरनुं राज्य इ० स० १६०५ वि० स० १६६२ मां स्थाप्युं एम पण कहेवाय छे.

करवा लागी; कोक (पक्षी विशेष–चकवा चकवी) नां हृदय शोकथी छवाइ गयां, दुष्ट जननी माफक क्रूर बनेलो कलानिधि दीनजनो उपर तलवार समान तीक्ष्ण रश्मिओने प्रसारतो विचरवा लाग्यो, पर्यंकनी अंदर पतिना अंकमां पडेली ललनाओ जीवननुं साफल्य लेखवा लागी, विरहिणी वनिताओ दशे दिशाओने दुःखमय देखवा लागी, अमीर लोको आछां वस्त्रोने अलग करी पशमीननां परिधानो पहेरवा लाग्या, सुभागी दंपतिना समूहमां परस्पर अत्तरना लेप थवा लाग्या, धान्यना समुदायथी सुसमृद्ध थयेली पृथ्वीपर हरिणनां यूथो हर्षथी फरवा लाग्यां, क्रौंच पक्षीनां सुंदर शब्दो सर्वत्र श्रवणे पडवा लाग्या, अगरना धूप अने मृगमदना सुगन्धथी अनंगनी वृद्धि करनारी तेमज गाढ नितंबने वारंवार विशाल वस्त्रथी आच्छादित कर्या छतां रतिक्रीडाना रंगमां नग्नपणाने प्राप्त थती प्रमदाओ पवननुं गमन न थइ शके एवा भवननी अंदर स्नेहाळ पतिनी संगे रमण करी हिमंत काळे महद हर्षथी म्हालवा लागी; पद्मना पुंजथी प्रकाशमान, मरालना मनोहर उच्चारथी शब्दायमान अने विमल वारिथी विराजमान सरोवरनी श्रेणि श्यामविरहिणी स्त्रीओना उरःस्थलमां शर समान सालवा लागी; नाथ साथे निरंतर रमनारी विलासिनी वनिताओ कमनीय करमांथी कंकणना वलय दूर काढी नांखी रति टाणे पतिए मसळेला उन्नत उरोजने ढांकतीं अवर्णनीय आनंद अनुभववा लागी, हीरा तथा मुक्ताहारना भारनो अस्वीकार करती केटलीएक मुग्ध वधूओ द्राक्षासवना पानथी प्रमत्त बन्या छतां केलि समये मुखथी नकारने उच्चारवा लागी, केटलाएक रसिक पुरुषो अत्तरथी तरबतर बनी पर्यंकपर पोतानी प्रियतमाने पगणे पाडी परस्पर परिरंभणमां पार वगरनो प्यार प्रसारवा लाग्या; रतिरंगमां पतिना दशनथी कपाएल कपोलवाळी, विगलित वाळवाळी अने रतिना श्रमथी श्रमित थवाने लीधे मन्द गतिथी गमन करती केटलीएक नवोढाओने निरखी विरहिणी वामाओ विशेष व्याकुळताने वहन करवा लागी, कंजना वृन्दो करमाइ गयां, निकुंजनी मंजरीओनुं नूर उडी गयुं, मकरन्दना विनाशथी वेगळा रहेला मधुकरोए मौन व्रत धारण कर्युं, हिमने लीधे पद्मीनो प्रकाश हणाइ गयो, शीतथी अत्यन्त अकळाएला पक्षीओ पण प्राणनो परित्याग करवा लाग्यां. मुग्धा स्त्रीओना स्तन तथा जंघास्थलना अग्र भागमां भराएलुं शैत्य रात्रिए रतिना भयथी भागी वियोगीओना अंगनो आश्रय लेवा लाग्युं, हिमंतना वायुथी वारंवार हाली रहेली प्रियंगुलता विरही जनोना विरह दुःखने पोताना हृदयमां धारण करी दिवसे दिवसे पीळी पडवा लागी; तुल्सीना वृन्दथी सुशोभित शरीरवाळो अनंगना उमंगमां वृद्धि करनारो पोतानी महत्ताथी मित्रना तेजने मन्द बनावनारो, गुंजाना पुंजथी अलंकृत अंगवाळो, शीतळ स्वभाववाळो अने मद-

रना पींछने मस्तके धारण करनारो हिमंतकाळ रमाकान्त जेवी रमणीयताने लीधे सर्वत्र पूज्य दशाने प्राप्त थयो. ए हिमंतकाले बालवयमां ज एवुं सामर्थ्य बताव्युं के म्होटा म्होटा शूरवीरोने पण क्षणवारमां शैत्यरुपी अमोघ शस्त्रथी शिथिल बनावी दीधा, शीतळ समीरना मारथी समग्र सृष्टिने कंपाववा मांडी त्यारे केटलाएक विरहीजनो एवी कल्पना करवा लाग्या के आ हिमंतकाळ नथी, परंतु विक्राळ पिशाच होय एवुं जणाय छे; कमळना समूह सुकाता नथी, परंतु आपणां सुखोज सुकाय छे; शरीरने सकम्प करनार शैत्य नथी, परंतु भयनुं आधिक्य होय एम भासे छे; कष्टवर्धक क्रौंच पक्षीना उच्चार नथी, परंतु हृदयभेदक प्रतिपक्षीना शब्द होय एवी प्रतीति थाय छे. आ रीते तर्कनी तरंगिणीमां तणाता वियोगीओ बाळहिमंतने राजी करवा माटे पावकरुपी रमकडांओनी भेट आपवा लाग्या तोपण तेनुं हृदय सदय न थयुं; संयोगीओने सुख देनार अने वियोगी जनोना जीव लेनार हिमंतकाळे चन्द्रनी उन्नति करी, सूर्यनी कळामां क्षीणता धरी, वारिजना वृन्दमां उदासी भरी, समृद्धिवाळा पुरुषोने सुखनो राशि समर्पण कर्यो अने दीन जनोने दुर्घट दुःख देवा मांडयुं; पोतानी प्रभुतामां पुण्यना विचारने परहरी शय्यारुपी सिंहासन पर चढी विरही जनोने दंड देवा तत्पर थएला हिमंत अने मन्मथरुपी उभय महाराजाओ विलासनी वधाइ वखते जावकनां तिलक, नूपुररुपी गायकनां गान अने अलकरुपी चमर वडे सुसेवित बनी एकी साथे एकज रजाइनी अंदर राज्य करवा लाग्या; शीतनी सत्ता दिगन्त पर्यन्त प्रसरेली होवाथी सूर्यनां किरणो सुखकर जणावा लाग्यां, रजनी रुपाळी अने दिवस दरिद्री जेवो देखावा लाग्यो, वायु वेगथी वावा लाग्यो, संतपुरुषोना चित्तमां चोगुणी चपलताए वास कर्यो, सुभागी जनो गरम मसालाओनुं सेवन करवा लाग्या; ज्यारे हिमंतकाळ भर यौवनने प्राप्त थयो त्यारे हमामनो तमाम दमाम निरर्थक बनी गयो, केटलीएक अनाथ अबळाओ रेशमनी रजाइमां छानी रीते छुपावा लागी, अनलनी अंगीठीने उरथी अलग न कर्या छतां हिमना भयथी बेभान अवस्थाने अनुभवती अंगनाओ विदेशमां वळुंभेला नादान नाथने निन्दवा लागी, परस्पर सुरापानथी प्रमत्त बनेल पुण्यशाळी दंपतिए चुंबन, आलिंगन अने रतिरंगमां हिमंतनी रात्रिओने अमन्द आनन्दथी निर्गमन करी.

जो के राज सरतानसिंहजीए गढीआ उपर स्वतंत्र सत्ता जमावी ए एक रीते आनंद पामवा जेवुं हतुं, परंतु हिमंतमां तेओ रंच पण सुखने प्राप्त करी शक्या नहोता, कारणके मनोहर महेलने बदले गढीआनी अंदर जे उघाडी ओसरीवाळां भांग्यां तुटयां गृहो हतां तेमां शीतळ समीरना

आघातथी थरथरते अंगे मात्र अग्निनी सहायताथीज आठे प्रहर वितावता, शाल दुशालाने बदले कामळाओथी रात्रिना वखते समग्र अंगोने लपेटी राखता, पलंगने बदले सींदराओथी भरेला वांकाचुंका खाटलामां पड्या रहेता, मखतूलना बिछानाने बदले मलिन गोदडीमां महामुशीबते निद्रादेवीनुं आराधन करता; अत्तर, अरगजा तथा मृगमद आदि सुगन्धी पदार्थोनो ए स्थळे अभावज हतो, हांडी तथा झुमरने बदले जोइए त्यां छींकाओनी अंदर मृत्तिकानां हांडलाओ लटकतां हतां; द्राक्षासवना दर्शन पण दुर्लभ हतां त्यां माधवी मद्य तो क्यांथीज मळी शके? ज्यां जुवार बाजरीना चक्कर, डुंगळीना दडा अने साथे जाडी पातळी छाशना घुंटडाओथी पेट भरी जींदगीने गुजारनारा बाबरीआ जेवा जंगली लोको रहेता होय, त्यां उत्तम प्रकारना अन्ननो जत्थो कोण एकठो करी राखे? राज सरतानसिंहजीए धीमे धीमे गढीआपर सर्व वस्तुओनो संग्रह करवा मांड्यो, जेम जेम आमदानीमां वृद्धि थती गइ तेम तेम तेओ राजकीय वैभवोने वधारवा लाग्या. जो के तेओना प्रचंड प्रहारथी बाबरीआओ ताबे थइ गया हता, तो पण तेमांना केटलाएक महीया लोको मोरबी ताबाना शादुलका नामना गाममां रहेठाण राखी वारंवार वांकानेरना मुलकपर हुमलाओ करता हता. कहे छे के–राज सरतानसिंहजीए तेओने जडमूळथी उखेडी काढवाना इरादाथी जुनागढनी मदद मागी, परंतु ए मागणी तद्दन निष्फळ थइ त्यारे जामनगर माणस मोकल्युं. जामसाहेबे कल्याणजी नामना चारण साथे बारहजार घोडेस्वारोनुं लश्कर मोकली आप्युं. ए लश्करनी सहायताथी राज सरतानसिंहजीए शादुलका उपर चढाइ करी. महीया लोको मरणीया बनी धींगाणुं करवा तैयार थया; परंतु स्वल्प समयमाज राज सरतानसिंहजीए समशेरना सपाटाथी शादुलकाने स्वाधीन करी लीधुं अने प्राणघातक हारने लीधे भयभीत बनी भागेला महीया लोको जुनागढना प्रदेशमा जइ वस्या.

त्रिशूलीनी[1] माफक त्रिशूळथी घेराएला राज सुरतानसिंहजी चालाक, पराक्रमी तेमज साहसिक होवाने लीधे महीया लोकोने मात करी एक शूळथी तो मुक्त थया; बाकीना बे शूळमां-

---

१ त्रिशूली–शंकर. त्रिशूल–(शस्त्र विशेष)ने धारण करनारा अथवा विष, अग्नि अने सर्प ए त्रण शूळने क्रम पूर्वक कंठ, भाल अने उरःस्थलमां धारण करनारा २ प्रतिपक्षी बनेला महीया लोकोने पराभव आपवो, हळवदने हाथ करवानी चिन्ता अने वांकानेरना उज्जड मुल्कने आबाद बनावी तेमां वृद्धि करवी ए त्रण शूळ–त्रिशूळ.

थी हळवदने हाथ करवानी चिन्तारूपी शूळ महान् मजबूत हतुं, जो के ए शूळनी शीघ्रताथी शान्ति थाय तेम न हतो, तो पण महान् शूरवीर सुरतानसिंहजीए हळवदना प्रदेशमां उपरा उपर हल्लाओ करवा मांडया. एथी मनधार्यो लाभ तो न मळयो, परंतु त्यांना राजसाहेबनने एटली तो खात्री थइ के राज सुरतानसिंहजी वैरनो बदलो वाळया विना कदि पण छोडशे नहि. बहुज टाढने लीधे राज सुरतानसिंहजीए थोडा वखत हळवद नरेशने हेरान करवानुं काम बंध राख्युं हतुं.

हिमंतनो अंत थतां शिशिरनो समारंभ थइ चूक्यो, धरणीपर धान्यनां क्षेत्रो खीली निकळ्यां, इक्षुना समुदायथी सृष्टिए अपूर्व सौन्दर्य धारण कर्युं, क्रौंच पक्षीओना कलित कोलाहलथी दशे दिशाओ शब्दायमान थइ, व्योमथी हिमनी वृष्टि वरसवा लागी, प्रवासी पुरुषो पोतपोताने घेर आवी पहोंच्या, तमाम जनोए विदेशगमननी वातोने तजी दीधी, सर्व कोइ कामोद्दीपनना साधनो सजवा लाग्या; ज्ञानीओनां ज्ञान, ध्यानीओनां ध्यान अने मानीओनां मान एकी साथे छूटी गयां; मखमलनी सेजमां विशाल दुशालाओ ओढी शयन कर्यां छतां शीतना प्राबल्यने लीधे मुखमांथी सीसकारा निकळवा लाग्या, चंदनना लेप अकारा थइ पड्या, चन्द्रना किरणो पण चित्तने भयभीत बनाववा लाग्यां, उरमां दरद उपजावनार शरद् समीरना सपाटाने लीधे हर्म्यना पृष्ठ भाग पर क्षण मात्र पण शयन करी शकाय एवुं न रह्युं, वासरे वामन रुप धारण कर्युं, यामिनीए अति दीर्घतानो अंगीकार कर्यो, दादुर अने चातक आदिना उच्चार बंध थया, मकरन्दनां उत्तम भाजनो अलग थवाथी वैराग्यवान बनेली माधवीलताए विश्वना अनित्य वैभवोथी मनने वाळी लीधुं, शीतळ जळनी अंदर मीन आदि जन्तुओ मुंझावा लाग्या, हिमथी अकळाएला हंसो विलासनी वातने विसरी गया, सुरापानथी मदमाती बनेली सुभागिणी स्त्रीओ प्रियतमनो छातीथी छाती लगावी शिशिरना आठे याम उमंगथी विताववा लागी, निर्वात कुटीमां निवास करनारा, उष्ण द्विपटीने ओढनारा, घृत घटीनी साथे गरमागरम क्षिप्र चटीना खानारा, निर्धूम अग्निवाळी शकटीने निरंतर सेवनारा अने नवपरिणीत वधूटीनी कटि तटीथी लपटी रहेला लहेरी नायकोने शिशिर काळ परम सुखदायक थइ पड्यो, ए शिशिरनो सघळो समय राज सुरतानसिंहजीए विविध सुख वैभवोथी विताव्यो, त्यारबाद तेओ फरी हळवदपर हुमलाओ करी राज अमरसिंहजीने ' हळवद हाथ रहेशे के नहीं " एवी शंकामां निमग्न करता, तेनी साथे वांकानेरनी आसपासना धाडपाडु काठी लोकोने मारी जेर करी तेओनां गामोने तावे करता. लगभग त्रण वर्ष पर्यन्तना सतत प्रयत्नथी पोतानी रीयासत ठीक देखाय तेटलो मुलक घेर करी राज सरतानसिंहजीए राजधानी योग्य एक

नवुं शहेर वसाववानो मनोरथ कर्यो.

ए अरसामां वचनसिद्धिवाळा कोइएक त्रण महात्माओ (एक मलंग फकीर, बीजो अतित–गुंसाइ अने त्रीजो रामानंदी साधु) भिन्न भिन्न दर्शनना होवा छतां शुद्ध प्रेमथी साथे विचरता हता. फकीरनुं नाम महमदशाह, अतीतनुं नाम दरजनपरी अने साधुनुं नाम वनमाळीदास हतुं. ए त्रणे पूर्वाश्रममां जातिए ब्राह्मण अने एकज पिताना पुत्र हता. पूर्वना प्रबळ संस्कारने लीधे वैराग्यवान बनेलो ए त्रणे बन्धुओ जुदा जुदा धर्मनो अंगीकार करी घेरथी चाली नीकळेला. प्रथम तेओ अमुक ब्राह्मणने पिता तरीके मानता; परंतु पछीथी परमकृपाळु परमेश्वरने पिता तरीके मानवा लाग्या. ए रीते मात्र पितानी अने जातिनी मान्यतामां फेर पड्यो, परंतु तेओना भ्रातृभावमां जरा पण न्यूनता जणाती न हती. एक दिवस ए त्रणे महात्माओ फरता फरता गढीआपर रहेला वांकानेरनी स्मशानभूमिमां आवी उतर्या. साथेना शिष्यो धूणी माटे लाकडाओ लेवा निकळी पडया. ए वखते चोमासाना दिवसो होवाथी वरसाद पुष्कळ वरसतो हतो. ए महात्माना मंडलना आव्या पहेलां कोइएक सोनीनी दिकरी मरी गएली हती तेने अग्निसंस्कार करवा आवेला माणसो वरसादने लीधे अग्निसंस्कार न करी शक्या, रात्री पडी गइ, वाघ वरु आदि हिंसक प्राणीनो वधारे भय होवाथी ए स्थळे रात्रीने वखते रही शकाय एवुं न हतुं; जेथी ए लोको शबने एक म्होटा वृक्षनी डाळ साथे मजबूत बांधी प्रभाते अग्निसंस्कार करवानो निश्चय करी गढीआपर चालया गया. महात्माना शिष्यो काष्टनी शोध करता करता ए वृक्ष नजीक आव्या. ए वखते वरसाद रही गयो हतो, आकाश स्वच्छ थतां चन्द्रमाए दर्शन दीधां. वृक्ष उपर क्यांइ थोडुं थोडुं जोवामां आवतां ए सुकाइ गएली शाखा हशे एम धारी तेने तोडवा माटे महात्माना शिष्यो उपर चड्या, त्यां तो ए शब छे एम धारी मळेला थोडा घणां लाकडाओ लइ पाछा वळ्या अने गुरु पासे शब संबंधी वात करी, जेथी दयाळु अन्तःकरणवाळा ए त्रणे महात्माओ त्यां गया अने प्रभुनी पासे प्रार्थना करवा लाग्या. शब एज वखते सजीवन थयुं, सजीवन थएली बाइ रात्री, जंगल तथा विचित्र वेषना साधुओने जोइ भयथी रडवा लागी. महात्माओए ए बाइने तेनां माबाप वगेरेना नामथी वाकेफ थइ पोताना शिष्यो साथे गढीआपर मोकली आपी. मरण पामेली छोकरी साजीनरवी घेर आवतां सोनीओने आश्चर्य तेमज हर्ष थयो. पुत्रीना मुखथी महात्माओ संबंधी चमत्कारिक वात सांभळी सवार थतांज सोनीओए सुरतानसिंहजी पासे ए वात करी. परम श्रद्धाळु राज सुरतानसिंहजी पोताना

समग्र माणसो सहित तुरतज ए महात्माओना दर्शन करवा पधार्या, त्यां जइ त्रणेने पगे पडया. मलंग फकीर शाहबावाए राजसाहेबना मस्तक पर हाथ मूकी कह्युं के-बेटा छत्रपति ! आनंदमां रहो. आ वाक्य सांभळतांज राज सरतानसिंहजीने शाहबावा माथे विशेष श्रद्धा बेठी. कारण के पोते बहु सादा पोशाकथी घणा माणसो सहित त्यां पधार्या हता, छतां ओळखी काढ्या. शाहबावाना मुखथी आशीर्वाद सांभळी राजसाहेब बोल्या के-महाराज ! छत्रपति हतो, पण हाल तो घरधणी छुं. शाहबावाए कह्युं के-तुं छत्रपतिज छे, हुं तारा उपर प्रसन्न छुं. राजसाहेबे ए त्रणे महात्माओने आग्रह पूर्वक गढीआपर लइ जइ केटलाएक वखत सूधी रोक्या.

गढीआपर रहेला वांकानेरमां दिनप्रतिदिन वस्तीनो वधारो थवाने लीधे टेकरीपर तळावनुं पाणी तमामने पुरुं न पडी शकवाना सबबथी राज सरतानसिंहजीए शाहबावानी सलाहथी इ-स. १६०५, वि-सं. १६६१ मां मच्छु नदी तथा पताळीआ नामना वोंकळानी वच्चे वांकानेर नामनुं नविन शहेर विधिवत् वसाव्युं अने राजकुटुम्बने रहेवा माटे एक दरबारगढ पण बंधाव्यो. हळवदना केटलाएक लोको के जे राज सरतानसिंहजी तरफ वफादार हता ते तमाम वांकानेरमां आवी वसवा लाग्या. घणीज झडपथी शहेरनी आबादी थवा लागी. फकीर महमदशाह पण सरतानसिंहजीना आग्रहथी गाममां दरगाह बंधावी रह्या, राज तरफथी तेओने गाम अरणीटींबामांथी अमुक गरास आपवामां आव्यो. ए उपरांत महात्मा महमदशाहने गोंडळ, मोरबी, राजकोट, जूनागढ, जामनगर, अने भूज वगेरे स्थळेथी केटलाएक लागाओ मळवा लाग्या के जेनो अद्यापि उत्तरोत्तर क्रमथी थता आवता तेओना शिष्यवर्ग उपभोग करे छे. रामानंदी साधु वनमाळीदासने खीजडीयामां गरास मळ्यो, जेथी तेओ त्यां जइ रह्या, हजु पण खीजडीयामा बावावाळी पाटी एवा नामथी अमुक जमीन ओळखाय छे. त्रीजा महात्मा गुंसाइ दरजनपरीने पण राजसाहेबे अमुक गरास आप्यो हतो, परंतु हाल एनुं कांइ नाम निशान जाणवामां नथी.

राज सरतानसिंहजी जेवा शूरवीर तेवाज उदार हता, आसपासना मुलकमां तेओनी हाक बोलाती, देश विदेशमां तेओनो सुयश गवावा लाग्यो. काठी लोको तो राज सरतानसिंहजीनुं नाम सांभळतांज कंपी उठता. ए अरसामां मोरबीनुं राज्य गोरी मुसलमानोना कबजामां हतुं; त्यांना सूबा नवाबखाननो कारभारी एक कालु जोशी नामे सारस्वत ब्राह्मण हतो, तेने त्यां घणीज रुष्टपुष्ट एक गाय हती. ए गायने सूबा नवाबखाने कालु जोशीनी गेरहाजरीमा तेने घेरथी छोडावी अने पोताना खावाना उपयोगमां लीधी; घेर आवेला कालु जोशीने ए खबर

मळतां तेना हृदयमां क्रोधनी ज्वाळा प्रगट थइ, एणे अेज वखते एवी प्रतिज्ञा करी के " ज्यांसूधी गोरी बादशाह राजगादीपर होय त्यां सूधी मारे मोरवीनुं पाणी हराम छे " ए रीते विषम प्रतिज्ञा लइ चाली नीकळेला काळु जोशीए वांकानेर आवी राज सरतानसिंहजीने कह्युं के चालो, तैयार थाओ, हुं आपने मोरवीनुं राज्य निर्विघ्ने अपावी दउं. राज सुरतानसिंहजीने तो ए वात रुची, परंतु बीजा अमीर उमरावोए नम्रता पूर्वक अरज करीके नामदार ! आपणे हळवद सर करवानी तैयारीमा छीए, त्यां वखते पांच माणस ओछां थशे तो ए खोट तुरतमां पूरी पडी शकशे नहि, माटे हाल ए वातने पडती मूको, हळवद लीधा पछी मोरवीनो कबजो लेवो ए कांइ म्होटी वात नथी, कारणके ए तो आपणा खडीयानुं शीरामण छे. राज सुरतानसिंहजीए उमरावोनां वचनने मान आपी मोरवी जवानुं मांडी वाळ्युं. निराश बनेलो काळु जोशी पाछो फर्यो. ए अरसामां कच्छ भूजना मूळ पुरुष जाडेजा खेंगारजी तथा साहेबजी नामना बन्ने बन्धुओ अमदावादना बादशाह महमदबेगडाने पोतानी अवर्णनीय बहादुरीथी प्रसन्न करी राओनो इलकाब, मेळवी मोरवीनो पट्टो लइ लश्कर सहित त्या आवी पहोंच्या. परंतु नवाबखान महमदबेगडाना हुकमनो अनादर करी लडवा तैयार थयो. ए वखते काळु जोशीए समयसूचकता वापरी शहेरना दरवाजाओ खोलावी नाख्या अने राओश्री खेंगारजी सैन्य सहित अंदर दाखल थया अने नवाबखान तथा तेना कुटुंबीओने कतल करी मोरवीना मालिक बन्या. ए वखतथी मोरवीनुं राज्य जाडेजाओना कबजामां आव्युं. ×

राज सरतानसिंहजी मात्र वाकानेरनो तालुको बांधीनेज संतुष्ट न थया, रात्रि दिवस हळवदने सर करवानी तैयारीओ करताज हता, तेओए ज्यांसुधी हळवद सर न थाय त्यांसुधी परणती वखते चोथो फेरो न फरवानी प्रतिज्ञा लीधेली हती एनो आशय ए हतो के ज्यांसूधी अमारी बापुकी राज्यलक्ष्मी अमोने मळी नथी, त्यांसूधी अमारुं परणेतर अपूर्ण छे.

राज सरतानसिंहजीने बे राणीओ हतां. एक जामनगरनां जाम जसाजीनां कुंवरी अने

× राज सुरतानसिंहजी तथा राओ खेंगारजीना समयमां घणो तफावत छे, एओ समकालिन हता एवुं सिद्ध थइ शकतुं नथी, परंतु " **आटकाटनो डांडीओ, सीसमनी मोड: हळवद लेतां. मोरवी खोड** " ए पुरातन कहेवतने आधारे उपरनी हकीकत केटलेक अंशे साची होय एवुं अनुमान थाय छे.

बीजा इडरना राठोड राजा वीरमदेवजीनां कुंवरी, जाम जसाजीनां कुंवरीए मानसिंहजी तथा रामसिंहजी नामना उभय कुमारने जन्म आप्यो. ए जाडेजी राणी उपर राज सुरतानसिंहजीनो विशेष प्रेम होवाने लीधे राठोडराणी प्रतापबा उर्फे प्राणकुंवरबा वि–सं. १६७६ मां पोताने पीयर जइ रह्यां. त्यारबाद लगभग त्रण वर्ष पछी राजसाहेबे पोतानां केटलाएक विश्वासु माणसो साथे टापरीआ गढवी नाकाने इडर मनामणे मोकल्या, ए तमाम लोकोए इडर पहोंची त्यांना राठोड राजाने पत्र आपी कह्युं के–अमारा राजसाहेब आ वखते अनंत उपाधिओमां छे, तेमां आवो गृहक्लेश थाय ए सारुं नहि. इडर नरेशे उत्तर आप्यो के तमारा राजसाहेबनी अनंत उपाधिओने अळगी करवा हुं वचन आपुं छुं, पण एक वखते राजसाहेब मारे त्यां पधारे. नाका गढवीए कह्युं के–आप पत्र लखी आपो तो हुं पाछो जइ राजसाहेबने बोलावी लावुं, आपथी अमारे शुं वधारे छे ? इडर नरेशे पत्र लखी आप्यो, जेथी नाको गढवी वगेरे तमाम माणसो वांकानेर आव्यां. नाके एकान्तमां राजसाहेबने पत्र आपी कह्युं के–आपणो घणा दिवसनो हळवद सर करवा संबंधी मनोरथ तुरतमां फळे एम छे, कारणके इडर नरेश पोतानुं प्रबळ सैन्य मददे मोकलशे तो आपणुं इच्छित तुर्तमां मळशे; माटे कंइ पण विचार कर्या विना मुहूर्त जोवरावी तैयार थाओ. राजसाहेब खुशी थया अने राज्य ज्योतिषीने बोलावी मुहूर्त जोवराव्या बाद म्होटा ठाठमाठथी गामथी जरा दूर प्रस्थान करी पडाव नांख्यो. राज सुरतानसिंहजीनी हजुरमां एक नाका नामनो कारडीओ रजपूत हतो, ते राजसाहेबने दारु पावानी नोकरी बजावतो हतो. राजसाहेबे पडावमां पहोंचतां दारु पीवानो वखत थवाथी नाकाने बोलाव्यो. नाको दारु साथे लावतां भूली गयो हतो एथी राजसाहेबे गुस्से थइ कह्युं के–आवी म्होटी भूल केम करी ? नाके जुवानी तथा जाडी बुद्धिना सबबथी जवाब आप्यो के–बे घडि मोडो पीवाय तो शी हरकत छे ? हमणा लइ आवुं छुं. आ शब्दो सांभळी राजसाहेबने विशेष क्रोध व्याप्यो अने तेओए पोताना हाथमा रहेल घोडाने हांकवाना कोरडा वती नाकाने मारवा मांड्यो; बधा अमीरो आडा पड्या. नाको हलकी बुद्धिनो हतो ए अमीर उमरावो जाणता हता, छतां तेना उपर राजसाहेबनी महेरबानी होवाने लीधे कांइपण बोली शकता नहि. पण आ वखते नाकानी आंख फरेली जोइ अमीरोए राजसाहेबनी आगळ अरज करी के नामदार ! आ वखते नाकाने दारु लेवा मोकलशो नहि, एनी अवेजीमां बीजो जाय तो सारु. राजसाहेबे हठे भराइ कह्युं के, नहि, एज जइने लइने आवे, नाको तुरतज पाणीदार घोडीपर चडी वांकानेरने बदले हळवद तरफ चाली निकळ्यो. इडरथी आवेलो कागळ राजसाहेबे वांची

पोतानी हाथपेटीमां मूकवा आपेलो ए नाकाना गजवांमांज हतो; जेथी नाको पोताने मार मारनारने खुवार करवा हिम्मतवान बन्यो हतो. बे त्रण कलाक थया छतां नाको न आव्यो, जेथी राजसाहेबे कह्युं के हजु दारु केम न आव्यो ? त्यारे अमीरोए जवाब आप्यो के, नामदार ! हवे नाकानी साथे जूदाज प्रकारनो दारु आवशे. गुस्सो उतरवाथी राजसाहेब बधुं समजी गया, तेओए पोतानुं हृदय वज्र जेवुं होवाथी भयभीत नहि थतां कह्युं के जेवो आवशे तेवो भरी पीशुं. निमकहराम नाकाए हळवद पहोंची अमरसिंहजीने इडर नरेशनो पत्र वंचाव्यो अने कह्युं के, जो तमारुं हित इच्छता हो तो आज घडिए लश्कर लइ राजसुरतानसिंहजीनी सामे प्रयाण करो, कारण के अत्यारे तेओना पासे माणसो थोडा छे अने पछी जो इडरनी मदद तेओने मळी तो तमारुं हळवद हाथ रहेवुं कठिन छे. राज अमरसिंहजीने ए वात योग्य जणातां तेओए तुरतज फोजने तैयार करी अने वांकानेरनो हदमा आवी भीमगुडानां ढोर वाळ्यां. गायोनुं धण वाळतां राज सुरतानसिंहजी वार कर्या विना रहेशे नहि एवी अमरसिंहजीने खात्री हती. तेमज थयुं. हळवदना माणसोए भीमगुडानी अंदर घासना वाडाओ हता तेमां आग लगाडी, आहीं राज सुरतानसिंहजी गगनमंडळमां दृष्टिगोचर थता धूम्रने जोइ तेनो तपास करवा स्वारोने मोकलता हता, तेवामां भीमगुडानी रैय्यते आवी पुकार कर्यो के हळवदना माणसोए काळरना वाडा सळगावी ढोर वाळ्यां छे. ए शब्दो सांभळतांज राजसाहेबे अश्वने सज्ज करवा आज्ञा आपी. अमीर उमरावो बोल्या के आवा मांगलिक कार्यना प्रयाणमा उपाधि करवानी आवश्यकता नथी, कारण के ए लोको आपणी सामा आव्या नथी, चोरनी मापक ढोर वाळी चाल्या जाय छे, तो जवा दो, पछीथी जोइ लइशुं. छतां राजधर्मथी रंगाएला सुरतानसिंहजीए कह्युं के, अमे गौब्राह्मण प्रतिपाल कहेवाइए छीए तो अमारे प्रथम एनुं रक्षण करवुं जोइए. राजसाहेबनी तैयारी मांगलिक कार्य प्रसंगे जवानी हती, जेथी सर्व कोइ दरदागीना तेमज जरीयन वस्त्रोने अंगपर धारण करी निकळेला हता, युद्धने अनुकूळ एके सामग्री न होवा छतां दरेक धणीना हुकमने माथे चढावी हळवदनी फोज पाछळ थया. माथक अने ओळ वच्चे उभय पक्षनो भेटो थयो. वांकानेरना माणसो स्वल्प छतां एकलोहीआ, संपीला तेमज बहादुर होवाथी आगळ वधता गया. तेओए हळवदना सैनिकोने मारी कापी माथक सुधी हांकी काढ्या. ए झपाझपीमा मूळीना परमार मेपजी मराया. हळवदनुं लश्कर हार पामी पोताने स्थाने जतुं हतुं, तेवामां मूळीना परमार सतोजी के जे लूंटफाट उपर पोतानो निर्वाह चलावता हता अने पांचसो घोडाथी

फेरो करवा निकळेला हता ते भावियोगे हळवदनी फोज भेळा थया. राज अमरसिंहजीने परमार सताजीए पूछयुं के—क्यां पधार्या हता ? त्यारे अमरसिंहजीए जवाब आप्यो के—अमो वांकानेरनी हदमां फेरो करवा गया हता, त्यां धींगाणुं थतां अमारी हार थइ, घणां माणसो काम आव्यां अने तेमां अमारो काको सेपजी पण मराया, हवे अमे आ वखते एओने कोइ रीते पहोंची शकीए तेम नथी जेथी पाछा जइए छीए. परमार सताजीए तेओने शौर्य चढाववा कह्युं के—सेपजी जेवा सारा माणसने मरावी बीले मोढे जतां शरमाता नथी ? पाछा वळो, चालो, पांचसो घोडाथी हुं तमारी मददमां आवुं छुं; वांकानेरवाळानुं शुं गजुं छे; आ वखते अमरसिंहजीने "भूख्याने भातुं मळवा जेवुं थयुं" तेणे तुरतज पोतानां माणसोने पाछां वाळी वांकानेर तरफ प्रयाण कर्युं. राज सुरतानसिंहजी शत्रुओने हरावी स्वस्थ चित्ते गाम माटेलमां रात्री गाळता रह्या हता, माणसो थाकेलां हतां, दुश्मनोने हार खाइ भागी गएला जाणी बधा निश्चिंत मनथी बेठेला हता; तेवामां धारवा करतां विशेष माणसोना दमामवाळी प्रतिपक्षीनी फोजने आवती जोइ फरी तमाम लडवा माटे तैयार थया अने नगारे घाव नांखी शत्रुओ सामे धस्या, भयंकर कापाकापी चाली, परंतु अंतमां घणा ते घणा. राज सुरतानसिंहजीना सरदारो एक पछी एक पडवा लाग्या अने पोते पण घायल थया, छतां तेओनी तीक्ष्ण तलवार दुश्मनोना दळनुं भक्षण करवा धाग्ती होय तेम क्षुधातुर कालिकानी पेठे कूदती हती. गढवी नाको राज साहेबनी साथेज रणांगणमां शौर्य बतावतो हतो, घणा घाव लागवाथी तेनुं कलेवर घोडापरथी नीचे पडवानी तैयारीमां हतुं, तेवामां कोइएक प्रतिपक्षीए पाछळथी प्रहार करी एक घाए तेनुं माथुं उडावी दीधुं. ए नाका गढवीनुं माथुं धडथी जुदुं पडयुं तो पण "वाह सुरतान, रंग सुरतान" एवा शब्दोना उच्चार करतुं हतुं. राज सुरतानसिंहजी हद उपरांत घायल थवाथी बेशुद्ध बनी पृथ्वीपर पड्या. साथे निकळेला लगारची, शरणाइवाळा अने मीर डाडीओ वगेरे सर्व कोइ पोतपोतानुं बाहुबळ बतावी काम आव्या. संग्राम रूप सुराने लावनार निमकहराम नाकानुं अन्तःकरण एटलाथीज तृप्त न थयुं. ए पापी राज सुरतानसिंहजीनुं मस्तक छेदवाना इरादाथी तेओने शोधवा लाग्यो. सुवर्णना झळकता लंगरथी ओळखी आगळ गएलो ए दुष्ट राज साहेबने मृतक मानी तेओनुं माथुं कापवा सज्ज थयो, तेवामां शूरवीर सुरतानसिंहजीए पोताना हाथमां पकडी राखेली तलवार वडे प्रहार करी ए पापीना कम्मरथी बे टुकडा करी नांख्या. "राजाओ दुष्टने दंड दे छे" ए वाक्य मरतां मरतां पण राज सुरतानसिंहजीए सत्य करी बताव्युं. हळवदनी सेना पाछी वाळी, वांकानेरना माणसोमांथी मात्र एक राज केराळानो

रहीज नाका नामनो कारडीओ रजपूत बचेलो, ते वांकानेर खबर आपवा आवतो हतो, परंतु घोडी थाकेली होवाथी प्रथम तेणे केराळे आवी पोतानी माताने कमाड उघाडवा हाकल पाडी; तेनी माताए कमाड उघाडी पूछ्युं के–धणी तो कुशळ छे नां ? नाकाए गद्‌गद्‌ कंठे जवाब आप्यो के–धणी तो काम आव्या. ए सांभळी अत्यन्त क्रोधायमान बनेली नाकानी मा बोली के धणी काम आव्या तो पछी तुं अहीं शा माटे आव्यो ? धणीनुं लूण हराम कर्युं ? मारुं दूध लजव्युं ? तारे बदले मारा पेटमां पत्थर पाक्यो होत तोपण कांइ उपयोगमां आवत. जा, तारुं काळुं मुख मने बतावीश नहि. माताना आवां कठोर वचन सांभळी नाके कह्युं के–मा ! हवे हुं शुं करुं ? घोडी बहुज थाकी गइ छे, त्यारे ए बाइए जवाब आप्यो के जो घोडी थाकी गइ होय तो आ आपणी बीजी बछेरी तैयार छे के, तेना उपर सामान नांखी आपुं. नाकानी हा नानो जवाब नहि लेतां बछेरीपर सामान कसी तेनी माताए कह्युं के जा क्षत्रीओए करवा लायक काम करी बताव. नाके कह्युं के मा ! आ बछेरी मने शी रीते त्यां पहोचाडशे ? बाइए प्रत्युत्तर आप्यो के–जातनां फरजंद कदी पण कजात निवडतां नथी. जा, हुं खात्रीथी कहुं छुं के आ बछेरी तने दुश्मनो भेळो करी देशे. नाको तुरतज बछेरीपर सवार थयो अने पोतानी जनेताने प्रणाम करी चाली निकळ्यो. जातवान बछेरीए कांइ पण हठ नहि करतां पंखी जेवी गति करी अने दुश्मनोनी फोज हळवदथी एक गाउ दूर हती त्यां भेटो करावी आप्यो. नाको भय रहित बनी एकदम फोजमां घुस्यो, फोजनां माणसोए जाण्युं के ए कोइ आपणो माणस हशे. रात्रीने लीधे सर्वत्र अन्धकार प्रसरी रह्यो हतो, निमकहलाल नाके मध्यमां जइ पूछ्युं के अमरसिंहजी क्यां छे ? त्यारे अमरसिंहजीना कोइएक काबिल माणसे अमरसिंहजीने बदले तेना कोइएक हजुरीने बताव्यो अने विचार्युं के–जो आ परायो माणस हशे तो हमणा खबर पडशे. नाकाए तुरतज हजुरीने अमरसिंह धारी तेना एक घाए बे टुकडा करी नांख्या. लश्करमां घोंघाट मच्यो अने " दगो दगो " ए रीतना पुकार थवा लाग्या. नाको तो पोतानु काम करतोज रह्यो. लगभग अढार ओगणीश माणसोने मारी पोते पण काम आव्यो. *

आ युद्ध वि० सं० १६७९ ना चैत्र शुदि १० ने सोमवारे थयुं हतुं. केटलाएक एम पण कहे छे के प्रथम हळवदना लश्करनी हार थइ ए वखते परमार मेपजी तथा अरजणजी मार्या गया. तेवामां मेपजीना भाइ धावजी तथा रणमलजी उमो घोडा साथे काठिआवाडमांथी

* ए नाकानो पाळीओ हळवदथी एक गाउने छेटे हाल पण छे.

आवता हता त्यां तेणे पोताना भाइ मेपजीना मरण समाचार सांभळी फरी अमरसिंहजीने लडवा माटे उश्केर्या. परमार घावजीए राज सुरतानसिंहजी पासे पोताना भाइ मेपजीनुं शव माग्युं. परंतु राजसाहेबे आपवानी ना कही, जेथी भयंकर कापाकापी चाली; घावजी तथा रणमलजी छसो घोडा सहित मराणा अने राजसुरतानसिंहजी पण अनेक शत्रुओनो संहार करी समरशायी थया.

जे स्थळे राज सुरतानसिंहजी पोताना बहादुर लडवैयाओ सहित मराणा ते स्थळे तेओना कीर्तिस्थंभो उभा करवामां आव्या, तेमा खुद सुरतानसिंहजीना कीर्तिस्थंभ उपर एक न्हानी सरखी देरी करावबामा आवी; के जे अद्यापि विद्यमान छे. सुरतानसिंहजीनी एक शूरा तरीके तेना वंशजोए स्थापना करी प्रसंगोपात हजु पण तेनुं पूजन थाय छे. दरवर्षे काळीचतुर्दशीने दहाडे सुरतानसिंहजीना तेमज बीजा शूराओना पाळीआओ उपर सिन्दूर चढाववामां आवे छे. वांकानेरना राजवंशी वरघोडीआ सुरतानजीनी देरीए दर्शने जाय छे अने त्यां रीत मुजब दाद चूकव्या बाद छेडाछेडी छोडे छे. ए क्रिया करवामां कोइ पण गफलत राखता नथी, कारणके एओना अन्तःकरणमां एवी श्रद्धा बेसी गएली छे के जो ए क्रिया न कराय तो वरघोडीआ यावज्जीवन सुखी थायज नहि.

राज सुरतानसिंहजीनो स्वर्गवास साभळी इडरमां रहेळा राठोड राणी प्रतापकुंवरबा सती थयां, तेनी साथे श्रीमाळी ब्राह्मण हरिशंकरनो दीकरी सूरजबाइ पण कुमारिका अवस्थामां सखी भावना अपूर्व स्नेहने लीधे बळी मुवा, के जे आज सुधी वांकानेरना दरबारमां शक्तिना डाबलानी अंदर फळां रुपे पूजाय छे. सतीनो श्राप थयो के हळवदनी गादीए कोइ राजा सुख न भोगवे एटला माटे राज रायसिंहजीए ध्रांगध्रामां राजगादी स्थापी.

राज सुरतानसिंहजीनी प्रशंसा करतां ए वखतना जूदा जूदा कविओए नीचे मुजब काव्यो बनावेलां छे.

दोहा.

धुंवा रव रव धुंधरी, चोदस पडे भंगाण;
कटका हटका ध्रुबके, सोहे राणो सरताण ॥ १ ॥

काढ कसुंवा केहरा, मध लहडे जुवान;
हे हरियळ भागा हसो, सोहे राणो सरतान ॥ २ ॥

गीत १.

भडलख भंजीया सरताण भडतै, राण त्रंबक रोड;
पवग आठु धडे पडिआ, कटक झटकां क्रोड;
वाटके छक्कड धडां वे धड, काटके केकाण;
भूखियो केसरी जेम भारथ, रमे हळवद राण;
झूम समरे पटा झलरख, कूत गरज कवाण;
ऊतरे सरताण आगे, घोट चोटा घाण;
वळळ सावळ झळळ वीजळ, खळळ चहुवळ खाळ;
सरताण हाथे मेप समीयो, पड्यो अजो पोंचाळ. भड०

गीत २.

सत्र सालस तुव वना सत साधण, आवट तारी हा असर;
सरहव कथ पामसे संकर. वरसे अपछर कथ वर;
तुं मरते वरीआ पीथल तण, अरदलनि तलुंवता अठे;
कमल कठे उपसे कमाली, कहे रंभा परणसे कठे;
अंत ताहरे मानहर ओपम, फरता अरि रहिआ अफर;
सजसे धमल कोणासर संकर, सज कामण रथ कोणांसर;
तुं अवतार धरीस झल तीहां, नित ऊठीं मचवण न वहे;
रुंडा एण हरमाल रोपसे, गमसेरंभ कुमार ग्रहे.

राज सुरतानसिंहजीनो स्वर्गवास थता तेओना पाटवी कुमार मानसिंहजी वांकानेरनी राज-
गादीपर बिराजमान थया, तेओ न्हाने उम्मरना होवाने लीधे राज्यनो समग्र कार्यभार तेओना

काका राजोजी चलावता हता. ए राजाजीने " रातीदेवळी " नामे गाम गरासमां मळेलुं हतुं; राज मानसिंहजीना मातुश्रीनी इतराजीने लीधे राजोजी रातीदेवळीमां रह्या अने पछीथी खोडूमां जइ तेणे दरबार बांध्यो. त्यारबाद देवनी अनुकूळताथी वि. सं. १६८१ मां तेओ वढवाणना स्वतंत्र मालिक बन्या. तेओना न्हाना भाइ बलूजी[1] तथा अदेभाणजीने गरासमां सरधारकुं मळेलुं हतुं. ए त्रणे भाइओ मूळीना भाणेज थता हता.

राज मानसिंहजीए उम्मरलायक थइ हळवदपर हल्लाओ करवा मांड्या, परंतु तेओ फावी शक्या नहि, तेओना लग्न " सीसांग " थएलां हतां; तेओने रायसिंहजी, भीमजी, भाणजी, अगरसिंहजी, वीरमजी, वरशोजी, रतनजी, तथा हरदासजी नामे आठ कुमार थया. वि–सं. १७०२ मां राज मानसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना पाटवी कुमार रायसिंहजी वांकानेरने टीले रह्या, भीमसिंहजीने " कणकोट "[2], भाणजीने " वघाशीयुं " अगरसिंहजी तथा वीरमदेवजीने खेरवा, राती देवळी तथा सरधारकानो थोडो भाग; अने वरसाजी तथा रतनजीने खेरवानो भाग गरासमा मळ्यो. सहुथी न्हाना कुमार हरदासजी निःसंतान मरण पाम्या हता.

राज मानसिंहजीना लघु बन्धु रामसिंहजीने लूणसरीयुं तथा बोकडथंभुं गरासमा मळेलुं हतुं. ए रामसिंहजीना वंशमां छठी पेढीए कलोजी तथा सबळोजी नामे बे बन्धुओ घणाज बहादुर थया; ए बन्ने भाइओ ज्यारे गोंडल ठाकोर पासे नोकरी करता हता त्यारे हादाखुमाण नामनो कोइएक काठी संख्याबंध स्वारो तथा पायदळ साथे काठियावाडमां लूटफाट चलावी रह्यो हतो अने धोळे दिवसे धाड पाडी गामो भांगतो हतो एक वखते एणे गोंडल तावानुं सतापर नामे गाम भाग्युं ए समाचार गोंडलमा आवतां त्यांथी जबरी वार चढी, कोटडाथी पण केटलाएक लडवैयाओ गोंडलना पक्षमां मळ्या; भादरकांठे उभय दळनो भेटो थयो; झाला कलाजीए काठीओनुं महान कटक जोइ गोंडलना तथा कोटडाना माणसोने शान्त रहेवा समजाव्युं, परंतु बाथी भरेला ए लोकोए कलाजीना कहेवा पर कांइ पण ध्यान नहि आपतां शेखीमां ने शेखीमा घोडाओने प्रतिपक्षीओ पाछळ मारी मूक्या हे हथीआरा काठीओ वीरहाकनी

---

[1] बारोटना चोपडामा एवुं लखेलुं छे के बलुजी तथा उदेभाणजीने पांचदुवारका नामनु गाम गरासमां मळ्युं हतुं, तेना वंशजो हाल सरधारकामा छे अने ते नीचाणी पाटीवाळा कहेवाय छे.

[2] बारोटना चोपडामां भीमसिंहने कणकोट उपरांत सरधारकु मळ्युं हतुं एम लखेल छे.

साथे मारवा मरवानो निश्चय करी सामा थया. समशेर अने भालांओना प्रहार पूर्वक युद्धनो आरंभ थतां कंपायमान बनेला कोटडाना लोको एज वखते पलायन करी गया, गोंडलीआओ पण गर्व छोडी न्हासी गया, मात्र कलोजी तथा सबळोजी पोताना कुळनी टेक जाळववा माटे रणमां अडग रही शत्रुओना समुदायपर तुटी पड्या; आशरे एकहजार काठीओ फक्त बेज झालाओना बाहुबळथी छिन्नभिन्न थइ गया. वीरवर कलाजीए हादाखुमाण उपर समशेरनो प्रहार कर्यो अने सबळाजीए तेना बावळा नामना अश्वने ठार कर्यो. झाला रामसिंहजीना भीम अने अर्जुन जेवा पौत्रोए एवी धमचक मचावी के काठीओनुं कटक भयभीत बनी भागवा लाग्युं. अगणित अश्वोना धावनथी उडेली धूलिने लीधे आकाश धूसरित बनी गयुं. कलोजी तथा सबळोजी संसारनो मोह छोडी सेंकडो प्रतिपक्षीओना मध्यमां खुल्ली कृपाणे खेलवा लाग्या, वृक्षथी पर्ण खरे तेम करपद आदि अवयवोना पात थवा लाग्या. घायल जनोनां गात्रमांथी धकधकाट करती रुधिरनी धाराओ छूटवा लागी, काठीओना बचचनी कडीओ तडोतड तूटवा लागी. "मारो मारो" अने "कापो कापो" एवा शोर सांभळी जेम पोष मासनी रात्रीमां प्रमदा विनानो पुरुष ध्रुजे, तेम कायरजनो कंपवा लाग्या, खरा शूरवीरो हता एज कलाजी सन्मुख स्थिर थइ शक्या, खरेखर ए वखते वीरवर कलाजीए वांकानेरना पाणीने विश्वमां विख्यात कर्युं. ए बन्ने बन्धुओए हादो, सामत, वरु अने हमीर नामना चार अग्रणी पुरुषोने मारवानो संकल्प कर्यो हतो, तेमांना त्रणने तो तुरतज यमराजना अतिथि बनाव्या; मात्र एक हादोज घायल अवस्थाए बचवा पाम्यो हतो, परंतु ते ज्यांसुधी जीव्यो त्यांसुधी कसूंबो लेती वखते तेने कलाजीनो रंग आपतो हतो अर्थात् कसूंबो पीवा टाणे हमेशां ए एवुं बोलतो के रंगछे झाला मरद कलाजीने जेणे हजारो माणसो वच्चे हिम्मतथी प्रवेश करी मारा उपर प्रहार कर्यो

खुमाणोनी आंखमा खटकी रहेला कलोजी तथा सबळोजी एज युद्धमां छेवटे काम आव्या हता. एना पराक्रमनी प्रशंसा करतां कवि लोकोए नीचे मुजब गीतो कहेलां छे.

गीत. १

करे ठाठ कटकांतणा कोळीए काठीए, हण्यो लइ गामडा तणो होया;
वूंबीयो आवीयो गोंडले वरकतो, सतापर हाकले कीयो सोथा;
चडी वार गोंडलरी कोटडारी पण चडी. भादरे थका अनवार भाळ्या;
वावळे कलानुं कर्युं नहि वारियुं. चावळे मोरधा पवंग चाळ्या;

वि-सं. १९२७ ना महावदी ४ ने मंगळवारे ख़ु महाराजा बनेसिंहजी काशी तथा उत्तर हिंदुस्थान वगेरेनी यात्राए पधार्या, साथे कारभारी महेता दलपतराम प्रजाराम वगेरे सो माणसो हतां. प्रथम सीधा मुंबइ पधार्या अने त्यां आठ दिवस रही सरकारमांथी शस्त्रोना परवाना मेळव्या; त्यांथी चाली नाशिक अने त्र्यंबकमां त्रण दिवस रह्या अने केटलांएक पुण्यदान कर्यां, त्यारबाद प्रयागराज पधार्या, माणसोने अगाउथी मोकली दारागंज मध्ये रुगनाथजीनां मंदिरमा उतारानी गोठवण करावी हती. श्रद्धालु राज बनेसिंहजीए त्रिवेणीमा स्नान करी, श्राद्ध सारी गोरने उमदा पोशाक साथे रु. ८०० रोकडा आप्या. एकहजार ब्राह्मणोने जमाड्या अने दक्षिणा आपी. प्रयागमां आठ दिवस रही काशीए पधार्या, ए वखते टाढ बहुज पडती हती. श्रीमान राजसाहेबे मणिकर्णिकाना घाटपर न्हाइ विधिवत् श्राद्ध सार्युं. गोर गजानन चोबाने रु. १००० रोकडा दक्षिणाना अने उपर उमदा पोशाक आप्यो. बे दिवस पर्यन्त ब्रह्मभोज कर्यो, झालावाडी ब्राह्मणोनी नातमां पीतळना लोटानु ल्हाणुं कर्युं, तथा काशीविश्वनाथनी महापूजा भरी अने अन्नपूर्णा आदि अन्य देवालयोमां पण सारी रकम भेट आपी. कारभारी दलपतरामभाइए पण त्यां पोतानी नागरी नातने पकवान्ननुं भोजन आपी लोटानुं ल्हाणुं कर्युं. ए यात्रामां साथेना सर्व माणसो संतुष्ट थयां हता. राजसाहेब त्यांथी गयाजी पधार्या. ए वखते मीरझापर सूधी रेल्वे हती, जेथी त्यांसूधी ट्रेन अने पछी घोडागाडीओ तथा सीगराम वगेरे वाहनो भाडे करी गयाजी पहोंच्या. त्यां गोर न्हानाभाइ छोटालालनी हवेलीमां उतर्या. गयाजीमां वेदी ५० हती, तेमांथी मात्र अक्षयवटे राज बनेसिंहजीए श्राद्ध सार्युं अने बाकीना फल्गुगंगा, प्रेतशाला तथा बौधगया वगेरे ओगणपचास वेदीमां श्राद्ध सारवा पोताना आश्रित ब्राह्मणोने आज्ञा आपी. गोरने अष्टमहादानना रु. ११०० रोकडा तथा पोशाक आपी प्रसन्न कर्यां, चोराशी जमाडी अने त्यांथी पाछा काशीए पधारी छ दिवस रह्या; त्यारबाद वतन तरफ पाछा वळतां मुंबइमां नामदार फीटझराल्डनी मुलाकात लीधी.

राज बनेसिंहजीनां एक नानांबा नामे व्हेन हतां, तेओनां लग्न गोंडलना ठाकोर पृथीराजजी साथे करवामां आव्यां हतां. राज बखतसिंहजीना गजोडवाळा राणीश्री लाडुबाए पण पोतानां कुंवरीश्री माजीराजबा गोंडळ ठाकोर पृथीराजजीना कुमार भगवतसिंहजी साथे परणाव्यां, गोंडळ स्टेट तरफथी ए बाइने विलीयाळा गाम जीवाइमा मळ्युं. बाश्री लाडुबाए त्यांज पोतानुं रहेठाण राखी वि० सं १९२७मां कुंवरीश्री चांदाबाने राजकोट ठाकोर बावाजीराजवेरे परणाव्यां; अने कुंवरीश्री हरिबानो संबंध भावनगरना महाराजा श्री तख्तसिंहजी साथे ख़ु. महाराजा

राज वनेसिंहजी हयु थयो.

वि० सं० १९२८ ना महा वदी ६ ने शुक्रवारे राज वनेसिंहजी मोतीसरना गोहेल हरिसिं-हजीना पुत्री माकुबा वेरे परण्या. ए वखते खांडु लइ ओंझणामां म्हेता चीमनलाल दलपतराम वगेरे, ३५० माणस, १५० घोडा, तथा हाथी १ गएलो हतो. त्यारबाद वि० सं० १९२९ मां राज व-नेसिंहजी बंगालानी मुसाफरी करवा पधार्या हता, ए वखते तेओने भोपाळनां बेगम साहेबने गादीए बेसाडवानी क्रियामां कलकत्तानी अंदर लोर्ड नोर्थब्रुके भरेला दरबारमां जवानुं आमंत्रण मळ्युं हतुं. जेथी तेओ नामदारे त्यां जइ हाजरी आपी हती; अने ज्यारे ए बेगमने मुंबइनी अंदर कलकत्ताना नामदार वोइसराये चांद आप्यो ए वखते पण खु. राज वनेसिंहजी त्यां पधार्या हता.

वि० सं० १८६८ मां मजमुदार रंगीलदास गौरीदास मारफत वचा जमादारने तेना भ-त्रीजा इसबभाइना मस्तक बदल जे मेसरीआ गाम वांकानेर स्टेट तरफथी आपवामां आव्युं हतुं ते तथा तेना नीचेना त्रण गाम राज वनेसिंहजीनी अनुमतिथी नामदार सरकारनी मंजुरी मेळवी का-रभारी दलपतराम भजारामभाटे वि० सं० १९२९ ना मागशर शुदि २ ने दिवसे वडोदरावाळा महेता हरिप्रसाद रंगीलदास मारफत रु० ४५०००) पीस्तालीश हजारमां खरीदी स्टेट दाखल कर्या.

राज वनेसिंहजीना मूळीवाळा राणी जेठीबाए बाइ साहेबबा नामनां कुंवरीने जन्म आप्यो. त्यारबाद ते ओ नामदारनो संबंध सजनपरना जाडेजा विभाजीनां कुंवरीश्री जामबासाहेब साथे थयो. राणीओ घणां छतां छेल्लीवारनो संबंध मात्र वंशवृद्धि माटेज करवामां आव्यो हतो. ए संबंधनुं महेता दलपतरामभाइ द्वाराए नक्की थया बाद वि० सं० १९२९ ना चैत्र वदि ७ ने शनिवारे लग्न नि-रधार्या. वांकानेरथी खांडु लइ ओंझणु सज्जनपर गयुं. ए ओंझणामां पांचसो माणस, सवासो घोडा तथा बे हाथी गएला हता; ए तमाम पांच दिवस सज्जनपरमां रह्या अने धामधूमथी लग्ननुं काम पतावी वांकानेर आव्या.

वि० स० १९३० मां राज वनेसिंहजी जनानां सहित बहुचराजीनी यात्राए पधार्या, ए वखते तेओनी साथे कारभारी दलपतरामभाट वगेरे दोढसो माणसो हतां. बहुचराजीने आंगी ध-रावी, महापूजा करी राज वनेसिंहजीए ब्रह्मभोज कर्यो अने त्यांथी सिद्धपुर पधारी श्राद्ध सार्युं.

तथा पचाश मण घृत वापरी ब्राह्मणोने तृप्त कर्या. त्यांथी तेओ नामदार म्होटी अंबाजीए पधार्या, ए वखते दांतामां दिवस ७ रह्या हता.

बहुचराजी, सिद्धपुर तथा अंबाजीनी यात्राओ कर्या बाद तुरतमांज राज बनेसिंहजी जनाना सहित प्रभासनी यात्राए पधार्या हता ए वखते राजकोट तथा गोंडल तरफथी तेओनी घणीज सारी सरभरा करवामां आवी हती. ए बधी यात्राओमां स्व. महाराजा राज बनेसिंहजीए घणां घणां पुण्यदानो करी धर्मपर अपूर्व लागणी बतावी हती.

वि० सं० १९३१ ना वैशाख शुदि ८ ने दहाडे फैबाश्री हरिबासाहेबनां लग्न भावनगर महाराजा तख्तसिंहजी वेरे थयां. ए वखते राज बनेसिंहजीए तेओने वखाणवा लायक दायजो मोकलाव्यो हतो.

ए अरसामां सर्वत्र सुलेहसंप अने सुखशान्ति छवाएलां हतां. मात्र पाडलना काठी लोको मूळथीज उद्धत अने तोफानी होवाने लीधे वांकानेर स्टेटनी हकुमत तळे होवा छतां वारंवार एथी विरुद्ध वर्तता, तेनी साथे भीमघांघल वगेरे सरकारी व्हारवटीआओने आश्रय आपता. ए लोकोनी आवी गेरवर्तणुकने अटकाववा नामदार सरकार तरफथी ज्यारे वांकानेर स्टेटने सूचना आपवामां आवी, त्यारे महाराजा राज बनेसिंहजीए ए वात उपर विशेष लक्ष आप्युं, अने ता. १ ओगष्ट सने १८७५ रविवारना रोज चार पांच आबरुदार गृहस्थोने पाडल मोकली त्यांना मूळगराशीआओने उद्धताइ छोडी देवा तेमज सरकारी व्हारवटीआओने पक्षमां न लेवा समजूती आपी. परंतु ए वखते ए लोकोनी आंखोमां दारुनो नशो एटलो बधो व्यापी रहेलो हतो के तेओ न छाजे तेवा अपशब्दोनो उच्चार करी आवेला सद्‌गृहस्थोनो सामे थया. ए समाचार सांभळी ता. २ ओगष्टना रोज वांकानेर स्टेटना फोजदार वगेरे त्यां पहोंचो गया. आथी तो ए लोको बमणा जोशे भराया अने धींगाणाना तोर पर आव्या तेमज जोरथी शोरबकोर करवा लाग्या. बीजी तारीखे सवारमांथीज ए लोकोए शराबनो एटलो बधो छूटथो उपयोग कर्यो हतो के तेमांना कोइने पण सारासारनी भान रही न हती. कायदो शुं कहेवाय ए तो समजताज न हता. एक तो केळवणी वगरना अने वळी तेमां मदिरानी मेळवणी थइ एटले उद्धताइमां पूछवुंज शुं ? वांकानेर स्टेटनी पोलीसे बहुज शान्ति पकडी हती अने काम पण सुलेहथीज लेवा धार्युं हतुं, छतां ज्यारे कोइएक प्रतिपक्षीए बन्दूकनो अचानक फेर करी वांकानेरना एक सिपाहीने वींधो

नांख्यो त्यारे फोजदार वजेशंकर भवानीशंकरे पोतानी तथा साथेना माणसोनी सलामती माटे पाडलना लोकोनुं ए गेरकायदेसर वर्तन अटकाववा उद्यत थवानी आवश्यकता धारी. ए तो हजु सव्य अपसव्यनो विचार करता हता, त्या तो तलवार खेंची काठीओ कूदी पड्या; थोडीवार परस्पर झपाझपी चाली अने तेमां बन्ने तरफनां थोडां घणां माणसो घवायां तेमज मरण पाम्यां. नामदार ब्रीटीश सरकारनी शान्तिवर्धक सबळ सत्ता प्रवर्तमान छतां आवो जनूनो बनाव सहु कोइने आश्चर्यना सिन्धुमां निमग्न करे एवो छे. वळी पाडलना लोकोए एजन्सीमां पहोंचो रजुं गज करवामां मणा न राखी, परंतु दीर्घ दृष्टिवाळा सत्यपरायण सरकारी अमलदारो एकपक्षनी वात उपर इतबार राखी न्याय आपी दे तेवा नथी. ए तो पोतानी समक्ष उभयपक्षनी रजुआत सांभळ्या उपरांत साक्षी पुरावाथी जेनो गुन्हो सावीत थाय तेनेज दक्षताथी शिक्षा आपे छे. उपरना बनावमां वांकानेर स्टेट तरफथी कांइ पण गेरकायदेसर करवामां आव्युं न हतुं.

पाडलना मूळ गराशीआओ तथा वांकानेर स्टेट वच्चे जे धींगाणुं थयुं ए वात साधारण न हती के जे कोइ पण छुपावी शके. एजन्सीमां ए बाबत जबरो केस चालेलो हतो अने एनो फेसलो आपती वखते काठियावाडना श्रीयुत पोलीटीकल एजन्ट मे. जे. बी. पील साहेबे जे ठराव जाहेर कर्यो हतो ते अक्षरशः अमोए आ नीचे दाखल कर्यो छे.

ता. २ ऑगस्ट सने १८७५ सोमवारना रोज पाडलमां एकठा थएला खाचर गराशीआओ अने वांकानेर स्वस्थाननी पोलोसना वच्चे धींगाणुं थयुं ते बाबतमां अमोने नीचे मुजब हकीकत मालुम पडी छे.

खाचरोनी चाल बाबत—जणावे छे के पाडलना मूळ गराशीआ वांकानेर दरबारनी हकुमतमां रहेल छतां तेना कायदासर अखत्यारना सामा उघाडी रीते अने जबरजस्तीथी केटलाक महीना थयां वर्तता हता.

आवी तेमनी हठीली वर्तणुकमां मदद करवाने माटे तेमना सगा सबंधी जे बीजा गराशीआओ हता, तेओने पाडलमां एकठा करी राखता हता अने ता. २ ऑगस्टना रोज ए गाममां गोसळ, कराडी अने गरांभडीना गराशीआओ हता, अने ते सघळामां जे लोकोना विषे आसीस्टन्ट पोलीटीकल एजन्ट साहेबनो एवो अभिप्राय थयो हतो के तेओ पाडल घणो वखत जाय छे अने धींगाणु कराववाना प्रयत्नमां मदद आपे छे, तेवा लोकोने पाडल नहि जवा देवा माटे जामीन लेवानुं सायला दरबारने फरमाववामां आव्युं हतुं ते गराशीआ पण आमां सामेल हता.

वळी व्हारवटीओ भीमधांधल के जे हजु पकडायो नथी, तेने पाडलमां मूळ गराशीआ तरफथी आशरो मळेलो हतो अने तेमांना बे जणाए राज्यस्थानिक कोर्टना प्रेसीडेन्ट साहेब पासे एम जाहेर कर्युं हतुं के अमे भीमाधांधलने अमारा दरबार मारफत रजु नहि करीए.

अमोने एम पण जणाय छे के मूळगराशीआओने पोताना गरास सबंधी कांइ व्याजबी फरियाद तेमना उपरी वांकानेर दरबार सामे नहि हती, अने दस्तुर मुजब ठराव मेळववाने माटे पोताना दरबार पासे प्रथम जवुं जोइए तेमां कसुर कर्यांना सबबथी तेना हकनो निर्णय राज्यस्थानिक कोर्टने करतां देर थइ छे. दरबार तरफथी जे हकीकत जाहेर थइ छे ते उपरथी जणाय छे के मूळ गराशीआ मध्येना केटलाक उपर दरबार तरफथी गुन्हाना आरोप मूकेला छे. जेना इन्साफ माटे तेओ कायदा मुजब पोताथी तावे थवाने बंधाएला हता.

गया वरसमां जूदी जूदी वखते दरबारना तरफथी गराशीआओने समजाववा माटे आबरुदार आदमीओने मोकली तेमने व्याजबी वात पकडवानुं कहेवराव्युं हतु.

आवा वखत उपर अने सने १८७४ ना अक्टोबर महिनामां ते गाममां एक जाहेरनामु चोडयुं, तेमां जे लखाण कर्यु छे, ते व्याजबी अने सलाह संप भरेलुं छे अने ते जाहेरनामामां वळी गराशीआओने ताकीद आपी हती के तोहोमतदार लोकोने पकडवानी कोशीशमां सामा थवाथी जे टंटो थशे तेना तेओ जवाबदार रहेशे.

दरबारना तरफथी छेवटनी वष्टि (चार वेपारीनुं पंच) धीगाणुं थवाने आगले दिवसे पाडल मोकलाववामां आवी हती, एम दरबार तरफथी कहेवामां आवे छे अने ते बाबत कांइ शक लेवानुं कारण नथी के गराशीआ लोकोनुं सामा थवापणु एटले दरज्जे थयुं हतुं के पोलीसने झाडो लेवाना हकनी मनाइ करतां ते गाममां जे पोलीसनुं थाणुं हतुं ते उपर हुमलो करी तेनां हथिआर लइ गया.

जे हुकमो मोकलवामां आव्या हता तेमां १०० थी १२५ माणसो हता, अने तेओ मुसलमान जमादार अने फोजदार वजेशकरना उपरीपणा नीचे तरवारो अने थोडीक बन्दूकोथी हथिआर बंध थइ गया हता. जो गराशीआनी मददे गोसळना अने बीजां गामोना आदमीओ नहि आव्या होत तो त्यहांना गराशीआने भयभीत करवाने आटलुं लश्कर बस जणाय छे. कोणे प्रथम लडाइ शरु करी ते साबीत थइ शकतुं नथी, पण ए वात साफ छे के जे लोकोने पकडवानी कोशेश कर-

वामां आवी तेना सामे थवामां आव्युं हतुं. वांकानेर तरफनां माणसोने तलवार अने लाकडीथी मारवामां डसा अने तेमांना केटलाकने तलवारना जखमो छे. तेमां मुख्यत्वे करीने स्वार दादुजी अने तेना घोडाने तेना जखम छे.

वन्दुकना हथिआरबंध आदमीओनुं रेग्युलर पोलीसनुं थाणुं नजीक उभुं रहेलुं हतुं अने एम कहेवामां आव्युं छे के तेना उपरी नायकने जखमी करवामां आव्यो ते उपरथी पोलीसना आदमीओए गराशीआओ उपर वन्दुकनो मार चलाव्यो अने तुरत लडाइ बंध पडी, तेज जग्याए चार गराशीआ मरण पाम्या अने केटलाक जखमी थया, तेमांना बे आदमी पाछळथी मरी गया छे. गराशीआओ पोताना घरमां भागी गया अने केटलाकने पड्या मूकी जे लोको शरणे थइ गया तेमने केद करी पकडी लइ जवामां आव्या.

वांकानेर तरफना तेर आदमीओने तलवार, लाकडी अने पाणाना जखमो छे, अने पाडल तरफना अगियार आदमो जखमी थया अने छ मरण वश थया.

वगर क्वायदी सीवेदीनी साथे लडाइमां गराशीआ लोकनी चडीयाती हती एम घणे दरज्जे सभवित जणाय छे, अने आखर पोलीसने वच्चे पडवुं पडयुं; तेमना उपर वन्दुकनो मार चलाववाने कोणे हुकम आप्यो अने तेमणे केटली वखत वहार कर्या ते वात सावीत थइ शकी नथी.

वांकानेरना कारभारी दलपतराम हाजर नहि हता, पण ते नजीकना गाम मेशरीए हता. परतु ते वखते ए हाजर होत तो घणुं सारुं हतुं, केमके जेटले दरज्जे मारामारी नाखुशी लायक थएली छे तेनो अटकाव ते कदाचित् करी शकत.

लडाइ थइ रह्या पछी कांइ लूंटफाट के जोरजुलम वापर्यानुं सावीत थयुं नथी, अने वांकानेरनुं लश्कर पाछु फरी गयुं एटले ए वात घणे दरज्जे असंभवित छे.

अमारो अभिप्राय एवो छे के कायदासर अखत्यारनो तिरस्कार करवाने लीधे मूळगराशीआ तरफथी आ धींगाणुं उत्पन्न करेलुं छे अने तेम करवाना व्याजवीपणा माटे तेमना उपर कांइ जुलम अने गेरइन्साफ थतो होय एम जोवामां आवतुं नथी. अमो धारीए छीए के वांकानेरना राजसाहेब तरफथी पोतानो कायदासर अखत्यार वापरतां तेनी कोशीशमां आ मारामारी थएली छे अने तेने माटे मूळगराशीआओ जवाबदार छे.

अमोने एम पण जणाय छे के लोकोनी सुलेहनो वगर जरुरीआते जोग कर्या वावतनो

ठपको राजसाहेबने घटतो नथी. लडाइ थइ रह्या पछी नेमना आदमीओए लूंटफाट अथवा निर्दयता वर्तावावाने तेओ गुन्हेगार नथी.

खरी हकीकत जाणवाने माटे आ काममां तजवीज करवामां आवी छे अने तेथी पोतानी रैयत उपर राजसाहेबनी जे संपूर्ण फोजदारी हकुमत छे तेमां कांइ वच्चे पडवा जेवुं बन्युं नथी. तेमने अखत्यारमां हाथ घालवानी बाबत काइ हुकम आपवामां नहि आवे, परंतु आवा दिलगीरी भरेला बनावना जोखमथी अळगुं रहेवाने माटे जे उपायो लेवा जोइए तेमां हवेथी राजसाहेब बेशक पोलीटीकल खाताना अधिकारीओनी सलाह लेशे.

झालावाडना दरबार तथा तालुकदारोने आ ठरावनी खबर आसीस्टन्ट पोलीटीकल एजन्ट साहेब आपशे अने ते दरबारो तरफथी पोताना मूळगराशीआओने समजावी खबर आपशे के कायदासेर अखत्यारनो हथियारबंध अटकाव करवाथी तेमने सजा थया वगर रहेशे नहि, अने ते कामना गुन्हेगारनी बाबतमां एजन्सी वच्चे पडी शकशे नहि. "

ता० १६ ऑगस्ट, १८७५
मु. राजकोट.

सही.
मे. जे. वी. पील,
पोलीटीकल एजन्ट काठिआवाड.

वि० सं० १९३३ मां दिल्हीनी अंदर भराएला बादशाही दरबार वखते खु. महाराजा राज बनेसिंहजीने नव तोपनो सलामतीनो हक तेमना मानमां आपवानुं ठरववामां आव्युं. ए माननी यादगीरोमां राज बनेसिंहजीए वांकानेर खाते ता. १ जान्युआरी सने १८७७ ना रोज एक भव्य दरबार भर्यो हतो; अने तेमां मी. कोन्डोए भाग लीधो हतो. ए शुभ प्रसंग उपर महाराजा राजसाहेबे रु० २५०००) मुसाफरी बंगलो तथा बामणबोर मुकामे एक धर्मशाळा बनाववामां वापर्या. त्यारबाद वि० सं० १९३६ ना पोश शुदि २ ने दहाडे तेओ पोताना परीक्षक तेमज नामदार गवर्नमेन्ट सरकार तरफथी पोताने उत्तम बन्दूक वगेरेनां इनाम अपावनार मी. टी. सी. होप एज्युकेशनल इन्सपेक्टरनी सलाहथी दरियाइ रस्ते साठ माणसना रिसाला सहित श्री जगन्नाथजीनी यात्राए पधार्या, त्यांथी वळतां तेओ नामदार हिन्दुस्थानना नामदार गवर्नर जनरल लोर्ड लीटननी मुलाकात लीधी, त्यारपछी तेओ बीजी वार बनारस पधार्या अने त्यांथी दिल्ही, आग्रा, लखनउ, अल्हाबाद तथा उत्तर हिन्दुस्थाननो घणखरो भाग जोइ मुंबइ पधार्या, त्यां तेओ नामदार सर रीचर्डसेम्पलनी मुलाकात लीधी. ए अरसामां राजकोट मुकामे जेइम्स फरग्युशननो पण तेओने मि-

लाप थयो हतो. राजकोटथी वढवाण सूधी रस्ता पर कुवाओ तथा धर्मशाळाओ बंधाववा माटे राज वनेसिंहजीए एजन्सिमां रु० ३०००) त्रण हजार आप्या हता. तेओ एज वर्षना चैत्र शुदि ९ ने सोमवारे आनंदपूर्वक जगन्नाथजीनी यात्रा करी वांकानेर पधार्या. ए वखते वांकानेरमां झुंझा महेतानो कारभार हतो, कारणके वि० सं० १९३४ मां महेता दलपतराम प्रजाराम राजीनामुं आपी राजकोट गया हता. ए पछी गांधी करमचंद उत्तमचंदने ए जगो आपवामां आवी, एणे नव मास पर्यन्त कारभार कर्यो, त्यारबाद महेता झुंझाभाइ सखीदासने मोरवीथी बोलावी राज वनेसिंहजीए कारभारी बनाव्या हता.

राज वनेसिंहजी न्यायनिपुण, उदार अने मायाळु दिलना महाराजा हता, तेओना वखतमां स्टेटनी सारी आबादी थइ हती अने राज वखतसिंहजीना वखतनुं तमाम देणु चुकते अपाइ गयुं हतुं. दरबारगढनी अंदर कोर्टने माटे तथा दरबार भरवा माटे तेओ नामदारे एक सारो सगवडतावाळुं सुशोभित मकान बंधाव्युं, वांकानेरनो किल्लो के जे तद्दन जर्जरित बनी गयो हतो, तेना समार काममां रु. २००००) वीश हजारनी म्होटी रकम वापरी; प्रजानी तंदुरस्ती तथा सुखशान्ति अर्थे वि. सं. १९३२ मां एक हॉस्पीटल बंधावी, केदीओ के जेने अंधारी ओरडीमां एक साथे गोंधी राखवामां आवता तेने माटे एक म्होटी तुरंग तैयार करावी, राहदारी चीलो माफ कर्यो, स्टेटमां पोलीस सीस्टम दाखल करी अने कारभारी दलपतरामभाइ द्वाराए राज्यनुं उत्तम बंधारण बांध्युं; तेमज वेपारनी पण उन्नति करी.

उपरना सुधाराओ उपरांत प्रजाने सुशिक्षित बनाववा माटे राज वनेसिंहजीए केळवणी तरफ विशेष लक्ष आप्युं हतुं. प्रथम वांकानेर तळपदमां छोकराओ तथा छोकरीओ माटे गुजराती निशाळो खोली हती अने ए पछी गामडांओनी रैय्यतने पण प्राथमिक केलवणीनो लाभ मळे एटला माटे मोटां मोटां छ गामडांओनी अंदर निशाळो स्थापी हती. वळी तेओ नामदारे पोताना मुबारक हाथथी राजगढ, हरिपुर, अदेपुर, समढीआळुं, सतापर अने छतर नामनां छ नवां गामो वसाव्यां हतां. तेओना राज्यमां प्रजा सर्व प्रकारे सुखी हती.

पंचाशीआना तथा राणकपरना अर्ध भाग उपरात केराळा तथा राजवडला उपर राजवनेसिंहजीना वखतमां स्टेट तरफथी मेनेजमेन्ट बेसाडवामां आव्युं, कारण के त्यांना भायातोनो निःसंतान देहान्त थयो.

---

१ तालुका स्कूल सने १८५५ मां अने कन्याशाळा सने १८७८ मां खोलवामां आवी हती.

महाराजा अमरसिंहजी !

वि. सं. १९३५ ना पोष शुदि ११ ने शनिवारे सजनपरवाळां बाश्री जाम साहेबे तीथवा मुकामे आप नामदारने जन्म आप्यो, ए वखते आपना पिताश्री राज वनेसिंहजी मोरबीमां बिराजता हता, कारण के पोष शुदि ९ ने दहाडे त्याना ठाकोर श्री बाघजीनो राज्याभिषेक थवानो हतो. ज्यारे राज वनेसिंहजी वांकानेर तरफ विदाय थया त्यारे पंचाशीआ मुकामे उक्त वधामणो मळतां दादाश्री वेरुभाए म्होटो जलसो करी तमामने मीठां भोजन जमाड्यां अने नामदार राज साहेबे केटलीएक खेरात करी.

राज वनेसिंहजी एक बाहोश अने बुद्धिमान राजा हता, तेओनी रीतभात बहुज आकर्षक हती, जे कोइ तेओना समागममां आवता ते तेओ नामदारनी सुघडता तेमज उंची रीतभात जोइ अत्यंत प्रसन्न थता, एओना वखतमां श्री जडेश्वर तथा धामणीआ नामनी पाणाखाण संबंधी मोरबी साथे तकरार उठतां एजन्सीमां लडत चाली हती अने एनो फेंसलो वांकानेरना लाभमां थयो हतो. भेसरीआ वगेरे गामो उपरांत बीजो पण केटलोएक मुल्क मेळवी स्टेटनी आबादी करवामां आवी हती अने एथी आमदानीमां पण वृद्धि थइ हती, सने १८७५-७६ मां नामदार प्रीन्स ओफ वेल्सनी हिन्दुस्तानमां थएली पधरामणी सबबे भराएला मेळा वखते वांकानेर स्टेटने सारुं मान मळ्युं हतुं; ए बधां कामोमां सरकारी बहारवटीआओने आश्रय आपनारा पाडळना तोफानी काठीओने वश करवामां कारभारी दळपतराम प्रजारामे घणो श्रम लीधो हतो अने एथीज एनो कारभार प्रशंसापात्र थयो वतो.

खु. महाराजा वनेसिंहजीनुं शरीर प्रथम सुंदर अने मजबूत बांधानुं हतुं, परंतु पाछळथी तेवी तंदुरस्ती रही नहोती, जेथी दैवयोगे वि. सं १९३७ ना जेठ शुदि १५ ने रविवारनी रात्रिए आ असार संसारनो त्याग करी तेओ स्वर्गवासी थया; त्यारे आपश्रीनी उम्मर मात्र बेज वर्षनी हती, कारभारी तरीके मोरबीवाळा महेता झुंझाभाइ सखीदास हता. मरहुम महाराजा साहेबश्री वनेसिंहजीना तेरमानी क्रियाने दिवसे अर्थात् ता. २५-६-१८८१ ना रोज आपश्रीनो टीलामेडीए राज्याभिषेक करवामां आव्यो, ए वखते खानगी कचेरी भरवामां आवी हती अने एमां मे. आ. पोलीटीकल एजन्ट कर्नल एम्. ए. नटसाहेब वगेरे महाशयोए हाजरी आपी हती.

---

१ राज वखतसिंहजीनी हयातीमां श्रीमान वनेसिंहजीने बाबुभा कहीने बोलाववामां आवता.

द्वाविंशत् तरंग.

"मनहर."

पामी जन्म आपें राज बनेसिंहजीने त्यहां,
लघुवयथीज शुभ केळवणी लीधी छे;
कहे नथुराम स्टेट मेनेजरोए मळीने,
उन्नति अनेक रीतें राज्य तणी कीधी छे.
हिंदुस्थान ने यूरोप आदिनी मुसाफरीए,
आपना अनुभवमां दिव्य स्हाय दीधी छे;
अमरनरेश! आ तरंगमांहि वर्णन ए,
ग्रथ्युं पूर्ण प्रेमें जेमां आपनी प्रसिद्धि छे.

श्रीमान् महाराजा अमरसिंहजी!

बुद्धिशाळी राज बनेसिंहजीना स्वर्गवास समये आप सगीर वयना होवाने लीधे नामदार सरकार तरफथी वांकानेरमा मेनेजमेन्ट थयुं, ए मेनेजमेन्टनी शरुआतमां नडियादना रहीश रा. वा. हरिदास विहारीदास देसाइनी एडमीनीस्ट्रेटर तरीके नीमनोक थइ, ए पहेलां तेओ वढवाण स्टेटना एडमीनीस्ट्रेटर हता; एमणे वांकानेर राज्यनी लगाम हाथमां लीधा बाद राज्यमां केटलोएक सुधारो वधारो कर्यो. प्रथम कुमारश्री खेंगारजीवाळो उतारो दुरस्त करावी तेमां पोतानुं रहेठाण राख्युं अने नामदार गवर्नमेन्ट तरफथी सेकन्ड कळास स्टेटनी सत्तानो पावर भोगववानी मंजुरी मेळवी, राज्यमां रेग्युलर सीस्टम कहाडी, दरेक गामडांओने महालवार जूदां जूदां गोठव्यां, तेमज राज्यनां तमाम खाताओने अलग अलग स्थाप्यां, अने जे वाइओने जीवाइमां गामो अपाएलां हतां ए गामो खालसा करी ते ते वाइओने रोकड रकमनी मासिक जीवाइ बांधी आपी; पताळीआनो पुल तथा युरोपीअन गेस्टहाउस वगेरे मकानो बंधाव्यां, रेसीडन्सी बंगलानुं काम शरु कर्युं;

तेमज पताळीआना पूलथी बजार सुधीनो, राजकोटनो, धोळेश्वरनी तथा म्होटा बगीचानी सडको बंधाववा मांडी अने पोतानुं नाम वांकानेरमा कायम रहे एटला माटे तेओए पूल दरवाजाथी चावडी सुधीनो सडकनुं नाम “ हरिदास रोड ” राख्युं के जे आज पर्यन्त एज नामथी ओळखाय छे.

रा. बा. हरिदासभाइए मात्र आठ मास वांकानेरमा एडमीनीस्ट्रेटरनो हुद्दो भोगव्यो, ते-वामां संस्थान इडरना दिवान तरीके तेओनी नीमनोक थता वि. सं. १९३८ ना अषाढ शुदि ८ ने दहाडे अमदावादना रहीश नागर गृहस्थ रा. बा. चुनीलाल साराभाइने पोतानो चार्ज सोंपी शुदि १० ने दहाडे तेओ इडर तरफ विदाय थया. एज सालमा अर्थात् सने १८८२ ना जुलाइ मासमां राज्यनां बाइश्रीओए राजना खरेखरा हितचिन्तक रा. बा. हरिदासभाइनी याद-गीरी खातर एक फाळो भरी गवर्नमेन्ट लोन लीधी अने तेना व्याजमांथी “ हरिदास स्कॉलरशीप ” स्थापी.

मरहुम राज बखतसिंहजीनां न्हानां राणी लाडुबा के जे राज बनेसिंहजी तख्तनशीन थया ए अरसामां पोताना पुत्र करणसिंहजी वगेरेने लइ गाम चीलोयाळे रहेवा गया हता एमणे राज बनेसिंहजीना कैलासवास पछी लौकिके आवी जीवाइ माटे गरासनी मागणी करी हती, परंतु रा. बा. हरिदासभाइए गरास नहि आपतां अमुक वार्षिक जीवाइ बांधी आपी हती.

रा बा. चुनीलाल साराभाइए वि० सं० १९३८ थी १९४१ सुधी संस्थान वांकानेरमा स्टेट मेनेजर तरीके काम कर्युं. प्रथम तो तेणे रेसीडन्सी बंगलानुं काम पूरुं करावी तेमां पोतानु रहेठाण राख्युं. त्यारबाद पांचदुवारकां तथा मच्छुनो केनाल अने रातडीआ तथा गारीडामां बंध बंधाव्या. पछीथी पताळीआना पूल आगळथी रस्ताओ कराव्या, तेमज राजकोट अने वढवाणनी सडकोनुं काम पूर्ण कर्युं, सीटी सरवैनी शरुआत करी अने राज्यनी आबादी अर्थे केटलीएक पडतर जमीन झालावाड तथा मूळी तरफना लोकोने लावी खेडाववा मांडी. तेनी साथे अमरसर, जामसर, गोकलपर, छतर, काशीपर, हसनपर, लालपर, नवुं तरकीयुं, खानगर, नागलसर, विठलगढ, जीवापर, अणंदपर, मूळसर, मोजेपलाश, वीरपर तथा लक्ष्मीपर नामनां सत्तर नवां गामो वसाव्यां

खु० महाराजा अमरसिंहजी !

ए वखते आप नामदारनी उम्मर मात्र पांच वर्षनी हती, तो पण ते दरेक गामे तोरण

बांधवा आप स्टेट मेनेजरनी साथे पधार्या हता. ए क्रिया वि० सं० १९४० मां गाजते वाजते वास्तुशास्त्रना नियम मुजब थइ हती अने दरेक गामना पटेलोने आपने मुबारक हाथे पाघडीओ बंधाववामां आवी हती.

वि० सं० १९४१ मा आप नामदार मानवंता बापा साहेबनी साथे कालावड शीतला मातानी यात्राए पधार्या. ए अरसामा स्टेट मेनेजर चुनीलाल साराभाइए केराळा, राजावडला तथा पंचाशीआ वगेरेना भायातोनी स्त्रीओ के जेना धणी बिनफरजंद गुजरी गया हता, तेओने राज्य तरफथी जीवाइ अर्थे रोकड रकम बांधी आपी, चोखा भागनी सीस्टम दाखल करी अने निमक बाबतना नामदार सरकार साथे कोलकरार कर्या. बाद मोरबीनी नेरोगेज रेल्वेनुं काम शरु थयुं. एज सालमा रा. बा. चुनीलाल साराभाइने जूनागढ स्टेटना नायब दिवाननी जगो मळवाथी ते त्या दाखल थया अने तेनो चार्ज रा. बा. गणपतराव नारायणराव लाडे लीधो. ए पहेलां संस्थान वढवाणना कारभारी हता. वांकानेरमां आव्या बाद एणे प्रथम पूळ दरवाजानी नवी लाइन तथा बजारनी लाइन कंपनशेशन आपी बंधावी; त्यारबाद जेल, निशाळ, रिसालो, पेडोक, पूल दरवाजो, नविन यूरोपीअन गेस्ट हाउस, कोर्टहाउस, जडेश्वर महादेवनो किल्लो, नानीबा कन्याशाळा अने मोटीबा हॉस्पीटल वगेरे मकानो बंधाव्यां.

वि० सं० १९४२ मां पंचाशीया भायात सामतसिंहजीनां कुंवरीश्री चांदाबाने कच्छ तेराना पाटवी कुमार दादभा साहेब साथे परणाववामां आव्यां अने एज वर्षना फाल्गुन वदी १ ने गुरुवारे राजकुंवरीश्री बाइसाहेबबानां लग्न नांदोदना कुमारश्री छत्रसिंहजी साथे करवामां आव्या.

वि. सं. १९४३ नी शरुआतमां आपश्रीना सान्निध्यपूर्वक मुंबइना मानवंता गवर्नर लॉर्ड रे साहेबने हाथे मोटीबा होस्पीटलने खुल्ली मुकावबानी क्रिया करवामां आवी. त्यारबाद केराळा भायात काकाश्री कुंभाजीनां कुंवरीबाश्री वदुबा साहेबनां लग्न पालीताणाना ठाकोर साहेबश्री मानसिंहजी साथे म्होटी धामधूमथी करवामां आव्यां अने नाहरसिंहजीनां कुंवरीश्री वलुबाने गणोदना कुमार साहेब साथे परणाववामां आव्यां. एज वर्षमा नामदार महाराणी कैसरे हिन्दनी गोल्डन ज्युबीलीनो प्रसंग प्राप्त थतां वांकानेरनी अंदर महोत्सव करवामां आव्यो हतो अने एनी यादगीरी माटे पूल दरवाजा उपर एक भव्य मकान बंधावी तेमां ज्युबीली लायब्रेरी स्थापवामां आवी. त्यारबाद महाराणीना न्हाना पुत्र डयुक ओफ कोनोटनी काठियावाडमां पहेल वहेली पधरामणी थतां

मोरवी रेल्वे स्टेशन उपर एक भव्य मेळावडो भरी वांकानेर स्टेट तरफथी तेओ नामदारने म्होटुं खाणुं आपवामां आव्युं हतुं. तेमज महाराणी ज्युबीलीनुं नाम तथा डयुक ओफ कोनोटना आगमननी यादगीरी अर्थे राजकोटनी अंदर जे ज्युबीलीनु मकान बांधवामां आव्युं अने कोनोट हॉल स्थापवामां आव्यो एमां जेम बीजां स्टेटोए रकम आपी तेम वांकानेर स्टेट तरफथी पण सारी रकम आपवामां आवी हती. ए अरसामां मुंबइना नामदार गवर्नर साहेब फरी राजकोट पधार्या, ए वखते मोरवी तथा राजकोट रेल्वेने खुल्ली मुकवानुं काम शरु करवामां आव्युं. ए ट्रेन मच्छु नदीना पूल उपर थइ चालवानी हती, जेथी त्यां आगळ नामदार गवर्नर साहेबने स्टेट तरफथी खाणुं आपवामां आव्युं हतुं अने एओने हाथे पूलनी ओपन क्रिया करवामां आवी हती. पूलनी पासे खास एक विशाल शामीयाणानी अंदर म्होटी सभा भरवामां आवी हती अने तेमां आपश्री उपरांत काठियावाडना पोलीटीकल एजन्ट मी. वोटसन साहेब, मोरबीना ठाकोर साहेबश्री वाघजी, रेल्वे मेनेजर मी. व्हाइटसाहेब, राज्यना तमाम अमलदारो तथा गामना शेठ साहुकारोए हाजरी आपी हती. नामदार गवर्नर साहेबे आपनी आकृति निहाळी आप भविष्यमां एक उत्तम राज्यकर्ता निवडशो एवा उद्गार कहाड्या हता. कारणके "आकृतिरेव गुणान्कथयति" (आकृतिज गुणोने कही आपे छे) एवो सत्पुरुषोनो सिद्धान्त छे.

वि० सं० १९४३ ता. ४-६-१८८७ ना रोज आप नामदार राजकोट राजकुमार कॉलेजमां अभ्यास करवा पधार्या. ए वखते आपश्रीनी उम्मर आठ वर्षनी हती, परंतु बुद्धि कुशाग्र (कुश. दर्भना अग्र भाग जेवी तीक्ष्ण) होवाने लीधे सहाध्यायी सर्व कुमारो करतां अभ्यासमां आप आगळ वधवा लाग्या. मुसाहिब तरीके जाडेजा मामा साहेबश्री दीपसिंहजी विभाजी आपनी साथे हता. कॉलेजमा दाखल थया बाद वि. सं. १९५२ पर्यन्त प्रीन्सीपाल मी. मेगनोटन साहेबना हाथ नीचे आपे उत्तम केळवणी मेळवी अने पछीथी प्रीन्सीपाल वॉलींग्टन साहेब द्वारा बाकीनो अभ्यास पूरो करी वि. सं. १९५३ ना भादरवा शुदि १० ने दहाडे आप कॉलेजमांथी मुक्त थया. ए दरमीयान वि. सं. १९४५ ना कार्तिक शुदि ५ ने रोज आपना दादाश्री जसवतसिंहजीनां मधुतरावाळां राणीश्री बाइबा उर्फे साहेबाणीमानो स्वर्गवास थतां स्टेट तरफथी तेओनी उत्तम रीते उत्तर क्रिया करवामां आवी.

वि. सं. १९४६ ता. २३ जुन सने १८९० ना रोज नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी

वॉयसराय एन्ड गवर्नर जनरल लॉर्ड मार्कीस ओफ लेन्डसडाउन जी. सी. एम. जी. साहेब द्वारा वांकानेर स्टेटने सीधा वारसने अभावे विन नजराणे दत्तक लेवानी सनंद मळी.

वि. सं. १९४७ ना श्रावण शुदि २ ने गुरुवारे आप नामदारना प्रपितामह राज वखतसिंहजीनां न्हानां राणी लाडुवानो स्वर्गवास थतां तेओनी विधि पुरःसर उत्तरक्रिया करवामां आवी.

वि. सं. १९४९ मां आखा स्टेटनी रेवन्युसरवै कराववानी शरुआत थइ, ए काम वि. सं. १९५४ नी आखरे समाप्त थयुं हतुं अने क्षेत्रवार मापणी मुकरर करवामां आवी हती.

वि. सं. १९५० मा मेवाड देशनी अंदर रहेला गाम शाषपुराना शिशोदीय कुलोत्पन्न महाराजा नाहरसिंहजीनां कुंवरी श्री गुलाबकुंवरबा साथे आप नामदारना सबंधनो निश्चय थतां त्यांना दिवान तेमज अमीर उमरावो चांदलो करवा अत्रे आवेला हता, शीयाळानी ऋतु चालती हती, नविन कोर्ट हाउसना मकानमां भव्य दरबार भरवामां आव्यो हतो, ए वखते राज्यना भायातो उपरात मुसद्दी तेमज वेपारी वर्गे हाजरी आपी हती. ए क्रिया गाजते वाजते करवामां आवी हती, कचेरीमां तेमज निशाळोमां शायपुराना महाराजा तरफथी पुष्कळ साकर वहेंचवामां आवी हती अने आखा स्टेटमां हॉली डे पाळवामां आव्यो हतो. त्यारबाद वर्षानी शरुआतमां जेठ शुदि १२ ने शुक्रवारे मच्छु तथा आसोइ वगेरे तमाम नदीओमां म्होटुं पूर आव्युं हतुं अने एथी तळपदमां तेमज महालोमां घणीज नुकशानी थइ हती, प्रजावर्गने राज्य तरफथी सारी मदद आपवामां आवी हती, अने बूडने लीधे पडी गएलो गढ तेमज मकानो वगेरेनुं समार काम कराववामां आव्युं हतुं.

वि. सं. १९५१ मां आप नामदार मानवंता बामा साहेबनी साथे श्री प्रभासपाटणनी यात्राए पधार्या, त्यारे स्टेट मेनेजरे आपनी सेवा बजाववा चतुरभाइ जीवाभाइ आमीनने साथे मोकल्या हता. एज वर्षमां कॉलेजनी अंदर उनाळाना वेकेशननी रजा पडतां आप नामदारे चैत्र शुदि १३ ने भोम ता. २३–४–१८९५ ना रोज मुंबइ तथा महाबलेश्वरनी पहेलवहेली मुसाफरीए पधारी उक्त रजाना दिवसो परम आनंदमां गुजार्या हता.

वि. सं. १९५२ ना महा वदी ७ ने बुधवारे शायपुरे हथेवाळे परणवानुं नक्की थतां आप नामदार चारसो माणसोना रिसाला सहित स्पेशीयल ट्रेनमां पधार्या. लग्नक्रिया शास्त्रोक्त रीते करवामां आवी. शायपुरामां चार दिवस रही वरात आनंदपूर्वक वांकानेर तरफ वळी निकळी. श्रीमान् शायपुराधीशे सर्वनुं उत्तम प्रकारे आतिथ्य कर्युं हतुं. बन्ने पक्ष तरफथी भाट, ब्राह्मण

तथा चारणो वगेरेने घणी बक्षीसो आपवामां आवी हती. ए वखते काठियावाड, कच्छ तेमज गुजरातना राजा महाराजा तरफथी उमदा पोशाक लइ माणसो वांकानेर आव्या हतां ए सर्वेने आप नामदार तरफथी पोशाक आपवामां आव्यो हतो अने सरभरा पण सारी करवामा आवी हती ए लग्न महोत्सवमां मोरवी तेमज तेराना महाराजाओए हाजरी आपी हती, वढवाण ठाकोर साहेब पण पधार्या हता. ध्रांगध्रा, लींबडी, भावनगर अने गोंडलना महाराजाओ पधारवाना हता, परंतु अकस्मात् भावनगरना महाराजाश्री तख्तसिंहजीनो महा शुदि ५ ने दहाडे कैलासवास थता ए सर्वेनो मनोरथ पार पडी शक्यो नहि; अने वढवाण ठाकोर साहेब पण तेओना निकटना संबंधी होवाथी तुरतमां पोताना वतन तरफ पधारी गया. मे. पोलीटीकल एजन्ट हन्कोक साहेब, प्रान्त-साहेब ओडोनल, कॉलेजना प्रीन्सीपाल तथा बीजा ऑफीसरो वगेरे एकन्दर वीस युरोपीअनो आपना लग्न महोत्सवनुं आमंत्रण स्वीकारी लेडीओ सहवर्तमान वांकानेर पधार्या हता, जेथी प्रस्तुत शोभामां कांइ जुदोज उमेरो थयो हतो अने ए प्रसंगे खुल्ले हाथे घणुं खर्च करवामां आव्युं हतुं.

वि. सं. १९५२ ना आश्विन शुदि ७ ता. १३–१०–१८९६ ना रोज आप नामदार कॉलेजमांथी स्टेट मेनेजर रा. बा. गणपतराव नारायणराव लाडनी साथे हिन्दुस्थानना पहेली मुसाफरीए पधार्या. मामा साहेबश्री दीपसिंहजी विभाजी तथा केटलाएक परिजनो सहित आपे वांकानेरथी प्रयाण करी अजमेर, जयपुर, दिल्ही, आग्रा, कानपुर, लखनऊ, अल्हाबाद, बनारस, अने मुंबइनी मुसाफरी तेमज यात्रा करी ते ते देशना रीतरिवाज वगेरेनो महान् अनुभव मेळव्यो. त्यारबाद वि. सं. १९५३ ना भादरवा शुदि १० ने दहाडे आप कॉलेजमांथी मुक्त थया.

भारतेश्वरी महाराणी विक्टोरीआनी डायमंड ज्युबीलीनो महोत्सव ता. २१ तथा ता. २२ जुन सने १८९७ ना रोज होवाथी ते प्रसंगे वांकानेरने ध्वजा पताकाथी सुशोभित करी पुष्कळ रोशनी करवामां आवी हती, तेमज केदीओने मीठुं खाणुं आपी निशाळो वगेरेमा मीठाइ वहेंचवामां आवी हती अने हॉलीडे पाळवामा आव्यो हतो. राजकोट कोनोट हॉलमां महाराणीनी मूर्ति पधरावना सबबे दरेक स्टेटोए भरेला फाळामां आप नामदारे पण योग्य रकम भरेली हती, तेमज ज्युबीली वॉटर वर्कसमां पण सारी मदद आपी हती अने ए महोत्सवनी यादगीरी माटे "डाइमंड ज्युबीली टाइल्स फेक्टरी" नुं मकान मच्छुना पुलनो पेली बाजु एकन्दर रु. १००००) दशहजारनी म्होटी रकम खर्ची बंधाव्युं हतुं.

वि. सं. १९५४ ना मागशर शुदि ९ ने गुरुवारे मरहुम राज बनेसिंहजीनां पाटराणी मोटीबानो स्वर्गवास थतां तेनी यथाविधि उत्तरक्रिया करवामां आवी. ए अरसामां ता. २४–११–१८९७ ना रोज राजकोट पधारेला मुंबइना नामदार गवर्नर सेन्डहर्स्ट जी. सी. आइ. इ. साहेबे कोनोट हॉलमां ता. २९ मी ए भरेला पब्लीक दरबारमा आप नामदारे हाजरी आपी हती अने ए पछी एक महीने अर्थात् ता. २६–१२–१८९७ ना रोज डॉकटर दीनशाह बरजोरजीनी साथे आप हिन्दुस्थाननी बीजी मुसाफरी अर्थे पधार्या. ए मुसाफरीनो अहेवाल डॉकटर दीनशाह बरजोरजी एम्, आर, सी, एस्. (खास निमनोक) एल, आर, सी, पी, तरफथी महेरबान काठियावाडना पोलीटीकल एजन्ट कर्नल जे. एम्. हन्टर साहेब तरफथी नीचे मुजब रजु करवामां आव्यो हतो.

जेतपुर. माहे जुन. सने १८९८

महेरबान साहेब !

वाकानेरना कुमार श्री अमरसिंहजी बहादुर, जेओश्रीने तेओनी मुसाफरीमा मारां संभाळ नीचे मुकवामा आव्या तेओश्रीनी हिन्दुस्थाननी मुसाफरीनो अहेवाल आप महेरबान आगळ मानपूर्वक रजु करवा रजा लउं छुं.

सदर मुसाफरी ता. १ माहे जान्युआरी १८९८ थी ता. २४ एप्रील १८९८ सुधी एटले के चार मास सुधी करवानुं ठराव्युं हतुं अने ते प्रमाणे राजकुमार कॉलेजना प्रीन्सीपाल मे. वोर्डींगटन साहेबे प्रोग्राम तैयार करी आपनी संमति माटे आप हजुर रजु करेल हतो, ते प्रोग्रामनी एक नकल आ साथे सामेल छे. (जुओ नं. १ नुं परिशिष्ट)

त्यारपछी अमने एम लाग्युं के अमारी मुसाफरीना अंतमां (एप्रील मासमां) सखत गरमी पडे ते पहेलां मुसाफरी पुरी करवाना सबबथी अमोए ता. १ जान्युआरी पहेलां नीकळवानुं नकी कर्युं, आथी आगळ तैयार करेल प्रोग्राममां पण ते प्रमाणे सघळी तारीखोमां फेरफार करवो पडयो छे.

ए रीते तैयार करेल प्रोग्राम प्रमाणे पण केटलीक अनिवार्य अडचणोने लीधे अमाराथी वर्ती शकायुं नथी. (१)

कुमार श्री राज साहेबने मार्च मासनी आखरे इंग्लांडना प्रवास उपर जवाना खबर मळ्या हता तेथी तेओश्रीने ते पहेलां मुसाफरी पूर्ण करी लेवानो विचार हतो. (२)

केटलीक जगोना हवापाणी माफक आवे तेम न हता तथा नीमेली केटलीक जगोए मरकी वगेरे उपद्रवो फाटी निकळेला हता, तेथी आप साहेबनी परवानगी मेळवी केटलीक जगोए जवानुं बंध राखवुं पडयुं हतुं. (जुओ प्रोग्राम नं. ३)

उपरना कारणोने लीधे कांजेवरम, कोल्हापुर, मुंबइ, तथा वडोदरा नामना स्थळोने पडतां मूकवामां आव्यां हतां, कांजेवरम शहेर आडपखुं आवेलुं छे अने त्यां डाक बंगला तथा हॉटेलनी कांइ सगवड नहि होवाथी त्यां जवानुं अमे बंध राख्युं, कोल्हापुर तथा तेनी आसपासना परगणामां मरकीनो उपद्रव होवा संबंधनो त्यांना मे. पोलीटीकल एजन्ट साहेबनो तार अमने मळवाथी अमोए त्यां जवुं बंध राख्युं, एज कारणोने लीधे मुंबइ तथा वडोदरा अमो गया नथी.

अयोध्यामां पण हॉटेल तथा डाकबंगलानी सारी सगवड नहि होवाथी अमो त्यां प्रोग्राम मुजब बे दिवस रोकाया नहि, त्यां बपोरना त्रण कलाके जइ पहोंच्या अने त्यांना धर्मस्थळो, पवित्र म्होटां मन्दिरो तथा ऐतिहासिक तेमज पुरातन संजोगोथी प्रख्यात स्थानो वगेरे जोइ रात्रीनी गाडीए पाछा काशी आवी पहोंच्या.

लंकामां आवेलुं नुवाहा एलीया जवानुं अमारा प्रोग्राममां नहोतुं, तो पण अमोने खबर मळ्या के ते जगो जोवा लायक छे तेथी अमो त्यां गया हता. त्यां जतां गाडीमांथी बन्ने बाजुनो देखाव, कुदरतनो देखाव बेशक मनोरंजक जणातो हतो.

आ शिवाय प्रोगाममां बीजा पण केटलाक फेरफार थया छे, कारणके कोइ कोइ जगोए ओछा वधता दिवस रोकावानी जरुर पडी हती, ते सघळुं आपने रजु करेल डायरी (यादी) थी रोशन थशे.

मुसाफरीना खर्चना अंदाज रु. १२६००) काढवामां आव्यो हतो. परंतु खरेखरुं खर्च रु. ८९७१–६–६ तथा मारा पगारनी बाकी रकम रु. ६००) मळी कुल खर्च रु. ९५७१–६–६ थयुं छे.

आ उपरथी जणाय छे के रु. ३०२८–९–६ नो खर्चमां बचाव थयेल छे ते नीचेनां कारणोने लीधे.

(१) अमो मुसाफरीमां फक्त सात माणसो हता. (२) लगभग सघळी जगोए बने त्यां सुधी अमो हॉटेलमा तथा डाक बंगलामां उतारो करता, ज्यां अमोने जोइती सगवड पूरेपुरी मळती. (३) अमारा पहेला जे वीजा कुमारश्रीओ मुसाफरी उपर निकळता तेओने ज्यारे एक जगोएथी वीजी जगोए जवानुं थतुं त्यारे ते स्थळे हंगामी मुकामनी सगवड करवा माटे आगळथी माणसो मोकलवा पडता, ते मोकलवानी अमारे जरुर नहि होवाथी एवुं खर्च थतुं नहि. ए शिवाय एक वीजी वावतथी अमोने खर्चमां वचाव थतो ते मारे जणाववुं जोइए. अमो हॉटेलमां तथा डाक-बंगलाओमा उतारो करता, अमारी साथे माणसो घणां थोडा हतां, अने तेथी सरसामान वगेरे पण घणो थोडो हतो, तेथी केटलीक जगोए अमो त्यांना म्होटा मानवंता गृहस्थोनी मिजमानी पण स्वीकारी शकता

अमारा अनुभव उपरथी अमने तो एम जणाय छे के वीजे गाम जवानुं होय ते आगमच त्यां आगळथी हगामी मुकामनी सगवड करवा माटे माणसो मोकलवामां आवे छे तेनुं खर्च वर्तमान समये नकामुं वोजारुप छे: कारण के गमे तेवी जातना मुसाफरोने दरेक गामे सारी होटेलो वगेरेमां जोइए तेवी सगवड मळी शके छे. होटेलो वगेरेना उपरी तथा व्यवस्थापको गाडी घोडा, नोकर चाकर, आदिनी जोइती सगवडो करी आपे छे. ते शिवाय कोइ हंगामी मुकाम अथवा वीजा उतारामां मुकाम करवा करतां म्होटी होटेलोमां उतरवाथी एक महान् लाभ ए छे के—त्यां जूदी जूदी जातना अने भिन्न भिन्न देशना सद्गृहस्थोनो समागम थाय छे, एथी तेओनी रीतभात, पोशाक तथा खानदानी वगेरेनी माहिती मळे छे. कुमार श्री राजसाहेव के जेओश्रीने स्वल्प समयमांज युरोपनी मुसाफरीए जवानुं छे तेमने माटे आवो समागम तथा आवा प्रकारनी केळवणी घणी अगत्यनी छे. मने कहेतां खुशी उत्पन्न थाय छे के कुमारश्रीराजसाहेवने सादुं वर्तन, मिलनसार स्वभाव तथा चाहवा लायक सदगुणोने लीधे होटेलमां उतारो करवाथी त्यां उतरेला युरोपीअन मिजमानो तेमज वीजा नामांकित देशी गृहस्थोनो सत्वर समागम थतो अने एथी तेओश्री अत्यन्त आनंद पामतां. तेओ वारंवार एम कहेता के " आपणे होटेलोनो जे लाभ लइ शकया तेथी मने वहु आनद थाय छे. जो आपणे अगाउथी तैयार करावेला हंगामी मकानमां उतर्या होत तो आपणने कंइक कंइक अगवड पडत अने आवो आनंद मळत नहीं "

खर्चनी हकीकत—कइ वावतमां केटलुं खर्च थयुं अने धारेल खर्च करतां ओछुं खर्च थवानुं कारण शुं ? वगेरे—

(रेल्वे तथा आगबोटनुं भाडुं लगेज खर्च सहित.)

	धारेलुं खर्च.	थएल खर्च.	रिमार्क.
रु.	३५००	१२७१–९–११	अमो हॉटेलो वगेरेमां उतरता अने अमारी साथे विशेष सामान नहोतो तेथी खर्च ओछुं.

(घोडागाडी तथा टांगा वगेरेनुं भाडुं.)

	धारेलुं खर्च.	थएल खर्च.	रिमार्क.
रु.	१०८०	५९७–८–१	केटलीक जगोए ओळखाणवाळा गृहस्थोनी गाडीओ लेता तेथी भाडुं ओछुं खर्चवुं पडतुं.

(खोराक खर्च.)

	धारेलुं खर्च.	थएल खर्च.	रिमार्क.
रु.	१९२०	१२२६–८–९	०

(नेमाएला कामदारनो पगार.)

रु.	१६००	८००	मुसाफरीनी मुदत ओछी थवाथी पगार खर्च ओछुं.

(खानगी खर्च.)

रु.	१५००	१५००	०

(मुसाफरीनी सामग्री–साहित्य, आगळथी लीधेल सामान विगेरे.)

रु.	१०००	९४८–५–०	

(यात्राओने स्थळे गया तेनुं खर्च.) ०

रु.	५००	४५४–१२–४	कांजेवरम अमो गया नहि तेथी ओछुं खर्च.

(उतरवाना मकाननुं भाडुं.)

रु.	५००	१९८–४–०	अमो हॉटेल तथा डाक बंग-

लामां उतारो करता तेथी ओछुं भाडूं.

(वधारानुं परचुरण नैमित्तिक खर्च.)

रु.	१०००	१०१३–६–५	
कुल रु.	१२६००	८९७१–६–६	
		६००–०–०	नेमाएला कामदारोने वाकी आपवानो पगार.
		९५७१—६—६	

१२६००–०–०
९५७१–६–६
३०२८–९–६

आ प्रमाणे हांसीयामां वताव्या मुजव रु. ३०२८–९–६ नी रकम वाकी वधी तेमांथी हालार प्रान्तना पोलीटीकल एजन्टनी परवानगीथी रु. २२३३–१३–६ नी रकम अ. सौ. शापुरावाळां राणीजी साहेवना शाहपुराथी वांकानेर आववाना खर्च पेटे, एक तोप खरीदी तेनी किम्मत, तथा यूरोपनी मुसाफरी माटे खास तैयार करावेल एक कोट (डगलो) नी किम्मत पेटे आप्या.

कुल हिसाव रु. १५४६–०–० नी सिलक सहित (जेमांथी मारा पगारना रु. ६००) आपवा वाकी छे) वाकानेरना कारभारी साहेव रा. वा. मोतीचंद तुलसीने आपी दीधेल छे.

समग्र मुसाफरीमां अमारा सर्वनी तंदुरस्ती सारी हती, कोइने पण कोइ पण कारणथी दवा लेवानी जरुर पडी न हती; एनुं कारण मने तो ए लाग्युं के अमे दरेक स्थळे सारी होटेलमां उतरता, ज्यां अमने सारो खोराक तथा स्वच्छ मकान वगेरेनी संपूर्ण अनुकूळता करी आपवामां आवती, आगळ जे कुमारश्रीओए मुसाफरी करेली ते करतां अमोने आ एक खास फायदो जोवामां आव्यो छे.

अमारी साथे चार नोकरो हता, तेओए दरेक बाबतमां पोतानी चालचलगत तथा रीत-भात वगेरेथी अमोने पूरतो संतोष आप्यो छे, तेओ दरेक काम खंतथी मन दइने करता, कोइ वखत बपोरना बे त्रण कलाक सूधी खावानुं मळतुं नहि, तो पण तेओ एक शब्द पण उतावळथी बोल्या शिवाय आनंदथी अमारी सघळी अनुकूळता जाळवता. तेओनो खास वखाणवा लायक गुण तो मने ए जोवामां आव्यो के तेओ तद्दन प्रमाणिक हता अने करकसर पण करता, जेथी केटलेक अंशे खर्चमां सारो बचाव थयो छे एम कहीश तो तेमां अतिशयोक्ति नथी.

ए उपरांत अमारा सेक्रेटरी तरीके मी. रतनशा बेजनजी डमरी साथे हता, तेओ खर्च वगेरेनो हिसाब राखता, खर्चमां जे बचाव थयो छे ते तेनी करकसरने लीधेज. तेओ दरेक कार्य शुद्ध मनथी करता अने पोताने गमे तेटली तस्दी पडे तो पण अमारामांना सर्वनी सग-वड साचवता, तेओए अगाउ वडीयाना दरबारश्री बावावाळा साथे तेमना सेक्रेटरी तरीके हिन्दुस्थाननी मुसाफरी करी हती, तेनो तेमने अनुभव हतो, ते अमोने तेना तरफथी म्होटा लाभरुप थइ पड्यो.

छेवटे मने अन्तःकरणथी कहेवानो उमळको आवे छे अने जो के ते खुशामद जेवुं ज-णाशे, तो पण मारे कह्या वगर चालतुं नथी के कुमारश्री राजसाहेब जेवा सद्गुणी अने उमदा कुमार मारी संभाळ तथा देखरेख नीचे हता, जेथी हुं मने घणोज भाग्यशाळी समजुं छुं, टुंकी मुदतमां तेमनी जोडे रहेला सहवासथी मने जे अनुभव थयो छे ते उपरथी कही शकुं छुं के—कु-मारश्री राजसाहेब जेवा मायाळु अन्तःकरणना, मिलनसार स्वभावना, विवेकी अने खानदान अमीर गृहस्थो थोडाज हशे, राजकुमारने योग्य सघळी लायकात तेओश्रीमां छे, वखते वखते वातचीतमां तेओ वांकानेरना माजी कारभारी गणपतराव लाड तरफ पोतानी आभारनी लागणी बतावता अने कहेता के तेओए (लाड साहेबे) मने उमदा सामाजीक मंडळना संबंधमां लावी दरेक प्रकारनी केळवणी आपी छे. मुसाफरीनी अंदर कुमारश्री राजसाहेब जे नविन जाणवानुं मळे तेमां पूरतुं लक्ष आपी तेनुं संभाळपूर्वक मनन करता. हुं संपूर्ण उमेद राखुं छुं के कुमारश्री राजसाहेबने जो आ प्रमाणे उमदा सामाजीक समागमनो लाभ आपवामां आवशे तो तेओ रुडा राजकर्ता नीवडशे. अंग्रेजी धोरण उपर अपाएली केळवणी केवां रुडा परिणाम आपे छे, तेना कु-मारश्री राजसाहेब संगीन दाखला रुप छे.

छेवट कुमारश्री राजसाहेब जेवा उत्तम राजकुमारनी देखरेख माटे मे. पोलीटीकल एजन्ट साहेबे मारी खास निमनोक करी म्हने हिन्दुस्ताननी मुसाफरी करवानी जे तक आपी तेने माटे तेमनो अन्तःकरण पूर्वक आभार मानुं छु.

वाकानेरना राजसाहेब खुदाविंद अमरसिंहजी बहादुरनी हिन्दुस्ताननी मुसाफरीनो अहेवाल.

माहे डीसेम्बरनी ता. २६ मीए सांजनी गाडीमां अमो वाकानेरथी निकळ्या. लाडसाहेब, केटलाक मित्रो, स्टेटना समग्र नोकरो, शेहेरना प्रतिष्ठित गृहस्थो तथा जनानानुं स्त्रीमंडळ अमोने वळाववा स्टेशन पर आवेल हता. एक तरफ थोडा वखत माटे पोतानी प्रजानो तथा राजकुटुंबनो वियोग थवानो होवाथी कुमारश्रीना तथा सर्वना चेहेरा उपर दिलगीरी छवाएली हती, बीजी तरफ अमारे नवो मुसाफरी उपर जवानुं तेमज नविन स्थळो अने देखावो जोवानुं होवाथी अमोने आनन्द थतो हतो. अमो रात्रीना ११ कलाके वढवाण पहोंच्या अने त्यांथी गाडी बदलावी बी. बी. सी. आइ. रेल्वेना सलूनमां अमो सुइ रह्या.

ता. २७ डीसेम्बर–सवारना साडा छ कलाके अमोए वढवाण छोडयुं. लखतर स्टेशने त्यांना दरबार श्री गगुभा के जे कुमारश्रीना राजकुमार कॉलेजमा सहाध्यायी हता तेओ मळवाने आवेल हता. त्यांथी वीरमगाम पहोंच्या अने वीरमगामथी मेसाणा जती ट्रेनमां अमो बेठा, बपोरना पोणा बार कलाके मेसाणा पहोंच्या. त्याथी राजपूताना माळवा रेल्वेमां बेसी बार कलाके अजमेर जइ पहोंच्या त्या प्लेग डयुटी उपरना डाकटरे अमोने तपास्या अने स्टेशन पासेना डाकबंगलामां अमोए उतारो कर्यो.

ता. २८ डीसेम्बर–अहींया कुमारश्री राजसाहेबना श्वसुर तेमने मळवा माटे खास आवेल हता, तेमनी मुलाकात लीधी.

कुमारश्री राजसाहेब ज्यारे राजकोट राजकुमार कॉलेजमां अभ्यास करता, त्यारे तेओश्री तथा बीजा कुमारश्रीओ अहींनो मेयो कॉलेजना कुमारश्रीओ साथे क्रीकेटनी रमत रमवा माटे आवेल हता.

अमो दोलतबाग तथा मेयो कॉलेजनुं मकान जोवा गया. मेयो कॉलेज ए राजकोटमां रहेली राजकुमार कॉलेज जेवी संस्था छे; परंतु राजकुमार कॉलेज करतां कांइक उतरती छे, राज-

कुमारने रहेवा तथा जमवा वगेरेनी सगवड अहींया जोइए तेवी नथी. छात्रालय राखवानो हेतु ए छे के केळवणी लेवा आवेला उमेदवारो एक बीजाना समागमां आवे अने अन्योन्यना स्वभाव, वर्तन तथा आचार वगेरेमांथी कंइ ग्रहण करी शके. ए हेतुने उक्त कॉलेजनी प्रचलित प्रथा अनुकूळ नथी. प्रीन्सीपाल मे. कर्नलोकने अमो मळ्या, तेओश्री मिळनसार प्रकृतिना अमीर माणस छे. तेमना तरफ कॉलेजना विद्यार्थी राजकुमारो प्रेमनी तथा माननी लागणी धरावे छे.

ता. ३० डीसेम्बर १८९७ कानपुर—अहींया अमे चामडां कमावबानो मोटा पाया उपर चालतो उद्योग जोयो, बाद बागमां थइने जूनी रेसीडन्सी (सरकारी वकीलने रहेवानुं मकान) तरफ गया.

ता. १ जान्युआरी १८९८ अलहाबाद—कानपुरथी अमो स्वल्प समयमां अत्रे आवी पहोंच्या अने स्टेशन पर रहेली कोलनरनी होटेलमां उतारो कर्यो, आ हॉटेलमां सगवड घणी सारी छे, त्यां भरातो वार्षिक मेळो जोवाने अमो शाहबाग गया हता. शाहजहान तथा नूरजहाननी कबरो जो के जीर्ण थइ गयेल छे, तो पण प्राचीन काळना मकानोनी विभूति तरीके निरीक्षण करवा लायक छे.

ता. २ जान्युआरी अमो आलफ्रेड बाग जोवा गया, त्या थोर्नहील हॉल तथा मेयो मेमोरीअल हॉलमां म्होटा पाया उपर पुस्तकालय (लायब्रेरी) तथा चमत्कारिक पदार्थोनुं संग्रहस्थान छे.

म्यूर कॉलेज जोवा गया, ए एक विस्तृत गंजावर मकान छे, ते उपर म्होटुं टावर छे अने त्यांथी समग्र शहेरनो देखाव उपर उपरथी दृष्टिगोचर थाय छे.

ता. ३ जान्युआरीए अमो त्यां गाडीनो पुल जोवा गया. ए पूल हालना इजनेरी कामनो दर्शनीय नमूनो छे.

ता. ४ थीए अमो गंगा तथा यमुना नदीओना संगम उपर आवेलो किल्लो जोवा गया, अंदरना किल्लानी आसपास फरतां अमोने त्यांथी द्रग्गोचर थतो सरिताओनो देखाव निःसंशय सौन्दर्य युक्त जणातो हतो. अमो त्यांथी होडीमां बेसी संगमपर गया.

ता. ५ मीए अमो अशोकनो स्तंभ तथा जमीन नीचे जामेलुं अक्षयवटनुं वृक्ष जोवाने गया. ए वटनी निकट जवानो मार्ग भूमिनी अंदर तद्दन अन्धकारमय अने भेजवाळी जमीनमां

छे. अहींयां मारे कहेवुं जोइए के–जे हजारो हिन्दु लोको पर्वणीने दिवसे आ प्रागवडने दर्शने जाय छे, तेओनी तन्दुरस्ती माटे आ अन्धकारमय भेजवाळा मार्गने उपरथी खोदी खुल्लो करी नाखवो जोइए, अथवा तो ए पर्ण वगरनुं वट वृक्ष ते स्थळेथी उठावी नदी किनारे कोइ खुल्ला भागमां मूकवुं जोइए के जेथी आ तमोमय अने श्वासनो निरोध करनारा भोंयरानी अंदर थतां चोरी तथा व्यभिचार वगेरे दुष्ट कर्मो अटके. तेज दिवसे अकबरनो किल्लो जोवाने गया, त्यांथी होडीमां बेसी संगम पर आव्या, त्यारबाद अमो मोटी बजार जोवा गया अने त्या वेधशाळोनुं मकान जोयुं, जेमांथी मात्र खगोळवेत्ताओनेज कंइक जाणवानुं मळी शके छे.

ता. ६ ठीए अमो काशीए गया, पारोस होटेलमां उतारो कर्यो, त्यां अमोने घणी सारी सगवड मळी.

अमे नदी किनारे फरवा गया, त्यां न्हावा धोवा माटे बांधेला घाट तथा सोनापुर (स्मशानभूमि) वगेरे जोया.

त्यारबाद रेल्वेनो पूल जोवा गया, पूलनी बन्ने बाजुएं माणसोने चालवानो पण रस्तो छे, अमो होडीमां बेसीने नदीने उपरवास दूरना घाट तरफ गया, ज्यां अमोए ते दिवसे चन्द्रग्रहण होवाथी संख्याबंध लोकोने गंगामा स्नान करतां जोयां, अने अमारामांना केटलाएक हिन्दु नोकरो ते दिवसे पोताना देहने गंगा स्नानवडे शुद्ध करवानी तक मळवाथी पोताने भाग्यशाळी समज्या.

अमो क्वीन्स कॉलेज जोवा गया, जेनो मध्य हॉल विशाळ अने सुन्दर छे.

ता. ११ जान्युआरीए अमोए अयोध्या आवी त्यांना धर्ममन्दिरो जोयां, आंही वानरोना महान् यूथो नजरे पडे छे, तेओ लोकोने इजानी साथे आनंद आपे छे, त्यांथी पाछा काशीए आवीने अमो शहेरना केटलाक लत्ता जोवाने गया, कुमारश्री राजसाहेब तथा तेमना हिन्दु परिजनो काशीराजनां दर्शन करवा माटे उत्सुक होवाथी अमोए होडीमां बेसी काशीराजाना निवास तरफ जवानुं नक्की कर्युं, परंतु वखत वधारे जशे एम जणावाथी ए वात मुलतवी राखी. ए उपरांत अमोए सारनाथनां खंडेरो पण जोयां, ता. १३ मीए अमो कलेक्टरने मळ्या अने बपोरे मेलमां रवाना थइ ता. १४ मीना प्रभात समये कलकत्ते जइ पहोंच्या.

ता. १४ कलकत्ता–अहीं अमोए कोन्टीनेन्टल होटेलमां उतारो कर्यो अने लगभग पंदर

दिवस गेकाया. वखते वखते अमो एडन गार्डनमा जता के ज्या बेंड वागे छे अने शहेरना सारा सारा गृहस्थो आदि तेतुं श्रवण करवा एकठा थाय छे. कालिकामातापर बंगाली लोकोने अपार श्रद्धा छे, त्यां निरंतर लोकोनां टोलेटोळां दर्शन करवा आवे छे दुर्गापूजनना तहेवारोमा (जे वखते त्यानी कोर्टो शियाळामा लावा समय सूधी बंध रहे छे त्यारे) अही म्होटो मेळो भराय छे, अने अमारा सांभळवा प्रमाणे आखुं शहेर पंदर दिवस पर्यन्त पूर्ण आनंदमां रहे छे. ए स्थळे जवाथी बंगाळी लोकोनो कालिकामाता प्रत्ये केवो दृढ भक्तिभाव छे तेनो पूरतो ख्याल करी शकाय छे अने एज कारणथी ए स्थळ खास जोवा लायक छे.

अहींना संग्रहस्थानमां जातजातनी जोवा लायक चीजोनो संग्रह होवाथी दरेक जातिना शोखीन सज्जनोने कंइने कंइ जाणवानुं मळे छे, आवुं संग्रहस्थान अमोए हिन्दुस्थानमा बीजे क्याइ पण जोयुं नथी. कुमारश्री राजसाहेबे जणाव्यु के—आपणे जयपुरनुं संग्रहस्थान जोयुं, पण आना जेवुं तो नहींज.

बहारना एक लत्तामां—बागमां विविध प्रकारनां प्राणीओ (पशु–पक्षीओ) नो संग्रह छे ते अवश्य दर्शनीय छे. दर रविारे त्यां बेन्ड वागे छे अने मनुष्योनी विशेष भीड न थाय एटला माटे त्या जवानी फी विशेष राखेली छे.

ता. १७ मी जान्युआरीए मेदान तरफ चालीने फरवा गया, ज्या अमोए महान् नामांकित मनुष्योनी यादगीरी अर्थे बनावेल आरस तथा पीतळ वगेरेना बावलांओ जोयां.

ता. १८ मीए अमो टाउन हॉल जोवा गया अने त्यांथी गाडीमा बेरी शहेरना केटलाक लत्ताओमां फर्या तथा सन्ध्या समये एडन बाग तरफ गया

किल्लो, आर्टगेलेरी तथा म्होटो बंध वगेरे स्थळो जोवा लायक छे.

ता २० मीए अमो सरकारी टंकशाळ जोवा गया, कुमार श्री राजसाहेबने तेमां घणुं जोवानुं मळ्युं.

बीजे दीवसे अमो डाक जोवा गया, त्यां क्रेनो (भार चडाववा उतारवाना संचा) वडे परदेशथी आवेलां वहाणोमांनो माल उतारातो हतो अने परदेश जनारां वहाणोमां जत्थाबंध माल चडाववामां आवतो हतो. एक क्रेन सहुथी म्होटी हती, परंतु अमे गया ते दिवसे ते बंध राखवामां आवी हती.

अहींयां थती शरतो पण घणी सारी अने जोवा लायक छे, ता. २२ मीए अमो शरतो जोवा गया; त्या अमोने उत्तम बेठक मळी हती. त्यांथी शरतना समग्र मेदाननो देखाव अत्यन्त मनोहर जणातो हतो, जे स्थळे बेन्ड वागे छे ते स्थळ शरतना मेदाननी समीपेज छे अने ए जगो घणी सुगमता भरेली छे. ते दिवसे रात्रीना अमो बादशाही नाटकशाळामां एक उमदा नाटक कंपनीनु "दिलोजान थवानी अगत्य" ए नामनुं नाटक जोयुं.

ता. २३ मीए अमो चायना बजारमां गया, परंतु त्यां अमोने जोवा जेवुं बहुज थोडुंज मळ्युं.

ता. २४ मीए अमो बरकपुर जोवा गया, ए स्थळे आलीशां नामदार वायसरॉय दर रविवारे जाय छे, अमो त्यां लश्करी छावणी जोया बाद नामदार वाइसरॉयना बंगला तरफ गया.

जे वॉटर वर्को वडे आखा कलकत्ता शहेरने पाणी पुरुं पाडवामां आवे छे, ते जोया बाद साजना अमो कलकत्ते आव्या.

बंगाल बेंकनुं मकान भव्य छे, ते गंजावर खातानुं काम भिन्न भिन्न कार्यालयोमां यंत्रनी माफक नियमित चाले छे. ए जोया बाद अमो वनस्पति बागो जोवा गया, ए उपवनो विस्तृत तेमज समग्र हिन्दुस्ताननी अंदर रहेला अन्य औषधिओना उपवनो करतां उत्कृष्टता धरावे छे, हुगली नदी उपरनो पुल पण जोवा लायक छे, तेना एक आगळ पडता भाग उपरथी ए पुलनी आकृति अत्यन्त सुंदर जणाय छे अने ते जोवा जवा माटे खास परवानगी मेळववी पडे छे.

ता २८ मीए अमो कॉइलर घाट उपर गया अने त्यांथी होडीमां बेसी किनाराथी जरा दूर "ओरीया" नामनी आगबोट नांगरेली हती ते तरफ गया. अमने खबर मळ्या हता के ए आगबोट रविवारे जगन्नाथपुरी तरफ चाली निकळवानी हती, परंतु तपास करतां तेना कप्तान पासेथी खबर मळ्या के आवता बुधवार सुधी ते आगबोट त्यांज रोकावानी छे. ए उपरथी अमोए मेसर्स किलबर्ननी कंपनीनी "पुरी" नामनी आगबोट जगन्नाथपुरी तरफ आवता मंगळवारे जवानी होवाथी तेमा गोठवण करी, सारे भाग्ये ए आगबोट "ओरीया" करतां घणी सारी सगवडवाळी हती.

ता ३० मीए अमो बजार जोवा गया. शहेरना एक राजाबाबु नामना नामांकित जमीनदारने त्या बाकानेरनो कोइपण माणस मुनीम हतो, तेणे अमोने राजाबाबु साथे ओळखाण

करावी, अमो तेने त्यां गया, तेणे अमारुं उत्तम प्रकारे आतिथ्य कर्युं, अने राजसाहेबनी मुसाफरी विषे तेनी साथे स्वल्प समय वातचीत थइ.

ता. ३१ मीए मध्याह्न पछी अमे समुद्र किनारे होडीमा बेसी "पुरी" आगबोटपर आव्या, तेमां अमारो सरसामान गोठवी, अमारा चार परिजनो त्यां राखी अमो पाछा होडीमां बेसी कांठे आव्या. त्यांथी घोडागाडीमा बेसी इडन बाग तरफ फरवा गया अने रात्रीए हॉटेलमा खाणुं लीधा पछी कांठे आवी पाछा होडीमां बेसी "पुरी" आगबोट तरफ गया अने तेमा आखी रात सूइ रह्या, कारण के ए आगबोट सवारमां वहेली चालवानो हतो.

ता. १ फेब्रुआरीए प्रभातमां "पुरी" आगबोट कलकत्ताथी उपडी, ए वखते धूमस घणी होवाने लीधे अमो जरा दूर गया नहि त्यां तो समुद्र कांठो तथा शहेर वगेरे झांखा झांखा देखातां पण बंध पड्यां. कपतान तथा बोटना बीजा ओफीसरो मायाळु हता, तेमनी साथे चांद-बली पहोंच्या पछी अमे साडासात वजे भोजन कर्युं अने त्यांथी कटक जवा माटे न्हानी आगबोट हाजर नहि होवाथी रात्रीए अमोए "पुरी" आगबोटमांज शयन कर्युं.

ता. २ जीए अमो "पुरी" आगबोटमांथी उतर्या अने "गणेश" नामनी न्हानी बोटमां बेसी नहेर ओळंगी.

ता. ३ जीए प्रभातमा कटक पहोंच्या. मार्गमा बोटना संचानो अंदर कंइ खोटको थएल होवाथी, नियमित समय करतां जरा मोडुं जवायुं. त्यांथी सात माइल दूर बोराग स्टेशन सूधी खराब रस्ते बळदनी गाडीमां बेसी मुसाफरी करवी पडी, ए स्टेशनथी जगन्नाथपुरी तरफ जती ट्रेइन अमने बपोरना साडी त्रण कलाके मळी.

ता. ४ थीए अमे थोडो समय जगन्नाथपुरी शहेरनी अंदर पालखीमां बेसीने फर्या तथा सवारसांज समुद्र कांठानी शीतळ, सुखकारक अने आनंददायक हवामां चालीने फरवा गया.

ता. ५ मीए कुमारश्री राजसाहेब तथा अमारा हिन्दु परिजनो जगन्नाथना प्रख्यात तथा पवित्र मन्दिरे देवदर्शने गया. त्यां तेओए जगन्नाथजीनो एक महान् काष्ठनिर्मित रथ जोयो. ए रथ विषे जूना जमानाना धर्मनिष्ठ तथा आस्तिक बुद्धिवाळा, पण खरुं जोतां ज्ञान वगरना लोकोनी एवी मान्यता छेके जगन्नाथजीना उक्त रथ नीचे कचराइ प्राणनो परित्याग करवाथी स्वर्गनी प्राप्ति थाय छे. ए रीते अनेक लोको पोतानो देह ए रथ नीचे कचरावी प्राण रहित थता.

भूमि अत्यन्त रेताळ छे अने पाका रस्ता घणा थोडा छे. बपोर पछी अमो कलेक्टरने मळवा गया, परंतु तेओ डीस्ट्रीक्टमां गएला होवाथी अमो तेमने मळी शक्या नहि, त्यारबाद डेप्युटी माजीस्ट्रेटने मळवा गया, तेमणे अमोने सारो आवकार आप्यो.

आखा शहेरमां एकज घोडागाडी होवाथी बीजे दिवसे पण पालखीमां बेसी कुमारश्री राजसाहेब तथा अमारा नोकरो केटलाक देवस्थाने दर्शनार्थे गया. ता. ७ मीए अमो पाछा कटक आव्या, अहींथी मेसर्स मेकनलनी कंपनीनी न्हानी आगबोट " रंभा " मां बेसी नहेर ओळंगी ता. ८ मीए चांदबली पहोंच्या. त्यांथी " ओरीया " नामनी आगबोट पर आरूढ थइ बे दिवसनी मुसाफरी कर्या बाद ता. ११ मीना प्रभात समये अमो कलकत्ते आवी पहोंच्या.

अमारे मद्रास जवानुं होवाथी ता. १२ मीनी सवारे अमो आगबोट वगेरेनी सगवड करवा माटे मेसर्स टॉमस कुकनी कंपनीने मकाने गया. त्यारबाद " डयुप्ले " नामनी आगबोट जोइ, मध्यान्ह पछी केटलीएक रमतो तथा शरतोनुं अवलोकन कर्युं, तेमां बाइसीकलनी शरत निहाळवामां अमने अति आनंद प्राप्त थयो.

भोजन कर्या बाद अमो मी. फॉर्डना सीनेमेटोग्राफना खेल जोवा गया, तेमां खास करीने ज्युबीलीनो घणोज खुबीदार देखाव हतो.

बीजे दिवसे कुमारश्री राजसाहेब कालिकाने मन्दिरे तथा अन्य देवालयोमां दर्शने गया. सांजने वखते अमो बांध तरफ घोडागाडीमां बेसी फरवा गया. ता. १४ मीए अमोए मेसर्स टॉमस कुकनी कंपनीने मकाने आगबोटनी सगवड माटे जरा पूछपरछ करी, त्यारबाद डॉक्टर बेंकसने मळवा गया. पछीथी हमेशनी माफक इडनबाग तरफ फरवा गया अने खाणुं लीधा बाद बादशाही नाटकशाळाए प्रख्यात " कर्लहर्झ " ना मजेदार खेलो जोवा गया.

ता. १५ मीए अमो आलीशां नामदार वायसरॉयना सेक्रेटरी राय बहादुर बद्रीदास मकीमनां दहेरा तथा बागो जोवा गया, दहेरामां जूदीजूदी जातना पत्थरोनुं सुंदर नमूनादार नकशी काम छे. बाग तथा तेनी अंदरना बे विलासगृह सारी सगवडतावाळां बांधेला छे. आ सुंदर स्थळनी आसपासनो प्रदेश गंदको तथा भेजवाळो होवाथी हरकोइने अहीं एटलुं मालुम पडे एवुं छे. बपोर पछी अमो चित्रालयमां प्रदर्शन जोवा गया, जेमां केटलांक चित्रो घणांज चित्ताकर्षक हतां.

त्यारबाद अमो "डयुप्ले" आगबोटमा अमारे माटे रीझर्व करेला डबुगाओ जोवा गया.

ता. १६ मीए अमारे आगबोटमा डायामन्डहार्बरमाज रोकाइ रहेवु पडयु; कारण के भरती उतरी गइ हती, रेतीना टेकराओ तथा खडको उपर छीछरापाणीमां अथडावानुं आगबोटने जोखम हतु. ज्यां खडको वगेरे पाणीनी सपाटी नीचे हता त्या खलासीओए चेतवणी आपवा माटे थांभला अथवा पत्थरनी भींत चणेली हती

समुद्र शान्त तथा पवन अनुकूळ होवाथी ता. १७–१८ तथा १९ ना दिवसोए आनंदथी मुसाफरी करी. कप्तान मिलनसार स्वभावनो हतो, तेनी साथे वखतोवखत अमो वार्तालाप करता. ता. १९ मीए बपोरना चार कलाके अमो मद्रास जइ पहोंच्या. अमारी साथे बीजा केटलाक उतारुओ पण उतर्या, अमो कांठे उतर्या बाद घोडागाडीमा बेसी थोडं मूधी फरी आव्या, बीजे दिवसे प्रभाते एज आगबोटमां बेठा, बपोरना बार कलाके आगबोट त्याथी उपडी पवननी अनुकूळताने लीधे अमो सांजना सात कलाके पोंदीचेरी जइ पहोंच्या.

ता. २१ मीए सवारना दश वज्ये आगबोट पोंदीचेरीथी उपडी, राजेरे खाणुं लीधा बाद कप्ताने सोरटीनी रमत करी, तेमा अमने आनंद प्राप्त थयो.

ता. २२ मीए गरमी सखत जणाइ तथा लंकानी नजीक आव्या ते पहेला दरियामा जरा तोफान जेवुं थयुं, सांजने वखते आगबोट जरा डोलवा लागी, तेथी अमोने स्हेज बेचेनी उत्पन्न थइ पण कुमारश्री राजसाहेबने आनंद पडतो हतो.

ता. २३ मीए सवारना आठ कलाके अमो कोलंबे उतर्या, न्युगाली फेस हॉटेलमां अमोए उतारो कर्यो, आ हॉटेल युरोपीअन प्रथा प्रमाणे चलाववामां आवे छे, अमोए अमारा प्रवासमां आवा प्रकारनी आ पहेलीज हॉटेल जोइ. रस्ताओ पहोळा, स्वच्छ अने सुंदर बांधेला छे. सांजने वखते अमो ब्रेक वॉटर तरफ फरवा गया.

ता. २४ मीए शेख जीवणजी नुरभाइनी नामांकित पेढीवाळा मी. तैयबजी अलीभाइए अमारे माटे हॉटेले एक घोडागाडी मोकली, तेमां बेसी अमो राणीनो बाग तथा तज आदि वृक्षोनी वाटिका वगेरे स्थळो जोवा गया, ज्यां अमोए उष्ण प्रदेशमां उगता केटलीक तरेहना अजायबी उपजावे एवा छोडवा जोया. राजकोटवाळा वकील मो केवळराम दवेए पोताना असील मी. नुरभाइने अमारे माटे बनती सगवड करी आपवा लख्युं हतु. मी. लॉडसाहेबे पण एज मतलबनो पत्र

लख्यो हतो. मी. नुरभाइ सांजने वखते गाडी लइ अमारी पासे आव्या, तेमां बेसी अमो शहेरतुं मेदान तथा बीजा केटलांक उत्तम स्थळोतुं अवलोकन करवा गया.

ता. २५ मीए प्रभातमां नास्तो कर्या पछी "माउन्ट लॅवीनीया" नामनी हॉटल जोवा गया, आ हॉटेल छेक दरिया किनारे बलके जमीननी अणी बधीने दरियानी अंदर गयेल छे ते स्थळे आवेली छे तेथी त्यांनी आजुबाजुनो देखाव बहुज रळियामणो जणाय छे. ए स्थळे मी. नुरभाइए तथा मुंबइना रहीश मी. दादाभाइ नामना त्रीश वर्षना जुना पारसी गृहस्थे अमारुं सारुं आतिथ्य कर्युं मी. नुरभाइ दश वर्ष पहेलां तेमना वकील केवळराम दवे साथे पोताने वतन कच्छ मांडवी तरफ जती वखते वांकानेर आव्या हता, तेओ लाडसाहेबने त्यां एक दिवस रह्या हता अने कुमार श्री राजसाहेबनी पण तेमने मुलाकात थइ हती. मी. नुरभाइए अमोने अही आपेली मिजमानी वखते अहीना लेफ्टेनन्ट गवर्नरना हिन्दी नकीब मी. मोहन मुदलीयर साथे पिछाण करावी.

ता. २६ मीए सवारने वखते गाडीमां बेसी अमो बजारमां गया अने त्यांनी केटलीएक दुकानो जोइ, त्यारबाद लेफ्टेनन्ट गवर्नरना आसिस्टन्ट तथा प्रदेशना सेक्रेटरीने मळवा गया. आगले दिवसे तेणे अमारी सगवडता माटे पूछपरछ करेली होवाथी अमोए तेनो आभार मान्यो. बपोर पछी कीलाणीतुं प्रख्यात बुद्धनुं दहेरुं जोवा जवानुं मुकरर करेलुं हतुं, परंतु वरसादने लीधे अमाराथी त्यां जइ शकायुं नहि; तेने बदले छेक सांजे अमो गाडीमां बेसी थोडे सूधी फरी आव्या.

ता. २७ मीए सवारे सात वज्यानी ट्रेनमां कोलंबेथी निकळ्या अने बपोरना दोढ वज्ये कांडी जइ पहोंच्या. त्यां कीन्स हॉटेलमां उतारो कर्यो अने बपोर पछी त्यांनु सरोवर, लीलाछम मेदान, सुंदर वृक्षो, तळाव तथा झरणां आदिथी रळियामणो आसपासनो प्रदेश जोवा गया. त्यारबाद ओरीएन्टल लायब्रेरी तथा बुद्धना दहेरानुं अवलोकन कर्युं. ए दहेरामां बुद्धनी प्रतिमा एक स्फाटिकना महान् पत्थरमांथी कोतरी काढेली छे, अने ते घणीज दर्शनीय छे. अमो सर्वने छेक अंदरना भागमां मूर्ति पासे जवा दीधा, त्यांना मुखीए अमोने दहेराने लगती दरेक बाबतनी माहिती आपी. आ गुरु त्यां घणो विद्वान गणातो हतो, ते अंग्रेजी तथा फ्रेंच बन्ने भाषा सारी रीते लखी वांची शकतो हतो.

ता. २८ मीए अमो त्यांनी हॉस्पीटल जोवा गया, ते घणा सारा पाया उपर चलाववामां

आवे छे. त्यारबाद अमो पेरोदीनोजा तरफ वनस्पतिनो वाटिकाओ जोवा गया, त्यांना उपरी अमलदारे समग्र वाटिकामां अमारी साथे फरी अमोने उष्ण प्रदेशमा उगता नवाइ जेवा छोडवा तथा वनस्पति वगेरे बताव्यां, रबरनुं वृक्ष खास जोवा लायक छे, ए बागमां एक न्हानुं म्युझीअम छे, तेमां लंकामां उत्पन्न थतां विविध काष्ठोना नमूनाओ एकत्र करेला छे. अमो चानुं बावेतर जोवा गया, परंतु कारखाना बंध होवाथी चा केवी रीते जूदी करवामां आवे छे ते जोवानुं अमोने मळी शक्युं नहि. बाद अमो महान् पुस्तकालय जोवा गया, ए मकान कांडीना राजाओनी कारकीर्दीमां हमामखाना तरीके वपरातुं हतुं, जूनी कचेरीमां काष्ठनुं नमूनादार नकशी काम छे.

ता. १ मार्च–अमो सवारना १०–४० कलाके कांडीथी नोवारा एलीया तरफ जवा निकळ्या. ए स्थळ समुद्रनी सपाटीथी पांच हजार फुट उंचुं आवेलुं छे, त्यांसूधी रेलवेनी सडक छे. मार्गनी आजुबाजुनो देखाव मनोरंजक हतो, हवा शीतल तेमज आनंददायक हती. हॅटन स्टेशन मूक्या पछी "आदम" नामनुं उन्नत शिखर देखायुं. बपोरना साडात्रणे अमो नुवारा एलीया पहोंच्या, त्यांथी घोडागाडीमां बेसी ग्रान्ड हॅटेले गया अने खाणुं लीधा पछी अमे शरतनुं मेदान जोवा गया, त्यां केटलीएक अंग्रेजी बानुओ "गोल्फ" नी रमत रमती हती. सांजने वखते आसपासनी टेकरीओनो मनोहर देखाव जोवा माटे अमो पेदल फरवा गया. आंहीनी हवा इंग्लांडनी माफक ठंडी हती, छायामां गरमीनुं माप ७० डीग्री हतुं.

ता. २ जी मार्च अमो ग्रेगरी सरोवर जोवा गया. त्यांथी क्युपोननुं जवनो दारु बनाववानुं कारखानुं जोइ नास्तो कर्या बाद स्क्रबनुं टोफार्म जोवा गया अने त्यां कारखानामां चालतुं चानुं काम जोयुं. बपोर पछी अमो रळियामणो "हकगाला" नामनो वाटिकाओ तरफ फरवा गया; त्यांथी सांजना पांच वज्ये पाछा आव्या. बे कलाक आराम लीधा पछी अमो सात वज्ये चांदनीमां फरवा निकळ्या अने आठ वज्ये स्टेशनपर जइ कोलंबो जतो ट्रेनमां बेठा. ता. ३ जीए सवारना छ कलाके अमो कोलंबो जइ पहोंच्या.

अमारे अहींथी तुतीकोरीन जवानुं हतुं, एटला माटे आगबोट वगेरेनो सगवड करवा अमो मेसर्स टॉमस कुकनी कंपनीने मकाने गया, त्यारबाद म्युझीयम तथा शहेरना केटलाक लत्ता जोइ क्वीन्स हाउसे पण जइ आव्या.

ता. ४ मार्च सवारे कीलाणीए प्रसिद्ध बुद्धनुं देहेरुं जोवा गया अने बपोर पछी वहाणे च-

हवा माटे अमो बंदरकांठे जइ पहोंच्या. मी. नुरभाइ पोतानी गाडी लइने अमोने वळाववा आवेल हता, तेणे अमने छेल्ला सलाम करी, विदाय थती वखते कुमारश्री राजसाहेबे तेना तरफ पोतानो आभारनी लागणी प्रदर्शित करी अने कह्युं के तमारी सहायताथी तेमज लागवगने लीधेज आटला थोडा दिवसोमां सीलोननी अंदर जे जे जोवा जेवुं हतुं ते सघळुं अमो जोइ शक्या.

ता. ५ मार्च सवारना १०-५० कलाके अमो तुतीकोरीन आवी पहोंच्या. त्यां ब्रीटीश इन्डीया हॉटेलमां उतारो कर्यो, त्यांना सबमेजीस्ट्रेट अमने मळ्या, एमणे अमने पूरती सगवड करी आपी, जेथी अमो स्वल्प समयनो अंदर शेहेरमां जइ देहेरां तथा बाग वगीचाओ वगेरे जोवा लायक स्थळो जोइ आव्या.

ता. ६ ठीए सवारना साडानवनी ट्रेनमां अमो आंहीथी निकळ्या अने बपोरना २-४० कलाके मदुरा जइ पहोंच्या. त्या मुसाफरने रेहेवाना बंगलामां उतारो कर्यो. अहींया अमोए एक हजार महान् स्तंभोवाळा हॉलथी सुशोभित हिन्दुनुं एक म्होटुं देवालय तथा १३५ शाखावाळुं एक महान् वटवृक्ष जोयुं, ए सघळी शाखाओए फरीथी जमीनमां मूळ घाल्यां छे, ए वटवृक्षनुं क्षेत्रफळ लगभग ९० फुट त्रीजीयावाळा गोळ जमीनना भागमां छे.

ता. ७ मीए अमो म्होटो महेलात तथा अमेरिकन मीशन हॉस्पीटल जोवा गया. त्यारबाद उपर कहेल हिन्दु देवालयनुं फरीने अवलोकन करवा गया, ज्यां सब मेजीस्ट्रेटनी भलामणथी ते जग्याना अधिकारीए मूर्तिना शणगार माटे चडाववामां आवता रत्नजटित आभरणो तथा जवाहिर अमने बताव्यां. आभरणो अत्यंत किम्मती छे अने तेथी आ तरफना सुवर्णकार केवा कारीगर छे ते आ नमूनाओ उपरथी स्पष्ट जणाय छे. अहींथी अमो बपोरना त्रण वज्यानी गाडीए निकळ्या अने सांजना ७-३८ कलाके त्रीचीनोपोली पहोंच्या, त्यां अमोए रेल्वे हॉटेलमां उतारो कर्यो.

ता. ८ मीए सबमेजीस्ट्रेट स.थे म्होटी बजारमां थइ फॉर्टरॉकनी तलेटी सूधी फरवा गया, आ टेकरीने मथाळे एक म्होटुं मनोहर मन्दिर छे. आ टेकरी उपर सरकारी पताका फरके छे, ए स्थळेथी समग्र त्रीचीनापोली शेहेरनो देखाव उपर उपरथी दृष्टिगोचर थाय छे. मार्गमां मेजीस्ट्रेटे अमने लॉर्ड क्लाइवनुं जे स्थळे मुकाम हतुं ते जगो बतावी. त्यारबाद अमो सुप्रसिद्ध तथा श्रेष्ट गणातुं श्रीरंगमनुं देवालय जोवा गया, ते मदुरानां देवालयो जेवीज बांधणीनुं छे, त्यांना तोषाखानामां जडाव दागीना वगेरे जोइ अमो श्रीजम्बुकेश्वरनुं मन्दिर जोवा गया अने त्यारबाद अमोए वॉटरब-

र्कसनुं पण अवलोकन कर्युं. आ सघळुं अमो सवमेजीस्ट्रेटनी सहायताथी बपोरना बार पहेलां जोइ आव्या अने १-१० नी गाडीए तांजोर गया, त्यां ३-१० कलाके पहोंच्या, अने डाकबंगलामां उतारो करी त्यांना दर्शनीय स्थळो पैकी शिवालय, शिवगंगा तळाव तथा स्वार्झना शिष्य राजा शरफोजीए बंधावेलुं स्वार्झनुं देवळ जोवा गया.

ता. ९ मीए राजमहेल जोयो, अन्तिम राजानी छ विधवा राणीओ ए महेलना एक विभागमां रहे छे. महेलनी अंदर बे कचेरीओ छे. लायब्रेरीमां पुरातन संस्कृत पुस्तकोनो तथा बीजां शास्त्री पुस्तकोनो महान् संग्रह करेलो छे. ए महेलमां बे सांधावाळा हाडपींजरो उभां करेलां छे. एक पिंजर पुरुषनुं छे अने बीजुं स्त्रीनुं छे. महेलनी पाछळ डाबी बाजुए जूना किल्लानो थोडो भाग चणतां अपूर्ण रही गयो छे, त्यां अमोए एक म्होटी तोप जोइ, सांजे अमो यंत्रवडे पाणी चडाववानी जगो जोवा गया. त्यारबाद प्रथमथी करेली गोठवण प्रमाणे अमो स्टेशने जइ फर्स्टक्लास केरेजमां सूइ रह्या.

ता. १० मीए सवारमां ४-४० नी गाडीए बेसी बपोरना २-५५ कलाके अमो पोंडीचेरी पहोंच्या. मार्गमां विलुपुराम स्टेशने अमोए नास्तो कर्यो अने गाडी बदलावी. सरकारी रेसीडन्ट कपतान नेपीयन कुमारश्री राजसाहेबने मळवा स्टेशनपर आवेल हता. अमोए युरोपीअन हॉटेलमां उतारो कर्यो. सांजना अमो स्मशान, टाउनहॉल तथा बॅन्ड स्टेन्ड जोवा गया.

ता. ११ मीए पब्लीक बाग जोवा गया. सवारना दश वज्ये अंग्रेजी रेसीडेन्टे कुमारश्री राजसाहेबने मुलाकात आपी, अने पोताने त्यां खाणुं लेवानुं अमने आमंत्रण कर्युं, तेणे अमने जणाव्युं के अहीना फ्रेन्च गवर्नर बपोरना त्रण वज्ये राजसाहेबनी मुलाकात लेवा आवशे. ए प्रमाणे फ्रेन्च गवर्नर अमारी पासे २-५० कलाके आव्या. नामदार गवर्नर अंग्रेजी भाषा समजी शकता नहि, परंतु कप्तान नेपीअननी मददथी कुमारश्री राजसाहेब साथे पंदर मीनीट सूधी तेओए वातचीत करी, शहेरनो देखाव, हॉटेलनी सगवड तथा अमारी मुसाफरी वगेरेमां आनंद पडतो हतो के केम वगेरे पूछयुं, तेमणे अमारो उत्तम रीते आदरसत्कार कर्यो. सांजरे अमोए कप्तान नेपीअनने बंगले खाणुं लीधुं, तेमां कपतान नेपीअननी स्त्री तथा बीजी एक बानु मिजमाने भाग लीधो हतो.

ता. १२ मीए अमो पंपींग स्टेशन जोवा गया, त्यां माणसो हाथे काम करे छे; संचा के

यंत्र कांइ नथी. सांजरे अमो अंग्रेजी प्रतिनिधि नेपीयनने बंगले फरी मुलाकात लेवा गया अने वळतां रस्तामां " डयुप्ले " नुं बावलुं तथा केटलाक स्मरण स्थंभ जोया.

ता. १३ मीए सवारे ९-४० नी गाडीमां अमो पोंदीचेरीथी निकळ्या, कपतान नेपीयने एक माणसने चीठी लखीने अमारी साथे मोकल्यो हतो, तेथी अमारे जकात माटे कंइ अटकायत के भांजगड भोगववी पडी नहि. कपतान पोते अमोने स्टेशन उपर वळाववा आव्या हता. कपतान नेपीयनमां खरेखरां गृहस्थाइनां लक्षण छे. तेमनो अमारा तरफ घणो भाव हतो अने अमे पोंदीचेरीमां रह्या ते दरमीयान अमोने जे सारी सगवड तथा आनंद प्राप्त थयो तेने माटे अमे तेमनो अत्यन्त आभार मानीए छीए. अमे सांजना छ वाग्ये मद्रास पहोंच्या अने त्यां कॉमेरा हाटेलमां उतारो कर्यो.

ता. १४ मीए अमो सरटॉमस मनरोनुं बावलुं जोवा गया, त्यांथी नामदार गवर्नरना बंगला पासे थइने पीपल्स बाग जोवा गया, त्यारबाद विक्टोरीया हॉल तथा प्राणीखानुं जोयां. अहींनुं प्राणीखानुं अमोए जोएलां अन्य प्राणीखानाओ करतां घणुंज उतरतुं छे. सांजे अमे जहाज खातुं जोवा गया अने दरिया किनारे पगे चालीने फर्या.

ता. १५ मीए शीपोकबागमां फरवा गया, बाद यंत्रविद्यानी (एन्जीनीयरींग) कॉलेज तथा तेने लगती उद्योगशाळा जोइ, ते वखते त्यांना एक प्रोफेसर हाजर हता, तेणे अमोने कॉलेजना सर्व विभागो बताव्या अने उद्योगशाळामां थतां दरेक जातनां कामनी अमने समजुती आपी. आ कॉलेजनी लायब्रेरीमां पुस्तको घणां तेमज किम्मती छे. त्यारबाद अमो सेनेट हाउस जोवा गया, तेना आगळना भागमां नामदार महाराणीश्रीनी ज्युबीलीना स्मारक तरीके तेमनुं बावलुं उभुं करेल छे. सांजे अमो रेल्वे स्टेशन तरफ थइने समुद्रकांठे फरवा गया.

ता. १६ मीए अमोए नवी दीवादांडी उपरथी कोर्ट तथा हाइकोर्टनां मकानो जोयां. आ दीवादांडी उपरथी आखा मद्रास शहेरनो मनोहर देखाव उपर उपरथी जोइ शकाय छे. अमो पचीपानी कॉलेज जोवा गया, त्यारबाद मेमोरीयल हॉल तथा बायबल सोसायटीनुं मकान जोया पछी म्युझीअम जोवा गया. विक्टोरीया टेकनीकल शाळा तथा कॉनमेर लायब्रेरी पण जोयां.

ता. १७ मीए अमो बजार जोवा गया, त्यां कुमारश्री राजसाहेबे अहीं बनती वस्तुओना

केटलाक नमूना खरीद कर्या. त्यारवाद अमोए टीचर्स कॉलेज जोइ. आवा प्रकारनी पाठशाळा आखा हिंदुस्थानमां एकज छे. शिक्षणशास्त्रमां घणा माणसोने रस पडतो नथी, खास केळवणीना अधिकारीओनेज आवी शाळा आकर्षे छे.

त्यारवाद अमो खेतीनुं शिक्षण आपती कॉलेज जोवा गया, खेतीना प्रयोग करवा माटेना तेने लगतां खेतरो वगेरे जोयां, आ पाठशाळामां काठिआवाडना सात विद्यार्थीओ अभ्यास करे छे, तेमां घणाखरा जामनगरना हता, ए विद्यार्थीओ साथे अमो खेतर उपर फरता हता एटलामां प्रीन्सीपाल साहेव आव्या, तेमणे अमोने जोवा लायक वताव्युं. कॉलेजनुं मकान शहेरथी पांच माइल दूर नदी किनारे आवेलुं छे.

ता. १८ मीए अमो माउन्ट सेन्ट टॉमस नामनी टेकरी जोवा गया, तेनी तळेटीमां लश्करी छावणीनो पडाव छे, तथा उपरना भागमां आर्मीनीयन देवळ छे. वपोर पछी अमो मद्रासमां घणी सारी गणाती स्पेन्सनी दुकानो तथा वीजी साधारण जोवा लायक चीजो जोइ आव्या वाद अमोए सांजना साडाछनी ट्रेनमां माइसोर जवानुं नकी कर्युं हतुं, जेथी स्टेशने गया; प्रथम प्रोग्राम प्रमाणे अहींथी वेंगलोर जवानुं हतुं, पण आ फेरफार अमने ठीक लाग्यो हतो अने ते ते स्थळना अधिकारीओने ते मतलवना वखतसर खबर आपेला होवाथी कोइने कंइ अडचण पडी न हती. अमोए आकोनिम जंकशने रीफ्रेशमेन्ट रुममां नास्तो कर्यो.

ता. १९ मीए सवारना साडा छ वज्ये वेंग्लोर स्टेशने ट्रेन एक कलाक रोकाय छे, त्यां अमे चा नास्तो वगेरे लीधो. त्यारवाद वपोरना २-२६ कलाके अमो माइसोर जइ पहोंच्या. गवर्नमेन्ट हाउस (सरकारी एलचीने रहेवानुं मकान) थी अमारे माटे स्टेशन उपर एक गाडी आवेली हती, तेमां वेसी अमो वेलींग्टन हाउसे गया. आ मकान म्होटुं अने सोइवाळुं छे. त्रण कलाक आराम लीधा पछी अमो ज्यां जुदी जुदी जातनां प्राणीओ एकठां करेलां छे ए वाग, सरकारी रेसीडन्टनुं मुकाम तथा एक वजार जोवा गया.

ता. २० मीए अमो अश्वशाळा (तवेलो) जोवा गया, त्यां घोडाओ घणा सारा अने संभाळ पूर्वक राखेला छे. गाडी, घोडा तथा तेने लगता समग्र सामाननी व्यवस्था अति उत्तम छे. अहीं अमोए एक सारा नमूनानी वराळथी चालती गाडी जोइ. त्यारवाद अमो राजमेहेले गया; त्यां अमोए घणी सारी गायो जोइ, तेमांथी वे गायो खास पूजवा राखेली छे. नामदार महाराजा

सगीर वयना होवाथी नामदार महाराणीश्री राज्य चलावतां हतां, तेनां प्राइवेट सेक्रेटरी मी. कुंतीराजने अमो मळवा गया, पण तेओश्री कंइ कामगीरीपर गएला होवाथी अमोने तेमनुं मिलन थयुं नहि. बपोर पछी अमो कचेरी, जगमोहन महेल तथा स्टेटना हाथी वगेरे जोइ आव्या.

ता. २१ मीए एक कलाकनी सफर कर्या पछी हुं दीवान साहेबने मळवा गयो, पण तेओ तेमने मकाने न हता. बपोर पछी दिवानजी साहेबना प्राइवेट सेक्रेटरी मी. के. कृष्ण आयर अमोने मळवा आव्या. त्रण वाग्ये अमो श्रीरंगपट्टम गया. त्यां अमोए महान् देवळ, किल्लो, मसजीद, टीपुसुलताननां वखतना सुंदर जीर्ण महेलवाळो दरियाबाग, टीपुसुलतान, तेनी माता तथा हैदरअली वगेरेनी कबरो, अने कर्नलबेलीना पराक्रमनो स्मरण स्तंभ वगेरे जोयां, त्यांथी पाछा अमो माइसोर आव्या.

ता. २२ मीए बपोरे घोडागाडीनी लहेर कर्या पछी हुं दिवानजी साहेबना प्राइवेट सेक्रेटरीने मळवा गयो; तेणे मने कह्युं के महाराजा साहेब कुमार श्री राजसाहेबने सांजना पांच वाग्ये समर पेलेस (ग्रीष्मगृह) नामने बंगले मळशे. त्यारबाद महाराजा साहेबना अध्यक्ष तथा वाली मी. एस्. एम्. फ्रेझरने आ मुकरर करेल वखतना खबर आप्या. नियमित वखते अमो समरपेलेसे गया, महाराजा साहेब तथा तेमना ट्युटरने मळ्या; तेमनी साथे कुमारश्री राजसाहेबनी मुसाफरीनी तथा बीजी साधारण वातचीत कर्या पछी अमो त्यांथी रजा लइ चामुंडी हील तरफ फरवा गया, अर्धे रस्ते जतां चामुंडी मातानुं देहेरुं आव्युं, तेनां राजसाहेबे दर्शन कर्यां. आ उन्नत स्थळेथी नीचेनी आजुबाजुनो प्रदेश घणोज रळियामणो देखाय छे. खाणुं लीधा बाद अमो स्टेशने गया अने बेंगलोर जती ट्रेनमां बेठा; स्टेशनपर दिवानजी साहेब तेमना सलूनमां बेठा हता त्यां जइ हुं तेमने मळ्यो.

ता. २३ मीए सवारना ६–४६ कलाके अमो बेंगलोर जइ पहोंच्या. मेजरजोन्स अमोने स्टेशनपर मळ्या अने ते अमोने ग्रेमवीला (कोइ हॉटेलनुं नाम जणाय छे) ए लइ गया. बपोर पछी अमो शहेरनी तथा स्टेशन पासेनी बजारो जोवा गया, तथा बेंगलोर एजन्सीनी दुकाने केटलीक वाजिंत्रवाळी घडियाळो जोइ. मुंबइवाळा डॉक्टर चॉकशी अहीं हता, तेमने हुं सांजने वखते मळवा गयो, तेणे अमने शहेरमां जोवा लायक स्थळो बताववानुं कह्युं.

ता. २४ मीए सवारना साडा सात वाग्ये डॉक्टर चॉकशी अमारे त्यां आव्या अने प्रथम अमने जेल जोवा लइ गया. जेलमां बंदोबस्त सारो छे, जेलने लगतो उद्योगशाळा तथा अन्य

व्यवस्थाओनुं अमे अवलोकन कर्यु. त्यारबाद लालबाग तथा म्युझीअम वगेरे जोवा गया. पछीथी हुं मे. दिवानजी साहेब तथा मी. जोन्सने मळवा गयो. सांजे अमो राजमहेल तथा म्होटी लश्करी छावणीनो मुकाम जोया बाद खाणुं लइ रातना नव वाग्यानी ट्रेनमां बॅंगलोरथी रवाना थया. अमारे माटे स्टेटे कृपा करी एक डब्बो रीझर्व करावेलो हतो तेमां अमे सूइ रह्या.

ता. २५ मीए अमो चेंपीअन स्टेशने उतर्या, त्यांना मेजीस्ट्रेट मी. रायटर स्टेशनपर मळ्या अने ते अमोने डाकबंगले लइ गया. खाणुं लीधा बाद अमो माइसोरनी खाणो जोवा गया, त्यां अमोने मेनेजर मी. हेनकॉकनी ओळखाण थइ, तेणे अमारा तरफ मारो भाव बताव्यो, तेणे अमोने कह्युं के खाणनी अंदर जोवा जवा माटे अमुक प्रकारनाज वस्त्रो पहेरवां पडशे. अमोने आ बाबतनी खबर नहि होवाथी तेवी जातनो पोशाक साथे लेवानी अमे तजवीज करी नहोती; परंतु मी. हेनकॉके तेवां वस्त्रो अमने पूरां पाड्यां. खाणमां केवी रीते काम चाले छे ते विषे चार लीटी लखवी अगत्यनी छे प्रथम पाणाओने केवी रीते जातवार गोठववामां आवे छे, केवी रीते तेनो भूको करवामां आवे छे, केवी रीते तेनी साथे धातुनुं मिश्रण करवामा आवे छे तथा सायेनाइड क्रियाओथी केवी रीते तेने स्वच्छ करी लगभग ९५ टका जेटलुं जुदुं करवामां आवे छे वगेरे अमोए जोयुं. त्यारबाद अमोने लीफ्टमां बेसाडीने खाणनी अंदर तेरसो फीट नीचे त्रण मीनीटमां पहोंचाड्या. आ लीफ्ट यंत्र वडे चलाववामा आवे छे, तेमा चारजणा माड बेसी शक्या. अमो एक बीजाने अडीने बेठा हता, पण अंदरना भागमां अन्धकार एटलो बधो हतो के अमो एक बीजाने जोइ शकता नहोता. लीफ्टमाथी अमो एक ओरडी जेवा आकारनुं कोतरी काढेलुं हतुं त्यां उतर्या अने तुरत मीणबत्तीओ सळगावी. त्यारबाद एक पछी एक सीडीथी त्रणसो फीट नीचे गया, सीडीना पगथीआं सांकडां तेमज गोळ लोढानी सळीओना होवाथी एक पछी एक उतरवुं पडयुं. खाणनुं काम शी रीते चालतुं हतुं ते अमे अहीं जोयुं. भार लइ जवानी तथा लाववानी गाडी माटे अहीं पाटा नांखेल हता, पाणी कोतरवानी सारडी ए एक नवाइ जेवुं यंत्र छे अने ते हवाना दबाणथी चलाववामां आवे छे. अमो त्यांथी दीवावाळी लीफ्ट वडे बहार आव्या आ रस्तो ढाळ पडतो छे. आ रीते खाणनी अंदर चालतुं समग्र काम जोइ बहार आव्या त्यारे अमोने घणोज प्रस्वेद थयो हतो अने ते पछी पण गरमी जारी हती. अमे अमारां वस्त्रो एकदम अळग करी मी. हेनकोकने मकाने गया; तेणे अमारे माटे स्नान वगेरेनी सोइ करावी राखी हती. न्हाया बाद कपडां पहेरी अमोए तेनी साथे भोजन कर्यु तेमां अमने घणोज स्वाद मालूम पडयो. मी. हेनकोकनो

उपकार मानी तेमना पासेथी रजा लीधा बाद अमो गाडीमां बेसी साडात्रणनी ट्रेनमां बेंगलोर जवा माटे रवाना थया. ज्यां अमे सांजना ७–७ कलाके जइ पहोन्च्या. त्यां (बेंगलोरमां) अमोने कोल्हापुरना मे. पोलीटीकल एजन्टनो तार मळ्यो के अही (कोल्हापुरमां) प्लेगनो उपद्रव होवाथी आववानु मुलतवी राखवुं ए सलाह भरेलु छे.

ता. २६ मीए अमो स्टेशन तरफ फरवा गया अने बपोर पछी डॉक्टर चोकशीनी साथे नवी हॉस्पीटल, जूनो किल्लो तथा जूनी हॉस्पीटल जोइ आव्या. बाद वतन तरफ विदाय थवा माटे खाणुं लीधा पछी दादर–मुबइनी सांजना साडासातनी ट्रेनमां अमो चाली निकळ्या.

ता. २८ मीए अमो सवारना साडापांचे दादर जइ पहोंच्या. त्यां प्लेगखाताना अधिकारीओए मात्र अमोनेज स्टेशन बहार जवानी रजा आपी, कारणके अमारी पासे वांकानेरनी सळंग टीकीटो हती. बीजा पेसेन्जरोने तपास माटे स्टेशनना कम्पाउन्डमां रोकवामां आव्या. सरदार उमर जमाल तथा जहांगीर कावसजी कलववाळा अमोने मळ्या अने अमारे माटे खास तैयार करेला तंबुए अमोने लइ गया. अमो आखो दिवस त्यां रोकाया, मात्र बपोरना सेग्रेगेशन केम्प जोवा गया हता. अमो दादरथी रात्रीना ९–४७ नी मेल ट्रेनमां वतन तरफ रवाना थया अने ता. २९ मी मार्चे हिन्दुस्थाननी आनदजनक मुसाफरी करी आरोग्यता पूर्वक वांकानेर आवी पहोंच्या.

अही स्टेट कारभारी रावबहादुर मोतीचंद तुलसी, स्टेटना सर्व अमलदारो, शेहेरना दरेक कोमना प्रतिष्ठित गृहस्थो, बाबासाहेब बाईश्री जामबासाहेब, जनानानां राणीसाहेबो तथा आ प्रसंगे खास मळवा आवेला राजसाहेबना केटलाक मित्रो अमोने प्रेम भरेलो आवकार आपवाने स्टेशनपर आव्या हता.

आ शुभ प्रसगे शेहेरमां प्रवेश करवानो अमुक समय मुकरर करेलो होवाथी अमो एक कलाक पर्यन्त स्टेशनवाळे बंगले रोकाया अने त्यारथी सरघसने आकारे सांजना ७–२० कलाके अमो सर्व राजमहेले आवी पहोन्च्या.

कुमारश्री राजसाहेबनी हिन्दुस्थाननी मुसाफरीनो अहेवाल पूर्ण करतां पहेलां कुमारश्री राजसाहेब तथा अमारी साथेना माणसो वती निम्नलिखित गृहस्थोनो उपकार मानुं छुं. मे. पोलिटिकल एजन्ट साहेबे जे उपयोगी सूचनाओ, किंमती सल्लाह तथा अमारे जोवानां स्थळो माटे अंग्रेजी अधिकारीओ उपर भलामणना पत्रो लखी आपेल तेने माटे तेओ साहेबनो उपकार मानुं छुं. ए

पत्रोवडे ते ते स्थळना अधिकारीओनी सहायताथी आटलुं बधुं जोवानुं तथा जाणवानुं बनी शक्युं छे, तेमज अमारी यात्रा आटली बधी आनंददायक थइ पडी छे, एवीज सूचनाओ तथा भलामणपत्रो माटे आसीस्टन्ट पोलीटीकल एजन्ट केपतान कार्नेजीनो पण आभार मानुं छुं. कुमारश्री राजसाहेबने सामान्य सूचनाओ आपनार मी. वॉडींग्टननो, सर्व प्रकारनी सगवड करी आपनार मी- जी. एन् लॉडनो अने जे कोइ जाणीता मित्रोए अमने मुसाफरीमां मदद आपी छे ते सर्वनो हुं उपकार मानुं छुं. ”

महाराजा अमरसिंहजी !

ए रीते आप नामदारे हिन्दुस्थाननी द्वितीय मुसाफरी करी ते दरम्यान खीजडीया भायात सुरसिंहजी अपुत्र स्वर्गवासी थतां त्यां मेनेजमेन्ट वेसाडी स्टेट तरफथी वाडने जोवाइ बांधी आपवामां आवी, अमरविलास राज्यमेहेलनो पायो नंखायो. ता. १ जान्युआरीना रोज रा. बा. गणपतराव लाड पोतानो चार्ज राजकोट स्टेटना माजी कारभारी रा. बा. मोतीचंद तुलसीभाइने सोंपी पोते राजकोट स्टेट कारभारीनी जगोए दाखल थया. आपश्रीए वतनमां पधार्या बाद मात्र सवा मास निवृत्ति लइ ता. ३–५–१८९८ वैशाख शुदि १३ ने भोमवारे पाछुं युरोपनी मुसाफरी अर्थे प्रयाण कर्युं; ए वखते कम्पेनीयन तरीके मेजर एफ, डी, बी, हेन्कोक साहेब तथा मी. रतनगा वेजनजी आपनी साथे हता. ता. ४ ना सुखदायक प्रभात समये मनमोहिनी मुंबइ नगरीमां प्रवेश करी आपे एस्प्लेनेड हॉटेलमां रहेठाण राख्युं अने ता. ६ सूधीना त्रण दिवसो केटलाक स्नेहीओनी मुलाकातमां, युरोप जेवा शीत प्रदेशनी सफर अर्थे केटलांक उष्ण वस्त्रो आदिनी खरीदीमां तथा आरोग्यतामां अभिवृद्धि करनार हवाखावानां प्रसिद्ध स्थळोए हरवा फरवामां व्यतीत करी ता. ७ मी शनिवारे सवारमां स्टीमरपर साथेनो सरसामान पहोंचाडवानी व्यवस्था करी, मध्याह्न समये विलियम वॉटसननी कंपनीमां जइ बाकी रहेली सीलकनुं परदेशी नाणुं कराव्युं, त्यारबाद आप स्नेहीमंडल सहित एपोलो बंदरपर जइ पहोंच्या. ए वखते अनेक मुसाफरो स्टीमरनी राह जोता त्यां बेठा हता, तेवामां दूरथी स्टीमर देखाइ, अन्य मुसाफरोनी माफक आप पण मछवामां बेसी स्टीमर तरफ रवाना थया अने विदायगीरी आपवा एकत्र थएला स्नेहीजनो आप नामदारनी उक्त यात्राने सुखरूप इच्छी पोतपोताना गृह भणी चाली निकळ्या. अगाउथी रीझर्व्ड करावी राखेली कॅबीननी तपास कर्या बाद आप नामदार स्टीमर पर चढता अन्य मुसाफरोनुं अवलोकन करवा स्पारडेक उपर चढ्या. स्टीमरे लगभग बपोरना त्रण वजे एपोलो बंदर छोडयुं. स्वल्प समयमां

मोहमयीनी मनोहर आकृति अदृश्य थइ. जल सिवाय कंइ पण जोवामां आवतुं न हतुं. आशरे पांचसो वीश फीट लांबी अने बावन फीट पहोळी ए महान स्टीमरना सलून अंदरनुं फर्नीचर अत्यंत शोभायमान हतुं. केटलाक जाणीता देशी तेमज युरोपीअन मुसाफरोनी साथे विविध विनोद करता ता. ११ बुधवारनी रात्रीए आप एडन पहोच्या, अने त्यांथी आगळ वधतां लाल समुद्रमां बहुधा उष्णतानुं अधिक प्राबल्य होय छे, परंतु ए वखते सद्भाग्ये सुखमय शीतलता छवाइ रही हती. पेरीनीयोना किनारा पर थोडा वखत पहेलां भांगी गएली "एस, एस, चाइना" नामनी स्टीमर जागे एक डॉकपाज पडी न होय एम आपना जोवामां आवी. ए स्टीमर कादवमां एटली बधी निमग्न थएली छे के तेने हवे कोइ पण प्रकारे बहार काढी शकाय तेम नथी. ए एमनेएम सीधी ज उभी छे मात्र एक बाजुए सहेज नमेली दृष्टिगोचर थाय छे. ता. १५ मीनी प्रभाते आप जे स्टीमर पर आरूढ थया हता, ए स्टीमर स्वेझ पहोंची, अने मेडीकल ऑफीसरे तमाम मुसाफरोने तपास्या बाद आगबोट त्यांथी आगळ वधी. स्वेझनी नहेरमां बहुज धीमे धीमे गति करती ए आगबोटना अग्र भागमां नहेरना किनारा पर प्रकाश पाडवा एक सुशोभित सर्च-लाइट गोठवेली हती. ता. १६ मीए सवारमां पॉर्टसेड पहोंचेली स्टीमरे कोलसा लीधा. जेथी अन्य मुसाफरोनी माफक आपने त्यां थोडो वखत रोकावानुं बन्युं हतुं. स्वेझ अने पोर्टसेडना लोकोने प्लेगनो एटलो बधो भय लागतो हतो के पोता पासेनी कांइ पण वस्तुनो विक्रय करती वखते खरीद करनार मुसाफर पासेथी मळेला पैसाने तेओ जलथी भरेला घटनी अंदर नंखावता अने थोडा वखत सुधी ए पैसाने हाथ पण लगाडता नहि. ता. १८ मीए सवारमां स्टीमर ब्रिन्डीसी जइ पहोंची. ब्रिन्डी-सीना पुरजा उपर आमतेम फरतां आपे किनारा पर रहेलां सुंदर मकानोनुं तेमज केटलीएक दुकानोनुं अव-लोकन कर्युं. ते स्थळे परवाळां बहुज वखणाय छे अने वेचाय छे. आप केटलाक दिलपसंद चेरीझ खरीदी आगबोटपर आरूढ थया. मध्य रात्रिए स्टीमर त्यांथी चाली निकळी. मेसीनानी दर्शनीय सामुद्रधुनी बन्ने बाजुए आवेलां मोटां मोटां सुशोभित शहेरो, तेजोमय टेकरीओ तथा जेना मध्यभागमां सुंदर सरिताओ वही रही छे एवा शहेरोनो मनोहर देखाव आपना आनंदमां आश्चर्य साथे उमेरो करी रह्यो हतो. ज्यारे स्टीमर मेसीना शहेरनी समीपेथी पसार थइ त्यारे सौंद-र्यनी सरखामणीमा तेनाथी जरा उतरती वेनीफोशीओनी सामुद्रधुनी आवी. त्यांथी सीसीलीमां ए-टना नामे ज्वालामुखी पर्वत छे ते अने अन्य ज्वालामुखी पर्वत के जे अद्यापि सजीव छे ते स्टीम-रनी अंदर रहेला समग्र मुसाफरोनी दृष्टिए पडता हता, परंतु तेमांथी निकळतो धूम्र वादळांने लीधे

कोइना जोवामा न आव्यो. ता. २१ मीए सवारमां स्टीमर मार्सेल्स जइ पहोंची. त्यांसुधीनी मुसाफरीमां स्टीमरने क्यांइ पण तोफान नडयुं न हतुं, जेथी आपश्रीए प्रथमना जाणीता तथा सहवासने लीधे थएला नवी पिछाणवाळा युरोपिअन तेमज देशी सद्गृहस्थोनी साथे ए मुसाफरीना दिवसो अत्यन्त आनंद अने मोजमजामां गाळ्या. मार्सेल्सने किनारे उतर्या बाद वीलीयम वॉटसनना एक एजन्टनी देखरेख नीचे सघळो सरसामान राखी आप साथेना महाशयो सहित त्यांना दर्शनीय स्थळो जोवा पधार्या. प्रथम " पेलेस लॉन्ग शॅम्प " अने तेनी पाछळ आवेला उपवनमां रहेलु प्राणीओनुं संग्रहस्थान जोइ महेलना अग्रभागमां पडता पाणीनो घणोज मनोहर देखाव आपे ध्यान दइने जोयो. जो के ए उपवनमां एटला बधां प्राणीओ नथी, तो पण सुगन्धिमय सुंदर पुष्पोथी प्रकाशी रहेलां विविध वृक्षो तथा रोपोनी रमणीयता अने तेनी अद्भुत योजना आंखनुं अवश्य आकर्षण करे एवी छे. त्यांथी आशरे १७० फीटनी उंची टेकरी पर आवेला एक देवालयमां आप दाखल थया. ए देवालय " नॉटर डाम द. ला. गार्द " ने नामे ओळखाय छे. टेकरीनी तलेटीए पहोंच्या बाद आप आशरे १२५ फीटनी उंचाइ सूधी तो उपर जवा माटे त्यां सवा तथा जळना बळथी चालती तेमज जेनी बांधणी जोतां आश्चर्य उपजे एवा लिफ्टनी मददथी गया हता अने पछी देवालय पर्यन्त पगे चालीने पधार्या. ए देवळ परथी नीचेना भागमां रतनगा शहेर घणुंज रमणीय जणाय छे. बन्ने बाजुए वावेलां वृक्षोथी बहुज सुशोभित जणातां शहेरमां प्रवेश केटलीएक गलीओ घणीज सुंदर छे अने म्होटा रस्ताओ पर पत्थरनी लादी पाथरेली छे. ... " ... टोवोर्ली " नामना पार्कमां फरवा जतां आपश्रीए साइकल पर चढवानुं शिक्षण लेती ... ओने जोया बाद " चॅटोडीफ " नामे टापु पर रहेला किल्लानुं अवलोकन करवानो संकल्प कर्यो, परंतु समय थोडो होवाने लीधे आपनो ए विचार पार पडी शक्यो नहि. बपोरना सवाचारनी ट्रेनमां बेसी आप मार्सेल्सथी रवाना थया. ए ट्रेन बहु झडपथी चालती नहोती तो पण आपने एटली तो खात्री थइ के हिन्दुस्थाननी अंदर चालती ट्रेनो करतां ए घणी सारी हती.

ता. २२ मीए प्रभातमां पारीस पासेथी पसार थइ लगभग साडावार वज्ये ए ट्रेन कॅले जइ पहोंची, त्यारबाद थोडी वारे स्टीमर त्यां आवी. आपसाथेना महाशयो सहित एमां विराजमान थया. जो के ए स्टीमर बहुज न्हानी हती तो पण कलाके लगभग वीश माइलना वेगथी गति करती हती. मात्र पोणा त्रण कलाकमाज ए स्टीमर डोवर आवी पहोंची. डोवरनी खाडीमांथी पसार थतां सद्भाग्ये समुद्र शांत होवाने लीधे ए सहेलगाह आपने घणीज सुखरूप मालूम पडी

हती. डोवरने किनारे उतर्या बाद आप सर्व ट्रेनमां बेसवा माटे चॅरींगक्रॉस स्टेशने पधार्या. आप जे ट्रेनमां बेठा ए फास्ट ट्रेन बपोरना साडापांच वग्ये लंडन पहोंची. मान आपवा स्टेशन पर सामा आवेला कर्नल हेन्कॉक, तेमना मडम साहेब तथा तेना बन्धु वगेरेने भावथी भेटी, जका-तखाताना अमलदारने साथेनो सरसामान बतावी अगाउथी उतारा माटे निर्यमित करी रखावेल वेस्टमीनीस्टर पॅलेस हॉटेलमा आप पधार्या. पंदर दिवसनी लांबी मुसाफरीने लीधे पडेला महान श्रमनुं निवारण करवा सांजना क्यांइ पण बाहेर नहि निकळतां आपश्रीए स्नेहीजनोनी साथे विविध वार्तविनोद कर्या बाद आराम लीधो.

ता. २३ मेथी आरंभी ता. ३ अक्टोबर सुधीनो दीर्घ समय आपे युरोपनी अंदर निवास करी आनंदनी साथे केटलोक जाणवा जोग अमूल्य अनुभव मेळव्यो. शरुआतमा सरजेइम्स पील अने सर वीलीयम ली. वॉर्नर साहेबने मळवा आप इंडीया ऑफीसे पधार्या. फीट्झराल्ड साहेब त्या नहोता परंतु सरवीलीयम ली. वॉर्नरनी मुलाकातनो तथा तेमनी साथे केटलीएक वात-चीत कर्यानो लाभ आपने मळ्यो. बाद जळनी अंदर रहेतां तथा उछळतां प्राणीओने माटे तैयार करेलुं कृत्रिम तळाव, पचास फीट उंचेथी जळनी अंदर डबकी मारती एक मडम, तेटलेज उंचेथी मुख सहित समग्र शरीरने वस्त्रथी आच्छादित करी डूबकी मारतो एक साहेब, झुला पर खेल करती द्वय मडमोनो दिलपसंद देखाव अने ए उपरांत केटलीएक आश्चर्यजनक वस्तुओनुं अवलोकन करी आप आलेरवा पधार्या. त्यां आपने जोवानुं घणुं मळ्युं तेमां पण एक मनुष्ये साइकल पर बेसी भिन्न भिन्न प्रकारे करी बतावेलुं चातुर्य तथा अन्य मनुष्योए करेलुं उत्तम नृत्य आपना आनंदी हृदयने विशेष रुचिकर थयुं.

बीजे दिवसे अर्थात् ता. २४ मीए महाराणी विक्टोरीयानी वर्षगांठ होवाथी समग्र प्रख्यात स्थळोपर वावटाओ फरकी रह्या हता. कर्नल हेनकॉक तथा मीस हेनकोकनी साथे आपश्रीए इजीप्शीयन हॉल तरफ पधारी केटलाक हाथ चालाकीना खूबीदार खेलो जोया. रात्रीए प्रीन्सऑफवेल्स नाटकशाळामा पधारी “ ला पूपे ” नामनो खेल निहाळ्यो; त्या वागतुं कर्णप्रिय बॅन्ड अने थतु रसिक नृत्य आपने घणुज पसंद पडयुं. लंडनमां रोशनीने लीधे रमणीय जणाती रात्रिमा गलीओनुं अनहद सौन्दर्य हमेशा नयनानंदजनक होय छे मध्यरात्रिए पण अनेक अश्व-रथ आवजा कर्या करे छे. त्या पोलीस बंदोबस्त बहुज प्रशंसापात्र छे ते एटले सुधी के उन्नत थयेलो पोलीसनो एकज हस्त अनेक अश्वरथोने स्थिर करवानुं सामर्थ्य धरावी शके छे. त्यांना

कोचमेन पण घणाज हुशियार अने नम्र होय छे. जो पोलीस बंदोबस्त एवो निष्ठुर न होय तो आखा दिवसमां कोण जाणे केटलाए अकस्मात् थइ जाय.

ता. २५ मीए आप नामदार डर्बीनी शरतो जोवा लगभग बार वज्ये वॉटरलू स्टेशनेथी निकळी एकने सुमारे इप्सम पहोंच्या अने त्यांथी शरतना चक्कर सुधी गाडीमा पधार्या. डर्बीनी त्रीशी शरत हती; आपश्रीए पूर्वे कदी नहि जोएली ए शरत जोवा अर्थे लाखो मनुष्यो एकठां थएलां हता अने त्यां शरतमां सेंकडो जातनो रमतगमत चाली रहेली हती. लोकप्रिय अश्व शरतमां जीतेलो नहि होवाथी लोकोए खुशालीना पोकार करवानुं बंध राख्युं हतुं, तेम कोइए तालीओ पण पाडी न हती. ए शरतमा बीजो बहारनोज घोडो विजयवान थयो. शरत समाप्त थया बाद पाछा मुकामे पधारी आप ओपेरामां गया, अने फॉस्टनो खेल जोयो. एमा संगीत घणुंज श्रेष्ठ हतुं, तेमांना एक एक्टरने एक नाइटना सो रुपिआ मळता हता. आखा युरोपमां ए एक्टर सर्वोत्कृष्ट गणाय छे. खेलमां सीनेरी बहुज खूबीदार हती. ए नाटकशाळा पण लंडनमां नमूनारुप अने विशाळ छे तेनी अंदर चित्रकाम घणुंज सुंदर छे अने बत्तीओ पण बहुज खूबीथी गोठवेली छे. खेलनुं लखाण घणुं लांबु अने वळी फ्रेन्च भाषामां होवाथी जोके आपने जोइए तेवुं रुचिकर न थयुं तो पण उपरनी बाबतोथी केटलेक अंशे आनंद तो थयोज.

ता. २६ मीए आप लश्करी टुर्नेमेन्ट जोवा पधार्या. प्रीन्स ऑफ वेल्सना त्रीजा ड्रागून गार्डनो घोडानी स्वारीनो तमासो अने रॉयल हॉर्स आर्टीलरीनी गॅलपनी हरीफाइ ए बन्ने खास जोवा लायक हतां. म्युझीकल डबल राइड पण ठीक हती अने रॉयल हॉर्स गार्डझना ड्रेस तो घणाज सुशोभित हता. टेन्टपेगींगमां मात्र त्रणज हरीफो हता तेओ बे वखत प्रयत्न कर्या छतां मात्र एकज मेख उपाडी शक्या. टुर्नेमेन्टमां टेन्ट पीगींगनो देखाव जो के बराबर न हतो तो पण ए सिवायनुं बीजुं बधुं जोवा लायक हतुं. रात्रीए एम्पायर थीएटरमां जइ आपे एक शरत जोइ. अश्वो बने तेटलुं गॅलप करता हता छतां नीचेनो जमीननी एवी गोठवण करी हती के तेओ जरा पण दूर जइ शकता न हता. ए देखाव घणोज प्रिय पडे तेवो हतो अने सीनेरी एवी तो सरस रीते गोठववामां आवी हती के तेनो देखाव असल शरतना चक्कर जेवो जणातो हतो.

ता. २७ मीए वेस्टमीनीस्टर हॉलमां मूकेली मी. ग्लॅनस्टनना शबनी पेटी जोया बाद आप वॉल्टन पधार्या. अने कर्नल हेन्कॉकने घेर जइ किंग्झकोरनी साथे टेनीसनी रमतनो आनंद लीधो;

अने त्यांथी पाछुं हॉटेल तरफ प्रयाण कर्युं. त्यां आपने मळवा आवेल मी. फीट्झराल्ड काठिया-वाड करतां लंडनमां आपनी सारी तंदुरस्ती जोइ सानंदाश्चर्य पाम्या.

ता. २८ मीए मी. ग्लॅडस्टननी उत्तरक्रियानुं सरघस जोवा मी. हेन्कोकने घेर पधार्या अने त्यांथी ते बराबर जोइ शकायुं. सरघसमां प्रथम आमनी सभाना मेम्बरो, पछी अमीरो अने ते पछी पोताना केटलाएक बिगो सहित प्रीन्स ऑफ वेल्स चालता आवता हता प्रीन्स ऑफ वेल्स, प्रीन्सेस ऑफ वेल्स, डयुक ऑफ यॉर्क, अने डचेस ऑफ यॉर्कने आपे ए वखते प्रथमज जोयां. क्रिया पूर्ण थइ रह्या बाद ज्यारे तेओ वेस्टमीनीस्टर एबेमांथी आवता हता त्यारे आप ए सर्वने सारी रीते जोइ शक्या. जो के त्यां सेंकडो मनुष्यो एकत्र थया हतां तो पण बधुं नियमित अने चुपचाप हतुं. त्यारबाद आप अर्लस् कॉर्ट एग्झीबीशन जोवा पधार्या, त्या आगबोटना केटलाक नमूना तथा बीजी पण घणी सारी चीजो हती. खलेडी शकाय तेवी स्वीच बॅक रेल्वेमां जरा सहेल कर्या बाद आप दरीयाइ तमासो जोवा गया. ए तमासो तथा रात्रिने वखते थएली लडाइनो देखाव घणोज सरस होवाथी आपनुं हृदय हर्षथी छवाइ रह्युं हतुं. वीजळीथी चालती नानी नानी मनवारोना नमूना पण त्यां हता. ए जोया बाद आप 'जायॅन्टीक व्हील" अर्थात् एक विशाल चक्रमां एक फेरो फर्या. २८४ फीटना व्यासवाळा ए चक्रमां चाळीश गाडी अने ते दरेक गाडीमां त्रीस माणस बेसी शके तेवी सगवड हती. तेनो एक फेरो लगभग पंदर मीनीटे पुरो थाय छे. त्यांथी लंडननो देखाव घणोज मनोहर मालुम पडे छे, परंतु जे दिवसे धुमस विशेष होय छे, ते दिवसे तेमानुं कंइ पण देखातुं नथी. केटलाक माणसोने उंचकी जरा उंचे जतुं एक कॅप्टीव बलून जोइ आप कर्नल हेन्कोक अने मीस फेन्टन साथे पाछा हॉटेल पधार्या. रात्रिए लीरीक थीएटरे जइ आपें डॉन कवीझोनो खेल जोयो. डॉन कवीझोनो वेश भजवनार मी. आर्थररोबर्टस बहुज हुशियार होवाथी आखा खेलनुं आपश्रीए बहुज आनंदथी अवलोकन कर्युं.

ता २९ मीए गॉंडलना भावसिंहजी के जे आपने हॉटेलमा मळवा आव्या तेनी मुलाकात लीधा बाद बपोरना आप प्राणीओना संग्रहस्थानवाळा बागमां पधार्या; अने त्यां केटलुंएक जोवानुं हतुं ते खूब फरी फरीने जोयुं.

ता. ३० मीए आपें बेब्रीज जइ मी. कॉवेन्ट्रीना तथा मी. हेनकॉकना कुटुम्ब साथे वि-

विश्व विनोदमां केटलोक वखत वितावी छेवटे साइकलपर लगभग १४ माइल जेटली लांबी सफर करी.

ता. ३१ मीए आपे " नेशनल गॅलरी ऑफ पीक्चर्स " तरफ पधारी केटलांक सृष्टि सौन्दर्यनां तेमज प्राणीओनां चित्रो जोयां, त्यांथी एम्बेन्कमेन्ट (किनारे किनारे थइने जती सडक) पासेथी पसार थतां एक महान् बीलीयर्ड सलुन आपना जोवामां आव्युं, ए सलुनना एक विशाळ ओरडामां आशरे वीश टेबल गोठवेलां हतां. मार्गे जतां आपे क्लयॉपेटानो नीडल जोयो, ए मथाळा तरफ अणीवाळो थतो जतो एक पत्थरनो स्तंभ छे; तेने मीसरमांथी लाववा माटे खास एक वहाण बांधवुं पड्युं हतुं. त्यारबाद आप ब्रीटीश म्युझीयम जोवा पधार्या. म्युझीअम घणुंज म्होटुं अने विशाळ छे, त्यां आखो मध्याह्न गाळ्या छतां तेमानुं सघळुं नहि, तोपण क्लयॉपेट्रानुं जाळवी राखेलुं शब तथा तेवांज अन्य शबो के जे घणांज जूना छता सारी स्थितिमां हतां ते, बीजी केटलीक आश्चर्यजनक चीजो, मॅग्ना चार्टा (प्रजानुं म्होटुं हकपत्र) केटलाक हस्त लिखित लेखो, श्रीमद् भगवद्गीता, इस्लामी पुस्तको अने वीलीयम धी कॉन्करथी आरंभी अत्यारसूधीना राजाओनी पुरातन सीलनो संग्रह आपें जोयो. आफ्रिकाना केटलाएक देवो त्यां जोवा जेवा हता. हिन्दनी बनावटना विशेष नमूनाओ त्यां नहोता, मात्र एक जूनुं बखतर, हथियार तथा बीजी थोडी घणी एवी सामान्य चीजो हती. रात्रीए आपें रॉयल थीएटरमां पधारी " व्हाइट हीथर, " नामनुं नाटक जोयुं, एनी अंदर रसभर्युं लखाण अजायबी उपजावे एवी सीननी योजना अने डुबकी मारनारना पोशाकमां समुद्रने तळे एक बीजा साथे युद्ध करता द्वय मनुष्योनो देखाव हद उपरांत वखाणवा लायक हतो.

ता. १ ली जुने आपश्रीए " रॉयल एकेडेमी ऑफ आर्टस"मां पधारी केटलांक सृष्टि सौन्दर्यना तेमज बीजा चित्रो जोयां; तेमां महान वस्तुओनां न्हानां स्वरुप, केटलुंक कोतर काम अने चित्रकाम खास जोवा जेवुं हतुं. पाछा हॉटेले पधारतां त्यां राह जोइने बेठेला मी. फीटझराल्डनी आपें मुलाकात लीधी. मी. फीटझराल्ड प्रसन्न वदने आपने जोइती मदद आपवानुं कही चाली नीकळ्या बाद आप " मॅडमटसोड " नुं प्रदर्शन जोवा पधार्या. त्यां मीणनी तमाम आकृतिओ घणीज सुंदर अने आबेहुब हती. जमणी बाजुना ओरडामां द्वार पासेज एक मीणनी बनावेली मडम केटलोग वेंचती उभी छे, तेने जोतां ए कृत्रिम छे एवो कोइने ख्याल पण आवतो नथी. घणा लोको तेनी समीपे जइ केटलोग मागे छे, अने तेथी अन्य प्रेक्षकोने अत्यन्त हास्य उपजे छे. नेपो-

क्वीयननी गाडी तथा ड्रेस अने ड्युक ऑफ वेलींग्टन तथा नेलसनना ड्रेस वगेरे जोया वाद आपे "चेम्बर ऑफ हॉरर्स" (कमकमाटी उपजावे ए देखाव देखाडनारो ओरडो) मां केटलाएक खुनीओनी आकृतिओ निहाळी तेमां कोइ कोइ सुंदर चित्रो पण हतां.

ता. २ जुने आप "कॉवेन्ट मार्केट गार्डन" मां पधार्या. त्या गामडानां लोको पासेथी जत्थाबंध शाकभाजी तथा फळ फुल वगेरे वेचातां लइ वेचवामा आवे छे. कॉवीज तथा कॉवी फ्लावरथी भरेलां असंख्य गाडां त्यां उभां रहे छे. ए जोया वाद आप सेइन्ट पॉलस केथीड्रल तरफ पधार्या. त्यां प्रतिष्ठित पुरुषो तथा वहादुर लडवैयाओनी कवरो छे, आपे इतिहासमां वाचेल केटलाक महान पुरुषोनी कवरो पण त्यां जोइ. देवळनो घुम्मट विशाळ छे अने तेमां कोतरकाम तथा रंगकाम घणुंज उमदा करेलुं छे. मकान पण विस्तृत अने दवदवा भरेलु छे; तेमां रंगबेरंगी काचनी वारीओ अद्भुत शोभा आपे छे, त्यारवाद जमीन नीचे चालती गाडीमां वेसी आप टॉवर ऑफ लंडन जोवा पधार्या. ए सफेद टावर जूनामां जूनुं छे अने ते एक ऐतिहासिक स्थल गणाय छे. त्या आपे जूनां हथियार तथा वखतरो जोयां के जे तद्दन स्वच्छ तेमज उत्तम रीते गोठवेलां हतां, ए वखतरो उपरथी तेने अंगपर धारण करनारा इंग्लंडना पुरातन राजाओना भव्य कदनो स्हेजे भास थाय छे. एक टावरमां जवाहिर जोवा जतां महाराणीनो वादशाही मुकुट पण आपना जोवामां आव्यो. ए मुकुटनुं वजन आशरे ३९ औंस छे. वीजा जीर्ण मुकुटो पण त्यां हता. कोहीनूरनो नमूनो त्यां राखवामा आवेल छे, खरो कोहीनूर महाराणी पासे हतो. हीराथी जडित वादशाही मुकुट घणोज सुशोभित तेमज दर्शनीय छे. ए उपरांत अमूल्य वादशाही आभूषणो, राजदंड, आर्व, असंख्य प्रकारना ब्रीटीश खेतावो, वादशाही केदीओने राखवानां स्थळो, केद प्राप्त थती वखते इलीझावेथ राणी जे स्थळे हरती फरती ते स्थळ तेमज वीजां पण केटलांक ऐतिहासिक स्थळोनुं अवलोकन कर्या वाद रात्रीए आप गेइटी थीएटरे "रन अवे गर्ल" नुं नाटक जोवा पधार्या, एमानुं संगीत आपने घणुंज प्रिय लाग्युं हतुं.

ता. ३ जी जुने आप ब्रीटीश म्युझीम ऑफ नॅचरल हिस्टरी (स्थावर जंगम विद्या सबंधी ब्रीटीश संग्रहस्थान) जोवा पधार्या. ते साउथ केनींग्स्टनमां आवेल छे; तेमां दवा भरीने संभाळपूर्वक साचवी राखेलां तेमज उत्तम रीते गोठवेलां मृतक पक्षीओ, धवडावनारां प्राणीओ, सर्वोत्कृष्टताने प्रदर्शित करतो खनिज पदार्थसंग्रह अने कदि दृष्टिए नहि चडेला भिन्न भिन्न जातिना हीराओ उपरात वीजी घणी जोवा लायक चीजो आपे जोइ, आखो वपोर त्यां गाळ्या छतां आखुं

संग्रहस्थान आप जोइ शक्या नहि. ए पछी बेंकऑफ इंग्लंड जोवा जतां एनुं काम तो आपने बहुज भारे जणायुं. मी. फीटझराल्डना आमंत्रणपत्रने लीधे त्यांना सेक्रेटरीए ऑफीसना तमाम विभाग तथा अन्य खानगी विभागो पण बताव्या. ज्यां नोटो छपाती हती ए स्थळ आपे जोयुं, ए लोको वीश मीनीटमां एक हजार नोटो छापी शके छे. ज्यां सोनुं रुपुं राखवामां आवे छे ते स्थळ पण आपे जोयुं, बहुज भारे सोनानी पाटथी भरेली लगभग पंदरेक न्हानी गाडीओ त्यां पडी हती. त्यांथी जोइए तेटलुं सुवर्ण टंकशाळे मोकलवामां आवे छे. त्यारबाद ज्यां जुनी नोटो राखवामां आवे छे त्यां आप पधार्या. कोइ पण नोट ज्यारे बेंकमां पाछी आवे त्यारे तेने फरी बाहेर काढवामां आवती नथी; परंतु तेनो एक खुणो कापीने तथा मध्य भागमां छिद्र पाडीने रद करवामां आवे छे. एवी रद करेली नोटोने पांच वर्ष पर्यन्त त्यां राखी पछीथी बाळी नांखे छे. तेमां एक नोट एवी आपना जोवामां आवी के जे ११० वर्ष पर्यन्त बाहेर फरी हती. पुरातन समयनी दशलाख पौंडनी एक नोट के जे चेकना जेवी हती. ते जोया बाद ज्यां बेंकनी अंदर आवता दरेक सिक्का तोळवामां आवे छे, त्यां आप पधार्या. तोळवानां यन्त्रो घणांज उत्तम छे, तेमां एवी योजना करवामां आवी छे के तोळाया बाद पूरता वजनना सिक्का एक खानामां पडे अने अधूरा वजनना सिक्का अन्य खानामां पडता जाय. ए पछी ट्रेझरी के ज्यां नवी नोटो अने सोना रुपाना सिक्का राखवामां आवे छे ए जोइ आप हॉटेले पधार्या, बेंकमां जे नोटोना नाणा अपाइ गयां हतां एवी पांच वर्षनी नोटोनी संख्या ७७७४५००० हती, जो ए नोटोनो एक उपर एक एम ढगलो करवामां आवे तो ते लगभग ५¾ माइल जेटलो उंचो थाय; जो तेना छेडाओ सांधीने मूकवामां आवे तो तेनी लंबाइ १२४२५ माइलनी थाय; ते नोटोनी मूळ किम्मत १७५०६२६६०० पौंडथी पण वधारे हती अने तेनुं वजन ९०¾ टन करतां पण विशेष हतुं.

रात्रीए आप राणीना थीएटरे " जुलीयस सीझर " नो खेल जोवा पधार्या; तेमां मार्कस एन्टोनीयसनुं भाषण तथा उक्त पात्रनी वक्तृत्व शक्ति ए बन्ने वखाणवा लायक हतां अने नाटकनी अन्य रचना पण रसभरित हती.

ता. ४ थी जुने आपनो विचार इटन जवानो हतो, परंतु शीतना बाहुल्यने लीधे तेमज दिवस धुमसवाळो होवाथी ए विचार मांडी वाळी आप साउथ केनींग्स्टनमां आवेल इन्डीया म्युझीअम जोवा पधार्या. त्यां अनेक प्रकारनी हिन्दी कारीगरी जोइ आपने आनंद थयो. चीन अने जापाननी समग्र गॅलेरीओ तथा खास जोवा लायक सायन्स गॅलेरीनुं केटलेक अंशे अवलोकन करी

जुदा जुदा रंगनी विजळीक नळीओ जोया बाद आप मीसीस मेकनॉटनने मळवा पधार्या, के जे आपना मरहुम विद्यागुरु राजकोट राजकुमार कॉलेजना प्रीन्सीपाल मी. मेकनॉटननां पत्नी थतां हतां तेमनी साथे संगीत सबंधी, कॉलेज सबंधी तथा काठिआवाडना केटलाक राजाओ अने राजकुमारो सबंधी वार्तालाप करी आप मुकामपर पधार्या.

ता. ५ मी जुने क्यु गार्डनमां पधारी आपे घणांज मनोहर पुष्प तेमज विविध प्रकारनां सुंदर रोपाओ जोया. उष्ण देशना रोप उछेरवा माटे त्यां उष्ण हवावाळा ओरडाओ राखेला छे. ए बगीचो रमणीय अने उत्तम योजनावाळो छे. चोमेर हरियाली भूमि आंखने अपार आनंद आपे एवी छे. त्यांथी विक्टोरीया स्टेशने उतर्या बाद आप स्नेहीजनो सहित हाइड पार्कमां पधार्या, रविवार होवाथी त्यां हजारो मनुष्य आवागमन करतां हतां, आपे त्यां एक कलाकपर्यन्त विराजी लंडननी अवनवी फेशनोनुं निवृत्तिथी अवलोकन कर्युं.

ता. ६ ठी जुने मध्याह्न पछी आपश्रीए इम्पीरीयल इन्स्टीट्युटे पधारी महाराणीनो डायमंड ज्युबीलीने प्रसंगे तेमने मळेला उपहार हिन्द अने ब्रीटीश संस्थानो तरफथी अपाएलां मानपत्रो तथा समग्र ब्रीटीश संस्थानो अने हिन्दनी पेदाशना नमूनाओ निहाळ्या. त्यां बॅन्ड बहुज सारुं वागतुं हतुं. बॅन्ड स्टेन्डनी आसपासनुं स्थळ अत्यन्त सुंदर छे. रोशनी थती हशे त्यारे तो ए स्थळ अलौकिक रमणीयताने धारण करतुं होवुं जोइए. रात्रीए " फ्रेन्च मेइड " नो खेल जोया बाद आपे आनंदपूर्वक आराम लीधो हतो.

ता. ७ मी जुने मी. हेनकॉकनी साथे जुदा जुदा ड्रेसथी फोटा पडावी आप ग्रॅफ्टन गॅलरीए पधार्या अने त्यां केटलाक चित्रो जोइ हाइडपार्क तरफ गया. त्यां असंख्य गाडीओना आवागमनने लीधे केटलाक श्रेष्ठ जातिना अश्वो आपना जोवामां आव्या त्यारबाद बॅन्डनुं श्रवण करवा आप इम्पीरीयल इन्स्टीट्युटे पधार्या अने रात्रीए रॉयल कुश्यम थीएटरे जइ " लायन्स मेइल " नामनो खेल जोयो. तेमां हेन्रीइर्वींगे भिन्न भिन्न भजवी बतावेला उभय वेश प्रेक्षकोने छक करी नाखे एवा हता. आखा इंग्लंडमां ए सर्वथी श्रेष्ठ ॲक्टर गणाय छे, अने एथीज तेने " नाइट " नो इलकाब आपवामां आव्यो छे.

ता. ८ मी जुने स्टीम बोटमां ग्रीनीच पधारी आपे रंगीत हॉल तथा लडाइनां केटलांक आश्चर्यजनक चित्रो जोया. बाद वहाण अने मनवारोनुं म्युझीअम पण जोयुं. तेमां घणीज हिकम-

तथी बनावेलो ट्फाल्गरनी लडाइनो नमूनो अने आगबोटोना नमूनाओ अति उत्कृष्ट हता. ग्रीनीच-पार्कमां थइ एक न्हानी टेकरी पर आवेली ऑबझरवेटरीए जइ जरा विश्रान्ति लीधा बाद आप पोष्ट अने तार ऑफीस जोवा पधार्या. मी. फीटझराल्डे अगाउथी करी राखेली योजनाने लीधे त्यांना तमाम विभागो जोवाने आपने संपूर्ण लाभ मळी शक्यो. आपना अनुभव मुजब तार ऑफीस खास जोवा लायक हती. त्या एक एवुं नूतन यंत्र शोधी कहाडवामा आव्युं छे के जेनाथी एक मीनीटमां ३५० शब्दो जइ शके छे. त्या कांइ नहि तो २००० पुरुषो अने १२०० स्त्रीओ काम करतां हतां.

ता. ९ मी जुने हाइडपार्कमा चोकडीनी म्होटी गाडीओ जोवा आप पधार्या. प्रीन्स अने प्रीन्सेस ऑफ वेइल्सना आव्या पछी तमाम गाडीओ त्यांथी पसार थइ "हर्लिंगहम" नामने स्थळे गइ. त्यारबाद आप भोजननां वासणनो सट तथा केटलोक काचनो सामान वगेरे पसंद करवा वीलीयम व्हाइटलीने त्यां पधार्या; ए एक जवरी दुकान छे अने त्यां जोइती समग्र चीजो मळी शके छे, रात्रीए क्राइटीरीअन थीएटरे पधारी आपें "लायर्स" नामनो खेल जोयो.

ता. १० मी जुने आप टंकशाळ जोवा पधार्या, त्यां दाखल थवानी टीकीट मी. फीटझराल्ड साहेबे अगाउथी मेळवी आपी हती; जेथी आपें टंकशाळना दरेक विभागोमां फरी सुवर्णने गाळी तेने पाट बनाववानी पद्धति, ए पाटने ओपी तेना पर छाप मारवानी रीति, ते वखते ताजेतर नवां शोधी कहाडेलां तोळवानां तेमज गणवानां यंत्रो, छपाता सिक्काओ अने ते छापवाने एक अठवाडीआ पहेलां शोधी कहाडेलुं उत्तम यंत्र वगेरे वस्तुओनुं निरीक्षण करी होटेले पधार्या बाद बाकीनो समय मी. फीटझराल्डनी साथे काठिआवाड संबंधी विविध वार्ता विनोदमां गाळ्यो अने एथी तेओ साहेबनी स्मरणशक्तिनो आपने सारो अनुभव थयो.

ता. ११ मी जुने आप "एबी" जोवा पधार्या, परंतु त्यां कंइक लग्ननी क्रिया चालती होवाथी अंदर नहि जतां "टेट" नी दुकाने पधारी आपें एक टेनीस बॅट खरीद्युं, तेमनां हाथीनी बनावटनां बॅट सर्वथी श्रेष्ठ गणाय छे. त्यारबाद "रीचमंड हॉर्स शो" जोवा जतां आपने मी. कॅप्टन तथा मीसीझ फॉर्मर्नुं मिलन थयुं. ते स्थळे घोडा तथा गाडीओ घणांज स्तुतिपात्र हतां, तेमां पण टन्डम (एक पछी एक जोडेल घोडावाळी गाडी) नुं सौंदर्य अजवज हतुं; अश्वो उत्तम प्रकारे केळवाएला हता अने तेने हांकवानी पद्धति पण हेरत उपजावे एवी हती. केटलाक झडपथी ट्रॉट करता जता हता. पछीथी आप अर्ल्झकोर्ट एग्झीबीशन तरफ पधार्या, त्या तमाम जगोए नम्र-

नने आनंद आपे एवी रोशनी करवामां आवी हती; ए स्थळे आपे इलेक्ट्रफोननुं श्रवण कर्युं, तेमां लंडन अंदर रहेली दरेक नाटक मंडलीओनां गायनो सांभळी शकाय छे. टेलीफोनना सिद्धान्त उपरज एनी रचना करवामां आवी छे. ए स्थळे विनोददायक बॅन्ड पण वागतुं हतुं.

ता. १२ मी जुने लंडननी आसपासनां गामडांनो प्रदेश जोता जोता आप मध्याह्न समये मी. बुशनलने त्यां पधार्या. एमनुं घर घणुंज सुंदर छे, अने तेनी पासे एक म्होटो वगीचो छे. अश्वो पण एमने त्यां घणा उमदा हता दुनियाना जुदा जुदा भागोमां जनारी आगबोटो मी. बुशनलनीज होवाथी एनी गृहस्थाइ संबंधी स्हेजे ज्ञान थइ शके छे. ए महाशयनी साथे सन्ध्या समय पर्यन्त आपे खानपान तथा रमतगमतनो आनंद लीधो.

ता. १३ मी जुने आप "वीन्डसर कॅसल" जोवा पधार्या. मी. फीटझराल्ड साहेबे मेळवी आपेल पास बतावबाथी एक मडमे ए मकानना दरेक विभागो आपने देखाड्या. महाराणीना खानगी बेटकना तथा शयनना रुम सिवाय सुदर चित्रो अने चिनाइ पात्रोथी शृंगारेला केटलाक भव्य भागो, राजकीय प्रसंगे वपरातां अने प्रजावर्गने जोवा देवामां आवतां अन्य स्थळो, पाकशाळा, महाराणी अने तेना पतिनुं एक मनोहर बावलुं; हिन्दुस्थान, आफ्रिका अने एवा अन्य प्रदेशोमांथी मेळवेल तलवारो तथा बख्तरो वगेरे वस्तुओनुं आपे अवलोकन कर्युं. ए मकानना तमाम ओरडाओ विशाळ अने टेपेस्ट्री (दिवाल उपर लगाडेलां कपडां पर करेल भरत कामनां चित्रो) थी शणगारेला हता. फर्नीचर घणुंज किम्मती हतुं, परंतु ते स्थळे महाराणीनी गेरहाजरी होवाथी बधुं अव्यवस्थित देखातुं हतुं. रात्रीए आप "रनअवे गर्ल" नो खेल जोवा नाटकशाळाए पधार्या. ए खेल पहेली वखते जोवाथी आपने जेटलो आनंद प्राप्त थयो हतो, एटलोज आनंद बीजी वखत जोता पण मळ्यो.

ता. १४ मी जुने आप "एबे" पधार्या, अने त्यां राजाओनी तथा पुरातन समयना महापुरुषोनी कबरो के जेमांनी केटलीक तो १००० वर्षनी पुराणी हती ते आपे जोइ, सीलींगमां घणुंज उमदा कोतरकाम करेलुं छे, त्यांथी आप कायदानी कोर्टो जोवा पधार्या, प्रथम मी. हेनकॉकना पितृव्य के जे एक बारीस्टर छे तेने मळ्या अने तेओ साहेबे साथे आवी चेन्सरी कोर्ट, अपील कोर्ट अने बीजी केटलीएक कोर्टो आपने बतावी. ए मकान अत्यन्त विशाळ छे. लींकन इन हॉल के ज्यां कायदाना अभ्यासीओ अभ्यास करे छे ते तथा लायब्रेरीनुं पण आपे अवलोकन कर्युं. त्यारबाद आप "फ्लावर शो" (पुष्पनुं प्रदर्शन) जोवा पधार्या. त्यां भिन्न भिन्न प्रकारनां सु-

न्दर अने सुगन्धी पुष्पो मगजने तरबतर बनावी दे तेवा हता. रात्रीए पॅलेस थीएटरे पधारी अमेरीकन बायॉग्राफमां आवें केटलांक सरस चित्रो तथा नृत्यनुं निरीक्षण कर्युं बारीस्टर मी. कॉवेन्ट्री नाट्यमंडपमां आपनी साथे हता.

ता. १५ मी जुने एक गाडी खरीदवानी इच्छा थतां आप लंडननी बनावटनी केटलीक गाडीओ जोवा पधार्या, "राल्लीकर" नामनी गाडी आपने पसंद पडी, परंतु एथी पण सरस बनावटनी अमेरीकन गाडीओ जोया बाद कइ लेवी ए निश्चय करवानुं आगळ उपर राखी आप साउथ केन्सींग्स्टन म्युझीअमनी गॅलरी के जे प्रथम बराबर जोइ शकाइ नहोती ते जोवा पधार्या; त्यां यंत्रोना केटलाक उत्तम नमूनाओ आपें जोया, तेमां रेल्वे एन्जीनना नमूना खास ध्यान खेंचे तेवा हता. ए स्थळे घणो वखत गाळ्यो तो पण अवशेष जोवानुं रही गयुं. त्यांथी वळतां मार्गमां आपने कर्नल फेन्टननुं मिलन थयुं. रात्रीए शॅफ्टसबरी थीएटरे पधारी आपे " बेली ऑफ न्युयॉर्क " (न्युयॉर्कनी छबीली) नामनो खेल जोयो.

ता. १६ मी जुने आप एस्कॉटरेस जोवा पधार्या. रॉयल एन्क्लोझर (बादशाही कुटुंबने बेसवा माटे जुदो राखेलो भाग) आगळ बेसवा माटे टीकीटोनो गोठवण मी. फीटझराल्ड साहेबे अगाउथी करी राखेली हती; त्यां आवेला प्रीन्स अने प्रीन्सेस ऑफ वेइल्स तेमज बादशाही कुटुंबनां बीजां माणसोनी आकृति तथा चेष्टा आप नजीकमांज बेठेला होवाथी बराबर जोइ शक्या. अने त्यांथी मीसीझ हेनकोकनी काकीने घेर जइ फोटाओ लेवडाववामां तेमज बीजी रमतगमतमां बाकीनो समय गाळ्यो.

ता. १७ मी जुने मी. फीटझराल्ड साहेबे करेली गोठवण मुजब आप बुलीच आर्सीनल जोवा पधार्या. त्यां केटलीक तोपो तथा ते तोपो बनाववानां यंत्रो आपना जोवामां आव्यां. दर अठवाडीए तेओ लगभग वीश लाख गोळीओ तैयार करे छे अने मुश्केलीने समये एथी पण विशेष बनावी शके छे. ४७ टननी तोपो के जे हाल बहु वपराय छे ते ए वखते त्यां बनती हती. घोडाना सामान वगेरे राखवानुं स्थळ के जे अत्यन्त सुशोभित छे ते जोया बाद " डेन्जर बीलडींग " के ज्यां दारु बनाववामां आवे छे अने जे तद्दन खानगी राखवामां आवे छे ते शिवायना तमाम भाग जोइ रात्रीए आप सेवॉय थीएटरे " ब्युटी स्टोन " नामनो खेल जोवा पधार्या.

ता. १८ मी जुने केटलीक अमेरीकन बनावटनी गाडीओ जोया बाद आप इटन पधार्या.

त्या मी. मीचेल के जेनी साथे मी. हेनकॉक सारी पिछाण धरावता हता तेने त्यां (कॉलेजे) आपे टीफीन लीधुं. ए गृहस्थ घणाज मायाळु होवाथी तेणे कॉलेजना तमाम विभाग आपने बताव्या. ए स्थळ हृदयने प्रफुल्लित बनावे तेवुं छे. क्रीकेट रमवानी जगो पण घणी सरस छे, त्यां सेकन्ड इलेवननो मॅच जोइ उतारे आव्या बाद रात्रीए आपे कॉनीडो थीएटरे पधारी " लॉर्ड अने लेडी एल्जी " नामनो खेल निहाळ्यो अने तेमां आपने बहुज मजा आवी.

ता. १९ मी जुने आपे वेब्रीज जइ ओटलॅन्डझपार्क हॉटेलमां रहेठाण राख्युं अने त्यांथी साइकलपर चढी आप कर्नल हेनकॉकने घेर पधार्या. त्यांथी नदीए जइ डॉकमांथी पसार थती होडीओ तथा लॉन्चो जोया बाद पाछा साइकलपर मी. कॉवेन्ट्रीने त्यां गया अने सारी रीते टेनीस रम्या. लंडनमां रविवारे सहुकोइ इश्वरनी बंदगी, रमत गमत अने विश्रांन्ति लेवामां बधो वखत वितावे छे, ते दिवसे कांइ जोवा करवानुं बनी शकतुं नथी.

ता. २० मी जुने आपे नदीए पधारी खूब मछवामां सेहेल करी तथा मछवाने केवी रीते चलाववो ए पण शीखी लीधुं. त्यारबाद मी. हेनकॉकने घेर जइ बाकीनो वखत विविध प्रकारनी रमत गमतमां विताव्यो.

ता. २१ मी जुने कर्नल हेनकॉकने घेर जइ आप टेनीस रम्या, तेमां केटलाक सेट बहु सरस रमाया. त्यारबाद रात्रीने समये वाकींग करतां एक टेकरीपरथी आजुबाजुनो देखाव आपने घणोज मनोहर मालूम पडयो.

ता. २२ मी जुने आप ऑक्सफर्ड पधार्या, त्यांथी मी. स्मीथ आपने एनसोनीया अर्थात् ड्युक ऑफ यॉर्क अने बीजा माणसोने माननी डीग्रीओ अपाती हती ते जोवा तेडी गया. त्यां भाषणो बधा लॅटीन भाषामां थतां हतां, तो पण अंग्रेजी कविताओनो आशय आप सारी रीते समजी शक्या. त्यारबाद एक कॉलेजमां अभ्यास करता मी. हेनकॉकना भत्रीजाने मळवा जतां तेणे साथे आवी चेपल अने कॉलेजना हॉल आपने बताव्या कॉलेजो बहु जुना वखतनी अने संख्यामां बावीश जेटली हती, ते दरेकनी अंदर १०० थी १५० विद्यार्थीओ अभ्यास करता हता. पछी आपे नदीए पधारी जुदी जुदी कॉलेजना बॅज जोया; त्यांथी नदीनो भाग घणोज सुंदर जणाय छे.

ता. २३ मी जुने आप विम्बल्डनमां टेनीसटुर्नेमेन्ट जोवा पधार्या, अने त्यां केटलाक सारा खेलाडीओने जोइ आपना अन्तःकरणमां अत्यन्त आनंद थयो.

ता. २४ मी जुने हिन्दुस्थानना सेक्रेटरीने मळवानुं होवाथी आप लंडन पधार्या अने

सवारनो समय जुदी जुदी कंपनीओमांथी केटलोक माल खरीदवामां वितावी बपोरना पोणा त्रणे हिन्दना सेक्रेटरी लॉर्ड ज्यॉर्ज हेमील्टनने मळ्या अने तेमनी साथे विलायतनी मुसाफरी सबंधी केटलीक वातचीत करी हाउस ऑफ कोमन्समा पधार्या. लगभग साडा त्रणे त्यां तमाम मेम्बरो हाजर थइ गया. शरुआतमां तेओए अन्योन्य प्रश्नोत्तरनी धमाल मचावी, पछी वेल्सना दक्षिण भागमां कोलसानी खाणवाळाओए जे हडताल पाडी हती ते सबंधे चर्चा चाली. त्याना सुप्रसिद्ध वक्ताओनां भाषण सांभळवाथी आपने बहु आनंद थयो, ए चर्चा जोसभेर चाली रही हती; तेवामां ट्रेननो टाइम थइ जवाथी हॉटेले पहोंचवा माटे आप बोल्टन स्टेशने गया, वचमां बोटर्लु स्टेशने मी. हेनकॉकना पितृव्यनुं आपने मिलन थयुं अने ते बोल्टन स्टेशन सुधी साथेज आव्या.

ता. २५ मी जुने वरसादने लीधे सवारे जइ शकायुं नहि, बपोर पछी हर्लिंगहम तरफ पधारी आपे पोलोटुर्नेमेन्टनुं आनंदथी अवलोकन कर्युं; तेमां केटलाक खेलाडीओ घणुं सारुं काम करता हता.

ता. २६ मी जुने रविवार होवाने लीधे बीजे क्यांइ नहि जतां केप्टनकोवेन्ट्रीने घेर पधारी टेनीस वगेरे रसीली रमत गमतमां आखो दहाडो आनदथी पसार कर्यो.

ता. २७ मी जुने आप लंडन हॉस्पीटल जोवा पधार्या. मी. रोबर्टे बहुज मायाळुपणाथी आपने बधी जगो बतावी. ए हॉस्पीटल घणीज स्वच्छ राखवामां आवे छे. त्यां दर वर्षे लगभग बार हजार दरदीओ इस्पीतालमांज रहेवानो लाभ लेछे. बिछानाओ घणा सुंदर अने दरेक वॉर्डमां उत्तम प्रकारनी गोठवणो राखवामां आवे छे. गरीब लोको पोताना घर करतां त्यां विशेष सुख पामे छे. वाळको पण त्यां बहु आनंदमां रहे छे, तथा तेने संभाळनारी बाइओ अति मायाळु अने मिलनसार जोवामां आवे छे

ता. २८ मी जुने आप किंग्झक्लेर (कर्नल हेनकॉकनुं एक गृह) पधार्या अने त्यां क्रोके रम्या; ए रमत बहु मजेदार होवाथी आपने आनंद थयो. त्यांथी मी. रटरनी गार्डन पार्टीमां जइ आप केटलीक टेनीसनी रमतो रम्या. बगीचो घणो सुन्दर हतो अने तेमां खुशबोदार पुष्पो खीली रह्यां हतां. पछी पॉर्टस्मथने मार्गे आवेल हट हॉटेल नामने स्थळे साइकलपर फरवा जतां विशाळ अने स्वच्छ रस्ताओए तथा आसपासना कुदरती देखावे खास आपनुं लक्ष खेंच्युं हतुं. लगभग दश माइल जेटली साइकल पर सफर करी आप पाछा फर्या.

ता. २९ मी जुने किंग्झक्लेर जइ आप टेनीस रम्या. अने पछीथी क्वीन्स क्लबमां थती

ऑक्सफर्डनी अने केम्ब्रीजनी कसरतो जोइ, एमां बहु गमत आवे एवुं हतुं. सरतो थइ रह्या पछी छेवटे कसरतोमां ऑक्सफर्ड जीत्युं.

ता. ३० मी जुने आप क्रीस्टल पॅलेसे पधार्या, अने त्यांथी नाटकशाळाए जइ "जे. पी." नामनो घणोज रमुजी खेल जोयो. ए पछी लीफ्ट वडे लगभग बसें फीटनी उंचाइवाळा एक टावरने मथाळे जइ आसपासनो घणोज रमणीय देखाव जोया बाद केटलांक चित्रो तथा बावलां पण जोयां. छेवटे आतसबाजी तेमज बाइसिकलनी मजेदार शरतोनुं अवलोकन करी मध्य रात्रिए आप मुकाम पर पधार्या

ता. १ जुलाइए लॉर्डझ नामनी क्रीकेट रमवानी जगोए ऑक्सफर्ड केम्ब्रीज वच्चेनो क्रीकेट मॅच जावा आप लंडन गया. मॅचनो बीजो दिवस हतो केम्ब्रीजवाळाए प्रथम दाव लइ २७३ रन कर्या हता, ऑक्सफर्डवाळानो दाव चालु हतो, तेओ केम्ब्रीजवाळाओथी आगळ वधता जता होवाथी हवे पछी शुं थशे ? एम आतुरताथी तमाम जनो जोइ रह्या हता, एक खेलाडीए सो रन कर्या अने ए वखते रननी कुल संख्या ३०० नी थइ. वधा शान्त बनी गया अने आप स्टेशन तरफ रवाना थया, ए वखते हजु ऑक्सफर्ड तरफना दाव लेवावाळा बे मेम्बरो बाकी हता.

ता. २ जीए सवारनो समय विश्रान्तिमां वितावी बपोर पछी आप साउथगुड पधार्या अने त्यां टेनीस रमी पाछा होटेले आव्या.

ता. ३ जीए आखो दहाडो नदीनी अंदर विंडसर सुधी विजळीक लॉचमां सफर करी. दिवस चोख्खो होवाथी आपने बहुज गम्मत आवी, वळतां यंत्रमां काइ खोटको थइ जवाथी लॉचने टलेसां मारी जे स्थळेथी फरवा निकळ्या हता ते स्थळे पहोंचाडवामां आवी.

ता. ४ थीए वेब्रीज स्टेशने आप रेडींग जवा रवाना थया अने त्यां पहोंच्या पछी हंटली तथा पामर्सनी बीस्कीट बनाववानुं कार्यालय जोवा गया; त्यां तमाम काम यंत्रथी करवामां आवे छे. साजना कर्नल हेनकॉकने घेर जइ आप टेनीस रम्या.

ता. ५ मीए कर्नल हेनकॉकने त्यां टेनीस रम्या बाद साइकल पर फरवा पधार्या. पाछळथी जामनगरवाळा कुमारश्री लखुभा आपने मळवा माटे होटेले आव्या हता, तेनुं आपने मिलन तो थयुं, परंतु तेओनी साथे लांबो वखत वातचीत करवानुं बनी शक्युं नहि, कारण के कर्नल हेनकॉकना कादाने घेर जमवानुं आमंत्रण मळेलु होवाथी ए वखते त्यां जवानुं हतुं.

ता. ६ ठीए वेब्रीज स्टेशनथी आप हेन्लो तरफ पधार्या अने त्यांथी होडीमां वेसी शरतो जोवा गया. आखी नदी न्हाना म्होटा मछवाओथी चीकार भराइ गइ हती, हळेसां मारवानी जगो पण नहोती देखाव घणोज सुंदर अने आनंदजनक हतो, ए गृहना जेवी समग्र होडीओने उत्तम रीते शणगारवामां आवी हती.

ता. ७ मीए वेब्रीज स्टेशनेथी रवाना थइ फार्नवरो स्टेशने आप उतर्या, त्यां हुझार्स (घोडेस्वार पल्टन) ना एक अमलदारनुं आपने मिलन थयुं, ए अमलदार ज्यां रीव्यु थती हती ते स्थळे आपने लइ गया. त्यां पहोंच्या त्यारे महाराणीना स्वारोने जोतां आपे गाडीने एक बाजुए उभी रखावी. स्वल्प समय पछी बादशाही सरघस त्यां थइने निकळ्युं अने तेमनी बेठकना पाछला भाग तरफ गाडीने लइ जवा आपें आज्ञा आपी. महाराणीने निकटपणे जनां जोवानो लाभ लइ गाडीमांथीज उत्तम रीते रीव्युनु अवलोकन कर्युं. डयुक ऑफ कोनोटना उपरीपणा नीचे ११००० माणसोनुं लश्कर त्यां एकत्र थयुं हतुं अने ए सर्वनो देखाव दबदबा भरेलो देखातो हतो. ज्यारे रीव्यु समाप्त थइ त्यारे प्रथम महाराणीनी गाडी अने तेनी पाछळ आखुं सरघस आपनी गाडी पासे थइ पुनः पसार थयुं. जेथी महाराणीना पुनरावलोकननो यथेच्छ लाभ आपने विना प्रयत्ने प्राप्त थयो. ए अन्य लोकोने ओपेरा ग्लास वडे जोतां हतां. जो के एमने उम्मर लागेली हती, तो पण तेमनुं शरीर तंदुरस्त देखातुं हतुं. प्रीन्स अने प्रीन्सेस ऑफ वेइल्स बीजी गाडीमां हतां, तेओनी गाडी स्टेशन तरफ गइ, एज स्पेशीअल ट्रेनमां तेओए पोतानी साथे आववानुं आमंत्रण कर्युं; परंतु लंडन जवानो विचार नहि होवाथी आप बीजी स्पेशीअल ट्रेनमां रवाना थइ वेब्रीज स्टेशने उतरी पड्या; दिवस बहुज स्वच्छ हतो, जे अमलदार आपनी साथे घोडा उपर आवेल तेणे घणाज मायाळुपणाथी संभाळ लीधी हती. जो के आपनी गाडीना अश्वोए एकन्दर घणुं सारुं काम कर्युं, तो पण ते बादशाही सरघसनो साथे चालवा समर्थ थइ शक्या नहि, जे स्थळे रीव्यु थती हती ते स्थळे पहोंचवा पहेलां बादशाही सरघसनी साथे चालवुं पडशे ए रीतनो ख्याल पण आपने आव्यो नहोतो.

ता. ८ मीए आप वॉल्टन स्टेशनेथी ट्रेनमां बेसी हेस्टींग्स पधार्या. त्यां स्टेशन उपर मी हेनकॉकनां काकीनुं आपने मिलन थयुं, प्रथम एने घेर जइ तेना तरफनो आगता स्वागता स्वीकार्या बाद पछीथी आपे रॉयलसॅकशन हॉटेलमां निवृत्तिथी निवास कर्यो अने रात्रीए "लेडी ऑफ लायन्स" नो खेल जोयो.

ता. ९ मीए जे स्थळे आपने सोमवारथी तरतां शीखवानी शरुआत करवानी हती, ते स्थळ जोया बाद बपोर पछी आप सरकस जोवा पधार्या. ए वखते मी. हेनकॉकना भत्रीजा साथे हता. सांजे पीयर पॅवीलीयने जइ केटलीक जुदी जुदी बाबतोनुं उत्साहथी अवलोकन कर्युं. हॉरीझॉन्टलबार उपरना खेलो खास जोवा लायक हता.

ता. १० मीए आपे सायकलपर लगभग पंदर माइल जेटली मुसाफरी करी, भूमि खडबचडी तेमज टेकरीओथी ऊंची नीची होवाने लीधे पडेला परिश्रमनुं निवारण करवा बाकीनो समय विश्रान्तिमां वितात्र्यो.

ता. ११ मीए हॅाकहर्स्ट के जे हेस्टींगसथी आशरे पंदर माइल जेटलुं दूर छे त्यां जतां आसपासना मनोहर देखावने लीधे आपने बहुज गम्मत आवी. हॅाकहर्स्टमां मी. व्होकर्सने घेर जइ आप क्रोके रम्या. एमनुं गृह तथा बगीचो बन्ने सुंदर छे. पछीथी सेइन्टलॅन्डर्झ पीयर पॅवीलीयने जइ आपे " प्राइवेट सेक्रेटरी " नामनी आनंददायक रमत जोइ. मार्गमां कुमारश्री लखुभा मळया हता तेने पण ए रमत जोवा आपे साथे लीधा हता.

ता. १२ मीए नहावानी जगोए जइ आपे मी. हेनकॉक पासे तरवानुं शिक्षण लेवानी शरुआत करी. आपने जणायुं के ए काम एटलुं बधुं अघरुं नथी. पहेलेज दिवसे बाथना अरधा भाग सूधी आप तरी शक्या. अने त्यांथी क्लेमन्ट नामनी गुफाओ जोवा गया. ते विशाळ छे अने तेने बहुज स्वच्छ राखवामा आवे छे तेमज तेनी अंदर दीवाओ पण करवामां आवे छे. पछी आप पडी गएलो किल्लो जोवा पधार्या, ए एक ऊंची टेकरीपर आवेल होवाथी सुंदर देखाय छे अने त्याथी आसपासनो देखाव पण अति आनंदप्रद जणाय छे. त्याथी मी. हेनकॉकनी पिछाणवाळा एक बाइने त्यां पधार्या, जो के ए घेर न हतां, तोपण तेमना बगीचाओमां फरी आपे आनंद लीधो. त्यारबाद एलेक्झेन्ड्रा होटेले कुमारश्री लखुभा साथे भोजन करी हेस्टींगसपीयर पॅवीलीयने पधार्या. त्या केटलुंक जोवानुं हतुं ते जोइ पाछा फरता आपने कर्नल हेनकॉकनुं मिलन थयुं.

ता. १३ मीए वरसादने लीधे सवारे बाहेर नीकळी शकाय तेम न हतुं. बपोर पछी आप बॅटल्एबे पधार्या, त्यां घणा पुरातन खंडेर अने जे स्थळे हेरल्ड नामे राजा मरायो हतो ए बधुं जोया बाद बाकीनो वखत कर्नल हेनकॉक तथा कुमारश्री लखुभा साथे वार्ताविनोदमां तेमज हेस्टींग्सपीयर पॅवीलीयने जइ विविध प्रकारनो गम्मतो जोवामां गाळ्यो.

ता. १४ मीए बाथ उपर जइ तरवानां शिक्षणनो बीजोज दिवस हतो छतां आप बाथनी पेली बाजु तरी गया अने ते पछी फेरलाइट पधार्या, ए एक सुंदर स्थळ छे, कर्नल हेनकॉक अने मी. तरखडना बे पुत्र आपनी साथे हता. टेकरीपरथी नीचेनो दरीयो तथा बीजा देखावो घणाज मनोहर जणाता हता. त्यारबाद " आशक माशुकनी जगा " अने " टपकनो कुवो " जोया बाद एडीनबरो हॉटेले आप मी. पंडितने मळवा पधार्या. ए पंडित मुंबइथी लंडन जती वखते आगबोटमां आपनी साथेज हता.

ता. १५ मीए आप ब्राइटन पधार्या अने त्यां पाणीमां रहेनारां जळ जन्तुओनो संग्रह जोयो, तेमां दरीयाइ सिंह तथा केटलीक जातिनां मत्स्यो जोवा जेवां हतां. त्यांथी डेवील्स डाइक के जे डाउन्समांनो एक सारो भाग छे अने ज्यांथी आसपासनां गामडांओनो समग्र देखाव जोवानुं बहुज सुगम पडे छे त्यां जइ केटलुंक सृष्टि सौन्दर्य जोया बाद रात्रीए आपे " लॉर्ड वीलबरी ऑफ टीलबरी " नामनो रमुजी खेल जोयो.

ता. १६ मीए आप साउथ सी नामना स्थळे पधार्या अने त्यांथी पायर पॅवीलीयने जइ संगीतनुं श्रवण कर्युं, तथा बाकीनो वखत बेब्रीजथी आवेलां मीसीझ हेनकॉकनी साथे विविध वार्ताविनोदमां वितान्यो.

ता. १७ मीए चर्च तरफ जती रेजीमेन्टो जोया बाद एक स्टीमरमां आप "आइल ऑफ वाइट " पधार्या अने काउस उतरी तुरतज बीजी स्टीमरमा पाछा फर्या. ए वखते आसपासना दिलपसंद देखावो मूर्तिमान सौन्दर्यनी माफक शोभी रह्या हता. सांजना पायरे जइ आपे सुरीलुं बॅन्ड सांभळ्युं.

ता. १८ मीए आप रहेता हता ए हॉटेलनी सामेज जाहेर जग्या उपर लॉर्ड वुल्झलीनी देखरेख हेठळ रीव्यु थती हती तेनुं हॉटेलपांथीज आपे अवलोकन कर्युं अने मी. हेनकॉक रॉयल डॉकयार्ड जोवानी गोठवण करवा माटे पॉर्टस्मथमां रहेता ब्रीटीश नौका सैन्यना कमान्डर इन चीफने एडमीरलनी ऑफीसमां मळवा गया. बपोर पछी आप पण ए ऑफीसे जइ तेना सेक्रेटरीने मळ्या, तेमणे बधुं डॉकयार्ड बतावबा माटे लॅफ्टेनन्ट एडवर्डने आपनी साथे मोकल्या. डॉक्यार्डमां शुं शुं अने केवी रीते जोवुं तेनो प्रोग्राम पण तेमणे तैयार करी राख्यो हतो. वर्कशॉप के ज्यां एक नवी लडाइनी नौका बंधाती हती ते तथा बीजी केटलीक जगो आपे जोइ. यंत्रो चालतां हतां ते जोवामां बहु आनंद आवे एवुं हतुं. त्यारबाद कमान्डरे महाराणीनी " टेरीबल " नामनी

स्टीमरना तमाम विभागो बताव्या अने तोपो केवी रीते काम करे छे, ए वधुं सारी रीते समजाव्युं. ए आगबोटनी लंबाइ ५३० फीटनी छे अने तेमा पचाश तोपनो समावेश करवामां आव्यो छे. दिवस वादळां विनानो होवाथी ए वधुं जोवानी बहु अनुकूळता आवी. रात्रिए नाटकशाळाए जइ " नाइट ऑफ " नामनो खेल जोयो.

ता. १९ मीए आप अॅडमीरलनी ऑफीसे पधार्या, त्यां तेना सेक्रेटरीने मळतां ते आपने अॅडमीरल सीमन पासे लइ गया. प्रथम परिचयमांज ए मायाळु गृहस्थे कोइ पण प्रकारनो जोइती मदद आपवा जणाव्यु, तेमनी साथे थोडीवार वातचीत करी आप मी. एडवर्डनी साथे कींग्झस्टेर पासे हाजर रहेली स्टीमबोटमां बेसी " विक्टरी " नामनी स्टीमर जोवा गया; तेमां जे जग्याए लॉर्ड नेल्सन घवाएल अने जे कॅबीनमां एमनुं मृत्यु थएल ए बन्ने स्थळ आपे जोया. ए नौकानी अंदर घणीवार फेरफारो करवामां आव्या छे अने तेथी ज्यां लॉर्ड नेल्सन घायल थती वखते उभा हता ए स्थळ शिवायनो बधो भाग नवोज बनी गयो छे. एक सढ के जेमां १९० ठेकाणे गोळीओ लागेली छे ते तथा बीजी केटलीक जूनी तोपो जोया बाद " वरनन" नामने स्थळे पधारी आपे अनेक प्रकारना दारुगोळाना नमूनाओ निहाळ्या. त्यां खलासीओने दरेक बाबत समजावीने शिखववामां आवे छे. त्यारबाद आपे टॉरपीडो जोइ अने ते केवी रीते काम करे छे ए पण आपने समजाववामां आव्युं. एनी अंदर हवाने दाबी राखेली होय छे अने तेथी ते लगभग ६०० वार सुधी जइ शके छे, कदाच ते कोइ पदार्थ साथे अथडाय तो एकाएक धडाको थाय छे. जमवानो वखत थइ गएलो होवाथी आप हॉटेले पधार्या अने पाछा मध्याह्न समये उक्त स्थळे आव्या; त्यां मी. एडवर्ड आपनी राह जोता उभा हता, एमनी साथे एक स्टीमबोटमां बेसी आपे व्हेल आइलॅन्ड तरफ प्रयाण कर्युं, ए टापु कृत्रिम छे, त्यां प्रथम कादववाळी सपाट भूमि हती, तेमां डॉक करवा माटे खोदी काढेली मृत्तिका पूरीने तेनो टापु बनाववामां आव्यो छे. त्यां नाविकोने शिक्षण आपवा माटे वपराती दरेक जातनी तोपो अने दारुगोळो वगेरे जोया बाद आप महाराणीनी "आल्बर्ट " नामनी स्टीमर जोवा पधार्या. ते पुरातन प्रथा प्रमाणे बांधवामां आवी छे, एनी अंदर फेरफार करवानुं महाराणीने पसंद न हतुं; उत्तम रीते शृंगारेल ए आगबोट खास दर्शनीय छे. त्यांथी मछवामां बेसी आप सॉधाम्प्टन पायरे पधार्या अने पछीथी हॉटेले जइ विश्रान्ति लीधी.

ता. २० मीए पाछा आप डॉक पर गया अने मी. एडवर्डने मळ्या. ए महाशये आगनो दरो राखवानुं स्थळ तथा डॉकमांथी जे स्थळे पाणी बाहेर काढी नांखवामां आवे छे ए स्थळ उप-

रांन नाविको तथा तेना अमलदारोना निवासस्थान आपने बताव्यां. ए निवासस्थानने माटे जीर्ण थएलां नावोने उपयोगमां लीधेलां छे. ते पछी आप महाराणीनो "हंटर" नामनो एक टारपीडो जोवा पधार्या. ए दर कलाके २८ नॉटस चाले छे अने तेमां छ तोपनो नथ। बे टॉरपीडो ट्युबनो समावेश क-रेलो छे. ए टारपीडो उपर विशेष जगा नथी अने वखते वखते समुद्रना तरंगो तेना उपला भागना तूतक सुधी जइ पहोंचे छे. ए ज्यारे अडपथी चाले छे, त्यारे तेमांनो केटलीक नो बत्रीश बत्रीश नॉटस जेटली गति करी शके छे मी. एडवर्डनी सहायताथी आपे डॉकना दरेक विभागोनुं स-म्पूर्ण अवलोकन कर्युं, अने एनुं एकंदर क्षेत्रफळ आशरे ३०० एकर जेटलुं आपने जणायुं. सांजना ट्रेनद्वारा सॉल्झबरी पधारी आपे "व्हाइट हार्ट" नामनी होटेलमां आराम लीधो.

ता. २१ मीए आप सॉल्झबेरी केथीड्रल जोवा पधार्या, तेनो बांधणी उमदा गोथीक जा-तिनी छे, अने तेनुं टावर आशरे ४०० फीट उंचुं छे, त्यां लांबा समय पर थइ गएला महान् पुरुषोनी कबरो पण छे. ए केथीड्रल घणुंज सुन्दर तेमज दर्शनीय छे. बपोर पछी स्टोनहेंज के जे सॉल्झबरीथी लगभग छ माइल छेटे छे त्यां पधार्या. पुरातन समयना ब्रीटन लोको ए पत्थर त्यां केवी रीते लाव्या हशे अने बीजा पत्थरोनी उपर एक घणोज महान् पत्थर तेमनी पासे यंत्रो न होवा छतां तेमज यांत्रिक शक्तिओना कांइ पण ज्ञान शिवाय केवी रीते मूकी शक्या हशे तेनी समजण पडे तेम नथी. आसपास १०० माइल सुधीना प्रदेशमां एवो पत्थर के पत्थरनी खाणो क्यांइ शोधी जडे तेम नथी.

ता. २२ मीए आपे बाथ तरफ पधारी जुना रोमन लोकोनां बंधावेलां हमामखानांओ जोयां, एने थोडा वखत पहेलां खोदवामां आव्यां हतां. रोमन लोकोए एक हजार वर्ष पूर्वे ए बांध्यां होय एम केहवाय छे. एनुं पाणी हमेशां उष्ण रहे छे, केटलाक खनिज पदार्थोथी मिश्रित थएल ए जळमां नहावानी डॉक्टरो घणा लोकोने खास सलाह आपे छे. ए हमामखानुं खोदती वखते रोमन लोकोना समयना सीक्काओ तथा बीजी घणी चीजो मळी आवेली छे. त्यां एक मोटो पंपरुम छे के ज्यां ए हमामखानांना जळनुं पान करी शकाय छे. बपोरना आप लंडन तरफ पधार्या अने पेडींग्टन थइ वेस्टमीनीस्टर हॉटेले जइ पहोंच्या. रात्रीए आपे डेली थीएटरे पधारी "ग्रीक स्लेव" नामना अति आनंददायक खेलनुं अवलोकन कर्युं.

ता. २३ मीए लंडनमां खरीदवा धारेल केटलाक सरसामाननी जुदी जुदी कंपनीओमां तपास करी वॉटरलु स्टेशनथी वॉल्टन तरफ रवाना थया अने त्यांथी बाइसीकल पर कींग्झक्लेर

जइ टेनीस आदि रमत गमतमां आपे आखो दहाडो आनंदथी पसार कर्यो.

ता. २४ मीए पण सवारनो समय विश्रान्तिमां गाळ्यो अने बपोर पछी केप्टन कॉवेन्टीने घेर जइ टेनीस रम्या तथा साउथ वुड पर्यन्त बाइसीकलपर सफर करी.

ता. २५ मीए साउथवुड जता मीसीस हेनकॉकना मित्र मी. सधरलॅन्डनुं आपने मिलन थयुं, एमनी साथे प्रसंगोपात वातचीतमां एक एवो नवो मुद्दो निकळी आव्यो के ते सरकारने "वाली गधेडा" मोकले छे, तेणे कह्युं के गर्दभो मळता नथी. एनो सहुथी श्रेष्ठ उपाय ए छे के गधेडां अने खच्चरने साथे उछेरवां जोइए, एक सारो "वाली गर्दभ" सो पाउन्डनो मळे अने तेटलीज किम्मते पाच गर्दभीओ मळी शके, तेणे उछेरेलां केटलांक गर्दभ तथा खच्चरना फोटोग्राफ आपने बताव्या. तेमनी पासे एक खच्चर हतुं अने तेनी उंचाइ १७ हाथनी हती. खच्चरने उछेरवानो धंधो जाणनार माणसनी साथे वार्तालापनो प्रसंग प्राप्त थतां आपने बहुज आनंद थयो, अने एमनुं पुस्तक वांकानेरनुं पॅडक सुधारवामां अति उपयोगी थशे एम जणायुं.

ता. २६ मीए आपे नदीनी अंदर होडीमां बेसी सफर करी. वांसडा वडे तेने चलाववानुं शिक्षण पण लीधुं. पछी साउथवुड जइ थोडीवार टेनीस रम्या बाद हॉर्टेकें आवी एक क्रीकेट मॅचनुं अवलोकन कर्युं अने त्यांथी फरी नदीपर जइ होडीमां फर्या बाद पाछु साउथवुड तरफ प्रयाण कर्युं.

ता. २७ मी जुलाइथी ता. १ ऑगस्ट सूधीना छ दिवसो वरसादने लीधे कींग्झक्लेर तथा साउथवुडमा विविध प्रकारनी रमत गमतमां विताव्या.

ता. २ जी ऑगस्टे नदीपर जइ मछवामां जरा सहेल कर्या बाद "सेन्ट ज्योर्ज हील" नामनुं एक घणुंज मनोहर स्थळ जोवा पधार्या, ए स्थळ वृक्षोना महान समुदाय वच्चे आवेलुं छे अने त्यांथी आजुबाजुना प्रदेशनो देखाव अति रमणीय तेमज आनंदजनक जणाय छे, सांजनो समय साउथवुड जइ आपे शान्तिमां पसार कर्यो.

ता. ३ जीए सरसामान पॅक करावबानो होवाथी सारे बाहेर नीकळी शकायुं नहि, बपोर पछी "हेम्पटन कोर्ट" नामने स्थळे पधार्या अने त्यां भूलवणीमां फर्या बाद आपे केटलांक मजेदार चित्रो, पुरातन समयनी केटलीक चीजो अने राजा तथा राणीना पलंगो वगेरे जोयां. ए वखते बादशाही कुटुंबमांनुं कोइपण त्यां रहेतुं नहोतुं, परंतु पडती दशाने प्राप्त थएला महान्

पुरुषोनी विधवाओने तेमांना केटलाक ओरडाओ आपवामां आव्या छे. तेनी आसपासना वगी-चाओ अत्यंत सुंदर छे. त्यांथी मीसीझ वील्कीन्सनने त्या जइ साजनो समय आपे आनंदथी पसार कर्यो.

ता. ४ थीए आप मुसाफरी अर्थे तैयार थया अने वॉल्टन स्टेशनेथी इन्डिया ऑफीसे जइ मी. फीटझरल्ड साहेबने मळ्या. एमणे अमीरनी सभामां आपने लइ जवा माटे एक अमलदारने साथे मोकल्या. ए अमलदारे त्यां अर्ल ऑफ ओनस्लो साथे आपने भेटाड्या तथा ते स्थळना तमाम विभागो बताव्या. जे जग्याएथी महाराणी निकळे छे ते अने जे महान् हॉलमा महाराणीने आवकार आपवा सरघस एकठुं थाय छे ए बन्ने जोया बाद पहेला चार्लस राजाने मारी नांखवा माटे सभाए पसार करेल बील के जेना उपर अद्यापि केटलाक सभासदोनी सहीओ वांची शकाय छे ए पण जोयुं. गौशीतला सबंधी बील के जेमा लॉर्ड हेरीसे भाग लीधो हतो अने जे त्रीजी वखत वंचातुं हतुं ते सांभळतां आपने बहुज आनंद आव्यो. सांजना आप बर्मींगहाम तरफ रवाना थया अने त्यां पहोंच्या बाद ग्रांड हॉटेलमां उतारो राख्यो.

ता. ५ मीए मी. हेनकॉक लॉर्ड मेअरनी ऑफीसे गया अने जुदां जुदां कारखानांओ जोवानी सगवड करी आव्या. प्रथम इलेक्ट्रोप्लेट काम जोवाने आप मेसर्स एल्कीगनी कंपनीमां पधार्या, पण त्यां तो बॅन्कना तहेवारो होवाथी एक अठवाडीयुं थयां काम बंध हतुं. तथापि शोरुम तथा केटलीक कारीगरीना आश्चर्यजनक नमुनाओ जोया बाद मेसर्स जोसफ गीलट एन्ड सन्सने त्यां पधार्या. जेनाथी दुनियामां घणे भागे हाल लखवानुं काम चाले छे ए टाक त्यां जत्थाबंध बने छे, जो के तेमां घणुं काम हाथनुं छे तो पण बहुज झडपथी बनाववामा आवे छे. टांको तैयार थती हती अने तेना पर जे जे काम बनतुं हतुं ते आपें नजरे जोयुं. त्यांथी रंगबेरंगी चित्रवाळा काचनुं काम जोवा आप मेसर्स जे. बी. हार्डमॅननी कंपनीमां गया. साधारण काच उपर अनेक प्रकारना रंगथी केवु उमदा काम करवामां आवे छे अने तेथी तेनुं केवुं रुपान्तर थाय छे एवुं उत्साहपूर्वक अवलोकन कर्या बाद आप मेसर्स एफ. मी. ओस्लरने त्यां पधार्या, त्यां पण काचनुं काम करवामां आवे छे, परंतु उपर कहेला कारणसर ए कार्यालय बंध हतुं अने तेथी एक उमदा तक गुमाव्या बदल आपने जरा खेद थयो. आ स्थळे अमारे कहेवुं जोइए के काठियावाडना केटलाक राजकुमारो विलायतमां जइ मोजशोखमांज सघळो समय वितावे छे अने अमूल्य वखतनी कांइपण किम्मत करी शकता नथी ए केटलुं बधु शरम भरेलुं छे, कोई आपनी

वेगवती तेमज प्रशंसनीय उद्योगी प्रकृतिनुं अनुकरण करे तो अवश्य अमे काठिआवाडनां सद्भाग्य समजशुं. शास्त्रमां कह्युं छे के-" **यौवनं धन संपत्तिः प्रभुत्वमविवेकता, एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्** " यौवन, धन संपत्ति, प्रभुत्व अने अविवेकीपणुं ए एक एक होय तो पण महान् अनर्थना मूळ रूप छे तो पछी ज्यां ए चोकडी भेळी थाय त्यां तो शुंज पूछवुं अने तेमां वळी विलायत जेवो प्रदेश के ज्यां उत्तमता अने अधमता शीखवानां सहस्रशः साधनो हरघडि हाजर होय छे त्यां जइ पूर्वनां संचित सारां होय अने भविष्यमां एक उत्तम राजकर्ता तरीकेनी सत्कीर्ति ललाटमां लखेली होय तोज राजकुमारनी स्थितिमां युरोपनी यात्राए पधारेला आप नामदार (अमरसिंहजी) जेवी सद्बुद्धि उद्भवे. मेसर्स एफ, सी, एस्लरना कार्यालयमां कांइ काम चालतुं नहोतुं तोपण केटलाक काचना उत्तम नमूनाओ उपरांत काचने केवी रीते कापवामां आवे छे वगेरे बाबतोनुं आपे प्रश्नोत्तर पूर्वक अवलोकन कर्युं. जो ए कारखानुं चालतुं होत तो आपने जोवानो तथा जाणवानो घणोज लाभ मळत. त्यांथी आप काउन्सील हाउसमां पधार्या अने ए वखतना लॉर्ड मेअर वेल्समां होवाथी थोडा वर्ष उपरना बर्मींगहामना लॉर्ड मेअर मी. ओल्डरमेन जोन्सनने मळ्या. ए सद्गृहस्थे अत्यंत मायाळुपणाथी आपनी उत्तम प्रकारे सरभरा करी. त्यारबाद लॉर्ड मेअरनी ऑफीसनो एक कारकुन आपने टाउनहॉल, म्युनीसीपल ऑफीसनां मकानो तथा आर्ट गेलेरी बताववा साथे आव्यो. आपना अनुभव प्रमाणे टाउनहॉल घणो सुन्दर छे अने तेने उत्तम रीते शणगारवामां आव्यो छे. गेलेरीमां पण केटलांक उमदां चित्रोनुं आपे अवलोकन कर्युं एने लगतुं एक संग्रहस्थान आर्टकॉलेजना विद्यार्थीओने माटे एक श्रेष्ठ संस्था छे. त्यांथी दारुगोळानुं काम जोवा आप मेसर्स कीनोकनी कंपनीमां पधार्या; परंतु ए कार्यालय बंध होवाथी आपने निराश थइ पाछुं फरवुं पडयुं. एक दिवसमां अनेक स्थळो जोवानो लाभ लइ सांजनो समय आपें शान्तिथी पसार कर्यो.

ता. ६ ठीए आप क्रयु पधार्या अने वर्कशॉप खाताना सेक्रेटरीने मळ्या, ए महाशये आपने वर्कशॉप बताववा माटे एक गृहस्थने साथे मोकल्या. प्रथम ज्यां एन्जीन बनाववामां आवे छे ए स्थळ जोया बाद आपें स्मीथरी जोइ; अने जे यंत्रवडे लोढाना कटकाओ विद्युतथी सांधवामां आवता हता, ए क्रियानुं पण अवलोकन कर्युं. ए खरेखर जोवा जेवी अने अजायबी उपजावे एवी रीत हती. त्यां लोढामांथी गजवेल बनाववानुं अने पांच पीनीटना उष्ण लोहना एक कटकामांथी पाटा बनाववानुं काम चालतुं हतुं. आपें जोवा जेवी दरेक बा-

वतो जोइ वपोरना एकनी गाडीए चेस्टर तरफ प्रयाण कर्युं अने त्यां ग्रोस्वेनोर हॉटेलमां निवास कर्यो. जो के ए वखते वरसाद वरसतो होवाथी आप बीजुं कांइ न करी शक्या, तोपण क्रीस्टीमीन्सटूल जोवा पधार्या.

ता. ७ मीए आप रोमन लोकोना वखतनी जुनी दिवाल के जे लगभग बे माइल जेटली लांबी अने घणीज मजबूत छे तेना उपर फर्या, त्यांथी आसपासनो प्रदेश जोवानुं बहुज सुगम पडे छे; त्यांथी इटनहॉल अने पार्क के ज्यां ड्युक ऑफ न्युकेसल रहे छे त्यां पधार्या; परंतु रविवार होवाने लीधे ए हॉल बंध हतो. पछी हावर्डन के ज्यां मरहुम मी. ग्लॅडस्टन रहेता हता त्यां जइ मीसीस ग्लॅडस्टनने एक गाडीमां पसार थता जोयां, छेवटे डी नदीमां मच्छवानी सहेल करतां आप जेम जेम आगळ गया तेम तेम अत्यंत रमणीय सृष्टिसौंदर्य दृष्टिगोचर थतुं गयुं.

ता. ८ मीए आप मान्चेस्टर पधार्या अने त्यां ग्रान्डहॉटेलमां मुकाम राखी इन्डिया ऑफीसमांथी मी. हेनकॉके लखेला एक भलामणपत्र उपरथी लॉर्ड मेयर ऑफ मॅन्चेस्टरे मोकलेला तेना सेक्रेटरी के जे आपना आगमन पहेलां होटेले हाजर थएला हता तेने मळ्या; ए वखते क्यां क्यां जवुं अने शुं शुं जोवुं एनो निश्चय कर्यो. बपोरे बहुज अन्धकार जाम्यो अने वृष्टि शरु थइ, छतां आपे प्रथम वॉटसवेरहाउस जइ जुदी जुदी जातनां कपडां अने बीजी अनेक चीजोना ढगलेढगला जोया. तेओ जत्थाबंध मालनो विक्रय करे छे. मांचेस्टरमां बनेल वस्त्रोना केटलाक उत्तम नमूनाओ पण आपे जोया, अने त्यांथी आर्ट गेलेरीए जइ अनेक प्रकारना चित्रोनुं अवलोकन कर्या बाद रॉयल एक्स्चेन्ज तरफ प्रयाण कर्युं; त्यां बपोरना बे बज्या पछी घणा रुतना व्यापारीओ भेळा थइ साटां करे छे त्यांथी टाउनहॉल जइ आप लॉर्ड मेयरने मळ्या. एमणे जुदा जुदा कारखानांओना मेनेजरो उपरना भलामणपत्रो आपने लखी आप्या. यारबाद ए आखुं मकान आपे जोयुं. त्यां जाहेर मिजमानीओ वखते वपराती टेबल उपर राखवानी दरेक चीजो श्रेष्ठ अने सुशोभित हती. ए मकान तैयार थतां एकंदर साडाबार लाख पाउन्डनुं खर्च थएलुं छे रात्रे आपे प्रीन्सेस थीएटरे पधारी " लीटल् रे ऑफ सनशाइन " (प्रकाशनुं एक न्हानुं किरण) नामनो खेल जोयो. एनी रचना आनंद उपजावे एवी हती.

ता. ९ मीए प्रथम आपे मेसर्स शो जार्डीन ऍन्ड को. नी स्पीनींग फॅक्टरीमां जइ रुमांथी सूक्ष्म तंतुओ तैयार करी तेने वस्त्र बनावी शकाय तेवी स्थितिमां लाववानी तमाम रीति विलोकी. ए कामने माटे तेओ मीसरनुं अने घणे भागे अमेरिकानुं रु के जे अति मुलायम होय छे ते वापरे

छे. हिन्दुस्थाननुं रु ए कामने अर्थे जोइए तेवुं सूक्ष्म थतुं नथी तेमज तेना तंतुओ पण एटला वधा दीर्घ थइ शकता नथी. एटला माटे ए रुनी वपराश त्यां बहुज ओछी छे. त्यांथी आप मेसर्स व्हीटवर्थनी स्टील अने आयर्न फेक्टरी जोवा पधार्या. तेओ तोपो, बखतरो, अने लडाइनां वहाणो माटे पतरां तथा बीजी घणी चीजो बनावे छे. ब्रीटीश गवर्नमेन्टना उपयोग माटे नक्की थएलां माप तथा तोलांओ पण त्यां बनाववामां आवे छे. एक इंचनो दशहजारमो भाग मापवाना यंत्रो पण ए कंपनीवाळा पासे छे. त्यारबाद लॉर्ड मेयरना आमंत्रणने मान आपी आप टाउन हॉले पधार्या अने तेनी साथे उत्तम प्रकारना फ्रुट वगेरे जम्या, ए वखते काउन्सीलना केटलाएक मेम्बरो त्या हाजर हता. ते पछी मेसर्स आर हावर्थ कंपनीनी स्पीनींग अने वीवींग मील जोवा जतां तेनी कृति आपने अति उत्तम जणाइ. त्यां लगभग १४०० साळ उपर काम थतुं हतुं अने मात्र एनेज माटे ७०० साळाओने काम लगाडेली हती. त्यांथी आप लॉइड्ज हाउस पॅकींग कंपनीमां पधार्या, ए लोको परदेश खाते जत्थाबंध माल मोकले छे. हिन्दुस्थान तरफ धोतीयां मोकलवानी ए वखते योजना चाली रही हती. दुनियाना दरेक विभागो करतां मांचेस्टरमां वेपार धमधोकार चाले छे अने उद्योग व्यापार शुं चीज छे तेनुं त्यां सारी रीते भान थाय छे. सांजनो समय आपे म्युझीकल हॉलमा पधारी आनंदथी पसार कर्यो.

ता. १० मीए आप मान्चेस्टर छोडी शेफील्ड पधार्या, त्यां स्टेशनपर लॉर्ड मेयरना सेक्रेटरी आपनी राह जोता हता, तेनी साथे टाउन हॉल गया अने लॉर्ड मेयरने मळी प्रोग्राम गोठव्युं. लेडी मेयरेस अने बीजा गृहस्थो पण त्या हाजर हता प्रथम मेसर्स जोन रोजसनी कंपनीमां जइ आपे केटलुक जोवा लायक जोयुं; तेमणे मात्र अरधा आंउसना तोलमां बार कातरो बनावेली हती. त्यां एक एवुं चप्पुं हतुं के जेमा तेओ दर पाच वर्षने अंतरे पाच पानां वधारतां जाय छे चप्पुओना हाथा वगेरेने माटे तेमने दरवर्षे १४०० हाथीओना दंतोशळनी जरुर पडे छे. त्यांथी कारखानाओ जोवामा थोडो वखत वितावी लेडी मेयरेसनी साथे आप म्युनीसिपल बील्डींग जोवा पधार्या अने त्यांथी मेसर्स वॉकर ऍन्ड होलमना इलेक्ट्रोपेटींगने कारखाने जइ केटलुंक जोवालायक जोयुं. त्यारबाद मॅपीन्स आर्ट गॅलेरी अने आर्ट म्युझीअम जोइ आप हॉटेले आव्या. लॉर्ड मेयरे ए तमाम स्थळे फरवा माटे पोतानी गाडी आपी हती, तेमना सेक्रेटरी तथा मी. विल्सन के जे एक महान् वर्तमानना अधिपति तरीके कलकत्तामां वीस वर्ष पर्यन्त रह्या हता ते पण आपनी साथेज हता. दिवस स्वच्छ होवाथी उपर कहेलां स्थळो जोवामां आपने पुष्कळ आनंद प्राप्त थयो

ता. ११ मीए लॉर्ड मेयरना सेक्रेटरी मी. हेरीस तथा मी. विलसन गाडी लइ आपना मुकामपर आव्या; तेमनी साथे आप मेसर्स चार्ल्स केमीळनी कंपनीमां पधार्या; त्यां बखतरो वगेरे पोलादनी घणी चीजो बनती हती, ए कंपनीना आसि. मेनेजर केप्टन बोइन्टन के जे हिन्दुस्थानमां थोडो वखत रही गया हता एणे अत्यंत मायाळुपणाथी कार्यालयना समग्र विभाग आपने बताव्या. त्यांथी मेसर्स वीलकर्स ॲन्ड मेकसीमनुं तोप तथा बख्तर वगेरे बनाववानुं कारखानुं के जे तमाम प्रकारे उपर बतावेला कार्यालय जेवुंज हतुं ते जोया बाद बाकीनो वखत आपें हॉटेले आवी विश्रान्तिमां व्यतीत कर्यो.

ता. १२ मीए आप शेफील्डथी लीडझ पधार्या अने त्यां विक्टोरिया स्टेशन होटेलमां उतर्या. स्टेशन पर मळेला डेप्युटी मेयर अने डेप्युटी टाउनक्लार्क हॉटेले साथे आव्या अने त्यांथी आपने पोतानी गाडीमां केटलांक कार्यालयो जोवा लइ गया. एमणे प्रथम मेसर्स ग्रीनवुडनी कंपनीनी स्टील अने आयर्न मेन्युफेक्टरी बतावी; त्यां गवर्नमेन्टने माटे कारतूस बनाववामा आवे छे. ए पछी मेसर्स कीटसन एन्ड को० नी आयर्न मेन्युफेक्टरी के ज्यां जे, आइ, पी, रेल्वे तेमज बीजी रेल्वेओ माटे एन्जीन बनाववानुं काम चालतुं हतुं अने ज्यां तैयार थएलुं नं. ३१० नुं याट एन्जीन केवुं काम करे छे तेनो प्रयोग चालतो हतो ए जोया बाद आपें मेसर्स फाउलर ॲन्ड को०, मेसर्स टेलर ब्रधर्स ॲन्ड को० वगेरेनां केटलांक लोखंडना कार्यालयो पण जोयां. मेसर्स टेलर ब्रधर्सनी कंपनीमां रेल्वेना पाटा बनाववानुं काम चालतुं हतुं. त्यांथी मी. आल्फकुक्सनी चित्रशाळा जोइ रात्रीए आपें ग्रान्ड थीएटरे पधारी "गेग्रीजेट" नामना आनंददायक नाटकनुं अवलोकन कर्युं.

ता. १३ मीए डेप्युटी टाउनक्लार्क आपने मेसर्स लोसन कंपनीनां लोखंडनां कारखानांओ जोवा लइ गया, त्यां हिन्दुस्थान माटे भिन्न भिन्न कार्यमां उपयोगी थता यंत्रो अने स्क्रू बोल्ट वगेरे न्हानी न्हानी परंतु जोवा जेवी घणी चीजो तैयार थती हती. पछी आप बर्मेनटॉफ्टना माटीनां वासण बनाववानुं स्थळ जोवा पधार्या, त्यां अर्ध सूकाएल मृत्तिकानी मनोहर ईंटो बनती हतो तेने भट्टीमां मूकतां पहेला त्रण अठवाडीआ पर्यन्त सूकावा दे छे, बीजांनी रीते पण त्या घणी चीजो बनाववामां आवे छे अने ते तैयार थया पछो आंखने बहुज आनंद आपे छे. सांजना आप न्युकासल पधार्या अने स्टेशन पर आवेला मी. मेअर तथा टाउन क्लार्कने मळ्या; तथा स्टेशन हॉटेले मुकाम राखी सुखशान्तिमां रात्री वितावी.

ता. १४ मीए रविवार होवाथी बीजे क्यांइ नहि जतां आपें टाइनमथ जइ वारिधिने किनारे विचरण करतां करता समुद्रनी शीतल लहरीनो आनंद लीधो. ते स्थले अधम जनोनो म्होटो जमाव थएलो होवाथी वधारे वखत नहि रोकातां मुकाम पर पधारी सांजनो समय निवृत्तिमां गाळ्यो.

ता. १५ मीए मी. मेअरनी साथे आप लॉर्ड आमर्स्टडामनां कार्यालयो जोवा पधार्या. जापान सरदार माटे त्यां वहाणनुं बांधकाम चालतुं हतुं अने तोपो तथा बीजुं केटलुंएक लोखंडनुं काम पण थतु हतुं, एमां आशरे १४००० मजुरो कामे लागेला हता. ए कार्यालय लगभग दोढ माइल जेटलुं लांबुं छे, ए कंपनी तरफथी आपवामां आवेल स्टीमलॉंचमां बेसी आप नदीनो सामी बाजुए आवेलु एक काचनुं कारखानुं जोवा गया; त्यां काचने कापवानुं तथा तेने गाळवानुं काम जोया बाद बी. बी. ॲन्ड, सी, आइ रेल्वे माटे तैयार थतां केटलांक फेनशी फानसो पण आपें जोयां. अने त्यारबाद नदीमां थोडोवार आमतेम सेहेल करी, ए वखते नदीना बन्ने किनारा पर नौकानुं निर्माण करवानां अने बीजां पण असंख्य कार्यालयो दृष्टिगोचर थतां हतां. रात्रीए आपें "लेडी स्लेवी" नामनो खेल जोयो. एकन्दर एनी रचना सारी हती.

ता. १६ मीए आप न्युकेसल छोडी एडीन्बरो पधार्या, अने त्यां क्लेरंडन हॉटेलमां रहेठाण राख्युं, वरसादने लीधे क्यांइ बाहर निकळी शकाय तेम न हतुं, जेथी होटेले मळवा आवेल कुमारश्री भावसिंहजीनी साथे केटलोक वखत वार्ताविनोदमां वितावी रात्रीए "मेकसीमेन" जोवा पधार्या.

ता. १७ मीए कु. भावसिंहजीनी साथे केसले जइ आपें मॅरी राणीनो मुगट अने स्टेट शीझन जोयां. शेहेरनो देखाव त्यांथी सारी रीते जोइ शकाय तेम हतुं, परंतु धूमसवाळो दिवस होवाने लीधे ते संतोषकारक रीते जोवानुं बनी शक्युं नहि; त्यांथी आप न्यु युनीवर्सीटीए पधार्या; त्या म्युझीअम हॉल के जे घणोज सुन्दर अने उत्तम प्रकारे शृंगारवामां आव्यो छे तेमां अनेक हाडपिंजर तथा खोपरीओनुं अवलोकन करी फोर्थब्रीज जोवा गया, तेनी लंबाइ ८२९६ फीट, उंचाइ ३५४ फीट, अने गाळो १७०० फीट छे. ए खास दर्शनीय पूलनो घणो भाग आपें स्टीम लॉंचमां फरी फरीने जोयो अने रात्रीए रॉयल थीएटरे जइ "डोन क्वीक्झो" नामनो आनंददायक प्रयोग निहाळ्यो.

ता- १८ मीए आप आर्थर्स सीटे पधार्या, टेकरी आशरे १००० फीट उंची छे, त्यांथी शेहर अने कॅसलनो देखाव घणोज मनोहर मालुम पडे छे. जे महेलमां मॅरी क्वीन ऑफ स्कॉटस रहेतां हतां, ए हॉलीरुड पॅलेस पासेथी पसार थइ मुकामे आव्या बाद आपे सरसामान पॅक करावी एडीन्बरोथी ग्लासगो तरफ प्रयाण कर्युं. अने त्यां पहोंच्या बाद सॅन्ट्रल स्टेशन–होटेले रहेवानुं राख्युं. ग्लासगो स्टेशने सीटी चेम्बरलेननुं आपने मिलन थयुं हतुं.

ता. १९ मीए आप सीटीचेम्बरलेननी साथे मेसर्स जोन ग्रे ॲन्ड को० नी मीठाइनी दुकानो जोवा पधार्या, त्यां सेंकडो जातनी मीठाइओ जथाबंध जोवामा आवती हती. त्यांथी टेम्पलटननी कंपनीनी शेतरंजीओनुं कार्यालय जोवा जतां त्यां थतुं दरेक काम आपने बहुज गुणवत्ता भरेलुं जणायुं. शेतरंजीना केटलाक श्रेष्ठ नमूनाओ निहाळी आप सीटी चेम्बरे पधार्या. अने त्यां लॉर्ड प्रोवोस्ट गाममां न होवाथी मेजीस्ट्रेटने मळ्या. तेणे आपनी अत्यंत आगतास्वागता करी अने ए आखुं मकान के जे घणुंज मनोहर छे ते बताव्युं. ए पछी आप मेसर्स जोन एन्ड एम्, पी, बेलनी कंपनीनां श्रेष्ठ माटीकामना कार्यालयो जोया बाद फ्लीरसीडनुं इंट बनाववानुं कार्यालय जोवा गया. त्यां दश कलाकमां आशरे ११००० इंटो तैयार करवामां आवे छे. छेवटे कोरपोरेशनना ग्यासना कारखानामांनुं डोशमगॅस कारखानुं जोइ आपे सांजनो समय शान्तियुक्त विश्रान्तिमां व्यतीत कर्यो.

ता. २० मीए सर जॉन म्युर बॅरोनेटनी साथे आप डोन जवा रवाना थया. ए गृहस्थ थोडां वर्ष उपर ग्लासगोना लॉर्ड प्रोवोस्ट हता, हिन्दुस्तान अने सिलोनना जुदा जुदा भागमां तेमनां अनेक चानां क्षेत्रो छे, घणीवार हिन्दुस्तानमां आवेला ए महाशये आपने ए संबंधी खबर अन्तर घणीज बारीकीथी पूछया; एना संतोषकारक जवाब आपी थोडीवार क्रोके रम्या बाद आप लेडी मीयुरनी साथे गाडीमां फरवा पधार्या, एमना गृहनी आसपासनो प्रदेश अत्यंत रळियामणो छे. खास लेडीनो बगीचो पण बहु सुन्दर छे. सांज पछीनो समय आपे विविध प्रकारनो रमत गमतमां विताव्यो.

ता. २१ मीए गाडीमां बेसी आसपासनो मनोहर अने कुदरती देखाव जोता जोता लॉक अने एक्री पासे थइ आप ट्रोसेक्स पधार्या. ट्रोसेक्स होटेलथी लगभग एक माइल दूर लॉक केट्रीन नामनुं सरोवर छे, त्यां जइ आपे आल्वनना टापुनो अने टेकरीओ वच्चे विराजी रहेलां सरोवरोनो

अद्भुत देखाव अवलोक्यो. केटलाक सृष्टि सौन्दर्यना कुदरती देखावो वच्चे थइ पाछा फरतां बाकीनो वखत एक बगीचानी अंदर वनमाळीनी रमणीय रचनाओने विलोकवामां वितान्यो.

ता. २२ मीए लेडी मियुर तथा तेना पुत्रोनी छेल्ली मुलाकात लइ आप विंडरमियर तरफ विदाय थया. सर जोन म्युर ग्लासगो सुधी आपनी साथे हता. ए मायाळु गृहस्थे आपनुं उत्तम प्रकारे मान जाळव्युं हतुं तथा दरेक रीते संभाळ लीधी हती. विंडरमियर पहोंच्या बाद वेलसफीलड होटेलमां मुकाम राखी आप चालर्थने तळाव उपर मछवानी स्हेल करवा पधार्या. ए वखते आसपासनो अत्युत्तम देखाव आपना अन्तःकरणनुं चुंबक पेठे आकर्षण करी रह्यो हतो.

ता. २३ मीए केनीस्टन तरफ फरवा जतां आपनुं हृदय आनंदथी बहुज प्रफुल्लित बन्युं, प्रथम झाडीथी आच्छादित थएला झरा पासे थइ आप पर्वतपर चढ्या अने पछीथी तळावपर जइ लॉंचमां खूब स्हेल करीः त्यांथी पाछा फरतां दृष्टिगोचर थतो सृष्टिसौन्दर्यनो देखाव कांइ अजबज हतो.

ता. २४ मीए आप विन्डरमीयरथी लंडन पधार्या अने त्यां वेस्टमीनीस्टर पेलेस हॉटेलमां उतर्या. जुन अने जुलाइ करतां ऑगस्टना छेल्ला दिवसोमां लंडननो देखाव तद्दन जुदोज जणातो हतो. ते दहाडे केम्ब्रीजथी आवेलां मीसीस हेन्कॉकनी साथे आपे "डेन्डी फीफ्थ" नामनो खेल जोयो.

सामान्य उद्योगशील पुरुषो बहु लांबे समये जे स्थळो जोइ शके ए स्थळोनुं मात्र पोणा त्रण मासना सतत उद्योगथी परिपूर्ण अवलोकन करी ता. २५ ऑगस्टथी ता. २९ सप्टेम्बर सूधीना २६ दहाडाओ आपे केम्ब्रीज, स्टेइन, साउथवुड, गीलफर्ड तथा सेफर्टन वगेरे स्थळे रहेला जुना तथा नवा स्नेहीओने हळवा मळवामां. वर्जीनीया वॉटर तथा विन्डसरपार्क वगेरे विनोददायक स्थळे हरवा फरवामां: ऑवेल उपर सरे अने वोरिकशायर वच्चे थतो क्रीकेट मॅच जोवामां, सेन्डाउन नामने स्थळे थती चेटलीप्क गस्तोनुं अवलोकन करवामां, वी नदी उपर सुखदायक मछवानी स्हेलगाहमां, व्हाच्टींग नामने स्थळे घोडागाडीने लगता केटलाक सरसामाननी खरीदीमां, वाटफ्लीट नामने स्थळे व्हेलवेगी भेळा करवामां, कीग्झक्लेर नामने मुकामे विविध प्रकारनी रमत गमतमां. एस्टीड नामने स्थळे थएली मी. फीटझगल्डनी गार्डनपार्टीनी अंदर भाग लेवामां, हिंदुस्थानथी ताजेतर आवेला राजकोट राजकुमार कॉलेजना प्रीन्सीपाल मी. वेटींग्टन साहेब साथेना विविध वार्ताविनोदमां. भिन्न भिन्न वेषे फोटाओ पडाववामां. आनंदजनक तेमज बोधदायक नाट्यप्रयोगो

जोवामां, ज्ञानमां वृद्धि करनारां अने उत्तम लेखकोने हाथे लखाएलां पुस्तको वांचवामां, तेमज रॉयल एक्वोरीयम नामने स्थले ज्यां राक्षसी कुटुंब के जेमांना एकनुं वजन २६ स्टोन जेटलुं हतुं ते जोवामां, तथा जवाहिर अने बीजी केटलीक जोइती चीज वस्तुओ खरीदवामां विनावी ता. ३० मी सप्टेम्बरे हिंदुस्थाननी छेल्ली टपाल लखी. त्यारबाद सरदारसिंह आपने मळवा आव्या, तेनी साथे स्हेज वातचीत करी आप इन्डिया ऑफीसे पधार्या. बपोर पछी बर्कींगहाम पेलेसना तबेला जोवा जतां बादशाही गाडीओ, केटलाक कदावर अश्वो तथा तेनो सरसामान आपने घणोज सुंदर जणायो. रात्रीए आपे " लीटल मीनीस्टर " नामनो खेल जोयो, एनी रचना साधारण हती.

ता. १ अक्टोम्बरे पारीस जवा माटे आप चेरींगक्रॉसथी रवाना थया. स्टेशनपर आपने विदायगीरीनुं मान आपवा माटे कर्नल हेनकॉक, मीसीस हेनकॉक, कुमारश्री जेठीजी, सरदारसिंहजी तथा मी. डाह्याभाइ वगेरे आव्या हता. खाडीमां स्हेज तोफान जेवुं हतुं, सांजना पारीस पहोंची आपे " होटेल डीलाइल ऍट दयाल वीसन " नामनी होटेलमां निवास कर्यो.

ता. २ जीए पारीसनी मुख्य मुख्य गलीओ, खास जोवा लायक नेपोलीअननी कबर तथा तेनी आसपास आरसना पत्थरथी बांधेलुं समग्र स्थळ, एक हजार फीटनी उंचाइ धरावनुं इफलटावर के जेने मथाळे लीफट वडे चढी आखा शहेरनो सुंदर देखाव जोइ शकाय छे ते ए टावरनी आसपास इ. स. १९०० मां थनारां प्रदर्शन अर्थे आरंभेलुं काम, नेपोलीअन अने रीपब्लीकनोनी घणीज रमणीय कबरो, नॉटरडाम केथेड्रल, तेरमा सैकामां बंधाएलुं सेइन्ट चॅपल, बोइडी बुलोनमां थइ आगळ जतां आसपासना मनोहर वृक्षसमुदायथी वींटाएलो अने उभय महान सरोवरे सेवन करातो एक सुंदर बगीचो वगेरे आनंददायक स्थळोनु अवलोकन कर्या बाद आप फोरीअस डी बरगेरीस नामने स्थळे पधार्या, त्यां बीजी घणी बाबतोमां अद्भुत चातुर्य धरावनारा उभय खेलाडीओ साइकलपर अत्यंत अजायबी उपजावे एवा अखतराओ करता हता. पारीसना विशाल अने रमणीय रस्ताओ सायकलनी सफर माटे खास प्रशंसापात्र छे, रात्रीए त्या पुष्कळ विद्युदीपक करवामां आवे छे अने तेथी तेनो देखाव स्वर्ग समान सौन्दर्यने धारण करे छे.

ता. ३–१०–९८ ए पारीसना परम शोभास्पद प्रसिद्ध मार्गनी बन्ने बाजुए विराजी रहेली स्वच्छ अने सफेद मकानोनी पंक्तिनुं प्रेमथी अवलोकन करतां करतां आपे केटलीक खरी

तेमज नकली झवेरात पण जोइ, तेमांनुं अमुक जवाहिर अत्यन्त तेजोमय हतुं. लंडनना जेटलो धूम्र पारीसमां नहि होवाथी त्यांना मकानो कदी पण काळाशने धारण करतां नथी. एनो देखाव सदैव स्वच्छ अने सुशोभित मालूम पडे छे. छेवटे आप जार्टीनोद एकलीमेटेजयन नामनुं स्थळ जोवा पधार्या, केटलाएक सुंदर क्याराओ अने निरंतर लीला राखवामां आवता छोडोनुं संग्रह-स्थान छे अने त्या केटलांक प्राणीओने पण एकत्र करेलां छे. ए सर्व जोया बाद आपे मुंबइ तरफ प्रयाण कर्युं.

आप नामदारनी मुसाफरी दरमीयान वांकानेरमां राव बहादुर मोतीचंदभाइ मात्र सात मास स्टेट कारभारी तरीके काम करी सने १८९८ ना सप्टेम्बरमां जता रह्या, जेथी तेनो चार्ज संभाळवा मह्रुधाना रहीश डेप्युटी कारभारी भाइशंकर उदेरामने एजन्सी तरफथी हुकम थयो अने एणे सात मास सूधी कारभार कर्यो. ए अरसामां यूरोपनी अंदर लंडन तथा पेरीस वगेरेनुं घणा उत्साहथी अवलोकन करी, इंग्लंडना बीजा केटलाएक भागमां फरी घणो जाणवा योग्य अनुभव मेळवी ता. ११-१०-१८९८ आश्विन वदी ७ ने शनिना रोज आप नामदारनुं वांकानेर आवागमन थतां स्टेशन पर राजकुटुंब तरफथी तेमज रैयत तरफथी अत्यंत भभकादार सामैयुं करवामां आव्युं हतुं अने बजार तथा राजमहेल वगेरेने ध्वजा पताका तथा रोशनी वगेरेथी शणगारवामां आव्यां हतां. ए दिवस दिवाळीना दिवस करतां पण विशेष महत्त्वावाळो देखातो हतो. उक्त खुशालीमां भाग लेवा माटे आप नामदारनी साथेज शायपुराना महाराजा साहेबश्री नाहरसिंहजी पण पधार्या हता.

त्रिविंशत् तरंग.
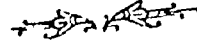
" छप्पय "

लायक वये लगाम, राज्यनी करमां लीधी;
विधविध देशे विचरी, बुद्धिने सतेज कीधी;
न्याययुक्त नथुराम, प्रजाजनने पाळोछो,
करी राज्य आबाद, नेहद्रगथी न्याळोछो;
यौवन धन सत्ता छतां, चातुर्यथीं न थया चलित,
सम्राटे पद समरप्युं, के. सी. आइ, इ नुं कलित.

विलायतनी मुसाफरीएथी पधार्या बाद पांचेक मास आपे केटलोएक राजकीय अनुभव मेळव्यो, त्यारबाद " उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः " ए नियमानुसार तुरतमांज नामदार गवर्नमेन्ट तरफथी काठियावाडना मे. पोलीटीकल एजन्ट कर्नल जे. एम्. हन्टर साहेबे वांकानेर पधारी ता. १८–३–१८९९ ना रोज दरबारगढनी अंदर म्होटो दरबार भरी आपश्रीने राज्यनी स्वतंत्र सत्ता सोंपी; अने मे. प्रान्त साहेब कारनेजीए डेप्युटी कार्यभारी भाइशंकर उदेराम पासेनो चार्ज अर्थात् सीलक वगेरेनो हिसाब तेमज राज्यकारोबारनी चावी मे. पोलीटीकल एजन्ट साहेबनी समक्ष आप नामदारने सोंपी आपी. ए महोत्सवमां श्रीमान् गोंडल ठाकोर साहेब श्री सर भगवतसिंहजीए पोतानां राणीजी सहित भाग लीधो हतो, तेमज वडीआ दरबार वावावाळा साहेबे पण हाजरी आपी हती. ए क्रिया घणीज धामधूमथी करवामां आवी हती. नामदार गवर्नमेन्टनो खलीतो मे. पोलीटीकल एजन्ट साहेबे वांची संभळाव्या बाद आप एक छटादार भाषण आपी तख्तनशीन थया, ते वखते तोपोना बहार करवामां आव्या हता. त्यारबाद रजवाडाओ

आदि तरफथी आवेलो पोशाक स्वीकारवामां आव्यो हतो. ए आनंदमय दिवसे सांजना मोरवी ठाकोर साहेव श्री वाघसिंहजी पण खुशालीमां भाग लेवा वांकानेर पधार्या हता. राजकुटुंबमां अने प्रजा वर्गमां परम आनंद प्रसरी रह्यो हतो. समग्र शहेरने रंगबेरंगी ध्वजा पताका तथा रोशनी आदिथी उत्तम प्रकारे शणगारवामां आव्युं हतुं.

आपश्रीना ए मांगलिक स्वतंत्र राज्याभिषेक महोत्सव प्रसंगे म्हारा तरफथी निम्नलिखित कविताओ निवेदन करवामां आवी हती.

॥ दोहा. ॥

वाहन जाहि विहंगको, त्रिकचा कर धर शुद्ध;
वाम भागमें सालपा, सो देहें शुभ बुद्ध ॥ १ ॥

॥ कवित्त. ॥

परम आनंद भरी आज घरि पाई प्यारी,
चाह भरे चखन रहेथे जिन चाय चाय ॥
कवि नथुराम गुनग्राम गनिवेके लिये,
रसभरी रसना रहीथी ललचाय जाय ॥
यंत्र परतंत्रताको तूट्यो देख दोरत है,
सो मन मजूर उर पूर्न हर्ष पाय पाय ॥
अमर नृपालकों स्वतंत्र अवरेखि आज,
मोहमंत्र वैसें मुदमस्त करे आय आय ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

दिव्य बनाय अदिव्यनकों, अनुठी छबिसों छकि छाजतीं है;
मानुषके गृह दैवीं दिवा, मुदसों नथुराम निवाजतीं है;

श्रीअमरेश सुरेशहुके, गहरे गुनगानसों गाजतीं हैं;

शक्रपुरीकी समस्त प्रभा, यहीं वक्रपुरी सुविराजतीं है ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

अमर नृपाल पावे राज्य अधिकार पूर्न,

वंकपुरी यातें भइ विविध विलासिनी ॥

कवि नथुराम धाम धामपें ध्वजा पताके,

रोशनी रसीली प्रभा परम प्रकाशिनी ॥

रंगित रँगोलीसें उमंगित अनंत द्वार,

मंगळ उचारे नार हृदय हुलासिनी ॥

दीपत तमाम ठाम ठाममें दिवाली दिव्य,

निमक हरामींनके धाममें हुताशनी ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

गाजतीं घोर मृदंगनसों, सुगुलाल घटा छहरीपुर छावत;

आब गुलाबहुको अधिको, नथुराम मुदाम छटा भरि स्रावत;

गायकझिल्लि कविबरहीगन, मस्त वनी हियरे हरखावत;

श्रीअमरेश स्वतंत्र भये, हम आज बसंतमें पावस पावत ॥ ५ ॥

॥ कवित ॥

दूर दुःखपालाका कसाला करि पाय सुख,

भयकी रजाई भारी फारी न्यारी करि है ॥

अमर नृपाल ऋतुराजको प्रताप पेखि,

मंगल महान नथुराम घर घर है ॥

कंपझंप सीकरन दंतध्वनि डारी दूर,
अनल अंगीठीकों अधमहिय धर है ॥
भूप भक्त संत सब विहरे बसंत पाय,
राजद्रोही राक्षसके सदन शिशिर है ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

देत प्रजाजनपंकजके गन, फूलिसुआशिष सौरभहीको;
कूजि उठे कविकोकनके गन, लोक प्रसिद्ध कवित्त सुनीको;
अंवक तेज भयो सब अस्त, समस्त अधर्मी उलूकअरिको;
पूर्न प्रकाश भयो पुरमें, नथुराम लखि अमरेश रविकों ॥ ७ ॥

॥ कवित ॥

बोलि उठे बिरद सुकविन कलापी युत्थ,
पाय श्रुति सवद विलाय भय साल आज ॥
कवि नथुराम दुःख धूलिमें दबेथे जिन,
भृत्य भेक सजीवभे छाइ सुखजाल आज ॥
तृषित तमाम थेजु आश्रित अनंत तरु,
जीवनद देखभये अमित निहाल आज ॥
व्याकुल प्रजाजन पपीहनको प्रानदान,
बारिस अमीको चल्यो अमर नृपाल आज ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥

प्रेमी प्रजागन पूर्न प्रकाशत, रंगबेरंगी पुहुपन प्यारे;
त्यों नथुराम नकीब मयूरन, मारत हाक हिये मुद धारे;

गायक भौंरन बंदि सुकोकिल, वेहद विर्दकी वानी उचारे;
श्रीअमरेश नरेश अलौकिक आज वने ऋतुराज हमारे ॥ ९ ॥

॥ कवित ॥

अमर नरेशको स्वतंत्र अधिकार आज,
भरे सुख भौंन लखि शुद्ध भक्त स्वामीके ॥
कवि नथुराम मुख मीठे दिल द्वेष भरे,
वाके शिर साहीं भरे वोज वदनामीके ॥
धीर भरे धर्मीकों अधर्मीकों अधीर भरे,
तीर भरे तनमें विविध जन वामीके ॥
हरष हुलास भूरि हितुके अवास भरे,
भय अपशोस हिये निमकहरामीके ॥ १० ॥

॥ सवैया ॥

दुःख दाद अरु फरियादहुको, अपवाद नही उर आवतहै;
नथुराम निहायत नेह छयो, सुख क्लेश न लेश दिखावत है;
भय भ्रष्टको कष्ट है नष्ट सबे, सुख श्रेष्ठ सदा मुद छावत है;
अमरेशजुको अधिकार अबें, जनके हियरे हरखावन है ॥ ११ ॥

॥ कवित ॥

अमर नरेशके प्रताप रविको प्रकाश,
अधम तिमिर तुंग तोर करे तिनके ॥
कवि नथुराम खोज खोज खल तारनको,
छिनि लेत छनिक प्रकाश गिन गिनके ॥

चुगल लवार चोरहूको जोर जार कर,

करत कुहाल जा कलंकी कलाहीनके ॥

नीच निशिचरके नयन तमकीच डार,

दीननकों दर्शन करात सुख दिनके ॥ १२ ॥

॥ सवैया ॥

वख्त बुलंद नरेन्द्र तुम्हे, वडवख्त ये तख्त विराजे रहो;

नथुराम प्रजाजन पालनके, उर ख्यालन सुंदर साजे रहो;

अमरेश अपार करी सुकृति, धरि धर्म धृति छिति छाजे रहो;

तुम गाजे रहो शठ लाजे रहो, प्रतिदिन अरिको पराजे रहो ॥१३॥

॥ कवित ॥

दीननकों दान सनमान सव संतनकों,

पारितोष पंडितके भौंन भरते रहो ॥

नित्य नथुराम कवि कोविदके काव्य सुनि,

अर्पि महादान अष्ट कष्ट हरते रहो ॥

श्रेष्टनको संग अंग अंग राग रंग राखि,

नेष्टनकों नित्य धरापार धरते रहो ॥

अमर नरेश है हमेश हमरी अशिष,

कोटि जुग ऐसें राज काज करते रहो ॥ १४ ॥

॥ सवैया ॥

सत्य असत्य निवेरनके, हरवार विचार विचारे रहो,

सुनि वात धरी द्रगके मगमें, फिर काज करी यश धारे रहो;

नथुराम सुपात्र कुपात्रनकी, अरजी मरजींपर डारे रहो;
अमरेश दिनेशकी न्हांई तुम्हे, बहुकाल प्रताप प्रसारे रहो ॥ १५ ॥

॥ कवित ॥

दाननमें दुगुन विचारे विन रात दिन,
पानन पवित्र प्रभा धरन पचे रहो ॥
कवि नथुराम गानतान कवितान विच,
कानन तुम्हारे भर मानन मचे रहो ॥
धर्म मग धावनमें गोद्विज उधारनमें,
पावन सदैव शूर सुभग सचे रहो ॥
सत्यासत्य देखवेमें और प्रभु पेखवेमें,
अमर तुम्हारे सदा नयन नचे रहो ॥ १६ ॥

॥ सवैया ॥

छांयमें भूप हुमायुको रूप, धरो विच संगर सिंहकी देहु;
टेकमें चातक बैर अहि, नथुराम निभावन सारस नेहु;
पान गह्यो तजबे विच हारल, न्यायमें हंस वनो गुनगेहु;
यों अमरेश धरी बहु रूप, जीवो जुग कोटि है आशिष एहु ॥ १७ ॥

॥ कवित ॥

पारथ पराक्रममें भारतमें भीम भट,
भीष्म प्रन पालिबेमें कृष्ण शरणागतको ॥
धीरजमें धर्म शर्म कर्ममें सुभगराम,
कवि नथुराम द्विजराम रौद्र रतको ॥

ग्यानमें जनक कुलमानमें प्रताप भूप,
दानमें करन हरिश्चंद्र सत्यव्रतको ॥
यों अनेक रूपधर टेकभर राजो राज,
ताज अमरेश बनि नौतम नृपनको ॥ १८ ॥

॥ सवैया ॥

शीशपें ताज प्रभाको समाज, दराज सु पान कृपान रहे;
तख्तपें पाव सदा नरनाव, छयो जस बीच जहान रहे;
नेह भरी नथुराम कहे, सु रमा बसि नित्य निधान रहे;
श्रीअमरेश सदा तुम्हरे, गुनिके गनमें गुनगान रहे; ॥१९॥

॥ कवित्त ॥

अमर नरेश देश देशमें सुवेश तेरे
सुयश हमेश छिन छिनमें छके रहे ॥
कवि नथुराम पारावार पार पेख अरि,
प्रबल प्रताप थल थलमें थके रहे ॥
विद्या वल विविध विलास वाकचातुरीके,
परम प्रकाश गुनि जवर जके रहे,
आशिष हमारी झलरान है महान तेरे,
विजय वितान धरातलकों ढके रहे ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

उन्निस पचवन फालगुन, सित सप्तमीं शनिवार;
पाये उस दिन अमरनृप, रसिक राज्य अधिकार ॥ २१ ॥

ए रीते तख्तनशीन थया बाद आप नामदारे स्टेटना कारभारी तरीके नडीआदना रहीश रा. बा. नाथाभाइ अविचळदास देसाइ एल. सी. के जे भरुचना मे. कलेक्टरसाहेबना चीटनीसनी जगोए हता तेओने पसंद करी एजन्सीमां नाम आप्युं, अने नामदार गवर्नमेन्ट तरफथी मंजुरी मळतां उक्त महाशयने आपे वांकानेर बोलाव्या. एमणे ता. ९–५–१८९९ ना रोज डे०कारभारी भाइशंकर उदेराम पासेथी सघळो चार्ज संभाळी लीधो, त्यारबाद तुरतमाज अर्थात् वि–सं १९५५ ता. २२–५–१८९९ ना दहाडे राजकोटना ठाकोरश्री बावाजीराजना कुंवरी श्रीमती देवकुंवरबा साथे हथेवाळे परणवानुं मुहूर्त होवाथी आप मुख्य कारभारी श्रीयुत् नाथाभाइ अविचलदास देशाइ आदि आशरे ३०० माणसना रिसालाथी स्पेशीअल ट्रेनमां राजकोट पधार्या. ए लग्न उत्तम प्रकारनी धामधुमथी करवामां आव्या हतां.

वि–सं. १९५६ नो भयंकर दुष्काळ प्राप्त थता आप नामदारे राज्यना तमाम खेडूतोने तथा आश्रितोने परदेशथी बळदो, गायो, घास तथा अनाज वगेरे मंगावी आपी निभाव्या अने गरीब गरबांओ माटे अनाथगृह खोली महान् आशीर्वाद मेळव्यो. वळी मजुर वर्गने निभाववा माटे वडसरमां जसवंतसर टेंक तथा मेसरीआमां मेसरीआ टेंक बंधाववानुं काम शरु कर्युं; लूणसर, रातडीआ, चित्राखडा अने गारीडाना तळावोनुं तथा पांच दुवारकानी केनालनुं समारकाम कराव्युं; तळपद वांकानेरमां अमरविलास राज्यमहेले जवा आववानी सडको, तेमज गामनो तथा गाम बाहेरनी सडको पहोळी कराववानो प्रारंभ कर्यो अने गामडांओनी आबादी माटे दरेक स्थळे कुवाओ गळाववा मांड्या. ए कामोमां एकन्दर रुपिआ त्रण चार लाखनुं जबरुं खर्च खेडयुं हतुं. ता. २२–२–१९०० ना रोज डेप्युटी कारभारी तरीके राजकोटना रहीश श्रीयुत् हरजीवन भवान कोटकनी निमनोक करी. एज वर्षमां श्रावणवदी १४ ता. २३–८–१९०० ना रोज शाहपुरावाळां राणीजीए महाराज कुमारश्री हरपाळसिंहजीने जन्म आप्यो. ए मांगलिक दिवसे आप नामदारे म्होटो दरबार भरी केटलाक केदीओने मुक्त कराव्या अने मिष्टान्न जमाडयुं, प्रजाए अनहद खुशाली वतावी अने कवि लोकोए आपने तथा महाराज कुमारश्रीने आशीर्वाद आपी सारां इनामो मेळव्यां. ए प्रसंगे म्हारा तरफथी निम्नलिखित कविताओ निवेदन करवामां आवी हती.

॥ कवित्त ॥

मुद धन धामको सु मुद गज ग्रामको सु,
अमित अरामको सु मुद सुखमाहेहे ॥

कवि नथुराम त्यों अनुप झलकावको सु,
जयको जहान विच जबर उछाह है ॥
राज धरिवेको शुभ काज करिवेको यह,
सरव प्रमोदको सु जगत सराहैहै ॥
हिय हरखावन उपावन सु आस खास,
पुत्ररत्न पानेको प्रमोद पतशाह है ॥ १ ॥

॥ दोहा. ॥

प्रथमाश्रम विद्या सुफल, तृतीय चतुर्थे त्याग;
द्वितीयाश्रम फल दैव दे, पुत्रजन्म अनुराग ॥ २ ॥
आत्मा आत्मज होत है, वात कहत यह वेद;
निज स्वरूप प्रागट्य लखि, क्यों न शमे भवखेद ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥

छावनो मोद सबे कुलमें, हिय पूर्वजकेसु प्रमोद वढावनो,
ध्वांत हठावनो है गृहदीपक, त्यों नथुराम अरितनतावनो;
रावनो मंगलके रवको, हरवख्त हितुके हिये हरखावनो;
भावनो भव्य उपावनो आनंद, देवकों दुर्लभ पुत्रको पावनो ॥४॥

॥ दोहा ॥

पुत्रजन्मको हर्ष हिय, सबकों होत समान;
पर प्रगटत नृप्पुत्रमुद, अधिक अधिकतर मान ॥ ६ ॥
सरव प्रजाकों सुखदप्रिय, रच्छक धरम सुराह;
विश्नुअंश अवतार यह, नामधारी नरनाह ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

राजको होतहै जन्म जवें, सुरलोकमें वाजे वधाइके वाजे;
पितृको लोक पवित्र तवें, नथुराम निहायत नेह निवाजे;
ब्रह्मको लोक अशोक वने, दिये आशिरवाद उदंड अवाजे;
मानुष लोकहुमें महिपालकें, जन्मतें क्यों नहि आनँद छाजे ॥७॥

॥ दोहा ॥

तीन जातिके करम सव, निर्भय होत निदान;
धन्य जन्म धरनीपति, जसतें भरत जहान ॥ ८ ॥

॥ छप्पय ॥

आज हमारो हृदय, अपूरवसो हुलस्यो है;
शक्रपुरीको स्नेह, बक्रपुर वीच वस्यो है;
अमर लोक आनंद, धरातल आई धस्यो है;
कठिन कलह कुल सहित, नीचभय पाइ नश्यो है;
नथुराम ग्राम घर घर प्रति, ललित वाद्य वाजत नये;
महाराज अमरेश गृह, कलित कुमार प्रगट भये ॥९॥

॥ कवित्त. ॥

परम पवित्रताको चित्र मित्र वंश मित्र,
अमर अवास प्रगटत, दुःख दलिगो ॥
कवि नथुराम ठाम ठाम पुरवासिनके,
बेहद हृदय गेह नेहनद छलिगो ॥
आनँद अछेहको सु मेह वरखन लाग्यो,
शान्तिको प्रवाह सुख सरितामें मिलिगो ॥

कलि गो उठाय कष्ट दानके दिमागनसों,
अरि चित्त चलिगो हरामी हिय हिल्लिगो ॥१०॥

॥ सवैया ॥

श्रीअमरेशजुके युवराजको जन्म सुनीं जन मंगल गावत;
मंगल साज सजी सवहीं, नथुराम सुमंगल वाद्य वजावत;
मंगल खान रु मंगल पान, जहान सुमंगल रूप जतावत;
मंगल रावत मंगल छावत, मंगल मोदकी धूम मचावत ॥११॥

॥ कवित्त ॥

नृप अमरेश गृह आज युवराज जन्म,
पेखि वढे परम हुलास मन जनके ॥
कवि नथुराम दे आशीश ग्रामदेव सव,
हिय न समात है प्रमोद पितृगनके ॥
शक्ति भल भक्तको कुटुम्ब वढतो विलोकि,
रच्छन करती है पवित्र पुत्रतनके ॥
भानु निज वंस अवतंसको जनम जान,
डारे वज्रपुरपें किरन सुवरनके ॥ १२ ॥

॥ छप्पय ॥

विप्रवृन्द पढि वेद, छन्द आशीश उचारे;
गुनिगन गायन गात, सप्तसुर भेद सवांरे;
कलित कीर्तिकी काव्य, ललित वन्दी ललकारे;
परम प्यारसों प्रजा, वारवार हि वलिहारे;

अमरेश धाम युवराज भो, सकल जीव आनँद सने;
नथुराम शुद्ध चितसों सदा, भव्य अमित आशिष भने ॥१३॥

॥ दोहा ॥

शुभ दिन शुभ तिथि शुभ घडि, शुभ नक्षत्र सुयोग;
याद देत युवराजको, जन्म पराक्रम जोग ॥ १४ ॥

॥ कवित्त ॥

वीरतामें धीरतामें अमित उदारतामें,
प्यारमें प्रवीनतामें बुद्धिमें विसालसो ॥
कवि नथुराम त्यों प्रलंब तकदीरतामें,
असल अमीरतामें शत्रुहिय सालसो ॥
अमर नृपालको अमर युवराज आज,
क्षत्रिकुल काजमें दराज हरिवालसो ॥
दानमें जहानमें उदंडता प्रचंडतामें,
हिम्मतमें किम्मतमें ह्वेगो हरपालसो ॥ १५ ॥

॥ सवैया ॥

आप प्रताप अमाप प्रसार, हिये अरिके परिताप करेगो;
त्यों नथुराम पराक्रमसो, वसुधा बहुभांति भिलाइ धरेगो;
श्रीअमरेशजुको युवराज, दराज जहानहुमें जस लेगो;
दानमें मानमें युद्धके तानमें, राण सचो सुलतानसो ह्वेगो ॥१६॥

॥ कवित्त ॥

अमर सुवन ह्वेगो मानमें सु मानकेसो,
टेकमें महान रायसिंह महिपतसो ॥

कवि नथुराम चारुतासें चन्द्रके समान,
प्रबल प्रचंड प्राथिराज नरपतसो ॥
ह्वेगो कमनीय क्षात्र कर्महुमें केसरीसो,
भव्य देगतेगमें सु भारा सुविपत सो ॥
डोसा सो उदंड वडवखत वखत केसो,
जग जसधारी वेगि ह्वेगो जसवतसो ॥ १७ ॥

॥ सवैया ॥

यज्ञ रु याग अनंत करी, वडभाग सुविप्र असीसन लेगो
त्यों नथुराम सुदीरघकाल, तमाम प्रजाप्रतिपालक ह्वेगो;
कोस कुवेर समान भरी, धरी रोस अरिदलकों दुःख देगो;
वक्रपुरी युवराज वडी, वसुधा कविलोकनकों वकसेगो; ॥ १८ ॥

॥ छप्पय ॥

परम प्रेम आनंद, विभव विधविधके पाओ;
अष्टसिद्धि नवनिधि, रसिक छितितलमें छाओ;
वनि अनाथके नाथ, दान दरियाव वहावो;
करीं संतनकी सहाय, चित्त चतुरनको च्हाओ;
कुशल विशाल कुटुम्बमें, शतक्रतुके सम सुख लहो;
कवि नथुराम असीसदे, अमर अमरसुत अमर हो ॥१९॥

वि. सं. १९५७ ना ६-१-१९०० ना रोज कलकत्ताना वाइसरोय लॉर्ड कर्झने राजकोट मुकामे भरेला दरबारमां आ श्रीए हाजरी आपी हती. त्यारबाद नवो जनानामहेल तथा तेने लगता बिल्डींगनुं काम शरु कराव्युं, मिडल स्कूलमां प्रजाने केळवणीनो विशेष लाभ आपवा माटे ता. ८-१२-१९०० ना रोज इंग्लीश छठ्ठुं धोरण खोल्युं. ता. २३-१-१९०१ ना रोज कैसरेहिन्द महाराणी विक्टोरीआनो स्वर्गवास थतां त्रण दिवस पर्यन्त ऑफीसो तथा निशाळो बंध राखी, तेमज हडताळ आदिथी महान शोक प्रदर्शित कर्यो. एज वर्षमां

ता. ७-३-१९०१ थी ता. २२-३-१९०१ सूधी मानवंता मामासाहेबे श्रीनाथजीनी यात्रा करी हती. बाद अषाढ शुदि ७ ता. ८-७-१९० . ना रोज दैवयोगे कुमारश्री हरपाळसिंहजीनो शोकजनक स्वर्गवास थता राजकुटुंबमा तेमज प्रजावर्गमां महान् दिलगीरी फेलाइ, जे महाराजकुमारनो थोडा मास पहेलांज जन्म थयो हतो अने जेने माटे अनेक उत्तम धारणाओ बांधी हती तेना परलोक प्रयाणथी सहु कोइ स्नेहीओना हृदयमां असह्य आघात थयो, ए पछी एक महिने अर्थात् श्रावण शुदी ९ ने गुरुवारे आपनां मोतीसरवाळां मासाहेब श्री माजीराजबा स्वर्गवासी थयां.

वि. सं. १९५८ मां मुंबइना नामदार गवर्नर लॉर्ड नोर्थकोट जी. सी. आइ. इ. ए राजकोट मुकामे पधारी ता. २८-११-१९०१ ना रोज म्होटो दरबार भर्यो हतो तेमां आप नामदारे हाजरी आपी हती, अने तेने बीजेज दिवसे अर्थात् ता. २९ मीए आपना आग्रहथी नामदार गवर्नर साहेब तेमज लेडी नॉर्थकोट साहेबे वांकानेर पधारी अमरविलास राज्यमेहेलमां खाणुं लीधुं हतुं, ए खुशालीना सबबथी स्टेटनी अंदर हॉलीडे पाळवामां आव्यो हतो. एज वर्षमां कलकत्ता तथा मुंबइ खाते खोलवामां आवेला विक्टोरीआ मेमोरीअल फंडना अंदर आप नामदारे सारी रकम भरी साम्राज्य तरफ वफादारी बतावी हती. ता. ९-८-१९०२ ना रोज लंडनमां नामदार शहेनशाह एडवर्ड ७ नो राज्याभिषेक थता तेओना माननी खातर आप नामदारे निशाळोमां मीठाइ वहेंची अनाथ बाळकोने तेमज केदीओने मिष्टान्न जमाडी तोपोना तथा बन्दूकोना बहार कराव्या अने अमरविलास आदि मुख्य मुख्य स्थळे भभकाबंध रोशनी करावी. वळी उक्त राज्याभिषेकनी यादगीरी खातर आखा स्टेटनी अंदर एकन्दर ४१९१ जूदी जूदी जातनां वृक्षो ववराव्यां के जेनी शीतल छायानो आजे अनेक मनुष्यो लाभ लेछे.

वि. सं. १९५९ ना वैशाख शुदि १४ ता. ९५-५-१९०३ ना रोज राजकोटवाळां राणीजीश्री देवकुंवरबानो शोकजनक स्वर्गवास थयो अने एथी राजकुटुंबमां तेमज प्रजावर्गमां महान् दिलगीरी पेदा थइ हती. त्यारबाद वर्ष आखरे वस्तीने केळवणी सबधी वधारे सगवडता मळे एटला माटे स्टेट तरफथी हाइस्कूल स्थापवामां आवी.

वि-सं. १९६० ना कार्तिक शुदि ११ ता. १-११-१९०३ ना रोज स्वर्गस्थ राणीश्री देवकुंवरबाना श्राद्धादि अर्थे आप नामदार मामासाहेब श्री दीपसिंहजी तथा डेप्युटी कारभारी हरजीवन भवान कोटकने साथे लइ सिद्धपुर, मथुरां, काशी, गयाजी अने डाकोरजी वगेरेनी यात्राए पधार्यां. ए वखते आप नामदारनो उतारो श्रीमान अयोध्या नरेश ऑनरेबल प्रतापनारायणसिंहना

मनोहर मकानमां गोठववामां आव्यो हतो, यात्रालुओ काशीनरेशना दर्शन विना यात्राने अपूर्ण समजे छे अने बनती महेनते तेमना दर्शननो लाभ ले छे, परंतु आपश्रीने तो श्रीमान काशी-नरेशे जोषीजी महाराज सोमनाथजीना मुखथी प्रशंसा सांभळी रामनगर तेडाव्या अने पोतानुं खास "नारुस" नामनुं जहाज सामे मोकल्युं. ए सुंदर जहाजनी अंदर बिराजमान थइ आप ज्यारे रामपुरने किनारे उतर्या त्यारे सैनिकोए तोपोना बहारथी तथा हथिआरो नमाववा आदिथी आपने उचित मान आप्युं. काशीनरेश आपने मळी अत्यंत प्रसन्न थया अने आप नामदारनी रीटर्न वीझीट लेवा अयोध्या नरेशने उतारे पधार्या. ए समाचार अयोध्या पहोंचतांज त्यांना महा-राजाए आपनो पत्रद्वारा अति उपकार मान्यो, अने एवा उद्गार काढया के आजे काशीनरे-शनां पगलां थवाथी अमारो उतारो पावन थयो छे. मकान तैयार थया पछी आजेज आवो उत्तम प्रसंग प्राप्त थतां अमे अमोने भाग्यशाळी समजीए छीए. अने त्यांथी ता. ९-१२-१९०३ ना रोज राजधानीमां पधार्या बाद नील परणावी केटलांएक पुण्यदान कर्या, तेमज तेओना स्मरणार्थे ता. २९-२-१९०४ ना रोज "देवकुंवरबा स्कॉलरशीप" नी स्थापना करी. त्यारपछी तळपदमां तेमज महालोमां कामनी सगवडना खातर टेलीफोन दाखल कराव्या अने दरबारगढनी अंदर जूनां दफतरो राखवा माटे एक भव्य मकान बंधाव्युं, के जेमां दफतरो रेग्युलर राखवामां आवे छे अने तेनी गोठवण खास आंख खेंचे तेवी छे, ए उपरांत राजकोटना स्वर्गस्थ कुमार कर्णसिंहजीनी यादगीरी माटे आप नामदारे राजकोट राजकुमार कॉलेजमां अभ्यास करता रेसीडेन्सने दर वर्षे कर्णसिंहजीना नामनो सुशोभित छापवाळो चांद आपवानी शरुआत करी जे अद्यापि पर्यंत अपाय छे. एज वर्षना आश्विन वदी ३ बुध ता. १२-१०-१९०४ ना रोज शापुरावाळां राणीजी साहेबश्री गुलाबकुंवरबानो स्वर्गवास थतां राज्यमां महान शोक फेलायो.

उक्त वर्षना चैत्र मासमां आप नामदारे गिरमां पधारी एक महान् सिंहनो शिकार कर्यो हतो ते प्रसंगे म्हें नीचे मुजब कविताओ बनावी हती.

॥ दोहा ॥

ओज भरे अमरेशने, हरे हरिके प्रान,
ताको बरनत है अबै, कवि नथुराम सुजान ॥ १ ॥

ता. ७-३-१९०१ थी ता. २२-३-१९०१ सुधी मानवंता मामासाहेबे श्रीनाथजीनी यात्रा करी हती. बाद अषाढ शुदि ७ ता. ८-७-१९० . ना रोज दैवयोगे कुमारश्री हरपाळसिंहजीनो शोकजनक स्वर्गवास थता राजकुटुंबमा तेमज प्रजावर्गमां महान दिलगीरी फेलाइ, जे महाराजकुमारनो थोडा मास पहेलांज जन्म थयो हतो अने जेने माटे अनेक उत्तम धारणाओ बांधी हती तेना परलोक प्रयाणथी सहु कोइ स्नेहीओना हृदयमां असह्य आघात थयो, ए पछी एक महिने अर्थात् श्रावण शुदी ९ ने गुरुवारे आपना मोतीसरवाळां मासाहेब श्री माजीराजबा स्वर्गवासी थयां.

वि. सं. १९५८ मां मुंबइना नामदार गवर्नर लॉर्ड नोर्थकोट जी. सी. आइ. इ. ए राजकोट मुकामे पधारी ता. २८-११-१९०१ ना रोज म्होटो दरबार भर्यो हतो तेमां आप नामदारे हाजरी आपी हती, अने तेने बीजेज दिवसे अर्थात् ता. २९ मीए आपना आग्रहथी नामदार गवर्नर साहेब तेमज लेडी नॉर्थकोट साहेबे वांकानेर पधारी अमरविलास राज्यमेहेलमां खाणुं लीधुं हतुं, ए खुशालीना सबबथी स्टेटनी अंदर हॉलीडे पाळवामां आव्यो हतो. एज वर्षमां कलकत्ता तथा मुंबइ खाते खोलवामां आवेला विक्टोरीआ मेमोरीअल फंडनी अंदर आप नामदारे सारी रकम भरी साम्राज्य तरफ वफादारी बतावी हती. ता. ९-८-१९०२ ना रोज लंडनमां नामदार शहेनशाह एडवर्ड ७ नो राज्याभिषेक थता तेओना माननी खातर आप नामदारे निशाळोमां मीठाइ वहेंची अनाथ बाळकोने तेमज केदीओने मिष्टान्न जमाडी तोपोना तथा बन्दूकोना बहार कराव्या अने अमरविलास आदि मुख्य मुख्य स्थळे भभकाबंध रोशनी करावी. वळी उक्त राज्याभिषेकनी यादगीरी खातर आखा स्टेटनी अंदर एकन्दर ४१९१ जूदी जूदी जातनां वृक्षो ववराव्यां के जेनी शीतल छायानो आजे अनेक मनुष्यो लाभ लेछे.

वि. सं. १९५९ ना वैशाख शुदि १४ ता .१५-५-१९०३ ना रोज राजकोटवाळां राणीजीश्री देवकुंवरबानो शोकजनक स्वर्गवास थयो अने एथी राजकुटुंबमां तेमज प्रजावर्गमां महान् दिलगीरी पेदा थइ हती. त्यारबाद वर्षे आखरे वस्तीने केळवणी संबधी वधारे सगवडता मळे एटला माटे स्टेट तरफथी हाइस्कूल स्थापवामां आवी.

वि-सं. १९६० ना कार्तिक शुदि ११ ता. १-११-१९०३ ना रोज स्वर्गस्थ राणीश्री देवकुंवरबाना श्राद्धादि अर्थे आप नामदार मामासाहेब श्री दीपसिंहजी तथा डेप्युटी कारभारी हरजीवन भवान कोटकने साथे लइ सिद्धपुर, मथुरां, काशी, गयाजी अने डाकोरजी वगेरेनी यात्राए पधार्या. ए वखते आप नामदारनो उतारो श्रीमान अयोध्या नरेश ऑनरेबल प्रतापनारायणसिंहना

मनोहर मकानमां गोठववामां आव्यो हतो, यात्राळुओ काशीनरेशना दर्शन विना यात्राने अपूर्ण समजे छे अने बनती महेनते तेमना दर्शननो लाभ ले छे, परंतु आपश्रीने तो श्रीमान काशी-नरेशे जोषीजी महाराज सोमनाथजीना मुखथी प्रशंसा सांभळी रामनगर तेडाव्या अने पोतानुं खास " तारुस " नामनुं जहाज सामे मोकल्युं. ए सुंदर जहाजनी अंदर विराजमान थइ आप ज्यारे रामपुरने किनारे उतर्या त्यारे सैनिकोए तोपोना बहारथी तथा हथिआरो नमाववा आदिथी आपने उचित मान आप्युं. काशीनरेश आपने मळी अत्यंत प्रसन्न थया अने आप नामदारनी रीटर्न वीझीट लेवा अयोध्या नरेशने उतारे पधार्या. ए समाचार अयोध्या पहोंचतांज त्यांना महा-राजाए आपनो पत्रद्वारा अति उपकार मान्यो, अने एवा उद्गार काढया के आजे काशीनरे-शनां पगलां थवाथी अमारो उतारो पावन थयो छे. मकान तैयार थया पछी आजेज आवो उत्तम प्रसंग प्राप्त थतां अमे अमोने भाग्यशाळी समजीए छीए. अने त्यांथी ता. ९–१२–१९०३ ना रोज राजधानीमां पधार्या बाद नील परणावी केटलांएक पुण्यदान कर्यां, तेमज तेओना स्मरणार्थे ता. २९–२–१९०४ ना रोज "देवकुंवरबा स्कॉलरशीप" नी स्थापना करी. त्यारपछी तळपदमां तेमज महालोमां कामनी सगवडना खातर टेलीफोन दाखल कराव्या अने दरबारगढनी अंदर जूनां दफतरो राखवा माटे एक भव्य मकान बंधाव्युं, के जेमां दफतरो रेग्युलर राखवामां आवे छे अने तेनी गोठवण खास आंख खेंचे तेवी छे, ए उपरांत राजकोटना स्वर्गस्थ कुमार कर्णसिंहजीनी यादगीरी माटे आप नामदारे राजकोट राजकुमार कॉलेजमां अभ्यास करता रेसीडेन्सने दर वर्षे कर्णसिंहजीना नामनी सुशोभित छापवाळा चांद आपवानी शरुआत करी जे अद्यापि पर्यंत अपाय छे. एज वर्षना आश्विन वदी ३ बुध ता. १२–१०–१९०४ ना रोज शापुरावाळां राणीजी साहेबश्री गुलाबकुंवरबानो स्वर्गवास थतां राज्यमां महान् शोक फेलायो.

उक्त वर्षना चैत्र मासमां आप नामदारे गिरमां पधारी एक महान् सिंहनो शिकार कर्यो हतो ते प्रसंगे म्हें नीचे मुजब कविताओ बनावी हती.

॥ दोहा ॥

ओज भरे अमरेशने, हरे हरिके प्रान,
ताकों बरनत है अबें, कवि नथुराम सुजान ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

जेसें जंभभेदी भेदी असुर अनेकनकों,
बत्रके विनाश हेतु मुदित महान है ॥
कवि नथुराम तेसें तुंग अरु तेजदार,
जाके जोर जालिमको जानत जहान है ॥
बक्रपुर शक्र हन्ता हिंसक हजारनके,
आयुधके ओकको न वनत वयान है ॥
कठिन कराल माहिपाल अमरेश आज,
पंचाननप्रान पर करत पयान है ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

हाल चले हदियाहटसों, बडहाथ विरानी व्यथा हरवेकों;
त्यों नथुराम उमंग भरे, मतिभौन निधि जसके भरवेकों
पूत अति रजपूतनकीं, अद्‍भूत सुधर्म धुरा धरवेकों;
शूर गये गिरमां अमरेश, शिकार मृगाधिपको करवेकों; ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

नगपति न्यारे न्यारे नद ओ नदीननारे,
तमकी कतारें भारे भय उपजात है ॥
कवि नथुराम एसो गिरि सरसात जामें,
हिंसक हमेश हियमांहि हरखात है ॥
सुनिके गयंद जाकी गर्जना गुमानभरी,
गयउ दिगन्त दोरि द्रग न दिखात है ॥
एसो मृगराज सांज समय समीप आय,
दारुन दरीमें अब जोर जुत जात है ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

आपहुचें अमरेश तहां, गिरि गह्वरमें उरमें मुदलाकर;
त्यों नथुराम सखा अनुसंग, विराजत है दुगुने मुदआकर;
दुष्टरुपी तमतोरनकों, प्रगटे पुहुमीपर अन्य दिवाकरः
धन्य पुरी यह वक्र मिले जिहि शक्र समान पति सुखभाकर ॥५॥

॥ कवित ॥

शौर्यवान सामतकों संग ले उमंग भर्यो,
राजत अभंग रंग अंग वीरताको है ॥
कवि नथुराम सजि आयुध तमाम चढ्यो,
भूप अमरेश मंजु धाम धीरताको है ॥
हाकोकर कहतें दुनालीको क(ाको कर,
जंगमें जुरेको रोम रोम जोम जाको है ॥
ताकों सुनि हाको बनराज वार वार उर,
शंकित ह्वै देखत भो द्वार कंदराको है ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

जाहिर जोस भर्यो ज़वहिं पति, बाहिर आय लग्यो उठि धावन;
ताहि समे पतिप्रेम पगी, वनराजवधू लगि यों समुझावन;
नाथ यहे नथुरामको है, वडहाथ न दैहैं फिरि यहां आवन;
साची कहों रहजाओ भला, कछुं मानो हमारों कह्यो मनभावन ॥७॥

॥ कवित ॥

सिंहको सपूत पूत मेंहों मजबूत महा,
मोहिकों रजादे प्रानप्यारी मुदलायकर ॥

कवि नथुराम एसे आदमी अनेक आय,
चातुर चले गये है मोसों डर पायकर ॥
जायकर वहां जोर जालिम जतायकर,
धायकर ताकों बाहुबलसों हरायकर ॥
आयकर तेरी सोंह अवभं तिहारी पास,
करिहों विलास ज्यादा जियकों जमायकर ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥

बालम क्यों उरमें इतनो, करतेहो वृथा अभिमान घनेरो,
त्यों नथुराम मदान्धपनो, तजिकें चितमांहि हिताहित हेरो;
मानव है न यहे करजोरी, कहों कछु मानो महामति मेरो;
बासवसो वसुधापर आयके, आज दियो अमरेशने डेरो ॥ ९ ॥

॥ कवित्त ॥

गुंजत है जाके गंडमंडल अखंडलमें,
भोंरनके पुंज मानो यामिनी अँधेरी है ॥
अद्रिसे उँत्तंग जाकी अमित मतंगजके,
कुंभकों विदारीबेमें प्रभुता घनेरी है ॥
एसे मृगराजनकों मारत निमेषमांहि,
नाथ नथुरामको ये करत न देरी है ॥
एसे अमरेश जेसे भूप अमरेश पास,
बालम बिचारि देख कोंन गति तेरी है ॥ १० ॥

॥ सवैया ॥

ज्यों दशआननकों समुझायो, मँदोदरीने सियनाथ लियेतें;
त्यों नथुराम ये थाकी वराकी, बनेन्द्रबधू उपदेश दियेतें;

मान्यो नहीं मतवारो मृगाधिप, धायो तजी भिय आप हियेते;
भावि मिटावन को है समरथ, कहोजी असंख्य उपाय कियेतें ॥११॥

॥ कवित ॥

मंजु मधु मासकी निहारी उजियारी राति,
झांकी झलरान धायो धरपें धधूकरत ॥
कवि नथुराम नैन राते क्रूरतातें कर,
प्रवल प्रभंजनसो भ्राजत भभूकरत ॥
जलद अषाढ केसो वीर वनराज गाढ,
पुच्छको पछारि घोर शोरकों शरूकरत ॥
भौंहकों चढायकर फालको वढायकर,
आयो अमरेश ढिग हूंकरत फूंकरत ॥ १२ ॥

॥ सवैया ॥

हाक सुनि हरिनाधिपकी, थरकी विथराये सवें करहे लो;
एसे समे नथुराम तहां, झलरान दुनाली ग्रही करछे लो;
भोगलसे भुजवारो भयकंर धीर धरापर केसो छकेलो
ह्वेकें अभीत अजीत महीपति, ठाढो रह्यो अमरेश अकेलो ॥१३॥

॥ कवित्त ॥

विकट वदनवारो, तिच्छन रदनबारो,
आयो जव निकट मृगेन्द्र भरि फालकों ॥
नाथ नथुरामजुकें दुःसह दुनालीकर,
भेद्यो इक घावतें सजीव तिहि भालकों ॥

बनिकें बिभान पर्यो पंचानन प्रान विन,
पूरन बिलोकी जाके प्राक्रम विसालकों ॥
राव उमराव मिलि सकल सराहतहे,
बक्रपुर शक्र अमरेश महिपालकों ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

धन्य धन्यको ता समे, ध्वनि भयो चहुँ ओर;
आन लगे सब दोरिकें, अमरभूपकी ओर ॥ १६ ॥

॥ छप्पय ॥

संवत शत उन्नीस, साठ मधु सप्तमाँ सुखकर;
मध्य निशा नरईश, पेखि जयप्रद गुरुवासर;
कहत कवि नथुराम, मत्त मृगपतिकों मार्यों;
धरी अमर हिय हाम, भूरि भुविको भय टार्यो;
कोंटि बरस उर हरसभर, अचल रहो अवनि परहि;
आशिरवाद अनंत यों, उचरत जनमन मुदभरहि ॥ १६ ॥

स्टेटनी अंदर दरवर्षे समयानुसार केटलाक मांगलिक प्रसंगो प्राप्त थाय छे; परंतु बेसतुं विक्रमाब्द, खुद आपश्रीनी सालगिरा तथा विजयादशमी ए त्रण जाहेर तहेवारो तरीके म्होटी धामधूमथी उजववामां आवे छे. अन्य राज्य रजवाडाओमां पण ए त्रण दिवसो एटलाज महत्त्वना गणाय छे.

पोरबंदरना मरहुम महाराणाश्री भावसिंहजीनो म्हारापर अत्यंत प्रेम होवाथी तेमज हुं त्यांनो राजकवि होवाने लीधे उपर बतावेला त्रण महोत्सव प्रसंगे कोइ कोइवार म्हारे त्यां पण हाजरी आपवी पडती, ए जणाववानुं कारण मात्र एटलुंज छे के हवेथी दरवर्षे प्राप्त थता उक्त महोत्सव प्रसंगे म्हारा तरफथी आप नामदारने निवेदन करवामां आवेलां आशीर्वादात्मक काव्यो

उत्तरोत्तर दाखल करवानां छे, तेमां जे जे प्रसंगे काव्यनो अभाव जणाय ते ते प्रसंगे म्हारी वांकानेरमां गेरहाजरी हती एम समजवुं.

वि० सं० १९६०

वर्षगांठ महोत्सव.

"सवैया एकत्रीशा"

शुभ संवत ओगणीश उपरे साठतणी सुखकारी साल;
पोष प्रबळ हुल्लास हरषनो, वर्णवुं उज्वल पक्ष विशाल;
एकादशी आनंददायिनी दे बुधवासर बुद्धि दराज;
अमर अधिपती वर्षगांठनो मंगल दिवस महोत्सव आज. १

वक्रपुरी विधविध वैभवमां शक्रपुरी करतां सुखरूप;
निर्जर करतां नित सुख नवलां, आ पुरवासी लिए अनूप;
वचन पीयुषतुं पान करावे मकवाणो महिपोनी माज,
अमर अधिपती वर्षगांठनो मंगल दिवस महोत्सव आज. २

ध्वजा पताका धामधाम पर अगणित रंगतणा ओपे,
कनक कळशथी सौध शिखर अमरावतीनी आभा लोपे;
वंधनमाळथकी वमणां दीपे द्वारो साजी सुख साज,
अमर अधिपती वर्षगांठनो मंगल दिवस महोत्सव आज. ३

चित्रित चित्र विचित्र थकी पुर सहु जनने लागे सारुं,
आंगण रंगी रँगोळिवडे सहु मंगल चिह्न धरे चारु;
ठाम ठाम आराम अभिनव धाम धाम आनंद अवाज,
अमर महिपती वर्षगांठनो मंगल दिवस महोत्सव आज. ४

विविध विजयना वाजे वाजां गाजे गहेरां गुणीनां गान,
साजे सद्य स्वरोनां सप्तक कंचनी तीखां मारी तान;

ललकारे बिरदोवंदी कथीं काव्यमही कीरतिनां काज,
अमर अधिपनी वर्षगांठनो मंगल दिवस महोत्सव आज. ५

पुरश्यामिनीं शृंगार सजी मळी मुदभर गाये मंगळ गीत,
श्रीफळ कुमकुम अक्षत संगे धाय वधावा धारी प्रीत;
व्हाल वधारी लई वारणां दे आशिष श्यामिनीसमाज,
अमर अधिपनी वर्षगांठनो मंगळ दिवस महोत्सव आज. ६

छत्र धरी छाजे सिंहासन राज अमर रुडो अमरेश,
दिव्य उदार यशस्वी दानी विनय भरेलो धारी वेष;
रसवंतो राणो शाणो ओपे शिर पर अणमूलो ताज,
अमर अधिपनी वर्षगांठनो मंगल दिवस महोत्सव आज. ७

अमित वर्ष जीवे अवनि पर सुखशान्ति मुदमगळमांय,
नित नित कवि नथुरामतणां लोचन मूर्ति जोवा ललचाय;
प्रबळ प्रताप वधारे विधविध प्रीतें प्रौढ धरमनी पाज,
अमर अधिपनी वर्षगांठनो मंगल दिवस महोत्सव आज. ८

विजया दशमी महोत्सव.

॥ छप्पय ॥

विजयी विजयादशमीं, विजयीं संवत्सर सुखकर;
विजयीं वक्रपुर तख्त, विजयीपुरदर्शन दुःखहर;
विजयीं वंश झलरान, विजयीं उनकार्य अधिकतर;
विजयीं राज अमरेश, विजयीं स्नेहीं अरु सहचर;
अश्व शस्त्र समीं पूजिबो, विजयीं साज सुखधामके;
विजयीं आशिरवचन है, यामें कवि नथुरामके ॥ १ ॥

॥ कवित ॥

परम पवित्र रिद्धिसिद्धिके समूहनसों,
भाव धरि भूप भव्य भुवन दिपाओ तुम् ॥
कवि नथुराम कारे काजर पहार केसे,
द्विरद अनंत रख विभव वढावो तुम ॥
तरल तुरंगम तरंगसे तरंगिनीके,
नीके रख जोर शोर जगमें जमाओ तुम् ॥
शस्त्रधर शूरन अनेक अमरेश राखि,
बिजय बितान वसुधाके अन्त छाओ तुम् ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

पालन खूब प्रजाको करी, नित आमद आप करी दुगुनी;
प्रिय पुत्र कलत्र सबें घरसूत्र सु पाओ पवित्र माहिपमनि;
अमरेश तुम्हे अमरेश बनी, अति नीके रहो धरनीके धनी;
नथुराम निहायत नेह बढो, यह आशिषबानी अनुप भनी;

॥ कवित्त ॥

मंडित करीके मान कवि गुनी पंडितके,
दान द्विज देवकों अखंडित दिया करो ॥
कवि नथुराम यज्ञ याग करीं राग धरीं,
परम प्रसन्न हुतभुककों किया करो ॥
अभिनव भूरि भव्य द्रव्यकी सुगंध देके,
लाख सुर वृन्दनकी आशिष लिया करो ॥

जाहिर जिया करो जगतमें करोर जुग,
नृप अमरेश प्याले प्रेमके पिया करो ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

राण कृपाण धरी करमें, खलके दल ख्वार करेई रहो;
नथुराम तमाम नीचे नरके, निसिवासर जान जरेई रहो;
मखवान महा अरिमुंडनझुंडन, आपकी तेग तरेई रहो;
अमरेश कुबेरकी न्हांई सदा, मुखमासों भंडार भरेई रहो ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ॥

कुलअभिमानके करोर शुभ काम करि,
परम प्रसिद्ध हो सुदास मतिवंतमें ॥
कवि नथुराम दानदरिया बहाय वडे,
अग्र पद पाओ दानी महिप महंतमें ॥
रयासतकों रसिक बनायकें रसीले भूप,
नित बिकसाओ प्रभा नृपति अनंतमें ॥
नृप अमरेश क्लेश देशके हरी हमेश,
सुजस पताके बांके छाओ छितिअंतमें ॥ ६ ॥

॥ छप्पय ॥

धीर धर्मसम धारी, धर्म मगमें पग धरि हो;
भीम भीमसम होइ, भ्रष्टजनकों भय भरि हो;
बिजय धनञ्जय तुल्य, लेइ अरि सन्मुख लरिहो;
विनय नकुल सम बहुत, राखि जगजन खुशी करिहो;

संतसेव सहदेवसम, अमर करी नित अचल हो;

नथुराम पंच पांडव प्रकृति, आप एक तनमें रहो ॥७॥

॥ दोहा ॥

विधविध वाजे बाजते, रसिक राजते देश;

कविकों नित्य निवाजते, अमर रहो अमरेश ॥ ८ ॥

वि–सं० १९६१ मां वळाना ठाकोर श्री वखतसिंहजीनां कुंवरी श्री फुलकुंवरवा साथे आप नामदारनो संबंध थतां खाडे परणवानुं होइ वांकानेरथी ओझणुं लइ डेप्युटी कारभारी हरजीवन भवान कोटक महा वदी ४ गुरुवार ता. १२–२–१९०५ ना रोज वळे जइ पहोंच्या, अने लग्ननुं कार्य धामधूमथी पतावी ता. २-३ १९०५ ना रोज वांकानेर आव्या. एज रात्रिए अमरविलास राज्य-महेलमां आप मंगल फेरा फर्या अने लग्ननुं काम पूर्ण करवामा आव्युं. त्यारबाद त्रीजे दिवसे अर्थात् ता. ४-३-१९०५ ना रोज मुंबइना नामदार गवर्नर लॉर्ड लेमींग्टन जी. सी. एम. जी. जी. सी. आइ. इए राजकोट मुकामे भरेला दरबारमां आप नामदारे हाजरी आपी हती. एज सालमां समढीआळा, राजगढ तथा शोभला नामना त्रण गाम अति जीर्ण थइ गएलां होवाथी तेने आवाद कर्या; तेमज जसवंतसर टेंक बंधाववाथी जडेश्वरनी यात्राए जनाराओने विकट रस्ते थइ जवुं पडतुं ए अगवड दूर करवा माटे सदरहु टेंकने किनारे किनारे डुंगर तोडावी एक नवी सडक बंधावी यात्राळुओनो आशीर्वाद मेळव्यो. ए पछी हिन्दुस्थानमां आवेला गढ मांडाना महाराजा श्री रामप्रतापसिंहजीनां कुंवरी श्री पद्मराजकुंवरवा साथे आपना संबंधनुं नक्की थवाथी ता. ४–७–१९०५ ना रोज आप नामदार मुख्य कारभारी नाथाभाइ अविचळदास देसाइ आदि त्रणसो माणसोना रिसाला साथे ट्रेनमां पधार्या. ता. ६–७–१९०५ ना रोज वरात नहवाइ स्टेशने जइ पहोंचतां तेने लेवा माटे खुद मांडा नरेश रामप्रतापसिंहजी पोताना स्टाफ सहित त्यां पधार्या हता. ता. ८-७–१९०५ ना रोज हथेवाळे परणवानी क्रिया शास्त्रोक्त रीते म्होटी धामधूमथी थइ. बाद ता. ११–७–५ ना रोज त्यांथी रवाना थइ ता. १४–७–१९०५ ना रोज वरात वांकानेर आवी पहोंची. स्पेशीयल ट्रेन जतां आग्रे अने वळतां अजमेर अमुक समय रोकाएली होवाथी साथेनां माणसोने ए बन्ने शहेरोनां प्रख्यात स्थळो जोवानो आप नामदारे लाभ आप्यो हतो. वर्षाऋतु चालती होवाथी हिन्दुस्थान-

नी हरियालीए तेमज रसाल भूमिए आंखने कांइ जुदोज आनंद आप्यो हतो. ए लग्न महोत्सव प्रसंगे म्हारा तरफथी निम्नलिखित कविताओ निवेदन करवामां आवी हती.

॥ कवित्त. ॥

संवत उनीस शत इकशठके अनूप,
उत्तम अषाढ मास षष्टी तिथि शुक्लपक्ष ॥
कवि नथुराम कामरूप नेक नामवर,
महद महीपनमें दीपत महान दक्ष ॥
जाकी राजरीत अरु परम पुनीत नीत,
सुजन सराहत है सब जगकी समक्ष ॥
बक्रपुरशक्र आज ब्याहद विनोदभर,
भूप अमरेश कवि कोविदको कल्पवृक्ष ॥ १ ॥

छितिपें छल्यो है आज उदधि अनंदकोसु,
केधों अट्टहास भयो उदित उमेशको ॥
कवि नथुराम जन्मदिन है जयन्तको कि,
राज्य अभिषेक केधों सुभग सुरेशको ॥
हरन कलेशको हमेश हरि जन्म केधों,
सुखद समागम है उत्सव अशेषको ॥
सुंदर सुजान मखवान कुलभानकोकि,
लग्नदिन राजे आज राज अमरेशको ॥ २ ॥

पारसकों पाय जेसें रंक जन राजी होत,
जेसें हर्ष होत मिले नैन अंध नरकों ॥
कवि नथुराम हद हर्षकी रहे न जेसें,

जोपें भगवंत आय भेटे भक्तवरकों ॥
श्यामिनी सुलक्षणा सिलेतें मनमोद महा,
बढत सुभागी नर सुंदर सुघरकों ॥
जाहिर जहान मध्य बरनों कहांलों वैसें,
अमर महिपके विवाह अवसरकों ॥ ३ ॥

उत्तम अषाढकी सुदिव्य द्वितीयाके दिन,
परम प्रमोदमय करत पयान उत ॥
कवि नथुराम अमरेशकी बरात इत,
पावस प्रबल स्वारी साजत सयान उत ॥
बाजत नगारे वडे गाढनादवारे इत,
गाजत है घोरघन नीरके निधान उत ॥
वन्दीजन वोले इत विरद वहोत विधि,
उत है पपीहनके रसिक महान रूत ॥ ४ ॥
इत छरिदार वारवार ज्यों पुकारत त्यों,
कलित कलापी उत करत कलोलें है ॥
कवि नथुराम इत कलरव कामिनीके,
झिल्ली झनकार उत अमित अमोले है ॥
जाचक अजाचक वने है इत दान पाय,
उत गनदादुरके दान विच डोले है ॥
अवधि वरात अमरेशकी वनी है इत,
उत वरषाकी सव विधि समतोले है ॥ ५ ॥

मोर और दादुर पपीहनके शोर करि,
छायो पट दीर्घ चहुऔर दिशि चारेकों ॥
कवि नथुराम अब इन्द्रके अनुग्रहसों,
छायो है सवायो श्रेय जैसें जग सारेको ॥
छायो जल धारसों अपार महिमंडल ओ,
जोर नभ मंडलपें छायो घन कारेको ॥
एसें अमरेशकी वरातसों दराज आज,
मंडप अखंड छायो मांडा गढवारेको ॥ ६ ॥

प्रज्ञजन पादपकों करन सुपल्लवित,
दिव्य दानधारा धरि हिय हरखनकों ॥
कवि नथुराम हाम धरिकें हजारों कोश,
पंडित पपीहनके गुन परखनकों ॥
नरपतिमंडलमें नित्य सबहीसों श्रेष्ठ,
रसिक रसातलमें कीरत रखनकों ॥
पश्चिमसों आज अमरेश घनराज चढयो,
पूरव दिशापें बलधार वरखनकों ॥ ७ ॥

रमा राज्यमंदिरमें विविध बिहार करो,
गोकुलमें कामधेनु चिन्तामनि धनमें ॥
कवि नथुराम गृहवार्टिकामें कल्पवृक्ष,
बानी आय वसो तेरे बिमल बदनमें ॥
दया दोउ नैनमें निवास करो रेन दिन,

दान सुखदेन कर शुभ्र जस जनमें ॥
कान्त कमलाको नित आयके निवास करो,
नृप मखवान अमरेश तेरे मनमें ॥ ८ ॥
वैरिनके वास नित्य करिकें उदास आप,
सुजसें सुहावो आप संतत सुलेहसों ॥
कवि नथुराम काम पूरि कविपंडितके,
आशिष अनंत पाओ आनंद अछेहसों ॥
वक्रपुरनाथ साथ दंपती सुसंपत्तिसों,
वास बसे वैभव लो दूने यह देहसों ॥
राज शिरताज महाराज अमरेश एसें,
सुखमें विताओ शत शरद सनेहसों ॥ ९ ॥

उक्त वर्षमां सालगिरा महोत्सव प्रसंगे आशीर्वचन

॥ छप्पय ॥

संवत शत उन्नीस, इक्कसठ हर्ष उपावन;
पोष मास सित पच्छ, महद मंगल मनभावन;
सुखदराज सरसात आज एकादशी उत्तम;
दिव्य अमर दरसात, अमरपति तुल्य अनूपम;
भासत है नथुराम यह, भव्य राजकुलभानको;
विजय वढावन जन्मदिन, महाराज मखवानको ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

जाके बाप दादे जादे जोरकी जमावटसों,
सादे शस्त्र धारी दंड शत्रुनकों देगये ॥

लाठीके प्रहारनसों काठीकों संहार करि,
वंकपुरी नाथ यश लेगये नये नये ॥
कवि नथुराम भानुवंशकी सुभव्यताकों,
छितिमें छटासों भूरि छिन छिन ह्वै गये ॥
बखत बुलंद ताके तखत विराजे आज,
अमर नरेन्द्र इन्द्रहूतें अधिके भये ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

जानि विभाकर बंस बिभूखन, हर्ष हिये परिपूरन पावत;
स्वच्छ सुकोमल कीरनसों, जियको उछरंग अभंगजतावत;
स्नेहसुधा स्त्रविकें नथुराम, सुचिन्ह सवें वलवंत वतावत;
सालगिरा अमरेशकों जानि, गुनी गुन गावत वाम वधावत ॥३॥

॥ कवित्त ॥

सुखप्रद सालगिरा अमर नृपालकी ये,
मांगलिक महिपें महोत्सवकी मात है ॥
कवि नथुराम राजसाहिब बिराजत है,
बाजत है बाद्य लखि मन ललचात है
ठोर ठोर विजयके शोर चहुँओर होत,
अंग अंग आज उछरंग अधिकात है ॥
बंकपुर नाथ बडहाथ साथ स्नेहिनके,
सुरसह सुरपति वैसे सरसात है ॥ ४ ॥

॥ छप्पय ॥

बिजयवाद्यके घोष, जोसभर जबर जताओ;
खलदलकों करि खाख, हाक अरिहियमें छाओ;
प्रसरो पाइ प्रमोद, प्रबल शुभ यशके परिमल;
अमरसिंह नृप आप, रहो अवनिपर अविचल;
एसे अनंत उत्सव सदा, श्रीहरि दे आनंद सह,
नित्य नित्य नथुरामकी, सफल होहु आशीश यह ॥ ५ ॥

विजयादशमी महोत्सव प्रसंगे आशीर्वचन.

" गीति "

आनंदे चिर आयु, आपो जेणे थर्यो सुहिमधाम;
अहनिश आशिष एवी, नेह धरीने दिए नथुराम. १

विजयी विजयादशमी, अमर आपनां करो सिद्ध काम;
अहनिश आशिष एवी, नेह धरीने दिए नथुराम. २

व्हाला वंकपुरीना, नृपति निरंतर वधो नवलनाम;
अहनिश आशिष एवी, नेह धरीने दीए नथुराम. ३

संतति सुखप्रद पामो, अमर आप सम उदार अभिराम;
अहनिश आशिष एवी, नेह धरीने दिए नथुराम. ४

अमर आपनां अतिशय, गाओ गुणीजन तमाम गुणग्राम;
अहथिश आशिष एवी, नेह धरीने दिए नथुराम. ५

पांडव तुल्य पराक्रमी, वनो पूजीने शमी अमर आम;
अहनिश आषिश एवी, नेह धरीने दिए नथुराम. ६

अमरसिंह अवनिमां, धर्मधुरंधर वनो विजयधाम;
अहनिश आशिष एवी, नेह धरीने दिए नथुराम. ७

महद भूप मकवाणा, राजनीतिए धरो अमित धाम;
अहनिश आशिष एवी, नेह धरीने दिए नथुराम. ८

वि–सं. १९६२ मां नामदार प्रीन्सऑफवेल्सनी मुंबइ खाते मुलाकात लेवा ता २–११ १९०५ना रोज वांकानेरथी नीकळी ता. ३ जीए ग्रान्टरोड स्टेशने जइ पहोंचेला आपश्रीने नामदार गवर्नमेन्ट तरफथी सलामी तेमज मान आपवामां आव्युं हतुं अने नामदार प्रीन्सऑफवेल्से आपनी वीझीट लीधी हती. त्यारबाद पोष शुदि ११ ने दहाडे आप नामदारनी वर्षगांठनो महोत्सव होवाथी पोरबंदरना मरहुम महाराणा श्रीभावसिंहजी, ध्रांगध्राना मरहुम राजसाहेब श्रीअजीतसिंहजी, वडीया दरबार श्रीबावावाळा साहेब तथा मोरबीना श्रीमान ठाकोरसाहेब वांकानेर पधार्या हता अने एओनी हाजरीमांज नवो राजमहेलातनो पायो नांखवानी शुभ क्रिया करवामां आवी हती, एज वर्षमां ता. १४–४–१९०६ ना रोज आपनां मूळीवाळां मासाहेब श्री जेठीबा साहेबनो देहान्त थयो.

बेसता वर्ष प्रसंगे आशीर्वचन.

॥ कवित्त ॥

संवत उनीस शत बासठको वर्ष बैठि,
हर्दम विशेषता दे हरष हुलासमें ॥
कवि नथुराम घनपतिको तमाम धन;
कर है निवास तुव कोश सुखरासमें ॥
बिभव बिनोद बिधविधके बढाय हेत,
अहनिश आयबसे अमर विलासमें ॥
बक्रपुरनाथ तेरे माथ सदा दोनों हाथ,
राखि रमानाथ ल्यावे बिजय बिकासमें ॥ १ ॥

कुशल कलामें सुखमामें शूरवीरतामें,
दानमें दिमागमें सदैव मन स्वस्त हो ॥

कवि नथुराम जोर जारिबेमें जालिम को,
बक्रपुर नाथ तेरे शक्रसम हस्त हो ॥
अमर नृपाल प्रतिपाल पुहुमकि बनो,
पुत्रतें पवित्र गृहसूत्र सुखग्रस्त हो ॥
अस्त हो अरिको मन मोद मदमस्त हो सु,
खलजलनिधिको अगस्त तन्दुरस्त हो ॥ २ ॥

रिद्धि सिद्धि स्यासतमें रसिकविहारी रखे,
मोद अरु मंगल महान राज्यगेहमें ॥
कवि नथुराम रमापति दे रमाको वास,
वुद्धि सुरगुरु देवे आनंद अछेहमें ॥
शंकर सदैव तुव शंकर बनेई रहे,
अमर त्रिशूल दे भयंकरकें देहमें ॥
वक्रपुरनाथशक्र वकसो विभव वडे,
धाता धीरदाता रखे सने सुख स्नेहमें ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

नविन वरसमें नविन सुख, नविनवरसमय मोज;
नविन स्नेह सुखमा नविन, हितसों पाओं हरोज ॥ ४ ॥

सालगिरा महोत्सव प्रसंगे आशीर्वाद

" छन्द हरिगीत "

मुद महद मंगल वास वसिआ आज वांकानेरमां,
अति हरषथी जन वरसता लाखो फरे छे लहेरमां;

वरविजय वाद्यतणा विशेष अनूप विविध अवाज छे,
शुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. १

उर धारी अति आनंद अवला वृन्द गीतो गाय छे,
परिचारिकापदमुरचिना स्थल स्थल महीं ध्वनि थाय छे;
केसर कुसुंभतणा सुकुंभ अनंत मंगल साज छे,
शुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. २

विधविध वितान विशाल वंधनमाल संग शृंगारीआ,
भलराज्य भुवन कचेरीओमां दिव्य दृश्यो धारीआ;
देखाव देवअवासने शरमावनार दराज छे,
शुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. ३

नृपमात निर्मळ गंगशां, निज अंग आनँद धारतां,
मुक्ता सुवर्णनी म्होर वारंवार सुतपर वारतां;
मुख नीरखतां क्षण क्षण मुदें दिल जेहनुं सुख जाज छे,
शुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. ४

सजी स्नेहथी शणगार सोळ रमे रसिक युग राणीओ,
नृप अमरइन्द्र रिझावनी जाणे उभय इन्द्राणीओ;
वर वक्रपुर सुरपुर अने सहु स्नेही सुर समाज छे.
शुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. ५

भल भावभूप अजीत हरि आनंद धारी आवीआ,
उत्सव अमर अमरेशने गृह जाणी जग सुख लावीआ
वहु भावीआ मकवाणने जे परम धरमनी पाज छे,
शुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. ६

घरघर वजार गलीगलीमां रोशनी राजी रही,
कोटिक रविनी कान्ति शान्ति आपती छाजी रही;

गुणीओ कथे गुणगानमां जे कलित नृपनां काज छे,
शुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. ७
शतवर्ष लगी सुखसिन्धुमां झीले अमर यश धारीने,
जगमांहि जोर जमावशे म्होटा अरिने मारीने;
आशीश ए नथुरामनी जेनी अमरकर लाज छे,
शुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. ८

॥ कवित्त ॥

सुखको समंदर ओ प्रेमको पुरंदर है,
वक्रपुर अंदर विनोद बरसावनो ॥
कवि नथुराम अभिराम जन आरतको,
ठाम ठाम संगीतके स्वर सरसावनो ॥
जस झलरानके सुजगमें जतान हारो,
पथ पथ मंगल रू मोद परसावनो ॥
जनम महोत्सव ये अमर नृपालको सु,
अरि तरसावनो हितूकों हरसावनो ॥ १ ॥
पोरपति भाव ओ अजीत मखवान मिले,
अमर नृपालको है आनंद अशेष आज ॥
पागे रस रंग अनुरागे सब नग्रजन,
रोके मुद हितुनके हृदयप्रदेश आज ॥
इत उत फावसों फिरे है भृत्य भृत्यका सु,
मंगल उचार मुख धार वरवेश आज ॥
अष्ट महादानके दिनेशनके दर्शपाय,
कवि नथुरामकों रह्यो न कछु शेष आज ॥ २ ॥

भावसिंह अमर अजीत भुवि पालहुको,
संग देख उपमा अनूठीकी परे पिछान ॥
कवि नथुराम क्रूर कुमुदकों कष्ट देन,
प्रेमीगन पंकजकों देइवे दरसदान ॥
अधम उलूकनकों अंध करिवेके लिये,
हरन हजार खल उडुभा भू आसमान ॥
बंदी कवि कोकके दरिद्र तम टारिवेकों,
आज प्रगटे है संग भूप त्रय भासमान ॥ ३ ॥
संत सुगरीव ओ भरत सतरूघनकों,
मोद धर राम अभिरामकों मिलाये जोंन ॥
कवि नथुराम क्लान्त बिरही रघुवरकों,
सीता सुध लायकें मिलादी धरवेग पोंन ॥
लच्छनकों बूटी ओ बिभीषनकों रामचन्द्र,
काज करिके महंत अंत धरि बैठे मोन ॥
जुग मखवानकों मिलायबेमें जोरदार,
हनुमतबंसअवतंस बिन ओर कोन ॥ ४ ॥
भावसिंह अमर अजीत नृपराज तुम,
परम प्रताप पाओ पूर्न पुहुमीकों पाय ॥
कवि नथुराम मुद मंगल महान पाय,
प्यारे हो प्रसिद्ध नृपतिमें नाम नीको पाय ॥
पुत्र परिवार पाय, आयुष अपार पाय,
लच्छके भंडार पाय सुख सरसीकों पाय ॥

शुभउर आश पाय हरष हुलास पाय,
बिविध बिहार करो आनॅद असीकों पाय ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

गविसवार पन्नगधरन, उमारमन सुखएन;
भाव अजित नृप अमरकी, रच्छ करो दिनरेन ॥ ६ ॥

वि. सं. १९६३ मां आप नामदारे सालगिरा महोत्सवनी खुशाली प्रसंगे ता. १-१-०७ थी गुजराती निशाळोमां प्राथमिक केळवणी मफत आपवानो ठराव ता. २६-१२-१९०६ ना रोज कर्यो. त्यारबाद पहेला चैत्र वदि ०)) शुक्र ता. १२-४-१९०७ ना रोज वळावाळां श्रीमती राणीजीसाहेबे राजकुमारश्री प्रतापसिंहजीने जन्म आप्यो. ए वधामणी सांभळतांज आपश्रीए केटलाक केदीओने मुक्त कर्या, निशाळोमां साकर वहेंचावी, प्रजाए पण अपूर्व आनंद प्रदर्शित कर्यो अने सदरहु खुशाली सबबे खेडूतो पासेथी लेवातुं पगीतुं लवाजम ता. २९-९-१९०७ ना हुकमथी आप नामदारे माफ कर्युं. ए वर्ष आखरे डे. कारभारी हरजीवन भवान कोटकनी राजकोटस्टेटना मुख्य कारभारी तरीके निमनोक थतां तेओए बजावेली सेवाना बदलामां आपश्रीए विजयादशमीने दहाडे एक जाहेर दरबार भरी तेओने उमदा पोषाक तथा इनामनी म्होटी रकम आपी औदार्य बताव्युं अने एमनी जगोए जेतपुरनां रहीश श्रीयुत अभेचंद गोविंदजी देसाइ बी. ए. एल. एल. बीने दाखल कर्या.

वेसता वर्ष प्रसंगे आशीर्वचन.

" मालिनी "

अधिक अधिक नित्यें, आपनुं श्रेय थाजो;
अभिनव सुख साजो, रागथी आप राजो,
विजय जनसमूहे, जोरथी सद्य जामो;
अमर नविन वर्षे, पूर्ण आनंद पामो. १
प्रतिदिन प्रसरावी, प्रेम प्रौढो प्रजामां;
महिपति मकवाणा, मग्न रेजो मजामां,

दइ विविध जनोने, व्हाल धारी विसामो;
अमर नविन वर्षे, पूर्ण आनंद पामो. २

दशरथसुत पेठे, दुष्टवृन्दो विदारो;
विनय सुत विवेकी, सुज्ञना अर्थ सारो,
सुभग सुख लइने, व्याधिओ सर्व वामो;
अमर नविन वर्षे, पूर्ण आनंद पामो. ३

पति हिमतनुजाना, आपने श्रेय आपो;
महद सुयश केरा, शंकुए सृष्टि मापो;
अभिनव शुभ आशी, दे नथुराम नित्ये,
अमर नविन वर्षे, पामजो हर्ष प्रीते. ४

सालगिरा महोत्सव प्रसंगे आशीर्वचन.

"शार्दूल विक्रीडित"

वृद्धि वारिधिना विनोदमहि दे, जे रीत शाणो शशी;
आपे छे त्यम आ अपार अमने, आनंद एकादशी,
म्होटा मंगळरूप मंगळ बन्यो, प्यारो शुदि पोषनो;
आवी जन्म तिथि अहीं अमरनी, हेतें हजारो वनो. १

वांकानेरतणा विभु विजयने, पामो प्रति दिवसे;
रिद्धि सिद्धि सदैव राज्यगृहमां, वेगेंथी आवी वसे,
संपत्ति सुख शान्ति कान्ति सहुनी, व्हालेंथी वृद्धि करी;
आनंदी अमरेशने नितप्रति, दीर्घायु देजो हरि. २

पामो पूर्ण प्रताप ताप तजीने, सद्भाव उरे भरो;
कीर्ति नारीनीसंग रंग रमतां, कृत्यो रुपाळां करो,
राखो प्रीति हमेश नीति पथमां, आरोग्यता अंगमां;
आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां. ३

दीनोने वित्तदानमान गुणीने, सन्मान साधु प्रति;
प्रेमीने निज प्रेम केरी प्रतिमा, उदार अर्पो अति,
भृत्योने उर भाव भूप भरतां, राजो रुडा रंगमां;
आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां. ४

रिद्धि राज्यगृहे भरेल रसनी, सिद्धि सुवाक्ये रहो;
स्नेहे समृद्धि वृद्धि वंश शुभनी आधि उपाधि न हो,
फूली सद्य फळो मनोरथ तरु, अत्यंत उमंगमां;
आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेही तणा संगमां. ५

प्रातःकाल विषे प्रजानी पुरनी, रुडी रीते रक्षमां;
मध्याह्ने शुभ राजकाज रसना, रस्ता लई लक्षमां;
सायंकाळ सँगीत गीत सुणीने, रात्री रमो रंगमां;
आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां. ६

कीर्तिवान कल्पित कृत्य करथी, कोडें करोडो करो;
सिन्धुपार समस्त नाद यशना, धीरा त्वराथी धरो;
जाळो जोर तमाम दुष्ट जननुं, इर्षा भरी अंगमां;
आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां; ७

नेहे न्यायअगार नित्य विचरी, शान्ति भरो सर्वने;
साचाने दइ सुख सद्य हरजो, गंडूतणा गर्वने;
पापी शापी प्रपंची नीच नरने, दाटो दुःखो दंगमां;
आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां. ८

ओपो इन्द्र समान सर्व नृपमां, व्हादुर कीर्तिवळे;
पामो धारी पवित्र माल जयने, सुवैजयन्ती गळे;
नेहे नाथ असत्य सत्य निरखो, धीराइना ढंगमां;
आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां. ९

धारी छत्र पवित्र देव नृपनुं, शाणा शतायु बनो;
शान्ति कान्ति समस्त ठाम अरपी, पूरो मुदेथी मनो;
पाळी दीन प्रजा सुस्नान करजो, आशीशनी गंगमां;
आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां. १०

वि-सं० १९६४ मां आप नामदारे मरहुम राज बखतसिंहजीना न्हाना कुमार कर्णसिंहजीने जे रोकड जीवाइ आपवामां आवती हती ते बंध करी ता. ६-१-८ ना रोज जाळी तथा जेतपर गामनी खालसा पाटी गरास तरीके आपी. बेसता वर्षने दहाडे बहुज दबदबा भरेलो दरबार भरवामां आव्यो हतो अने ते वखते म्हारा तरफथी निम्न लिखित कविताओ निवेदन करवामां आवी हती.

॥ कवित्त. ॥

भिक्षुक तथापि देत भक्तकों अभिष्ट फल,
बसत स्मशान तऊ पावन परसमें ॥
कवि नथुराम भयकारी भूतनाथ तऊ,
दायिनीं अभय रही दिव्यता दरसमें ॥
अखिलके ईश कहवावत दिगम्बर है,
हालाहल पीकें नित्य रहत हरसमें ॥
चरित विचित्रवारे देहैं दीर्घ आयु ईश,
आपकों अमरनृप ! नूतन बरसमें ॥ १ ॥
राम ढिग जाय माग मेदिनी महान अरु,
बीज ले कुबेरसों त्यों हल हलधरको ॥
कवि नथुराम कृषिकाज यमसों महीष,
वृषभ तिहारो त्यों बडो त्रिशूल घरको ॥
स्कन्द बेलरच्छकमें देउंगी पकाय रोटी,

हौं तो भइ खिन्न गिन गिन घर घरकों ॥
एसी उमियाकी बानी अमित आरामप्रद,
होहु हरसाल राजराना श्री अमरकों ॥ २ ॥
यमुना नदीसी सुखसानी सुदखानि जानि,
गाहत गोवत्सवृन्द संग निज मैयाकी ॥
कवि नथुराम ढाढे रहत सुनीलकण्ठ,
नीलतासों भ्रान्ति भरी जीवन धरैयाकी ॥
गिनके तमालपत्र आभरन काज गोपी,
परसि रचत पांति बहुत बलैयांकी ॥
देवे सुखशान्ति अमरेशकों अनंत युग,
एसी कमनीय कान्ति कोमल कन्हैयाकी ॥ ३ ॥
जाइ बलभद्रने जताइ जसुदासों बात,
मात मनमोहनने आज धूलि खाई है ॥
कवि नथुराम कह्यो कृश्नकों बुलाइ मात,
बात यह सत्य है किं लोंनसों मिलाई है ॥
मिथ्या कहि माधवने आनन उघारि करि,
त्वरित त्रिलोकीकी सुदिव्यता दिखाई है ॥
रच्छक तुम्हारे अमरेश ! यदुराय ऐसें,
आनँदके कन्द नन्द नन्दके कन्हाई है ॥ ४ ॥

सालगिरा महोत्सव प्रसंगे आशीर्वाद.

॥ कवित्त ॥

आज महाराज अमरेशकी बरसगांठ,

भूप भौन मध्य भूरि भव्यता भरतु है ॥
कवि नथुराम वर उत्सवसों वक्रपुर,
धाम अभिराम शक्रपुरको धरतु है ॥
देत जन दच्छकों अपार मुद वार वार,
विदित विपच्छनकी हामकों हरतु है ॥
आठो जाम ह्वैकें प्रिय कामप्रद कामतरु,
काम कवि कोविदके पूरन करतु है ॥ १ ॥
तजि इक स्थान जब बास करे दूजे स्थान,
तब सब लोक चाहे शुभ पल पायवो ॥
कवि नथुराम राजराना अमरेशजूकी,
सालगिरा श्रेष्ठ जासों होत छेम छायवो ॥
बिसद बिसाल यह सालमें न ह्वैगो फिर,
ऐसे महामांगलिक उत्सवको आयवो ॥
दच्छिन दिशाकों छोरि आज अति आनँदसों,
उचित बिचारे रवि उत्तरमें जायबो ॥ २ ॥
निज जननीके प्रतिपालक प्रसिद्ध जानि,
बिनय हरिके बाल नीके दिलके दयाल ॥
कवि नथुराम ताकी सुखप्रद सालगिरा,
उत्सव अनंतमें महंत मुदहूकी माल ॥
करि कमनीय अष्ट प्रहर प्रमोदमय,
अमल अनूप निजरूप धरिकें बिसाल ॥
पूरन पवित्र तिथि एकादशी संग आय,

हाजर हजूरमें रह्यो है बसुधाकों बाल ॥ ३ ॥
आज राजराना अमरेशके बरसगांठ,
उत्सवपें आनँदकी बृद्धि करबेके काज ॥
कवि नथुराम राज लाखाजी पधारे रम्य,
नृप नृपदुर्गके जसीले जयके जहाज ॥
सुज्ञ शिरताज त्यों प्रसिद्ध पुन्यहूकी पाज,
गरिबनिवाज यदुकुलकी महान माज ॥
पायकें दराज द्युति साजी सुखसाज वह,
जीवो जुग कोटि शीश धारी शुभ राजताज ॥ ४ ॥
प्रतिदिन पुत्रवत् पालन प्रजाको करी,
प्रबल प्रतापी दीर्घ आयुषकों पाओ तुम ॥
कवि नथुराम मखबानकुलभान भव्य,
न्यायके निधान धीर धर्ममग धाओ तुम ॥
जवर जयन्तसें कुमारश्री प्रतापसंग,
सुरपति तुल्य श्रेष्ठ सुखसों सुहाओ तुम ॥
एसे जन्म उत्सव अनंत अवनिके मध्य,
अमर अधिपति विनोदसों बिताओ तुम ॥ ५ ॥
अमर महीपतिके जन्मगांठ उत्सवकी,
आभाकों वढावन अनूप गुनके अगार ॥
कवि नथुराम आये अमित उमंग धरि,
नयके निधान वावावाला उरके उदार ॥
आनँद अमंदयुत जीवनके नन्द जाकों,

वृन्द विदवानके सराहतहै बार बार ॥
काष्ठिनकुलावंतस रम्य राजहंसं ताको,
देवे दीर्घ आयु सुखकन्द नन्दके कुमार ॥ ६ ॥

विजयादशमी महोत्सव प्रसंगे आशीर्वचन.

॥ छन्द झुलणा ॥

अमित आनंदथी स्वारीं शुभ साजीने, आज शमी पूजवाने पधारे;
वक्रपुरशक्र व्हालें विराजी रह्या, कान्तिमां इन्द्र करतां वधारे;
नित्य नथुराम सुखधाम गुणग्रामनी, नामना पूर्ण प्रेमे प्रसारी;
विजय विजयादशमी आपजो विश्वमां, भूप अमरेशने भावधारी. १

विनय हरिवाल छे विनयना वारिधि, विनयीपर व्हाल विद्याविलासी;
न्यायना नेत्रथी तेज त्रयनेत्र सम, पृथ्वीपतिमां रह्युं छे प्रकाशी;
नित्य नथुराम अभिरामता अर्पीने, वेगथी विघ्न सर्वे विदारी;
विजय विजयादशमी आपजो विश्वमां भूप अमरेशने भावधारी २

क्षेमकर क्षत्रिना शुभ गुणे शोभतो पुत्रपरिवार आनंद पामो;
जवर गुणजाण झलराण अभिरामजो, कीर्तिमाळा करी कोटि कामो;
नित्य नथुराम संतुष्ट थाओ सुखे, विबुधना व्याधिओने विदारी;
विजय विजयादशमी आपजो विश्वमां. भूप अमरेशने भावधारी. ३

यंत्रपेठे रुडा राज्यना तंत्रने, चतुर नृप चाहधारी चलावो;
स्नेहीनी संग शतवर्ष शुभ सौख्यमां, वंकपुरनाथ व्हाले वितावो;
नित्य नथुरामना अन्नदाता अचल, सज्जनोने बने श्रेयकारी;
विजय विजयादशमी आपजो विश्वमां, भूप अमरेशने भावधारी. ४

वि–सं० १९६५ मां आप नामदारे केटलांक विजळीक यंत्रोनी खरीदी करी अने श्री-बालकृष्ण हवेलीनो पायो नंखावी काम शरु कराव्युं. ए पछी ठाकोरसाहेब श्रीलाखाजीराज, मा-

ळीयाना पाटवी कुमार श्रीगुमानसिंहजी, तथा सोरावशा कावसजी कलववाळानी साथे काश्मीरनी मुसाफरीए पधार्या. ता. २६ एप्रिल १९०९ ना रोज रावलपींडी पहोंच्या. त्यां जामासजी एन्ड कुं. मां चार दिवस पर्यन्त रही आपे काश्मीर जवाना विविध मार्गोनी तेमज दर्शनीय स्थळो-नी मेळवेली माहिती मुजब रावलपींडीथी श्रीनगर १९६½ माइल छेटुं छे, ए शरीयाम रस्ते दरेक प्रकारनो व्यापार धमधोकार चाले छे, श्रीनगरथी ३४ माइलने अंतरे आवेल इस्लामावाद सुधी काची सडक छे, रावलपींडी रेल्वे लाइनपर आवेलुं छे अने त्यां विशाल लश्करी छावणी रहे छे; त्यांथी लाहोर १६९ माइल दूर छे, शहेरनी अंदर केटलीक होटेलो तथा केटलीक म्होटी दुकानो छे; तेओना मालिकोनी एवी अन्य होटेलो तथा दुकानो मरीमां पण छे अने त्यां जनारने दरेक प्रकारनी सगवड करी आपवामां आवे छे. वजारनी अंदर पारसी लोकोनी दुकानो संख्यावंध छे. हिंन्दुस्थानमां विद्यमान महान् महान् हॉटेलोनी साथे सरखावी शकाय तेवो रावलपींडीना स्टेशनपर रीफ्रेशमेन्ट रुम छे. मरहुम सर इवेट मेगफरसने स्थापेली एक कलब म्होटा पाया उपर चाले छे, मरीनी अंदर मदिरानो व्यापार करती कंपनीनो महान् प्रासाद समग्र पंजावमां सर्वोत्कृष्टताने प्रद-र्शित करे छे. ए कंपनीनी एक प्रसिद्ध शाखा रावलपींडीमां पण छे.

पंजावमां आवनाराओने रावलपींडी मांहेनी जुदी जुदी हॉटेलोना मेनेजरो पासेथी तेमज लाहोरमां एम. नेदुनी हॉटेलेथी जोइतो माहिती मळी शके छे. मी. एम. नेदुनी श्रीनगर तथा गुलमर्ग वगेरे स्थळोए स्थपाएली हॉटेलनी शाखाओ मे थी अक्टोम्बर महिना पर्यन्त चलाववामां आवे छे.

मुसाफरी करवानां वाहनो—मेलटांगो, एक्को, जिनरिक्षा (छतवाळी त्यांनो एक प्रकारनो गाडी) तथा डाक गाडी वगेरे मळे छे.

मुसाफरोनो सरसामान वगेरे बळदनी गाडीमा, टांगामां, एक्कामां अथवा उंटपर लइ ज-वामां आवे छे. उंटपर सामान मोकलवानुं खर्च घणुंज ओछुं लागे छे. वादशाही टपाल रावल-पींडीथी श्रीनगर सुधी ३६ कलाकमां लइ जवाय छे. दरेक टांगाओने माटे नोचे मुजव वे कायदाओ छे.

१ सारथी उपरांत म्होटो उम्मरना त्रण माणसो तथा वे बाळको मळी कुल छ माणसो वेसी शके, सातमुं बाळक होय तोपण तेने वेसाडी न शकाय.

२ एक टांगामां वधारेमां वधारे दोढ मण सामान मुकी शकाय.

ए कायदानो भंग करनारने पोलीस तरफथी सजा थाय छे वर्षाऋतुमां रस्ताओ कादवथी भरेला होवाने लीधे जेम बने तेम सामान ओछो लइ जवा देवामां आवे छे. जो कोइ गृहस्थे टांगो स्पेशीअल बांध्यो होय तो ते गृहस्थ तथा तेनो एक नोकर मळी बे वच्चे त्रण मण बोजो लइ जइ शकाय छे. रावलपींडीथी अथवा मरीथी सामान मोकलवानो समग्र योजनाओ सरलताथी थइ शके छे. मार्गमां बीजुं एवुं कोइ पण स्थळ नथी के ज्यां मरसामान लइ जवाने माटे वाहन मळी शके. कदाच भाग्ययोगे खाली एक्काओ मळे, परंतु उंट तो रावलपींडीमांथीज मळी शके छे.

मुसाफरीमां सामान्य रीते रावलपींडीथी मरी पहोंचतां छ कलाक, मरीथी कोहला जतां चार कलाक, कोहलाथी बारामुल्ला जतां चौद कलाक अने बारामुल्लाथी श्रीनगर जलमार्गे जतां २४ थी ४८ कलाक तथा जमीन मार्गे (मेलटांगा वडे) साडाचार कलाकनो समय लागे छे.

उन्हाळाना दिवसोमां सूर्यना तापने लीधे रस्ताओ स्वच्छ होवाथी मात्र १५–१६ कलाकमांज रावलपींडीथी श्रीनगर पहोंची शकाय छे. मार्गमां मरी, कोहला, डोमल, धारी, उरी तथा बारामुल्ला आदि स्थळे चा पाणी तथा नास्तो वगेरे करवामां जे स्हेजसहाज समय व्यतीत थाय तेनो पण उपर कहेला कलाकोमांज समावेश थइ जाय छे. मेलगाडीना सारथी तथा अश्वो मरी, धारी तथा बारामुल्ला ए त्रण स्थळे बदलाय छे.

रावलपींडीथी सन्नीबेंक सुधी ४३०० करतां विशेष फीटनो चढाव छे.

सन्नीबेंकथी कोहला सुधी लगभग ४००० फीटनो ढोळाव छे.

कोहलाथी बारामुल्ला सुधी ९८ माइलनो अंतर छे अने आशरे ३१५० फीटनो चढाव छे.

बारामुल्लाथी श्रीनगर पर्यन्त ३४ माइलनो अंतर छे अने ए मार्ग समुद्रनी सपाटीथी लगभग ५२५० फीट उंचो जाय छे.

रावलपींडीथी सन्नीबेंक सुधीनो मार्ग दरियानी सपाटीथी १७८७ फीटथी ६००० करतां पण विशेष फीटनी उंचाइने धारण करे छे अने ए बन्ने वच्चे ३६½ माइलनो अन्तर छे.

रावलपींडी स्टेशने ट्रेनमांथी उतरतां मुसाफरोने टांगानुं साधन मळे छे, त्यांथी टांगानो मार्ग रेल्वेना मार्ग नीचे थइ मरी तरफ जाय छे. दूर घणी टेकरीओ दृष्टिगोचर थाय छे. मार्गनी डावी बाजुए एक इंटनो मिनारो छे, तेनी समीपे मी. इ. जी. हेवर्टे सने १८८९–९० मां बंधावेलां रावलपींडी शहेरनी अंदर पाणी पुरुं पाडवानां बांधकामो छे अने तेने लगती न्हाना इंटना

स्तंभोनी हार आठ माइल लांबी बांधेली छे. बाराकू पर्यन्त ए मार्गनी बन्ने बाजुए सीसमनां वृक्षो छाइ रह्यां छे. लगभग बार माइल सुधीनो मार्ग तो सपाट अने सीधो छे, ९३/४ माइल दूर गया पछी एक हिलस्ट्रीम जोसबंध वहे छे, तेना उपर हालमां एक पाको पूल बांधेलो छे. १२३/४ माइल चालतां बाराकू नजीक जइ पहोंचाय छे, त्यां डाक बंगलो छे अने तेनी अंदर मुसाफरने सामान्य सगवड मळे छे तेना सामा पोलीस चोकी छे अने तेनी आसपास लश्करने रहेवानुं स्थळ छे, बाराकू छोडी एक माइल आगळ चालतां मार्ग नीची टेकरीओमां थइ जाय छे. ए टेकरीओ उपर सनीध तथा अखरोथ अथवा भेकारनी नीची झाडी आवेली छे. त्यारबाद एक टेकरीने गोळ फरीने मार्ग मंडलाकार जाय छे, त्यां त्रीजी मजल पूर्ण थाय छे अने दरेक मनुष्य तथा पशु दीठ टॉल (कर–जकात) लेवामां आवे छे. दरेक मुसाफर दीठ अरधो आनो, जीनवाळा अश्वदीठ दोढ आनो, दर एकादीठ बार आना, दर उंटदीठ आठ आना अने दर टांगादीठ एक रुपियो छे. त्यांथी चोथी मजल १०४१/२ माइलनी शरु थाय छे. १८३/४ माइल चाल्या पछी अत्तरनी धर्मशाळा आवे छे, तेनी सामे लीर्लोछम एक मनहरणी वाटिका छे, त्यां मोसमने वखते फळफूल वगेरे वेचाय छे. धर्मशाळाने एक छेडे बे ओरडीओ छे. जे मुसाफरो मजले मजले रोकाता होय तेओने माटे घणुज सारुं विश्राम स्थळ छे. २२ माइल पहोंच्या पछी एक टेकरीमांथी वहेता झरानी जमणी बाजुए रस्तो उतरे छे. ए झरो ओळंगवाने जाळीनी माफक गुंथेलो काष्टनो पूल छे ते उपर थइने टट्टुओ जोगबंध जाय छे. अने त्यांथी मरी तरफ जवाना मार्गनो चढाव शरु थाय छे. प्रथम एक उन्नत धार नजरे पडे छे अने तेनी बाजुए रहेला ट्रेड बंगला सूधीनो रस्तो डाबी बाजु तरफ गोळ चक्कर एक ढोळावनी पासे थइ अनेनासनी झाडीने अडकतो चाल्यो जाय छे. ट्रेड बंगलो समुद्रनी सपाटीथी लगभग ४००० फीट उंचो छे; तेनी अंदर दरेक प्रकारनी सगॅवड छे. तेनी सन्मुख उंची नीची टेकरीओ तथा जमणी बाजुए अनेनासनां वृक्षोनुं शोभायमान वन दृष्टिगोचर थाय छे, परंतु डाबी बाजुए एके वृक्ष देखातुं नथी. सामेनी टेकरी उपर पहेरेगीरने रहेवा माटे उन्नत मिनारो बांधेलो छे. ते खास दर्शनीय छे अने तेना उपरथी दृष्टि घणे दूर पहोंची शके छे. त्यांथी मार्ग जमणी बाजुए वळे छे अने मरीना दारुना कारखाना तरफ जाय छे संध्या समये त्यांना मेदाननो देखाव उपर कहेली धार आडी आववाथी जोइए तेवो शोभारपद थतो नथी. ट्रेड बंगलाथी सन्नीबेंक सूधी चढाव घणो छे अर्थात् दश माइलना अंतरमां बे हजार करतां पण वधारे फीटनो चढाव छे; अने एटलाज माटे थोडे थोडे अंतरे अश्वोने बदलवा पडे छे. बाकीनी चार मजलो अनु-

क्रमे २६. २३. २४. ३३. माइलनी छे. मार्ग जमणी तरफ वळी वांको चुंको उक्त धार उपरना मिनारा पासे थइ जाय छे. जेम जेम दूर जवाय तेम तेम ट्रेड वंगलो झांखो झांखो देखाय छे अने आखरे ते धारनी पछवाडे आच्छादित थतो जाय छे, त्यांथी एक बीजी धार शरु थाय छे अने मार्ग वांकोचुंको थइ मरीना प्रख्यात दारुना कारखानाने घसतो चाल्यो जाय छे. त्यां जमणी बाजुए एक शोभायमान वन छे अने त्यांसुधीनो मार्ग ३२३ माइल थाय छे. दारुना कारखानाथी जरा दूर रस्ता उपर पोस्ट ऑफीस तथा तार ऑफीसनां मकानो छे. जो कोइ मुसाफरने मरी रोकाया विना परबारुं चाल्या जवुं होय अने अगाउथी चा तथा नास्ता वगेरेनी सगवड करावत्री होय तो कोहला मुकामे तार करवो जोइए. मार्गनी डावी बाजुए लश्करी मोदीखानानी वखारो छे. त्यांथी रस्ताओ एक बीजाने चीरी जुदा पडे छे. जमणी बाजुनो मार्ग पोणाबे माइल सूधी पाछो मरी तरफ जाय छे अने डावी बाजुनो मार्ग परबारो कोहलाने काश्मीर तरफ जाय छे. ज्यां उभय मार्ग एकत्र थाय छे त्यां आगळ सन्नीबेंक होटेल छे, ए लगभग एप्रीलनी ता. १५ मीथी खुल्ली मुकवामां आवे छे अने त्यां अगाउथी तार अगर पत्रद्वाराए खबर आप्या होय तो खावापीवानी तमाम सगवड तैयार राखवामां आवे छे. सन. १८९०–९१–९२ मां बाराकू अने सन्नीबेंक वच्चेना मार्गमां घणो सुधारो करवामां आव्यो छे.

सन्नीबेंकथी कोहला पर्यन्त २७॥ माइलनो अंतर तथा ४००० फीटनो ढाळाव छे. ए मार्ग सने १८८७ ना अकटोबर मासमां खुल्लो मुकवामां आव्यो हतो. त्यारबाद तेनी बन्ने बाजुए छाती समाणी पाळ बांधी सुधारो करवामां आव्यो छे. सन्नीबेंकथी ए लगभग सपाट छे अने टेकरीना पश्चिम विभागने आंटो लइ रळियामणा अनेनास तथा साइकेमोर वगेरे वृक्षोमां थइ जाय छे. एवो मनोरंजक देखाव त्यांथी सो माइलने छेटे मात्र उरीनी पेली तरफ जोवामां आवे छे. चार माइल चाल्या पछी मार्ग धार नीचे थइ जाय छे, ते धारने मथाळे टोपानो केम्प छे अने तेनी समीपे एक म्होटुं स्मशान छे. कोहला तरफनो खरेखरो ढोळ त्यांथी शरु थाय छे. चार पांच माइल सूधीनो मार्ग जंगली अनेनास तथा ओकना वृक्षसमुदाय वच्चे थइ जाय छे. त्यारबाद टेकरीओनी आजुबाजु असंख्य न्हाना न्हानां गामडांओ देखाय छे. जमणी बाजुए पीरपंजल पर्वत वसंत ऋतुमां बरफथी आच्छादित होवाने लीधे अद्भुत रमणीयताने धारण करे छे. जेम जेम नीचाणमां गमन थाय छे तेम तेम दृष्टिमर्यादा संकोचाती जाय छे अने देखावो पण कंइक कंइक नीरस थता जणाय छे. ताप सखत पडे छे अने अग्यार माइल चाल्या बाद जेलम नदीनुं सरणुं

रुपेरी रंगनी रेखा माफक घणे दूरथी चक्षुपथे चडे छे. त्यारबाद जरा आगळ वधतां देवालनो डाक बंगलो लगभग त्रण माइल दूर डावी बाजुए देखाय छे. त्यांथी मार्ग जेलम नदीने किनारे किनारे चाले छे. जेलमना धोधनो गहर अवाज कर्णपर अथडाय छे. डावी बाजु तरफ वळतां खानेरना धोधने एक पाका पूलपर थइ उल्लंघी शकाय छे; ए धोध टेकरी उपर आवेला सुशोभित डूंगागळी स्थळनी पेलीमेर दोढ माइल दूर रहेला एक पर्वतमांथी नीकळे छे. पूलनी बीजी बाजुए वांकोचुंको तेमज खडबचडो मार्ग बांधकाम खातांनी ऑफीस तरफ उंचाणमा जाय छे; त्यांथी आसपासनो देखाव घणोज मनोहर होवाथी हृदयने प्रफुल्लित बनावे छे अने एथी उन्नत मार्ग-पर चढवाना परिश्रमनो समग्र बदलो वळी रहे छे. कोहला पासेनो मार्ग लगभग सपाट छे, त्यांनो बंगलो एक न्हानी सरखी टेकरी पाछळ रहेलो होवाथी बराबर दृष्टिगोचर थतो नथी. सघळो सामान मजुरो पासे उपडावी लइ जवो पडे छे अने तेथी वर्षाऋतुमां मुसाफरोने विशेष हाडमारी वेठवी पडे छे. मार्गथी उंचाणमां पूल पासे नवी बजारनी अंदर पोष्टऑफीस तथा तारऑफीसनां मकानो छे. बंगलामां सगवड घणी सारी छे अने उनाळामां पुष्कळ ताप पडतो होवाथी त्यां पंखा पण राखेला छे, त्यांथी जरा उंचाणमां आवेल नाथीआ गली पासे मुसाफरो वगेरेने मोदी-खानुं पुरुं पाडनार गाणस पेटटां आदि शाकपालो वखरावे छे, पीवानुं पाणी नळवडे लाववामां आवे छे. त्यायी आगळ वधवा माटे टांगा के मजुर कांइ पण मळतुं नथी. खाली एकाओ वखते मळी शके, परंतु सळंग जवा माटेनी समग्र सगवड मरी अथवा रावलपींडी मुकामथीज करी लीधी होय तो मुसाफरी सुखदायक निवडे छे. मजल दरमजल विश्रान्ति लेना मुसाफरोने माटे टांगा तथा बळदनी गाडी करतां उंटनुं वाहन वधारे सुगमता भरेलुं जणाय छे.

त्रीजो तथा चोथो मार्ग कोहलाथी श्रीनगर सूधीनो छे, ए बन्ने शहेर वचे १३२ माइल-नो अंतर छे अने चढाव ३२५० फीटनो लेखाय छे. कोहला समुद्रनी सपाटीथी २००० फीट तथा श्रीनगर ५२५० फीट उंचु आवेलुं छे. ए एकसो बत्रीश माइलना अंतरमां नव मजल राख-वामां आवी छे.

पहेली मजल कोहलाथी ढुलाइ पर्यन्त बार माइलना अंतरवाळी छे अने तेनो चढाव २००० थी २१८१ फीट सूधीनो छे. उपर कहेल बंगलाथी नीचे उतरतां कोढाना गडरवाळो तथा बन्ने बाजुए न्हाना कठेडावाळो पूल छे ते उपर थइने जेलम नदीने ओळंगी काश्मीर प्रदेशमां दाखल थइ शकाय छे ए पूलपर चालनार मनुष्य तथा पशु दीठ वेरो लेवामां आवे छे. पूल ओ-

ळंगी काश्मीरमां प्रवेश करतां कस्टम हाउस नजरे पडे छे अने त्यां दर टांगा दीठ रु. १½ लइ आगळ जवा दे छे. ए सिवाय काश्मीरमां बीजे क्यांइ कर लेवानो रिवाज नथी. सने १८७१ मां जेलम नदी उपर एक रमणीय झुलापूल बांधेलो हतो ते १८९३ ना पूरमां तणाइ जतां १८९५ मां फरी नवो पूल बांधवामां आव्यो छे, ए पूल एटलो बधो उंचो छे के पाणीनुं महान पूर तेनो स्पर्श करी शकतुं नथी. ए पूलमां एकंदर एकलाख अने वीशहजार रुपिआनुं खर्च थएलुं छे, तेमां काश्मीर महाराजाए नामदार इंग्रेजसरकारने भाग आपेलो छे. पूल उतरतां जेलम नदीनी खीणनो नवो मार्ग चाले छे, ए प्रसिद्ध मार्ग पंजाब तथा काश्मीरना प्रदेशोने एकत्र करे छे अने जेलमने डाबे किनारे थइने बारामुला पर्यन्त जाय छे. सने १८८० मां ए नविन मार्गनुं बांधकाम शरु थयुं हतुं अने १८९० मां ए मार्ग काश्मीरना महाराजा प्रतापसिंहजीने हाथे खुल्लो मुकायो हतो. उक्त मार्ग उपर चकोटी नामे गाम छे, त्यांथी मुसाफरोने जोवानुं घणुं मळी शके छे. ए मार्ग पर्वतमांथी कापी काढेलो छतां बहु खडबचडो होवाथी टांगाओ घणी मुश्केलीए चाली शके छे. कोइ कोइ टांगा पत्थर साथे अथडाइ भांगी पण जाय छे. ए उपरांत बाजुपर वखते वखते एवी उंडाण होय छे के नीची नजर करतां आंखे तम्मर आवी जाय छे अने कोइ कोइ कटींग उपरना भाग एवा तो भयंकर रीत नमी रह्या होय छे के कदाच माथे पडी तचरी नांखशे एवी मुसाफरोने देहेशत रह्या करे छे. ए मार्ग बांधवामां घणां माणसोए जींदगीनो भोग आपेलो छे. चकोटी तथा बारामुल्ला वच्चेनो मार्ग खूनी छे, आजुबाजुना जंगल आदिनो देखाव साधारण छे, जेलम नदीना जोशबंध वहेता प्रवाहनो अवाज मुसाफरना कर्णने बधिर बनावी दे छे. ए अवाज सरितानी समीपे रहेलां बरसाला, डूलाइ तथा डॉमेल नामने स्थळे बहुज संभळाय छे. बारामुलाथी आगळना भागमां " कचेमा " नामनुं मेदान आवेलुं छे अने पेली बाजु शान्त रीते चालतो नदीनो प्रवाह कर्णप्रिय जणाय छे. चकोटी तथा उरी पर्यन्त मेथी सप्टेम्बर मास सूधी गरमी सखत पडे छे, कोहला तथा डोमेलनी वच्चे ११½ माइलनो अंतर छे, त्यां सवारना नव वाग्या सूधी टेकरीनी बाजुए छांयो रहे छे तेथी प्रभातमांज प्रयाण करवुं ए प्रवासीने माटे खास आशीर्वादरूप छे. डॉमेलथी आगळ मार्गनी दिशा बदलाय छे; जेथी बपोर पछी प्रगट थएल छायाने लीधे शान्ति प्राप्त थाय छे. पूलनुं उल्लंघन कर्या बाद पोणा माइल पर्यन्तनो मार्ग बराबर उत्तर दिशा तरफ चाले छे. त्यांथी ½ माइल उपर बरसालानो बंगलो छे, आखा काश्मीर प्रदेशमां एवुं मकान पहेल वहेलुंज बांधवामा आव्युं छे, ए स्थळे गरमी बहु सखत पडे छे; तथा

जेलमना पूरनो अवाज कान साथे अथडाय छे. वरसालाथी जरा दूर पत्थरमांथी खोदी काढेलो पहेलवहेलो जमीन नीचेनो मार्ग आवे छे; ए उपर एक न्हानो सरखो पूल बांधेलो छे. ३½ माइल चालतां सहदेशनो उन्नत प्रदेश आवे छे. त्यांथी मकराइ गंगानो वरफना शिखरवाळो महान् पर्वत नजरे पडे छे, ए पर्वत खगनमां किसनगंगानी खीण उपर आवेलो छे. त्यारबाद अत्तरनो फलद्रूप रसाल प्रदेश देखाय छे, अत्तरथी अगर नदी नामना कोहला तथा वारामुल्ला वच्चेना सौथी म्होटा झरण सूधी मार्ग वांकोचुको एक माइल सूधी नीचे उतरे छे. ए झरण ओळंगवाने लोढाना गडरनो पूल बांधेलो छे, ए धोधनो ज्यां जेलम साथे संगम थाय छे त्यां थतो अवाज घणा माइल सूधी संभळाय छे; त्यांथी मार्ग नदीने किनारे किनारे अडीने चाल्यो जाय छे. त्यारबाद वचमां एक बीजुं झरण आवे छे. १८९१ मां ए झरामां एवुं महान् पूर आव्युं हतुं के तेना वेगथी जमणे किनारे चालती लोट दळवानी चक्की तणाइ गइ हती. एवी चक्कीओ दरेक धोधने लगती बांधवामां आवे छे अने ते जळना जोर वडेज चाले छे. सने १८९१ ना अक्टोबर मासमां नामदार वॉयसराय लॉर्ड लॅन्डझ डाउन ए रस्ते थइ काश्मीर आव्या त्यारे उक्त धोध उपर एक हंगामी पूल मूकवामां आव्यो हतो अने त्यारपछी १८९२ ना जान्युआरीमां पाको पूल बंधायो छे. बराबर बार माइल पूर्ण थतां डूलाइनो बंगलो आवे छे अने ते तद्दन नजीक गया पछीज नजरे पडे छे, तेमां उत्तम प्रकारनी सगवडो तैयार राखवामां आवे छे; ए बंगलो तथा डॉमेल अने धारीना बंगलाओ मी. एटकीन्सने बांधेला छे.

डूलाइथी डॉमेल पर्यन्त ९ माइलनुं छेटुं छे.

डूलाइथी एक न्हाना नाळा उपर थइने रस्तो चाले छे, त्यार पछी बे धोधवाओ सामी बाजुएथी एक बीजामां भळे छे. त्यांथी दोढ माइल आगळ चालतां मूकरा नामनो महान् पर्वत नजरे पडे छे. ए पर्वत किसनगंगा नदीने जमणे किनारे अफघानी प्रदेशमां आवेलो छे. त्यारबाद नेनसुख नदी खगन पर्वतमांथी निकळी जेलम नदीनो जमणी बाजुएथी संगम करे छे. ए नदी ब्रीटीश तथा काश्मीरना राज्यनी सरहद्द छे. चार माइल आगळ चाल्या पछी जेलमने सामे किनारे एक ताडनुं झाड छे अने पांच माइल चाल्या पछी केटलीक टेकरीओ नजरे पडे छे. चाह वाहथी जरा आगळ छठ्ठो माइल पूर्ण थतां एक खीण उपर म्होटी भेखड धसी पडेली छे. त्यारबाद एक झरण उपर मजबूत लोढाना गडरनो पूल छे. सातमे माइले जेलम नदी जमणी तरफ वळे छे अने त्यां जळना जोरथी मीलो चाले छे. आठमे माइले किसनगंगानी खीण उपरनो देखा

व घणोज मनोहर मालूम पडे छे. त्यांथी जरा दूर मुगल पातशाहना समयमां बंधावेली धर्मशाळा छे. तेनी नजीक चारे बाजुए ढळता पर्वतोनी वच्चे मुजफराबाद नामनुं शहेर सुंदर बागबगीचाओथी प्रकाशी रहेलुं छे. त्यांथी एक माइल आगळ चालतां मार्ग नीचाणमां डाक बंगलापर्यन्त पहोंचे छे, धारी जता मुसाफरो ते स्थळे चा नास्तो ले छे. मुजफराबादथी डॉमेल सूधी गाडा रस्तो छे, डॉमेलथी अर्ध माइल दूर मुजफराबादने मार्गे किसनगंगा नदी उपर झूलापूल छे. उत्तर पश्चिमनी रेल्वे जामू तरफ तावी स्टेशन सूधी जाय छे. तावी नदीनो उत्तरे उदमपुर सूधी तैयार थएली सांकडा पाटावाळी सडकपर पाणीना जोरथी वीजळीक रेल्वे चाले छे. हसन अब्दुलथी डॉमेल सुधी तथा रावलपींडीथी डॉमेल सूधी एक सरखो अंतर छे; परंतु पाछलो मार्ग वर्षमा घणां अठवाडीआं पर्यन्त बरफथी आच्छादित रहे छे.

डॉमेलथी धारी सूधी १३ माइलनो अंतर छे, ए मार्गमां काइ विशेष जाणवा जेवुं नथी. साडापांच माइल पहोंच्या पछी एक हमेशने माटे लीलुं देखातुं जूनोवर नामनुं वृक्ष नजरे पडे छे, तेनो समीपे टींडालीनो पूर्वे एक मजबूत किल्लो हतो, परंतु सांप्रत समये तो तेनी रहेजसहज निशानीओ रही गएली नजरे पडे छे. ए स्थळे जेलमनो प्रवाह जोशबंध वहे छे. सामे किनारे एक भेखड उपर अनेनासनां वृक्षोनो जत्थो रळियामणो जणाय छे. त्यांथी पोणा माइल उपर धारीनो बंगलो दृष्टिगोचर थाय छे. तेनी सामे शीख लोकोनी वस्तीवाळुं रातडीआ खडक उपर बांधेलुं हटीयाना नामनुं गामडुं छे. त्यां गरमी हदउपरांत पडती होवाथी लोको घणखरो समय जेलमनी अंदर न्हावामां वितावे छे. दूर नदीने उपरवास दोरडाथी बांधेलो झूलापूल छे अने तेनी नीचे गाढ वृक्षो नदीना वेनमां उगेला छे, तेनी पेलीमेर सर नामनुं गामडुं तथा तळाव उपर छूटी छवाइ टेकरीओ नजरे पडे छे. झूलापूल उपर थइने नदी ओळंगतां लोको बहुज भयभीत बने छे, महान् पर्वतना कराड चढवामां जेओ हिम्मतवान होय छे तेओ उक्त पूलने उल्लंघवामां आंचको खाय छे, काची छातीना मनुष्योने ए पूल उपरथो आंखे पाटा बांधीने अथवा झोळीमां नांखी कांइ सामाननी माफक लइ जवामां आवे छे. वळी कहे छे के गीलगीट पासे एवोज पूल होवाथी तेने ओळंगवानी धास्तीने लीधे त्यांना घणाखरा लोको बहार नीकळताज नथी.

धारीथी चकोटी सूधी ३१ माइलनो अंतर छे. धारीनो बंगलो मुकी आगळ वधतां मार्गनी जमणी बाजुए शहेरनी बजार अने डाबी बाजुए झूलापूल छे. त्यारबाद मार्गना मध्य भागमां एक टेकरी आवे छे. ए टेकरी बहुज उन्नत तथा मार्गनी वच्चोवच्च होवाथी मी. एटकीन्सने १०० यार्ड सूधी मार्ग कोतरी कढावेलो हतो. सने १८९० सूधी माणसो ए रस्ते माल

लावता तथा लइ जता, त्यारवाद एक जगोए अंदरनी भेखड तूटी पडवाथी ए मार्ग बंध करवामां आव्यो, हाल घणे फरी दूर टेकरीने फेरो लइ बहु छेटे जवुं पडे छे. कोटल टेकरीनी तळेटीमां सर नामनुं गामडुं छे, त्यांथी हटीयाननो झरो आवे छे, तेना उपर लोढाना गडरनो पूल छे. त्यांथी अर्ध माइल आगळ चालतां जेलम नदी उपरनो झूलापूल ओळंगवो पडे छे. त्यांथी अढी माइलने छेटे एक बंगलो छे अने ते पछी नेळीनी खीणनो उंडो मार्ग आवे छे. ए उपर पण लोढाना गडरनो पूल छे. त्यारवाद कथाइ नामनुं नाळुं आवे छे अने त्यांथी मार्ग म्होटा कटींग वच्चे थइ जाय छे. एथी आगळ नदीने जमणे किनारेथी एक म्होटी भेखड १८९१ ना मार्च मासमां नदीनी अंदर धसी पडेली छे. एथी आगळ चालतां मार्ग एक सीधी टेकरी उपर जाय छे. ए मार्ग एकदम उंचो होवाथी केटलांक माणसो तथा बळद अने घोडा वगेरे पशुओ पडी प्राण रहित थयां छे. उक्त मार्ग ओळंग्या पछी चीर नामनुं नाळुं आवे छे अने त्यांथी जयकूलनो रमणीय धोध नजरे पडे छे. पछोथी मार्ग एक उंची टेकरीनी कोर उपर थइने जाय छे अने तेनी ढळती बाजुए आडी पाळ तरीके छाती समाणो दिवाल बांधेली छे. त्यांथी एक माइल दूर धोळेली दिवालोवाळो बंगलो देखाय छे, तेनी सामे हिन्दुस्थानना अंग्रेजी लश्करना नामदार मुख्य सनापति माटे सने १८८९ मां बांधेलुं काष्ठनुं हंगामी मुकाम छे. बंगलाथी अर्ध माइलने छेटे सने १९०९ मां बांधेला झूलापूल उपर थइने जेलम नदी ओळंगाय छे.

चकोटीथी उरी पर्यन्त १३ माइलनो अंतर छे. चकोटीथी मार्ग एकदम उंचाणमां जाय छे अने ए तेर माइलनी मजलमा टांगाना अश्वोने बे वखत बदलाववा पडे छे. ए मार्गमां सर्वथी विक्राळ अने भयंकर म्होटा पर्वतोनी कोरो उपर चालवुं पडे छे, ए कोर आडा काष्ठना कठोडा बांध्या पहेलां घणा एकाओ तथा मुसाफरो पडीने मरण पामता. चकोटीथी चालतां तवारावादनुं पहेलुं नाळुं आवे छे; ए नाळां उपर सने १८९० मां लोढाना गडरनो पूल बांधेलो छे, त्यारवाद ओपीनुं डुंगर उपरनुं सपाट मेदान आवे छे; अने ते पछी अरुसा नामनुं गामडुं देखाय छे, त्यां केटलीक भेखड धसीने नदीमां पडेली जणाय छे; अने तेणे नदीना घणाखरा प्रवाहने रोकी दीधेलो छे. त्यांथी दोढ माइल सुधीनो मार्ग दादेकोट पर्यन्त उंचाणमां जाय छे. दादेकोट पासे जेलम नदी बन्ने बाजुए म्होटा खडकनी खोमां थइने वहे छे. दादेकोट मूकया पछी मार्ग घणाज उंचा अने सांकडा कटींगमां थइने जाय छे. केटलाक कटींगो मार्गथी लगभग २५० फीट उंचो छे. आठमा अने नवमा माइल बन्ने प्रख्यात बुजाडंगाना उंचा खडक जोवामां आवे छे, त्यां ४००

यार्ड सूधीनो मार्ग मजबूत खडकमां थइ कापेलो छे अने एक बाजुनो कटींग सीधो २५० फीट नीचे तद्दन नदीना किनारा उपरज छे. त्यां नदीने सामे काठे पण तेटलोज उंचो खडक जोवामां आवे छे. घणां खडकोनी टोंच नदीना प्रवाह उपर तोळाइ रही छे. ए उन्नत खडक मूक्या पछी मार्ग एक न्हाना कटींगमां थइ खालजीना उन्नत मेदानमां निकळे छे. त्यांथी मार्ग लगभग सहेलो तथा सपाट छे अने उरीनो बंगलो दृष्टिगोचर थाय छे. त्यारबाद इस्लामाबादनुं नाळुं आवे छे, पूल वडे नाळुं ओळंग्या पछी मार्ग उरी तरफ एकदम उंचाणमां जाय छे. उरी गाम जमणी तरफ एक टेकरीनी बाजुए थोडां गृहोवाळुं छे, तेनी समीपे समुद्रनी सपाटीथी १४४४५ फीट उंचुं काजी नामनुं शिखर छे. उरीनो जुनो बंगलो सने १८८५ मां भूकम्पथी अने सने १८९० मां आग लागवाथी छिन्नभिन्न थइ गयो हतो तेने हाल दुरस्त करावी पोष्टओफीस तथा तारओफीस तरीके वापरवामां आवे छे. उरी गाम खुल्ला मेदानमां उन्नत स्थळे वसेलुं छे. छतां त्यां गरमी बहुज सखत पडे छे.

उरीथी रामपुर सूधी १३ माइलनो अंतर छे. ए मार्ग छेल्ला आठ माइलमां लीलोतरीवाळां जंगल, रळियामणा पर्वतो तथा जेलम नदीना मधुर अवाजे पडता धोधवाओथी मुसाफरोने अत्यन्त आनंददायक थइ पडे छे. उरीथी थोडे दूर गया बाद तुरतज नामदार महाराजा साहेबनुं गेस्टहाउस देखाय छे; त्यारबाद ए मार्गनो हाजीपीरना मार्ग साथे संगम थाय छे. पछीनो मार्ग नीचाणमां थइ नमलाना धोध उपर पूल उल्लंघीने जाय छे. पूल उतर्या पछी दोढ माइल सूधीनो मार्ग उभा अने भयंकर कराडमां थइ उंचाणमां चाले छे. एथी आगळ चालतां मुगल पातशाहना वखतमां बंधाएली एक धर्मशाळा आवे छे. त्यारबाद साडापांच माइल राझराबेन नामनुं थाणुं छे, त्यांथी मार्ग तद्दन सरळ होवाथी श्रमित् थएला मुसाफरोने समशीतोष्ण प्रदेशमां दृष्टिगोचर थतां मनोहर देखावोथी पुष्कळ आनंद प्राप्त थाय छे. पछीथी देवदारना वृक्षसमुदायवाळो प्रदेश आवे छे, त्यांथी अढार माइल दूर कचाइमा सूधीनो मार्ग जंगलमां थइने नदीने किनारे किनारे जाय छे. एक जगाए मार्गनी नजीकज जेलमनो धोध वहे छे अने एकापर आरूढ थएला यात्राळुओने ते धोधमांथी उडता जलकणवाळा शीतल समीरनी लहरीनो अद्भुत आनंद मळे छे. ११ माइल पहोंच्या पछी अपुरातनी पांडुगृहनुं मन्दिर एक मेदान माथे बांधेलुं छे. त्यांथी रामपुर बे माइल दूर छे, ए मार्ग घणो सरळ छे अने तेनी जमणी बाजुए बोनीआर नामनां नाळांसूधी भूरा तथा काळा पत्थरनी टेकरीओ जोवामां आवे छे. आजुबाजु विराजी रहेली उन्नत टेकरीओ वच्चे एक

रमणीय मेदानमां रामपुरनो बंगलो छे, त्यांनी हवा शीतल अने माफक आवे एवी छे. ए बंगला आगळ स्टेट पोष्टओफीस छे. त्यांथी एक माइलने छेटे जेलम नदी उपरनो चोथो तथा छेल्लो झूलापूल देखाय छे.+ बोनीआर पासेनी हुन्नरशाळाओ खास जोवा लायक छे. ए मकानो सने १८९० मां मी. वेइन्से बांधेला छे. त्यां काष्ठ कापवानां यन्त्रो ४८ इंच व्यासवाळा काष्ठना सपाट चक्रवडे चाले छे. ए चक्र पाणीना जोरवडे फरे छे अने ए पाणी बोनीआर नाळामांथी पत्थरना हारबंध बांधेला स्तंभो उपर रहेला काष्ठना धोरीआ वडे त्यां लाववामां आवे छे. ए कार्यालयथी सरीयाम रस्ता सुधी न्हानो गाडा मार्ग छे. अने त्यांना उपरी एन्जीनीयरने रहेवा माटे ए स्थळे एक न्हानो सरखो बंगलो पण बांधेलो छे.

रामपुरथी बारामुल्ला पर्यन्त १०० माइलनो अंतर छे. ए मार्ग काश्मीरनी सुंदर खीणमां जाय छे, शरुआतमा केटलाक कटींगो चीरी चालवुं पडे छे, ते पछीनो मार्ग बोनीआरनी खीणमां थइ पीरपंजल पर्वत तरफ जाय छे. बोनीआरनां नाळांनी आजुबाजु सुंदर अनेनासनां वृक्षोवाळां जंगल तेमज रमणीय पर्वतो प्रकाशी रहेला छे अने गुलमर्गनी बाजुमां उन्नत तेमज सपाट भूमिवाळां मेदान काश्मीरना सौन्दर्यनुं सारी रीते भान करावे छे. त्यांथी त्रण माइल आगळ चाल्या पछी पांचीयानुं जीर्ण देवालय आवे छे. ए पछीनो मार्ग सुंदर देवदारना जंगलोमां, न्हानी टेकरीओनी बाजुमां, फळद्रुप वृक्षोवाळां क्षेत्रोमा तथा छुटां छवायां गामडांओवाळां मेदानमां थइ जाय छे. त्यांथी एक सांकडो रस्तो पर्वत उपर थइ २४ माइल दूर रहेला गुलमर्ग तरफ गति करे छे. सरीयाम रस्ते नवशेरा पहोंच्या पछी एक किल्लाना खंडेर नदीने सामे किनारे नजरे पडे छे. ए किल्लो १८९५ ना मे मासमां थएला काश्मीरना महान् भूकम्प वखते पडी भांग्यो हतो अने तेमां २०००० गृहो, ३०००० पशुओ तथा ३००० मनुष्यो विनाश पाम्यां हतां. नवशेराथी बे माइल दूर घंटामुल्ला नामनुं गामडुं छे, त्यांथी मार्ग नीचे उतरे छे अने तुरतज कचेहामानुं मेदान आवे छे. ए मेदानमां डागरनां क्षेत्रो तथा जंगली चीआनां वृक्षो जत्थाबंध छे; त्यांथी एक माइल दूर शेरी नामनुं गामडुं आवे छे, अने त्यांथी मार्ग एक नीचा कटींगमां थइ बारामुल्लानी आ बाजुए ३½ माइलपर रहेला एक सेढा सूधी जाय छे. त्यांथी आगळ चालतां जरा दूर गुलमर्गना रमणीय पर्व-

+ पहेलो धामी पासेनो, बीजो चकोटी पासेनो, त्रीजो उरी पासेनो अने चोथो रामपुर पासेनो.

तो नजरे पडे छे. एथी जरा आगळ चालतां बारामुल्ला नामना सुंदर शहेरनो सोमाडो आवे छे. भरशियाळामां बारामुल्लाथी रामपुरनी पेली बाजु सुधी नदीनो डाबो किनारो बरफथी ढंकाएलो रहे छे; परंतु जमणा किनारा उपर तो सख्त गरमी पडती होवाने लीधे बरफ ओगळी जाय छे अने किनारो स्वच्छ रहे छे. बारामुल्लाना परा नजीक पहोंचतां बबे माळनां लोढानी गुंथेल जाळी-ओवाळां गृहो नजरे पडे छे; शीतकाळमां ए जाळीओने कागळ वडे आच्छादित करवामां आवे छे. कारणके काश्मीरमां अद्यापि काच वपरायो नथी. डाबी बाजुए रहेली जीयारत मुसाफरोनुं खास ध्यान खेंचे तेवी छे. एप्रील मासमा तेनी आसपास रहेला लीलीनां पुष्पो ए स्थळना सौन्दर्यने पुष्टि आपे छे. जीयारत पर्यन्त पहोंचवा पहेलां एक चोगाननी अंदर स्वच्छ पाणीनुं तळाव, मीठा पाणीनो झरो तथा एक सुंदर चीनारनुं वृक्ष जोवामां आवे छे. त्यारबाद नदीने जमणे किनारे बारामुल्ला नामनुं रमणीय शहेर तथा तेनी खीणनी आसपास भव्यताने धारण करी रहेला भभकादार बरफना शिखरोवाळा पर्वतो दृष्टिगोचर थाय छे. शहेरनी समीपे नदी उपर देवदारना काष्ठनो पूल बांधेलो छे. तेनी नजीक सने १८८५ मां नाश पामेल किल्लाना खंडेरो देखाय छे, तेनी आगळ पोप्लरना वृक्ष समुदायथी विराजी रहेलो मार्ग एज तरुवृन्दमां थइ डाबी बाजु तरफ वळे छे अने पोष्टऑफीस पासे थइ नदी किनारा नजीक बंगला तरफ जाय छे. मुसाफरो त्यां खानपान लेवा रोकाय छे. नदी मार्गे जती होडीओने माटे पण अटकवानुं एज स्टेशन छे. सने. १९०१ थी डाक बंगलाना उतारुओ माटे मीठा झराना जळनो त्यां संग्रह करी राखवामां आव्यो छे. त्यांथी पूर्व दिशा तरफ नामदार महाराजा साहेबनुं पांचमुं गेस्ट हाउस छे.+ पूळनी नजीक स्टेटनुं दवाखानुं छे. काश्मीरनी सुंदर खीण बारामुल्लाथी शरु थाय छे. अग्निकोणमां अरुकाहनुं देवालय सने. ७२३ थी ७६० सुधीमां बांधेलुं बीशप काव्वीए शोधी कहाडयुं छे.

बारामुल्लाथी श्रीनगर पर्यन्त ३४ माइलनो अंतर छे अने तेटलामां छ मजल योजवामां आवेल छे.

पहेली मजलमां स्वल्प समय थयां मार्गने सुधारवामां आव्यो छे. बे माइल चाल्या बाद नंगा पर्वतनुं १६६५६ फोट उंचु शिखर स्पष्ट रीते देखाय छे.

+ पहेलुं बरसाला पासे, बीजुं डॉमेल पासे, त्रीजुं धारी पासे, चोथुं उरी पासे अने पांचमुं बारामुल्ला पासे.

बीजी मजलमां उत्तरे एक नीची वादळी रंगनो टेकरी नजरे पडे छे, तेना उपर शुक्रुदीननी जीआरत छे, त्यारबाद वंदीपुरनी खीण अने तेनी स्हेज दक्षिणे १३००० फोट उंचुं अफरवाटनुं शिखर छे. भलगामना पर्वतमांथी हरि पर्वतनो किल्लो नजरे पडे छे. उत्तरे अहाटांगनी न्हानी टेकरी छे अने तेनी तळेटीमां मनस्वाग नामनुं सरोवर शोभी रह्युं छे.

त्रीजी मजलमां प्रथम डावी वाजुए पालहालन नामनुं गामडुं आवे छे, त्यांथी अर्ध माइलने छेटे पाटणनो रळियामणो मुसाफरी बंगलो छे अने तेना कम्पाउन्डमां जमीननी अंदर मीठा पाणीनो झरो नीकळेलो छे. ए जळ मनुष्यनी तंदुरस्तीने जाळवनारुं छे.

चोथी मजलमां प्रथम पीरपंजलना पर्वत नजरे पडे छे, त्यारबाद तुलसीनुं मेदान, अलीयाबादनो मार्ग, बुदिलनो मार्ग अने कोंसानी टेकरी वगेरे आवे छे. त्यांथी १२७४१ फीट उंचुं डंडवारनी खीण उपर आवेलुं सुंदर तव नामनुं शिखर द्रष्टिगोचर थाय छे. ते पछी जमणी वाजुए हरि पर्वतनो किल्लो तथा तेनी वाजुए १३००० फीट उंचो महादेव पर्वत देखाय छे. खीणना पूर्व तरफना छेडाने शनैः शनैः बंध करता बरफवाळा पर्वतो वसंतऋतुना दिवसोमां घणोज मधुर देखाव आपे छे; परंतु ताप पडवाथी ज्यारे बरफ ओगळी जाय छे त्यारे बधी खूबी जती रहे छे.

पांचमी मजलमां दक्षिणे गुलमर्गना पर्वतो द्रष्टिगोचर थाय छे अने जमणी वाजुए मीरकुंड नामनुं म्होटुं गामडुं आवे छे. ए पछी नर्वल नामनुं गामडुं नजरे पडे छे अने त्यां एक राक्षसी-कदनुं चीनारनुं वृक्ष उगेलुं छे.

छट्टी मजल चकथी श्रीनगर सूधीनी गणाय छे. ए मजलमां जेलम नदीनां फरी दर्शन थाय छे, मार्ग त्यांथी पारनचौनी पर्यन्त जाय छे. ज्यारे नामदार महाराजा दर वर्षे श्रीनगरनी मुलाकात लेछे त्यारे ए पारनचौनी पासेथी नौकापर आरुढ थाय छे अने तेमने जोवा माटे बन्ने किनारा उपर जत्थाबंध मनुष्यो एकत्र थाय छे. आगळ जतां जमणी वाजु उपर गोळीबहारना निशाननुं स्थळ, शहेरनुं मेदान तथा बॅन्डस्टॅन्ड वगेरे आवे छे. ते पछीनो मार्ग काष्ठना पूल वडे दुधगंगा नदीने ओळंगी जाय छे अने त्यांथी स्टेट जनाना हॉस्पीटल तथा हेडोनुं प्रख्यात शेतरंजीनुं

कारखातुं आवे छे. त्यारपछीनो मार्ग डाबी बाजुए म्युनीसीपल ऑफीसनुं मकान मूकी एक रलि-यामणी बजारमां थइ श्रीनगर पासेना सात पूल मांहेनो पहेलो पूल ओळंगे छे अने त्यांथी बीजी बजारमां थइ मुनशीबाग तरफ चाले छे. जमणी तरफ म्होटा भागमा आवेलुं जे मकान प्रथम ख्रीस्तीना देवळ तरीके वपरातुं हतुं ते हाल पब्लीक वर्क्सनी ऑफीस तरीके वपराय छे. दक्षिण दिशा तरफ अंग्रेज लोकोनी स्मशानभूमि छे अने पूर्व तरफ ख्रीस्तीना मिशनरीओनां मकानो छे. एथी आगळ चालतां नदीना किनारा सामे केटलीक दुकानो छे. डाबी तरफ तार ऑफीस अने तेनी सामे पंजाब बेन्कींग कंपनीनां मकानो नजरे पडे छे, त्याथी मार्ग रेसीडन्सी तरफ वळे छे. पोष्ट ऑफीस मुकया पछी रेसीडन्सीनी ऑफीसना नोकरोने रहेवानां मकानो आवे छे. पोष्ट ऑफीस सामे पोलो अने क्रिकेटनां विशाळ मेदान छे. ते पछी सने १९०० ना एप्रील मासमां खोलेलुं श्रीनगरनुं हॉटेलनुं मकान आवे छे. रेसीडन्सी मुकया पछी नवो रीफ्रेशमेन्ट रुम, लायब्रेरी, टेनीसकॉर्ट, मुनशीबाग तथा सोमवारबाग वगेरे एक पछी एक आवता जाय छे.

बारामुल्लाथी श्रीनगर जलमार्गे जवा इच्छता मुसाफरोए हाउसबोट आदिनी सगवड माटे श्रीनगर एजन्सीनी एकाद कम्पनीने अगाउथी लखी जणाव्युं होय तो बारामुल्ला पहोंचता तुरतज तेमना तरफथी होडी वगेरे हाजर राखवामां आवे छे. हाउसबोटोनी योजना कर्नल सार्टोरी-असे सने १८८८–८९ मां करी हती. प्रथम बे होडीओना मालिक सर हार्वी अने मी. केनाड हता. मी. केनाडनी हाउसबोट हजी सूधी नदीमां चाले छे. त्यारबाद जुदी जुदी जातनी तथा जुदा जुदा कदनी होडीओ योजवामां आवी छे. एवी वगीखरी बोटोने मनुष्यो गृह तरीके वापरे छे. ए वेगवाळी तेमज सगवडवाळी होवा उपरांत चूला वगेरे साधनोथी सुसमृद्ध होय छे. शरद् ऋतुमां कोइ साधारण घर करतां ए बोटोमा गरमी ठीक रहे छे. सने १८७० थी १८८० सूधीमा चालती जूनी होडोओ हवे तद्दन बातल थइ गइ छे, छतां तेमां बारी बारणा वगेरेनी सगवडता-पूर्वक सुधारो वधारो करवामां आव्यो छे, एमां मुसाफरी करवी सस्ती पडे छे अने ए कारणथी ए वखते वखते वपराय छे. नवा मुसाफरोने जणाववुं जोइए के ए जीर्ण बोटोमां हमामखानानी के फर्नीचर वगेरेनी कांइ पण सगवड होती नथी. भोंयतळीया उपर उघाडी काष्ठनी जमीन अने उपरनुं छापरुं ढळतुं तथा सामान्य होय छे. होडीना पाछला भागमां तेना मालिक पोताना कुटुम्ब सहित रहे छे, अने ज्यारे तेमना तरफनो पवन मुसाफरो तरफ आवे छे त्यारे लसण अने डुगळीनी वास तेना शान्त मगजने क्रान्त बनावी दे छे. पाकशाळा, परिजन तथा सरसमान माटे बीजी एक बे न्हानी बोटो

साथे होय छे. मुसाफरीमां पाकशाळावाळी बोटने दोरडावती म्होटी बोट साथे बांधी देवामां आवे छे अने तेमां पकावेलुं अन्न म्होटी बोटमां लइ लेवाय छे. पुरुष, स्त्रीओ तथा बाळको ए तमाम खलासी तरीके काम करे छे. काश्मीरनी कामिनीओ समग्र हिन्दुस्थानमां सुंदर गणाय छे. तेओ मरदोनी माफक बोटोमां खलासी तरीके महेनतमय जींदगी गाळे छे, छतां तेओना सौन्दर्यमां लेश पण बाध आवतो नथी, बलके ते वधारे सुदृढ बनती होवाथी दीर्घ आयुष्य भोगववा समर्थ थइ शके छे.

श्रीनगर ए काश्मीरनो राजधानीनुं शहेर छे, जामु तथा काश्मीरना नकशा तरफ नजर करतां वायव्य कोणमां आछा रंगनी खडबचडी पटी चितरेली छे अने तेनी आसपास कृष्णवर्णना पर्वतोनी हारो कहाडेली छे. उपर कहेली आछा रंगनी खडबचडी पटी काश्मीरनी खीणोनुं सूचन करे छे. ए स्वर्गीय अने परमानन्दप्रद धाम के जेनुं टॉमसमूर नामना कविए " लालारुख " नामना ग्रन्थमा बहुज रसभरित वर्णन कर्युं छे.

मी लीड्रेकरना मत प्रमाणे काश्मीरनी खीण छीछरा वासणना आकारनी ८४ माइल लांबी तथा २० थी २५ माइल पहोळी छे. ए खीण समुद्रनी सपाटीथी ओछामां ओछी ५२०० फीटनी उंचाइ धरावे छे; तेनी चारे बाजुए जत्थाबंध पर्वतो झुकी रह्या छे. दक्षिणे पीरपंजलना डुंगरो छे अने तेना टूटाकूट तथा कोंसानाग नामना सहुथी उंचा शिखरो सागरनी सपाटीथी आशरे १५००० फीट उन्नत अकाय छे. उत्तरे हरमुख नामे पर्वत छे अने ते समुद्रनी सपाटीथी १६९०० फीट उंचो छे. पश्चिमे खगन तथा शार्मशिवायना बरफना शिखरो शोभी रह्यां छे अने पूर्वे वर्धमान खीण तथा कीष्टवार उपरना भव्य पर्वतो किरतारनी अलौकिक लीलानुं भान करावे छे. खीणनी अंदर पीरपंजलना ढोळाव काळा तथा भुरा अनेनास नामना वृक्षसमुदायथी ढंकाएलो छे. शिआळामा ज्यारे पर्वत उपर बरफ जामे छे त्यारे खीणनो देखाव खरेखर मनोरंजक मालूम पडे छे.

उन्नत पर्वतोनी तळेटीमां घासवाळा मार्गो अथवा रमणीय मेदानो खास प्रेक्षकनुं ध्यान खेंचे तेवां छे. वधारे जाणीता बीडोमा दक्षिणे गुलमर्ग तथा नैऋत्यकोणमां युसु मेदान आवेलां छे. युसुमेदान श्रीनगरथी दूर आवेला नीलनाग नामना सरोवर उपर वसेलुं छे. आखा काश्मीरमां ए सहुथी म्होटामां म्होटुं अने रमणीय बीड छे. उत्तरे सोनामर्ग तथा पश्चिमे वूलर सरोवर उपर नाग-

मर्ग विराजी रहुं छे. मेथी सप्टेम्बर मास सूधी ए मर्गोमां गाय भेंस तथा टट्टु वगेरेने पुष्कळ चारो मळे छे.

मीठा पाणीना झराओमां वर्नाग, अच्छेवल, वावन कोकरनाग तथा चश्मशाही ए विशेष प्रसिद्ध छे. कामेल नदी आगळ ट्रेगाम पासे लोलाव नामनो झरो छे, जेनी अंदर भर उनाळामां पण पाणी ५६ डीग्री गरम रहे छे. ए उपरांत पेम्पोर पासे वीआनमां तथा इस्लामाबाद शहेर पासे गन्धकना झरा छे.

खीणनी बन्ने बाजुए नीची टेकरीओना ढोळाव उपर टेबल लॅन्ड अर्थात् पर्वतना पासा उपरनो उन्नत सपाट प्रदेश आवेलो छे, तेमां मुख्य उत्तरे इस्लामाबाद उपरनो प्रदेश के जेना पर मार्तंड नामनुं गामडुं वसेलुं छे. पेम्पोर तथा दक्षिण खानपोर पासे झाइनापुर तथा नानगर वगेरे छे. जे स्थळे ए टेबललॅन्ड आवेलां छे ते जमीननी भूस्तर रचना वगेरे तपासवाथी एम साबित थाय छे के काश्मीरनी खीण म्होटा पर्वतोनी वच्चोवच्च एक गंजावर सरोवरना रूपमां हती.

काश्मीरनी राजधानी श्रीनगर छट्टा शतकनी शरुआतमां राजा प्रवरसेने बंधावेलुं छे. खीणना मध्यभागमां अद्वितीय मनोहरताने प्रगट करतुं ए पुर बारामुल्ला तथा इस्लामाबाद ए बन्ने स्थळथी ३४ माइल दूर छे अने समुद्रनी सपाटीथी ५२५० फीटनी उंचाइ धारण करे छे. तेमां वीश हजार घर तथा आशरे एक लाख अने वीश हजारनी वस्ती छे. जेलम नदीना उभय किनारा उपर वसेला ए शहेरनी लंबाइ अढी माइल जेटली छे. घरो घणखरां लाकडानां छे अने तेथी अवारनवार आग लागवानो भय रहे छे. प्रथम शहेरमां घरो खीचोखीच होवाथी बहुज गंदकी रहेती अने तेथी युरोपीअनो भाग्येज ए शहेरनी मुलाकात लेता. थोडा वखत पहेलां कॉलेरा वगेरे उपद्रवो फाटी निकळवाथी शहेरना सुधारा उपर विशेष ध्यान अपायुं छे. सने १९०१ मां स्टेटनी उपजनो सारो भाग शहेर सुधारा अर्थे खर्चवामां आव्यो हतो.

श्रीनगरमां आवता दरेक मुसाफरोनी देखरेख माटे एक बाबु राखवामां आवे छे, ते मुसाफरनुं नाम वगेरे तेनी नोंधबुकमां लखी ले छे ए बाबुनुं मुकाम चीनारबागनी पाछळ मेइलकार्टना तबेला पासे छे अने दरेक मुसाफरने तेनी ऑफीसेथी जोइती माहिती मळी शके छे. सांप्रत समये सर अमरसिंहजीनी एस्टेट उपर पांच मकानो गृहस्थ मुसाफरनी सगवड माटे आपवामां आवे छे; ए उपरांत दरबार तरफथी बंधावेली श्रीनगर हॉटेल सने १९०० मां एम. नेदुनी देख-

रेख नीचे खोलवामा आवी छे; तेमां मुसाफरोने सगवड मळी शके छे. तेमज चीनारबाग, मुनशी-बाग, सोनावर बाग, तथा नाशीमबाग, वगेरे स्थळ मुसाफरोनी सगवड पूरी पाडी शके तेवां छे. काश्मीरमां कोइ नवो मुसाफर दाखल थयो के तुरतज तेनी पासे वेपारीओनो ठठ जामे छे अने दरेक वेपारी पोतपोताना मालनी प्रशंसा करी ते खरीदवानो आग्रह करे छे; तेमां मुसाफरे सावध रहेवुं अने खरीदवामां भूल न करवी. प्रथम जोवा लायक स्थळ तख्ते इ सुलेमान समुद्रनी सपाटीथी ६२६३ फीट उंचे छे. अर्थात् ए स्थळ श्रीनगरथी १००० फीट उन्नत होवाथी तेना उपर उभेलो मनुष्य समग्र शहेरनो दिलपसंद देखाव सरलताथी जोइ शके छे. ए उपर जे जूनुं देहरुं छे ते इ० स० पूर्वे २२०मां अशोकना पुत्र जलोके बंधाव्युं कहेवाय छे. ए देवळ पाका बांधकामवाळा अष्टकोण पाया उपर बांधेलुं छे अने पूर्व तरफथी पत्थरना पगथीआं वडे अंदर जवाय छे. बहारना द्वारमां दाखल थतां पत्थरना सांकडा तथा लीसा पगथीआ पर थइने उपर चढाय छे. देवळ न्हानुं छे अने तेनी भींतो आठ फीट जाडी छे. एना उपरनुं छापरुं पत्थरना चार अष्टकोण स्तंभोवडे टेकावेलुं छे. देवळनी वच्चे श्याम वर्णनुं लीसुं मोटा कदनुं शिवलिंग छे, तेनो पूजारी देवळथी नीचे रहे छे अने जे कांइ गृहस्थ दर्शने आवे तेना पासेथी पैसा लेवानी आशाए ते हमेशां त्या हाजरज होय छे. नैऋत्य कोणमां पत्थरथी बांधेलुं तळाव छे. देवळथी बहार निकळतां कांइ अजायब सृष्टिसौन्दर्य नजरे पडे छे. सने १८५९ मां सर रीचर्ड टेम्पले ए स्थळनी मुलाकात लीधी त्यारे तेणे त्यां उभां रही आजुबाजुना कुदरती देखावोनुं नीचे मुजब उत्तम चित्र आळखेलुं छे.

श्रीनगरथी वूलर सरोवर सूधी जेलमना प्रवाहथी बरफथी साफ देखाता पीरपंजल पर्वत पर्यन्त सघळो प्रदेश एकी साथे नजरे पडे छे. उत्तर तथा पश्चिम तरफ पर्वत उपर पर्वत घणोज दिव्य देखाव आपे छे. सीटी सरोवरनी पेलीमेर उन्नत पर्वत उपर महादेवनुं त्रण टोचवाळुं शिखर छे. सिन्धनी खीण तरफ हरमुख पर्वतनुं शंकुने आकारे शोभी रहेलुं शिखर जोवामां आवे छे. अग्निकोण तरफ पीरपंजल पर्वतनी तलेटीमां काळा भूरा रंगना अनेनासनां वृक्षोवाळो खीणो जोवामा आखी जींदगी वितावी होय तोपण अरुचि उपजे एवुं नथी. पश्चिमे १३७७० फीट उंचुं सुंदर तावनुं शिखर, तेनी नजीक १४९५३ फीट उंचु देदामनुं शिखर अने त्यांथी पश्चिम तरफ ब्रह्माशकलना त्रण शिखरो १५००० फीट उंचा प्रकाशी रह्यां छे. त्यारबाद कोन्सानाग सरोवरनी समीपे १३००० फीट उंचा कोसरना शिखर आवेलां छे जमणी बाजुए चितापणी अने छोटीग-

ली नामना पर्वतना मार्गनी पेलीमेर पीरपंजलनुं टूटाकूट नामनुं १५५४० फीटनी उंचाइने धारण करतुं शिखर नजरे पडे छे. त्यारपछी तुलसी मेदान तथा फीरोझपुरना नाळांनी उंडी खो अने कुंच तरफनो मार्ग देखाय छे. जरा पश्चिम तरफ गुलमर्गनी काळा भुरा रंगनी धार पासे १३५०० फीट उंचो अपर्वाट नामनो पर्वत उंटनो पीठने आकारे उभो छे. तेनी पासे वारामुल्लानो मार्ग छे. वारामुल्लानी समीपे वाझीनागनो कांगरावाळो पर्वत स्पष्ट देखाय छे. त्यारबाद वादळांओनी आकृतिने वहन करती खगन पर्वतनी बरफवाळी पंक्ति दृष्टिगोचर थाय छे. जरा अंदर नजर करतां नीचे मुनशीवाग, कॉटेज हॉस्पीटल, खीस्तीनुं देवळ, रेसीडन्सी पोलोनुं मेदान अने पोप्लरना वृक्षनी पंक्तिवाळो मार्ग तेमज जमणी बाजुए मध्यमां हॉटेल तथा चीनारबाग आदिनो देखाव अत्यन्त आनंद उपजावे एवो छे. आ रीतनु चित्र सर टेम्पले आलेख्या पछी एक देवळ, एक हॉटेल तथा एक रेशमनुं कारखानुं ए त्रण मकानो उक्त देखावमां उमेरायां छे. वारामुल्ला तरफनो पोप्लरना वृक्षमां थइ पश्चिमे जतो मार्ग वगा माइल सूधी सारी रीते जोइ शकाय छे. ए शिवाय शहेरनी चारे बाजु भेज तथा गंदकीवाळा स्थळो के जेथी शहेरनी हवा बगडवा संभव रहे छे ते देखाय छे. दाल सरोवर तरफ दृष्टि करतां नीरना न्हाना न्हाना चीराओ, तरताबाग, परीमहेल, निषतूपेवीलीअन तथा शालीमहार नासीमबागोना काळा भूरा रंगना झुंडो अने चीनार वृक्षोना टापु वगेरे जे जे आकर्षक स्थळोनुं "लालारुख" नामना ग्रन्थमां टॉमस मूर कविए वर्णन करेलुं छे ते सर्व तख्ते इ सुलेमान नामने स्थळेथी प्रत्यक्ष जोइ शकाय छे.

हरि पर्वतनी टेकरी उपरनो किल्लो पण जोवा लायक छे. ए टेकरी शहेरनो उत्तरे सरोवर उपर २५० फीटनी उंचाइए अन्य पर्वतोथी अलग उभेली छे अने खीणनी पश्चिमे स्थिर रही नजर करतां ते वीश माइल दूरथी दृष्टिगोचर थाय छे. ए टेकरी उपर अकबर बादशाहे सने १५९० मां शहेर उपर दाव राखवा माटे एक किल्लो बंधावेलो छे, त्याथी आखुं शहेर एक लीली बिछात जेवुं जणाय छे; कारण के दरेक गृहना छापरां उपर जुदी जुदी जातना लीला रोपाओ मूकेला होय छे. तख्ते इ सुलेमान बराबर अग्निकोणमां देखाय छे अने दाल सरोवर पूर्व तरफ नजरे पडे छे टेकरीनी दक्षिण बाजुए बादशाह जहांगीरना धर्मगुरु अखुनमुलाहशाहनी यादगीरी अर्थे बांधेली पत्थरनी कबर छे. पश्चिम तरफना पार्श्व उपर मुसलमान लोकोमां पूजाता शाह हमजाह उर्फे मखदुम साहेबनो रोजो छे अने उत्तर तरफ एक न्हानो खडबचडो टेकरो छे, तेमां हिन्दु

लोकोए विष्णुनुं स्थानक बनाव्युं छे.

श्रीनगर शहेरनी अंदर जोवा लायक स्थळो पैकी जेलम नदीना किनारा उपर लायब्रेरी तथा पोस्टओफीस वच्चे अंग्रेजी रेसीडन्सीनुं भव्य मकान छे अने तेना कम्पाउन्डनी वाडीमां चीनारनां वृक्षो वावेलां छे. तेनी नजीक लायब्रेरी, सने १९०१ मां खोलेल रीफ्रेशमेन्ट रुम तथा टेनीस अने बेडमोन्टन नामनी रमत रमवानां मेदान छे. होटेलनी नजीक गोल्फ रमवानुं मेदान अने ते पछी मुनशी बाग तथा सोनापुर बाग छे. होटेलनो आगळ जे मार्ग छे ते काश्मीरना पठाण सूबाए सने १८०८ मां बन्ने बाजुए ववरावेल पोप्लरना वृक्षनी पंक्तिथी घणोज रमणीय जणाय छे. होटेलनी सामे पोष्ट ओफीस, टांगानुं छेल्लु स्टेशन तथा पोलो रमवानुं मेदान वगेरे छे त्यांथी नीचाणमां रमतना धाराओ घडनार सेक्रेटरीनी ऑफीस तथा गीलगोट ट्रान्सपोर्ट ओफीसनां मकानो छे. नदीने सामे किनारे लालमंडी नामनुं बादशाही मिजबानो वगेरेने रहेवा माटे मकान बांधेलु छे; जेमां नामदार ड्युक्‌ ओफ कोनोट तथा तेमना बानुए सने १८८४ मां पोताना प्रवास वखते उतारो कर्यो हतो; हालमां ए मकान स्टेट म्युझीअम तरीके वपराय छे अने ते खास जोवा लायक छे.

श्री नगरमां जुन मासथी सखत गरमी तथा मच्छर आदिनो उपद्रव शरु थतो होवाथी त्यांना वतनीओ गुलमर्ग तथा पहेलगाम वगेरे शम शीतोष्ण स्थळे अथवा पोत पोतानी प्रकृतिने अनुकूळ आवे एवी जगोए निवास करवा जाय छे.

मुनशी बाग पासेथी चालतां सेटलमेन्ट कमीश्नरनुं मकान आवे छे, तेनी नजीक सिपाहीओने रहेवानी बराको, एकाउन्टन्ट जनरलनो तथा स्टेट एन्जीनीअरनो बंगलो तेमज लश्करी अधिकारीओना बंगलाओ आवेला छे अने तेनी पाछळ ख्रीस्ती देवळ तथा पादरीनो बंगलो आवेलो छे.

उपर कहेला स्टेट म्युझीअम पासे काश्मीरना चीफ मेडीकल ऑफीसरना वडा न्यायाधीशना बंगलाओ छे. म्युझीअम सामे जेलम नदीना जमणा किनारा उपर शेखबाग नामनुं मोटुं चोगान छे अने तेनी वच्चे एक मकान छे ते प्रथम मसजीद तरीके वपरातुं, त्यारबाद ख्रीस्तीना देवळ तरीके उपयोगमां आवतुं अने हालमां पब्लीक वर्क्स डीपार्टमेन्टनी ऑफीस तरीके वपराय छे. पूर्व तरफ मीशनरी पादरीओने रहेवानां मकानो स्टेट खर्चे बंधाएलां छे, नैरुत्यकोणमा अंग्रेज

लोकोनुं स्मशान छे. एथी नीचाणमां स्टेट हॉस्पीटल सामे काश्मीरनी हाइकोर्टनुं मकान छे; त्यांथी श्रीनगर शहेरनी शरुआत थतां पहेलां प्रथम सने. १८९३ ना पूर पछी नवो बांधेलो पूल आवे छे; ते ओळंग्या पछी महाराजा साहेबनी महेलातो देखाय छे. राजमहेल पुरातन तथा आधुनिक समयनी बांधणी प्रमाणे बांधेलो छे अने तेनो साथे प्राइवेट सेक्रेटरीनो ऑफीस जोइन्ट होवाथी आखुं मकान कूटीकूल नामनी नहेर सूधी लांबु छे. तेना पुरातन भागमां एक म्होटो दरबारहॉल छे. त्यां दरबारो मिजमानीओ तथा महान् उत्सव आदिना मेळावडाओ थाय छे, महेलनी पासे जेलम नदीमांथी बन्ने किनारा तरफ अकेक नहेर वहे छे. डाबी बाजु जती नहेर कूटीकूल अने जमणी बाजु जती नहेर सुन्तीकूल कहेवाय छे. कूटीकूल नहेरद्वारा हेन्डोनां केटलाक प्रख्यात कार्यालयो तरफ जइ शकाय छे. नहेरना किनारापर सने १२०० मा सम्पूर्ण थएल म्होटा मकाननी अंदर नामदार महाराजा अमरसिंहजी के. सी. एस. आइ. ग्रीष्म ऋतुमां निवास करे छे.

सून्तीकूल नहेर चिनारबाग तरफ वळे छे, ए चिनारबाग आगळ वहाणो तथा होडीओ वगेरे बांधवानी योजना करवामा आवी छे. चिनारबाग मूक्या पछी मीशन हॉस्पीटल देखाय छे, त्यांथी अर्ध माइलने छेटे सून्तीकूल नहेर पाछी जेलम नदीने मळे छे. सुमतीकूल नहेरना मुख तरफ पाछा फरतां जमणी बाजुए काश्मीरना पहेला सरदार रुपसिंहजीनुं म्होटुं मकान छे, तेनी पासे डाबी बाजुए काश्मीरमां म्होटामां म्होटुं मीआंसाहेबनुं मन्दिर छे. त्यांथी नीचाणमां मलीकीचर घाट पासे एक पत्थर उपर बुधना वखतनो शिला लेख छे. ते ज्यारे पाणी ओछुं होय त्यारे साफ देखाय छे. श्रीनगरमां दरेक गृह बे माळना तो छेज. कोइ कोइ म्होटां मकान त्रण अथवा चार माळनां पण छे. त्यांथी आगळ डाबे किनारे हाइस्कुलनुं मकान छे. शाहहमादन मसजीद जमणे किनारे त्रीजा पूल पासे आवेली छे अने तेमां फारसी अक्षरे लखेलो एक शिलालेख छे. ए शिलालेखमां शाह हमादननी पवित्रता तथा महत्ता वगेरेनुं वर्णन करेलुं छे. काश्मीरनी अन्य मसजीदो माफक ए पण सेडरना बांधकामवाळुं छे अने तेना शिखर उपर सुवर्णनुं इंडुं मुकेलुं छे.

मलीकीचर घाट मूकतां, पांच मीनीट, पछी दिलावरखाननो बाग आवे छे, ए बाग हाल सरोवरनी एक शाखा उपर छे तेने विषे खास जाणवा लायक होय तो एज छे के सने १८३५ मां तेनी अंदर धुजलवीगनी तथा हेन्डरसन नामना नामांकित मुसाफरोए उतारो कर्यो हतो. शाह हमादन मसजीद सामे नदीना डाबा किनारा पर रहेली पतर मसजीद बेगम नुरजहांए बंधा-

वेली हती, ए मकान अत्यारे एक कोठा तरीके वपराय छे, कारणके ते स्त्रीए बंधावेलुं छे, वळी एम पण कहेवाय छे के नूरजहां सुनी पंथनी हती के नहि ते विषे मुसलमानोने पूरतो शक छे. ए मकाननी पासे हाजी अहमदीखारी नामनो जूनो रोजो छे, तथा एक कबरस्तान छे. त्यार पछी झैनाकदल नामनो पूल आवे छे, तेनी पासे शेख मुल्लानी मसजीद छे अने तेनो नजीक पंदरमां शतकनी शरुआतमां थइ गएला झैनूल अबेदीन नामना काश्मीरना एक मुसलमान राजाए बंधावेली बादशाह नामनी मसजीद छे. ए राजाना राज्यमां तुर्कस्तानथी आवेला वणकरोए पहेल वहेली काश्मीरी शाल बनावी हती एम कहेवाय छे. त्यांथी लगभग आठेक मीनीट आगळ चालता पछी प्रख्यात जुमा मसजीद आवे छे, तेनी बाहारनी भींत उपर शिलालेख छे ए उपरथी एम जणाय छे के ते बादशाह शाहजहांए बंधावेली छे; तेनो घुम्मट त्रीश फुट उंचा देवदारना महान् स्तंभो वडे टेकावेलो छे. ए स्तंभो नीचे त्रीश फीट उंचा पत्थरना स्तंभ बांधेला छे. अर्ध पत्थरना अने अर्ध काष्टना मळी दरेक स्तंभनी उंचाइ ६० फीट जेटली छे. तेनो देखाव घणोज भव्य जणाय छे. त्यांथी चार मीनीट चाल्या पछी वायव्य कोणमां पीर हाजी महमदना रोजा पासे "चाक" कुटम्बना राजाओनुं कबरस्तान छे. "बादशाह" कबरनी पासे आवेली "महाराज गंगे" नामनी बजार सने १८९७ मां आग लागवाथी नाश पामी हती, पण हवे तेनो घणखरो भाग सुधारी बांधवामां आव्यो छे. पांचमां पूल पासे "रेन्चनशाह" नी मसजीदनुं पुरातन मकान नजरे पडे छे, तेमां पश्चिम तरफनी भींत उपर बुधना वखतनुं देवालय छे. ए मकानतो समीपे "वाइली" साहेबनो रोजो आवेलो छे. त्यार पछी बुलबुलशाह नामना फकीरनो यादगीरी अर्थे काष्टवडे बंधावेली बुलबुललंकर नामनी मसजीद छे, ए बुलबुलशाहे बारमा शतकमां मुसलमानो धर्मनो प्रचार कर्यो एम कहेवाय छे. हालमां ए मकान पडी छिन्नभिन्न थइ खंडेर जेवुं बनी गयुं छे. नायाकदल नामना छट्ठा पूल पासे जमणी बाजु तरफ दुदमुदखाननी मसजीदनुं पुरातन मकान छे. तेनी पासे काश्मीरीशालना वेपारमां अग्रेसर गणाता पंडितराज काकुनो बंगलो छे. डाबी बाजुए सन १८८९ मां खुल्ली मुकेली जनाना हॉस्पीटल छे, अने तेनी देखरेख एक बानु डॉक्टर राखे छे. त्यांथी आगळ चालतां ठगीबाबा उर्फे मलेकसाहेबनी जीआरत आवे छे; तेमां आठ कबर आरसनी छे.

सुफाकदल नामना सातमा अथवा छेल्ला पूलथी सो यार्डने छेटे लछमनजीकीयारीवल नामना घाटथी आगरे दश मीनीट आगळ चाल्या पछी इदगाह नामनी मुसलमान लोकोना धार्मिक

तहेवारोने दिवसे मेळो भरवानी जगो आवे छे, ए जगो सवा माइल जेटली पहोळी तथा एक बा-गनी पेठे सपाट तेमज लीलां तृणथी छवाएली छे अने एनी आसपास उगेलां म्होटां वृक्षो सौन्दर्यमां उमेरो करी रह्यां छे. शहेरना अग्र भागमां रहेलुं ए मेदान घणुंज मनोहर छे. तेनी उत्तर तरफना छेडा पासे पुरातन देवदारना काष्ठथी बांधेली अलीमसजीद छेः तेनी अंदर एक म्होटा पत्थर उपर आरबी भाषामां लखेलो शिलालेख मळी आव्यो हतो, एमां एवुं लखेलुं हतुं के ए मस्जीद सने १४७१ मां सुलतान हसनबादशाहना समयमां काजो हस्ती सोनारे बांधेली छे. सुफा-कदल ए छेल्लो अने सातमो पूल गणाय छे. तेनी पासे आखा शहेरनी अंदर सहुथी म्होटामां म्होटी शराइ छे. डाबी बाजुए शाह नैमतुलानो रोजो आवे छे; तेनी अंदर एक पत्थरपर लखेला शिला-लेख उपरथी मालूम पडे छे के श्रीनगरनो सातमो पूल सने १६६४ मां सइफखाने बंधावेलो छे अने एथीज एनुं नाम सुफाकदल राखवामां आव्युं छे.

दाल सरोवरना संबंधमां कवि टॉमसमूर लखे छे के—

" मनुष्यने पोतानी प्रियाना सहवासथी अतिशय आनंद प्राप्त थाय छे, परंतु ए प्रियानी साथे काश्मीरना रमणीय दाल सरोवरमां चांदनीने समये मधुर गायन सांभळतां मुसाफरी कर-वानी होय तो आनंदनी हद न रहे. स्त्रीना सहवासथी उज्जड अरण्य पण आनंदमय लागे छे तो पछी तेनो सहवास काश्मीरना सुशोभित सरोवरमां थयो होय तो केटलुं सुख प्राप्त थाय तेनो ख्याल मने आवी शकतो नथी. "

कविनो ए अनुभव खरो छे, कारण के चांदनीना वखतमां दाल सरोवरनी खूबी कांइ जूदीज जणाय छे. ए सरोवर पांच माइल लांबु अने अढी माइल पहोळुं छे. प्रथम जोवा जनारने तेना द्वारमां प्रवेश करतांज पोते कंइ छेतरायो होय एम भासे छे. ते सरोवरनी सपाटीनो घणखरो भाग महान कदना वंश वृक्षोथी तथा तरता उपवनोथी आच्छादित थएलो छे. ज्यां पाणी खुल्लुं देखाय छे त्यां वंशवृक्षोमांथी कापी काढेल मार्गद्वारा जवाय छे. ए सरोवरमां केटलाक झराओ तथा अन्य पर्वतना झरणो मळेलां छे, मुख्यत्वे करी डाकी गामना झरणनुं तथा आराह नदीनुं जळ एमां आवे छे. आराह नदी श्रीनगरनी इशानकोणमां आवेला डाकीगाम नामना नाळां पासे रहेल मरसार सरोवरमांथी निकळे छे. जेलम नदीमां ज्यारे पूर होय छे, त्यारे लायब्रेरीना मकान पासे थइने जती तथा जेलम अने सून्तीकूल नहेरने जोडती एक न्हानी नहेरवडे ते सरोवरमां जवाय छे. ए

मार्ग लगभग एक कलाकनो छे. नदीमां ज्यारे पूर आवे छे, त्यारे सरोवरमां दाखल थवाना दर-वज्जानां बारणां पाणीनां जोरथी पोतानी मेळे बंध थाय छे अने एथी सरोवर अंदरना तरता बागो तथा आसपासनी भूमि पाणी वडे भींजाती अने कादव कचरावाळी थती अटके छे. दरवज्जानी अंदर दाखल थतां सरोवरमां जळना उभय विभाग नजरे पडे छे. डावी बाजुनो फांटो नासीमबाग तथा सालीमारबाग तरफ अने जमणी बाजुनो फांटो निषधबाग तरफ जाय छे. डावी बाजुना फांटा तरफ थोडे दूर गया पछी तेमांथी नालीमार नामनी एक नहेर डावी तरफ वळे छे. ए नहेर बादशाह झैन उलअबुदीने पंदरमां शतकमां खोदावी छे एम कहेवाय छे, तेना किनारा उपर सुंदर घाट तथा विविध प्रकारनां वृक्षो कांइ जुदीज शोभा जणावे छे. ए नहेरपर बांधेला केटलाक पूल परम रमणीयताने धारण करे छे. अंग्रेज मुसाफर विग्नी कहे छे के "आ नहेरने निहाळवाथी इटालीना वेनीस शहेरमां आवेली एक जुनी नहेरनी स्मृति आव्या विना रहेती नथी. ए बन्ने नहेरनां बांधकामनी खूबी खरेखर प्रेक्षकने आश्चर्य पमाडे एवी छे." पण अपशोस के, ज्यारे नहेरमांथी पाणी उतरी गयुं होय छे, त्यारे त्यांनी गंदकी तथा कचरो अत्यन्त ग्लानि उपजावे छे. ए नहेर एन्कर सरोवरने मळे छे.

डावी बाजुए रहेला नासीम बाग तरफ जतां सरोवरना द्वारथी एक माइल दूर कालीअर नामनुं गामडुं आवे छे. त्यां केटलाक खंडेरो तथा तेनी नजीक केटलाक सुंदर घाट नजरे पडे छे. सरोवरनी वच्चे थइने जवानो सुट्ट नामनो उन्नत मार्ग बांधेलो छे. ए मार्ग नैविग्रर पूलनी जमणो बाजुए थइ इशीवरी नामना गामडांनी दक्षिण बाजु सुधी जाय छे; तेनी लंबाइ चार माइल जेटली छे अने जे नळोवडे शहेरनी अंदर निषधबागना होजमांथी पाणी लाववामां आवे छे, ए नळ एज मार्गे नांखेला छे. नैविग्रर पूलथी ३०० यार्ड आगळ चालतां हसनाबाद नामनुं गामडुं आवे छे. तेनी अंदर बादशाह अकबरना वखतमां शिआपंथना मुसलमानोए बंधावेली मस्जीदनां खंडेर पडयां छे. कहे छे के शेख मूवामीआनसिंहे ए मस्जीदने तोडी तेमांना पत्थरो बादशाही महेल सामे आवेला वसन्तबाग पासेनो घाट बांधवामां वापर्या छे. हसनाबादनी अंदर सने. १८७४ मां शीआ अने सुनी वच्चे क्लेश थतां म्होटी कापाकापी चाली हती; त्यांथी आगळ जातां निषधबाग आवे छे. त्यांथी सरोवरनी अंदर तरता बाग नजरे पडे छे. ए बागमां घणे भागे चीभडां, तरबूच तथा टमेटां जत्थाबंध वाववामां आवे छे. अंग्रेज मुसाफर मी. मूरक्रोफ्ट ए बनावटी तरता बागनुं नीचे मुजब वर्णन करे छे.

" काश्मीरना सुप्रसिद्ध तरता बाग नैविग्रर पूलथी एक माइल दूर देखाय छे, तेमां मुख्यत्वे करीने चीभडां, तरबूच तथा टमेटां वाववामां आवे छे. ए बागनी बनावट ए लोको एवी रीते करे छे के प्रथम सरोवरना छीछरा पाणीवाळा स्थळमां उगता रोपाओने सपाटीना त्रण फीट नीचेना भागथी कापी नांखे छे. जेथी सरोवरना तळीआ साथेनो तेनो संबंध तूटी जाय छे; पछीथी घणखरा रोपाओने पासे पासे वावे छे अने आशरे छएक फीटनी पहोळाइवाळा अनुकूळ पडे एवा क्याराओ बांधे छे. ए रीते तरता रोपाओमांना तथा वांसना अने दर्भना मथाळानो भाग कापी उक्त क्याराओनी अंदर रोपे छे अने तेना उपर माटी वगेरे नांखे छे. ए माटी धीमे धीमे रोपाओना मूळनी अंदर जाय छे. जेथी रोपाओ वृद्धि पामवामां समर्थ थाय छे. क्याराओ जळमां तरे छे, परंतु तेने पाणीमां तणाइ जता अटकाववाने तेने बन्ने छेडे जंगली चीआओ बांधवामां आवे छे. एवा तरता बागो दरवर्षे वृद्धि पामे छे अने तेथी गोग्रावल बाग पासेनो पाणीवाळो सपाट जमीननो ककडो आच्छादित थतो जाय छे. ते तरता बाग मूक्या पछी डावी बाजु हजरतबाल (महमद पेगम्बरनो बाळ) नामनुं गामडुं नजरे पडे छे अने ए मुसलमान लोकोनी पवित्र जीआरत माटे मख्यात छे. ए जीआरतमां काचना ढांकणावाळी एक रुपानी डब्बीमां महमद पेगंबरनी दाढीनो एक वाळ राखराखवामां आव्यो छे. ए स्थळे एक वर्षमां मुसलमानना चार मेळा भराय छे अने ते वखते सर्व लोको ए बाळना दर्शन करे छे.

हजरतबाल नजीक नासीमबाग उर्फे मधुरी पवननी वाडी छे, त्यांथी सरोवरनो देखाव घणोज सरस जणाय छे. ए वाटिकानी अंदर बादशाह अकबरे वावेलां चीनारनां आशरे १२०० वृक्ष छे. ए ग्रीष्म ऋतुमां मधुर छाया करे छे अने पानखर ऋतुमां रंगबेरंगी मनोरजक देखाव आपे छे. ए बागमांथी सरोवरने सामे किनारे रहेला शालीमार बागनो तथा दूर देखाता अने बरफथी आच्छादित थएला महादेव पर्वतना रमणीय शिखरनो नीचेना पोलाणनो सुंदर देखाव नजरे पडे छे. नासीमबागनी डावी बाजुए आराह नदी सरोवर साथे संगम करे छे.

शीतकाळ व्यतीत थया पछी बरफ ओगळवा मांडे छे. ते वखते दाल सरोवरनुं जळ कांइक डोळुं देखाय छे, पण जेम जेम ताप विशेष पडतो जाय छे, तेम तेम पाणी स्वच्छताने धारण करे छे अने तेनी अंदरना तरता बाग सम्पूर्ण दृष्टिगोचर थाय छे.

कवि टोमसमूर लखे छे के—" जेम शरमाळ चहेरावाळी नवोढा रात्रिए पोताना पति पासे जती वखते पण पोतानुं मुख छेल्ली घडि सूधी दर्पणमां जोतो जाय छे तेम ग्रीष्मऋतुनी सन्ध्या

जती वखते दाल सरोवर उपर स्वकीय शोभानी समग्र कळाओ खीलावी मूके छे. ए समये सरोवर उपरना वृक्षो सोंसरा सूर्यना झांखा तेजमां आसपासनां धर्मस्थानको नजरे पडे छे अने ए धर्मस्थानकोमां भिन्न भिन्न धर्मक्रियाओ प्रमाणे थती प्रार्थनाओना अवाज सारी रीते संभळाय छे. मसजीदोमांथी मुल्लांओनी बांगनो अवाज तथा हिन्दुना देवस्थानमांथी निकळतो घंटानो मधुर निनाद पवननी लहेरमां श्रवणपथे संचरी अत्यंत सुख आपे छे. ए सरोवरने चांदनीना समयमां निहाळ्युं होय तो ते उपरना महेलो तथा बागो चन्द्रमाना मधुर शान्त रुपेरी तेजथी वींटाएला नजरे पडे छे. दूर पाणीना धोधवाओ खरी पडता ताराना समूह माफक चळके छे. चीनारना वृक्षोमांथी आवतो बुलबुल पक्षीनो मधुर स्वर शान्त अने चळकता मार्ग उपर फरता युवान मनुष्यना जोडलांओने अपार आनंद अर्पे छे. ज्यारे प्रातःकाल प्रगटे छे, त्यारे धीमे धीमे फेलातो दिवसनो जादूइ प्रकाश दरमीनीटे नवी नवी खूबी जणावे छे.

सामे किनारे शालीमार अथवा बादशाही बाग आवेलो छे, तेनी अंदर तंबुओ तथा जलयंत्र आदिनी मनोरंजक योजना करेली छे. ए बागमां बादशाह जहांगीर बेगम नूरजहां साथे ग्रीष्मऋतुनो वखत गुजारता. सांप्रत समये त्यां रात्रीना भागमां कोइ कोइ वखते जाहेर मिजमानीओनी मिजलसो भरवामां आवे छे. ए बाग पासेनो नहेरनो तथा धोधना पाणीनो अवाज श्रवणेन्द्रियने आनंदमां निमग्न करे छे. त्यां संख्याबंध तंबुओ नांखेला होय छे अने समग्र स्थळे रंगबेरंगी लेम्पोनी रोशनी करेली होय छे, ए रोशनी वच्चे छुटता जलयंत्रोनी खूबी कांइ जूदीज जणाय छे. ए वखतना देखावनुं वर्णन करवा कोइ महान् कविनी आवश्यकता जणाया वगर रहेती नथी.

काश्मीरनी खीणना पूर्व छेडा तरफ आवेलुं इस्लामाबाद नामनुं शहेर म्होटामां म्होटुं छे. त्यां मुख्यत्वे करीने जळ मार्गे जवाय छे; तेनी आजुबाजु सिंहो वसता होवाथी केटलाक युरोपीअनो तेमज अन्य मुसाफरो त्यां शिकार अर्थे जवा ललचाय छे. श्रीनगरना मुनशीबाग पासेथी जेलम नदीने मार्गे इस्लामाबाद जतां बे दिवस लागे छे. ए शहेरनी समीपे बीएन नामनुं गामडुं छे, त्यां गंधकना झराओ छे, तेने फूकनाग कहे छे अने तेमांथी उग्र गंधकनी वास आवे छे, एक टेकरीनी दक्षिण बाजुए रहेली तलेटीमांथी थोडे थोडे अंतरे ए त्रण झराओ निकळेला छे; तेमानुं पाणी एक सांकडा प्रवाहमां वहे छे. प्रवाह एक फूट पहोळो तथा एक फूट उंडो छे; तेनी बन्ने बाजुए पत्थरनी हार करेली छे. आसपास रहेला पर्वतना पत्थरमां अग्निपाषाणनो भेग होवाथी उक्त झराना

जळमां लोह तथा गंधक मळेलां छे. जेथी ते अमुक प्रकारना दरदीओने लाभकारक थाय छे. केट-लांक दरदो न्हावाथी तथा केटलांक दरदो तेनुं पाणी पीवाथी नाश पामे छे. तेनी नजीक नाग नाम-नो मीठा पाणीनो झरो छे अने ते एज टेकरीनी पश्चिम वाजुए रहेली टेकरीमांथी निकळे छे. ए पाणी एक पत्थरथी बांधेला होजमां एकठुं थाय छे अने त्यांथी आगळ वहेतां उपर कहेला गंधकना झराओनां पाणीने महम्मदशाहनी जीआरतना कंपाउन्डमां नीकळतुं पाणी तेने मळे छे.

इस्लामाबाद पासे अनंतनाग नामनो झरो मुख्य छे, तेनी पासे एक चीनारनुं वृक्ष छे, तेना मूळमांथी मलीकनाग नामनो गंधकनो झरो निकळे छे; तेनी जमणी बाजुए सलोकनाग नामनो बीजो झरो वहे छे. ए बन्ने झराओ एक मस्जीदना मकानमां थइ एक तळावने मळे छे. डाबी बा-जुए सोनापोखर नामनो मीठा पाणीनो झरो छे.

इस्लामाबादथी थोडे दूर अच्छेबल नामनुं गामडुं छे, तेमांथी केटलीक नहेरो वहे छे, ए गाम आसपास रहेला वृक्षोथी ढंकाएलुं छे, तेनी पासे केटलाक बाग तथा ग्रीष्मऋतुमां निवास कर-वा अर्थे महेलो बांधेला छे, ए अच्छेबल तेना झराने लइ प्रख्यात छे. झरणनुं जळ एक टेकरीनी तळेटीमांना म्होटा वेरमांथी १८ इंच उंचे अने त्रण फुटना घेरावामां उछळे छे. ए झरानी आजु-बाजुना स्थळनुं वर्णन करतां अंग्रेजी लेखक मी. नाइट लखे छे के-" हुं ज्यारे ए जगो जोवा गयो त्यारे तेनी आसपास विविध प्रकारनां फळद्रुप वृक्षो उगेलां हतां अने दरेक दिशामां जोस-बंध वहेता जळनो गडगडतो अवाज काने पडतो हतो; तेनी साथे असंख्य गानारां पक्षीओनुं मधुर गान श्रवणेन्द्रियने अपूर्व आनंद आपतुं हतुं. वळी निरंतर वहेता स्वच्छ अने स्फाटिकमणि समान प्रकाशने धारण करनारां जलझरण ए स्थळने अद्वितीय रमणीयता अर्पे छे. ए सर्व जोतां मने तो एमज थयुं के जो क्यांइ पृथ्वीपर स्वर्ग होय तो ते एज स्थळ छे.

पीरपंजल पर्वतनी बाजुमां गुलमर्ग उर्फे पुष्पोवाळुं मेदान परम शोभाने धारण करी रह्युं छे. आसपास आवेली नीची टेकरीओथी घेराएलुं तथा अनेनासनां गाढ जंगलथी ढंकाएलुं गुलमर्ग आशरे सवामाइल लांबु छे, अने समुद्रनी सपाटीथी ८५०० फीट उंचाइने धारण करे छे. त्यांना हवापाणी नियमित अने अनुकूळ आवे एवां छे. वरसाद त्यां अत्यंत वरसे छे अने ऑगस्ट मासमां भेज तथा शरदी अधिक रहे छे. शीआळामां तेना उपर वीशथी त्रीश फीट उंचा बरफना थर जामे छे. तेनी अंदर थइने एक

झरणुं वहे छे. सने १८९० मां अंग्रेजी रेसीडन्ट माटे त्यां एक मकान बांधेलुं छे. नामदार महाराजा साहेबे तथा राजाश्री अमरसिंहजीए पण पोताने माटे जुदां जुदां मकानो बंधावेलां छे. त्यां जनार मुसाफरोने वखते उतारा वगेरेनी सगवड मळी शकती नथी, माटे तेत्रा लोकोए श्रीनगर मुकामेथी तंबु वगेरे लइ जवा जोइए; कारणके गुलमर्गमां तंबु पण मळता नथी. अश्व आदि माटे हंगामी तवेलाओ त्यां रहेता सुतारो पासे तैयार करावी शकाय छे, तेवा तवेलाओनी त्यां बहुज जरुर पडे छे, कारण के त्यां वरसाद वखतोवखत हद उपरांत वरसे छे अने तेथी तवेला विना बिचारां मुंगां प्राणीओने बहु दुःख वेठवुं पडे छे. श्रीनगरना गृहस्थो दरवर्षे जुननी १४ मी तारीखथी गुलमर्गमां निवास करवानी शरुआत करे छे. श्रीनगरमां गरमी सखत पडे छे अने गुलमर्गमां माफक आवे एवी ठंडी हवा रहे छे, गुलमर्गनुं मेदान धीमेधीमे वृद्धि पामतुं गयुं छे. हालमां ए काश्मीरनी अंदर श्रेष्ठ गणातुं एक हवा खावानुं सुंदर स्थळ छे, त्यांना हवा पाणी सारां छे अने आसपासना पर्वत परम रमणीयताने प्रदर्शित करे छे. समग्र हिंदुस्थानमां कोइ स्थळे न मळी शके एवां विविध मोजमजाहनां तथा रमतगमतनां साधनो गुलमर्गमां सरळताथी प्राप्त थइ शके छे. मेदान एटलुं तो विशाळ छे के तेमां पोलो, क्रिकेट, गोल्फ तथा टेनीस वगेरे जुदी जुदी जगोए रमवानी सगवड मळे छे; ए उपरांत नृत्य, गायकनी मंडली तथा बीजी शरतो आदि आनंदप्रद साधनोथी ए स्थळ सदा सुसमृद्ध रहे छे. उपर कहेल बाबतनो शोख नहि धरावनारा मुसाफरो आसपासनो कुदरती देखाव, पर्वतोनी शोभा तथा घोडानी सफर आदिथी गृहनी अंदर अथवा बाहेरना भागमां जोइए तेटलो आनंद लइ शके छे. मोसममां दरवर्षे एक विस्तृत बजार खोलवामां आवे छे, अने देशी तथा विलायती दरेक वस्तुओ मुसाफरोने मळी शके छे. त्यां एक ख्रीस्तीनुं देवळ, सारुं पुस्तकालय, टेनीसकॉर्ट तथा पोलोनुं मेदान वगेरे आवेलां छे. मर्गनी सरहद उपर मार्गो अति उत्तम प्रकारे कापी काढेला छे, अंदरना मार्ग पण मनोहर छे. रेसीडन्सी पासेथी रस्तो गोळ फरीने चार माइल दूर धोबीघाट पर्यन्त जाय छे; तेनी आजुबाजुए टेकरीओ, खीणो, अनेनासनां तथा साइकेमोरनां विशाळ जंगलो तथा जंगली पुष्पो आदि नजरे पडे छे. दूरना भागमां नंगा पर्वतनुं बरफवाळुं शिखर, हरमुख पर्वत तथा आखी काश्मीरनी खीण दृष्टिगोचर थाय छे. गुलमर्गमांथी गटरोवडे पाणी काढी नांखवामां आवे छे तो पण स्हेजसहाज भेज रहे छे; जेथी त्यां जइ रहेनारा लोको पोताना तंबुओमां जमीन उपर काष्टनां पाटीआं जडावे तो तेने भेजथी पराभव थवानो भय रहे नहि.

गुलमर्गथी उंचाणमां खीलनमर्ग नामनुं अन्य मेदान आवेलुं छे अने ते सागरनी सपाटीथी आशरे ११००० फीट उंचुं छे. गुलमर्ग अने खीलनमर्ग वच्चे चार माइलनो अंतर छे, एटला अंतरमां २००० फीटनी उंचाइए चढवुं पडे छे, तेनी समीपे उन्नत भागमां अपर्वाट नामनो पर्वत नजरे पडे छे. खीलनमर्गमां म्होटी मिजमानीओ तथा जीआफतो वगेरे वारंवार करवामां आवे छे.

आ रीते रावलपींडीमां चौद दहाडा रही काश्मीर संबंधी सघळी माहिती मेळव्या बाद ता. ९ मे १९०९ ना रोज मित्रमंडल सहित मोटरमां बेसी आप नामदार मरी पधार्या अने त्यांथी टांगा भाडे करी श्रीनगर पहोच्या. त्यां उतारा माटे एक हाउसबोट तथा बे डुंगाओ राख्या. एक डुंगामां माणसो रहेतां तथा बीजामां पाकशाळा आदिनी योजना करावी. ता. १२ मीना रोज दाल सरोवरना किनारा पर परीमहेल छे ते पासेना पर्वत पर पुष्कळ बरफ होवाथी त्यां पधार्या. ता. १३ मीए वितस्ता नदीमां नावाथी इस्लामाबाद तरफ रवाना थया. हाउसबोटने गंढवा बांधी किनारे किनारे माणसो खेंची चालतां हतां. ता. १६ मीए इस्लामाबाद पहोंची आपश्रीए त्यांना गंधकना झराओ जोया अने पछीथी अच्छेवल तरफ घोडेस्वार थइ प्रयाण कर्युं. अच्छेवल इस्लामाबादथी छ माइल दूर छे; बादशाहीबाग तथा केटलांक जूनां मकानो जोया बाद ता. २१ मीए त्यांथी रवाना थइ ता. २३ मीए पाछा आप श्रीनगर पधार्या. हाउसबोट चीनारबागमां राखेली हती. ता. २६ मीए काश्मीर स्टेट तरफनी मिजमानी स्वीकारी. ता. २७ मीए गुलमर्ग पधार्या, ए स्थळ घणुंज सुंदर छे. ता. २८ मीए अश्व पर आरूढ थइ आप ठाकोर साहेबश्री लाखाजीराज वगेरे मंडळ सहित खीलनमर्ग गया त्यारे त्यां पण बरफ पुष्कळ हतो. ए स्थळ समुद्रनी सपाटीथी ११००० फीट उंचुं आवेलुं छे. ता. ३० मेना रोज आप सर्व पाछा श्रीनगर पधार्या. ता. ३१ मी मेए काश्मीरना महाराजा साहेबनी मुलाकात लइ ता. २ जी जुने जेलम रस्ते बारामुल्ला जवा रवाना थया अने ता. ६ जुने त्यां पहोंच्यां. आजुबाजुनां समग्र रमणीय स्थळोनुं निरीक्षण करी ता. ७ मीए टांगा मार्गे बारामुल्लाथी गयाण करी ता. ९ मीए रावलपींडी आव्या अने एज दिवसे त्यांथी लाहोर तरफ प्रयाण कर्युं. ता. १० मीए कुशळता पूर्वक काश्मीरनी सफर करी लाहोर पहोंच्या. ता. ११ मीए राजकोटना नामदार ठाकोरसाहेब जुदा पडी वतन तरफ विदाय थया अने आप नामदार सीधा मुंबइ पधार्या, त्यां ता. १४ मीए पहोंचो एक अठवाडीयुं रह्या अने ता. २१ मीए कार्यव-

शात् पूना तरफ प्रयाण कर्युं, पूनामां सात दिवस रही ता. २९ मीए पाछा मुंबइ पधार्या अने ता. २ जी जुलाइना रोज त्यांथी रवाना थइ ता. ३ जीए वांकानेर आवी पहोंच्या. ए वर्षना भिन्न भिन्न मांगलिक प्रसंगे म्हारा तरफथी नीचे मुजब आशीर्वादात्मक काव्यो निवेदन करवामां आव्यां हतां.

बेसतुं वर्ष.

" छन्द हरिगीत "

मंगलतणा उत्सव महद्थी राजगृह राजी रहो,
भूमंडले भ्राजी रहो गुण आपना गाजी रहो;
पाळो प्रजाने पूर्ण प्रेमे हृदय राखी हर्षमां,
नित्यें नविन सुख पामजो अमरेश नूतन वर्षमां. १

झाझो सुयश झळराण पूरा प्रेमथी प्रसरावजो,
शिर शौर्यथी प्रतिपक्षीओनां नीतिवंत नमावजो;
दिन दिन अधिक दिनकर सरीखी दिव्यता लहीं दर्शमां,
नित्यें नविन सुख पामजो अमरेश नूतन वर्षमां. २

छो वीर वांकानेरना वासव तमे वसुधापरे,
पेखी प्रभाकर सम प्रताप उलूक अधम दिलें डरें;
पारसतणी प्रभुता प्रकाशो आपना करॅस्पर्शमां,
नित्यें नविन सुख पामजो अमरेश नूतन वर्षमां. ३

सद्गुणतणा सागर सुशोभित न्यायी आप नृपाल छो,
बळवान बहुज विवेकवाळा विनय हरिना बाळ छो;
चित राखीने नथुराम चाहें आर्यना उत्कर्षमां,
नित्यें नविन सुख पामजो अमरेश नूतन वर्षमां. ४

दोहा.

नविन वर्षमां नविन मुद, अमरभूप अभिराम;
आपे अभिनव आनने, स्नेहें सुंदरश्याम. ५

सालगिरा महोत्सव.

" कवित्त "

मंगल निनाद श्रोन श्रोनमें परत आइ,
आनँदके ओघ भोन भोनमें भरत है ॥
कवि नथुराम यह महिमा वखाने कोन,
विप्रवृन्द आशिष अनेक उचरत हे ॥
बक्रपुरवासी जन मनकों वनाइ मस्त,
धाम अभिराम धरातलमें धरत है ॥
आज महाराज अमरेशकी बरसगांठ,
मुदित महान कोटि जनकों करत है ॥ १ ॥
बंकपुर नाथ पाओ परम प्रमोद वीर,
द्विज सुरभिके सदा काटिके कलेश तुम ॥
कवि नथुराम खल खगनके वाज वनि,
पाज पुन्यहूकी बांधो मुदके महेश तुम ॥
अरि गजराजपें महान मृगराज ह्वेकें,
कीरतके काज करो छितिके सुरेश तुम ॥
जयके जहाज महाराज सुखसाज साजि,
उम्मर दराज बनो राज अमरेश तुम ॥ २ ॥

वि-सं. १९६६ ता. ७-२-१० ना रोज मांडावाळा राणीजी साहेवनो शोकजनक स्वर्गवास थतां राजकुटुम्बमां तेमज प्रजावर्गमां अपार दिलगीरी फेलाइ. ए राठोडराणीना स्मरणार्थे आप नामदारे रु. २५ नी मासिक स्कॉलरशीप स्थापी. वाद नामदार शहेनशाह एडवर्ड ७ मानी वेहेस्तनशीनीना शोकजनक समाचार ता. ७-५-१० ना रोज मळतां शिरस्ता मुजब शोक पाळ

वामां आव्यो. एज वर्षमां आपश्रीए वांकानेरथी राजकोट जवा आववा माटे खखाणा सूधीनी मोटर सडक बंधावी तेमज वांकानेर अने राजकोटनी सरहद वच्चे बन्ने राज्यना परस्पर आन्तरिक स्नेहनी यादगीरी खातर एक बंगलो बंधाववानो शरुआत करी; अने तेनुं खर्च उभय राज्य तरफथी सम-भागे वहेंचो लेवामां आव्युं. एक बीजानी सरहद्पर रहेला राज्योमां अन्योन्य आवो स्नेह हजु-सूधी क्यांइ पण जोवामां के सांभळवामां आव्यो नथी. परमदयाळु परमेश्वर ए स्नेह कायम राखी अन्य राजाओनां अन्तःकरणमां पण एवी स्नेहभावना स्थापे एवुं कयो हतभाग्य नहीं इच्छे ? वळी गतवर्षमा आरंभेलुं श्री बालकृष्ण हवेलीनुं काम पूर्ण थतां श्रावण शुदि ५ ने दिवसे म्होटी धाम-धूमथी वास्तु करवामां आव्युं अने श्रावण शुदि ६ ने दहाडे मानवंता बामासाहेबना ठाकोरजी श्री बालकृष्णलालजीने वाजते गाजते त्यां पधराव्या. ए मांगलिक प्रसंगे जामनगरना महाराजा जाम श्रीरणजीतसिंहजी बहादुर, राजकोटना ठाकोरसाहेब श्रीलाखाजीराज बहादुर तेमज फैबाश्री बदु-बासाहेब वगेरेए अत्यन्त आनंदथी हाजरी आपी हती.

ए वर्षमां जुदे जुदे प्रसंगे म्हारा तरफथी निम्नलिखित कविताओ निवेदन करवामां आवी हती.

विजयादशमी.

कवित्त.

आज दिन दिव्य कैसो विजयादशमीको है,
ठोर ठोर आँनंदको उदधि छल्यो अमाप ॥
कवि नथुराम पायो मंगल उदे महान,
अहित अमंगलके अंगपें लगाई थाप ॥
वक्रपुर शक्र ! हम आशिष उचारत हें,
राउरो रसिक वर प्रवल बढो प्रताप ॥
विजय विसेस पाओ विविध वसुंधरापें,
उम्मर दराज महाराज अमरेश आप ॥ १ ॥

न्यायके निधान मतिसागर महान त्योंजु,
गुरुसम ज्ञानवान मोदके महेश आप ॥
कवि नथुराम कामरूप सुखधाम लसो,
विजय बढावन त्यों काटन कलेस आप ॥
जबर जयन्तसें कुमारश्री प्रतापसंग,
परम प्रभासों सने छितिके सुरेश आप ॥
साजिकें सवारि चले आज सामि पूजिवेकों,
उम्मर दराज महाराजअमरेश आप ॥ २ ॥
ऐरावतसें उतंग महद मतंगजपें,
बैठि अप्रमेय श्रेयहुसों सरसावते ॥
कवि नथुराम तरसावते अरिगनकों,
बक्रपुर बीच मुदमेह बरसावते ॥
ईश्वरके अंश झालावंशके विभाकर है,
सज्जन सरोजनके हिय हरसावते ॥
सोहत अमरनृप कुँवर प्रतापसंग,
इन्द्र ओ जयन्तसी द्युतिकों दरसावते ॥ ३ ॥

सवैया.

केहरिसे बनि या कलिमें, खल मेंगलनकों बिनदेर बिदारे;
त्यों नथुराम पिछानी प्रभाकर, तेज बिहीन भये रिपु तारे;
सज्जनवृन्द सराहत है, अरु अग्रज आशिरवाद उचारे;
श्रेय लहो अमरेश सदा, मखवान महान महीप हमारे ॥ ४ ॥

बेसतुं वर्ष.

मनहर.

पाळी धर्मपादप, अधर्म तृण टाळी अने,
माळी बनी खंते प्रजा बागने खिलावजो;
कहे नथुराम धरी हाम करी काम रुडां,
भूप भाग्यशाळी वनमाळीने रिझावजो.
कंटक तरु समान कुटिलनां कापी मूळ,
विद्या कल्पवल्लीने, विगतेंथी वावजो;
अमर नरेश! दिव्य झाला कुळना दिनेश,
हर्षमां हमेश वर्ष नविन वितावजो. १

झाणा मकवाणा सदा आपने उमंग धरी,
आशिषनां वचनोंथी विबुधो वधावजो,
नित्य नथुराम नरपाळ हरपाळ वंशे;
विनय हरिना बाळ, श्रेयथी सुहावजो,
आपना कुमारश्री प्रतापसिंह आप पेठे;
मेळवी सुयश बळ बुद्धिनुं बतावजो,
अमर नरेश! दिव्य झाला कुळना दिनेश.
हर्षमां हमेश वर्ष नविन वितावजो. २

ध्यान धरी लीधुं धर्मतणुं धर्मवीरपणुं,
अर्जुननी युद्धकळा एकठी करी अति,
नक्की नथुराम ग्रह्युं भुजबळ भीमतणुं,
जेणे करी दुष्ट दुरयोधननी संहृति;
श्रेष्ठ अश्वविद्या संग्रहीने सहदेव तणी,
नकुलनो भ्रातृभाव मेळवी महामति;
प्रभुए समेटी पांच पांडवोना सद्गुणोने,
बुद्धिथी बनाव्या अमरेश अवनिपति. ३

महद मतिथी नित्य नरपति मडळमां,
प्रबळ फतेहनी पताका फरकावजो;
कहे नथुराम नेह निर्मळ निभावी नृप,
आश्रितना अंतरमां आनंद उपावजो;
राखी प्रीति नीतिपरे, मेळवजो जीत महा,
भली रीतभातथी भला जनने भावजो;
अमर नरेश! दिव्य झालाकुळना दिनेश,
हर्षमां हमेश वर्ष नविन वितावजो. ४

दोहा.

पालक सुरभि संतना, प्रीतें सहपरिवार,
नविन वर्षमां अमर नृप, आनंद लहो अपार. ५

ता० २२–१०–१० आश्विन वदी ४ शनिवारे परम वैष्णव धर्मपरायण मानवंता बामा साहेब, बाश्री मुळीबा साहेब तथा महाराज कुंवरीश्री तख्तकुवरबा साहेब व्रजनी यात्रा अर्थे पधार्यां. साथे मामा साहेबनां म्होटां वहु तथा पुत्री सज्जनकुंवरबा, प्राइवेट सेक्रेटरी मी० रतशा वेजनजी, चीफ मेडीकल ऑफीसर मी० गजानन झीणाभाइ तथा आरब अने वडारणो वगेरे मळीने लगभग त्रीश माणसो हतां, ता० २४ मी अक्टोबरे नामदार बामा साहेब सर्व मंडल सहित सवारना दश वज्याने सुमारे मथुरा केन्टोल्मेन्ट स्टेशने कुशळतापूर्वक पहोंच्यां; त्यां अगाउथी गाडी वगेरे सर्व वाहनोनी गोठवण करी राखी होवाथी तेमां बेसी सर्व उतारे आव्यां. उतारो बंगाली घाट उपर पालीताणावाळा गोर चोबा गिरधर मुरारीवाळी धर्मशाळामां राख्या हतो. तेमां जनानानी मर्यादा जळवाय एवा सुंदर जुदा जुदा विभागो छे. ता० ५ मी नवेम्बरे प्रभातमां श्रीव्रजचोराशी कोशना परिक्रमण अर्थे मथुराथी प्रयाण करी मानवंता बामा साहेब तथा बाश्री मूळीबा साहेब वगेरेए प्रथम विश्रामघाट उपर अत्यंत श्रद्धाथी स्नान कर्या बाद पगेपाळु चालवुं, भूमिपरशयन करवुं, मस्तके तैल न नाखवुं, मस्तक तेमज अन्य अंगोपर सुगन्धि अथवा एवी बीजी कशी चीज चोळीने न न्हावुं; तथा हमेशां एकभुक्त रहेवुं अर्थात् एक वखत जमवुं इत्यादि नियमो लीधा. परिक्रमामां रोज बे चार कोश प्रातःकालमां चाली बगवाळा स्थाने पडाव नांखी आसपास देवदर्शन करी मोडी रात सूधी

भगवतभजन करता अने पाछा उषाकालमां ठंडा पहोरना आगळ चालतां हतां. रस्तामां यथोचित पुन्यदान करता करतां मथुराविश्रामघाटे आव्यां. आ स्थळे व्रज चोराशी कोशनी परिक्रमा पूरी थवाथी गोरने तेमज अन्य द्विजगणने सुदक्षिणा आपी प्रथम लीधेल व्रतथी मुक्त थयां. त्यारपछी ता. ३–१२–१९१० ना रोज सवारमां पाछा विश्रामघाट उपर पधारी श्री यमुनाजीनुं पान कर्युं. त्यां वस्त्राभूषणोथी शणगारेली सुखशय्या यमुनाजीने धरावी गोरने श्रीकृष्णार्पण आपी पुनः विप्रोनो तेमज व्हाला संतोनो योग्य दान आपी सत्कार कर्यो. वळी अकेक गाय खरीदी मानवंता बामासाहेब तथा बाश्री मूळीबासाहेबे तेमने कामधेनु तुल्य शणगारी पुरोहितने पुण्यार्थे प्रदानमां आपी. त्यांथी ता. ५–१२–१९१० ना रोज रात्रे रेल्वे रस्ते सर्व रवाना थइ ता. ६–१२–१९१० मंगलवारे आठ वाग्ये अजमेर उतर्यां. त्यांथी चार कोश उपर आवेला श्री पुष्करराजनां दर्शन करी रात्रे दशवागे सलूनमां बेसी सुखशान्तिथी यथाविधि व्रजयात्रा करी बीजे दिवसे एटले ता. ७–१२–१९१० बुधवारना रोज रात्रे आठवाग्ये वांकानेर पधार्यां. ते वखते आपे पोताना पुरवासीओ,अमलदारो, रिसालो, पोलीस पल्टन तथा वैष्णवोनो मंडली सहित गाजते वाजते सामैयुं करी रंगबेरंगी ध्वजा पताका तथा रोशनीथी रम्यताने धारण करी रहेला वांकानेरमां पूज्य मातुश्रीनी पधरामणी करी.

आंग्ल भूमिना पाटनगर लंडनमां ता. २२–६–११ ना रोज शहेनशाह ज्यॉर्ज धी फीफ्थने पोताना प्रतापी पूर्वजोनी गादीपर अभिषिक्त करवामां आव्या. ते मांगलिक दिवसे वांकानेर तळपद तेमज तावाना सर्व गामडाओमां जाहेर तहेवार पाळवामां आव्यो हतो. निशाळो तेमज कचेरीओ बंध राखवामां आवी हती. ते दिवसे प्रभातमां बादशाही सलामतीनी ३१ तोपोना बहार करवामां आव्या हता. त्यारबाद परेडग्राउन्ड उपर रिसाला स्वारनी रीव्युं तथा पोलीसनी कवायत अने फ्युडीजोयना केटलाक बहार जोवाने आप नामदारश्री अधिकारी, भायात तेमज व्यापारी वर्ग सहित पधार्या हता. वळी आप नामदारश्रीना फरमान मुजब समस्त प्रजाए पोतपोताना मंदिरोमां इष्टदेवनी प्रार्थना करी. नामदार मलिके मु. शहेनशाह तथा शहेनशाह बानुनुं दीर्घायुष्य, सुखशान्ति तथा आबादी इच्छवामां आव्यां हतां. ए उक्त निमित्ते विद्यार्थीओने पण शाळामां ईश्वरप्रार्थना करावी मीठाइ वहेंचवामां आवी हती.

ए दरमियान एजन्सीनी हदमां धंधुका पासे आवेलो खस्ता नामनो महाल के जे घणां वर्षो थया वांकानेरनी हकुमत तळे छे. त्यांना लोको जे जमीन खेडता ते जमीनना तेओ शिर-

जोरीथी स्वतंत्र मालिक बनवा राज्यथी विरुद्ध वर्तवा लाग्या. एथी वि. सं. १९६० ता. १९–९–१९०४ ना रोज अमदावाद फर्स्टकलास सबजज साहेबनी कोर्टमां लडत शरु थइ हती. ए लडत आशरे साडात्रण वर्ष चाली, तेमां छेवटे ता. ३–६–१९०८ ना रोज आप नामदारनो विजय थयो छतां प्रतिपक्षोओए मुंबइनी हाइकोर्टमां अपील करी. त्यारबाद कोइ सुज्ञजने तेओने समजुती आपी के तमो ठेठ पार्लामेन्ट सुधी लडशो तोपण फावशो नहि कारण के अंते साचुं ते साचुं अने खोटुं ते खोटुं छे. नाहकना नाणा शा माटे गुमावो छो? आथी नरम पडेला खस्ताना खेडुतोए ता. १७–११–१९१० ना रोज अपील पाछी खेंची लीधी. पछी आप नामदारे जमीन कबजे लेवा बाबतना जुदा जुदा ६६ दावाओ अमदावादनी सबजज कोर्टमां अने ३२ दावाओ धंधुकानी मामलतदारनी कोर्टमां दाखल कराव्या. ए तमाम दावाओ वि. सं. १९६७ मां आपश्रोना लाभमां थया. ए काममां तथा राज्यहक्क तेमज राज्योन्नति संबंधी बीजां दरेक कार्योमां मुख्य कारभारी श्रीयुत नाथाभाइ अवीचलदास देशाइए महान परिश्रम उठावी आप नामदारनी उमदा सेवा बजावी छे अने हजु बजावे छे.

संवत १९६८ ना बेसता वर्षने दिवसे म्हारा तरफथी निम्नलिखित कविता बोलवामां आवी हती.

दोहा.

पामो पूर्ण प्रताप, अमरभूप आनंदथी,
अभिनव वर्षे आप, अभिनव विभव वधारजो.

सवैया.

मंगळमोद महान ग्रही, सुविनोदथी वासर सर्व वितावो;
कार्य अनंत करी कीरतिमय, शत्रु समाजतणां तन तावो;
श्रीअमरेश नृपाल अनुपम, धर्मध्वजा करमां नित्य धारो;
नेह धरी नवले वरषें, नथुरामनी आशिष आप स्विकारो. १

पूरण प्यारथी पाळो प्रजा, प्रजपालकनुं पद पूर्ण दिपावो;
धर्म प्रकाश करी धरणीपर, ध्वांत अधर्मनुं हाल हठावो;
संत सुरोनी सहाय करी, अमरेश असंत असुर संहारो;
नेह धरी नवले वरषें, नथुरामनी आशिष आप स्विकारो. २

राजी करो सहु रैय्यतने नृप, शीतल चंद्र समा बनी चारु;
शत्रु शिरे वनी सूर्य तपो, करवा सुख नीचतणुं सहु न्यारुं;
पालन पंडिततुं करीने, अमरेश अपंडितना मद मारो;
नेह धरी नवले वरषे, नथुरामनी आशिष आप स्विकारो. ३
एकद्रगे धरजो नृप अमृत, एकद्रगे धरजो विष व्हाला;
नेक अने वदमाणस छेक, दियो निरखी नित्य अमृत हाला;
गर्दभने शिर भार भरो, हय उपर जीन जडित्र सु धारो;
नेह धरी नवळे वरषे, नथुरामनी आशिष आप स्वीकारो. ४
उन्नत कोट अपार चणो, यशना अति अंबरथी अडनारा;
गंग समान उमंग भरी, चलवो धरणीपर धर्मनी धारा;
चित्र विचित्र चमत्कृतियुक्त, सुमंगल सुकृतिना शणगारो.
नेह धरी नवले वरषे, नथुरामनी आशिष आप स्विकारो. ५
व्हादुर वन्दी मराल मनोहर, देश विदेश विषे विचरावो,
श्वेत करी वसुधायशथी फरी, दिग्गजनां शिर श्वेत बनावो;
विक्रम भोज युधिष्ठिरनी कृति श्री अमरेश घडी न विसारो,
नेह धरी नवले वरषे, नथुरामनी आशिप आप स्विकारो. ६
शक्रशची सम दंपती आप, मनोहर मंदिरमां सुख माणो,
श्री युवराज प्रतापी प्रताप महंत जयंत समा उर आणो;
सर्व कुटुंबनी संग उमंगथी, वक्रपुरेश करो सुविहारो,
नेह धरी नवले वरषे नथुरामनी आशिप आप स्विकारो. ७
छांय करो कवि कोविदने शिर हेत धरी करी हाथ हुमायु,
सर्व रहो सुखशान्ति मही वनी श्री युवराज समेत शतायु;
पूर्ण प्रकाशी रहो रजनी दिन, श्री अमरेश प्रताप तमारो,
नेह धरी नवले वरषे नथुरामनी आशिप आप स्विकारो. ८

दोहा.

अमर कीर्ति अवनिपरें, अमरपुत्र परिवार,
अमर भूपति अमर सम, जीवो वर्ष हजार.

कोरोनेशन दरबार उपर ता. ३० नवेंबर १९११ ना रोज अत्रेथी योग्य रिसाला सहित नीकळी ता. २ डीसेंबर १९११ ना रोज आपनामदारश्री दिल्ही पहोंच्या. अगाउथी आसी. एन्जीनीयर जादवजी अमुलखने केटलाक माणस साथे मोकली बॉम्बे चीफना बीजा ब्लॉकमां कॅम्पनी सर्व सगवडता करी राखवामां आवी हती; अने तेज तारीखे मलीके मु. शहेनशाह तथा शहेनशाह बानुनी मुंबइ बंदरे पधरामणी थवानी होवाथी ते दिवसे अत्रे तळपदमां जाहेर तहेवार पाळवामां आव्यो हतो. तेमज ता. ७ थी ता. १२ डीसेम्बर १९११ सुधी कोरोनेशन दरबारनी खुशालीमां जाहेर तहेवार पाळवामां आव्या हता; अने तेज तारीखे मलीके मु. शहेनशाहनी दिल्हीखाते पधरामणी थइ हती. राजा महाराजाओ सहित एक भभकादार स्वारी स्टेशन उपर गइ हती तेमां आप नामदारश्रीए पण हाजरी आपी हती. मलीके मु. शहेनशाहे करेली गार्डनपार्टी, पचीस हजार लश्करी सिपाइओनी कवायत अने पोलोटुर्नेमेन्ट विगेरेमां भाग लइ आपश्रीए आनंद मेळव्यो हतो. ता. ९ डीसेम्बर १९११ ना रोज खास आमंत्रणथी मलीके मु. शहेनशाहनी मुलाकातनो तथा शहेनशाही खाणानो लाभ मळ्यो हतो.

ता० १२ डीसेम्बर १९११ ना रोज जे दिवसे दरबार भरावानो हतो, ते दिवसे प्रातःकाळमां पोस्ट मारफत के. सी. आइ. इनो खिताब आप नामदारश्रीने समर्पण थयाना शुभ समाचार सांभळतां अभिनव आनंदनो सर्वत्र प्रादुर्भाव थयो. त्यार बाद दरबारमां जइ अन्य भूपतिओनी पेठे मलीके मु. शहेनशाह तथा शहेनशाह बानुनी सलामी लीधी. ते दिवस तलपदमां पण एक महोत्सव तरीके उजववामां आव्यो हतो. बपोरे बार वागे मलीके मु० शहेनशाहबानुनी तस्वीरो गामडामां तेमज तलपदमां सर्व कोइ जोइ शके तेवी रीते राखवामां आवी हती. त्यार पछी बादशाही ढंढेरो वांची संभळाववामां आव्यो हतो. ते समये बादशाही सलामतीनी १०१ तोपोना बहार करवामां आव्या हता. सांजना त्रण वागे तलपदमां आ. डेप्युटी कारभारी मी. अभेचंद गोवींदजी देसाइना अध्यक्षपणा नीचे आ० एज्यु. सेक्रेटरीए तळपदनी शाळामां अभ्यास करता विद्यार्थीओ तेमज कन्याओने आशीर्वचननी कविताओ बोलाव्या बाद कोरोनेशन मेडल आपीने मीठाइ वहेंचवामां

आवी हती. गामडाओमां पण मुख्य महेताजीद्वारा सर्व व्यवस्था करवामां आवी हती. तेज रात्रिए आप नामदारश्रीने के. सी. आइ. इ. नो खिताब मळ्याना अत्रे तारथी शुभ वर्तमान मळतां प्रजामां आनंदनो अत्यंत आविर्भाव थयो. बीजे दिवसे ता० १३–१२–११ ना रोज डेप्युटी कारभारी अभेचंद गोविंदजी देसाइ तरफथी अमलदार सहित प्रजा समस्तने आपश्रीने मळेल खिताबनी खुशाली अर्थे टीपार्टी आपवामां आवी.

ता० १४ डीसेम्बर १९११ ना रोज राते सम्राट् शहेनशाहे स्वहस्ते आप नामदारश्रीने के. सी. आइ. इनो चांद एनायत कर्यो. त्यारबाद लींबडी, लखतर, रतलाम, शायपुरा, जामनगर, किसनगढ, मांडा, भावनगर, ध्रांगध्रा, झालरापाटण आदि शहेरना भूपतिनी भावथी मुलाकात लीधी. तेज प्रमाणे तेओने पण आप नामदारे पोतानी मुलाकातनो लाभ आप्यो. स्नेही राजकोट ठाकोर साहेबना समागमथी वारंवार आनंदमां वृध्धि थती हती.

ता० १६ डीसेम्बर १९११ ना रोज रवाना थइ राव बहादुर नाथाभाइ अत्रीचलदास देसाइ, मामा साहेब दीपसिंहजी विभाजी, सोराबशा कावशजी कलबवाळा एजन्ट वगेरे ८५ माणसो ता. १७ मीए बारोबार वांकानेर आव्या; अने आप नामदारश्री मुंबइ पधार्या, त्यां वाणिज्यार्थे वसती आपनी प्रेमी प्रजाए रुपेरी दाबडामां उमदा मानपत्र आपी हारतोरा वगेरेथी पोतानी राजभक्ति प्रदर्शित करी. ते स्वीकारी आप श्री ता० २७ डीसेम्बर १९११ ना रोज अत्रे पधार्या.

संवत १९६८ ना पोष शुद ११ ने सोमवारना रोज आपश्रीना जन्ममहोत्सव प्रसंगे म्हारा तरफथी आ "श्री झालावंशवारिधि" (समस्त झालाकुळनो इतिहास) नामनो ग्रन्थ आप नामदारने अर्पण करवामां आव्यो. तेनी कदर करीने मने रु. ३०० नुं वर्षासन करी आप्युं तेमज म्हारा शिष्य कवि केशवलाल श्यामजी वारोटने रु. २५० नुं उमदुं पारितोषिक बक्षी बन्नेने झरीआन पोशाकथी आप नामदारश्रो नित्राज्या. त्यार बाद म्हारा तरफथी निम्न लिखित आशीर्वादात्मक कविता बोलवामां आवी हती.

छप्पय

सित एकादशी सुभग पोषकी परम प्रभामय
दानी अमरकोंदेहु जगतमें विनसंशय जय

वरस वरस प्रतिसरस रंगको सागर रेलत,
वर्षग्रन्थि नथुराम भूपकी फलि मुद फैलत
वक्रपुरीमें शतवरस, शोभा एसीसनी रहो
शक्रसरिस यहसाहिवी, वहुदिन तलक वनी रहो ॥

कवित्त

वरन मिले न कैसें कियो जाय वरनन,
दीपोत्सवीतें दिखात दिव्यतामें दोगुनी ॥
त्रिगुनी है तंतविन अक्षय तृतीया हू तें
त्यों गनेस चोथतें है चित्तहर चोगुनी ॥
कविनथुराम आठगुनी जन्मअष्टमी तें
मुदप्रदमानो रामनवमीतें नों गुनीं ॥
आज महाराज राजराना अमरेशजुकी,
सालगिरा सोहे और उत्सवतें सोगुनी ॥ २ ॥
संतहानि हरिवेमें, ढाल आसि धरिवेमे,
असुरको अंत करिबेमें उतसाहिनी ॥
कवि नथुराम सिद्धिभक्तभोंन भरिलेमें,
आतुर रहत मुदउत अवगाहिनी ॥
किंकरको कोमल ओ पापीको प्रचंड छवि,
जाहिर जताइ दल दुष्टनके दाहिनी ॥
रच्छक है वही दच्छ राजराना अमरकी,
रेनहार वरकी सदैव सिंहवाहिनी ॥

छप्पय.

चरन चरन चतराइ, स्मरनहै सब साहितको,
वरन वरनपरसदा, चलन है अपुरव चितको ॥
नित्य वसत नथुराम, कौमुदी मनहर मुखमें,
अलंकार सज अमित, स्नेहसों बिलसत सुखमें ॥
भूरि नायिकाभेदमें, सुज्ञ सुभट वर छत्रहै,
उत्तम कवि नरपति अमर, पूर्न प्रशंसा पात्रहै ॥

तेज दिवसे साजे आपश्रीनी प्रेमाळ वस्ती तरफथी हाइस्कुलना मकानमां आप नामदारश्रीने के. सी. आइ. इ. नो खेताव मळ्यानी खुशालीमां मेलावडो करवामां आव्यो हतो. तेमां प्रथम अमुक अमुक गृहस्थो बोली रह्या पछी महाजन समस्त तरफथी निम्न लिखित मानपत्र वांचीने चांदीनी कास्केटमां आपश्रीने ते अर्पण करवामां आव्युं हतुं.

गौब्राह्मण प्रतिपाळ महाराणाश्री
सर अमरसिंहजी बहादुर के. सी. आइ ई.

माननीय प्रजापालक महाराजा साहेब.

ता० १२ डीसेम्बर १९११ ना रोज नराएल दील्ही दरबारना चिरस्मरणीय शुभ प्रसंगे हिंदना नामदार शहेनशाह बहादुर ज्योर्ज धी फीफ्थना स्वहस्ते के. सी. आइ. नो मानभर्यो खिताब जे आप नामदारे मेळव्यो छे तेने माटे आपना राज्यभक्त समस्त प्रजा वर्गने मगरुवी साथे अति आनंद थयो छे; अने अमो सर्व ते माटे आपनामदारने अंतःकरणपूर्वक अभिनंदन आपवा रजा लइए छीए.

नामदार महाराणा साहेब, आपनी उत्तम प्रकारनी राजनीति तथा कारकीर्दिनी जे कदर करीने आ अपूर्व मान नामदार ब्रिटीश सरकारे आ इलकाब एनायत करीने आप्युं छे तेने माटे अत्यंत आनंद अने मगरुवीना जे भाव अमारा सौना हृदयमां उछळी रह्या छे; ते यत्किंचित् प्रदर्शित करवानो आ अति उत्तम अने पहेलोज प्रसंग अमने मळ्यो छे, तेने माटे अमे अमारां अहोभाग्य समजीए छीए.

आवां मानपत्र जेवा एक अति नम्र प्रयत्नमां भाग्येज गणावी शकाय एटला, अने एकज राजकर्तानी अंदर भाग्येज जोवामां आवता अपूर्व गुणसमुदायने लीधे राज्यनांनी प्रत्येक व्यक्तिना हृदयमां शाश्वत स्थान आप नामदारे प्राप्त कर्युं छे तेमां सहेज पण आश्चर्यनी वात नथी.

राजकुमार कॉलेजमां उत्तम पंक्तिना कुमार गणाइ मे. मेकनॉटन साहेब जेवा प्रिन्सिपालोना हाथ नीचे प्राप्त करेली केलवणी हिंद तथा युरोप आदि देशोमां मुसाफरी करवाथी ते केळवणीने मळेलो ओप, तेमज आप नामदारश्रीनी सगीर वयमां राज्यनी सरकारी देखरेखना समयमां प्राप्त करेल अनुभव—आ सर्वनो स्वाभाविक लायकातने लीधे आप नामदारे संपूर्ण सदुपयोग कर्यो छे अने तेथीज जे उंची आशाओ हरकोइए प्रथमथी बांधेली ते सर्वने आप नामदारे दरेक प्रकारे परिपूर्ण करेली छे.

सत्य अने न्याय प्रत्ये प्रेम, पूर्व-पश्चिमना सद्गुणोनी संवादी एकत्रता, हाइस्कुल जेवी संस्थाथी, मोटी मोटी स्कॉलरशीपोथी तथा प्राथमिक केळवणी मफत करवानां स्तुत्य पगलांथी केळवणी प्रत्ये स्पष्ट रीते जणाइ आवती दिलसोजी एटले के प्रजा प्रत्ये ममता एशआराम जता करीने राज्यने लगती दरेक बाबत जाते जोवानी खायेश, जाते काम करी अथाग श्रम सहन करवानुं धैर्य, लोकोपयोगी काम पाछळ राज्यना महेसुलनो व्यय, वणकरोना तेमज अन्य उद्योगोने अमूल्य उत्तेजन, राज्य कर्ताना धर्म तथा जवाबदारीनो अति उंचो ख्याल अने गमे ते पंक्तिना माणसने गमे ते वखते जाते अरज हेवाल करवानी तक आपवानी इंतेजारी, आ अने एवा बीजा आप नामदारना अनेक अवर्णनीय नाना मोटा सद्गुणसमुहने लीधे राज्यनी आबादी अने प्रजा वर्गनी सुख समृद्धिमां अत्यार सुधी कदी न थएली जे वृद्धि थइ छे तेनो संपूर्ण कदर जे अमे भाग्येज करी शकीए ते नामदार ब्रिटीश सरकारे जाते करी बतावी छे; ए वात स्पष्ट रीते देखाइ आवे एवी छे.

जरा विशेष पडतु लंबाण करवा माटे आप नामदारनी क्षमा याचीने पण अमे कहेवानी रजा लइए छीए के संवत १९५६ नी सालनी अने आ वरसनी अनावृष्टिना प्रसंगे प्रजा समस्तने तेनो धक्को जेम ओछो लागे तेम करवा माटे जे सरलता भरी सगवडो आप नामदारे प्रजा वर्गने करी आपी छे, अने जे स्तुत्य पगलां आपे लीधेलां छे ते भायात, नोकरीयात प्रजा अने खेडुवर्ग ए सर्वनी स्थिति सुधारवा माटे एक पिता तरीकेनी जे काळजी आप धरावता आव्या छो

ते, अने छेवटे जे गुण एक इश्वरी अंश गणाय छे अने जेना विना कोइ पण प्रकारनी महत्तामां न्यूनताज गणाय एवो महान गुण जे दया ते, तेमज आप नामदारनी भव्य आकृति जे आंतर गुण समुदायना प्रतिबिम्ब रुप छे ते, अने छेवटे प्रजावर्गमां प्रिय थएला तथा राजनीति निपुण राववहादुर नाथाभाइ अवीचलदास देशाइ जेवा दिवानसाहेब के जेमनो अने आप नामदारनो अविच्छिन्न योग प्रथमथी ते छेक अत्यारसुधी प्रजानी सुखशांतिनां मोटां कारण रुप छे तेमने चुंटी कहाडवानी आप नामदारनी जातनी दीर्घद्दष्टि इत्यादि राजकर्ता तरीकेना आ सर्व गुण एवा छे के जेने माटे अमे जे कहीए के जे कंइ करीए ते सर्व ओछुज छे.

महाराणा साहेब, आपने जे उचा प्रकारनुं मान मळ्युं छे तेने माटे अमे पुनः एकवार आप नामदारने जीगरथी मुबारकवादी आपीए छीए, अने इच्छीए छीए के, आवां अन्य विशेष मोटां मानने पात्र आप नामदार भविष्यमां पण सर्वत्र गणाओ.

छेवटे जे अगाध प्रजाप्रेम आप नामदारे मेळव्यो छे तेनां करतां पण विशेष प्रेम मेळवी शकवा माटे आप नामदार अने आखां राज्यकुटुंबने प्रभु दीर्घायुष्य अर्पे, अने दिनप्रतिदिन प्रत्येक रीते आप नामदारनी वृद्धि थाय एम अमे सौ सर्व शक्तिमान, परमकृपाळु परमेश्वर पासे अंतःकरण पूर्वक प्रार्थना करीए छीए.

वांकानेर } अमे छीए,

सवत १९६८ ना पोष शुद ११ } **आप नामदारनी नम्र अने वफादार प्रजा.**

त्यारवाद आप नामदारश्रीए प्रत्युत्तरमां नीचे प्रमाणे जणाव्युं.

अमारी व्हाली, राज्यभक्त अने वफादार प्रजा !

तमारी सरळ अने राज तरफ शुद्ध लागणीथी उभरातुं मानपत्र स्वीकारतां अमने घणो आनद थाय छे अने तेमां तमे जे शुभेच्छा वतावो छो तेने माटे अमो खरेखरा आभारी छीए.

आजकाल योग्यायोग्यनो ख्याल कर्या सिवाय नाना मोटा दरेक प्रसंगे मानपत्रो आपवानो रिवाज एटलो बधो प्रचलित थएलो जोवामां आवे छे के तेनी जे प्रथम महत्ता गणाती ते अमारा मनमांथी तो घणे भागे ओछी थइ जवा पामी छे, अने तेथीज तमो विगेरेनी अमने मानपत्र आपवानी आ पहेलांनी वखतोवखतनी खायेशने अमाराथी स्वीकाराइ नहोती अने तमने नाउमेद

करवा पड्या हता. आ प्रसंगे पण तमारी आ इच्छा जगातां अमारी मरजी तो तेम थवा देवानी नहोती, परंतु अमारा दिल्हीथी अत्रे आवतां अवल तमे सर्व तैयारीओ पुगी करी राखी हती, अने तमो सर्वनी ए बाबतमां एटली बधी शुद्ध अने प्रबळ भावना जणाइ के अमारा मनने आथी संकोच थाय ते थवा दइने पण तमने आ प्रसंगे नाउमेद न करवा ए अमने वधारे ठीक लाग्युं.

तमे तमारा मानपत्रमां अमारा तरफ जे लागणीओ बतावी छे तेथी अमने जणाय छे अने आनंद थाय छे के जगत्कर्ताए अमारे माथे जे राजकर्तानी फरजो नांखी छे ते बजाववामां अमाराथी जे कांइ बन्युं छे तेथी तमने पूर्ण संतोष छे अने तमे सुखी छो. एक राजकर्ताने पोतानी प्रजा सुखी अने संतोषी होय तेनां करता बीजुं शुं आनंदकर्ता होय? राजा अने प्रजानो सबंध पिता पुत्रना जेवो छे अने तेमां मावतर पोतानी प्रजानां सुख तथा तेनी उन्नति माटे जेटलुं बनी शके तेटलुं करवा बंधाएल छे; अने अमे जे कांइ तमारे माटे करेलुं छे ते अमारी पवित्र फरजोने लइनेज करेलुं छे. अमने लागणी मात्र एटलीज थाय छे के दुकाळ अने ते पछीना नबळा वरसोने लइने अमाराथी अमारी इच्छा प्रमाणे बनी शकतुं नथी.

छेवट अमने जणाववाने अति हर्ष थाय छे के नामदार ब्रिटीश राज्य तरफ अमारी जे प्रमाणे दृढ वफादारी छे तेज प्रमाणे तमो सर्व पण परदेशमां रहीने तेम अही पण लागणी धरावो छो. वळी हालमां नामदार मलीके मु० शहेनशाह तथा शहेनशाहबानुना दिल्हीना कोरोनेशन दरबारना अति अनुपम अने महान प्रसंगे ते अवसरने योग्य उत्साहथी उत्तम प्रकारथी उजववामां अमने सहाय करी बतावी आप्युं छे के आपणे पण तेओ नामदार तरफ ब्रिटीश प्रजा करतां वफादारी तेमज लागणीमां कोइ रीते उतरीए तेम नथी. आथी अमने घणोज संतोष थयो छे, अने धणीनी इच्छा एज प्रजानुं कर्त्तव्य एम तमे स्पष्ट बतावी तमारी राज्यभक्ति सिद्ध करी आपी छे.

तमो सर्व अमारे माटे जे शुभ इच्छाओ बतावो छो ते माटे तमारो अमे जीगरथी पुनः आभार मानीए छीए; अने सर्व शक्तिमान प्रभुनी प्रार्थना करीए छीए के ते आपण सर्वनुं रक्षण करी तमने सदा सुख आपवा अने तमारी हरेक रीते उन्नति करवा अमने प्रेरी, जोइता साधनोनी अनुकूळता करी आपे.

आपश्रीनो प्रजा वात्सल्यतामय प्रत्युत्तर सांभळी सर्व कोइना अंतःकरण आनंदथी उभराइ गयां अने तालीओना अवाजथी सभाभुवन गाजी उठ्युं हतुं. आ उत्तम प्रसंग उपर म्हारा हर्षोद्गार नीचे प्रमाणे प्रदर्शित करवामां आव्या हता.

कवित.

अगनित आर्य औ अनार्य सम्राट् जहां,
पुन्यसों पसारि गये प्रवल प्रतापकों ॥
कवि नथुराम ऐसी हस्तिनापुरी में अब,
अंग्ल साम्राज्य तपे हरी सब तापकों ॥
आये देश देशके नरेशन निमंत्रनसों,
सुनि अमरेश ! तामें सुगुन अमापकों ॥
परम प्रवीन शे'नशाह ज्यॉर्ज पंचमने,
के, सी, आई, इको इलकाब दियो आपको ॥१॥

धन्य मखवान को न जानत जहान मध्य,
वडे बुद्धिमान बनेसिंहके कुमार तुम ॥
कवि नथुराम बांकानेरके नरेश बांके,
अहो अमरेश ! प्रजा वत्सल उदार तुम ॥
दिल्ही दरबारके अवर्णनीय उत्सवपें,
स्नेहसों सिधाये जन उत्तमके यार तुम ॥
भाये शे'नशाके मन छाये मुद पाये महा,
के, सी, आई, इको इलकाव आवदार तुम ॥२॥

लोचनकी लालिमा ओ मूछको मरोर तेरो,
देखिकें करोरगुने दुष्टजन डरपत ॥
कवि नथुराम बुद्धिआला तुव झालापति,
के, सी, आइ, इको चांद अंग्लपति अरपत ॥

कितने महिप ऐसो मान गहिवेके काज,
अबलों तृषातुरकीं न्हांइ उर तरपत ॥
राखि पत हिन्दके समस्त रजवारनकी,
धन्य अमरेश वांकानेरवाले नरपत ॥३॥
देहलीमें दिव्य वारा तारिख डिसंवरकी,
हिन्दकी तवारिखमें अविचल ह्वे गइ ॥
कवि नथुराम सन उन्नीसेंग्यारहकी,
गहन महत्ताछिति मंडलमें छ्वै गइ ॥
भंग बंगहूको विनमइ सवरइ करि,
लोनी साहिवींसों यश अनहद ले गइ ॥
आपको अमर ! ज्यॉर्ज पंचमकी पातशाही,
ओसरपें के, सॉ, आइ, इको पददेगई ॥ ४ ॥
बालवयहीसों गुन उत्तमके वोयेंवीज,
तरुनपनेमें वह्तरुपन पाये है ॥
कवि नथुराम भये शाखासों समृद्ध फिर,
प्रजा पालिबेतें नव पल्लवसों छाये है ॥
परी द्रगतापें शे'नशाह ज्योर्ज पंचमकी,
गौरवसें वहीं वृच्छ भूरि मन भाये है ॥
तामें के, सी, आइ, इके रम्य इलकावरूप,
अमर नरेश अब नीके फल आये है ॥ ५ ॥
शौर्य केंसरीसो कल्पतरुसो परोपकार,

समता करत न्याय सुरनदी नीरकी ॥
कवि नथुराम लसे धाम तुव कामसम,
सोहे जस समता गहीकें निधिछीरकी ॥
धरनीसो धैर्य ओ गभीर पन सागरसो,
विक्रमसी प्रथा हरनी है पर पीरकी ॥
अमर नरेश एक बरनी न जावे बात,
तुलना करोमें कहां तेरे तकदीरकी ॥ ६ ॥
हमें कहाकाज सत जुगको कहोमें सत्य,
जामें अमरेश ! नांहि जनम तिहारो है ॥
कवि नथुराम तुम पाये जन्म जा जुगमें,
वोही जुग सत्य अन्य कलि कलिबारो है ॥
कोऊ तुव जन्म कलिकालमें कहेतो फिर,
वोही कलिकालहमें प्रानसम प्यारो है ॥
पाओ दीर्घ आयु प्यारे आत्मज प्रतापसंग,
हितकर ऐसो आशीर्वचन हमारो है ॥ ७ ॥

चतुर्विंशत् तरंग.

छप्पय.

हर सरखा हरपालदेवना द्वितीय वालक;
मांगुजी महाभाग्य, थया पृथ्वीना पालक;
जाहिर गढजांबुनी, जबर चोराशी जमावी;
एना वंशनी राजगादी लींबडीए आवी;
अमर ! हाल ए कुळमहीं, दोलतनृप दुःखहरण छे;
मारे मन नथुराम सहु, झाला अमृतझरण छे.

राज हरपाळदेवजीने सोढोजी, मांगुजी, तथा सखेराजजी (शेखरोजी) नामना त्रण कुमार हता, तेमांना पाटवी कुमार सोढोजी पाटडीना गादीपति थया. मांगुजीने गाम जांबुनी चोराशी अने शेखराजीने सचाणा तथा चोरवडोदरा गरासमां मळ्युं. मांगुजीए वि-सं. ११८६ नी अंदर गढजांबुमां पोतानी राजधानी स्थापी. +

+ " श्रीयशवंतजीवनचरित्र " नामना ग्रन्थमां लखेलुं छे के " मांगुजीए वि-सं. ९१० थी ९५१ सुधी ४१ वर्ष राज्य कर्युं." आ वावत तेओए भाटना चोपडाने आधारे लखी छे एवुं जणावेलुं छे. परंतु श्री झालाकुळना वारोटना चोपडामां तो वि-सं. ११८६ थी १२०६ सुधी मांगुजीनो समय मानेलो छे. केटलाएक एम कहे छे के मांगुजीए वीश वर्ष पर्यन्त राज्य कर्यु हतुं, केटलाएक वि-सं. ११२६ मां मांगुजी हता एवुं जणावे छे. " हिन्दराजस्थान " मां वि-सं. ११८६ मां हरपाळनो स्वर्गवास थयानुं जणावे छे अने ए कदाच सत्य मानीए तो वि-सं. ११८६ थी सं. १२०६ सुधी वीश वर्ष मांगुजीए राज्य कर्यु ए हकीकत मळी आवे छे; श्री यशवंतजीवनचरित्रमां लखे छे के " मांगुजीने एक वखत कुतुबुद्दीन बादशाह साथे लडाइमां उतरवुं पड्युं हतुं ए वेळा तेओए धंधुकाना आशाभिल्लनी मददथी बादशाही लश्करने हरा-

H H The Thakore Saheb, Limbdi

कहे छे के पावरमांथी आवेला केटलाएक काठी लोकोए जांवुना प्रदेशमां जबरी लूंट चलावी, त्यारे महान प्रतापी मांगुजीए ए सर्वनो संहार करी पोतानी प्रजाने आपत्तिमांथी उगारी हती. तेओनो स्वर्गवास थतां तेमना कुमारश्री मधुपालजी उर्फे मुदोजी वि० सं० १२०६ मां गढ जांवुनी गादीए बेठा. सांभळवा प्रमाणे तेओनां लग्न जुनागढना कोइएक चुडासमा जातिना रजपूतनी कुंवरी साथे थयां हतां, तेनाथी धमळजी तथा गगाजी नामना बे कुमारनो जन्म थयो. ×

महाराज मधुपालजीना कैलासवास पछी कुमार धमळजीए गढजांवुनी राजगादीपर पाय धारण कर्यो. तेओना भाइ गगोजी भाग्यनी कसोटी करवा माटे शीरोइ तरफ गया अने त्यां "गांगागुडा" नामनुं गाम वसावी तेओए बाहुबळथी बार गामनी जागीर मेळवी; एना वंशजो "गांगाणी" कहेवाय छे.

श्रीमान् धमळजी बेराबळ पाटणना राठोड राजा पालजीनां कुवरी पद्मकुंवरबाने परण्या हता. ए वखते तेओने पालजी तरफथी सात गाम पहेरामणी तरीके प्राप्त थयां. ज्यारे तेओ गढ-

---

व्यु हतु." आमां लेखकनी जबरी भूल थइ लागे छे. कारण के गुलामवंशनो पहेलो बादशाह कुतुबुद्दीन ऐबक वि–सं. १२६२ थी १२६६ सुधी हतो. ए पहेलांना गोरी अने गजनवी कुळमां कोइ कुतुबुद्दीन नामनो बादशाह थएलो नथी.

संस्थान लींबडीना राज्यदरबारमां जे वंशावळीनो आंबो छे, तेमां जांवुनी राजधानी झालानरेश मांगुजीए वि–सं. ९१० मां स्थापी एवुं लखेलुं छे अने घणुं करी एनेज आधारे श्रीयशवंतजीवनचरित्रमां लख्युं छे के मांगुजीथी ओगणीश पेढी पर्यन्त अर्थात् नाना नागजी सुधी संवत्सर लखेला छे अथवा कल्पी काढेला छे, परंतु ए पछी अर्थात् नाना खेताजीथी लखेल संवत्सर श्री झालाकुळबारोटना चोपडाओमांथी मळता आवे छे. ए बाबतनी फुटनोट अमो नाना खेताजीनी हकीकत लखती वखते आपीशुं.

× श्रीयशवंतजीवनचरित्रमां गगाजीने "गांगोजी" एवुं नाम आपे छे अने ते मांगुजीना फटाया कुमार हता एवुं जणावे छे; तेमज तेमां लखे छे के गांगाजीए शीरोइ जइ त्यां गांगागुडा गाम वसाव्युं अने तेना वंशजो हजी पण त्यां छे.

जांबुमां राज्य करता हता त्यारे बादशाही फोजे त्यां आवी वारंवार अत्याचार करवा मांड्यो. धैर्यशाळी धमलजी पोता पासे पूरतु सैन्यबळ नहि होवाथी गढ जांबुमांथी चाल्या गया अने वेरावळ पाटणमां जइ पोताना श्वसुर पालाजीने त्यां जइ रह्या. त्यारबाद तेओए स्वकीय भुजबळथी समुद्रकांठे रहेलां ४१ गामोने स्वाधीन करी वि० स० १२१७ मां " धामलेज " नामे नविन गाम वसाव्युं अने त्यां पोतानी राजधानी स्थापी. ज्यारे बादशाही लश्कर जांबुथी जतुं रह्युं त्यारे धमळजी जांबु पधार्या. एना केटलाएक वंशजो अद्यापि समुद्रकांठे रहेला गामडाओमां निवास करे छे. तेओ " धामलेजीया झाला " कहेवाय छे.

वि० सं० १२२७ मां श्रीमान धमलजीनो स्वर्गवास थतां, तेओना कुमार काळुजी धामळेजनी गादीए बेठा, तेओए पांच वर्ष पर्यन्त प्रजानुं पुत्रवत् परिपालन करी वि० सं० १२३२ मां कैलासवास कर्यो, त्यारे तेओना कुमार धनराजजीने धामळेजनुं आधिपत्य प्राप्त थयुं. एओ आठ वर्ष सूधी राज्यसुखनो उत्तम प्रकारे उपभोग करी अक्षयधाममां सिधाव्या त्यारे अर्थात् वि० सं० १२४० मां तेओना कुमार लाखोजी धामळेजना धणी थया. ए धर्मात्मा धरापतिए लौकिक तथा पारलौकिक कार्यमां प्रवृत्त थइ सर्वोत्कृष्ट सद्गुणोथी प्रजाने अपूर्व संतोष आप्यो; तथा कायमने माटे कोठी कुंदणीमां तेमज जूनी राजधानी जांबुमां रहेवानुं पसंद करी वि० सं० १२४३ मां ते स्थळे राजगादी स्थापी. एओनी ओगणीश वर्षनी कारकीर्दीमां राज्य तेमज प्रजा उपर कोइ पण प्रकारनी आफत आवी न हती. वि० सं० १२५९ मां ज्यारे लाखाजीए परलोक प्रयाण कर्युं त्यारे तेओना कुमार भोजराजजी जांबु तथा कोठी कुंदणीना राजा कहेवाया. ए भोजराजजीना भुजदंड खळजनोना बळने खंडन करनारा हता. महिना मंडनरूप राज हरपालदेवजीना वंशमां उत्पन्न थएला ए वीरनरने कर्णसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी नामे बे कुमार थया. वि० सं० १२६४ मां श्रीमान भोजराजजी स्वर्गे सिधाव्या त्यारे ज्येष्ठ कुमार कर्णसिंहजी जांबु तथा कोठीकुंदणीना तख्तपति थया अने एथी न्हाना प्रतापसिंहजीने सात गामथी गाम " पराली " गरासमां मळ्युं.

शरणे आवेलाने अभयदान आपनारा श्रीमान् कर्णसिंहजीने आशकरणजी तथा रतनजी

---

१ धमलजीना समकालीन बादशाह गोरी सैफुद्दीन तथा ग्यासुद्दीन हता. श्रीयशवंतजीवनचरित्रमां धमलजीना वखतमां पण " दील्हीना बादशाह कुतुबुद्दीन इलके गढजांबु पर हुमला कर्या हता " एवुं लखेलुं छे. ए वात अमारा मानवामां आवती नथी.

नामना बे कुमार थया. वि–सं. १२७४ मां उदारता आदि सद्गुणोथी नामने अमर राखी न्यायो नृपाल कर्णसिंहजीए कैळासवास कर्यो त्यारे तेओना पाटवी पुत्र आशकरणजी जांबु तथा कोठी कुंदणीनी रमणीय राजगादीपर बेठा अने एथी न्हाना रतनजीने गरासमां सात गामथी गाम " पाणसीणा " मळ्युं.

अधम जनोने त्रास आपनार आशकरणजीए वीश वर्ष पर्यन्त विविध विळासमां दिवसो विताव्या, छतां राज्यनो उत्कर्ष करवामां तेओ रंच पण पछात रह्या नहोता, प्रपंचनी वात तेओने बिलकुल पसंद नहोती, सत्यपर स्नेह राखनारा ए आशकरणजीनो आत्मा ज्यारे ब्रह्ममां भळी गयो त्यारे अर्थात् वि–सं. १२९४ मां तेओना कुमार सांगोजी गढजांबु तथा कोठी कुंदणी-ना गादीपति थया, ए सागाजीने शेषमालजी (जन्मनाम सींगरामजी) तथा अखेराजजी नामे प्रतापशाळी उभय पुत्र हता. बापदादानी गादीनी आबादी करनारा शूरवीर सांगाजीनो वि–सं. १३१६ मां स्वर्गवास थतां तेओना ज्येष्ठ कुमार शेषमालजी जांबु तथा कोठी कुंदणीना श्रेष्ठ सिंहासनपर आरूढ थया अने एथी न्हाना अखेराजजीने पांच गामथी गाम "राहाक" गरासमां मळ्युं.

श्रीमान् शेषमालजीना समयमां लेश पण क्लेश न हतो, अजा तथा सिंहने एक घाटे जलपान करतां जोइ प्रजावर्गमा परम आनंद प्रसर्यो हतो. वि–सं. १३२५ मां ज्यारे ए नीतिवान नरेश परलोक प्रयाण कर्युं त्यारे तेओना कुमार सारंगजीए गढजांबु तथा कोठी कुंदणीना राज्यासनपर बेसी रैय्यतना मनने रंजन कर्युं. तेओने लाखाजी तथा भाराजी नामना बे कुमार थया. वि–सं. १३४२ मा सारंगजीनो स्वर्गवास थता लाखाजी बीजा गढजांबु तथा कोठी कुंदणीनो गादीए बेठा, तेओए चोवीश वर्ष पर्यन्त सन्त सुरभितुं संरक्षण करी वि–सं. १३६६ मां वैकुंठवास कर्यो त्यारे तेओना कुमार वजेराजजी तख्तनशीन थया. दीनजनोनां दुःखने दूर करनारा विजयशाळी वीरे माळीनी माफक प्रजारुपी उपवननुं अवन करी वि–सं १३८१ मां कैळासवास कर्यो त्यारे तेओना न्यायी कुमार नागजी गढजांबु तथा कोठी कुंदणीना शासनकर्ता थया + तेओए

+ " श्रीयशवंत जीवन चरित्रमां लख्युं छे. के ए नागजीए सीहाणी नामे चोराशी गामनो तालुको पोताना राज्य साथे मेळवी दीधो हतो, जेथी तेनेअमदावादना सुलतान अहमदशाह साथे जबरुं वैर थयुं हतुं. " ए अहमदशाह पहेलो होवो जोइए, कारणके बीजो अहमदशाह विक्रमना सोळमा सैकामां थएल छे कदाच पहेलो लेखीए तो पण

राज्यासनपर विराजमान थया बाद दश वर्ष सुधी बुद्धिवळे राज्य कर्युं. तेओने उदेभाणजी तथा लाखाजी नामना वे कुमार थया. ज्यारे रैय्यत माथे अपूर्व राग राखनारा नरपति नागजीए परलोक प्रयाण कर्युं त्यारे उदयभाणजी गढजांबु तथा कोठी कुंदणीनी राजगादीए अभिषिक्त थया अने एओना लघुबन्धु लाखाजीने गरासमां सात गामथी गाम " शावकुं " मळ्युं.

श्रीमान् उदयभाणजी महान् गुणज्ञ हता, तेओए पोताना बापदादाओनी माफक अमुक वखत जांबुमां अने अमुक वखत कोठीकुंदणीमां रहेठाण राखी प्राणनी पेठे प्रजानुं परिपालन कर्यु हतुं. जेथी एओनी आणने समग्र प्रजा वेदवाक्य समान प्रमाणती हती. वि. स. १४०१ मां आनंदमूर्ति उदयभाणजीनो स्वर्गवास थतां तेओना कुमार खेताजी तख्तनशीन थया अने तेओए कायम कोठीकुंदणीमां रहेवानुं राख्युं. तेओने भोजराजजी, नानाजी, दादाजी तथा भाराजी नामे चार कुमार थया. उदारवृत्ति वडे रैय्यतने राजी राखनारा खेताजीए वि. स. १४१५ मां कैलासवास कर्यो त्यारे कुमार भोजराजजी बीजा कोठीकुंदणीनी गादीए बेठा. एथी न्हाना नानाजीने गरासमां सात गामथी गाम "सीयाणो", दादाजीने पांच गामथी गाम "कटारीयुं" अने भाराजीने चार गामथी गाम " रळोळ " मळ्युं.

कविकोविदोने मनगमतो मोज आपनारा श्रीमान् भोजराजजी बीजाए अडसठ वर्ष पर्यन्त महान खंतथी प्रजानुं लालनपालन करी वि. सं. १४८३ मां परलोक प्रयाण कर्युं, त्यारे तेओना कुमार नाना नागजीए कोठीकुंदणीना राज्यनी लगाम हाथमां लइ पांत्रीश वर्ष पर्यन्त विविध प्रकारना राज्य वैभव भोगव्या अने प्रशंसनीय राजनीतिनुं अवलंबन करी प्रजाने अपूर्व संतोष आप्यो. वि. सं. १५१८ मां ज्यारे तेओ स्वर्गवासी थया त्यारे तेमना कुमार खेताजी बीजा कोठीकुंदणीना राज्यसिंहासन पर बेठा. रतिपति समान रमणीय आकृतिवाळा ए वीर नरनां विशाल नेत्रो राजपूतीना अभंग रंगथी निरंतर लाल रहेतां हतां, तेना भव्य भालमां विधाताए विजयनो लेख लख्यो होय एवी प्रतीति थती हती, ए प्रतापी पुरुषनी गति सिंहसमान स्तुतिपात्र, तेमज मरोडदार मूछ मनमोहक हती. संक्षेपमां एवा सर्वांग सुंदर सुघड नर विधातानी सृष्टिमां

तेना वच्चे अने श्रीमान नागजी वच्चे एक सैकानो अंतर मालूम पडे छे पहेला अहमदशाहनो समय वि-सं. १४६७ थी १४९९ सुधीनो गणाय छे.

१ कहे छे के उदयभाणजीए जांबुना किल्लानो जीर्णोद्धार कर्यो हतो.

विराजता हशे. एक वखत एवो बनाव बन्यो के भडलीना सरवैया भीमसिंहजीनां कुंवरी सुजान-कुंवरबानुं सगपण सरधारना वाघेला गोधाजी (गोढाजी) साथे थएलुं होवाथी लग्नसमारंभ थतां सरधारथी खांडुं लइ केटलाएक वाघेला सरदारो भडली आव्या अने धामधुमथी लग्न करी वतन तरफ पाछा वळती वखते डोलो साथे होवाथी सावधानी पूर्वक मजल दरमजल विश्रान्ति लेतां गाम कोठीकुंदणीना पादर सुधी आवी पहोंच्या. ग्रीष्मऋतुनो समय होवाथी सूर्यना प्रचंड तापथी परितप्त थएला ए लोकोए त्यांज पडाव नांखी बपोरा गाळवानो निश्चय कर्यो. बाद भातभातना भोजन तैयार करावी तमाम जानैयाओ जम्या अने जरा आडेपडखे थया, तेवामां खूबसुरतिना खजानारुप कोठीकुंदणीना राजा खेताजी घोडो खेलवता खेलवता त्यां आवी चड्या तेओना माधुर्य भरेला मुखमंडलपर वेलमां बेठेलां सुजानकुंवरनी नजर खेंचाणी एज वखते ए चतुरांनुं चित्त मोहक महिपालना मिलन माटे आतुर थयुं. चंचल अश्वपर आरूढ थयेला खेताजीनो शिरपेच सरी जतां तेना मनोहर वाळ पृष्टपर विखराइ पड्या. शोखने लीधे तेओए पोताना सघन अने सुकोमळ शिर-केशने एटलावधा वधार्या हता के ते अंगना अर्ध विभागने तद्दन आच्छादित करी देता. समग्र अ-वयवो तथा पोशाकनी अपूर्व सुंदरता उपरांत आवा अनुपम शिरकेशना अवलोकनथी मुग्ध बनेलां सुजानकुंवरनुं मन स्मरनी विशाळ जाळमां सपडाइ गयुं अने एज वीरनरने वरवा माटे अन्तःकरण अधीरुं थयुं; श्रीमान खेताजी खरेखर राजवंशी छे एवो एनी कान्तिभरी कलित आकृतिज कही आपती हती, मात्र नाम ठामथी वाकेफ थइ तेओनी सेवामां हाजर थवुं एटलुंज अवशेष हतुं. सुभा गिनी सुजानकुंवरबाए पोतानी एक प्रवीण दासीने ते वाबतनो तपास करवा मोकली. झालानरेश खेताजीनो जात भात तथा संज्ञा वगेरेथी वाकेफ थयेली दासीए आवी बाइ आगळ सघळी वीना कही बतावी. सुजानकुंवरने हर्षनो पार रह्यो नहि, तेणे तुरतज ठाकोर खेताजी उपर एक प्रेमपत्रि-

---

१ वाघेलानी जान, आवी सरोवर उतरी
त्यां छोगाळो झाल, खेतशी घोडो खेलवे

२ खेतसी शिर मोळीयो, खस्यो जाणीके छुटा केश;
मन बाइनुं मोही रह्युं, जेम चंदनने लपटे शेष.

आ दोहो तेमज आगळ पृष्ठमां लखेलो दोहो ते वखतना कोइ भाट अथवा चारणे बना-वेलो छे.

का लखी मोकली, तेमां छेवट एवा शब्दो लख्या हता के जो आप मने नहि वरो तो हुं अवश्य आत्मघात करीश. +

सरवैयाणी सुजानकुंवरबानुं स्वरूप पण स्त्रीयोना समुदायमां सर्वोपरि हतुं. पूर्णिमाना चन्द्र समान प्रकाशी रहेलुं वदन, खंजनना मदनुं गंजन करनारां निर्मळ नयन, धनुष्य समान वक्रताने धारण करनारी भ्रकुटि, शुकचंचु समान सुशोभित नासिका, प्रवाल सरखी प्रभाने वहन करनारा उभय ओष्ठ, गुलाबना गर्वने गाळनारा गाल, भाग्यना भंडार सरखुं भव्यता भरेलुं भाल, कनकनी छीप जेवा कर्णो, विषधर जेवी वेणी अने कमळनाल जेवा कमनीय कर आदि उत्तमोत्तम अवयवोथी सुसमृद्ध थएलां सुजानकुंवरबानी प्रेमपत्रिका वांची ठाकोर खेताजीनुं मन तेना तरफ खेंचायुं. एज वखते तेओ तमाम वाघेला सरदारोने आग्रह पूर्वक पोताना गाममां मिजमान तरीके तेडी लाव्या. स्नेहमूर्ति सुजानकुंवरनो डोलो सीधो रणवासनी अंदर लइ जवामां आव्यो. श्रीमान् खेताजी साथे बहुज खानगी रीते बंधाएली सुजानकुंवरनी स्नेहगांठथी वाघेला सरदारो विन वाकेफ हता; जेथी डोलाने जनानामां लइ जती वखते तेओ जरा पण शंकाशील न थया. ठाकोर खेताजीए आवेल मिजमानोनी उत्तम प्रकारे उतारा तथा खानपान वगेरेथी घणीज खातर बरदास करवा मांडी; अने रात्रीने समये खानगीमां राज्यपुरोहित तथा कार्यभारी मंडलनी एक सभा बची सुजानकुंवरनी प्रेमपत्रिका प्रसिद्ध करी कह्युं के—हवे आ बाबतमां तमारो शी सलाह छे? आवी स्थितिमां लग्न करी शकाय के केम? ए बाबतनो खुलासो करतां राज्यपुरोहिते जणाव्युं के मन अने प्राणनी ऐक्यतानेज शास्त्रकारो "लग्न" एवी संज्ञा आपे छे. पुरुषना स्पर्शने नहि पामेली नारी कुमारीज लेखाय छे. माटे सरवैयाणी सुजानकुंवरबानो स्वीकार करतां महाराजाने कोइ पण प्रकारे धर्म संबंधी बाध लागवा संभव नथी. कार्यभारी मंडले तो मात्र एटलुंज कह्युं के शरणे आवेलने अभयदान आपवुं ए क्षत्रीओनो धर्म छे. एक निर्दोष राजबाळा महाराजाने वरवा माटे आटली बधी आतुरता बतावे छे तो पछी एनो "अनादर" करवो ए उचित नथी. कदाच महाराजा तरफथी एनो अंगीकार

+ आ बाबतमां भाट लोको नीचे मुजब एक दोहो बोले छे.

" बाइए वडारण मोकली, रूप जोइ झलराण;
हुं कुंवारी छत्रपति, मोही वरो मकवाण.

नहि करवामां आवे तो निराश बनेली राजबाळा आत्मघात करशे ए पाप कांइ जेवुं तेवुं नथी. आत्मिकजनोनी योग्य सलाहथी संतुष्ट थएला ठाकोर खेताजी रणवासमां पधार्या अने मृगलोचनी सरवैयाणीनी मनोहारिणी मुखाकृति जोइ तेने वरवा माटे कृतसंकल्प थया. तेओने पोताना भुजबळनो संपूर्ण भरोसो हतो, वाघेला तो शुं ? पण आखुं विश्व विरुद्ध थाय तदपि ए सर्वनी साथे युद्ध करवा तेओ समर्थ हता. संकल्प विकल्पनी रात्री समाप्त थइ; प्रगटेलुं प्रभात सूर्य नारायणना पवित्र किरणोथी छवाइ गयुं, जागृत थएला वाघेला सरदारो विदायगीरी लेवा रणवासना अग्र द्वारपर आवी उभा. ए वखते अंदरथी एक दासीए आवी तेओने कह्युं के तमारे जवुं होय तो मुखेथी जाओ. राणी सरवैयाणी तो ठाकोर खेताजीने वरी चुक्या छे आ शब्दो समग्र वाघेलाओना हृदयमां बाण सरखां वेधक बन्यां, एक निमिषमां वैरनावह्निनी ज्वाळाओ निकळवा लागी. पोताना मालिकनी प्रमदा बीजाना घरमां बेसे ए शु रजपुतथी सहन थाय खरु? एज वखत वाघेलाओ खुल्ली समशेरे आगळ वध्या. रणवासना रक्षकोए तेओने अटकाव्या. तेवामां ठाकोर खेताजीनी सूचनाथी केटलाएक शस्त्रबन्ध झालाओ त्यां आवी पहोंच्या. तीक्ष्ण तलवारोनी झपाझपी चाली कोइनां मस्तक, कोइना हाथ अने कोइनां वक्षःस्थल विदीर्ण थतां तेमांथी धकधक करती रुधिरनी धाराओ निकळवा लागी. लोथपर लोथ पडवा लागी, अन्ते समस्त वाघेलाओ काम आव्या. मात्र सरधारनी एक वडारण बचवा पामी; तेणे पोताना वतनमां पहोंची वाघेला गोधाजीने बनेली बीनाथी वाकेफ कर्या. गोधाजीना अन्तःकरणमां असह्य आघात थयो अने भडलीना सरवैया भीमसिंहनी सहायता मेळवी तेणे तुरतमाज कोठीकुंदणी पर चढाइ करी, महान् पराक्रमी श्रीमान् खेतोजी शौर्यशाळी झाला सुभटोनी साथे शत्रु सन्मुख आवी उभा रह्या, उभय पक्षमां रणवाद्यना गंभीर निनाद थवा लाग्या. वीरनरो मनगमती अप्सराओने वरवा माटे आतुर बनी अग्र भागमां उपस्थित थया. व्यग्र बनेला वाघेला तथा सरवैयाना महान सैन्ये झालाओना सबळदळ माथे झपट करी. कृष्णवर्णनी कृपाणो कुलटानी पेठे अनेक योद्धाओना कंठमां लपटवा लागी; उलटासुलटा शस्त्रप्रहारने लीधे सख्याबंध सुभटानी क्षति थवा लागी. काळ समान विकाळ स्वरुपने धारण करनारा उभय पक्षना योद्धाओ कठिन कुठार वडे वनवृक्षनो विच्छेद करनारा कठिआरानी माफक भोगळ सरखा प्रचंड भुजदंडथी प्रतिपक्षीओनी कायाना खंड करवा लाग्या, खडखड हसता भयंकर भूत प्रेतादि रणांगणमां आवी रक्तना खप्पर भरवा लाग्या. दोडादोड करती डाकिनीओ हिम्मती जनोना हृदयथी टट्टे चढेला शवनो संग्रह करवा लागी. आनंद पामेली अप्सराओ

मनमान्या वीरनरोने वरवा लागी. सैनिकोनी साथे हयनी पंक्ति पण हणावा लागी. ठाकोर खेतोजी प्रबल खड्गने धारण करी दुश्मनोने दंड देवा लाग्या; गृध्र आदि पक्षीओ मांसना म्होटा म्होटा कवल लेवा लाग्या. कालिकाना किलकिलाटथी युद्धभूमि छवाइ गइ, झालाना झपाटामां आवेला वाघेला गोधाजीनी हार थवाइ गइ. सरवैआओ पण घणे भागे समरमां शयन करी गया. भूतपति पण मनोहर मुंडना टोपलाओ भरी गया. जंगनी जमावट थतां योगिनीओनां अंगमां उमंग थयो. वाघेला तथा सरवैयाना शस्त्रप्रहारथी अंते खेताजीना आयुर्बळनो पण भंग थयो; अवनिमां अवतरी कोइ पण अमर रह्युं नथी. राजपूतोए प्राण बचाववा माटे रणभूमिनो परित्याग करवो एवुं कोइ शास्त्रमां कह्युं नथी+ वि. स. १५४२ मां ठाकोर खेताजी समरशायी थया. तेओने सांगोजी, नाजीजी, भाणजी, कुंभोजी, कानजी, शवोजी, देहळजी, करणजी, वीरमजी, भोजराजजी, अजोजी, लाखाजी, तथा रघाजी नामना तेर कुमार हता; तेमां सांगोजी तो कोठी कुंदणीना राज्यसिंहासनपर आरूढ थया अने नाजीजी तथा भाणजीने सात गामथी "वळोल" तथा "पच्छम" नो गरास मळ्यो. नाजीजीनो वंश वळोळमां अने भाणजीनो वंश पच्छममां रह्यो. कुंभाजी तथा कानजीने सात गामथी " पाणशीणा " मळ्युं. कुंभाजीनो वंश खांडीया, अचरडा तथा खजेळीमां अने कानजीनो वंश शरवाल, झांझरकुं तथा कीयादमां रह्यो. शवाजी तथा देहळजीने सातगामथी गाम "अडवाल" नो गरास मळ्यो. शवाजीनो वंश अडवाळमां अने देहळजीनो वंश फेदरामां रह्यो. करणजी तथा वीरमजीने सातगामथी " तावी " नामनुं गाम गरासमां

+ केटला एक भाट लोको उक्त युद्धनुं वर्णन करतां कहे छे के ज्यारे खेताजीनुं मस्तक कपायुं त्यारे तेना धडे घणा वखत सुधी झुझी सेंकडो शत्रुओनो संहार कर्यो हतो. अने ए तमामने कोठीकुंदणीना द्वार पर्यन्त हांकी काढ्या हता. ए संबंधी नीचे मुजब एक दोहो प्रसिद्ध छे.

कुंदणीए कनकाना, खेले खेत नरंद
भादलीए भंगाण, शहेर सरवैयातणे

१ श्री यशवंत जीवनचरित्रमां लख्युं छे के खेताजीना मृत्यु पछी तेना सांगुजी नामना बीजा कुमार गादी पर आव्या. पाटवीकुमार नानाजी हता; तेनाथी राज्यनो बोजो नहि उपडवायी तेणे सांगुजी पासेथी सात आठ गामनो गरास लइ पितानुं राज्य सांगुजीने सोंपी दीधुं, सांगुजी " साधोजी " एवा नामथी पण ओळखाय छे.

मळ्युं. करणजीनो वंश तलवणी तथा देवळीआमां अने वीमरजीनो वंश वरशाणोमां रह्यो. भोज-राजजी तथा अजाजीने सातगामथी " तलसाणा " नो गरास मळ्यो. भोजराजजीनो वंश भडवा-णामां रह्यो अने अजाजीनो वंश सीयाणीमां वीकावत छे. लाखाजी तथा रघाजीने सातगामथी " लींवडी " तथा " खडोळ " नो गरास मळ्यो. लाखाजीनो वंश लींवडीमां अने रघाजीनो वंश खडोळमां रह्यो परंतु ए बन्नेना वंशजो हाल लींवडी तथा खडोळमां वांटा खाय छे.

ठाकोर खेतांजीना कुमार सांगाजी वि-सं. १५४२ मां गादीए वेठा परंतु गोढा वाघेला-

---

१ " श्री यशवंत जीवनचरित्र" नामना ग्रंथमां मांगुजीथी न्हाना खेताजी सुधीना राजाओनो समय नीचेमुजव वतावेलो छे.

	वि-सं.	थी	वि-सं. सुधो राज्य कर्युं.
१ मागुजी	९१०	,,	९५१
२ मघुपालजी	९५१	,,	९७०
३ धमलजी	९७०	,,	१००२
४ कालुजी	१००२	,,	१०१२
५ धनराजजी	१०१२	,,	१०३०
६ लाखोजी	१०३०	,,	१०५९
७ भोजराजजी	१०५९	,,	१०६४
८ करणजी	१०६४	,,	१०८२
९ आशकरणजी	१०८२	,,	१११८
१० सांगोजी	१११८	,,	११७०
११ शेषमालजी	११७०	,,	११८९
१२ सारंगजी	११८९	,,	१२३६
१३ लाखोजी	१२३६	,,	१२८०
१४ वेजराजजी	१२८०	,,	१३०५
१५ नागजी	१३०५	,,	१३२७
१६ उदेभाणजी	१३२७	,,	१३८३
१७ खेतोजी	१३८३	,,	१४२८

ए गाम कुंदणीने पायमाल करी नांख्युं हतुं, त्यांथी जसदणने लूंट्या बाद सरधार जइ तेणे पोताना कार्यभारीने नजराणा सहित अमदावाद मोकल्यो. ए कार्यभारीए सुलतान महमदने समजावी जांबुमां थाणुं बेसाडवा माटे बहुज प्रयत्न कर्यो. परन्तु तेनो मनोरथ सफळ थयो नहि. ठाकोर सांगाजीए कोठी कुंदणीना राज्यने धीरे धीरे आबाद करवा माडयुं, तेओ जाते महान् शूरवीर होवाथी पितानुं वैर वाळवानी द्रढ प्रतिज्ञा लइ वाघेला गोधाजीनो विनाश करवा तत्पर थया अने पांचसो स्वार सहित तेओए सरधार तरफ प्रयाण कर्युं. ज्यारे ए बधा लींबडीथी पांच गाउ पर आवेला झोबाळा नामना भायाती गाममा आवी पहोंच्या त्यारे ठाकोर सांगाजीए शत्रुना महान् सैन्य साथे लांबो वखत टकी शकवानुं अशक्य धारी त्यांज थोडा वखतने माटे म्हेठाण राख्युं. आ वात वाघेला गोधाजीना जाणवामां आवतां ते बे हजार घोडेस्वार लइ सामो आव्यो. ए वखते साहस न करतां श्रीमान् सांगोजी गाम वेजोशीयाळ तरफ लोची खाइ गया. तेवामां कुंदणी तावाना गाम धनवाणानो पटेल वीशो सेंकडो भरवाडोने साथे लइ सांगाजीनी सहायताए आवी पहोंच्यो. पोताना पांचसो स्वार साथे आशरे आठ हजार भरवाडो आवी मळवाथी निर्भय बनेला सांगाजीए अत्यन्त उत्साहपूर्वक वाघेलानी विशाल फोज साथे हल्लो कर्यो. बन्ने पक्षमां वीरहाकनी साथे युद्ध शरु थयुं. हजारो हयना हणहणाटने लीधे बधा सैनिको बधिर जेवा बनी गया. धूलिना समुदायथी आकाश ढंकाइ गयुं, चोमेर विद्युत् समान चमकती कठिन करवालो वर्षाऋतुनुं भान कराववा लागी. कुंभकारना चाकपरथी उतरता पिंडनी माफक लडवैयाओनां मस्तक धडथी अलग थवा लाग्यां. पेशकवजना प्रहारथी अनेक योद्धाओना आंतरडाओ निकळवा लाग्यां. केटलाएक योद्धाओ कटारथी एक बीजाना वक्षःस्थलने विदारवा लाग्या द्रढभुजदंडवाळा भरवाडो मात्र लठ्ठना प्रहारथीज शस्त्रधारी सैनिकोने भयनी भट्ठीमां भारवा लाग्या. मारवा मरवानो संकल्प करी सावधानपणे रणभूमिमां उपस्थित थएला राजपूतो सामे पगले लडी पोतानी क्षित्र जातिने दीपाववा लाग्या. मांस अने रुधिरनो भरावो थतां भूतप्रेतादिनां भयंकर नृत्य रणभूमिमां आववा लाग्यां. वीर वाघेलाओ आ वखते झालाओनी झपटने झीली शक्या नहि. चाहथी एकत्र करेल महान्

१८	भोजराजजी बीजा	१४२८	,,	१४६६
१९	नागजी बीजा	१४६६	,,	१५१८
२०	खेतोजी बीजा	१५१८	,,	१५४२ आंहीथी बारोटना

चोपडा साथे संवत मळता आवे छे

सैन्यरूपी चीचोडामां इक्षुदंड सरखी मिष्टताने धारण करनारा प्रतिपक्षीओने धारणा प्रमाणे पीली शक्या नहि. छेवट शौर्यशाळी सांगाजीए सिंहनी माफक गर्जना करी वि-क्राळ स्वरूप धर्युं अने वाघेला गोधाजीना हृदयमां भालांनी तीव्र अणी भोंकी ग्रहण करेलुं "पण" सार्थक कर्युं. पराजय पामेला वाघेलाओनुं अवशेष रहेलुं सैन्य एज वखते विखराइ गयुं. विजयी सांगाजीना सुयशथी क्षितिमंडल छवाइ गयुं. धनवाणानो भरवाड वीसो घणोज कार्यकुशळ अने बुद्धिमान हतो. तेणे जांबुमां स्थपाएला मुसलमानी थाणाने युक्ति प्रयुक्तिथी हांकी काढवा श्रीमान् सागाजीने सूचना करी. सांगाजीए जांबुमां जइ थाणाना मुख्य मुख्य माणसोने एक मेफल आपी; त्यारबाद ए लोकोना आग्रहथी पोते पण थाणा तरफनी मिजमानी स्वीकारी. ते दहाडे छूटथी दारुनो उपयोग थवाने लीधे घणखरा नशामां चकचूर बनी जेम आवे तेम बोलवा लाग्या. केटलाकने तो पोताना कपडानुं पण भान न रह्युं. ए वखते समयसूचक सांगाजीए पोताना सहायको सहित समशेर चलावी थाणाना तमाम माणसोने कापी नांख्या. जो एकाद माणस पण अवशेष रह्यो होत तो ते अमदावाद जइ त्यांनां सुलतानने आडुं अवळुं समजावत अने वखते सांगाजीना राज्यमां विशेष उपाधि उपजावत. परंतु श्रीहरि सानुकूळ होवाने लीधे सरलता पूर्वक सघळी मनकामना सिद्ध थइ गइ. वळी सहुने विचार थयो के जते दहाडे आ वात प्रसिद्धिमां आव्या विना रहेशे नहि, माटे पाणी पहेला पाळ बंधाय तो सारुं. ठाकोर सांगाजीना मनमां पण ए वात बराबर ठसी; तेओए तुरतज महान् विचक्षण वीसा पटेलने अमदावाद मोकली आप्यो. वीसा पटेले त्यां जइ सुलताननां तमाम अधिकारीओने विविध प्रकारना नजराणां आप्यां अने कायमने माटे मुसलमानी थाणाओथी गाम जांबु तथा सीहाणीने मुक्त कराव्यां जेथी वि–सं. १५७२ मां श्रीमान् सांगाजीए गढजांबुमां राजगादीनुं स्थापन कर्युं.+ तेओने सोढाजी तथा राणाजी नामना बे कुमार हता.

वि–सं. १५९२ मा सांगाजीनो स्वर्गवास थतां कुमार सोढोजी गढजांबुनी गादीए बेठा

+ श्री झालाकुळना बारोटे अमोने आपेली हकीकतमां एवो लेख छे के ठाकोर सांगाजीना कुमार सोढाजीए जांबुमां बादशाही थाणुं बेठेलुं हतुं तेने कापी त्यां वि–सं. १५७२ मां पोतानी राजगादी स्थापी. धनवाणाथी ज्यारे वीसो पटेल सांगाजीने सहायता आपवा गयो त्यारे तेनी साथे कुमार सोढोजी तथा बीजो एक देशा नामनो पटेल पण हतो. ए उपरांत झींझुवाडा ठाकोर योगराजजी के जे मोसाळ पक्षे सांगाजीना भाइ थता हता ते पण हाजर हता.

अने राणाजीने सातगामथी गाम " वीझराद " नो गरास मळ्यो. श्रीमान सोढाजीए सत्तावन वर्ष पर्यन्त प्रजानुं उत्तम प्रकारे पालन कर्युं. तेओना समयमां राज्यनी अंदर कोइ पण जातनो उपद्रव थवा पाम्यो न हतो. पोताना बापदादाओनो जुनी राजधानी जांबुमां अपूर्व जाहोजलाली भोगवता ठाकोर सोढाजीने आशकरणजी (आशोजी) तथा हनुजी नामे बे कुमार थया हता.

वि–सं. १६४९ मां सद्गुणी सोढाजीए स्वर्गवास कर्यो त्यारे तेओना ज्येष्ठ कुमार आशकरणजी जांबुना राज्यसिंहासनपर आरूढ थया अने हनुजीने सातगामथी गाम "अंकेवाळीआ" नो गिरास मळ्यो. एनो वंश राहका तथा बोडीयामां छे.

उदार दिलवाळा ठाकोर आशकरणजी बीजाए सोहाणीमा राजगादी स्थापी अने त्यांज तेओ तख्तनशीन थया. + एओने केटलाएक आशरजी पण कहे छे. ए आशरजीए बत्रीश वर्ष सूधी सीहाणीमां राज्यसुखनो उपभोग कर्यो. तेओने उदयराजजी, कल्याणसिंहजी, सगरामजी तथा राजाजी नामे चार कुमार हता.

+ श्री यशवंत जीवनचरित्रमां लखे छे के–सीहाणी गाम हाल लींबडीना ताबामां छे. तेना प्राचीनपणानी अनेक प्रकारे प्रतीति मळे छे. प्राचीन शिलालेखो, देवाळयो, अने पाळीयाओ अद्यापि त्यां द्रष्टिगोचर थाय छे. तेनापर जे संवत्सरना आंकडाओ कोतरेला छे ते सं. ११०० थी १७०० सुधीना छे मांगुजीने जांबुनी चोराशी मळी ए वखते गाम सीहाणी मोजुद हतुं अने त्यां आयरोना झुंपडां हता. कहे छे के मांगुजी पहेलां केटलाक वर्ष उपर सोहाणीबाइ नामनी कोइएक आयराणीए ए गाम वसावेलु होवाथी तेनुं नाम " सीहाणी " पडयुं. अन्य स्थळे वळी एवो लेख छे के मांगुजीथी अग्यारमी पेढीए थएला आशकरणजीए वि–सं. १६४९ मा सीहाणीमां राजगादी स्थापी, ए हकीकत वारोटना चोपडाने आधारे लखवामां आवी छे. " काठिआवाड सर्व संग्रह " नामना ग्रन्थमा एवो लेख छे के सागाजीथी वेराजी सुधीना राजाओए गढजांबुमांज राज्य कर्युं हतुं, पण ए वात पायावगरनी छे. अदेराजजी पछी वेरोजी थया अने ते पछी चोथी पेढीए बीजा अदेराजजी उर्फे अदोजी थया त्यांसुधी सीहाणीमांज राजगादी रही एवुं श्रीझालाकुळना बारोटनो चोपडो वांचता मालुम पडे छे वळी तेमां लख्युं छे के अदेराजजी पहेला वि–स. १६८१ मां गढजांबुनी गादीए बेठा अने तेओए वि–सं. १६८२ मां सीहाणीमां राजधानी जमावी.

वि–सं. १६८१ मां ठाकोर आशकरणजी अक्षयधाममां सिधाव्या त्यारे तेओना पाटवी कुमार अदेराजजी उर्फे अदोजी गढ सीहाणीनी गादीए वेठा. तेओना त्रण भाइओमांथी कल्याणसिंहजी तथा सगरामजीने पांच गामथी गाम "तळसाणा" नो गरास मळ्यो. एनो वंश कमालपरमां छे. अने राजाजीने वे गामथी गाम "टोकराळुं" गरासमां मळ्युं.

ठाकोर अदेराजजीए नव वर्ष पर्यन्त रैय्यततुं संरक्षण करी राज्यने सुसमृद्ध बनाव्युं. उदार वृत्तिए अवनवा आनंद वैभवनो अनुभव करनारा अदेराजजीने वेरोजी, रघोजी, चांदोजी. सूरजमलजी तथा जेतासिंहजी नामना पांच पुत्र थया. वि–सं. १६९० मां ज्यारे ठाकोर अदेराजजीए कैलासवास कर्यो त्यारे तेओना पाटवी कुमार वेरोजी सीहाणोना राज्यसिंहासनपर विराजमान थया. तेओना चार बन्धुओमांथी रघाजीने गाम कटारीआ, छालीआ तथा अचारडा, चांदाजीने परनाळा तथा अणियाळी, सूरजमलजीने गेंडी अने जेतसिंहजीने "जामणखा" नो गरास मळ्यो. सूरजमलजीनो वंश हाल वरवाळामां छे.

वीरवर ठाकोर वेराजीए एकत्रीश वर्ष लगी राज्य कर्युं. कहे छे के तेओ गाम "काणेतर" गया हता अने त्यां तळावने किनारे पडाव नांखी पड्या हता, तेवामां काणेतरना दरवारी सिपाहीए वि–सं. १७२१ मां तेओने दगाथी मारी नांख्या. ए वेराजीने करणसिंहजी, हरभमजी, रतनसिंहजी, जसवतसिंहजी, नोंघणजी, सतोजी, वरसोजी, रामसिंहजी तथा वजेराजजी नामे नव कुमार हता.

वि–सं. १७२१ मा वेराजीए वैकुंठवास कर्यो त्यारे कुमार कर्णसिंहजी सीहाणीना शासनकर्ता थया. हरभमजीने भलगामडुं, चोरणीया, तथा वोरणा; रतनसिंहजीने फेदरा, रायकुं, कंथारीआ, तथा वनाळा, जसवतसिंहजी तथा नोंघणजीने उंटडी, अडवाल, छलाडुं तथा दरोद; सताजीने भोयका, झोवाळा तथा टीमला; वरसाजीने चचाणा, तथा तराडीयुं; रामसिंहजीने वाजरडी तथा भडवाणुं अने वजेराजजीने गाम मोजीदड गरासमां मळ्युं.

टाकोर करणसिंहजी वीजा सुशील अने समदर्शी हता, तेओनी एकोनविंशत् (ओगणीश) वर्षनी कारकीर्दीमा प्रजावर्गे भ्रान्ति रहित सुखशान्ति भोगवी. स्वधर्मनिष्ठ श्रीमान कर्णसिंहजीने भोजराजजी, राजोजी, भारोजी, अखेराजजी, अमरसिंहजी, मंडलीकजी अने मीरामणजी, नामना सप्त कुमार थया. ए साते कुमार अनन्य भ्रातृभावथी वर्तन करता हता. तेओमां कोइपण प्रका-

रना कुसंपे प्रवेश कर्यो न हतो. वि-सं. १७४० मां ठाकोर करणसिंहजीनो स्वर्गवास थतां पाटवी कुमार भोजराजजी बीजा सीहाणीना राज्यासनपर बिराजमान थया. कुमार राजाजोने गाम तावी, रोजाशोर तथा पराळी, भाराजोने समला तथा जणहारी, अखेराजजीने भथाण तथा लालीयाद, अमरसिंहजीने कारोल तथा वडेखण, मंडलीकजीने शावका तथा नाना वाडीआ, अने मेरामणजीने खमला तथा चमारडीनो गरास मळ्यो.

ठाकोर भोजराजजीए राज्यनी आबादी अर्थे उत्तम प्रकारनी योजनाओ करी हती. तेओने अदोजी, सांगोजी तथा कसळोजी नामे त्रण कुमार थया. बावीश वर्ष पर्यन्त स्वतंत्रपणे राज्यसुखने भोगवनारा श्रीमान् भोजराजजी वि-सं. १७६२ मां स्वर्गवासी थया त्यारे तेओना ज्येष्ठ कुमार अदोजी सीहाणीना राज्यसिंहासनपर आरूढ थया. कुमार सांगाजीने अंकेवाळीआ, भडीयाद तथा धोळी, अने कुमार कसळाजीने झांझरकुं तथा खाडीआ नामनां गाम गरासमां मळ्यां.

ठाकोर अदोजी (उदयराजजी बीजा) अत्यन्त बहादुर तेमज बुद्धिशाळी हता. घणा समय सूधी सीहाणीनुं राज्य निरुपद्रव रह्युं हतुं, परंतु अदाजीना वखतमां पाछो उपद्रव शरु थयो. पाळीयादनो खाचर नाजी वीरवर अदाजीथी वैर बांधी वारंवार उपाधिने ताजी करवा लाग्यो अने एकहजार स्वारनुं सैन्य लइ सिहाणीपर चढी आव्यो. तेनी साथे युद्ध करवा श्रीमान अदोजी सज्ज थया अने पोताना शूरवीर सुभटो सहित सामा चाली खाचर नाजीनी नजर आगळ खड्ग खेंची उभा रह्या. युद्धनी वाजोनो आरंभ थयो. अटंका अदाजीए डंकापर घाव दइ नाजीना सैन्यपर हल्लो कर्यो, खाचर लोको पण खड्ग खेंची सामा थया. रणमां अडग रहेनारा झालाओ विशाळ ढालपर शत्रुओना झाटकाओने झीली मदोन्मत्त मातंगनी पेठे मात्र करना प्रहारथीज काठीओने माठी दशाए पहोंचाडवा कृतनिश्चय थया. ज्यारे अदाजीना युद्ध कुशळ योद्धाओए खाचर सैनिकोने तेतर समान गणी बाजनी समान झटपट झपटमां लेवा मांड्या त्यारे नाजीना वाजीनो समुदाय लाजने लीधे पातालमां पेसवा इच्छतो होय तेम नमेली पीठे पाछो हठवा लाग्यो. महा भयंकर धींगाणुं मच्युं. पाखर अने बखतरोनी कडीओ तडोतड तूटवा लागी, महाकाळनी विकाळ सहचरी कालिका एक साथे अनेक सैनिकोना आयुष्यरुपी धनने लूंटवा लागी. उभयपक्षना सेंकडो वीर विनाश पाम्या. मांसना मनमान्या ग्रास मळवाथी गृध्र आदि पक्षीओ परम हुलास पाम्या. अंते ठाकोर अदाजीनो विजय थयो अने तेओने हाथे केद पकडाएलो खाचर नाजी सीहाणीना कारागारमांज स्वधामे पहोंची गयो. आ युद्ध वि-सं. १७८० मां थयुं हतुं.

कहे छे के एक वखत ठाकोर अदेराजजी उर्फे अदोजी गाम घाघरेटीआना तळावने किनारे दोढसो स्वार सहित छावणी नाखी पड्या हता; तेवामां वढवाणना ठाकोर चन्द्रसिंहजीए गाम मेथलीपर विजय मेळवी पोतानी राजधानी तरफ जता एज स्थळे विश्रान्ति लेवानो विचार कर्यो अने एक चारण मारफत छावणीने जरा दूर खसेडवा ठाकोर अदाजीने कहेवराव्युं. अदाजीए ए वातनो अनादर कर्यो; एथी क्रोधायमान थएला चन्द्रसिंहजी तेओनी साथे लडवा तत्पर थया. क्षात्रधर्मने अनुसरनारा अदाजीए पण गढजांबुथी मगावेला त्रणो गाडां आवी पहोंचवाथी युद्ध करवानी हाम भीडी. दरेक गाडामां बब्बे शिरवधीओ बेठेला हता; एटले अदाजीना एकंदर साडापांचसो मनिशो थया तेओए छावणीना रक्षण माटे गाडाओने गढनी माफक चोमेर गोठवी दीधां. वढवाणनी फोजे श्रीमान अदाजीनी छावणीने घेरी लेवानी कोशीश करी, तेवामां ते तरफथी उपराउपर बंदूको छूटवा लागी. घरानी वातने पडती मूकी तेओ एकदम गीतागी नरेशनी छावणी माथे तूटी पड्या मात्र "हा" अने "ना" ए बेज अक्षर माटे रणरागी राजपूतोए आटलुं बधुं साहस खेडयुं, अने नागी समशेरद्वारा मृत्युने मागी लेता होय तेम रणांगणमा अनेक सैनिकोए पोतपोताना अमूल्य रुधिरने रेडयु. एक साधारण कारणपर जागी उठेला वैरनी ज्वाळामा पतंगीआनी पेठे पडतु मूकनारा प्राणीओ प्राणने त्यागी परलोक प्रयाण करी गया अने अवनिमा अचल नाम राखी संसार सागरने सहजमां तरी गया. युद्धमा हार पामेला ठाकोर चंद्रसिंहजी वढवाण तरफ विदाय थया, अने अदोजी पण सत्वर सीहाणी भेळा थइ गया. ए वखते वढवाणना चारणोए ठाकोर अदाजीनी बहादुरीना केटलांएक गीतो बनावी गावा मांड्या. एथी ठाकोर चन्द्रसिंहजी बहुज चीडाया अने तेओए पोताना राज्यमाथी तमाम चारणोने रजा आपी. आ वात ठाकोर अदाजीना सांभळवामां आवतां तेओए तुरतज उक्त चारणोने पोतानी राजधानीमा बोलावी लीधा अने तेओनी आजीविका माटे लींबडीथी चार गाउने अन्तरे रहेलुं "ग्रामडी" नामनुं गाम आप्युं.

ठाकोर अदाजीने वेरोजी, सताजी, रामसिंहजी तथा पृथीराजजी नामे चार कुमार थया. वि. सं. १७८४ मा श्रीमान् अदाजीनो स्वर्गवास थतां कुमार वेरोजी बीजा सीहाणीनी राजगादीए बेठा. एथी न्हाना कुमार सताजीने भडवाणु तथा रळोली; रामसिंहजीने गेडी तथा भाथरीया अने पृथीराजजीने देवळीआ तथा अणिआळी नामनां गाम गरासमा मळ्यां.

ठाकोर वेरोजी महान शूरवीर हता, तेओए डुंगरपदमांज वि-सं. १७८९ मां लींबडीनी

अंदर एक किल्लाबंध विशाळ राजदरबार बंधाव्यो हतो; तेओने कल्याणसिंहजी, हरभमजी, राणोजी तथा अमरसिंहजी नामे चार कुमार थया. तेमांना पाटवीकुमार कल्याणसिंहजी कुंवरपदेज स्वर्गवासी थया. कहे छे के झालावाडमां गायकवाड दामाजीनी फोज आवतां तेनी साथेनां धांगाणामा ठाकोर वेरोजी काम आव्या. वि–सं. १८०८ मां ए शोकजनक बनाव बनवाथी वैकुंठवासी वेरोजीना द्वितीय कुमार हरभमजीए राज्यनी लगाम हाथमां लीधी. तेओना न्हाना भाइ राणाजीने तलसाणुं, कटारीआ तथा परनाळा नामनां त्रण गाम गरासमां मळ्यां.

ठाकोर हरभमजी महान प्रतापी अने पराक्रमी हता. कहे छे के तेओए वि–सं. १८१५ मां नाना सवाइनी फोज साथे वे मास पर्यन्त बहादुरीथी युद्ध कर्युं हतुं अने तेमां विजय मेळव्यो हतो, वळी वि–सं. १८२३ मां शहेर लींबडीने फरता शेरपनाहना किल्लानुं काम शरु कर्युं हतुं. अंकेवाळीआना ठाकोर वरशाजीने काठी लोको वारंवार कनडता हता. ए वात ज्यारे ठाकोर हरभमजीना जाणवामां आवी, त्यारे तेओए पोताना प्रशंसनीय बाहुबलथी काठी लोकोना सातगढने छिन्नभिन्न करी नांख्या. जेथी काठीओए जुनागढना नामदार नवाबनी सहायता मेळवी लींबडीपर चढाइ करी. ए वखते चोटीला, आणदपर तथा भाडलाना तमाम काठीओ सामेल हता. भयं-

---

१ "श्री यशवंतजीवनचरित्र" नामना ग्रन्थमां लखे छे के ठाकोर वैरीसालजीए (वेराजीए) वि–सं. १७८४ मां लींबडी शहेरने राजधानी ठराव्युं. अने ए पछी गादीए आवेला ठाकोर हरभमजीए लींबडीमां पूरेपूरो निवास कर्यो तथा ए शहेरने खरेखरुं आबाद बनाव्युं. वळी एज प्रसंगे दाखल करेली फुटनोटमां तेमा कर्णोपकर्ण सांभळेली वातनो नीचे मुजब उल्लेख करेलो छे.–"वैरीसालजीना पाटवी कुमार हरभमजीए चूडासमा रजपूतो कनेथी लींबडी जीती लीधुं. परंतु बीजी तरफथी एम कहेवामां आवे छे के वेरीसाळजीए लींबडी शहेर वसाव्युं. वि–सं. १७८४ मां तेओ सींहाणीथी लींबडी आव्या. ए वखते भोगावाने सामे कांठे मात्र आयर लोकोनां झुंपडां हतां, भोगावानी उत्तरे हाल ज्यां लींबडी शहेर छे, त्यां ए लोको पोताना ढोरने चारता हता, ए स्थळे पांच लींबडीओ हती, ज्यारे त्यां लींबडी शहेर वसाववामां आव्युं त्यारे ते "लींबडीपा" एवा नामथी ओळखावा लाग्युं. ए शहेर वसाववाना काममां सहाय आपनार कामदार वाघडा रतनशी, बाइश्री वखतुबा अने अंकेवाळीआना खवास वरसोभाइ वणारशी हता.

कर लडाइ थइ अने तेमां ठाकोर हरभमजीना लघु बन्धु अमरसिंहजी काम आव्यां.

वि. स. १८४३ मां ठाकोर हरभमजीनो स्वर्गवास थतां, तेओना कुमार हरिसिंहजी लींवडीनी राजगादीए बेठा; तेओए प्रथम तो पोताना पिताने हाथे आरंभाएला लींवडीना गढनुं जेटलुं काम अधूरुं रह्युं हतुं तेने त्वराथी पूर्ण कराव्युं. त्यारबाद वि. सं. १८५६ ना आश्विन शुदि १० ने दहाडे बरवालाने फरतो गढ बंधाववा स्वहस्ते खात मुहूर्त कर्युं. ए गढ शा. घेला माधव हस्तक बधायो अने तेमां रुपिया १७६००० एक लाख छोतेर हजारनुं खर्च थयुं.

---

१ श्रीयुत झालाकुळना बारोट अमरसिंहना मरणनो संवत. १८०६ बतावे छे, परंतु ए वखते हरभमजी गादीए पण नहोता बेठा. वळी "श्री यशवंत जीवनचरित्र" नामना ग्रन्थमां लखे छे के— एक वखते हरभमजी अंबाजीनी यात्राए गया, तेवामां काठीओए लींवडीपर. हल्लो कर्यो, हरभमजीना भाइ अमरसिंहजी तेनी साथे लड्या अने तेमां तेमनुं मृत्यु थयुं. ए खबर सांभळतांज हरभमजी लींवडी आव्या अने तेओए ज्यांसुधी भाइनुं वैर न वळे त्यांसुधी लींवडीनुं पाणी हराम करी काठीलोकोपर चढाइ करी; मार्गमां आवेलां काठीओनां केटलाएक गामोने लूंटी तेओनां स्त्रीपुत्रादिने केद कर्यां तथा पाळीआदना काठीओए अमरसिंहजीने मारेला होवाथी त्यां जइ तमामने पायमाल करी नाख्या, तेमज पाळीआदने उज्जड वेरान जेवुं बनावी दीधुं; त्यांनी जमीनने गर्दभद्वारा हळ हकावी खेडावी तेमां मीठुं वेराव्युं ए वखते ठाकोर हरभमजी काठीओ तथा काठीआणीओ आदि आशरे ४०० माणसोने केद करी लींवडीमां लइ आव्या अने एक जाहेर दरबार भरी तेओए कह्युं के जे काठीआणीओने हुं पकडी लाव्यो छुं ते मारी व्हेनो छे. तेओने हुं मारा भाइनुं वेर वाळवा माटेज अहीं लाव्यो छुं. तेमना भरथारो तथा अन्य जनो मारा विषे कदाच जूदाज विचार बांधता हशे, परंतु अधर्म भरेलुं आचरण करवुं ए अमारो कुलाचार नथी अने एटलाज माटे हुं अमारी व्हेनोने करीआवर करी छोडी मूकुं छु." आटलुं कही तेओए काठिआणीओने किम्मती पोशाक आपी सहुसहुने गामे सुरक्षितपणे पहोंचाडी दीधी, अने पोते केवा नीतिवान छे तेनी सहु कोइने खात्री करावी आपी. हरभमजी एवा तो साहसिक, शौर्यवान, निडर अने धर्मिष्ट हता के पोतानी प्रजा अने पोताना राज्यना रक्षण उपरांत आसपासमां रहेला पराया तालुकाओनुं पण रक्षण करता हता तेना बदलामां ते तालुकदारो पासेथी "पाळ" लेवामां आवती हती. अधर्मीओ अने धाड-

शौर्यशाली ठाकोर हरिसिंहजीए जूनागढनी फोजने पगारदार तरीके नोकरीमां राखी अने वि० सं० १८५७ मां जतवाडाना गाम वजाणाने भांग्युं, तेमज वढवाणना पराक्रमी ठाकोर पृथीराजजी साथे पण युद्ध कर्युं. ए वखते बन्ने पक्षना माणसो मरातां युद्ध बंध रह्युं हतुं. वि० सं० १८६४ मां ठाकोर हरिसिंहजी प्रभासपाटणनी यात्राए पधार्या हता. ए अरसामां कोइएक विदेशी चारणे भावनगरना महाराजा वजेसिंहजी पासे जइ वात करी के आपे घणा राजाओने नमवर्ती कर्या, परंतु बरवाळाने स्वाधीन करवानुं आपनाथी बनी शक्युं नहि. आ सांभळी महाराजा वजेसिंहजीए बरवाळुं सर करवानो विचार कर्यो अने अगाउथी लींबडीए खबर लखी मोकल्या. घेलाशा तुरतज बरवाळे गया अने त्यांना गढनो बंदोबस्त करी तेमे बधा कोठाओपर तोपो गोठवी दीधी तथा दारुगोळा विगेरे समग्र सामग्रीने एकत्र करी राखी, भावनगरना महाराजा बार हजारनी फोज लइ त्यां आवी पहोंच्या. घेलाशाए ठाकोर हरिसिंहजीनी गेरहाजरीमां भावनगरनी विशाल सेना सामे वधारे वखत टकी शकवानुं अशक्य धारी शान्ति पकडी अने महाराजा विजयसिंहजीने मळी विनंति करी के "बरवाळाना मालिक लींबडीना नरेश हरिसिंहजी हालमां यात्राए गया छे; एमनी गेरहाजरीमां आवो बनाव बनता नाहक भावनगर अने लींबडी वच्चे महान् वैर बधाशे अने एनुं परिणाम सारुं नहि आवे. कोइनी उश्केरणीथी आप जेवा दाना राजाए आवुं म्होटुं साहस उठाववुं ए योग्य नथी पछे आपनी इच्छा. महाराजा विजयसिंहजीए लांबो विचार करी घेलाशाना वचनने वजनदार मान्यां अने सामो तेने पोशाक आपीने पोतानी राजधानी तरफ प्रयाण कर्युं.+

पाडुओ ठाकोर हरभमजीनुं नाम सांभळी थरथर ध्रूजता हता. कोइ पण गुन्हो बन्यानी हकीकत सांभळतां हरभमजी जाते गुन्हेगारनी पाछळ पडता अने तेने पकडी योग्य शिक्षा आपता. वि. सं. १८३१ मां गायकवाड सरकार तरफथी लींबडीपर घेरो घालवामां आव्यो हतो; परंतु ए वखते जुनागढना दिवान रणछोडजी लींबडीनी सहायताए आवी पहोंच्या, वळी ठाकोर हरभमजीनो "कांधो राठोड" नामे एक बहुज बळवान योद्धो हतो. एथी गायकवाडी लश्करने पाछा हठी सलाह करवानी फरज पडी हतो. त्यारबाद जुनागढना नवाबथी रीसाएला श्रीयुत् दिवान अमरजीना भाइ दलपतरामभाइ लींबडीमां आवी रह्या. तेओने श्रीमान हरभमजीए सारो आश्रय आप्यो हतो.

+ "श्री यशवंत जीवनचरित्र नामनां ग्रन्थमां" लखे छे के भावनगरना ते वेळाना महाराजाए वरवाळा उपर घेरो घाल्यो, तेमां हरिसिंहजीए तेमने हराव्या. वळी लींबडीनो गढ बांध्यानी खबर म-

ठाकोर हरिसिंहजीना समयमां कर्नल वॉकर साहेबे त्रीब्युट संबंधी आंकडो मुकरर कर्यो हतो.* आडत्रीश वर्ष पर्यन्त उत्तम प्रकारना राज्यसुखनो उपभोग करी वि० सं० १८८१ मां ठाकोर हरिसिंहजी कैलासवासी थया. ए वखते तेओना कुमार भोजराजजी लींबडीना तख्तपति थया.

ठाकोर भोजराजजी चोथा वि० सं० १८८६ मां सिद्धपुर तथा अंबाजीनी यात्राए पधार्या हता. एओना वखतमा राज्यनी स्थिति बहुज आबाद हती, ईश्वर कृपाथी तेओने त्यां कुमार हरभमजी तथा फतेसिंहजीनो जन्म थयो.

वि० सं० १८९३ ठाकोर भोजराजजी वैकुंठवासी थया त्यारे पाटवी कुमार हरभमजी बीजा लींबडीनी राजगादीए बेठा. तेओनुं नाम दाजीराज हतुं. सद्गुणोना धामरूप ठाकोर हरभमजी ओगणीश वर्ष पर्यन्त प्रजानुं स्नेहपूर्वक संरक्षण करी वि. स. १९१२ ता. ८ जान्युआरी सं. १८५६ मां निःसंतान स्वर्गवासी थया, जेथी एज वर्षे तेओना लघु बन्धु ठाकोर फतेहसिंहजीए लींबडीना राज्यनी लगाम हाथमां लीधी: तेओ मोरबी तावाना गाम बेलामा परण्या हता अने ए राणीजीनुं नाम हरिबा साहेब हतुं. ठाकोर फतेहसिंहजी स्वभावे सरल, स्वधर्मनिष्ठ अने पुण्यशाळी हता; छतां कोइ पूर्वना कर्मसंयोगे तेओनी शारीरिक संपत्ति सारी न होवाने लीधे विश्वासु मंत्रीमंडळ राज्यनो कारभार संतोषकारक रीते चलावता हता. राणीजी हरिबा साहेब पण महा सुज्ञ अने संस्कारी हता; तेओए यशस्वी यशवंतसिंहजी तथा बख्तसिंहजी उर्फे उमेदसिंहजी नामना उभय कुमारने जन्म आप्यो.

श्रीमान यशवंतसिंहजीनो जन्म वि. स. १९१५ ना वैशाख शुदि ६ ने सोमवारे तथा कुमारश्री उमेदसिंहजीनो जन्म वि. सं. १९१८ ना जेठ वदी १२ भोमवारे थयो हतो. वि. सं. १९१८ मा ठाकोर श्री फतेसिंहजीनो स्वर्गवास थतां कुमार श्री यशवंतसिंहजी लींबडीनी राजगादीए अभिषिक्त थया, ए वखते तेओनी उम्मर मात्र त्रण वर्षनीज हती. राजमाता हरिबा साहेब नीतिज्ञ अने कार्यकुशळ होवाथी नामदार ब्रिटीश सरकारे तेओश्रीने राजकाज चलाववानी स्वतंत्र सत्ता सोंपी. पाच वर्ष पर्यन्त तो ए रीते राज्यनो कारभार चाल्यो. परंतु जनानानो पूर्ण मर्यादा

लवाथी गायकवाडी सरदार विठलराव भास्कर चढी आव्यो हतो, परंतु हरिसिंहजीनुं पराक्रम तथा निडरता जोइ सल्लाह करी पाछो चाल्यो गयो.

* वि० सं० १८६४. इ० स० १८०७–८.

जाळवनारां श्रीमती हरिबा साहेबने हाथे कदाच प्रजाने न्यायने बदले अन्याय मळे एवी आशंकाथी नामदार अंग्रेज सरकारे वि. सं. १९२३ मां लींबडीनो राज्य कारोबार आसीस्टंट पोलीटीकल एजन्टनी देखरेख नीचे राख्यो अर्थात् राज्यपर मेनेजमेन्ट थयुं. कुमार श्री यशवंतसिंहजी तथा उमेदसिंहजी वि. स. १९२७ सने १८७१ ना फेब्रुआरी मासमां राजकोटनी राजकुमार कॉलेजमां विद्याभ्यास अर्थे दाखल थया, ए वखते तेओना मुसाहिब तरीके राणा केसरीसिंहजी साथे गया हता. कुमार श्री यशवंतसिंहजीए वि. सं. १९२६ मा पोतानां मातुश्री हरिबा साहेब साथे सिद्धपुर, अंबाजी तथा बहुचराजीनी यात्राए तथा वि. सं. १९२८ मां प्रभासपाटणनी यात्राए पधार्यां हता. त्यारबाद वि. सं. १९२९ मां मुंबइ जइ त्यां पधारेला कलकत्ताना नामदार वाइसरोयने मळ्या, अने ए वर्ष सिंहस्थ होवाथी त्यांथी सीधा नाशिक त्र्यंबकनी यात्राए पधार्यां. ए वखते तेओश्रीए हजारो रुपिआनुं पुण्यदान कर्युं हतुं.

कुमारश्री यशवंतसिंहजीनां लग्न वेला ठाकोरसाहेबनां कुंवरी साहेब मोंघीबा साथे तथा रुवा ठाकोरसाहेबनां कुंवरी माजीराजबा साथे वि–सं. १९३० ना वैशाख वदी ११ ने मंगळवारे मोटी धामधूमथी थयां. तेओ नामदार वि–सं. १९३१ मां भारतेश्वरी राणी विक्टोरीआना कुमार (प्रीन्सओफ वेल्स) नी मुलाकात माटे मुंबइ पधार्यां हता. वि–सं १९३२ ता. ६ एप्रील सने १८७६ ने दहाडे तेओश्रीए इंग्लंडना प्रवास अर्थे प्रयाण कर्युं. ए वखते राजकुमार कॉलेजना प्रिन्सिपाल मी मेकनॉटन साहेब, पटेल आत्माराम जोइताराम, वाघेला रवोभाइ, खवास नाराण तथा खवास नथु विगेरे साथे हता.

यूरोपनी तथा अमेरिकानी मुसाफरी द्वारा महान् अनुभव मेळवी कुमारश्री यशवंतसिंहजी इ–स. १८७६ ना अक्टोबर मासमां कुशळतापूर्वक लींबडी आवी पहोंच्या. तेओने वि–सं. १९३३ ता. १ आगष्ट इ–स १८७७ ना मांगलिक दिवसे झालावाड प्रान्तना आसीस्टंट पोलीटीकल एजन्ट मे. हन्टरसाहेबद्वारा लींबडी स्टेटनी स्वतंत्र सत्ता प्राप्त थइ. प्रजामां अपूर्व आनंद फेलायो. ए महोत्सवमां स्नेही, संबंधी तथा मित्रवर्गे सारो भाग लीधो हतो.

ठाकोरसाहेबश्री यशवंतसिंहजी बाळवयथीज धर्मानुरागी हता; तेओ पोतानो केटलोएक समय शिवपूजनमां, वेदान्त विचारमां, कवि पंडितोना समागममां अने शास्त्र संबंधी चर्चामां व्यतीत करता हता. प्रजा सर्व प्रकारे सुखी हती अने पोताना धर्मनिष्ठ राजाने पिता तुल्य प्रमाणी निरंतर मान भरेली नजरे निहाळती हती. नामदार ठाकोरसाहेब वि–सं. १९३५ ना फागण वदी २ ने
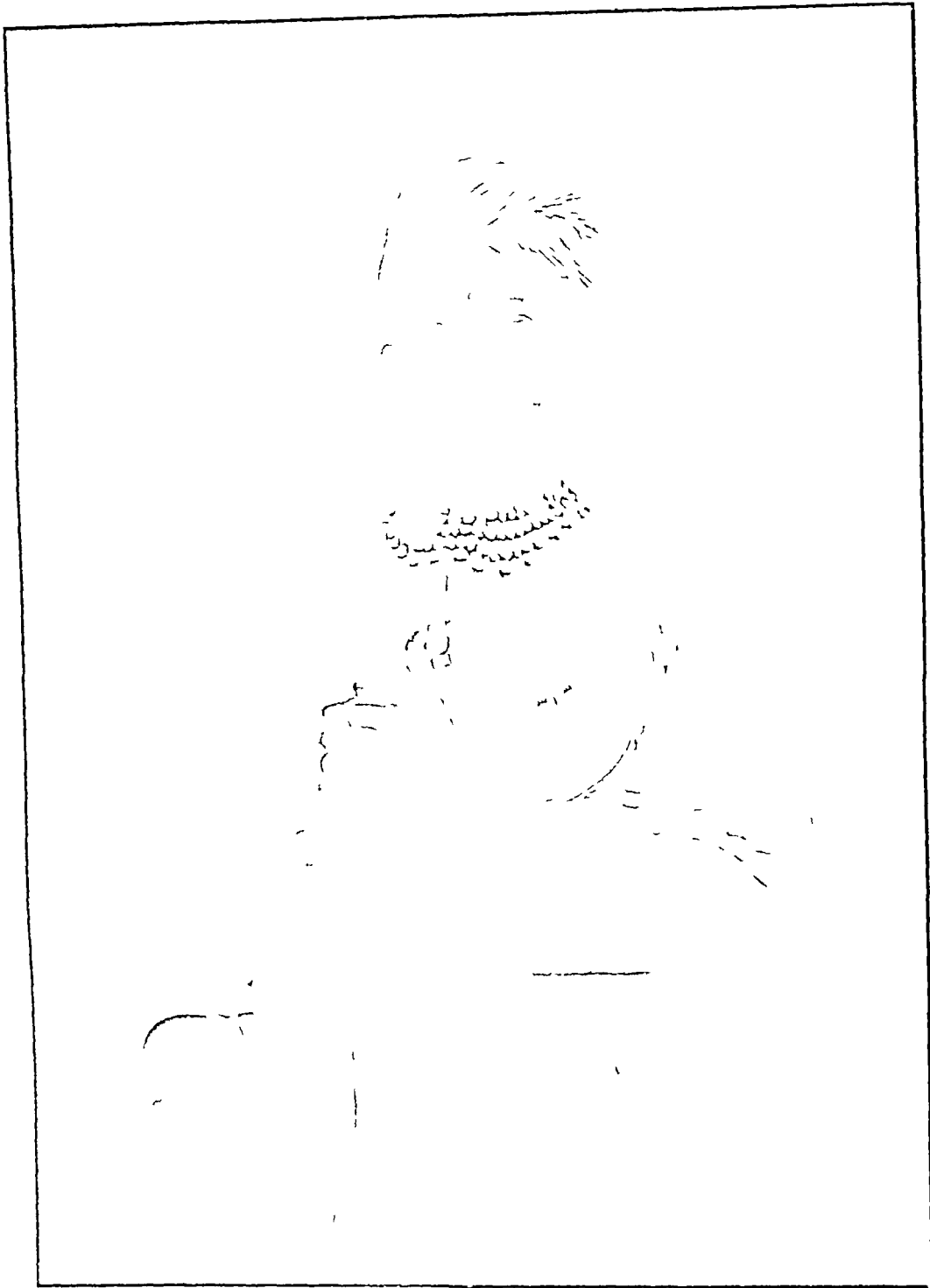
His Late Highness Thakore Saheb Sir Jaswantsinhjee, Limbdi

रविवारे नांदोदनरेश गोहिल गंभीरसिंहजीनां कुंवरी देवकुंवरबा साथे हथेवाळे परणवा पधार्या हता. अने एज वर्षना वैशाख मासनी शुदि ११ ने शुक्रवारे उतेळीआना दरबार दाजीराजजीनां कुंवरी बाइराजबा साथे लींबडीमांज पोंखाणा हता. ए प्रसंगे लाखो रुपिआनो व्यय करावामां आव्यो हतो. त्यारबाद पोताना लघुबन्धु उमेदसिंहने वेला तथा गढकाना कुंवरी साथे वि–सं. १९३६ ना वैशाख शुदि ८ ने सोमवारे म्होटी धामधूमथी परणाव्या हता. वि–स १९३७ मां भावनगर गोंडल रेल्वेने खुल्ली मुकवामां आवी त्यारे नामदार ठाकोरसाहेब श्री जसवंतसिंहजी बहादुरे मुंबइना नामदार गवर्नर साहेब, काठिवाडना मे. वालासान पोलीटीकल एजन्ट साहेब, केटलाएक देशी राजवंशीओ तथा म्होटा अमलदारो वगेरेने एकरोज उत्तम प्रकारनी मिजमानी आपी हती अने तेमा उदार दिलथी हजारो रुपिआ उडाव्या हता. वि–सं. १९३७ मां तेओ नामदार महाबलेश्वर पधार्या हता अने त्याथी वळती वखते आबुजी तथा अंबाजीनो कल्याणकारी यात्रा करी आनंदपूर्वक राजधानीमां आवी पहोंच्या. वि–सं. १९४० मां तेओश्रीने मुंबइना नामदार गवर्नरसाहेबनी धारासभामा सभासद तरीके स्थापवामां आव्या.

वि० सं० १९४१ मां नामदार गवर्नर लॉर्ड रेनी मुलाकात माटे नामदार ठाकोर साहेबनुं मुंबइ पधारवुं थयुं हतुं. एज वर्षे तेओ विलायत तरफ विदाय थता कलकत्ताना वाइसराय लॉर्ड रीपननी मुलाकात अर्थे बीजीवार मुंबइ पधार्या हता अने ए वर्ष सिंहस्थ होवाने लीधे त्यांथी परभारा सहकुटुम्ब नाशिकत्र्यंबकनी यात्रा पण करी आव्या, ए वखते स्वधर्मपरायण श्रीमान ठाकोर साहेबे अनेक प्रकारनां पुण्यदानथी महान् सुयश मेळव्यो हतो.

वि० सं० १९४३ मां ज्यारे नामदार गवर्नर लॉर्ड रे साहेब काठिआवाडमां पधार्या, त्यारे श्रीमान ठाकोर साहेबे तेओने लींबडी पधारवा आमंत्रण कर्युं अने पोताना नविन राज्यमहेलमां एक प्रशंसनीय मानपत्र आप्युं. जेनो नामदार गवर्नर साहेबे सहर्ष स्वीकार कर्यो. ए प्रसंगे लींबडी स्टेटना तमाम भायातोए नामदार ठाकोर साहेबना हुकमथी त्यां हाजरी आपी हती.

वि० सं० १९४२ मां भारतेश्वरी राणी वीक्टोरीयाना प्रीन्स ड्युक ऑफ कोनोट पोतानां बानु सहित राजकोट पधार्या ते वखते श्रीमान ठाकोर साहेबे त्यां जइ देशी रजवाडाओना महान् दरबार मध्ये नामदार प्रीन्सने काठिआवाड तरफथी आपवा तैयार करेलुं मानपत्र वांची संभळाव्युं हतुं. एज वर्षे वंदनीय महाराणी वीक्टोरीयानी ज्युबिलीनो महोत्सव होवाथी काठिआवाडनां समस्त राज्यो तरफथी तेओने मुबारकबादी तथा मानपत्र आपवा माटे नामदार ठाकोर साहेब श्री जसवंत-

सिंहजी वैशाख शुदि ९ ने दहाडे विलायत पधार्या. ए वखते तेओनी साथे राणा केसरीसिंहजी, कोचमेन हरिभाइ तथा मघा अने अणदा नामना बे खवास हता. विलायत पहोंच्या बाद श्रीमान ठाकोर साहेब महाराणी विक्टोरीयाने मळ्या. भाग्यशालिनी भाग्तेश्वरीए तेओने पोताना मनोहर महेलनी अंदर मिजमानी आपी अने " नाइट कमान्डर ऑफ धी इन्डीअन एम्पायर " नो मानवंतो इल्काब स्वहस्ते एनायत कर्यो. श्रीमान ठाकोर साहेब त्यांनुं तमाम काम पूर्ण कर्या बाद ब्रीजवॉटर नामना एक महान् ग्रहस्थ साथे अमेरिकामां पधार्या अने ए खंडने पश्चिम कांठे रहेला सेनफ्रान्सीसना बंदर सूधी मुसाफरी करी. वि० स० १९४४ ना मागशर वदी १० ने शुक्रवारे पोतानी राजधानीमां आवी पहोंच्या. ए मुसाफरीमां आशरे एक लाख रुपिआनुं खर्च थयुं हतुं.

श्रीमान् ठाकोर साहेबश्री यशवंतसिंहजी सन १९०७ ना एप्रील मासनी ता. १५ मीए कैलासवासी थया; तेओने कांइ संतति हती नहि, जेथी पोताना गादीवारस तरीके कोइ योग्य नरने चुंटी कहाडवा तेओनी प्रथमथीज इच्छा हती. पोताना अवसान पहेलां थोडा वर्ष अगाउ ज्यारे तेओ पुनामां हता, त्यारे हालना श्रीमान् ठाकोरसाहेब श्री दोलतसिहजी के जेओ ते वखते जामनगर स्टेटना इम्पीरीअल लान्सर्सना उपरी हता अने कर्नल दादभा ए नामथी ओळखाता हता, तेमना तरफ तेओश्रीनी दृष्टि ठरी हती. ए विचार धीमे धीमे मुदृढ थतो गयो अने पोताना अवसान समये तेओश्रीए एवी इच्छा दर्शावी के मारा वारस तरीके नामदार सरकारे कर्नल दादभाने मंजुर राखवा.

लींबडीनी राजगादी माटे अन्य वारसदारे वांधो उठाव्यो हतो, परतु मरहुम ठाकोरसाहेब सर यशवंतसिहजीनी इच्छाने मान आपीने तेमज श्रीमान् दोलतसिहजीने राजवंशी तथा सुशिक्षित गणीने नामदार सरकारे तेमनेज गादीवारस तरीके मंजुर राख्या, अने इ. स. १९०८ ना एप्रील मासनी ता. १४ मीए लींबडीनी राजगादीनो स्वतंत्र अधिकार सोंप्यो.

श्रीमान् ठाकोरसाहेब श्री दोलतसिहजी बहादुरे तख्तनशीन थया बाद प्रजाने सर्व प्रकारे संतोष आप्यो छे, अने मरहुम ठाकोरसाहेबनी खामी जरा पण जणाववा दीधी नथी. तेओ प्रथमथीज लींबडीना भायात अने गरासदारनी पंक्तिमां गणाता आव्या छे. वि. सं. १५४२ मां ज्यारे ठाकोर खेताजीनो स्वर्गवास थयो, त्यारे तेमने नाजीजी आदि तेर पुत्रो हता, पाटवीकुमार नाजीजी अंगहीन होवाथी राज्यने दुश्मनोना डरथी बचावी शके तेवा न हता, एथी बीजा कुमार भाणजीने गादीए बेसाडवा राजकीय जनो एकमत थया, परंतु राणो भाणजी दीर्घदर्शी होवाथी तेमणे कह्युं

के आपणी रजपुत ज्ञातिमां म्होटाभाइनी हयाती होय त्यांसुधी न्हानाभाइने गादीए वेसाडी शकाय नहि: अने तेम करीए तो नाहक भाइभाइमां क्लेश थाय, एटला माटे कोइने माठुं न लागे तेम करवा मारो विचार छे; सांगाजी सहुथी न्हाना छे. एने गादीए वेसाडीए तो कोइने कहेवापणु रहेशे नहि. ए वात सहुने रुची; जेथी सांगाजीने राजगादीए वेसाड्या. ए वखते राणा भाणजी के जे हालना श्रीमान् ठाकोरसाहेब श्री दोलतसिंहजी वहादुरना वडवा थता हता. तेओनी उदारवृत्ति विषे सर्व कोइ प्रशंसा करवा लाग्या. ठाकोरश्री सांगाजीए पोताना वडील बंधु नाजोजीने "वढेल" तथा राणा भाणजीने पच्छम, झोवाळुं, लालोयाद तथा जणसाली नामनां चार गाम गरासमां आप्यां के जे खेताजीनी कारकीर्दीने अंते लखाइ गयुं छे.

राणा भाणजीने हरदासजी नामे एक पुत्र थया अने हरदासजीने त्यां पण मेपजी नामे एक पुत्र अवतर्या, ए मेपजी वहुज वहादुर हता, तेमणे हादा नामना काठी साथे धींगाणुं करी जीत मेळवी हती. ए वावतमां कोइ एक कविए नीचे मुजब दोहो वनावेलो छे.

"पाणी पच्छमीआ, चूडासर चडावीयुं;
हामे हादलका, मेंगल ढाळयो मेपला."

राणा मेपजीने खेताजी नामे एक पुत्र थया, ए खेताजोना पुत्र नागजीए दामाजी गायकवाडनी फोजने पच्छमनी सोममां लुंटी अने तेनो रु० २४०००) चोवीश हजारनो माल हाथ कर्यो. गायकवाडे राणा नागजीने कांइपण नहि कहेतां ए सिंहाणीना भायात होवाथी त्यां मोसल मोकल्या. मोसल घणा समय सूधी सीहाणीमां पड्या रह्या, तेनी मोसलाइना रुपिया पण चड्या, एथी लुंटनो माल अने मोसलाइना रुपिया वसूल करवा राज्य उपर गायकवाड तरफथी वधारे जबरजस्ती थवा लागी. ठाकोर साहेबने कोइए समजाव्यु के राणो नागजी आवी म्होटी रकम आपणने एक साथे भरी शके तेम नथी. माटे जे जे वखते एनां खळां तैयार थाय, ते ते वखते माणसो मोकली जबरजस्तीथी आपणे कवजे करी लेवां. एम करवाथी धीरे धीरे आपणां नाणां वसूल थइ जशे. आ वात ठाकोरसाहेबने ठीक लागवाथी तेओए राणा नागजीना पच्छम नामना गाम उपर फोज मोकली घउंना खळां जप्त कर्यां. राणा नागजीए निश्चय कर्यो के हवे गरास हाथ रहेशे नहि, माटे तमाम गरास ब्राह्मण तथा चारणो वगेरेने कृष्णार्पण करी अहींथी चाल्या जवुं एज उचित छे. पछीथी व्हारवटुं खेडी वाहुबळथी वीजो गरास मेळवशुं. एम धारी तेमणे ब्राह्मणो तथा चारणोने योल्ावी जमीन आपवा मांडी,

आसपासना घणा ब्राह्मणो भेळा थया हता. राणा नागजीभाइने त्यां तेमनो भाणेज मिजमान बनी आवेल हता, वखते मारामारी थाय अने पोताने आंगणे भाणेजनुं रुधिर रेडाय नो महा पाप लागे एवा भयथी पोताना पौत्र सजाजी (जेमलजीना पुत्र) साथे तेमने पीपळीए रवाना कर्या, पाछळथी कोइएक ब्राह्मणे आवी गरास माग्यो. राणा नागजीभाइए कह्युं के गरासनो धणी पीपळीए भाणेजने मुकवा गएल छे ते आवीने आपशे, एक दिवस तमे रोकाओ. ब्राह्मणने भ्रान्ति थइ के मने गरास आपवो नथी एटला माटे व्हानुं काढे छे; माटे आ वात सीहाणीनी फोजवाळाने कहुं तो तेना तरफथी मने जरुर गरास मळशे, आम निश्चय करी ए फोजना उपरी पासे गयो अने बधी वात जाहेर करी. फोजना उपरीए तेने बदलो आपवा दिलासो दइ सजाजीने केद करवा माटे स्वारोने पीपळी तरफ रवाना कर्या. सजोजी पण भाणेजने सहीसलामत घेर पहोंचाडी पाछा वळी चुक्या हता. मार्गमां फोजनो भेटो थयो, फोजवाळाए तेमने तावे थवा समजाव्या, परंतु जयमलजीना पुत्र अने नागजीना पौत्र शूरवीर सजोजी धींगाणुं करवा सज्ज थया, पोते एकला हता, तो पण फोजनां घणां माणसोने कापी काम आव्या, तेमनी खांभी पच्छम तथा पीपळी वच्चे हाल पण मोजुद छे. आ खबर राणा नागजीभाइने मळतां तेओ पोताना पौत्र भीमाभाइ तथा सजाजीना बालपुत्र वीसाभाइ वगेरे कुटुंब कबीलाने लइ गोंडल तरफ चाली निकळ्या. पच्छमवाळाने परहदमां पहोंची गएला जाणी तेमनो तमाम गरास दरबार दाखल करवामां आव्यो.

राणा नागजीभाइए पोतानां व्हेन गोंडलना ठाकोरश्री कुंभाजी वेरे आपेल हतां. ठाकोर कुंभाजीए तेमने चोरडी तथा गुंदाळुं नामनां बे गाम आपी फोजना उपरी बनाव्या. राणा नागजी तो पच्छम वगेरे गामनो गरास छोडी गोंडल गया, परंतु तेमना कोइएक खवासनी जबु नामनी दीकरीए पोताना मालिकनुं निमक हलाल करवाअर्थे कम्मर कसी, ते असहाय होवा छतां वडोदरे जइ पहोंची अने माथे बळती सगडी लइ दामाजी गायकवाड पासे पोताना मालिक उपर गुजरेलो जुलम जाहेर कर्यो. बाइनी स्थिति उपर दामाजीने दया आववाथी तेमणे राणा नागजीनो गरास पाछो आपवा सीहाणी उपर हुकम लखी मोकल्यो, ठाकोरसाहेबे ए वखते अनेक व्हानां बतावी गरास पाछो आप्यो नहि, जेथी जबुबाइ बीजी वार वडोदरे गइ अने फरी एज स्थितिमां फरियाद करी हुकम लखाव्यो तो पण कार्यसिद्धि न थइ, त्यारे ते त्रीजी वार त्यां गइ अने हुकमनी साथे गायकवाडनां माणसोने पण साथे लावी. आ वखते सीहाणी नरेशे पच्छमवाळाने गरास पाछो आपवानुं वचन दइ गायकवाडी माणसोने विदायगीरी आपी, अने पाछळथी जबुबाइनो जान लेवा

माटे घाट घड्यो, तेओए जाण्युं के ज्यां सुधी जवु जीवती छे, त्यां सुधी आमने आम उपाधि कराव्या करशे, माटे एने परलोकमां पहोंचाड्या विना दामाजीनी फोजनो दरोरो सीहाणीने सुखे रहेवा देशे नहि. थोडा वखत पछी ठाकोर साहेबे जवुवाइने समशेरना झटकाथी कपावी पोतानो विचार पार पाड्यो, मरतां मरतां जवुवाइए पोताना स्रवता रुधिरमां हाथ भीजावी राणा नागजीनी डेलीए छापा मार्या अने कह्युं के ज्यां सुधी राणा नागजीनो वंशज महाराजा मांगुजीना तख्त पर नहि बेसे, त्यांसुधी सीहाणी नरेशना वंशनी वृद्धि थशे नहि अने त्यां लगी आ छापा पण कोइ प्रकारे भुंसाशे नहि. ए जवुवाइने राणा नागजीना वंशजो एक देवी तरीके माने छे अने अद्यापि पन्ठममां तेने पूजे छे तथा प्रसंगोपात नैवेद्य धरावे छे.

उपर मुजब बनाव बन्या बाद थोडे वखते राणा नागजीनो गोंडलमां स्वर्गवास थतां तेमना पुत्र भीमाजीने श्रीमान् गोंडल नरेशे सैन्यनुं आधिपत्य आप्युं. भीमाजीना म्होटा भाइ सजाजीना वीसाभी, वीसाभीना रामोभी अने रामाभीना सरतानजी नामे पुत्र थया. ए सरतानजी निर्वंश गुजरी गया.

राणा भीमाभीए गोंडलनी फोज लइ लींबडी उपर चालीश वर्ष पर्यन्त व्हारवटुं खेडयुं, ज्यारे एमने वृद्धावस्था प्राप्त थइ, त्यारे तेमना पुत्र हरिभीने गोंडलना लश्करनुं उपरीपणुं मळ्युं. तेओ गोंडलनी फोज पैकी हसन छडीआताना दोढसो घोडा लइ पाळीयाद आव्या, अने त्यांना हाथी खाचर मारफत लींबडी सबधी तपास कराव्यो. त्यांथी एवा समाचार मळ्या के ठाकोर साहेबनो प्रीतिपात्र कांधो राठोड बीमार छे अने तमे गोंडळथी नीकळ्या छो, ए खबर तेमने पडी गया छे. आ सांभळी राणो हरिभी पांच घोडेस्वार साथे लींबडी आव्या अने सीधा कांधा राठोडने घेर गया. हसन वगेरे बीजा स्वारोने टुडा नामने स्थळे राख्या हता. हरिभीए कांधा राठोडने सुवाण पूछया बाद परस्पर ओळखाण नीकळी, तेवामां ठाकोरसाहेब पण त्यां पधार्या. ठाकोरसाहेबे पूछ्युं के आ नवा मेमान कोण? कांधाराठोडे जवाब आप्यो के ए मेमान नवानगरना छे अने वरसोडे जता आही मने सुवाण पूछवा आव्या छे. आजनो दिवस मारे त्यां रोकाशे; ठाकोर साहेब पधारी गया बाद कांधाराठोडे हरिभीने कह्युं के तमारी साथे केटला सवार छे? राणा हरिभीए समग्र हकीकत जाहेर करी. कांधाराठोडे कह्युं के ए बधा स्वारोने लींबडी बोलावी ल्यो. हरिभीए प्रथम तो आनाकानी करी, पण पछीथी हसन वगेरे तमाम माणसोने लींबडी बोलाववा हा कही. बीजे दिवसे राणा हरीभीनी हाजरीमां श्रीमान् ठाकोर साहेब कांधा राठोडने

त्यां पधार्या. ए वखते कांधा राठोडे कह्युं के–साहेब, आपणे वढवाण नरेश चांदाभीनी साथे वेर छे, माटे एनी साथे पच्छमवाळा के जे व्हारवटे छे तेने वढादी मारीए तो ते बेमानो एक पक्ष नाश पामशे अने तेथी आपणने लाभ थशे. ए वात ठाकोर साहेबने गमी, परंतु तेओ तुरत बोली उठ्या के पच्छमवाळा आपणा साथे व्हारवटुं खेडे छे अने कांइ मददे आवे ? कांधा राठोडे उत्तर आप्यो के ए तो हुं गमे ते प्रकारे एने समजावी कार्यसिद्धि करावी लइश. "बहुसारुं" कही ठाकोर साहेब पोताने अवासे पधार्या. राणो हरीभी त्यांज बेठा हता, तेओए कांधा राठोडना कहेवाथी हसन वगेरे समग्र स्वारोने सत्वर बोलावी लीधा, ए बधाने राज्य तरफथी उतारा वगेरेनी सगवड करी आपवामां आवी, त्यारबाद बिमारीथी मुक्त बनेला कांधाराठोडने साथे लइ श्रीमान् ठाकोर साहेब शीहाणी देवदर्शनार्थे पधार्या. ए वात लींबडी रहेना वढवाणना गुप्त दूते तुरत वढवाण पहोंची जाण करी, त्यांथी ४००) चारसो घोडेस्वार लींबडी आव्या अने निरांते लूंट चलावी तथा केटलांक वान पकड्या. ए तमामने नागनेशना गढमा राखवाना इरादाथी वढवाणनी फोज भोगावाने पेले किनारे पहोंची, त वखते तेमांना कोइ कार्यकुशळ माणसे कह्युं के आम लींबडीनो माल लइ नागनेशना गढमां जाळवी शकाशे नहि. माटे वढवाण जइए तो सारु आ रीते निश्चय करी बधा पछा वळ्या, ए पहेलां राणो हरीभी पोताना समग्र स्वारो सहित वढवाण तरफ चाली नीकळ्या हता, तेओ एटलेसुधी आगळ वध्या के ज्यांथी वढवाणनां देवमंदिरो तथा राजभुवन वगेरे स्पष्ट रीते द्रष्टिगोचर थतां हतां, परंतु लींबडीनो माल लूंटी चाली निकळेली वढवाणनी फोजनो तेओने मिलाप न थयो, जेथी बधा पाछा फर्या अने केराळा गामना तळाव नजीक पहोंच्या त्यां दूरथी अश्वोना पदप्रहार वडे उडेली रजना समुदायने लीधे धूमरित बनेल आकाश तरफ द्रष्टि करी राणा हरीभीए पोताना स्वारोने सचेत करी उक्त तळावमांज यन्त्रनालिकाओने दारू गोळीथी सज्ज करवा आज्ञा आपी, जो के वढवाणना घोडेस्वारोए ए लोकोने जोया, परंतु पोताना सैनिको विशेष प्रमाणमा होवाथी तेओए अश्वोनी गतिने अटकावी नहि. अने पोरसमां आवी परस्पर बोलवा लाग्या के–लागे छे तो लींबडीना माणसो, पण कांइ हरकत नहि, बाजना झपाटा पासे बिचारा तेतरनुं बळ क्यांसूधी टकवानुं ? एने पण केद पकडी साथे लेता जइए एटले कारागारनी कोटडीओमां भले कल्लोल कर्या करे. मिथ्याभिमान मनुष्योनुं केटलुं अहित करे छे ए आ उपरथी स्पष्ट समजी शकाय छे. वढवाणनी फोज नजीकमां आवी के तुरत राणा हरीभी वगेरे ए वीरहाकनी साथे बंदूको छोडी अने तुरतज म्यानमांथी तळवारोने खेंची

हिम्मतभर दुश्मनोना दळ उपर हल्लो कर्यो अने " हरहर महादेव " एवा उन्नत उच्चारथी एकाएक गगनमंडळने गजावी मूक्युं. राणा हरीभी वगेरेए छोडेली अकेक गोळीथी टोळे वळेलो वढवाणनी फोजनां बब्बे चार चार माणसो वींधाइ गया अने आशरे बसो माणसो एकीसाथे मरणने शरण थया, फोजमां भगाण पड्युं, बाकीना बसो त्रसो प्राण बचाववा खातर लींबडीथी लूंटेला मालने तथा पकडेला बानने पडतां मूकी पलायन करी गया. आ वखते हसन छडीआए राणा हरीभीने कह्युं के बापु! हवे कोइ पाछुंवाळीने जुए एम नथी, माटे दीभे राखो, एम कही वढवाण फोज पाछळ घोडाओने मारी मूक्या अने ठेठ वढवाणना गढ सुधी गाजरमूळानी माफक प्रतिपक्षीओने कापी पाछा वळ्या. केराळा तळावमां आवी बान छोड्यां अने लींबडीना माल साथे हाथ आवेलो केटलोक वढवाणनो माल पण स्वाधीन करी आगळ वध्या. आ अरसामां शीहाणीथी कांधा राठोड साथे पाछा वळेला श्रीमान लींबडी नरेशे मार्गमां पोतानी रैय्यतमांना केटलांएक मनुष्योने जोइ आश्चर्यथी पूछ्युं के तमो अही क्यांथी ? रैय्यते जवाब आप्यो के—साहेब ! आपेज अमने छोडाव्या, बचाव्या अने वळी अजाण्यानी माफक आम शुं पूछो छो ? आ शब्दो सांभळी वधारे विस्मित बनेला ठाकोरसाहेबे कांधाराठोडने कह्युं के आनो भेद मारा समजवामां आवतो नथी. त्यारे कांधाराठोडे जणाव्युं के—कृपानाथ ! आपणी गेरहाजरीथी वाकेफ थइ वढवाणनी फोज लींबडी आवी हशे अने कांइ लूंटफाट करी आ लोकोने बान पकडी लइ गया हशे. रैय्यते कह्युं के—जी हा. एज बीना बनी छे, पण कोइ बहादुर पुरुषो के जेणे अमने छोडाव्या तथा लींबडीनो बधो माल हाथ कर्यो एमणे वढवाणनी फोजने एवी तो छिन्नभिन्न, कंपायमान अने कतल करी छे के जेनुं वर्णन अमाराथी थइ शकतुं नथी. अमे खात्रीथी नजरे जोएलुं कहीए छीए के वढवाणना लगभग चारसो घोडेस्वारोमांथी भाग्येज पांच पचीश बचवा पाम्या होय ? श्रीमान् ठाकोरसाहेबे कांधाराठोडने पूछ्युं के ए बहादुर पुरुषो कोण हशे ? के जेणे आपणी रैय्यतनी रक्षा करी लींबडीनी जती आबरुने जाळवी ? कांधाराठोडे प्रत्युत्तर आप्यो के ए बहादुर पुरुषो बीजा कोइ नहि पण पन्डमवाळा राणो हरीभी आपणे ज्यारे सीहाणी आव्या त्यारे में तेओने लींबडी रोकी राख्या हता. एमणेज आपणा राज्यनी रक्षा करी छे. आ रीते वातचीत चाली रही छे त्यां राणो हरिभी आवी पहोंच्या. श्रीमान ठाकोरसाहेब तेमने प्रेमपूर्वक मळ्या अने आदरमान सहित लींबडीमां लइ आव्या. बीजे दिवसे जाहेर दरबार भरी राणा हरीभीए बजावेली राज्यसेवाना बदलामां तेमने गाम "बलाळु" गरासमां आप्युं अने गायकवाडना रु. २४०००) चोवीश हजार भरी आपे तो

पच्छम वगेरे गामो पण पाछां आपवानो इच्छा बतावी; परंतु ए वखते नाणानी एटली बधी तंगी हती के एक सारा राज्यमांथी पण एटली रकम नीकळी शके तेम न हती, तो एटला रुपिआ गरासदारो पासे तो क्यांथीज होय ?

आ रीते बाहुबळथी " वलाळु " गरासमां मेळवी राणो हरीभी श्रीमान् कींवडो नरेशनी रजा लइ गोंडळ गया. त्यां तो तेमने निवृत्तिए बेसवानो वखतज न मळ्यो, कारण के ए वखते " जेनुं जोर तेनी जमीन " एज दोर उपर राजपूतोना मन दोराएलां हतां. गाम धोराजी प्रथम जुनागढनी हकुमतमां हतुं परंतु गोंडल ठाकोरे दळना बळथी तेने स्वाधीन कर्युं, फरी एना पर पोतानी सत्ता जमाववा जुनागढनी जबरी फोज आवी. गोंडळनुं लश्कर पण लडवा माटे सामुं जतुं हतुं तेवामां हरीभीनो रस्तामां भेटो थयो. गोंडलनरेश कुंभाजीने हरीभीए आ प्रमाणे अश्वारुढ थवानुं कारण पूछतां तेमणे उक्त वात जणावी. हरीभी साथे आववा तैयार थया. त्यारे कुंभाजीए कह्युं के मामा, तमे हजु चाल्या आवो छो तेथी घेर जइ आवो तो सारुं. पण हरीभी तो आग्रहथी साथे आववा नीकळ्या. मार्गमां जे जगोए बे फांटा पडता हता ते जगोए शुकनावळीए कुंभाजीने जणाव्युं के टुंको रस्तो अशुभ छे. तेथी तेमणे फेरवाळे रस्ते जवानुं कबुल कर्युं. त्यारे पोताना बाहुबळ उपर आधार राखनार हरीभीए कह्युं के हुं तो दुश्मनोने जे रस्तेथी झट मळी शकाय ते रस्तो शुभ समजु छुं. तमने ठीक पडे ते रस्ते जाओ. हुं तो टुंके रस्ते जइश एम कही एकज माणस साथे लइ चालता थया. धोराजी पहोंची दुश्मनोनी छावणीमां एकदम प्रवेश कर्यो, सूबाना तंबु पासे जइ कहेवराव्युं के सूबा साहेबने बोलावो. हथोहथ नवाब साहेबनो कागळ आपवानो छे. आथी सूबो बहार आव्यो के तुरतज पोताना भालाना एकज प्रहार वडे सूबाने ठार कर्यो. छावणीमां तो कोलाहल मची रह्यो. दुश्मनोए जाण्युं के सेना आवी पहोंची. तेथी प्राण लइ सर्व दुश्मनो नासवा लाग्या. हरीभी सूबाने मारीनेज शांत न थया पण तेमनी पाछळ पड्या. छावणीना माणसो लगभग चार कोश पहोंच्या पछी जोयुं तो मात्र बेज माणसोने जोया तेथी हिम्मत राखी सामा थया. भारे मारामारी थइ तेमां पण पाच पंदर माणसोने प्रबळ पराक्रम वडे ठार करी हरीभी नाम अमर करी काम आव्या. हाल पण ते जगोए हरीभीनी खांभी छे. तेमनी प्रशंसा करतां कोइएक कविए कह्युं छे केः—

" आगळ गोहेल सामैये ग्योतो, एम जाडा संगत जोइ;
हरने हामो दोइ, एमां कीओ भलेरो भीमाउत. "

राणा हरीभीने वखतोजी नामे एक पुत्र हतो. दडवाना काठीओए ज्यारे धोराजीमां लूंट करी ढोर वाळ्यां, त्यारे तेनी पाछळ गोंडळ तरफथी राणो वखतोजी चारसो घोडां लइ चड्या, जेतपुर तथा पेढळा वच्चे भेटो थतां धींगाणुं थयुं अने तेमां काम आव्या. गोंडळनी फतेह थइ. ए वखतोजीना रवोभी, माळोभी, मेघोभी, पांचोभी, तथा लखोभी नामे पांच पुत्र हता.

अंग्रेजी फोजना उपरी अने कच्छ माडवीना रहेवाशी खत्री सुंदरजीशेठे भडलो भांगवा माटे गोंडळ ठाकोर पासे लश्कर माग्युं. ठाकोरसाहेबे राणा हरीभीना न्हाना पुत्र पांचाभीने तथा लखाभीने लश्कर साथे मोकली आप्या. ए बेउ एए भडलो भांगी, भाणखाचरने केद कर्यो; चुडा उपर चडाइ करी, चुडाना ठाकोर साहेबने केद कर्या; खांडाधारना जाडेजा लखाभीनुं जोर पण जोयुं. नव दिवस लडाइ चाली, खांडाधार भांगी जाडेजा लखाभीने केद कर्या, बाद बंगा जोडोए आव्या, त्यां खंडणी कबूल करवाथी केदीओने मुक्त कर्या. ए तमाम कार्यमां राणा पांचाभीए तथा लखाभीए बहुज बहादुरी बतावी हती. ए लखाभीना व्हेन सोनबा नवानगरना जामश्री रणमल वेरे आपेलां हतां. श्रीमती सोनबाने पेटे प्रातःस्मरणीय दानवीर जामश्री विभाजीनो जन्म थयो. ज्यारे जाम विभाजी नवानगरनी गादीए बिराजमान थया त्यारे तेओए पोताना मामा लखाभीने जामनगर बोलावी "वोडो तथा खाखरीयुं" नामना बे गाम गरासमां आप्यां अने अमीर तरीके पोता पासे राख्या. ए लखाभीने हकोभी, मुळुभी, वदोभी, काळुभा तथा सामतसिंह नामे पांच पुत्र थया, तेमांना बीजा मुळुभीना हालोभी, भीमोभी तथा दादभा नामे त्रण पुत्र थया. तेमांना दादभासाहेब के जेओ सांप्रत समये स्व. लींबडीना ठाकोरसाहेब श्री दोलतसिंहजी एवा नामथी सुप्रसिद्ध छे, तेओ मरहुम जामश्री विभाजीना दरबारमां उछर्या अने उंचा प्रकारनी केळवणी मेळववा समर्थ थया; जामश्री विभाजीए तेओनी उत्तम कावेलीअत जोइ ए वखते स्टेटमां उभा करवामां आवता इम्पीरीअल सरवीस लश्करना उपरी तरीके निमनोक करी. उक्त कार्यमां तेओए घणी सारी आबरु मेळवी अने पोताना हाथ हेठेना लश्करने युद्ध संबधी उमदा तालीम आपी अने पोते पण जोके ए विषयनुं उत्तम ज्ञान धरावता हता, तोपण पुना, डीसा, सीमला, मथुरा अने मीरत वगेरे स्थळे जइ रीतसर लश्करी परीक्षाओ पसार करी. तेमज जे जे अमलदारोना परिचयमां आव्या, तेमनो उंचो अभिप्राय मेळव्यो. ज्यारे पोते पुनामां हता त्यारे लश्करी परेड अने कांप एक्सरसाइझमां एवी तो प्रवीणता धरावता हता के जेथी इन्स्पेक्टींग ऑफीसर केप्टन फॉरबस, बोम्बे साउथ लेन्सर्सना कमान्डींग ऑफीसर कर्नल पेगन तथा कर्नल जोन्स एकी अवाजे तेमनी प्रशंसा करवा लाग्या अने तेमना विवेकी स्वभावने लीधे पोतपो-

तानो हर्ष दर्शाववा लाग्या. श्रीमान् ठाकोरसाहेब ज्यारे जामनगर इम्पीरीअल सर्वीस टूपना क्रमान्डींग ऑफीसर हता, त्यारे मुंबइना आगला गवर्नर लॉर्ड हेरीसनुं तेओए खास ध्यान खेंच्युं हतुं. ज्यारे नामदार गवर्नर जामनगरना बंदरपर उतर्या, त्यारे तेओए पोताना भाषण दरम्यान खु. ठाकोर साहेबनां खूब वखाण कर्यां हतां. इ. सं. १९०१ मां आस्ट्रेलीआने फीडरल पार्लामेन्ट आपवानुं नक्की थयुं. ए वखते पोतपोतानी खुशाली तेमज संतोष जाहेर करवा माटे ब्रीटीश लश्करनी माफक जुदां जुदां राज्योनां इम्पीरीअल सरवीस टूप्समांथी चुंटी कहाडेला ऑफीसरोने त्यां मोकलवानो नामदार सरकारे निश्चय कर्यो. ३४ कमीशन्ड ऑफीसरो अने ६६ नोन कमीशन्ड ऑफीसरोने पसंद करवामां आव्या. खु. ठाकोर साहेब दोलतसिंहजी पण तेमांना एक हता. ए टोळी "डेलहाउसी" नामनी आगबोटमां ता. २४ मी नवेम्बरे मुंबइथी रवाना थइ डीसेम्बर मासमां सीडनी बंदरे पहोंची; त्यांथी तेओ सर्व ब्रीसबेन गया अने ते वखते लॉर्ड लेमींग्टनने मळवानो तथा तेमनी साथे ओळखाण करवानो प्रसंग मळ्यो. उपरांत ए ट्रीप दरम्यान आस्ट्रेलीयाना पांचे विभागो, टासमानीया, न्युझीलांडना मुख्य शहेरो तथा बीजी केटलीएक जाणवा जोग जग्याओ जोवानो अने ए बधां संस्थानोना मुख्य वजीरोने तथा लॉर्ड होपटाउनने मळवानो श्रीमान ठाकोर साहेबने प्रसंग मळ्यो हतो. न्युझीलांडनी मुसाफरी दरम्यान श्रीमान ठाकोर साहेब मी. सेडनना मिजबान बन्या हता अने ए प्रख्यात राज्यद्वारी पुरुषनी कारोबारी शक्ति विषे तेमना टुंक सहवास दरमियान मी. सेडनने सारी असर थइ हती. आस्ट्रेलीया तथा न्युझीलांडनी मुसाफरीमां समग्र पार्टीनी बहुज ममताथी आगतास्वागता करवामां आवी हती. त्यारबाद महाराणी विक्टोरीयानुं मृत्यु थवाथी बाकीनुं काम बंध करवामां आव्युं. एटले आखी पार्टी हिंदुस्तान तरफ पाछी फरी जामनगरमां मरहुम जामश्री जसवतसिंहजीनी सगीरवये मेनेजमेन्ट हतुं ते वखते उक्त स्टेटना एडमीनीस्ट्रेटर कर्नल केनेडी श्रीमान ठाकोर साहेबने पोतानी जमणी बांह्य समान मानता हता. जामश्री जशवंतसिंहजी जामनगरनी गादीए बेठा बाद केटलीक बाबतमां वांधो पडवाथी श्रीमान ठाकोर साहेबे पोतानी नोकरीनुं राजीनामुं आप्युं. ए वात सांभळतांज स्व पोरबंदरना कलिभोज महाराणा श्री भावसिंहजी बहादुर तेओने पोता पासे बोलावी लीधा अने सेनाधिपतिनो मानवंतो हुद्दो आप्यो. त्यारबाद तेमने थोडा वखतमां स्व. लींबडीना ठाकोरसाहेब श्री यशवतसिंहजीनो अपुत्र स्वर्गवास थतां लींबडीनी राज्यगादी प्राप्त थइ. आ उपरथी सर्व कोइ स्पष्ट रीते समजी शकशे के राज्य मळ्या पहेलां श्रीमान ठाकोर साहेब श्री दोलत-

सिंहजी बहादुरनी कारकीर्दी उज्ज्वळ अने मख्यात छे; दुनियादारीनो तेओने उच्चतर अनुभव मळेलो छे अने असाधारण काबेलीअत, कुनेह तथा शक्ति माटे तेओ पंकाएला छे तेमज तख्तनशीन थया बाद स्वल्प समयमां प्रजाना सुख अर्थे अपूर्व उत्कंठा प्रदर्शित करी एक महान् काबेल, सुधरेला अने दानवीर राज्यकर्ता तरीके मशहुर थया छे. पोताना संस्थानमां दरेक जातनी केळवणी मफत आपवानी काठिआवाडमां पहेल करनार श्रीमान् ठाकोर साहेबज छे. लींबडीना वेपारनी वृद्धि माटे तेटलाज उपयोगनुं एक अन्य पगलु भरी तेओ नामदारे पोतानी कारकीर्दीने विशेष उज्ज्वळ करी छे. लींबडी तेमज आसपासनां गामोमां उंची जातनुं अने घणुं रु पाकतुं होवाथी पूर्वे लींबडी शहेर रुना व्यापारनुं एक म्होटुं मथक हतुं, पण पछीथी केटलाक वित्तलोभी व्यापारीओए रुमां भेळसेळ करी दगो करवाथी लींबडीना रुनी नामनाने धक्को लाग्यो. तख्तनशीन थया बाद तुरतमांज श्रीमान् ठाकोर साहेबनुं ध्यान ते तरफ खेंचायुं अने योग्य कानुनो पसार करवानी साथे लींबडीमां कॉटन प्रेस अने कॉटन मारकेट खोली मंद पडेला रुना व्यापारने पूर्वनी माफक पाछो सतेज कर्यो. आथी दगादुगो करनारा केटलाक व्यापारीओने नुकशान थयुं. तेमज ए लोको कंइक नाराज पण थया. छतां ए सुधारो प्रजावर्गने पसंद पडयो अने एथी सर्वने घणो संतोष थयो.

श्रीमान ठाकोर साहेब श्री दोलतसिंहजी केळवणी प्रत्येनी उदार राज्यनीतिथी, खेडुत वर्गनी स्थिति सुधारवाना प्रयासथी, व्यापारने उत्तेजन आपवाथी उद्योगी संस्थाओनो समारंभ करवाथी तेमज पोतानी प्रजानुं दरेक रीते भलुं करवानी उत्तम भावनाओथी मरहुम ठाकोर साहेब तेओश्रीने पोताना वारस तरीके चुंटी कहाडवामां बुद्धिशाळी तथा दीर्घदर्शी हता एवुं साबित करी आप्यु छे. वळी तेमना विषे लींबडीनी प्रजाए तथा ए वखतना काठिआवाडना एजंट टु धी गवर्नर मी. फीटझराल्ड साहेबे जे उंची आशाओ बांधी हती ते बधी सफळ थवा पामी छे. तेओ नामदारने तख्तनशीन करती वखते मी. फीटझराल्ड साहेब बोल्या हता के–लींबडीनुं राज्यकुटुंब घणा जुना वखतनुं छे, अने जे कारकीर्दीमां तमे पडवाना छो, तेमां तमने टकावी राखवा माटे तथा दोरवा माटे लींबडी राज्यकुटुंबनी झळकती कारकीर्दी तमारा आगळ छे. जे जग्या भरवा माटे तमने अत्यारे नीमवामां आवे छे तेने माटे तमने बहुज सारी केळवणी मळी छे एम मारुं मानवुं छे. तमने जामनगरमां केळवणी मळी छे तेमज मरहुम विभाजी जामसाहेबना हाथ नीचे तमने घणी सारी तालीम मळी छे. ते जामसाहेबे तमने इम्पीरीअल सर्विस लेन्सरसना उपरी

नीम्या, जे लश्कर तमेज उभुं कर्युं, जेनी व्यवस्था करी, जेने केळव्युं अने जेना कमान्डींग ऑफीसर तरीके तमे १३ वर्ष काम कर्युं, ते वखते तेमज त्यार पछी सरकारनुं घोडस्वार लश्कर तेमज देशी तथा अंग्रेजी रेजीमेन्ट साथे ट्रेनींग माटे तमे संबंध धरावता हता अने जे जे जुदा जुदा अमलदारोना हाथ नीचे तमे काम कर्युं तेमनो एकी अवाजे सारो मत तमे मेळव्यो छे. पांचमी रॉयल आइरीस लेन्सरना कमान्डींग ऑफीसर मरहुम कर्नल चोझाम जे एक प्रख्यात लडवैयो हतो ते मारा जाणवा प्रमाणे ऑफीसर तरीके तमारा गुणो अने तमारी वर्तणुक विषे घणोज उंचो मत धरावतो हतो अने तमे एक घणाज सरस ऑफीसर छो एम तमारा विषे लखी गयेल छे. ज्यारे इम्पीरीअल सर्वीस लेन्सर्समां हता त्यारे तमे आस्ट्रेलीया तथा न्युझीलांडनी मुलाकात लीधी हती अने इम्पीरीअल सर्विस लेन्सर्समांथी निकळी गया पछी पोरबंदरमां तेमज बीजे ठेकाणे कारोबारी अनुभव तमे घणोज मेळव्यो छे. तमारी कारकीर्दी बधी सारीज छे अने जे बधो जुदी जुदी जातनो अनुभव, तमे मेळव्यो छे ते तेमज लश्करी तालीमथी बरोबर नियमसर काम करवानी तेमज अमल चलाववानी टेव पडी छे ते राज्यकर्ता तरीके तमने बहु उपयोगी थइ पडवां जोइए. राज्यकर्ता तरीके तमारुं काम सहेलुं नथी, कारणके राजाने माथे म्होटी जोखमदारीओ रहेली होय छे तेमज तेमने फसाववनारी लालचो घणी होय छे, पण तमारी वर्तणुक विषेना म्हारा लांबा अनुभवथी मने पूरेपूरो भरोसो छे के तमे तमारा माथे पडेली जोखमदारीओ डहापणथी बजावशो, न्यायसर राज्य करशो अने सुधरेला तेमज आगळ वधता जता कारोबारना बधा फायदा तमारी रैय्यत्त भोगवशे. ”

मी. फीटझराल्डनुं भाषण पुरुं थया बाद श्रीमान ठाकोरसाहेब योग्य शब्दोमां छटादार भाषण आपी लींबडीना राज्यसिंहासनपर बिराज्या. ए वखते देशी विदेशी अनेक मिजमानो आवेला हता अने एक योग्य नरवीरनो उदय निहाळीने अत्यंत आनंद पाम्या हता. ए महोत्सव प्रसंगे म्हारा तरफथी निम्नलिखित काव्य निवेदन करवामां आव्यां हतां.

सोरठा.

आनँद लहत अनेक, लखि सज्जनगन लक्षविधि;
रसिक राज्य अभिषेक, दोलतसिंह दिनेशको ॥

कवित.

दोलत दराज दरसावे, तिथि त्रयोदशी;

मंजु मधुमास आश पूरक अशेषको ॥
कवि नथुराम मुदधाम दिन मंगलको,
निम्बनगरीकी हानि हरन हमेशको ॥
संवत उन्नीस शतचोसठको चारु आज,
करन निकंदन कुठार सब क्लेशको ॥
डोलत सनेही सब हर्षके हिंडोरनपें,
उदय अमोल लखि दोलत दिनेशको ॥ २ ॥

सवैया.

वाद्य विजैप्रद बाजत राजत साजत साज सबै अति सुंदर;
त्यों नथुराम निरंतर निर्मल, मंगलरूप महा मुद मन्दिर;
आज छल्यो अवनि तलपें सुखनीर सन्यो शुभ श्रेय समन्दर;
निम्बपुरी सुरनग्रसी सोहत, दोलतसिंह प्रतापी पुरन्दर ॥ ३ ॥

कवित्त.

गुनी गुनज न ज्ञवान नयके निधान,
साज सुरराज तुल्य सुखमय साजो आप ॥
कवि नथुराम अभिराम यशवंतनन्द,
नित्य कवि कोविदपें नेहसों निवाजो आप ॥
दोलत नृपाल द्विजधेनुप्रतिपाल दिव्य,
आनंदके आलवाल भूतलमें भ्राजो आप ॥
वखत बुलंद निम्ब नगरके तखतपें,
हर्षयुत वर्ष शत अवधि विराजो आप ॥

सवैया.

ठाकुरश्री यशवंतके नंद, जताकर जोर सपत्न सताकर ॥
धाकर धर्महुके पथमें, नथुराम निरंतर विघ्न विदाकर;
छाकर क्षेम जमाकरके जस, आनँदके उदधि गुन आकर,
पाकर पूर्न प्रमोद तपो, दुनिमें नित दोलतसिंह दिवाकर ॥५॥

कवित्त

पूरन प्रतापवंत उत्तम अमाप आप,
पाये निम्बपुरीको स्वतंत्र अधिकार आज ॥
कवि नथुराम गुनग्राम राजताज धरि,
गरिबनिवाज करी नित्य कीरतिके काज ॥
जयके जहाज बांधो पुन्यकी पुनित पाज,
निरअभिमान है महान मखवान माज ।
हर्षसों हमेश कविकोविदके क्लेश काटि,
दोलत नरेश दिव्य दोलत लहो दराज ॥ ६ ॥

घनाक्षरी.

साहिबी महान मिली निम्ब नगरीकी नीकी,
तोपें तिलमात्र कियो नांहि गुनको गुमान ॥
कवि नथुराम कीर्तिकेतु फहराये जग,
प्रजा मन भाये करि सत्यासत्यको प्रमान ॥
रिपु तरसाये दान मेह बरसाये पुनि,
हिय हरसाये हितुजनके सदा सुजान ॥

छाये सुखसंपतिसों गुनिमें गवाये जासों,
पाये दीप्ति दूनी नृप दौलत दया निधान ॥७॥

धनाक्षरी.

लेकें गुन रत्न आये जिनजिन आप ढिग,
किम्मत सवाइ प्राप्त कीनि सदा तिन तिन ॥
कवि नथुराम वह चाहत विशेष चित्त,
सुज्ञपन राउरो सराहत है छिन छिन ॥
प्रवल प्रतापी मखवान महि मंडलमें,
नर गरवीलेकों नसाओ आप गिन गिन ॥
दौलत दिपाइ चिरकाल प्रजापाल पद,
द्वितीयाके इन्दु जैसो उदै पाओ दिन दिन ॥८॥

कवित्त.

झलक ये झालावार हूकी सव खलकमें,
अलक पुरीसी खास नजरमें आती है॥
कवि नथुराम जन आश्रितकों नित्य जाके,
पत्रनकी पांति ताप तनके नसाती है॥
सरस सुधाके तुल्य जाके है अनल्प फल,
सेवककों सदा सुखदायिनी सुहाती है ॥
दौलत नरेश यह नींवरी तिहारी दिव्य,
कायम हमारी कल्पवल्लरी कहाती है ॥९॥

सवैया.

जाहिर श्री जसवंतको नन्दन दानहुके दरियाव वहावे,

त्यों नथुराम रटे जिहि नाम वही ढिग रंच न दुःख रहावे ॥
रच्छकव्है सुरसंतनके वद दानवको तृन दंत गहावे,
या कलिकालमें नींवरीके नृप दोलतसिंह दयाल कहावे ॥१०॥

श्रीमान ठाकोरसाहेब श्री दोलतसिंहजी बहादुरनो जन्म वि-सं. १९२४ ना अषाढ वदि ६ ता. ११ जुलाइ सन १८६९ ना रोज थयो छे, तेओश्रीना पाटवी कुमार दीर्घायु दिग्विजयसिंहजीसाहेब वि-सं. १९५२ ना चैत्र वदि १३ ता. १० एप्रील सन १८९६ ना रोज जन्म पाम्या छे. तेओए पण पोताना पिताश्रीनी पेठे उंचा प्रकारनी केळवणी लीधी छे अने राजकोट राजकुमार कोलेजमां पूरतो अभ्यास करी हाल विलायतमां राज्यनीतिनी उत्कृष्ट केळवणी लेवा अर्थे निवास करे छे. तेओश्रीनां लग्न स्व. इडरना राठोड राजा केसरीसिंहजीना कुंवरीश्री नंदकुंवरबा वेरे थएल छे. श्रीमान ठाकोरसाहेबना कुटुंबमां श्रीमती राणीजी श्री बाळुबासाहेब त्रण कुमारश्रीओ नामे प्रतापसिंहजी, फतेहसिंहजी तथा घनश्यामसिंहजी अने कुंवरीश्री रुपाळीबा तथा कुंवरीश्री रमणीककुंवरीबा नामनां उभय पुत्रीओ छे.

लींबडी संस्थानमां ४९ हकुमती गामो छे. गइ सेन्सस प्रमाणे स्टेटनी कुल वस्ती ३३२८७ माणसनी छे. आ सिवाय आ स्टेटना अमदावाद जील्लामां आवेलां ३४ बिन हकुमती गामो छे. फटायाओने जुदे जुदे वखते आपेला ४४ भायाती गामो छे. पाछला बन्ने जत्थाओनो खरेखर स्टेटमांज समावेश थतो हतो अने इ. स. १८०७ मां काठियाडना दरेक संस्थानोमां अग्रेसर थइने आ संस्थाने नामदार ब्रीटीश सरकार साथे कोलकरार कर्या ते वखते तेमज हतुं अर्थात् उक्त गामडाओना बन्ने जत्थाओ लींबडी स्टेटनो हकुमतमां ते वखते बीन शके गणवामां आवता हता. अने कोलकरारथी ए रीतनो लींबडी स्टेटनो कबजो छे एवो नामदार सरकारे गेरेंटी आपी हती, पण त्यारपछी जील्लानो हदमांहेला गामडाओ विशे एक बनावथी इ. स. १८०२ मां अंग्रेजसरकार अने बीजा बाजीराव पेश्वा वच्चे थएला वसीनना कोलकरारना खरा अर्थनो ब्रीटीश सरकारे अवळो अर्थ कर्यो अने एने आधारे उक्त गामोनी हकुमत ब्रीटीश सरकारे धारण करी अने जमीननी महेसुलनो हक्क लींबडी संस्थानने सोंप्यो. तेवीज रीते इ. सं. १८०७ मां कर्नल वोकर साहेब साथे करेला कोलकरार वखते भायातो उपर लींबडी दरबारनी हकुमत तथा उपरीपणा विशे प्रथमनी माफक खोटो अर्थ थयाथी तेमज त्यार पछी लींबडी दरबार तथा भायातो वच्चे जे खरेखरो सबंध

Main Entrance Bhawendra Villas   Landhi
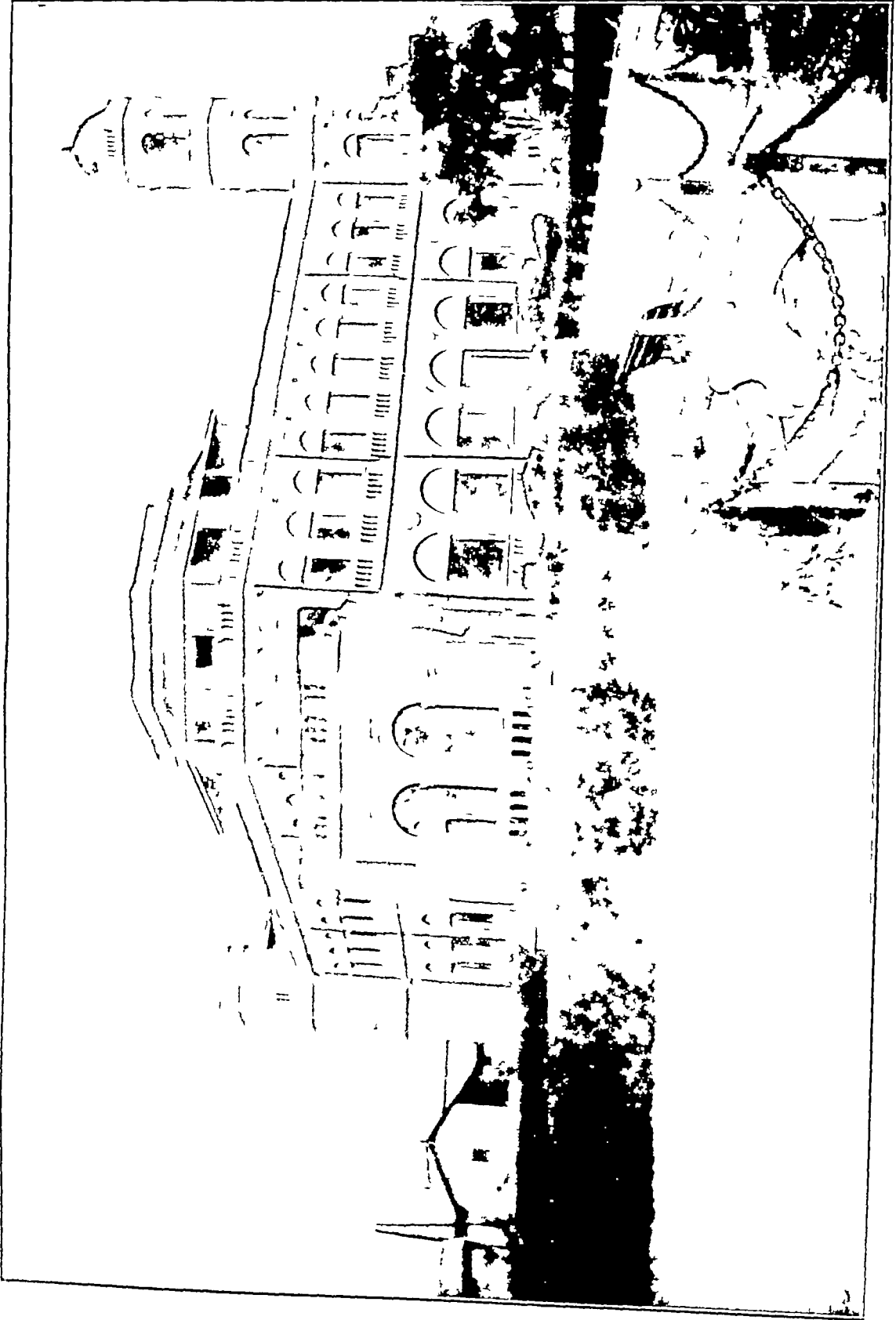
Western Corner Dig Bhuvan Palace Limbdi.
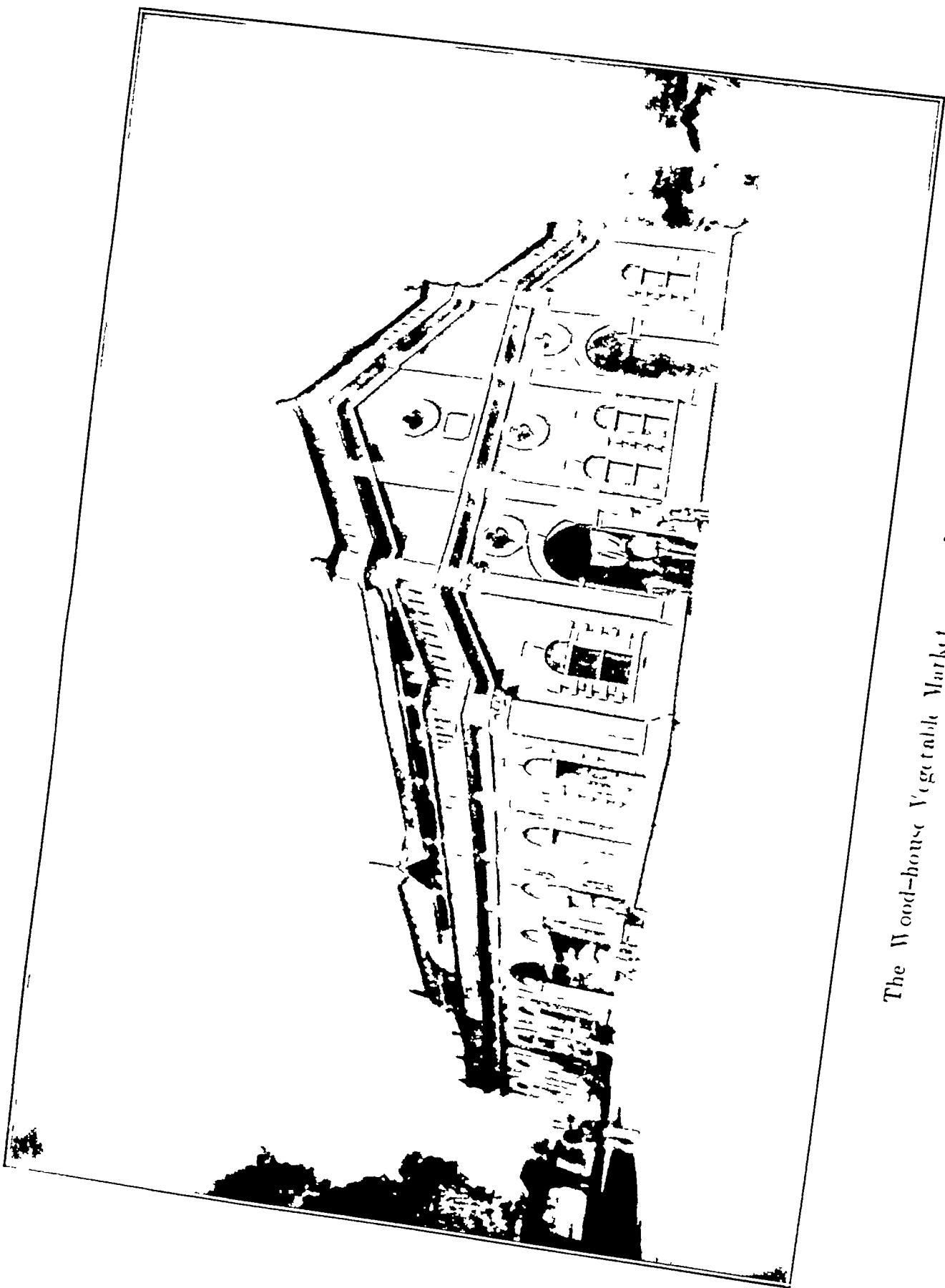
The Wood-house Vegetable Market Lashkar

हतो ते विषे गेर समजुती ऊभी थयाथी सने १८६६ मां मरहुम ठाकोर साहेब श्री सर यशवंत-सिंहजीनी सगीर वयमां लींबडी भायातोने काठिआवाड एजन्सीनी हकुमत नीचे मूकवामां आव्या. उपर दर्शावेला बन्ने जत्थाओना गामो के जे व्याजबी रीते लींबडी तावानां छे ते गामो लींबडीनी हकुमतमां आवे तेम श्रीमान लींबडी नरेशनो दावो छे. तेओ हमेश नामदार ब्रीटीश सरकार पासे ए प्रमाणे दावो करता रह्या छे अने आशा छे के न्यायी ब्रीटीश सरकार श्रीमान् लींबडी नरेशना व्याजबी हको मान्य राखशे. हकुमत माटे जे जे उपयोगी सवालोनो फेंसलो थयो नथी तेवां गामो बाद करीए तो हाल लींबडी नरेशनी हकुमत ३४४ चोरस माइल उपर छे.

श्रीमान् ठाकोर साहेब श्री दोलतसिंहजी बहादुरने काठिआवाडना राजाओमां बीजा क्लासनी सत्ता छे अने तेओने नव तोपोनुं मान मळे छे.

बिन हकुमती गामोनी उपज साथे लेता लींबडी संस्थाननी कुल उपज रु. ५०००००) पांच लाख जेटली छे. लींबडी ए राज्यधानीनुं मुख्य शहेर छे, अने त्यां बी. जी. जे. पी. रेल्वेनुं स्टेशन छे. लींबडी स्टेटमां जोवालायक बील्डींगो पैकी राज्यमेहेल, ऑफीसनुं मकान, दिग्भुवन, भावेन्द्रविलास अने बुढ हाउस शाक मारकीट छे.

लींबडीनो संक्षिप्त इतिहास.

रोळावृत्त.

पुण्यशाळी हरपाल, सुभग पाटडीना स्वामी;
रहेता पूर्ण प्रसन्न, नित्य एपर बहुनामी;
दिव्यात्मा कुळदीप, थया अन्तर्हित ज्यारे;
सुत म्होटा सोढाजी, तख्तपर बेठा त्यारे. १

मांगुजीने मळी, जबर गढजांबुनी गादी;
पुर चोराशीतणी, करी एणे आबादी;
मनोहारी मधुपाल, तनुज तेना तपधारी;
जेणे हनी नरहंस, वंशनी लाज वधारी. २

एना पुगल कुमार, धमलने गगजी धारो;

धमल थयो धर्मिष्ठ, प्रजामंडलने प्यारो;
गांगो गुणगंभीर, थयो सत्वर विधि सामो;
प्होंचो शिरोई पास, मेळव्या द्वादश गामो. ३

जन्मभूमिने तजी, अन्य भूमंडल भाव्युं;
गांगागुंडागाम, व्हालथी त्यहां वसाव्युं;
वँध्यो विपुल विस्तार, निखिल गांगाणी नामे;
अद्यापि ए स्थळे, परम प्रख्याति पामे. ४

धवल छत्र धैर्यथी, धमळजी शिर धरता'ता;
जांबुनुं युक्तिथी, रोज रक्षण करता'ता;
तेवामा ते स्थळे, शाहनी सेना आवी;
तेणे जांबुतणी, त्वरित चोराशी तजावी. ५

वेरावळ पाटणे, पालु राठोड प्रतापी:
सुखद धमलना श्वसुर, एमणे हिम्मत आपी;
गुणी धमल त्यां गया, रह्या मनने स्थिर राखी;
सागर कांठे सरस, नेहथी छावणी नांखी. ६

चाळीश ऊपर अेक, गामनो जत्थो जीती,
प्रबल पराक्रम वडे, भरी अरिने उर भीति;
वसावीने पुर नविन, श्रेष्ठ राज्यासन स्थाप्युं,
धामलेज सुखधाम, नाम ए पुरने आप्युं. ७

वीर धवलना पुत्र, काळुजी कृपाळु कहीए,
धर्मनिष्ठ धनराज, क्रमे गणतीमां ग्रहीए;
लाखाजीए लगाम, ए पछी करमां लीधी,
धामलेज वसवानी, वातने वरजी दीधी. ८

जाळववुं पुर जीर्ण, एम अंतरमां आव्युं,
कोठी कुंदणी अने, जांबुमां राज्य जमाव्युं;
भोजराज भयहरण, ए पछी आव्या पाटे,
कुमार एना करण, विचरता धर्मनी वाटे. ९

आशकरण ए पछी, पूर्ण आनंदी प्रमाणो,
सांगोजी सुखदाइ, जांबुपति क्रमथी जाणो;
शेषमाल, सारंग, पछी लाखाजी लेखो,
वजेराज, नागजी, उदयभानु अवरेखो. १०

ए पछी अमित उदार, गुणी खेताजी गणजो,
भोजराजनुं नाम. भाव धरी ए पछी भणजो;
नीतिवंत नागजी, ए पछी पाटे आव्या,
खेताजीए खूब, शत्रुने रणे सताव्या. ११

वाघेलानी जान, भडलीए परणी आवे,
सुजानकुवरी साथ, पाछी सरधार सिधावे;
कोठी कुंदणी पास, खास विश्रान्ति लेवा,
रोकाया रजपूत, काळना थवा कलेवा. १२

हरिगीत.

ए समय हय खेलावता त्यां खेतशी आवी चढ्या;
शिरबंध सरतां एहना वरवाळ विखराइ पड्या;
ए मधुर आकृति निरखी ध्यान सुजान एनुं धरी रही;
मनथी वरी झट भेटवानी भावना उर भरी रही. १३
सुदथी ददारण मोकली झटराणने समजाववा;
रूखी आपी प्रेमनी पत्रिका धृति नेनी तुर्त तजाववा;

मुजने वरो मकवाण नहि तो माण छांडीश पलकमां;
मन माहरुं महिपाल मोह्यु आप केशनी अलकमां. १४

रोळावृत्त.

खेतोजी ए पत्र वांची पुरमांहि पधार्या;
सुजान केरा शद्ध, ध्यानमां सज्जड धार्या;
सुंदर ए सर्वने, नेहनी दई निशानी;
वरातने बोलावी, मह्द आपी मिजमानी. १५

वर वामानी वेल, राखी रणवासनो अंदर,
सुन्दिर मन्दिरमांहि, अन्य उतर्या एकंदर;
बीजे दिवस वरात, कहे के विदाय आपो,
खेतशी बोल्यो खास, मार्ग सहु सीधो मापो. १६

वाघेला कहे वेळ, बाइनी लावो व्हारे,
आवी दासी एक, तंतथी के'छे त्यारे;
झाला नृपने वरी, स्नेहथी सरवैयाणी,
आपे थइ छे एह रसिक खेतानी राणी. १७
मिजमानो मगरूर, खूब खेतापर रूठ्या,
करवा जवरो जंग, क्रोधथी कूदी उठ्या;
काढी तीव्र कृपाण, ए समये आखडीया;
लड्या राखवा लाज, वहू झालाओ वळीया. १८
थया मरणने शरण, अखिल वाघेला अंते;
झालानो जयनाद, दोडतो गयो दिगन्ते;
ए रमखाणनी थई, जाण गोधाने ज्यारे;
कोठी कुंदणीपरे तुर्त, चढी आव्यो त्यारे. १९

भडलीनो नृप भीम, एहनी मददे आव्यो;
खेते खेंची खड्ग, वधाने हाथ वताव्यो;
जाम्युं जबरुं युद्ध, शुद्ध क्षत्रीना जाया;
सामे पगले लड्या, मूकी कायानी माया. २०

अनेक रिपुने अजब, दान मृत्युनुं देतो;
सूतो रण साथरे, खूब घायल थइ खेतो;
सांगो हतो समर्थ, कुंवर खेतानो करमी;
एणे सद्य उतारी, भूप गोधानी गरमी. २१

कुंदणीए करी राज्य, वर्ष त्रण सूधी व्हालें;
झाला सुभटो साथ, सिधाव्या झट झोवाळे;
वाघेलानुं वैर, सर्वदा राखी शिरे;
उभय वर्ष हर्षथी वास कीधो त्यां वीरे. २२

योगराज ए संग झींझुवाडाना स्वामी;
भ्रातृभाव राखता, पक्ष मातुलनो पामी;
तेणे आवी त्यहां, साचव्यो संबंध सारो;
सांगाजीने कह्युं, आप मुज पुरे पधारो २३

तैयारी करी तुर्त, चाली निकळ्या सहु चाहें;
वीशळ देशळ उभय, रोकवा उभा राहे;
मारे ए भरवाड, पुरातन प्रथा प्रमाणे;
ललि ललिने लड़ गया, धरापतिने धनवाणे. २४

गोधो धरी गुमान, एज वखते चढी आव्यो;
उदधि तुल्य अगाध, संगमां सेना लाव्यो;
सुत सांगाना हता, सबल सोढाजी नामे;
सत्वर वीशा साथ, धया शत्रुगण सामे. २५

पुर पधारीया अने, जीर्ण जांबुगढने पथ;
मध्य विभागे मळ्या, वळथी यमने भरवा बथ;
जाम्युं जबरुं युद्ध, कैकजन मुआ कपाई;
वाघेला सह थयो, शूर गोधो रणशायी. २६

हरिगीत.

तव बादशाही थाणुं, जूना जांबुमां बेटुं हतुं;
सोढाजीए संहारी सहुने, शौर्य निज कीधुं छतुं;
पूर्वजतणा प्रिय पुरमहीं, फरी राजधानी करी रक्षा;
आशाजीना अवतारथी, दिल दुश्मनो केरां दझ्यां. २७
ए पछीं अदाजी अवतर्या, गढ जांबुना अवनिपति;
जेणे सीयाणीमां जमावी, राजधानी धरी रति;
एना कुंवर वेराजीथी, राजी बनी रैयत बहू;
ए पछीं कृपानिधि कर्णसिंह, सराहता जेने सहू. २८

रोळावृत्त.

कर्णसिंहना कुँवर भोजराजा भयहारी;
उदयराज ए पछी, छत्रधारी सुखकारी;
एक समय ए भूप, अमुक स्वारोनी संगे;
घाघरेटीए आवी लीए, आराम उमंगे; २९
तळाव केरे तीर, छावणी नांखी पड्या'ता;
चन्द्रसिंह मेथली जीती वढवाण वळ्या'ता;
एनुं मन ए स्थळे, लगीर रहेवा ललचान्युं;
खसेडवा छावणी, उदयने एणे कहान्युं. ३०

आनाकानी करी, अदाए आघा खसवा;
चन्द्रासिंहनी फोज, धंध करी लागी धसवा;
उभय पक्षमां आग, क्रोधनी सत्वर सळगी;
तोपण रह्या तमाम, वचनने नाहक वळगी. ११

वंश उभयनो एक, छता रणरंगे छाया;
धींगाणे अन्योन्य, ध्वंस करवाने धाया;
सींहाणीनो श्याम, उदय मखवान अटंको;
एणे रहीने अडग, विजयनो दीधो डंको. १२

चांदानी चतुराइ, कांइ पण काम न आवी;
पामी पराजय गया, सद्य वढवाण सिधावी;
वेरीसाळ महिपाळ उदय पछी तख्ते आव्या;
मागु वंशनी मदद, गादी लींवडीए लाव्या; १३

ए पछी मळी अनुक्रमे, गुणी हरभमने गादी;
निम्बपुरीनी करी, अमित एणे आबादी;
शूरवीर रणधीर, भूप हरभमजी भारे;
पाळीयादना काठी, पेखीने त्राहि पुकारे. १४

पात्रार्थे ए गया, एक समये अंबाजी;
पाछळथी प्रतिपक्षी, गर्व धरी उठ्या गाजी;
अमरसिंह ए समय, बन्धु हरभमनो वळियो;
काठी लोको साथ, लाज जाळववा लडियो. १५

मदमातो मखवान, शत्रुने खूब सतावी;
अंते बनी असहाय, स्वर्गमां गयो सिधावी;
समाचार ए सुणी, वेर हरभमने व्याप्युं;
पोंची निम्बपुरमांहि. कटक काठीनुं काप्युं. १६

छन्द पद्धरी.

खॅरी दुश्मनाइनो राखी ख्याल, कर्युं पाळीयादपुर पायमाल;
एनां अनेक पयवर्ती गाम, करी उजड लूंटी लक्ष्मी तमाम. ३७
करी काठिआणी शत वेद केद, भलभलां भांखी शकिया न भेद;
अनुजात अमरतुं वाळ्युं वैर, वरतावी काठिपर त्रिविध केर. ३८
ळही विजय वळ्या मखवान वीर, निज राजधानीतुं पीधुं नीर;
न्यायी महान् हरभम नरेश, लोपे न लाज कुळ केरी लेश. ३९
रिपुरमणी रूप रंभा समान, भूल्या न भूप निज रूप भान;
राखी समग्रपर भगीनो भाव, झाले कर्यो सुयशनो जमाव. ४०

सोरठा.

पहेरावी परिधान, अरिवधूओने अवनवां;
दीधुं मुक्तिनुं दान, हर समान नृप हरभमे. ४१
हरभमनी सुणी हाक, धाडपाडु ध्रूजे बधा;
रिपु जे आगळ रांक, प्रणमी पाळत्र पाथरे. ४२

"रोळावृत"

गायकवाडी गहन, फोज फरती त्यां आवी;
हठावी नृप हरभमे, बाहुबळ अजब बतावी;
सुत एना हरिसिंह, ए पछी तख्ते आव्या;
वरवाळानां गाम, वधां आबाद बनाव्यां. ४३
भावनगरना भूप, महद लश्कर त्यां लाव्या;
पण हरिना बळ पास, फंदमां लेश न फाव्या;
आदरेल हरभमे, काम किल्लानुं अधूरुं;
रह्युं हतुं ते कर्युं, प्रतापी हरिए पूरुं. ४४
वळी शहेर वढवाण, साथ सीमाने कारण;
कठिन उद्भव्यो क्लेश, वढ्या मदमाता वारण;

चढ्या उभय अवनिप, एक वीजापर चाहे;
केराळापुर कने आवी पहोंच्या उतसाहे. ४५
रह्या युद्धमां अडग, शूर चाली रिपु सामा;
थया मरणने शरण, उभय महिपतिना मामा;
ए समये थइ शान्त, मचेली मारा मारी;
अंग्रेजे ए पछी, विदित सत्ता विस्तारी. ४६

सोरठा.

अचळ राखी अभिधान, गया स्वर्ग हरिसिंहजी;
ए पछी ग्रही शुभज्ञान, भोजराज भूपति थया. ४७

" रोळावृत "

न्हालें द्वादश वर्ष, भोगवी वैभव भारे;
भोज ब्रह्ममां भळ्या, जीवपणुं छोडी ज्यारे;
त्यारे हरभम तृतीय, प्रीतथी बेठा पाटे;
संतति विण संचर्या, विदित सुरपुरनी वाटे. ४८
फतेसिंहजी हता, अनुज एना उत्तम अति;
प्रथा प्रमाण थया, निम्बपुरना गादीपति;
जेने त्यां यशवंत, जन्म पाम्या जशधारी;
भवपति केरी भक्ति, प्राणथी गणता प्यारी. ४९
विद्यानी लघुवये, कल्पित लीधी केळवणी;
एमां करी यौवने, मदद नयनी मेळवणी;
विचरी खूद विदेश, मेळव्यो अनुभव म्होटो;
निमंडमां नथुराम जेहनो न मळे जोटो. ५०

सोरठो.

एणे रही अपुत्र, कर्यो वास कैलासमां.
सुखद राज्यतुं सूत्र, दोलतना करमां दई. ५१

रोळावृत.

दानी दोलतसिंह, तख्तपर बेठा त्यारे,
थयुं स्पष्ट मांगुना, वंशनुं श्रेय वधारे;
प्रजा वर्गनी प्रीति, पूर्ण दोलतपर देखी,
भाग्यरेख भयहरण, ळींबडीपुरनी ळेखी. ५२

सुज्ञ नृपाळे सद्य, बतावी उत्तम बुद्धि,
करी प्रजाहित काज, विविध व्यापारनी वृद्धि;
खरची माया खूब, पुनित केळवणी पाछळ,
वधे जेथी शक विना, प्रजाजननुं बुद्धिबळ ५३

केळवणीने ळइ, पामीया नृपपद प्यारुं,
शक्तिमांहि सर्वदा, धीर अर्जुनसम धारुं;
वचन अडग विळोकी, विबुधजन सदा वखाणे;
ळायक कृतिथी ळळित, मेळव्यो यश मकवाणे. ५४

ळक्ष्मी छतां, मद छोडी, साधनो श्रेष्ठ सजे छे,
श्याम सतीना सुखद, जाणी भावेथी भजे छे;
महद मनथी नथुराम, धरण नृपधर्मधुरीना,
जीवो हर्ष हजार, प्रभु पिचुमंदपुरीना. ५५

दोहा.

दोलतनृपना दिग्विजय, पाटवी पुत्र पवित्र;
स्वभावथी बहु सरळ छे, महद गुणीना मित्र.
प्रतापशाळी प्रताप छे, कुंवर द्वितीय कमनीय;
फतहसिंह फक्कड दिसे, नृप तनुजात तृतीय. ५७

चतुर पुत्र चोथा गणो, नाम जेनुं घनश्याम;
श्रेय करो प्रभु सर्वनुं, नित्य चहे नथुराम. ५८
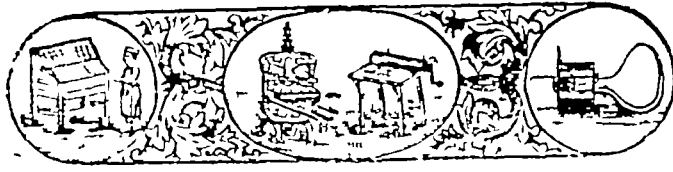
पंचविंशत् तरंग.

छन्द–हरिगीत.

झालातणी जे छे रियासत राजपूतानामहीं,
ए रायपुर, नरवर, कुन्हाडीनी कथा कहुँ छुं अहीं;
सुत विनयसिंह तणा सुणो अमरेश ! अति आनंदथी,
वार्ता विविध लघु दीर्घ झालावंश वारिधिमां ग्रथी.

रायपुर.

राजहरपालदेवजी पछी सत्तरमी पेढीए थएला राज छत्रसालजी गढमांडलमां राज-करता हता: तेओने जेतसिंह आदि तेर[1] कुमारो थया. तेमांना राघवदेव आदि चार भाइओने वि. सं. १४७२ मां एकसो वीश गामथी "वाडु" नो गिरास मळ्यो. ए वाडुनेज विठ्ठलगढ कहे छे. राज जेतसिंहे मांडल छोडी कुवामां राजधानी स्थापी. राघवदेवजीए वि. सं. १४८१ मां गुज-रात देशने छोडी माळवा तरफ प्रयाण कर्युं; तेओना उपर खोखलीओ भैरव प्रसन्न हता, भैरवनाथे तेओने वचन आप्युं हतुं के "ज्यां मारी गाडी तूटे त्यांज मुकाम करजो." राघवदेवजी चाल्या त्यारे तेओनी साथे ७५०[2] गाडीओ हती. तेओए आगरना तळाव पासे पडाव नांख्यो अने बीजे दिवसे त्यांथी चालवानी तैयारी करता हता तेवामां भैरवनाथनी गाडी भांगी पडी. जेथी त्यांज मुकाम राखी राघवदेवजी मांडूना बादशाह गोरी हुसेनअली[3] आगळ गया अने वगर पगारे तेओनी नोकरी करवा लाग्या.

---

१ कोइ चार कुमार हता एम पण कहे छे. २ नरवर राज्य तरफथी मळेला इतिहासमां १७५० गाडीओ हती एम लखेल छे. ३ क्यांइ क्यांइ हुसंग अथवा होसंग एवुं नाम पण सांभळवामां आवे छे.

कोइएक दिवसे बादशाह हुसेन सिंहनो शिकार करवा गाढ वनमां गएल, साथे राघवदेवजी पण हता. हाको थतां समीपे आवेला सिंह उपर बादशाहे गोळी छोडी, परंतु घा खाली जवाथी सिंह बादशाह सामे धसी आव्यो. ए वखते वीरवर राघवदेवजीए वच्चे पडी बहुज बहादुरीथी सिंहनो संहार कर्यो. प्रसन्न थएला बादशाहे पोताना प्राण बचाववाना बदलामां झाला राघवदेवजीने १४४४ गामे सहित आगरनो तालुको आप्यो अने वि. सं. १५४५ मां "राव" नी पदवी आपी.

राव राघवदेवजीए वि. सं. १५५० मां आगरनी राजधानी स्थापी अने भैरवनाथनुं मन्दिर बंधाव्युं. तेओने चोंडाजी तथा कहानसिंहजी नामे बे कुमार थया. राघवदेवजीना स्वर्गवास पछी चोंडाजी आगरना मालिक थया; तेओनी पासे एक "चेटक" नामनो उत्तमोत्तम काठीआवाडी अश्व हतो; ए वात कोइए बादशाहने काने नांखी; बादशाहे चोंडाजी पासे ए घोडानी मागणी करी; परंतु तेणे चोखी ना कही; त्यारे बादशाह आगर उपर चढी आव्यो, भयंकर युद्ध थयुं अने अन्ते आगरनुं राज्य वि. सं. १५६१ मां बादशाहने हाथ गयुं. ज्यारे चोंडाजीनो स्वर्गवास थयो त्यारे तेओना रामसिंहजी नामना कुमार हता. ए अरसामां "सणखेडी" नामना गाममां जेठो तथा सामळ नामना बे म्होटा लुंटाराओ रहेता हता; तेओए राव रामसिंहजी पासे मागणी करी के तमे तमारी दीकरीना लग्न अमारी साथे करो. आ वखते रामसिंहजी आगळ वधारे माणस न होवाथी तेओए बुद्धिबळनो उपयोग कर्यो अने भीलोने सबन्ध करवा माटे मिजमान तरीके पोताने त्यां बोलाव्या, त्यारबाद ए बधाने गोठ आपती वखते दारु पाइ बेभान बनावी दीधा अने पछी एकदम कतल करी नांख्या. ए रीते गाम सणखेडीने स्वाधीन करी राव रामसिंहे एक रायपुर नामे गाम वसाव्युं अने वि. सं. १५६४ मां त्यां पोतानी राजधानी स्थापी. ए रायपुरनी नीचे १७५ गाम हतां. राव चोंडाजीना भाइ कहानसिंहजीए वि. सं. १५७० मां नरवर राज्यनी स्थापना करी.

राव रामसिंहजीने महेशदासजी, भीमजी, दुदोजी, हमीरजी, बनोजी, वाघोजी, शवोजी तथा हठीजी नामे आठ कुंवरो हता. राव रामसिंहजीना स्वर्गवास पछी म्होटा कुमार महेशदासजी रायपुरनी राजगादीए बेठा. तेओना न्हाना भाइ भीमजी वि. सं. १५७४ मां रूडलाइ गया अने

---

१ झालाकुळना बडवा भाटनी आ उपक्त असत्य अथवा अतिशयोक्ति जणाय छे. २ नरवर राज्य तरफथी मळेला इतिहासमां "सेमलजोटा" तथा "कुंडीखेडा" एवां नाम आपेलां छे.

तेना वंशजो " भीमावत " कहेवाया तथा वाघाजीने डाबल, रावल, सावल, अने काली तळाइ नामे गामो मळ्यां जेथी ए पण सं. १५७४ मांज त्यां गया; तेना वंशजो " वाघावत " कहेवाया.*

राव महेशदासजीना परलोक प्रयाण पछी तेना कुमार जेसिंहजी (जसोजी) रायपुरनी गादीए बेठा. तेओना बीकाजी तथा कृष्णाजी नामे बे कुमार थया; तेमां म्होटा कुमार बीकाजीने " गुगाहेडे " मोकलवामां आव्या; तेओए त्यां जइ बार गाम मेळव्यां अने तेना वंशजो बीकावत कहेवाया. राव जेतसिंहना स्वर्गगमन पछी तेओना न्हाना कुमार कृष्नाजी रायपुरना राजा बन्या. तेओने सुजोजी, झुझारजी, खानोजी, पृथीराजजी, वाघोजी तथा दयालदासजी नामे छ कुमारो थया.

राव कृष्णाजीना स्वर्गवास पछी पाटवी कुमार सुजोजी वि. सं. १६०२ मां रायपुरनी राजगादीए बेठा. अने एज सालमां झुझारखांनजीने गाम " भोरासी " तथा खानाजीने गाम " भोरासा " मळ्युं. ए बन्नेना वंशजो " कृष्णावतझाला " कहेवाया.

राव सुजाजीने नरहरदासजी तथा बलकरणजी नामे बे कुंवर थया. सुजाजीना स्वर्गवास पछी वि. स. १६२४ मां नरहनदासजी रायपुरनी गादीए बेठा अने एज सालमां बलकरणजीने गाम " दुबल्या " मळ्युं.

राव नरहरदासजीने मानसिंहजी, राजसिंहजी तथा माधवसिंहजी नामे त्रण कुमार थया; तेमां मानसिंहजी रायपुरनी गादीए रह्या; तेओने रुपसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी नामे बे कुंवर थया. राव मानसिंहजीना परलोक प्रयाण पछी रुपसिंहजी रायपुरना राजा बन्या अने प्रतापसिंहजीनो परिवार गाम " पीचडीये " गयो.

राव रुपसिंहजीने पृथीसिंहजी, बेरीसालजी तथा मकनसिंहजी नामे त्रण कुंवर थया, तेमांना पाटवीकुमार पृथीसिंहजी रायपुरनी गादीए रह्या. तेओने फतेसिंहजी, जगतसिंहजी, सुजाणसिंहजी, लखसिंहजी, भीमसिंहजी तथा जोरावरसिंहजी नामे छ कुंवरो थया. राव पृथीसिंहजीना स्वर्गवास पछी फतेसिंहजी गद रायपुरनी गादीए बेठा.

जगतसिंहने गाम " गादीया " तथा सुजाणसिंहने गाम " दीवडखेडा " गिरासमां मळ्युं.

* दुदाजी वगेरेनुं शुं थयुं ए कांइ जाणवामां नथी.

कोइएक दिवसे वादशाह हुसेन सिंहनो शिकार करवा गाढ वनमां गएल, साथे राघवदेवजी पण हता. हाको थतां समीपे आवेला सिंह उपर वादशाहे गोळी छोडी, परंतु घा खाली जवाथी सिंह बादशाह सामे धसी आव्यो. ए वखते वीरवर राघवदेवजीए वच्चे पडी वहुज वहादुरीथी सिंहनो संहार कर्यो. प्रसन्न थएला वादशाहे पोताना प्राण बचाववाना वदलामां झाला राघवदेवजीने १४४४ गाम सहित आगरनो तालुको आप्यो अने वि. सं. १५४५ मां "राव" नी पदवी आपी.

राव राघवदेवजीए वि. सं. १५५० मां आगरनी राजधानी स्थापी अने भैरवनाथनुं मन्दिर बंधाव्युं. तेओने चोंडाजी तथा कहानसिंहजी नामे बे कुमार थया. राघवदेवजीना स्वर्गवास पछी चोंडाजी आगरना मालिक थया; तेओनी पासे एक "चेटक" नामनो उत्तमोत्तम काठीआवाडी अश्व हतो; ए वात कोइए वादशाहने काने नांखी; वादशाहे चोंडाजी पासे ए घोडानी मागणी करी; परंतु तेणे चोखी ना कही; त्यारे बादशाह आगर उपर चढी आव्यो, भयंकर युद्ध थयुं अने अन्ते आगरनुं राज्य वि. सं. १५६१ मां वादशाहने हाथ गयुं. ज्यारे चोंडाजीनो स्वर्गवास थयो त्यारे तेओना रामसिंहजी नामना कुमार हता. ए अरसामां "सणखेडी" नामना गाममां जेठो तथा सामळ नामना बे म्होटा लुंटाराओ रहेता हता; तेओए राव रामसिंहजी पासे मागणी करी के तमे तमारी दीकरीना लग्न अमारी साथे करो. आ वखते रामसिंहजी आगळ वधारे माणस न होवाथी तेओए बुद्धिवळनो उपयोग कर्यो अने भीलोने सवन्ध करवा माटे मिजमान तरीके पोताने त्यां बोलाव्या, त्यारवाद ए बधाने गोठ आपती वखते दारु पाइ बेभान बनावी दीधा अने पछी एकदम कतल करी नांख्या. ए रीते गाम सणखेडीने स्वाधीन करी राव रामसिंहे एक रायपुर नामे गाम वसाव्युं अने वि. सं. १५६४ मां त्यां पोतानी राजधानी स्थापी. ए रायपुरनी नीचे १७५ गाम हतां. राव चोंडाजीना भाइ कहानसिंहजीए वि. सं. १५७० मां नरवर राज्यनी स्थापना करी.

राव रामसिंहजीने महेशदासजी, भीमजी, दुदोजी, हमीरजी, वनोजी, वाघोजी, शवोजी तथा हठीजी नामे आठ कुंवरो हता. राव रामसिंहजीना स्वर्गवास पछी म्होटा कुमार महेशदासजी रायपुरनी राजगादीए बेठा. तेओना न्हाना भाइ भीमजी वि. सं. १५७४ मां रून्डलाइ गया अने

---

१ झालाकुळना वडवा भाटनी आ उपरोक्त असत्य अथवा अतिशयोक्ति जणाय छे. २ नरवर राज्य तरफथी मळेला इतिहासमां "सेमलजोटा" तथा "कुंडीखेडा" एवां नाम आपेलां छे.

तेना वंशजो " भीमावत " कहेवाया तथा वाघाजीने डावल, रावल, सावल, अने काली तळाइ नामे गामो मळ्यां जेथी ए पण सं. १५७४ मांज त्यां गया; तेना वंशजो " वाघावत " कहेवाया.*

राव महेशदासजीना परलोक प्रयाण पछी तेना कुमार जेसिंहजी (जसोजी) रायपुरनी गादीए बेठा. तेओना बीकाजी तथा कृष्णाजी नामे बे कुमार थया; तेमां म्होटा कुमार बीकाजीने " गुगाहेडे " मोकलवामां आव्या; तेओए त्यां जइ बार गाम मेळव्यां अने तेना वंशजो बीकावत कहेवाया. राव जेतसिंहना स्वर्गगमन पछी तेओना न्हाना कुमार कृष्नाजी रायपुरना राजा बन्या. तेओने सुजोजी, झुझारजी, खानोजी, पृथीराजजी, वाघोजी तथा दयालदासजी नामे छ कुमारो थया.

राव कृष्णाजीना स्वर्गवास पछी पाटवी कुमार सुजोजी वि. सं. १६०२ मां रायपुरनी राजगादीए बेठा. अने एज सालमां झुझारखांनजीने गाम " भोरासी " तथा खानाजीने गाम " भोरासा " मळ्युं. ए बन्नेना वंशजो " कृष्णावतझाला " कहेवाया.

राव सुजाजीने नरहरदासजी तथा बलकरणजी नामे बे कुंवर थया. सुजाजीना स्वर्गवास पछी वि. सं. १६२४ मां नरहनदासजी रायपुरनो गादीए बेठा अने एज सालमां बलकरणजीने गाम " दुबल्या " मळ्युं.

राव नरहरदासजीने मानसिंहजी, राजसिंहजी तथा माधवसिंहजी नामे त्रण कुमार थया; तेमां मानसिंहजी रायपुरनी गादीए रह्या; तेओने रुपसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी नामे बे कुंवर थया. राव मानसिंहजीना परलोक प्रयाण पछी रुपसिंहजी रायपुरना राजा बन्या अने प्रतापसिंहजीनो परिवार गाम " झीकडीये " गयो.

राव रुपसिंहजीने पृथीसिंहजी, बेरीसालजी तथा मकनसिंहजी नामे त्रण कुंवर थया, तेमांना पाटवीकुमार पृथीसिंहजी रायपुरनी गादीए रह्या. तेओने फतेसिंहजी, जगतसिंहजी, सुजाणसिंहजी, छत्रसिंहजी, भीमसिंहजी तथा जोरावरसिंहजी नामे छ कुंवरो थया. राव पृथीसिंहजीना स्वर्गवास पछी फतेसिंहजी गढ रायपुरनी गादीए बेठा.

जगतसिंहने गाम " गादीया " तथा सुजाणसिंहने गाम " दीवडखेडा " गिरासमां मळ्युं.

---

* दुदाजी वगेरेनुं शुं थयुं ए कांइ जाणवामां नथी.

राव फतेसिंहने जोधसिंहजी, सुरतानसिंहजी, भावसिंहजी तथा हरनाथसिंहजी नामे चार कुमार थया. तेमांना ज्येष्ठ कुमार जोधसिंहजी रायपुरनी गादीए रह्या. सुरतानसिंहजीनो वंश गाम पराएली, डावल, कल्याणपुर, दगनाखेडी तथा चंपेलीमां अने हरनाथसिंहजीनो वंश गाम रावलमां गयो.

राव जोधसिंहने देवीसिंहजी, भूपतसिंहजी तथा केसरीसिंहजी नामे त्रण कुमार थया; तेमां देवीसिंह गढ रायपुरनी गादीए रह्यां अने भूपतसिंहजीनो वंश गाम सोयला, सोयली, हुणता तथा झरणामां गयो.

राव देवीसिंहने अभेसिंहजी तथा चेनसिंहजी नामे बे कुमार थया. त्यारबाद अभेसिंहजीना कुंवर शेरसिंहजी अने तेना कुमार बलवतसिंहजी गढ रायपुरनी गादीए विराजमान थया.

१ रायपुरना राव महेशदासजीना कुमार भीमसिंहजी वि–सं. १५७४ मां रुन्डलाइ आव्या अने त्यां तेओए वि–सं. १५७६ मां " भीमसर " नामे तळाव बंधाव्युं. ए भीमसिंहने नरसिंहदास, जोधोजी तथा भारमलजी नामे त्रण कुमार थया. भीमसिंहना स्वर्गवास पछी नरसिंहदासने रुन्डलाइनी मालिकी मळी, भारमलजीने वि–सं. १५९० मां " उरमाल " नामे गाम मळ्युं. जोधाजी बाळवयमांज मरण पाम्या.

नरसिंहदासने सुरतानसिंहजी, चन्द्रभाणजी, सदोजी तथा दोळतसिंहजी नामे चार कुमार थया. नरसिंहदासना परलोक प्रयाण पछी सुरतानसिंहजी रुन्डलाइ रह्या अने दोळतसिंहजीनो परिवार गाम " सीगोण्या " गयो. बाकीना बे भाइ बाळवयमांज गुजरी गया.

सुरतानसिंहजीना स्वर्गवास पछी तेना कुंवर नाराणदासजी रुन्डलाइना अधिपति तरीके नियत थया, ए नाराणदासजीने जगन्नाथजी, मनोहरदासजी, पृथीसिंहजी, फरशुरामजी, नगोजी, अचलदासजी, रतनजी, नारखांनजी, अमरसिंहजी तथा सामळदासजी नामे दश पुत्र थया. तेमांथी जे जीवता रह्या तेना वंश नीचे दर्शावेल स्थळे छे.

जगन्नाथजीनो वंश " रुन्डलाइ " मां.

नारखांनजी तथा फरशुरामजीनो वंश गाम " देवरी " मां

नगाजीनो वंश गाम " शोनखडी " मां

मनोहरदासजीनो वंश गाम " बीराखेडी " मां.

ए तमाम " भीमावत " थया कहेवाय छे.

२ रायपुरना राव कृष्णाजीना कुंवर झुझारखानजी वि-सं. १६०२ मां गाम "भोरासी" गया. तेओने दलपतसिंहजी नामे कुंवर थया. ए दलपतसिंहजीना जसोजो उर्फे जेशंगजी तथा मकनसिंहजी नामे बे कुमार थया; तेमां जेसंगजीनो वंश भोरासीमां रह्यो अने मकनसिंहजीनो वंश गाम " वणझारी " मां गयो.

जेशंगजीने नारसिंहजी, भारमलजी, कृष्णाजी तथा केसरीसिंहजी नामे चार कुमार थया.

नारसिंहजी गाम " भोरासी " मां.
केसरीसिंहजी तथा कृष्णाजीनो वंश गाम " बोरवा " मां.
भारमलजीनो वंश गाम " मंडाल " मां.

भारमलजीने पद्मसिंहजी तथा हिन्दुसिंहजी नामे बे कुमार थया; तेमां पद्मसिंह "मंडाल" मां रह्या अने हिन्दुसिंहजी " चांदखेडी " मां गया.

नारसिंहजीने मोणसिंहजी तथा तेजसिंहजी नामे बे कुमार थया; तेमां मोणसिंहजीनो वंश तो गाम " भोरासी " मां रह्यो अने तेजसिंहनो परिवार " सारगाखेडी " मां गयो.

ए तमामना वंशजो कृष्णावत थया कहेवाय छे.

३-रायपुरना राव कृष्णाजीना कुंवर खानोजी वि. सं. १६०२ मां "भोरासा" आव्या. तेने कल्याणसिंहजी नामे कुंवर, तेजखानजीने बखतसिंहजी, दोलतसिंहजी, दयालसिंहजी तथा सुजाजी नामे चार कुमार थया.

बखतसिंहजीनो वंश "भोरासा" मां.
दोलतसिंहजीनो वंश "सालरी" मां.
सुजाजीनो वंश "धनोदी" मां.

दयालसिंहजी बालवयेज मरणने शरण थया. बखतसिंहजीने लालसिंह, पतोजी, जेशंगजी, अखेसिंहजी तथा पद्मसिंहजी नामे पांच कुमार थया. तेमांना लालसिंह भोरासे रह्या अने जेशंगजी गाम "धानवा" मां गया. बाकीनानुं शुं थयु ए जाणवामां नथी.

ए बधा "कृष्णावत थया" कहेवाय छे.

नरवर.

शुभस्थान नरवरना राजा झाला राजपूत छे; तेओना पूर्वज राज छत्रसालजीनी राजधानी गुजरातनी अंदर रहेला मांडल वगेरे मुलकमां हतो. ए छत्रसालजीए वि-सं. १४७६ मा वैकुंठवास कर्यो; तेओना जेतसिंहजी तथा राघवदेवजी वगेरे चार कुंवरो हता. राज जेतसिंहजीना वंशजो हालमां हळवद ध्रांगध्रानुं राज्य भोगवे छे. राघवदेवजीने विठ्ठलगढ तथा वाटु वगेरे गाम जागीरमां मळ्यां हतां; तेओए विठ्ठलगढ पासे एक उत्तम तळाव बंधाव्युं के जे "राइतळाव" नामे मशहूर छे. त्यारबाद तेओ गुजरातमां पाटी नामनुं गाम वसावी त्यां रहेवा लाग्या. पाटी नामनी पोतानी राजधानीमां राघवदेवजीए कुळदेवी विसन्त मातानुं मन्दिर बंधाव्युं. अने थोडा दिवस राज कर्या बाद उक्त गाम माताजीनी सेवामा अर्पण करी दीधुं. ते पछी तेओ विठ्ठलगढ तथा वाटूगाम पोताना कुंवर सूरसिंहने[1] आपी केटलाएक सरदारोनी साथे दिल्हीना पादशाह पासे गया. थोडा दिवस त्यां रही पाछा राजधानीमां आवेला राघवदेवजीए माळवामां जवा इरादो कर्यो. जे वखते तेओ माळवा तरफ रवाना थया, ते वखते तेओनी साथे १७५० गाडीओ हती. मतलब तेओनी तमाम रैय्यत पण साथे हती. पुरातन कागळीआओ उपरथी एम जणाय छे के जे वखते राघवदेवजी माळवा मध्ये रहेला मुकाम आगरमां आव्या, त्यारे एक गाडी के जेमां भैरवनी मूर्तिने बेसाडी हती ते गाडी तूटी गइ. भैरवनो हुकम थयो के " एज स्थळे मन्दिर बनावो अने अहींज मुकाम करो." राघवदेवजीए आगरमां मुकाम करी भैरवनाथनुं भव्य मन्दिर[2] बंधाव्युं अने पोते रैय्यत सहित त्यां रह्या. कहे छे के राघवदेवना इष्ट भैरव तेओने प्रत्यक्ष दर्शन देता हता. बाद राघवदेवजी मांडल जइ गोरीपादशाह होशंग पासे नोकर रह्या अने तेओए घणी लडाइओमां सामेल थइ बहुज बहादुरी बतावी; एथी प्रसन्न थएला सुलतान होशंगे तेओने आगर तावे सात परगणां एनायत कर्यां. राघवदेवजीना परलोक प्रयाण पछी तेना पुत्र चोंडाजी राज्यना वारस थया. राघवदेवजीना बीजा पुत्रनुं नाम कहानसिंहजी हतुं. चोंडाजीए कोइ खास कारणने लीधे आगरनो परित्याग कर्यो. राघवदेवजीए आगरमां स्थापेला भैरवनाथ अद्यापि विद्यमान छे अने ते केवडा स्वामीना नामथी ओळखाय छे. कलाल्या नामने मुकामे चोंडाजीनो स्वर्गवास थयो. तेओना भ्राता कहानसिंहे भीलनुं

---

१ ए सूरसिंहना वंशजो हाल देश गुजरात मध्ये आवेला देदादरा अने अलीदरामां वांटा खाय छे. २ वि. सं. १५५० मां ए मन्दिर बन्धाव्युं हतुं.

सेमलजोटा नामे गाम भांगी कूंडीखेडामां पडाव नांख्यो. चोंडाजीना पुत्र रामसिंहे रायपुर वसाव्युं.[1] ए काका भत्रीजा बन्नेए मांडूना पादशाह पासे रही घणी लडाइओमां बहादुरी बतावी; जेथी प्रसन्न थएला उक्त पादशाहे रामसिंहजीने १७५ गाम सहित रायपुर इलाको अने कहानसिंहजीने ८४ गाम सहित नरवरनो तालुको जागीरमां आप्यो* कहानसिंहजी पछी हरनाथसिंहजी, चोंडाजी, सालमसिंहजी, रतनसिंहजी, आशकरणजी, वाघकरणजी, भारतसिंहजी, डूंगरसिंहजी, सांवतसिंहजी, लूणकरणजी, वुधसिंहजी, पहाडसिंहजी अने छत्रसालजी एक पछी एक क्रमपूर्वक नरवरनी गादीए बेठा. छत्रसालजी महा पराक्रमी हता. तेओए बेदिल सवारो साथे नरवर झिरनाना वडला मुकामे लडाइ करी. ए लडाइमां नरवरनां तेर माणसो मार्यां गयां. विद्रोही लोको हार पाम्या. छत्रसालजी पण वधारे जखमी थएला होवाने लीधेज घेर आवतांज वैकुंठवासी थया. जे जगोए लडाइ थइ हती ते भूमि गउचर माटे नियत करवामां आवी के जे अद्यापि दस्तूर प्रमाणे गउचरमां वपराय छे. छत्रसालजीना परलोक प्रयाण पछी हमीरसिंहजी, पृथीसिंहजी, पातलसिंहजी, विसनसिंहजी अने आशकरणजी क्रमपूर्वक नरवरना नरेश थया. जे वखते पादशाह शाहजहां तरफथी औरंगजेब साथेना मुकाबलामां जोधपुरना महाराजा जसवंतसिंहजी तथा रतलामना महाराजा रतनसिंहजी उज्जेण तावे फतेहाबादनी लडाइ वखते लडवा आव्या हता त्यारे नरवरना राव आशकरणजी औरंगजेब साथे हता अने एज लडाइमां तेओ काम आव्या. त्यारबाद तेओना कुमार राव मानसिंहजी नरवरमां तख्तनशीन थया. तेओना वखतमां वडलाना चहुआणोए नरवरनी सीमामां आवी युद्धना समाचार आप्या. राव मानसिंहजी एज दिवसे परणी नरवरने पादर आव्या हता, त्यां उक्त समाचार सांभळतां तेओए पोतानां नव परिणीत राणीजीने गाम बाहेरना बागमां राखी तावाना सरदारो सहित युद्ध अर्थे प्रयाण कर्युं. वडला मुकामे लडाइ थइ. राव मानसिंहे चहुआणोनो पीछो पकडी तेओने कोडी मुकामे रोक्यां अने फरी नरवरमां न आववाना शपथ लेवरावी छोडी मूकया. त्यारबाद राजधानी तरफ पाछा वळेला राव मानसिंहजी हद उपरांत जखमी होवाने लीधे नरवर तावाना गाम मोजे गांवडोना तळावनी पाळपर वैकुंठवासी थया; तेओनी साथे नवां ठकराणी पण सती बनी वैकुंठे गयां. ए सतीनो चबूतरो नरवरना गढनी उत्तरे सरूमातानो वाडीमां अने राव मानसिंहजीनो पाळीयो गढना पूर्वद्वार सामे अद्यापि मोजूद छे. राव मानसिंहजी

---

१ ए रामसिंहना वंशजो अद्यापि इन्दोर तावे रायपुरमां विद्यमान छे. * वि. सं. १५७० मां नरवरमा राजधानी स्थापी.

पछी जसवतसिंहजी, तेजसिंहजी अने मोहकमसिंहजी नामे राजाओ एक पछी एक नरवरनी गादीए विराजमान थया. मोहकमसिंहजीने हठीसिंहजी तथा अभेसिंहजी नामे वे कुमार थया. मोहकमसिंहजीना स्वर्गवास पछी पाटवीकुमार हठीसिंहजी राजगादीए वेठा. ए हठीसिंहजीने पण रतनसिंहजी तथा खुशालसिंहजी नामे वे कुमार थया. हठीसिंहजीना परलोक प्रयाण पछी पाटवी-कुमार रतनसिंहजी राजगादीए वेठा; तेओने पण वे पुत्र थया. पहेला रुगनाथसिंहजी अने वीजा नवलसिंहजी. रतनसिंहजीना परलोक प्रयाण पछी रुगनाथसिंहजी नरवरना नरपति वन्या, एना समय सुधी राज्यनो घणो विस्तार थयो हतो; एओए नरवरमां एक मजबूत गढ वनाव्यो के जे हाल मोजूद छे. नरवरपर म्होटां म्होटां राज्यो तरफथी चढाइ थइ हती. ए वखतथी कवि लोकोए कहेलो एक दोहो प्रसिद्ध छे के.

“ दोहा ”

झलता झाला मालवे, छलता नांखे छोल;
आठ कटक मिल आविया, नीका रही नरोल. ॥

रुगनाथसिंहजीने पण वे कुंवर हता. पहेला अचलसिंहजी अने वीजा वखतावरसिंहजी. रुगनाथसिंहजीना स्वर्गगमन पछी पाटवीकुमार अचलसिंहजी नरवरनी राजगादीए वेठा अने वखतावरसिंहजी निःसंतान मरण पाम्या. अचलसिंहजीने लछमनसिंहजीने तथा नारसिंहजी नामे वे कुमार थया; तेमांना पाटवीकुमार लछमनसिंहजी पिताना स्वर्गवास पछी तख्तनशीन थया अने ते पछी तेओना कुमार हमीरसिंहजी नरवरनी राजगादीए वेठा. राव रुगनाथसिंहजीथी आरंभी राव हमीरसिंहजी पर्यन्त नरवर उपर म्होटी रियासतोनुं वधारे दवाण होवाथी राव अचलसिंहजी राव लछमनसिंहजी तथा राव हमीरसिंहजीए नामदार अंग्रेज सरकारनी आधीनता स्वीकारी अने नामदार गवर्नमेन्ट साथे महेरवान पोलीटीकल एजन्ट सरजान माल्कम साहेव तथा कप्तान विलियम वोरथिक साहेव वहादुर मारफत नरवरनी रक्षा वावत कोलकरार कर्या. वाद नामदार

१ ए अभेसिंहना वंशजो नरवरना भायात वर्गमां अद्यापि विद्यमान छे. २ ए खुशालसिंहना वंशजो नरवरना भायात वर्गमां अद्यापि विद्यमान छे. ३ ए नवलसिंहजीना वंशजो अद्यापि नरवरना भायात वर्गमां विद्यमान छे. ४ ए नाहरसिंहजीना वंशजो अद्यापि नरवरना भायात वर्गमां विद्यमान छे. ५ जे रीते माळवाना वीजां राज्योमां अंग्रेज सरकार साथे कोलकरारो करवामां आव्या हता एज रीते नरवरमां पण थयुं.

अंग्रेज सरकारे नरवरनी चारे तरफ पक्के पाये हद मुकरर करी आपी.

राव हमीरसिंहजी मिति चैत्र शुदि १५ सं १९३८ ता. ३ एप्रील सन् १८८२ ने दहाडे वैकुंठवासी थया; तेओने सोळ कुमार हता. तेमांथी चौद तो तेओनी हयातीमांज मरण पाम्या हता. मात्र रघुनाथसिंहजी तथा मानसिंहजी ए बेज विद्यमान होवाथी ता. १२ जुन सन १८८२ ना नामदार गवर्नमेन्ट सरकारना हुकम नं ४३५ मुजब पाटवीकुमार रघुनाथसिंहजी नरवरनी राजगादीए बेठा. तेओनो वि. सं. १९५५ ता. २८ एप्रील सन् १८९९ मां अपुत्र स्वर्गवास थतां तेओना न्हाना भाइ मानसिंहजीने नामदार गवर्नमेन्ट सरकारना ता. ७ डीसेम्बर सन् १९०० ना हुकम नं. २५४९ मुजब ता. १३ डीसेम्बरे माळवाना पोलीटीकल एजन्ट डबल्यु एम. क्युविट साहेब बहादुरे नरवरनी राजगादीपर बेसाड्या. माळवानां बीजां फालतु राज्योनी माफक नरवर पण त्यांना महेरबान पोलीटीकल एजन्टना अखत्यारमां छे.

नरवरनी राजधानी उज्जेण अने देवासने लगती छे. पूर्वे देवास ११½ माइल अने पश्चिमे उज्जेण ११½ माइल जेटले दूर छे. नरवर उज्जेणथी आवता आगरा बम्बइ रोडनी अत्यन्त निकटमां छे. ए ताल्लुकामां कुल वीशहजार वीघा जमीन छे, ए राज्यनी कुल आमदानी बावीशथी त्रेवीशहजार सुधीनी लेखाय छे. तेमांथी रुपिआ सातहजार कुटुम्बीओने, देवस्थानोने तथा नोकरो वगेरेने अपाय छे. तेमज सातहजार रुपिआ गवालिअर तरफथी मळेला "टांका" गाम बाबत त्यां शरत मुजब भरवा पडे छे, तेमज देवासनी न्हानी न्हानी पांतिमांथी, देवासनी म्होटी पांतिमांथी, ग्वालिअरमांथी अने इन्दोरमांथी आशरे रु. सवा-चारहजार नरवरना नरेशने मळे छे. संक्षेपमा नरवरनी खास आमदानी नगद रु. १३००० तेर हजारनी गणाय छे. नामदार गवर्नमेन्ट सरकार तरफथी राज मानसिंहजीने नरवर तथा तेना महालोनो ज्युडिशिअल अधिकार आपवामां आव्यो छे, अने म्होटा फोजदारी गुन्हाओनो फेंसलो माळवाना महेरबान पोलिटिकल एजन्टद्वारा करवामां आवे छे. रावमानसिंहजीए पोताना मुलकनी सर्वे करावी पेटबन्दीनु काम शरु कर्युं छे. ए पहेलां अनुमाने पेटबन्दी थती हती. राज मानसिंहजीना कार्य कौशल्यथी नरवरनी आमदानीमां वृद्धि थवा संभव छे, जेनुं परिणाम आगळ उपर जणाशे. राजमानसिंहजी माथे नरवरनी प्रजानो घणो प्रेम छे. तेओना राज्याभिषेक पछी तुरतमांज उपरा उपर नबळां वर्षो आव्यां तेमा तेओए उत्तम प्रकारे पोतानी प्रजाने पाळी हती.

१ अमुक वर्षना पट्टाथी खेडूत वगेरेने जमीन आपवी ते.

रावमानसिंहजीने हालमां बे राजकुमार अने एक राजकुमारी छे. म्होटा कुमार बापू माधोसिंहजी इन्दोरनी डेली कॉलेजमां अभ्यास करे छे. काठिआवाड अंदर रहेला ध्रांगध्रा राज्यमां नरवरने सादडीनी माफक बेठक मळे छे. नरवरनरेशने ध्रांगध्रा राज्य तरफथी सोनानुं कगर, छडी तथा चपराश आदि मळेल छे. जेना दाखलाओ नीचे मुजब छे.

॥ श्री ॥

श्री मच्छक्तिपद
कञ्जप्रसाद प्राप्तमहोदय
महाराजाधिराज महारा-
णाश्री मानसिंहजी
कस्य मुद्रिका

ध्रां. हजुर. ओ. नं. ५१
सन. १८९६

स्वस्थान श्री हळवद ध्रांगध्राना महाराजाधिराज महाराणा श्री मानसिंहजी के. सी. एस. आइ ना तरफथी.

माळवा मध्ये नरवरना राणाश्री रघुनाथसिंहजीने आ सनंद बक्षवामां आवे छे के पूर्ण त्रणसो वर्ष पहेला ज्यारे के आ राजधानीनुं मत्यक पाटडी शहेरमा हतुं, ते अरसामां आहींना भायात राणाश्री राघोदेवजी केटलाक माणसोनी साथ दिल्ही गया हता. त्या तेमने पोतानु पराक्रम बतावबाथी दिल्हीनी बादशाहीथी माळवा देशमा आगर नामनुं राज्य संपादन थयुं. त्यारपछी छेवट नरवर तालुकामां हाल तमो राज्य करो छो, ने ते झालावाळी नरवरने नामे माळवामां ओळखाय छे. थोडा वर्ष पहेला नामदार मरहुम पिता जनाब महाराजाधिराज महाराणा श्री रणमलसिंहजी महायात्राए गएल ते वखत नरवर पधार्या हता. नरवरमा तमारा पिता हमीरसिंहजीए पोताना वडा समजी नजर न्योछावर वगेर मान आप्यु हतुं अने मरहुम महाराणासाहेबे पोतोका भायात जाणी राणाश्री हमीरसिंहजीने घोडो, चोपदार तथा बीजो पोशाक एनायत कर्यो हतो, ते दिवसथी ख्सुसिगन रीते नरवरनो आ राज्य साथे बंध पडी गएलो सबन्ध ताजो थयो. हाल कुमारी श्रीबाइजीलालबाना विवाह प्रसंगे तमो राणाश्री रघुनाथसिंहजी पोताना माणसो साथे आहीं आवतां राज्य तरफथी कुमारश्री गोविन्दसिंहजीने नगारूं निशान सहित सामा मोकली

इस्तकबाली आपी हती तथा खानपाननी खात्री करवामां आवी छे तथा मुलाकाते वखतोवखत आवतां जातां बे वखत कुरब आपवामा आव्यो तथा गादलांनी बेठक आपवामां आवी छे अने अमने पोतीका बडा समजी तमो रघुनाथसिंहजीए अमोने सोनामहोर नजरन्योछावर करी तथा अमने पोताने तथा कुवर अजीतसिंहजी वगेरेने पोशाक नजर कर्यो छे.

तमारी मुलाकातथी संतोष थयो छे. तमारी साथे खानपान इत्यादिनो आ राज्यना भायात तथा कुटुम्बी जाणी संतोष लीधो छे. अने वडी सादडी, देलवाडा इत्यादि जे आ राज्यना भायातो मेवाडमां छे तेओनी रीते मान मरतबो उपर प्रमाणे आपवामां आव्यो.

राणाश्री रघुनाथसिंहजी तमोने आ राज्य तरफथी मागणी साथे पगमां पहेरवा सोनुं वक्षवामां आव्युं छे; तथा बीजो पोशाक आपवामां आव्यो छे, तमे आ राज्यना भायात छो अने खानपान ए सघळो व्यवहार तमारे आ राज्यनी साथे छे. तमारी मुलाकातथी अमने पूर्ण संतोष थयो छे ते निशानी खातर तमने आ राज्य तरफथी आ सनद वक्षवामां आवे छे.

संवत १९४२ ना फाल्गुन वद ६ रविवार. ता. ५ एप्रील, सन् १८८६.

महाराणाश्री मानसिंहजी.

ह. प. ओ. नं. १५१

श्री मच्छक्तिपद
कञ्जप्रसाद प्राप्तमहोदय
महाराजाधिराज महारा-
णाश्री मानसिंहजी
कस्य मुद्रिका

स्वस्थान श्री हळवद ध्रांगध्राना महाराजाधिराज महाराणा श्री सर मानसिंहजी के. सी. एस् आइ ना तरफथी.

तमो आ राज्यना भायात माळवा मध्ये नरवरना राणाश्री रघुनाथसिंहजीने आ सनद आपवामां आवे छे के तमे कुमारश्री परवतसिंहजीना विवाहना शुभ प्रसंग उपर आही आवेल ते वखत तमने आ राज्य तरफथी बे चपरासो वक्षवामां आवी छे. आ सनद सदरहु चपरासो तमने वक्षवामां आवी तेनी खात्री तरीके आपवामां आवी छे.

संवत १९४६ ना भादरवा शुदि २ ता. १७ आगष्ट सन् १८९० इ.

महाराणाश्री मानसिंहजी.

श्री मच्छक्तिपद
कञ्जप्रसाद प्राप्तमहोदय
महाराजाधिराज महारा-
णाश्री मानसिंहजी
कस्य मुद्रिका

प्रा. आ. नं. १२२

स्वस्थान श्री हळवद–ध्रांगध्राना महाराजाधिराज महाराणा श्री मानसिंहजी के. सी. एस. आइ. ना तरफथी—

माळवा मध्ये नरवरना राणा श्री रघुनाथसिंहजीने आ सनंद वक्षवामां आवे छे के तमो सं. १९४२ नी सालमां आ राज्यमां आव्या हता ते वखत तमने पगमां पहेरवानुं सोनुं वक्षवामां आव्युं हतुं अने हाल तमे तमारा भाइ मानसिंहजी सहित अंही आवतां सदरहु मानसिंहजीने पण पगमा पहेरवा आ राज्य तरफथी हाल सोनु वक्षवामां आव्युं छे अने ते निशानी खातर आ सनंद वक्षवामां आवे छे.

सवत् १९४९ ना आशो वद ११ शनिवार ता. ४ नवेम्बर सन १८९३ छे.

महाराणा श्री मानसिंहजी.

महाराणाश्री
रणमलसिंहजी

श्री सही.

महाराजाधिराज महाराणा श्री रणमलसिंहजी प्रान्त झालावाड स्वस्थान श्री हळवद–ध्रागध्रा वी०

राणा हमीरसिंहजी तथा श्री भवानीसिंहजी कुंवर जोग जत हमारी स्वारी श्री काशीवि-श्वनाथनी यात्रा करी देश जाता तमारा गांवनरवल मुकाम थाते तमारा तरफथी चाकरी–वरदास रूडी रीते थाता छडी १ वक्षीस करवामां आवी छे.

संवत् १९२४ ना माहा शुदि ६

कुन्हाडी.

देलवाडाना राजराणा राघवदेवजीना ज्येष्ठ कुमार जेतसिंहजी, एथी न्हाना भीमसिंहजी अने एथी न्हाना अर्जुनसिंहजी वगेरे हता. भीमसिंहजी पलायते ठाकुर प्रतापसिंहजीनी पुत्री साथे परण्या हता. ए प्रसंग कुन्हाडीनी प्राप्तिना कारणरूप थयो. कोटाना राव रामसिंहजी भडभुंज्या मुकामनी सामे सोनेरी नारनो शिकार करवा निकळेला. राज भीमसिंहजीए त्यां जइ वहुज वहा-दुरीनी साथे ए नारनो शिकार कर्यो. एथी परम प्रसन्न थएला रावरामसिंहजीए राजभीमसिंहजीने कोटामां राख्या अने वि–सं. १७६२ मां नव गामो सहित कुन्हाडीनी जागीर आपी. ज्यारे बाद-शाह औरंगजेबनी फोज लूंटमार करती चाली आवती हती त्यारे तेनी साथे भरतपुरनो जाट चूडा-मण पण हतो. कोटाना राव रामसिंहजीए ए लोकोना अत्याचार अटकाववा माटे राजभीमसिंहजीनें सेनानुं आधिपत्य आपी रवाना कर्या. उभय सैन्यनो भेटो थतां दरामां झपाझपी चाली. केटलाएक सैनिको कपाइ मुआ अने राजभीमसिंहजी पण अन्ते काम आव्या. ए युद्ध वि–सं. १७६९ मां थयुं हतुं. राजभीमसिंहजीए आपेला मस्तकना बदलामां तेओना कुमार सरूपसिंहजीने कोटा राज्य तरफथी २३ गाम सहित थाणादेवरीनो पट्टो आपवामां आव्यो.

राजसरूपसिंहजीए कुन्हाडीनी गादीए बेठा पछी वि–सं. १७८५ मां खेतून मुकामे पठा-ण अकबरखांनी फोज साथे लडी प्राणनो परित्याग कर्यो. ए चाकरीना बदलामां कुन्हाडीने कोटा-ना राव भीमसिंहजी अने दुर्जनसिंहजी तरफथी १८ गामो सहित मनोहर थाणानो पट्टो मळ्यो. राजसरूपसिंहजी गाम सुजारे शक्तावतमां परण्या हता. ए शक्तावतना भाणेज अने सरूपसिंहजीना कुमार राजरणजीतसिंहजी कुन्हाडीनी गादीए विराजमान थया. राव दुर्जनसालजी तथा तेना कुंव-र अर्जुनसिंहजीना वखतमां हैदराबाद तरफथी निजाम पिंडारानी फोज बुन्दी कोटा वच्चेना बाव·

---

[१] झालाकुळना वडवा वारोटे अमोने आपेली वंशावळीमां जेतसिंहजी तथा भीमसिंहजी वगेरे देलवाडाना राजराणा तेजसिंहना कुंवरो हता एवुं लखेलुं छे'

ज्या मुकामपर आवी हती, तेनी साथे वि-सं. १८०७ मां अपार पराक्रमथी युद्ध करी राजरणजीतसिंहजी मार्या गया. ए मस्तकदानना वदलामां रियासत कुन्हाडीने चेवट परगणे गुंदी, माडडी, आंकेडी अने रटावद ए चार गामनो वीजो पट्टो प्राप्त थयो. ए वखते राजरणजीतसिंहजीनो एके पुत्र न हतो, तेओना न्हाना भाइ दोलतसिंहजी पण न्हानी उम्मरमांज पंचत्व पाम्या हता; एटला माटे देलवाडाथी अर्जुनसिंहजीने गोद लेवा पड्या. राजरणजीतसिंहजीनां लग्न गाम खातोलीना हाडाने त्यां थया हता. तेओना दत्तक पुत्र देलवाडाना राजराणा जेतसिंहजीना सहुथी न्हानेरा कुंवर हता.

कुन्हाडीनी गादीए वेठेला राज अर्जुनसिंहजी पांच स्थळे परण्या हता. तेओनो प्रथम विवाह गाम वावल मध्ये शक्तावतोमां रावत अजवसिंहनी पुत्री साथे, वीजो विवाह राठोडोने त्यां सलाणा पासे आवेला गाम सेल्यामां, त्रीजो विवाह पण राठोडोने त्यां मारवाडमां रहेला गाम गूडोजनी अंदर, चोथो विवाह राणावतोने अमळे अने पांचमो विवाह शक्तावतोने ढावे थयो. त्यारवाद तेओने सरुपसिंहजी, द्वारकादासजी तथा करणसिंहजी नामे त्रण कुमार अने जीवकुंवर नामे एक कुंवरी थयां; ए कुंवरीने वेदडाना राजाजी परतापसिंहजी साथे परणाव्यां.

राजअर्जुनसिंहजीना स्वर्गवास पछी कुन्हाडीनी गादीए सरुपसिंहजी वेठा. तेओना विवाह त्रण स्थळे थया हता. एक करवाड, वीजो हमीरगढ अने त्रीजो हाडाने त्यां. राजसरुपसिंहजीने रामचन्द्रजी तथा लखमणसिंहजी नामे वे कुंवर थया. तेमां लखमणसिंहजी उज्जेणक्षिप्राना रणमेदानमां मार्या गया अने रामचन्द्रजी राजसरुपसिंहजीना स्वर्गवास पछी कुन्हाडीनी गादीए वेठा. तेओना त्रण विवाह थया; पहेलो हाडा रामलोतजीने त्यां, वीजो मसूदाना राठोडने त्यां अने त्रीजो दारुकाना शक्तावतने त्यां.

राजरामचन्द्रजीने भवानीसिंहजी तथा गुलावसिंहजी नामे वे कुमार अने सुलतानकुंवरवाइ तथा वदनकुंवरवाइ नामे वे राजकुमारी थयां. पहेलां कुंवरीने घनोय अने वीजांने हरीगढना महाराजा जसवतसिंह साथे परणाव्यां.

राजरामचन्द्रजीना परलोक प्रयाण पछी भवानीसिंहजी कुन्हाडीना अधिपति वन्या; तेओना काकाए क्षिप्राना रणमेदानमां आपेला मस्तक वदल कोटाना महाराव गुमानसिंहजीए प्रसन्नतापूर्वक वसनपुरा नामनुं गाम वि. सं. १८६३ मां आप्युं. राजभवानीसिंहजीए वि. सं. १८४२ मां

ब्राह्मणो साथे युद्धनो प्रसंग आवतां असीम बहादुरी बतावी हती. तेमज वि. सं. १८६३ मां भटवाडानी रणभूमिमा जयपुरनी सेना साथे कोटानुं युद्ध थयुं, त्यारे कोटानी फोजमां राजभवानी-सिंहजी सामेल हता. कोटानी सेना विजय पामी अने जयपुरनी फोज हारी. आ विजय समाचार राजभवानीसिंहजीनी आज्ञाथी कुन्हाडीना कोइएक भंगीए कोटे जइ महाराव गुमानसिंहजीने संभळाव्या; ए वखते आनंदथी मस्त बनेला महारावे ए भंगीने महाराजानो इल्काब आप्यो. आजे पण ए कुन्हाडी भंगीना वंशजो महाराजा कहेवाय छे अने कोटाना भंगी लोकोमां मुख्य पटेल मनाय छे. ज्यारे राजराणा जालिमसिंहजी सिन्धियानी केदमां सपडाया त्यारे राजभवानीसिंहजी तेओने महान् परिश्रमथी मुक्त करावी कोटे लाव्या हता. कुन्हाडीनी अंदर राजभवानीसिंहजीए श्री रणछोडरायजीनुं मनोहर मन्दिर बन्धाव्युं अने एक हवेली बन्धावी. तेओनो प्रथम विवाह शक्तावतोमां अने बीजो विवाह खातोलीमां थयो हतो; परंतु ए बे राणीमांथी एकेने संतति थइ नहि.

राजभवानीसिंहजीना स्वर्गवास पछी तेओना भाइ गुलाबसिंहजी कुन्हाडीनी गादीए बिराजमान थया. तेओनो पहेलो विवाह राणावतोने अमले अने बीजो विवाह भदोडे चुंडावतोमां थयो. ज्यारे राजगुलाबसिंहजी निःसंतान स्वर्गे सिधाव्या. त्यारे मायात वर्गमांथी अर्जुनसिंहजीने गोद लेवामां आव्या.

राज अर्जुनसिंहजीनी बचपणमांज झालावाडनी रियासत कोटानी रियासतथी जुदी पडी. ते वखते शाहबादनुं गाम थाणादेवरी झालावाडमां चाल्युं गयुं. त्यारबाद झालावाड तरफथी राज-अर्जुनसिंहजीने घणा आग्रहपूर्वक बोलाववामां आव्या, परंतु तेओ श्यामधर्मने साचवी त्यां गया नहि. ए अर्जुनसिंहजीना भाइ दुर्जनसिंह हता ते झालरापाटणमां चाल्या गया; तने झालावाडना राजराणा तरफथी कांइक जागीर अने शाहबादनी किल्लेदारी मळी. कोटानी अंदर बळवो थयो त्यारे राजअर्जुनसिंहे बहुज बहादुरी बतावी हती. तेओनो प्रथम विवाह अजमेर इलाके पीसांगनमां अने बीजो विवाह पीपलदे थयो. त्यारबाद तेओने एक परिणीत राणीथी रूपसिंह नामे कुंवर थया अने कुवासिणा (रखात) थी कुवर द्वारकादासजी तथा गोवरधनदासजीनो जन्म थयो.

राज अर्जुनसिंहजीना परलोक प्रयाण पछी रूपसिंहजी कुन्हाडीना राजा बन्या. तेओने कुंवर न हतो. मात्र एक राजकुमारी हता, तेने कोटाना महाराव शत्रुमालजी साथे परणाव्यां. राज

१ पेशवा लोको २ पोताना आश्रयदाता कोटानरेशने राजी राखवा माटे झालावाडनो आश्रय न लेता श्यामधर्म साचव्यो.

रूपसिंहजीना विवाह त्रण जगाए थया हता. पहेलो पूसोद, बीजो मन्नूदे अने त्रीजो विवाह मारवाडनी अंदर रहेला केलावे थयो हतो. तेओ वि–सं. १९३० मां कोटाथी कांइ मानभंग थवाने लीधे देलवाडे पधार्या अने त्यांथी कुन्हाडी आवती वखते कुमार विजयसिंहजीने गोद लेवानो करार करता आव्या. त्यारबाद वि. सं. १९४४मा तेओए महारावने अरज करीके कुमार विजयसिं-हजीने कोटे बोलावी लीधा. कुमार विजयसिंहजी पोष मासमां कोटे पधार्या. एज सालमां राजरुप-सिंहजी स्वर्गवासी थया. तेओनी उत्तरक्रिया यथाविधि कुमार विजयसिंहजीए करी अने तेमां रुपिया दश हजार खरच्या. ज्यारे तेओ देलवाडामां कुंवरपदे हता, त्यारे तेओनो प्रथम विवाह गाम केलवामां राठोडोने त्यां थइ गयो हतो अने कुन्हाडीनी गादीपर अभिषिक्त थया बाद बीजो विवाह हाडोतीनी अंदर रहेला गाम कोयलाना हाडा ठाकुर अजीतसिंहने त्यां थयो. ए बन्ने राणी-ओथी कुल छ संतान थयां. जेओनां नाम नीचे मुजब छे.

१ कुमार श्री चन्द्रसेनजी.
२ कुमार श्री भीमसिंहजी.
३ कुमार श्री दलपतसिंहजी.
४ कुमार श्री दोलतसिंहजी.
५ कुमार श्री हिम्मतसिंहजी.
६ कुंवरी साहेब श्री आनन्द कुंवरबा.

कुन्हाडीना वर्त्तमान राजविजयसिंहजी विद्वान, न्यायनिपुण अने स्वभावे सरल छे. ज्यारे कोटाना महाराव उमेदसिंहजी गादीए बिराज्या बाद अजमेरनी राजकुमार कॉलेजमां अभ्यास करवा पधार्या त्यारे राजविजयसिंहजी तेओना कम्पेनीअन तरीके नियत थया; लगभग त्रण वर्ष सुधी तेओए पोताना आश्रयदाता उमेदसिंहजीनी उतम रीते सेवा बजावी. त्यारबाद कोटामां मेम्बर ऑफ काउन्सी-लनी जगो खाली थता राजविजयसिंहजीने त्यां बोलाववामां आव्या; तेओए काउन्सीलना मेम्बरनी जगोए दाखल थइ त्रण वर्ष पर्यन्त केटलांएक प्रशंसनीय कार्यो कर्यां. त्यारबाद महाराव उमेदसिंह-जी स्वतंत्र थया. आजकाल कोटा नरेशना परम कृपापात्र राजविजयसिंहजी महाराव उमेदसिंहजीनी आज्ञा मुजब केटलांएक राजकाज करे छे.

कोटाना राजदरबारमां कुन्हाडीनी बेठक डावी बाजुए पहेली छे अने तेओने कोटाना महाराव तरफथी प्रथम दरज्जाना सरदारोने मळतुं सम्पूर्ण मान मळे छे.

राजविजयसिंहजी सुज्ञ, सुशील, दीर्घदर्शी अने साहित्यप्रेमी छे. तेओए कुन्हाडीमां रुपिआ पचाश हजार खर्ची एक सारुं मकान अने नवो तवेलो बनाव्यो छे.

रायपुरनो संक्षिप्त इतिहास.

सवैया. एकत्रीशा.

मकवाणा हरपालथी मांडी वीती सोळ पेढी सुखरूप;
सत्तरमी पेढीपरॅ भ्राजे छत्रसाल माडळना भूप;
तनुजॅ त्रयोदश तेना तेमां ज्येष्ठ जेतसिंह गादीपति;
राघव आदि बार बन्धुने मळी वाटुनी भूवृत्ति. १

वाटु एज विठ्ठलगढ नामे वसुधामांहि हतुं विख्यात;
राघवदेव महारणरागी, गया माळवे तजी गुजरात;
आगर केरा तळाव आगळ पडाव नांख्यो प्रीत धरी;
त्यांथी प्रभाते प्रजावर्गसह चालवानी तैयारी करी. २

भांगी पडी भैरवनी गाडी तुरत सर्वजनॅ स्तब्ध थयां;
इष्ट वचनने अनुसरीने राघव ए स्थळमांज रह्यां;
मांडूमां जइ मळ्या शाहने ढाल अने तरवार धरी;
चेतनवाळा चतुर नरे त्यां वेतनविण नोकरी करी. ३

गया शिकारे शाह एक दिन राघवदेव हता साथे;
गहन वने करी प्रवेश छोडी गोळी महद सावज माथे;
धॅस्यो मत्त मृगराज शाहपर निश्चय चूकी नवाथी निशान;
हणी सिंहने राघवदेवे जल्दी बचावी शाहनी जान. ४

शाहतणा दिलमां ए समये कृतज्ञता वेगें व्यापी;
राघवने गढआगर साथे रावतणी पदवी आपी;

राजधानी स्थापीने रहीया आगरमां नृप राघवदेव;
भव्य नाथ भैरवनुं मन्दिर त्यां तैयार कर्युं तत्खेव. ५

राघवनृपना चोंडाजी ने कहॉनसिंहजी उभय कुमार;
जतां स्वर्ग राघव, चोंडाजी पाम्या आगरनो अधिकार;
अश्व काठिआवाडी उत्तम चोंडानो चेटक नामे;
मांडूपतिए माग्यो पण हय आप्यो नहि चोंडे हामे. ६

शाह चढी आव्यो आगरपर उग्र ए समे युद्ध थयुं,
हार थतां चोंडानी आगर बादशाहने हाथ गयुं;
चोंडाना सुत रामसिंहजी हता हीनबळ सैन्य विहीन,
छतां बुद्धिबळ वापरी एणे "सणखेडी" कीधुं स्वाधीन. ७

त्यारबाद व्हालेथी वसाव्युं रम्य रायपुर नामे गाम,
राजधानी स्थापी त्यां रहीया रामसिंह धीरजनां धाम;
ए पछी आत्मज महद एहना महेशदास महिप थया,
भीमसिंह भ्राता महेशना गाम रुन्डलाइए गया. ८

डावल रावल आदि गामनो वाघाजीने मळ्यो गरास,
ए सिवायना पांच बन्धुओ पाम्या बाळवयेज विनाश;
भीमसिंहना वंशज भावें "भीमावत" भूमिमां भणाय,
वाघाजीनुं कुळ "वाघावत" जाहिर झालामांहि जणाय. ९

महेशदास पछी जयसिंहजी रायपुरे रहीया राजी,
वडा पुत्र एना वीकाजी कुमार बीजा कृष्णाजी;
गुगाहेडे कॅर्या रवाना वीकाजीने समजी वीर,
बार गाम बळथी मेळवीयां एणे धारी अनुपम धीर. १०

वंशज एना थया "वीकावत" राव जेतसिंह स्वर्ग गया,
रायपुरने तख्त साजी सुख नृप कृष्णाजी विराजी रह्या;

सूजाजीआदि पट्ट पुत्रो थया एहना अमित उदार,
रह्यो रायपुरनी गादीपर पाटवी सूजानो परिवार. ११

भलुं गाम "भोरासी" पाम्या गरासमां झट झुझारखान,
खानाजीने खास गाम "भोरासा" मळीयुं भूतिनिधान;
उभय बन्धुना वंशज वळिया थाला "कृष्णावत" कहेवाय,
सूजाजी पछी रायपुरना गुणी नृप नरहरदास गणाय. १२

नरहरदासतणा विनाश पछी मानसिंह लेखो महिपाळ;
मानसिंहना मृत्यु पछी प्रिय रुपसिंहजी भूप रसाळ;
पृथीसिंह परिपूर्ण ए पछी आनंदी निर्वड्या अवनिप;
फतेसिंह कहीं फतेह करता राज्य रायपुरमां कुळदीप. १३

जोधसिंह ने देवीसिंह पछी अभेसिंह अवतारी थया;
राज्य रायपुरतणुं यथाक्रम कर्यो बाद सुरपुरे गया;
शेरसिंहनी सत्ता ए पछी रायपुरे जामी सुखरूप;
भाग्यशाळी नथुराम हाल बलवंतसिंह छे त्यांना भूप. १४

नरवरनो संक्षिप्त इतिहास.

छन्द पद्धरी.

हरपालदेवथी हर्षधारी, पेढी प्रसिद्ध सत्तर उचारी;
सुखरूप भूपति छत्रसाल, वरराजधानी मांडल विशाल. १

तनुजात आदि एना तपस्वी, नृप जेतसिंह निर्वड्या यशस्वी;
बळवान एहना बन्धु चार, एमांहि आदि राघव उदार. २

गढ विट्ठलादिनो ग्रह्यो गरास, हृदये अपार पाम्या हुलास;
सुत सूरसिंहने आपी सर्व, झट गया माळवे धारी गर्व. ३

दोहा.

मांडूनो महिपति हतो, हिम्मतों शाह हुसंग;
राघवॅ त्यां नोकर रॅह्या, उरमां धारी उमंग. ४

इष्टदेव एना हता, भयहर भैरवनाथ;
राघव मूर्ति राखता, सदा इष्टनी साथ. ५

शाहे शौर्य निहाळीने, राघवनुं दिनरात;
आगर तावे आपीयां, श्रेष्ठ परगणा सात. ६

रोळावृत.

राघवना सुत वडा, चतुर चोंडाजी विराजे;
कहॉनसिंहजी द्वितीय, शत्रुपर शस्त्रो साजे;
रामसिंह रणरागी वाल चोंडाना वळिया;
काका संगे रही, लडाई अनेक लडिया. ७

जोर उभयनुं जोइ, श्रेष्ठ मांडूना शाहे;
जूदी जूदी जबर, आपी जागीर उछाहे;
रायपुरे नृपराम, राव पदवी धरी राजे;
कहॉनसिंहजी कलित, सुखो नरवरमां साजे. ८

हिम्मतो सुत हरनाथ, कहानसिंहजीना करमी,
नरवरपुरना नाथ, धरामां उत्तम धरमी;
चोंडाजी चालाक, पछी सालम सुखदायक,
रत्नसिंह पछी आशकरण लेखाया लायक. ९

वाघकरणजी वीर, पछी भारत भयहारी,
दानी डुंगरसिंह, ए पछी नृप अवतारी;

सुखकर सांवत पछी, लेखवा लूणकरणने;
बुद्धिमान बुधसिंह, चाहता चार वरणने. १०

पहाडसिंह ए पछी, प्रकट महिपाल प्रमाणो,
छत्रसालजी शूर, यथाक्रम जनपति जाणो;
विद्रोहीथी लड्या, वीरवर वडला गामे,
विजय मेळव्या बाद, सिधाव्या सद्य स्वधामे. ११

दोहा.

ए पछी थया अनुक्रमे, हिम्मतशाळी हमीर,
पुण्यशाळी पृथ्वीसिंह पछी, पातलसिंह प्रवीर १२

विसनसिंह बहादूरने, आशकरण अभिराम;
नरवरना नरपति थया, समय पामी सुखधाम. १३

सवैया—एकत्रीशा.

शाहजहां औरंगनी संगे जंग जमावी लड्या जे वार,
आशकरण लडतां ए समये मृत्यु पामीया रणमोझार;
त्यारबाद नरवरने तख्ते थया मान महिपाल महान,
वडलाना चहुआणोए मळी तेवामां कीधुं तोफान. १४

परणीने जे दिवस पधार्या नरवरने पादर नरनाथ,
समाचार युद्धना सांभळी, हामे शस्त्र उठाव्युं हाथ;
सरदारोनी साथ वेगथी वडला तरफ प्रयाण कर्युं,
चमकावी असि मान महिपे चहुचाणोनुं मान हर्युं. १५

पोते पण वैकुंठे विचर्या घोर युद्धमां खूब चवाइ,
जनपति जसवन्तसिंहे ए पछी श्रेष्ठ गुणोथी करी सवाइ;
तेजसिंह नृप त्यारबाद, पछी महोकमसिंह प्रतापी महान,

नरवरनी निर्मळ गादीपर बेठा मुदधारी मखवान. १६

हठीसिंह ने रतनसिंह पछी थया राजराणा रघुनाथ,
नरवरमां दृढ गढ बंधावी सुखे रह्या परिवारनी साथ;
अचलसिंह ए पछी आनंदी प्रीते करता परउपकार,
ब्रिटीश राज्यने आधीन रहेवा स्नेह धरीने कर्यो स्विकार. १७

लछमनसिंह पछी लेखाया नृपति निभावण कुळनी लाज,
हिम्मतवान हमीरे धार्यो तेज भर्यो नरवरनो ताज;
क्रमे द्वितीय रघुनाथसिंहजी थया महिप महानमति,
चित्ते चाहता अतिशय एने ध्रांगधराना धरापति. १८

धर्मनिष्ठ रघुनाथसिंहजी अपुत्र विचर्या अक्षयधाम,
अनुज एहना मानसिंहजी थया सुखद नरवरना श्याम;
नीति निपुण बनी प्रजावर्गनी प्रीति एणे प्राप्त करी,
नित्य रहो नथुराम कुशळ ए धवल छत्र शिरपरेंधरी. १९

कुन्हाडी.

रोळावृत

शूर सजोजी मूळ, देलवाडाना स्वामी;
पेढी पांच ए पछी, प्रकट थइ विनाश पामी;
छट्ठी पेढीए थया, जेतसिंह नृप जश्ननामी;
अनुज एहना भीम, सर्वदा सत्पथ गामी. १

सवैया एकत्रीशा.

पलायता ठाकुर प्रतापनां पुत्रीसंग परणी प्रीते;
भीमसिंहजी प्रसंग पाम्या उदयतणो उत्तम रीते;
भहभुंज्याना मुकाम सन्मुख सुवर्णनाहरतणो शिकार;

करवा आव्या कोटाना नृप, रामसिंहजी राव उदार. २

भुजवळथी भीमे ए समये हण्यो नारने धारी हाम;

गुणज्ञ रावे कुन्हाडी आदि दीधां झालाने दशगाम;

रामसिंह महॉरात्र तरफथी, देवा दुष्टजनोने दंड;

सेनापति वनीं सद्य सिधाव्या, भीमसिंह ठोकी भुजदंड. ३

झपाझपीमां कापी कैकने, पोते पण पाम्या पंचत्व;

सुत एना श्रीस्वरूपसिंहजी, वेठा गादीपरे धरी सत्व;

जइ खास खेतून मुकामे झलराणे करी अरिने जाण;

पठाण अकबरखांनी फोजसह लडी छेवटे छांड्या प्राण. ४

छन्द हरिगीत.

रणरागी सुत रणजीत एना पाटपति प्रीतें थयां;

अरिसंग वावल्या मुकामे युद्ध करी मार्या गया;

ए वाद गादी कुन्हाडीनी मखवान अर्जुनने मळी;

गुणशाळी काळे लइ गया ए ब्रह्मरुपमहीं भळी. ५

दोहा.

पुत्र एहना गादीपति, सरुपसिंह सुखकार;

रामचन्द्र नामे थया; ए पछी राज उदार. ६

भूप भवानीसिंहजी, क्रमे थया गुणकूप;

भटवाडानी भूमिमां, पतुं शौर्य अनुप ७

संतति विण स्वर्गे गया, भोगवी विविध विलास;

पछी गुणशाळी गुलाबनी, प्रसरी परम सुवास. ८

ए पछी अर्जुसिंहजी, राखी प्रजापर रे'म;

करता राज्य कुन्हाडीनुं, पाळवी नौतम नेम. ९

सोरठा.

त्यारबाद धरी ताज, राज रूपसिंहजी थया;
साजी सदा सुखसाज, श्रेष्ठ काज करथी कर्यां १०
लाखेणी कुळ लाज, जुगतें अहर्निश जाळवी.
जशनी बनी जहाज, समये लइ स्वर्गे गया. ११

छन्द पद्धरी.

नृप विजयसिंहजी विद्यमान, शोभे महान् सद्गुणनिधान,
कोटा नरेशना प्रीतिपात्र, स्नेहेथी साचवे धर्म क्षात्र. १२
नथुराम भूप आनंदी एह, राखे सदैव शुद्धोथी स्नेह;
प्रभु कृपाथी परिवारयुक्त, आबादी पामजो राजउक्त. १३

षट्विंशत् तरंग.

मनहर.

स्थापी हळवदे राजधानी राज रायधरे;
तेना त्रण पुत्रमां अजोजी हता अग्रणी;
लघुभ्रात राणाजीने आपी राजगादी आप,
अनुज सजाजी साथ आव्या मरुभू भणी;
सुभट शिरोमणि गणीने मेदपाटेश्वरे,
जागीरे जमीन घणी सोंपी सादडी तणी,
कहे नथुराम तेना वंशजोनी वात सुणो,
धर्मी अमरेश वडा वंकपुरनाधणी.

श्री हळवदनी राजधानीनुं स्थापन करनारा राजरायधरजीना पाटवी कुमार अजोजी ज्यारे युवास्थाने प्राप्त थया त्यारे तेओने परणाववा माटे मुळीना परमार पोतानी पुत्रीने लइ हळवद आव्या, ए समये राजरायधरजी पोताना अमीर उमरावोनी हाजरीमां हसीने बोल्या के युवाननी साथे तो हरकोइ हर्षघेला बनी पोतानो पुत्रीने परणाववा तत्पर थाय छे, परंतु वृद्धनी साथे वराववा कोइपण इच्छा करता नथी; आ शब्दो समीपे उभेला कुमार अजाजीने काने पड्या, जो के ए शब्दो राजरायधरजीए मश्करी रुपे उचारेला हता, छतां पितृभक्तिपरायण अजाजीए एज वखते मुळीथी आवेला अधिकारीओने कही मोकलाव्युं के तमारा राजानी पुत्रीने हुं परणवानो नथी. परंतु ए राजकन्याने माता समान मान आपवा आतुर छुं तो तुरतमांज तेना लग्न मारा पूज्य पिता साथे करशो तो तमारी अने अमारी कीर्तिमां अवश्य उमेरो थशे. मुळीना अधिकारीओए पोतानुं मन धार्युं करवा युवराज अजाजीने अनेक प्रकारे समजाव्या, परंतु धर्मनिष्ट अजाजीनुं अडग अंतःकरण पोते ग्रहण करेली प्रतिज्ञाने व्यर्थ कराववा कोइने समर्थ सम-

जतुं न हतुं; अंते मुळीना अधिकारीओ राजरायधरजीने कन्या आपवा कबुल थया अने एज वखते तेओए युवराज अजाजी साथे एवो करार कर्यो के अमारां बाइने पेटे जो पुत्र अवतरे तो एज हळवदनी गादीना वारस थइ शके, अजाजीए घणा आनंदनी साथे ए करारने स्वीकारी पिताना लग्ननी तैयारी करी." राजरायधरजी परमारनी कन्याने परण्या, परमात्मानी गति गहन छे, स्वल्प समयमांज ए परमारी राणीने गर्भ रह्यो अने कुमारनो जन्म थयो, तेनुं नाम राणक-देवजी (राणोजी) राखवामां आव्युं. वि. स. १५१० मां राजरायधरजीए अनित्य संसारने छोडी कैलासवास कर्यो त्यारे युवराज अजाजी लघुबन्धु राणाजीना हाथमां राज्यनी लगाम सोंपी सहोदर सजाजी[1] साथे चौद हजारनुं लश्कर लइ हळवदथी हाली निकळ्या, ए वखते कोइएक कविए उदार प्रकृतिवाळा अजाजीनी प्रशंसा करता कह्युं के

सोरठा

कई बीगा धर लागे हट बन्धव लडे ।
राणा राणकने राज आयो मुरधर देश अजो ॥
चूंडे गढ चितोंड भड समपे लघु भ्रातमे ।
यूं हलवद आरोह आप हात समपे अजा ॥

आ हकीकत मारवाडना महाराजा राव जोधाजीना जाणवामां आवतां तेओए केटलाएक अमीर उमरावोने सामा मोकली पोताना साळा अजाजी तथा सजाजीने म्होटा मान सहित जोधपुर बोलाव्या अने एक उत्तम राजा तरीके तेओनी आगता स्वागता करी केटलाएक समय सुधी पोता पासे राख्या तथा आजीविका माटे पचास हजारनी आमदानीवाळो अमुक प्रदेश आप्यो. राजराणा अजाजी ए मुलकनी वृद्धि वळथी दिन प्रतिदिन उन्नति करी रह्या हता तेवामां कोइएक दिवसे तेओने राव जोधाजीए कह्युं के तमारी पुत्रीनो सबंध मारी साथे करो त्यारे अजाजीए उत्तर आप्यो के प्रथम मारां ब्हेनन आप साथे परणावेलां छे जेथी मारा पुत्रीनो सबंध आप साथे धर्मशास्त्र नियम मुजब न ज थइ शके. आथी राव जोधाजीने अत्यंत माठुं लाग्युं, परंतु तेओए प्रत्यक्षमां एवुं एक पण चिन्ह जणाव्युं नहि, तोपण महा बुद्धिशाळी राजराणा अजाजी

1 सजाजीनी संतति देलवाडा नरेश.

तेओनी आन्तरिक वृत्तिने आळखी गया अने तरतज "झालावाड" नो त्याग करी स्वकीयरिसाला सहित मेवाड तरफ जवा तत्पर थया. आ खटपटनी शरुआतना उडता समाचार कुंभलगढमां महाराणा रायमलजीने प्रथमथीज मळी चुक्या हता. ज्यारे ए वात सत्य स्वरूपे प्रसिद्धिमां आवी त्यारे महाराणाए अत्यंत त्वराथी तेओने पोताना देशमां पधरावत्रा माटे म्होटा म्होटा अधिकारीओने मोकली आप्या. राजराणा अजाजी विगेरे हजु झालामंडथी वे त्रण माइल आव्या हता, त्यांज महाराणाना माणसो तेओने आवी मळ्या अने अत्यंत आग्रह पूर्वक सर्वने कुंभलगढ तेडी गया. राजराणा अजाजीना शौर्य, धैर्य अने धर्म आदिनुं अवलंबन करनारा वाक्‌चातुर्यथी महाराणा रायमलजीनुं मन वहुज प्रसन्न थयुं, तेओए श्रीमान् अजाजीने राजदरवारमां प्रथम दरज्जानी बेठक अर्पण करी अने अजमेरनी राजधानी आपी अपूर्व हर्षथी हजुरमां राख्या. महाराणा तरफथी मळेला अतुल सत्कार वडे संतुष्ट थएला अजोजी तथा सजोजी केटलाएक वखत सुधी कुंभलगढमां रह्या अने पोताना पुत्रीने महाराणा साथे परणावी राजधानो तरफ रवाना थया वि. सं. १५६९ मां महाराणा रायमलजीनो कैलासवास थतां तेओना पुत्र सांगाजी चितोडनी राजगादीए बेठा, त्यारबाद दशेक वर्ष पछी अर्थात् वि. सं. १५७६ मां मुहम्मदशाह सानी तथा वादशाह वावर साथे भयंकर युद्धो थयां तेमां राजराणा अजाजीए एटली बधी वीरता बतावी के महाराणा सांगाजीए श्रीमुखे तेओनी सर्वोत्कृष्ट शब्दोथी स्तुति करी; ए वखतना राजाओमां देशाभिमान अने गुणग्राहकता विगेरे एवा उत्तम गुणो हता के जेना प्रावल्यथी तेओ सहजमां उन्नतिने प्राप्त करी शकता हता. महाराणा सांगाजीए घणीवार वावर वादशाहने केद करी कारागारथी मुक्त करेल हतो; ए संबंधी वर्णन करतां कोइएक कविए कहेल छे के " शाहां पकड छोडवो सांगा थारे हांसा खेल हमीर हरां " टॉट साहेब पण लखे छे के श्रीमान महाराणा सांगाजीनी साथे एंसी हजार घोडे स्वार, सात प्रथम श्रेणीना राजाओ, छ राव अने रावल तथा रावत अत्रटंकथी अलंकृत एकसो प्रतिष्ठित सरदारो तेमज पांचसो हाथी रणक्षेत्रमां हाजर रहेता हता अने आबु आदिना राजाओ निरंतर महाराणाने आधीन रहेता हता मतलब तेओने पोताना स्वामी समजता हता.

सं. १५९४ मां वावर वादशाहे पचास हजारनुं सैन्य लइ मेवाड उपर चढाइ करी, ए वखते महाराणा सांगाजी पण वे लाखनुं सैन्य लइ रणभूमिमां पधार्या अने विआना—भरतपुर तथा पीळाखाळ आदि स्थळोमां विजयवाद्य वगाडता फतेहपुर सीकरीमां यवन सेनानो सन्मुख जइ पहोंच्या, उभय सैन्यमां भयंकर युद्धनो आरंभ थयो; शरुआतमांज महाराणानो विजय दृष्टिगोचर थवा लाग्यो, आवा वारीक समयमां अत्यंत विह्वळ वनेला वादशाहे एकान्त स्थळे जइ वि-

जय अर्थे परमात्मानी प्रार्थना करी, नाना प्रकारना पुण्यदान कर्या उपरांत मद्यपानना पात्र शीखे अनाथ याचकोने आपी दीधां अने एवी प्रतिज्ञा लीधी के " आग्रानो विजय थया बाद हुं राहदारीनो कर माफ करी दइश " बाबरने गभराएल जोइ तेनी सेना पण उत्साह रहित बनी गइ. आवो सूक्ष्म समय प्राप्त थतां बाबर बादशाहे एक स्तुत्य राजनीतिनुं कार्य कर्युं अर्थात् सर्व सेनापतिओ अने सैनिकोने सन्मुख बोलावी कह्युं के मारा ब्हादुर लडवैयाओ ! आ संसारमां जे मनुष्ये जन्म धारण कर्यो छे, ते एक दिवसे अवश्य मरण पामवाना. मात्र एक इश्वरनुं आ संसारमां अचळ राज्य छे. रणांगणमां पोताना धर्मने माटे प्राणनी आहुति आपवी ए शूरवीरोने मांगलिक समय छे. आपणे इश्वरने अनंत कोटि धन्यवाद आपवा जोइए के जेणे आपणने वैधर्मीओ साथे युद्ध करी प्राण तजवानो उत्तम अवसर आप्यो छे, युद्धमां सामे पगले लडी मरवाथी स्वर्ग मळे छे अने भीरु बनी भागवाथी नर्कमां निवास करवो पडे छे. बादशाह बाबरना आवां सारगर्भितवचनो सांभळतांज सर्व सैनिको एक मत थइ बोली उठ्या के ज्यां सुधी अमारा शरीरमां प्राण अपानना संबंध छे त्यां सुधी अमो रणभूमिनो त्याग करशुं नहि. बाबर आग्रा अने शीकरीथी आगळ वधी महाराणाना सैन्य साथे युद्ध करवा लाग्यो, राजस्थानना तमाम राजाओ महाराणानी साथे मळेला हता, वीर क्षत्रीओना प्रबल महारथी पोताना सैनिकोने व्याकुळ बनेला जोइ बाबर बादशाहे महाराणा सांगाजी आगळ एक सन्धिपत्र लखी मोकल्यो, तेमां पीलाखाल अने बिआना ए बे राजधानीना मध्य प्रदेशमां सीमा नियत करवानुं लखेलुं हतुं. ए उपरांत बाबरे महाराणाने कर आपवानो पण स्वीकार कर्यो हतो. एटलुंज नहि पण ए वखते महाराणा जेम कहे तेम करी आपवा बाबर उत्सुक थइ रह्यो हतो, लडाइ चालु हती, शूरवीरो विकाळ रूपथी प्रतिपक्षीओने विदारता हता अने कोनो जय थशे के कोनो पराजय थशे एनी कल्पना करवी विश्वेश्वर विना कोइ शक्तिमान न हतुं, परंतु भावियोगे एक तुंवर जातिनो सेनापति राजद्रोही निवडतां महाराणानुं सैन्य पाछुं हठ्युं, महाराणा सांगाजी पण घणाज घायल थया, जे दिवसे बाबरे द्रढ प्रतिज्ञा करेली हती के कांतो महाराणाने मारे हाथे मारवा अने कांतो मारे एने हाथे मरवुं. ए वखते मेवाडना केटलाएक प्रतिष्ठित सरदारोए एकत्र थइ महाराणाने रणक्षेत्रथी अन्य स्थळे मोकली आपवा तथा तेओनां प्रतिनिधि तरीके सलूंवरना अधीश रावत रतनसिंहजीए शत्रु सामे युद्ध करवुं एवो निश्चय कर्यो, त्यारे राव रतनसिंहजीए कह्युं के मारा पूर्वजोए महाराणाने राज्य सिंहासन अर्पण करेल छे तेनो फरी अंगीकार हुं नहि करी शकुं, महाराणाना प्रतिनिधि बनी हस्तिपर आरूढ थनारनी सेवा बजाववी

ए ज मारुं कर्तव्य छे अने प्राण जाय तो पण आपणा सैन्यनी अंदर प्रतिपक्षीओने पेसवा नहि दउं ए मारी द्रढप्रतिज्ञा छे. आ वखते श्रीमान राजराणा अजाजी के जेओ हळवदनां सघळां राज्य-चिन्हथी सुशोभित होवा उपरांत महाराणाना तावेदार महिपतिओमां प्रथम दरज्जानुं मान भोगवता हता तेओ सलुंवर अने डुगरपुर आदिना अधीश्वरोनी अनुमतिथी मेदपाटेश्वर (मेवाडनरेश-महा-राणा) ना समस्त राज्य चिन्होने धारण करी अरिदळ सन्मुख उपस्थित थया अने महाराणाने गुप्तरीते स्वल्प सैन्य सहित मेवात देश भणी मोकलवामां आव्या. राजराणा अजाजी पोताना सें-कडो सरदारो, बीजा केटलाएक प्रतिष्ठित सरदारो अने सैन्य सहित असंख्य यवनोनो संहार करी स्वर्गमां सिधाव्या, ए युद्धमां डुंगरपुरना अधीश रावल उदयसिंहजी, सलूंवरना अधीश राव रत्न सिंहजी, मारवाडना राजकुमार राठोड रायमलजी, सोनगरा रामदासजी, पॅवार गोकळदासजी (जेनी संतति हालमां बिजोळीना राजा छे), माणकचन्दजी तथा चन्द्रभाणजी चहुआण अने ए सिवाय न्हाना न्हाना अनेक सरदारो काम आव्या; राजराणा अजाजीना कुमार सिंहजी तथा भाइ सजाजी अत्यंत घायल थया, महाराणाने मृत्युवश थएला मानी बादशाह बाबर युद्धभूमिथी पाछो फर्यो, ए समयना कविओए राजराणा अजाजीनी प्रशंसा करतां कह्युं के—

"छप्पय"

साहां सिर सांगेण, साझ चतुरंग सवाई:
एक लाख असवार पैदलां गणत न पाई.
सझउत बब्बर साह, राड सीकरी रचावे;
सुख पोढे संग्राम, जोर पतशाह जणावे;
उण वखत सलाकर उमरा, छत्रअजा शिर साजियो;
मुरातव ले गजचढ मयन्द, यूंकडतल अग्राजियो ॥ १ ॥
उत बब्बर असपती, अठीझालो अजरायल;
उडे रीठ उण वार, घणा प्रसणा कर घायल;
पडधर सहस पचास, मेछ घर पारन मंडे;
कडतलजुद्ध कठोर, वला खगझाटक खंडे;

सझ फतेराण संग्रामरी, पख अछूतो पावियो;
नव सहस सुभट लेकर नडर, सुरपुर दिसा सिधावियो ॥२॥

सोरठा.

रघू मुरातव राण, सिरधारे गजसिर चढे;
काटे खल तुरकाण, ईस फते कीधी अजा ॥ ३ ॥

मेदपाटेश्वर महाराणा सांगाजीने ज्यारे रणभूमिमांथी मेवात देश तरफ लइ जवामां आव्या त्यारे तेओए एवी प्रतिज्ञा लीधी हतो के ज्यांसुधी हुं बाबरने जीतुं नहि त्यांसुधी मेवाड देशमां पग मुकवानो नथी. परंतु ए युद्धना वर्षनी आखरे तेओ पंचत्वने प्राप्त थया.

वि. सं. १५८६ मां स्वर्गस्थ राजराणा अजाजीना कुमार राजसिंहजी उर्फे सिंहजी राज्य-सिंहासनपर आरूढ थया, ए वखते महाराणा सांगाजी विद्यमान हता, ज्यारे तेओना कुमार रतन-सिंहजीए महाराणानुं पद धारण कर्युं त्यारे तेओने खबर पडी के राजराणा अजाजी मारा पूज्य पिताना प्रतिनिधि बनी बाबर बादशाह साथे भयंकर युद्ध करी काम आव्या छे अने सजोजी तथा कुमार राजसिंहजी घायल थया छे ए रीतनी स्वामीभक्ति अने वीरताथी परिपूर्ण प्रसन्न थएला ए मेदपाटेश्वरे राजराणा राजसिंहजी साथे पोतानां फइ श्रीमती रूपकुंवरीजीनां लग्न कर्यां तथा स्वर्ग-स्थ राजराणाना स्मारक चिह्न अर्थे तेओना उत्तराधिकारीओ पासेथी तलवार बंधाइनुं द्रव्य नहि लेवानी आज्ञा आपी अने राजराणा सजाजीने एक लक्ष मुद्रानी आमदानीवाळी "देलवाडा" नो रियासत अर्पण करी. महाराणा रतनसिंहजो महान् पराक्रमी हता, राज्यासन पर आरूढ थया पछी पांच वर्षनी कारकोर्दीमां तेओए मेवाड देशनी एक वोघो जमीन पण शत्रुने हाथे जवा दीधी नहोती. वि. सं. १५५१ मां ज्यारे तेओनो स्वर्गवास थयो त्यारे तेओना न्हानाभाइ विक्रमादित्य-जी मेदपाटेश्वर बन्या. कर्नलटॉड साहेब आदि इतिहास प्रेमीओए लखेलुं छे के महाराणा विक्रमा-दित्य स्वकीय वंशनी रीतभातथी साव; अनभिज्ञ हता, तेओनो स्वभाव तथा वर्तन विगेरे उत्तम न होवाने लीधे केटलाएक वशवर्ती राजाओ पण प्रतिकूळ थइ गया हता. गुजरातना बादशाह बहादुर सुलताने मेवाड देशमां मांहोमाहे खटपट चालती जोइ चढाइ करो; ते वखते प्रतापगढना राजा सूरजमलजी तथा बूंदी, झालोर अने आबू आदिना राजाओ महाराणानी सहा-यताए आवी पहोंच्या. कर्नल टॉड साहेबना लख्या प्रमाणे प्रतिपक्षीने आधीन रहो युरोपना

गोळन्दाजोए जेमां वीरहाडो उपस्थित हता ए बुरजने अने ४५ हाथ दिवाळने उडाडी दीधी, जेथी ए हाडो पोताना पांच हजार सैनिको सहित काम आव्या; तुटेलो दिवाल पासे तुरतमांज वीर चुंडावत आवी उभा, परंतु वैरीनुं सैन्य विशेष होवाने लीधे तेओने पाछुं हठवुं पड्युं, ए वखते राठोड जातिनी जुहारबाइ नामे राजकुमारी सैन्य सहित विजयनाद करती किल्ला बाहेर निकली अने युद्ध करी रणांगणमां काम आवी; भागजीए चित्तोडना विजय अर्थे देवीने पोताना मस्तकनुं बळिदान आप्युं, अनेक शूरा क्षत्रीओ केसरीआं वस्त्र धारण करी तुटेली दिवाल पासे भयंकर कापा कापी चलावी काम आव्या, अने जे कोइ अवशेष रह्या हता ते तमाम किल्लाना कमाड खोली, शत्रुओने समशेरनो स्वाद चखाडी स्वर्गमां सिधाव्या, छेवटे राजराणा राजसिंहजी तथा देवलाना सरदार ए बेज बाकी रह्या हता, तेओ पण सामे पगले अनेक शत्रुओनो संहार करी सुरलोकमां गया. ए युद्धनी अंदर एकंदर बत्रीश हजार क्षात्र सुभटो काम आव्या हता अने तेर हजार स्त्रीओ सती थइ हती, ते वखतना कविओए राजराणा राजसिंहजीनी स्तुति करतां कह्युं छे के—

गीत.

गोरी साह रणराह आयो चत्रगढ सबल हिन्दवाण सूं करण साको;
सिंघ जससाल भड बन्ने मेवाड छल कडछियां बेहु भत्रीज काको ॥
हलेहल पेदलां जाण सामुद्र हाले चले सुरताण सूं करण चालो ।
वडा गढ उपरां होय भीडोह वढ, जुडण खग बांदियो मोड झालो ॥
रूडे गज थाट हैं हींस भीडो हडा, ढिगढिगे ढोल चित्तोड ढाणा ।
सहोदर राजरो पाटवी अजासुत, राण छल ऊठिया मरण राणा ॥
वांधियो मोड चित्तोड ऊपर बेहुं, लोहधड मेल धडकाट लडिया ।
पोढिया ढोलिया करें जकना पडी, चचो भत्रीज रथ रंभ चढिया ॥

दोहा.

सिंघ महाभड साफले, भाले कौतुक भाण ।
ऊ मांडूरो पातसा, ऊ पाटडियो राण ॥

सौरठा.

सिंघ तुहाली सीम, खल दल लोपीजे नहीं;
भारतवाला भीम, ऊभो अजमल राउउत ॥
झालो झाप भरेह, अलंगा ऊतरीयो नहीं;
सिंघ उसेला हेर, जण जण मूंढे जूझियो ॥

दोहा.

सिंघ सजो राजड अजो, वेंगड झालोवाड ।
तो ऊभा अजमाल तण, नह भांगे मेवाड ॥

आ वखते दिल्हीपति हुमायु वंगाळ देशमां हतो, ते महाराणानो पराजय सांभळी तुरत लश्कर लइ चित्तोड आव्यो, वहादुर सुलतान हुमायुनुं आगमन साभळतांज गुजरात तरफ न्हासी गयो अने हुमायुए महाराणा विक्रमादित्यने फरी चित्तोडनी गादीपर वेसाड्या.

सं. १५५१ मां श्रीमान् राजराणा सिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना कुमार आसोजी राज्यासनपर बिराजमान थया. महाराणा विक्रमादित्ये वहादुर सुलतानथी पराजय पाम्या छतां पोताना वशवर्ती राजाओ साथे पूर्वनी माफक प्रतिकूल वर्तन करवा मांडयुं, जेथी वहादुरशाहे फरी वि. सं. १५९२ मां चित्तोडपर चढाइ करी; स्वधर्माभिमानी क्षात्रवीरो, सरदारो अने राजाओ मेद-पाटेश्वरना सैन्यमां वगर बोलाव्ये सामेल थया, महाभयंकर युद्ध मच्युं, तेमां कैक सरदारो काम आव्या; राजराणा आसाजीनी अवस्था ए वखते मात्र अढार वर्षनीज हती, तोपण तेओ यवनरा-जनी साथे युद्ध करवा सज्ज थया, तेओए अतुल वाहुबळथी वहादुरशाह उपर सांग नामना शस्त्र-नो प्रहार कर्यो, ए सांग वहादुरशाहने तो न लागी, परतु करिवरना कठिन कुंभस्थलने भेदी कपोळना भागने कायाथी भिन्न करी नाख्यो; शत्रु सैन्यना कोइएक घोडेस्वारे त्वराथी त्यां आवी आशाजी उपर तीक्ष्ण तलवारनो प्रहार कर्यो, राजराणा आशाजीए एज वखते प्राणने तजी दीधा, परंतु वीरताए तेना कलेवरनो त्याग न कर्यो, तेओए मरतां मरतां पण पोताने मारनार घोडेस्वारने कठिण कृपाण वडे प्राण रहित कर्यो. ए वखते कोइएक कविए कहेल छे के—

दोहा.

पनरेंसे वहाणुवे, सुद फागण चढ शुद्ध;
चत्रकोट आसो चढे, झड पडियो भड जुद्ध ॥

सोरठा.

आसा दीनो ईस, रत जोगण खप्पर भरे;
सांग गयंदा सीस, तेंवाही सिंघा तणा ॥
निज कुळ चाढे नीर, साम धरस खांटेलको;
वर अपसर वरवीर, आसो पुहतो अमरपुर ॥

वि. सं. १५९२ मां श्रीमान् राजराणा आसाजीनो अढार वर्षनी वये स्वर्गवास थतां तेओना न्हाना भाइ सुलतानसिंहजी राज्यासनपर विराजमान थया, महाराणा विक्रमादित्यना समयमां राजराणा सुलतानसिंहजीने चितोडथी पोतानी राजधानीमां पधार्ये हजु थोडो वखत व्यतीत थयो हतो तेवामा चित्तोडथी खबर मळ्या के महाराणा सांगाजीना न्हाना भाइ पृथ्वीसिंहजीनां पासवान राणीथी उत्पन्न थएला कुमार वनवीरे महाराणा सांगाजीनो वध करी मेदपाटेश्वरनो मुकुट मस्तके धारण कर्यो छे अने कुटिल नीतिवाळो ए वनवीर उदयसिंहजीनो वध करवा उद्यत थयो छे, परंतु ए वखते उदयसिंहजी एक कैची जातिनो रजपुताणीनी निमकहलालीथी वचवा पाम्या, मतलव जे वखते वनवीरे उदयसिंहजीनो नाश करवा राजमेहेलनी अंदर पग मुक्यो, ते पहेलांज उक्त दासीए कुमार उदयसिंहजीने एक टोपलानी अंदर पर्णो वडे आच्छादित करी कोइएक वारीगरनी साथे वाहेर रवाना करी दीधा अने तेओना स्थानपर पोताना पुत्रने सुवाडयो; ज्यारे वनवीर राजभुवनमां प्रवेश करी उदयसिंहजीने माटे पूछ्युं त्यारे दासीए पोताना पुत्र तरफ इशारो कर्यो. राज्य लोभी वनवीरे दासीना पुत्रने उदयसिंहजी धारी मारी नाख्यो. दासी पोताना पुत्रने संहार करावी स्वामीना कुमार उदयसिंहजीनी रक्षा अर्थे तुरतज वाहेर निकळी. उदयसिंहजीने उठावी गएलो वारीगर चित्तोडथी आशरे बे त्रण गाउ दूर जइ उभो हतो, उक्त दासीए त्यां जइ पोता पासे लइ लीधा अने ए वारीनी सहायताथी डुंगरपुर तरफ प्रयाण कर्युं; मेवाड देशना वशवर्ती केटलाएक राजाओ पासे दासीए उदयसिंहजीना रक्षण अर्थे याचना करी, परंतु बधा वनवीरना भयथी वदली गया; एथी अधिक उदासीने वहन

करती दासीए कोमलगढना अधीश आशासा पासे जइ कह्युं के, आ कुमार तमारा मालिक मेदपाटेश्वर छे, आ वखते एना प्राणनी रक्षा करवी ए तमारुं मुख्य कर्त्तव्य छे. आमाशा दासीनो वात सांभळी भयभीत बनी उदयसिंहजीनी रक्षा माटे आनाकानी करवा लाग्या, परंतु सद्भाग्यने लीधे ए वखते आसाशाना माता सुमतिऐ सम्मति आपी के पुत्र ! स्वामीनी भक्ति करनारा शूरवीरो भय अने चिन्ताना दरियामां कदी पण डूबता नथी. आ बाळक श्रीमान् महाराणा सांगाजीना कुमार अने तमारा स्वामी छे; इश्वर इच्छा हशे तो एनुं रक्षण करवाथी सारुंज परिणाम आवशे. माताना अति आग्रहथी आसाशाए कुमार उदयसिंहजीने पोता पासे राख्या; कुमारने मृत्युना मुखथी बचावनारी वीर दासीए विचार कर्यो के जो हुं अहीं वधारे वखत रहीश तो बनवीर वखते आ स्थळनो पत्तो मेळवी आवी पहोंचशे, एम धारी ते तुरतज चित्तोड तरफ चाली निकळी. आ हकीकत ज्यारे राजराणा सुलतानसिंहजीना सांभळवामां आवी त्यारे तुरतज तेओ पोताना सैन्य साथे चित्तोड पधार्या, त्यां स्वल्प समय स्थिति कर्या बाद सलूंबर, केळवा, बागोर अने बिजौलिया आदिना सरदारो सहित कुमार उदयसिंहजीने शोधवा चित्तोडथी चाल्या, केटलाएक स्थळमां शोध करता करता कुंभलगढ (कोमलगढ) मां आवी पहोंच्या अने आसाशाना मुखथी अखिल वृत्तान्त सांभळी सर्वे सरदारोए भेट तथा न्योछावर आदिथी उदयसिंहजीने मान आप्युं ए वात ज्यारे बनवीरना जाणवामां आवी त्यारे तेणे समग्र सरदारोने दंड देवा माटे एक महान् सैन्य मोकल्युं, आ तरफ सर्व सरदारोए एकत्र थइ बनवीरनी सेनाने परास्त न करी, परंतु बनवीरनेज राज्यथी पदभ्रष्ट करी दक्षिण देश तरफ मारी भगाड्यो अने वि. सं. १५९७ मां महाराणा उदयसिंहजीने चित्तोडना राज्यासनपर बेसाडी सहु पोतपोताना राज्य भणी रवाना थया.

मेवाड देशमां श्रीमान् महाराणा सांगाजीना स्वर्गगमन पछी महाराणा विक्रमादित्यनी अनीतिनुं ए परिणाम आव्युं के चित्तोडनी राजगादीपर दासीपुत्र बनवीर बेठो अने त्रण पेढी पर्यन्त ए देशमां अप्रबन्ध रहेवाथी शूर सुभटोनी प्रकृतिमां केटलुंएक परिवर्तन थइ गयुं. महाराणा उदयसिंहजीना सबंधमां महाशय टॉडसाहेबे एटले सुधी लख्युं छे के ए राजामां राज्य चलाववा जेटला गुणो जोइए तेमांनो एक पण गुण न हतो. श्रीमान् राजराणा सुलतानसिंहजीए चित्तोडथी रवाना थइ पोतानी राजधानीमां पग मुक्यो त्यांज महाराणा उदयसिंहजीनो पत्र आव्यो के " दिल्हीपति चित्तोडना विजय माटे कटिबद्ध थएल छे अने ते स्वल्प समयमाज आवी पहोंचवा संभव छे. माटे आप सैन्य सहित सत्वर अहीं पधारो. " एज वखते राजराणाए पोतानी सेना सहित

चित्तोड तरफ प्रयाण कर्युं, सामी बाजुथी यवनेश्वर पण म्होटुं लश्कर लइ आवी पहोंच्यो. दिल्लीश्वरना आगमनथी चित्तोड छोडी अन्य स्थळे चाल्या जवानो विचार मेदपाटेश्वरना मनमां थयो; कदाच तेओए तेम कर्युं होत तो पण कांइ वांधा जेवुं न हतुं, कारण के स्वदेशनी रक्षा अर्थे अनेक क्षात्रवीरो एकठा थएला हता. यवनो साथे महा भयंकर युद्ध मच्युं, जेमां सलूंवरना राजा साइदासजी, रावत दूधाजी, बिजोलीयाधीश, श्रीमान् राजराणा सुलतानसिंहजी झाला, इश्वरदासजी राठोड, कर्मचन्द्जी कछवाहा, ग्वालिअरना राजा तुंवर अने राठोड जयमलजी (जेनो संततिमां बदनौरना राजा छे) असंख्य शत्रुओ संहार करी काम आव्या, ए रणभूमिमा वीर क्षत्रीओए आत्मभोग आप्यो एटलुंज नहि, परंतु केटलाएक इतिहासो वांचता कबुल करवुं पडे छे के ते समयनी शूरी क्षत्रियाणीओए पण स्वजाति, स्वदेश अने पोतानापतिओनी पाछळ आत्मवलिदान आपेलुं छे; ए वीरताने साधारण न समजवी, कारण के जेना श्रवणमात्रथी पंढने शौर्य चढे छे; आळसुने उद्यम, अधीरने धैर्य अने निर्बळने वळ प्राप्त थाय छे अने भीरु जनो पण हिम्मतमां आवी स्वदेशना संरक्षण अर्थे एकदम हाथमां हथियार उठावे छे. जे समये सलूंवरना राजा स्वर्लोकमां सिधाव्या त्यारे आमेटाधीश तेओना स्थानपर नियत थया, ते वखते तेनी अवस्था मात्र सोळ वर्षनी हती, तेओने सती माता तरफथी उपदेश मळ्यो के कुमार ! केसरीआं वस्त्र धारण करो अने चितोडनी रक्षा अर्थे आत्मभोग आपो. " आमेटाधीशे एज प्रमाणे करी बताव्युं. राठोड फताजीनी माताए फताजीने तेनी स्त्री सुद्धांतनो मिलाप थवा न्होतो दीधो, कारण के स्त्रीना संसर्गथी शौर्यथी घटी जाय छे, अथवा तो स्त्री युद्ध अर्थे सज्ज थएला स्वामीने हलकुं ओसाण आपी निरुत्साह करी नांखे छे. फताजीनां माताजीए तथा स्त्रीए युद्धना वस्त्र तथा शस्त्र धारण कर्यां अने दुर्गथी नीचे उतरी दुश्मनो उपर तलवारो चलावी, अंते शौर्य भरेलां सासु वहु बन्ने संग्राममां काम आव्यां, पोतानी स्त्रीओनुं शौर्य तथा साहस जोइ वीर क्षत्रीओ लांबा वखत सुधी यवनो साथे लडता रह्या, छेवटना युद्धमां समग्र सुभटोए केसरीआं परिधान पहेरी किल्लाना कमाड खोली नांख्या अने दुश्मनोना दळमां असह्य कापा कापी चलावी असंख्य यवनोनो संहार करी त्रीश हजार क्षात्र वीरो रणक्षेत्रमां काम आव्या, मेदपाटेश्वरना सत्तरसो प्रतिष्ठित सरदारो स्वर्गे सिधाव्या. अकबरे चित्तोड उपर विजयनी ध्वजा फरकावी अने मेवाड देश माथे एक अधिकारी योजी पोते दिल्ही तरफ प्रयाण कर्युं. महाराणा उदयसिंहजी चित्तोडथी निकळी पीपलिया आदि पर्वतोमां नाना प्रकारना कष्टने सहन करता ए स्थळे आव्या के जे स्थळ आ वखते मेवाड देशनुं एक मुख्य शहेर छे, मत-

लव ए स्थळे महाराणा उदयसिंहे पोताना नामथी एक नगर (उदयपुर) वसाव्युं, त्यारवाद थोडा वखते पछी ए राणा ४२ वर्षनी उम्मरे गोगूंदामां स्वर्गवासी थया.

वि० सं० १६२४ मां स्वर्गस्थ राजराणा सुलतानसिंहजीना कुमार मानसिंहजी उर्फे वेदाजी राज्यासन पर विराजमान थया, ए वखते महाराणा उदयसिंहजी विद्यमान हता. सं० १६२६ मां हैदरावाद तथा लखनऊना अधीश्वरोए मेवाड उपर चढाइ करी अने आर्यभूमिना मध्य प्रदेशनो विजय करता करता उज्जयनी सुधी आवी पहोंच्या, एवा सूक्ष्म समयमां मेदपाटेश्वरे राजराणा मानसिंहजीने पत्र लखी मोकल्यो के आपणा देश उपर हैदरावाद तथा लखनऊना राजाओ चढी आव्या छे, माटे आप मेवाडभूमिना रक्षण माटे तेओनी साथे युद्ध करवा जजो. महाराणानो पत्र मळतांज राजराणा मानसिंहजी सैन्य सहित सज्ज थइ यवनो साथे आखड्या, भयंकर युद्ध कर्युं, अवर्णनीय भुजवळथी यावनी सेनाने छिन्न भिन्न करी नांखी अने महद उत्साहथी विजयवावटो फरकावता मेदपाटेश्वरनी समीपे हाजर थया, ए वखते महाराणा उदयसिंहजीए तेओनी स्वामीभक्ति, स्वदेशभक्ति, स्वजातिभक्ति, अने अमोघ शक्ति जोइ आनंद पूर्वक प्रसन्नता प्रगट करी, त्यारवाद थोडाज वखत पछी ए मेदपाटेश्वरनो स्वर्गवास थयो. वि० सं० १६२८ मां श्रीमान् महाराणा प्रतापसिंहजी स्वर्गस्थ पिता उदयसिंहजीना अधिकार उपर नियत थया, तेओ पोताना पितामह महाराणा सांगाजीनी माफक पुरुषार्थी हता, तेओनां धैर्य अने पराक्रमथी भारतवासीओ भाग्येज अजाण्या हशे. हलदीघाटना अप्रमेय युद्धमां परम प्रतापी प्रतापराणाए शाहजादा सलीमने भयभीत वनावी भगाड्यो त्यारे तेओना शरीर पर सात प्रहार थइ चुक्या हता, रुधिरथी वस्त्रो रंगायां हतां, एवामां असंख्य शत्रुओए आवी तेओने घेरी लीधा, प्रतापे जाण्युं के हवे जीवननी आशा व्यर्थ छे, कारण के पोतानो एके सुभट पासे न हतो, तेवामां राजराणा मानसिंहजी तीक्ष्ण तलवार रुपी प्रलयना पवनथी विकट वैरीरुपी वारिधरोने विखेरता झपटथी स्वकीय सैन्य सहित त्यां आवी पहोंच्या अने प्राणनी न्योछावरना प्रत्यक्ष प्रमाणने प्रदर्शित करी मेदपाटेश्वरना प्राण वचाव्या; तेओए तुरतज महाराणाना मस्तक उपरथी मेवाडना राज्यचिह्नो उतारी पोताना शिर पर धारण कर्यां अने सुवर्णछत्रथी सुशोभित थइ रक्त वर्णनो विजयध्वज उठावी सगर्व शत्रु सैन्यमां प्रवेश कर्यो, देदीप्यमान राज्यचिह्नो देखी प्रतिपक्षीओ एओनेज राणाजी समजी मारवा माटे चारे तरफथी त्रुटी पड्या, वीरवर मानसिंहजीए पोताना प्रवल सैनिको सहित वैरीओने विह्वळ वनावी आत्मभोग आप्यो ए महाराणा प्रतापे दूरथी देखी धन्यवादनो उच्चार कर्यो. ए अपूर्व प्राणार्पणना वदलामां झालानरेश मानसिंहजीना

वंशजो अद्यापि मेवाडना राज्यचिह्नोथी अलंकृत वनी मेदपाटेश्वरनी जमणी वाजुना आसन पर वि-राजमान थाय छे. कर्नल टॉड साहेब लखे छे के राजराणा मन्नाजीना वंशजो सादडीनी राजधानी अने महाराणा प्रतापसिंहजीए आपेली अनन्य वृत्तिओनो आज सुधी उपभोग करे छे; एओनुं नगारुं राजमन्दिरनां द्वार पर्यन्त पोतानी साथे ने साथे वजतुं रहे छे, एवुं सन्मान वीजा कोइने पण प्राप्त थयुं नथी, ए उपरांत एओ " राजा " एवा नामथी पण ओळखाय छे. राजराणा मान-सिंहजीनी प्रशंसा करतां कोइएक कविए कह्युं छे के—

कवित्त.

प्रेरे पतशाहदल उमंग अशेष करि,
दीपे ध्वजदंड ब्रह्मंड अरि भल्लहां ॥
घेरि चहुं कोद आन रोकि रहे रान हूको;
मान मकवान तहा जुटो रण हल्लहां ॥
ढाहे करिगनको उडाये रथ बाजिनको,
समर विछाये कीने साह उर सल्लहां ॥
पार कर नाहको विसार जग चाहको सु
झार समसेर अग्गि मार मर्यो झल्लहां ॥

दोहा.

साम उवारे विच समर, शिर धार्यो ध्रम साम;
वेद अरु कुलधर्मकों, तें राख्यो इ तमाम ॥

सोरठा.

आगे नृप अजमाल, सरसाटे खाटे सको;
वीदा कुंवर विसाल, उत वन्दे राखी अडग ॥
तोले भुज तरवार, लार राण खल लुंविया;
वणे ढाल उणवार, वीदा खाग .वढो.

दोहा.

दुहूं तरफ तोपांदगी, बगी खाग रणवीर;
झालापर झलिया जठे, छत्र चंवर छंहगीर॥
तोप तुपक चलता तटे, हकिया अश हम गीर;
झालापर झलिया जठे, छत्र चंवर छंहगीर॥
टूटो पग चेटक तणो, साम बचाय शरीर;
राण मान शिर राखिया, छत्र चंवर छंहगीर॥

राजराणा मानसिंहजीनो प्रथम विवाह मरुधराधीश (मारवाडना राजा) रावचन्द्रसेनजीनां कुंवरी साथे तथा बीजो विवाह मैनपुरीना महारावत नारसिंहजीनां कुंवरी साथे थयो हतो.

वि. सं. १६३३ मां राजराणा मानसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना कुमार देदाजी राज्यासन पर विराज्या. जे वखते राज मानसिंहजीनो देहान्त थयो ते वखते राजकुमार देदाजी झाडोलमां हता, त्यांथी पोताना पाटवी पुत्र अमरसिंहजीने मोकली महाराणा प्रतापसिंहजीए तेओने मानपुरःसर पोता पासे बोलाव्या; पहेले दिवसे राजराणानी हवेलीए पधारी शोक प्रदर्शित करवा एक म्होटी सभा भरी अने बीजेज दिवसे पोताना राज्य महेलमां राजकुमार देदाजीने तलवार बंधावी तथा तेओना स्वर्गस्थ पितानी स्वदेशभक्ति तेमज युद्धपटुता विषे मुक्त कंठथी प्रशंसा कर्या बाद एज वखते राजराणाना उत्तराधिकारीओने निम्न लिखित प्रतिष्ठा अर्पण करी.

१. जे जे वखते राजराणाना उत्तराधिकारी राजगादीपर नियत थाय ते ते वखते तेओने ज्यां होय त्यांथी लेवाने माटे मेदपाटेश्वरना पाटवी कुमार जाय.

२. राजराणाना दुंदुभि वंशपरंपरा महाराणाना राज्यमहेलपर्यन्त वाग्या करे.

३. मेदपाटेश्वरे पोतानी पुत्रीनो विवाह राजराणा देदाजी साथे कर्यो.

४. बेसता वर्षनी सलामी वखते राजराणा गोठ आरोगीने पधारी जाय अने तेओना राजकुमार होय तो ते ते दिवसे सैन्य सहित सलामी आपवा हाजर रहे.

महाराणा प्रतापसिंहजी संकटने वखते जे जे स्थळे जता ते ते स्थळे राजराणा देदाजी साथेज रहेता; छेवटे सिन्ध देशमां वसेला मेदपाटेश्वरे मेवाडना जुना मंत्री भामाशानी मददथी युद्ध-

नी सामग्री एकठी करी फरी मेवाडमां विजय वावटो फरकाव्यो अने वि-सं. १६५३ मां संकट वेठी वेठी शिथिल थएला शरीरनो त्याग करी स्वर्गे सिधाव्या, त्यारबाद महाराजकुमार अमरसिंहजीए मेदपाटेश्वरनुं पद धारण कर्युं. राजराणा देदाजी उदयपुरथी पोतानी राजधानीमां पधार्या. स्वल्प समय सुधी मेवाडमां सुखशान्ति रही, परंतु सं. १६५६ मां पोताना पिताए वावेल वैरना वीजने अंकुरित करवा जहांगीरे मेवाड उपर चढाइ करी अने मेवाडनो विध्वंस करवानी इच्छाथी ए कुटिल नीतिवाळो यवनेश्वर दिल्हीथी प्रयाण करी आमेर तथा अजमेर आदि प्रान्तोनो विजय करतो करतो देवारी नामना द्वारमां सैन्य सहित आवी पहोंच्यो. ए समाचार महाराणा अमरसिंहजी तरफथी मळतां राजराणा देदाजी तुरतज उदयपुर पधार्या, तेओ त्या पहोंच्या वाद सलूंबराधीश आदि प्रतिष्ठित सरदारो सहित म्होटुं सैन्य लइ महाराणा अमरसिंहजी रणभूमिमा आवी उपस्थित थया. शूरवीर क्षात्र सुभटोए असाधारण पराक्रमथी यवनसेनाने छिन्नभिन्न करी जहांगीरने भगाड्यो. पराजय पामेलो जहांगीर बहुज शरमायो, तेणे पराजयथी प्राप्त थएला कलंकनुं निवारण करवा माटे ख़ुरनऊना नवावना न्हाना भाइने सैन्यनुं आधिपत्य आपी फरी मेवाड उपर चडाइ करी. आ तरफथी श्रीमान् महाराणा अमरसिंहजी पण अगणित शूरा सरदारो सहित युद्धनो विविध सामग्री एकत्र करी म्होटा दमामथी गोडवाडान्तर्गत राणपुर नामना ग्राम पासे बादशाही सेना सामे आवी पहोंच्या. केटलाएक दिवस अने रात्रि पर्यन्त भयंकर युद्ध चाल्युं, असंख्य सुभटो अने सरदारो काम आव्या. महापराक्रमी राजराणा देदाजी पण घोर रूपथी घायल थइ स्वर्गे सिधाव्या. जो के मेदपाटेश्वरना सैनिकोनो विशेष विध्वंस थयो, परंतु परिणाम ए आव्युं के जहांगीर पुनः पराजय पामी मेवाडथी पाछो फर्यो. ए युद्धनुं वर्णन करतां ए वखतना कोइएक कविए कह्युं छे के—

दोहा.

राणपुरे झगडो रचे, रविरथ खैंच रसाल;
देदा जुध जुडियो जदन, वढियो खगां विशाल ॥
शामधरम निज कुलधरम, धर उर परम सुधीर;
तूं दूदा वीदातणा, वडियो जुध वडवीर ॥

श्रीमान् राजराणा देदाजीनो प्रथम विवाह मारवाडना महाराजा सूरजसिंहजीनां कुंवरी

साथे थयो हतो, तेनाथी हरदासजी, रामसिंहजी तथा नरहरदासजी नामे त्रण कुमारो थया अने बीजो विवाह महाराणा प्रतापसिंहजीनां कुंवरी साथे थयो हतो, तेनाथी श्यामसिंहजी तथा रतनसिंहजी नामे बे कुमारो थया. वि–सं. १६६६ मां राजराणा देदाजीनो स्वर्गवास थवाथी खरी रीते पाटवी कुमार हरदासजीने राजगादीना हक्दार गणी शकाय, परंतु तेओना लघुबन्धु श्यामसिंहजी मेदपाटेश्वरना भाणेज होवाथी मेदपाटेश्वरे पोताना भाणेजने राज्यासनपर बेसाडवानी इच्छा प्रगट करी अने पोताना कथननो पुष्टि करवा एवी आज्ञा आपी के कदाच आमेर अने मारवाडना भाणेजो उदयपुरना भाणेज करता म्होटा होय तोपण उदयपुरना भाणेजनेज म्होटा मानवामा आवशे परंतु राजधानीना कार्यभारी, अधिकारी तथा सरदारोए मेदपाटेश्वरनी ए आज्ञानो अस्वीकार करी विनंति करीके राजकुमार हरदासजी सत्य रीते राज्यगादीना हक्दार छे, तोपण मेदपाटेश्वर तेओना कथन उपर कांइ पण लक्ष नहि आपतां पोताना वचननेज वळगी रह्या अने उक्त दुराग्रहने लीधे एक वर्ष पर्यन्त राजराणानुं सिंहासन शून्य रह्युं.

सं. १६६६ मां दिल्हीपति जहांगीरना शाहजादा परवीजे मेवाड देश उपर चढाइ करी ते बाबतनी राजकुमार हरदासजीने मेदपाटेश्वर तरफथी मात्र सूचना करवामां आवी हती, तेना सामे उपस्थित थवानी आज्ञा न्होती आवी, तोपण वीरवर हरदासजी एज वखते बादशाही सैन्य साथे युद्ध करवा चाली निकळ्या, हजु महाराणानुं सैन्य आव्युं नहतुं ते पहेलां तो हरदासजीए भयंकर युद्ध करी यवनसेनाने पाछी हठाडी अने परवीज पराजय पामी दिल्ही तरफ जतो रह्यो. ए समाचार ज्यारे महाराणा अमरसिंहजीने मळ्या त्यारे तेओए अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक राजकुमार हरदासजीने “ झाडोल ” उपरांत “ कानोड ” नी रिसायत अर्पण करी अने आम दरबारमा तेओनी स्वामीभक्ति तथा वीरता विषे मुक्त कंठे प्रशंसा करी. राजराणा हरदासजीए पण मेदपाटेश्वरनी आन्तरिक इच्छाने जाणीने तेमज भ्रातृभावना वात्सल्यने लीधे पोताना लघु बन्धु श्यामसिंहजीने “ झाडोल ” नी रिसायत आपी के जे हाल पण मेवाडनी बत्रीश रिसायतोमानी एक प्रतिष्ठित रिसायत छे.

ज्यारे महाराणा अमरसिंहजीए मेवाड उपर चढाइ करी आवेला शाहजादा खुर्रम पासे माफी मागी त्यारे सन्धि करावावामां राजराणा हरदासजी सामेल हता, पाछळथी तेओ दिल्ही पधारेला, फरी दिल्हीथी ज्यारे उदेपुर आव्या त्यारे कोइपण गुप्त कारणथी मेदपाटेश्वर तेओना उपर अप्रसन्न थया. मेदपाटेश्वरनी अप्रसन्नता जाणी राजराणा हरदासजी उदयपुरथी रवाना थइ

कानोड पधार्या, तेओना पाटवीपुत्र राजसिंहजीनां लग्न महाराणा अमरसिंहजीनां कुंवरी वेरे थएल हतां. एटलाज माटे ए कुमारने राजराणा साथे जवा मेदपाटेश्वरे आज्ञा न आपी. राजराणा हरदासजी स्वल्प समय कानोडमां रही दिल्ही पधार्या, ए समाचार सांभळी महाराणा वधारे अ-प्रसन्न थया, एटलुंज नहीं पण राजकुमार रायसिंहजीने कानोडनी गादीए वेसाडवा उद्यत थया, परंतु धर्मज्ञ राजकुमार रायसिंहजीए तेओने सविनय प्रार्थना करी के मारा पिता कानोड राज्यना अधीश्वर छे. तेओनी हयातीमां हुं राज्यासनपर पाय धरुं ए धर्म अने नीतिथी विरुद्धज गणाय. जो आप मारा उपर प्रसन्न थया हो तो आप मने बीजी रिसायत आपी शकवा समर्थ छो. राजसिंहजीनां आवां वचनो सांभळी महाराणाए तेओने हाथखरची माटे वार्षिक रु. ५००००) पचास हजार आपवा हुकम फरमाव्यो. वि. सं १६७८ मां दिल्हीनी अंदर राज-द्रोह शरु थयो. म्होटी खटपट जागी, खटपटी मंडलना अग्रणीनुं पद शाहजादा शाह-जहांए स्वीकार्युं हतुं, जहांगीरे तेने पकडवा माटे एक म्होटी फोज तैयार करेली, परंतु ते वखते शाहजहां दिल्हीथी भागी उदयपुरमां महाराणा अमरसिंहजीने आश्रये आवी रह्यो. राजराणा हर-दासजी दिल्ही पहोंच्या वाद वादशाहना समीपवर्ती सभासदोनी माफक रहेवा लाग्या. दुष्ट राज-द्रोहीओए वे वखत वादशाहनो वध करवा उद्यम कर्यो, परंतु ए वेय वखते राजराणा हरदासजीए अपूर्व वहादुरीथी यवनेश्वरना प्राण वचाव्या. वादशाह श्रीमान् हरदासजीनी उक्त राज्यभक्तिथी अत्यंत प्रसन्न थया अने तेओनी साथे पाघडी वदल भ्रातृभाव बांध्यो तेमज निम्न लिखित प्रतिष्ठा अर्पण करी. प्रथम तो ए के वादशाही दरवारमा प्रथम दरज्जानी बेठक, बीजुं समग्र भारतवर्षमां पडिआल वजाववानी आज्ञा, त्रीजुं अरुण वर्णना शिरोभागवाळो वादशाही तंबू अने चोथुं हमेशां स्वारीने माटे इन्द्रवाहन तथा ए उपरांत एक मणिजडेल तलवार अने बीजी केटलीएक किम्मती चीजो आपी, तेमज स्वकीय दरवारमां सघळा छडीदारोने हुकम आप्यो के अमारा दर-वारमां भाइ हरदासजीनो इच्छा थाय त्यारे आववा देवा, कदीपण अटकायत करवी नहि. थोडो वखत वीत्या वाद दिल्हीश्वरे राजराणा हरदासजीने कह्युं के ज्यारे महाराणा आप उपर अति प्रसन्न थाय त्यारे शुं आपे ? हरदासजी बोल्या के पोताने जमवानी थाळीमांथी एक दूनो. त्यारे वादशाहे कह्युं के अमो पण आवती काले आपने दूनो आपीशुं. जो के राजराणा हरदासजी नीति अने भविष्यने जाणी शके तेवा हता, तो पण यवनेश्वरनी ए आज्ञा सांभळी अत्यंत चिन्तातुर थया, पोते एवो निश्चय करी लीधो के वादशाह मने पोतानो उच्छिष्ट भोजननो दूनो आपशे अने

यवननुं एठुं खावुं ए तो महान् अधर्म गणाय. कदाच बादशाह अजीठुं भोजन आरोगाववा हठ करे तो तेओनी साथे युद्ध करी स्वधर्मनो रक्षा करवानो दृढ संकल्प कर्यो अने बीजे दिवसे दरबार टाणे सैन्यने युद्धनी सामग्रीथी सज्ज करी पोते बादशाह पासे पधार्या; परंतु बादशाहनी कांइ एवी इच्छा न हती, तेणे तो एक कुलीन ब्राह्मणना हाथथी मिठाइ मंगावी तथा वीश लाख रुपिआनी आमदानीवाळा मन्दसोर राज्यनो पट्टो लखीने बन्ने चीज एक दूनामां राखी राजराणा हरदासजीने आपी, श्रीमान् हरदासजीए तेनो सविनय स्वीकार कर्यो अने बादशाहनी आन्तरिक प्रीति तथा उदारतानी प्रशंसा करी, ते समयना कोइएक कविए कहेल छे के—

"छप्पय"

भगवागल रणजीत, हौदाजुत दुरद वडाला;
रण बाजो समशेर, घण्ट बाजत घडियाला;
बले इन्द्र विवाण, अगन रूडा ऐराकी;
दीधी पटे दसोर, और बैठकां सरांकीं;
कढत साक्षात चघता तिलक, दे ड्योढी अप्पल दुवा;
हरिदासराण जहंगीरशाह, पाग बदल बंधव हुवा.

ए रीते दीर्घकाल पर्यन्त पूर्ण योग्यता अने मानपूर्वक राजराणा हरदासजी बादशाह जहांगीरनी पासे रह्या. ज्यारथी मेदपाटेश्वरे राजद्रोही शाहजादा खुरमने आश्रय आप्यो त्यारथी बादशाह तेओना उपर अप्रसन्न हता, एनुं परिणाम ए आव्युं के दिल्हीश्वरे मेवाड उपर चढाइ करवा सेनाने आज्ञा आपी. ए खबर सांभळी राजराणा हरिदासजीए मेवाड तरफ जवा यवनेश्वर आगळ रजा मागी, परंतु जहांगीरे जवाब आप्यो के आ वखते आपने मेवाड जवा माटे रजा मळशे नहि, त्यारे फरी हरिदासजीए विनति करी के आ वखते महाराणा उपर आपत्ति छे, एओनी सेवा बजाववी ए मारुं मुख्य कर्तव्य छे. जो हुं आवे समये एनी सेवामां हाजर न थाउं तो स्वज्ञातिमां तथा महान् पुरुषोमां मारी निन्दा थाय अने राज्यभक्तिमां पण खामी जणाय. आटलुं आटलुं कह्या छतां जहांगीरे त्या जवानी चोखी ना कही त्यारे श्रीमान् राजराणा वीशलाखनी आमदानीवाळो मन्दसोरनी राजधानीनो पट्टो बादशाहने पाछो आपी मेवाडमां आववा उद्यत थया, एओनी राज्यभक्ति संबंधी यवनेश्वरे मुक्तकंठे प्रशंसा करी अने कह्युं के आप निःसंदेह बनी स्वदेशमां गमन करो,

परंतु आपना परिवारमांथी कोइएकने अमारी पासे राखी जाओ, बादशाहनी आवी आज्ञा थतां राजराणा हरिदासजी पोताना न्हाना भाइ नरहरदासजीने तेओ पासे राखी मेवाड तरफ पधार्या. बादशाही फोज दिल्हीथी रवाना थइ मेवाड मध्ये हरडे नामना ग्रामना आवी हती त्यां राजराणा हरदासजी पण अत्यंत उतावळथी आवी पहोंच्या. मेदपाटेश्वरे मोकलेलुं सैन्य हजु चाल्युं आवतुं हतुं, ते पहेला तो स्वामीभक्त हरदासजी बादशाही सेना साथ भयंकर युद्ध करी घोररुपे घायल थया हता. महाराणानी सेना आवी पहोंचतां फरी युद्ध शरु थयुं अने तेमा यवनसेना पराजय पामी. राजस्थानना इतिहासमां लखेलुं छे के " ज्यारे राज्यभक्ति तथा वीरताना मात्रत्ववडे राजराणा हरिदासजी घायल थयानी मेदपाटेश्वरने सूचना मळी त्यारे पोते रणक्षेत्रमां पधार्या अने तेओनां दर्शन थतांज श्रीमान हरदासजी स्वर्गमा सिधावी गया. महाराणाने एवा वीरनरना स्वर्गगमनथी अत्यंत शोक थयो. कोइएक कविए राजराणा हरदासजीनो प्रशंसा करतां कह्युं छे के-

" छप्पय "

बदल खुर्रम साहसूं, राणरे शरण हु आये;
करी रीस पतसाह, फोज भेजण फरमाये;
सुणे हुकम हरिदास, सामध्रम आद संभारे;
पटो नजरकर प्रथम, फेर मुख वचन उचारे;
करसीख जाय दिवाणको, हुकम सीसपर धारहूं
करआय फोज हंता कलह, पल जस बोल उवारहूं ॥
सीख नही पतशाह, अनुज हरिदास रखेउत;
दसहजार ले दुट्ट, थान अजमेर आये थित;
शाह चमूंपर सुपॅट्ट, विडंग हांकले महावत;
जत्रकत्र कॅरीज दीन, वगहु तोलकि पेखलत;
कर फते राण करणेसरी, काट कलम सरहर करे;
उजाले लूण दूजो अजो, अलजस हाका ऊबरे ॥

कानोडनां प्रसिद्ध स्थलो जोतां खात्री थाय छे के ए जगोए केटलाएक काळपर्यन्त झाला-

वंशे राज्य कर्युं हतुं. जेनुं नाम पूर्वे हरमन्दिर अने हालमां गोपालमंदिर छे ते तथा रामपुरा ग्राममां पूर्वे बनावेलुं मातानुं मन्दिर ए बन्ने कानोडना प्राचीन राज्यकर्ता वीरनरेश झालाओनां प्रत्यक्ष स्मारक चिन्ह छे. राजराणा हरदासजीनां लग्न भींडर, देवगढ, कोठारिया, कोटा अने बनेडाना अधीशोनी पुत्रीओ साथे थयां हतां.

वि. स. १६७९ मां श्रीमान् राजराणा हरदासजीनो स्वर्गवास थतां राजकुमार रायसिंहजीए राजराणानुं पद धारण कर्युं. महाराणा कर्णसिंहजीए तेओने उदयपुर बोलावी तलवार बंधावी अने झालावंशे बजावेली राज्यभक्तिनी घणीज प्रशंसा करी एक लक्षनी आमदानीवाळुं बडी सादडीनुं राज्य समर्पण कर्युं, ते उपरांत तेओना पूर्वजोए प्राप्त करेल तथा स्वर्गस्थ राजराणा हरदासजीए बादशाह पासेथी मेळवेल मान, प्रतिष्ठा अने राजचिन्ह विगेरे वंशपरंपरा भोगववानी आज्ञा आपी. राजराणा रायसिंहजी पोताना पिता तेमज पितामहनी माफक महान् पराक्रमी अने तेजस्वी हता. पूर्वे राजराणा हरदासजी ज्यारे मेदपाटेश्वर तरफथी राजमंत्री बनी बादशाह जहांगीर पासे रह्या हता, ए अरसामां जहांगीरे राजकुमार रायसिंहजीने मळवानी उत्सुकता बतावी हती, राजराणा हरदासजीए कह्युं के ए कुमारनी प्रकृति सहनशील नथी, कदाच हुं एओने अहीं बोलावुं तो आप अप्रसन्न तो नहि थाओ ? जहांगीरे जवाब आप्यो के आप निःसंदेह रहो, अमो कुमारनी प्रकृति तथा दोषो उपर ध्यान देशुं नहि. बादशाहनुं आवुं फरमान थतां राजराणा हरदासजीए मेदपाटेश्वरनी सेवामां एक विनयपत्र लख्यो, एनो आशय ए हतो के " दिल्हीश्वरना अंतःकरणमां कुमार रायसिंहजीने जोवानी घणीज इच्छा छे तो आप तेने अनुग्रहपूर्वक दिल्ही आववा माटे आज्ञा आपशो." हरदासजीनो पत्र वांची महाराणाए रायसिंहजीने दिल्ही जवानी परवानगी आपी. रायसिंहजीए दिल्ही आवी नूरजहां वाटिकामां निवास कर्यो त्यां वाटिकाना रक्षके पोतानी आज्ञानुं यत्किंचित् उल्लंघन करवाथी तेने मारी नंखाव्यो, त्यारबाद तेओ वाटिकाथी प्रयाण करी पोताना पूज्य पिताश्रीना निवासस्थाने पधार्या. राजराणा हरदासजी कुमारना आगमनथी अत्यंत प्रसन्न थया. बीजेज दिवसे कुमार रायसिंहजी बादशाह जहांगीरनी मुलाकाते पधार्या, तेओनुं राजदरबारमां पहेल वहेलुंज पधारवानुं होवाथी छडीदारे कह्युं के आपने बादशाहना फरमान सिवाय राजदरबारमां दाखल थवा देवामां आवशे नहि, छडीदार आम बोलतो हतो एटलामांतो राजकुमार रायसिंहजीए तेने एक एवी थप्पड मारी के ए थप्पड लागतांज छडीदार यमपुरीमां सिधावो गयो. ए वखते कोइएक कविए कह्युं छे के—

"दोहा"

कुण झाला सम वड करे, वीरमरंद अणवार;
हाथल राया सिंगरी, दिल्ही तणे दरबार ॥
कटारी अमरेशरी, इन्दारी तलवार;
हाथल रायासिंगरी दिल्हीतणे दरबार ॥
तें वाहीं हरदासतण, आम खास बिचआय;
हादल राया सिंगरी, सारी जगत सराय ॥

रायसिंहजीनी आवी रौद्रमयी प्रकृतिनुं श्रवण करी लेशपण माठुं न लगाडतां यवनेश्वरे तेओने एकमास पर्यन्त पोता पासे राख्या अने मान तथा प्रतिष्ठापूर्वक केटलांएक वस्त्राभरण आप्यां. रायसिंहजीए अरज करी बादशाह जहांगीर पासेथी त्रण लक्षनी आमदानीवाळो मेवाडनो जे प्रदेश अजमेरना सुबाए दबाव्यो हतो ए पाछो मेदपाटेश्वरने मळे एवो पत्र सुबा उपर लखावी लाव्या. सं. १६७८ ना कोइएक मासमां महाराणाने "केसरी सिंहनो शिकार अमुक स्थळे छे" एवा समाचार मळ्या, एज वखते एओ,पोताना अखिल उमरावोने एकत्र करी शिकारे पधार्या. कुमार रायसिंहजीना सेवक पासे एक क्वादा नामनुं शस्त्र हतुं तेने जोइ कोठारीयानरेशे हसीने मेदपाटेश्वर पासे प्रार्थना करी के रायसिंहजी आ क्वादाथी सिंहनो संहार करशे; महाराणाए गंभीरता पूर्वक जवाब आप्यो के एमां नवाइ शी ? क्षत्रीओ सर्व कांइ करवा समर्थ छे, तेओ क्वादाथी सिंहनो वध करे एमां आश्चर्य पामवा जेवुं नथी." ज्यारे महाराणा सामान्य वनमांथी महावनमां पधार्या त्यारे जंगली जनोए सिंहने जागृत करवा माटे उन्नत अवाजे होकारो कर्यो एज वखते एक पंचानन राजकुमार रायसिंहजी पासे थइ निकळ्यो, तेओए असाधारण पराक्रमथी ए सिंह उपर क्वादानो प्रहार कर्यो, एकज प्रहारथी श्वास रहित बनेलो सिंह पंचत्वने प्राप्त थयो, ए जोइ मेदपाटेश्वर रायसिंहजी उपर अत्यन्त प्रसन्न थया अने प्रतिष्ठित सरदारो समक्ष तेओए राजराणा अजाजीथी आरंभी रायसिंहजी पर्यंत झालाओना असाधारण शौर्य संबंधी संक्षिप्त वृत्तांत कही संभळाव्युं अने एज समये कुमार रायसिंहजीने वंशपरंपरा निम्नलिखित प्रतिष्ठा अर्पण करी.

१ वडी सादडीना कुमार जे वखते राजदरबारमां आवशे त्यारे तेओने सोळ उमरावोनी समान बेठक मळशे.

२ राजराणानो मुजरो नकीबद्वारा थतो रहेशे.

३ राजदरबारथी विदाय थती वखते सोळ उमरावोनी माफक राजराणाने पण बीडु आपवामां आवशे, अने अन्तिम विदायगीरी वखते सादडीना कुमारने पण सोळ उमरावोनी पेठे शिरपाव देवामां आवशे.

४ अमरबेहडा अर्थात् हमेशांने माटे राजराणाने अश्व आपवामां आवशे.

राजराणा रायसिंहजीए राजगादी पर विराजमान थया पछी विशुद्ध राज्यभक्तिवडे महाराणाने राजी राख्या अने तेओना प्रतिनिधि तरीके दीर्घ काळ पर्यन्त पोते दिल्ही दरबारमा रह्या. वि० सं० १६८३ मा बादशाह जहांगीर बेहेस्तनशीन थतां शाहजादा खुर्रम उर्फे शाहजहाए दिल्हीना तख्तपर पाय धारण कर्यो; ज्यारे खुर्रम पोताना पितानी इतराजी पामी महाराणाने आश्रये आवी रह्या हता त्यारेज तेओए वीरता अने पराक्रम आदि सद्गुणोथी सुशोभित श्रीमान् रायसिंहजीने पोताना प्रिय मित्र बनाव्या हता. मस्तक पर बादशाही मुकुट धारण कर्या पछी ए मित्रने प्रतिष्ठापूर्वक म्होटा मान सहित स्वराज्यना मुख्य सभासदोमा नियत कर्या. राजराणा रायसिंहजीए पण राजसभामां सर्वोत्कृष्ट कार्यो करी शाहजहाने अपूर्व संतोष आप्यो, एनुं परिणाम ए आव्युं के जहांगीर अने हरदासजी माफक शाहजहां तथा रायसिंहजी पाघडीबदल भाइ थया; श्रीमान् रायसिंहजीए शाह खुर्रम पासे दश मास पर्यन्त रह्याबाद सादडी जवा माटे आज्ञा मागी त्यारे शाहजहांए तेओने केटलांएक किम्मती वस्त्र, तथा अलंकारो आपी प्रसन्नतापूर्वक विदाय कर्या, अने पोते कह्युं के हुं आपने मळवा माटे सादडी आवीश. मित्र शाहजहाना अपूर्व स्नेहथी आनंद पामेला राजराणा रायसिंहजी सादडीमां पधार्या अने आवनार अतिथिना आतिथ्य माटे नाना प्रकारनी अनेक सामग्रीओ एकत्र करावी वि० सं० १६८४ मां बादशाह खुर्रमनी स्वारी सादडीमां पधारी त्यारे राजराणा रायसिंहजीए तेओनुं उत्तमोत्तम आतिथ्य कर्युं, स्वागत अने मिजमानीना सर्वोत्कृष्ट प्रबन्धथी प्रसन्न थएला खुर्रमे तेओने वंशपरंपरा बादशाही दरवाजो तथा बादशाही निशान उपरांत राज्यमहेल माथे सदाने माटे सुवर्ण कलश मुकवानो हक आप्यो. शाहजहां थोडो वखत सादडीमां रही उदयपुर गया अने त्यां पण वधारे वखत नहि रोकातां दिल्ही भणी रवाना थया.

वि. सं. १६८४ मां राजराणा रायसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना कुमार सुलतानसिंहजी बीजा राजगादीए बेठा, ए पण पोताना पिता तथा पितामहनी माफक असाधारण वीर, तेजस्वी अने युद्धकुशळ हता, तेओ राज्यासनपर बिराजमान थया त्यारे मेवाड देशमां सर्व प्रकारे सुखशान्ति हती; ज्यारथी शाहजहांए दिल्हीश्वरनुं पद धारण कर्युं त्यारथी मेदपाटेश्वरना अधिकारमां कांइपण खलेल पहोंचाडवामां आव्युं न हतु. महाराणा कर्णसिंहजी पछी जगत्‌सिंहजी मेदपाटेश्वर बन्या. वि. स. १७१० मां महाराणा जगत्‌सिंहजीनो कैलासवास थतां तेओना कुमार राजसिंहजी मेवाडना महिपति बन्या, ए वखते राजराणा सुलतानसिंहजीए पूर्वजोना पराक्रमोनुं स्मरण करी बादशाही सीमामां आवेलुं मालपुरा नामनु गाम लुंट्युं. ए समाचार दिल्हीना सभासदोए शाहजहांने आपीने मेदपाटेश्वरने एओनी उद्धताइनो बदलो देवा अरज करी, त्यारे शाहजहाए मात्र एटलुंज कह्यु के—काइ नहि, हशे ए तो मारा भत्रीजानी मूर्खता छे. त्यारबाद जे समये औरंगजेबे पोतानी कुटिल नीतिना प्रभावथी शाहजहांने केदमां नांख्या त्यारे शाहजहांए मेदपाटेश्वरनी मदद मागी. महाराणा प्रतापसिंहजीना वखतनी वीरताए फरी जन्म लीधो, महाराणा राजसिंहजीए शाहजहाना पक्षमां रही औरंगजेब साथे घणा भयंकर युद्धो कर्यां. मुगल मात्र औरंगजेब तरफ हता. रूपनगढाधीशनी पुत्री साथे बळात्कारे परणवानो संकल्प करी तेने उपाडी लाववा माटे बे हजार घोडेस्वारो मोकल्या, ए खबर महाराजा राजसिंहजीने मळतां तेओ तुरत देश तथा धर्मनी रक्षा करवा तत्पर थया अने शुभ मुहूर्त जोइ चुनंदा वीरोने साथे लइ अर्वली पर्वत परथी उतरी रूपनगढमां पहोंच्या. त्यां यवनसेना साथे युद्ध करी विजय मेळव्यो अने राजकुमारीने पोतानी राजधानीमा लइ आव्या. श्रीमान् राजराणा सुलतानसिंहजी मालपुरा तथा रूपनगढना विजय पछी सादडी पधार्या, पाछळथी पोताना सैन्यनो पराजय सांभळी क्रोधाग्निथी प्रज्वलित थएलो औरंगजेब म्होटी फोज लइ मेवाड उपर चढी आव्यो; महाराणा राजसिंहजीए पत्रद्वाराए दधा खबर आपी राजराणा सुलतानसिंहजीने बहुज शीघ्रताथी उदयपुर बोलाव्या; एज वखते सुलतानसिंहजी मेदपाटेश्वरनी सेवामां जइ पहोंच्या. सज्ज थएला क्षात्रवीरोए धर्मना रक्षण माटे रणयज्ञमां प्राणनी आहुति आपवानो दृढ संकल्प कर्यो. भयंकर कापाकापी चाली, असंख्य योद्धाओ कपाइ मुवा, यवनोनो पराजय कर्यो, औरंगजेब भागी छुट्यो, ए युद्धमां सुलतानसिंहजीए अनेक यवनोनो अंत करी मेदपाटेश्वरना सैन्य नायकनुं पद शोभाव्युं अने छेवटे प्रचंड प्रहारोथी छेदाएल शरीरनो परित्याग करी समरांगणमां स्वर्गवास कर्यो.

वि. स. १७३७ मां राजराणा सुलतानसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना कुमार चन्द्रसेनजी राज्यासनपर विराजमान थया. मेदपाटेश्वरना कुमार जयसिंहजी तेओने उदयपुरमां लाववा माटे सादडी पधार्या हता; महाराणा राजसिंहजीए राजराणानी हवेलीए पधारी प्रथम शोकप्रदर्शिणी सभा भरी अने पछीथी चन्द्रसेनजीने प्राचीन रीति प्रमाणे तलवार बंधावी; त्यारबाद थोडेज वखते मेदपाटेश्वर तरफथी आज्ञा मळी के मांडलपुरतरफ यवनेश्वरनी सेना अनेक प्रकारना उपद्रवो करी रही छे माटे आप एओना विजय अर्थे पधारो. स्वामीना फरमानथी राजराणा चन्द्रसेनजी स्वकीय सैन्य सहित सज्ज थया. हवे एवुं बन्युं के देवारीथी पराजय पामेली बादशाही फोजे चित्तोडना किल्लापरथी नीचे उतरी पडाव नांख्यो, ए स्थळे यवनेश्वरे पोताना पुत्र मोअज्जमने लख्युं के " तमो शीवाजी साथे लडवुं छोडी जल्दी अहीं आवो. " बदनोरना अधीश रावत सांवलदासजीए चित्तोड अने अजमेरना मध्य मार्गने रोकी दीधो. क्षात्र दलनुं बळ असह्य जाणी औरंगजेब अजमेर तरफ चाल्यो गयो. एणे चालती वखते आजम तथा अकबरने आज्ञा करी के आपणी बीजी फोज आवे त्यांसुधी युद्धनो आरंभ करशो नहि. औरंगजेबे अजमेर पहोच्या बाद रावत सांवलदासजीने हरावबा माटे बार हजारनी फोज तेमज अपरिमित युद्ध सामग्री एकत्र करी पोताना पुत्रो पासे मोकली. राजराणा चन्द्रसेनजी तथा गोपीनाथजी राठोडे मांडलपुर नामना स्थल उपर बादशाही सैन्य साथे मुकाबलो कर्यो, महा भयंकर युद्ध मच्युं. क्षात्र सुभटोए प्रचंड भुजदंडथी करेला तीक्ष्ण असिना असह्य प्रहार बडे पराजय पामेली यवन सेना अजमेर तरफ पलायन करी गइ; विजयना समाचार सांभळी मेदपाटेश्वरना मनमां अवर्णनीय आनंद थयो. कर्नल टॉडसाहेबे लख्युं छे के " क्षात्रवीरो पोतानी प्रकृतिथी प्रतिकूल थइ औरंगजेबना अत्याचारोनो बदलो लेवा कटिबद्ध थया, परम पराक्रमी दयालशाह नामना मंत्रीए उदयपुरथी प्रयाण करी मालवा तथा नर्मदा किनारे रहेला प्रान्त सारंगपुर, देवास, सरोंज, उज्जेण अने चंदेरी आदि प्रसिद्ध स्थानोने लुंटी केटलाएक किल्लाओ कबजे कर्या. " अन्य इतिहासप्रेमीओ उक्त वृत्तांतनुं एवी रीते प्रतिपादन करे छे के गृहस्थ लोको पोतपोताना घरनो परित्याग करी मात्र प्राण लइ वनमां चाल्या गया. ए चढाइमां औरंगजेबनी माफक क्षत्रीओए पण यवनना धर्म उपर आक्रमण कर्युं, काजीओने पकडी पकडी दाढी मूछ विगेरे मुंडाववां मांड्यां, कुरानोने कुवामां फेंकी दीधां अने अगणित पैसा तेमज वस्त्राभरण मालवामांथी लुंटी लीधा. उक्त विजयथी उत्साहमां आवेला दयालशाहे चित्तोडनी समीपे मेदपाटेश्वरना राजकुमार जयसिंहजीनी मुलाकात

लीधी, जयसिंहजीए वानसीना अधीश गंगासिंहजी, सलूंवरना अधीश रतनसिंहजी, सादडीनरेश राजराणा चन्द्रसिंहजी, वेदलाना अधीश चौहाण सबलसिंहजी अने विजौलीना अधीश पंवार वेरीसालजी विगेरे प्रतिष्ठित सरदारो तथा मंत्री दयालशाहनी सहायताथी औरंगजेबना पुत्र आजम साथे अवर्णनीय युद्ध कर्युं; आजम पराजय पामी रणतभँवर नामने स्थळे भागी गयो. राजराणा चन्द्रसिंहजीए बहुज बहादुरी बतावी, महाराणाना कुमार जयसिंहजीए तेओनी मुक्तकंठे प्रशंसा करी. आ सिवाय मेदपाटेश्वरे अत्याचारी अने अन्यायी औरंगजेब साथे घणा युद्धो कर्यां हतां, दरेक युद्धमां राजराणा चन्द्रसेनजी हाजर हता अने तमाम वखते मेदपाटेश्वरने विजय मळ्यो हतो. वि–सं. १६३७ मां महाराणा राजसिंहजीनो स्वर्गवास थतां राजकुमार जयसिंहजीए मेदपाटेश्वरनुं पद धारण कर्युं. तेओना वखतमां सिरोहीनरेश महाराव जयसिंहजी राजविद्रोह करी मेवाडथी जुदा पड्या, ए पराजय आपवा माटे मेदपाटेश्वरे राजराणा चन्द्रसेनजीने अन्य उमरावो साथे सिरोहीपर चढाइ करवानुं लख्युं. ए वखते सादडीमां राजकुमार सिंहजीनां लग्न थवानां हतां. ज्यारे ए राजकुमार महाराणानी पासे पधार्या त्यारे महाराणाए प्रथमतो तेओना अजाजी,मानसिंहजी तथा हरदासजी विगेरे पूर्वजोनी राज्यभक्ति विषे प्रशंसा करी अने पछी कह्युं के "सांप्रत समये सिरोहीनरेश अमाराथी प्रतिकूल वर्ते छे,तेओने परास्त करवा समग्र सैन्य सज्ज थयुं छे,जो आपने देवांगना साथे वरवानी स्पृहा होय तो रणक्षेत्रमां पधारो अने सांसारिक लग्ननी स्पृहा होय तो पाछा सादडी पधारो " मेदपाटेश्वरना मुखारविन्दथी उक्त वचनोनुं श्रवण करतांज कुमारसिंहजी सेनानायक बनी सिरोहीना विजयार्थे सिधाव्या अने त्यां पहोंच्या बाद महाराव जयसिंहजी साथे महा भयंकर युद्ध करी काम आव्या. कुमारनी आवी अद्‌भुत वीरतानुं श्रवण करी मेदपाटेश्वर तेमज राजराणा साहेब अत्यन्त प्रसन्न थया; परंतु स्वल्प समय पछी ए पराक्रमी पुत्रना स्वर्गगमनने लीधे राजराणा चन्द्रसेनजीने चित्तभ्रम जेवुं थइ गयुं हतुं; तेओ घणे भागे सादडीमां निवास करता नहीं, सादडी अने उदयपुर वच्चेना मार्गमांज आवागमन कर्या करता अर्थात् आश्विन शुदि १० ने दहाडे मेदपाटेश्वरनी मुलाकात लइ एकादशीने दिवसे उदयपुरथी रवाना थता अने आस्ते आस्ते प्रयाण करी छ महिने सादडी पहोंचता; त्यां मात्र एक दिवस रही पोतानां राज दरबारमां दसेराना रीति रिवाजने संपूर्ण करी बीजेज दिवसे पाछुं सादडीथी प्रयाण करी छ महिने अर्थात् आश्विन शुदि १० ने दहाडे उदयपुर पहोंची जता. एक वखत कोइएक सरदारे उपहासयुक्त मेदपाटेश्वरने अरज करीके वडी सादडीना राजराणा साहेब चार प्रहर पर्यंत पण आपनी

सेवामां हाजर रहेता नथी अने अमारे तो निरंतर हाजर रहेवुं पडे छे त्यारे महाराणाए जवाब आप्यो के "एतो सदैव अमारीज सेवा कर्या करे छे." शंकाशील मेदपाटेश्वरे एक दहाडो राजराणा चन्द्रसेनजीने पूछयुं के आप सादडी अने उदयपुर वच्चेना मार्गमां आटलो वधो काळ केम वितावो छो ? त्यारे राजराणाए जवाब आप्यो के नामवर ! "राजपुत्र अने अश्व तो निरंतर देशाटन करवाथीज दळवळयुक्त रही शके छे. जो मारा कथनमां आपने शंका रहेती होय तो परीक्षा करी जुओ." परीक्षानो मोको पण आवी मळ्यो हतो. अर्थात् मेवाड मध्यना भूमट, जवास, पानरू अने मेदपुरा आदि स्थानोना जमीनदारोए राजविद्रोह करवा मांड्यो, तेओना दमनार्थे महाराणाए राजराणा चन्द्रसेनजीने आज्ञा आपी एज वखते तेओ स्वकीय सैन्यने सज्ज करी तुरत उक्त स्थानो तरफ पधार्या अने अद्वितीय पराक्रमथी राजद्रोहीने योग्य शिक्षा आप्या बाद अखिल प्रान्तोमां विजयना डंका वगाडी उदयपुर आव्या. ए वखते महाराणा जयसिंहजी अत्यंत प्रसन्न थया. वि. सं. १७४३ मां बादशाह औरंगजेबनो कुमार अकबर मेवाडने स्वाधीन करवा माटे दक्षिण हैदराबाद तरफथी चाल्यो आवतो हतो, ए समाचार महाराणाने मळ्या त्यारे तेओए राजराणा चन्द्रसेनजीने स्वहस्ते पत्र लखी जणाव्युं के "अकबर ए तरफ आवे छे; एना अत्याचारोथी मेवाडनी रक्षा करो, जो ए प्रीतिभावथी पाछो न फरे तो युद्ध करवुं." चन्द्रसेनजीए महाराणानो पत्र वांची एज वखते जे तरफथी अकबर सैन्य सहित आवतो हतो ते तरफ प्रयाण कर्युं. उज्जेण नामना घाटा उपर उभय सैन्यनो भेटो थयो, ए स्थळे परम पराक्रमी झालानरेशे रोम खडां थाय एवुं युद्ध कर्युं अने यवनकुमार अकबरने पराजय आपी पोते सादडी पधार्या. ए युद्धोनुं वर्णन करतां कोइएक कविए कह्युं छे के

"छप्पय"

सतधारी चन्द्रसेण, सामकारज जुड समहर;
कै बेडा जुध किया, खगां खडकी दख यख्खड;
सुत जेठो सिंघेण, सको सुरलोक सिधायो;
आप बरे नह अप्छरा, परब अधको ब्रद पायो;
कीरतने दोलो कुंवर, सुतन अनुज चन्द्रसेणरा।

वरवीरधीर रजवटबहद, जपे सुजस जगजेणरा ॥

"सोरठा"

पेखे वरवा नाह, अम्बर सूं जुध विच अणड;
खपगा केवा नाह, चन्दारी खग चाखनें ॥
अप्छर उमाहेह, वरचन्दा नरवरणनू;
गण थटदल गाहेह, इन्दा सुभ जीवत हुओ ॥
वाहालो बलदेत, दुठ बाधकर दोरडो;
वो सींधो अखडेत, पुंहतो अपछर परणवा ॥

"निसाणी"

कुलदीपक सीधो कुंवर, धृत रजवट छाया;
दूठ बांधकर दोरडो, उदयापुर आया ॥
सिरोही घाटे सजाय, असपत उभगाया;
सुन खबर नृपजयसिंहजी, श्रीमुखफरमाया ॥
काम सामध्रम करणनूं, वृद आदि बणाया;
अप्छर वरिया आवसो, सज फोज सवाया ॥
कुंवरसिंह चन्द्रसेणरे, उर हर्ष उमाया;
ये वीरादां उमराव वीं माहवगांया ॥
वरवा काज सुरत्री रवि जांगीर घुराया;
उडी झाट खग कोरणी रण ठाठ रखाया ॥
साथ जीत सर ईशको सुकरासम पाया;
कणगड खग्यां अधरसूं सुरलोक सिधाया ॥

कुंमरपदे सिंघो कुंमर परवेहो पाया;
सूरबीर पर सामध्रम सब जगत सराया ॥
पुर अजवाडा करणतला कवि सुजस कहाया ॥

वेगूंना अधीश, जसवतसिंहजी, आसीनना अधीश ठाकुर माधोसिंहजी, आमोदना अधीश ठाकुर रघुनाथसिंहजी, धामनोतरना अधीश ठाकुर जोगदासजी, आमेराधीश रावत रघुनाथसिंहजी, भींडराधीश महाराज भीषमसिंहजी, पीप्लोदाधीश ठाकुर रघुनाथसिंहजी, वांसवाडाधीश महारावल कुशलसिंहजी, अने हमोरगढाधोश रावत जयवंतसिंहजीनां कुंवरीओ साथे क्रमपूर्वक राजराणा चन्द्रसेनजीनां लग्न थयां हतां, तेमां वांसवाडावाळां राणीसाहेबथी कुमार कीरतसिंहजी, दौलतसिंहजी, गुलाबसिंहजी, तथा छत्रसिंहजीनो जन्म थयो अने कानोडवाळां राणीजीसाहेबथी कुमार सिंहजी तथा अमानसिंहजीए जन्म लीधो.

वि-सं. १७६० मां राजराणा चन्द्रसेनजीनो कैलासवास थतां तेओना पाटवी कुमार कीरतसिंहजी सादडीनो राजगादीपर विराजमान थया, तेओनां लग्न निम्नलिखित राजाओनी कुंवरीओ साथे थएल हतां.

१ विजोलियाधीश रावत विक्रमादित्यजी.
२ वांसीयाधीश रावत सांवलदासजी.
३ लुणावाडाधीश ठाकुर तेजसिंहजी.
४ पोसीनाधीश ठाकुर सुजानसिंहजी.
५ बमोरीना अधीश सगतावत मुकुन्ददासजी.
६ बुन्दीना अधीश महाराव अनिरुद्धसिंहजी हाडा.
७ रायपुराना अधीश ठाकुर फतेसिंहजी

तेमां रायपुरवाळां राणीजीसाहेबथी कुमार रायसिंहजी तथा नाथजीनो जन्म थयो. तेमां नाथजीने तेओना काका दोलतसिंहजीए दत्तक लीधा हता. राजराणा चन्द्रसिंहजीना स्वर्गवास पछी त्रीजेज दिवसे राजद्रोही डुंगरपुर तथा बांसवाडाना अधीशोने दंड देवा माटे मेदपाटेश्वर तरफथी आज्ञा मळतां राजराणा कीरतसिंहजी उदयपुर आव्या अने पोताना न्हाना भाइ दोलतसिंहजी सहित डुंगरपुर तथा वांसवाडे जइ महाराणाना विजयवाद्य वगाड्यां अने त्यांथी भूमिकर

लइ मेदपाटेश्वरनी सेवामां अर्पण कर्यो. ए वखते मेदपाटेश्वरे अत्यंत प्रसन्न थइ साठहजार मुद्रानी आमदानीवाळां "ताणा" विगेरे ग्राम राजराणाने इनाममां आपवा आज्ञा करी, त्यारे राजराणा कीरतसिंहजीए महाराणाने सविनय प्रार्थना करी के मारा अधिकारमां तो प्रथमथीज सादडीनुं राज्य छे, माटे ताणा विगेरे ग्राम मारा लघुबन्धु दोलतसिंहजीने मळे तो वधारे सारुं. आ वखते महाराणाए राजराणानी वीरता, उदारता, भ्रातृभाव, निष्कपट व्यवहार तथा निस्पृहता आदि सद्गुणोनो मुक्तकंठे प्रशंसा करी अने तेओश्रीना न्हाना भाइ दोलतसिंहजीने साठहजारनी आमदानीवाळी "ताणा" नी रियासत आपी.

वि-सं. १७५६ मां महाराणा अमरसिंहजीए उदयपुरना राज्यसिंहासनपर पाय धारण करतांज राजराणा कीरतसिंहजीनी सहायताथी प्रथम तो डुंगरपुर तथा वांसवाडाना राजद्रोही अधीशोने आधीन कर्या, परंतु दिल्हीश्वरनी सहायताथी ए बन्ने राज्य पाछां उदयपुरथी जुदां पडी गयां. वि-सं. १७६५ मां आमेराधीश सवाइ जयसिंहजी तथा मरुधराधीश अजीतसिंहजी के जेनां राज्य दिल्हीश्वरे दबाव्यां हतां, तेओ पुनः राज्यप्राप्ति माटे मेदपाटेश्वर पासे आव्या, मेदपाटेश्वरे तेओनो उत्तम रीते आतिथ्य सत्कार कर्यो, परस्पर सबन्ध सुदृढ रहेवा माटे केटलाएक सन्धिपत्रो थया बाद पोतानां पुत्रीनो आमेराधीश साथे तथा भगिनीनो मरुधराधीश साथे विवाह कर्यो. ए वखते केटलाक करारो करवामा आव्या; तेमां महाराणाए एवो करार कराव्यो के "अमारी भगिनीनो पुत्र अथवा पुत्रीनो पुत्र पाटवी राजकुमार न होय तोपण ते गादीपर बेसवानो हक धरावी शकशे" परंतु आमेर अने मारवाडना अधीशोए दिल्हीश्वरनी साथे एकरारनो अस्विकार कर्यो, छता मेदपाटेश्वरे अप्रसन्न नहि थतां ए उभय अवनिपतिनां राज्यो दिल्हीश्वर पासेथी पाछां अपावो दीधां. ए तमाम कार्योमां राजराणा कीरतसिंहजी विद्यमान हता. वि-सं १७६७मां श्रीमान् महाराणा अमरसिंहजीनो देहोत्सर्ग थता सग्रामसिंहजी बीजाए उदयपुरना राज्यासनने अलंकृत कर्युं. दिल्हीना बहादुरशाहना समयथी राज्यासनमा दंपरोगे निवास कर्यो हतो, परंतु आ अरसामां विशेष आंतरिक उपाधिओ उत्पन्न थवानो अवकाश नहोतो, अर्थात् बहादुरशाह पछी जहांदारशाहने फरुकशियरे सैयद अबदुल्ला अने हुसेनअलीखां आदिनी सहायताथी मारी नंखाव्यो, जैपुर अने जोधपुरना नरेशोए ए दरबारमां हस्ताक्षेप करी मनमान्यो लाभ मेळव्यो, महाराणा संग्रामसिंहजीनी प्रकृति राज्यनी उन्नति करवानी अपेक्षावाळी अने स्वतंत्रताप्राधान्य हती; वि-सं. १७८० मां तेओनो स्वर्गवास थतां श्रीमान् जगतसिंहजीए मेदपाटेश्वरनुं पद धारण कर्युं. ए वखते राजराणा कीरतसिं-

हजी सादडीथी उदयपुर पधार्या, मेदपाटेश्वरे दुर्ला नामना ग्राम समीपे मरुधराधीश तथा आमेराधीशने मळी अन्योन्य सहायता आपवा माटे फरीने कोलकरार कर्या, परंतु ए कोड लांबा वखत सुधी पाळी शक्या नहि. दिल्हीमां वारंवार बादशाहोना बदलवाथी तेमज वध थवाथी भाग्यशाळी मरेठाओए बहादुरीथी दिल्हीना राज्यने स्वाधीन करी लीधुं अने भरतभूमिना समग्र भूपतिओने पोताना आधिपत्य नीचे स्थापी बधा पासेथी कर लेवा मांड्यो, ए वखते मेदपाटेश्वरे पण दरवर्षे खंडणीना एक लाख अने साठहजार रुपीआ आपवानुं कबुल कर्युं. ए तमाम कार्योमां राजराणा कीरतसिंहजीए आगळ पडतो भाग लीधो हतो, तेओ नामदारे उदयपुरथी सादडो पधारी तुरतज लाखो रुपिआ खरची एक ब्रह्मपुरीमां तथा बीजी राजस्थानना मुख्य द्वार सामे वापी बंधाववानुं काम शरु कराव्युं अने ते तैयार थतां महाराणा जगतसिंहजीने तथा श्रीमती महाराणीजीसाहेबने सादडीमां पधरावी अपूर्व आतिथ्य कर्युं. ए उत्सवमां मेवाडना घणाखरा प्रतिष्ठित सरदारो पधार्या हता. उक्त कार्यथी निवृत्त थया बाद राज्यमहेल बंधाववानो समारंभ कर्यो; तेनुं काम घणे भागे तैयार थइ गयुं हतुं तेवामां वि–सं. १८०० नी शरुआतमांज राजराणा कीरतसिंहजीए स्वर्गवास कर्यो; जेथी तेओना पाटवीकुमार द्वितीय रायसिंहजी सादडीना राज्यासनपर बिराजमान थया; त्यारबाद प्राचीन रीति प्रमाणे उदयपुर पधार्या, महाराणा जगतसिंहजीए प्रथम राजराणानी हवेलीए पधारी शोक प्रदर्शित कर्यो अने ते पछी नूतन राजराणाने तलवार बंधावी. कोइएक वखते राजराणा रायसिंहजी मदेपाटेश्वर पासे बेठा हता, विविध वातो चाली रही हती तेवामां मेदपाटेश्वरे कह्युं के आमेराधीश जयसिंहजी अहीं आववाना छे तो आप जेम अमारो एक हाथथी मुजरो करो छो तेम करशोनां ? त्यारे राजराणाए सविनय जवाब आप्यो के अमारा पूर्वजो आपना तथा दिल्हीश्वरना राज्यासन सिवाय कोइनी नीचे बेसता नथी, परंतु आमेराधीश एक तो आपना बनेवी अने वळी अतिथिनी माफक अहिं पधारे छे एटला माटे आप हार्दिक इच्छाथी अनुरोध करशो तो हुं तेओनो एक आंगळीथी मुजरो करी लइश. ज्यारे आमेराधीश उदयपुर पधार्या, त्यारे राजराणा रायसिंहजीए एज प्रमाणे तेओनी मुलाकात लीधी. आमेराधीशे मेदपाटेश्वरनी मुलाकात लीधा बाद पूछ्युं के आ सरदार कोण छे ? त्यारे मेदपाटेश्वरे राजराणा रायसिंहजी तरफ संकेत करी कह्युं के " ए झाला सरदार छे. एओना पराक्रमी पूर्वजोए हळवदथी मेवाडमां आवी अमारी बहुज उत्तम रीते सेवाओ बजावी छे. " मेदपाटेश्वरना मुखथी राजराणानी प्रशंसा सांभळी आमेराधीशने असीम आनंद प्राप्त थयो. आमेराधीशनी मुलाकात वखते आढापाडखांजी नामना कोइएक कविए

निम्नलिखित कविता कही हती.

गीत.

झोका लीजिये बनेही वातां वंका शुद्धापणे झाला;
अखियाता अंका बधू राखवा उदोत् ॥
रायसिंघ जैसिंघ सूं मिलन्ता मुरज्जी राखे;
दाखे दवां गिरांहूतां नरंभी दसोत् ॥ १ ॥
कीरतेसतणां रायजदा धनो आंटाकोट,
दोहू वातां आवादां बचाणां दसूं देश ।
करंतां जुहार गाढ धारे पती कुरंगा सूं,
नरंसी अपार करे कवेशां नरेश ॥ २ ॥
पाटरी गरव्वे वंश सांवलो उदोत पाट,
वरां पूरवन्ने थक्कां रहे राजी वाप,
धारियां अमोघ जेम मिले छत्रधारियांसूं;
भोमरुपी होय करे सुपातां मणाप ॥ ३ ॥
सोभाग चढाऊं कणा रयंम्मा उजास सारे,
शीतलता तेजमही वने हिन्दूशाह ।
अंवणा कपणों चन्द्र विजा पृथ्वीसारे उगो,
उगो सम्वणां कपणों सूर ज्युं अथाह ॥ ४ ॥

आमेराधीश जयसिंहजी उदयपुरथी पोतानी राजधानीमां पधार्याबाद तुरतज स्वर्गवासी थया, तेओना उत्तराधिकारी माधवसिंहजी के जे उदयपुरना भाणेज थता हता, तेओने आमेरना प्रतिष्ठित कार्यभारीओए राज्यासनपर न बेसाडतां तेओना ज्येष्ठ बन्धु इश्वरीसिंहजीने राजगादीए बेसाड्या. ए वृत्तान्त ज्यारे महाराणा जगतसिंहजीना जाणवामां आव्युं, त्यारे तेओए अत्यंत कोपायमान थइ जयपुर उपर चढाइ करी, परंतु इश्वरीसिंहजीए

मरेठाओनी मददथी मेवाडने पराजित कर्यु, पराजय पामेला मेद्पाटेश्वरे मरेठाओने सैन्यव्ययना चोसठलाख रुपिआ आपी फरी जयपुरपर चढाइ करी. इश्वरीसिंहजी होळकरनी सेनानुं आगमन सांभळी विष खाइ मृत्युने प्राप्त थया अने माधवसिंहजीने राजगादी मळी. मेद्पाटेश्वरे राज्यना खजानामां रुपिआ न होवाने लीधे पोतानुं रामपुरा नामनुं परगणुं होळकरने हमेशांने माटे आपी दीधुं; तेओए जयपुरथी उदयपुर पधार्या बाद एक दिवसे राजराणा रायसिंहजी तथा भींडराधीश महाराज खुशालसिंहजीने आज्ञा आपी के शाहपुराधीश राजा उम्मेदसिंहजी अमारी सेवामां उपस्थित थता नथी माटे आप बन्ने सरदारो मध्यस्थ बनी एओने युक्ति प्रयुक्तिथी बोलावी लावो. त्यारे ए बन्ने अवनिपति बोल्या के जो आप ए शाहपुराधीशनी आगळना अखिल अपराधनी क्षमा आपवा प्रतिज्ञा करो तो अमो एओने अहीं बोलावी लावीए. मेद्पाटेश्वरे ते वातनो तुरतज स्वीकार कर्यो. सं. १८०७ ना कोइएक मासमां शाहपुराधीश उम्मेदसिंहजी उदयपुर आव्या. ते वखते महाराणा जगतसिंहजीए लीधेली प्रतिज्ञानो भंग कर्यो अने एक क्षणमां त्रण वखत दुन्दुभिना नाद करावी, उम्मेदसिंहने परास्त करवा माटे उन्नत गयंदपर आरूढ थया. राजराणा रायसिंहजीए तथा भींडराधीशे ए समाचार सांभळी प्रथम तो शाहपुराधीशने सचेत कर्या अने पछीथी ए बन्ने सरदारो अश्वारूढ थइ पोतपोताना सैन्य सहित मेद्पाटेश्वरनी पासे जइ पहोंच्या अने तेओने सविनय प्रार्थना करी के आप आपनी प्रतिज्ञानुं पालन नहिं करतां शाहपुराधीशने संहारवा समुद्यत थया छो ए कदिपण बनवानुं नथी; कारण के ए अमारा पत्रपर विश्वास राखी उदयपुर आव्या छे एटला माटे अमे एना पक्षपाती छीए छतां आपनो निश्चय फरी शके तेम न होय तो प्रथम अमारो संहार करी पछीथी एना उपर चढाइ करो. उभय सरदारोनां उक्त वचनो सांभळी अत्यंत कोपायमान थएला मेद्पाटेश्वर राजभवनमां पधारी गया. राजराणा रायसिंहजी तथा भींडराधीश महाराज खुशालसिंहजी शाहपुराधीशने देबारी नामनी घाटनी बाहेर मूकी आव्या, ने बोल्या के हवे आप निर्भय बनी स्वराज्यमां गमन करो. आपने अहीं सूधी पहोंचाडवानी अमारी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ. त्यांथी उदयपुर आवेला ए बन्ने सरदारोए मेद्पाटेश्वर पासे आवी प्रार्थना करी के हवे जो आपनी आज्ञा होय तो शाहपुराधीशने जीती आवीए, परतु क्रोधायमान थएला मेद्पाटेश्वरे कांइपण उत्तर आप्यो नहि. महाराणानी अप्रसन्नता जोइ भींडराधीश विगेरे केटलाएक उमरावोए पोतपोतानी राजधानी तरफ प्रयाण कर्युं, पण राजराणा रायसिंहजी तो उदयपुरमांज रह्या. थोडा वखत

पछी हड्डु नामना मराठाए आठहजार सुभटो सहित देवल्याना पहाडी मार्गद्वाराए मेवा-डमां प्रवेश कर्यो अने दरियावद, वांसी तथा कानोड आदि मुख्य शहेरोने लूंटी ली-धाना समाचार मळतां महाराणा जगतसिंहजीए राजराणा रायसिंहजीने पोता तरफथी कोइपण जातनी सेना विगेरेनी सहायता न आपतां हुकम कर्यो के आप शीघ्रताथी हड्डु सामे प्रयाण करो. स्वामीनो आज्ञानुं श्रवण करतांज राजराणा उदयपुरथी चाली निकळ्या अने हितानामक गामनां मेदानमां हड्डुनी सामे जइ पहोंच्या, पोतानी साथे मात्र चारसो सुभट हता, साथेना कार्यभारी तथा सरदारोए राजराणाने सविनय अरज करी के आपणा करतां प्रतिपक्षीनुं सैन्य अधिक छे माटे आप एकज दिवस सादडी पधारो अने त्यांथी सैन्यने एकत्र कर्या बाद युद्धनो आरंभ करो. त्यारे राजराणाए जवाब आप्यो के शत्रुना सन्मुख आव्या पछी भागवुं, चाल्या जवुं, अथवा भयभीत थवुं ए क्षत्रीओनो धर्म नथी. रणभीरु अजापुत्रनां नामथी ओळखाय छे. एओने क्षत्रीनी संज्ञा अ-पायज नहि, तमो सर्व प्रातःकाल थतां युद्धार्थे रणांगणमां उपस्थित थाओ. प्रभात समय थतांज उभय सैन्यनो समागम थयो. भयंकर कापाकापी चाली. राजराणाना सैनिकोए गरेटाओ साथे चार कलाक पर्यन्त रोम खडां थाय एवुं युद्ध कर्युं, तेवामां ताणाधीश राजनाथजी के जे राजराणाना लघुबन्धु थता हता, तेओ ए उक्त युद्धना समाचार सांभ-ळी स्वकीय सैन्य सहित त्वर युद्धभूमिमां आवी पहोंच्या. मलूंबरना निवासी चुंडावत न्हारसिंहजी पचीस स्वारो सहित कोइएक गाम तरफ जता हता ते पण राजराणानी सहायता माटे रोकाया. फरी भयंकर युद्ध शरु थयुं. ताणानरेश राजनाथजी घणा शत्रुओनो संहार करी सुरलोकमां सिधाव्या. राजराणाना समग्र सुभटो प्रतिपक्षीना पांचहजार सैनिकोनो विध्वंस करी कपाइ मुआ. मात्र राजराणा पचीश घोडेस्वारो सहित बचवा पाम्या हता. तेवामां भींडराधीश महाराज खुशाल-सिंहजी चारसो घोडेस्वार लइ आवी पहोंच्या. क्षात्रवीरोए कठिन कृपाणो चलावी मराठाओनुं मान उतार्युं; अने पराजय पामेला प्रतिपक्षीओ पलायन करी गया. ए वखतना युद्धनुं वर्णन करतां कोइएक कविए निम्नलिखित गीत कहेलुं छे.

“ गीत. ”

तण्डे जोगिनी महेश सण्डे उमण्डे पुरी वैताल,
घुमण्डे प्रचण्डे थंडे उमंडे असाढः
आडे झण्डे रोप ठण्डे भुजा डण्डे तोल आभ,

राय सिंघ गनीमासूं मण्डे तोड राढ. ॥ १ ॥

खतंगी कुराट झाट वगी राठ रीत खग्गे,
जंगी पाट प्रेतां काली अनाट जुवाण;
सतारो हजार आठ लोह लाठ आहे सझ्झे;
रासारा तीनसे साठ नमीजे अराण. ॥ २ ॥

श्रोण चण्डी पियाला नवाला ग्रिध भक्के मांस,
दुन्दुभी न साला ताला मुसाला जे दीठ;
दुझाला बैताला थाला संधाला दक्खणी दल्ला,
रुकभाला जंगाला गेडाला मातो रीठ. ॥ ३ ॥

वराला कराला झाला अतालोव छूटे वाण,
तई खेत्रपाला मण्डे बैताला तामास;
मदाला दंताला काला नेजाला सुंडाला माथे,
बांधे चाला कितां वाला आछटे वाणास. ॥ ४ ॥

सिंघी नाद रोडे धूंस घमोडे अढंगा सैल,
धजां गजांही अरोडे घोडे सार धीर;
शत्रुवां मरोडे कन्ध अरोडे दूसरो सिंह,
जंगी होदा तोडे मोडे छाकिया जंजीर. ॥ ५ ॥

प्रेत भूतां बाजे डाक काल दूतां हाक पीरां,
ताबूतां सितारो मंडै हाहूड तमाम;
कटारां खंजरां छदां दुधारा कमरा कुंता,
सूर धीरा रजपूतां घुमायो संग्राम. ॥ ६ ॥

रथां परी जुथां माल अमरी समरथां राडे,
लुथ वथा होवे ईश मथा सुर लेण;
भारथां रचायो कत्थां पत्थां जेम वाघ झुरे,
श्रीहत्थां आछटे खग्गां दूजो चन्द्रसेण. ॥ ७ ॥

गड्डां गीध भक्के मांस उडेके अतालां मेह,
कणाला पखाला झाला सेलाणां कुरन्द;
लंगाडा छोंगाडा झाडा भडाला ऊधमे सार,
दंताला त्रिम्बाला खावे मदाणां दुरन्द. ॥ ८ ॥

भडके दुवासां सेल तमासा सदेखे भाण,
अच्छरां हुलासां वासां नारदा उवास;
रानहो भरोंसो जैसो जानता गरींठ रासा,
उभय पाशां वागां तासा तोलियो अकास. ॥ ९ ॥

कायरां चमकें धकें हके के ही नके कन्ध,
भहकें भभकें हकें न हकें न त्रीठ;
रोसमें भभके छके झालां सुं गनीमा रोडै,
रटके झटके वागी हके जुधके रीठ. ॥ १० ॥

ऊघडे जरन्दा चण्डी खडी खडी ख्याल अक्खै,
रत्थपां चडी झडाझडी वदे सुरारंभ;
सांकडी वाजतां घडी वाकडी वजाई सार,
पखां छडाछडी किया झाले अडीखंभ. ॥ ११ ॥

ताजे श्रोण मारे चण्डी आसमानीं छाजे तीख,

जागे श्रोण वारन्गानू वरे सुराजाम;
ओटयां झडूसाना धजां रायसिंघ ऊभो,
देख तोरो भाजे अरी अग्राजे दमाम. ॥ १२ ॥

लग्गे लोह अग्गे पुर मरहटां जमीं तें लोटे,
धडक्के करीते रेजा गजां नेजां ढाल;
आपहीतें पाल ऐसो खलाढलां खाय ऊभो,
खत्री जुद्ध व्हेतां आयो बठीसुं खुसाल. ॥ १३ ॥

पोषे श्रोण धाराचण्डी आमखां अहारा पंख.
तण्डि जैजै कारां होवे सादडी तखत्त;
लागवां हजारां भाजे आवियो धगारां लागो,
बाजत नगारां ऐसो सादडीं बगत्त. ॥ १४ ॥

संवत १८०८ मां महाराणा जगतसिंहजीनो कैलासवास थतां द्वितीय प्रतापसिंहजीए उदयपुरना राज्यासनने अलंकृत कर्युं. तेओना समयमां मेवाडनी अंदर मरेठाओनी कुटिल नीतिना कारणथी अनेक प्रकारनां उपद्रवो उत्पन्न थया. महाराणा प्रतापसिंहजीए मात्र त्रणज वर्ष राज्य कर्युं. स्वर्गस्थ महाराणा जगतसिंहजी राजगादीए बेठा पछी तुरतमांज कोइ कारणथी राजराणा रायसिंहजी उपर अप्रसन्न थया हता. जेथी राजराणा पोताना राज्यनो परित्याग करी डुंगरपुर नामनी राजधानीमां पधारी गया हता. डुंगरपुरना राजाए तेओनो अत्यंत आदरसत्कार कर्यो हतो. त्यारबाद थोडेज वखते मेवाड मध्यना भोराइ तथा सरांगा आदिपालना भीलमींणाओए राजविद्रोह कर्यो हतो. राजराणा रायसिंहजीए मेदपाटेश्वरनी आज्ञा मेळव्या सिवाय त्यां जइ राजद्रोहीओनुं दमन कर्युं हतुं. ज्यारे मेदपाटेश्वरे उक्त विद्रोह शमननां समाचार सांभळ्या त्यारे म्होटा ठाठमाठथी प्रतिष्ठापूर्वक राजराणा साहेबने उदयपुर बोलाव्या हता अने तेओनी मुक्तकंठे प्रशंसा कर्या बाद केटलाएक वस्त्राभरण अर्पण करी सादडी जवानी आज्ञा आपी हती. संवत १८१० मां श्रीमान् महाराणा द्वितीय प्रतापसिंहजीनो देहांत थतां द्वितीय राजसिंहजी मेदपाटेश्वर बन्या, तेओए मरेठाओना अत्याचारोने लीधे अत्यंत व्यथित अवस्थाए केवल सात वर्ष पर्यन्त महा मुशीबते राज्य

कर्युं. वि. सं. १८१७ मां तेओनो अपुत्र स्वर्गवास थतां तेओना काका महाराणा अरसीजी उदयपुरना राज्यासन उपर विराजमान थया. त्यारबाद थोडेज वखते अर्थात् वि. सं. १८१८ नी शरुआतमां राजराणा रायसिंहजीए स्वर्गवास कर्यो. तेओश्रीनां लग्न निम्नलिखित राजाओनी कुंवरीओ साथे थएल हतां.

(१) देवगढना अधीश चुंडावत राव संग्रामसिंहजी. (२) आमेटना अधीश चुंडावत राव केसरीसिंहजी. (३) बीजोलीना अधीश पंवार राव सवाइ मान्धाता. (४) घाणेराव ठाकोर राठोड दुल्हसिंहजी. (५) विनोताना राव हटसिंहजी सगतावत. (६) शाहपुराधीश राजाधिराज उमेदसिंहजी राणावत. (७) माणचा ठाकोर वख्तावरसिंहजी.

तेमां देवगढवाळां राणीजी साहेबथी राजकुमार जालमसिंहजीनो तथा माणचाना राणीजी साहेबथी पाटवीकुमार सुलतानसिंहजीनो जन्म थयो हतो.

वि. सं. १८१८ मां राजराणा रायसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना पाटवीकुमार श्रीमान् तृतीय सुलतानसिंहजी सादडीना राज्यासनपर विराजमान थया. ए वखते मेवाड देशमां नाना प्रकारना उपद्रवोनो आरंभ थइ चूक्यो हतो. महाराणा अरसीजीथी अप्रसन्न थयेला घणाखरा सरदारोए माधवराव सिंधीयाने पोतानी सहायता अर्थे बोलाव्यो. संवत १८२५ मां मेवाडनी अने सिंधीआ माधवरावनी सेना वच्चे महा भयंकर युद्ध मच्युं. जो के मेवाडना उत्साही सैनिकोए माधवरावने हराव्यो परंतु ए युद्धमां मेवाडने वधारे हानि वेठवी पडी. सलुंबरना अधीश राव पहाडसिंहजी तथा शाहपुराधीश राजा उमेदसिंहजी रणांगणमा काम आव्या, बनेडाधीश राजा रायसिंहजी घोररुपे घायल थया अने झाला जालमसिंहजी (जेना वंशजो झालरापाटणमां राज्य करे छे ते) मरेठाओने हाथे केद पकडाया, मात्र थएला पराजयथी लज्जित बनेला माधवराव सिंधीआए अपरिमित सैन्यने एकत्र करी मेवाड उपर चढाइ करी. महाराणा अरसीजीना अनुचित वर्तनथी 'चुंडावत तथा सगतावतोना परस्पर विरोधने लीधे मेवाडना केटलाएक सरदारो देशनुं रक्षण करवा माटे रणभूमिमां हाजर न थया, तोपण मेवाड देशनी केटलीएक सेना, सरदारो अने सींधी मुसलमानो माधवराव साथे युद्ध करवा सज्ज थया, अंगने रोमांचित करे एवुं युद्ध थयुं. राजराणा सुलतानसिंहजी तथा देलवाडाधीश राज कल्याणसिंहजी घणा घायल थया, राजराणाना

शरीर उपर नानां मोटां लगभग चोरासी जखमो थया हता, देलवाडाधीशने तो तेना सेवको रणांगणमांथी उपाडी गया; परंतु राजराणा सुलतानसिंहजी समग्र सैन्यनो संहार थइ जवाथी मरेठाओने हाथ आवी गया. अने बे वर्ष पर्यन्त तेओने सिंधीआ पासे रहेवुं पड्युं. मेदपाटेश्वर तरफथी एओने बोलाववा माटे कोइपण जातनो इलाज लेवामां न आव्यो. सादडीना कार्यभारीओए ज अत्याचारी मराठओने बे लाख रुपीआ आपी पोताना मालिकने मुक्त कराव्या. मेवाड अपार हानि वेठयां छतां मरेठाओने जीती शक्यो नहि. मेदपाटेश्वरे माधवराव सिंधीआने सेना व्ययना चोसठलाख रुपीआ आपी पोतानो छेडो छोडाव्यो. तेमां तेत्रीशलाख रुपीआ तो आभूषणादि वेची रोकडा आप्या अने बाकीनो रकमने बदले निमच, जावद, जणे अने मोरवन आदि प्रान्तो गीरोनी पेठे आप्या; अने गोडवाड नामनुं परगणुं मरुधराधीश महाराजा विजयसिंहजी तरफथी त्रणहजार घोडेस्वारोनी सहायता आपवा बदले पोताने मळ्युं. राजराणा सुलतानसिंहजी जेवा वीर अने नीतिनिपुण गणाता तेवाज उदार प्रकृतिना हता. तेओनो प्रथम विवाह बेदलाधीश रावत रामचंद्रजी चौहानना कुंवरी साथे थयो ए वखते तेओए त्रणलाख रुपिआ भाट चारणोने त्यागमां आप्या; अने तेरसो उंट तथा सत्तरसो घोडा कविओने इनाममां वेंची आप्यां. त्यारे कोइ एक कविए कह्युं के—

दोहा.

आधी गादी बेदलो, आधी गादी राण,
सादडी सुलतान झाला, दूसरो दीवाण;

अन्य कविए कह्युं छे के.

दोहा.

तेरेसे टोडर दीया, सत्तरेसे केकाण;
द्रव्य लडी देवे रयो, सादडी सुलतान.

कोइएक वखते केसरीसिंहनो शिकार करवा पधारेल राजराणा सुलतानसिंहजीए सरदारो, कार्यभारीओ अने कविमंडलने साठहजार रुपीआनुं पारितोषिक आप्युं हतुं. ए राजराणा एक दिवस उदयपुरमां एक लघु अश्वपर आरूढ थइ पोतानी हवेलीथी राजभुवन तरफ पधारता हता

त्यारे कोइएक मनुष्ये शंका करी के राजराणा लघु अश्व उपर शामाटे स्वार थया हशे ? ए वात पोताना जाणवामां आवतां बीजे दिवसे हवेलीथी राजमहेल जतां सुधीमां तेओए बसो अश्व द्वारपाळोने दानमां आपी दीधा. उदयपुरना कोइएक चिताराए सादडीना राज्यमहेलमां मयुरनुं एक मनोहर चित्र बनावी तेमां उत्तम मीनाकारीनुं काम कर्युं ते जोइ प्रसन्न थयेला राजराणाए देवदां अने स्वयंपुरा नामनां गामनो अर्ध भाग चितारने इनाममां आपी दीधो. तेओना वखतमां सादडी राज्यनी वार्षिक आमदानी त्रणलाख रुपिआनी हती. सात हाथी अने त्रणसें अरबी घोडा अश्वालयमां कल्लोल करता हता तथा दुंदुंभी अने पताकायुक्त तावाना बार जागीरदारो स्वारी वखते सेवामां हाजर थता हता. ए महान् उदार महपतिए सादडीनी दक्षिण दिशा तरफ चार गाउने छेटे एक सुंदर सरोवर अने एक देदीप्यमान दुर्ग प्रजानां संरक्षण अर्थे बनाव्यो. तथा बेदलावाळां राणीजीसाहेब फतेहकुंवरीजीए वि–सं. १८३२ मां सादडीनी समीपे उत्तरमां एक निर्मळ कुंडनुं निर्माण कराव्युं. जे वर्तमानकाळमां तेओना स्मारक चिन्ह तरीके दृष्टिगोचर थाय छे. वि–सं. १८३५ मां राजराणा सुलतानसिंहजीए सादडीनी दक्षिणे पर्वतना शिखर उपर सुलतानगढ नामनो एक सुंदर किल्लो तैयार कराववा मांड्यो; परंतु ते अपूर्ण रही जवाने लीधे अद्यापि खंडेरोरूपे विद्यमान छे.

राजराणा सुलतानसिंहजीनां लग्न निम्नलिखित राजाओनी कुंवरीओ साथे थयां हतां.

१ भणायनरेश राठोड नाहरसिंहजी.

२ बेगमना राव माधवसिंहजी चूंडावत.

३ हमीरगढना राव मालदेवजी राणावत.

४ गढ भेंसरोडना राव लालसिंहजी चूंडावत.

५ अटानाना राव नाहरसिंहजी चूंडावत.

६ बेदलाना राव रामचन्द्रजी चहुआण.

७ सेलानाना महाराज उदयसिंहजी राठोड.

८ तलवाडाना टाकुर मालमसिंहजी राठोड.

९ भदेसरना राव दुलहसिंहजी चूंडावत.

१० आमेटना राव रोडसिंहजी.

तेमां मात्र आमेटवाळां राणीजीथी राजकुमार चन्दनसिंहजीनो जन्म थयो. वि–सं. १८३९ थी १८५४ सुधीमां राजराणा सुलतानसिंहजीए मेवाड देशमां मरेठाओए मचावेल महान उपद्रव वखते महाराणा अरसीजी, महाराणा हमीरसिंहजी अने महाराणा भीमसिंहजीनी बीजा कोइथी न बनी शके तेवी सेवा बजावी वि–सं. १८५५ मां कैलासवास कर्यो.

वि. सं. १८५५ मां राजराणा सुलतानसिंहजीनो कैलासवास थतां तेओना कुमार चंदनसिंहजी सादडीना राज्यासनपर विराजमान थया ए वखते तेओनी उम्मर मात्र नव वर्षनीज हती; मरेठाओए सादडी प्रान्तमां नाना प्रकारना उपद्रव तथा अत्याचारोनी शरुआत करी, पीडा पामेली प्रजा प्राण लइ अन्य स्थळे पलायन करी गइ, सादडी तावानां केटलांएक गामो तद्दन उज्जड बनी गयां. मरेठाओना वारंवार आक्रमणथी अत्यंत व्यथित थएला राजराणा चन्दनसिंहजी पहाडोनी अंदर वसवा लाग्या. मरेठाओए बे वखत सादडी उपर स्वकीय सत्ता जमावी हती अने अमुक समय सुधी त्यां राज पण कर्युं हतुं, ए अनुचित बनावनुं कारण केवळ राजराणा चन्द्रसिंहजीनी बाल्यावस्थाज हती. महाराणा भीमसिंहजी पण मरेठाओना भयथी संमूढ होवाने लीधे सादडीने कोइ पण प्रकारनी सहायता आपी शक्या नहीं, ज्यारे चन्दनसिंहजीए युवावस्थाने प्राप्त थइ स्वकीय राज्य तरफ दृष्टि करी त्यारे तेओना हृदयमां स्वर्गस्थ राजराणा अजाजी तथा मानसिंहजीनी माफक स्वदेश रक्षाना भावनो आविर्भाव थयो अने तुरतज असाधारण वीरता तेमज प्रवीणताना प्रभावथी मरेठाओने सादडीमांथी मारी काढ्या. परंतु दीर्घकाळ पर्यन्त मरेठाओए उपरा-उपर चढाइ करवाने लीधे सादडीनी आमदानी आगळ करतां घणी ओछी थइ गइ. त्रण लाख रुपीआनी वार्षीक आवक रही. वि. सं. १८६५ मां अमीरखां नामना धाडपाडु यवने मरेठाओनी साथे मळी मेवाड देशनां केटलाएक भागोमां लुंटफाट चलावी; परंतु त्यारबाद थोडेज वखते इस्ट इंडीआ कंपनीनुं समग्र भारतवर्षमां साम्राज्य जामवाथी सर्वत्र सुख शान्ति जणावा लागी, संवत १८७४, इ. स. १८१८ ना जानेवारीनी १६ मी तारीखे उक्त कंपनीए स्वरक्षित अन्य देशी रजवाडाओनी साथे करेला संधीपत्रनी माफक मेवाड साथे पण संधीपत्र कर्यो. ए कार्यमां तथा अन्य उपद्रवोमां मेदपाटेश्वरनी शुद्ध दिले सेवा बजावी राजराणा चंदनसिंहजी सादडी पधार्या; अने त्यां आव्या बाद तुरतमांज तेओनो स्वर्गवास थयो.

श्रीमान् राजराणा चंदनसिंहजीना लग्न निम्नलिखित प्रतिष्ठित राजाओनी पुत्रीओ साथे थयां हतां.

१ कानोडना अधीश रावत जालमसिंहजी सारंगदेव.

२ उदयपुर हवेलीवाळा महाराज बहादुरसिंहजी राणावत.

३ बम्बोरना अधीश ठाकोर केसरीसिंहजी चूंडावत.

४ रामपुराना राव चमनसिंहजी.

ए चारे ठेकाणानां राणीजीने कांइपण संतति थइ न हती. राजराणा चंदनसिंहजी शूरवीर, स्वामीभक्त, धैर्यवान, उदार अने दयाळु हता. ए वखतना कोइएक कविए तेओश्रीना यशनुं वर्णन करतां लख्युं छे के—

छन्द पद्धरी.

ग्वालेरपति इन्दोरनाथ, सूवा समी शमशेरसाथ;
इत फोज मरहटांकी अपार, विध विध घर लूटत करी विकार ॥१॥
चनणेश वये बालक सुजान, सब कियो मंत्र मन्त्री सआन;
ग्वालेरपतिको अनुगताम, निज बुद्धिमान भडतक्कु नाम ॥ २ ॥
वहे जामदार कहके बुलाय, चित्त आज फोज डर मिस्यो चाह;
कर डेरो जहां विस्तार कीध, लखी सर्व हाकिमी खोस लीध ॥३॥
चनणेश कल्यो यह समाचार, बनी बैठो मालिक है विचार;
तद तक्कु कहायो बचन जोर, सुनी भयो चनणसी आग सोर ॥ ४ ॥
षय है किशोर तउ छात्रि बाल, कुपि उठ्यौ भूप क्रोधा कराल;
इत तक्कु बुलाइ फोज एम, कायम करील गढ देर केम ॥ ५ ॥
सुनी गूढ मन्त्रीके समाचार, वधकरण तक्कुको किय विचार;
छितधीश कसे आवध छतीस, वणी चले सुभट जे द्वैणवीस ॥६॥
करि कोप तक्कु ते जुद्ध कीध, इक रह्यो नही परभड अवीध;
सुनी जुद्ध तक्कु भाग्यो संभार, है अन्त अनीति मध्यहार ॥ ७ ॥

करि चाकर लाये है कृपाल, सो बैठो अरि वै परमसाल;
कम सुभट जान जहि जोर कीध,द्वैबीस क्षत्रि मिलि सजा दीध ॥८॥
गो तक्कु भूप ग्वालेर द्वार, सुन करी आप पति पै पुकार;
सिंध्या कोपित भो यह सुनंत, तहां अयुत सुभट भेजे तुरन्त ॥९॥
दिन तीन जुद्ध भो अति दुसार, वै मुग्न मरहटां द्वैहजार;
लही फोज बुलाइ मुदित केर, गिरवास कियो नृप समय हेर ॥१०॥
मरहटां अमलकर गढ मँझार, चनणेश समय लखि फिर सँभार;
शतपंच सुभट दशशत निषाद, मलि क्रोध उग्रसर लुपि मृजाद ॥११॥
कनकाग्नि जननके अंग बीच, कुपि कर्यो भूपतहँ कलह कीच;
अरि मार किये सब छार ओक,मुरि गये मरहटां मांग मोक ॥१२॥
आपनो लियो आसेर आप, पोरषरू शामध्रमको प्रताप;
यह रीति बार कै जुद्ध जीत, राखी नृप आदूवंशरीत ॥ १३ ॥
सम्पतरु बिपती एकसार, पती इन्दु दुतियाके आकार;
कै आप बांहबल जुद्ध कीध लगि स्वारथ जीवन ओट लीध ॥१४॥
गजपुरी अराजक बिचलगोम, जहां रखी भूमी नृप आप भोम. ॥

राजराणा चंदनसिंहजीनो देहान्त थनी वखते सादडीनी दशा अत्यंत शोचनीय हती. अंबाजी, बालाराव आदि मरेठाओना अपरिमित अत्याचारोथी तेमज नवाब अमीरखा आदि लूंटाराओनी लूंटफाटने लीधे दुर्दशाने प्राप्त थयेली सादडी तरफ द्रष्टि करतां कोमळ प्रकृतिना मनुष्योने अश्रुपात थतो हतो. आवक तद्दन ओछी थइ गइ हती. राजराणा चंदनसिंहजीने कंइ पण संतान न होवाना कारणने लीधे कुंडळाधीशना वंशमांथी मकोडाना ठाकोर दोलतसिंहजी सादडीना केटलाएक सरदारोनो संमतिथी राज्यासनपर आरूढ थया. ए वखते घणाखरा खुशामतीआ अने खाउकण सेवकोने तो संतोष प्राप्त थयो, परंतु प्राचीन सरदारो अने अन्तःपुरना निमकहलाल

नोकरोथी ए सहन थइ शक्युं नहि, ताणा, झाडोळ अने कुंडला के जे सादडीना समोपवर्ती भायातो हता; तेमां कोइने एकथी वधारे राजकुमार न हता, के जेने सादडीना राज्यासन उपर बेसाडी शकाय, तोपण श्रीमती राणीजीसाहेबे तथा प्रतिष्ठित सरदारोए साटोलाना रावजी साहेबने बोलावी एक दत्तक लेवा माटे खानगी सभा भरी एवो निश्चय कर्यो के देलवाडाधीश राज कल्याणसिंहजीना बे कुमार छे, तेमांथी एकने सादडीना राज्यसिंहासन उपर बेसाडवा. ए वात ज्यारे द्रढ थइ त्यारे केटलाएक सरदारो देलवाडा गया, अने राज कल्याणसिंहजी पासेथी तेओना नाना कुमारने सादडीना राज्यासनपर नियत करवानी परवानगी मेळव्या पछी महाराणा भीमसिंहजी आगळ जइ अरज गुजारी के देलवाडाना नाना कुमार कीरतसिंहजीने सादडीनी गादीए लेवानो अमोए तथा राजराणा चंदनसिंहजीना राणीजी साहेबे निश्चय कर्यो छे तो आप तेओने उदयपुर लाववा माटे प्राचीन रीति प्रमाणे महाराज कुमार अमरसिंहजीने देलवाडे पधारवानी आज्ञा आपो, महाराणानी आज्ञाथी कुमार अमरसिंहजी देलवाडे पधार्या अने कुमार कीरतसिंहजीने उदयपुर लाव्या, तथा " **सहेलियोंकी वाडी** " नामनुं स्थळ के जे वर्तमान मेदपाटेश्वरनी द्रष्टिए अपूर्व शोभाने धारण करी रह्युं छे तेमा उतारो आप्यो, श्रीमान् महाराणा भीमसिंहजी प्राचीन रीतिने अनुसरी स्वर्गस्थ महाराणानो शोक जाहेर करवा उक्त स्थळे पधार्या अने बीजे दिवसे आवी राजराणा कीरतसिंहजीने तलवार बंधाववानी क्रिया करी. त्यारबाद द्वितीय राज्यराणा कीरतसिंहजीए तुरतमांज सादडीना सरदार सलूंबराधीश, कुरावडाधीश तथा साटोलाधीश के जे पोताना मातुल पक्षमां हता तेओना सैन्यनी सहायताथी सादडी तरफ प्रयाण कर्युं. कृत्रिम राजराणा दोलतसिंहजीए ए समाचार सांभळतांज राज्यचिह्ननो परित्याग करी " सकोटा " नो मार्ग साध्यो, जेथी राजराणा कीरतसिंहजी कांइ पण उपाधि सिवाय वि. सं. १८७४ मां सादडीना राज्यासनपर विराजमान थया. कृत्रिम राजराणा दोलतसिंहजीए मात्र छ महिना सादडीनुं राज्यसुख भोगव्युं. परंतु तेओनी राज्यकाजमां तेमज देशथी अनभिज्ञता होवाने लीधे आसपासना सरदारोए सादडी तादाना केटलाएक गाम पचावी पाड्यां, ऋणलाखने बदले राज्यनी आवक नवहजारनी थइ गइ. राज्यना जीवनरूप आमदानीना क्षयने लीधे राजराणा कीरतसिंहजी पर करज वधी गयुं ए वखते योग्य कार्यभागीओनो अभाव हतो, प्रतिष्ठित अने बुद्धिमान सरदारो रणभूमिमां काम आवी गया हता, पोतानी अवस्था मात्र दश वर्षनी हती, नाणांनी तंगीने लीधे केटलांएक गामोने वटांतर आपी लेटणीना रुपिया भरवामां आवता हता.

श्रीमान् राजराणा कीरतसिंहजीनो प्रथम विवाह वेदलाधीश रावत केसरीसिंहजीनां कुंवरी साथे तथा बीजो विवाह बांसोना राव अजीतसिंहजी सगतावतनां कुंवरी साथे थयो. तेमां वेदलावाळा राणीजीथी वि–सं. १८८६ ना फागणवदी १३ ने रविवारे राजकुमार शिवसिंहजीनो, वि–सं. १८८८ ना भादरवावदी २ ने दहाडे कुमार फतेसिंहजीनो, संवत १८९२ ना पोषवदी १२ ने दिवसे कुमार जयसिंहजीनो अने वि–सं. १८९५ ना चैत्रवदी ४ ने दहाडे कुमार उमेदसिंहजीनो जन्म थयो. तथा एज राणीजीथी प्रथम चमनकुंवर, द्वितीय रुपकुंवर अने तृतीय दोलतकुंवर नामे पुत्रीओए जन्म लीधो. तेमां प्रथम कुंवरीना लग्न वि–सं. १९०४ मां वेगमें ठाकोरना कुमार माधवसिंहजी साथे थयां अने ए वि–सं. १९१७ मां पोताना पतिनो स्वर्गवास थतां तेओनी साथे सती थयां. द्वितीय बाइसाहेब रूपकुंवरनां लग्न वि–सं. १९०८ मां कानोडाधीश रावत उमेदसिंहजी साथे थयां हतां अने त्रीजा बाइसाहेब दोलतकुंवरनो विवाह मेदपाटेश्वर श्रीमान् महाराणा शंभुसिंहजी साथे करवामां आव्यो हतो. संवत १९०७ मां श्रीमती राणीजी चौहाणीजीना द्रव्यथी कुंडनी समीपे एक मंदिर तथा धर्मशाळा बनाववामां आवी. मंदिरनुं नाम " कीरत शृंगारविहारीजी " राखवामां आव्युं, अने एना वास्तु महोत्सव वखते मेवाडना मोटा मोटा प्रतिष्ठित सरदारो सादडीमां उपस्थित थया हता. संवत १८८५ ना महाराणा भीमसिंहनो कैलासवास थतां तेओना कुमार जवानसिंहजीए मेदपाटेश्वरनुं पद धारण कर्युं. ए वखते राज्यनो खजानो तदन खाली होवा उपरांत राज्य माथे वीशलाख रुपीआनुं करज हतुं. वि. सं. १८९३ मां राजराणा कीरतसिंहजी विजयादशमीना प्रसंग उपर उदयपुर पधार्या. तेओनी स्वारीना अश्वनी मेदपाटेश्वरे मुक्तकंठे प्रशंसा करी. पोताना स्वामीनी आंतरिक इच्छाने समजी गएला राजराणाए ए अश्व महाराणानी सेवामां अर्पण कर्यो ते वखते महाराजा जवानसिंहजीए राजराणा पासेथी खंडणी तरीके लेवामां आवता रुपीआ १८०० मांथी रुपीआ आठसो निरंतरने माटे माफ कर्या. वि. सं. १८९५ मां ए मेदपाटेश्वरनो स्वर्गवास थतां बागोरथी दत्तक आवेला सरदारसिंहजीए महाराणानुं पद धारण करी उदयपुरना राज्यासनने अलंकृत कर्युं.

तेणे मात्र चारज वर्ष राज्य कर्युं. संवत १८९९ मां तेओनो स्वर्गवास थतां तेओना लघुबन्धु सरुपसिंहजी मेदपाटेश्वर बन्या. संवत १९१४ इ. स. १८५७ मां भारतीय गवर्नमेंटना हिंदु

---

१ कुमार फतेसिंहजी देलवाडाधीश राजराणा वैरीसालजीनो अपुत्र वि–सं. १९१२ मां देहांत थतां तेओना दत्तक बनी देलवाडानी गादीए बेठा.

तथा मुसलमान सैनिकोए महा भयंकर बळवो कर्यो. हजारो युरोपीअनो तेओना हाथथी मराया, तेमज घायल थया. ए वखते जेटला युरोपीअनो उदयपुर तथा सादडीमां आव्या हता, तेओनुं उत्तम रीते रक्षण करवामां आव्युं हतुं. एज वर्षना कोइएक मासमां राजराणा कीरतसिंहजीने मेदपाटेश्वरे लखेलो पत्र मळ्यो ए पत्रनो आशय ए हतो के "मेवाडना पोलीटीकल एजंट केपटन शोर साहेबनी संमतिथी निमचहेडा नामना परगणानो विजय करवा माटे उदयपुरथी सैन्य मोकलवामां आव्युं छे, अने ए सेनाना नायकनुं पद कोटनशोर साहेबेज स्वीकार्यु छे. एटला माटे आप पण रणांगणमां जइ तेओने सहायता आपशो." राजराणा कीरतसिंहजीनी वृद्धावस्था होवाने लीधे तेओना राजकुमार शीवसिंहजी, जयसिंहजी तथा उमेदसिंहजी सेना सहित निमलहेडाने जीतवा माटे जइ पहोंच्या; अने शोर साहेबना सहायक बनी प्रचंड पराक्रमथी स्वल्प समयमांज विजय मेळव्यो. त्रण वर्ष पर्यन्त महान् शौर्यनी साथे निमचहेडामां मेदपाटेश्वरनो विजयवावटो फरकाव्यो. भारतवर्षनो राजविद्रोह शान्त थयां छतां भारतीय गवर्नमेन्टे कोण जाणे क्या कारणथी अथवा केवी नीतिने आधारे निमचहेडानुं परगणुं मेदपाटेश्वरना अधिकारमांथी छीनवी लइ त्रण वर्षना कर सहित टोंकना नवाबसाहेब वजीरुद्दौलाने पाछुं अपावी दीधुं. संवत १९२२ ना भादरवा वदी ६ ने दिवसे राजराणा कीरतसिंहजीनो कैलासवास थतां तेओना पाटवीकुमार शीवसिंहजी सादडीना राज्यासनपर विराजमान थया. स्वर्गस्थ राजराणा परम वैष्णव, सहनशीळ, तथा दयालु स्वभावना हता. तेओनी प्रशंसा करतां कोइएक कविए कहेल छे के—

"कवित्त"

मनको महेश शेष सुमरण द्योस निसा,
प्रजापति पालवेमें पृथुके समानको ॥
सत्य धर्म शीलता समाधि इष्ट समरनमें,
जनक समान जोग भोगके विधानको ॥
देखके प्रताप सुरराजके विभा समाज,
जानत जहान प्रभा भूप तन आनको ॥
कीरत नृपाल प्रतिपाल कवि विप्रनको,
दानको दधीच जती गोरखसे ज्ञानको ॥

कृत्रिम राजराणा दोलतसिंहजी सादडीथी चाल्या गया पछी तुरतमांज तेओना पुत्र संग्रामसिंहजी तथा प्यारसिंहजी राजराणा कीरतसिंहजीनी पासे आव्या हता. श्रीमान् कीरतसिंहजीए बन्नेनो अपूर्व आदर सत्कार कर्या बाद एकने चाहखेडी अने बीजाने लालपुरा नामनुं गाम आप्युं हतुं के जेनो उपभोग अद्यापि तेना संतानो करे छे.

राजराणा शीवसिंहजीनी अवस्था राज्यासनपर बिराजमान थती वखते लगभग बार वर्षनी हती. तेओने सर्व रीते योग्य जाणी, वि. सं. १९०८ मां स्वर्गस्थ राजराणा कीरतसिंहजीए समग्र राजकारोबार सोंपी दीधो हतो. ए वखते राज्यनी दुर्दशा हतो तोपण प्रविगता अने धैर्यथी प्राणीमात्रना कष्टोनुं निवारण करी राज्यराणा शीवसिंहजीए देश विदेशमांथी प्रजानो संग्रह कर्यो अने पोताना राज्यमां केटलाएक नवां गामो वसाव्यां. हजारो कुवा खोदावी पृथ्वीनुं सिंचन कराव्युं जेथी थोडाज वखतमां राज्यनी आवक नवहजारनी हती तेने बदले एक लाखनो थइ गइ. डाकु तथा लुंटारा लोकोए रहेवा माटे पर्वतनी अंदर विविध स्थानो बनावी राख्यां हतां. राजराणा शीवसिंहजी निरंतर पोताना लघुबन्धु सहित घोडे चडी पहाडो तेमज राज्यनां नानां नानां गामोमां रात्रि दिवस सफर कर्या करता. तेओनां तेजस्वी शरीरनो प्रचंड प्रभाव जोइ डाकु तथा लुंटारा सादडीनी सीमानो परित्याग करी अन्य स्थळे पलायन करी गया. अने जे अवशेष रह्या हता, तेओने योग्य शिक्षा आपी बंदीवान बनाववामां आव्या. राजराणाना ए उत्तम प्रबंधने जोइ प्रजा मुक्त कंठे प्रशंसा करवा लागी. तेओनो प्रथम विवाह सैलाणाना महाराजा तख्तसिंहजीनां पुत्री एजनकुंवर साथे थयो हतो. त्यारबाद वि. सं. १९०९ ना फागग वदि २ ने दिवसे तेओ मोटी धामधुम साथे कानोडना अधीश राव अजीतसिंहजीनां पुत्री रुपकुंवरने परण्या अने एक महिना पछी अर्थात् चैत्र वदि २ ने दहाडे थाणाना राव गंभीरसिंहजीनां पुत्री रुपकुंवर साथे तेओनां लग्न थयां. त्यारबाद तुरतमांज पोते उदयपुर पधार्या. श्रीमान् महाराणा सरुपसिंहजीए तेओनी योग्यता तथा सद्गुणोने निहाळ्या बाद पोतानी पासे रहेवा आज्ञा आपी; अने राजराणाने वंशपरंपरा माटे पूर्वना मेदपाटेश्वर तरफथी आपवामां आवेल प्रतिष्ठानुं प्रीतिपूर्वक परिपालन कर्युं. श्रीमान् शीवसिंहजीनी सेवाओथी अत्यंत संतुष्ट थएला महाराणा सरुपसिंहजीए तेओने गुंदलपुर, हनुमंतीया, सैमीलीया, करमला, तथा लवासीया आदि गामो के जे राज्यऋणने बदले पोताने त्यां गोरवी हतां ते ऋणना रुपीया लीधा सिवाय पाछां आपी दीधां, निमचहेडाना विजय वखते क्रोटनसोर साहेबे राजराणा शीवसिंहजीनी युद्धपटुता जोइ प्रसन्नता पूर्वक कह्युं हतुं के "सादडी राज्यनां जेटलां गामो निमचहेडाना परगणां

नीचे दबावेलां छे, ते निरंतरने माटे आपना अधिकारमां रहे एटला माटे हुं आपने एक लेख लखी आपुं छुं " परंतु ए वखते ए वातनो अस्विकार करी श्रीमान् शीवसिंहजीए शोर साहबने कह्युं के " जो निमवहेडानुं परगणुं मेदपाटेश्वरना अधिकारमां प्राप्त थशे तो तेओ पनी मेळे पोताना करकमलथी अमारा गामो अमने अर्पण करशे. " कोटनशोरसाहेबे शीवसिंहजीनी वीरता अने योग्यता माटे मेदपाटेश्वर माथे सुंदर शब्दोमां एक पत्र लखी मोकल्यो हतो. ज्यारे शीवसिंहजी उदयपुर पधार्या त्यारे महाराणा सरुपसिंहजी समक्ष कोटनशोरसाहेबे तेओनी घणीज प्रशंसा करी हती. प्रसन्न थएला मेदपाटेश्वरे एज वखते राजराणा कीरतसिंहजी उपर पत्र लखी कुमारनो योग्यता संबंधी पोतानो हर्ष प्रगट कर्यो हतो अने आमेरा, बस्थोरा तथा रेला आदि गामो जे राज्यना ऋणने बदले गीरवी हतां ते फरी माडडीने उगर दामे सोंपवामां आव्यां हतां. निमवहेडाना युद्धनुं वर्णन करतां कोइएक कविए निम्नलिखित सोरठाओ कहेला छे.

सोरठा

उडी झाट खग ओक, राहवहुं झगडो रचै ।
झट खडा असझोक करण प्रतै कीतातणां ॥ १ ॥
राण लखै फुरसाण, सुकरां कीरतसिंहरै ।
आप भुजा अवसाण, है लैनो नीमवाहिडो ॥ २ ॥
सुण फरमाण सकाज, कुलदीपक सेवो कुंवर ।
उस लियो जुध आज, पिता हुकमपिन धामपर ॥३॥
सेवो जसो सधीर, ऊमेवो रजवट अडग ।
वरदाई वरवीर, भ्राता त्रिखंडे भुंडज ॥ ४ ॥
उत वीपणा अपार, कवजै गढ तोपाकनैं ।
उडी रीठ उणवार गोला गोली गयणगज ॥ ५ ॥
असमर सचौ अनूप, तोफाजर दिन रात त्रय ।
सेवै गरुण सरुप, कर अहिण विषधर कलम ॥ ६ ॥

मेघ चमू सम मार, कर कत्तह लीधो किलो ।
आदूघर आचार, सो ब्रद अज वाणे सवा ॥ ७ ॥
सुनी खबर सारूप, करी फतह सेवे कुंवर ।
जुधरे रथधर जूप, कलह कलण वाहर कढे ॥ ८ ॥
श्रीमुख हुकम सुणाय, शोरसाहेबप्रति वचन सुण ।
मेदपाटधर मांहि सामधरम भण सादडी ॥ ९ ॥

श्रीमान् राजराणा शिवसिंहजी हमेशां प्रजाना हितमां प्रवृत्त रहेता, तेओए राज्यप्रासादोथी थोडे दूर पूर्व तथा उत्तर दिशामां आवेल एक महान् तळाव के जेनो बंध वर्षाकाळे सदैव छिन्नभिन्न थइ जतो तेनो फरीथी वि. सं. १९१७मां एवो मजबूत बंध बंधाव्यो के जे अद्यापि शिथिल थवा पाम्यो नथी. एज संवतमां राजधानीनी दक्षिण तरफना पर्वतोमां "झरना" नामना नाळांनी समीपे शिवसागर नामे एक सुशोभित तळाव तैयार कराव्युं अने एथी अखिल प्रजाने असीम आनंद प्राप्त थयो. वि. सं. १९१९ मां नाहराना दरीखाना उपर त्रण माळनी महेलात बनावी अने ते संपूर्ण थतां एक महान् उत्सव कर्यो, ए उत्सवमां देलवाडा, कान्होड, वान्सी, कुण्डा, साटोला, अठाना, ताणा, आकोला तथा लूंणदा आदिना अधीश्वरो अतिथि बनी आव्या हता. राजराणा शिवसिंहजीए तेओना आतिथ्यमां उदार दिलथी हजारो रुपिया खर्च्या हता. वि. सं. १९२२ना भादरवा वद ६ना दहाडे धर्ममूर्ति राजराणा कीरतसिंहजीनो कैलासवास थतां शोकसमुद्रमां गरकाव थएला श्रीमान् शिवसिंहजीए शोकसूचक वस्त्रो धारण कर्यां अने मंत्रीमंडलना अत्यंत आग्रहथी चार मास पछी अर्थात् मागशर शुदि १५ शनिवारे सादडीना राज्यासनपर विराजी प्रजा वर्गने प्रमोद आप्यो. मेदपाटेश्वरने राजकुमार न होवाथी वि. सं. १९२३ मां गजसिंहजी सादडी पधार्या अने श्रीमान् शिवसिंहजीने उदयपुर पधरावी गया. महाराणा शंभुसिंहजीए पहेले दिवसे सादडीनी हवेलीए पधारी स्वर्गस्थ राजराणा संबंधी शोक प्रदर्शित कर्यो अने बीजे दिवसे फरी, ए स्थळे आवी नूतन राजराणाने विधिवत् तलवार बंधावी. त्यारबाद वि. सं. १९२७मां ज्यारे अजमेरनी अंदर लॉर्ड मेयोए आम दरबार भर्यो त्यारे महाराणा शंभुसिंहजी त्यां पधार्या हता तथा राजराणा शिवसिंहजीने पण साथे लइ गया हता. अजमेरथी आव्या बाद मेदपाटेश्वर पासेथी तीर्थयात्राए

जवानी आज्ञा लइ राजराणा शिवसिंहजी प्रयाग काशी, गया, जगन्नाथ तथा व्रज विगेरेनी यात्रा करी सात महिने सादडीमां पधार्या. वि सं. १९२८ ना माघ शुदि १३ ने दहाडे कानोडवाळां राणीजी साहेबे पुष्कळ द्रव्यना व्यय करी राज्यना मुख्य द्वार पासे एक धर्मशाळा तथा एक मनोहर मन्दिर बनाव्युं अने तमां श्री रामचंद्रजी, लक्ष्मणजी तथा जानकीजीनी सुशोभित मूर्तिओ स्थापी. उक्त प्रतिमाओनी प्रतिष्ठा वखते गोगूदा, कानोड अने देलवाडाना अधीश्वरो सादडीमां पधार्या हता. वि. सं. १९३१ मां श्रीमान् महाराणा शंभुसिंहजीनो स्वर्गवास थयाना शोकजनक समाचार मळता राजराणा शिवसिंहजी अत्यंत दिलगीर थया. कारणके स्वर्गस्थ महाराणा परम सुशील प्रकृतिना, राजकाजमां निपुण तेमज पोताना स्नेही थता हता तेओना अमल दरम्यान मेवाड देशमां कंइ पण उपद्रव थवा पाम्यो न हतो; तेओ पाछळ बागोरनरेश शक्तिसिंहजीना कुमार सज्जनसिंहजी मेदपाटेश्वर बन्या. शक्तिसिंहजी महाराणा शंभुसिंहजीना पितृव्य थता हता.

राजराणा शिवसिंहजीने संतति नहि थवाना कारणथी तेआए वि सं. १९३२ मां पोताना न्हाना भाइ महाराज नाथसिंहजीने दत्तक लीधा अने तेओने राज्यनां घणाखरां कार्यो सुप्रीत कर्यां अने पोते अवशेष आयुष्यने पारमार्थिक कार्योमां व्यतीत करवा लाग्या.

वि. स. १९३२ मां राजमंदिरथी पूर्व दिशा तरफ घणा द्रव्यनो व्यय करी चतुर्भुजनाथनुं मंदिर बनाव्युं, ए मंदिरनी समीपे एक धर्मशाळा तथा एक वापिका तैयार करावी. एजवर्षमां तेलानावाळा राणीजी साहेब तरफथी श्रीकृष्ण चंद्रनुं मंदिर तथा एक धर्मशाळा अने महाराज उमेदसिंहजी तरफथी श्री द्वारिकाधीशनुं मंदिर तैयार कराववामां आव्युं. माघ शुदि पंचमीने दिवसे ए त्रणे मंदिरोनी एक साथे प्रतिष्ठा थइ; तेमज संवत १९३३ नी आखेर कानोडवाळा राणीजी साहेबे सादडीथी एक गाउ दूर कानोडना मार्गमां एक वाव बनावी. ए तमाम उत्सवोमां कानोड, बांसी अने देलवाडा आदिना अधीश्वरोए भाग लीधो हतो. श्रीमान् राजराणा शीवसिंहजीए चतुर्भुजनाथना मंदिरनी प्रतिष्ठा वखते कविकोविदोने हजारो रुपियानुं दान आप्युं हतुं अने घणा प्रतिष्ठित सरदारोने तथा कार्यभारीओने आशरे चाळीस ग्राम इनाममां वहेंची आप्यां हतां. तेओना लघु बन्धु महाराज जयसिंहजी तथा उमेदसिंहजी पण महा सुशील धर्मनिष्ठ अने पराक्रमी हता.

चतुर्भुजनाथजीना महोत्सव वखते कविओए राजराणा शीवसिंहजीनी उदारता तथा धर्मनिष्ठता विषे नीचे मुजब वर्णन करेलुं छे.

दोहा.

आग्नि इशद्दगग्रह शशि १९३३, सम्वत जान हु सो'य ।
माघशुक्ल तिथि छठ शनी, जग मंदिर स्थिति जोय ॥ १ ॥
उत्र भाद्रपद जोगशिव, कोणुव कर्ण रु मीन,
रस घटिका पुण सात पुण, कृपासिंधु स्थित कीन ॥ २ ॥

छन्द त्रोटक.

द्विजराज महूरत शुद्धदियो । कर मन्त्र महोत्सव काजकीयो ॥
कवि विप्र बुलाय सुनूतकिते । जिनदानादिये गजवाजजिते ॥
कुल भ्रात सजे नृप उच्छवकुं । सकुटुम्वबुलायलिये सबकूं ॥
निज सानुज आपफतो नृपति । पुन आय उमेदकॉनोडपति ॥
सगतावत रावत मानसही । महाराज भुणास सुबाघमहीं ॥
शशिवंश जु देवियसिंह सरै । कुलतां बिच यज्ञ अनेक करै ।
दधिसिंह गम्भीर हंसी दरसे । जग आप जहां तख्तें लजसें ॥
दुलहो मधुसूदन देख दिपै । थरुता शिव सानिज हाथ थपै ॥
जस राज रु भ्रात उमेद जसा । तनुपै निज रायसिंह तसा ॥
और जालिमसिंह उजाग रहैं । सुरताण महा बुधिसागरहैं ॥
धन आदि बढौ पुनिया घरको । शुभथान बनाय प्रमेश्वरको ॥
त्रिभवेश महेश गुणेश तहा । जगदम्ब रवि हनुमन्त जहां ॥
जिनके गुण गावत शेष जसा ॥ सुरथापन सप्त किये सपसां ॥
कवि आय सुदेश विदेशनके निज देवित दुःख हरै मनके ॥
विधि व्यंजन भोजन नैकवने गन विप्र सम्वन्धी जिमाय घनै ॥
द्विज कोटिक हाटक दान दियो । भुवमें जयकार उचार भयो ॥

पचलाखरु द्रव्य जु दीध प्रथी । रुस रीत उछाह सुदासरथी ॥
रचि केवल एक सुशेष रह्यो । कलिमें यज्ञ पूरण आप कियो ।
कहि सादुल चातुर यहै कविता । रह्यो अम्बर चन्दजिते रविता ॥ ३ ॥

दोहा.

दाम खरच किय लाख द्वै, सुत कीरत शिवराज
आलय त्रय वापी सचव, कीने रुचि सब काज ॥ ४ ॥
सुर भूसुर पंडित सुकवि, आमे जज्ञ उदार ।
विधि आशिष दे तृप्त ह्वै, पुन स्वस्थान पधार ॥ ६ ॥

वि–स. १९३५ मा श्रीमान् महाराणा सज्जनसिंहजी स्वदेश यात्रा करवा उदयपुरथी निकळी वांटणा, कानोड तथा वासी आदि स्थळे थइ मागसरशुद पाचमने दहाडे वडीसादडी पधार्यां, राजराणा शीवसिंहजीए तेओनुं उत्तम रीते आतिथ्य कर्युं. तेओनो अपूर्व स्वामीभक्तिथी प्रसन्न थएला मेदपाटेश्वरे सादडीना राजतंत्रनो मुक्त कंठे प्रशंसा करी अने त्यां वे दिवस विविध विनोद कर्या बाद साटोलाने मार्गे थइ छोटी सादडी तरफ प्रयाण कर्युं. संवत् १९३९ ना माघ मासमां पोताना नाना भाइ देलवाडा नरेश राजराणा फतेसिंहजीना पुत्रीनो विवाह होवाथी श्रीमान् राजराणा शीवसिंहजी त्या पधार्या; परंतु तेओने प्रथमथीज खासी तथा पार्श्वशूळना रोगे दबावेला हता. मोटा मोटा वैद्योने बोलाववामा आव्या परंतु कोइनुं औषध रोगने हठावी शक्युं नहि, दिनप्रतिदिन वृद्धि पामता व्याधिने लीधे माघशुदि चोथने दिवसे तेओ नामदारनो कैलासवास थयो.

श्रीमान् शीवसिंहजीना शबनी दहनक्रिया देलवाडाथी त्रण माइलने अंतरे एकलिंगजीमां थइ अने अने ए स्थळे तेओना प्रतापी पुत्र राजकुमार रायसिंहजीए पधारी संगेमरमरनो एक सुंदर छत्रतरो बंधाव्यो के जे यावत्चंद्रदिवाकर राजराणा शीवसिंहजीना स्मारक चिन्ह तरीके अस्तित्व भोगवशे.

वि. स. १९३९ मा पिताना स्वर्गगमन पछी राजकुमार रायसिंहजी त्रीजाए राज्यासनपर बिराजमान थइ सादडीनी प्रजानुं संरक्षण करवा मांड्युं. तेओनो जन्म वि. सं. १९१६ मां थयो हतो. बाल्यवयथीज संस्कृत विद्यानुं अध्ययन करी तेओ नामदारे उत्तम प्रकारनी योग्यता मेळवी

हती अने राजकाजमां निपुण थवा माटे मनुस्मृति आदि राजनैतिक ग्रन्थोनुं पण अच्छी रीते अवलोकन कर्युं हतुं. वर्णाश्रमना धर्मनुं शिक्षण तो शरुआतमांज संपादन करी लीधुं हतुं. स्वर्गस्थ राजराणा शीवसिंहजीए वि. स. १९३२ मां उक्त राजकुमारने महानुभाव जाणी मोटा ठाठमाठथी राजनी पदवी अर्पण करी हती, तथा वि सं. १९३३ मां कुरावडना रावत रत्नसिंहजीनां कुंवरी साथे तेओनां मोटी धामधूम साथे लग्न कर्यां हतां अने छेवटे तेओने संवत १९३५ मां न्यायाभुवननो अधिकार आप्यो हतो. ए अधिकार प्राप्त थतांज श्रीमान् रायसिंहजी प्रशंसनीय न्याय प्रदानथी पितानी प्रसन्नता मेळवी एज वर्षमां मारवाड प्रान्ते भादराजनना ठाकोर संग्रामसिंहजीना कुंवरी साथे परण्या तथा एक राजकुमारप्रासाद निर्माण करावी तेने राजनिवास नाम आप्युं. वि. सं. १९३७ मां उदयपुरथी दक्षिण दिशा तरफना पहाडोमां निवास करनारी भील आदि जातिओए भयंकर रुपे राजविद्रोह करी केटलाएक राज्यना मनुष्योने मारी नांख्या ए समाचार सांभळतां मेदपाटेश्वरे कवि राजा श्यामलदासजी, पोताना मामा मानसिंहजी तथा मी. लोनर्गनने सेनानायक बनावी ऋषभदेवजी तरफ मोकल्या; अने भीलोमां प्रबळ राजविद्रोहनो संभव समजी पोताना प्रतिष्ठित सरदारोने सेना सहित उदयपुरमां हाजर थवाने माटे हुकम लखी मोकल्या. ए हुकम सादडीमां पण आव्यो, परंतु ए वखते राजराणा शीवसिंहजी अस्वस्थ होवाने लीधे राजकुमार रायसिंहजी, पोताना लघुबन्धु सुलतानसिंहजी तथा पितृव्य महाराज उमेदसिंहजी सहित चारसो सुभटोने साथे लइ चैत्र शुदि सातमने दहाडे उदयपुर तरफ प्रयाण कर्युं. त्यां पहोंच्या बाद श्रीमान् राजकुमार रायसिंहजीए मेदपाटेश्वरने सविनय प्रार्थना करी के " हुं तथा मारा पितृव्य सैन्य सहित रणक्षेत्रमां जवा तैयार छीए. आप हुकम आपो ते स्थळे हाजर थइए. " परन्तु मेवाडनी सेना तथा भीलोनी वच्चे केटलाएक वखत सुधी संधिपत्र थवानो संभव जाणी मेदपाटेश्वरे तेओने उदयपुरमां रहेवानी आज्ञा आपी. त्यारबाद एक महिना पछी पडूनापालना भीलोए फरी राजविद्रोह कर्यांना समाचार सांभळी मेदपाटेश्वरे राजकुमार रायसिंहजीने उक्त राजविद्रोहीओनुं दमन करवानी आज्ञा आपी.

संवत १९३७ ना वैशाख शुदि ७ ने दिवसे श्रीमान् राजकुमार रायसिंहजी अश्वारूढ थइ पधारवानी तैयारीमां हता, तेवामां मेदपाटेश्वर तरफथी द्वारपाळे आवी अरज करी के पडूनापालना भीलोए राज्यनी आज्ञानो स्वीकार कर्यो छे, माटे हवे आपे पधारवानी जरुर नथी. मेदपाटेश्वरे तेओनो उत्साह तथा पराक्रम जोइ श्रीमान् रायसिंहजीने

एक अश्व तथा घणाज किंमती आभूषण अने तेमना लघुबन्धुने तथा तेमना पितृव्य महाराज उमेदसिंहजीने घणोज किंमती पोषाक आप्यो. स्वल्पसमय पछी श्रीमान् राजकुमार रायसंहजी मेदपाटेश्वरनी आज्ञा लइ सादडी पधार्या. आ वर्षमां कुरावडनां श्रीमती राणीजीसाहेबे पुत्रीने जन्म आप्यो. संवत १९३९ ना माघशुदि ४ ने दिवसे राजराणा जीवसिंहजीनो स्वर्गवास थतां कुमार रायसिंहजी राज्यासनपर विराजमान थया. राज्यासन उपर बेसतांज श्रीमान् राजराणा रायसिंहजीए मूजवा, पारशोलीगढ, करमाला, गूंदलपुर, आकोदडा अने सादडी नामना छ जिल्लाओमां जुदां जुदां न्यायमन्दिर स्थाप्यां. तेमज एक सदर मेजीस्ट्रेट, दिवानी केसोना चुकादा माटे मुन्सफ, डाकू जातिओनी देखरेख राखवा माटे इन्सपेक्टर तथा शहेरनी संभाळ माटे कोटवाळ अने पोलीसो नियत कर्या, ए तमामनुं काम तपासवा माटे एक खासपेशीनी कचेरी तैयार करावी; ए उपरांत माल-विभाग तथा पृथ्वी-कर वसुल करवानो प्रबंध अने राज्यकोषनी आवक जावक राखवानो तथा तपासवानो उत्तम प्रकारे प्रबन्ध कर्यो.

आजकाल केटलाएक राजाओ कार्यभारीओना रमकडां रुप बनी राज्यनो समग्र भार मंत्रीओ माथे नाखी दे छे अने पोते विषयानंदमां निमग्न बनी प्रजा सुखी छे के दुःखी तेनो तपास पण करता नथी; परंतु राजराणा रायसिंहजीतो परम नीतिज्ञ, स्वधर्म रक्षक, प्रजापालक अने गंभीर प्रकृतिवाळा हता; तेओ निरंतर प्रभातमां चार वजे जागृत थइ पोणापांच वज्या सुधीमां शारीरिक शुद्धि अर्थे कराती आवश्यक क्रियाओथी निवृत्त थइ जता, पोणापांचथी सात वज्या सुधी नित्य नियममा प्रवृत्त थता तेमां प्रथम सगुण इशनी उपासना करी पछी विधिपूर्वक पंच महायज्ञ करता, सातथी नव वज्या सुधीमां आमदरबारमां विराजता. ते वखते समग्र सरदारो तथा कार्यभारीओ हाजर रहेता; अने पोते न्यायाधीश बनी प्रजाने न्याय आपता तेमज दिवानी, फोजदारी खासपेशी, गिरदावली, कोटवाली अने जील्लाधीशोनी अपीलो सांभळी तथा तेओना कार्यनुं निरीक्षण करी योग्य हुकम फरमावता नीचेनी अदालतमां जेने बराबर न्याय न मळ्यो होय अथवा जे अत्यंत व्याधि ग्रस्त होय तेओने अरजदार तरीके ए वखते पोता पासे आववानो छुट आपवामां आवती हती; अरजदारनी अरज उपर पोते पुरेपुरुं लक्ष आपी योग्य फेंसलो आपता. नव वज्या पछी चतुर्भुजनाथजीने मन्दिरे दर्शनार्थे पधारता अने त्याथी पाछा वळती वखते निरंतर अश्वशाळानुं निरीक्षण करता, त्यार बाद न्हाना भाइओ तथा प्रतिष्ठित सरदारो सहित सवा दश वज्या सुधी भोजन करता, सवा दशथी अगार वाग्या सुधी अन्तःपुरमां पधारी माताओना

दर्शननो लाभ लेता, अग्यारथी साडाबार वज्या सुधी अमात्य मंडळी साथे राज्यना अन्तरंग कार्योनो विचार करता, साडाबारथी बे वज्या सुधी शयन करता, बेथी चार वज्या पर्यन्त माल विभागना अखिल कार्योनुं अवलोकन करता, चारथी पांच वज्या सुधी वायु सेवनार्थ (हवा खावा) पधारता, ए वखते कदाच सिंह आदि हिंसक जीवोना समाचार मळी जाय तो शिकारे पण पधारता; जो के केटलाएक आन्तरिक व्याधिओने लीधे तेओनुं शरीर पण दुर्बल हतुं तो पण शिकारे जतां कोइ कोइ वखते अश्व वगर पर्वत आदि विकट स्थळोमां दश गाउ सुधीनी मजलकरी शकता हता. सात वजे हवा खाइ पाछा आमदरवारमां पधारता, ए वखते पण सरदारो, सचिव तथा कार्यभारी मंडळ हाजर रहेतुं. पोते संगीतविद्याना अनुभवी होवाथी दोढ कलाक पर्यंत दरबारमां विराजी गायन सांभळया करता. साडा आठथी सवा नव वज्या सुधी लघु भ्राताओ तथा प्रतिष्ठित सरदारो साथे भोजन करता अने त्यारबाद लगभग दश वजे शयनभुवनमां पधारता.

वि.सं. १९४० मां भादराजनवाळा राणीजी साहेबे राजकुमारने जन्म आप्यो परंतु दैवयोगे त्रण महिना पछी तेनो स्वर्गवास थयो.

एज वर्षमां श्रीमान् महाराणा सज्जनसिंहजीए महाराज गजसिंहजी द्वारा श्रीमान् रायसिंहजीने उदयपुर बोलावी स्वर्गस्थ राजराणानो शोक प्रदर्शित कर्यो हतो अने तलवार बंधावी हती.

वि. सं. १९४२ मां श्रीमान् राजराणा रायसिंहजी सहकुटुंब जगदीशनी यात्राए पधार्या अने एज वर्षमां श्रीमती माजी साहेब चहुवाणीजी बेदलावाळा तथा पितृव्य महाराज उमेदसिंहजी अने फैबा साहेब रुपकुंवरबा के जेना लग्न श्रीमान् महाराणा शंभुसिंहजी साथे थयां हता तेओनो देहांत थयो तेमां धर्मात्मा पितृव्य महाराज उमेदसिंहजीना स्वर्गवासथी राजराणा रायसिंहजीने वधारे दिलगिरी थइ हती. तेओए संवत १९४३ मां कुशळगढना राव जोरावरसिंहजीनां कुंवरीनो पाणिग्रहण कर्या. संवत १९४६ मां उदयपुरमां एक उत्तम राजमन्दिर बनावी तेमां महाराणा फतेहसिंहजीनी पधरामणी करी. संवत १९४७ मां स्वकीय सालगिरानो महोत्सव प्राप्त थतां सरदारो, कार्यभारीओ, तथा कविकोविदोने अनेक प्रकारना वस्त्राभूषणो आपी अत्यंत उदारता बतावी. सं. १९४८ मां अन्तःपुरनी अंदर एक भव्य महेलात बंधावी महान् उत्सव कर्यो. (ए उत्सवमां कानोडना अधीश राव न्हारसिंहजी के जे राजराणा रायसिंहजीना फइबाना दीकरा भाइ थता हता तेओ पधार्या हता.) वि. सं. १९५० मां मोटा तळावनी समीपे हजारो रुपिआ खरची एक उत्तम बगीचो बनाव्यो. ए बगीचानी अंदर एक वाव, राज्यमेहल, होज तथा फुहारा विगेरे तैयार कराव्यां.

एज वर्षमां राजधानीथी दक्षिण दिशाना पहाडोनी पासे एक आखेटस्थान तैयार कराव्युं. अने त्यां अन्तःपुर सहित पधारी सिंहनो शिकार कर्यो. ते दहाडे पण सरदारो तथा कार्यभारीओने घणां किंमती वस्त्राभरण इनाममां आप्यां. वि. सं. १९५१ मां सर्वोत्कृष्ट रायभुवन नामे राज्यमहेल बंधाव्यो. वि. सं. १९५२ मां पोताना पुत्री नवलकुंवरबानो विवाह मारवाड मध्ये कुचावणना भंवरजी न्हारसिंहजी साथे मोटी धामधूमथी कर्यो अने पंडितजनोने अनेक प्रकारनां पारितोषिक आप्यां. सं १९५४ मां शरीरनी अंदर व्याधिनी शरुआत थवाथी केटलाएक उत्तम वैद्योने बोलावी त्रण मास पर्यन्त चिकित्सा करावी, परंतु दरद दिनप्रतिदिन वृद्धि पामतुं गयुं, अने अंते इश्वरस्मरणमां एकरुप बनी प्राणनो परित्याग कर्यो. कोइएक चलजीगांगजी नामना कविए राजराणा रायसिंहजीना स्वर्गवासना शोकजनक समये नीचेमुजब कवित्त कहेलुं छे.

कवित.

धनको न रोनो धरा धामको न रोनो धिग,
साचहीको रोनो शिवराजके सुजानको;
सत्यशील सुंदर सुभाव दासपालनको,
विरद निवाहन हार वीरपन बानाको;
रोनो जग कोमल सुभाव या कृपालुताको,
सत्य सत्य भापूं रोनो सत्य अवसानाको;
कूकर और सूकर भरेंगें पेट भूतलमें,
पेटको न रोनो पर रोनो राजरानाको. ॥ १ ॥

राजराणा रायसिंहजीना लघु बन्धु महाराज मुलतानसिंहजी परम विवेकी, राजकाजमां निपुण अने स्पृहारहित हता. प्रथम तेओने पोतानुं राज्यासन अर्पण करवा माटे राजराणा रायसिंहजीए पोताना अमात्यमंडलने आज्ञा आपी, परंतु वैराग्यवान महाराज मुलतानसिंहजीए ए वातनो अस्विकार करवाथी तेओना कुमार दुल्हसिंहजीने राजराणा रायसिंहजीना स्वर्गगमन पहेलां एक दिवसे दत्तक लेवामां आव्या हता. तेओनो जन्म वि० सं० १९४० ना आषाढ शुदि ४ ने दिवसे थयो हतो. संवत १९५४ ना जेठ शुदि ११ ने दिवसे राजराणा रायसिंहजीनो कैलासवास थतां

तेओ सादडीना राज्यासन पर विराजमान थया, ए वखते तेओश्रीनी अवस्था लगभग पंदर वर्षनी होवाने लीधे राज्यनो सघळो कारोबार महाराज सुलतानसिंहजी तथा महाराज चत्रसिंहजी अने मंत्री महतासितारामजी डॉक्टर ए त्रणे मळी चलावता हता, राजराणा दुल्हसिंहजीने बाल्य वयथीज संस्कृत विद्यानुं शिक्षण मळवाने लीधे तेओ महा धर्मनिष्ठ, नीतिज्ञ अने प्रजानुं पालन करवामां प्रशंसनीय थया. तेओए साधु महात्माओने निवास करवा माटे एक कृष्णवाटिका नामे उत्तम स्थळ तैयार कराव्युं. वि० सं० १९५४ ना श्रावण शुद ८ ने दहाडे स्वर्गस्थ राजराणा रायसिंहजीना स्मारकचिन्ह माटे एक रायपरोपकारिणी नामे सभा तथा रायऔषधालयनी स्थापना करवामां आवी हती. तथा मर्हुम महिपतिए प्राणान्त समये करेली आज्ञानुसार श्रीमद् भगवद् गीतानी एक हजार प्रत छपावी साधुमहात्मा तेमज जिज्ञासुओने विनामूल्ये आपी हती.

महाराणा संगना वखतमां बाबर बादशाह साथे थएला भयंकर युद्धमां सादडीना मूळ पुरुष अजोजी मार्या गया अने तेओना भाइ सजोजी अत्यंत घायल थया. महाराणा संगना स्वर्गवास पछी ज्यारे राणा रतनसिंह मेवाडनी राजगादीए बेठा त्यारे तेओए शूरवीर सजाजीने तेमने बजावेली अमूल्य सेवाना बदलामां वार्षिक एक लाख मुद्रानी आमदानीवाळी "देलवाडा" नी रिसायत आपी. ए सजाजीना स्वर्गवास पछी सरतानसिंहजी, रायसिंहजी, वैरीसालजी, कल्याणसिंहजी, फतेसिंहजी अने तेजसिंहजी एक पछी एक क्रमपूर्वक देलवाडाना अधिपति थया.

तेजासिंहजीने जेतसिंहजी, भीमसिंहजी, अर्जुनसिंहजी, राघवसिंहजी तथा कृष्णसिंहजी नामे पांच कुमार थया. तेमांना पाटवी कुमार जेतसिंहजी पोताना पिता तेजसिंहजीना परलोक प्रयाण पछी देलवाडानी राजगादीए बेठा; तेओने कल्याणसिंहजी तथा छत्रसालजी नामे बे कुंवर थया.

महाराज जेतसिंहना स्वर्गवास पछी कुमार कल्याणसिंहजी देलवाडाना अधीश्वर बन्या; तेओने राघवदेवजी तथा रामसिंहजी नामे बे कुमार थया.

महाराज कल्याणसिंहजीना परलोक प्रयाण पछी राघवदेवजी देलवाडानी राजगादीए विराजमान थया. ए पछी तेओना कुमार मानसिंहजी देलवाडाना उत्तराधिकारी थया. ए मानसिंहजीना कुमार हाल देलवाडानी गादी उपर छे. +

+ देलवाडा सबन्धी विशेष हकीकत नहि मळवाथी मात्र तेनी वंशावळी संक्षेपे आंही दाखल करेली छे.

सादडीनो संक्षिप्त इतिहास.

सोरठो.

पराक्रमी हरपाळ, पछीँ वावीशमी पेढीए;
प्रिय गोद्विजप्रतिपाल, राज रायधरजी थया. १

छन्द पद्धरी.

दिन एक धारीँ परिपूर्ण प्यार, थइ सुभग अश्व उपर सवार;
सुभटोनीँ संग करवा शिकार, निकळ्या नरेश नियमानुसार. २
शशने निहाळतां सद्य शूर, दोडावीँ अश्व पहोंच्या सुदूर;
सन्मुख थएल शश जेह स्थान, त्यां नेहधारीँ करीयुं निशान. ३
ए वीर भूमिपर धारीँ व्हाल, पछीथी वसावीयुं पुर विशाळ;
अभिधान एनुँ हळवद आपी, शुभ राजधानीँ पोतानीँ स्थापीँ ४
सुत आदि रायधरना अजाजी, सद्गुणी गणाय वीजा सजाजी;
इडरनरेश केरा अजेय, ए भाग्यशाळीँ द्वय भागिनेय. ५
परमार मूळीना प्रीत धारीँ, कुळवान जाणी देवा कुमारीँ;
आव्या त्वरार्थी करता तपास, श्रीराज रायधरजीनी पास. ६

सोरठो.

पेखी सहु परमार, अनुप रूप अजमालनुं;
तुर्त थया तैयार, चाह करवा चांदलो. ७
संबंध ए सुखदेण, बंधाया पहेलां वळे;
वद्या रायधर वेण, अणघटतां उपहासमय. ८

छन्द पद्धरी.

अवरेखीँ सव नजरे युवान. दे कोइ धारीँ कन्यानुं दान;
पण हृद्ध संग करवा विवाह, उरमां न कोइ राखे उछाह. ९

आ शब्द साभळीने अजाजी, समज्या जरुर पळव्या पिताजी;
आव्या उतावळे निज अवास, निश्चय अतिथि वनीया निराश. १०

छन्द छप्पय.

समजाव्या बहु रीत, प्रीत धारी परमारे;
करी न वात कबूल, कांइ पण एनी कुमारे;
उलटा बोल्या एम, ए समे वीर अजाजी;
पुत्री तमारां थाय, आजथी मारां माजी;
त्यागी तंत मुज तातसह, कुमारीना वीवा करो;
कहेशो तेम करीश हुं, दिलमां लेश नहि डरो. ११

छन्द मोतीदाम.

हवे धरी हाम कहे परमार, करो झट आप अजाजी करार;
कदी प्रसवे अम पुत्री कुमार, बने हळवद्दतणो हकदार. १२
करे सहु वात कबूल अजाजी, थया वर ठाठथी वृद्ध पिताजी;
प्रमारीतणो ग्रही हेतथी हाथ, भलां सुख भोगवता नरनाथ. १३

छन्द छप्पय.

प्रमारीपर रहे, रायधरजी बहु राजी;
प्रगट्यो एथी पुत्र, नाम राख्युं राणाजी;
काळे लइ कैलासवास कीधो नृप राये;
यशनामी अजमाल, धर्मने मारग धाये;
राज्यगादी राणाजीने, अर्पण करी उत्साहथी;
सजाजीने साथे लई, चाली निकळ्या चाहथी. १४

छन्द झुलणा.

राव जोधोजी मरुदेशना महिपति, जबर नृप रायधरना जमाइ;

वात एणे अजाजी सबंधी सुणी, वीर वृन्दे वखाणी वडाइ;
परिजनो पाठवी तुर्त तेडावीया, आवीया जोधपुरमां अजाजी;
झांखी झलराणने राखी निजधाममां, थाय राठोड महिपाल राजी. १५

छन्द छप्पय.

अजाजीने ए समय, देश जोधे बहु दीधो,
त्यहां अनुज सह अजे, कोडथी निवास कीधो;
मनहर झालामंड, सर्व एने संबोधे,
कन्या लेवा काज, जबर हठ लीधो जोधे;
अजो कहे शुभ शास्त्रनी, आज्ञा केम उथापीए;
फड उपर भतरीजीने, अमे कदी नहि आपीए. १६
कर्यो न जाहिर क्रोध, जबर नरपति जोधाए,
तदपि भाळी मन भग्न, एतुं झलराण अजाए;
इश्वरनो इतबार, हृदयमां सज्जड स्थाप्यो,
मूकी झालामंड, मार्ग बीजो झट माप्यो;
राणा रायधरे सुणी, कुंभलगढमां ए कथा,
आश्रय आपी अजाजीने, पाळी पुनित कुळनी प्रथा. १७
आप्यु पुर अजमेर, तुर्त राणे ए टाणे,
रही हजूरमां रोज, मोज मकवाणो माणे;
पुत्रीने परणावी, श्रेष्ठ राणाजी संगे,
गौरव मेळवी गया, अजो अजमेर उमंगे;
ज्यारे राणो रायधर, कवल थया महाकाळना,
तब वसिष्ठ सांगो कन्या, मदद नाथ मेवाडना. १८

छन्द झूलणा.

एक वादर वीजो मार्नी महमदना, युद्धने काज रणक्षेत्र आव्या;
नगराणे घणा शत्रुने समरमां, तीव्र तलवारथी खूब ताव्या;

आ शब्द सांभळीने अजाजी, समज्या जरुर पळ्या पिताजी;
आव्या उतावळे निज अवास, निश्चय अतिथि वनीया निराश. १०

छन्द छप्पय.

समजाव्या बहु रीत, प्रीत धारी परमारे;
करी न वात कबूल, कांइ पण एनी कुमारे;
उलटा बोल्या एम, ए समे वीर अजाजी;
पुत्री तमारां थाय, आजथी मारां माजी;
त्यागी तंत मुज तातसह, कुमारीना वीवा करो;
कहेशो तेम करीश हुं, दिलमां लेश नहि डरो. ११

छन्द मोतीदाम.

हवे धरी हाम कहे परमार, करो झट आप अजाजी करार;
कदी प्रसवे अम पुत्री कुमार, बने हळवद्दतणो हकदार. १२
करे सहु वात कबूल अजाजी, थया वर ठाठथी वृद्ध पिताजी;
प्रमारीतणो ग्रही हेतथी हाथ, भलां सुख भोगवता नरनाथ. १३

छन्द छप्पय.

प्रमारीपर रहे, रायधरजी बहु राजी;
प्रगट्यो एथी पुत्र, नाम राख्युं राणाजी;
काळे लइ कैलासवास कीधो नृप राये;
यशनामी अजमाल, धर्मने मारग धाये;
राज्यगादी राणाजीने, अर्पण करी उत्साहथी;
सजाजीने साथे लई, चाली निकळ्या चाहथी. १४

छन्द झुलणा.

राव जोधोजी मरुदेशना महिपति, जबर नृप रायधरना जमाइ;

वात एणे अजाजी संबंधी सुणी, वीर वृन्दे वखाणी वडाइ;
परिजनो पाठवी तुर्त तेडावीया, आवीया जोधपुरमां अजाजी;
आंखी झलराणने राखी निजधाममां, थाय राठोड महिपाळ राजी. १५

छन्द छप्पय.

अजाजीने ए समय, देश जोधे बहु दीधो,
त्यहां अनुज सह अजे, कोडथी निवास कीधो;
मनहर झालामंड, सर्व एने संबोधे,
कन्या लेवा काज, जबर हठ लीधो जोधे;
अजो कहे शुभ शास्त्रनी, आज्ञा केम उथापीए;
फह उपर भतरीजीने, अमे कदी नहि आपीए. १६
कर्यो न जाहिर क्रोध, जबर नरपति जोधाए,
तदपि भाळी मन भग्न, एनुं झलराण अजाए;
इश्वरनो इतबार, हृदयमां सज्जड स्थाप्यो,
मूकी झालामंड, मार्ग बीजो झट माप्यो;
राणा रायधरे सुणी, कुंभलगढमां ए कथा,
आश्रय आपी अजाजीने, पाळी पुनित कुळनी प्रथा. १७
आप्युं पुर अजमेर, तुर्त राणे ए टाणे,
रही हजूरमां रोज, मोज मकवाणो माणे;
पुत्रीने परणावी, श्रेष्ठ राणाजी संगे,
गौरव मेळवी गया, अजो अजमेर उमंगे;
ज्यारे राणो रायधर, कवल थया महाकाळना,
तव दलिछ सांगो कन्या, मदद नाथ मेवाडना. १८

छन्द झूलणा.

एक बादर दीजो भानो महमदना, युद्धने काज रणक्षेत्र आव्या;
संगराणे घणा शत्रुने समरमां, तीव्र तलवारथी क्रूर ताव्या;

ए समे राज अजमालनी व्हादुरी, पेखी राणे प्रशंसा करी त्यां,
हारी वावर गयो सज्ज पाछो थयो, घोर घमसाण जाग्युं फरी त्यां. १९
अडग यवनो, डग्या शूर शिशोदिआ, संगराणो घवाया शरीरे,
अन्य स्थळमांहि एने उपाडी गया, धार्यु नृप चिह्न अजमाल धीरे;
गज चढी गर्व वावरतणो गाळीने, शूरक्षणमां थया समरशायी;
सिंहजी सुत, सहोदर सजाजी गया, गृह भणी घोर युद्धे घवाइ. २०

छन्द पद्धरी.

सुणतां अजाजीनो स्वर्गवास, सांगे असीम थइने उदास;
करी सिंहजीनी झट सारवार, भावेथी सोंपीयो राज्यभार. २१
ए वाद संग जातां स्वधाम, सुखदाइ रत्न मेवाॅड श्याम;
करी एकलिंग प्रभुने प्रणाम, ले हाथ राज्यकेरी लगाम. २२
झलराण सिंहजी साथे स्नेह, नृप रत्नसिंह राखे अछेह;
प्रीतें अजानी सेवा पिछाणी, वळी जाति श्रेष्ठ झालानी जाणी. २३
पितुभगिनी सिंह साथे वरावी, वळतां सजाजीनी यादी आवी;
गणी अर्धलक्षनी आमदानी, दे राज्य देलवाडानुं दानी. २४
देखाडी शत्रुने वळ दराज, करी पांच वर्ष प्रीतेंथी राज;
हरी रत्नसिंह राणे हुलास, कीधो त्वराथी कैलासवास. २५

छन्द झुलणा.

विक्रमादित्य अनुजात एना वडा, वळथी मेवाडने तख्त वेठा;
जागी खटपट जबर सकल सरदारसह, नव रह्या कोइना कांइ नेठा;
शाह वहादूर सुलतान गुजरातनो, पेखी मेवाडमां पोल पेठो;
लाज कारण लड्या कैक रणमां पड्या, छे नहीं मृत्युथी कोइ छेटो. २६
सेंकडो शत्रुने छेदी समशेरथी, समरमां सिंह झलराण सूतो;

हारद्रग हेरॉं राणानीं रणभूमिमां, दिल्हींभणीं दोडींया यवन दूतो;
सवळ हुमायुदुं सांभळी आगमन, भयथीं सुलतान वहादूर भ.
मदद मळवाथीं राणाजीँना हृदयमां, जवर आनंद ए समय जाग्यो. २७

छन्द छप्पय.

सिंह थतां स्वर्गस्थ, एहनो कुमार आसो,
राजे राज्यासने, वीरतानो द्रढ वासो;
वरते नृप विक्रमात, वहू प्रतिकूल वधाथी,
तोपण सुभट समस्त, थया सुखदुःखना साथी;
सेना सजी वहादूर फरी, चढी आव्यो चितोडपर;
आसो झालो ए समय, जाहेर लढियो जोरभर. २८
शार उपरे सांग, फेंकीं आवेगथी आशे;
करिवरतणुं कपोल, तूटतां वहादुर त्रासे;
पाछळथी प्रतिपक्षीं, एक ए समये आव्यो,
आशापर असीतणो, चोंपथी मार चलाव्यो;
अढार वर्षनीं उम्मरे, हणी तेग हणनारने,
आशो सुरपुर संचर्यो, समरे वरी सुरनारने. २९

सोरठा.

निश्चय निःसंतान, अन्न थतां आशाजीँनो;
सूर अनुज सुलतान, भावथागीं भूपति थया. ३०

छन्द छप्पय.

मेदपाट महिपाल. विक्रमादित्य विचारी.
दामींपुत्र दनवीर. धरी ए पाठक गादी,
उदयसिंह ए पछी. नरेन्द्र देवा नरनारी;

मकवाणे मुदथकी, वजावी सेवा सारी;
साजी सवळदळ अकवरे, जव चित्तोडने सर कर्युं,
तव सुरताने शौर्यथी, लडी प्राणधन परहर्युं. ३१

सोरठा.

स्वर्ग जतां सुलतान, मानसिंह महिपति थया;
महद वंश मखवान, वसुधामां विख्यात छे. ३२

छन्द झूलणा.

उदयराणा तणुं आयुवळ तूटतां, पुत्र एनो प्रतापी प्रताप,
प्रीतथी वेसी मेवाडना तख्तपर, छापी शुभ क्षत्रीवट केरी छाप;
वैरी अकवर वडो आवी वहु आखड्यो, तदपि अनमी रह्यो एहराणो,
संगमां मान मखवान सरखा सुभट, जंगमां जीत निःशंक जाणो. ३३

छन्द पद्धरी.

लई संग शूर सैनिक असीम, जे समय शाहजादो सलीम;
चाहेंथी आवीयो करी चढाइ, मची हलदीघाट मांहे लडाइ. ३४
समशेर सांग वरछी कटार, उपरांत अन्य आयुध अपार;
धरी हाथ शूर धसिया समग्र, मखवान मान ए मांहि अग्र. ३५
चाली प्रतापनी असि प्रचंड, ए समयें ध्रुजीयुं ब्रह्मअंड;
कछवाह मान अभिमान धारी, सेनापतिनी पदवी स्वीकारी. ३६
आपे सलीमने अति सहाय, धमसाण मांहि अगणित घवाय;
हयजुत्थ साथ हेमर हणाय, तन रक्त वाहिनीमां तणाय. ३७

सोरठा.

घवाइ रणमां घोर, प्रताप दूर पधारतां;
जाहिर धारी जोर, झालो झपट करी रह्यो. ३८

झूम्यो रणमोजार, मकवाणो धरी मस्तके;
छत्र चँवर सुखकार, महद देशमेवाडनां. ३९

रोळावृत्त.

यवन सैन्य सिन्धुने, मथ्यो भुजबळथी माने,
जबर जाति झीलानी, दीपावी मस्तक दाने;
प्राणार्पण ए पुनित, दूरथी राणे देख्युं,
प्रताप रणमां पड्यो, एम यवनोए लेख्युं. ४०

देदाजी दुःख हरण; कुँवर झालाना करमी,
तातमान सम थया, धरणीमां पूरा धरमी;
पाछळ यवनो पड्या, वखो बहु प्रताप वेठे,
देदो करतो दोडी, श्यामसेवा पितु पेठे. ४१

तूठ्या त्वरितें प्रताप, महद मकवाणा माथे;
परणावी निजपुत्री, शूर देदाजी साथे;
सादडीना क्षितिपाल; रणे रिपुने रंजाडे,
हळवदना हकदार, मान पाम्या मेवाडे. ४२

प्रबळ प्रतापी प्रताप, थतां परलोक प्रवासी,
राणे अमरने अधिप, निखिल मेवाड निवासी;
जोर धरी जहांगीर, एह समये चढी आव्यो;
राणपुरे राणाथी, महद संग्राम मचाव्यो. ४३

झट देदो झलराण, युद्धमां आवी चढीआ,
खेंची कठिण कृपाण, यवन साथे आखडीआ;
शौर्य वडे समरमां, अमरने विजय अपावी,
सादडी पति दइ शीश, स्वर्गमां गया सिधावी. ४४

पुत्र एहना पांच, वडा हरदास वखाणो,

रामसिंह नरहरि, श्याम पछी रत्न प्रमाणो;
शाहपुत्र परवीज, सबळ दळ सज्ज करीने,
मेदपाट पर चढ्यो, हृदयमां हाम धरीने. ४५
रणरागी रजपूत. ठाम वेठा न ठरीने.
ते वखते तोफान, जागतां फरी फरीने;
हता राज हरदास, पिता सम महा प्रतापी,
एणे सन्मुख आवी, हार यवनोने आपी. ४६

छन्द झूलणा.

वात ए सांभळी अमर राणो थया, राज हरदास पर पूर्ण राजी,
कथित कानोड झाडोलनां राज्य द्वय, आपीयां भाळीने भक्ति ताजी;
भव्य निज वन्धु भाणेज राणाजीना, श्यामने स्नेहथी ए प्रसंगे,
ग्राम झाडोळनी राजधानी रुडी, आपी हरदास झाले उमंगे. ४७

रोळा वृत्त.

शाहपुत्र निज सैन्य सज्ज करी आव्यो समरे,
खुरेम पासे माफी, मागी महाराणा अमरे;
हामधरी हरदास, ए समे सत्वर आव्या,
सन्धि कराव्या वाद, स्नेहथी दिल्ही सिधाव्या. ४८
जे समये झलराण, आवीया फरी उदयपुर,
निरख्युं तव नाराज, अमर राणाजीनुं उर;
कह्या विना कानोड, गयो मकवाणो गर्वे,
पछीथी दिल्ही पधारी, सिद्ध करी मनकृति सर्वे. ४९

छन्द झूलणा.

पाटवी पुत्र हरदासना रायहरि, जबर राणाजी केरा जमाइ,
आपवा गादी कानोडनी एहने, अमरराणे कह्युं चित्त चहाइ;

राय पितृभक्त राणाजी आगळ कहे, तात ज्यांसुधी होये हयात,
त्यांलगी देखुंना हुं कदी तख्तपर, व्यर्थ करशो नही एवी वात. ५०

रोळा वृत्त.

बाहिर खटपट जागी दिल्ही अंदर दुःखकारी,
जहांगीरनो जीव, जवानी हती तैयारी;
हरदासे हर वख्त, एनी आपत्ति टाळी,
शाहे अति सुख रूप, भक्ति झालानी भाळी. ५१
प्रीतें पाघडी बदल, बन्धुता एथी बांधी,
हरता नित हरदास, विविध जहाँगीरना व्याधि;
मन्दसोर मनहरण, स्नेहथी आप्युं शाहे,
लखवीशनो लेख, मग्र झालो कर साहे. ५२
खुर्रमने ए समय, आशरो राणे आप्यो,
ए कारण अति क्रोध, शाहने हृदये व्याप्यो;
मेवाडे मोकल्युं, यवन दळ अरिबळ हरवा,
थया सज्ज हरदास स्वामीनी सेवा करवा. ५३

छन्द—छप्पय.

आपी नहि अनुमति, जवानी जव जहाँगीरे,
तव हाल्यो हरदास, बोल बे बोल्या धीरे;
सामे पगले चाली, अमे मकवाणा मरीए,
कुळपरंपरामुजब, स्वामीनी सेवा करीए,
लालचमां लपटाइने, वाळुं मुख करवा थकी,
मरवुं उत्तम मानीए तन कायम रहे ना टकी. ५४
शाह कहे हरदास ! आप नाहक हट छोडो,
वैभव आदो वरजी. दुःखी थावा नहि दोडो;

हरदासे ए समय, क्रोधने जाहिर कीधो,
मन्दसोरनो महद, लेख लइ फेंकी दीधो;
रणांगणे राणाजीनुं, हित करवा अति हौंशथी,
पराक्रमी जइ प्होंचीया, सद्य सेंकडो कोशथी. ५५

छन्द झूलणा.

हाम धरी गाम हरडे महीं छावणी, नांखीने मस्त प्रतिपक्षी महाले,
उदयपुरनुं अनिक आवतां आगमच, झाटक्या यवनने खूब झाले;
घोररूपे घवाएल घमसाणमां, राज हरदासने जोइ राणे,
स्वामीभक्तिनी स्वमुखे प्रशंसा करी, शूर स्वर्गे गयो एज टाणे. ५६
राज हरदास पछी रायसिंहे धरी, पदवी श्री राजराणानी प्रीते,
महद मेवाडनुं हित हमेशां करी, चाहीयुं श्रेयराणानुँ चित्ते;
शाह खुर्रम थतां राय दिल्ही जतां, जनक सम उभयनो प्रेम जाम्यो,
पाघडी वदल ए पण थया वन्धुओ, उदय परिपूर्ण झलराण पाम्यो. ५७
समयने अनुसरी रायॅ स्वर्गे जतां, पुत्र सुलतान एना प्रतापी,
सादडीना सुशोभित सिंहासने, राजता रंकने इष्ट आपी;
कर्णराणा पछी जगतसिंहे धर्यो, मुकुट मेवाडनो मोदधारी,
गादी राणानी पछी राजसिंहे ग्रही, शौर्यथी मेळवी ख्याति सारी. ५८

रोळावृत्त.

हतो शाह औरंग, ए समे तुंड मिजाजी,
डर एनो दिलमांहि, राखता नहि राणाजी;
शाहजहाँनी सहाय, हिन्दुपति हमेश करता,
यवनोनुं अभिमान, हाम धारीने हरता. ५९
रूपनगढमां एक, रम्य हती राजकुमारी,
करे शाह औरंग, तुर्त वरवा तैयारी;

आव्या यवन अनेक, लाज क्षत्रीनी लेवा,
पहोंच्या हिन्दुपति, दंड दुश्मनने देवा. ६०

शौर्यशाळी सुलतान, सादडी पुरनो स्वामी,
रह्यो युद्धमां अडग, सैन्य नायकपद पामी;
आव्यो त्यां औरंग, सैन्य जबरुं लइ साथे,
तूटी पडीयो तुरत मेदपाटेश्वर माथे. ६१

छेदे शीश अनेक, दहा सम वज्रे दळमां,
बनी यवन बळहीन, पराजय पाम्या पळमां;
अनंतना आयुनो खजानो साथे खुट्यो,
मांड मांड औरंग ए समे भागी छूट्यो. ६२

सही सेंकडो घाव, राजराणो रणरागी,
सुरपुरमां संचर्यो, सिंह सुलतान सुभागी;
चन्द्रसेन चालाक, पुत्र एहना प्रमाणो,
अनहद नित एपरे, राखता प्रीति राणो. ६३

छन्द हरिगीत.

औरंग सुत आजम सबळ, दळ यवननुं लइ आवीयो,
हिन्दुपतिनो हुकम पातां, सच चन्द सिधावीयो;
मरदान रण मेदानमां, तन शत्रुओनां तावीने,
पाम्यो प्रतिष्ठा पूर्ण, पाछो उदयपुरमां आवीने. ६४

ए बाद राणा राजसिंहे वास कैलासे कर्यो,
मेवाडनो मनहर मुकुट, शिर धीर जयसिंहे धर्यो;
ए समय राव सिरोहीनो, विद्रोहना पथमा वळ्यो,
अभिमान एनुं उतारवा, चित्त चन्द्रने राणे चढ्यो. ६५

ए हुकम सादडी आवतां. शिर चन्द्रसेने धारीयो,

ते समय थातीं हती तनुजना लग्ननी तैयारीओ;
तजी परणवुं सजी सैन्य सुत झालातणो झट सज थयो,
वरकाढडानो वेषधारी, सिंहजी समरे गयो. ६६

ग्रही आधिपत्य अनीकतुं, राणाजोने राजी कर्या,
भयभीत अरिने सिंहजीए, सिंहसमगाजी कर्या;
सिरोहीना महाराव साथे जंग जबर जमावीयो,
रणक्षेत्रमां खळने खपावी, शूर स्वर्ग सिधावीयो. ६७

सुणी वात सादडी भूपना, चित्तमां वडो विभ्रम थयो,
रही सर्व मननी मन विषे, गुणी सुत अचानक गुम थयो;
पछी सादडीथी उदयपुरने उदयपुरथी सादडी,
जातां गुजारे जींदगी, सुत मरणने स्मरी हर घडि. ६८

दोहा.

अकबर सुत औरंगनो, उच्चारी मुख अल्लाह;
वश करवा मेवाडने, चढी आव्यो धरी चाह. ६९
यवनोने अटकाववा, रचवाने रमखाण;
हिन्दुपतिना हुकमथी, झपलायो झलराण. ७०

छन्द झूलणा.

आर्यने यवनमां जोरथी जामीयुं, घोर घमसाण उज्जेण घाटे,
शूर झलराण संग्राममां शत्रुने, झाटके झाटकाने झपाटे;
त्रस्त मदमस्त यवनो तणा अस्तथी, शाहजादो गयो शेह पामी,
राजचांदो वळ्या राजधानी भणी, समय आव्ये थया स्वर्गगामी. ७१
ताज तेजें भर्यो राजराणा तणो कीर्तिसिंहे, धर्यो शीश कोडे,
सादडीनो विभु श्यामधर्मी वडो, द्रोहीना दमनने काज दोडे;

बांसवाडे जई त्रास वरतावतो, छाय रिपुना रुदामां ऌगाडे;
त्यांथी डुंगरपुराधीश पर तूटीने, विजयना वाद्य झालो वगाडे. ७२
राजी थई एहने आपी राणाजीए, तुर्त ताणा तणी राजधानी,
किन्तु ए कीर्तिसिंहे स्वीकारी नहि, मद्दद मनमांहि संतोष मानी;
भ्रात दोलत भला, एहने आपवा, अरज राणाजी आगळ गुजारी,
कथन मकवानतुं मान्य राख्युं महा, मेदपाटेश्वरे मोद धारी. ७३

रोळावृत्त.

जतां स्वर्गवास जयसिंह, अमर राणो अवतारी,
प्रीते बेठा पाट, विश्वमां यश विस्तारी;
सुखदायक संग्राम, ए पछी तख्ते आव्या,
जगतसिंह जशनामी, भला गुणीजनने भाव्या. ७४
सेवा सरस दजावी, चार राणानी चाहे,
गुणीअल चांदो गयो, रम्य सुरपुरनी राहे;
रायसिंह ए पछी, सादडीपुरना शासक,
पाम्या वहु प्रख्याति, वीरवर वैरीविनाशक ७५

छन्द झूलणा.

राग धरी हई महाराष्ट्र मेवाडमां, चो तरफ लूंट रहीयो चलावी,
कोपी राणो कहे राय हाला कने, मच उत्पात ए थयो समावी;
दीधी नहि न्यायना रंचपण रायने, तदपि मक्वान द्रढ टेक धारी,
सज्ज सत्वर थया शत्रु सन्मुख गया, सुजबळे गर्वी विश्वास भारी. ७६
स्वल्प निज सुभट दल मद्द महाराष्ट्रनुं, स्पष्ट तोपण करे खूब झालो,
पखव करी दूर, नजी टोपने टोपनी, धारी हती मात्र तरवार टालो;
देलवाडेथी दट सरद लई ए समे, नाथजी बन्धु नेहेथी आव्या,
देखथी गज हस्पालना संगले, हठना सैनिकोने हटाव्या. ७७

समरथ्यायी थया निमिषमां नाथजी, छेवटे हट्ट महाराष्ट्र हार्यो,
मेळवी विजय मखवान निज नग्रमां, आवतां कोविंदे यश उचार्यो;
जगतराणो गया स्वर्गमां जग|तजी, पदवी राणानी धारी प्रतापे,
रोष करी दोष विण राजराणापरे, छाप ए कुटिल नीतिनी छापे. ७८

राग झलराण डुंगरपुरे जइ रह्या, हेरी इतराजी हिन्दूपतिनी,
खबर पडती नथी कोइने खलकमां, गहन तकदीर केरी गतिनी;
पेखीने पोल मेवाडमांहे फरी, जोर विद्रोहीओए जमाव्युं,
मेळव्या विण हुकम मेदपाटेशनो, शौर्यथी बंड झाले समाव्युं. ७९

रोळावृत्त.

समाचार ए सुणी, मुक्तकंठे महाराणे,
रायसिंहनी करी, प्रशंसा बुद्धि प्रमाणे;
पुष्कळ दइ पोषाक, सादडी जावा सुखथी,
आपी शुभ अनुमति महाराणे निजमुखथी. ८०

छन्द पद्धरी.

थातां प्रताप परलोकवासी, पछी राजसिंह रहीआ प्रकाशी;
विचर्या अपुत्र ए स्वर्गवाट, बेठा पछीथी अरसीजी पाट. ८१
बीजा प्रतापना बन्धु एह, सरदार संग राखे न स्नेह;
मेवाडनाथ अरसी अभागी, जबरी उपाधि सर्वत्र जागी. ८२
करी काम पूर्ण मनमां तमाम, झलराण राय जातां स्वधाम;
बेठा तृतीय सुलतान तख्त, जुग्तेथी जोइ बारीक वख्त. ८३
राणाथी कैंक सुभटो रिसाय, उर सिन्धियानी इच्छे सहाय;
करवा मुदेथी मेवाड हाथ, माधव महिप निज सैन्य साथ. ८४
आव्यो त्वराथी करीने चढाइ, मेवाडी शूर सहु सज्ज थाय;
लाव्या न भीति मनमां लगीर, धर्माभिमानी मखवान धीर. ८५

हतॉं सिन्धिआनी सेना अपार, पामे शी रीत मेवाडी पार;
तो पण भरी नहीं पाछी पानी, ए शुद्ध दूध केरी निशानी. ८६

रोळावृत्त.

उभय पक्षमां युद्ध, जोरथी सत्वर जाम्युं,
सैन्य सिन्धिया तणु, पराजय पलमां पाम्युं;

सादडीपति सुलतान, घोर रणमांहि घवाया,
कर्या माधवे केद, शूर झाले सपडाया. ८७

लेणे जीत अपावी, युद्धमां आगळ चाली,
कर्यो छूटवा काज, खजानो घरनो खाली;
लीधी नहि संभाळ, रंच पण एनी राणे,
छतां करे सुलतान, भक्ति कुळप्रथा प्रमाणे. ८८
राणा अरसी पछी, हिन्दुपति हमीर राजे,
भीमसिंह भयहारी, ते पछी तख्त विराजे;
ए सर्वने अनन्य, भावथी नित्य भजीने,
गया स्वर्ग सुलतान, विश्व माया वरजीने. ८९

छन्द हरिगीत.

ए बाद चंदनसिंहजीए, गादी सादडीनी ग्रही,
वय बाल बुद्धि विशाल, कुळनी चाल व्हाल धरी वही;
महाराष्ट्र सुभटोए मळी, दाबी सादडी स्वाधीन करी,
पछवाडथी नृप चंदने करी, हाथ निज नगरी फरी. ९०
बळवान मरिप युवान थातां. हाम अरिनी हठी गइ,
मेवाडमां महाराष्ट्र तरफनी. मदद भीति मटी गइ;
पछी थाय चंदनने मजा. दिनदिन दशा पलटी गइ,
तो पण अमित उद्यमो देशनी. आमदानी घटी गइ. ९१

दोहा.

अमल थतां अंग्रेजनो, हरख्युं हिंदुस्तान;
शान्त थयां सघळे स्थळे, त्वरित बधा तोफान. ९२

छन्द हरिगीत.

संतान विण मखवान चंदन, स्वर्गमांहि सिधावीआ,
ए बाद वंदनयोग्य कीरतसिंह तख्ते आवीआ;
भयहरण राणा भीम पछीं, जाहिर जवान जणाय छे,
ते पछीं सुभागी हिन्दुपति, सरदारसिंह गणाय छे. ९३
सरदार पछीं राणा स्वरुपनुँ, नाम भाव धरी भणो,
जाग्यो हतो ए समय बळवो, सबळ सत्तावनतणो;
राणाजीनुं फरमान शिरपर, सद्य झाले स्थापीने,
अंग्रेजनुं रक्षण कर्युं, आश्रय अनुपम आपीने. ९४
वळी शौर्यथी स्वाधीन करवा, नीम वेहेडा परगणुं,
थयुँ सज्ज केप्टन शोर साथे, सैन्य राणाजीतणुं;
वृद्धत्वथी झलराण कीरतसिंह सादडीए रह्या,
शिवसिंह आदि कुमार एना, शोरनी संगे गया. ९५
भुजबळथी रिपुने आपी भय, जय मेळवी जुगते वळ्या,
काळे लइ झलराण कीरतसिंह ब्रह्ममहीं भळ्या;
सुत पाटवी शिवसिंह एना, पाट बेठा प्रीतथी,
आबाद झट एणे कर्युं निज राज्यने शुभ रीतथी. ९६
शिवसिंहनी सेवा थकी, राणा स्वरुपे राजी थइ,
नेहे निकटमां राखीया, गुंदलपुरादिक ग्राम दइ;
ए बाद राणे वास कैलासे कर्यो काळे लइ,
मेवाडनी गादी महद्, नृप शंभुना करमां गइ. ९७

छन्द झूलणा.

मादडोनाथ शिवसिंहजीए सदा, मेळवी स्वामी सेवार्थी सिद्धि,
धर्मने अनुसरी धाम चारे तणो, कठिन यात्राओ कोडेथी कीधी;
शंभु राणो गया स्वर्गमां जे समे, व्याधि कवि कोविदोना विदारी,
ए समे ठाठथी सिंह सज्जन थया, नाथ मेवाडना नेह धारी. ९८

संतति थइ नहीं राज शिवसिंहने, पुत्र लघु बन्धुना गोद लीधा,
रम्य ए रायने लेखी लायक महा, राजनां काज सहु सोंपी दीधां;
आयु अवशेष परमार्थना पंथमां, गाळी शिवसिंह स्वर्गे सिधाव्या,
राज्य गादी वडी रायसिंहे ग्रही, राजनीतिथी सहुने रिझाव्या. ९९

दोहा.

मादडीने सिंहासने, रायसिंह झलराण;
महाराज मेवाडना, जाहिर सज्जन जाण. १००

रोळावृत्त.

सज्जन पछी सुरस्वरूप, भूप फतह भयहारी,
उदयपुरना अधिप, ध्यानमां लेजो धारी;
वर्तमान विद्वान्, विश्वमां बहु वखणाये,
सेवा एनी बजावी, रसिक मकवाणा राये. १०१

अति उत्तम अभ्यास, खास संस्कृतनो कीधो,
निज अनुभवनो लाभ, दादी रैय्तने दीधो;
मनुस्मृतिनुं मनन, मोदथी वर्षे मकवाणे,
रण्या अनीति हरिण, तीव्र बुद्धिने ताणे. १०२

दोहा.

ए पछी अक्षयराममां, हवा राय झलराण,
दुलहसिंह दुःखहर सदा, मादडीनाथ सुजाण. १०३

नित्य कवि नथुराम दे, आशीर्वाद अपार;
भलुं करो नृप दुलहतुं, भवानीना भरथार. १०४

देलवाडानी अति संक्षिप्त वंशावळी.

घनाक्षरी.

बडी सादडीना मूळ महिप अजोजी थया,
अनुज सजोजी एना परम प्रतापवान;
कहे नथुराम तख्त पाम्या देलवाडातणुं,
पछी राज रायसिंहे मेळव्युं महान मान;
क्रमे वैरीसालने कल्याण पछी फतेसिंह,
तेजसिंह बाद जेतसिंहजी तपोनिधान;
द्वितीय कल्याण, देव राघवने मानसिंह,
दानी देलवाडाना महिप दश बुद्धिमान. १

सप्तविंशत् तरंग.

"मनहर."

राज रायसिंहथी प्रतापसिंह सूधी अष्ट,
भूप हळवदे स्पष्ट सत्ता भोगवी गया;
कहे नथुराम बळवान् रायसिंह बीजा,
ध्रांगधरे राजधानी स्थापी सुखथी रह्या.

ए पछी अनुक्रमे सुभागी घनश्याम सुधी,
अष्ट महिपाल हरपालने कुळे थया;
सुणो अमरेश पति वंकपुरना प्रतापी,
विविध प्रवाहवेगे झालावंशना वह्या.

राज हरपालदेवजी पछी पचीशमी पेढीए थएला परम पराक्रमी राज रायसिंहजीए वि. सं. १५२० थी १५४० सुधी हळवदना रमणीय राज्यासनने अलंकृत करी कैलासवास कर्यो; तेओ नीचे बताव्या मुजब चार स्थळे परण्या हता.

१ नवानगर ताबे गाम खीलोसना जाडेजा रजपूतनी पुत्री साथे.

२ माणसाना राजा अखेराज गोहेलनां पुत्री जीवजीबा साथे.

३ बीकानेरना राठोड रामसिंहजी कल्याणसिंहजीना पुत्री देवकुंवरबा साथे.

४ दावना चहुआण राजाना कुंवरी साथे.

ए चारे राणीओमांथी खीलोसवाळां जाडेजी राणीना उदरथी चन्द्रसिंहजी तथा छत्रसाळ-जी नामे बे कुमार तथा लखमाजीबा नामे एक कुंवरीनो जन्म थयो हतो. लखमाजीबानां लग्न

नवानगरना जाम जसाजी साथे करवामां आव्यां हतां. कुमार छत्रसालजी माळीआ पासे मचेला भयंकर मामलामां मार्या गया हता.

राजरायसिंहजीना पाटवीकुमार चन्द्रसिंहजी वि. सं. १६४० मां हळवदनी गादीए बेठा. तेओए सीथा पासे एक "चन्द्रसर" नामे सुशोभित तळाव बंधाव्युं, तेमज थान पासे व्हेती महा नदीमां एक चन्दासर नामनो एक उत्तम बंध बधाव्यो. तेओ जोधपुरना राठोड राजा सूरसिंहजीनी पुत्री सत्यभामाने परण्या हता. ए सत्यभामानो एक व्हेनना लग्न दिल्हीना बादशाह जहांगीर साथे थयां हतां. राज चन्द्रसिंहजीए पोताना लग्न महोत्सवनी खुशालीमां कोइएक राठोडने वेजलपुर नामे गाम आप्युं हतुं.

कोइ एक समये राज चन्द्रसिंहजीनां बहेन लखमाजीबा पोताना स्वामी जाम जसाजी साथे शतरंजनी बाजी खेलता हता. तेमां जामनी जीत थइ, जेथी ते वारंवार पोतानी वडाइ गावा लाग्या. आथी गुस्से थएलां लखमाजीबाए जामने कह्युं के आम शतरंजनी रमतमां विजय मेळवी शामाटे नकामा पोरसाइ जाओ छो? काष्ठना पादशाहने मात करवो एमां शी म्होटी वात? पण जो आप मारा भाइ चन्द्रसिंहजीने जीतो तो हुं आपना पराक्रमने प्रशंसनीय गणुं. पोतानी अर्धांगनाना आवां वीररसथी भरेलां वाक्यो सांभळी जाम जसाजीए हळवद उपर एक मोटी फोज मोकली, परंतु ए लोको राजचन्द्रसिंहजीने मात करवामां पछात पड्या. छेवटे जाम जसाजीए नागर शंकरदासनी सहायताथी राजचंद्रसिंहजीने पकडावी नवानगरमां दाखल कर्या अने स्वल्प समयमांज पाछा तेओने छोडी मूक्या.

राजचन्द्रसिंहजीने पृथीराजजी, आशकरणजी, अमरसिंहजी अभेसिंहजी, रामसिंहजी अने राणाजी नामना छ कुमार हता. तेमां पृथीराजजी भडलीना सरवैया रावना भाणेज थता हता. आशकरणजी तथा अमरसिंहजीनो जोधपुरवाळां राठोडराणीथी जन्म थयो हतो, अभेराजजी शिहोरना, रायसिंहजी खीलोसना अने राणोजी पेथापर माणसाना दौहित्र थता

---

१ श्री झाला कुळना बारोट पोताना चोपडामां राजचन्द्रसिंहजीना नव कुमार हता एवुं जणावे छे अने ध्रांगध्राना इतिहासमां नहि गणेला त्रण कुमारनां भोजराजजी, सूरसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी एवां नामो बतावे छे. तेनी साथे भोजराजजी "माणसा" ना अने सूरसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी "कुण" ना भाणेज हता एम कहे छे.

हता. हवे हळवदनी गादीना खरा हकदार पाटवो कुमार पृथीराजजी हता, छतां आशकरणजी तथा अमरसिंहजीए पोतानो हेतु पार पाडवा माटे अमदावादना सूबानी सहायता मागी. सूबाए युक्तिप्रयुक्तिथी पृथीराजने पकडी केद कर्या बाद अमुक वखते तेओ स्वर्गनी राहे संचर्या.*

राजचन्द्रसिंहजीना चोथा पुत्र अभेसिंहजीने "थान" तथा "लखतर" पांचमा पुत्र रामसिंहजीने "कुडा" अने छठ्ठा पुत्र राणाजीने "माथक" नामे गाम गिरासमां मळ्युं हतुं.

वि. सं. १६८४ मां राजचन्द्रसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना द्वितीय कुमार आशकरणजी हळवदनी गादीए बेठा, तेओए पोताना न्हाना भाइ अमरसिंहजीने बार गामो सहित गाम मालवण आप्युं. ए बन्ने बन्धुओ एकज स्थळे (गाजणीआने त्यां) परण्या हता. आशकरणजीनां राणी म्होटी ब्हेन अने अमरसिंहजीनां राणी न्हानी ब्हेन थतां हतां. एक वखते म्होटी ब्हेनने मळवा न्हानी बेन मालवणथी हळवद आव्यां त्यारे न्हानी ब्हेनने म्होटी ब्हेने म्हेणुं मार्युं के तमो तो पितृघातक छो; जेथी तमारुं मुख जोवुं ए उचित नथी. आवां तिरस्कारयुक्त वचन सांभळी न्हानी ब्हेन सत्वर स्वकीय रथने सज्ज करावी मालवण तरफ रवाना थयां अने त्यां पहोंच्या बाद तेणे पोताना प्रियतम पासे म्होटी ब्हेने मारेल मेणां संबंधी सघळी हकीकत कही संभळावी; एथी कुमार अमरसिंहे विचार कर्यो के वात तो खरी, पिताने मार्यानुं कलंक मारा पर चढयुं अने राज्यसुख म्होटा भाइने मळ्युं ए शा कामनुं? आम अनेक तर्कवितर्क करता क्रोधमांने क्रोधमां तेओ अश्वारूढ थइ हळवद आव्या अने जे स्थळे राज-आशकरणजी स्नान करता हता, त्यां जइ तेओने भालांना असह्य प्रहारथी अचेत करी पोते वि. सं. १६९० मां हळवदनी गादी हस्तगत करी.

ज्यारे पृथीराजना कुमार राजसरतानसिंहजीए वांकानेर वसाव्या बाद हळवदपर वारंवार हुमला करवा मांडया; त्यारे अमरसिंहजी पोतानी सरहदनुं संरक्षण करवा माटे माथक आव्या; ए वखते तेओना मददगार बनेला मुळीना परमार तथा केटलाएक काठी लोको वांकानेर ताबाना कोइएक गाम (भीमगुडा) मांथी ढोरोने हांकी गया. ए समाचार सांभळतांज राजसरतानजीए

---

* पृथीराज संबंधी हकीकत वांकानेरना इतिहासमां सविस्तर वर्णवेली छे.

१ कहे छे के कुमार अमरसिंहजीए पोताना पिता राजचंद्रसिंहजी ए मारी म्होटा भाइ आशकरणजीने हळवदनी गादीए बेसाडया हता. अमोए ए वात वांकानेरना इतिहासमां दाखल करेली छे.

तेओनी पाछळ जइ पोतानां पशुओने स्वाधीन कर्या, परंतु राजअमरसिंहजीनां माणसो तथा मुळीना परमार वगेरे एकत्र थइ राजसरतानजीनां सैन्य उपर तुटी पडया; भीमगुडा तथा ओळ पासे भयंकर युद्ध मच्युं; तेमां राजसरतानजी मार्या गया; जेथी हाल पण ए जगो " सरतानजीनुं रण " ए नामथी ओळखाय छे. त्यां एक न्हानी सरखी देरी बांधेली छे तथा युद्धमां पंचत्वने प्राप्त थएला वीरपुरुषोना पाळीया छे.

राजअमरसिंहजी गाजणीया भाणाजी अखेराजनां कुंवरी श्यामबा तथा जाडेजा अलीयाजी भाराजीनां पुत्री ताजकुंवरबाने परण्या हता; तेओने एक मेघराजजी नामे कुमार थया.

वि. सं. १७०१ मां राजअमरसिंहजीनो स्वर्गवास थतां, तेओना कुमार मेघराजजी हळवदनी राजगादीए बेठा; तेओ महान् धर्मात्मा अने पुण्यशाळी हता; तेओए सिद्धपुर, नर्मदा, द्वारिका, तथा सोमनाथपाटण आदि स्थळे यात्रा करी असंख्य ब्राह्मणोने भोजन तथा दक्षिणाथी संतुष्ट कर्या हता. तेओ नव राणीओ परण्या हता.

१ रतनकुंवरबा, ते जाडेजा खेंगारजी रमलाजीनां कुंवरी के जेनाथी कुमार गजसिंहजीनो जन्म थयो.

२ लीलाजीबा, ते जाडेजा मेरामणजी विभाजीनां कुंवरी,

३ यशकुंवरबा, ते साणंदना वाघेला राजाजी वजेराजनां पुत्री.

४ श्यामकुंवरबा, ते साणदना वाघेला राजाजी वजेराजनां पुत्री.

५ हेमजीबा, ते गारीयाधरना गोहेल राणाजीनां पुत्री

६ लाडबा, ते जाडेजा अभेराजनां पुत्री.

७ श्यामकुंवरबा, ते गांगडना वाघेला मुळुजी देशळजीनां पुत्री.

८ रुपाळीबा, ते चुडासमा प्रतापजी रासळजीनां पुत्री.

९ देवकुंवरबा, ते वांकलना वाघेला गजसिंहजी सुलतानसिंहजीनां पुत्री.

वि. सं. १७१७ मां राज मेघराजजीनो स्वर्गवास थतां कुमार गजसिंहजी हळवदनी गादीए बेठा. तेओए द्वादश वर्ष पर्यन्त राज्यसुखनो उपभोग कर्यो; तेओना समयमां सर्वत्र सुखशान्ति हती. तेओनां वागड देशमां आवेला गाम आडेसरवाळां राणीजीथी कुमार चन्द्रसिंहजीनो जन्म थयो; ए चन्द्रसिंहजीने पण आडेसर परणाववामां आव्या. महाराजा गजसिंहजीना बीजा कुमार जसवंतसिंहजीने मालवण तथा बीजां केटलांएक गाम गिरासमां मळ्यां हतां. पाटवीकुमार चन्द्र-

सिंहजीने आशकरणजी नामे कुमार थया. परंतु ए बाप बेटा बन्नेने बीठा गढवी नामना कोइएक चारणे मारी नांख्या.

राजगजसिंहजीना तृतीय कुमारनुं नाम जगोभाइ हतुं, तेने "सुसवाव" नामनुं गाम गिरासमां मळ्युं.

वि. सं. १७२९ मां राजगजसिंहजीनो कैलासवास थतां तेओनां बीजा कुमार जसवंतसिंहजी हळवदनी गादीए बेठा; तेओना म्होटाभाइ चन्द्रसिंहजी (जेने चारणे मारी नांख्या हता ते) ने आशकरणजी नामना कुमार उपरांत एक झींझुवा नामे पुत्री पण हतां; तेना लग्न जोधपुरना राठोड जसवंतसिंहजीना कुमार अजितसिंह साथे करवामां आव्यां हतां. वि. सं १७२७ मां राठोड राजा जसवंतसिंहजी बादशाह तरफथी गुजरातना सूबेदारनी जगोए दाखल थया हता. तेओए पोताना पुत्रवधू (चंद्रसिंहजीनां पुत्री) नी अरजथी हळवदना राजा जसवंतसिंहजी उपर हुमलो कर्यो. झाला जसवंतसिंहे हळवदनुं राज्य हस्तगत करी बावी नजरअलीखानने जागीर तरीके एनायत कर्युं; नजरअलीखांए त्यां छ वर्ष पर्यन्त सत्ता भोगवी. त्यारबाद वांकानेरना वीरवर राजचंद्रसिंहजीए बावीने हळवदमांथी हांकी काढी त्रण वर्ष पर्यन्त त्यांनी स्वतंत्र राज्यसत्ता भोगवी. पाछुं हळवद त्यांना मूळ राजा जसवंतसिंहजीना हाथमां गयुं. तेओने वि. सं. १७३८ मां बादशाह औरंगजेबे सनंदथी हळवदनी गादी तथा त्यांनां मीठाना अगरनो कबजो नक्की करी आप्यो. वि. सं. १७७१ मां जोधपुरना महाराजा अजीतसिंहजी गुजरातना सूबेदार बन्या; तेओए एक म्होटुं लश्कर लइ हळवद तरफ प्रयाण कर्युं अने त्या पहोंच्या बाद राज जसवंतसिंहजीने खंटणी आपवानी फरज पाडी. राठोड राजा अजीतसिंहजी त्यांथी नवानगर तरफ रवाना थया. राज जसवंतसिंहजी तेना पाछळ गया अने तेओए जाम तमाचीना मददगार बनी अजीतसिंहना लश्करने हेरान कर्युं; तो पण अजीतसिंहजीए जाम तमाचीने खंडणी पेटे त्रण लाख रुपिआ तथा पचीश कच्छी घोडा आपवानी फरज पाडी. त्यारबाद द्वारिकानी यात्रा करी राठोड अजीतसिंहजी पाछा अमदावाद आवी पहोंच्या. तेओनां राणी झालीजी (चन्द्रसिंहजीनां पुत्री) हळवदना राजा जसवंतसिंह तरफ अत्यंत द्वेष तथा वेरनी लागणी धरावतां हतां. तेवामां गुजरातमांथी राठोड अजीतसिंहजीनी बदली थइ, तेथी तेओ कोइपण रीते अथवा कोइपण बहानाथी काठिआवाडमां लश्कर मोकली शके एवुं रह्युं नहि. एटला माटे

एओनां राणीजीए हरकोइ प्रपंचथी हळवदना राजा जसवतसिंहजीने मारी नांखवानो निश्चय करी पांच राजपूतोने साधु वेषे त्यां मोकली आप्या. ए साधुओ—राजपूतो हळवदमां आवी राजश्वेर तळावने किनारे केटलोक वखत रह्या. एक दिवसे राज जसवतसिंहजी सुखपालमां बेसी थोडा घणा अनुचरो सहित ए रस्ते फरवा जता हता, साधु वेषे सज्ज थइ रहेला राजपूतो तेओना उपर एकदम तूटी पड्या; तेमांनो एक राजपूत काम आव्यो अने बाकीना चार न्हासी गया; परंतु राज जसवतसिंहजी ए लोकोना प्रथम प्रहारथीज पंचत्वने प्राप्त थया. तेओए हळवदमां एक म्होटो म्हेल[1] बंधाव्यो हतो. तेओना चार कुमारोमांथी पाटवीकुमार प्रतापसिंहजी वि—सं. १७७४ मा तख्तनशीन थया. बीजा कुमार मानसिंहजीने मालवण विगेरे गाम, त्रीजा कुमार मेरुराजजीने माळीयाद तथा अजाल विगेरे गाम अने चोथा कुमार आमाभाइने घवाणु तथा वेळालु वगेरे गाम गिरासमां मळ्या. वि—सं. १७७१ मां सूबो दाउदखानपन्नी काठिआवाडनी सफर करतां करतां हळवदमां आवी पहोंच्यो अने त्यां थोडो वखत रही ते राज जसवतसिंहजीनां कुंवरीने परण्यो. ए अरसामां नवानगरना जाम हरधोळजीए पोताना ओरमान भाइ जाम रायसिंहजीने मारी त्यांनी राजगादीने पचावी पाडी. कोइएक दासीपुत्री जाम रायसिंहजीना बाळपुत्र तमाचीने पेटीमां संताडी कच्छ तरफ लइ गइ अने भूजना राव साथे परणावेलां हळवद नरेश प्रतापसिंहजीना ब्हेन बाइ रत्नाजीने आश्रये जइ रही. थोडा वखत पछी रत्नाजीबाए पोताना भाइ प्रतापसिंहजीने पत्र लख्यो के आपना एक पुत्रीने गुजरातना सूबा सरबुलंदखान उर्फे मुबारीझउलमुल्क साथे तथा बीजां कुंवरीने एथी नीचेना हुद्देदार बादशाही लश्करना उमरो सलाबत महमदखान बाबी साथे परणावो अने ए उभय यवन सरदारोनी सहायता मेळवो. हळवदनरेश प्रतापसिंहजीए ब्हेनना वचन प्रमाणे बन्ने पुत्रीओनां लग्न कर्यां अने सर बुलंदखान तथा सलाबत महम्मदखाननी सहायताथी जाम हरधोळजीने नवानगरनी गादीपरथी उठाडी मूक्या अने ते जगोए जाम तमाचीने बेसाड्या.

जूनागढना दिवान रणछोडभाइए पोताना "तवारीख–इ सोरठ" नामना पुस्तकमां लख्युं छे के जाम तमाचीए हळवदना राजने हडीयाणां नामनुं परगणुं आप्युं अने चरखडी, बाकुडा तथा

---

[1] ए महेल घणां वर्षो व्यतीत थवाथी जीर्ण बनी गयो हतो तेने जसवतसिंहजी पछी सातमी पेढीए थएला राज रणमलसिंहजीए केटलाएक सुधारा वधारा साथे फरी बंधाव्यो हतो एवुं महेलनी अंदरना शिलालेख उपरथी जाणी शकाय छे.

दर्या नापना त्रण गामडां सलावत साथे परणावेलो पुत्रोने आप्यां. त्यारबाद ए त्रण गामो सळावतखानना पुत्रो शेरझमानखान तथा दिलीरखांने गोंडलना राणा कुंभाजीने वेचाण आप्यां.

राजश्री प्रतापसिंहजीने रायसिंहजी, कलाभाइ तथा वजाभाइ नामे त्रण कुमारो हता. तेमांना कलाभाइने वावली तथा माणेकवाला अने वजाभाइने वेगडवाव गिरासमां मळ्यां.

वि० सं० १७८६ मां राज प्रतापसिंहनो स्वर्गवास थतां पाटवी रायसिंहजी बीजा श्री हळवदनी गादिए विराजमान थया, तेओए एज वर्षे ध्रांगध्राने फरतो कोट बंधावी वर्ष दरमियान अमुक मास त्यांज रहेवानुं मुकरर कर्युं हतुं, अने वाटावदर पासे नदीने किनारे "रायसिंहपुर" नामनुं एक नवुं गाम वसाव्युं हतुं. ए राजा बहुज बुद्धिमान हता; तेओए भायातोने गरास तरीके अपाती जमीनमां घटाडो करवा विचार कर्यो; एथी तेओना द्वितीय कुमार शेषाभाइ के जे घणाज साहसिक अने स्वभावे चंचळ हता तेनी आगेवानी हेठळ बीजा बधा कुमारोए राज्य साथे वारवटुं खेडवा मांड्युं; म्होटा कुमार गजसिंहजी पण गुप्तरीते एओने मदद आपवा लाग्या ए बाबत ज्यारे राज रायसिंहजीना जाणवामां आवी त्यारे तेओने घणोज खेद थयो. जेना लाभ माटे तेओ अन्य कुमारोना गरासमां घटाडो करवा धारता हता, एज पाटवी कुमार सामा पक्षमां सामेल थवाथी रायसिंहजीए तुरतज पोताना तमाम पुत्रोने बोलावी पूरेपूरो गरास आपी दीधो.

राज रायसिंहजीने गजसिंहजी, शेषाभाइ, मेरुजी, अजाभाइ, कमळाभाइ, नथुभाइ, अने असाभाइ नामे सात पुत्रो हता.

वि० स० १८०१ मां रायसिंहजीनो कैलासवास थतां पाटवी कुमार गजसिंहजी हळवदनी गादीए बेठा शेषाभाइ तथा मेरुजीने माथक तथा तेनी आसपासनां गामडांओ गरासमां मळ्यां. अजाभाइने भलगामडु तथा शापकरुं, कमळाभाइने धनालु तथा चराडवा अने नथुभाइ तथा असाभाइने सरा तथा पलो नामनां गाम गरासमां मळ्या; परंतु ए बन्ने भाइओने काइ संतति नहि होवाने लीधे तेओनो गरास फरी राज्यमां दाखल थयो.

शेषाभाइए पोताने माथकमां जे गरास हतो ते मूकी बारवटुं करवा मांड्युं अने ध्रांगध्रा पासेथी नारीचाणा नामनुं गाम लीधुं; त्यारबाद तेणे राज गजसिंहजीनी सहायताथी खवड जातिना काठीओने जीती तेओनुं सायला नामे गाम स्वाधीन कर्युं तथा आजुबाजुनां गामडांओने जीती सायलामां पोतानी राजधानी स्थापी.

राज गजसिंहजी महीकांठामां आवेला गाम वरसोडाना चावडा राणानी पुत्री जीजीबाने

परण्या हता, तेनाथी एक जसवंतसिंहजी नामना कुमारनो जन्म थयो. गजसिंहजी पासे शेषाभाइनुं एटलुं बधुं चलण हतुं के ते कहे एटलुंज गजसिंहजी करता हता. तेओ शेषाभाइनी सूचना प्रमाणे ध्रांगध्रामां अने थोडो वखत हळवदमां रहेता; तेओना राणी जीजीबा साहसिक दियर शेषाभाइना भयथी कुमार जसवंतसिंहजीने लइ पोताने पियर (वरसोडे) चाल्या गयां.

वि. सं. १८०९ मां मराठाओए अमदावादने स्वाधीन कर्युं, तेना पासेथी यवन सरदार मोमीनखांए फरी एकवार अमदावादने छीनवी लीधुं, तो पण छेवटे वि. सं. १८१८ मां गायकवाड तथा पेशवानी सत्ता गुजरातमां सर्वोपरि थती गइ. ए वखते शेषाभाइए हळवदनी राजगादीने स्वाधीन करवाना हेतुथी घणां माणसोने एकठां करी राज गजसिंहजीने पराभव पमाडवानी पेरवी करी; परंतु पोताना लघु बन्धुना प्रपंचथी वाकेफ थएला गजसिंहजी वगरविलंबे वावळीना राणा कलाभाइ पासे जइ पहोंच्या, अने तेओनी मददथी पाछुं हळवदनुं राज्य पोते हस्तगत कर्युं, शेषाभाइए ध्रांगध्रानो कबजो लीधो अने लडाइनी तैयारी करी. ए समाचार राणी जीजीबाने मळतां ते पोताना कुमार जसवतसिंहजीने लइ वरसोडेथी सीधे आव्यां अने धोळका तथा वीरमगामना कस्बातीओनी मदद मेळवी शेषाभाइ पासेथी ध्रांगध्रानो कबजो लेवा कोशीश करी, परंतु तेमां ते फाव्यां नहि. ए अरसामां पेशवानो सरदार भगवंतराव खंडणी उघरावबा माटे झालावाडमां आवेल हतो. तेनी तथा राधनपुरना बाबीनी मददथी राणी जीजीबाए शेषाभाइने ध्रांगध्रामांथी न्हसाडी मूक्या अने पेशवा सरदार भगवंतरावने खंडणी तथा नजराणुं आप्युं. त्यारथी आरंभी राज गजसिंहना परलोकप्रयाण पर्यन्त राणी जीजीबा तथा कुमार जसवतसिंहजीए ध्रांगध्रा तथा सीथानो वहीवट चलाव्यो अने गजसिंहजीए हळवदमां राज्य कर्युं. बन्ने अरधोअरध खंडणी आपता.

वि० सं० १८१५ मां मराठा सरदार सदाशिव रामचंद्र लश्कर लइ ध्रांगध्रा उपर चढी आव्यो ए वखते हळवदथी राज गजसिंहजीए एक लश्कर ध्रांगध्रानी मददे मोकल्युं. मरेठाओने तो बन्ने पक्ष सरखा हता, जेथी तेओए रात्रीने वखते एक टुकडो हळवद पर हल्लो करवा मोकली. गजसिंहजी थोडीवार झगडो कर्या पछी तावे थया. तेओने मराठा सरदार सदाशिवे १२०००० रुपिआ दंडना लइ मुक्त कर्या. वि० सं० १८३८ मां राज गजसिंहजीए कैलासवास कर्यो. तेओने सात पुत्रो हता.

१ जसवतसिंहजी पाटवी कुमार होवाथी हळवदनी गादीए बेठा.

२ दाजीभाइ, तेने गाम इसानपुर तथा कडीयाणु गरासमां मळ्यां.

३ रवाजी, तेने पंचालमां आवेल रायसंगपुरनो अर्ध भाग मळ्यो.

४ देशळजी, ते भावनगरनां राजकुंवरीथी जन्मेला हता, तेओने दाघोळीयुं नामे गाम गरासमां मळ्युं.

५ जेठीजी, ते गांफ गामना चुडासमा राणानी भगिनीने उदरे उत्पन्न थएला हता, तेने गाम दीघळीयुं गरासमां मळ्युं.

६ वाघजी, तेने रायसंगपुरनो अर्ध भाग मळ्यो.

७ दादाजी, ते भादरवानरेशनी भगिनीथी जन्मेला हता, तेने गरासमां घणाद नामनुं गाम मळ्युं.

गजसिंहजीने एक आछुबा नामे कुंवरी हतां अने तेना लग्न नवानगरना जाम जसाजी साथे कर्यां हता.

राज जसवंतसिंहजी घणे भागे ध्रांगध्रामां निवास करता हता; तेओए त्यांज पोतानी राजधानी जमावी. त्यारथी हळवद ध्रांगध्राना झालाओनुं मुख्य शेहेर ध्रांगध्राज मनाय छे.

केटलाक काठी लोको ध्रांगध्राना कोइएक गामडामांथी ढोरोने हांकी गया. ए वात शेषाभाइने काने जतां ते तुरतज काठी पाछळ थया अने ए लोको साथे धींगाणुं करी ढोरोने पाछा वाळी लाव्या, तेमां पोते पण घायल थया; तेओने बहादुरीना बदलामां राज जसवतसिंहजीए लीया नामनुं गाम इनाममां आप्युं. वळी सरधारना काठीओ गाम उमरडाना ढोरोने हांकी गया, ए वखते पण राज जसवंतसिंहजीए एक लश्कर सरधार उपर मोकली आप्युं.

स्वर्गस्थ राज गजसिंहजीना वखतमां राज्यना मोखासदारोए राज्यनी जमीन उपर पगपेसारो कर्यो हतो. जसवतसिंहजीए तेओने यथोचित शिक्षा आपी. ए अरसामां नवानगरनी अंदर दिवानपदे नियत थएलो मेरामण खवास संपूर्ण राज्यसत्ता भोगवतो हतो. जाम जसाजी तो मात्र नामनाज राजा हता, तेने मेरु खवास बहुज दाबमां राखतो एथी नवानगरनी प्रजा तेनापर हद उपरांत नाराज थइ; तेनुं कासळ काढवा माटे खीरसराना रणमलजी वगेरे जाडेजाओए कच्छ भूजना सेनापति जमादार फतेमहमदनी मदद मागी. वि–सं १८५४ मां फतेहमहमद म्होटी फोज साथे रणने रस्तेथी हालारमां दाखल थयो. ए वखते राज जसवनसिंहजी पोतानुं लश्कर लइ ज्यां जामनगरनुं लश्कर पडाव नांखी पड्युं हतुं त्यां आवी पहोंच्यो. तेओए बेमांथी एकेनो पक्ष

१ रायसंगपुर अथवा रासंगपुर.

कर्यो नहि. जमादार फतेहमहमदे पडधरी नामना गाम पासे युद्ध करी नवानगरना लश्करने हराव्युं; त्यारबाद ते खंभाळीआनी आजुबाजुना मुलकमां लुंटफाट चलावी कच्छमां चाल्यो गयो अने वि. सं. १८५७ मां फरी ते हालार उपर चढी आव्यो. आ वखते मेरु खवासे जूनागढना नवाब हामदखाननी मदद मेळवी मोरवी तावे घेनसरा नामना गामडा नजीक पडाव नांख्यो. बन्ने तरफनां लश्करो लडवा तैयार थयां, परंतु राजजसवंतसिंहजीए वच्चे पडी सलाह संप कराव्यो, जेथी जमादार फतेहमहमद कच्छ तरफ पाछो फर्यो. फरी वि. सं. १८५४ मां कच्छना राव तथा जमादार फतेहमहमद म्होटी फोज लइ हालारमां आव्या अने तेओए नवानगरने फरतो घेरो घाल्यो. परंतु तेमां तेओ फाव्या नहि. अंते घेरो उठावी लेवो पड्यो. कारणके ए वखते पण जसवंतसिंहजीए वच्चे पडी बन्ने पक्षनुं समाधान कर्युं अने ए काम बदल तेओने नवानगर स्टेट तरफथी फला नामनुं गाम आपवामां आव्युं.

राज जसवतसिंहजीने पांच राणीओ हतां, तेमांना पहेलां राणी चंदुबा, ते पेथापुरना वाघेला अदेसिंहजीनां पुत्री हता, तेणे बे पुत्र तथा एक पुत्रीने जन्म आप्यो; पहेला कुमार रायसिंहजी जसवतसिंहजी पछी गादीना हकदार गणाया अने बीजा कुमार काकोभाइ बाल्यंवयमांज गुजरी गया. राजकुमारी ताजबाने जयपुरना महाराजा साथे परणाव्यां. बीजी राणी जीजीबा, ते कच्छ शापुरना जाडेजा मेघाजीनां पुत्री हतां, तेने पण सांगाजी तथा जेसंगजी नामे बे पुत्र थया. ए बन्नेने गरासमां गाम रासंगपुर मळ्युं. त्रीजां राणी बाजीबा, ते कच्छमां आवेला धमलकाना जाडेजा मालाजीनां पुत्री हतां, तेने पण अदाभाइ तथा सूराभाइ नामे बे पुत्र थया; ए बन्नेने बावडी नामनुं गाम गरासमां मळ्युं. चोथां राणी रतनकुंवरबा, ते भालमां आवेळा गाम उतेलीयाना वाघेलानां पुत्री हतां; तेने पण सांगाभाइ तथा राणाभाइ नामे बे पुत्र थया; ए बन्नेने रायपुर नामनुं गाम गरासमां मळ्युं. पांचमां राणी आलुबा, ते गांगडना भगवतसिंहजीनी पुत्री हता, तेनाथी मात्र एक रुपाळीबा नामनां कुंवरीए जन्म लीधो. ए रुपाळीबाने उदयपुरना महाराणा भीमसिंह वेरे परणाव्यां.

वि. सं. १८५७ मां राज जसवतसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना पाटवीकुमार रायसिंहजीए हळवदना राज्यासनने अलंकृत कर्युं; तेओना वखतमां कांइ जाणवा योग्य बनाव बन्या नथी; तेओए मात्र त्रणज वर्ष राज्य कर्युं. तेओनां बे स्थळे लग्न थयां हतां. तेमांना मुख्य राणी मोतीबा साणंद ठाकोरनां पुत्री हतां. तेणे अमरसिंहजी तथा जीजीभाइ नामना बे कुमारने जन्म आप्यो.

जीजीभाइने रावळीयावदर नामनुं गाम गरासमां मळ्युं हतुं, पण ते निःसंतान स्वर्गवासी थवाथी ते गाम पाछुं दरबारमां दाखल थयुं. बीजां राणी प्राणबा वरसोडाना राजपुत्री हतां, तेनाथी जन्मेला कुमार वजाभाइने सोलडी नामनुं गाम गरासमां मळ्युं, पण पाछळथी तेओ वीनवारस गुजरी जतां तेनो गरास राजमां गयो.

वि. सं. १८६० मां राज रायसिंहनो कैलासवास थतां तेओना पाटवीकुमार अमरसिंहजी तख्तनशीन थया, त्यारबाद त्रीजे चोथे वर्षे अर्थात् वि. सं १८६३ मां वडोदरानी अंदर रहेला अंग्रेजी रेसीडन्ट कर्नल वॉकर तथा गायकवाड सरकारना प्रतिनिधि तरीके प्रसिद्ध थएला बाबाजी आपाजी ए बन्नेए मळी काठिआवाडनां देशी राज्यो पासेथी लेवाती खंडणी संबंधी कायमी निर्णय कर्यो अर्थात् क्ये दरे खंडणी लेवी ते संबंधी ठराव कर्यो. ए वखते ध्रांगध्रा राज्यना प्रदेश वढवाणनी गादी साथेना कजीआने लीधे तेमज जाट तथा मीयाणा लोकोए चलावेली लूंटफाटने लीधे तद्दन कंगाल तथा वेरान सरखी स्थितिमां हतो, परंतु ज्यारे वि-सं. १८७६ मां काठिआवाडनी अंदर एजन्सी खातुं स्थपायुं त्यारथी ध्रांगध्रा राज्यनी स्थिति सारी थती गइ अने मुलक धीमे धीमे वस्तीवाळो थतो गयो. वि-सं. १८७० नी शरुआतमां राज अमरसिंहजीए झींझुवाडा सर कर्युं अने तेनो बे वर्ष पर्यन्त पोते वहीवट कर्यो. पण तेओ चडेली खंडणी सरकारने आपवा शक्तिमान न होवाथी वि-सं. १८७२ मां तेओना पासेथी गायकवाड सरकारे झींझुवाडा पटावो लीधु अने विठलराव देवाजीने त्यांनां वहीवटदार तरीके नीम्या. त्यारपछी मेजर बेलेनटाइनना कारभारमां ए गामनी जमीन वि-सं. १८७६ सुधी गणोते आपवामां आवती. ते वि-सं. १८७७ ना अंतमां अमदावादना कलेकटरने सोंपी देवामां आवी. ते वखतथी झींझुवाडा एक जुदोज तालुको गणाय छे.

राज अमरसिंहजीने छ राणीओ हतां.

१ देदबा, ते गांगडना राणानी पुत्री हतां, तेणे बे पुत्र तथा बे पुत्रीने जन्म आप्यो. म्होटा पुत्र रणमलजी गादीना हकदार गणाया. एथी न्हाना लखुभाने गरासमां गाम चराडवा मळ्युं. अने म्होटां कुंवरी दाजीराजनो कच्छना राव देशळजी साथे तथा न्हानां कुंवरी जमुबानो नवानगरना कुमार अजाजी साथे विवाह कर्यो.

२ जाडेचा, ते देटना वाघेला मोकाजीनां पुत्री हतां, तेनाथी एक रुपाळीबा नामे कुंवरीनो जन्म थयो अने तेने कच्छना राओ देशळजी वेरे परणाव्यां.

३ वखतुबा, ते पालीताणाना गोहेल उन्नडजीनां पुत्री हतां; तेनाथी बाइसाहेब नामनां एक कुंवरीनो जन्म थयो अने तेने नवानगरना जाम रणमलजी वेर परणाव्यां.

४ रामबा, ते अमदावाद पासे आवेल गाम कुणाना वाघेलानी पुत्री हतां, तेणे एक तेजी- बा नामनां कुंवरीने जन्म आप्यो. ए तेजीबानां लग्न नवानगरना जाम विभाजी साथे थयां.

५ राबा, ते माळीआना जाडेजा डोसाजीनां पुत्री हतां तेणे पण एक बोनजीबा नामे कुंवरीने जन्म आप्यो. ए बोनजीबाने पोरबंदरना राणा विक्रमातजी वेरे परणाव्यां.

६ बाइबा, ते साणंद ठाकोरनां पुत्री हतां, तेने कांइ पण संतति थइ नहि.

राज अमरसिंहजीए ध्रांगध्रामां एक रामजीनुं मन्दिर बंधाव्युं. वि–सं. १८७६ मां कच्छ ताबे वागडना कोळी तथा सिन्धि लोको रणने ओळंगी ध्रांगध्रा राज्यना उत्तर तरफना प्रदेश उपर तूटी पड्या अने लूंटफाट चलावी पाछा गया, एथी राज अमरसिंहजीए सरहद उपरनां गामडांओमां थाणां बेसाड्यां अने पोताने थएल नुकशान कच्छना राव पासेथी अपाववा नामदार अंग्रेज सरकारने अरज करी. कच्छना राओ पोतानी कोळी तथा सिन्धि जातिनी प्रजाने काबुमां राखवा अशक्त होवाथी नामदार अंग्रेज सरकारे मेकमर्डोने लश्कर साथे मोकल्यो. मेकमर्डो प्रथम हळवदमां तथा मोरबी ताबे घाटीलामां थोडा वखत रह्या पछी कच्छमां गयो. अने त्यांना राओने मळी तेणे तेओनो प्रजाए ध्रांगध्रा राज्यने करेली नुकशानी बदल बे लाख रुपिआ आपवानी फर- ज पाडी अने ए रकममांथी ध्रांगध्राना भायाती गामडांओने थएल नुकशान बदल अमुक हिस्सो आपी बाकीनी रकम ध्रांगध्रा दरबारने सोंपी दीधी. ध्रांगध्रा स्टेटने ढोरढांखर तथा खेतीना ओजार संबंधी थएली नुकशानी मेकमर्डोए जे दरे चुकवी ते दर इ. सं. १८६८ वि–सं. १९२४ ना दरनी साथे सरखावतां नीचे मुजब छे.

ढोर अथवा ओजारनुं नाम.	मेकमर्डोए चुकावेली किम्मत.	वि. सं. १९२४ मां उपजती किम्मत.
घोडा	रु. १००	रु. २००
टट्टु (न्हानुं घोडुं)	,, १२	,, ३०
उंट	,, ५०	,, ८०
गाइ	,, ५०	,, ८०

हळ	,, ५	,, १०
बळद	,, ३०	,, ७५
गाय	,, १२	,, २५
भेंस	,, ३०	,, ५०
घेटुं	,, २	,, ३
गधेडुं	,, १४	,, २५

राज अमरसिंहजीए अमरापुर तथा हामपुर नामनां बे नवां गामडां वसाव्यां. वि० सं० १८९९ मां तेओनो स्वर्गवास थतां राजकुमार रणमलसिंहजी बत्रीश वर्षनी उम्मरे इ० स० १८४३ ना एप्रीलनी ता० ९ मीए तख्तनशीन थया. तेओए ध्रांगध्राना किल्लानुं समारकाम कराव्युं, सीधा तथा उमरडामां नवा किल्ला बंधाव्या, हळवदनो म्होटो महेल फरीथी चणाव्यो, सीधा आगळ रहेला चंद्रसर तळावमां सुधारो कराव्यो अने ध्रांगध्रा आगळ एक रणमलसर नामनुं नवुं तळाव खोदावी बंधाव्युं. राज रणमलसिंहजी राजकाजमां बहुज कुशळ हता, तेओए संस्कृत, फारसी, उर्दु तथा गुजराती भाषानुं उत्तम रीते ज्ञान मेळवेलुं हतुं. तेनी साथे तेओ कवि पण हता. बाल्यवयथीज तेओने सिंहना शिकारनो शोख हतो. तेओए ध्रांगध्रानी हदमां सिंहनो शिकार कर्यो हतो. वि० सं० १८८९ मां महेरबान एक्टींग पोलीटीकल एजन्ट केप्टन वीलसननी साथे तेमज केप्टन जॅकबनी साथे सफर करवा निकळेला राज रणमलसिंहजीए केटलाएक सिंहनो बहादुरीथी शिकार कर्यो हतो. तेओ ज्यारे तख्तनशीन थया, त्यारे राज्य उपर ऋण हतुं; ते तेओए योग्य बरवसरथी भरी आप्युं. पोताना भायातो तथा बीजा मोखासदारो साथे संप राखवामां तथा राज्यनी द्रव्यबळ तथा सैन्यबळ वगेरे संपत्तिओ केळववामां तेओए एटलुं बधुं डहापण देखाड्युं के तेओनुं नाम आखा काठिआवाडमां एक श्रेष्ठ राज्यकर्त्ता तरीके प्रसिद्ध थयुं. वि० सं० १९०२

---

१ एमनो बनावेलो एक हिन्दी अने बीजो चारणी भाषानो दोहो मशहूर छे.

कनक कनकतें चोगुनी, मादकता अधिकाय;
वे खाये चढि जात है, वे पाये चढि जात. ॥
मत दीधे माने नहीं, कमतें मत कोळाय;
अवळे अखरे अवतर्या, एने सवळा केम सेवाय. ॥

मां तेओए एक रणमलपुर नामे नवुं गाम वसाव्युं. वि. सं. १९०३ मां तेओ कच्छ वागडमां गाम लाकडीआ नजीक राओ देशळजीने मळ्या. वि. सं. १९०६ मां तेओने राजकोट मध्ये वहारवटीया वीधा माणीकना मुकर्दमानी मे० पोलीटीकल एजन्ट कर्नल लेंग पासे चालती तपासमां आसेसर तरीके बेठक मळी हती. वि. सं. १९०७ मां राज रणमलसिंहजीए रेवाकांठामां आवेल भादरवाना वाघेला जालिमसिंहजीनां कुंवरी रुपाळीबा साथे पोताना पाटवीकुमार मानसिंहजीनां धामधूमथी लग्न कर्यां तेमज बीजी वखत धोळना भायात खीजडीयाना जाडेजा सांगाजीनां पुत्री जीजीबा साथे कुमार मानसिंहजीने परणाव्या. वि. सं. १९१० मां कच्छमां नाराणसर कोटेश्वरनी यात्राए पधारेला राजरणमलसिंहजीने फरी कच्छना राओनी मुलाकात थइ. ते वखते तेओए राओश्रीना पाटवीकुमार प्रागमलजी साथे पोतानां आछुबा तथा कृष्णकुंवरबा नामनां उभय राजकुमारीनो संबंध कर्यो अने त्यांथी ध्रांगध्रा आव्या बाद तुरतज कुंवरीश्री आछुबानां लग्ननो महान् समारंभ कर्यो तथा पोतानां त्रीजां कुंवरी बाइबाने इडरना महाराजा जसवंतसिंहजी वेरे परणाव्यां. एज वर्षमां कुमारश्री मानसिंहजीनां राणी रुपाळीबाने पुत्रनो प्रसव थयो. तेनुं नाम जसवंतसिंहजी राखवामां आव्युं. एज वर्षे राजरणमलसिंहजीए ध्रांगध्राना वायव्यकोणमां आशरे त्रण माइल दूर राजपुर नामनुं नवुं गामडुं वसाव्युं. वि. सं. १९११ मां ध्रांगध्रानी अंदर वैष्णवनी हवेलीनो पायो नांख्यो. ए मकान वि. सं. १९१४ मां तैयार थयुं. ए अरसामां राजरणमलसिंहजी सोमनाथपाटण, गिरनार तथा तुलशीश्याम वगेरे प्रख्यात स्थळोनी यात्रा करी आव्या. गिरनार जती वखते तेओने जूनागढना नवाबसाहेब महोवतखांनजीनी मुलाकात थइ हती. वि. सं. १९१९ मां ज्यारे तेओ नाशिकनी यात्राए पधार्या त्यारे मुंबइमां रोकाया हता, त्यां तेओने नामदार गवर्नर जनरल सर बार्टलफेरनो मिलाप थयो हतो. ए प्रसंगे कुमार मानसिंहजी साथे हता. इ. स. १८६३ नी शरुआतमां कर्नल कीर्टींग काठिआवाडना मे. पोलीटीकल एजन्ट नीमाया; तेओनी भलामणथी नामदार अंग्रेज सरकारे के. सी. एस. आइ. नो मानभर्यो इल्काब आप्यो. नामदार कर्नल कीर्टींगे वि. सं. १९२२ इ. स. १८६६ ना डीसेम्बरनी २२ मी तारीखे वढवाण मुकामे दरबार भरी झालावाडना मुख्य राजाओ समक्ष उक्त इल्कावनो राजरणमलसिंहजी उपर अभिषेक कर्यो. वि. सं. १९२३ मां राजरणमलसिंहजी बनारस, श्रीनाथद्वारा, पुष्करजी, श्यामलाजी, गोकुल, मथुरा तथा प्रयाग वगेरेनी यात्राए पधार्या अने आनंदपूर्वक ए तमाम स्थळनी यात्रा करी वि. सं. १९२४ मां पाछा राजधानीमां आवी पहोंच्या. जे वर्षमां बनारस वगेरेनी यात्राए निकळ्या, तेज वर्षे तेओए

गध्रा तथा घांटीला नामे वे नवां गामडां वसाव्यां हतां अने एज सालमां कुमार मानसिंहजी राजरणमलसिंहजीना प्रतिनिधि तरीके भरुचना प्रदर्शनमां गया तथा नामदार गवर्नर जनरल लॉर्ड मेयोना आगमन प्रसंगे मुंबइ पधार्या. वि. सं. १९२५ इ. स. १८६९ ना ऑक्टोबर मासनी ता. १६ मीए राजरणमलसिंहजीए कैलासवास कर्यो. तेओनुं राज्यकर्त्ता तरीकेनुं डहापण अनुपम हतुं. नामदार अंग्रेज सरकार तरफथी काठिआवाडमां के. सी, एस. आइना इल्कावनुं मान मेळवनार राजरणमलसिंहजी प्रथम गणाय छे. तेओने त्रण राणीओ हतां.

१ बाइसाहेब, राजकोटनां ठाकोर भाभाजीनां पुत्री हतां, तेने रघुनाथसिंहजी नामनो एक कुमार तथा आछुबा नामनां एक कुंवरी थयां. रघुनाथसिंहजीने हामापुर नामनुं गाम गरासमां मळ्युं.

२ बाइसाहेब, ते गोंडलना ठाकोर मोतीभाइनां पुत्री हतां, तेनाथी एक बाइबा नामनां कुंवरीनो जन्म थयो.

३ बाइराजबा उर्फे व्रजकुंवरबा, ते नवानगरनां भायात जाडेजा राघुभाइनां पुत्री हतां, तेने मानसिंहजी, मेरामणजी, हरिसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी नामे चार कुमार थयां. प्रतापसिंहजीने भारद नामनु गाम गरासमां मळ्युं.

वि.स. १९२५ मां ध्रांगध्रानी राजगादीए विराजमान थएला राजमानसिंहजीए वि. सं. १९२६ मां चुनवालमां आवेलां बहुचराजीनी तथा महीकांठामां आवेलां अंबाजीनी यात्रा करी अने पोताना राज्यमां गुजराती तथा अंग्रेजी निशाळो स्थापी. एक अंग्रेजी निशाळ तथा कन्याशाळा तळपदमां खोली, तेमज टीकर, मेथाण, मालवण, माथक, चराडवा, भराडा अने कोंढ वगेरे गामोमां गुजराती निशाळो स्थापी. मंगलपुर, मेरुपुर, तथा मानपुर नामनां त्रण नवां गाम वसाव्यां. एज वर्षमां नामवर ड्युक ऑफ एडीनबरो हन्दुस्थानमां आव्या, ते प्रसंगपर महाराजा मानसिंहजी मुंबइ गया अने ए मुलाकातनी यादगीरी माटे तेओए राजकोट सदरमां रु. १५००० पंदरहजारने खर्चे एक धर्मशाळा बंधावी. वि. सं. १९२६ इ. स. १८७० ना डीसेम्बर मासमां मुंबइना नामदार गवर्नर सर सेमूर फीटझेराल्ड राजकोट मुकामे पधार्या ते वखते भराएला दरबारमां महाराजा मानसिंहजीए हाजरी आपी हती. वि. सं. १९२७ मा तेओना पाटवीकुमार जसवंतसिंहजीनां प्रथम लग्न राजकोटना ठाकोर मेरामणजीनां कुंवरी बाजीराजबा साथे थयां अने बीजां लग्न भादरवाना

वाघेला तखतसिंहजीनां पुत्री माजीराजवा साथे थयां. वि. सं. १९२८ मां लॉर्ड नॉर्थब्रुक मुंबइ पधार्या ते प्रसंगे तेओने मान आपवा महाराजा मानसिंहजी मुंबइ गया हता. एज वर्षे पाटवीकुमार जसवतसिंहजीनां त्रीजां लग्न धरमपुरना राजा नारायणदेवजीनां व्हेन खुशालकुंवरवा साथे थयां. जसवतसिंहजीनां बीजां राणी माजीराजवाए अजीतसिंहजी नामना कुमारने जन्म आप्यो. राज मानसिंहजीए वि. सं. १९२८ मां मालणीयाद तथा सुसवावमां गुजराती निशाळो स्थापी, ध्रांगध्रा नजीक हरिपुर नामनुं गामडुं वसाव्युं तथा तळपदमां एक पुस्तकशाळा खोली. वि. सं. १९२९ मां नामदार गवर्नर जनरल लॉर्ड नॉर्थब्रुके भोपाळनी वेगमना अभिषेक प्रसंगे मुंबइमां दरबार भर्यो ते वखते पण राज मानसिंहजी मुंबइ पधार्या हता. एज वर्षमां तेओए सरवाळ नामना गाममां गुजराती निशाळ स्थापी. वि सं. १९३१ मां मुंबइना नामदार गवर्नर सरफीलीप वोडहाउसे राजकोट पधारी दरबार भर्यो. ते प्रसंगे राज मानसिंहजीए हाजरी आपी हती. एज वर्षमां प्रवासे निकळेला नामदार शाहेनशाहना वडा पुत्र ज्यारे हिन्दुस्थानमां आवी पहोंच्या त्यारे तेओने मान आपवा माटे मुंबइमां एक दरबार भरायो हतो ए प्रसंगे राज मानसिंहजी पण त्यां पधार्या हता अने ए मुलाकातनी यादगीरीमां तेओए राजधानीमां आव्या बाद एक औषधालय बंधाव्युं, तथा बावली, धमाणा, कुडा, धवाळा अने रासींगपुरमां गुजराती निशाळो स्थापी. तेमज वि. सं. १९३२ मां ध्रांगध्राथी हळवद सूधो एक जाहेर रस्तो बंधाववानुं काम शरु कराव्युं अने कुवा तथा उमरडामां गुजराती निशाळो स्थापी. वि. सं. १९३३ इ. स. १८७७ ना जान्युआरीनी १ तारीखे ज्यारे दिल्हीमां दरबार भरायो, त्यारे राज मानसिंहजी बिमारीना सबवथी त्यां जइ शक्या नहोता; तोपण तेओने ए प्रसंगे नामदार अंग्रेज सरकार तरफथी के. सी. एस् आइ. नो इल्काब तथा चार तोपोनुं विशेष मान एनायत करवामां आव्युं अने तेओना मुख्य कारभारी आजम मकनजी धनजीने राव बहादुरनो खिताब मळ्यो. त्यारबाद मे मासमां राज मानसिंहजी महाबळेश्वर पधार्या अने त्यांथी वळती वखते तेओए मुंबइमां नामदार गवर्नर सर रीचर्ड टेम्पलनो मुलाकात लीधी. इ. स. १८७७ नी आखरे नामदार उक्त गवर्नर जनरले काठियावाडमां पधारी भावनगर मुकामे दरबार भर्यो त्यारे राज मानसिंहजी त्यां पधार्या हता. ए प्रसंगे नामदार गवर्नरे राज मानसिंहजीने वावटो राखवानुं मान आप्युं. वि० सं० १८३४ इ० स० १८७८ ना जान्युआरीनी १ तारीखे महेरबान पोलीटीकल एजन्ट मी. पीले राजकोट मुकामे दरबार भरी राज मानसिंहजीने तथा नवानगरना जाम विभाजीने के. सी. एस. आइनो इल्काब अर्पण कर्यो. एज

वर्षमां राज मानसिंहजीए पोतानां कुंवरीश्री राजकुंवरबाने रतलामना महाराजा रणजीतसिंहजी साथे हथेवाळे परणाव्या. दुष्काळना पंजामांथी गरीब लोकोने उगारवा अर्थे तेओए पुष्कळ द्रव्यनो व्यय कर्यो हतो अने एज वर्षमां अर्थात् सं० १९३४ मां देवळीया, वांटावदर, गुजरखेडी तथा देवचराडी नामनां गामडांओमा गुजराती शाळाओ स्थापी. तेओने कुमार जसवतसिंहजी उपरात सज्जनसिंहजी तथा नटवरसिंहजी नामना पुत्र तथा बाकुंवरबा नामे पुत्री थयां हतां. राज मानसिंहजीना दरबारमा तेओना भाइ प्रतापसिंहजी, तेमना मामा भावसिंहजी, मुख्य कारभारी मकनजी धनजी तथा डेप्युटी कारभारी पोपट अंबाराम प्रधान पुरुषो हता. राज मानसिंहजी हिन्दी तेमज गुजराती भाषानी कविता घणीज सारी बनावता.

"पाजी राजी ना रहे, कोटिक किये उपाय;
ज्युं ज्युं सेवा कीजीयें, त्यों त्यों रोस भराय. ॥

आ दोहो राज मानसिंहजीनो बनावेलो छे.

राज मानसिंहजीना पाटवी कुमार जसवतसिंहजीने अजीतसिंहजी उपरांत भवानीसिंहजी नामे कुंवर थया. जसवतसिंहजी कुंवरपदेज स्वर्गवासी थया हता.

राज मानसिंहजीना कैलासवास पछी वि. सं. १९५७ ना मागशर शुदि २ ने दहाडे तेओना पौत्र अजीतसिंह ध्रांगध्रानी राजगादीए बेठा. तेओने त्या वि. सं. १९४४ मां जेठ शुदि २ ने दहाडे राजकुमार घनश्यामसिंहजीनो जन्म थयो हतो.

वि. सं. १९६७ ना महा शुदि १० ने सोमवारे अजीतसिंहजीनुं परलोक प्रयाण थतां श्रीमान् घनश्यामसिंहजीए राजसाहेबनी पदवी धारण करी, तेओना लघुबन्धु भवानीसिंहजीने गरासमां गजेळा नामनुं गाम मळ्युं.

ध्रांगध्रानो संक्षिप्त इतिहास.

दोहा.

पुण्यशाळी हरपालथी, पेढी छवीस प्रमाण;
रायसिंह राजा थया, जगजाहिर गुणजाण. १

१ कहे छे के महाराजा मानसिंहजीए रु. ७००००० सात लाखने खर्चे वढवाण केम्पथी ध्रांगध्रा पर्यन्त मीटरगेइज रेल्वे बंधावी छे. ए कार्यनी वि. सं. १९५४ मां शरुआत करवामां आवी हती.

ए पछी तख्ते आवीया, चन्द्रसिंह धरी चाह;
थया एहना ठाठथी, विधविध स्थळे विवाह. २

छन्द झूलणा.

चतुर नृप चन्द्रने आलये अवतर्या, प्रकट पद् पुत्र पृथीराज आदि,
वडिल बन्धु तणो ध्वंस श्रवणे धरी, आशकरणे ग्रही तुर्त गादी;
अमर अति शूर एना सहोदर छतां, राज्य हळवदतणुं हाथ करवा,
सज थया भ्रातने सद्य संहारवा, पापनी राखी ना लेश परवा. ३

छंद रोला.

महद बन्धुने मारी, अमर गादी पर आव्या,
प्रीतें निज परिवार, ल्हेरी हळवदमां लाव्या;
वांकानेर वसावी, सबळ नरपति सुलताने,
तात सबंधी वात, धैर्यथी राखी ध्याने. ४
हळवदपर हरवख्त, चोंपथी करी चढाइ,
अमरतणी आंखमां, झेरनी प्रसरी झांइ;
संभाळवा सरहद, एह माथकमां आव्या,
भीमगुडानां ढोर, वैरभावेथी वळाव्यां. ५
सुणी वात सुरतान, दुश्मनो पाछळ दोड्या,
हदनां पशु करी हाथ, रणे रिपुओने रोळ्या;
वंकपुरीना वडा, राज पर भराइ रोषे,
काठीने परमार, पक्ष हळवदनो पोषे. ६
भीमगुडानी भूमि, सुभग ओळनी समीपे,
तीखी तेग चलावी, महद सुरतान महीप;
सही शकायो नहीं, प्रथम आवेग अमरथी,
सद्य सिधावी गया, सुभट लइ संग समरथी. ७

पाछळथी परमार, अन्य त्यां आवी चढीया,
अमर एहनी साथ, वेगथी पाछा वळीया;
सबळ राज सुरतान, परे सहु तूटी पडीया,
मच्यो महद संग्राम, उभय झाला आखडीया. ८
सामे पगले लडी, महिप सुरतान मराया,
अमरसिंह ए समय, मेळवी जय मलकाया;
थतां एहनो अन्त, प्रवर हळवदने पाटे,
मेघराज महिपाल, विचर्या धर्मनी वाटे. ९
यात्रा करी अनेक, दान विप्रोने दीधा,
कुळनो लाज वधारी, काम अति उत्तम कीधां;
ए पछी अमित उदार, साधनो सुखनां माजे,
गुणशाळी गजसिंह, छत्रपति थइने छाजे. १०

छन्द झूलणा.

चन्द्र, जसवंत, जगमाल, त्रय बाळके, राज गजसिंह गृह जन्म लीधो,
चन्द्रनो सुत सहित सद्य संहार करी, गढवी वीठे महा गजब कीधो;
प्रयण जे समय गजसिंहजीए कर्यो, प्राण तजी स्वर्गनो राह सीधो,
आपी सुसवाव जगमालने ए समय, गजपाटे जसे पाय दीधो. ११

छन्द पद्धरी.

राठोड राज जसवंत जाण, आत्मज अजीत एना प्रमाण;
गजपाल चन्द्र केरा जमाइ, झट वैर वाळवा सज्ज थाय. १२
गुजरातमांहि हृदानुं स्थान, मरुधर महिप पाम्या महान;
ए समय पुत्रवधू केरी वाणी, करी श्रवण क्रोध उरमांहि आणी. १३
झाला जसाजी पर धारी धीर, विचर्या त्वराथी राठोड वीर;
तजी ठाम ठाम हळवद नरेश, दोड्या मळीन वनी अन्य देश. १४

छन्द झूलणा.

हाथ हळवद करी नजरअली वाबीने, आप्युं भावेंथी राठोड भूपे,
थंकपुरना विभु चन्द्रसिंहे चढी, नजरने नाखीयो कष्टकूपे;
भोगवी भुजवळे सबळ सत्ता त्यहां, पूर्ण त्रय वर्ष पर्यन्त प्रीतें,
शाह औरंगनी स्हायताथी मळ्युं, राज्य जसवंतने सीधी रीते. १५

छन्द हरिगीत.

राठोड राज अजीत जब गुजरातना सूबा थया,
तब महद लश्कर संग लइ हळवद भणी गर्वे गया;
हळवदनरेशे शाही खंडणी, आपवा स्वीकारीयुं,
त्यांथी अजीते जामनगर भणी जवा निरधारीयुं. १६
धरी हाम झट झलराण आवी मळ्या तमाची जामने,
दळ बादशाही खळभळ्युं, संकोची रणसंग्रामने;
हेरान थइ पाछा हठ्या, हळवदनरेशनी हाकथी,
तावे तमाची थया तदपि डरी बादशाही दिमाकथी. १७

दोहा.

निज राणीनी वाणीथी, अजीत उश्केराइ;
हणवा हळवद नाथने, सत्वर सावध थाय. १८
अजीतनी आज्ञा थतां, साधुवेष तनसाहि;
पांच सुभट जइ प्होंचीया, छळथी हळवदमांहि. १९
राजेश्वर सरने तटे, सही शीतने धूप;
समय निहाळे साधुओ, आसन नांखी अनूप. २०

रोळावृत्त.

राज जसो ए राह, एक दिन आवी चडीया,

शस्त्रधारी साधुओ, ते परे तूटी पडीया;
वेषधारी वैरीओ, प्रथमना प्रबळ प्रहारे,
न्हासी गया करी नाश, अवनिपतिनो ए वारे. २१
जता स्वर्ग जसवंत, पाटपर प्रताप आव्या,
प्रजावर्गने पाळी, स्वर्गने पंथ सिधाव्या;
रायसिंह ए पछी, थया हळवदना राजा,
जुगतें जाळवी राखी, महद कुळ केरी माजा. २२
ध्रांगध्रा पुर तणो, कोट तैयार कराव्यो,
निशदिन त्यहा निवास, भव्य नृपतिने भाव्यो;
एना पाटवी पुत्र, गुणी गजसिंह गणाये,
शेषोभाइ शूर, द्वितीय सुत जबर जणाये. २३
साहसथी समशेर, एमणे हाथ उठावी,
खवड काठीने मारी, पृथ्वी पळमांहि पडावी;
वडिल बन्धुनी सहाय, पामीने वैध्या प्रतापी,
राजधानी रमणीय, सायलापुरमां स्थापी. २४
शेषाजीपर स्नेह, राज गजसिंहजी राखे,
तो पण शेषोभाइ, भूपनुं भूंडुं भाखे;
त्यारे एणे जाळ, फन्दनी बहु फेलावी,
त्यारे नृप गजसिंह, रह्या वावळीए आवी. २५
वावळीनाथे बहु, ए समे आश्रय आप्यो,
हळवदमां फरी हुकम, राज गजसिंहे स्थाप्यो;
शेषे करी स्वाधीन, धरा ध्रांगध्रा केरी,
बनी बेठो बळवान, वडिल बन्धुनो वैरी. २६

राधनपुरना बावी, तेम पेशवा प्रतापी,
समये आवी त्यहां, शेह शेपाने आपी;
जीजीवा राणोए, उभय आश्रयदाताने,
अर्प्यो नगद अनेक, वेश नजराणा व्हाने. २७

सुत जसवंतनो साथ, वास ध्रांगध्रे कीधो,
खंडणीतणो अवेज, सदा समभागे दीधो;
मद्दद मराठातणुं, जोर ए पाछळ जाम्युं,
हळवदनुं दळ एथी, पराभव लहतां पाम्युं. २८

छन्द हरिगीत

गजसिंहजी स्वर्गे गया, जसवंत राजपदे रह्या,
सहुसंग संपी चालता दिल राखता निशदिन दया;
एना वडा सुत रायसिंह, वखाणवा लायक हता,
पद राजनुं पामी प्रजाने, प्रीतथी नित पाळता. २९

दोहा.

स्वल्प समय सुख भोगवी, बांधी पुण्यनी पाज;
वस्या जई वैकुंठमां, रायसिंह महाराज. ३०

अमरसिंहजी एहना, पाटवीपुत्र पवित्र;
प्रीतें बेठा तख्तपर, महद गुणीना मित्र. ३१

रोळावृत्त.

मीयाणाए मळी, सबळ जाटोनी संगे,
लूंट चलावी हती, धाडपाडुने ढंगे;
वळी पूर्वनुं वैर, विदित वढवाणनों जोडे,
छंछेडेलो साप, सो जुगे डंस न छोडे. ३२
ध्रांगधरानी धरा, बनी गइ जंगल जेवी,

राज्यकोपथी रही, दूर श्री लक्ष्मीदेवी;
अंग्रेजे ए समय, खोली एजन्सी खातुं,
शान्त कर्युं सर्वेनुं, त्वराथी रुधिर तातुं. ३३

काळे लइ नृप अमर, सिधाव्या अक्षय धामे,
ए पछी आव्या पाट, राज रणमलजी नामे;
गिरा श्रेष्ठ गिर्वाण, भण्या'ता भूपति भावे,
गुजरातीनुं ज्ञान, सदा उत्तम सरसावे. ३४

फारसीने उर्दुनो, कलित अभ्यास कर्यो' तो,
राज्यपरे ऋणभार, हतो ए सर्व हर्यो' तो;
रणमलने शुभराह, पसंद हमेश पड्यो' तो
के, सी, एस, आइनो, महद इल्काब मळ्यो' तो. ३५

ए पछी मान महिप, वडा विद्वान् वखाणो,
दीनोने दइ दान, थया जगजाहिर जाणो;
एना सुत यशवंत, पाटवी स्वर्ग सिधाव्या,
एथी पौत्र अजीत, ते पछी तख्ते आव्या. ३६

सुत एना घनश्याम, राजपदवी धरी राजे,
राजनीतिने वळे, साधनो सुखनां साजे;
विलायतें करी वास, खूब बुद्धिने खिलावी,
ग्रह्युं अनुपम ज्ञान, शोधी चातुर्यनी चावी. ३७

स्वल्प समयमां सुज्ञ, पूर्ण पाम्या प्रख्याति,
दाही उन्नति देखी, ठरे स्नेहीनी छाती;
वणे जीवो घनश्याम, हाम हैयामां धारी,
नित्य कवि नथुराम, एह आशीश अमारी. ३८

अष्टाविंशत् तरंग.
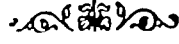
एकत्रीशा–सवैया.

चन्द्रसिंहना कुमार चोथा अभयसिंह उत्साही थया,
गरासमां लखतरनीं गादी मळतां त्यां सहकुटुम्ब रह्या;
वर्तमान नृप कर्ण लगी थइ एकादश पेढी एनी,
श्रवण करो नृप अमर ! उमंगे तवारीख कहुँ छुं तेनी.

राज हरपालदेवजीथी सत्यावीशमी पेढीए झालावंशविभाकर श्री हळवदना तख्तपति राज चन्द्रसिंहजी थया; तेओने पृथीराजजी, आशकरणजी, अमरसिंहजी, अभयसिंहजी, रायसिंहजी अने राणाजी नामना छ कुमारो हता. तेमांना चोथा कुमार अभयसिंहजीने थान तथा लखतर गरासमां मळ्यां. जेथी तेओए वि. सं. १६८२ मां पोतानी जुदी राजधानी स्थापी.× तेओ

× थान लखतर राज्यना इतिहासमां एवुं लखेलुं छे के अभयसिंहजीने गरासमां मात्र एक लखतर मळ्युं हतुं अने त्यां तेओए इ. स. १६०३ वि. सं. १६५९–६० मां जूदी गादी स्थापी. अभयसिंहजी युद्धवीर हता; पोताने गरास मळ्या छतां तेओ राज्य हळवद–ध्रांगध्रामांज रहेता. तेवामां सिंधना शूरा शराइ लोको ध्रांगध्रा पर चढी आव्या. अभयसिंहजीए तेओने परास्त कर्या. त्यारबाद प्रसंगोपात तेओ थान तरफ शिकारे गया. थाननो प्रदेश भयानक जंगल जेवो हतो. त्यां एक तळावने किनारे नागदेवता वासुकीनी जगो पर कोइएक तपस्वी ध्यानमां निमग्न बनी बेठेला हता. अभयसिंहजीए अत्यंत श्रद्धापूर्वक एनां दर्शन करी जरा आश्वासन कर्युं, एथी प्रसन्न थएला योगीराजे तेओने आशीर्वाद आपी उज्जड बनी गयेला थानना स्थानने वसाववानी भलामण करी. अभयसिंहजीने चमत्कार जोवानी इच्छा थतां योगीराजे वासुकी नागनी प्रार्थना करी. वासुकीए प्रत्यक्ष थइ ठाकोर अभयसिंहजीने तेना मनोरथनी सिद्धि माटे वचन आप्युं. बाद अभेसिंहजीए हळवद आवी त्यांना तख्तपति पासे थाननी मागणी करी. हळवदना राजाए सिंधना

पांच राणीओ परण्या हता. तेमांनां पहेलां डुंगरपुरना शिशोदीआ महाराणाश्री आशकरणजीनां कुंवरी रुपनकुंवरबा के जेनाथी राजकुमार विनयराजजीनो जन्म थयो, बीजां मेतलीना वारैया करसनजी शार्दुळजीनां कुंवरी शाहकुंवरबा, त्रीजां गांगडना वाघेला अरजणजी गोपाळजीनां कुंवरी अमरकुंवरबा, चोथां मूळीना परमार चासकजी लखधीरजीनां कुंवरी रुपकुंवरबा अने पाचमां सरवैया होथीजी भूपतसिंहजी दाठावाळानां कुंवरी फुळजीबा हतां.

वि-सं. १६९५ मां टाकोर अभयसिंहजीनो स्वर्गवास थतां कुमार विजयराजजी थान लखतरना गादीपति थया. तेओ डुंगरपुरना महाराजा शिशोदिआ आशकरणजीना भाणेज अने वैष्णव संप्रदायना अनन्य अनुयायी हता. तेओए पोताना मामा पासेथी प्रभुश्री रणछोडरायजीनी मनोहर मूर्त्ति लइ लखतरमां पधरावी अने तैयार करावेला एक मन्दिरनी अंदर तेनी श्रद्धापूर्वक स्थापना करी. वि-सं. १७१४ मां काठिआवाडनी अंदर फेलाएला भयंकर दुष्काळ वखते पोतानी प्रजाने तेमज बहारगामथी आवेला माणसोने पेटपूरतुं अन्न आपी ठाकोर विजयराजजीए महान् सुयश मेळव्यो हतो. तेओ प्रथम सेलजना जाडेजा हाजाजी रणमलजीनां कुंवरी नागाजीबाने परण्या अने तेनाथी शेषमालजी, कानजी तथा रायधरजी नामना त्रण कुमारनो जन्म थयो. तेओनां बीजां राणी फताजीबा, ते जाडेजा वीराजी खेमाजीनां पुत्री हतां अने तेणे कुमार कल्याणसिंहजी तथा करमसिंहजीने जन्म आप्यो. त्रीजां राणी लाडकुंवरबा, ते साढ खाखरावाळा गोहिल नोघणजी पृथीराजजीनां पुत्री हतां, तेनाथी कुमार लक्ष्मणजी, सामतसिंहजी तथा सक्ताजीनो जन्म थयो. चोथां राणी रंभुजीबा, ते ध्रोळना जाडेजा श्री अजाजी विभाजीनां कुंवरी हतां, तेणे जाबुजीबा नामना कुंवरीने जन्म आप्यो अने पांचमां राणी खीरसराना जाडेजा हरधोळजीनां कुंवरी राजकुंवरबाथी कुमार अखेराजजी, कहीआजी तथा रतनजीनो जन्म थयो.

वि. सं. १७२१ मां टाकोर विजयराजजीए वैकुंठवास कर्यो त्यारे तेओना पाटवीकुमार शेषमालजी तख्तनशीन थया. कुमार सक्ताजी, कानजी तथा लक्ष्मणजी निर्वंश गुजरी गया. कुमार

मराठ लोकोनी चढाइथी धागध्रानुं रक्षण कर्यानी खुशालीना बदलामां अभयसिंहजीनी उक्त मागणी मंजुर राखी. जेथी वि-सं. १६१७ मां थान तथा तेनी नीचे रहेलां २४ गामोनी स्वतंत्रता ठाकोर अभेसिंहजीने प्राप्त थइ. ए प्रदेश महान पवित्र "देवकापंचाळ" एवा नामथी ओळखाय छे.

१ श्री झालाकुळना बारोटना चोपडामां " जगोजी " एवुं नाम आपेलुं छे.

करमसिंहजी तथा कल्याणसिंहजीने वि. सं. १७२१ मां गाम "मोढवाणुं", करशीआजी तथा अखे-राजजीने गाम " शवलाणुं " अने मेरुजी तथा आपाजीने गाम " गोवळ " गरासमां मळ्युं. ×

ठाकोर शेषमालजीनां लग्न छ ठेकाणे थयां हतां. तेमांनां पहेलां राणी खीरसराना जाडेजा विभाजी तमाचीजीनां कुंवरी अमरकुंवरबा के जेनाथी कुमार गोपाळसिंहजी, जेसंगजी तथा सगरा-मजी उपरांत कुंवरीश्री वदुबानो जन्म थयो हतो. बीजां राणी जाडेजा करणजी लाखाजीनां कुंवरी लालाजीबा, त्रीजां राणी उदेपुरना शिशोदिआ राणा सबळसिंहजी प्रतापसिंहजीनां कुंवरी सुरज-कुंवरबा, चोथां राणी देवचराडीना वाघेला भाणजी अखेराजजीनां कुंवरी सरतानकुंवरबा, पांचमां राणी खीरसराना जाडेजा रावळजी लाखाजीनां कुंवरी लीलाजीबा के जेनाथी कुमार रणमलजी तथा केशवदासजी उपरांत कुंवरीश्री सोनाबानो जन्म थयो; अने छठ्ठां राणी वाघेला भोजाजी हनुजीनां कुंवरीश्री भामनाजीबा हतां. ठाकोर शेषपालजीना वखतमां राज्यनी स्थिति आबाद तथा प्रजा सर्व प्रकारे सुखी हती. वि. सं. १७५१ मां तेओनो स्वर्गवास थतां पाटवीकुमार गोपाल-सिंहजी गादीनशीन थया. एज वर्षे तेओना भाइ रणमलजी तथा जेसंगजीने " पढेडा " नो अर्ध-भाग अने सगरामजी तथा केशवदासजीने पण " पेढडा " नो अर्धभाग गरासमां मळ्यो. ए पेढडा नीचे रावळीआणी, तरणेतर तथा हांशीआ नामे त्रण गाम हतां.

ठाकोर गोपाळसिंहजी अनुक्रमे नव स्थळे परण्या हता, तेमांनां पहेलां राणी जाडेजा राय-धरजी पचाणजीनां कुंवरी फुलजीबा के जेनाथी पाटवीकुमार करणसिंहजी उपरांत कुमार वीकाजी तथा कुवरीश्री ताजकुंवरबा तेमज कमजीबानो जन्म थयो. बीजां राणी मूळीना परमार राजमलजी रामाजीनां कुंवरीश्री पद्माजीबा के जेणे कुमार चांदाजीने जन्म आप्यो. त्रीजां राणी उदयपुरना

× वजेराजजीना ११ पुत्रोमांथी पाटवी गादीए बेठा, त्रण निर्वंश गुजर्या, बेन "मोढवाणुं" तथा बेने 'शवलाणुं' मळ्युं ए रीते कुल आठ कुमार थया. बाकीना त्रण (सामतसिंहजी, रायधरजो अने रत-नजी) रह्या. तेमांथी मेरुजी तथा आपाजीने गाम " गोवळ " मळ्युं एवुं लखतरना इतिहासमां लखेलुं छे. तो ते कौंउसमां आपेला त्रण कुमारोमांना बे कुमारोनां उपनाम होवा जोइए तो पण एक कुमारनुं नाम वधारे छे तेनुं शुं थयुं ए खुलासो क्यांइ जोवामां आवतो नथी. श्रीझालाकुळना बारोट तो अग्यार कुमारमांथी कल्याणजीने "मोढवाणुं", करमसिंहजीने "गोवळ" अने अखेराजजी तथा करशीआजीने "शवलाणुं" मळ्यानुं लखे छे. बाकीना कुंवरोनुं शुं थयुं ए कांइ लखता नथी.

शिशोदिआ सरदारसिंहजी सवळसिंहजीना कुंवरी सदुंजीबा के जेनाथी कुमार कशळाजीनो जन्म थयो. चोथां राणी वाघेला गोपाळजी नाथाजीनां कुंवरी अमरकुंवरबा के जेणे कुमार भगवतसिंहजीने जन्म आप्यो. पांचमां राणी मुळीना परमार खेंगारजी जेमलजीनां कुंवरी कीसनकुंवरबा. छट्टां राणी जाडेजा मेघाजीनां कुंवरी हरखकुंवरबा के जेनाथी कुमार हठीसिंहजीनो जन्म थयो. सातमां राणी भडीआदना चुडासमा भीमजी भोजाजीनां कुंवरी जसकुंवरबा के जेणे कुंवरीश्री प्राणकुंवरबाने जन्म आप्यो. आठमां राणी सांढखाखराना गोहेल जसाजी अदाजीनां कुंवरी भामनाजी के जेनाथी कुंवरीश्री राहकुंवरबा जन्म्यां, तथा नवमा राणी जाडेजा कलाजी हीरजीनां कुंवरी कमाजीबा हतां अने तेनाथी केमरकुंवरबा नामे कुंवरीनो जन्म थयो.

वि. सं. १७७० मां ठाकोर गोपालसिंहजी गोलोकवासी थया त्यारे पाटवीकुमार करणसिंहजीए थान लखतरना राज्यनी लगाम हाथमां लीधी. एज वर्षमां तेओना लघुबन्धु चांदाजीने गाम " साकर " तथा वीकाजी अने हठीसिंहजीने गाम " लखडीया " गरासमां मळ्युं. कुमार कसळाजी तथा भगवतसिंहजीने गरास मळ्यानुं क्यांइ जोवामां आवतुं नथी, जेथी अनुमान थाय छे के ए बन्ने भाइओ न्हानी उम्मरे गुजरी गया हशे.

ठाकोर करणसिंहजी बहुज बळवान हता, तेओए ध्रांगध्रा तावानां वासवा, वासण तथा वरवाणळ वगेरे गामोने बाहुबळे स्वाधीन करी पोताना राज्यमां वधारो कर्यो हतो अने थान लखतरपर चढी आवेला अन्य राज्यना योद्धाओने हराव्या हता. वि. सं. १७७४ मां ध्रांगध्राना भाणेज जाम तमाचीने गादीए नहि बेसवा देतां तेओना काका हरधोळजीए जामनगरनी राज्यसत्ता पोताने हाथ करी. ए वखते हळवद ध्रांगध्राना महाराजा राज प्रतापसिंहजी पोताना भाणेजनो पक्ष करवा अमदावादना मुगलाइ सुबा शेरबुलंदखान तथा बाबी सलामत महमदखाननी सहायता मेळवी नवानगर पधार्या, ए वखते महान् पराक्रमी थान लखतरना ठाकोर करणसिंहजी पण साथे हता. तेओए हरधोळजीने हाथ बताबीने पोताना भाणेज तमाचीने जामनगरना तख्तपर बेसाडी दीधा अने त्यारबाद ए विजयशाळी वीर लखतर आव्या.

ठाकोर करणसिंहजीने चार राणीओ हतां, तेमांनां पहेला राणी गांगडना वाघेला कर-

१ ज्यारे ठाकोर गोपालसिंहजीनो स्वर्गवास थयो त्यारे राणी सदुंजीबा सती थयां हतां, एमनी देरी गामने पादर आथमणी बाजुए तळावपर छे.

करमसिंहजी तथा कल्याणसिंहजीने वि. सं. १७२१ मां गाम "मोढवाणुं", कशीआजी तथा अखेराजजीने गाम " शवलाणुं " अने मेरुजी तथा आपाजीने गाम " गोवळ " गरासमां मळ्युं. ×

ठाकोर शेषमालजीनां लग्न छ ठेकाणे थयां हतां. तेमांनां पहेलां राणी खीरसराना जाडेजा विभाजी तमाचीजीनां कुंवरी अमरकुंवरबा के जेनाथी कुमार गोपाळसिंहजी, जेसंगजी तथा सगरामजी उपरांत कुंवरीश्री वदुवानो जन्म थयो हतो. बीजां राणी जाडेजा करणजी लाखाजीनां कुंवरी लालाजीबा, त्रीजां राणी उदेपुरना शिशोदिआ राणा सबलसिंहजी प्रतापसिंहजीनां कुंवरी सुरजकुंवरबा, चोथां राणी देवचराडीना वाघेला भाणजी अखेराजजीनां कुंवरी सरतानकुंवरबा, पांचमां राणी खीरसराना जाडेजा रावळजी लाखाजीनां कुंवरी लीलाजीबा के जेनाथी कुमार रणमलजी तथा केशवदासजी उपरांत कुंवरीश्री सोनाबानो जन्म थयो; अने छट्ठां राणी वाघेला भोजाजी हनुजीनां कुंवरीश्री भामनाजीबा हतां. ठाकोर शेषपालजीना वखतमां राज्यनी स्थिति आबाद तथा प्रजा सर्व प्रकारे सुखी हती. वि. सं. १७५९ मां तेओनो स्वर्गवास थतां पाटवीकुमार गोपाळसिंहजी गादीनशीन थया. एज वर्षे तेओना भाइ रणमलजी तथा जेसंगजीने " पढेडा " नो अर्धभाग अने सगरामजी तथा केशवदासजीने पण " पेढडा " नो अर्धभाग गरासमां मळ्यो. ए पेढडा नीचे रावळीआणी, तरणेतर तथा हांशीआ नामे त्रण गाम हतां.

ठाकोर गोपाळसिंहजी अनुक्रमे नव स्थळे परण्या हता, तेमांनां पहेलां राणी जाडेजा रायधरजी पचाणजीनां कुंवरी फुलजीबा के जेनाथी पाटवीकुमार करणसिंहजी उपरांत कुमार वीकाजी तथा कुवरीश्री ताजकुंवरबा तेमज कमजीबानो जन्म थयो. बीजां राणी मूळीना परमार राजमलजी रामाजीनां कुंवरीश्री पद्माजीबा के जेणे कुमार चांदाजीने जन्म आप्यो. त्रीजां राणी उदयपुरना

+ वजेराजजीना ११ पुत्रोमांथी पाटवी गादीए बेठा, त्रण निर्वंश गुजर्या, बेने "मोढवाणुं" तथा बेने 'शवलाणुं' मळ्युं ए रीते कुल आठ कुमार थया. बाकीना त्रण (सामतसिंहजी, रायधरजो अने रतनजी) रह्या. तेमांथी मेरुजी तथा आपाजीने गाम " गोवळ " मळ्युं एवुं लखतरना इतिहासमां लखेलुं छे. तो ते कौंउसमां आपेला त्रण कुमारोमांना बे कुमारोनां उपनाम होवा जोइए तो पण एक कुमारनुं नाम वधारे छे तेनुं शुं थयुं ए खुलासो क्यांइ जोवामां आवतो नथी. श्रीझालाकुळना बारोट तो अग्यार कुमारमांथी कल्याणजीने "मोढवाणुं", करमसिंहजीने "गोवळ" अने अखेराजजी तथा कशीआजीने "शवलाणुं" मळ्यानुं लखे छे. बाकीना कुंवरोनुं शुं थयुं ए कांइ लखता नथी.

शिशोदिआ सरदारसिंहजी सवळसिंहजीना कुंवरी सदुजीवा[1] के जेनाथी कुमार कशळाजीनो जन्म थयो. चोथां राणी वाघेला गोपाळजी नाथाजीनां कुंवरी अमरकुंवरबा के जेणे कुमार भगवतसिंहजीने जन्म आप्यो. पांचमां राणी मुळीना परमार खेंगारजी जेमलजीनां कुंवरी कीसनकुंवरबा. छठ्ठां राणी जाडेजा मेघाजीनां कुंवरी हरखकुंवरबा के जेनाथी कुमार हठीसिंहजीनो जन्म थयो. सातमां राणी भडीआदना चुडासमा भीमजी भोजाजीनां कुंवरी जसकुंवरबा के जेणे कुंवरीश्री प्राणकुंवरबाने जन्म आप्यो. आठमां राणी सांढखाखराना गोहेल जसाजी अदाजीनां कुंवरी भामनाजी के जेनाथी कुंवरीश्री राहकुंवरबा जन्म्यां, तथा नवमां राणी जाडेजा कळाजी हीरजीनां कुंवरी कमाजीबा हतां अने तेनाथी केसरकुंवरबा नामे कुंवरीनो जन्म थयो.

वि. सं. १७७० मां ठाकोर गोपालसिंहजी गोलोकवासी थया त्यारे पाटवीकुमार करणसिंहजीए थान लखतरना राज्यनी लगाम हाथमां लीधी. एज वर्षमां तेओना लघुबन्धु चांदाजीने गाम " साकर " तथा वीकाजी अने हठीसिंहजीने गाम " लखडीया " गरासमां मळ्युं. कुमार कसळाजी तथा भगवतसिंहजीने गरास मळ्यानुं क्यांइ जोवामां आवतुं नथी, जेथी अनुमान थाय छे के ए बन्ने भाइओ न्हानी उम्मरे गुजरी गया हशे.

ठाकोर करणसिंहजी बहुज बळवान हता, तेओए ध्रांगध्रा तावानां वांसवा, वासण तथा करकथळ वगेरे गामोने बाहुबळे स्वाधीन करी पोताना राज्यमां वधारो कर्यो हतो अने थान लखतरपर चढी आवेला अन्य राज्यना योद्धाओने हराव्या हता. वि. सं. १७७४ मां ध्रांगध्राना भाणेज जाम तमाचीने गादीए नहि बेसवा देतां तेओना काका हरधोळजीए जामनगरनी राज्यसत्ता पोताने हाथ करी. ए वखते हळवद ध्रांगध्राना महाराजा राज प्रतापसिंहजी पोताना भाणेजनो पक्ष करवा अमदावादना मुगलाइ सूबा शेरबूलंदखान तथा बाबी सलाबत महमदखाननी सहायता मेळवी नवानगर पधार्या, ए वखते महान् पराक्रमी थान लखतरना ठाकोर करणसिंहजी पण साथे हता. तेओए हरधोळजीने हाथ बतावीने पोताना भाणेज तमाचीने जामनगरना तख्तपर बेसाडी दीधा अने त्यारबाद ए विजयशाळी वीर लखतर आव्या.

ठाकोर करणसिंहजीने बार राणीओ हतां, तेमांनां पहेलां राणी गांगडना वाघेला कर-

---

१ ज्यारें ठाकोर गोपालसिंहजीनो स्वर्गवास थयो त्यारे राणी सदुजीवा सती थयां हतां, एमनी देरी गामने पादर आथमणी बाजुए तळावपर छे.

णजी गोपालजीनां कुंवरी पोपाजीबा के जेनाथी पाटवी कुमार अभेसिंहजी तथा कुंवरीश्री जीजी-वानो जन्म थयो. ए जीजीवाने उदयपुरना महाराणा संग्रामसिंहजी साथे परणाव्यां हतां. बीजां राणी गोहिल सुलतानसिंहजी अभेसिंहजीनां कुंवरी लीलाजीबा, त्रीजां राणी वाघेला भेमजी भात्राजीनां कुंवरी लालाजीवा, चोथां राणी जाडेजा मेरुजी आशाजीनां कुंवरी मघाजीवा, पांचमां राणी वर-सोडाना चावडाना वलभद्रजी इश्वरदासजीनां कुंवरी लीलाजीवा, छठ्ठां राणी चुडासमा भीमजी भोजाजीनां कुंवरी पद्माजीवा के जेनाथी कुमार पुंजाजी तथा अदाजीनो जन्म थयो, सातमां राणी गेतलीना बारिया सुरसिंहजी हावाजीनां कुंवरी राहकुंवरबा के जेणे कुमार जीवाजी तथा अखेराजजी उपरांत कुंवरीश्री आछुवाने जन्म आप्यो; ए आछुवानां लग्न मोरवीना जाडेजा अलीयाजी साथे करवामां आव्यां. आठमां राणी चंडीसरना रावळ वीरभाणजी चन्द्रभाणजीनां कुंवरी लीलाजीवा के जेनाथी कुमार रघाजीनो जन्म थयो. नवमां राणी जाडेजा भाणजी रावाजीनां कुंवरी सोना-जीवा के जेणे कुमार मोडजी, तमाचीजी तथा वमजीने जन्म आप्यो. दशमां राणी अलवाना राठोड रायभाणजी अंदरजीनां कुंवरी अदीवा के जेनाथी कुमार सुजाजीनो जन्म थयो. अग्या-रमां राणी कंथकोटना देदा भीमजी मुळुजीनां कुंवरी लाडकुंवरवा के जेणे कुमार मुळुजीने जन्म आप्यो अने बारमां राणी मोणपरना गोधारी रामजी अदाजीनां कुंवरी रुपाजीवा के जेनाथी जेसंगजी नामना कुमारनो जन्म थयो.+

वि. सं. १७९७ मां ठाकोर करणसिंहजीनो स्वर्गवास थतां पाटवी कुमार अभयसिंहजी थान लखतरना राजतख्त पर बेठा. तेओना न्हाना भाइओमाथी अदाजी, पुंजाजी, मोडजी तथा लाखाजीने गाम केशरीआ, मालीका अने ढांकी; वमजीने कारेला तथा मुळुजीने सदाद अर्द्धुं. ए रीते वि. सं. १७९४ मां करणसिंहजीनी हयातीमांज गरास मळी गयो हतो.

कहे छे के ठाकोर अभयसिंहजीना वखतमां जूनागढनुं लश्कर जोरतलबी नामनो नवो कर उघरावता निकळेलुं ते फरतुं फरतुं थान आवी पहोंच्युं. अभयसिंहजीए उक्त कर आपवानी चोख्खी ना कही, जेथी जूनागढनी फोजे लूंटफाट शरु करी अने गढ थानना दरवज्जामांथी सु-

---

+ श्री झालाकुळना बारोटना चोपडामां ठाकोर करणसिंहजीना कुमार ११ ना नामो नीचे मुजब छे. अभेराजजी, रघोजी, पुंजोजी, अदोजी, मोडजी, वामणीओजी, जीवणजी, मुळुजी, लाखोजी, सुजोजी अने मुळवोजी.

शोभित आरकाना पत्थरो उखेडी जूनागढ उपाडी गया. आथी ठाकोर अभयसिंहजीए अत्यन्त क्रोधायमान बनी जूनागढ साथे वारवटुं खेडवा मांड्युं. ते एटले सूधी के एक वखत मारवा मरवानो निश्चय करी तेओ शस्त्रबंध गुप्त वेशे नवाब साहेबना महेलमां दाखल थया अने शयनभुवनमां निवृत्तिथी सूतेला नवाबनी छाती पर चढी बेठा, बाद तेओने खंजरनी अणीथी जाग्रत करी जीव लेवानो भय बताव्यो. आश्चर्यने प्राप्त थएला नवाबसाहेब ठाकोर अभयसिंहनी हिम्मत पर आफरीन बनी तथा तेओने आवुं साहस खेडवानो सबब पूछी गढथानना दरवज्जानी कमानना आरकाना पत्थरो त्यां पहोंचाडी आपवा वचन आप्युं. एज वखते अभयसिंहजी अगाउथी सज्ज करावी राखेला अश्वपर आरूढ थइ पोताना राज्यमां आवी पहोंच्या. त्यारबाद नवाबश्रीए आपेल वचन मुजब पत्थरोने थानमां पहोंचता कर्या अने दरवाजानी अंदर जेम हता तेम गोठवी दीधा. बाद अभयसिंहजीनी मागणीथी खुद नवाबसाहेबे पोताने हाथे ए पत्थरोपर चुनानो बाटो आप्यो. आ प्रसंगे नामदार नवाबसाहेबनी तेमज तेओना लश्करनी ठाकोर अभयसिंहजीए अति उत्तम प्रकारे आगतास्वागता करी हती. ज्यारे नवाबसाहेब तरफथी थएला अपमाननो बदलो वळ्यो त्यारेज वीरवर अभयसिंहजी संतुष्ट थया, तेओनां लग्न छ स्थळे थयां हतां. पहेलां राणी गांगडना वाघेला सगरामजी नारणजीना कुंवरी अजबकुंवरबा के जेनाथी पाटवीकुमार रायधरजी तथा फटाया हरभोळजी अने रायबजीनो जन्म थयो. बीजां राणी वरसोडाना चावडा सुमराजी दलाजीनां कुंवरी चांपाजीबा, त्रीजां राणी मोथरना महिडा मुळजी जयमलजीनां कुंवरी आनंदकुंवरबा, चोथां राणी जाडेजा सदाकुंवरबा के जेनाथी कुमार कशीयाजीनो जन्म थयो. पांचमां राणी गांगडना वाघेला सुजाणसिंहजी रामसिंहजीनां कुंवरी सदाकुंवरबा अने छट्ठां राणी भडीयादना चुडासमा कंथडजी भोजाजीनां कुंवरी करणीजीबा हतां के जेणे कुमार साहेबजी तथा कुंवरीश्री अमरकुंवरबाने जन्म आप्यो हतो. ए अमरकुंवरबानो विवाह उदयपुर मेवाडना महाराणा जगतसिंहजी साथे कर्यो हतो अने तेनाथी अरशीजी नामना कुमारनो जन्म थयो हतो, के जे महाराणा जगतसिंहजीना पाटवीकुमार प्रतापसिंहजी तथा तेना कुमार राजसिंहजी पछी उदयपुरनी राजगादीए बेठा हता.

वि० सं० १८२५ मां ठाकोर अभयसिंहजी स्वर्गवासी थतां तेओना पाटवीकुमार रायधरजी थान लखतरनी राजगादीए बेठा. एज वर्षे तेओना भाइ हरभोळजी तथा रायबजीने गाम "कलम", साहेबजीने अरधुं "सदाद" तथा कशीआजीने गाम "कडु" गरासमां मळ्युं.

ठाकोर रायधरजीनां लग्न आठ ठेकाणे थयां हतां. तेमांनां पहेलां राणी खारकीयाना जा-

डेजा आसाजी रणमलजीनां कुंवरी रुपकुंवरबा के जेनाथी सगरामजी तथा चांदाजी नामे बे कुमार तथा अदीबा नामनां कुंवरीनो जन्म थयो. ए अदीबानां लग्न मोरबीना जाडेजा पचाणजी साथे कर्यां हतां. बीजां राणी देदा खेताजी मांडणजीनां कुंवरी सुजानकुंवरबा के जेणे कुंवरीश्री बाजीबा तथा सदुबाने जन्म आप्यो. सदुबाने पण मोरबीना जाडेजा पचाणजी साथे परणाव्यां हतां. त्रीजां राणी अलीयाना राठोड गयासिंहजी राणाजीनां कुंवरी अदीबा, चोथां राणी राणा चांदाजी अ- भेराजजीनां कुंवरी लाडकुंवरबा के जेनाथी फइबा नामना कुंवरीनो जन्म थयो. ए फइबानां लग्न राजकोटना ठाकोरसाहेब साथे थयां हतां. पांचमां राणी परवडीना चुडासमा मेरुजी रायमलजीनां कुं- वरी राजकुंवरबा के जेणे कुमार अखेराजजी तथा कुंवरीश्री जीजीबाने जन्म आप्यो. ए जीजीबाने राजकोट ठाकोरना पाटवीकुमार बाबाजीराज साथे परणाव्यां हतां. छट्ठां राणी वढवाणनां गाज- णीया कल्याणजी धीगाजीनां कुंवरी अदीबा, सातमां राणी पछेगामना रावळ वाछाजीनां कुंवरी वखतकुंवरीबा अने आठमां राणी जाडेजा कुंभाजी विभाजीना कुवरी रतनकुंवरबा हतां के जेनाथी कुमार गोडजीनो जन्म थयो हतो.

ठाकोर रायधरजीना वखतमां कोळी लोकोए बंड उठाव्युं हतुं, ए बळवाखोरोने रायधर- जीए समशेरनो स्वाद चखाडी शान्त कर्या हता. तेओना स्वर्गवास पछी कुमार सगरामजी तख्तन- शीन थया. तेओना भाइओमांथी गोडजीने गाम "ओळक" तथा अखेराजजीने गाम "इंगोडो" गरासमां मळ्युं.+

सगरामजीनां लग्न चार स्थळे थयां हतां; तेओनां पहेलां राणी मुळीना परमार शेशमा- लजी कल्याणजीनां कुंवरी फुलजीबा हतां अने तेनाथी फइबा तथा अमजीबा नामे बे राजकुमारी- नो जन्म थयो हतो. बीजां राणी वढवाणना गाजणीया सांगाजी नाथाजीनां कुवरीने अनुपकुंवरबा हतां अने तेणे एक जीजीबा नामनां कुंवरीने जन्म आप्यो हतो के जेनां लग्न कच्छ देशमां तेराना जाडेजा कुवेरजी साथे थयां हतां. त्रीजां राणी रोझकाना चुडासमा मुळुजीनां कुंवरी रायबा तथा चोथां राणी अलवाना राठोड बादरजी अरजणजीनां कुंवरी सदुबा हता. ए बन्ने राणीओने कांइ संतति थइ न हती.

---

१ श्री झालाकुळना बारोटना चोपडामां सगरामजी कुंवरपदे स्वर्गवासी थया हता एम लखेलुं छे. + ए गरास वि. सं. १९३६ मां अपायो हतो.

वि. सं. १८५४ मां सगरामजीनो अपुत्र स्वर्गवास थतां तेओना भाइ चांदाजी (चन्द्रसिंहजी) थान लखतरना गादीपति थया. तेओ वढवाणना गाजणीया भेमजी जेतसिंहजीनां कुंवरी अमरकुंवरबाने अळवाना राठोड अदाजी रामाजीनां कुंवरी वदनकुंवरबाने, पेथापुरना वाघेला भगाजी खेमाजीनां कुंवरी साहेबकुंवरबाने, खरडना चुडासमा मेघराजजी जेतसिंहजीनां कुंवरी दगुजीबाने तथा कीवोद्राना वाघेला वादरजी फतेसिंहजीना कुंवरी खुमानबाने परण्या; परंतु ए पांचे राणीओमांथी एकेने कांइ संतान न थयुं. छेवटे छठ्ठां राणी पीढरवाना वाघेला जसकरणजी उमेदसिंहजीनां कुंवरी बाजीबाने परण्या हता, तेनाथी कुमार पृथीराजजीनो जन्म थयो.

ठाकोर चन्द्रसिंहजीना स्वर्गवास पछी वि. सं. १८६९ मां उम्मरलायक थएला कुमार पृथीराजजी थान लखतरनी गादीए बेठा. ज्यारे ए सगीर वयना हता, त्यारे एओना मातुश्री बाजीबाए दश वर्ष पर्यन्त दृढतापूर्वक राज्यनो तमाम कारोबार चलाव्यो हतो, ए उपरथी सिद्ध थाय छे के ठाकोर चन्द्रसिंहनो स्वर्गवास वि. सं. १८५९ मा थयो होवो जोइए. ज्यारे पृथीराजजी न्हानी उम्मरना हता, त्यारे आजुबाजुनां राज्यो लखतरने स्वाधीन करवानी लालसाथी उपराउपर हल्लो करता हता, जेथी एक जबरी लागवगवाळा हीरजी नामना खवासने लखतरनो राज्य कारभार सोंपवामां आव्यो; एणे एक वर्ष सुधी तो राज्यनी सारी सेवा बजावी, पण बीजे वर्षे एनी बुद्धिमां फेरफार थइ गयो अने राज्यने पचावी पाडवा माटे ए अनेक प्रकारना यत्न करवा लाग्यो.

ठाकोर चन्द्रसिंहजीना समयमांज मुगललोको तद्दन पडती दशाए पहोंची चुक्या हता, मराठाओनुं प्राबल्य दिवसे दिवसे वधतुं जतुं हतुं, काठियावाड मांहेना दरेक राज्यो पासेथी मराठाओ पेशकसी तथा जूनागढना नवाब जोरतलबी लेवा निकळता, परंतु बधा राजाओ तरफथी ए रकम सुलेह शान्तिपूर्वक वसुल थइ होय एवो प्रसंग जवल्लेज जोवामां आवे छे, कारण के ते वखतना राजपूत राजाओ बहादुर, उत्साही अने युद्धकुशळ हता. परंतु ज्यारे ठाकोर पृथीराजजी लखतरनी गादीपर आव्या त्यारथी जमानामां जबरा विपर्ययनी शरुआत थइ होय एवुं जणाय छे.

हीरजी खवासना कारभारथी कंटाळी गएला ठाकोर पृथीराजजी नामदार गायकवाड सरकारना आश्रय अर्थे वडोदरे पधार्या. श्रीमान् गायकवाड सरकार गोविन्दरावनां राणी श्रीमती गेनाबाइने ठाकोर पृथीराजजी व्हेन कही बोलावता एम केटलाएकनुं कहेवुं छे. नामदार गायकवाड सरकारे सुबा बाबाजी आपाजी के जेने काठियावाडनी खंडणी उघरावा माटे नियत करेला हता,

तेने ठाकोर पृथीराजजीनी सहायताए मोकली आप्या. ए वखते लखतरनुं राज्य हीरजी खवासना देणामां दबाएलुं हतुं; जेथी बाबाजीए प्रथम तो हीरजी खवासनी लेणी रकम चुकते हिसाबे चुकवी तेने थान लखतरमांथी हदपार कर्यो अने त्यारबाद लखतर स्टेट उपर नामदार गायकवाड सरकार तरफथी धीरेली रकम वसुल थता सुधी ए तालुकाने वि. सं १८६२ मां गायकवाडी जप्तीना वहीवट तळे राखवामां आव्यो. ए अरसामां नामदार अंग्रेज सरकारे गुजरातना घणाखरा प्रदेशमा पोतानी हकुमत जमावी दीधी हती; तो पण पेशवा तथा गायकवाडनां लश्करो आसपासनां देशी राज्यनी अंदर दरवर्षे पेशकसी उघराववा निकळता; अने एथी क्यांइ क्यांइ युद्धनो प्रसंग पण आवी पडतो, सुलेहनो भंग थवाथी वखते ब्रिटीश प्रजाने पण विपत्ति वेठवी पडती. आवां अनेक कारणोने लक्षमां लइ नामदार कर्नल वॉकर के जे ते वखते वडोदराना रेसीडन्ट हता, तेओए पोतानी दरमीयानगीरीथी दरेक राज्यनी वार्षिक पेशकसीनो आंकडो पाडी आपवानी दरखास्त करी. ए दरखास्त नामदार गायकवाड तथा पेशवा सरकार तरफथी अमदावाद खाते नियत थएला सूबा भगवंतरावे स्वीकारी; एथी मे. कर्नलवॉकर काठियावाड खाताना सूबा बाबाजी आपाजीनी साथे प्रथम झालावाडमा आव्या. अने एणे जे कायमी बंदोबस्त कर्यो ते अद्यापि " कर्नलवॉकरनो बंदोबस्त " एवी संज्ञाथी ओळखाय छे.

प्रथम झालावाड वीरमगामना ताबामां हतुं, तेथी पेशकसोनी रकम पण त्यांज भरवामां आवती. लखतर तथा थान ए बे जुदाजुदा तालुका गणाता. थाननी पेशकसी लश्कर द्वाराए लेवामां आवती, परंतु नामदार वॉकर साहेबे राज्यना ए बन्ने विभागने एकत्र गणी जोरतलबीनी रकम सहित एकंदर रु. ७३५१ संस्थान लखतरमांथी लेवानो ठराव कर्यो. ए वखते लखतर माथे गायकवाडी जप्ती हती अने त्यांनो वहीवट बाबाजी आपाजीनां माणसोने हाथ हतो. जते दहाडे गायकवाडे जे पेशवाना भागनी पेशकसीनो इजारो राख्यो हतो तेनी मुद्दत पूरी थइ गइ जेथी गायकवाडनो वहीवट समाप्त थयो अने पेशवाना अधिकारीओ पेशकसीनो जुदी उघराणी करवा लाग्या. नामदार अंग्रेजसरकारने इ. स. १८१८ मां थएली ट्रीटी मुजब पेशवाइ हक प्राप्त थवाथी पेशकसी उघराववानुं काम ब्रीटीश अमलदारोने हाथ गयुं. ए वखते ठाकोर पृथीराजजी देणाथी मुक्त थइ गया हता, जेथी तेओए पोतानुं राज्य पाछुं मेळववा नामदार गायकवाडसरकारने अरज करी. गायकवाडसरकारे लखतरमांथी जप्ती उठावी लेवानो हुकम फरमाव्यो. ए हुकमने आधारे ठाकोर पृथीराजजीने थान तथा लखतरनो तालुको पाछो मळ्यो; परंतु बाबाजी आपाजीनां माण-

सोए वांड, लीलापुर अने कीशोल वगेरे आठ गामोनो कबजो छोड्यो नहि, जेथी ठाकोर पृथीराजजीए नामदार गायकवाडसरकार हजुर उपराउपर अरजीओ मोकलवा मांडी. तेवामा इ. स. १८२० मां गायकवाडे पोतानी पेशकसी उघराववानो हक नामदार ब्रीटीश सरकारने ट्रीटीनी रुए सोंपी आपवाथी आखा काठिआवाडमां अंग्रेज सरकारनो अमल शरु थयो अने इ. स. १८२२ मां एजन्सी खातानी स्थापना थइ. तथा मे. पोलीटीकल एजन्ट नामना एक ब्रीटीश अमलदार काठिआवाड खाते नीमाया. तेओनी कोर्टमां ठाकोर पृथीराजजीए पोताना हक संबंधी लडत जारी राखी. परंतु दैवयोगे एनुं परिणाम जोया विनाज वि० सं० १८९१ मां ठाकोर पृथीराजजीनो स्वर्गवास थयो तेओना पहेलां राणी मुळीना परमार काकाजी जसाजीनां कुंवरी प्रतापकुंवरबाथी कुमार जालिमसिंहजी, अभेसिंहजी, शेपमालजी तथा वजेराजजीनो जन्म थयो हतो. +अने त्रीजां राणी चराडीना गाजणीया मानाजीनां कुंवरी केशबाने कांइ संतति न हती.

ठाकोर पृथीराजजी पछी वि. सं. १८९१ मां श्रीमान् वजेराजजीनो थान लखतरनी राजगादीपर अभिषेक थयो. तेओनां लग्न त्रण स्थळे थयां, तेमाना पहेला राणी लींबडाना गोहिल अजुभाइ लाखाजीना कुंवरी रुपाळीबा के जेनाथी कुमार अखेराजजी तथा करणसिंहजी अने कुंवरीश्री जीजीबानो जन्म थयो. बीजा राणी वळाना गोहिल हरभमजीनां कुंवरी माजीबा अने त्रीजां राणी कुणाना मद्दीडा वावाजीनां कुंवरी सुरजकुंवरबा हतां. ए बन्नेने कांइ संतति हतो नहि.

ठाकोर विजयराजजी गादीए बेठा पछी एकादश वर्ष पर्यन्त राज्य सुखनो उपभोग करी वि० सं० १९०२ इ० स० १८४६ ना जुन मासनी ता. १५ मीए पोतानी पाछळ मात्र छ मासनी वयना एक कुमारने मूकी वैकुंठवासी थया.

वि० सं० १९०२ ना जेठवदी ६ ने दहाडे कुमार कर्णसिंहजीनो मात्र छ महिनानी उम्मरे थान लखतरनी राजगादीए अभिषेक करवामां आव्यो तेओनो जन्म थान मध्ये इ० स० १८४६ ना जान्युआरीनी ता. १० मीने दिवसे थयो हतो.

ए बाळवयना ठाकोरसाहेबने लइ राजमाता श्री रुपाळीबा थानथी लखतर रहेवा पधार्या. ए वखते कार्यभारनी अव्यवस्थाने लीधे राज्यनी तेमज तावानां गामोनी स्थिति तद्दन नबळी बनी

+श्री झालाकुळना बारोटना चोपडानी अंदर पृथीराजजीना कुमार जालिमसिंहजी, दादोजी उर्फे वजेराजजी तथा शेपमाळजी ए रीते त्रण नामो आपेलां छे.

गइ हती. भायातो, खेडूतो तथा अन्य राजपूतो राज्यनी केटलीएक भूमिने दबावी बेठा हता. ए भूमि राजमाता श्री रुपाळीबाए लडत शरु करी जेने परिणामे इ० स० १८४९ मां लीलापुर तथा इ० स० १८५९ मां कोशोल अने रुपावटी वगेरे गामो संस्थान लखतरने सोंपी देवामां आव्या. मात्र एक वांटुना कबजा बाबतनी लडत चालु रही.

योग्य अवस्थाए पहोंचेला ठाकोर श्री कर्णसिंहजीए वि० सं० १९२६ मां स्वतंत्रपणे राज्यनो कार्यभार चलाववा मांड्यो अने वाटु बाबतनी तकरारने म्होटा पायापर लावी मूकी. राज्यने सुसमृद्ध बनावनार तथा राज्य वहीवटनी केटलीएक उमदा पद्धतिओने प्रचलित करनार राजमाताश्री रुपाळीबा राज्यनी लगाम पोताना सुपुत्रने सोंपी वि. सं. १९३३ मां स्वर्गवासी थयां. ए वखते ठाकोर साहेबश्री कर्णसिंहजीनी युवावस्था हती. तेओए राजकाजनो उत्तम रीते अनुभव मेळवेलो होवाथी राज्यनी आमदानीमां दिनप्रतिदिन वृद्धि थवा लागी अने प्रजा पण सर्व प्रकारे सुखचेनमां दिवसो गुजारवा लागी

नामदार ब्रीटीश सरकारे देशी रजवाडाओमां हमेशा सुलेह शान्ति सचवाय एवा इरादाथी दरेक राज्यनी सीमा नक्की करवा माटे एक कमीटी नीमी, तेनी साथे ब्रीटीश राज्य साथे क्या क्या संस्थानना सीमाडाओ मळे छे एनी पण चोखवट करवा अन्य कमीटीने योजी.

ठाकोरश्री कर्णसिंहजीए ए उभय कमीटीओ द्वारा बीजां राज्योनी माफक पोताना राज्यनी सीमा संबंधी चोख करी लीधी. त्यारबाद तावाना भायातो तेमज मूळ गरासीआओना हक मुकरर करवा माटे काठियावाडनां समग्र राज्योनी सम्मति थतां राज्यस्थानिक कोर्टनी स्थापना करवामां आवी, ए वखते भायाती तथा मूळ गराशीआनी सीमानो सुलेह शान्तिथी फडचो थया बाद दरेकना हकनी नोंध थइ, के जेनो हालमां "हकपत्रक" एवा नामथी सहु कोइ व्यवहार करे छे. एज अरसामां श्रीमान् ठाकोर साहेबे खालसा गामोनी सर्वे करावी दरेक स्थळे वीघोटीनो वहीवट शरु कर्यो तथा राज्यनी स्थिति तपासवा माटे दरेक गामोमां जाते गया अने खेडूतवर्गनी खुशी प्रमाणे वीघोटीना आंकडा मुकरर करी आप्या. खेतीवाडीमां सुधारो थवाथी राजा तथा प्रजा बन्नेने लाभ थयो. मे. कर्नलवॉकरना बंदोबस्त वखते थान लखतरनी आमदानी रु. २५००० नी अंकाइ हती, परंतु हाल ए संस्थाननी आवक आशरे रु. १००००० एक लाखनी लेखाय छे. श्रीमान् ठाकोर साहेबश्री कर्णसिंहजीए खेतीवाडीनी विशेष आबादी अर्थे केटलेक स्थळे जळना बंध बंधाव्या तेमज संस्थान लखतर तावानो प्रदेश के ज्यां पीवानुं पाणी पण महा मुश्केलीए मळे

छे त्यां ठामठाम कुवाओ तथा तळावो खोदाव्यां, तथा खुद लखतरमां मोतीसर अने सरधरा नामनां बे म्होटां तळावो रु ५०००० ने खर्चे तैयार कराव्यां, तेमां तळाव मोतीसरनी अंदर आरा उवारा बंधावी प्रजा माटे अपूर्व सुखनुं साधन करी आप्युं. ए उपरांत प्रजावर्गमां विद्यानी वृद्धि थाय एटला माटे गुजराती निशाळो, शारीरिक संपत्तिना संरक्षण माटे एक सार्वजनिक होस्पीटल अने कोइ पण अनीतिनो भोग न थइ पडे एटला माटे इन्साफी कोर्टोनी स्टेट तरफथी स्थापना करवामां आवी; छतां अन्तिम अपील श्रीमान् ठाकोर साहेब जाते सांभळे छे अने योग्य इन्साफ आपे छे. तेमज हमेशां सवारना दश वाग्याथी सांजना पांच सुधी नियमित राज्यनुं कामकाज करे छे. स्टेटना प्रमाणमां रैय्यतना संरक्षणने माटे पोलीस वगेरेनो बंदोबस्त प्रशंसापात्र छे.

नामदार ठाकोरसाहेबश्री कर्णसिंहजी गुजराती तथा व्रजभाषानुं सारुं ज्ञान धरावे छे. पोते विद्याविलासी होवाने लीधे काव्य उपर विशेष अभिरुचि राखे छे अने मन, वचन तथा कर्ममां पवित्र रही वैष्णव संप्रदायना अनुयायी होवाथी निरंतर प्रभुसेवापरायण रहे छे. तेओश्रीना दरबारमां मान्यवर वल्लभी संप्रदायनी पद्धति मुजब प्रभुश्री रणछोडजी महाराजनी सेवा थया करे छे. तेना नेक, सामग्री तथा उत्सव वैभवनुं तमाम खर्च स्टेट उपर छे. परंतु ए खर्चनो विशेष भार राज्यने उठाववो न पडे एटला माटे तेओश्रीए महाराजश्री रणछोडजीनी एकत्र थएली सीलीकमांथी गाम मालीकानो वांटो मूळ गराशीआ पासेथी वेचाण लीधेलो छे. एनी उपज हाल राज्यनी तीजोरीमां श्रीरणछोडजी महाराजने नामे जमा थाय छे. अने वर्ष आखरे थएलुं खर्च बाद करतां वधेली ए रकम ए खाताना ट्रस्टीओने राज्य तरफथी सोंपी आपवामां आवे छे. तेनी साथे प्रगणानी जे जकात उपजे छे, ते उपर सेंकडे अढी टका अने लखतर शहेरनी जकातमांथी पण अमुक लागो श्री रणछोडजी महाराजनी सेवा अर्थे नांखवामां आव्यो छे, जेथी ए खातांनां खर्चनो विशेष बोजो राज्यकोषपर रहेतो नथी.

राज्यमां खेतीवाडीनी तेमज प्रजानी जेम जेम आबादी थती गइ तेम तेम वेपार पण अनुक्रमे वधवा लाग्यो. रुनी पेदाश वधतां दरबारश्रीनी सहायताथी सारा पाया उपर एक जीनींग फेक्टरी स्थापवामा आवी. एथी वेपारीवर्गने सारो लाभ मळवा लाग्यो. पूर्वे लखतरनी स्थिति एक साधारण गामडां जेवी हती, ते आस्ते आस्ते सुधरतां सुधरतां शहेर बनी गयुं, वस्तीनो वधारो थयो. बजार तथा रस्ताओनी साथे ठाम ठाम पाकी बांधणीनां गृहो बंधाइ गयां. श्रीमान् ठाकोरसाहेबे रुपिआ एकलाखने खर्चे ए शहेरने फरतो एक मजबूत किल्लो बंधाव्यो. तेमज रुपिआ

पांत्रीशहजारने खर्चे थानमां एक विशाल राज्यमहेल तैयार कराव्यो. तेओ पूरेपूरा धर्मचूस्त छे, छतां अन्य धर्मनो कदी पण अनादर करता नथी. तेओए लखतरमां मुसलमान तथा जैनना देवालयोमां मदद आपेली छे, तेमज वि. सं. १९३१ मां रुपिआ दशहजारने खर्चे एक शिवमन्दिर बंधावी तेमां महादेव कर्णेश्वरनी स्थापना करावेली छे अने स्वामीनारायण संप्रदायवाळाओने पण एवीज रीते सहायता आपेली छे. तेओ दरेक धर्मना आचार्योने सरखुं मान आपे छे. आथी त्यांनी हिन्दु तथा मुसलमान ए बन्ने कोम नामदार ठाकोरसाहेबने पोताना पितातुल्य समाणे छे. टुंकामां तेओनी राजनीति निर्विवाद वखाणवा लायक छे; वि. स. १९५१ मां थान तथा लखतरनी प्रजा, खेतीवाडी अने राज्यकोषनी स्थिति बहुज आबाद बनी गइ.

श्रीमान् ठाकोरश्री कर्णसिंहजीनो प्रथम विवाह वेलाना जाडेजा फळजी अभेसिंहनां कुंवरी जामबा साथे, बीजो विवाह दरेडना गोहेल कुशळसिंह पत्ताभाइनां कुंवरी वाजीबा साथे, त्रीजो विवाह भेलाना जाडेजा भूपतसिंह सामतसिंहना कुंवरी फइबा साथे, चोथो विवाह लींबडाना गोहिल प्रतापसिंहजी अजाभाइनां कुंवरी धनुबा साथे, पांचमो विवाह मुळीना परमार कळाभाइ जीवाभाइनां कुंवरी अजुबा साथे, छठ्ठो विवाह लींबडाना गोहिल प्रतापसिंहजीना कुंवरी रामबा साथे, अने सातमो विवाह थरादना वाघेला बनाजी करणजीनां कुंवरी राजुबा साथे थयो. तेमांना चारनो स्वर्गवास थयो. मात्र राणी रामबा साहेब, राजुबा साहेब तथा फइबा साहेब ए त्रण हाल हयाती भोगवे छे. तेमांना राणीश्री रामबा साहेबे कुमार बळवीरसिंहजी, मानसिंहजी तथा भगवतसिंहजी उपरांत कुंवरीश्री सुंदरबा तथा माजीराजबाने जन्म आपेलो छे. राजकुमारी सुंदरबा साहेबने पोरबंदरना दानवीर मरहुम महाराणाश्री भावसिंहजी साथे परणाव्यां हतां, हाल ए बाइश्री हयात नथी. एओनां मातुश्री रामबा साहेब पण वि. सं. १९५९ ना भादरवा सुदि ११ ने दिवसे वैकुंठवासी थयां.

पाटवीकुमार बलवीरसिंहजीनो जन्म वि. सं. १९३७ ना पोष सुदि ११ ने दिवसे थएलो छे.

श्रीमान् ठाकोरश्री कर्णसिंहजी किशोरवयमां पोतानां मातुश्री रुपाळीबा साहेब साथे वि. सं. १९१८ मां काशीनी यात्राए पगरस्ते पधार्या हता. ए वखते तेओनो साथे ५०० माणसो, ६० अश्व, ४ रथ, २ सीग्राम अने २ मीयाना हता. पुष्करजी, मथुराजी, प्रागराज, उज्जेण तथा रेवाजीनो यात्राओ कर्या बाद नामदार ठाकोर साहेब उदयपुर, झालरापाटण, कोटा तथा वडोदराना

महाराजाओनी, मुलाकात लेता लेता वि. सं. १९१९ मां पाछा लखतर पधार्या. तेओए वि. सं. १९३६ मां झाडखंडी वेजनाथ, प्रागराज, काशी, मथुरां वगेरेनी यात्रा करी. पाछा वि. सं. १९३८ मां तेओ मथुरां, हरद्वार कुरुक्षेत्र तथा काशीनो यात्रा करी आव्या, एमां आशरे रु. १०००० खर्च थयुं हतुं. तेओ नामदार चोथीवार अर्थात् वि. सं. १९५२ ना महा शुदि ५ सोमवार ता. ३-२-१८९६ ने दिवसे लगभग सो माणसो सहित चार धामनी यात्रा अर्थे पधार्या. ए लांबी मुदतना प्रवास दरमीयान राज्यना बंदोबस्त माटे तेओश्रीए ए वखतना मे. पोलीटीकल एजन्ट हन्टर साहेबने मळी एक राज्यव्यवस्थापक काउन्सील नीमी, तेमां प्रेसीडन्ट तरीके संस्थान लींबडीना मरहुम ठाकोर साहेबश्री सर जसवतसिंहजीने नीम्या अने मेम्बरो तरीके संस्थान लखतरना मुख्य कारभारी मी. मगनलाल त्रिभुवनदास, न्याय खाताना अधिकारी. मी. रुगनाथ खुशालभाइ, भायातो तरफथी राणाश्री केसरीसिंहजी दाजीभाइ कारेला भायात, खेडूत अने पटेलवर्ग तरफथी पटेल कानजी लालजी तथा वेपारी अने माजनवर्ग तरफथी शेठ रायचंदभाइनी योजना करी. राज्यना चालु कामकाजनी सत्ता मुख्य कारभारीने तथा सर्वोपरि सत्ता लींबडीना मरहुम ठाकोर साहेबने सोंपवानो ठराव कर्यो अने ते मे. हन्टर साहेबने हाथे मंजुर कराव्यो.

श्रीमान् ठाकोर कर्णसिंहजी चारे धामनी यात्राओमा लाखो रुपिआना पुण्य दान करी ता. २६-३-१८९७ ना रोज लखतर पधार्या. तेओश्रीए पोताना तेर मास अने त्रेवीश दिवस पर्यन्तना दीर्घ प्रवास दरमीयान राज्यनो वहीवट संतोषकारक रीते चालेलो जोइ एक जाहिर दरबार भर्यो अने व्यवस्थापक मेम्बरोने आशरे रु. ५००) नी किम्मतनो पोशाक आपी यात्रामां साथे आवेला अधिकारिओने तेमज अंगरक्षकोने यथायोग्य इनाम वहेंची आप्यां. तेओनुं जीवनचरित्र यमुनाना जळ समान निर्मळ तेमज पवित्र छे, तेओश्रीए वि. सं. १९५३ मां यात्राएथी पधारी राज्यनी लगाम हाथमा लीधा बाद पोतानां स्वर्गस्थ कुंवरी श्री सुंदरवाना स्मरणार्थे रु. १०००० दशहजार खर्ची एक सुंदर देवालय बंधाव्युं अने तेमां वि. सं. १९५४ ना वैशाख वदि ७ ने दहाडे महालक्ष्मी, महासरस्वती तथा महाकाळीनी मूर्तिओनुं यथाविधि श्रद्धापूर्वक स्थापन

---

१ ए चारे धामनी यात्रानो अहेवाल थान लखतर राज्यना ऐतिहासिक वृतान्तमां सविस्तर छपायेल छे. चार धामनी यात्राए जवानी उत्कंठा धरावनारने ए पुस्तक घणुंज उपयोगी थइ पडे एवुं छे.

कर्युं तेमज तेना कायमी निभाव उपरांत एक पाठशाळा खोली ब्राह्मणोना बाळकोने षट्कर्मनुं शिक्षण आपवा माटे रु. १०००० दशहजारनी बीजी रकम काढी.

वि-सं. १९५६ ना भयंकर दुष्काळ वखते श्रीमान् ठाकोरसाहेबे पोतानी प्रजाने निभाववा माटे ठाम ठाम कुवा तथा तळाव खोदाववानुं काम शरु कर्युं; संस्थान लखतरनी समीपे एक मोतीसर नामे गहन तळाव खोदाव्युं अने तेमां पाणी लाववा रु. २५००० पचीशहजारने खर्चे सरधरा नामनुं म्होटुं तळाव खोदावी तैयार कराव्युं.

दैवो कोपथी कंगाल बनी गएला कृषिवलोने तगावी आपी तेमज भायातो तथा मुळ गराशीआओने नाणां धीर्यां. ए वखते एकंदर रुपिआ एकलाखथी वधारे रकम राज्यकोषमांथी काढवी पडी हती. वि. स. १९५७-५८ मां पण नबळी स्थितिमां निमग्न थएला कृषिवलोने बळद, बीज तथा अन्न विगेरे आपी टकावी राखवामां बीजा वेलाख रुपिआनुं खर्च वेठयुं हतुं. त्रणवर्ष पर्यन्त नामनी पण उपज राज्यमां जमा थइ नहोती, छतां राज्यवहीवटना तेमज राज्यकुटुम्बनां नियमित खर्चमां लेश पण न्यूनता न करी. गत वर्षोमां तेओ नामदारे पोतानी प्रशंसनीय देखरेख नीचे राजकारोबार चलावेलो हतो, जेथी राज्यने करजे नाणा लेवानी आवश्यक्ता न जणाइ. जो के ए वखत बहुज बारीक हतो, तोपण थान तावे महादेव त्रिनेत्रेश्वरना प्राचीन देवालयनो जीर्णोद्धार करवानी इच्छा थतां तेओश्रीए रु. ५०००० पचाशहजारने खर्चे असल कोतरणीना कामवाळुं नमुनेदार देवालय बंधाववा मांडयुं अने तेनी देखरेख माटे रु. १५० ना पगारथी इन्जीनीयर मी. गजानन्द गोपाळनी नीमनोक करी. ज्यारे उक्त देवाळयना जीर्णोद्धारनुं काम सम्पूर्ण थयुं, त्यारे श्रीमान् ठाकोरसाहेबे वि. सं. १९५८ ना श्रावणशुदि ५ ने दहाडे प्रासादप्रतिष्ठा करी अने एज स्थळे सहस्त्रचंडी करावी महान सुयश मेळव्यो

पाटवी कुमारश्री बळवीरसिंहजी, कुमारश्री मानसिंहजी तथा भगवतसिंहजी उम्मरलायक थया, जेथी योग्य राज्यकन्याओ साथे तेओना लग्न करवा श्रीमान् ठाकोरसाहेबनी वृत्ति थइ, परंतु उपराउपर नबळां वर्षो आववाने लीधे लग्न महोत्सवमां खर्चवा धारेली म्होटी रकमनो संग्रह राज्यकोषमां न होवाने लीधे तेमज राज्य माथे करज करी एवा शुभ प्रसंगने साचववानुं पोताने अयोग्य जणातां ए वात बंध राखी हती. छेवटे वि-सं. १९५९ ना महा शुदि ४ ने रविवारे पाटवीकुमारश्री बळवीरसिंहनां लग्न धरमपुरना सूर्यवंशी

महाराणाश्री मोहनदेवजीनां व्हेन सुरजकुंवरवा साथे तथा मुळीना प्रमारवंशीय ठाकोरश्री हिम्मत-सिंहजीनां व्हेन बाइसाहेव साथे म्होटी धामधूमथी कर्यां. तेने बीजे दिवसे अर्थात् महा शुदि ५ ने सोमवारे कुमार मानसिंहजीनां लग्न रोज्ञकाना तालुकदार चुडासमाश्री देवीसिंहजीनां कुंवरी तख्त-कुंवरवा साथे तथा कुमारश्री भगवंतसिंहजीनां लग्न थरादना वाघेला पृथोराजजीनां कुंवरी बाकुंव-रवा साथे करवामां आव्यां. ए शुभ प्रसंगे संस्थान लींबडीना मरहुम ठाकोरसाहेबश्री सर जसवंत-सिंहजी पोताना कुटुम्ब सहित पधार्या हता. तेमज ध्रांगध्रा, पोरबंदर, वढवाण, वळा, लाठी, पा-लीताणा, लींबडा, वेळा तथा नडीआद वगेरे संस्थानो तरफथी भायातो, कार्यभारीओ, तालुक-दारो अने शेठ शाहुकारोए आवी पोशाको दइ लइ लग्न महोत्सवनी शोभामां वृद्धि करी हती. ए वखते राजारजवाडाना माणसो उपरांत भाट, चारण, भांड तथा गवैयाओ वगेरे मळी एकंदर दश-हजार माणसो एकत्र थयां हतां, ए तमामने पंदर दिवस पर्यन्त राज्य तरफथी भातभा-तनां भोजन आपवामां आव्यां हतां अने मागणवर्गने मस्तक दीठ रु. १।। तथा कविवर्गने सहु सहुनी योग्यता प्रमाणे इनामो आपी श्रीमान् ठाकोरसाहेबे सत्कीर्तिने संपादन करी. ए मांगलिक प्रसंगे लींबडीना मरहुम ठाकोरसाहेब सर जसवंतसिंहजीए मागणोने मस्तक दीठ अकेक रुपियो आप्यो हतो. ए शुभ प्रसंगमां महेरबान झालावाड प्रान्तना पोलीटीकल एजन्ट केप्टन वीलसाहेबे पोताना कचेरीमंडळ सहित भाग लीधो हतो. श्रीमान् ठाकोरसाहेबश्री कर्णसिं-हजीए ए प्रसंगनी खुशालीमां प्रजावर्गनो एक दरबार भरी वि. सं. १९५६ नी तमाम महेसुल तेमज १९५७ नी महेसुलनो चतुर्थांश माफ कर्यो. ए रकम एकंदर रु. ७५००० हजारनी थइ हती. नामदार ठाकोरसाहेबनी आवी महान उदारताथी प्रजा अत्यन्त संतोष पामी.

ए रीते लग्न कार्य संतोषकारक रीते समाप्त थया बाद श्रीमान् ठाकोरसाहेबे वि. सं. १९५९ ना चैत्रशुदि ११ ने दिवसे फटाया कुमारश्री मानसिंहजीने गाम "गांगड" तथा कुमा-रश्री भगवतसिंहजीने गाम "वडला" गरासमां आप्युं अने भायाती सिरस्ते हकपत्रकोमां पोते तथा बन्ने कुमारसाहेबोए मे. झालावाड प्रान्तना पोलीटीकल एजन्ट केप्टन वीलसाहेब रुबरु ह-स्ताक्षर कर्या. हालमां संस्थान थान लखतरनी प्रजा आबाद छे, राज्यकोषनो स्थिति सारी छे, खेतीवाडी पण जोइतां साधनो मळवाने लीधे सारी हालतमां छे अने खेडूवर्ग पण बहुज खुशीमां छे. ए सघळुं मान दीर्घदर्शी वर्तमान श्रीमान् ठाकोरसाहेब श्री कर्णसिंहजी बहादुरने घटे छे.

———

लखतरनो संक्षिप्त इतिहास.

दोहा.

पेढी राज हरपालथी, सुखकर सत्यावीश;
चतुर चन्द्र चाहे थया, उत्तम हळवदईश. १
अभयसिंहजी एहना, कलित चतुर्थ कुमार;
त्वरित थान लखतर तणा, भला बन्या भरथार. २
हता बहु ए हिम्मती, रम्य जमाव्युं राज;
समये लइ स्वर्गे गया, करी वीरनां काज. ३
ए पछी तख्ते आवीया, विजयराज विद्वान;
भक्त राय रणछोडना, गाता हरिगुणगान. ४
दानी डुंगरपुरतणा, आशकरण अधिपाळ;
मातुल विजय तणा महद्, सेवे दीन दयाल. ५
त्यांथी राय रणछोडनी, मनहर मूर्ति मगावी;
विजय महीपे व्हालथी, पुर अन्दर पधरावी. ६
नमुनदार मन्दिर नविन, त्वरित करावी तैयार;
सुन्दर प्रतिमा श्यामनी, स्थापी महा सुखकार. ७
आपी रैय्यत आदिने, सहु रीते संतोष;
विजय गया वैकुंठमां, कीर्तिना भरी कोष. ८
वडिल पुत्र ए विजयना, शेषमालजी शूर;
प्रीते बेठा तख्तपर, निर्मळ धारी नूर. ९
पुत्र एहना पाटवी, गुणशाळी गोपाल;
तख्तनशीन ते पछी थया, गौब्राह्मणे प्रतिपाळ. १०
पूर्ण करीने प्रेमथी, आश्रित जननी आश;
गोपाले गोलोकमां, नेहे कर्यो निवास. ११

प्रतापी एना पुत्रमां, आदि कर्ण उदार;
गादीपति वनी आपता, हरदम अरिने हार. १२
धरणी भ्रांगधरातणी, दवावता दिनरात;
करी वृद्धि निज राज्यनी, वात एह विख्यात. १३
अन्य राज्यना योधने, मारी अनहद मार;
प्रीतें जाम तमाचीपर, अमित कर्या उपकार. १४
भय फेलाव्यो भुजवळे, ठाकोरे सहु ठाम;
समय आवता संचर्या, ए पण अक्षय धाम. १५
कुँवर वडा नृप कर्णना, द्वितीय अभय दातार;
ग्रही लखतरनी गादीने, पाम्या सुयश अपार. १६
जूनागढो लश्कर जवर, उरमां धरी अभिमान;
जोरतलवी उघराववा, आवी चढयुं गढ थान. १७
अभये ए कर आपवा, सत्वर "ना" सँभळावी;
यवनोए गढथानमां, चाहन लुंट चलावी. १८
द्वार तोडी दरबारनुं, भरी वैरनो भार;
परम सुशोभित पत्थरो, गया उठावी गमार. १९
अभयनृपे ए समयथी, विदित जमावो विरोध;
खूब व्हारवटुं खेडीयुं, करी यवनपर क्रोध. २०
मरतां लगी मूके नहि, तजे न कुळनी टेक;
उत्तम झाला अभयनुं, सुणजो साहस एक. २१
परहरी डर प्राणान्तनो, वळी ढांकी निज वेश;
निरखी निवास नवावनो, पलमां कर्यो प्रवेश. २२
शयनभुवनमां शान्तिथी, निद्रा लीए नवाब;

याचे चढी उरःस्थले, जाहिर अभय जवाब. २३

जागृत करीने जानपर, खंजर खेंच्युं खास;
नवाव नम्र वनी कहे, नहि करशो मुज नाश. २४

शिदने करवां सज्ज थया, आवुं साहस आप;
अधिक अजायव थाउं छुं, पेखी अभयॅ प्रताप. २५

अभये कारण ए समे, जणावीयुं धरी जोर;
वचन लइ विचरण कर्युं, कलित थानगढ कोर. २६

जाणी नव्वावे जुग्तिथी, राजपूतनी रीत;
अश्म आरकाना अखिल, पहोंचाड्या धरी प्रीत. २७

ए रीते अपमानतो, वाळी वदलो वीर;
अभय अहर्निश राखता, निजकुळ केरुं नीर. २८

समय पामीने स्वर्गमां, गया अभय गुणवान;
पुत्र रायधर पाटवी, महीपति वॅन्या महान. २९

कोळी लोकोए कठिन, वळे उठाव्युं वंड;
रायधरे कर असि धरी, दीधो खळने दंड. ३०

थया सुखद सगरामजी, ते पछी तख्तनशीन;
संतति विण स्वर्गे गया, वजावी यशनुं वीन. ३१

लीधी कर लघुबन्धुए, लखतरतणी लगाम;
चन्द्रसिंहजी चतुर ए, समये गया स्वधाम. ३२

आनंदी सुत एहना, परमसुशील पृथीराज;
हता उम्मरे बाल अति, तदपि धर्यो शिरताज. ३३

मात वाजीवाए महद, हृदयें धारी हर्ष;
कर्यां राज्यनां काज सहु, दृढताथी दश वर्ष. ३४

संपदभर सिंहासने, निरखी बाल नरेश;

राज्य आजुबाजु तणां, हल्ला करे हमेश. ३५

हतो ए समे हिम्मती, खवास हीरजी खास;
कार्यभारी बाए कॅर्यो, तेने हरवा त्रास. ३६

एक वर्ष एणे करी, सेवा राज्यनी श्रेष्ठ;
जतां समय जाति मुजब, निवड्यो हीरजी नेष्ठ. ३७

प्रीते राज्य पचाववा, युक्ति रची अनेक;
पाथरी जाळॅ प्रपंचनी, छक्यो हीरजी छेक. ३८

मुगलोनी माठी दशा, चमकी चारे कोर;
महद मराठाओ तणुं, जाहिर जाम्युं जोर. ३९

यौवन अति आनंदप्रद, पाम्या नृप पृथीराज;
हेरी कृत्य हीरातणां, नकी थया नाराज. ४०

गुणीअल गायकवाडनी, सहाय लही सुखकार;
कर्यो पतावी करज झट, हीराने हदपार. ४१

लखतरथी पततां लगी, वडोदरानुं वित्त;
वहीवट गायकवाडना, नोकर करता नित्य. ४२

प्राप्त थयुं पृथीराजने, ऋण अदा थतां राज्य;
निश्चय त्यां नजरे पड्युं, सुखद अंग्ल साम्राज्य. ४३

पृथीराजे परलोकमां, गमन कर्युं तजी गर्व;
विलोकी नरपति विजयने, सुखी थयां जन सर्व. ४४

विजयराज स्वर्गे वस्या, शोके हृदय छवाय;
कुमार कर्णनी ए समे, लघु उम्मर लेखाय. ४४

विदित मास पत्नी वये, कर्ण भूप कहेवाय;
सुखद राज्य सिंहासने, पवित्र धारी पाय. ४६

रुपाळीबाए राज्यनां, कर्यां अनुपम काम;
जुगते सुतने जाळव्या, हृदये धारी हाम. ४७

बांध्यु बुद्धिबळ थकी, तमाम राज्यनुं तंत्र;
प्रमाणी लायक पुत्रने, सत्ता सोंपी स्वतंत्र. ४८

कार्यकुशळ नृप कर्णनुं, धर्म उपरे ध्यान;
सेवक शुभ श्रीकृष्णना, उरमां नहि अभिमान. ४९

खूब दाम खरची अने, यात्रा करी अनेक;
संतोष्या जन सुज्ञने, विध विध करी विवेक. ५०

राजनीतिए राज्यने, अमित कर्युं आबाद;
करे स्तुति नृपकर्णनी, विबुधो विना विवाद. ५१

पाटवी सुत एना प्रबळ, बुद्धिशाळी बळवीर;
संग्रहवाने सद्गुणो, अहनिश रहे अधीर. ५२

कर्ण कर्णसम दानमां, बडभागी बडहाथ;
नयन ठरे नथुरामनां, निरखी लखतरनाथ. ५३
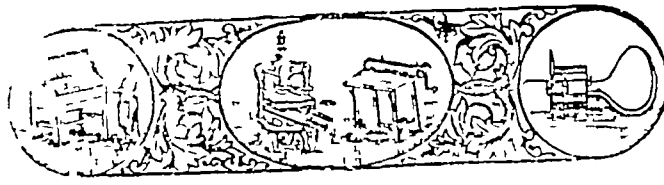
एकोनत्रिंशत् तरंग.
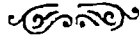
श्री

" छप्पय. "

वांकानेरे वंशवल्ली सुरताने वावी.
राजाजीए राजधानी वढवाण जमावी;
बालसिंह लगि थया, त्यहां भूमिपति द्वादश,
अमर ! आपलगि अहीं, तख्तपति थया त्रयोदश;
श्रवण करो नृप स्नेहथी, विदित कथा वढवाणनी;
नित्य गाय नथुराम कवि, महद कीर्ति मकवाणनी.

श्री हळवदना राज्यकर्ता राज चन्द्रसिंहजीने पृथीराजजी, आशकरणजी तथा अमरसिंहजी वगेरे कुमार हता, तेमांना आशकरणजीए पोताना ज्येष्ठबन्धु पृथीराजजीने प्रपंचनी जाळमां फसावी हळवदनी गादीने हस्तगत करी. पृथीराजजीए वि. सं. १६६० मां वढवाणनुं जुदुं राज्य स्थाप्युं, परंतु ए ज्यारे कपटीजनोना कुकृत्यथी काळना कवळ थया, त्यारे तेओनां राणी कुमार सरतानजी तथा राजाजीने लइ जांबुडे गयां. जामनगरना जामनी सहायताथी पृथीराजजीना पराक्रमी कुमार सरतानजीए बाहुबळथी बावरीआ लोकोने जेर करी गढीआपर अमल जमाव्यो अने वांकानेर नामनुं शहेर वसावी त्यां पोतानी राजधानी स्थापी. तेओना स्वर्गवास पछी कुमार मानसिंहजी वांकानेरनी गादीए बिराजमान थया, त्यारे तेओनी उम्मर न्हानी हती, एटलामाटे एमना काका राजोजी प्रतिनिधि तरीके राज्यनुं तमाम कामकाज करता हता. ए वात कारभारीने पसंद पडी नहि,

जेथी तेणे राजाजीने कोइ पण प्रकारे दूषित करी राज्यमांथी अलग करवानो यत्न आरंभ्यो. एणे एक बाजु राजाजीने एवा खबर आप्या के "आपने आवश्यक राजकीय काम प्रसंगे बहारगाम मोकलवाना छे. माटे शस्त्र अस्त्रथी सज्ज थइ आप प्रभातमां राज मानसिंहजीनां मातुश्री पासे पधारजो." अने बीजी बाजु स्वर्गस्थ सरतानसिंहजीनां राणीजीने एवुं समजाव्युं के "राजोजी राज मानसिंहजीने मारी वांकानेरनी गादीने पचावी पाडवा इच्छे छे अने एटलाज माटे ते आवतीकाल्ये स्हवारमां आप पासे आवशे" बीजे दीवसे प्रभातमांज राजोजी हथिआर बांधी दरबारमां हाजर थया. राज मानसिंहजीनां मातुश्रीए कारभारीना कथनने सत्य समजी राजाजीने पासेना ओरडामांथी कांइ चीज लइ आववा आज्ञा आपी. राजोजी ओरडामां दाखल थया के तुरतज राजमाताए कमाड बंध करी सांकळ चडावी दीधी अने "दगो दगो" एम पुकारी उठ्यां. आ वखते राज्यनी समग्र शिरबंधी एकत्र थइ राजाजीपर हल्लो करवामां आगळ वधी तेवामां बाल राजा मानसिंहजी के जे समान वयना शिशुओ साथे गेंदथी क्रीडा करता हता ते त्यां आवी पहोंच्या अने तुरतज ओरडानी सांकळ उघाडी पोताना पितृव्य राजाजीनो गोदमा बेसी गया. राजाजी पण तेओने वात्सल्य बतावबा लाग्या. कारभारीनो प्रपंच खुल्लो पड्यो. अने ते एकाएक प्राण बचाववा खातर त्यांथी पलायन करी गयो.

त्यारबाद राजखटपटथी कंटाळी गएला राजाजीए वांकानेर पासेनुं गाम रातीदेवळी के जे पोताने गरासमां प्राप्त थएलुं हतुं त्यां जइ निवास कर्यो; परंतु ए न्हाना सरखा गामडामां वधारे वखत रहेवानुं पसंद नहि पडतां तेओ खोडुमां आव्या अने त्यां एक महेल बंधावी आनंदपूर्वक रहेवा लाग्या. आजीविका माटे अन्य साधन नहि होवाथी आजुबाजुना प्रदेशमांथी जोइए तेटली मालमत्ता लूंटी लावता. ए रीते स्वल्प समय व्यतीत थया बाद वढवाणमां बादशाही फोज आवी, ए वखते कोइएक आयर जातिनो पटेल वढवाणनो स्वतंत्र मालिक बनी सत्ता चलावतो हतो. बादशाही सेनापतिए तेना पासे खंडणीना चढेला रु. ४००००० चारलाखनी उघराणी करी, त्यारे आयर पटेले उत्तर वाळ्यो के वढवाणनो खरो मालिक तो खोडुमां रहे छे. एना पासे पेशकसीनी उघराणी करो. आ उपरथी बादशाही लश्करनो एक टुकडीए खोडु जइ राजाजीने कबजे कर्या; त्यांथी तेओने अमदावाद लइ जवामां आव्या. बादशाही सूबाए ज्यारे पेशकसीनी चढेली रकम भरी आपवा राजाजीने दबाण कर्युं त्यारे तेओए कह्युं के "वढवाणनो खरो मालिक हुं छुं. परंतु हाल केटलोएक समय थयां ए संस्थाननो उपभोग अन्यजन करे छे, पण जो ए पाछुं मने सुप्रत

करवामां आवे तो हुं स्वल्प समयमांज पूरेपूरी पेशकसी भरी आपुं." आ वखते अमदावादना सूबा ने तथा त्यांना कारभारीओने राजाजीए केटलाएक उत्तम अश्वो भेट तरीके आप्या; जेथी ए लोकोए एज वखते राजाजीने एक सनंद तथा सहायताने माटे अमुक सेना आपी. राजाजीए वढवाण आवी आहीर पटेलने केद कर्यो अने तेना पासेथी चारलाख रुपिआ वसुल करी अमदावादना बादशाही खजानामां भरी आप्या. त्यारबाद तेओए जीवितपर्यन्त संस्थान वढवाणनो स्वतंत्रपणे उपभोग कर्यो.

राजाजी इडरना राठोड राजा विरमदेवना कुटुम्बी शिवदासजीनां पुत्री श्यामकुंवरने परण्या हता, ए बाइ राठोडमां एवा नामथी प्रसिद्ध थया. ज्यारे वि. सं. १६९९ मां श्रीमान् राजाजीनो स्वर्गवास थयो, त्यारे राठोडराणी श्याकुंवरबा सती थयां, एनो पाळीयो अद्यापि डाडीमानी जग्यामां अस्तित्व भोगवे छे.

राजाजीने सबळसिंहजी, उदेसिंहजी, भावसिंहजी, उर्फे जालिमसिंहजी, जेतसिंहजी, तथा अदेसिंहजी नामना पांच कुमार हता. तेमांना सबळसिंहजी वि. सं १६९९ मां वढवाणनी राजगादीए बेठा, तेओए केटला वर्ष राज्य कर्युं एनो निश्चय थइ शकतो नथी. अणीदरा गामनी वावमा वि. सं. १७२१ नो शिलालेख छे, तेमां राज सबळसिंहजीनुं नाम लखेलुं छे. तेथी न्हाना भावसिंहजीने चार गामथी गाम खोडु, जेतसिंहजीने वडोद, वाघेला, वापोद्रु तथा रुपावटी अने अदेसिंहजीने गाम छत्रीआळुं गरासमां मळ्युं.

वि.सं.१६९९ थी आरंभी सं. १७६२ सूधीमां सबळसिंहजी, उदेसिंहजी तथा भगवतसिंहजी ए त्रण पुरुष एक पछी एक वढवाणनी गादीए बेठा. ए त्रणेए क्यांथी क्यांसुधी राज्य कर्युं ए कळी शकातुं नथी. भगवतसिंहजीने संग्रामसिंहजी, अगरसिंहजी तथा रामसिंहजी नामना त्रण कुमार हता.

राजाजीना तृतीय कुमार भावसिंहजीने न्हानी उम्मरमांज गृहकलहना कारणसर तेमने मोसाळ (इडर) लइ जवामां आव्या हता. ज्यारे ए भावसिंहजी उम्मरलायक थया, त्यारे सावरगढना राजाए पोतानी पुत्रीनो तेओनी साथे उद्वाह कर्यो. एनाथी महान् प्रतापी कुमार माधवसिंहजीनो जन्म थयो. ए माधवसिंहजीए बुन्दीनरेशनी सेवा बजावी नानतानी जागीर

[1] माधवसिंहजीना पौत्र जालमसिंहजी बुद्धिबळ अने बहादुरीथी कोटा राज्यमां करणकारण थइ पड्या. जेने परिणामे तेना वंशजोने कोटाना राज्य तरफथी झालरापाटणनुं राज्य प्राप्त थयुं के जे अद्यापि तेओना कबजामां छे.

मेळवी अने त्यारबाद तेओ कोटानरेशना कृपापात्र बनी सेनापतिना मानवंता हुद्दापर स्थित थया. तेओने मदनसिंहजी, अर्जुनसिंहजी, अभेसिंहजी, मानसिंहजी, अगरसिंहजी, भीमसिंहजी, करणसिंहजी तथा सामतसिंहजी नामना आठ कुमार हता. तेमांना अर्जुनसिंहजी तथा अभेसिंहजी कोटानुं लश्कर लइ वढवाण आव्या अने दरबारी महेलमां रहेला पोताना काका भगवंतसिंहजीने मारी राज्यने हस्तगत कर्युं तथा तेना कुमार संग्रामसिंहजी वगेरेने आजीविका माटे लटुडा नामनुं गाम आप्युं, जे अद्यापि तेना वंशजोना ताबामां छे.

वि. सं. १७६२ मां अर्जुनसिंहजी वढवाणनी राजगादीना अधिपति थया, तेना भाइ अगरसिंहजी अपुत्र गुजरी गया तथा मानसिंहजी वगेरे चार भाइओ स्वल्प समय वीत्याबाद कोटेथी वढवाण आव्या. ए वखते ठाकोर अर्जुनसिंहजीए झमर, झापोदर, वरशाणी, भालाळा, खारवा, देदादरा अने मेमका नामनां सात गाम मानसिंहजीने तथा खमीशाणा नामनुं एक गाम भीमसिंहजीने गरासमां आप्युं. भीमसिंहजी आत्मघात करी ज्यारे परलोकमां गया, त्यारे तेनुं गाम खमीशाणा वि. सं. १७६७ मां महादेव भीमनाथनी जगोमा धर्मादा तरीके अर्पण करवामां आव्युं. अद्यापि ए गाम भीमनाथना महंतना कबजामां छे.

करणसिंहजी कायम अर्जुनसिंहजीनी साथेज रह्या अने वांकानेरनी मददे जता तेओ मराया त्यारे वांकानेर तरफथी वढवाणने "नागनेश" नामनुं गाम आपवामा आव्युं.

वि. सं १७६३ मां अर्जुनसिंहजी तथा अभेसिंहजी वच्चे वढवाणना मुलकनी वहेचण थइ. तेओना पुरोहिते चीठीओ लखी; तेमां अर्जुनसिंहजीनी सूचनाथी बन्ने चीठीओमां 'चुडा' लखेलुं हतुं. चीठीओ नांखी के तुरतज अर्जुनसिंहजी एक चीठी उपाडी गळी गया. अभेसिंहजीने आवेली चीठीमा चुडा लखेलुं हतुं. जेथी तेओने बार गाम सहित चुडानी मालिकी मळी. वढवाण नीचे पण बार गामोज हतां. कहे छे के ए वखते वढवाण करतां चुडानी आमदानी विशेष होवाथी बन्ने चीठीओमां चुडा लखाववानो प्रपंच अभेसिंहजीएज कर्यो हतो. सामतसिंहजी तेओनी साथेज रह्या अने पाछळथी तेने कोइएक काठीए कुंडलानी हदमां मारी नांख्यां. चुडाना आधुनिक राजा जोरावरसिंहजी अभेसिंहजीना वंशमां उत्पन्न थएला छे.

ठाकोर अर्जुनसिंहजीए वि. सं. १७६३ थी १७९९ सुधी वढवाणनुं राज्य कर्युं, तेओ हाडाश्री अमरसिंहजीनां पुत्री देवकुंवरबाने परण्या हता. ज्यारे अर्जुनसिंहजी स्वर्गवासी थया, त्यारे तेनी साथे हाडीराणी पण सती थयां हतां. ए हाडीमाना पाळीआ उपरना शिलालेखमां संवत

१७९५ ना श्रावण वदि ५ ने गुरुवार लखेलो छे. पूर्वे थइ गएला सती राठोडमानो पाळीओ पण एज स्थळे छे. ए जगो हाडीमानी कहेवाय छे. राजाजी पछी जे जे राजाओ वढवाणनी गादीए वेसी स्वर्गे सिधाव्या, ते तमामनी त्यां देरीयो छे अने एज स्थळे त्याना मृतक राजाओने अग्निसंस्कार आपवामा आवे छे.

अर्जुनसिंहजीनी हयातीमां तेओना पाटवी कुमार सबळसिंहजी के जे नागनेशमां निवास करता हता, तेओए वि. सं. १७९० मां राणपुर माथे हुमलो करी ए गामने स्वाधीन कर्युं तथा त्यां बादशाही थाणुं वेसाडी दीधुं. राणपुरनी रैयत गायकवाड दामाजी पासे फरीयादे गइ. ए वखते अर्जुनसिंहजीए कुमार सबळसिंहजीना अनुचित कृत्य तरफ अरुचि बतावी थाणानां माणसोने नागनेश बोलावी लीधा. छतां राणपरनी प्रजा शान्त न थइ, तेओने चढाइना खर्च माटे अमुक रकम आपवानुं कबुल करी नागनेशपर हुमलो करवा दामाजीने आग्रह कर्यो. दामाजीए वि. सं. १७८२ मां त्रीशहजारनी फोज तथा तोपखाना सहित नागनेशपर चढाइ करी अने किल्लाथी लगभग पांचसो वारने छेटे पडाव नांख्यो. ए वखते सबळसिंहजी पासे शस्त्र बांधी सज्ज थएला राजपूत तथा भावर जातिना सिन्धि मळी एकन्दर पंदरसो माणसो हता. लडाइ शरु थइ. गायकवाडी फोजमांथी तोपना गोळाओ छूटवा लाग्या. नागनेशना किल्ला उपर पण तोपो गोठवाइ गइ अने गायकवाडी सैन्यपर तेनो मार शरु थयो. आशरे एक मास पर्यन्त ए रीते युद्ध थयुं, परंतु किल्लाने काइ पण इजा पहोंची नहि. छेवटे दामाजीए किल्लापर्यन्त एक भोंयरुं खोदाव्युं अने तेना इशानकोण तरफना कोठा नीचे सुरंग तैयार करावी तेमा दारु भर्यो; अने पोतानुं लश्कर पाछुं वळे छे एवु जाहेर करवा माटे डंको बजाववानो हुकम आप्यो. डंकानो नाद सांभळतांज नागनेशना जत्थाबध लोको गायकवाडी फोजने जोवा किल्लापर चढ्या; ए वखते केटलांएक माणसो इशानकोणना कोठा उपर पण आवी उभां हतां. तेवामां अचानक गेबी अवाज साथे सुरंग फुटी किल्लानी इशान दिशा तरफनो भाग तूटी पड्यो. घणा माणसो छिन्नभिन्न थइ गयां. गायकवाडी लश्करे नागनेशमां दाखल थइ सबळसिंहजीना महेलने घेरी लीधो. शिरबंधी लोको तेना सामे लडवा तत्पर थया, परंतु प्रतिपक्षीओनुं दळ प्रमाणमां वधारे पडतुं होवाथी सबळसिंहजी पोतानी मेळेज दुश्मनोने ताबे थया. गायकवाडी लश्कर तेओने वडोदरे लइ गयुं वडोदरा सरकारे सोनगढना किल्लामा त्रण वर्ष पर्यन्त सबळसिंहजीने केद राख्या हता. ज्यारे अर्जुनसिंहजी देव थया, त्यारे वढवाणथी केटलाएक गृहस्थो तथा अधिकारीओ दामाजी पासे गया अने तेना मननुं समाधान

करी सवळसिंहजीने छोडावी लाग्या.

सांभळवा प्रमाणे ज्यारे गायाकवाड दामाजीए नागनेश जीत्युं, तेज वखते तेओने त्यां पुत्रनो जन्म थयाना शुभ समाचार आव्या. पोते नागनेशमां फतेह मेळवी एटला माटे पोताना पुत्रनुं नाम पण एणे फतेसिंह राख्युं.

वि. सं. १७९९ मां सवळसिंहजी वढवाणनी गादीए वेठा, तेओना न्हाना भाइ मल्हार-सिंहजीने वणा, बाकरथळी तथा घणाद; मानाभाइने दूधरेज तथा ढुवा; रामाभाइने खेरोळी तथा वाडला; अने कशीयाजीने गुंदीयाळा तथा वाळा नामनां गामो गरासमां मळ्यां. कशीओजी एक वीर पुरुष हता, तेओनो भाणेज जामनगरनी गादीनो हकदार हतो. तेने तुरतमां राज्यलक्ष्मी प्राप्त थाय एटला माटे कशीयाजीए जामनगर जइ जामसाहेबने मारी नांख्या, परंतु पाछळथी कांइ कारणसर तेओना भाणेजने गादी न मळी जेथी तेओ जीव लइ त्यांथी तुरतज चाल्या गया. त्यारथी अर्थात् वि. सं. १८०० * थी वढवाण अने जामनगर वच्चे जबरुं वैर बंधायुं. एक बीजाए एक बीजाना गामनुं पाणी पीवाना शपथ लीधा+. छेवटे वि. सं. १९१८ मां ज्यारे वढवाणना ठाकोर राजसिंहजी द्वारिकानी यात्राए पधार्या, त्यारे कारभारी आजम दुर्लभजी मूळशंकरना प्रयत्नथी ए अपैयो तुट्यो अने संवत् १९२१ मां राजसिंहजीए जाम विभाजी साथे पोतानां कुंवरी वखतुवाने परणाव्यां.

वढवाणना राज्यकर्ता सवळसिंहजीना काका मोनसिंहजी के जे गाम खारवामां निवास करता हता; तेना वडापुत्र बनेसिंहजी बहुज बळवान हता. कहे छे के ते भरेल पखालवाळा पोठी-आना शरीरमांथी एक घाए तीरने सोंसरुं काढी देता हता. तेना पासे पुष्कळ द्रव्य हतुं. ए सवळ-सिंहजीना अत्यन्त प्रीतिपात्र हता, परंतु राज्यना केटलाएक अधिकारीओए इर्षाने लीधे सवळ-सिंहजीने एवुं समजाव्युं के "बळवान बनेसिंहजी आपनी राजसत्ता छीनवी लेशे माटे तेनो कांइ घाट घडाय तो सारुं" ए राज्यखटपटने परिणामे बनेसिंहजीने दरबारगढनी अंदर मारी नांखवामां आव्या, अने तेना वंशजो पासेथी खारवा, मेमका तथा देदादरा नामनां त्रण गामो पडावी राज्य

---

* १८०० नो संवत् वढवाणना इतिहासकारे अनुमाने आपेलो छे. कारण के ए जगोए एणे "घणु करीने" एवो शब्द वापर्यो छे.

+ ग्राम्य भाषामां एने अपैयो कहे छे.

साथे मेळवी देवामां आव्यां, बाकीनां चार गामोनो अधिकार मोनसिंहजीना वंशजो अद्यापि भोगवे छे. सांभळवा प्रमाणे वनेसिंहजीने मारवा माटे सबळसिंहजीए हुकम न्होतो आप्यो; परंतु तेमां तेनी चशमपोशी तो हतीज. मरण पामेला वनेसिंहजी सुरधन थया, जुना महेलमां जे स्थळे तेनो संहार करवामां आव्यो हतो ते स्थळे तेनो शय्या पूजातो हतो; परंतु ज्यारे महेल अत्यन्त जीर्ण थइ गयो, त्यारे वि. सं. १९३८ मां तेने पाडी एक गोखनी अंदर सुरधन वनेसिंहजीने बेसाडवामां आव्या. ए अद्यापि सुरधन तरीके पूजाय छे.

वि. सं. १८२१ ना पोश वदी ६ ने दहाडे सबळसिंहजीनो स्वर्गवास थतां, तेओना पाटवीकुमारचन्द्रसिंहजी उर्फे चांदोभाइ वढवाणनी राजगादीए बेठा; तेओने लाखाजी तथा पाताभाइ नामे बे भाइओ हता. तेमां लाखाजीने वडोद, उघल तथा कारीआणी अने पाताभाइने राजपर, अणीदरा तथा सैकडा नामनां गामो गरासमां मळ्या. प्रथम "सैकडा" एक उज्जड टींबो हतो, परंतु हालमां ए स्थळे करणसिंहजीए "करणगढ" नामनुं गाम वसावेलुं छे.

चन्द्रसिंहजी उर्फे चांदोभाइ महान् पराक्रमी हता; तेओए आजुबाजुना राजाओ साथे तेमज गायकवाडना सूबा साथे घणी लडाइओ करी हती. कहे छे के–एक वखत मेमकानो कोइ लुवाणो पोठीओ भरी झालरनो विक्रय करवा माटे भालमां धंधुका पासे रहेला गाम रोझकामां गयो, ते वखते त्यांना चुडासमा मेपजीए मश्करी खातर ए लुवाणाने पूछ्युं के–"तारा झाला शा भावे वेचाय छे? लुवाणे उत्तर आप्यो के "सो भालीए एक झालो" आ शब्दो सांभळतांज अत्यन्त क्रोधायमान थएला मेपजीए पोठीओ तथा झालर पडावी लुवाणाने बहुज लपटाव्यो अने एज वखते रोझकामांथी रजा आपी. उक्त लुवाणाए वढवाण आवी चन्द्रसिंहजी आगळ फरियाद करी चन्द्रसिंहजीए तेने पोठीआ तथा झालरना पैसा आपी मेपजीनो मद उतारवा दृढ संकल्प कर्यो अने तेना मोरझीया नामना गाम माथे चढाइ करवा बेहजार स्वार तथा पायदळ साथे चालो निकळ्या. मोरझीयाना लोको म्होटी आफतमां आवी पड्या. चन्द्रसिंहजीए त्यां पहोंच्या बाद लूंट चलावी अने घरना काटवळा समेत गाडामां घाली तेओ वढवाण पाछा वळ्या. तेवामां ए वात मेपजीना पुत्र लाखाभाइ तथा रामाभाइए पोताना बनेवी लींबडीना ठाकोर हरभमजीने काने नांखी. हरभमजी

---

[1] भालमा रहेनाराने भालीआ कही लुवाणाए मेपजीने बहु मारो जवाब आप्यो. मजुरी करनार माणसमां पण तार्किक शक्ति होय छे.

पांचसो स्वार तथा आठसो पायदळ सहित तेओने सहायता आपवा तत्पर थया. ए वखते पेशकसी उघराववा माटे काठिआवाडमां आवेला गायकवाडना सूबा भगवानभाइ लींबडीमां हता, ते पण हरभमजीनी साथे सज्ज थया. लींबडीमांथी निकळेलुं महान लश्कर सूर्यास्त समये भादर नदीना विशाल पुलिन पर आवी पहोंच्युं; सामेथी चन्द्रसिंहजी पण फोज लइ चाल्या आवता हता. तेओए लींबडीना लश्करथी जरा दूर पडाव नांख्यो, अने पोते मोरशोयामां करेली लूंट प्रसिद्ध न थाय तथा ते माल पाछो प्रतिपक्षीओने हाथ न जाय एटलामाटे तमाम गाडाओने तुरतमां सळगावी देवानी आज्ञा आपी. ए कार्य थइ रह्या बाद चन्द्रसिंहजीए समग्र सैनिकोने एकत्र करी कह्युं के हजु नागनेश जवानो मार्ग खुल्लो छे, परंतु एम करवाथी आपणी प्रतिष्ठामां हानि पहोंचशे. माटे शत्रुओ साथे युद्ध करवा रणमेदानमां प्रवेश करवो एज उत्तम छे. छतां जेने जीववानी इच्छा होय तेने नागनेश जवानो अनुमति आपवामां आवे छे." आ वखते सघळा सैनिको एक अवाजे बोली उठ्या के "अमो प्राणना प्रयाण पर्यन्त ठाकोरनी आज्ञा उठाववा उत्सुक छीए." सैनिकोनो आवो उत्कृष्ट जवाब सांभळी चन्द्रसिंहजीए गोरंभा नामना आरब जमादारने लींबडीना लश्करपर हुमलो करवा हुकम आप्यो अने पोते चुडासमा उपर चढाइ करी. जमादार गोरंभाना तावामां एकहजार आरबो हता, ते तमाम लींबडीना लश्कर साथे बहादुरीथी लड्या. घणा घवाया तथा मराया तो पण अंते ए लोको शत्रुओनी तोपोने घसडी ठाकोर चन्द्रसिंहजी पासे लइ आव्या. लींबडीनरेश हरभमजी रणभूमिमांथी पलायन करी गया. चुडासमानो आगेवान के जे ठाकोर चन्द्रसिंहजीनो साळो थतो हतो ते पण रणमां पड्यो. आथी तमाम प्रतिपक्षीओ पाछा हठ्या अने भाग्या. युद्धनी समाप्ति थइ,ए वखते गायकवाडना सूबा भगवानभाइए चन्द्रसिंहजीने पोताना दूत मारफत कहेवराव्युं के "आपना आरबो जे तोपो उपाडी लाव्या छे ते नामदार गायकवाडसरकारनी छे,ते अमोने पाछी आपो." चन्द्रसिंहजीए पोताना माणसोनी भूल जणावी तोपो भगवानभाइने सोंपी आपी. भगवानभाइ त्यांथी वडोदरे गया अने चन्द्रसिंहजी नागनेश थइ वढवाण पधार्या. तेओना काकामानोभाइ के जेने गाम दुधरेज तथा टुवा गरासमां मळ्यां हतां; ते जमादार गोरंभा वगेरे आरबोने कच्छ–भुजथी तेडी लाव्या हता. ए लोकोनो पगार घणा महिनानो चढी गयो हतो, छतां राज्य तरफथी ज्यारे तेओने जवाब न मळ्यो त्यारे ते बधा मानाभाइने गळे पड्या. मानाभाइए जमादार गोरंभाने कह्युं के–"तमो सर्व भुज चालो, त्यां हुं तमारो पगार चुकवी आपीश." आरबो मानाभाइनी साथे चाल्या, अने वांकानेर सुधी आवी पहोंच्या. त्यां वळी तमाम आरबोए पगार माटे पुकार उठाव्यो.

जमादार गोरंभाए गभराइ मानाभाइ पासे नाणां माग्यां. ए वखते मानाभाइए गाळो चावबा मांड्या. आरबोनो वधारे सतावणीथी आकुळव्याकुळ बनेला गोरंभाए वांकानेर पासे वहेता पताळीआना उंडा धरामां पडी आत्मघात कर्यो. एथी निराश थएला आरबलोको जुदे जुदे स्थळे जता रह्या अने मानोभाइ वढवाण आव्या. ए वखतना कोइएक चारणे नीचे मुजब दोहो बनावी मानाभाइने उपालंभ आपेल छे.

" पाणीमां पडतां, करमी कांइ करवुं हतुं;
गोरंभो गळतां; मरवुंतुं तारे मानडा "

ए मानाजीने हठीसिंह, मोडजी तथा सुजाजी वगेरे चार पुत्र हता. ए चारे दुधरेजनां ढोरोने वाळी जता दुश्मनोनी पाछळ वारे चढ्या हता. शत्रुलोकोए ए चारेनो गाम सोथामां संहार कर्यो. वि. सं. १८४४ ना महा वदी ३ ने रोज धींगाणामां काम आवेला ए चारे भाइओना पाळीआ हाल पण हाडोमानी जग्यामां मोजुद छे. ए पाळीयापरना शिलालेखमां वांचतां त्रणनां नाम उपर मुजब चोखां लखेलां छे, पण चोथानुं नाम अत्यंत अस्पष्ट होवाने लीधे वांची शकातुं नथी.

चन्द्रसिंहजी उर्फे चांदाभाइने त्यां वि. सं. १८१९ना महावदी ४ने दिवसे कुमार पृथीराजजीनो जन्म थयो हतो. वि. सं. १८३४ मां चांदाभाइनो स्वर्गवास थतां कुमार पृथीराजजी ओगणीश वर्षनी उम्मरे वढवाणनो राजगादीए बेठा. तेने घणाखरा लोको पथाभाइ कहेता तथा कविजनो काव्यमां " पीथल " एवा नामथी संबोधता. पथाभाइनो हजुरमां राजपूत, सिपाही अने काठी ए त्रण जातिना मळी एकंदर एक हजार माणसो साथे लइ पथोभाइ चारे दाजु चढाइ करता, गामो भागता अने आजुबाजुना प्रदेशने लूंटी अरण्य समान बनावी देता. एक वखते तेओ सातसो स्वार सहित अमदावाद सुधी जइ पहोंच्या अने साबरमतीने किनारे धोबीआए धोइ सूकवेलां सेंकडो वस्त्र वढवाणमां लइ आव्या. सांभळवा प्रमाणे ए एटला बधा बळवान हता के तेओनुं नाम सांभळतांज गुजराती लोको ध्रूजी उठता, तेओने केटलाएक " पथोभाइ जागडो " पण कहेता अने ए नामनो उच्चार करता रुदन करतुं न्हानुं बाळक पण छानुं रही जातुं. आ उपरथी ए केवा बहादुर हता तेनो तोल थइ शके छे. पथोभाइ बीजीवार अमदावाद गया अने तेओए वडोदराना बच्चा जमादारना भाणेजनी वरात पर हल्ला कर्यो. जेथी उभय पक्ष वच्चे युद्ध थयुं. तेमां बच्चा जमादारनो भाणेज काम आव्यो, एथी वरात वीखराइ गइ अने

तेनो डंको निशान विगेरे सामान लूंटी पृथीराजजी वढवाण पधार्या. तेनी प्रशंसामां कोइएक कविए नीचे मुजब दोहो बनावेलो छे.

"नळकंठो नाशी मरे, साभरकांठा सोत;
दिल्ली लगी देहोत, पाळ भरे तने पीथला"

लींबडीना ठाकोर हरभमजी पछी तेना कुमार हरिसिंहजी तख्तनशीन थया त्यारे तेणे पोताना पितानुं वैर लेवा माटे वि. सं. १८५७ मां पांचसो स्वार तथा बसो पायदळने साथे लइ वढवाणपर चढाइ करी. अने एक टुकडी खारी नदीए तथा बीजी टुकडी केराळानी तळावडी उपर राखी वढवाणमां जाण करवा माटे पचीश स्वारोने मोकली आप्या. ए स्वारोए शहेरना द्वार सूधी पहोंची कोइएक खेडूपर हल्लो कर्यो अने रहेजसहज तोफान मचाव्युं तेवामां रोन फरी शहेरमां आवता वढवाणना चौद स्वारो लींबडीना स्वारो पाछळ केराळा लगी दोड्या गया. ए वात ज्यारे पृथीराजजीने काने पडी त्यारे तेओ त्रणसो स्वार अने बसो पायदळ लइ एकदम केराळे जइ पहोंच्या. तळाव पासे तलवारो काढी वढवाण तथा लींबडीना लश्करो लडवा लाग्यां तेमां पथाभाइनो जीत थइ. हार पामेला हरिसिंहजीना मामा परवडीना चुडासमा रामोभाइ तथा लाखोभाइ काम आव्या. बीजुं युद्ध खारी नदी पासे थयुं, तेमां पथाभाइना मामा शेरभाइ समरशायी थया. ए शेरभाइ पेथापरना वाघेला हता, ते अफीणना केफमां गरकाव होवाथी तेने तेनो अश्व शत्रुना सैन्यमां खेंची गयो ए खबर न रही. लींबडीना ठाकोर हरिसिंहजीए ए शेरभाइने समररुपी शय्यापर शयन कराव्युं. उभय पक्षना मामाओ मार्या जवाने लीधे म्होटो कोलाहल मच्यो अने बन्ने सेनाओ पोतपोतानी राजधानी तरफ पाछी वळी.

एक वखत लींबडीना बरवाळा नामे महालनी सेना वढवाण तावाना गाम नागनेशमां आवी हती. ए वखते नागनेशमां लश्करी माणस हाजर न हतां, तो पण त्यांना लोकोए बहादुरीथी पोतानो बचाव कर्यो हतो.

वि. सं. १८६१ मां वळी ध्रांगध्रा साथे युद्ध थयुं हतुं. ते एटला माटे के वढवाणनुं थाणुं खोडुमां अने ध्रांगध्रानुं थाणुं गाम गुजरवेदी रहेतुं. तेवामां बकरीइदनो तहेवार आव्यो. गुजरवेदीनां अमुक सिपाहीओ खोडुमां आवी एक भरवाडनुं बकरुं वगर किम्मते उपाडी गया. भरवाड खोडुना थाणामां फरियाद करी, जेथी त्यांना शिरबंधीओए गुजरवेदी जइ भींगाणुं कर्युं

अने वकरुं पाछुं लावी भरवाडने सोंपी दीधुं. ए वात सांभळी ध्रांगध्राना राज अमरसिंहजीए वढवाणना ठाकोर पृथीराजजी साथे लडवानो निश्चय कर्यो, अने तेना तावामां गाम लटुडा तथा वेळावदर माथे चढाइ करवा एक सैन्यने रवाना कर्युं; परंतु ए वखते पथाभाइनी जीत थइ. त्यारबाद तेओ परस्पर एक बीजानी हदमां लूंटफाट चलाववा लाग्या. जेथी उभय राज्यनां अनेक गामो अरण्यनी माफक उज्जड बनी गया. ए वखते मात्र वढवाण, नागनेश अने खोडुमांज घणे भागे लोकोए रहेवानुं राख्युं हतुं.

ध्रांगध्रानरेशे गायकवाडनी सेनाने सहायताए बोलावी, परंतु तेनुं प्रमाण धारवा करतां बहुज ओछुं होवाथी तेओए वढवाणना भायाती गाम वणा पासे मुकाम राखी ए गामपर हल्लो करवानो संकल्प कर्यो; तेवामां वढवाणथी लश्करी लोको आवी पहोंच्या, वणाना गराशीआओ तेओनी साथे मळी ध्रांगध्रानी फोज सामे थया अने लड्या. लगभग एक मास पर्यन्त लडाइ चाली, परंतु ध्रांगध्रानेरशना माणसो वणामां प्रवेश करी शक्या नहि. एटली मुदतमां नामदार गायकवाड सरकार तरफथी एक म्होटी फोज ध्रांगध्रानी सहायताए आवी पहोंची, जेथी वणाना गराशीआओ पोतपोतानां घरबार छोडी एकदम वढवाण भेळा थइ गया.

ध्रांगध्रानरेशे लींबडी, वांकानेर, चुडा तथा सायलाना राजाओ पासे सहायता मागी हती, तेमा वांकानेर सिवायना त्रणे राजाए पोतपोताना तरफथी मदद मोकली आपी. ए रीते एकत्र थएल लगभग चाळीशहजार माणसोए वि-सं. १८६१ मां वढवाण शहेरने घेरो लीधुं, अने चारे तरफथी तोपोनो मारो चलाव्यो. ए वखते त्यांनो गढ हालना जेवो मजबूत न हतो; जेथी गोळाओ लागतां जे जे भाग तुटी पडतो ते ते भागने तुरतज मृतिका तथा पत्थरथी दुरस्त करावी ठाकोर पृथीराजजी तोपोनाज प्रहार वडे प्रतिपक्षीओने पाछा हठावता हता. अनंत उपायो कर्या छतां ध्रांगध्रानुं सैन्य वढवाणमा प्रवेश करी शक्युं नहि. लगभग दोढ मास पर्यन्त घेरो रह्यो, अन्ते भाट चारणोए वच्चे पडी सलाहसप कराव्यो. बधाए साथे बेसी कसुंबा पीधा अने वढवाण, लींबडी तथा ध्रांगध्रा वच्चेना वैरनी पूर्णाहुति थइ.

वि-सं. १८६२ ना महा वदी १० ने दिवसे पृथीराजजी उर्फे पथाभाइए परलोकप्रयाण कर्युं, ते वखते तेओना मात्र एकज कुमार जालिमसिंहजी के जेनी उम्मर सत्तर वर्षनी हती, तेओने वढवाणनी राजगादीए बेसाडवामां आव्या. जालिमसिंहजी न्हानी उम्मरना होवाने लीधे तेना मातुश्री दाइराजबा के जेने वढवाणनी प्रजा "बामा" कही बोलावती तेणे राज्यनी लगाम हा-

थमां लइ न्याय पुरःसर प्रजानुं पालन करवा मांड्युं.

वि-सं. १८६४ मां नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी वडोदराना पोलीटीकल रेसीडन्ट कर्नलवॉकरनी मारफत जे ठराव जाहेर थयो, तेने परिणामे काठिआवाडमां दरसाल खंडणी उघरावदा अर्थे सैन्य सहित पेशवा तथा गायकवाडना सूबाओनुं आगमन बंध थयुं. तेमज काठिआवाडना राजाओ पण परस्पर युद्ध करता अटकी गया.

श्रीयुत् कर्नलवॉकर साहेबे करेला ठराव मुजब रु. २८६३७-८-८ वढवाढ स्टेटे नामदार अंग्रेज सरकारने आपवा जोइए, परंतु ए रकममांथी सीवील स्टेशनना भाडाना रु. २२५० मुजरे लइ बाकीनां नाणां हाल सरकारी तीजोरीमां वढवाण स्टेट तरफथी जमा आपवामां आवे छे.

आ उपरांत वढवाण स्टेटनां जे गामो अमदावाद जील्ला नीचे छे, तेनी खंडणी इलायदी आपवामां आवे छे.

आ रीते राज्यपर अचानक आवी पडता उपद्रवोनी शान्ति थवाने लीधे कार्यकुशळ बाइराजबा (बामा) ए प्रथम संस्थान वढवाणनी स्थिति सुधारवा तरफ लक्ष आप्युं. लश्करी माणसोने कमी कर्यां. आगळना उपद्रवोथी उज्जड बनी गएलां गामोने आबाद करी शहेरना किल्लाने समोनमो कराव्यो. तथा चुडासमा साथेना वैरनु समाधान करवा भीमनाथनी जग्यामा कसुंबा कढाव्या अने वच्चा जमादारना भाणेजना मस्तक बदल जेतापरनो वांटो आपी तेनी साथे पण सलाहसंप कर्यो.

वि-सं. १८८३ ना चैत्र वदि ११ ने दिवसे जालिमसिंहजीए कैलासवास कर्यो. सांभळवा प्रमाणे ए उदारदिलना राजाए पोतानी एकवीश वर्षनी जींदगी आनंद वैभवमां वितावी हती अने राज्यनुं तमाम कामकाज तेओना मातुश्रीए कर्युं हतुं.

जालिमसिंहजीने पण राजसिंहजी नामना मात्र एकज कुमार हता, तेनो जन्म वि. सं. १८८२ ना फाल्गुन वदि २ ने दहाडे थयो हतो. ए पण पोताना पितानी माफक अत्यंत न्हानी उम्मरे अर्थात् वि. सं. १८८३ ना वैशाख शुदि ८ ने रोज तख्तनशीन थया; एनां मातुश्रीनुं नाम बाजीराजबा हतुं. वि. सं. १८८८ पर्यन्त राजसिंहजीनां दादीमा बाइ राजबाए निर्विघ्नपणे

---

१ पेशवानी पेशकसीना रु. २५९२२-८-० ॥ जुनागढनी जोरतलबीना रु. २६२८ अने अमदावादनी सुखडीना रु. ८८-०-८ मळी कुल रु. २८६३७-८-८ थाय छे.

राज्यसत्ता भोगवी. त्यारबाद सासु वहु वच्चे क्लेशनुं बीज रोपायुं.

वाजीराजनुं पीअर काठी पासेना गाम वालुकडमां हतुं, जेथी वाइराजवाए तेने कुमार राजसिंहजी साथे मानता पूर्ण करवा त्यां मोकली आप्यां. साथे राज्यना भायातो, कार्यभारीओ तथा शिरबंधीओने पण मोकल्या हता. मानता पूर्ण करी वालुकडथी चाली निकळेलां वाजीराजवा ज्यारे लाठीमां आव्यां त्यारे तेणे पीयर तरफनां माणसोनी सलाहथी साथेनां माणसोने पोताना पक्षमां मेळवी वाइराजवा पासेथी राज्यनी लगाम छीनवी लेवानो दृढ संकल्प कर्यो. अने त्यांथी तेओ सीधां नागनेश आव्यां. त्यारबाद तेणे वाइराजवानां माणसोने तावे करवा माटे केटलाएक शिरबंधीओने वढवाण मोकली आप्या. ए लोको वाइराजवानी आज्ञा मुजब वाइराजवानां बधां माणसोने केद करी नागनेशमां लइ आव्या. ए वखते नागनेशनां समजु लोकोए वाइराजवाने समजावी वाइराजवाना कारभारी सिवाय बीजां तमाम माणसोने केदमांथी मुक्त कराव्यां. आ वात ज्यारे वाइराजवानां जाणवामां आवी, त्यारे तेओ राजसिंहजीनां चार सावकी माताओ सहित ध्रांगध्रे पधार्यां अने वाजीराजवाए राजसिंहजी सहित वढवाणमां आवी राज्यनी लगाम हाथमां लीधी.

वि० सं० १८७४ मां पेशवानुं प्राबल्य तूटतां गुजरात तथा काठिआवाडमां नामदार अंग्रेज सरकारनी सर्वोत्कृष्ट सत्ता जामी; जेथी वि० सं० १८७६ मां राजकोटनी अंदर ब्रीटीश छावणी स्थपाइ अने त्यां एक पोलीटीकल एजन्ट नामदार ब्रीटीश सरकारना प्रतिनिधि तरीके नियत थया. आस्ते आस्ते मे. पोलीटीकल एजन्टना अधिकारपर आवेला पुरुषोए देशी राज्योमां अंदर अंदरना झगडाओने शान्त कर्या अने दरेक राज्य पासेथी भिन्न भिन्न पेशकशी वसूल करवा माडी. दरमीयान वाइराजवाइए पोताना हक बाबत मे. पोलीटीकल एजन्ट पासे अरजी लखावी मोकली, परंतु कायदा तरफ दृष्टि करतां कबजो अत्यन्त बळवान् गणाय छे. तेओए लगभग एक वर्ष अने सात महिना पर्यन्त एजन्सीमा लडत चलावी छतां फावी शक्युं नहि. वाइराजवा प्रथम आठ मास पर्यन्त ध्रांगध्रामा रही, पछीथी राजकोट रहेवा आव्या हता, परंतु ज्यारे केसनो चुकादो पोताना गेरलाभमा थयो, त्यारे तेओए पाछां ध्रांगध्रे आवी केटलाएक पगारदार सिपाहीओनो संग्रह कर्यो तथा वढवाणना घणखरा भायातोने पण पोताना पक्षमां मेळवी लीधा. त्यारबाद तेओ ध्रांगध्राथी चाली वि० सं० १८८९ ना आश्विन वदि ७ ने दहाडे पाछली रात्रीना त्रण वाग्याने सुमारे वढवाण आवी पहोंच्या अने शहेरनी उत्तरे रहेला धोळीपोळ नामना द्वारने तोडी गाममां दाखल थया. ए वखते वढवाणना कस्बानी गिरबंधीओने घणा मास थयां राज्य तर-

फथी पगार मळ्यो नहोतो. तेओने बाइराजबा गुप्त रीते मदद आपी निभाव्ये जतां हतां. जेथी ए लोको बाइराजबानी सेवा बजाववा सज्ज थया; तेनी साथे रैय्यत पण म्होटे भागे तेना पक्षमां मळी गइ. एटले तेओने दरबारगढनी अंदर दाखल थतां कोइ पण प्रकारनो अवरोध नड्यो नहि. ए वखते मे. पोलीटीकलएजन्ट तरफथी वढवाणमां नीमाएला जप्तीदारे मध्यस्थ रही समाधान कर्युं. राजसिंहजीने बाइराजबानी देखरेख नीचे सोंपवामां आव्या अने बाइराजबानी सलामती माटे अमुक शिरबंधीओने योजवामां आव्या. बाइराजबाना आगमनथी वाजीराजबाने वढवाण छोडवुं पड्युं, तेओ प्रथम लाठीमां अने पछीथी लींबडीमां रही पोतानुं जीवन गाळवा लाग्यां. तेओए राजसिंहजीनां वाली तरीकेनो हक मेळववा एजन्सीमां लडत चलावी, परंतु परिणाम शून्य आव्युं. छेवटे वि. सं. १८९५ मां एवो ठराव करवामां आव्यो के "राजसिंहजी योग्य उम्मरे पहोंच्या पर्यन्त तमाम राजतंत्र बाइराजबानी सत्तामां रहे तथा वाजीराजबाने जीवाइमां त्रण गामो आपवां के जेनो ते पोतानी हयाती पर्यन्त उपभोग करी शके, अने वढवाणना राजदरबार मांहेना तेमना ओरडानी अंदर आवी निवास करे." आ करार सासु अने वहु बन्नेए स्त्रीकार्यो अने एज रीते वर्तन कर्युं. एथी कायमनो क्लेश नष्ट थयो. वि. सं. १९०७ ना फाल्गुन शुदि १५ ने दहाडे बाइराजबा स्वर्गवासी थयां. ए वखते राजसिंहजीनी उम्मर २१ वर्षनी हती; तेओने चन्द्रसिंहजी, केसरीसिंहजी, वेचरसिंहजी तथा माधवसिंहजी नामे चार कुमार थया. त्यारबाद थोडे दिवसे तेमनां मातुश्री न्हानीबानो देहान्त थयो. त्यांसुधी बाइराजबा तथा वाजीराजबा वच्चे वैरनी शान्ति न्होती थइ. जेथी नामदार अंग्रेजसरकारे कुमार चन्द्रसिंहजीने कोइ पण प्रकारनी इजा न पहोंचे एटला माटे राजसिंहजीना सावकी माता बोनजीबा साथे नागनेश मोकली आप्या. नागनेशमां निवास करी कुमार चन्द्रसिंहजीए गुजराती, फारशी तथा अंग्रेजीनो उत्तम केळवणी मेळवी अने वि. सं. १९१६ मां तेओ ज्यारे लायक उम्मरना थया त्यारे वढवाणमां रहेवा आव्या त्यारबाद त्रण वर्षे अर्थात् वि. सं. १९१९ ना कार्तिक वदि १२ ने दहाडे कुमार चन्द्रसिंहजी कुंवरपदे पंचत्वने प्राप्त थया. तेओने दाजीराज उर्फे पृथीसिंहजी तथा काळुभा उर्फे बालसिंहजी नामना बे कुमार हता. दाजीराजनो जन्म वि. सं. १९१७ ना पोश वदि ३ ने दिवसे अने बालसिंहजीनो जन्म वि. सं. १९१९ ना महा शुदि ९ ने दिवसे थयो हतो.

ठाकोर राजसिंहजीना बीजा कुमार केसरीसिंहजीने वि. सं. १९२५ मां मेमका तथा वाघेला नामनां बे गाम गरासमां मळ्यां. तेने एक वखतसिंहजी नामे कुमार थया के जेने वि. सं.

१९३१ मां झालरापाटणना राजराणा पृथीसिंहजीनो अपुत्र देहान्त थतां दत्तक केवामां आव्या. ए रीते बख्तसिंहजी "जालिमसिंहजी" एवुं नाम धारण करी झालरापाटणनी राजगादीए बेठा. परंतु ज्यारे केसरीसिंहजी वि. सं. १९३५ ना आश्विन शुदि २ ने दहाडे स्वर्गवासी थया त्यारे तेना गरासनां बन्ने गामो दरबार दाखल थयां अने तेमनां वहुने राज्य तरफथी अमुक जीवाइ बांधी आपवामां आवी.

केसरीसिंहजीथी न्हाना बहेचरसिंहजीने पण एज सालमां कोठीआ तथा कटुडा नामनां बे गाम गरासमां मळ्यां अने एथी न्हाना माधवसिंहजीने स्टेट तरफथी जीवाइ बांधी आपवामां आवी, एओए राजकोट राजकुमार कॉलेजमां अभ्यास कर्यो हतो.

वि. सं. १९२० इ. स. १८६४ ना जान्युआरी मासनी ता. ७ मीए नामदार ब्रीटीश सरकार तथा वढवाण स्टेट वच्चे थएल ट्रीटी मुजब वढवाणनी हदमां शहेरना वायव्य कोण तरफ चार माइलने अंतरे नामदार अंग्रेज सरकारे सिविलस्टेशननी स्थापना करी छे, अने त्यां कायमने माटे एक मे. आसीस्टन्ट पोलीटीकल एजन्ट रहे छे. ए जगो वढवाणनी हदमां होवाथी तेनुं भाडुं दर वर्षे रु. २२५० नामदार ब्रिटीश सरकार वढवाण स्टेटने आपे छे.

चन्द्रसिंहजीना कुमार दाजीराजजी तथा बालसिंहजी राजकोट राजकुमार कॉलेजमां अभ्यास करता हता. ए दरमीयान वि. सं. १९३१ ना ज्येष्ठ वदि ०)) ने दहाडे ठाकोर राजसिंहजी ४९ वर्षनी उम्मरे स्वर्गवासी थतां, तेओनां पौत्र दाजीराजजी सं. १९३१ ना अषाढ शुदि १२ ने दिवसे वढवाणनी गादीए बेठा. तेओ सगीर वयना होवाथी त्यांना कारभारी नामदार अंग्रेज सरकारनी देखरेख नीचे राज्यनुं तमाम कामकाज करवा लाग्या. दाजीराजजीए इ. स. १८७९ ना सप्टेम्बरनी ता. २५ मीए राजकुमार कॉलेजमांथी निकळी ता. १८ मी नवेम्बरे हिन्दुस्थाननी मुसाफरी शरु करी ए वखते तेओनी साथे मी. जमशेदजी उनवाळा हता. तेओ पाछा इ. सं. १८८० ना मे मासनी ता. १८ मीए वढवाणमां आवी पहोंच्या अने एज महिनानी ता. २७ मीथी स्टेट कारभारीनी साथे जोइन्ट बनी राजकाज करवा लाग्या. छेवटे वि. सं. १९३७ ना अषाढ वदि २ ने बुधवारे तेओनो स्वतन्त्र राज्याभिषेक थयो.

ठाकोर दाजीराजजी तथा प्रीन्स काळुभा उर्फे बालसिंहजी वि० सं० १९३९ ना चैत्र शुदि १३ ने शुक्रवारे महेरबान गोहिलवाड प्रान्तना आसीस्टन्ट पोलीटीकल एजन्ट मी. एफ. एच.

वारडन साहेब साथे यूरोपनी मुसाफरीए पधार्या; अने इंग्लांड, फ्रान्स तथा यूरोपना अन्य विभागोनुं निरीक्षण करी वि० सं० १९४० ना कार्तिक वद १४ ने बुधवारे मुंबइ आवी पहोंच्या. अने त्यांथी कलकत्तामां भराएलुं प्रदर्शन जोइ मागशर वदि ४ ने रविवारे पोतानी राजधानीमां दाखल थया.

वि० सं० १९४१ ना वैशाख वदी ६ ने मंगळवारे ठाकोर दाजीराजजीनो लाओलाद स्वर्गवास थतां तेओना भाइ काळुभा उर्फे वाळसिंहजी जेठ शुदि ३ ने रविवारे वढवाणनी राजगादीए बेठा. तेओए इ० स० १८७३ थी १८८२ ना एप्रील मासनी ता० २० मी पर्यन्त काठिआवाड राजकुमार कॉलेजमां इंग्लीश अभ्यास कर्यो हतो अने कॉलेज छोड्या पछी दाजीराजजीना वखतमां स्टेटना रेवन्यु तथा ज्युडिशियलखातामां काम करी अनुभव मेळव्यो हतो. तेमज पोलीस सुप्री. तरीके पण अमुक वखत काम कर्युं हतुं. गादीए बेठा पछी स्टेट कारभारीनी साथे जोइन्टपणे राजकाज करता वाळसिंहजीने वि० सं० १९४२ ना कार्तिक शुदि १३ ने शुक्रवारे संस्थान वढवाणनो स्वतंत्र अधिकार मळ्यो हतो.

वढवाणनो संक्षिप्त इतिहास.

सवैया एकत्रीशा.

वांकानेर वसावी गादी त्यां गुणीअल सुरवाने स्थापी,
रातों देवळी राजाजीने आजीविका अर्थे आपी;
जतां स्वर्ग सुरतान सुभागी मानसिंह महिपाळ थया,
खटपटथी कंटाळी खास राजोजी रातों देवळी रह्या. १

परम प्रतापी पिता पृथीराजनी राजधानी वढवाण रसाळ,
आयर एक वनो बेठो'तो नेह धरी त्यांनो नरपाळ;
राजोजी खोडुमां रहेवा प्रीते आव्या सहपरिवार,
लूंटी आसपासना लोकने दिव्य बनाव्यो त्यां दरबार. २

बादशाही लश्कर ए समये वेग धरी आव्युं वढवाण,
चढेल खंडणी चुकाववाने जल्दी करी आयरने जाण;

कहेवा लाग्यो कायर थइने आयर डरनी हारी हाम,
खरो धणी खोडुमां रहे छे, देशे ए खंडणीना दाम. ३
एवीं करी उघराणी फोजें, पहोंची खोडु राजाजी पास,
आप्यो उत्तर राजाजीए अंतरमां धरी उंडी आश;
धणी हुं छतां घणी मुदतथी आवक त्यांनी आयर खाय,
जो मुजने ए पाछुं मळे तो सत्वर सघळो फडचो थाय. ४
बादशाही अधिकारी वधाए राजाजीने सोंप्युं राज,
केद करी आहिरने एणे कर्युं सफळ निज मननुं काज;
सबळसिंह सुत एना आदि, उदयसिंह बीजा उर आण,
भावसिंह त्रीजा भयहारी, जेतसिंहजी चोथा जाण. ५
ईडर नृपना आश्रयमां लघुवये भाव झलराण रह्या,
वखत आवतां वंशज एना भाग्यशाळी भूपाल थया;
हाल झालरापाटण केरुं राज्य भोगवे भाव धरी,
कोटाना महॅरावनी सेवा कलित सेंकडो वर्ष करी. ६
राजाजी पछी राजगादीए सबळसिंह बेठा सुखदाय,
मरद बन्धुने मारी गर्वथी उदयसिंह अवनीप गणाय;
ए पछी सुत एना आनंदी भगवतसिंह थया भूपाल,
ए वखते कोटेथी आव्या भाव पौत्र लइ सैन्य विशाल. ७
अर्जुन तेमज अभय नामना उभय बन्धुए बळ धारी,
मारी भगवतने वढवाणनी गादी मेळवी गुणकारी;
साथ हतुं ए समये चूडा, ज्हेंचणी वखते थया विभाग,
अर्जुनने वढवाण आवीयुं, चूडा भ्रात अभयने भाग. ८
अर्जुनसिंहजीना सुत आदि सबळसिंह अति शूर हता,
निवास करता नागनेशमां मोजीला मगरूर हता;

राणपुरे रंजाड कर्याथी गुस्से गायकवाड थया,
सबळसिंहने स्वाधीन करवा दळ लइने दामाजी गया. ९

झींक एनी झालाए झीली एक मास लगी त्रास तजी,
शरण थयो छेवट शत्रुनुं जोर महा जालिम समजी;
अर्जुन जातां अक्षयधामे तूटी कुंवरनी हाथ कडी,
सबळसिंहने पुर वढवाणनी मान भरेली गादी मळी. १०

पाटवी पुत्र पराक्रमी एना चन्द्रसिंहजी चतुरसुजाण,
नरपति बनी एणे निज नामनी अखिल स्थळे फेलावी आण;
गाम रोझके गयो लुवाणो वासीपुर वढवाण तणो,
झाळरनो विक्रय करवाने भरी पोठीए भार घणो. ११

मेपजीए मश्करीमां पूछयुं, झालो वेच्यो शा भावे ?
कहे लुवाणो सॉ भालीयानो नेक एक झालो आवे;
क्रोधित थइ मेपजीए काढ्यो लूंटी लुवाणाने हदव्हार,
सुणी वात ए चन्द्रसिंहजी वैर वाळवा थया तैयार. १२

महद सैन्य सजी मोरशीयापर चाह धरीने तुर्त चड्या,
चूंथी गादी ए चुडासमानी वेगे सहु वढवाण वळ्या;
जमाइ मेपजीना जोरावर हरभम निम्बपुरीना नाथ,
सहाय करवा आव्या सत्वर गायकवाडी सूबा साथ. १३

भीडमचावी भादर कांठे भूप चन्द्रनी भाळे राढ,
एवामां त्यां आवी चांदे दुश्मनमां फेलाव्यो दाह;
प्रथम माल मोरशीया केरो सत्वर नांख्यो सळगावी,
तूटी पड्या ते पछी अरि उपर अति आवेशमंहि आवी. १४

हार पामी भाग्या हरभमजी, चुडासमा चकदाइ गया,
अनेक आरव चन्द्रसिंहना समरशायी क्षणमांहि थया;

विजय मेळवी वळ्या विनोदे निजपुरभणी वढवाण नरेश,
भव्य एशआराम भोगवो गया स्वर्ग हणों हानि हमेश. १५
पृथीराज सुत पाटवी एना पूर्ण पराक्रमशाळी थया,
ग्रहण करी वढवाणनी गादी वेगे अमदावाद गया;
सावरकांठे शौर्य जणावी, नळकंठे पण कर्यां निशान,
पथोभाइ जांगडो प्रतापी, अवनिमां व्याप्युं अभिधान. १६
दरभम सुत हरिसिंह आवीया पावन निम्बपुरीने पाट,
वीर चढ्या वढवाण उपरे पृथीराजनो घडवा घाट;
उभय भूप केराळा आगळ, लाग जोइ लडवा लाग्या,
मरतां मातुल उभय पक्षनां भय पामी सर्वे भाग्या. १७
त्यारबाद ध्रांगध्रा साथे करी पृथीराजे तकरार,
राज अमर ए समये रूठ्या तुर्त थया लडवा तैयार;
प्रथम वणाने पायमाल करी वेगे अरि आव्या वढवाण,
घडिमां घेरी लीधो गढने पृथीराजनां लेवा प्राण. १८
दोढ मास लगि लड्या, डर्या नहि पराक्रमी ठाकुर पृथीराज,
भाट चारणोए भेळा थइ कर्युं ए समे उत्तम काज;
समाधान करवा समजाव्युं उभय भूपने त्यागी तंत,
पाइ परस्पर पाणी अमलनुं वैरभावनो आण्यो अंत. १९
लींबडी, चूडा अने सायला राज अमरना अनुयायी,
भेटी परस्पर प्रीति भावथी, रह्या हृदयमां हरखाइ;
पछी थया परलोकप्रवासी पृथीराज वढवाणपति,
जाहिर सुत जालिमसिंह एना हता उम्मरे बाळ अति. २०
बाळीपणे बहु काज राज्यनां वाइराजवा करतां'तां,
कार्यकुशळ जालिमनां जननी हानि प्रजानी हणतां'तां;

अमल थयो अंग्रेज तणो सहु स्थळे परम शान्ति प्रसरी,
स्वल्प जींदगी जालिमसिंहे मोजशोखमां पूर्ण करी. २१

राजसिंह सुत एना रुडा न्हानी उम्मरे थया नरेश,
बुद्धिबळेथी वाइराजवा करे राजनां काज हमेश;
सगीर नरपति राजसिंहना वाजीराजया मात हतां,
खाली खजानो थयो राज्यनो सासु वहुमां क्लेश थतां. २२

राजसिंहना पुत्र पाटवी चन्द्रसिंह चालाक थया,
नागनेश रही भणीगणीने योग्य वये वढवाण गया;
विविध प्रकारनी विद्या केरुं गर्व तजी मेळवीयुं ज्ञान,
मान पामीया महिमंडळमां धर्म कर्ममां राखी ध्यान. २३

पृथीसिंह सुत पाटवी एना द्वितीय नामधरी दाजीराज,
केळवणी पामी करता'ता निशदिन कीर्ति भरेलां काज;
राजसिंह पंचत्व पामतां शिरेराजनो ताज धरी,
दाजीराजे बन्धु बालसह यूरोप आदिनी सफर करी. २४

स्वल्प समय करी राज्य सिधाव्या सुरपुरमां ए निःसंतान,
बालसिंह लघुबन्धु एना पाम्या शुभ महिपतिनुं मान;
पाळी प्रजाने काळे लइ रही अपुत्र ए पण पाम्या अंत,
नेह धरी नथुराम वन्या नृप जाहिर हक मेळवी जसवंत. २५
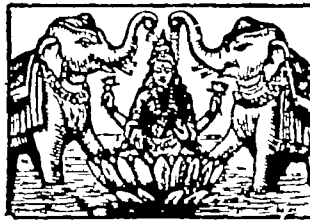
त्रिंशत् तरंग.

छन्द हरिगीत.

करवा कसोटी भाग्यनी राजाजीना सुत सज थया,
ए भावसुत माधव महा अधिकारी बनी कोटे रह्या;
निज बुद्धिबळथी जालिमे जे रीत लाभ लीधो घणो,
अमरेश ! कहुं इतिहास ए प्रिय झालरापाटणतणो.

राज चन्द्रसिंहजीना कुमार पृथीराजना सरतानजी तथा राजोजी नामे बे कुमार हता, तेमांथी सरतानजी वांकानेरना मूळपुरुष अने राजोजी वढवाणना मूळपुरुष गणाया; राजोजी इडरना राठोड राजा राव वीरमदेवना कुटुम्बी शिवदासजीनी पुत्री श्यामकुंवर साथे परण्या हता. तेओने सबळसिंहजी, उदेसिंहजी, भावसिंहजी, तथा जेतसिंहजी नामे चार कुमार थया. राजाजीना स्वर्गवास पछी सबळसिंहजी वढवाणनी गादीए बेठा; त्यारबाद कुमार उदेसिंहे पोताना म्होटाभाइ सबळसिंहने मारी राजगादीपर स्वतंत्र सत्ता जमावी; सहुथी न्हाना भाइ जेतसिंहने अमुक गरास मळ्यो.

राजा उदेसिंहने भगवतसिंह नामे कुमार थयो. ए बधाए वि. सं. १६९९ थी १७६२ सुधी क्रमानुसार राज्य कर्युं +

---

१ सबळसिंहजीना वंशजो हाल खोडुमां वांटो खाय छे. २ जेतसिंहना वंशजो हाल रुपावटीमां वांटो खाय छे. + केटलाएक एम कहे छे के राजाजीने सबळसिंहजी तथा भावसिंहजी नामे बे कुमार हता. तेमां सबळसिंहजी सं. १६९९ मां वढवाणनी गादीए बेठा अने भावसिंहजीने चार गामथी " खोडु " नो गरास मळ्यो.

गृहमां जागृत थएला कोइ पण कलहने लीधे कुमार भावसिंहजीने मोसाळ लइ जवामां आव्या, ए वखते तेओनी उम्मर मात्र त्रण वर्षनीज हती. इडरनरेशमां एवी शक्ति न हती के ते पोताना भाणेजने वढवाणनुं राज्य अपावी शके; परंतु तेओनी साथे मित्रता धरावनारो माळवानी अंदर रहेला सावरगढनो राजा एक समये त्यां आवी चढ्यो. इडरनरेशे पोताना भाणेज भावसिंह संबंधी तेओने केटलीएक भलामण करी. सावरगढनो राजा ए वखते दिल्हीपतिनो कृपापात्र हतो. तेणे दिल्हीना बादशाहनी सहायता मेळवी वढवाणनुं राज्य कुमार भावसिंहने अपाववानुं वचन आप्युं. बाल्यवयमां पण भावसिंहना भव्य गुणो जोइ संतुष्ट थएलो सावरगढनो राजा वि. सं. १७०० मां तेओनी राजधानीमां तेडी गयो. थोडो वखत त्यां रह्या बाद तेणे दिल्ही जइ झाला-कुमार भावसिंह संबंधी सघळी वात बादशाह आगळ कही संभळावी. भावसिंहजी खरी रीते गादीना हकदार न होवाने लीधे तेने सहायता आपवानी बादशाहे चोख्खी ना कही. इडरनरेशने पोते आपेलुं वचन नहि पळी शकवाथी शरमाएला सावरगढनरेशे कुमार भावसिंहजी साथे पोतानी पुत्रीने परणावी अने तेओने केटलोएक गरास आपी पोतानी राजधानीमांज राख्या.

सावरगढमां स्वस्थपणे वखत वितावनारा भावसिंहजीने त्यां माधवसिंह नामे कुमारनो जन्म थयो; तेओनी उम्मर साथे बुद्धि तथा पराक्रम पण वधतां गयां. झाला भावसिंहजी सावरगढमांज स्वर्गवासी थया. त्यारबाद माधवसिंहजीए सावरगढना राजानी सारी रीते सेवा करी अने पराक्रमथी आजुबाजुनो केटलोएक प्रदेश प्राप्त करी उक्त राजधानीमां मेळवी दीधो, जेथी तेओना उपर सावरगढना राजानो स्नेह दिवसे दिवसे वधवा लाग्यो; एथी राजराणीना मनमां एवी शंका थइ के " वखते विजयी माधवसिंह मारा पुत्र पासेथी राजगादी पडावी लेशे " आ वात झाला माधवसिंहना सांभळवामां आवी; तेओ तुरतज सावरगढमांथी चाल्या जवानो संकल्प करी राजा पासे पोताना पांचसो स्वारो सहित रजा लेवा गया; राजाए रहेवानो अति आग्रह कर्यो, छतां झाला माधवसिंह रह्या नहि अने त्यांथी बुन्दी जइ राज्यनी नोकरीमां दाखल थया. तेओए बहादुरी अने निमकहलालीथी बुन्दीनरेश शत्रुसालनी सेवा बजावी अने बाहुबळथी केटलोएक मुलक स्वाधीन करी बुन्दीनी साथे मेळवी आप्यो. एथी अत्यन्त प्रसन्न थएला बुन्दीनरेशे वि. सं. १७३८ मां झाला माधवसिंहजीने आशरे एक लाखनी आमदानी वाळो " नानता " नो किल्लो आप्यो अने ज्यारे पोतानो अन्तिम समय प्राप्त थयो त्यारे राजकुमार भावसिंहजीनी अवस्था न्हानी होवाने लीधे तेनुं कांडुं महान् बुद्धिशाळी माधवसिंहजीना हाथमां सोंप्युं. त्यारबाद तेणे आ असार

संसारथी विदायगीरी लीधी. माधवसिंहजीए केटलाएक वर्ष पर्यन्त बुन्दीनरेशना प्रतिनिधि तरीके राजकाज कर्युं.

कोइएक वखते बुन्दीनां राणीजीए माधवसिंहजी उपर नाराज थइ तेओने पराभव पमाडवा माटे राज्यना सैनिकोने आज्ञा आपी. सैनिको राजमातानी आज्ञा शिरःस्थापन करी लडवा सज्ज थया. ए लोकोनी साथे मुकाबलो करवा माधवसिंह जो के सर्व रीते समर्थ हता, छतां पोताना मालिकनी सेना सामे थइ निमकहरामतुं कलंक नहि वोरतां तेओ तुरतज बुन्दीनो त्याग करी कोटा तरफ रवाना थया. कोटाना राव भीमसिंह सामे गया अने म्होटा मान सहित तेओने पोतानी राजधानीमां लइ आव्या. थोडा वखत पछी झाला माधवसिंहने कोटाना राजाए सेनापति बनाव्या. माधवसिंहे लांबा वखत सूधी कोटानरेशनी सेवा बजावी अने साडासातसो गाम सहित शेरगढनो किल्लो तथा बीजो केटलोएक प्रदेश जीती राव भीमसिंहना चरणकमलमां समर्पण कर्यो.

झाला माधवसिंहजी एक महान् वीरपुरुष हता. तेओए कोइ प्रसंगे मेवाडना महाराणा साथे युद्ध कर्युं होय एवुं नीचेना गीत उपरथी जणाय छे.

" अरम्रही ऐसे लहरूप आवीयो, केहेतो झालो कठे कठे,
भलके भारे कठीडो भांगो, एहु माधव संग अठे;
मेवाडा सामो मकवाणो, खगवाहोरण अडग खरो,
बोलासमो वेधीओ वाणे, हरराजे अरसाम हरो;
भाड तणे केआ सत्रभूका, उडवे सूकालोह अथाह,
वाह वाह राओ राण वखाणे, गाढां गरजीतो गजगाह. "

महात्मा टॉड साहेब लखे छे के सौराष्ट्र देशनी अंदर रहेला झालावाडमां हळवद नामे शेहेरना सामान्य शक्तिवाळा सामन्तना वंशमां उत्पन्न थएला भावसिंहे न्हानी उम्मरमां पोताना सद्भाग्यनी परीक्षा करवा माटे केटलाएक विश्वासु सेवको सहित पितृभूमिनो परित्याग करी विदेश यात्रा आरंभी. ए समये बादशाह औरंगजेबना पुत्रो दिल्हीना सिंहासननी प्राप्ति माटे मांहोमांहे विद्वेषी बनी लडवा तत्पर थइ रह्या हता. अनेक स्थळोना अनेक सरदारोए पोतपोताना भाग्यनी कसोटी करवा माटे जेम अमुक अमुक शाहजादानो पक्ष स्वीकार्यो हतो, तेम झाला भावसिंह

पण एक शाहजादाना पक्षमां मळ्या. जे समये महाराज भीमसिंह कोटाना राजसिंहासने बेसी बे सैय्यद मंत्रीओनी सहायताथी पोताना पराक्रमने फेलावी रह्या हता. ते समये झाला भावसिंहना पुत्र माधवसिंह कोटामां आव्या. जो के ए वखते तेओनो साथे मात्र पच्चीशज घोडेस्वार हता तो पण महाराज भीमसिंहे तेओने माननीय झालावंशमां जन्मेला जाणो उत्तम रीते आदरसत्कार आप्यो अने पछीथी तेओनो साथे मित्रता बांधी एटलुंज नहि, पण पोताना कुमार अर्जुननी साथे माधवसिंहनो भगिनीनां लग्न करी तओने पोताना सबंधी बनाव्या अने थोडा दिवस पछी एमने "नानता" नी जागिर आपो कोटानी समस्त सेनाना अधिपति बनाव्या. कोटानरेश जे किल्लाना महेलोमां निवास करता, ते किल्लानुं अध्यक्षपद झाला माधवसिंहनेज मळ्युं. माधवसिंहे कोटाना राज्यमां महान् शक्ति अने सन्मान मेळव्युं.

ज्यारे माधवसिंहनो स्वर्गवास थयो त्यारे तेओना आठ कुमारमाथी म्होटा मदनसिंह कोटाना फोजदार बन्या, तेओ हिम्मतसिंह तथा पृथ्वीसिंह नामे बे पुत्र थया. हिम्मतसिंहने कांइ संतति थइ नहि, पृथ्वीसिंहने जालमसिंह तथा शिवसिंह नामे बे पुत्र थया, जालिमसिंहना पुत्र माधवसिंह अने माधवसिंहना पुत्र नानालाल (मदनसिंह बीजा) झालावाड अर्थात् "झालरापाटण" ना पहेला राजा थया.

राजपूतोना राज्योमां एवो रिवाज छे के प्रधान मंत्री, दीवान तथा प्रधान सेनापति आदिना पदपर जे नियत थया होय ते पद तेनो वंशपरंपरानेज मळे छे. ए नियमने अनुसरी झाला मदनसिंहना परलोक प्रयाण पछी तेना पुत्र झाला हिम्मतसिंह कोटाना सेनापति बन्या + कहे छे के तेओए सं. १७९९ मां नाहरगढनो किल्लो जीती कोटाना राज्यमां मेळवी दीधो अने त्यारबाद सं. १८०० मां जयपुरनरेश तथा मराठाओ तरफथी कोटाने घेरो घालवा आव्यो त्यारे हिम्मतसिंहनी बहादुरीथीज कोटानुं राज्य बच्युं हतु.

कोटाना महाराव दुर्जनसालने सिंहना शिकारनो घणोज शोख हतो, ते पोतानी राणीओने

+ कर्नल टॉडसाहेबे पोतानी टिपणीमां लख्युं छे. सं. १७९५ मां जे समये बाजीराव हाडोतीमां थइ हिन्दुस्थानपर अधिकार करवा आव्यो ते समये झाला हिम्मतसिंह कोटा राज्यना फोजदार हता. एज वर्षमां तेने त्यां शिवसिंहनो तथा तेने बीजे वर्षे अर्थात् सं. १७९६ मां जालिमसिंहनो जन्म थयो. १ ए घेरो त्रण महिनापर्यन्त रह्यो हतो.

साथे लइ शिकार खेलवा जता, वीरांगनाओ मंचपर बेसी उत्तम रीते बन्दूक मारती, तेओने मंचनुं सर्वोपरि स्थान आपवामां आवतुं. ज्यारे शिकारी लोको व्याघ्र आदिने घेरी मंच तरफ लइ आवता त्यारे वीरनारीओ तेनो बन्दूकनी गोळीओथी वध करती.

कोटाना इतिहासमा लख्युं छे के एक दिवस शिकार खेलती वखते फोजदार झाला हिम्मतसिंह शिकार खेलवाना मच नीचे पृथ्वीपर उभा हता, तेवामां एक व्याघ्र सैनिकोथी अने शिकारीओथी अत्यन्त क्रोधायमान थइ विक्राळ मुखने फाडतो त्यां आवी पहोंच्यो; परंतु राजा दुर्जनमाले ए वखते पण कोइने गोळी छोडवानी आज्ञा आपी नहि राजानी आज्ञा सिवाय ए व्याघ्र उपर गोळी छोडवानु काइए साहस न कर्युं. लाग जोइ विकट आकृतिवाळा वाघे महावेगथी हिम्मतसिंह उपर आक्रमण कर्युं; त्यारे तेओए ढालथी पोतानो रक्षा करी तुरतज वाघनो सामे ठेकडो मार्यो अने तलवारना तीक्ष्ण प्रहारथी तेना मस्तकना उभयखंड करी नांख्या. राव दुर्जनमाल तथा सामन्तसमाज झाला हिम्मतसिंहनु अलौम साहस जोइ तेओनो वीरताने वखाणवा लाग्या.

पूर्वे मराठाओनी साथेना युद्धमां प्रशंसनीय पराक्रम करनारा महाराव किशोरसिंह वि. सं. १७४२ मां अरकाटगढ नामना किल्लानो अधिकार मेळवती वखते मार्या गया; तेने बसनासिंह, रामसिंह तथा हरनाथसिंह नामे त्रण पुत्रो हता. खरी रीते कोटानो राजगादीना हकदार बीसनसिंह गणाय, परंतु ते पितानो आज्ञा प्रमाणे मरेठाओ साथेना युद्धमां उपस्थित नहि थवाने लीधे तेनो राजगादीनो हक नाबूद करवामां आव्यो हतो. किशोरसिंहना मरण पछी महाराव रामसिंह कोटानी गादीए बेठा बिसनसिंहने "आणता" नामनु स्थान मळ्युं हतुं. तेना पुत्र पृथीसिंह थया, पृथीसिंहना पुत्र अजीतसिंह अने अजीतसिंहना छत्रसाल, गुमानसिंह तथा राजसिंह नामे त्रण पुत्र थया.

अन्तिम अवस्थाने प्राप्त थएला अपुत्र महाराव दुर्जनसाले आणताना सामन्त विसनसिंहना पौत्र वृद्ध अजीतसिंह विद्यमान छता प्रपौत्र छत्रसालने गोद लीधा बाद स्वर्गवास कर्यो. जो के दुर्जनसाले छत्रसालने पोताना पुत्र तथा कोटानी राजगादीना भविष्यद् उत्तराधिकारी तरीके जाहेर कर्यो; सामन्तसमाजे पण ए वातमां सम्मति आपी; परंतु ज्यारे दुर्जनसाल वैकुंठवासी थया, त्यारे फोजदार झाला हिम्मतसिंहे पोतानी प्रबळ शक्तिथी ए व्यवस्थाने व्यर्थ करी दीधी;

ए वखते आणताना वृद्ध राजा अजीतसिंह जीवता हता. हिम्मतसिंह झालाए ए अजीतसिंहनो पक्ष लइ सर्व सामन्तो सन्मुख कह्युं के–" पुत्रने राजतिलक थाय अने पिता तावेदार प्रजानी पेठे तेनी आज्ञानुं पालन करे एवुं कदी बनी शकतुं नथी. ए वात स्वभावे विपरीत छे." कोनी हिम्मत छे के झाला हिम्मतसिंह सामुं जडबुं उठावी शके ? कोइथी कांइ थइ शक्युं नहि. हिम्मतसिंहे वृद्ध राजा अजीतसिंहने कोटाना सिंहासनपर सुशोभित कर्या. ए अजीतसिंहे मात्र अढीवर्ष राज्य कर्युं; एनी हयातीमांज झाला हिम्मतसिंहे परलोकप्रयाण कर्युं.

महाराव अजितसिंहनो स्वर्गवास थतां तेना कुमार छत्रसाल कोटानी गादीए बेठा अने फोजदारनुं पद झाला हिम्मतसिंहना भत्रीजा जालिमसिंहने मळ्युं. ए वखते तेओनी उम्मर एकवीश वर्षनी हती. अबदलीना आक्रमणथी मराठा वीरोने तेज रहित तथा उत्साहहीन बनी गएला जोइ आमेरना राजा कछवाहा माधवसिंह वि. सं. १८१७ मां पोतानी समस्त सेनाने सज्ज करी समस्त हाडाओने स्वाधीन करवा उद्यत थया अने उनियारा, लाखेरी तथा पालीघाट वगेरे स्थानोपर विजय मेळवता मेळवता कोटापर चढी आव्या. जातिअभिमानने जाळववा माटे हाडाओ पण हिम्मतथी आगळ वध्या. भटवाडा नामना स्थानमां व्यूह रचना थवा लागी. कच्छ-वाहानुं सैन्य म्होटी संख्यामां हतुं, परंतु तेओना अश्व थाकी गया हता. हाडाओ मात्र पांचसोज हता, परंतु ते तमाम घोडस्वार, तथा घोडाओ पण तेज होवाने लीधे विजयनी अभिलाषाथी कछवाहाना सैन्यमां कूदी पडया; कछवाहा लोकोए हाडाओना प्रथम आक्रमणने स्हेजे सहन करी पोताना व्यूहने वींखावा दीधो नहि. कछवाहा माधवसिंहे तुरतज रणक्षेत्रमां नवी सेना उभी करी. घोडेस्वारोनो अने पायदळनो भेटो थवा रक्तनी नदी चाली निकळी, युद्धे भयंकर स्वरूप धारण कर्युं; त्यारे झाला हिम्मतसिंहना पोष्य (गोद लीधेला) पुत्र वीरवर युवान जालिमसिंहे घोडाथी पैदलरूपे पोतानी सेना सहित असीम साहस अने वीरतापूर्वक शत्रुओ उपर आक्रमण कर्युं. जालि-मसिंहना जीवननी प्रसिद्धि थवानो आ पहेलो अवसर हतो.

आ समये महाराष्ट्रनेता मल्हारराव होल्करनो पडाव भटवाडाक्षेत्रनी समीपेज पडयो हतो; परंतु पाणीपतना युद्ध पछी ए एटलो बधो निर्बळ बनी गयो हतो के ते कोइ रीते बेमांथी एकने पण सहायता आपी शकयो नहि. ज्यारे कछवाहा माधवसिंहनी जीतना चिन्हो जणावा लाग्यां, त्यारे बुद्धिमान जालिमसिंहे घोडेस्वार थइ अत्यंत त्वराथी होल्करना पडावमां प्रवेश कर्यो अने होल्कर पासे प्रार्थना करी के " जो आप युद्ध करवा न इच्छता हो तो एकवार आपनी फोज

कइ आ शुभ योगे माधवसिंहना डेराने लूंटी लीओ." मल्हाररावे जालिमसिंहनी आ वातने प्रेमपूर्वक मान्य राखी. मरेठाओनुं आक्रमण थतांज कछवाहानुं सैन्य भय पामी रणभूमिथी भागी गयुं. आ वखते कछवाहानी पचरंगी पताका कोटानी सेनाने हाथ आवी गइ. कोटाना कविए झाला जालिमसिंहनी वीरताना घणां काव्यो बनावेलां छे; तेमां एक स्थळे लख्युं छे.

"जङ्ग भटवाडारो जीतनारो जालिम झाला
रङ्ग एक रङ्ग चढा, रङ्ग पँच रङ्गका."

आनो अर्थ ए छे के भटवाडाना युद्धमां जालिमसिंहना सौभाग्यनो उदय थयो; ए रणक्षेत्रमां एमणे एकज रंगथी रंगाएला रही पचरंग पताकाने दावी दीधी अर्थात् आमेरनी राजपताका रुधिरथी रंगाइ गइ.

जे समये नादिरशाह भारतनो विजय करवा आव्यो, ए समये दिल्हीना सिंहासनपर महम्मदशाह अने कोटाना सिंहासनपर महाराव दुर्जनसाल बेठा. झाला जालिमसिंहना जन्मथी आरभी क्रमानुसार पांच राजाओ कोटाना सिंहासनपर बेठा अने छठ्ठा राजाना राज्याभिषेक पर्यन्त जालिमसिंहजी जीवता हता. ए छ राजाओमांना एक राजा महाराव किशोरसिंहे लगभग पचाश वर्ष पर्यन्त राज्य कर्युं. जो के जालिमसिंह एक आंखहीन हता, तो पण भटवाडाना रणक्षेत्रमां तेओए सहुथी पहेला जेवी असीम नीतिज्ञता अने वीरता बतावी तेवीज तेनी राजनैतिक दृष्टि लांबा वखत सुधी एवीने एवी बनी रही.

थोडा वखत पछी महाराव छत्रसालजी स्वर्गवासी थतां गुमानसिंहजी कोटानी गादीए बेठा. त्यारबाद अमुक दिवस पछी जालिमसिंहे अधिक शक्ति अने प्रभुता देखाडवाथी ते महाराव गुमानसिंहनी आंखोमां खटकवा लाग्या. गुमानसिंह झाला जालिमसिंह उपर एटला बधा क्रोधायमान थया के तेणे तेओना प्रपितामह माधवसिंहने पोताना पूर्वज महाराव भीमसिंहे आपेली नानतानी जागीर छीनवी लीधी. ए समये कोटानो राजवंश बुन्दीना आधीन सामन्तोए शासन कराता

---

१ जे वर्षमां नादिरशाहे भारतपर आक्रमण कर्युं, एज वर्षमां जालिमसिंहनो जन्म थयो अने बबदावलीना आक्रमण समये तेओए राजनैतिक रंगभूमिमां प्रथम प्रवेश कर्यो.

२ नाननानो प्रदेश चम्बल नदीने किनारे छे अने ए हालपण झाला कुळना ताबामां छे.

देशरुपे गणातो हतो. महाराज गुमानसिंहे फोजदारनी पदवी तथा नानतानी जागीर जालिमसिंहना मामा वाकडोत (वालावत) जातिना भूपतसिंहने आपी दीधी.

झाला जालिमसिंहे ए अपमान स्थान कोटाना राज्यने छोडी अन्य स्थळे जवानी इच्छा करी, भटवाडानी लडाइथी आमेरनुं राज्यद्वार तेने माटे प्रथमथीज बंध हतुं; मारवाड राज्यने प्रथमथीज तेओए निरुपयोगी मानेलुं हतुं. आ वखते तेओना जातिवन्धु मेवाडना महाराणानी सभामां मुख्य सरदारनुं मान भोगवता हता. मेवाडना सामन्तो उभय दळमां विभक्त थया, तेमांनुं एक दल राणा अरिसिंहना पक्षमां मळ्युं अने वीजुं दल कृत्रिम राणाना पक्षमां मळी राणा अरिसिंहने सिंहासनपर बेसवामां अवरोध करतुं हतुं. मेवाडना प्रथम श्रेणिना सोळ सामन्तोमांना देलवाडाना झाला सरदारे राणा अरिसिंहनो पक्ष लइ तन मेवाडना सिंहासनपर बेसाडी दीधा. झाला सामन्तोनी सहायताथी पिताना सिंहासनने पामेला राणा अरिसिंह तेओनी प्रवळ शक्ति तथा प्रताप विरुद्ध कदी पण थया नहि. झाला सामन्तोए राणाना शरीरनी रक्षा माटे वेतनभोगी विजातीय सैनिकोने नियुक्त कर्या. झाला सरदार महाराणानो मत लीधा सिवाय पोतानीज इच्छा प्रमाणे शक्तिसंपन्न मनुष्योने जागिर आपता हता. राणा अरिसिंहे पोतानी खास जमीन तथा विद्वेषी मनुष्योना तावामां रहेली जागीरो छीनवी राज्यनी साथे मेळवी दीधी. जेथी राज्यनी आवक अत्यन्त वृद्धि पामी. झाला सामन्तोनी इच्छामां अवरोध करवा अथवातो तेओने आपत्तिरुप थवा कोइ हाम भीडी शक्या नहि. आ अरसामां कोटामां फोजदार पदथी अलग कराएला झाला जालिमसिंह पोताना भाग्यनी परीक्षा करवा माटे मेवाडमां आव्या. महाराणा अरिसिंहने जालिमसिंहनी वीरता अने नीतिनिपुणता संबंधी प्रथमथीज सूचना मळी गइ हतो. तेथी तेओए आवतांवेंतज तेओने मानसहित पोता पासे राख्या. थोडाज वखतमां उत्तमोत्तम सद्‌गुणोथी झाला जालिमसिंह महाराणाना प्रीतिपात्र अने विश्वासभाजन थइ पड्या. महाराणा अरिसिंह झाला सामन्तोमां रमकडां रुप वनी रह्या हता, परंतु कोइ प्रकारे तेओना हाथथी पोतानो उद्धार न थवाथी मनमांनेमनमां विषग वेदनाने पण अनुभवता हता, तेवामां जालिमसिंहजीनुं आगमन थयुं. मणाराणाए तेओने तमाम रीते योग्य जाणी पोताना उद्धारनो भार सोंप्यो. जालिमसिंहे तुरतज चातुर्य, साहस, नीतिनिपुणता अने वीरताथी सामन्तोपर आक्रमण करी महाराणा अरिसिंहने आपत्तिना मुखथी वाहेर काढ्या. ए युद्धमां अन्य झाला सामन्तोए पोतानां प्राण तजी दीधां. महाराणाए जालिमसिंहनी सहायताथी सम्पूर्ण स्वाधीनता मेळवी पोतानी प्रभुताथी सामन्तोना अन्यायनो उच्छेद कर्यो, अने सहायक जालिमसिंहने

"राजराणा" नी उपाधि तथा मेवाडनी दक्षिण सीमावाळो चित्रखाडिया (जनेरखेडा) नामनो प्रदेश पुरस्कारमां आप्यो. ए समये झाला जालिमसिंह मेवाडना द्वितीयश्रेणीना सामन्त थया, परंतु तेओना वंशधर के जे सिंहासनना अभिलाषी हता. तेना पक्षमां मळेला केटलाएक सामन्तो महाराणाना वध माटे यत्न करवा लाग्या. पुनः विद्वेषनो अग्नि प्रज्वलित थयो. विद्रोही सामन्तोए मराठाओनी सहायताथी कृत्रिम राणाने मेवाडना सिंहासनपर बेसाडवा उद्योग आदर्यो. झाला जालिमसिंहनी सम्मतिथी राणा अरिसिंहे एक म्होटुं सैन्य एकत्र करी विद्रोही सामन्तो तथा मराठाओनी साथे युद्ध कर्युं.+ जे समये जय लाभनी आशा उद्भवी एज समये दुर्भाग्यने लीधे शत्रुओनी जीत थतां झाला जालिमसिंह घायल अवस्थाए मरेठाओने हाथ आवी गया. सुविख्यात महाराष्ट्र सेनापति अंबाजी इंगलियाना पिता त्र्यंबकरावे तेओने केद करी लीधा. छेवटे ए त्र्यंबकराव साथे गाढ मित्रता बांधी जालिमसिंह मुक्त थया अने ज्यारे पूरेपूरी आरोग्यता प्राप्त थइ, त्यारे तेओए निश्चय कर्यो के लुप्तप्रताप राणाने तावे रही भाग्यना उदयनी इच्छा राखवी ए व्यर्थ छे. एटलाज माटे तेओ वधारे वखत उदयपुरमां नहि रहेतां पोताना भविष्यद् भाग्यना सहचर पंडित लालाजी वल्लालनी साथे फरी कोटामां आव्या. बुकायनीनी लडाइमां घणीखरो महाराष्ट्र सेनाना मार्या जवाथी तेनो अधिपति होल्कर मल्हारराव अत्यन्त साहसहीन थइ गयो हतो, तो पण विजयनी अभिलाषाथी तेणे कोटाने तावे करवा माटे प्रयाण कर्युं. आपत्तिने उतावळथी सन्मुख आवती जोइ महाराव गुमानसिंह पोताना पक्षने निर्बळ धारी होल्कर साथे सन्धि करवानो निश्चय कर्यो अने एटला माटे फोजदार भूपतसिंहने मल्हाररावना डेरामां मोकल्या, परंतु ए कार्यसिद्धि करी शक्या नहि.

राजनैतिक घनघोर वादळवृन्दथी छवाएला कोटा राज्यना भाग्यरूपी आकाशने निर्मळ बनाववा माटे झाला जालिमसिंह जो के कोटामां आवी पहोंच्या हता, परंतु एमना प्रत्ये हजी महाराव गुमानसिंहनो गुस्सो जरा पण ओछो थयो नहोतो. तेओने अपराधनी क्षमा आपवामां न आवी, राजसभामां जवा आववा माटे पण मंजुरी न मळी. अपराधनी क्षमा आपवी तो एक बाजु रही, परंतु महाराव गुमानसिंहे तेओने कबजे करी लीधा.

मराठाओए कोटानी दक्षिण सीमाए आवी बुकायनी मडशेना किल्लाने घेरी लीधो. हाडा

+ आ युद्धनी वात राणाना (उदयपुरना) इतिहासमां अमोए स्पष्टताथी लखी छे.

सामन्त माधवसिंह चारसो सैनिको सहित शत्रुओ सामे थया अने बहुज बहादुरीथी लड्या; पण विजयने प्राप्त करी शक्या नहि. ए वखते मरेठाओए बुकायनीने स्वाधीन करी सुकेत नामना किल्लाने घेर्यो. महाराव गुमानसिंह माथे आवी महान् विपत्ति आवी पडतां झाला जालिमसिंह वगर बोलाव्ये तेओना पासे जइ पहोंच्या अने धीरे धीरे तेओए पोतानी तमाम हकीकतथी महाराव गुमानसिंहने वाकेफ कर्या. हवे गुमानसिंहने बराबर खात्री थइ के-" एकला जालिमसिंहनांज भुजबळथी तथा राजनीतिथी भटवाडानी लडाइमां हाडाओनी सेनाए जीत मेळवी हती. एनीज राजनीतिद्वाराए आमेरनरेशनी स्वाधीनतारुपी सांकळथी कोटानुं राज्य लांबा वखतने माटे मुक्त थवा पाम्युं हतुं, अने जे होल्कर मल्हारराव आजे कोटाने स्वाधीन करवा माटे वीररुपे आगळ वधी रह्यो छे, एज होल्करनी सहायताथी जालिमसिंह राज्यकोटानुं रक्षण करी चूक्या छे." तुरतज जालिमसिंहने तेना तमाम अपराधनी क्षमा आपी होल्कर साथे सन्धि स्थापवानुं काम सोंप्युं. जालिमसिंहे महाराष्ट्रीओना डेरामां दाखल थइ अने मल्हाररावनी मुलाकात लीधी, अने सन्धि सबन्धी वातचीत करतां संतोषकारक फळनी प्राप्ति करी महाराव गुमानसिंह तरफथी छ लाख रुपिआ मळतां कोटाने छोडी चाल्या जवानुं होल्कर मल्हाररावे वचन आप्युं. झाला जालिमसिंहद्वारा ए कोटाना रक्षण सबन्धी कार्यने सिद्ध थएलुं जोइ फरी तेओनुं फोजदारनुं पद आप्युं. तेनी साथे छीनवी लीधेली जागिर पण प्रसन्नता पूर्वक तेओए पाछी आपी. सन्धि स्थापनमां असमर्थ बनेला भूपतसिंहने उक्त पदथी तथा जागीरथी अलग करवामां आव्या. जे समये जालिमसिंहजी फरी फोजदारना पदपर नियत थया, त्यारबाद अमुक वखत पछी रोगे ग्रसाएला महाराव गुमानसिंहे जीवननी आशा छोडी पोताना दश वर्षना कुमार उमेदसिंहने सर्व सामन्तो सन्मुख कोटानुं संरक्षण करनार झाला जालिमसिंहनी गोदमां बेसाडी दीधा अने बधानी रुबरुमां ए जालिमसिंहनी उमेदसिंहना प्रतिनिधि तरीके योजना करी.

वि. सं. १८२७ मां महाराव गुमानसिंहनुं मृत्यु थतां उम्मेदसिंह कोटानी गादीए बेठा. राजपूत जातिमां निरंतरने माटे एवो नियम छे के ज्यारे कोइ नवीन राजा राजसिंहासनपर बेसे, त्यारे तेने तुरतज दिग्विजय अर्थे प्रयाण करवुं पडे छे अने ते युद्धभूमिमां विजय मेळवी अभिषेकनी क्रियाने पूर्ण करे छे. ए प्राचीन नियमने अनुसरी महाराव उम्मेदसिंहे पोतानी सेना सहित नरवर राजवंशीय केलवाडाना स्वामी साथे युद्ध करी उक्त प्रदेशने कोटा राज्यमां मेळवी दीधो. ए काम झाला जालिमसिंहे उम्मेदसिंहना प्रतिनिधि तरीके बहुज वखाणवा लायक कर्युं. त्यारबाद

अमुक समय पछी तेओ विपत्तिमां आवी पड्या. कूट राजनीतिने जाणनारा जालिमसिंह एक उंचा दरज्जाना हता अने एथीज तेओनी प्रबळ शक्तिए यावज्जीवन यथार्थ परिचय आप्यो. तेओ स्वर्गस्थ महाराव गुमानसिंहना विश्वासु मित्र तरीके मनाता हता, परन्तु कोटाना सामन्तोनो प्रेम तेओना उपर बिलकुल न हतो. राजकीय माणसनी दृष्टिमां पण तेओ खटकता हता.

जालिमसिंहनो खरेखरो होद्दो फोजदार अर्थात् सेनापतिनो हतो; जे किल्लामां महाराव उम्मेदसिंह रहेता ए किल्लानुं अध्यक्षपणुं तेओ भोगवता हता. राज्यना शासनविभागमां हस्तक्षेप करवो ए तेना हुद्दाथी विपरीत हतुं. दिवानी कामकाजमां दाखल करवानो तेओने बिलकुल हक न हतो. महाराज गुमानसिंहना वखतमां एक नीतिनिपुण अखेराज नामे दीवान हता. तेणे कोटाना राज्यनी अनेक प्रकार उन्नति करी हती. महाराव गुमानसिंहना मरण पछी तुरतमां ए अखेराजने अन्यायथी मारी नांखवामां आव्या. त्यारबाद झाला जालिमसिंह सेनापतिना अधिकार उपरांत शासनविभाग (दिवानी) नो अधिकार प्राप्त करवा उद्यत थया. ए वखते तेओना विरोधीओ जो के बहु थोडा हता, तोपण ए विषम विपत्तिओने दूर कर्या विना पोतानी अभिलाषाने पूर्ण करी शक्या नहि.

महाराव गुमानसिंहना मरण पछी झालाजालिमसिंह राजप्रतिनिधि रूपे प्रसिद्ध थया त्यारे समर तथा शासन विभागना समग्र अधिकारने स्वाधीन करवा उद्यत थया त्यारे विरोधी सामन्तो बोली उठ्या के " स्वर्गस्थ महाराव गुमानसिंहे जालिमसिंहने आटला अधिकार आप्या नथी. " ए सामन्तोमां महाराज स्वरूपसिंह तथा वाङ्कडोत (वालावत) भूपतसिंह पण हता. ए उपरांत महाराव उम्मेदसिंहना दूधभाइ यशकर्ण पण जालिमसिंहना सामा पक्षमां हता. परंतु ए यशकर्णद्वारा एज चतुर जालिमसिंहे महाराज स्वरूपसिंहने मारी नंखाव्या. भूपतसिंह प्राण लइ भाग्यो. न्यायनिपुण झाला जालिमसिंहे कांटाथीज कांटाने उखेडी काढ्यो. ए जोइ राज्यनां तमाम माणसो डरने लीधे दबाइ गयां. महाराज स्वरूपसिंह, धाभाइ पोकर्ण अने वाङ्कडोतना सामन्त ए त्रणे जालिमसिंहना प्रधान शत्रु हता. जालिमसिंहे प्रथमतो यशकर्णने हस्तगत करी एना मारफतज पोताना उद्देशने पूर्ण कर्यो अने त्यारबाद तेने पण देशनिकाल कर्यो. ए जोइ अन्य शत्रुसमुदाय पण अनिष्टनी आशंकाथी खटपट करतां अटकी गयो. अपमान पामेला यशकर्णे जयपुरमां जइ प्राणत्याग कर्यो कोटाना केटलाएक सामन्तो पोतपोतानी जागिर छोडी भागी गया अने जयपुर तथा जोधपुरना राजाओनो आश्रय लइ झाला जालिमसिंहने दंड देवा

तत्पर थया, परंतु ए अरसामां मराठाओ तमाम रजवाडामां अनेक प्रकारना उपद्रव मचावी रह्या, जेथी कोइए जालिमसिंह सामे जवा हाम भीडी नहि. कार्यकुशळ जालिमसिंहे जयपुर तथा जोधपुरना राजाओना कोटाना विरोधी सामन्तोने आश्रय न आपवा सूचव्युं. निराधार सामन्तो निराश वनी विदेशमां रखडता रडवता प्राणत्याग करवा लाग्या. केटलाएक कोटामां आवी पोतानी जागीरो पाछी आपवा माटे जालिमसिंहने कहेवा लाग्या. जालिमसिंहे दया लावी ए लोकोने आजीविका अर्थे थोडी थोडी जमीन आपी अने वाकीनी जागीरो खालसा करी. कोटानो उद्धत सामन्तसमाज एकदम जालिमसिंहने वश थयो नहि.

जालिमसिंह विरूद्ध वीजीवार षट्यन्त्रजालनो विस्तार थयो. ए पहेला करतां अत्यन्त प्रबल अने दुर्भेद्य हतो. एनुं नेतापद आंथून[1] देशना सामन्त देवसिंहे ग्रहण कर्युं; तेणे घणा रुपिया खरची पोताना किल्लाने युद्धनी सामग्रीथी सज्ज कर्यो अने समस्त विद्रोही सामन्तोने ए किल्लामां भेळा करी झाला जालिमसिंह साथे शत्रुता वांधी. आ अरसामा वादशाहीप्रताप हीनत्वने प्राप्त थयो हतो, मराठाओ चारे वाजु लूंटफाट चलावता हता, तेओनी साथे एक मौसेज नामनो पठाण वीर मळेलो हतो. झाला जालिमसिंहे कोटानी सेनाथी विद्रोही सामन्तोने जीतवानुं अशक्य धारी ए कार्यमां पठाणवीर मौसेजने प्रेर्यो. मौसेजे लक्ष्मीनी लालसाथी तुरतज आथूनपर घेरो घाल्यो. किल्लानी अंदर रहेला कोटानां सामन्तोए वहार निकळी युद्ध कर्युं; परंतु तेओ जय मेळवी शक्या नहि. मौसेजे आथूनना किल्लापर घणां लांवा वखत सुधी घेरो राख्या. किल्लानी अंदर खावानी चीजो खलास थइ गइ त्यारे तमाम सामन्तो प्राण वचाववानी चेष्टा करवा लाग्या. छेवटे जालिमसिंहनी सम्मतिथी मौसेजे घेरेला सामन्तोने सुखपूर्वक किल्लाथी वाहेर निकळवा दीधा. निराश वनेला ए विद्रोहीओ अन्य राज्यने आश्रये जइ रह्या; तेओना मुख्य नेताए विदेशमां वसी दुःखथी प्राणने तजी दीधा. महा निपुण झाला जालिमसिंहे आ रीते वीजा षड्यन्त्रने पण छिन्नभिन्न करी नांख्यो. त्यारवाद केटलाएक वर्षो पछी आथूनवाळा देवसिंहना पुत्रोए विदेशथी कोटामां आवी जालिमसिंह पासे पोतानुं निरपराधीपणुं प्रगट कर्युं अने आश्रय माग्यो. न्याय निपुण जालिमसिंहे हृदयमां दया लावी तेओने पंदर हजार रुपियानी आमदानीवाळो "नामोलिया" नामनो प्रदेश आप्यो अने सामान्य तथा हल्का दरज्जाना जे सामन्तो विद्रोही थया हता, तेओने पण क्षमापूर्वक राज्यमां रहेवानी परवानगी आपी; परंतु कार्य-

[1] आथून प्रदेशनी आमदानी वार्षिक साठ हजार रुपियानी हती.

चतुर जालिमसिंहे ए लोकोनी शक्ति तथा भूमिने एटली बधी घटाडी दीधी के तेओ फरीने कोइ प्रकारनुं अनिष्ट करवा उद्यत थइ शके नहि.

वि. सं. १८५६ मां कोटाना तमाम सामन्तो के जेओनी जागीरो खालसा थएली हती तेओए सामन्त बहादुरसिंहना अध्यक्षपणा नीचे एकत्र थइ झाला जालिमसिंह तथा तेना मित्र लालाजीने मारवानी युक्ति रची; आ कार्य अत्यन्त गुप्त रीते करवामां आव्युं हतुं; तमाम सामन्तो कार्यसिद्धिने अर्थे दरबारमां दाखल थया; एवामां तेओनी प्रपंचजाळ जालिमसिंहना जाणवामां आवी गइ. जालिमसिंहे पोतानी रक्षा माटे एज क्षणे घोडेस्वारनी टुकडी बोलावी लीधी. तेओना उपर सामन्तोए आक्रमण कर्युं के तुरतज घोडेस्वारोए तलवारो काढी. सामन्तो भयभीत बनी भाग्या. मोहसेननो मालिक बहादुरसिंह चंबल नदीने किनारे रहेला हाडा जातिना कुलदेव केशवरायजीना मन्दिरमां जइ भरायो. तेणे जाण्युं के प्राचीन रीतिने अनुसरी केशवरायजीना आश्रयमां आवेला मने कोइ केद करनार नथी. परंतु प्रतापी झाला जालिमे मन्दिरनी पुरातन प्रथापर पग मूकी बहादुरसिंहने केद कराव्यो अने एज वखते मारी नंखाव्यो. भागेला सामन्तोमांथी पण ए वखते केटलाएक पकडाया हता.

केटलाएकनुं कहेवुं एम छे के, जालिमसिंहे मोहसेनना सामन्त बहादुरसिंहनो वध केवळ पोताना स्वार्थमतेज कर्यो न हतो. एमां महाराव उम्मेदसिंहनो स्वार्थ पण समाएलो हतो. कारणके बहादुरसिंहनी इच्छा राव उम्मेदसिंहने मारी तेना न्हाना भाइने कोटानी राजगादी आपवानी हती. ए समये कोटाना राजपरिवारमां महाराव उम्मेदसिंहना काका राजसिंह अने गोवर्धनसिंह तथा गोपालसिंह नामे बे भाइ जीवता हता. ज्यारे आथूनना सामन्त देवसिंहे विद्रोही बनी जालिमसिंहने मारवानो उद्योग कर्यो हतो त्यारे गोवर्धनसिंह तथा गोपालसिंह पण राज्यसिंहासनना अभिलाषी बनी एमा सामेल थया हता. झाल्या जालिमसिंहे ए बन्ने भाइने केद करी लीधा हता; तेमां म्होटा गोवर्धनसिंह दश वर्ष केदमा रही मरण पाम्या अने गोपालसिंहे पण घणा दिवस केद भोगवी पछीथी प्रयाण कर्युं. कोटानरेशना काका राजसिंह कोइ खटपटमां भाग लेता नहि, जेथी तेओना तरफ जालिमसिंह नजर पण नांखता नहि.

कर्नल टॉडसाहेब पण लखे छे के जालिमसिंहनी शक्ति हठाववा माटे तेमज तेना जीवनने नष्ट करवा माटे विरोधी जनोए अढार वखत उद्योग कर्यो. परंतु ते तमाममांथी बुद्धिबळने लीधे जालिमसिंह बची गया. एक वखते एवो बनाव बन्यो के न्हाना राजकुमारनी माताए जालिमसिंहने राज-

महेलमां बोलाव्या. जालिमसिंह राजमाताना बोलाववाथी तेना महेलना समीपवर्ती गृहमां जइ पहोंच्या. ए समये घणी राजपूत वीरांगनाओए नागी तलवारो साथे अने शस्त्रोअस्त्रोथी सज्ज थइ तुरतज आक्रमण कर्युं अने तुरतज जालिमसिंहने बांधी केद करी लीधा. राजपूत रमणीओनां वीरचरित्रथी जालिमसिंह बराबर वाकेफगार हता; जेथी तेओए जीवननी आशा छोडी दीधी. राजपूताणीओ तेओनां मुख्य मुख्य जीवनचरित्र सबन्धी प्रश्नो करवा लागी. ए स्त्रीवर्गनो एवो इरादो हतो के प्रश्नो उत्तर आपती वखते अचानक एने मारी नांखवुं. तेवामां भाग्ययोगे पटराणीनी प्रधान दासी महाकाळीनी मूर्ति धारण करी त्यां आवी; तेणीए जालिमसिंहने अनेक तिरस्कार अने कटुवचनोथी धिक्कारी बळपूर्वक बधी राजपूताणीओने क्रमानुसार त्यांथी दूर करी. आ रीते उक्त दासीनां चातुर्यथीज जालिमसिंह जीवता रह्या.

इतिहासवेत्ता महात्मा टॉडसाहेब लखे छे के—झाला जालिमसिंह विरुद्ध क्रमानुसार जेटली खटपट रचाइ, तेमां शत्रुनो एक्के मनोरथ सफळ थयो नहि. जो ए वखते जालिमसिंहनो जगोए बीजो कोइ उद्धत आदमी होत तो जरुर ते विद्रोहीओने वधारे हेरान कर्या सिवाय रहेत नहि. परंतु प्रतापी जालिमना मनमां एवुं कृत्य करवानो कदी पण इच्छा न थइ. तेओ हम्मेशां एक सुरक्षित विशाल गृहमां शयन करता हता, तेओना रक्षको अत्यंत चतुर हता. ए रक्षकोने जालिमसिंह तरफथी पुरता पगार उपरांत पोशाक पण आपवामां आवता. तमाम विभागोपर तीक्ष्ण दृष्टिथी जोनारा सावधान जालिमसिंह कोइनो पूरो विश्वास करता नहि. न्यायनिपुणता अने विलक्षणताथी तेओ राज्यना दरेक विभागोपर द्रष्टि राखता हता, एथी चारे तरफ अत्याचार, उपद्रव, राजनैतिक गोटाळो, खटपट तथा म्होटां म्होटां युद्धो थयां छतां अर्ध शतक पर्यन्त पोताना प्रबल प्रतापथी अने अतुल शक्तिथी ए महानुभावे राजकाज कर्युं. खरी रीते महाराज राणा जालिमसिंहज कोटाना धणी हता. महाराव उमेदसिंह तेओना हाथमां रमकडां रूप बनी राजसिंहासन पर बेठा हता. जालिमसिंहे पोतानी राजनैतिक उंची अभिलाषा पूर्ण करवा माटे कोटा राज्यनी धन, संपत्ति अने सेनानी शान्ति ए सर्वने नष्ट करी नांख्यां.

वि. सं. १८२१ मां ज्यारे मेवाडना महाराणा साथे पोतानी वातचीत थइ त्यारथी आरंभी वि. सं. १८५६ सूधीमां कोटामां जेवो अधिकार जमाव्यो हतो तेवोज अधिकार मेवाडपर जमाववा माटे राजराणा जालिमसिंह अनेक प्रकारनी चेष्टा करी रह्या हता. तेओए कोटा राज्यना खेडू वर्ग पर जे कर नांख्या हता, ते वि. सं. १८४० मां वृद्धि पामेला अत्याचार तथा उपद्रवने

लीधे निर्धन बनेला कृषिवलो आपवा असमर्थ थया. जालिमसिंहना अनुचरो कर वसूल करवा जती वखते कृषिवलोने निर्धन जोइ तेओनां हळ तथा बळद वगेरे करने बदले उपाडी जवा लाग्या. तमाम कृषिवलो जीवननी आशा छोडी बेठा, केटलाएक भूखे मरवा लाग्या अने केटलाएक भागी गया; परंतु ए अरसामां चारे तरफथी रजवाडानी अंदर आपत्तिनो समुद्र उलटेलो होवाथी तेओने कोइए आधार न आप्यो. जालिमसिंहे तमाम खेडुतोनी बापुकी जमीन तथा खेतीनां समस्त साधन छीनवी लीधां हतां. खेडु लोकोए बीजो एके उपाय न सूजतां झाला जालिमसिंहनुं दासत्व स्वीकार्युं अने तेओना तरफथी अमुक पगार लइ खेड करवा मांडी. आ रीते जालिमसिंहे महाराव—उमेदसिंहना तमाम क्षेत्रोनुं ऐश्वर्य स्वाधीन करी थोडो वखत नहि खेडाएला क्षेत्रोमां फरी कृषिकार्य शरु कराव्युं अने पोते कृषिवलपतिना पदपर अधिष्ठित थया.

जो के दीर्घदर्शी जालिमसिंहे मेवाडपर पोतानी सत्ता प्रसारवा माटे अनेक चेष्टाओ करी हती अने एज उद्देशथी तेणे कोटानी उपर कह्या प्रमाणे दशा करी दीधी; परंतु अन्ते एक भयंकर घटनाए तेओनी उच्च अभिलाषामां विघ्न नांख्युं. महाराष्ट्रनेता इंगलिया वगनी साथे जालिमसिंहनी गाढ मित्रता हती. ए इंगलियाना वंशज बालारावने महाराणाए केद करी उदयपुरना कारागारमां राख्या हता; एनो उद्धार करवा माटे जालिमसिंह त्यां गया, ए वखते महाराणा तेओना उपर अत्यंत गुस्से थया. आथी महाराणाने हस्तगत करी मेवाडपर आधिपत्य जमाववानुं आशावृक्ष झाला जालिमसिंहना हृदयबागमांथी एकदम मूळ सहित उखडी गयुं. अने त्यारेज तेओने खबर पडी के स्वार्थनी सिद्धि माटे पोते कोटानरेशनुं केटलुं अहित कर्युं छे. ए अहितनुं निवारण करवा माटे तेओ सावधानपणे तुरतज नवीन अनुष्ठान करवामां प्रवृत्त थया.

वि. सं. १८५६ मां मोसेन (मोहसेन) ना सामन्त बहादुरसिंहद्वाराए खटपट जाग्या पहेलां जालिमसिंहे किल्लाना महेलमां निवास कर्यो हतो. परंतु सं. १८६० मां बालारावने पहतो मूकी मेवाडथी पाछा कोटे आवतां ए महेलमां नहि रहेतां अन्य स्थळे रहेवानी इच्छा करी. ए समये ब्रीटीश सेनाए एकठी थएली मराठाओनी फोजना विक्रम तथा पराक्रमनी जडमां एक जबरो आघात कर्यो अने मरेठाओनी सत्ता नीचे रहेला केटलाएक देशोने छीनवी लीधा; त्यारे मरेठाओ तुरतज अनेक विभागे वहेंचाइ भारत वर्षना जगाजगा प्रान्तोमां पहोंची लूंटमार अने अत्याचार करवा लाग्या. झाला जालिमसिंह पोताना तीव्र बुद्धिबळथी समजी गया के आ वखते राजधानीना महेलोमां निवास न करतां जे स्थळ पर मरेठाओना आक्रमणनी संभावना छे, त्यांज

अथवा तेनी समीपे रहेवुं उचित छे. आम धारी तेओए कोटा राज्यमां पोताना अनुचरोने साथे लइ फरवा मांड्युं; देशनी दुर्दशा बराबर तेओना जोवामां आवी. उच्च पदनी अभिलाषाथी पोतेज कोटानी पायमाली करी हती. राज्यपर आपत्ति आवी पडतां धनहीन प्रजा शी रीते सहायता आपी शकशे ? ए विचार अगत्यनो थइ पड्यो. प्रजामां फेलाएला राजनैतिक रोगनुं निदान करवानी कांइ जरुर नहती. कारण के ए रोगना कारण रूप पोतेज हता. हवेतो झटपट अनेक प्रकारनां औषध द्वाराएज इलाज करवानुं बाकी हतुं; माटे प्रथमतो एज कार्यमां प्रवृत्त थवानो निश्चय करी झाला जालमसिंह गागरोलना अभेद्य किल्लानी समीपे एक स्थायी डेरो स्थापी त्यांज रहेवा लाग्या. तेओने आ रीते सामान्य भावथी रहेता जोइ बीजा सामन्तो तथा राजपुरुषो पण ए रीते रहेवा लाग्या अने एज डेराओमां तमाम राजकाज थवा लाग्यां.

कार्यकुशळ जालिमसिंहे जे स्थळे डेरो नांख्यो हतो ए स्थान तेओना राजनैतिक उद्देशनी साधना अर्थे सम्पूर्ण उपयोगी हतुं. दक्षिण तरफथी कोटाना राज्यमां दाखल थवाना जे बे मुख्य मार्ग छे, तेनी वच्चेज जालिमनां डेरानी जमावट थइ हती. कोटा ताबाना जे देशोमां कठिन भील जाति निवास करे छे, ए स्थानो पण एनी समीपेज हतां. तेनी साथे शेरगढ तथा गागरोळ नामना बे मजबूत किल्लाओ नजीक होवाने लीधे स्वकीय रक्षानुं पण विशेष सुगमता भरेलुं थइ पड्युं. बीरवर जालिमसिंहे पोतानी समग्र धनसंपत्ति तथा संग्रामनो सामग्री गढ गागरोळमां राखी अने संक्षेपमां सामर्थ्य प्रमाणे ए उभय किल्लाओने अभेद्य बनाववामां कांइ कसर राखी नहि. त्यारबाद तुरतमांज एक नवीन लश्कर भेळुं करी तेने अंग्रेजी रीति प्रमाणे युद्धनी शिक्षा आपवा मांडी. ए लश्कर जे प्रान्तमां शत्रुओ आवता, त्यां सत्त्वर पहोंची जतुं. राजधानीना राजमहेलोमां रहेवाथी जे काम बहु विलंबे थइ शकतां, ते आहो सरलताथी थवा लाग्यां.

झाला जालिमसिंहे अत्यार सूधी राजनैतिक षड् यन्त्र (खटपट) रूपी सागरना प्रबळ तरंगोमां तणाइ पोताना जीवनने राज्यभूमिनी अवस्था जोवामां योज्युं न हतुं; हवे ते बाबत तपास करवानो तेओने उत्तम अवसर मळ्यो; तेओए दरेक गामना पटेलोने बोलावी प्रत्येक पटेलना कबजामां केटली जमीन छे ? केटला कृषिवलो कर आदि आपे छे ? केवी रीतना उपायथी कर लेवामां आवे छे ? कृषिवलोनी स्थिति केवी छे ? आमदानी केटली छे ? तथा राज्यनी सरहद क्यां सुधी छे ? वगेरे हकीकतथी वाकेफ थइ समस्त राज्यमां केटला खे केटली खेती छे ? अने केटलो राजकर आववा संभव छे ए बधी बाबतनो एक खाडो तैयार करी राज्यना दरेक गामोमां

पोते फरवा निकळ्या. ए वखते तेओए दरेक गामनी भूमिनो माप करावी तेमां कइ कइ खेती नदीथी थाय छे ? कइ कइ खेती वर्षा उपर आधार राखे छे ? कइ कइ भूमिमां खेती सरळतार्थी थाय छे ? कइ कइ भूमिमां खेती कठिनताथी थाय छे ? कइ कइ भूमि पहाडी छे ? अने कइ कइ भूमिमा पशु आदिने चराववामां आवे छे ? विगेरे विचार करी स्वतंत्र रूपे भूमिना विभाग पाड्या, वीतेला केटलाएक वर्षोनो हिसाब तपासी भूमिनी एकंदर केटली आवक थती हती तेना अनुमाने आंकडाओ मूकी एक एक विभागनो अलग अलग हिसाब कर्यो, अने प्राचीन रीति प्रमाणे प्रजा पासेथी करमां धान्य आदि उत्पन्न अनाज नहि लेतां रोकडा रुपिआ (बोघोटी) लेवानो ठराव कर्यो.

न्यायनिपुण जालिमसिंहे आ रीते भूमिनो कर नियत करी छेवटे ए करने उघरावनारा पटेल लोकोने तेनी महेनतना बदलामां कांइ लाभ आपवानो विचार करी प्रत्येक पटेलना ताबानी जमीन पर दर वीघे दोढ आना लेखे कर लेवानो निश्चय कर्यो; के जे सामान्य प्रजाना कर करतां घणोज ओछो हतो. आथी आनंद पामेला पटेलो पोतपोताना पद पर प्रतिष्ठित थवा माटे उतावळा थया अने जालिमसिंहने नजराणा तरीके कोइए दश अने कोइए वीश ए रीते पचास हजार रुपिआ आप्या. झाला जालिमसिंहजीए एज युक्तिथी नजराणामां दश लाख रुपिया मेळव्या अने पोताना शून्य राज्यभंडारमां भरी दीधा. आ रीतनी नवीन व्यवस्थाथी राज्यने घणोज लाभ थयो अने खेडूतो पण खुशी थया. संवत १८६७ सुधी ए व्यवस्था कायम रही.

जालिमसिंहजीए पटेलोने पोताना पक्षमां लइ लगभग चार हजार सांती घरखेडनां कर्यां अने एनी आमदानीमांथी बीजा बळद तथा खेडू विगेरेनुं खर्च काढता दर वर्षे त्रीश लाख रुपिया जेटलो लाभ मेळववा मांड्यो. दीर्घदर्शी जालिम खेती उपरांत वेपार पण करता; सोंघे भावे जत्थाबंध अनाज खरीदी मोंघे भावे वेची नांखतां वि. स. १८६० मां दुष्काळ तथा युद्ध आदि उपद्रवने लीधे ज्यारे राजपूतानो घणखरो भाग उजड बनी गयो हतो, त्यारे झाला जालिमसिंहजीए आशरे एक करोड रुपिआना धान्यनो विक्रय कर्यो हतो.

कोटानुं राज्य जो के हिंदुस्थानना मध्य भागमां रहेलुं छे, तेमज तेनी आजुबाजु घणा राजाओना तथा लुंटाराओनां लस्कर फरतां हतां; परंतु ज्यांसुधी जालिमसिंह कोटाना फोजदार बनेला त्यां सुधी कोइ पण कोटाना द्वारमां प्रवेश करी शक्या नहि.

वि. स. १८४० मां जालिमसिंहना पोताना आशरे त्रणसो चारसो हळ हतां, परंतु

केटलाएक वर्षो पछी तेनी संख्या आठसोनी थइ हती. ज्यारे जालिमसिंहे पटेलोनी अनुकूळता प्रमाणे नवीन कृषिप्रणाली स्थापी त्यारे हळनी संख्या एक हजार छसोनी हती. महात्मा टॉड साहेब लखे छे के सन. १८२१ मां जालिमसिंहनी निज व्यक्तिगत संपत्ति रूपे चार हजार हळ चालतां हतां, अने एमां सोळ हजार बळद योजवामां आव्या हता. आथी जालिमसिंहे कृषि-विभागमां केवो श्रेष्ठ उपाय कर्यो हतो ए सहजमां समजी शकाय एवुं छे. जालिमसिंहना निजव्यक्तिगत हळ अने बळदो सिवाय खुद कोटानरेशना तथा भायात वर्गना मळी एक हजार हळ अने चार हजार बळद कृषिकार्यमां योजाएला हता.

विस्तृत कृषिकार्यने लीधे राजराणा जालिमसिंहे रजवाडाओमां महान् कीर्ति मेळवी हती. अने तेओने कृषिद्वाराए पुष्कळ धन प्राप्त थयुं हतुं. जे वखते राजपूतानानां मुख्य मुख्य राज्यो महाराष्ट्रीओना अभ्युदय अने उत्पीडनथी एकी साथे उन्नतिना उच्च शिखरथी अवनतिनी अगाध जाळमां पड्यां हतां ते वखते मात्र एक राजराणा जालिमसिंहनीज चतुराइथी कोटानुं राज्य आबाद रहेवा पाम्युं हतुं. तेओना सबळ शासनथी जो के धन धान्यनी रक्षा उत्तम रीते थइ हती, परंतु राज्यना संभ्रांत सामंतोथी आरंभी एक कनिष्ठ पंक्तिना कृषिवल पर्यन्त कोइ पण तेना पर राजी न हता; कारण के जेनुं हाथ आवे तेनुं पचावी पाडवानी इच्छाए जालिमसिंहना हृदयमां हद उपरांत जोर जमावेलुं हतुं; प्राचीन रीतिनी तेओ बिलकुल परवा राखता नहि; जे कर आपवामां असमर्थ जणाय, तेनी जमीनने तुरतज तावे करी लेवामां आवती. धीरे धीरे तेओए समस्त भूमि पर पोतानो अधिकार जमावी दीधो. आथी तमाम लोको तेना तरफ विरक्त थइ गया. त्यांना खेडू वर्गने पोतपोतानी जमीन गिरवी राखवानो तथा वेचवानो हक परंपराथी प्राप्त थएलो हतो, परंतु राजराणा जालिमसिंहनी शासनपद्धतिथी तेओ एक खरीदेला गुलामनी माफक कृषिकार्य करवा लाग्या. मराठाओना उपद्रवथी भागी छुटेला कृषिवलो अन्य स्थळे आश्रय न मळवाथी कोटामां राजराणा जालिमसिंहनीनीचे आवी रह्या हता.

हाडोतीमां बुन्दी, कोटा अने झालरापाटण ए त्रण राज्य मुख्य गणाय छे. त्यांना कृषिक्षेत्रनी माटी माळवानी माटी समान उपजाउ अने कठिन छे. मात्र हळथीज ए क्षेत्रनी पीठ (पाटी) ने विदीर्ण करवी ए अत्यन्त कष्टसाध्य छे. एटला माटे राजराणा जालिमसिंहे कोकनद देशमां चालती रीति प्रमाणे बे हळोनो एक साथे व्यवहार कर्यो हतो. पहाडोमां हळ नहि हाळवाथी त्यांनी जमीनने कोदाळीथी खोदावी खेडना उपयोगमां लीधी हती, जमीननो एक टुकडो पण

खेड विना खाली न्होतो राख्यो. तेओए पोताना प्रिय स्थान झालरापाटणमाथी, खुद कोटामांथी आसपासना बजारोमांथी तेमज मारवाडमांथी घणा बळदो खरीद्या हता अने जे जे स्थळे वेठ वखणाता ते ते स्थळे माणसो मोकली खरीदी खेतीना काममा योज्या हता. मारवाडना बळदो रेतियाळ प्रदेशमां भार वहन करवा माटे उपयोगी होवा छतां कोटाना क्षेत्रोमां ते काम करी शक्या नहि, जेथी जालिमसिंहे तेनो त्याग करी दीधो हतो. खेतीनो दर वर्षे बे वखत पाक थतो हतो. प्रत्येक हळथी एकसो वीघा जमीन खेडवामां आवती; ए हिसाबे ४००० चार हजार हळोथी एकी वखते ४०००००० चार लाख वीघा खेडतां बे वखतना मळी ८०००००० आठ लाख वीघा अर्थात् आशरे त्रण लाख एकर जमीन खेडाती हती. दरेक विघ्र सातथी दश मण घउं अने पांचथी सात मण सूधी बाजरो निपजवो जोइए; परंतु कोटाना कृषि क्षेत्रनी मृत्तिका जोइए तवी उत्तम न होवाथी ओछामां ओछा एक वीघे चार मण घउंनी उत्पत्ति मानीए तो आठ लाख वीघामांथी बत्रीश लाख मण घउं तथा बाजरो नीपजे. एनी किम्मतनो निश्चय करतां कहेवुं जोइए के जे वर्षे अन्यनी घणी पेदाश होय छे ए वर्षे राजपूतानामां एक मानी घउंनी किम्मत १२ रुपिआ होय छे. बीजा वर्षोमां जो के अढार रुपिये एकमानी घउं वेचाय छे पण सरेरास चार रुपिआनो मात्र गणतां दर वर्षे बत्रीश लाख रुपियानी आमदानी लेखी शकाय छे.

कर्नल टोट साहेब लखे छे के. राजराणा जालिमसिंहने कृषिकार्यमां नीचे मुजब खर्च थतुं हतुं. बळद आदि पशुओने माटे खोराक, कृषिकोने पगार, क्षेत्रनी स्वच्छता अने हळ आदि

समार काममां . .	रु. ४०००००
बीज खरीदवामां .	रु. ६०००००
बळद आदि नकामा थइ जातां बीजा खरीदवामां	रु. ८००००
परचुरण खर्चना . .	रु. २००००
	कुल. ११०००००

राजराणा जालिमसिंहजीने खेतीथी जेटली आमदानी थती हती तेना त्रीजा अंश जेटलुं खर्च उपरना आंकडाओथी मालूम पडे छे. तेओए कोटानी प्रजा माथे एटला बधा कर नांख्या

[1] राजपूतानामां ४० शेरनो १ मण १२ मणनी १ मानी अने १०० मानीनो १ गनानो भाव छे.

हता के जेनो सरवाळो दरवर्षे रु. २५०००००० लाख थतो हतो. वळी वि. सं. १८६५ मां कोटाथी बहारगाम मोकलाता धान्य उपर एक मानी दीठ दोढ रुपिआ लेखे कर प्रचलित कर्यो. आथी प्रजामां वैमनस्य घणुंज वधी गयुं. संक्षेपमां राजराणा जालिमसिंहे कोटानी प्रजा तथा सामन्तश्रेणी उपर एटली बधी सत्ता जमावी हती के कदी तेओने इच्छा थाय के मारे अत्यारे एक लाख रुपिआ जोइए तो एज वखते कर उघरावनारा पटेलो गमे तेम करी इच्छित रकमने एकठी करी आपता, परंतु ज्यारे राजा तथा प्रजाने समदृष्टिथी जोनार अंग्रेजसरकारनुं जोर जामवा लाग्युं त्यारे जालिमसिंहे जाण्युं के प्रजापर वधारे जुलम गुजारवाथी वखते ब्रीटीशगवर्नमेन्ट नाराज थशे तो परिणाम सारुं नहि आवे एटला माटे करने एकदम ओछा करी नांख्या. कृषिवल तथा क्रयविक्रय करनारा माणसो पासेथी उचित कर लेवानी योजना करी. त्यारे पण करनो सरवाळो पांच लाख रुपिआनो थतो हतो.

राजराणा जालिमसिंहने पोताना क्षेत्रोमांथी दरवर्षे पंदरलाख रुपिआनी पेदाश थती हती उपरांत तेओना कुटुम्बी, स्वजन तथा कोटा राज्यना क्षेत्रोमांथी पांचलाख रुपिआ मळता हता. ए रीते वीशलाख रुपिआनी आमदानी वडे तेओ पोतानुं घरखर्च चलावता हता.

एम न जाणवुं के राजराणा जालिमसिंह कोटा राज्यना कृषिकार्यमांज पोतानो सघळो वखत वितावता होय ? ए कार्य तो एनां कार्योमांना एक अंशरूप हतुं. तेओए जे भावथी राज्यशासन कर्युं तेमां प्रबळशक्ति अने विशेष सावधानपणानी जरुर हती. वीशहजार सेनानो दृष्टि, तेने पालन उपरांत शिक्षण आपवुं, किल्लाओनी सावधानी, अस्त्र आदिनो संग्रह, ए रीते युद्धविभागना दरेक विषयमां दृष्टि राखवी, राजकीय जनोनो अनेक गुप्त वार्ताओ सांभळवी, तेओने योग्य जवाब आपवा विगेरे कार्योमां समयने व्यतीत करनारा जालिमसिंह वणजवेपार पण करता हता, उपरांत अनेक प्रकारना फळवान वृक्षोनी खेती पण तेओए करावत्रा मांडी हती; हवे तेओनी साथे कोनी तुलना करवी ? साहित्य, न्याय अने ऐतिहासिक पुराणोना श्रवणमां तेओ पोतानो केटलोएक वखत गाळता. कोटाना अनाजनो भाव एनो मरजी मुजब वधघट थतो. ज्यारे गवर्नमेन्ट सरकारे माळवामां अफीणनी खेती करावी त्यारे जालिमसिंहे एटला म्होटा जत्थामां अफीणनी खरीदी करी हती के तेओ पोतानी इच्छा मुजब अफीणना भावमां वधघट करी शकता. तेओए कोटामां अनेक स्थळे बागबगीचाओ बनाव्या अने तेमां निपजता विविध प्रकारना फळ मूळ आजुबाजुना बजारोमां वेची नाणा निपजाववा मांड्यां. स्वरक्षित वनथी संग्रहित थएला काष्ठो सामान्य

प्रजाना उपयोग माटे वेची नांखवामां आवतां.

कोइ बाबतमां कोइ माणस छूटी न शके एवा इरादाथी दीर्घदर्शी जालिमसिंहे जुदी जुदी जातना करो स्थाप्या हता. जे विधवा पुनर्विवाह करे ते कर आपे. जे सन्यासी भिक्षावृत्तिथी पोतानुं जीवन व्यतीत करे तेने माथे पण कर नाखवामां आव्यो हतो; गिरिनी गुफा तेमज बीजे जे स्थळे सन्यासीओ रहेता त्यां जालिमना जासूसो पहोंची जता अने तेओए भिक्षावृत्तिथी मेळवेला धनपर कर चोटाडी आवता. ए रीते एक वर्ष पर्यन्त सन्यासीओ प्रत्ये वर्तणुक राखवामां आवी, पछीथी केटलाएक मित्रोना कहेवाथी जालिमसिंहजीए तेओने करथी मुक्त कर्या. आळा जालिमसिंहे झाडू काढनार उपर पण कर नांख्यो हतो. जेना सबंधमां कोटाना भाटोए अनेक व्यङ्ग व्यंजक गीतो बनाव्यां. पाछळथी तेना पुत्र माधवसिंहे ए निन्दित करोने काढी नांख्या हता.

एक वखते कोइ प्रसिद्ध कविए जालिमसिंह पासे जइ तेनी प्रशंसानुं गीत संभळाव्युं, जालिमसिंहे संतुष्ट नहि थतां कह्युं के " कवि लोको केवळ मिथ्या वर्णन करे छे, जो साचुं वर्णन करे तो कांइक सांभळवानी इच्छा थाय. " कविए जवाब आप्यो के " बजारमां सत्यनो आदर बहुज थोडो थाय छे. जो आपने सत्य सांभळवानी इच्छा होय तो ए पण मने आवडे छे " तुरतज तेणे माफी मागी जालिमना जीवनचरित्र सबंधी गीतो गावा मांड्या. ए सांभळी जालिमसिंह एटला बधा गुस्से थया के तेणे कविना बापदादाने राज्य तरफथी आपवामां आवेलो गिरास एकादम जप्त करी लीधो अने ते दिवसथी कोइ कविने पोता पासे आववा दीधो नहि.

सांभळवा प्रमाणे राजराणा जालिमसिंहजी बीजी बधी बाबतमां शास्त्रोक्त हिन्दु धर्मानुसार वर्तन राखता हता, परंतु राजनैतिक व्यवहारमां ब्राह्मण आदि उच्च वर्ण उपर कदी पण रहेम राखता नहि. ज्यारे कोटानो शासनभार राजराणा जालिमसिंहने सोंपवामां आव्यो त्यारे कोटानुं राज्य न्हाना स्केलमां हतुं. खजानो खाली हतो, राज्यपर त्रीस लाख रुपियानुं देणुं हतुं अने तूट्या फूट्या किल्लाओमां पूरती युद्धनी सामग्री पण नहोती बुद्धिमान् जालिमसिंहे महाराष्ट्रीओना बळथी केटलाएक किल्लानो उद्धार करी कोटामां मेळवी दीधा अने भांग्या तूट्या भागोने समानमां लावी तेमां तोपो गोठवी दीधी. कोटामां प्रथम चार हजार घोडेस्वारनुं सैन्य हतुं. जालिमसिंहे दोढ सोळ हजार सैनिको वधार्या अने एकसो तोपो एकठी करी. ए उपरांत सामन्तोने तांबे पण घणी सेना हती.

राजराणा जालिमसिंहनो शासनप्रणालो घणे भागे भेदनीतिपर वधारे आधार राखती हती. पोताना ताबाना अधिकारीजनो के दरबारी लोको एक बीजा साथे मळी वातचीत करी शकतां नहि. दरेक उपर तेओनी एटली बधी सत्ता बेसी गइ हती के टुंकामां तेओ लाकडीने बळे सहुने वांदरानो पेठे नचावता हता. रजवाडामां एवो कोइ राजा न हतो अथवा लूंटाराओनो एवो कोइ नेता न हतो के जेणे हरेक कार्यमां राजराणा जालिमसिंहनी सलाह न लीधी होय अथवा एओनी सलाह प्रमाणे न कर्युं होय ? दरेक राज्यमां एओए पोतानो एक एक दूत राखेलो हतो; ज्यां स्वार्थ सिद्धि जेवुं जणाय त्यां तेओ तुरतज पहोंची जता. एओए कोटाना राजसिंहासन पर आरूढ थएला राजाथी आरंभी पिंडारी दलना नेता पर्यन्त सहुनी साथे पिता, काका तथा भ्राता‌नो सबन्ध बांधी दीधो हतो. संक्षेपमां पोताना राजनैतिक कार्यने सिद्ध करवा माटे तेओ अनेक प्रकारना उपाय करी चूक्या हता.

स्वभावे क्रूर, क्रोधी अने अहंकारी कहेवाता जालमसिंह वखत प्रमाणे वर्त्तन करनारा हता. वखते सरल, वखते शान्त अने वखते निरभिमानी पण बनी जता. वि० सं० १८६२ मां ज्यारे जोधपुरना राज्य साथे बीजा राजाओए झगडो मचाव्यो त्यारे जालमसिंह पासे त्रण राज्य तरफथी मदद मांगवामां आवी हती. त्रणेने एकी वखते सहायता आपवानुं अशक्य धारी जालमसिंहे बधा पासे दूत मोकली आप्या अने युक्ति प्रयुक्तिथी कोइने माठुं न लागे तेम समजावो एकेने मदद आपी नहि.

वि० सं० १८५९ मां ब्रिटीश गवर्नमेन्ट साथे राजराणा जालिमसिंहनो प्रथम समागम तथा सम्बन्ध थयो हतो. महात्मा टॉड साहेब लखे छे के—होलकर उपर आक्रमण करवा माटे ज्यारे जनरल मॉनसन एक ब्रिटीश सेनाने साथे लइ मध्यभारत तरफ गया त्यारे जालिमसिंहे अंग्रेजोना सामर्थ्यने अजेय जाणी तेओनी सेनाए कोटाराज्यमां प्रवेश कर्यो के तुरतज सर्वेनी उत्तम प्रकारे सरभरा करवा माटे अनेक अनुचरोने योजी दीधा; परंतु दुर्भाग्यने लीधे युद्धभूमिमां ज्यारे ब्रिटीश सेनानो पराजय थयो त्यारे तेमनुं तमाम दळ भाग्युं. ए वखते जनरल मॉनसने प्रथमनी पेठे कोटाराज्यमां थइ चाल्या जवा माटे जालिमसिंह पासे प्रार्थना करी. जालिमसिंहे ज्वाब आप्यो के "अमारा शान्तिपूर्ण राज्यमां तमारी छिन्नभिन्न सेनाना आगमनथी अराजकता उपजवा संभव छे, माटे आप सैन्य सहित अमारा राज्यनी सीमापर रोकाओ, त्यां तमाम जातनो बंदोबस्त करवा तेमज शत्रुओथी आपने पराभव नहि पामवा देवा हुं सैन्य सहित हाजर रहीश. क-

दाच ए शत्रुओ मारापर आक्रमण करशे तो हुं एकलो एओनी साथे युद्ध करीश." जनरल मानसने आ वात न मानी, तेणे सीधा पोताना उपरी जनरल लेकनी पासे जइ हार सबन्धी सघळी हकीकत कही संभळावी अने जालिमसिंहनी चशमपोशीथीज ए हार थयानुं जणाव्युं. जनरल लेके मानसनना कथनपर विश्वास राखी जालिमसिंह उपर घणा वखत सुधी वैमनस्य राख्युं. परंतु जालिमसिंह तद्दन निर्दोष हता, तेओए मानसनना जाननी सलामती माटे विशेष चेष्टा करी हती. एओनी आज्ञानुसार मुकुन्दरानी घाटीथी कोयलाना सामन्त लखन महाराष्ट्रीय दलनी गति रोकवा माटे सैन्य सहित मार्या गया. ए प्रत्यक्ष उदाहरण आजपर्यन्त विद्यमान छे. कोयलाना सामन्तनी माफक जालिमसिंहना बीजा सैनिकोए पण जनरल मानसनना भागवा वखते मराठाओनी साथे युद्ध कर्युं हतुं. तेमां वक्षी सेनाधिपति मराठाओने हाथे केद पकडायो. होल्करे तेना पासेथी दशलाख रुपियानुं खत लखावी लीधु अने छोडती वखते तेने सूचना आपी के जो दशलाख रुपिआ अमने नहि मळे तो कोटाना समस्त राज्यनो तळवार तथा तोपोना मुखथी विध्वंस करवामां आवशे. पराजय पामेला वक्षीए जालिमसिंह पासे जइ दशलाखना खत सबंधी वात करी जालिमसिंहे ए रुपिआ राज्य तरफथी आपवानी ना कही वक्षीने होलकर पासे जवा कह्युं× जालिमसिंहना उक्त व्यवहारथी होल्कर भय बतावीनेज शान्त न रह्यो; थोडा वखतमांज तेणे कोटानो अत्यन्त समीपे डेरा नांख्या. एथी जालिमसिंह जरापण भयभीत न थया. तेओए शहेरना कोट उपर तमाम तोपोने तैयार रखावी सैन्यने सज्ज थवा आज्ञा आपी अने गोळाओनी वृष्टि शरु करी तथा पहाडी लोको पण तेओनी गुप्त आज्ञानुसार होल्करना डेराना पाछला भागपर आक्रमण करवा समस्त द्रव्यने लूंटवा तथा प्रतिपक्षीओने आहारप्राप्तिमां अवरोधरूप थवा तत्पर थया. होल्करे वक्षीना दस्ताक्षरवाळो दशलाख रुपिआनो लेख फरी जालिमसिंह पासे मोकली आप्यो; जालिमसिंहे तेनो अस्वीकार कर्यो. युद्धनी वात अनिवार्य थइ पडी. बन्ने पक्षनां मंत्रीओ होल्कर तथा जालिमसिंहनो परस्पर साक्षात्कार करवा उद्यत थया. होल्करनो विश्वास नहि करनारा जालिमसिंहे नौकाद्वाराए चम्बल नदीना मध्यभागमां स्थित थइ युद्ध अथवा सन्धि सबन्धी प्रस्ताव करवानी हा करी. होल्करे ए वात कबुल करी. तुरतज वीश वीश शस्त्रधारीओथी सज्ज करेली बे नौकामां होल्कर तथा जालिमसिंह जुदा जुदा बेठा. आ वखते जे विश्वासघात करे तेनापर आ-

× कर्नलटॉड साहेब पोतानी टीकामा लखे छे के अपमानथी अत्यन्त दुःखी बनेला वक्षीए विषपानवडे आत्मघात कर्यो होय एवुं अनुमान थाय छे.

क्रमण करवा तटस्थ सेना तैयार राखवामां आवी हती. नौकाओ नदीना मध्यभागमां स्थिर थतां एकाक्षनी* वातचीत शरु थइ ते पहेलां होल्करे जालिमसिंहने काका अने जालिमसिंहे होल्करने भत्रीजा कही संबोध्या हता. छेवटे त्रणलाख रुपिआ लइ होल्कर चालतो थयो अने कोटानुं राज्य जालिमसिंहना बुद्धिबळथी सुरक्षित रह्युं.

अंग्रेज सरकारे सिन्धिया तथा होल्कर साथे युद्ध करी ज्यारे विजय मेळव्यो, त्यारे जालिमसिंहे सिन्धिया पासे पंचमहाल नामनो देश अने होल्कर पासेथी डिग, पिडावा इत्यादि चार जील्ला जमामां लइ लीधा. ए देश ब्रीटीश गवर्नमेन्टे एकी वखते पोताना विजय वखते कोटाना अधीश्वरने आपी दीधा. जालिमसिंह, सिन्धिया तथा होल्कर साथे हमेशां मळता रहेता एटलुंज नहि, परंतु तेना मन्त्रीओ शुं शुं चेष्टा करे छे, ए जाणवा माटे तेणे पोताना गुप्त दूतोने योज्या हता. ते उपरांत तेओ केटलाएक महाराष्ट्र पंडितोने पोतानी पासे योग्य पगारथी नियुक्त करी ए जातिनुं राजनैतिक ज्ञान पण मेळवता हता. लुंटारा अमीरखांने रहेवा माटे तेओए शेरगढनो किल्लो आपी संतुष्ट कर्यो हतो; जेथी बीजां राज्योमा उपद्रवनो वृद्धि वखते कोटानुं राज्य आबाद रह्युं हतुं.

पिंडारी नामना लूंटाराओनुं दळ पण जालिमसिंह तरफ अत्यन्त सद्भाव राखतुं हतुं; तेओना नेताओए कोइ दिवस कोटा राज्यनुं अनिष्ट कर्युं न हतुं. ए लोक जालिमसिंह द्वारा जागीर मेळवी कोटामां निवास करता हता. एना प्रख्यात नेता करीमखांने वि. सं. १८६३ मा ज्यारे सिन्धिआए बंदीवान बनावी ज्यारे ग्वालिअरना किल्लानी रक्षा करी, त्यारे जालिमसिंहजी ए करीमखांने छोडाववा माटे मात्र पुष्कळ नाणां आपीनेज शान्त नहोता थया, परंतु तेना भविष्यना सच्चरित्र माटे साक्षीभूत पण थया हता.

शरणागतनुं प्रतिपालन करवुं ए राजपूत जातिनो परम धर्म छे. राजपूतोए शरणे आवेला शत्रुने पण तन, मन तथा धनथी आश्रय आपी तेओनुं रक्षण करेलुं छे. मारवाड, तथा मेवाड वगेरे राज्यना मुख्य मुख्य सामन्तो तथा माननीय मनुष्यो कोटामां जालिमसिंहने शरणे आवता, तेओने जालिम तरफथी आश्रय मळतो एटलुज नहि, परंतु तेओनी गएली जागिर करतां विशेष आमदानीवाळी जागीरो पण आपवामां आवती. आथी जालिमसिंहनी नामना घणीज वधी गइ.

---

* महाशय टॉडसाहेबे आहीं जालिमसिंहने अंध तथा होल्करने एक आंखवाळो समजी बन्ने अद्भूत पुरुषमां "एकाक्ष" शब्दनो उपयोग करेल छे.

तेओ पोताने शरणे आवेला सामन्तोने तेना स्वामी साथे युक्तिप्रयुक्तिथी मेळ करावी आपता; ए कारणने लीधे तेओ सामान्य प्रजामां " शान्तिस्थापक " तेमज "मध्यस्थ" एवा नामथी प्रख्यात थया. कोटा जेवा साधारण भूखंडमां सत्ता भोगवनारा राजराणा जालिमसिंह विपत्तिमां पडेला सहु कोइने आश्रय आपवा तथा सरलतापूर्वक तेओनुं पालन करवामां समर्थ हता, एवुं इतिहास उपरथी सिद्ध थाय छे.

जालिमसिंह आटला बधा सत्तावान छतां पोताना मालिक महाराव उमेदसिंहनुं केवुं सारुं मान जाळवता ए नीचेना लेख उपरथी समजी शकाय तेवुं छे.

कोइ अन्य राजनो दूत आव्यो होय तो ते सीधो महाराव उमेदसिंह पासे जाय अने त्यां पोतानी ओळखाण आपी जवाब मेळवी शके, परंतु जवाब तो जे जालिमसिंहे लख्यो होय एज उमेदसिंह आपे. कोइ अन्य राजनो सामन्त शरणे आव्यो होय तो ते महारावने मळी प्रार्थना करे. पण एने केवी रीतनो अने केटलो आश्रय आपवो एतो जालिमसिंह नक्की करे, एज प्रमाणे आपवामां आवे. पोताना पुत्रोए वधारे जागीर प्राप्त करवानी मागणी करी अने महारावनी मरजी विना जालिमसिंहे स्वीकारी एवुं कदी पण बन्युं नहोतुं. शहेरमां वेचावा आवेला सारा सारा अश्वोने जालिमसिंह प्रीतिपूर्वक खरीदता; परंतु तेमाथी चुनंदा घोडाओ महाराजा तथा महाराजकुमारने भेट करवानु कोइ वखत चूकता नहि. मतलब तेओ मालिकनु मानभंग करीने मनधार्युं करता नहि, परंतु सन्मानपूर्वक तेओने राजी राखी कार्यसिद्धि करी लेता. राज संबंधी कागळीआओ, महोरो तथा राजचिह्नो महेलनी अंदर महाराव उमेदसिंहना माणसोनी देखरेख नीचे राखवामां आवता; परंतु जालिमसिंहनी अनुमति शिवाय तेनो कोइ उपयोग करी शकता नहि. एक वखत महाराव उम्मेदसिंहना कुमार किशोरसिंह तथा राजराणा जालिमसिंहना कुमार माधवसिंह पोतपोताना अश्वने शिक्षण आपवा एक क्षेत्रनी अंदर जइ चडेला, त्यां माधवसिंहे राजकुमार किशोरसिंहनुं काइ अपमान कर्युं. ए वात सांभळतांज न्यायनिपुण जालिमसिंहे पोताना पुत्र माधवने कोटामाथी रजा आपी नानताना किल्लामा मोकली आप्यो महाराव उम्मेदसिंहे एम नहि करवा तेओने घणी रीते समजाव्या; परंतु जालिमे माधवने क्षमा आपी नहि.

कोइएक समये राजराणा जालिमसिंह महेलमा बेठा बेठा राजकीय देवमन्दिरमां पूजन करता हता; त्या महाराव उम्मेदसिंहना कुमार आवी चड्या; तेओने खबर न हती के जालिमसिंह

पूजन करे छे. शीतकाळने लीधे मन्दिरनी जमीन भेजवाळी बनी गइ हती. जालिमसिंहे टाढने लीधे कांधपर ओढेली रजाइ तुरतज नीचे बिछावी महाराज कुमारने बेसाड्या अने पूजन करवा कह्युं. कुमार थोडो वखत त्यां बेसी चाल्या गया. बाद अनुचरे जाण्युं के कुमारना पगतळे कचराएली रजाइ हवे राजराणा ओढशे नहि, परंतु ए एनी मान्यता खोटी पडी. जालिमसिंहे तुरतज उक्त रजाइ अनुचर पासेथी लइ अंगपर ओढी लीधी अने कह्युं के " आजे कुमारना चरणस्पर्शथी मारी रजाइ पवित्र थइ " आ रीतनो नम्र अने राजभक्त अधिकारी पोतानुं प्रबल आधिपत्य विस्तारे एमां शी नवाइ ? जालिमसिंह जेवा चतुर अने नीतिनिपुण पुरुष विश्वमां विरला हशे.

राजराणा जालिमसिंह नोकरो तथा कारभारीओने कसोटी कर्या बाद राजकाजमां योजता हता; तेओ वातचीत उपरथी मनुष्यनो मनोभाव जाणी लेता, अने योग्य नोकरो तथा कारभारीओनी साथे मित्रनी माफक वर्तन राखता, जेथी तेओनुं कांइ अनिष्ट करी शकता नहि. प्रसंगोपात् नोकरोने छूटे हाथे पैसा आपनारा जालिमसिंहना वखतमां राजनो कोइ पण माणस इच्छाअनुसार, बळथी के अन्यायथी धन मेळवी शकतो नथी. पठाण तथा महाराष्ट्र पंडित ए बन्ने जाति उपर तेओने अपूर्व विश्वास तथा प्रेम हतो. कोटानी अंदर युद्ध संबंधी कार्य पठाणोने अने राजनैतिक कार्य महाराष्ट्र पंडितोने सोंपवामां आव्युं हतुं. राजराणा जालिमसिंह पोतानी जातिना माणसोने कोइ कार्यमां योजता नहि. एना शासनना छेवटने समये मात्र एक शक्तावत संप्रदायनो विसनसिंह नामे राजपूत कोटानी फोजदारी पर नियुक्त हतो. दलेलखां अने महारावखां नामना बे माणस जालिमसिंहना पूर्ण विश्वासपात्र कामगरा अने मित्र हता. दलेलखांए कोटानो विराट् किल्लो बनाव्यो. आग्राना किल्ला शिवाय भारत वर्षमां एनी बराबरी करी शके एवो एके किल्लो नथी. झालरापाटण नामनुं अत्यन्त रमणीय शहेर पण दलेलखांनुंज बनावेलुं छे. ए उपरात कोटा राज्यना केटलाएक किल्लाओनुं काम एनेज हाथे थयुं हतुं. जालिमसिंह दलेलखांने प्यार करती वखते कहेता के " तारा पहेलां हुं मरी जाउं तो सारुं " महारावखां कोटाना पायदळ लश्करना अधिपति हता; तेणे उत्तम शिक्षणथी सेनाने अत्यंत युद्धकुशळ बनावी हती+

+ कर्नल टॉड साहेबे आ स्थळे टीकामां लख्युं छे के अमारा तावामांजालिमसिंहे महारावखांना आधिपत्य नीचे एक सेना दळे आठ दिवसमां हाडोती साथे मळेला होल्करना तावाना तमाम देशो स्वाधीन करी लीधा हता; अने एज सैनिकोए जानमाल कामना तावानी फोज साथे मळी " सौदी " किल्लानी दिवालने उल्लंघी विशेष वीरता बतावी हती.

वि. सं. १८७३ मां भारत वर्पना गवर्नर जनरल मार्क्विस ऑफ हेस्टिंग्से पिंडारी लोको साथे लढाइ करवानी जाहेरात काढी. तेमां तमाम राजपूत राजाओए सामेल थवानुं स्वीकार्युं अने ब्रीटीश गवर्नमेंट द्वारा सन्धिबन्धनमां बंधाइ अंग्रेज सरकारने कर आपवानुं कबुल कर्युं; राजराणा जालिमसिंहे ए कार्यमां पहेल करी हती. इ. स. १८१७ ना डीसेम्बरनो छत्रीसमी तारीखे कोटा राज्य साथे ब्रीटीश गवर्नमेन्टनो सन्धिपत्र दिल्हीमां तैयार थयो अने तेनो इ. स. १८१८ ना जान्युआरी नी २६ मी तारीखे महेरबान गवर्नर जनरले ऊचर नामने मुकामे स्वीकार कर्यो. कोटाना महाराव सिन्धिया, होल्कर, पँवार अने पेशवाने जे कर आपता ते अंग्रेज सरकारने आपवा तैयार थया. त्यारथी कोटाना भाग्यचक्रमां परिवर्तन थयुं.

समस्त भारतवर्षे लुंटारा, अत्याचारी अने पोडा पमाडनारा पुरुषोनो मूळथी उच्छेद करवा माटे एकी वखते हाथमां हथियार उठाव्यां. एकज उद्देशने अन्तःकरणमां स्थान आपी बे लाख माणस लडवा तैयार थयां. हाडोती देशनी सीममांज सहुथी पहेलां युद्ध थवानी संभावना हती एटला माटे पोलीटीकल एजन्टना पद पर नियत थएला प्रसिद्ध इतिहासलेखक महाशय टॉड साहेबने मोकलवामा आव्या. राजराणा जालिमसिंहे तेओने पूरती सहायता आपी. धीरे धीरे पिंडारी लोको नष्टप्राय बनी गया. ए उपकारना बदलामां अंग्रेज सरकारे जालिमसिंह उपर घणो अनुग्रह कर्यो. जालिमसिंहे होल्कर पासेथी जे चार प्रदेश जमाना लीधा हता, तेनो स्वतंत्र हक ब्रीटीश गवर्नमेन्ट तरफथी तेओने आपवामा आव्यो, परंतु तेओए ए चारे प्रदेश पोताना मालिक महाराव उम्मेदसिंहना चरणमां अर्पण करी दीधा. आथी अंग्रेज सरकारने वधारे संतोप थयो. तेओए सन. १८१८ ना जान्युआरीनी २६ मी तारीखे स्वीकारेला कोटाना सन्धिपत्रमा फेब्रुआरी मासनी ता. २६ मीए एक नोचे लख्या मुजब नवी कलम दाखल करी तमामनी सहीओ लीधी,[1]

"सन्धिबन्धनमां आबद्ध थएला उभय पक्ष आ वातनो स्वीकार करे छे के—कोटा राजना अधीश्वर महाराजा उम्मेदसिंहना प्रयाण पछी कोटानुं राज्य एओना ज्येष्ठ पुत्र अने उत्तराधिकारी महाराज किशोरसिंहने मळशे अने तेना स्वर्गवास पछी तेओना वंशजो उत्तरोत्तर क्रमथी ए राज्यने कायम वखत सुधी भोगवता रहेशे अने कोटा राज्यना समस्त विभागोनुं शासनसामर्थ्य राजराणा जालिमसिंहना हाथमांज रहेशे, अने एना परलोकप्रयाण पछी एना म्होटा पुत्र कुमार

---

1 ए सन्धिपत्रमां जुदी जुदी अग्यार कलमो दाखल करेली छे.

माधवसिंह अने ए माधवसिंह पछी एना वंशजो उत्तराधिकारीक्रमथी उक्त शासनसामर्थ्यने मेळवी शकशे.

दिल्ही. २० फेब्रुआरी स. १८१८ इस्वी	(हस्ताक्षर) सी. टी. मेटकाफ महाराव राजा उमेदसिंह बहादुर राजराणा जालिमसिंह महाराज शिवदानसिंह फूलचंद गोविन्दराम

आ कलमनो गवर्नर जनरले एज वर्षनो ता. १ मार्चे लखनऊ मुकामे स्वीकार कर्यो हतो.

(हस्ताक्षर) जे. आडाम.
गवर्नर जनरलना सेक्रेटरी.

वि. सं. १८७५ पर्यन्त कोटामां सर्व प्रकारे शान्ति रही; त्यारबाद महाराव उमेदसिंहनो स्वर्गवास थयो त्यारे तेओना कुमार किशोरसिंहनी अवस्था ए वखते पीस्तालीश वर्षनी हती. बिसनसिंह तेनाथी त्रण वर्षे न्हाना हता. ए बन्ने बन्धुओ सरल अने श्रद्धालु होवाथी राजराणा जालिमसिंहना अधिकारमां अवरोधरूप थया नहि, परंतु त्रीजा कुमार पृथीराज के जेनी उम्मर त्रीश वरसथी कांइक ओछी हती तेणे जालिमसिंहना हाथथी पोतानो तथा पोताना वंशनो उद्धार करवा संकल्प कर्यो. दरेक राजकुमारने वार्षिक पचीश पचीश हजार रुपीआनो आमदानीवाळी जागीर मळेली हती.

राजराणा जालिमसिंहने माधवसिंह तथा गोवर्धनदास नामना बे पुत्र हता, माधवसिंहनो जन्म विवाहिता स्त्रीथी अने गोवर्धनदासनो जन्म रखात स्त्रीथी थएलो हतो. महाराव उम्मेदसिंह माधवसिंहने बाल्यवयथीज श्रेष्ठ समजता हता, परंतु ते आळसु अने अभिमानी निवडवाथी जालिमसिंह तेना करतां गोवर्धनदासने वधारे चाहता हता. आ अरसामां माधवसिंह ४६ वर्षनी अवस्थाए पहोंचेला हता. ज्यारे जालिमसिंहे महेलमां निवास करवानुं छोडी कोटाराज्यमां भ्रमण करवाने माटे गागरोल नामना किल्लानी समीपे छावणी नांखी हती त्यारे कोटानो शासनभार तेओना कुमार माधवसिंहने सोंपवामां आव्यो हतो. समस्त सेनाने पगार आदि आपवानुं काम पण एने हाथ हतुं. पुष्कळ पैसा हाथमां आववाथी माधवने मद चढ्यो; तेणे उक्त धनमांथी केटलाएक सुंदर बगीचाओ बनाव्या, उत्तम घोडाओ खरीद्या अने जलविहार माटे जुदीजुदी

जातनी नौकाओ तैयार करावी; ए जोइ कोटाना राजकुमार सर्व प्रकारे पोतानी हीनता समजवा लाग्या. माधवसिंहे हमेशा एवा उमदा पोशाक पहेरवा मांड्या के महाराव उम्मेदसिंह पण एवां उत्तम वस्त्र नहोता पहेरता. राजराणा जालिमसिंह पोताना पुत्र माधवने विलासी अने खर्चाळ जोइ निरंतर उपदेश आपता, परंतु ए उपदेशनुं फळ कांइ पण मळ्युं नहि. ए वखते गोवर्धनदासनी उम्मर छव्वीश वर्षनी हती. ते बुद्धिमान् अने चंचळ हता; राजपरिवार साथे तेओनो स्नेह तथा भक्तिभाव जोइ राजकुमारोए तेनी साथे मित्रता बांधी हती. राजकुमार पृथ्वीसिंह तथा गोवर्धनदासनां चरित्र समान होवाथी ए बन्नेने वधारे बेसती हती. जालिमसिंहे पोताना प्रीतिपात्र पुत्र गोवर्धनदासने वसुलाती खाताना मुख्य अधिकारीनी जगो आपी. माधवसिंह मूळथीज एनी साथे वैर अने कलह करता हता. महात्मा टॉडसाहेब लखे छे के जालिमसिंहे चतुर अने राजनीतिज्ञ होवा छतां पोताना बन्ने पुत्रोने रीत प्रमाणे शिक्षण आप्युं न हतुं. एथी परिणामे तेओने घणुंज दुःख भोगववुं पड्युं.

इ. सं. १८१९ ना नवेम्बरनो ता. २१ मीए महाराव उम्मेदसिंहजीनो शोकजनक स्वर्गवास थयो त्यारे राजराणा जालिमसिंह गागरोणना डेरामां हता. तेओए युवराज किशोरसिंहने कोटानी गादीपर अभिषिक्त करवा तथा महाराव उमेदसिंहनी शास्त्रोक्त उत्तरक्रिया कराववा तुरतज राजधानी तरफ कूच कर्युं अने मेहरबान पोलीटीकल एजन्ट टॉडसाहेबने महारावना मृत्यु समाचार लखी मोकल्या. ए वखते पृथ्वीसिंह तथा गोवर्धनदासे राजराणा जालिमसिंह तथा माधवसिंह विरुद्ध थइ युवराज किशोरसिंहने समजाव्या के–सन १८१७ ना नवेम्बरमां अंग्रेज सरकार साथे थएला सन्धिपत्रनी अंदर चोख्खुं लखेलुं छे के "महाराव उम्मेदसिंहना वंशजो कोटाना स्वतंत्र मालिक छे" छतां कोटा उपर जालिमसिंहनुं वंशपरंपरा शासनसामर्थ्य रहे तो महारावनुं स्वतंत्रपणु रद थतां सन्धिपत्र जूठो ठरे छे. वळी जालिमसिंहनुं शासनसामर्थ्य वंशपरंपरा कायम राखवानी कलम पाछळथी उमेरवामां आवी छे. जेथी जालिमसिंहने राज्यमांथी दूर शा माटे न करवा? किशोरसिंहने पण ए वात योग्य जणाइ. जेथी जालिमसिंह ज्यारे कोटा नजीक आवी पहोंच्या त्यारे तेओने राजधानीनी अंदर दाखल थवा दीधा नहि. जालिमसिंहे कोटाथी एक माइल दूर मुकाम नाखी पोलीटीकल एजन्टने खबर आप्या. एजन्टे तुरतज त्यां आवी षड्यंत्र (खटपट) चलावनारा पृथ्वीसिंह तथा गोवर्धनदासने अलग करवा युवराज किशोरसिंहने कहेवराव्युं. किशोरसिंहे ए वात कबुल करी नहि. त्यारे तेओने काबुमां लेवा राजराणा जालिमसिंहे चारे बाजुथी राजधानीने घेरी

लीधी. थोडा दिवस एमनेएम राजधानी घेराएली रहेवाथी मुंझवणमां आवी पडेला मुख्य कुमार किशोरसिंह चारसो स्वार सहित बाहेर निकळ्या, तेमां पृथ्वीसिंह, गोवर्धनदास तथा बीजा सरदारो पण सामेल हता. ए बधाने जरा दूर गएला जाणी महेरबान पोलोटीकल एजन्ट त्यां जइ पहोंच्या अने तमामने भय तथा समजुती आपी तेओए शान्त कर्या. कुमार किशोरसिंह माटे एक खास घोडो मगाववामां आव्यो अने तेना पर तेओने बेसाडी राजधानीभेळा कर्या, अने तुरतज राज्याभिषेकनी क्रिया करी नजर न्योछावर तथा पोशाक लीधा दीधा. तेमज माधवसिंहने कोटानी फोजदारीपर कायम राखी पोशाक अपाव्यो तथा खटपटमां सामेल थएला गोवर्धनदासने नजरकेद राखवा दिल्ही मोकली आप्यो अने तेनी आजीविका माटे अमुक रकम बांधी आपी. गोवर्धनदासे त्यां बेठां बेठां महाराव किशोरसिंह साथे कागळपत्रनो व्यवहार जारी राख्यो अने षड्यंत्रना बीजने शुष्क थवा दीधुं नहि. तेणे वि. सं. १८७७–७८ मा माळवा मध्ये आवेला जांबुआना राजानी रखात राणीथी उत्पन्न थएली कन्याने परणवा जवानी आज्ञा मागी. सरकार तरफथी तेने परवानगी आपवामां आवी. तेओ जांबुआमां आव्या के तुरतज कोटामां तोफान जाग्युं; महाराव किशोरसिंहनी सलाहथी कोटानी सेनाए राजराणा जालिमसिंह उपर आक्रमण कर्युं. ए अटकाववाने वहाने किशोरसिंह तथा पृथ्वीसिंह पण त्यां जइ पहोंच्या. परंतु कोइ रीते जालिमसिंहने जीती शकाय तेम न होवाथी किशोरसिंहे बुन्दी जइ सहायता मागी, परंतु अंग्रेज सरकारे बुन्दीना राजाने लखी मोकल्युं के "कोटाना महाराव किशोरसिंहने कोइपण प्रकारनी मदद आपवी नहि." तेनी साथे गोवर्धनदास महाराव किशोरसिंहने न मळी शके एटला माटे कार्यकुशळ जालिमसिंहे बुन्दी अने जांबुआ वच्चे एक सेनाने नियत करी दीधी. महाराव किशोरसिंह पोताना माणसो सहित बुन्दीथी वृन्दावन जइ पहोंच्या. जांबुआमांथी दिल्ही जवा निकळेलो गोवर्धनदास तेओने त्यां मळ्यो. बन्ने जणाए केटलीएक गुप्त वार्ता कर्या बाद छेवटे कोटापर चढाई करवानो निश्चय कर्यो. तेओए पोताने अंग्रेज सरकार तरफथी कोटानो स्वतंत्र हक प्राप्त थयो छे तथा पोतानी साथे दिल्हीना खजानचीना माणस तथा केटलाएक पटावाळाओ छे एवुं सामान्य मनुष्योमां प्रसिद्ध कर्युं; जेथी मार्गमां घणां माणसो तेओनी साथे मळी गयां. ए रीते त्रण हजार माणसो सहित महाराव किशोरसिंह कोटानी समीपे

---

१ इ० स० १८२० ना आगस्ट मासनी १७ मी तारीखे कोटानी गादीए महाराव किशोरसिंहनो म्होटी धामधूमनी साथे राज्याभिषेक थयो हतो.

आवी पहोंच्या. आ वखते जालिमसिंहना अंगत माणसो पण किशोरसिंहना पक्षमां जइ मळ्या. त्यारे जालिमथी बोली जवायुं के " मारुं वस्त्र पण महारुं नथी " एवामां तेओए सहायताए बोलावेलुं सरकारी लश्कर त्यां आवी पहोंच्युं. ए लश्करनी साथे मळेली जालिमसिंहनी सेना महाराव किशोरसिंह साथे लडवा आगळ वधी. पोलीटीकल एजन्ट मी. टॉड साहेबे युद्ध न थाय तो सारुं एवा इरादाथी किशोरसिंहने समाधान करवा कहेवराव्युं; त्यारे तेओना तरफथी एवो जवाब मळ्यो के " आबरु विना जीवन अने अधिकार विना राज्य काइ उपयोगनुं नथी, माटे कांतो मरशुं अने कांतो अमारा वडवाओए मळवेला समस्त अधिकारने पुनः प्राप्त करशुं." छेवटे-अनिवार्य युद्ध शरु थयुं. थोडा वखतमां महाराव किशोरसिंह पराजय पाम्या; एनुं कारण ए हतु के तेना पक्षमां जे मफतीआ माणसो मळ्या हता, ते तुरतज भागी गया. मात्र पोताना चारसो स्वारो युद्ध भूमिमां अडग रह्या, तेओनी साथे महाराव किशोरसिंह अरधा माइल उपर विश्रान्ति लेवा उभा; तेवामां सरकारी लश्कर तेओना उपर धसी आव्युं. हाडा रजपूतोए हद उपरांत बहादुरी बतावी. अंग्रेज लश्कर हार पामी पाछुं हठ्युं. महाराव किशोरसिंहना न्हानाभाइ पृथ्वीसिंह असह्य आघातथी मार्या गया. उक्त विजयथी संतुष्ट थएला महाराव किशोरसिंह श्रीनाथ द्वारा तरफ जता हता; त्यांथी महेरबान पोलीटीकल एजन्टे तेओने नवा कोलकरार साथे कोटानी गादीपर नियत कर्या. ए वखते राजराणा जालिमसिंहे महेरबान पोलीटीकल एजन्टनी साथे सामा जइ महाराव किशोरसिंहने मान आप्यु हतुं. किशोरसिंहे महात्मा टॉड साहेबना कहेवाथी फरी फोजदार तथा राजमंत्री माधवसिंह साथे मित्रता बांधी एथी वृद्ध राजराणा जालिमसिंह संतुष्ट थया. ए वखते महाराव किशोरसिंहने केटलाएक स्वतंत्र हक मळी चुक्या हता. ज्यारे राजराणा जालिमसिंहजी ८५ वर्षनी उम्मरे पहोंच्या, त्यारे आलस्य शुं कहेवाय ए जाणता नहोता. तेओने शिकारनो घणोज शोख हतो. ज्यारे तेओ दृष्टिहीन अवस्थाए अश्वार चढवा असमर्थ थया त्यारे पालखीमां बेसी शिकारे जता; ए वखते हजारो माणसो तेओनी सेवामां हाजर रहेता. वृद्ध जालिमसिंह एवखतनी साथे अनेक प्रकारना हास्यविनोद करता अने एक बीजानी वातने आनन्द पूर्वक सांभळता. शिकारनु कार्य समाप्त थया बाद तेओ सेंकडो सेवकोनी साथे सघन वनमां बेसी भोजन करता अने त्यांज कृषिविभाग, शान्तिरक्षाविभाग, समरविभाग, वाणिज्य तथा नीति आदि अनेक राज्य कार्य करता हता. जे समये दाणो उपर दाणोनी प्रवल वर्षा थती हती ते समये एक पीपळनी नीचे बेटेला जालिमसिंह विचारपूर्वक अपराधीने दंड देता हता. आम आखो दहाडो मृग-

यामां वीतावता छतां तेनी पासे पुराणनो पाठ अने धर्म संबंधी गीतो गवातां हतां; तेओ तमाम कार्य करवानो अवसर मेळ्वी शकता. तेओनी द्रष्टि एकज वखते नष्ट थइ गइ छतां कोइ तेने भुलावो खवरावी शक्युं नहिं. एनी मगजशक्ति एटली बधी तीव्र हती के ते हरकोइ चीजने हाथमां लइ सारी अथवा नरसी कही शकता हता.

महात्मा टॉड साहेबे लख्युं छे के—" देशना जे स्थानपर कोइ काळे धान्य उपजाववा संभव न होय ए स्थाने धान्य उपजाववामां जे मनुष्य समर्थ होय ए धन्यवादने योग्य लेखाय छे." जो ए कहेवुं साचुं छे तो पछी जेणे कोटा राज्यना जे जे स्थळमां तृण पण न्होतुं उगतुं त्यां अनेक प्रकारना स्वादिष्ट फळ मूळथी सुसमृद्ध वृक्षोने उछेर्यां अने राजधानीनी चारे बाजुना कठिन पर्वतोपर माटी नंखावी सिंहल तथा पश्चिम महासागरना द्वीपोथी मंगावेलां अनेक प्रकारनां वृक्षो वावी उत्तम फळनी प्राप्ति करी राजराणा जालिमसिंह प्रशंसापात्र केम न थाय ? राजराणा जालिमसिंहना बागमां काबूलना शेव, मारवाडना सुप्रसिद्ध कॉंगाना बागना अनार (दाडिम), सिलहटनी तमाम जातनी नारंगी, मॉंउ गामना आंबा अने राजपुतानाना समस्त मुख्य मुख्य फळो उपरांत दक्षिणनी स्वर्ण कदली पर्यन्त चीजो मळती हती. ए वगीचाओ तथा वृक्षोमां जलदान माटे जालिमसिंहे पर्वतोना वक्षःस्थलने विदीर्ण करी विशाल कुवाओ खोदाव्या हता. एक एक कुवो खोदाववामां त्रीश त्रीश हजार रुपिआनुं खर्च थयुं हतुं. जालिमसिंह पोताना मित्रोने पण ए रीतनी सलाह आपता हता; ए उपरांत तेओ रसायण शास्त्रमां पण सारी रीते प्रसिद्धि पाम्या हता; तेओए जाते गुलाब, केतकी तथा केवडा आदिनां अतर तैयार करी सामान्य रीते वपराता अतर सामे विजय मेळव्यो हतो. उपरांत काश्मीरमांथी ऊन वणवानां यंत्रो मगावी त्यांना वणकरोने पण कोटामां तेडावी लीधा अने उत्तम प्रकारना साल दुशालाओ तैयार कराव्यां. पोताना बुद्धिबळथी तलवार आदि अनेक प्रकारनां अस्त्रो बनाववामां पण जालिमसिंहे प्रशंसा प्राप्त करी हती.

राजाराणा जालिमसिंहे पोतानी युवावस्थामां एक " जेठी " जातिना मल्लोनुं दळ एकठुं कर्युं हतुं. वार्षिक खर्च रु. ५०००० पचास हजार थतुं. ए मल्लोए दरेक राज्यना पहेलवानोने कुस्तीमां मात कर्या हता. ए अरसामां जे कोइ सारो पहेलवान त्यां आवी चडतो तेने जालिमसिंहजी पोता पासे राखी लेता. तेओ पहेलवानोनुं बाहुबळ जोता एटलुंज नहिं; परंतु व्याघ्रनखनां नवीन प्रकारे अस्त्र बनावी तेओने हाथे बंधावता अने पछी रक्तपात थाय एवी रीते युद्ध लडावता. एक वखते बुन्दीना वीरवर महाराज उमेदसिंह द्वारिकानी यात्राएथी पाछा वळती वखते कोटामां आव्या.

ए समये जालिमसिंह अखाडामां बेठा हता अने वाघनखने धारण करनारा दीर्घ आकारवाळा पहेलवानोनुं युद्ध चालतुं हतुं. महाराज उमेदसिंहना अचानक आगमनथी ए युद्ध बंध रह्युं. तोपण क्रोधायमान थएला वृद्ध महाराज उमेदसिंहे जालिमसिंहने तिरस्कारपूर्वक कह्युं के. " आम रक्तपात करावी अढळक नाणां उडावो छो ए करतां ज्ञातिबन्धुओने तेमज गरीबगरबांओने आश्रय आपवामां धननो व्यय करता हो तो केवुं सारुं? राजराणा जालिमसिंहे महाराज उमेदसिंहना उक्त कथन उपर कांइ पण ध्यान आप्युं नहि. जेथी बुन्दीना महाराजने बहुज क्रोध चड्यो. तेओए तुरतज ढालने पृथ्वीपर राखी तेमां अंगपर धारण करेलां तलवार, बन्दूक, छरी तथा रणकुठार आदि तमाम अस्त्रोने मूक्यां अने तमाम पहेलवानोने बोलावीने कह्युं के एवो कयो बहादुर छे के एक हाथथी आ ढालने उपाडी लीए पहेलवानोए एक पछी एक आगळ वधी यत्न कर्यो जोयो, छतां कोइथी ढाल उपडी नहि. अन्ते साठ वर्षनी उम्मरे पहोंचेला महाराज उम्मेदसिंहे एक हाथवती ए ढालने उपाडी लीधी अने घणा वखत सुधी तेओ एमना एम उभा रह्या. समस्त हाडाओ पोताना जातिबन्धुनुं आवुं असीम सामर्थ्य जोइ अत्यन्त आनन्द पाम्या, अने पहेलवानो लज्जाने लीधे नीचुं जोइ रह्या. त्यारथी जालिमसिंहे ए शोख तद्दन छोडी दीधो.

राजराणा जालिमसिंहे पोताना परलोकप्रयाणनी छेल्ली घडि पर्यन्त कोटानी शासनशक्तिने छोडी नहि. तेओ इ. स. १८२२ जुन. ता. २५ मीए स्वर्गवासी थया + महाराव किशोरसिंहे जालिमसिंहने आपेला वचन प्रमाणे तेओना पुत्र माधवसिंहनो कारभार कायम राख्यो.

इ स. १८२८ सं. १८८४ मां महाराव किशोरसिंहनो अपुत्र स्वर्गवास थतां तेओना न्हाना भाइ पृथ्वीसिंहना पुत्र रामसिंह कोटानी राजगादीए बेठा. त्यारबाद थोडेज दिवसे राजराणा माधवसिंहनो वैकुंठवास थता तेओना पुत्र मदनसिंह बीजा कोटाराज्यना मंत्रीपदपर नियत थया. परंतु महाराव रामसिंह साथे तेओने दरादर बन्युं नहि. वि. सं. १८९० मां ए बन्ने वच्चे वादविवाद पणो वधी गयो. महाराव रामसिंहे नामदार अंग्रेज सरकारने अरज करी राजराणा मदनसिंहने कोटामांथी दूर करवानो यत्न आदर्यो छेवटे इ. स. १८३८ मां नामदार अंग्रेज सरकारे वच्चे परी राजराणा मदनसिंहने वार्षिक १२ लाख रूपैयानी आमदानीवाळा **चौंइहाट, सकेत, चोमहला. (पचवाड. अवहोर. डिग. गंगराड,) झालरापाटन, रमचवा,**

+ कोइ कहे छे इ. स. १८२४ मां जालिमसिंहनुं मृत्यु थयुं एम जणावे छे.

कोटडाभट्टा, सुरेश, रखाई, मनोहरथाना, फूलबडोद, चाचुरणी, कंकुरनी, छीपाबडोद, शेरगढनो कांइक पूर्वांश, परवन, निवाजनो पूर्वांश अने शाहवाद नामनां १७ परगणां कोटा राज्य तरफथी अपावी तेना वंशपरंपराने माटे नियत थएलो कोटा राज्यशासन सबन्धी समस्त हक रद कर्यो. राजराणा मदनसिंहे पोतानुं जुदुं राज्य स्थाप्युं; राजधानी "झालरापाटण" मां राखी अने पोताना देशने "झालावाड" एवुं नाम आप्युं. नामदार अंग्रेज सरकारे कोटा राज्य पर नियत करेली खंडणीमांथी अंशी हजार रुपिआ ओछा कर्या अने ए रुपिआ झालरापाटणना राजराणा पासेथी लेवानो ठराव कर्यो.

इ. स. १८४५ वि. सं. १९०१ मां राजराणा मदनसिंहनो स्वर्गवास थतां तेओना कुमार पृथ्वीसिंह झालरापाटणनी राजगादीए बेठा. तेओए इ. स. १८५७ ना बळवामा नामदार अंग्रेजसरकारने अमूल्य सहायता आपी हती. इ. स. १८६४ मां तेओने नेकनामदार ब्रीटीशसरकार तरफथी झालावाडनी राजगादी माटे वगर नजराणे दत्तक लेवानी सनंद मळी हती.

इ. स. १८७७ मां भारतेश्वरी महाराणी विक्टोरीयाए "कैसरेहिन्द" नुं परम माननीय पद धारण कर्युं ते वखते दिल्हीमां म्होटा दमामथी दरबार भरायो हतो. ए प्रसंगे राजराणा पृथ्वीसिंह त्यां पधार्या हता; तेओने नामदार अंग्रेज सरकार तरफथी बादशाही वावटो एनायत करवानुं सुनिश्चित थतां ते पाछळथी लश्करी ठाठमाठ साथे तेओनी राजधानीमां पहोंचाडवामां आव्यो.

राजराणा पृथ्वीसिंहने संतान नहि होवाने लीधे तेओए वि. सं. १९२९ मां वढवाणना राजा राजसिंहना पौत्र अर्थात् केसरीसिंहना कुमार बखतसिंहने दत्तक लीधा; ए बखतसिंह वि. सं. १९३४ मां राजराणा पृथ्वीसिंहनो स्वर्गवास थतां जालिमसिंह नाम धारण करी झालरापाटणनी राजगादीए बेठा. तेओए इ. स. १८८७ मां भारतेश्वरी महाराणी विक्टोरीयानी "ज्युबीली" ना महोत्सव प्रसंगे उत्तम प्रकारे राज्यभक्ति बतावी हती. तेओश्रीने नामदार ब्रिटीश सरकारे पदभ्रष्ट कर्या छे तेथी हाल काशीपुरीमां निवास करी इश्वरभजनमां आयुष्य निर्गमन करे छे. सांप्रतसमये झालरापाटणना तख्तपर नामदार राजराणा श्री भवानीसिंहजी बहादुर बिराजे छे. जेओ श्री पोताना उत्तम गुणोवडे प्रजानुं पालन करे छे.

झालावाड (झालरापाटण) ना राजराणाने ब्रीटीश छावणीमां जती वखते पंदर तोपोनुं मान आपवामां आवे छे.

झालरापाटणनो संक्षिप्त इतिहास.

रेखता.

वढवाणना विवेकी, राजोजी मूळराजा,
वर्नो दानी दीपता'ता, मखवान वंशमाजा;
तेना कुमार त्रीजा, श्रीभावरंग भीना,
भाणेज भाग्यशाळी, ईडर महीपतिना. १

अनुकुल दैव एना, जोतां सदा जणाये,
मोसाळमां जईने, वय बालथी वस्या ए;
भावे भणी गणीने, रमणीय भाव राजे,
यौवन लही उमगे, मुखडां अपूर्व साजे. २

राठोडराज केरा, प्रियमित्र प्रेमी पूरा,
दिन एक त्यांहो आव्या, सावरनरेश शूरा;
मखवान भाव माथे, पडी दृष्टि सर्व पहेली,
नेहे निहाळी एणे, छबी शायथी भरेली. ३

भाणेजना भलामां, चाहे मति चलावी,
ईडर महीपतिए, स्थिति मित्रने सुणावी;
सावरनरेश संगे, लई भावने सिधाव्या,
निज राजधानी मांहि. आनंदधारी आव्या. ४

ए बाद भाव एना, सुगते बन्या जमाई,
सावरगढे सुरवेथी, करी भूमिनी कमाई;
माधव कुमार एना, वर युद्धना विहारी,
मोसाळनी मुदेथी, सेवा बजावी सारी. ५

दोहा.

महीपतिनो माधवपरे. सुन्दर साच्यो स्नेह:

राणीजीनां हृदयमां, इर्षा वधी अछेह. ६

रखे मारी मुज पुत्रने, माधव थाय महिप;

वात प्होंची ए विगतथी, झट झळराण समीप. ७

रजा लइ राजाजीनी, माधवसिंह महान;

स्वार संग लइ पंच शत, बुन्दी गया बळवान. ८

बुन्दीमां बळथी कर्यो, दाखल बीजो देश;

माधवपर महॉरावनुं, वधतुं हेत हमेश. ९

एक लक्षनो ए समे, गढ नानता गणाय;

माधवने दइ मान सह, राव राजी बहु थाय १०

"छप्पय."

निरखी निमकहलाल, मरण समये महॉरावे,

सत्ता सोंपी सर्व, भला माधवने भावे;

राजपुत्रनी हती, ए समे लघु अवस्था,

करी माधवे कलित, वडा राज्यनी व्यवस्था;

प्रतिनिधि वनी नृप पुत्रना, झालो जगजाहेर थया,

राजमातुनी रीसथी, गुणशाळी कोटे गया. ११

रेखता.

भुजवळथी भीम पासे, मखवान मान पाम्या,

सेनापति बनीने, कीर्ति अपार काम्या;

शौर्येथी शेर दुर्गे, सत्ता महान स्थापी,

महॉरावने मुदेथी, ए भूमि सर्व आपी. १२

ए बाद पुत्र एना, भयहारी श्रेयकारी,

मळी मदनसिंहजीने, कोटानी फोजदारी;

ए पण पिताने पेठे, पाम्या घणी प्रसिद्धि;
कुळनी प्रथा प्रमाणे, कोटाने भक्ति कीधी. १३

हिम्मत थया हठीला, आदि कुमार एना,
पितुमरण बाद प्रीते, संभाळी सर्व सेना;
महॉरावने रिझाव्या, अरिनुं गुमान गाळी,
उत्साही बन्धु एना, पृथ्वीसिंह पुण्यशाळी. १४

जालिमसिंह जन्म्या, एने त्यहां उमंगे,
रहेता सदा सुखेथी, शिवसिंह बंधु संगे;
जयपुरनी फोज जोडे, मळीने चढ्या मराठा,
हिम्मतनी हाम हेरी, निश्चय तमाम नाठा. १५

हित राज्यनु हमेशां, कौशल्यथी करीने,
स्वर्गे गया सुभागी, वर कीर्तिने वरीने;
पछी जालिमे प्रमोदे, ए स्थानने स्वीकारी,
सत्ता स्वतंत्र धारी, स्थिति राज्यनी सुधारी. १६

दोहा

भटवाडामां भुजबळे, राख्यो झाले रंग;
कछवाहाने कूटिया, जबर मचावी जंग. १७

राज्य पताका रिपु तणी, हिम्मतथी करी हाथ;
जीत मेळवी जालिमे, दळियाथी भरी बाथ. १८

एक आंखथी हीन ए, हता छता हुशिआर;
बहु समय लगि बनी रह्यो, जालिमनो जयकार. १९

हुकम जरी हाले नहीं कोटापतिनो क्यांय;
जालिमनी आज्ञा मुजब, काज राज्यना थाय. २०

सर्वोपरी सत्ता धरी, मान लहे मखवान;
तेवामां तंते थया, गादीपति गुमान. २१
प्रभुता जालिमनी प्रबळ, खटकी हृदये खास;
छिनव्यो रावे क्षणमहीं, एनो गाम गिरास २२
मातुल जालिमना महा, चालावत बलवान;
स्थाप्या एने स्नेहथी, सेनापतिने स्थान. २३
कर्यो त्याग कोटा तणो, अमित गणो अपमान;
जालिम मेवाडें जइ, म्होटुं पाम्या मान. २४
अरसी राणानो अमल, डगमगतो देखाय;
दिनप्रतिदिन विद्रोहनी, ज्वाळा वधती जाय. २५
सद्गुण जालिमना सुणो, उन्नतिनी करी आश;
अरसीराणे एहने, प्रीतें राख्या पास. २६

" छप्पय "

शूर जालिमे सद्य, सकल विद्रोह शमाव्यो,
अरसीनो अधिकार, जुक्तिथी बधे जमाव्यो;
शिथिल थया सरदार, जोर जालिमनुं जोई,
कैंक कपाई मुआ, तंतथी लडीने तोई;
आपी अरसीए तुरत, जालिमने ए जीतथी,
पदवी राजराणा तणी, पुरस्कार सह प्रीतथी. २७

रेखता.

सामन्त सर्व पाछा, राणाथी खूब रुठ्या,
महाराष्ट्रथी मळीने, असि धारी तुर्त उठ्या;
कृत्रिम महिपतिने मेवाड देश देवा,
कीधां अनंत यत्नो, अरसीनी जान लेवा. २८

जालिमनी सम्मतिथी राजी थएल राणे,
कीधी महान सेना, एकत्र एज टाणे;
उत्साह धारी युद्धे, सहु शौर्यथी छवाया,
दुर्भाग्यथी परन्तु जालिम घणा ववाया. २९
भय पामी तुर्त भाग्या, अरिसिंहजी अभागी,
विद्वेषनी वधारे, ज्वाळा प्रसिद्ध जागी;
पकडाइ शत्रुपंजे, झट चातुरीथी झाले,
करी मित्र शत्रुओने, लीधी विदाय व्हाले. ३०
लुप्तप्रतापराणा, अरसीनी आश छोडी,
आव्या त्वराथी कोटे, जालिम तंत तोडी;
आदर जरी न आप्यो, एने गुमान भूपे.
त्या होलकरनी सेना, आवी विराट रूपे. ३१
मल्हारराव केरु, दळ जोरदार देखी,
निज सैनिकोनी संख्या, लेखामहीं न लेखी;
शाणा गुमानसिंहे, युद्धे न जाणी सिद्धि,
अरि संग योजनाओ. सन्धिनी सद्य कीधी. ३२

दोहा.

सेनापतिने सोंपीयुं, कठिन सन्धिनुं काज;
बन्युं न टाळावनथी ए, थया राव नाराज. ३३
गढ कुवाधनीनो गहन, सत्वर कर्यो स्वाधीन;
मस्त मराठाओ बन्या, हाडाओ बलहीन. ३४
आपत्ति शिर आवतां, थया राव गभराइ;
जो निकट जालिम वहे, फिकर न कश्शी कांइ. ३५

सर्वोपरी सत्ता धरी, मान लहे मखवान;
तेवामां तंते थया, गादीपति गुमान. २१
प्रभुता जालिमनी प्रबळ, खटकी हृदये खास;
छिनव्यो रावे क्षणमहीं, एनो गाम गिरास. २२
मातुल जालिमना महा, झालावत बलवान;
स्थाप्या एने स्नेहथी, सेनापतिने स्थान. २३
कर्यो त्याग कोटा तणो, अमित गणो अपमान;
जालिम मेवाडे जइ, म्होटुं पाम्या मान. २४
अरसी राणानो अमल, डगमगतो देखाय;
दिनप्रतिदिन विद्रोहनी, ज्वाळा वधती जाय. २५
सद्गुण जालिमना सुणो, उन्नतिनी करीं आश;
अरसीराणे एहने, प्रीतें राख्या पास. २६

" छप्पय "

शूर जालिमे सद्य, सकल विद्रोह शमाव्यो,
अरसीनो अधिकार, युक्तिथी वधे जमाव्यो;
शिथिल थया सरदार, जोर जालिमनुं जोई,
कैंक कपाई मुआ, तंतथीं लडीने तोई;
आपी अरसीए तुरत, जालिमने ए जोतथी,
पदवीं राजराणा तणी, पुरस्कार सह प्रीतथी. २७

रेखता.

सामन्त सर्व पाछा, राणाथीं खूब रुठ्या,
महाराष्ट्रथी मळीने, असि धारी तुर्त उठ्या;
कृत्रिम महिपतिने मेवाड देश देवा,
कीधां अनंत यत्नो, अरसीनी जान लेवा. २८

जालिमनी सम्मतिथी राजी थएल राणे,
कीधी महान सेना, एकत्र एज टाणे;
उत्साह धारी युद्धे, सहु शौर्यथी छवाया,
दुर्भाग्यथी परंतु जालिम घणा घवाया. २९
भय पामी तुर्त भाग्या, अरिसिंहजी अभागी,
विद्वेषनी वधारे, ज्वाळा प्रसिद्ध जागी;
पकडाइ शत्रुपंजे, झट चातुरीथी झाले,
करी मित्र शत्रुओने, लीधी विदाय व्हाले. ३०
सुप्रतापराणा, अरसीनी आश छोडी,
आव्या त्वराथी कोटे, जालिम तंत तोडी;
आदर जरी न आप्यो, एने गुमान भूपे,
त्यां होलकरनी सेना, आवी विराट रूपे. ३१
मल्हारराव केरुं, दळ जोरदार देखी,
निज सैनिकोनी संख्या, लेखामहीं न लेखी;
राणा गुमानसिंहे, युद्धे न जाणी सिद्धि,
अरि संग योजनाओ, सन्धिनी सद्य कीधी. ३२

दोहा.

सेनापतिने सोंपीयुं, कलित सन्धिनुं काज;
वन्युं न वालावतथी ए, थया राव नाराज. ३३
गढ बुकायनीनो गहन, सत्वर कर्यो स्वाधीन;
मस्त मराठाओ वन्या, हाडाओ बळहीन. ३४
आपत्ति शिर आवतां, गया राव गभराइ;
जई निकट जालिम कहे, फिकर न करशो कांइ. ३५

हुंथी मराठा होलकर, सदैव राखे स्नेह;
करवुं शुभ कोटातणुं अधिक न जाणे एह. ३६
जाणे जालिमसिंहना, गुण महॉराव गुमान;
उक्त कार्यमां योजीया, महद् आपीने मान. ३७
मळ्या होलकरने मुदे, जालिम जुक्तिराज;
सुखदायक सन्धितणुं, कर्युं सफळ सहु काज. ३८
झट रावे झलराणने, दई भूमिनुं दान;
फोजदारनुं पद फरी, आप्युं तजी अभिमान. ३९
लघु वयना निज बालने, गुमान रोग ग्रसित;
गुणी जालिमनी गोदमां अर्पी थया अमीत. ४०
गया स्वर्गमां जे समे, गुणनिधि राव गुमान;
प्रतिनिधि बालभूपालना, मान्य थया मखवान. ४१
नरवर नृप वंशीथी लडी, राखी पुरातन रीत;
कबज केलवाडा कर्युं, लही जालिमे जीत. ४२

"छप्पय"

शासन करुं सर्व, काज मकवाणो करता,
कोटाना सामन्त, वनी, विद्वेषी विचरता;
राजकीय जन हृदय, खूब जालिम खटकता,
वांधी विचार विरुद्ध, प्रजाजन शीश पटकता,
अनेक खटपट आदरी, सहुए मळी छळवळ सहित;
पण प्रतापी जालिम रह्या, भेदनीतिथी भय रहित. ४३

रेखता.

निशदिन अपार नेहे, झाले ममत्व मानी,
विधविध रीतें वधारी, कोटानी आमदानी;

अधिकार पामी उंचो, सहुपर चलावी सत्ता;
चित्तथी कदी न चूक्या, महॉरावनी मइत्ता. ४४
प्रिय समयने पिछाणी, करता गतिमतिथी,
कॅरी घरनी खूब खेती, धन मेळव्युं धृतिथी;
घडि सिन्धियानी संगे, मळी एकमेक थाता,
महाराष्ट्र साथ मैत्री, कॅरी क्षेमथी छवाता. ४५
वहु हेत होळकरथी, बांधी सुकाज साधे,
वळी समय पामी सारो, वळवान वैर बांधे:
युक्ति प्रयुक्तिओथी, विघ्नो तमाम वाम्या,
अंग्रेजना अमलमां, परिपूर्ण मान पाम्या. ४६
मरतां लगी न एने, अविनाशी याद आव्या,
पच्चाशॉ वर्ष पूरां, व्यवसायमां विताव्यां;
आत्मज महान एना, माधव हता मनस्वी,
राजे किशोर रुडा, नृप आसने यशस्वी. ४७
एणे उदार चित्ते, कोटानुं कारभारुं,
माधव करे मुदेथी, सोंप्युं विचारी सारुं,
वहु माधवे वजावी, स्नेहेथी राज्यसेवा,
काळे लइ थया ए, महॉकाळना कलेवा. ४८

दोहा.

माधव पेहेलां मृत्युवश, थया अपुत्र किशोर;
रामरावनुं ए पछी, जाहिर जाम्युं जोर. ४९
माधवसुत मंत्री पदे, मदनसिंह मखवान;
भोगवता सत्ता भली, गहेरुं धारी ज्ञान. ५०
अणवनाव ए उभयमां, प्रसर्यो पारावार;
व्हाल धरी वच्चे पड्या, सद्यब्रिटीश सरकार. ५१

कर्या अलग कोटा थकी, प्रगणांओ प्रत्यक्ष;
सत्तरनी आवक सुभग, लेखी द्वादश लक्ष. ५२

झट अर्पी झलराणने, पार पाडी तकरार;
नामदार सरकारनो, उभयपरे उपकार. ५३

" छप्पय. "

मकवाणे मनहरण, झालरापाटण झांखी,
महद बांधिया महेल, राजगादी त्यां राखी;
झालावाड वसावी, मदन महिपाल विराजे;
पछी भूप पृथीसिंह, भव्य छवि धरीने भ्राजे.
बंड समे भुजदंडथी, अमित इाम धारी उरे;
आश्रय दइ अंग्रेजने, वचावीया ए व्हादुरे. ५४

सवैया एकत्रीशा

कर्युं राजराणा पृथीसिंहे, रही अपुत्र परलोके प्रयाण,
वखतसिंह वढवाणथी आव्या दत्तक सुत बनो परम सुजाण;
जालिम नाम धरी जग जाहेर काप्यां निज रैयतनां कष्ट,
पण कंइ कारणसर सरकारे पाछळथी कीधा पदभ्रष्ट. ५५

काशी निवास करी कोडे ए गुणीअल आयुष गाळे छे,
हाल भवानीसिंह भूपति प्रजा वर्गने पाळे छे;
उदारता आदि गुण उत्तम धारण करीने धर्मनिधान,
स्वल्प समयनी अंदर सारुं महिमंडलमां पाम्या मान. ५६

रहो झालरापाटण मांहे अचल सदा झलराणनुं राज,
भूप भवानीसिंह पामजो दिन प्रतिदिन आयुष्य दराज;
आत्मिक जन सह सदैव एने सुंदरवर सुखमां स्थापे,
नेहधरी नथुराम निरंतर ए रीते आशिष आपे. ५७

The Thakore Saheb Shri Vakhatsinhji Saheb, C S I,
Sayla (Kathiawar)

[illegible] Art, Bombay
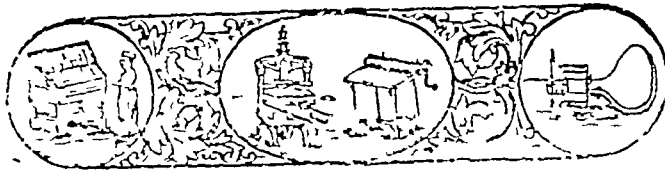
एकत्रिंशत् तरंग.

" मनहर "

हळवदना फटाया शूरा शेषमाल हता,
तेओए स्वतंत्र राज्य सायलानुं स्थाप्युं छे;
कहे नथुराम एणे अनहद बाहु बळे,
कैक काठीओना कुळ केरुं मूळ काप्युं छे;
हाल एना वंशमां छे तख्त पोते वख्तसिंह,
जेणे दीर्घ आयुषने मोद धरी माप्युं छे.
झाला वंशवारिधिमां आपना कुटुंबीओने,
अमर नरेश अमे योग्य स्थान आप्युं छे.

स्वस्थान ध्रांगध्रा राज्यना महाराजा रायसिंहजी बीजाना पाटवी कुमार गजसिंहजी ध्रांगध्रानी राज गादीए रह्या अने तेथी न्हाना कुमार मेरामणजी उर्फे मेरुजी तथा शेषमालजीने "माथक" नामनुं गाम गरासमां मळ्युं. शेषमालजी महान् शूरवीर अने साहसिक हता; तेओए पोताना म्होटा भाइ मेरुजी साथे कांइ अणबनाव थवाथी माथकनो गरास मूकी दीधो, अने ध्रांगध्रा उपर बहारवटे निकळ्या; जेथी ध्रांगध्राना नामदार राजसाहेबे तेओने नारीचणा नामनुं गाम स्वतंत्र उपभोग करवा आप्युं.

शेषमालजी हळवदमां पोताना ज्येष्ठ बन्धु राज गजसिंहजीनी हजुरमां रहेता हता. गजसिंहजी निर्बळ होवाने लीधे शेषमालजीए हळवदनी गादी पचावी पाडवानो यत्न करवा मांड्यो. ए गुप्तवात राज गजसिंहजीना जाणवामां आवतां तेओ तुरतज वाघेलोना राणा कलाभाइ पासे जइ पहोंच्या अने तेओनी सहायता मेळवी शेषमालजी पासेथी तेओए हळवदने हस्तगत कर्युं. शेषमा-

लजी हळवदमांथी निकळ्या ए वखते ध्रांगध्रामां राज गजसिंहजीनां राणी जीजीबा तथा कुमार जसवतसिंहजी रुडो रीते राजतंत्र चलावता हता. तेवामां राणी जीजोवाने पोताने पीयर (वरसोडे) जवानुं थयुं. ए तकनो लाभ लइ शेपमालजी ध्रांगध्राना धणी थइ बेठा. ए वात राणो जीजोवाना जाणवामां आवतां तेओए काठियावाडमां पेशकसी उघरावना आवेल पेशवा सरकारनां लश्करनी तेमज राधनपुरना बावोनी अने सायलाना काठी लोकोनी सहायता मेळवी ध्रांगध्राने घेरो घाल्यो; ए घेरो लांबी मुदत सूधी रह्यो. ज्यारे तेना सामुं टकी शकवानुं सामर्थ्य न रह्युं त्यारे शेपमालजीए ध्रांगध्रानो कबजो छोडी दीधो; परंतु जे काठि लोको जीजोबानी मददमां रही पोतापर हल्लो करवामां सामेल हता, तेओने दंड देवाना इरादाथी शूरवीर शेपमालजीए वि. सं. १८०७ मां ए लोको पर चढाइ करी अने प्रचंड बाहुबळथी प्रतिपक्षीओने परास्त करी तेना सायला नामना गाममां पोतानी सबळ सत्ता स्थापी. तेमज दुश्मनो दक्षिण तरफथी पोताना प्रदेशमां दाखल थइ अत्याचार न करी शके एवा हेतुथी तेओए त्यांज किल्लो बंधावी राजधानी जमावी अने आजुबाजुना मुलकने पण स्वाधीन करी लीधो अने वि. सं. १८०९ मां २६ वर्षनी अवस्थाए सायलानी राजगादीए बेठा.

आ रीते शूरवीर शेपमालजीए स्वकीय बाहुबळथी नारीचाणा नामे गाम मेळव्युं. प्रबळ पेशवा सरकार तथा बहादुर बाबीना लश्कर सामे एकले हाथे टक्कर झीली अने सायलानो स्वतंत्र तालुको बांध्यो. स्वल्प समयमांज शेपमालजीए अनुपम शौर्यथी उत्तम लाभ मेळव्यो; भाट चारणो तेनी वीरताना वखाण करवा लाग्या. अहीं जणाववानी आवश्यक्ता छे के कोइएक चारणे कोटडा सांगाणीना तालुकदार जसाजी पासे शेपमालजीनी वीरताना वखाण कर्यां त्यारे जसाजीए शेपमालजी तरफ तिरस्कार बतावी कह्युं के " ए ससलाथी शुं थाय ? " आ वात गोंडलना ठाकोर कुंभाजीने काने जतां तेओए शेपमालजीने बोलावी उश्केर्या. शेपमालजीए कह्युं के " तमो कोटडानी वार न करो तो हुंज जसाने जोइ लउं " कुंभाजीए वचन आप्युं के हुं कोटडाने कोइ पण प्रकारनी मदद नहि आपुं. आ अरसामां जसाजीए कोटडामांथी खुमाणोने काढी मुक्या हता, ए खुमाणो तथा आणंदपुर अने भीमोराना काठीओनी मदद मेळवी वि. सं. १८२१ मां शेपमालजीए कोटडा पर चढाइ करी, ए वातनी जसाजीने जाण थतां ते लश्कर लइ सामा आव्या अने कोटडाथी आठ माइल दूर राजपीपळा नामना गाम पासे महा भयंकर युद्ध थयुं; तेमां जसाजी तथा सरतानजी काम आव्या अने शुरवीर शेपमालजी विजय मेळवी पाछा आव्या.

त्यारबाद शेषमालजीने ध्रांगध्रा साथे अणबनाव छे एम धारी काठी लोकोए ध्रांगध्राना ढोर वाळ्यां. ए वातनी शेषमालजीने जाण थतां तेओए ध्रांगध्राना संदेशानी राह नहि जोतां काठीओ पाछळ जइ धींगाणुं कर्युं. तेमां पोते घणाज घायल थया छतां काठी लोकोने हरावी ढोरने हस्तगत कर्या अने एज वखते ध्रांगध्रे मोकली आप्यां. शेषमालजीना उक्त कार्यथी प्रसन्न थएला राज गजसिंहजीए तेओने " लीया " नामनुं गाम पारितोषिक तरीके आप्युं.

वीरवर शेशमालजी जामनगरना महाराजा जामसाहेबनां कुंवरी साथे परण्या हता. एवुं कहेवाय छे के जामनगरथी कोइएक ब्राह्मण ध्रांगध्रे जतो हतो, शेषमालजी ध्रांगध्रेथी वळतां सोधसर नामना स्थळ आगळ वडनी छायाए बेठेला हता. तेओए पेला ब्राह्मणने जोइ पूछ्युं के " महाराज ! क्यां जाओ छो ? ब्राह्मणे प्रत्युत्तर आप्यो के ध्रांगध्राना राजकुमार साथे जामजादीनुं सगपण करवा जाउं छुं. आ वखते शेषमालजीए पोते ध्रांगध्राना राजकुमार छे एवुं प्रतिपादन करी ब्राह्मण पासेथी माळा विगेरे मांगलिक द्रव्यो लीधां अने विप्रने विदायगीरी आपी. बाद ज्यारे तेओनां लग्न थयां त्यारे जामनगरथी पुष्कळ मालमत्ता मळी अने तेमांथी तेओए सायलानो गढ बंधाव्यो.

शेषमालजी एवा पराक्रमी हता के तेओना राज्य सामे कोइ दृष्टिपात पण करी शकता नहि. ए वीरनरे वि. सं. १८५० मां कैलासवास कर्यो. ते वखते तेओना काकोभाइ उर्फे विक्रमातसिंहजी, वजोभाइ, जीजीभाइ दादोभाइ तथा कलाभाइ नामना पांच कुमार हता. शेषमालजी पोतानी हयातीमांज कुमार जीजीभाइ, दादाभाइ तथा कलाभाइ ए त्रण वच्चे गाम " लीया " अने वजाभाइ तथा विक्रमातसिंहजीना फटाया कुमार जेठीभाइ तथा अलुभाइ ए त्रण वच्चे गाम " नारीचाणा " गरासमां आपता गया हता.

वि. सं. १८५० मां ठाकोर विक्रमातसिंहजी सायलानी गादीए बेठा, तेओने मदारसिंहजी उर्फे वखतसिंहजी नामना एक पाटवी कुमार तथा हठीभाइ, जेठीभाइ अने अलुभाइ नामे त्रण फटाया कुमार हता. ज्यारे विक्रमातसिंहजी तख्तनशीन थया त्यारे तेओनी उम्मर आशरे ४४ वर्षनी हती. वि. सं. १८५४ मां काठिआवाडनी अंदर पेशकसी उघराववा माटे गायकवाड सरकारना सेनापति शिवराम गार्दीनुं लश्कर आव्युं हतुं. ते फरतुं फरतुं सायले आव्युं. वीक्रमातसिंहजीए खंडणी आपवानी ना कही, जेथी युद्ध थयुं, लगभग एक मास पर्यन्त लडाइ चाली. तेमां वडोदराना लश्करनुं कांइ वळ्युं नहि. तेना सेनापति शिवराम गार्दीए भेदुनी सलाहथी सायलाना महाल सराने

हाथ करवा प्रयाण कर्युं. वीकमातसिंहजीए तेना पाछळ माणसो मोकल्यां अने जमावंधीनो आंकडो मुकरर करी आप्यो, जेथी लडाइ वंध थइ. तेओए पोताना देशनी सारी रीते आवादी करी हती तथा शहेरमां एक सुशोभित महेलात वंधावी हती.

वि. सं. १८६९ मां वीकमातसिंहजीनो वैकुंठवास थतां तेओना पाटवीकुमार मदारसिंहजी पहेला सायलानी राजगादीए वेठा, एओए मात्र एकज वर्ष राज्य कर्युं. तेओ ४४ वर्षनी वये तख्तनशीन थया हता. तेओना आतोजी, वावोजी उर्फे शेषमालजी, चांदोजी, भारोजी तथा रायसिंहजी नामे पांच कुमार हता. वि. सं. १८७० मां मदारसिंहजीए परलोक प्रयाण कर्युं. त्यारे तेना कुमार आतोभाइ सायलानी राजगादीए वेठा. अने चांदोजी, भारोजी रायसिंहजी तथा वीकमातसिंहजीना पुत्र हठीभाइ ए चारे वच्चे खाटडी नामनुं गाम गरासमां मळ्युं.

वि. सं. १८९२ मां आताभाइनो निःसंतान स्वर्गवास थतां तेओना वन्धु वावोजी उर्फे शेषषमालजी बीजा बत्रीश वर्षनी उम्मरे सायलानी गादीए वेठा. तेओने केसरीसिंह तथा हरिसिंहजी नामे वे कुमार थया. तेमां हरिसिंहजीने आयाडेरीवाळा गरासमां मळ्युं. परंतु पाछळथी तेओ निर्वंश गुजरी जवाथी तेनो गरास दरबार दाखल थयो.

वि. सं. १८९५ मां शेषमालजीनो स्वर्गवास थतां कुमार केसरीसिंहजी सायलानी राजगादीए वेठा. ते वखते तेओनी उम्मर पंदर वर्षनी हती. तेओ बुद्धिशाळी, विवेकी तेमज राजकाजमां कुशळ हता. तेओना वखतमां रेवन्युखातानी रीतिमां तथा खेतीवाडीमां घणो सुधारो थयो हतो. तेओए पोतानी कुंवरीओने लाखो रुपिआनो व्यय करी म्होटां राज्योमां वराव्यां हतां. कुंवरी वाइसाहेबवाने नवानगरना दानवीर जामविभाजी साथे, कुंवरी माजीवाने पोरवंदरना राजकुमार माधवसिंहजी साथे, कुंवरी केसांवा तथा वाइराजवाने राजकोटना ठाकोर साहेबश्री वावाजीराज साथे अने कुंवरी हमजीवाने मोरवीना ठाकोर श्री वाघजी साथे परणाव्यां हतां. ए केसरीसिंहजीना वखतमां १८८६ मां लीया वावतनो तकरार उठतां न्हाना भाइ म्होटा भाइ वच्चे म्होटुं वहारवटुं थयुं हतुं. ए पण ठाकोर केसरीसिंहने हाथेज पार पडेलुं हतुं. ए ठाकोर अनन्य शिवभक्त हता, तेओए सायला तळपदनो जीर्ण थइ गएलो पश्चिम तरफनो किल्लो पडावी नवो वंधाव्यो तथा गामनी आ-

---

१ कहे छे के वीकमातसिंहजीए वि. सं १८५१ मां महालसरामां दरवारगढ अने वि. सं. १८५९ मां गाम फरतो गढ वंधाव्यो हतो.

Kumar Shri Madarsinhji Saheb,

Heir-Apparent—Sayla

Lakshmi Art Bombay

थमणी दिशाए तळावना कांठा उपर एक काशीविश्वनाथनुं दिव्य देवालय बंधाव्युं, तेमां चार धर्मशालाओ करावी, अने वच्चेना चोकमां पत्थरनी लादी नंखावी मन्दिरने विशेष शोभायमान बनाव्युं. तेमज डोलीयामां एक मुसाफरी बंगलो बंधाव्यो.

वि. सं. १९३७ मां ठाकोर केसरीसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना कुमार प्रतापसिंहजी उर्फे वखतसिंहजी तख्तनशीन थया. तेओ हालना सुधरेला धोरणपर राज्यनो कार्यभार चलावे छे; तेओने मदारसिंहजी, कल्याणसिंहजी, मेरुभा, देवुभा, वजुभा तथा भनुभा नामे छ कुमार थया छे. ते तमामने समयानुसार सारी केळवणी आपवामां आवे छे पाटवीकुमार मदारसिंहजीए कींग कॉलेजमां अने बाकीना पांच बन्धुओए वढवाण गराशीआ कॉलेजमां पोतपोताना दरज्जाने छाजती केळवणी मेळवेली छे. जेने परिणामे हालमां पाटवीकुमारे राज्यना लगभग समग्र कारभारनो बोजो उठावी लीधो छे, कुमार कल्याणसिंहजी एकटींग कारभारी तरीके काम चलावे छे, कुमार मेरुभा राजकोट तथा जामनगर स्टेटमां कंपेनीयन तरीके काम करी जाम जसाजीना ए. डो. सी. नो मानवंतो होद्दो भोगवी चुक्या छे, कुमार वजुभा राजकोट कींग कॉलेजमां वींग मास्तरनुं काम करे छे. कुमार भावसिंहजीए थोडा वर्ष सायलामां पोलीस सुपी. नुं काम कर्या बाद वडोदरामां लश्करी केळवणी लीधेली छे, अने कुमार देवीसिंहजी हाल पोलीस सुपी. तरीके काम करे छे. श्रीयुत् ठाकोर वखतसिंहजीए जमानाने ओळखी पोताना कुंवरोने योग्य केळवणी आपी एनुं ए परिणाम छे. तेओए पोताना राज्यमां दरबारगढ सामे एक कन्याशाळा बंधावी छे तथा शहेर बहार लोकोपयोगी एक पब्लीक गार्डन बनावी छे तेमज राजगढमा पण कचेरीनुं मकान घणुं सारुं बनाव्युं छे अने तळपदमां लोकोपयोगी एक चरीटेबल डीस्पेन्सरी बंधावी छे, तथा चोरवीरा अने सरा वगेरेमा बंगलाओ बनावी गामोने सुधार्यां छे.

वखतने ओळखनारा ठाकोर वखतसिंहजीए पोताने हाथेज सघळा कुमारोने निम्नलिखित गरास वहेंची आप्यो छे.

कुमार कल्याणसिंहजी तथा वजुभाने "भगोइ" तथा "धाराडुंगरो".

कुमार मेरुभाने "हडाळा" तथा "सोरीभडा."

कुमार देवुभाने तथा भावुभाने गाम "राणीपाट" तथा "खाखराथल".

ए तमाम गामोमां ठाकोर वखतसिंहजीए कुमारोने रहेवा माटे स्टेटने खर्चे किल्लाबंध बंगलाओ बंधावी आप्या छे तथा पोताना पिताने पगले चाली कुंवरी श्री मोटाबासाहेबने कच्छना महा-

राओ श्री खेंगारजी साथे तथा वीजां कुंवरीने वांसदाना महाराजासाहेब साथे म्होटी धामधूमथी परणाव्यां छे अने तेमां लाखो रुपिआनुं खर्च कर्युं छे.

पाटवीकुमार मदारसिंहजीने करणसिंहजी, कनकसिंहजी, मानुभा तथा दीपुभा नामना चार कुमार छे.

कल्याणसिंहजीने माधुभा तथा चंदुभा नामे बे कुमार छे.

देवीसिंहने नटवरसिंहजी तथा चन्द्रसिंहजी नामना बे कुमार छे.

वजुभाने प्रतापसिंह, फतेसिंह तथा तख्तुभा नामना त्रण कुमार छे.

सायला.

रोळावृत्त.

पांत्रीशमी पेढीए, महिप हरपालथी मांडी,
थया गुणी गजसिंह, क्षत्रीवट कदी न छांडी;
ध्रांगध्रानुं राज्य, भोगवे भाव धरीने,
धर्म धुरंधर धीर, आपता भीति अरिने. १

शेषमालजी हता, बन्धु एना बहु शूरा,
साहस केरा सिन्धु, प्रतापी पूरेपूरा;
एणे असि धरी अमित, दुःख काठीने दीधुं,
चोपे करी चढाइ, सायला स्वाधीन कीधुं. २

दोहा.

सांगाणीने कोटडे, आव्यो चारण एक;
शेषमालनी स्तुतितणा, उचर्यो शब्द अनेक. ३

तिरस्कार पूर्वक तुरत, इर्षा धरी उरमांय;
कोपी जसाजीए कह्युं, ससलाथी शुं थाय. ४

गोंडलमां ए वात गइ, कुंभाजीने कान;
शेषमालने सूचव्युं, आम थयुं अपमान. ५

सत्वर सेना साजीने, शेषमालजी शूर;
गया कोटडे गर्वथी, मकवाणा मशहूर. ६

रोळावृत्त.

राजपीपळा पास, महद संग्राम मचाव्यो,
कंथ कोटडातणो, काम ए समये आव्यो;
विजय मेळवी वळ्या, सायलानाथ सुखेथी,
निकळ्यो जय जयकार, महद बन्दीओ मुखेथी. ७

सुदृढ गढ सायले, बहु खरचे बंधावो,
शेषमाळ ल्हो समयॅ, स्वर्गमां गया सिधावो;
वडा पुत्र विक्रमात, एहना अति उमंगी,
पुख्त वये ग्रही पाट, राजता रणना रंगी. ८

दोहा.

शिवाराम गार्दीतणुं, अनीक धारी आश;
सत्वर आव्युं सायले, खंडणो लेवा खास. ९

एक मास लगी एहथी लड्या वीरविक्रमात;
सरापरे शत्रु जतां, करी अंत कबुलात. १०

विजयी विक्रमाते कर्युं, परलोकमां प्रयाण;
आदि तनुज एना थया, गादीपति गुणजाण. ११

मदारसिंहजी मनहरण, नरपतिनु शुभ नाम;
अल्प समय करी राज्य ए, धीर गया सुरधाम. १२

पुत्र पाटवी एहना, उत्तम आता भाइ;
तुरत आवीया तख्तपर, क्षितिमां कीर्ति छवाइ. १३

रोळावृत्त.

सुखदायक सायले, वृक्ष उन्नतिनुं वावी,
आताभाइ अपुत्र, स्वर्गमां गया सिधावी;
ए पछी एना अनुज, शेपमाले ग्रही गादी,
कलित देशनी करी, अमित रीते आवादी. १४
केसरिसिंह कुमार, वडा एहना वखाणो,
कर्यां धर्मनां काज, आज लगि छे एंधाणो;
चतुरपणे चिरकाल, चाहथी राज्य चलाव्युं,
निर्मळ कुळने नित्य, दीर्घ द्रष्टियी दिपाव्यु. १५

दोहा.

आत्मज एना ए पछी, परम सुभागी प्रताप;
स्वामी सायलाना थया, छापी सुयशनी छाप. १६
वखतसिंहजी नामवर, धारण करी धरी धर्म;
सुधरेला धोरणपरे, करे राज्यनां कर्म. १७
आपे छे आनंदथी, सुज्ञोने सन्मान;
दीर्घायु दिनदिन वनो, माननीय मखवान. १८
पामीने युवराज पद, मुदभर सिंहमदार;
वहन करे छे व्हालथी, भव्य राज्यनो भार. १९
तख्त सायलाने तपो, वखतसिंह विद्वान;
नेह धरी नथुराम कवि, गाय सदा गुणगान. २०

H. H. THE THAKORE SAHEB JORAWERSINHJI, CHUDA

... ART WORKS
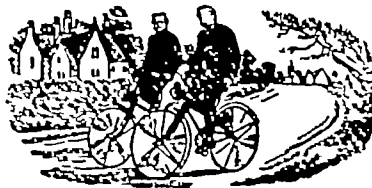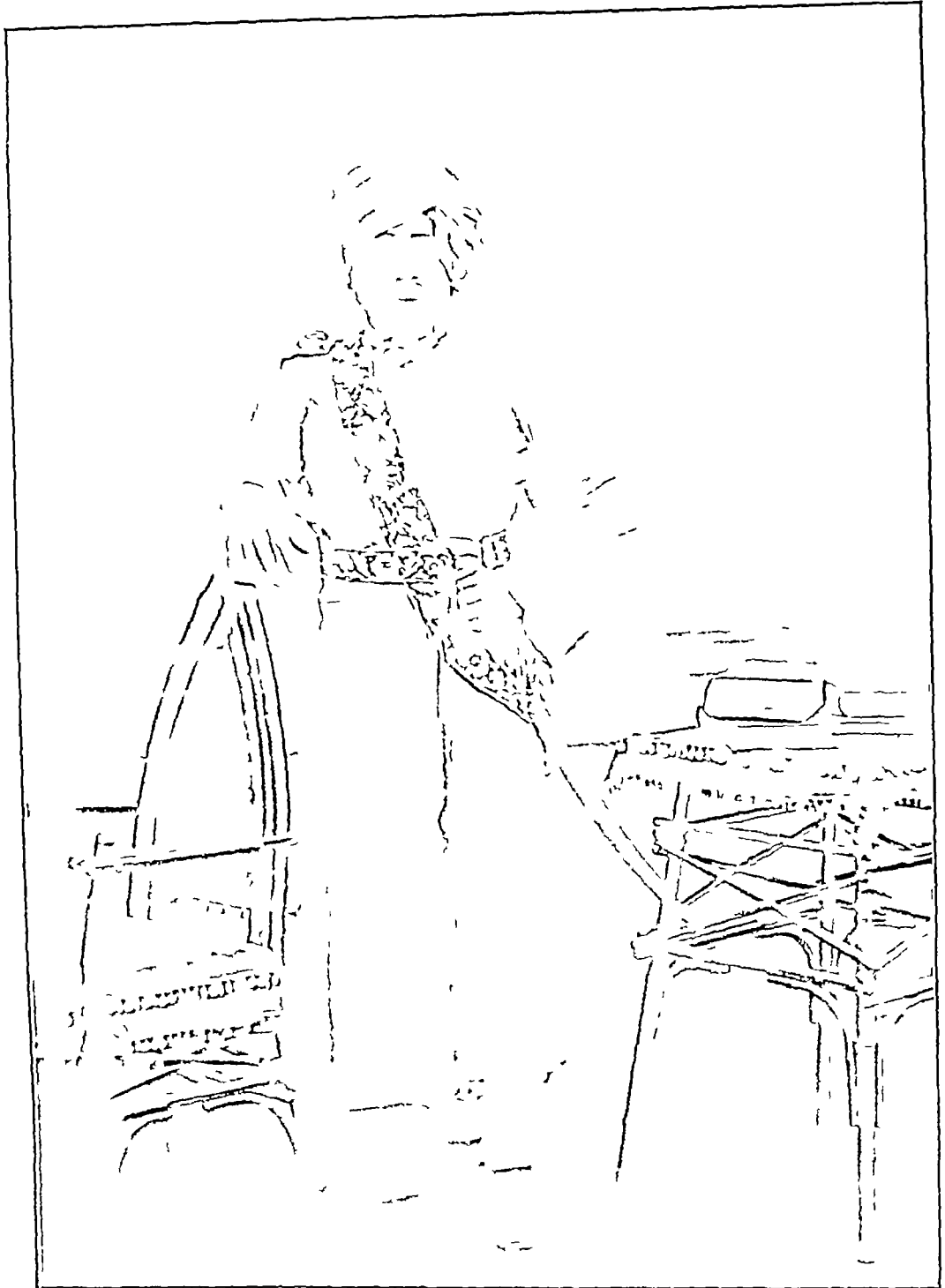
द्वात्रिंशत् तरंग.

चूडा.

छन्द हरिगीत.

चूडा, थळा, ने रामपर, वळी मेघपर वखणाय छे,
अजमेरीया झाला अदेपरना रहीश गणाय छे;
नथुराम निजकुळनी कथा सुणी जबर यशथी जामजो,
अमरेश ! उदय अपार सहपरिवार प्रतिदिन पामजो.

वढवाणना मुख्य राज्यकर्ता राजाजीने भावसिंहजी नामे कुमार हता. ए भावसिंहजीने अत्यन्त न्हानी अवस्थाए इडर लइ जवामां आव्या अने ज्यारे तेओ उम्मरलायक थया त्यारे साव रगढना राजाए तेओनी साथे पोतानी पुत्रीने परणाव्यां. एनाथी कुमारे माधवसिंहजीनो जन्म थयो. ए माधवसिंहजीए बुन्दी तथा कोटाना महाराजाओनी सेवा बजावी महान प्रतिष्ठा मेळवी, तेओने मदनसिंहजी, अर्जुनसिंहजी, तथा अभेसिंहजीए वढवाण आवी पोताना पितृव्य भगवतसिंहजीने मारी नांख्या अने त्यांनी राजगादीने हस्तगत करी. ए वखते वढवाण तथा चूडा नीचे बार बार गांमो हतां अने ए चोवीशी एकज गणाती हती. ज्यारे ए बन्ने भाइओ वच्चे गरासनी वेचण थइ त्यारे अर्जुनसिंहजीना भागमां वढवाण अने अभेसिंहजीना भागमां चुडा आव्युं.

ठाकोर अभेसिंहजीए वि. सं. १७६३ मां चुडामां राजगादी स्थापी, तेओने रायसिंहजी, उमेदसिंहजी तथा राजसिंहजी नामना त्रण कुमार थया. वि. सं. १८०६ मां ठाकोर अभेसिंहजी स्वर्गवासी थया त्यारे तेओना पाटवीकुमार रायसिंहजी चुडानी गादीए बेठा. कुमार उम्मेदसिंहजीने "मेमकुं[१]" तथा रायसिंहजीने "भेशजाळ" नामनुं गाम गरासमां मळ्युं.

रणरसिक ठाकोर रायसिंहजी चुडे राज्य करता हता ए वखते काठी लोकोए त्यांना पशुओने वाळ्यां; ठाकोर रायसिंहजी वारे चड्या, जबरुं धींगाणुं थयुं. रक्तनी प्यासी तलवारो

[१] मेमकुं छुट्या बाद उमेदसिंहजीने चुडा तरफथी करमड नामनुं गाम मळ्युं हतुं.

महाकाळनी शक्ति माफक रणांगण रुपी रंगभूमिपर नृत्य करती अनेक योद्धाओने अचेत बनाववा लागी अने पोतानी तीक्ष्ण धाराख्पी प्रज्वलित पावकशिखामां तेजस्वी नरोना सुवर्ण सरखां शरीरने तावबा लागी, काठीओनो कच्चरघाण वळी गयो; ठाकोर रायसिंहजीने पण मोक्षनो मार्ग मळी गयो. ए वखते तेओनी साथे राणावत, सजोजो, वाघेला जीवणजी अने झाला कशळोजी पण काम आव्या. श्रीमान् रायसिंहजीए दश वर्ष राज्य कर्युं; तेओने गजसिंहजी, कशळसिंहजी, वेरोजी तथा पृथीराजजी नामे चार कुमार हता.

वि. सं. १८१६ मां काठी लोको साथे धींगाणुं थतां ठाकोर रायसिंहजीए परलोक प्रयाण कर्युं त्यारे पाटवी कुमार गजसिंहजी चुडानी गादीए बेठा. कशळसिंहजी तथा पृथीराजजी निःसंतान स्वर्गवासी थया. वेराजीने गाम "मीणपर" नो गरास मळ्यो.

ठाकोर गजसिंहजीए वीश वर्ष पर्यन्त चुडानी प्रजानुं लालन पालन कर्युं; तेओने हठीसिंहजी, भावसिंहजी, दोलतसिंहजो, अभेसिंहजी तथा वखतसिंहजी नामे पांच पुत्र थया. वि. सं. १८३६ मां गाम चाशका मध्ये काठी लोको साथे धींगाणुं थतां गुणज्ञ ठाकोर गजसिंहजी काम आव्या; जेथी ज्येष्ठ कुमार हठीसिंहजीए चुडाना राज्यनी लगाम हाथमां लीधी. तेओना भाइ भावसिंहजी तथा दोलतसिंहजी निर्वंश गुजरी गया. अभेसिंहजीने गाम "भडकवा" तथा वखतसिंहजीने "वेळावदर" गरासमां मळ्युं.

ठाकोर हठीसिंहजी बहुज हिम्मतवाळा हता, तेओने अभेसिंहजी, नाहरसिंहजी तथा रतनसिंहजी नामना त्रण कुमार थया. ठाकोर हठीसिंहजीनो कैलासवास थतां कुमार अभेसिंहजी चुडानी गादीए बेठा. नाहरसिंहजीने गाम चाचका तथा रतनसिंहजीने गाम वाणीयावदरनो गरास मळ्यो.

ठाकोर अभेसिंहजीना वखतमां राज्य तेमज प्रजानी स्थिति आबाद हती, तेओने रायसिंहजी तथा उमेदसिंहजी नामना बे कुमार थया श्रीमान् अभेसिंहजीनो स्वर्गवास थतां कुमार रायसिंहजीने चुडानी गादी मळी. तेओए कुशळतापूर्वक राजकाज करी कुळनी

---

१ कोइ स्थळे भवोजी एवुं नाम आपेलु छे.

२ उमेदसिंहजीने गरास मळ्यो होय एवुं जणातुं नथी; जेथी तेओ निःसंतान गुजरी गया हशे एवुं अनुमान थाय छे.
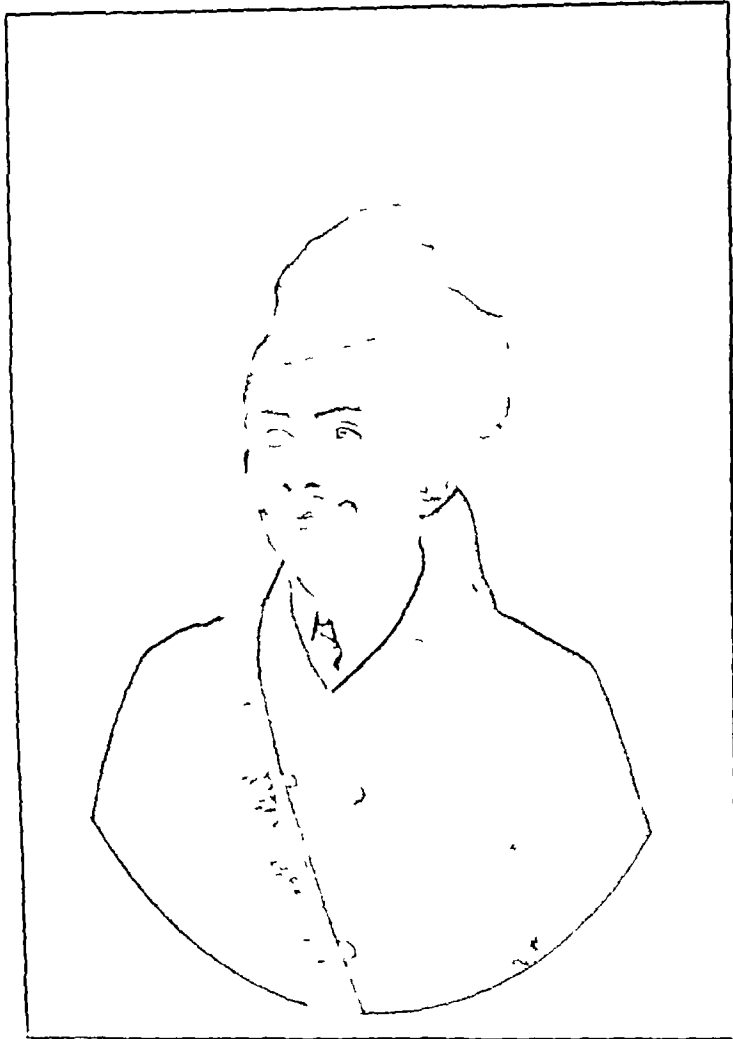
His Late Highness Thakore Saheb Madhavsinhji, Chuda

लाज वधारो अने प्रीति पुरःसर रैय्यततुं संरक्षण करी राज्यनी स्थिति सुधारी; तेओने वहेचरसिंहजी तथा वखतसिंहजी नामे वे कुमार थया.

वि. सं. १९१० मां रायसिंहजी स्वर्गवासी थया त्यारे कुमार वहेचरसिंहजी चुडानी गादीए वेठा अने वखतसिंहजीने गरासमां गाम झींझावदर मळ्युं. ठाकोर वहेचरसिंहजीना कुमार माधवसिंहजी अने तेना कुमार जुवानसिंहजी थया. माधवसिंहजी तो कुंवरपदेज गुजरी गया; जेथी ठाकोर वहेचरसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना पौत्र जोरावरसिंहजी चुडानी गादीए वेठा.

थळा

राज हरपालदेवजीथी वारमी पेढीए थएला राजपद्मसिंहजीना कुमार उदेसिंहजी वि. स. १३९६ मां पाटडीनी गादीए वेठा, तेओने पृथीराजजी तथा वेगडजी नामना वे कुमार थया. वेगडजीनुं सगपण चितोडना महाराणा लक्ष्मणसिंह (लाखा) जीना कुवरी साथे थयुं हतुं. पाटडीथी ठ्येवाळे परणवा माटे कुमार वेगडजीनी जान चित्तोड जइ पहोंची. म्होटी धामधूम साथे लग्नक्रिया समाप्त थया वाद लाखाराणाए पाटडोना प्रधान पुरुषोने पूछयुं के राज पद्मसिंहजीना वे कुमार छे, तेमांथी पाटवी कोण ? ए वखते जानैयाओए जणाव्युं के पाटवी कुंवरतो पृथीराजजी छे. आ सांभळी राणाजीए वरातने विदाय करती वखते पोताना पांच हजार स्वारोने पाटडी मोकल्या अने पृथीराजजीने प्रपंचथी पदभ्रष्ट करी कुमार वेगडजीने वि. सं १४११ मां पाटडीना तख्तपति वनाव्या. पाटवी कुमार पृथीराजजीए वहारवटुं खेडवा मांडयुं अने स्वल्प समयमांज वाहुवळथी पाटडीना राज्यमां महान् खळभळाट मचावी दीधो. राज वेगडजीए म्होटा भाइने मनावी एकत्रीश गामथी " थळा " नामनु परगणुं अर्पण कर्युं. जेथी पराक्रमी पृथीराजे थळामा पोतानी राजधानी स्थापी. तेओने भीमसिंहजी नामे कुमार थया. ए भीमसिंहजी पृथीराजजीना परलोक प्रयाण पछी थळाना अधिपति थया. तेओने त्यां मालजी, शामजी, कानजी, मुळुजी तथा सारंगजी नामना पाच कुमारोए जन्म लीधो. ज्यारे श्रीमान् भीमसिंहजी स्वर्गवासी थया त्यारे म्होटा कुमार मालजीने थळानी मालिकी मळी; एथी न्हाना कुमार शामजी सात गामथी घुडु-रंगपर. कानजीने सात गामथी हवाणुं, मुळुजीने सातगामथी गोळी अने सारगजीने सातगामथी पळेंटानो गरास प्राप्त थयो जे दिवसे पळेंटा उज्जड थवाथी ध्रांगध्रामा भळी गयुं. जेथी सारंगजीना वंशजो हाल ध्रांगध्रामां वाटावाळा छे.

ठाकोर माळजी पछी अमरसिंहजी, मूळराजजी रायसिंहजी, कृष्णसिंहजी, रामसिंहजी अने कानो ए छ पुरुषो क्रमपूर्वक थळाना तख्तपति थया. ठाकोर कानाजीने त्यां कलोजी तथा भाराजी नामना बे कुमार जन्म्या. भारोजी निःसंतान गुजरी गया अने कलोजी थळाना मालिक थया. ठाकोर कलाजीना कुमार हरिसिंहजी अने तेना कुमार भीमसिंहजीए क्रमानुसार थळाना अधिपति थइ उत्तम कृति करी.

ठाकोर भीमसिंहजीने माळजी, भाणजी, मेपजी, शीगरामजी, कलोजी, देवोजी, जैमळजी, हदोजी तथा शारोजी नामना नव पुत्र थया. तेमां मालजीनो वंश तो थळामां रह्यो के जे हाल त्यां वांटावाळा छे. भाणजीने गाम "डुमाणुं," मेपजीने "चराडी", शीगरामजीने "गंजेळा", कलाजीने "गाळा," देवाजीने "मालवण," जैमळजी "पीलुडो" (एना वंशनो हाल थानमां वांटो छे अने वाघपरामां जमीन छे.) हदाजीने "वडाडरा," अने शारोजीने गाम करडोल तथा पीपळीनो गरास मळ्यो. ए बधा थळेचा झाला कहेवाय छे.

रामपर-मेघपर.

राज हरपाळदेवजीथी सत्तरमी पेढीए थएला राज रणमलसिंहजीने छत्रसालजी, शोडसालजी तथा वनवीरजी नामना त्रण कुमार हता. तेमांना पाटवीकुमार छत्रसालजी वि. सं. १४६४ मां गढमांडलनी गादीए बेठा. शोडसालजीने बार गामथी कलाडा, दसाडा, पांदला तथा पंचासरनो गरास मळ्यो अने वनवीरजीने[1] गरासमां तरमणीया तथा झींझुवाडानी चोवशी मळी. शोड-

1 वनवीरजीना कुमार कुंभोजी अने तेना कुमार योगराजजी थया. ए योगराजजीने त्यां मेळाजी, मेळगजी तथा अजाजी नामना त्रण कुमारोए जन्म लीधो. तेमांथी मेळाजी तथा मेळगजीना वंशजो गाम तरमणीयाना झाला अने अजाजीना वंशजो गाम झींझुवाडाना कोळी ठाकरडा कहेवाय छे. एक वखते राजसाहेब अंबाजी पधार्या त्यारे झींझुवाडाना ठाकोर अजोजी साथे हता. त्यांथी पाछा वळती वखते शिकारे निकळेला अजाजीने अत्यन्त तृषा लागी. जेथी तेणे पासेना गाममां जइ एक सारुं घर शोध्युं, परंतु ए वखते घरनो मालिक हाजर न होवाथी पोताने हाथेज पाणी भरी पीवा मांड्यु. तेवामां घरधणी त्यां आवी चड्यो. अजाजीए पाणी पीधा पछी तेने पूछ्युं के आ घर कोनु छे ? त्यारे घरधणीए कह्युं के कोळीनुं. आ सांभळी अजाजीने खेद थयो. तेणे तुरतज राजसाहेब पासे ए वात जाहेर करी. राजसाहेबे तेओनी साथे खानपाननो

सालजीना कुमार नाभोजी अने नाभाजीना कुमार आशोजी तथा देवोजी थया. आशाजीनो विस्तार गाम कऴवाडा तथा दसाडामां अने देवाजीनो विस्तार पांदला तथा पंचासरमां रह्यो.

कहे छे के आशोजी तथा देवोजी ए बन्ने बन्धुओ मोरवीमां गोरी बादशाहनी नोकरी करवा आव्या. बादशाहे झाला राजपूतोना प्रबळ पराक्रमोनी वातो सांभळेली होवाथी ए बन्ने बन्धुओने योग्य नोकरी आपी. त्यारबाद पटाना अनुपम दावथी पृथ्वीमा पंकाएलो कोइएक पठाण त्यां आवी चड्यो, अने बादशाहनी अनुमतिथी मोरवीमां जेटला पटाना रमतीआळ हता तेनो साथे लड्यो, परंतु कोइ पण एने परास्त करवा समर्थ थइ शक्या नहि. अनुक्रमे एक पछो एक लडतां ज्यारे तमामनी हार थइ त्यारे झाला आशाजीए पठाणने परास्त करवानुं बीडुं झील्युं. राज्यमहेलना अग्र भागमां अखाडो तैयार करवामां आव्यो हतो, गुणज्ञ गोरी बादशाह गोखमां बेठा बेठा शौर्यथी उछळता आशाजीना अंगोनुं एकटकथी अवलोकन करी रह्या हता. मनुष्योनी महान मेदिनी मची हती. तमासो कांइ जेवो तेवो न हतो, खासो खेलाडी आशो झालो ज्यारे पठाण सामा अखाडामां उतर्या त्यारे तमामने जाण थइ के आतो एकबीजाना प्राण उपर आवी बनी छे. आशाजीना छटादार पटामां महाकाळनो वासो हतो. ए दिव्यचक्षु विना देखी शकाय तेम न हतुं, पठाण पण घणोज प्रवीण हतो, छतां आशाजीना प्रताप रुपी आदित्य आगळ तेनी कळा क्षीण थवा लागी. विविध प्रकारना दावने विस्तारतो पठाण ज्यारे कुरंगनी माफक कूदवा लाग्यो त्यारे आशाजीए केसरीना रूपने धारण कर्युं. बन्ने परस्पर आक्रमण करवा लाग्या. उभयना पटाओ जोशभर अथडातां अग्निना झगमगता कण झरवा लाग्या. झालानो बेचार झपटथीज कर्महीण पठाणनो मद मीणनी माफक गळी गयो अने ते अजानबाहु आशाजीना शौर्यरुपी अनलनो जाज्वल्यमान ज्वाळामां पतंगीयानी पेठे अचानक पडी गयो; पठाणने परास्त थएलो जोइ गोरी बादशाह सानंदाश्चर्य बोली उठ्यो के "माग, आशाझाला! माग. हु तारी बहादुरी जोइ हेरत पाम्यो छुं, प्रसन्न थयो छुं. आशाजीए कह्युं के अमो क्षत्रीओने पृथ्वी सिवाय एके चीज प्यारी होती नथी. माटे एक दिवसनी अंदर जेटला गाममां अश्व फेरवी अकेक हाथना रुमाल बांधी आवुं तेटलां गामो आपे अमोने आपवां. बादशाहे ए वात एवी शरते कबुल करी के

व्यवहार बंध कर्यो. त्यारबाद अजाजीए बारवटुं करी बीजा चार गामथी झींझुवाडाने स्वाधीन कर्युं अने कोळी लोकोमां दीकरीओ लेवादेवानो सबंध बांध्यो, जेथी एना वंशजो कोळी ठाकरडा कहेवाया.

" अश्व एकनोएक होवो जोइए तथा मसाल वखते तमारे मोरबीमां हाजर थइ अमारी सलाम लेवी जोइए. आशाजीए ए प्रमाणे करवानो हा कही वीजेज दिवसे प्रभातमां विद्युत्समान वेगवाळा अश्व पर आरूढ थइ चतुर्भुजनुं स्मरण करता कार्यसिद्धि अर्थे चाली निकळ्या अने चालाकीथी एक पछी एक गामने चोरे रुमाल बांधता आगळ वध्या; सन्ध्या समय पहेलांज चोराशी गामने चोरे रुमाल बांधी तेओ चारण लोकोना नेश निकट आवी पहोंच्या.+ पोते तो क्षुधा तथा तृषाने मांडमांड सहन करी शक्या; परंतु तृषातुर अश्व पाणी विना अत्यंत पीडावा लाग्यो, तेने पासेनी नदीमां पाणी पावा लइ गया. पाणी पीधा बाद तुरतज ते तेजस्वी तुरंगमे प्राणने तजी दीधा. आशाजीनी सघळी आशा नष्ट थइ. ते म्लान मुखमुद्रा वडे करपर कपोलने टेकावी भाविनो विचार नहि करतां भाग्यदेवीने उपालंभ आपवा लाग्या. तेवामां चारणना नेशमांथी केसरबाइ नामनी चारणीआणी त्यां आवी चडी. आशाजीने इच्छित आपवा साक्षात् शक्ति आव्यां होय एम ए बाइए गंभीर स्वरथी कह्युं के " भाइ ! आम चिन्तातुर थवानुं शुं कारण छे ? जो केहेशो, तो एनुं निवारण थइ जशे " आशाजीए उंडो निश्वास नांखी उत्तर आप्यो के " बाइ ! बीजुं कांइ नहि, मात्र जेना प्रतापथी हुं आजे चोराशी गाम कमायो ए मारो आत्माराम अश्व मने एकाएक असहाय बनावी परमेश्वरना दरबारमां पहोंची गयो. मारी करी कमाणी एळे गइ. हवे हुं मसाल वखते मोरबीमां पहोंची गोरीबादशाहनी सलाम करी शकुं तेम नथी अने ए करारनो भंग थवाथी चोराशी गामनी राज्यलक्ष्मीने कोइ रीते वरी शकुं तेम नथी." केसरबाइ बोल्यां के " बाप ! गभराओ छो शा माटे ? चालो अमारा नेशमां, मारे त्यां एक एकथी चढे तेवा पांच अश्व छे, तेमांथी पसंद पडे ते लइ मसाल वखते मोरबीमां हाजर थइ जाओ. आशाजी हजु केसरबाइना स्वरूपने ओळखी शक्या नहोता, जेथी तेणे शंकाशील मनथी कह्युं के व्हेन ! तमारा पांच तो शुं पण पचाश हजार अश्वने एकठा करो तो पण आ मारा मृतक अश्वने तोले आवी शकशे नहि. कारणके एज घोडे मोरबीना गढमां दाखल थइ बादशाहनी सलाम लेवाय तो मारी मनकामना सिद्ध थाय. प्रथमथीज ए शरतरूपी सूत्रमां मने बांधी लीधो छे. हवे विचार करवा व्यर्थ छे, थवानुं थयुं. आशाजीना कर्मज अवळा, नहि तो कार्यसिद्धिने किनारे पहोंचेलुं वाजि रुपी वहाण मने दुःख दरियामां शामाटे डुबाडे ? पटानी रमतमां पठाणने परास्त कर्यो त्यारे में जाण्युं के पासा तो पोबार पडी चूक्या; वातनीवातमां प्रभातथी आरंभी अ-

+ ज्यां हाल टंकारा नामनुं गाम छे. त्यां ए वखते चारण लोकोनो नेश हतो.

त्यारसूधी चोराशी गाममां फरी रुमाल बंधाइ गया त्यारे निश्चय थयो के तमाम कांकरीओ पण पाकी गइ; जो आ वाजिना मरणरूप कांकरी प्रतिपक्षी विधाताए खडी न करी होत तो बाजी कदी पण बगडत नहि, परंतु पूर्वेना कोइ कुकर्म बाकी रही गयां हशे, एथी आवो महान् अन्तराय आवी नड्यो. केसरबाइए कह्युं के, भाइ ! आम निराश न थतां चालो अमारा नेशमां, हुं तमोने आवोज अश्व आपीश. " पुण्यात्मा प्राणी अन्यना अन्तःकरणमां केवी सरलताथी श्रद्धा बेसाडी शके छे तेना दाखलारूप केसरबाइ आशाजीने नेशमां लइ आव्यां अने तेनुं खानपान आदिथी आतिथ्य कर्या बाद पोताना पांचे अश्व बताव्या. आशाजीए केसरबाइनो उपकार मानी कह्युं के आमांथी एके अश्व मारा कामनो नथी. " केसरबाइए एज वखते पोतानी लोवडी (ओढवानो धावळी) एक अश्वना उपर ओढाडी दीधी अने थोडी वार पछी पाछी उतारी लीधी. तेवामां एनो आकार तथा रंग आशाजीना अश्व जेवोज बनी गयो. आवो अद्भुत चमत्कार जोइ आश्चर्य पामेला आशाजीए केसरबाइने शक्तिरूप गणी वंदन कर्युं. केसरबाइए तेओने आशीर्वाद आपी त्यांथी विदाय कर्या. विनष्ट थएली आशा पुनः सजीवन थतां आनंद पामेला आशाजी शक्तिए समर्पेला अश्वपर आरूढ थइ वायुवेगे मोरबीगढमां जइ पहोंच्या अने सीधा गोरी बादशाहना दरबारमां दाखल थइ मसाल वखतनी सलाम लीधी. प्रसन्न थएला बादशाहे एक वखते अश्वना चरणथी चिन्हित थएली रामपर तथा मेघपरनी चोराशी झाला आशाजीने आपी दीधी.

आशाजीए रामपरमां पोतानी राजधानी जमावी अने जेना प्रतापथी पोते धारेल कार्यमां फतेहमंद थया ए केसरबाइने मान पुरःसर त्यां तेडावी कपडां तरीके पांच गाम आप्यां.

आशाजीने शार्दूलजी, भोजोजी, कलोजी तथा भाणजी नामे चार कुमार थया. तेमां शार्दूलजी तो रामपरनी गादीए रह्या. कलोजी निर्वंश गुजरी गया, भोजाजीने गाम लजाइ अने भाणजीने गाम खीजडीयुं तथा नेकनाम गरासमां मळ्युं.

---

१ भाणजीने कनुजी तथा पुंजाजी नामना बे पुत्र थया; तेमां कनुजीनो वंश खीजडीए रह्यो अने पुंजाजीने गाम वनाळीयुं तथा राजपर गरासमां मळ्यां.

कनुजीना पुत्र वजेराजजी अने तेना दुदोजी तथा हरिदासजी नामे बे पुत्र थया, तेमां दुदाजीनो वंश खीजडीए रह्यो अने हरिदासने गरासमां गाम नेकनाम मळ्युं.

पुंजाजीना रामसिंहजी अने रामसिंहजीना भावसिंहजी, कलोजी तथा हमीरजी नामे त्रण

शार्दूलजीने जोधोजी, सतोजी तथा वनेसिंहजी नामना त्रण कुमार थया. तेमांना पाटवी-कुमार जोधोजी रामपरनी गादीए रह्या, एनुं उपनाम वसनजी हतुं. सताजीने रतनपर, रोयाळु तथा नशीतपर अने वनेसिंहजीने शक्तनुं सनाळुं गरासमां मळ्युं.

जोधाजीने महेशजी, कांथडजी, डुंगरजी, जगोजी, तथा नायाजी नामना पांच पुत्र थया. तेमांना महेशजीनुं अकाळ मृत्यु थतां कांथडजीने रामपरनी मालिकी मळी. तेना भोजोजी, रघोजी तथा जसाजी नामे त्रण पुत्र थया. तेमांना भोजोजी रामपरथी मेघपर आव्या अने जसाजीने न्हानी रामपरनो गरास मळ्यो.

भोजाजीने भाणजी तथा हमीरजी नामना बे पुत्र थया; तेमां भाणजीनो वंश हाल मेघ-परमां छे अने हमीरजीनो वंश म्होटी रामपरमां छे. ए सर्व मेघपरीआ झाला केहेवाय छे.

रामपर तथा मेघपरनी चोराशी मेळवनार झाला आशाजीना लघुबन्धु देवाजीने प्रथमथीज पांदला तथा पंचासर नामनां गाम गरासमां मळेलां हतां. त्यारबाद तेणे शादुलकांनी चोवीशी बांधी. ए देवाजीना सारंगजी, सारंगजीना सोढाजी अने सोढाजीना घोघोजी, सांगोजी, होथीजी, महासिंहजी, देवोजी, डुंगरजी, कलोजी, कुंभोजी, रामसिंहजी तथा पत्ताजी नामना दश पुत्र थया. तेमांना घोघोजी शादुलके रह्या. डुंगरजी निर्वंश गुजरी गया अने बाकीना आठ बन्धुओने नीचे मुजब गरास मळ्यो.

१—सांगाजीने पंचासरनो अर्ध भाग तथा नारणकुं. एना वंशजो हाल पंचासर तथा रवापरमां रहे छे.

२—होथीजीने पंचासरनो अर्ध भाग. एना वंशजो हाल पचासरमां रहे छे अने ते हा-थाणी केहेवाय छे.

३—महासिंहजीने गाम खाखराळुं.

४—देवाजीने गाम फगाशीआ.

५—कलाजीने गाम वावडी.

६—कुंभाजीने गाम गोडपर.

पुत्र थया. तेमां भावसिंहजी तथा हमीरजीनो वंश वनाळीये रह्यो अने कलाजीने गामडुं राजपरनो गरास मळ्यो.

७—रामसिंहजी उर्फे परवतसिंहजीने कोठारीआ. एना वंशजो हाल खापरमां गिरासदार छे.

८—पवाजीने गाम सजनपर. एना वंशजो पण खापरमां छे.

सांगाजीना पुत्र सोढोजी अने सोढाजीना रायमलजी, हाथीजी, उन्नडजी, रूपसिंहजी, हालोजी तथा धींगाजी नामना छ पुत्र थया.

रायमलजीने नांयोजी तथा नवघणजी नामे बे पुत्र थया, तेमां नांयाजीनो वंश पंचासरमां रह्यो अने नवघणजीने गाम खेवाळीयुं मळ्युं.

नांयाजीने जोधाजी तथा वसनाजी नामना बे पुत्र थया; तेमां जोधाजीनो वंश पंचासरमां रह्यो अने वसनाजीने गाम केराळानो गरास मळ्यो.

अजमेर अथवा अदेपर.

राज हरपालदेवजीथी वीशमी पेढीए थएला राज वणवीरजीने भोमसिंहजी, अजोजी, रामसिंहजी, प्रतापजी, पुंजोजी तथा लाखाजी नामना छ कुमार हता. तेमांना भोमसिंहजी वि–सं. १५१६ मां गढ कुवानी गादीए बेठा अने अजाजीने गाम वाळा तथा दुवानो गरास मळ्यो. ए अजाजीए वि–सं. १५३० मां बाहुबळथी अडसीवाळानो अन्त करी अजमेरनो चोवीशी स्वाधीन करी, अने त्यां पोतानी राजधानी स्थापी.

अजाजीने सवळोजी, सांगोजी उर्फे सगरामजी तथा कल्याणजी नामना त्रण पुत्र थया. तेमां सवळोजी अजमेरमां रह्या, सगरामजीने गाम कलावडी मळ्युं अने कल्याणजीने वालासण तथा घुनडा नामनां बे गाम गरासमां मळ्यां, एनो विस्तार हाल जांबुडीआमां छे.

सवळाजीना कुमार मोकाजी, मोकाजीना खेंगारजी, खेंगारजीना रायमलजी अने रायमलजीना जसोजी, रामसिंहजी, सदोजी तथा अदेसिंहजी नामना चार कुमार थया. तेमां जसाजीनो विस्तार अजमेर के जे हाल उदेपुर एवा नामथी ओळखाय छे त्यां अने रामसिंहजीनो विस्तार पीपळीआमां छे. ए तमाम अजमेरीया झाला कहेवाय छे.

---

१ ए अजमेर हाल उदेपुर अथवा अदेपर एवा नामथी ओळखाय छे अने ते मोरबी तावे छे. कहे छे के ए गाम नदीना पूरमां तणायुं हतुं, जेथी हाल तेने टेकरी माथे वसाववामां आव्युं छे.

चूडा.

रोळावृत्त.

वडुं शहॅर वढवाण, मुख्य राजोजी महिपति,
भावसिंह भयहरण, तनुज तेना उत्तम अति;
मनहर माधवसिंह, पुत्र भावना प्रमाणो,
माधवना सुत मदन, जबर आनंदी जाणो. १
अर्जुन तेमज अभय, पुत्र एहना प्रतापी,
वश कीधुं वढवाण, शीश भगवततुं कापी;
अभयसिंहने भाग, ए समे चूडा आव्युं,
एणे धरी आनंद, जूदुं निज राज्य जमाव्युं. २

दोहा.

गया अभय गोलोकमां, समय पामी सुखरूप;
रायसिंह रूडा थया, ए पछी भूप अनूप. ३
धींगाणे समशेर धरी, काठीने दइ कष्ट;
रायसिंह रणरागीए सुयश मेळव्यो स्पष्ट. ४

सवैया-एकत्रीशा.

एज युद्धमां प्राण आपी नृप रायसिंहजी स्वर्ग गया,
ए पछी पुर चूडानी गादीए गुणी भूप गजसिंह थया;
ए पण काठीसंग लडीने रणसंग्रामे आव्या काम,
हाम धरी ए पछी हठीसिंहे लीधी हाथ राज्यनी लगाम. ५
अभयसिंह बीजा ए पाछळ थया गादीपति गुणशाळी,
कॅर्युं राज्य आबाद एमणे प्रीतें रैय्यतने पाळी;
चूडाना ठाकोर चाहथी बॅहेचरसिंह बन्या ए बाद,
लक्ष प्रकारे एणे लीधो सुभग राज्यसुख केरो स्वाद. ६

सोरठा.

वहेचर नृपना वाल, माधवसिंह उदार अति;
गया छोडी जगजाल, कुंवरपदे कैलासमां. ७

सवैया—एकत्रीशा.

माधवसिंह तणा सुत शाणा विनोदथी करी विद्याभ्यास,
जोरावरसिंह महीपति जाहिर विविध भोगवे विभव विलास;
महद वंश मखवाननी शाखा चूडामां रहेजो चिरकाळ,
करो सफळ आशिष नथुरामनी नित्य व्हाल धारी व्रजलाल. ८

थळा.

सवैया एकत्रीशा.

मकवाणा हरपाळथी मांडी पेढी तेरमी पर प्रत्यक्ष,
उदयसिंह अवनीप थया, ए हता दानी दिलकेरा दक्ष;
एने त्यां आनंद धरीने, शत्रुनो करवा संहार,
पृथीराज, वेगडजी नामे उभय पुत्र पाम्या अवतार. १
लाखाराणानी तनुजाथी वेगडजीना थया विवाह,
जमाइनुं हित करवा जाहिर राणे आपी मदद अथाह;
पाटवीने पदभ्रष्ट करावी, अर्प्युं वेगडजीने राज,
पाटडीपर पृथीराजे कीधुं व्हारवटुं दिलमां धरी दाझ. २
वेगडजीए वडिल बन्धुने मनावी हेत हृदय स्थाप्युं,
गाम एकसो वीश सहित शुभ थळा तणुं परगणुं आप्युं,
जूदुं राज्य जमावी पाटपर बेठा मकवाणा पृथीराज,
भूपति भीम थया ए पाछळ विदित वधारी कुळनी लाज. ३
नाम मॉलाजी नृपति केरुं भीमसिंहजी पछी भणाय,

अमरसिंह ए पछी अवतारी गादीना हकदार गणाय;
मूळराज ने रायसिंहजी अनुक्रमे अवनीप थया,
कृष्णसिंह पछी रामसिंहजी ठाठमाठथी थळे रह्या. ४

कानाजी ने कलाजीए पण थळे यथाक्रम राज्य कर्युं,
हरिसिंहे धरी हर्ष हमेशां संकट द्विज सुरभिनुं हर्युं;
भीमसिंह पछी मालजी आदि हाल खंतथी वांटा खाय,
तमाम ए झलराण थळेचा, कवि नथुराम सदा कहेवाय. ५

रामपर–मेघपर

छन्द हरिगीत.

पेढी अढार प्रमाणतां हर अंश नृप हरपाळथी,
मांडल महीप बनी विराजे छत्रसालजी व्हालथी;
श्रीशोडसालजी अनुज एना रही हमेश हुलासमां,
प्रीते कलाडा आदि पाम्या गाम चार गरासमां. १

ए शोडसालतणा सबळ सुत भव्य नाभोजी भणो,
नाभाजीना आशोजी ने देवोजी द्वय आत्मज गणो;
आशोजी रहीआ अनुज सहित निवास मोरबीमां करी,
गणी शूर गोरी बादशाहे आपी चाहथी चाकरी. २

पट्टातणो खेलाडी एक पठाण मोरबी आवीयो,
करी शाह केरी सलाम एणे महर धंध मचावीयो;
जे जोरवाळा जन हता ते लइ करे पट्टो लड्या,
पण हारी सर्व पठाणथी मेदानमां पाछा पड्या. ३

एथी मयूरध्वजपुरीनुं नूर मन्द पडी गयुं,
ए समय आशाना हृदयमां शौर्य गजब चढी गयुं;

भरी फाळ करी विकाळ मुख ऊभा अखाडे आवीने,
कीधो परास्त पठाणने झट दावमांहि दबावीने. ४

सवैया एकत्रीशा.

आशाजीनुं बळ अवरेखी शाह अति संतुष्ट थया,
माग माग आशा ! तुं इच्छित एवी वाणी उचारी रह्या;
आशाजीए कह्युं ए समे एक दिने जइ जे जे गाम,
अश्व चढी हुं रुमाल बांधु द्यो ए गामनुं मने इनाम. ५
करी वात ए कबूल शाहे किंतु शरत एमां एवी,
एज अश्वथी मसाल वखते मिजलसमां हाजरी देवी;
ए करारने स्वीकारी सत्वर गृहभणी विदयां करी व्हाले,
प्रभातमांहे प्रयाण कीधुं अश्व चढी आशे झाले. ६
तुरगतणा चरणोथी त्वराए करी चिन्हित चोराशी गाम,
वळ्या वीर मखवान विनोदें, क्षुधा तृषाथी न हार्या हाम;
पण जल पीतां अश्व अचानक मारगमां मृत्यु पाम्यो,
करी कमाणी एळे जातां आशो जबर दुःखे जाम्यो. ७
चारणी देवी केसरबाइ एज समे त्यां आवी चढ्यां;
एनी कृपाथी आशाजीनां फरी सर्व मनकाम फळ्यां;
नियमित समये पातशाहनो सळाम झाराणे लीधी,
सनंद पुर चोराशीनी झट शाहे झालाने दीधी. ८

मनहर.

आशा झाराणना सपूत थया शार्दूलजी,
शार्दूलने गृहे ज्येष्ठ जोधो अवतरीया;
जोधासुत कांथडने कांथडना भोज बीजा,
वास करी मेघपरे स्वर्गमा विचरीया;
नेवानाम, खीजडीयुं, मनाकुं, नशीतपर,
इत्यादि स्थळोमां एना भायातो उतरीया;

भोज सुत भाणजीनो वंश हाल वांटा खाय,
मानो नथुराम एने झाला मेघपरीया. ९

शादुलकुं.

छप्पय.

आशाजीना अनुज, दीर्घबाहु देवोजी,
मोरवीए मुद पामी रम्य मेळवता रोजी;
पाछळथी नथुराम, समय शुभ एणे सांधी,
शादुलकानी सरस, वळे चोवीशी बांधी;
ए पछी थया अनुक्रमे, सारँग सोढो रायमल,
नांयो, ने जोधो निखिल, वंशज देवाना विमळ. १

अजमेर.

छप्पय.

एकवीशमी पेढी, गुणी हरपाळथी गणजो,
राज्य कुवे सुखरूप, भीम भूमिपति भणजो;
एना अनुज अजाजी, हता हिम्मतवाळा बहु,
हार्या एनुं शौर्य हेरी, अडसीवाळा सहु;
अजे स्थापी अजमेरमां, राजधानी शुभ रीतथी,
द्विज सुरभितुं दोहीने, पाळन करता प्रीतथी. १

दोहा.

ए समये अजमेरनां, चारु गाम चोवीश,
भावें भोगवता अजो, धर्मनिष्ठ धरणीश. २
ए पछी सबळोजी अने, मेकोजी क्रमवार;
खुबीदार खेंगारजी, हता पछी हकदार. ३
जबर रायमल ने जसो, सुखद धराना श्याम;
ए झाला अजमेरीया निरखी ल्यो नथुराम. ४

त्रयस्त्रिंशत् तरंग.

घनाक्षरी.

यात्रा द्वारिकानी तेम खात–मुर्त हाइस्कुलनुं
कुमारोना जन्म विद्युद्दीपे स्हेल कीधा व्याप्त;
कहे नथुराम पाश्चिमात्य युद्धमां पधार्या,
आप अमरेश ! आंग्लराज्यना बनीने आप्त;
तख्त कुंवरीनो लग्न महोत्सव वर्णवीने
झालावंशवारिधिनो ग्रन्थ आ करुं समाप्त,
आरोग्यतायुक्त दीर्घ आयुष्य कुटुंब सह,
प्रभुनी कृपाथी थजो आपने सदैव प्राप्त.

प्रजाप्रिय महाराजा अमरसिंहजी !

न्हाना मोटा बत्रीश तरंगोमां आपना धैर्य शौर्यादि सद्गुण समन्वित पूर्वजोनां तथा भायातोनां चरित्रो वर्णवी आपश्रीनां पवित्र जन्मचरित्रमां नेकनामदार सम्राटश्री शहेनशाह पंचम ज्योर्जना दिल्हीने पायतख्ते थएला राज्याभिषेक प्रसंगे आपश्रीने मळेला के. सी. आइ. इना इल्कावने लइ राजकुटुम्बमां तेमज प्रजावर्गमां छवाएल आनंदमां भाग लेतां में आशीर्वचन आप्या बाद आज पर्यन्तनुं अर्थात् बी. कुंवरीश्री तख्तकुंवरबा साहेबनां लग्न महोत्सवसुधीनुं वृत्तांन आ उपसंहाररुपे लखवा निश्चित करेल तेत्रीशमा तरंगमां आपश्रीने संभळाववा उचित धारुं छुं.

ई. स. १९१२ ना अक्टोबर मासमां भगवद्भक्तिपरायण गंगास्वरुप, नामदार दादीसाहेबनी इच्छाने आनुकुल्य बनी आप बी. कुंवरीश्री तख्तकुंवरबा सहित जामनगर थइ दरियाइ मार्गे बोटमां बिराजी द्वारिकानी यात्राए पधार्या. मातपितानी सेवा भाग्यशाळीथीज बनी शके छे. एमनी सेवा साथे ईश्वरनी सेवानो लाभ लेवा प्रेमपूर्वक श्री द्वारिकाधीशनां दर्शन करी आपश्रीए अपूर्व पुण्यनो संचय कर्यो के जे उत्तरोत्तर जीवनमां आपने जयदाता बने एमां कंइ आश्चर्य जेवुं नथी.

सालगिरा.

आनंदना उदधिमहीं झलराण मुदथी झीलजो,
वरऋतु वसंततणा अनुप उद्यान पेठे खीलजो;
करी कलित कार्यो कीर्तिना जयकार जबर मचावजो,
सुखरुप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

२

कर कल्पतरुनी छांयथी, इच्छित सरवने आपजो,
सबळी सुयशनी सांकळे, महिपाल धरणी मापजो;
दइ स्नेहीने सुखसंपॅत्ति, तीखा अरिने तावजो,
सुखरुप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

३

द्वितीयातणा द्विजराज पेठे, विविध वृद्धि पामजो,
आरोग्य रहीने अंग, आधि उपाधि व्याधि वामजो;
गोद्विज अने संतो तणा धरी स्नेह क्लेश समावजो,
सुखरुप सालगिरा, अमित अमरेश आप वितावजो.

४

शुभ अमरवल्लरी तुल्य, वेलिवंशनी वधती रहो,
अवतंसबनिने अधिपना इलकाब नित नवला ग्रहो.
गहरा गुणोना गीतथी, गंभीर गगन गजावजो,
सुखरुप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

५

सुप्रतापशाळी प्रतापसह, आनंदमां अहनिश रहो,
हो सफल सर्व मनोरथो, चित्तमां चतुरनृप जे चहो
पूरण प्रजापतिपाल बनि, भारे प्रजाने भावजो;
सुखरुप सालगिरा अमित, अमरेश आप वितावजो.

६

नित्यहर्ष हास्य हुॅल्लासथी, विहरो कुटुम्बी संगमां,

क्रोडो वरष कायम रही, रमजो रसिक नृप रंगमां;
नथुराम सेवक आपनो, धरी नेह नित्य निभावजो,
सुखरूप सालगिरा अमित, अमरेश आप वितावजो.

आधुनिक जमानामां केळवणी ए एक उन्नतिनो उत्तम मार्ग छे, विद्यानी प्रगतिने दिनप्रतिदिन उत्तेजित करवामां निमित्तरूप थता आप सरखा नरेश्वरो प्रजानो आन्तरिक आशिर्वाद मेळववामां फतेहमंद थवाज जोइए, वांकानेरमां हाइस्कुलनुं मकान तेमज कम्पाउन्ड विस्तृत होवा छतां तेथी पण विशेष हवा प्रकाश अने सगवडवाळी विद्याशाळा बनाववानी इच्छा थतां इ. स. १९१३ ना एप्रील मासनी त्रीजी तारीखे ए वखतना भला गवर्नरनी यादगीरी खातर काठियावाडना नामदार एजन्ट टु धी गवर्नर मे. स्लेडन साहेबने मुबारक हाथे आपश्रीए जीनपराना एक विशाळ मेदानमां " सर ज्योर्ज सीडनहाम क्लार्क हाइस्कुल " नो पायो नंखाववानी मांगलिक क्रिया करावी प्रजाहितनां उमदा कार्योमां उमेरो कर्यो. त्यार-बाद लगभग दोढेक मास पछी अर्थात् ता० ३०-५--१९१३ ना रोज द्वितीय कुमारश्री चन्द्रभानुसिंहनो जन्म थयो, उक्त दिवस आखा शहेरमां एक महान उत्सवनी माफक उज-ववामां आव्यो. त्यारपछी बेसता वर्षने दिवसे म्हारा तरफथी नीचे प्रमाणे आशिर्वाद आपवामां आव्यो.

नूतनवर्ष.

छन्दझूलणा.

विविध सुखशान्तिमां विविध दिन वितवो,
रात्रिओ सरव रसरूप थाओ
प्रहर घटिपल विपल, अमित सुख अनुभवो,
दुःखद त्रय ताप सहु दूर जाओ;
रिद्धि अने सिद्धिनो सुखद समुदाय शुभ,
ज्योतिमय राजनिधिमांहि जामो,
अभिनवा वर्षमां अभिनवा हर्षथी,
अभिनवा विभव अमरेश पामो.

२

अंग आरोग्य अहनिश रहो आपनुं,
रसिक युवराज आरोग्य रहेजो,
आप्तजन आपना अखिल आरोग्य रही,
ललित आनंदप्रद् ल्हाव लेजो;
आपना प्रवल सुप्रतापथी पृथ्वीमां,
वैरीओ हरघडी हाम वामो,
अभिनवा वर्षमा अभिनवा हर्षथी,
अभिनवा विभव अमरेश पामो.

३

छत्रधर क्षत्रिना छत्र वनी शोभजो,
विजय ध्वनि वीर सर्वत्र व्यापो,
चुगलने चोर चांपो सदा चरणतल,
सु कवि जपता रहे सुयश जापो;
वक्र तजी वक्रता वक्रपुरीना पति,
आपना चरणमां शीश नामो,
अभिनवा वर्षमां अभिनवा हर्षथी,
अभिनवा विभव अमरेश पामो.

४

ओपजो अवनिमां इन्द्रसम अहरनिश
कोपजो कृपण ने क्रूर माथे;
जोर जालिम जूठाओना जाळजो,
शूर शर सत्यनुं धारी हाथे;
संत सुरभितणा सद्य रक्षा करो,
दुष्टनां दिलमहीं आपी डामो;

अभिनवा वर्षमां अभिनवा हर्षथी
अभिनवा विभव अमरेश पामो.

५

दिव्य दिग्दंतीना श्वेत मस्तक करो,
कलित कीर्तितणो रंग छांटी;
वश करो बाल वृद्धो अने युवकने,
विश्वमां व्हाल मीठाई वांटी;
वंदिना मुखथकी विरद बोलावजो,
द्रढ करी धर्मनां कोटि कामो,
अभिनवा वर्षमां अभिनवा हर्षथी,
अभिनवा विभव अमरेश पामो.

६

ज्यां लगी सृष्टि स्रष्टा रचे स्नेहथी,
ज्यां लगी विष्णु प्रीतेंथी पोषे;
ज्यां लगी सुरसरी अलग अघने करे,
ज्यां लगी वरुणने वन्हि शोषे;
त्यांलगी अचल रहो नाथ नथुरामना,
सफल करी हृदयनी सर्व हामो;
अभिनवा वर्षमां अभिनवा हर्षथी,
अभिनवा विभव अमरेश पामो.

सालगिरा.

मन्दाक्रान्ता.
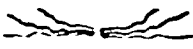
दानी दीपो. नविन वरषे, प्रेमथी श्रेय पामी,
रुडी रीतें, कलित कृतिथी, जग्तमां कीर्ति जामी;

वृत्ति व्हालें, विविध वधती, राखीने धर्मराहे,
रे'जो नित्ये, अमर नृपति, आप आनंदमांहे.

पाम्या कीर्ति, द्विजसुरभिने, प्रेमथी नित्य पाळी,
पूरेपूरा प्रबलभुवने भूप छो भाग्यशाळी.
नीति रीति, सुजन सघळा, स्नेहधारी सराहे,
रे'जो नित्ये, अमर नृपति आप आनंदमांहे.

झालावंशे, महद महिमा आपनो जोइ आजे,
स्नेहीकेरां, हृदय हरखे, वैरीनां वृन्द लाजे;
बन्दीलोको, विरदवदता, चित्तमां श्रेय चाहे,
रे'जो नित्ये अमर नृपति, आप आनंदमांहे.

गीति

अे नथुरामनी आशिष, अमर भूपति दीप्तियुक्त देहे;
सहकुटुंब सुखमांहे, नविन वर्ष आ वितावजो नेहे.

नूतनवर्ष.

घनाक्षरी.

परम अनंदकों उडातेरहो आठोंयाम,
धरपें बडाते रहो धीर धनधाम नित;
बिबिध बिहार करो बासवसमान बीर,
अवनिपें पाते रहो अमित अराम नित;
जाहिर जमाओ जगतीपें जोर जशहुको,
करसों करीके कोटि, कीरतके काम नित;
अभिनव शब्दयुक्त अभिनव अब्दमें दे,
अभिनव अमर असीस नथुराम नित.

खोटे करो खलकों सबल हुकम सोटेमार,
चीरडारो चाबुकतें चोरनके चाम नित;
लंपट लबारहुकों रोज लोटपोट कर,
दीनकों उगारो देदे दाननमें दाम नित;
करके परिच्छा कवि पंडितके पुंजनकी,
बहादुर बसाते रहो गुनिनके ग्राम नित,
अभिनव शब्दयुक्त अभिनव अब्दमेंदे
अभिनव अमर असीस नथुराम नित.

कॅवर प्रताप और चारु चन्द्रभानुसिंह,
रसिक कुमार सह मुदलो मुदाम नित;
न्याय नीतिहुसों प्रीत, पूरन प्रसिद्धकर,
टीक ठकराइकों दिपाओ ठामठाम नित;
करते रहेंगे अरि प्रबल प्रनाम पेखाँ,
बलकें बलाहककों बक्रपुर श्यामनित;
अभिनव शब्दयुक्त अभिनव अब्दमेंदे
अभिनव अमर असीस नथुराम नित.

सालगिरा.

हरिगीत.

आनंदना उदधिमही झलराण मुदथी झीलजो,
वर ऋतु वसंततणा अनुप उद्यानपेठे खीलजो;
वरी कलित कार्यो कीर्तिना जयकार जबर मचावजो,
सुखरूप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

वर कल्पतरुनी छांयथी, इच्छित सरवने आपजो,

सवळी सुयशनी सांकळे महिपाल धरणी मापजो;
दइ स्नेहीने सुखसंपत्ति तीखा अरिने तावजो,
सुखरुप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

द्वितीयातणा द्विजराजपेठे विविध वृद्धि पामजो,
आरोग्य रहीने अंग आधि उपाधि व्याधि वामजो;
गो द्विज अने संतोतणा धरी स्नेह क्लेश समावजो,
सुखरुप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

शुभ अमरवल्लरी तुल्य वेलि वंशनी वधती रहो,
अवतंस वनीने अधिपना इलकाब नित्य नवला ग्रहोः
गहरा गुणोना गीतथी गंभीर गगन गजावजो,
सुखरुप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

सुप्रतापशाळी प्रताप सह आनंदमां अहनिश रहो,
हो सफल सर्व मनोरथो, चित्तमां चतुरनृप जे चहो;
पूरण प्रजा प्रतिपाल बनि, भारे प्रजाने भावजो,
सुखरुप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

नित्य हर्षहास्य हुल्लासथी, विहरो कुटुम्बी संगमां,
क्रोडो वरष कायम रही रमजो रसिकनृप रंगमां,
नथुराम सेवक आपनो, धरी नेह नित्य निभावजो,
सुखरुप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

इ. स. १९१५ नी शरुआतमांज मुख्य कारभारी मे. नाथाभाइ अविचलदास देसाइने वर्षारंभना मांगलिक प्रसंगे नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी "रावबहादुर" नो इल्काब एनायत करवामां आव्यो, ए मान खरेखर आपनेज घटे छे, कारण के आपश्रीए गुणज्ञताथी एवा बाहोश माणसने प्रधानपदे नियत कर्या के जेनी नामदार सरकारे पण कदर बुजी, पुत्रने मान प्राप्त थाय एमां पितानी अने सेवकने मान मळे एमां स्वामीनी शोभा वधे छे ए मान्यताने नामंजुर करवा कोइपण नकारनो उच्चार करनारज नथी.

एज वर्षनी ता. १७ फेब्रुआरीना रोज आपश्रीए " अमरविलास " पेलेसमां एक महान दबदबाभर्यो दरबार भरी राजमहालयना दरेक विभागमां वीजळीनी बत्तीओ चालु करवानुं यंत्रालय कच्छना नेकनामदार मीरजां महाराओ खेंगारजी सवाइबहादुर के. सी. एस आइ ने मुबारक हाथे खोलाव्युं,

ते समये म्हारा तरफथी निम्न लिखित कविता निवेदन करवामां आवी

छन्द मनोहर.

आज ऋतुराजकी अवाइसों उमंगभर,
गर्ज्जि उठी मंगल बधाइ गामगामसों;
कवि नथुराम त्यों धमार गानहुसों द्रढ,
मोदप्रद मंगल प्रकाश्यो धाम धामसें.
कोकिला मधु तडाग बाग वन उपवन,
मंगल प्रगट करे अति अभिरामसों;
नृपति खेंगारको मिलन अमरेशजुने,
मान लीयो महद वो मंगल तमामसों

छन्द घनाक्षरी.

आपकों खेंगार भूप आज अमरेशजुने,
श्रमित किये हे सोच कर मनमें महानः
कवि नथुराम सत्य पूर्वज तुम्हारे सोम,
तिमिर निवारी करे पुहुमी प्रकाशमान.
कारी निशिहुकों उजीयारी करी देत आय.
ध्वांत अरि नाम वाको जानत सवें जहान;
विद्युत चिराग प्रगटाये हे तुम्हारे कर,
शशिकुलहुकों यह सहज स्वभाव जान.
अमरनिवास भोंन आज अलबेलो बन्यो,
ज्योतिकी जलूसें छइ अवनीतें आसमान;

कवि नथुराम महाराव श्रीखेंगार संग,
अमर नृपाल राजे परम प्रकाशमान;
सजन कुमुद फूले संग कविकंज फूले,
पुनित प्रभाको जान्यो परत नही प्रमान.
तिमिरको ताप कहा आनंदको माप कहा,
आय मिले संग जहां भव्य शशि भासमान.
सुयश शशिकों सद्य सीसपें चढाय लीनो,
सबल बहाइ दान सुरसरिधार आज.
कवि नथुराम गर्व गरल गले दुरायो,
वरप्रद ओरनते अमित उदार आज.
गुणीगण आसपास आय मंडराय रहे,
दासनकों दिव्य फलदाता देनहार आज.
भ्रष्टकों भयंकर क्षयंकर खलोंके खास,
शंकर समान शोभे नृपति खेंगार आज.
माननीय महद खेंगारओ अमर सदा,
अचल बिराजो पाट उभय नृपाल तुम्.
कवि नथुराम कोटि वरस विलास करो,
संपत समस्तसों सुहाओ प्रजापाल तुम;
बचन हमारो बेद बचन विचार कर,
शक्र सम छाजो छिति शत्रुनके साल तुम.
बुद्धिके विशाल तुम प्रेम आलवाल तुम,
क्रूरनके काल तुम दीनके दयाल तुम.

एज अरसामां न्यायपरायण नामदार ब्रीटीश सरकारने जर्मनोना अत्याचारथी अत्यंत पोडातां बेल्जीयम आदि न्हानां राज्योनी सहायता अर्थे युद्धभूमिमां उतरवानी आवश्यकता जणाइ, धन अने जनसमुदायनुं जोर होय तोज युद्धमां विजयलक्ष्मीने वरी शकाय

छे ए वात सर्वविदित होवाथी नामदार अंग्रेज सरकारे पण ए उभय वस्तुनी प्राप्ति अर्थे पोतानी सत्ता हेठळ रहेल समग्र राज्योने सूचना आपी. जेमना उत्तम राजतंत्रने प्रतापे अनेक वर्षो सुखशान्तिमां विताववा हिन्दनो राजवर्ग तथा प्रजावर्ग समर्थ थयो ए साम्राज्यपर आपत्तिनुं वादळ आवतां कयो हतभाग्य तेमां सहायभूत थवा सज्ज न थाय? केटलाएक राजाओए तो धन संबंधी मदद आपीनेज पोताना कर्तव्यनी पूर्णाहुति करी त्यारे केटलाएक बहादुर नरेशो धन अने जन बन्नेनी मदद उपरांत जाते युद्धमां जवा कटिबद्ध थया, ज्यारे केटलाएकने फरजीआत त्यां जवा जरुर पडी त्यारे आपश्रीए स्वेच्छाथीज त्यां जइ पहोंचवा निश्चय कर्यो, जोके ए कार्य आपना कुलगौरवने योग्यज हतुं, तोपण आपश्रीनो उक्त निश्चय प्रसिद्धिमां आवतां आपनी राजभक्त प्रजानां मन अत्यंत विह्वळ बनी गयां, एनुं कारण आपना प्रत्ये प्रजानो विशुद्ध प्रेम, अने तेमां पण बाहुबळनी कसोटी करावनार हाथोहाथना युद्धमां एक वीर राजवंशी माटे प्रजा एटली बधी चिन्ताग्रस्त न थाय, कारणके तेवे प्रसंगे आप सरखा बळवान नरेशनो पराभव थवानी आकांक्षा भाग्ये ज उद्‌भवे छे, परंतु पाश्चिमात्य रणभूमि के ज्यां गेबी गोळाओनो रातदिवस वरसादज वरस्या करे अर्थात् यंत्रयुद्ध थाय अने ज्यां बाहुबळनी किम्मत जरा पण न अंकाय त्यां पोताना मालिकने जवानी इच्छा थाय त्यारे प्रजाना मनमां विह्वळता केम न जणाय? तळपद वांकानेरनी प्रजा, अमलदारो अने स्नेही संबंधीओ तो आपश्रीना उक्त निश्चयने अनुमोदन आपवा समर्थ न थया, परंतु दरेक गामडाना पटेलीआओ पण वांकानेर आवी बे हाथ जोडी आपने कहेवा लाग्या के आप लडाइमां पधारवानी वात मुकी दीओ अने एने बदले सरकारने नाणां आपवां जोइए तो खुशीथी आपो, अमे बधा अमारी बब्बे वर्षनी उपज आप उपरथी ओळघोळ करी नांखशुं, तेम छतां आपने लडाइमां पधारवुं होय तो अमने पण साथे लीओ, अमारो धणी लडाइमां जाय अने अमे घेर बेठा रहीए ए तो नहींज बने. आटलुं बोलतां ए सहुनां हृदय भराइ आव्यां, आपश्रीए तेओने बहु बहु समजाव्या अने कह्युं जे नामदार सरकार कांइ मने त्यां बोलावता नथी, पण हुं मारी इच्छाथीज साम्राज्य तरफनी मारी असाधारण लागणीने लीधे युद्धमां जवाना उत्साहने अटकावी शकतो नथी; तमो सर्व निश्चिन्त रहो, मारे त्यां जइ अमुक कार्योमां सरकारने सहायभूत थवानुं छे तेम छतां कदाच एवो समय प्राप्त थाय के दुश्मननो भेटो थयो तो ए वखते अमारा राजपूतना धर्म प्रमाणे जे बनशे ते करी बतावशुं. ज्यारे ए रीतनो आपनो अडग विचार जोयो त्यारे आपनी मुसाफरी सफळ अने सुखरुप इच्छवा माटे राजकुटुंब, अमलदारो तथा प्रजावर्ग तरफथी आपने जुदी जुदी चा पार्टीओ आपवामां आवी अने मानपत्रो सामा माटे आपश्रीने आशीर्वाद आपवा साथे में पण नीचे मुजब कवितामां आशीर्वाद आप्यो.

दोहरा.

वन्धु श्रीवलरामना, राग धरीने रोज;
अमर आपशे आपने, मुद मंगलनी मोज.

आ वखत देश युरोपमां विग्रहतणां वादळ चड्यां,
ए समय पामी थै सवळ अन्योन्य मांहे आखड्या;
करवा ब्रीटॉशनी पक्ष, दक्ष प्रसारवा सुप्रतापने,
आशीश जननी जामवानी अमर फळशे आपनें.

सुखप्रद थशे दिनयामिनी सिन्धु वनी जाशे सरी,
सुखथी पधारो शुभ थशे झलराण कुलना केसरी;
जलयान हयरथ सम वनी नहि प्रकटशे परितापने;
आशीष जननी जामवानी अमर फळशे आपने.

स्थलमहिं पल पल पास रहेशे प्रौढ पीताम्वरधरण,
शुभ विघ्नहर सहु विघ्ननो विध्वंस करशे सुखकरण;
महिपो अखिलमां आपना मोहन वधारे मापने,
आशीश जननी जामबानी अमर फळशे आपने.

करॉ बंध अक्ष विपक्षना जय आपने प्रभु आपशे,
अर्पण करीने उन्नति सहु कष्टनी जड कापशे;
अर्जुन सदृश रहे आगळे धरॉ चत्रभुज शरचापने,
आशीश जननी जामबानी अमर फळशे आपने.

सहु शस्त्र अस्त्र प्रहारथी अविनाशॉ अळगा राखशे,
आरोग्य आपी अंगमां विभु दयाद्रष्टें दाखशे;
हरपाल सम हिम्मत प्रकटजो छापवा यश छापने,
आशीश जननी जामवानी अमर फळशे आपने.

देखाडी दिव्य पराक्रमो भल छत्रपतिने भावजो,
धरी तीव्र वेग त्वराथकी आनंदी व्हेला आवजो;
आहीं अमे स्नेही सरव जपशुं विजयना जापने,
आशीश जननी जामवानी अमर फळशे आपने.

दोहरा.

कोटि वरस लगी कोडथी, आपी विभव अपार;
अमर राखशे आपने. कृपा करी किरतार.

छे सुखद पंचम ज्यॉर्जनुं साम्राज्य भारत वर्षमां,
उद्यत थयो अरि हानि करवा एमना उत्कर्षमां;
जइ आप जंगे जर्मनोने तीव्र बळथी तावजो,
जयशोर करतां जोरथी, अमरेश व्हेला आवजो.

हरपालदेवनी शक्तिअे ज्यम स्हाय संकटमां करी,
ए रीत जंगे आपनी, रक्षा करे जगदीश्वरी;
झलराण झट युद्धे ब्रिटिशनी विजयवल्लरी वावजो;
जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो.

अहींथी प्रयाण थतां वधावे सर्व आशीर्वचनथी,
मखवान मन्दरअचलसम अरिसिन्धुने नांखो मथी;
वनी प्रबळ पूर्वजनो सुयश, परदेशमां प्रसरावजो,
जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो.

वर मेदपाटनी माट वहु झलराण रणमांही लडया,
जेना विजयध्वज आज लगी उत्तंग आकाशे अडया;
ए रीत सेवा ज्यॉर्जनी बळधारी आप बजावजो,
जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो.

छे क्षत्रिओनो धर्म युद्धे धैर्यथी पग धारवो,
उत्साहथी आगळ वधीने महद रिपुने मारवो;
ए सूत्रनुं करी स्मरण रणमां फांकडा नृप फावजो,
जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो.
जाहिर वफादारी तमारी ताज तरफ तणाय छे,
श्री राजराणा उदयनुं ए भव्य चिह्न भणाय छे;
सम्राट्थी लही मान सारुं स्नेहनद छलकावजो.
जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो.
सुत विनयसिंहतणा विवेकी विबुध तेमज वीर छो,
वळि धर्मनिष्ठ धरापति सागर समा गंभीर छो;
श्री जामबा माताजीने दैवी गुणोथी दिपावजो,
जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो.
कुळदेवताओ सफळ करशे युद्धयात्रा आपनी,
कीर्तिगवाशे कविमुखे मखवान म्होटा मापनी;
नथुरामना उरमां पुनर्दर्शनथी हर्ष उपावजो,
जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो.

आपश्रीए युद्धमां स्वेच्छाए सर्वीस ऑफर करी त्यारे कुमारश्री शिवसिंहजीए वांकानेर तरफथी तेमज कुमारश्री कृष्णचन्द्रसिंहजीए भावनगर तरफथी नामदार सरकारने कंइपण सहायभूत थवा पोतानी द्रढ इच्छा वतावी अने ए वन्ने क्षात्रकुमारो आपश्रीनी साथेज रवाना थवा सज्ज थया, आपे आपना स्टाफ तरीके चीफ मेडीकल ऑफीसर डॉ. गजानन झीणाभाइ माहीमतुरा एल. आर. सी. पी. तथा हजुरी चकु खवासने साथे लइ पंच त्यां परमेश्वर ए न्याये ता. ११-११-१९ ना रोज वांकानेरथी प्रयाण कर्युं, न्यायी राजाओ प्रजाने केवा प्रिय होय छे ए दाखलो दुनियाने वताववा माटे परमात्माए जाणे केम उक्त प्रसंग उपस्थित कर्यो होय ? तेम वांकानेरनी प्रजाना हृदयमां ए वखते एटलुं तो लागी आव्युं के जेनुं वर्णन करतां अन्य राज्योनी प्रजाने कदाच अतिशयोक्ति जेवुं जणाय, परंतु हुं खात्रीपूर्वक कहुं छुं के जेने आप सरखा राजानो रैय्यत बनी रहेवानुं सद्भाग्य प्राप्त थएलुं होय ते तो तेवे प्रसंगे तेवी लागणीनो अनुभव करे ए सर्वथा योग्यज छे.

प्रयाण समये अश्रुपात ए एक प्रकारनुं अपशुकन गणातुं होवाथी आपनी प्रजाए हृदयने मजबुत राखी आपनी मुसाफरी निर्विघ्न अने सफळ निवडवा माटे आप सर्वेने विजयसूचक पुष्पहार पहेराव्या, प्रजावर्गनो अखूट आशीर्वाद मेळवी वांकानेरथी रवाना थइ मुंबइ सूधी पहोंचतां वढवाण, वीरमगाम, अमदावाद अने सुरत इत्यादि स्थळे उद्योग अर्थे निवास करती आपनी राज्यभक्त प्रजाए एज रीते पुष्पवृष्टिथी आपनी युद्धयात्राने सफळ इच्छी तेमज मुंबइमां रहेती प्रजा तरफथी तेमज अन्य अनेक सुप्रतिष्ठित सद्गृहस्थो तरफथी पण अपूर्व मान प्राप्त थयुं.

आप जे अरसामां आगबोटनी अंदर विराजी फ्रान्स तरफ पधार्या ते वखते जर्मनोनी जलान्तः संचारिणी जालिम नौकाओना भयथी समस्त वारिधि व्याप्त हतो, छतां कर्तव्यमांज जेनी एकनिष्ठा छे एवा दृढप्रतिज्ञ पुरुषनी परमात्मा रक्षा करे छे तेम आपने पण मार्गमां कोइ पण प्रकारनुं विघ्न न नडयुं, आपश्रीए प्रथम मार्सेल्समां अने पछीथी युद्धभूमिने पश्चिम मोखरे लगभग आठेक मास निर्गमन कर्या, तेमां चार मास मार्सेल्समां वाइस कमान्डर साथे रही नामदार सरकारने जोइती सहायता आपी, त्यारबाद आपश्रीए ता. १४ मी मार्च सने १९१६ ना रोज लंडन पधारी नामदार शहेनशाह पंचम ज्यॉर्ज तथा मानवंता शहेनशाहबानु मेरीनी मुलाकातनुं मान मेळव्युं.

आपश्रीनी उक्त मुसाफरी दरमीआन हरहमेश शुद्ध हृदयथी आपनुं हित चाहनारी प्रजा आपनी तंदुरस्ती अने आपना पुनः वांकानेर पधारवा संबंधी समाचार सांभळवा निरंतर इन्तेजार रहेती अने आपना कल्याण अर्थे प्रभुप्रार्थना आदि करवामां कोइपण बेदरकार रही नहतु, जेने परिणामे ता. १२–७–१९१६ ना रोज आपश्री ज्यारे मुंबइकिनारे संपूर्ण तंदुरस्ती साथे पधार्यानां ता. १३ मीए तार द्वारा शुभ समाचार मळ्या त्यारे आपनी प्रजामांना आबालवृद्ध सहुकोइने अन्य तमाम उत्सवो करतां विशेष आनंदनी प्राप्ति थइ; कोइपण पुत्र पिता उपर एटलो स्नेह नहि धरावतो होय के जेटलो प्रेम आपनी प्रजानो आपना उपर ए वखते दृष्टिगोचर थयो हतो, आप बे दिवस मुंबइमां विश्रान्ति लइ स्नेहीसंबंधीओने मळी मानपानपूर्वक ता. १५ मीए वांकानेर पधार्या त्यारे प्रथमनी माफक दरेक स्टेशनोए अने वांकानेर जंक्शने आपनी समस्त प्रजाए हाजरी आपी हर्षाश्रुरुपी मुक्ताथी आपने वधावी लीधा; ए वखतना देखावनुं वर्णन करतां आजे पण मारुं शरीर सरोम थाय छे अने नेत्रमां आनंदनां अश्रु भराय छे. धन्य छे आप जेवा धरणीपतिने के जेओए एक गोवाळनी माफक पृथ्वीरुपी धेनुनुं दुध (सत्त्व) प्रजारुपी वत्सने परिपूर्ण पुष्टि मळे त्यांसुधी आप्या बाद अवशिष्टने पोताना उपयोगमां लेवानी प्रशंसनीय प्रथा राखेली छे. एम तो वांकानेरने आपश्रीना राज्याभिषेकथी आरंभी आजसुधीना दरेक मांगलिक प्रसंगोए शृंगारवामां आवेलुं, परन्तु आ वखतनो शृंगार कोइ अलौकिकज हतो; आपश्रीनी युद्धयात्रा सफळ थइ अने आप

संपूर्ण तंदुरस्ती साथे पोताना शहेरमां पधार्या ए कांइ साधारण आनंदनी वात नथी, जे लोको आपश्रीना प्रयाण समये देह तथा दान आदिने ओळघोळ करवा आतुर बनी रह्या हता ते आपनां पुनर्दर्शनथी अवर्णनीय आनंद अनुभवे एमां कांइ आश्चर्य जेवुं नज होय. मारे कहेवुं जोइए के पोतानां गजां उपरवट खर्च करी रैय्यते ए वखते आपनां तरफ विशुद्ध लागणी प्रकट करी हती. जे राजा अने रैय्यत वच्चे एवो विशुद्ध प्रेम सर्वदा जागृत होय एना जेवां भाग्यशाळी बीजां कोण होइ शके, कांतो **प्रजा वत्सल** पद **रामे** प्राप्त कर्युं अने कांतो **आपे.**

आपश्रीनां उक्त आगमन महोत्सव प्रसंगे में निम्नलिखित काव्यमां आशीर्वाद आप्यो हतो.

छन्द झुलणा.

अमर नृप इन्द्रकेरुं थतां आगमन, स्नेहसरिता छली चालीँ पूरे,
कविगुणीमयूँर पंडितपपीहा सहु, निकट आव्या हता जेह दूरे;
वक्रपुरीनी प्रजावल्लि बनीँ पल्लवित, प्रेमीँना पिंडमां प्राण लाव्या,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्रार्थीँ आव्या.
हद विना हर्षनो आज उत्कर्ष छे, स्पर्श पारसतणो जाणीँ पाम्या,
मोद मंगल मळ्या एक स्थानकमहीं, जबर सुखसिन्धुमां सर्व जाम्या;
विरहनी रात्रि गई अमर रवि उगतां, स्नेहीअें विविध पुष्पें वधाव्या,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्रार्थीँ आव्या.
प्रबल झलराणनी कुलप्रथा पाळवा, आंग्लअधिपतितणीँ पक्ष लीधी,
अटपटे अवसरे स्नेहथी संचरी, धीरता वीरता प्रकट कीधी;
श्रमथी साहस भर्यो अमित उद्योग करी, बहु स्थले कीर्तिकुसुमो विछाव्यां,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्रार्थीँ आव्या.
शे'नशाहततणी भक्तिनी भव्यता, अखिलने उर आरोपवाने;
सत्यना संगमां अभय बनीँ एकला, अडग उभा रह्या ओपवाने,
तनथीँ मनथी अने धनथीँ सेवा करी, भूँरि गुणो शौर्यतादिथीँ भाव्या;

आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.
देहनी गेहनी सर्व दरकार तजी, राज्यना काज सहु अलग छोडी,
समयनी विषमता नहीं विचारी जरा, द्रढ रह्या वचनपर जीव जोडी;
क्षत्रिने योग्य कार्यो कर्यां कोडथी, स्नेह—तरु सुभटने हृदय वाव्यां,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमरनृप युद्धयात्राथी आव्या.
चित्तचाहक चकोरोतणा चोंपथी, सुखी कर्या मुख सुधाधर बतावी,
तीव्र दर्शनतणां जे तृषालु हतां, तृप्त करीयां त्वरित अत्र आवी;
मिलननी औषधी आपी आनंदथी, हृदयना विरहरोगो हठाव्या,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.
विजयनां गीत गाये सहु गुणीजनो, बंदी व्हादुरीतणा बिरद बोले,
वेदना मंत्र उच्चारता अति घणा, महद मुदधारी मळी विप्र टोळे;
जयर जयकारना घोषथी गगनपट, ध्वनित करी हृदय हितुनां हसाव्यां,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.
आजनो हर्ष वर्णन करे व्हालथी, शेष तोये वणुं शेष रहेशे,
तो पछी केम करी एक आनन थकी, काव्यथी आज कवि कोई कहेशे;
रंक मधुरासनां शुन्य भुवनो बधां, व्हालथी विश्वपतिऍ वसाव्यां,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.

आपश्री युद्धभूमिमां विशेष वखत रोकाइ नामदार ब्रीटीश सरकारने बनती सहायता आपवा दृढसंकल्प थया हता. परन्तु बी. कुंवरीश्री नन्दकुंवरबा साहेब योग्य उम्मरे पहोंचेलां होवाथी तेमनो संबंध तथा लग्न तुरतमां करवानी आपश्रीने आवश्यकता जणाइ, कन्यादान सार्थक त्यारे गणाय छे के ज्यारे योग्य वर साथे हस्तमिलाप कराववामां आवे, कन्यादाननो महिमा शास्त्रमां सर्वोत्कृष्ट गणवामां आव्यो छे, कारणके मातृऋणथी मुक्त थवाने माटे सर्व दान करतां कन्यादान प्रथम दरज्जानुं लेखाय छे, उक्त कन्यादाननुं पुण्य प्राप्त करवा भाग्य-

संपूर्ण तंदुरस्ती साथे पोताना शहेरमां पधार्या ए कांइ साधारण आनंदनी वात नथी, जे लोको आपश्रीना प्रयाण समये देह तथा दान आदिने ओळघोळ करवा आतुर बनी रह्या हता ते आपनां पुनर्दर्शनथी अवर्णनीय आनंद अनुभवे एमां कांइ आश्चर्य जेवुं नज होय. मारे कहेवुं जोइए के पोतानां गजां उपरवट खर्च करी रैय्यते ए वखते आपनां तरफ विशुद्ध लागणी प्रकट करी हती. जे राजा अने रैय्यत वच्चे एवो विशुद्ध प्रेम सर्वदा जागृत होय एना जेवां भाग्यशाळी बीजां कोण होइ शके, कांतो **प्रजा वत्सल** पद **रामे** प्राप्त कर्युं अने कांतो **आपे.**

आपश्रीनां उक्त आगमन महोत्सव प्रसंगे में निम्नलिखित काव्यमां आशीर्वाद आप्यो हतो.

छन्द झुलणा.

अमर नृप इन्द्रकेरुं थतां आगमन, स्नेहसरिता छली चाली पूरे,
कविगुणीमयूर पंडितपपीहा सहु, निकट आव्या हता जेह दूरे;
वक्रपुरीनी प्रजावल्लि बनी पल्लवित, प्रेमीना पिंडमां प्राण लाव्या,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.

हद विना हर्षनो आज उत्कर्ष छे, स्पर्श पारसतणो जाणी पाम्या,
मोद मंगल मळ्या एक स्थानकमहीं, जबर सुखसिन्धुमां सर्व जाम्या;
विरहनी रात्रि गई अमर रवि उगतां, स्नेहीऐं विविध पुष्पें वधाव्या,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.

प्रबल झलराणनी कुलप्रथा पाळवा, आंग्लअधिपतितणी पक्ष लीधी,
अटपटे अवसरे स्नेहथी संचरी, धीरता वीरता प्रकट कीधी;
श्रमथी साहस भर्या अमित उद्योग करी, बहु स्थले कीर्तिकुसुमो बिछाव्यां,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.

शे'नशाहततणी भक्तिनी भव्यता, अखिलने उर आरोपवाने;
सत्यना संगमां अभय बनी एकला, अडग उभा रह्या ओपवाने,
तनथी मनथी अने धनथी सेवा करी, भूरि गुणो शौर्यतादिथी भाव्या;

आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.
देहनी गेहनी सर्व दरकार तजी, राज्यना काज सहु अलग छोडी,
समयनी विषमता नहीं विचारी जरा, द्रढ रह्या वचनपर जीव जोडी:
क्षत्रिने योग्य कार्यो कर्यां कोडथी, स्नेह-तरु सुभटने हृदय वाव्यां,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमरनृप युद्धयात्राथी आव्या.
चित्तचाहक चकोरोतणा चोंपथी, सुखी कर्या मुख सुधाधर बतावी,
तीव्र दर्शनतणां जे तृषालु हतां, तृप्त करीयां त्वरित अत्र आवी;
मिलननी औषधी आपी आनंदथी, हृदयना विरहरोगो हठाव्या,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.
विजयनां गीत गाये सहु गुणीजनो, बंदी ब्हादुरीतणा बिरद बोले,
वेदना मंत्र उच्चारता अति घणा, महद मुदधारी मळी विप्र टोळे;
जबर जयकारना घोषथी गगनपट, ध्वनित करी हृदय हितुनां हसाव्यां,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.
आजनो हर्ष वर्णन करे व्हालथी, शेष तोये घणुं शेष रहेशे,
तो पछी केम करी एक आनन थकी, काव्यथी आज कवि कोई कहेशे;
रंक नथुरामनां शुन्य भुवनो बधां, व्हालथी विश्वपतिए वसाव्यां,
आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.

आपश्री युद्धभूमिमां विशेष वखत रोकाइ नामदार ब्रीटीश सरकारने बनती सहायता आपवा कृतसंकल्प थया हता, परन्तु दी. कुंवरीश्री तरुनकुंवरबा साहेब योग्य उम्मरे पहोंचेलां होवाथी तेमनो सबंध तथा लग्न तुरतमां करवानी आपश्रीने आवश्यक्ता जणाइ, कन्यादान सार्थक त्यारे गणाय छे के ज्यारे योग्य वर साथे हस्तमिलाप करावबामां आवे, कन्यादाननो महिमा शास्त्रमां सर्वोत्कृष्ट गणवामां आव्यो छे, कारणके मातृऋणथी मुक्त थवाने माटे सर्व दान करतां कन्यादान प्रथम दरज्जानुं लेखाय छे, उक्त कन्यादाननुं पुण्य प्राप्त करवा भाग्य-

थावी थवुं ए साधारण वात नथी. आपश्रीए प्रयाण पहेलांज कुंवरीसाहेबना संबंध माटे योजना करी राखेली होवाथी आप फ्रान्स तरफ पधार्या बाद लगभग अढी मासे आपनी सूचना मुजब वांकानेर स्टेटना मुख्य कारभारी राववहादुर नाथाभाइ अविचलदास देसाइए सारा स्टाफ साथे ओरीस्सा प्रान्तमां आवेला मयूरभंज राज्यना नामदार महाराजाश्री पूर्णचन्द्रसिंह भंजदेवना पवित्र करकमलमां दी. कुंवरीश्री तख्तकुंवरबा साहेबना संबंधनुं श्रीफळ ता. २७-१-१६ ना रोज राजरीति मुजब अर्पण कर्युं, संबंधनी समस्त क्रिया बारिपदा नामनी राजधानीमां एक महान् दरबार भरी शास्त्रोक्त प्रकारे करवामां आवी हती.

ता. ११-८-१९१६ ना रोज दी. कुंवरीश्री तख्तकुंवरबा साहेबने चुंदडी ओढाडवा माटे मयूरभंजना महाराजाश्रीना काकाश्री मे. रावतरायजी साहेब वगेरे अमीरउमरावो आवी पहोंचतां "अमरविलास" राज्यना महेलना अंदरना कम्पाउन्डमां एक म्होटो समीआणो उभो करवामां आव्यो अने त्यां सवारना अग्यार वज्ये एक दबदबाभर्यो दरबार भरवामां आव्यो, ए वखते मिजमानोमां मे. रावतरायजी साहेब तथा तेनी साथेना डेप्युटेशनमां आवेलां राजकीय जनो उपरांत कच्छ देशान्तर्गत तेराना कुमारश्री दादुभा साहेब, वळाना पाटवीकुमारश्री गंभीरसिंहजी साहेब तथा तेमना लघुबन्धु कुमारश्री प्रतापसिंहजी, ध्रांगध्राना कुमारश्री नटवरसिंहजी, पंचाशीआना कुमारश्री केसरीसिंहजी, सींधावदरना कुमारश्री रणमलसिंहजी, जालीना कुमारश्री मानसिंहजी तथा शिवसिंहजी वगेरे भायातो तथा स्टेटना तमाम ऑफीसरो अने गामना समग्र सद्गृहस्थो हाजर थया हता.

चुंदडी आदि वस्त्रालंकारनी म्होटी छाबो प्रथम हाइस्कुलना मकानमां सुशोभित रीते गोठवी मयूरभंज स्टेटना माणसोए उपाडी अने त्यांथी स्वारीना आकारमां वाजतेगाजते केराळा दरवाजेथी पूल दरवाजे थइ अमरविलास पहोंचतां उक्त छाबोने विधिपुरःसर वधाव्या बाद समीआणानी अंदर भराएला दरबार समक्ष ए सर्व चीजो आपनी नजरे करवामां आवी. त्यांथी दी. कुंवरीश्री तख्तकुंवरबा साहेबने विधिपूर्वक क्रिया करावी चुंदडी ओढाडवामां आवी अने त्यारपछी कचेरीनी अंदर समयोचित भाषणो थयां. ते समये म्हारा तरफथी नीचे प्रमाणे शब्दोमां हर्ष प्रदर्शित करवामां आव्यो.

मंगलं भगवान् विष्णुर्मंगलं गरुडध्वजः
मंगलं पुंडरीकाक्षो मंगलायतनं हरिः ॥

कवित्त.

पूरबतें आये परिपूरन बढाय प्यार,
सुखद श्रीदामचन्द्र भ्राता रामचन्द्रके ।

कवि नथुराम शाखा कलित कुशाग्रहकी,
भंजकुलभूषन है व्याघ्र अरिवृन्दके ॥
जाहिर जिनोंके यह जगसरसीके वीच,
परम प्रकाशे कंज सुयश अमंदके ।
बक्रपुर आज शक्रपुरकी धरें है शोभा,
देखी पितरव्य पूर्नचंदजु नरेंदके ॥
बक्रपुरवासी जन पुनित पुरैनी रूप,
पुर्नचंद पेख छटादार बन छाजेंगे ।
कवि नथुराम भंजकुलके महान भट,
रसिक अमर झलरान ढिग राजेंगे ॥
गाजेंगे गंभीर गान बाजेंगे विविध बाद्य,
नृपति निवाजेंगे लवार जन लाजेंगे ।
साजेंगे सनेही सुख भ्राजेंगे भुवन जय,
दोउ भासमान एक आसन विराजेंगे ॥
पारस ओ चिन्तामनी छीरशर्कराको योग,
स्वर्नरत्न योग जैसें सुखद जहानकों ।
कवि नथुराम जैसो मकर प्रयाग योग,
विश्वनाथ दर्शन ओ सुरसरि स्नानको ॥
चन्द्रपूर्णिमाको योग षष्ठी ओ महोदयको,
वृन्दावनवास ओ कलिन्दी जलपानको ।
मोरभंज झालावार बारीपदा बक्रपुर,
आछो भयो योग कच्छवाहा झलरानको ॥

दोहा.

इश्वर उत्तम योग यह, अविचल राखहों आप;
प्रेम परस्परको बढा, आनंद देहु अमाप ॥

आवेला सर्व सभ्योने साकर वहेंचवामां आवी; त्यारबाद अत्तरगुलाबथी तरबतर बनेला सर्व लोको पुष्पहारथी कंठप्रदेशने शोभावता अने गजराथी हाथने डोलावता आनंद-पूर्वक पोतपोताने स्थाने पहोंच्या.

नूतन वर्षाभिनंदन.

बालयुवाने वृद्धजनोसह चित्तमां नित्ये च्हाये छे,
दिनमणि सरखां दर्श आपनां दुःखटाळण देखाये छे;
मकवाणा कुळना मंडनमणि द्विज सुरभिना दुःख हरी,
नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी.

तख्तनशीन थया पछीं तुर्तज बख्त बुलंद गणाया छो,
जनपतिना मंडळमां जाहिर प्रशंसनीय जणाया छो;
चन्द्रवदनथी सुधा वचनना झरण सदा सुखभरण झरी,
नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी.

प्रजापाळ वृत्त पाळनार छो टाळनार छो सघळा तंत,
गाळनार छो दिन गम्मतमां खरी हृदयमां राखी खंत;
विस्तार्यो यश दिगन्तसुधी विजय लक्ष्मीने वीर वरी,
नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी.

माळी माफक राज्यबागने शाणा नित्य सुधारो छो,
पाळी कुळनुं बिरद प्रतापी ठीक हृदयने ठारो छो;
शूळ उपावी शठना उरमां नीचोने निर्मूळ करी,
नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी.

वक्रपुरीना शक्र सलुणा, पृथ्वीमां पंकाया छो,
सुखवैभवथी आ दुनियामां इन्द्रतुल्य अंकाया छो;

जे छळ कपट करे तेना तन ऊपर फेरवीं तीव्र छरी,
नवीन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी.
उत्तम कृतिथी आप थया छो केशवनी करुणाना पात्र,
इच्छे छे शुभ सदा आपनुं पूर्णप्रेमथी प्राणी मात्र;
दया दान आदिमां दाखवी विविध वीरता फरी फरी,
नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी.
वंदनीय कृत्यो करनारां पुष्पकुंवरबा पटराणी,
अहनिश श्री युवराज प्रतापनी विनोददायक छे वाणी;
कवि कोविदनां कष्ट नष्ट करीं भीति भ्रष्टने हृदयभरी,
नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी.
प्रतिदिन प्रौढ सुप्रीति प्रजानी महद नीतिथी मेळवों छे,
कवि नथुराम वळी रैय्यतने कलित रीतिथी केळवों छे;
नित्य आपनो प्रताप निरखी अस्त पामजो अखिल अरि;
नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी.

सालगिरा.

आजे अमित आनंदप्रद एकादशी अभिराम छे,
गुरु सुखभरण गुरुवार गरवो, स्नेहीने सुखधाम छे;
वळि पोष मास पवित्र भासे चारुता नभचन्द्रनी;
सुखरुप सालगिरा विराजे श्री अमर नरइन्द्रनी.
विश्वे विशेष विनोदमय आ वक्रपुर वरताय छे,
आशीर्वचन उच्चारता कविकोविदो गुण गाय छे;
दीपे विजय देनार वाणी विप्रकेरा वृन्दनी,
सुखरूप सालगिरा विराजे श्री अमर नरइन्द्रनी.
आनंददायक आजनो उत्सव महद उर धारीं आ,

परिजन सहित सहु स्नेहीओ अति प्रेम धारी पधारीआ;
पुरजन प्रबल उत्साहथी संतुष्ट बनि साचे मने,
आशीश अगणित अरपतां झलराणमणिगुणगेहने.
मर्मज्ञ महिपति धर्मना धींगी ध्वजा करमां धरी,
हर्री हानिओ हितुजनतणी भंडार शुभ यशना भरी;
करी अवन उत्तमनुं अहर्निश दुष्टना दलने दहो,
ध्रुवसम सदा धरणीपरें श्रीअमरनृप अविचल रहो.

बनी मुकुटमणि महिपालना मखवान अति अभिरामजो,
प्रतिदिन प्रतापकुमार सहित अपार आयुष पामजो;
आशिश नवल नथुरामकेरी लक्षविधि वैभव लहो,
ध्रुवसम सदा धरणीपरें श्रीअमरनृप अविचल रहो.

मान महान महानथी मेळवी अग्रणी उत्तममां बनी राजो,
वारण वैरीमहीं बनी व्याघ्रगुणीनृप गाढ ध्वनि करी गाजो;
नेह धरी नथुराम कहे भल भूपति मंडलमां अति भावो,
सालगिरा सुखरुप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो.

प्रेम-पीयूष प्रजाजनने पृथिवीपर पाइ करो अजरामर,
आप बनी अमरेश अहोनिश उत्तम राज करो अम उपर;
श्रीयुवराज जयंत समेत लीयो नथुराम कहे शुभ ल्हावो,
सालगिरा सुखरुप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो.
वासवतुल्य विहार करी जगवी जगमां जबरा जयकारो,
भाव धरी उर भूसुरना सुखदायक आशीरवाद स्वीकारो;
प्रेम करी परमारथथी नथुराम कहे क्षितिमां यश छावो,
सालगिरा सुखरुप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो.
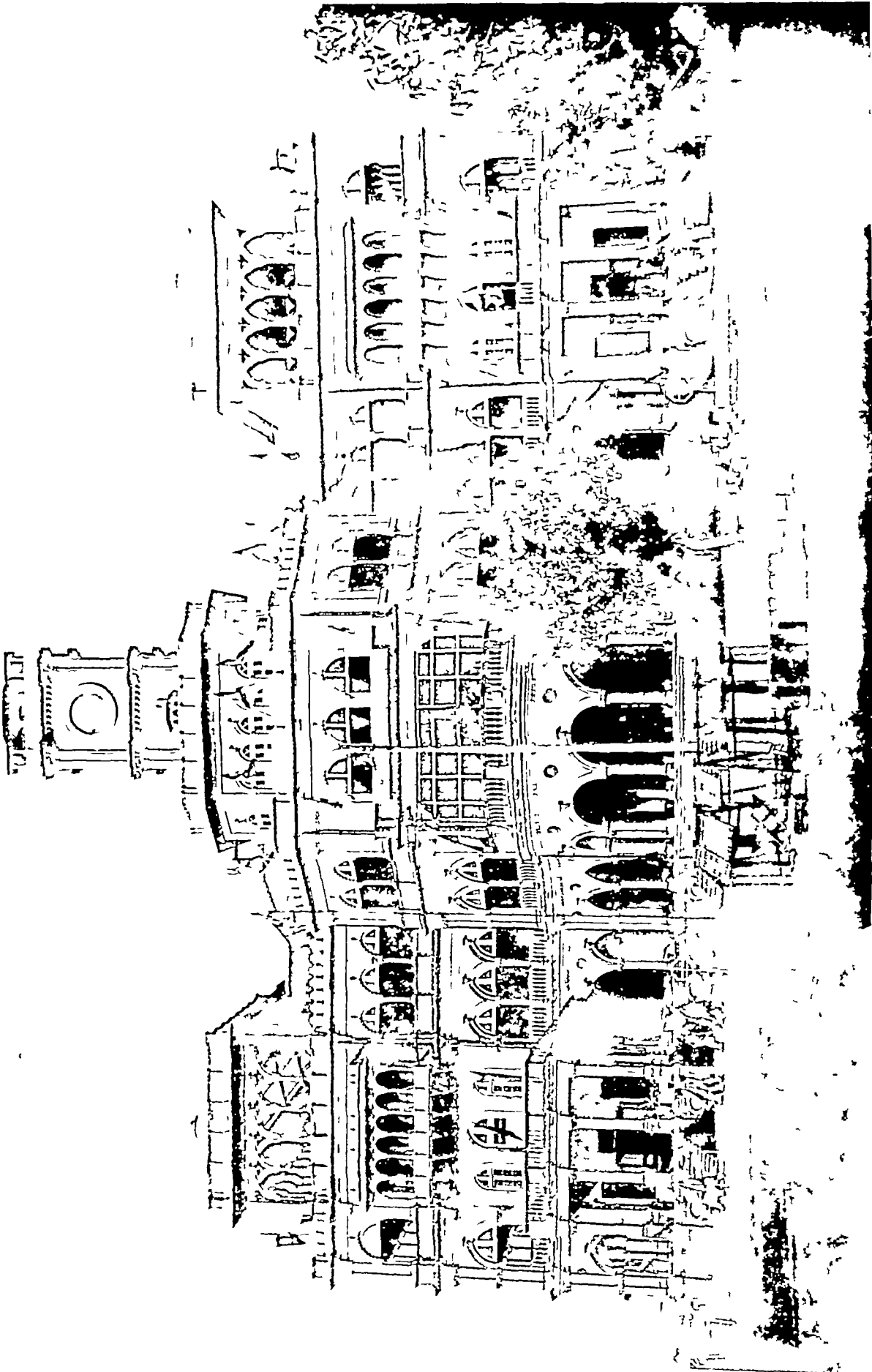
छे न अरि हजी आ अवनिमहीं उद्भव ना अरिनो फरी थाशे,
श्रीझलराण अजातअरि कही आपतणा गुणीओ गुण गाशे;
कोड धरी नथुराम कहे वहु वाद्य सदा जयनां वगडावो,
सालगिरा सुखरुप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो.
याग करो अनुराग धरी वडभाग सदा सुरवृन्द रीझावो,
हर्ष धरी घृत होमी अपार सुगंध सहु जगमां सरसावो;
कीरतिगंग प्रीते प्रकटी नथुराम कहे हितुने न्हवरावो,
सालगिरा सुखरुप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो.
राजी रहो रसवंत हमेश सुराजि रसिकनी आगळ राखी,
शक्ति सदाय सहाय करे परिपूरण अमृत दृष्टिथी दाखी;
आशिष ए नथुरामतणी मुदमंगलनी नित्य धूम मचावो,
सालगिरा सुखरुप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो.

थोडा दिवस पछी मयूरभंज स्टेटना मानीता मिजमानो रवाना थया अने आपश्रीए कुंवरीवाना लग्ननी तैयारीओ कराववा मांडी; वरातने तेमज अन्य राज्योना परोणाओने उतारा आपवा माटे स्टेटनां समग्र मकानोने दुरस्त करावी म्होटा वगीचावाळा बंगलामां केटलोएक भाग वधारवामां आव्यो, अने अमरविलास सामे तैयार करावेली म्होटी महेलातनुं ता. २-१२-१९१६ ना रोज विधिपुरःसर वास्तु करावी तेने महाराजा जामश्री रणजीतसिंहजी बहादुर साथेनी मित्रताने यावच्चंद्रदिवाकर याद राखवा खातर " रणजीतविलास " एवुं नाम आपवामां आव्युं; अने तेनी बाजुना बंगलामां पण सारो सुधारो वधारो करी तेने " खेंगारभुवन " एवुं नाम आप्युं.

ता. १२-१२-१६ ना रोज आपश्रीए म्होटी धामधूमनी साथे दी. युवराज कुमारश्री प्रतापसिंहजीने विद्याभ्यास करवा माटे राजकोट राजकुमार कॉलेजमां दाखल कर्या. कुशाग्र बुद्धिवाळा कुमारश्रीए गुजराती भाषानुं जोइतुं ज्ञान प्रथमथीज मेळवेलुं होवाथी राजभाषा के जेनुं शिक्षण आजकाल बहुज जरुरनुं छे ते मेळववा अहींथी राजकोट पधारवा वखते लेशपण निरुत्साह प्रदर्शित कर्यो नहि; नहितो एटली न्हानी उम्मरे गृहस्थनां बाळको पण मातापिताथी दूर रही न शके तो पछी राजकुमारो तो शी रीतेज रहे, परंतु " सिंहनां बाळक पण सिंहज होय छे " ए न्याये क्षात्रकुमारो विद्या जेवो उत्तमखजानो मेळववा मातपिताना वियो-

गथी विह्वळ बनेज नहि, दिवसे दिवसे कुमारश्री अभ्यासमां आगळ वधवा लाग्या अने आशा छे के हजुपण तेओ उत्तम प्रकारनुं ज्ञान प्राप्त करी आपश्रीनी माफक बुद्धि तेमज बळमां सर्वोत्कृष्ट बनी दीर्घायु भोगववा समर्थ थाय एवी परमकृपाळु परमात्मा प्रत्ये मारी सतत प्रार्थना छे.

सने १९१७ ना माहे जान्युआरीनी ता. २७ मीए दी. कुंवरीश्री तख्तकुंवरबासाहेबनां लग्ननो दिवस निश्चित करेलो होवाथी मयूरभंज स्टेटना नामदार महाराजा पूर्णचन्द्रभंजदेवजी म्होटी वरातसहित हथेवाळे परणवा पधार्या, उक्त दिवसे वांकानेर नोबत, नगारां, शरणाइ, तथा बॅन्डना मधुर अवाजपूर्वक महिलाओना मांगलिक गीतथी गाजी रह्युं हतुं, वरातने म्होटा बगीचावाळा बंगलामां उतारो आपवामां आव्यो अने खानपान वगेरेना उत्तम प्रबंधथी इष्टजनो अत्यंत संतुष्ट थया. रात्रीए विधिपुरःसर लग्नक्रिया करवामां आवी, आपश्रीनी कारकीर्दीमां उक्त लग्न प्रथमनुं होवाथी याचको वगेरेने सारी रीते संतोषवामां आव्या, आकाशमां मेघराजे अने भूमिपर आपे दाननी एवी तो रेलमछेल करी मुकी के ए वखते शान्ति अने आनंद सिवाय बीजुं कंइपण जोवामां आव्युं नहि. ध्रांगध्राना नामदार महाराजा राजसाहेब श्री घनश्यामसिंहजी बहादुर, राजकोटना नामदार ठाकोरसाहेब श्री लाखाजीराज बहादुर, वढवाण तथा लाठीना नामदार ठाकोर साहेबो, पोरबंदरना नामदार महाराणा श्री नटवरसिंहजी साहेब बहादुर, शायपुरामेवाडना श्रीमान महाराज कुमार श्री उमेदसिंहजी साहेब, वळाना युवराजश्री गंभीरसिंहजी, गोंडलना युवराजश्री भोजराजजी तथा तेमनां राणीसाहेब अने ए उपरांत एजन्सीना न्हाना म्होटा अमलदारोए दी. कुंवरीसाहेबना लग्न प्रसंगे वांकानेर पधारी शोभामां वृद्धि करी; जेनुं विस्तारपूर्वक वर्णन निम्न लिखित "श्री तख्तकुंवरी विवाहवर्णन" काव्यमां में प्रसिद्ध करेलुं छे.

दोहा.

प्रथम बंदुं गुरु प्रानके, पदपंकज सुखरूप;
फिरि बंदौं कर जोरिके, इश्वर चरन अनूप.

छप्पय.

पितुकुल परम पवित्र, देव झलराना दाता;
मातुल शूर शिशोद, पुहुमी पटपर प्रख्याता.
जनक अमर अवतंस, अमर नरपाल अनूपम,
गुलाबकुंवरीं मात शुद्ध सती सावित्री सम;
ऐसें तख्तकुमारीके, वर विवाहकी रसभरी,
करै काव्य नथुराम कवि, स्नेहसहित सारद स्मरी.
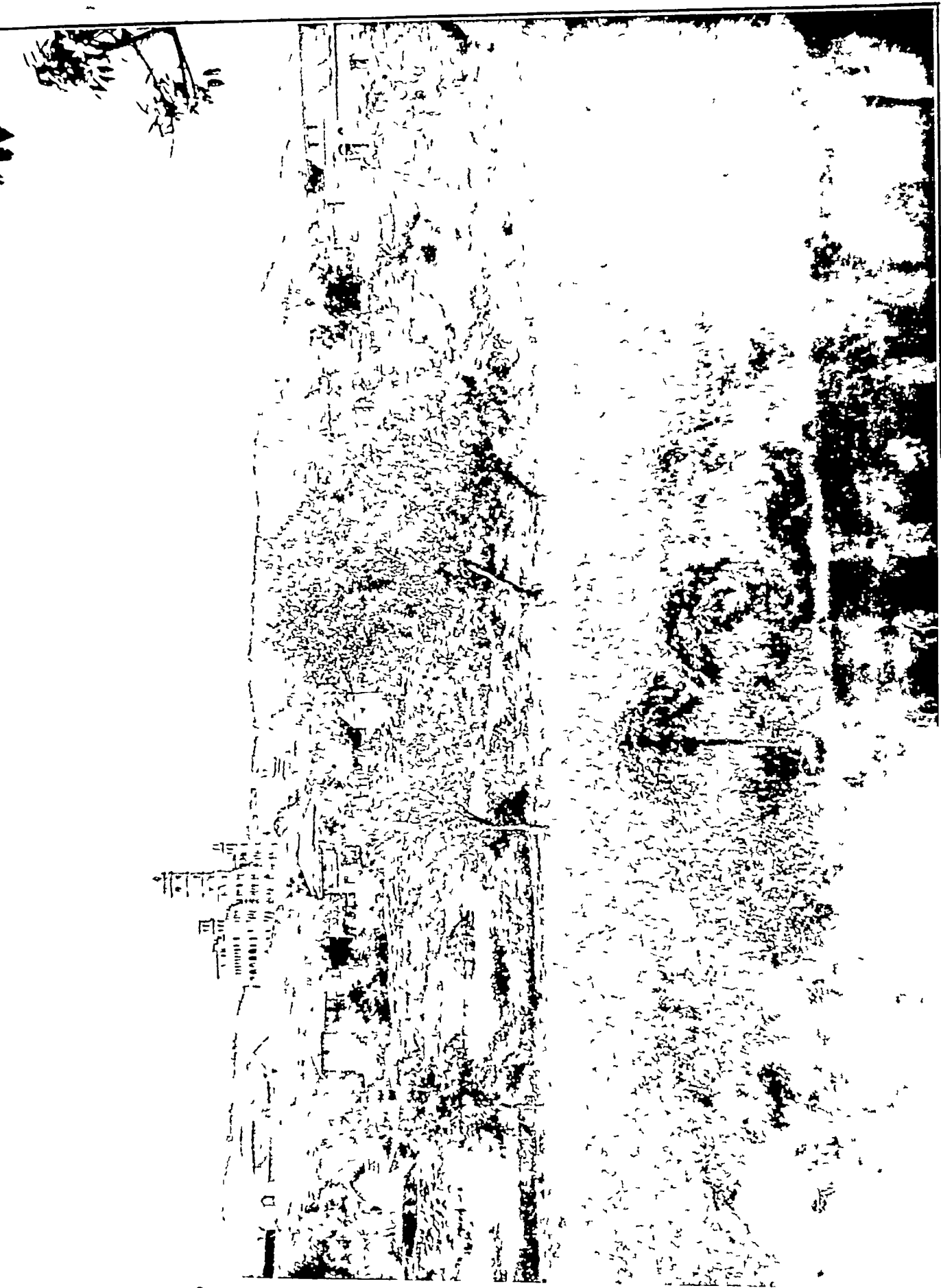
दोहा.

सवंत् त्रय ऋषि निधिशशि, माघ मास मनोहारी;
शुक्लपक्ष पंचमी शनी, परिनय तख्तकुमारी.

सवैया.

उत्तम ओसरके सुवलाहक, पूरबकी दिशि जोरसों जागे,
मंगल गीतकी गर्जनसों, बढते प्रतिघोस रहे रस पागे;
पंडित बंदि मयूर पपीहकों, अर्पन हेत सबैं सुख मागे,
वक्रपुरीमें बडे नथुराम वो नेहके बुंदसों वर्षन लागे.

कवित्त.

आज वक्रपुरमें अनोखी छबि छाय रही,
गाय रही गोरी गीत मिलकें मृदंगसों.
कवि नथुराम कहै पूर्न मुद पाय रही,
हिय हुलसाय रही स्नेहिनके संगसों;
अधिक अन्हाय रही स्नेह सरसीके मध्य,
तख्तकुंवरीके परिनयके प्रसंगसों;
मंगल जताय रही धीर तजि धाय रही,
न्हाय रही चारु नित उरके उमंगसों.

अवीर गुलाल और रोरीकी करोरों बिधि,
घूम रही गहरी घटायें आज घर घर;
कवि नथुराम कहे भावसों भिंजावे तन,
सेवती गुलावके सुगंधी जल भर भर;
अमर नरेश भोंन उत्सव विवाहहुको,
इन्द्रधनु रूपकों रँगोली रही धर धर;
आज वक्रपुरमें वसंत विच पावस है,
विप्र केकी आशिश दे उंचे हाथ कर कर.

सवैया.

चांदनिसी चमकी रहि है अति, कान्ति कलित दिवार दरोंकी,
त्यों नथुराम सुराहनमें, भइ भीर सुवाहन और नरोंकी;
नग्न समग्र निनादित नौतम, जाचक जुथ्थ रहै मग रोकी,
घारी रहै गुनि तख्तकुमारीको वक्रपुरीमें विवाह विलोकी.

कवित्त.

कंचन कलसहुसों मंडित मनोहर है,
पंडित प्रशंसा करै कहांलों सुकाव्य कर;
कवि नथुराम कहै निधिको निवास जहां,
समृद्धि सुरेशकी भरी है अति भावभर;
जयके जहाज और नयके निवास रूप,
बैठें रावराने जामें आसन उत्तंग पर;
अमर नरेशके रसीले राजभोंन राजै,
अधिकाधिक पायके विवाहको प्रसंग वर.

कवित्त.

मधुर मृदंग बाजै सरस सरंगी बाजै,
चारु चंग बाजै बाजै अमित उपंग आज;
कवि नथुराम कहै कलित कवालैं गाजै
गाढ गुनि लोगनकी कर स्वरसंग आज,
सुभग श्रंगार सजी नर्तकी अनंत नाचै,
राचै रावराने देखी अभिनय अंग आज,
गानकी घटायें गे'री तानकी छटायें छाजै,
तख्तकुंवरीके परिनयको प्रसंग आज.

सवैया.

तख्तकुमारीहुको लगनोत्सव दिव्य खुबी दुनिमें दरसावत,
भावत खूब भलैजनकों, नथुराम सदा हितुकों हरखावत;

लावत लाभ करोरबिधि अमरेशहुको छितिमें यश छावत,
गावत श्री झलरानहुके गुन मंगल मोद महान मचावत.

कवित्त.

पूरन प्रमोदसों तमाम परिचारिकायें
सहित श्रंगार देखों बिबिध बिलासभर;
कवि नथुराम हरवख्त हितु लोग देखों,
अंबर अमोल धर सुंदर सुबासभर;
तख्तकुंवरी के परिनयको प्रसंग पाय,
अमर नृपाल देखों हृदय हुलासभर;
आयनेकी आबसों अनंत आफताब जैसें
देखों भव्य राजभोंन परम प्रकाशभर

रोशनीकी राजी बडै जोरसों बिराजी रही,
पाजी तमपुंजकों प्रजारी धूरिमैं धरन;
कवि नथुराम छुपिजात छपाधीश जरा,
मुखकों बताय पाय अधिक अनादरन;
अमर निवास पास जाहिर जरैइ रहै,
विद्युत् चिराग परिपूरन प्रभाभरन;
तख्तकुंवरीको वक्रपुरमैं बिबाह आज,
देखिवेकों आये मानो निशिमैं दिवाकरन.

मोतिनकी झालरैं झझुमी है जलूस भरी,
जाहिर जरीके परदेसों छवि छावत है;
कवि नथुराम हांडी झूमर अनंत बिधि,
फव्यो फरनीचरसों मन ललचावत है;
तख्तकुंवरीको लग्न मंडप ललित अति,
गौरव भर्यो है जहां गोरी गीत गावत है;

सीसेको समस्त काम ठयो ठाम ठाम यातैं,
एक कै अनेक प्रतिबिंबन बतावत है.

पूरव बंगालतैं अपूरव उमंग भर,
चले कच्छवाहे ज्यौं घटायें चले घनकी;
कवि नथुराम रंग बेरँगी बसन वारी,
शोभत है श्रेनी संग शूरे सुभटनकी;
बंदिनके बृन्द बडे विरद् उचारै याकी,
रचना बनी है मोर चातकीरवनकी;
इन्द्रकी बरात जैसी आवत उमड आज,
सुंदर बरात रामचन्द्रके सुवनकी.

इत है बराती उत पुष्प भाति भाति खिलै,
अग्रणी श्रीदाम इत उत रतिकंत है.
कवि नथुराम इत विध विध वाद्य वजै,
उत मधु मालिकाकै रव रसवंत है.
इत अगवानी करे अमर सहित सैन
उत कीर कोकिलाको लश्कर लसंत है;
इत देव असी पूर्णचन्द्रसिंह दुलहा है,
उत बनबाटिकामें बनरा बसंत है.

सवैया.

बक्रपुरी बडभाग बनी, अनुराग भरे हिय खूब हुलासत,
नेह बढे नथुराम निरन्तर अन्तर बाहिरके तम नासत;
तारे समान तमाम बरातिन भव्य प्रभाभर बामधि भासत,
आजे अपूरव आनंद है तिथि पंचमी पूरनचन्द्र प्रकासत.
बारीपदा अरु बक्रपुरी, गिनवे लगे एकसी सज्जन सुंदर,
अंतर अल्प लखात नहि, दिशि पूरब पच्छिमके उर अंदर

जैसे मिले हरि ओ हर हेतसों, जैसें मिले कैलासरु मंदर,
तैसें मिले नथुराम कहे झलरान कुशावह स्नेहसमंदर—
स्थानकीं पनकी मान महानकीं रोज निहारीं सरासर राहत;
त्यों नथुराम निहारीं कै नौतम, श्री अमरेशकीं चोगुनि चाहत;
मोजमजा मिजमानीं बिलोकीं कै, आनंदसागरमैं अवगाहत;
बारींपदाकों बिसारीं बरातिन, वक्रपुरीकों समस्त सराहत.

हीरे कै हजारो आभरनसों अलंकृत है,
मोतिनकी मालायें अनंत प्रभाधारी धर;
बसन जरीके निके अंग अंग ओपत है,
स्त्रगें सुमननकी धरी सुगंध वारी वर.
कवि नथुराम बडभाग आवे ब्याहवेकों,
रामचन्द्र सुवन सुगजकी सवारी कर;
उपमा अनोठी अबिलोक वेतैं आवतहै,
उदे भयो पूर्नचन्द मानो घटाकारीपर.

सोंहर सिंधाये लग्नमंडपमें स्नेहधर,
बरसनमानसों बराती बैठें पोरी आय;
कवि नथुराम उभे पच्छकै अमौले गुन,
गायवेकों लागी उभे पच्छनकी गोरी आय;
झोरी ले गुलालकी कुमारिकायें भोरी भोरी,
डारी वे कों लागै बार बार दोरी दोरी आय,
जनकपुरी सी जमावट भरी जोरदार,
ब्याहवेकों बैठे जब अमर किशोरी आय.
पूज्य भावनासों वर विनय चढाय कर,
मानसों बुलाये रामचन्द्रजुके नन्दकों;

कवि नथुराम कहै वक्रपुर शक्र आप,
सह युवराज धर आनंद अमंदकों;
विप्रन के बृन्द और सूरज अगनि हुको,
साखि राखि सहित समस्तश्रुति छन्दकों,
चांदर्नासैं तख्तकुंवरीकों वर बख्त पाय,
अर्पि देत अमर नृपाल पूर्नचन्दकों.
साजी साजी श्रेष्ट गजराज अरुवाजी दिये,
अर्पनकी स्वर्न साजी सुरभिनकी आवसब;
कवि नथुराम कोटि कंचनके आभूषन,
हीरा लाल पन्ना मुक्तामनिसों जरावसब;
वस्त्र शस्त्र दासी दास बाहन विविध जाती,
दिये अमरेशने बढाय चित्तचाव सब;
सुज्ञताइ श्रेष्ठताइ मुख्य मधि मिष्टताइ,
तख्तकुंवरीकों अर्पे एते असबाव सब.

दोहा.

मात पिता मन है मुदित, द्वयकर धरीके शीश;
वर कन्याकों दे विविध, शुध उरसों आशीष.

सवैया.

विघ्न बिदाकर संपति पाकर, चाहसों स्नेहिनके चित्त चोरी,
नित्य रहो नथुराम सुखी वसुधा तलके सुविनोद बटोरी;
पाय विजै पुहुमीपर पूरन, मान विपच्छनकै सब मोरी;
रोज रसैं भरीओ सुयशैं भरी, जीवो जुगोजुग सुंदर जोरी

दोहा.

पूर्नचन्द्र अरु अमरके, अखिल कुटुंबकों ईश;
प्रेम छेम अरु हेमकी, बडी करो बकसीस.

ता. २८-२-१७ ना रोज मुख्य कारभारी राव बहादुर नाथाभाइ अविचलदास देसाइए पोतानो चार्ज छोडतां आपश्रीए एक म्होटो दरबार भरी तेमनी सेवानी कदर बूझी अने उक्त पद उपर ए वखतना डेप्युटी कारभारी श्रीयुत देवशंकर जयकृष्ण ढवेने नियत कर्या तेमज तेमने राजरीति प्रमाणे पोशाक आप्यो.

सने १९१८ नी शरुआतमां नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी युद्धभूमिमां बजावेली ड्युटी बदल आपश्रीने महान मानसूचक "ऑनररी केप्टन" नो हुद्दो तथा अंगत बे तोपोनुं मान वधारी एकंदर अग्यार तोपनुं मान आपवामां आव्युं; तेमज कुमारश्री शिवसिंहजी के जेओ युद्धमां आपश्रीनी साथे पधार्या हता तेओने "ऑनररी सेकन्ड लेफ्टेनन्ट" नो हुद्दो बक्षवामां आव्यो, डॉक्टर गजानन झीणाभाइ माहीमतुरा एल, आर, सी, पीने पण "ऑनररी सेकन्ड लेफटेनन्ट" नो हुद्दो अने खवास चकु ने "नायक" ना हुद्दाथी निवाजवामां आव्या. पोताना महाराजाने आ रीतनुं उत्तम मान मळतां अत्यंत प्रसन्न थएली प्रजाए चार दिवसो उत्सवनी माफक उजव्या, पहेले दिवसे मानवंता नामदार बामा साहेब तरफथी श्री "रणजीत विलास" पेलेसमां चापार्टी आपवामां आवी, तेमां पुरुष वर्ग तथा स्त्रीवर्ग माटे भिन्न भिन्न गोठवण करवामां आवी हती, एज रीते बीजे दिवसे पण मानवंता मुळीवा साहेब तरफथी, त्रीजे दिवसे अमलदारो तरफथी अने चोथे दिवसे महाजन तरफथी चापार्टीना मेलावडाओ करवामां आव्या; तेमां आपश्रीए प्रजावर्गनी साथे खानपानमां भाग लइ राजाप्रजा वच्चेना गाढ प्रेमनुं प्रतिपादन करी आप्युं. दरेक मेलावडामां उत्तम प्रकारनां खानपान अने गानताननी योजना करवामां आवी हती.

ता. २२-१-१८ वि. सं. १९७४ ना पोष शुदि ११ मंगलवारे आपश्रीना वर्षगांठ महोत्सव प्रसंगे नामदार सरकार तरफथी मळेला माननी खुशालीमां आपश्रीए ब्राह्मणवेरो (ब्राह्मण पासेथी लेवातो कर), तेमज खेडूतो पासेथी वाडी उपर लेवातो आवननोकर कायमने माटे माफ कर्यो, पांजरापोळमां सारी रकमनुं घास आपवा फरमाव्युं, केटलाएक निमकहलाल नोकरोना पगारमां वधारो कर्यो अने मोंगवारी सबब न्हाना पगारवाळाओने पण अकेक रुपिओ वधारी आपवा फरमान कर्युं, त्यारबाद सर्वे सभासदोने साकर वहेंचवामां आवी ए प्रसंगना आनंदमां भाग लेवा राजकोटना नेक नामदार ठाकोर साहेबश्री लाखाजीराज बहादुर तथा वळाना युवराज कुमारश्री गंभीरसिंहजी वगेरे पधार्या हता. अने में निम्नलिखित कवितामां आशीर्वाद आप्यो हतो.

सालगिरा.

कवित.

वंस हरपालके में जाके हर पालक है,

ऐसो नरपालक विराजे बंकपुरको ॥
कवि नथुराम जाको श्रेय करिवेके काज,
रहतहै अज आदि समुदाय सुरको ॥
कंससें कुटिलपें कन्हैयासो कलानिधान,
धीरवर धरपें धरैया धर्मधुरको ॥
राज अमरेशकी जयंतिको प्रसंग पाइ,
कोन विध आनंद बताऊं आज उरको ॥

पोष महा निरदोष अरु, दिन पावन पूर्न इकादशीको है;
आनँदमें नथुराम सरूप, रमाधव उद्भव अष्टमीको है;
बंकपुरीमें चहेवसिबो सुर, तो फिर क्यों मनुजात न मोहे;
दीपक उत्सवीतें दुगुनी यह, सालगिरा अमरेशकी सोहे.

प्रीतसों पधारि यह मांगलिक ओसरपें,
लाखाजी महीपने विनोदकों वढायो है ॥
कवि नथुराम भेट मंगलकी देवे काज,
मंगलको योग दैवने ही दिखलायों है ॥
मंगल प्रभातमें प्रसारिकें सुवर्नकर,
भासमान आसमानमें प्रकाश पायो है ॥
सालगिरा उत्सवपें स्नेहीके समाज मध्य,
राज अमरेश सुरपतिसो सुहायो है.

मंगलसूचक राजके राहपें, रंग दुरंगीध्वजा फहरानी;
मंगल धाम लसे नथुराम, सुमंगल याम घरि ठहरानी;
डोलतहै पुरबासी बिनोदमें, बोलत कोविदमंगल बानी;
श्री अमरेशकी सालगिरा सबभांति बिराजत मंगलसानी.

युरोपिय युद्धमें विशुद्ध छत्र पनवारे,
अमर सिधारे उतसाह उर आनिकें ॥

कवि नथुराम पद केप्टनको ऑनररी,
दियो ज्योर्ज पंचमने कद्र पिछानिकें ॥
अबके बरस वह मान कियो कायम त्यों,
विनयके नन्दनको विनय बखानिकें ॥
बक्कपुरके लिये दरज्जा देखि अवलको,
जावें बलिहारी हम राज उदे जानिको ॥

मंडन भूपतिमंडलके, जयपाओ सदानयसिंह दुलारे;
छाओ महा सुखसंपदसों, नथुराम प्रजाजनके अति प्यारे;
गाओ भली गुनगाथें निरंतर, श्रीमखवानहुकी गुनी सारे;
दिव्य दुनीके दिवाकरसे चिरजीव रहो अमरेश हमारे ॥

दोहा.

कुलपरिपाटीके उचित, काटि प्रजाके क्लेश;
धरनीपें ध्रुवसे रहो, अचल राज अमरेश.

संगीतशास्त्री गणपतराव गोपाळराव बरवे कृत

विविधविषयक ग्रंथ.

नाम	किंमत.
१ योगदिवाकर.	रू. ३
१ नादलहरी.	रू. १
३ श्रुतिस्वर सिद्धान्त.	रू. ५
४ संगितनी महत्ता	रू. ०॥
५ गायनवादन पाठमाळा.	रू. ६
६ नवसंहिता. (सस्ता साहित्य माटे)	रू. १
७ ललितगीत विनोदिनी.	रू. १
८ सुरतरंगिणी.	रू. १॥
९ गीतलहरी.	रू. १।
१० स्त्रीगीतावली.	रू. ०॥

(थाय छे)

११ गायनशास्त्र प्रवेशिका.
१२ स्वर राग तरंगिणी.
१३ राग सिद्धान्त केसरी.
१४ हिंदुस्थानी संगीतनी सुधारणा अने उन्नतिनी विचारणा.
१५ संगीतामृत.
१६ विज्ञान मकरंद.
१७ विश्व चमत्कार.
१८ श्री गीतायोग गान के श्रीगीता रहस्य रंजनी.
१९ जीव ब्रह्म मीमांसा.

(लखेलां तैयार छे)

२० समाधि स्वरुप.

नाम.

२१ नैसर्गिक धर्मस्वरुप.
२२ अर्वाचीन सुधारणा अने अधोगति.
२३ गायनवादन पाठमाळा पुस्तक २.
२४ ॐकार पट अथवा नादब्रह्म चक्र.

गुजराती पत्रद्वारा प्रकाशित.

२५ नजरे जोएलुं जापान.
२६ कलिकाल अने महाभारत.
२७ भारतवर्षिय संगीत शास्त्रना ग्रंथो.
२८ चीननो प्रवास.

गुजरात शाळापत्र द्वारा प्रकाशित.

२९ जगतनी भिन्न भिन्न भाषा.
३० रंग विषे पाठ.
३१ खरता तारा.

गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी द्वारा प्रकाशित.

३२ संगीतना सप्तस्वर.
३३ हिंदनी खनिज संपत्ति.
३४ अनादि काळथी चालती आवेली प्राणिज सृष्टि.

સ્વ૦ જામનગરના સ્વર્ગસ્થ રાજ્યકવિ બારોટ

શ્યામજી જેસંગ કૃત પુસ્તકો.

		કિંમત. રૂ.
अन्योक्ति विलास.	(હિન્દી ભાષામાં ટીકા સાથે)	૧–૦–૦
उपदेश बावनी.	(ગુજરાતી ટીકા સાથે)	૦–૪–૦
वैराग्य शतक.	(ગુજરાતી ટીકા સાથે)	૦–૮–૦

સ્વ૦ જામનગરના રાજ્યકવિ કેશવલાલ શ્યામજી

બારોટ કૃત.

	કિંમત. રૂ.
કેશવ કાવ્ય. ભાગ ૧	૦–૮–૦

(આ પુસ્તકમાં શુદ્ધ ગુજરાતી ભાષામાં લખાએલ જ્ઞાન, વૈરાગ્ય તથા સામાન્ય નીતિનાં વિવિધ પ્રકારના છંદો ગજલો તેમજ રાગોમાં કાવ્યો બનાવવામાં આવ્યાં છે.)

कठिण शब्दोनो कोष.

अकलित–जाणी न शकाय एवु.
अर्क–सूरज, आकडानुं वृक्ष.
अंक–खोळो, निशानी, आंकडो.
अंकोल–वृक्ष विशेष.
अगम्या–गमन करवा योग्य नहि ते.
अगर–वृक्ष विशेष, खुशबोदार पदार्थ.
अंगस्फुरण–शरीरनुं फरकवुं.
अर्गला–आगळीयो.
अंगार–अंगारा, धखधखता कोयला.
अग्निजीवी–सोनी, लुहार वगेरे कारीगरो.
अग्निमन्थ–अरणीनुं झाड.
अग्रज–वडिल बन्धु.
अंगीठी–सगडी.
अंगूर–द्राक्ष
अचर–चलायमान न थाय ए.
अचल–चलायमान न थाय ए, पर्वत.
अर्चन–पूजा.
अज–बकरो, कामदेव.
अजकर्ण–बकराना कान.
अजन–आजण, काळी गळीनुं झाड.
अजन्मा- जेने जन्म धारण करवो पडतो नथी ते, रुद्र.
अजर–वृद्धावस्था जेने प्राप्त थती नथी ते.
अजरामर–वृद्धावस्था तथा मृत्यु रहित, परमेश्वर.
अजा–बकरी, शाळ
अजीर–आंगणु, चोक.
अजेय–न जीताय तेवुं
अटन–मुसाफरी.
अटाट्टहास्य–खडखड हसवुं ते.

अंड–शिखर, अंग.
अंडीरक–पक्षि विशेष.
अतशी–अळशी.
अतिक्रमण–उल्लंघन करवुं ते.
अतिमुक्तक–वृक्ष विशेष.
अतिरिक्त–भिन्न.
अतीन्द्रिय–ज्ञानइन्द्रियोथी अगोचर.
अतुल–जेनी तुलना न थाय तेवुं, घणुंज.
अत्युल्वण–बहु जाडा.
अदन–खावुं.
अद्वितीय–जेनो हरीफ कोइ नथी ए.
अदेव–राक्षस.
अदृश्य–देखाय नहि ते.
अधर–नीचलो होठ, पाताल, अधम.
अधःपुष्पी–गोजिह्वा.
अधोगति–खराब हालत.
अधिवासन–यज्ञ शरु कर्या पहेलां मूर्तिनी प्रतिष्ठा करवी ते.
अधिदैव–सौथी मोटा देव.
अधिष्ठाता–प्रमुखपदे बिराजता देव.
अधोद्वार–नीचलुं बारणुं.
अध्यक्ष–उपरी.
अध्यर्ध–दोढ.
अध्याय–प्रकरण.
अनंग–कामदेव, पंचबाण.
अनन्य–अभिन्न.
अनमीपणे–स्वतंत्रपणे.
अनल–अग्नि
अनवस्थिति–अस्थिरता, दुराचरण.

अनादि—जेनी शरुआतज होय नहि ते.
अनायासे—विना प्रयत्ने.
अनार—दाडमनुं वृत्त, दाडम.
अनिल—पवन.
अनुकम्पा—दया.
अनुकीर्ण—फेलाएला.
अनुग्रह—उपकार, कृपा, महेरवानी.
अनुज—न्हानो भाई, लघु बन्धु.
अनुजीवी—नोकर.
अनुदित—उदय पामेल नहि तेवुं
अनुदिन—अहर्निश, हमेशां
अनुद्धन्द्ध—उपरथी नहि खेंचाएला.
अनुनाद—ध्वनि, पडघो.
अनुभूत—अनुभवेलुं.
अनुमति—अनुमोदन, टेको.
अनुरक्त—प्रीतिवाळुं
अनुराग—प्रीति.
अनुरुप—ना जेवुं.
अनुलेपन—चदनादि सुगंधि शरीरे चोपडवी ते.
अनुलोम—व्यवस्थापूर्वक, नियमित.
अनुवाक—वेदनो एक भाग, रुग्वेद अथवा यजुर्वेद संहिता.
अनुष्ठान—होम, जप, हवन वगेरे विधिपूर्वक कर्ममां प्रवृत्त थवुं ते.
अनूक—पूर्वजन्म, शील, स्वभाव.
अपस्मार—व्याधि विशेष.
अपूप—पूडला.
अपेत्ता—आशा इच्छा.
अबीर—अबील.
अभिनिवेश—कूटवुं ते.
अमोघ—कदापि व्यर्थ न जाय एवुं, सफल.
अमानुषीय—दैवी
अंबर—आकाश.
अयाल—केशवाळी.
अर—आरो.
अरविन्द—कमळ.
अरिष्ट—अरिठां, अरिठांनुं वृत्त, मरणचिन्ह.
अरुण—लाल.
अलात—बळतुं लाकडुं
अलिन्द—ओटलो.
अल्पसर—तलावडी.
अवन—रत्तण
अवलि—हार, समुदाय.
अव्यक्त—समजाय नहि ते, विष्णु, महादेव, आत्मा.
अवशिष्ट—बाकी रहेल.
असह्य—सहन न थइ शके ते.
अंस—खंभो
असौम्य—दुष्ट प्रकृतिवाळो.
अस्खलित—टपके नहि ते
अशनि—वज्र, वीजळी.
अस्थि—हाडका.
अश्मक—देश विशेष. दत्तिणमा आ देश छे.
अश्ववारो—घोडेस्वार.
अश्मंतक—आपटानुं झाड.
अश्वकर्ण—सालनुं भाड, सर्जवृत्त.
आकर—खाण.
आकुंचित—उपरथी संकोचाएलुं.
आक्रंदन—रडवुं ते.
आख्यायिका वास्तविक अथवा कल्पित कथा.
आगम—वेद श्रुति
आगामी—भविष्यना.
आंगिक—अग सबंवी शरीर संबधी
अग्निध्र—होम करवानुं स्थळ.
आग्नेयी—अग्नि दिशा
आघात—फटको. घा.

आच्छादन—ढांकण.
आच्छादित—ढांकेलुं.
आजीविका—नोकरी. धंधो.
आदर—मान.
आदित्य—सूर्यनारायण. फलादेश कहेनार.
आटविक—वनमां रहेवावाळा.
आडंबर—शोभा.
आढक—दाणा भरवानु माप छे.
आतप—सूर्यनो तडको. सूर्य.
आतपत्र—छत्री.
आताम्र—त्रांबा जेवुं लाल.
आतिथ्य—मेमानगिरी.
आत्मजा—दीकरी.
आत्मश्लाघा—पोताना वखाण करवा ते.
आन्तरिक्ष—पृथ्वी अने आकाश वच्चेनुं अदृश्य.
आदेश—हुकम.
आधिपत्य—अधिपतिपणु.
आनक—एक जातनो ढोल.
आप—जळ.
आपगा—नदी.
आपत्ति—दुख.
आपद—आपत्ति.
आपस—परस्पर.
आप्तोपदेश—सगां सबंधीनी शिखामण.
आप्तजन—सगांव्हालां.
आभा—तेज. शोभा.
आभादार—तेजदार.
आमदानी—कमाणी.
आमत्रण—तेडु.
आम्र—आंबो.
आमाशय—आमस्थान.
आयाम—विस्तार.
आयुध—हथिआर.
आयुर्वेद—वैदकशास्त्र.
आयुर्दाय—आयुष्य आपे एवुं.
आलय—घर मंदिर.
आलाप—अवाज.
आवरण—विघ्न, अडचण.
आवाहन—पूजा वखते देवने बोलाववा ते
आवेश—काम क्रोध वगेरेनो जुस्सो आववो ते
आशय—हेतु
आश्वासन—वचनो वडे धीरज आपवी ते
आशुतोष शीघ्र प्रसन्न थाय एवा शंकर
आसन्न—प्राप्त
आसक्त—तल्लीन
आस्फोटित—हाथ ठोकवाथी थतो अवाज
आस्फोत—वृक्ष विशेष
आसव—अर्क, मद्य
आह्लादकारक—आनद आपे एवुं
इंगित—संज्ञा, इच्छा, चेष्टित
इगुर—वृक्षविशेष
इन्दिरा—लक्ष्मी, कमला
इन्दु—चंद्र, वृक्षविशेष
इन्द्रगोप—गोकळगाय
इन्द्रजाल—गारुडविद्या
इन्द्रतरु—अर्जुन सादडी
इन्द्रध्वज—भादरवा शुद १२ ने दिवसे चडावेल वावटो
इन्धन—लाकडां, बळतण
इभ—हाथी
ईषा—हंस
इष्टि—यज्ञ, होम
इक्षण—जोवु ते
इक्षु—शेरडी
इक्षुरस—शेरडीनो रस
उक्त—आगळ कहेवामां आवेलुं

उग्र–क्रोधी, विशाळ
उच्छिष्ट–एठुं, अजीठुं
उच्छेदन–कापी नांखवुं ते
उडुगण–तारानो समुदाय
उत्कट–मदोन्मत्त, अहंकारी
उत्कृष्ट–उत्तम
उत्क्रोश–कुरर पत्ती. रडवुं ते
उत्पल–नीलकमल
उत्पात–धरतीकंप के उल्कापात थवाना चिह्न देखाय ते
उत्तराभिमुख–उत्तर दिशा तरफ मुख राखीने
उत्तरीय–अंगवस्त्र
उत्तुंग–घणो उंचो
उत्सादन–नाश
उदग्र–घणुं उंचुं, भयंकर
उदारधी–मोटा मनवाळो
उन्दिर–उंदर
उद्दीपन–प्रकाश करवो ते
उदुम्बर–उंबरो
उद्वेग–भय, शोक
उद्भट–उत्तम
उद्यान–बाग, बगीचो
उद्वाह–विवाह
उन्नत–उंचुं
उन्मत्त–मदमस्त, गांडो
उन्मार्गगामी–खराब चालवाळो
उन्मान–वजन
उन्माद–गांडापणुं
उन्मीलन–नेत्र के पुष्पनुं उघडवुं
उपकरण–साधन, हथिआर
उपचार–सेवा, पूजा, हथिआर
उपघात–नाश, अपमान, फटको
उपद्रव–दुःख, पीडा
उपधान–उच्छीर्षक, ओशीकुं
उपनिषद्–वेदनो एक भाग
उपभोग–माणवुं ते, संभोग, अंगसुख
उपल–रेती, कांकरा, बरफना टुकडा
ऊपलब्धि–प्राप्ति, मेळववुं ते
उपस्थ–शिश्न, जननेन्द्रिय
उपस्कर–साधन
उपादान–हेतु
उपान्त–छेडो
उपासना–पूजा, सेवा
उमापति–शंकर
उलूखल–खाडणीयो, खांडणी
उशीर–वाळो
उष्ट्र–उंट
उष्मा–गरमी
ऊर्णा–उननां
ऋचा–ऋग्वेदना मंत्रो
ऋण–देणु
ऋतुराज–वसंत
ऋजुत्व–सरलता
एकभुक्त–एक टंक भोजन करनार
एकाग्रचित्त–एक विषयमां जेनुं चित्त चोंटयुं होय ते
एडकग्रस्त–मेंढो ग्रहण करेलो होय ते
एब–कलंक
एरंड–एरडानुं झाड
ऐश्वर्य–प्रताप, प्रभुता, इश्वरनी शक्ति
ऐश्वर्यवान् समृद्धिवाळो, प्रतापी
ओज–तेज, प्रकाश
औषधिओ–दवाओ
कंक पत्तिविशेष
कंकर–पाणो, काकरो
ककुभ–अर्जुन, सादडो

ककुभवट–अर्जुन
कंघी–कांसकी
कच–अंबोडो
कंचनी–वारांगना, नायका
कच्छप–काचवो
कंचुकी–चोळी
कचूर–सुगन्धी कन्दविशेष
कंज–कमळ
कवच–वखतर
कटक–लश्कर
कंटक–कांटो
कंटकारीका–रींगणीनुं झाड.
कटाक्ष–अपांग दर्शन, आंखथी सूचववुं ते
कटि–केड
कटिबद्ध–तत्पर, तैयार
कटु–कडवा
कटोराओ–प्याला
कठाग्र–मोढे
कर्णिकार–पारींगानुं झाड
कणेर–वृक्षविशेष
कदली–केळनु झाड
कदलीकाड–केळनी डाळ
कदंब–वृक्षविशेष
कंद–शाक
कदरा–गुफा
कंदूक–दडो
कर्दमलिप्त–कादवथी लींपाएलुं
कनीनिका–कनिष्ठिका
कपाल–कपाळ
कपि–वांदरो
कपित्थ–कळथीनु झाड
कपिंजल–चातकपक्षी
कपिशीर्ष–कांगरा
कपोत–पारेवुं
कपोतपालि–कबूतरखानुं, काष्टनां सिंहमुख
कबाडी–कजीयाखोर
कबन्ध–मस्तक विनानुं शरीर
कर्बुर–कावरचित्रो, अवलख
कंबु–शंख
कमठ–काचवो
कमनीय–मोह पमाडे एवुं
कमलनयनी–कमळ जेवी आंखोवाळी स्त्री
कमलपूजा–मस्तक कापीने पूजामां चढाववुं ते
कमलाकान्त–विष्णु
कर–हाथ, किरण
करतल–हथेळी
कर्दमलिप्त–गाराथी खरडाएल
कर्णिकार–पारींगानुं झाड
करवाल–तलवार
करामात–युक्ति, कळा
करार–कबूलात, निरांत
कराल–भयंकर
करायिका–बकपक्षीनी स्त्री
करिवर–श्रेष्ठ हाथी
करिणी–हाथणी
करिवृन्द–हाथीओनु टोळुं
करीर–केरडानुं झाड
कलगी–छोगुं, फूमकुं
कलधौत–सोनु रुपु वगेरे धातुनी बनावेली चीज
कलहप्रिया–मेनापक्षी, क्लेशी
कलानिधि–चंद्र
कलापी–मोर
कलावंत–गायक
कलिकाओ–कळीओ
कलिंग–देश विशेष
कलुप–कादववाळुं, गंदु

कलेवर–देह, शरीर
कल्क–विष्णुनो दशमो अवतार, पाप, गर्व, कीचड
कल्माष–पीत, श्वेत अने काळा रंगथी मिश्रित
कवल–कोळीओ
कळाकोविद–विद्वान्, पंडित, कळामां कुशळ
कक्षा–काख
काकेन्दु–काकटेंभुरणी
काकोदम्बरिका–काळो उंबरो
कांचनवृक्ष–सप्तपर्ण, सातपडो
काच्छिक–काछीओ, शाक वेचनार
कान्ति–शोभा, प्रभा, सौन्दर्य
कापालिक–शिवभक्त
काम आव्या–मार्या गया
कामातुर–कामने वश थएल
कारंडव–कागडाना जेवुं पक्षी
काय–काया, शरीर
कारुक–कारीगर
कारोबार–कारभार, वहीवट
कालपुरुष–ज्योतिःशास्त्र
कालकुट–समुद्र मन्थन करती वखते झेर नीकळ्युं ते
काव्यकोविद–काव्यमां कुशळ
काश–दाभडो
काशाय–त्रांबा जेवो रंग
काश्मरी–शिवणीनुं झाड
कास–उधरस
किन्नरो–कूबेरना दूतो
किलकारी–तीणी बूम, चीस, चिचीयारी
किसलयो–कुंपळो
किंशुक–केसुडांनुं झाड
कीचक–कादव, पोलो वांस
कीट–कीडो
कीर–पोपट, काश्मीरदेशनुं नाम छे

कुक्कुट–कुकडो
कुंचित–वांको
कुजर–हाथी
कुटिल–खराब, दुराचारी
कुटि–ओरडी
कुतूहल–नवाइ, आश्चर्य
कुन्त–भाला
कुठार–कुहाडी
कुत्सित–खराब, निन्दनीय
कुन्दन–सोनुं
कुन्द–डोलर
कुन्दरु–देवदार वृक्षनो निर्यास
कुदेश–खराब देश
कुपथ्य–शरीरमां रोग उत्पन्न करे तेवा पदार्थो
कुपात्र–खराब माणस
कुंभी–घडो
कुमकुम–कंकु
कुमकुमाओ–चादलाओ
कुमार्गी–खराब मार्गे चालनार
कुरर–प्यावडी
कुरबक–रातो कोरेंटो
कुलदीपक–कुळने उन्नतिमां लावनार
कुविंद–वणकर, तंतुवाय
कुष्ठ–वनस्पति विशेष. कोढ, कोठा
कुसुमायुद्ध–कामदेव
कुहुक–कोकिलपक्षी
कुहर–छिद्र
कुंठ–कुंठित थइ गएल, मंदमति
कुक्षिस्थ–काखमां रहेल
कूजन–पक्षि विशेष
कूटपुरी–करायिका, बगली
कूप–कूवो
कूर्म–काचबो

कृकलास–सरट, काकीडो
कृकाटिका–घाटी, कठ
कृतकृत्य–पुण्यना काम करवाथी जेनु जीववुं सफळ थयुं छे ते
कृतज्ञता–निमकहलाली, वफादारी
कृतघ्नी–अनुपकारी
कृतनिश्चय–द्रढ ठराव
कृत्रिम–बनावटी
कृपण–लोभी
कृपणता–लोभ
कृपाण–तलवार
कृमिओ–कीडाओ
कृषीवल–खेडुत
कृष्ण–काळो
कृष्णश्याम–काळा छतां सुदर
कृश–दुवळो
केकी–मोर, मयूर
केकर–त्रासी आखवाळो, काणो
केदार–बद्रिकेदार नामनु स्थान, क्यारडो, क्षेत्र
केन्द्र–गोळनु मध्यबिन्दु, वातनो मर्मभाग
केसरि–सिंह
केशमर्दन–वाळमा तेल नाखवुं ते
केशाकर्षण–वाळनुं खेंचावुं ते
कैवर्त–ढीमर, लुचो, कपटी
कोक–चकवा, चकवी, रतिशास्त्र
कोटर–माळो
कोद्रव–कोदरा नामनुं धान्य
कोपीन–लगोटी
कोविद–विद्वान्
कोविदार–केरडांनु झाड
कोष्ठक–कोठो
कोष्टागार–कोठार, अनाज भरवानुं घर
कोशाध्यक्ष–खजानानो उपरी, कुवेर
कौलिक–वणकर
क्रूर ग्रह–रवि अने मगळ
कवच–वखतर
खटक–काकरीनी पेठे रही रहीने खुंच्या करे ते
खडकीद्वार–बारी
खड्ग–तरवार, कृपाण
खड्गधारी–जेणे तरवार धारण करेली छे ते
खदिर–खेरनु झाड
खर–गधेडो
खवीस–अधोगतिने पामेलो पिशाच
खळ–दुष्ट, हरामखोर
खजन–पक्षी विशेष
खडवृष्टि–वरसादनां छूटां छवाया झापटां
खानिक–खाणमाथी नीकळता पदार्थो
खुर–खरी
खेटक–शिकार, ढाल
खेद–शोक, दिलगीरी
गज–हाथी
गद्‌गद् कठे–भराइ आवेला हृदये
गद्यात्मक–जेनुं लखाण गद्यमां ज होय ते
गन्धर्व–स्वर्गना गवैयानी एक जात
गर्भस्राव–गर्भनुं पडी जवु
गम–समजण
गम्या–संभोग करवा योग्य स्त्री
गयंद–हाथी
गरुडवेगा–गरुडपक्षीना जेवा वेगवाळी
गलग्रन्थि–गळे गांठ होय छे ते
ग्लानि–शोक, खेद
गवली–गोवाळीओ
गवाक्ष–गोखलो
गव्यूति–वे कोश
गहन–न कळी शकाय एवुं
गहुं–घउं

गह्वरदुर्ग—गुफाओनो किल्लो
गात्र—शरीर, अंग
गाथाओ—कथाओ, वार्ताओ
गांमची—पगना नाळा
गार्हपत्यादि—अग्निहोत्रनो अग्नि वगेरे
ग्राह—मोटी माछली, मत्स्य
ग्राह्य—ग्रहण करवा योग्य
गिरिदुर्ग—पर्वतनो बनेलो किल्लो
गिरिकर्णिका—वनमोगरो
ग्रीवा—डोक
ग्रीष्म—उन्हाळो
गुंजा—चणोठी
गुडुची—गुळवेल नामनी वनस्पति
गुण—फायदो, रज्जु
गुप्त—छानुं, खानगी
गुंमज—घुमट, घटाटोप
गुल्फ—घुंटण, घुंटी
गुल्म—पेटमां गोळो चडे छे ते
गुह—पहाडनुं पोलाण, कार्तिकेयस्वामी
गुह्यांग—शिश्न, उपस्थेन्द्रिय
गुह्यवात—खानगी वात
गूलर—उमरडानुं झाड
गेंद—दडो
गृहगोधिका—ढेडगरोळी
गृहवाटिका—घररुपी वाडी
गोकुळ—दश हजार गायोनुं टोळु
गोद—खोळो
गोनर्द—पतंजलिमुनिनुं स्थान
गोमय—छाण
गोमुख—गायनुं मुख, गायना आकारनुं वाद्य
गोमेदक—पुखराज, पीळा रंगनो हीरो
गोरस—गायनुं दूध दहीं वगेरे रस
गोविषाण—गायनुं शींगडु
गोष्ठ—गाय बांधवानो वाडो
गोष्ठि—संभाषण
गौ—गाय
गौरव—मोटाइ, प्रतिष्ठा
घट—घडो
घटा—छाया, समूह
घन—वादळुं
घनसार—कपूर
घमसाण—कापाकापी थती होय तेवुं घोर युद्ध
घुमंड—गर्व, अहंकार
घृत—घी
घोष—अवाज, गोवाळीयानुं रहेठाण झुंपडा
घ्राणेन्द्रिय—सुंघवानी इन्द्रिय, नासिका
चक्र—पैडुं, राज्य
चक्रवाक—चकवाचकवी
चकित—आश्चर्य पामेल, व्हावरुं बनी गएल
चंचु—चांच
चटक—शोभा, फूलनी कळी उघडती वखते थतो अवाज
चंडा—दुष्ट स्त्री
चतुरंगिणी—हाथी घोडा रथ अने पायदळवाळुं सैन्य
चतुष्पद—चार पगवाळां जानवर
चतुष्पथ—चार रस्तावाळुं मकान
चन्द्रकान्त—चन्द्रना जेवी कान्तिवाळो
चन्द्रहास—तलवार
चपला—वीजळी, तलवार
चमू—सैन्य,
चर—राज्यदूत, बातमीदार
चरणारविन्द—कमलना जेवा चरण
चय—संग्रह, ढगलो
चहल—कांप, कादव
चक्षु—आंख

चाटुकारक—प्रिय
चाप—बाण
चामर—वायु ढोळवानी चमरी
चामीकर—सुवर्ण, सोनुं
चारु—सुंदर, सुशोभित
चाव—चावी, कुंची
चाष—नीलकंठ पक्षी
चिकित्सा—गुणदोष पारखवानी शक्ति
चिक्कार—हाथीओनो आर्तनाद
चिबुक—चावखो
चूर्णक—चूरण, भूको
चित्राम—चित्रकाम
चूलिका—चूलो
चेटक—चाकर, दास
चेदि—शिशुपालनो देश
चेष्टा—ठठ्ठामश्करी, चाळा
च्यवन—ऋषिनुं नाम छे
चोतरा—ओटा
छत्रपति—राजा
छत्र—छत्री
छत्रा—मधुरिका
छद्म—ढोंग, कपट, निमित्त
छलता—कापट्य, दुष्टपणुं
छाग—बकरो
छाडता—तजी देता
छाद्य—छापरुं
छिक्कर—एक जातना मृगनुं नाम छे
छिपकली—गरोळी
जंग—युद्ध
जंगम—एक ठेकाणेथी बीजे ठेकाणे लइ जइ शकाय एवुं
जघा—साथळ
जर्जर—जीर्ण, छेक घरडुं

जत्रु—हाथ अने डोक जोडनार, हाडकुं
जनक—बनावनार, मिथिलेश, पिता
जनलोक—संसार
जनाधिप—राजा
जनुनी—गुस्सावाळो माणस
जपा—वनस्पति विशेष
जंबुफल—जांबु
जयंतिका—टोडी
जया—वैजयंती, थोर
ज्योतिर्गणो—सूर्य चंद्र विगेरे तेजोमय ग्रहोना समुदाय
ज्योतिरस—रत्न विशेष
ज्योतिष्टोम—सोळ ऋत्विजो जे यज्ञमां सोमवल्लीनो रस होमे छे ते यज्ञ
जनेता—मा
जंबुक—शियाळ
जंबीर—धोळो मरवो
जर—पैसो
जरा—घडपण
जरायुज—मनुष्य अने पशु वगेरे प्राणी
जलचर—पाणीमां चालनारां प्राणी
जलद—वादळुं
जलादिशा—पश्चिम
जलधर—वादळुं, सागर
जलनक्षत्र—पूर्वाषाढा, शतभिषक
जलमुहूर्त—वारुण
जलयंत्र—फुहारो
जलाशय—तळाव
जव—धान्य विशेष
जहाज—वावटो
ज्वर—ताव
ज्वालाओ—सळगता अग्निनी शिखाओ
जातिस्मर—पूर्वजन्मनी यादीवाळो

जानु—साथळ
जामा—पहेरवानां घणा घेरवाळां कडीयां वगेरे
जाल—जाळुं, समुदाय
जाली—जुलम
जाहक—विलाडो
जीव—प्राण, पैसो
जीवक—वृक्ष विशेष
जीवन—जीदगानी. जळ
जीवनमुक्त—ब्रह्मज्ञानी
जीवा—हरणदोडी नामनो वेलो
जूगुनूनी—झळहळी रहेली
ज्योतिष्मति—मालकांकणा
डमरु—वाद्य विशेष
डोम्ब—नीच जातिनो मनुष्य
तर्क—विचार
तर्कतरंग—विचाररुपी मोजुं
तक्र—छाश
तगर—एक जातनी औषधि
तर्जना—तिरस्कार
तर्जनी—अंगुठा पासेनी आंगळी
तंत्रक—मारण, जारण, मोहन वगेरेनी एक विद्या जाणनार
तंत्री—व्यवस्था करनार
तंत—हठ, ममत
तद्रुप—तन्मय, तेमां तल्लीन थइ जवुं ते
तनु—शरीर
तनुज—दीकरो
तपश्चर्या—वनमां रही तप आचरवु ते.
तपोधन—तपरुप धन जेनुं छे ते पुरुष
तम—अंधारुं
तरंग—मोजुं, विचार
तरंगिणी—नदी
तरल—चंचळ
तलग्रन्थि—तलना जेवडी गांठ
तस्कर—चोर
त्वचा—चामडी
त्वरा—उतावळ
त्रस्त—त्रास पामेल, भयथी व्हावरो बनेल
तक्षकर्म—सुतारनुं काम
तक्षा—सुतार
तांबूल—पानसोपारी वगेरे
तामस—उग्र, ताम्र, लाल
तारीफ—वखाण
तावदान—पालखी
त्रायमाण—रक्षण करनार
त्रिकालदर्शी—त्रणे कालनी वातो जाणनार, त्रिकालज्ञ
त्रिगुणात्मक—त्रणे गुणवाळुं
त्रितंतु—त्रण तांतणा
त्रिपुट—त्रणवाना, त्रण पट
त्रियामा—रात्रि
तिक्त—तीखा
तिमिरवृक्ष—वृक्ष विशेष
तिर्यक्—पेटे चालनारां प्राणी
तिंदुक—टेंमुरणीनुं झाड
तिर्यग्गत—आडा
त्रिशूल—शिवजीनुं आयुध
त्रिवृता—श्वेत नसोत्तर
तीर्थाटन—पवित्र स्थानमा फरवु
तुफंग—तोप
तुरग—घोडो
तुरी—घोडो, अश्व
तुर्य—चार, सर्व व्यापी ईश्वर
तुर्यावस्था—आत्मानी चोथी अवस्था

तुष—छोडां
तुषार—छांटा, टीपां झाकळ
तुष्टि—संतोष, तृप्ति
तूल—रु, उगेल अनाजनो छोड
तृषातुर—तृषित, तरस्यो
तोमर—अेक जातनुं हथिआर, भालुं
तोषारखानुं—तेजुरी
त्रंबक—त्रांसा, वाद्य विशेष
त्र्यबक—महादेव
दग्ध—बळीगएलुं
दंडपारुष्य-राज्यना सात प्रकारना शासनमांनुं एक
दंतली—न्हाना दात
दंतोशळ—हाथीना बहार नीकळेला दांत
दंती—जपाळानु झाड
दर्दूर—दादर
दद्रु—चामडीनो रोग
द्वन्द्व—जोडुं, बे माणसोनुं युद्ध
दधिवर्ण—दहींना जेवो रंग
दंपती—स्त्री पुरुषनुं जोडुं
दम दिलासा—आश्वासन
दमकती—चमकती
दमन—निग्रह
दरगाह—कबर
दरमायो—पगार
दराज—मोटुं
दृक्—आंख
द्रव्यनमार—मणिनु नाम छे
दृष्टा—जोनार, आत्मा
दयार्द्र—दयाथी जेनु हृदय पीगळेलुं छे ते
दयानिधि—दयानो भंडार
दल—पड, लश्कर
दर्वी—कडछी

दळता—नाश करता
दक्षिणायन—कर्क संक्रान्तिथी मकर संक्रान्ति सुधीनो समय
दक्षिणावर्त—जमणी तरफ वळतुं होय ते
दात—विवाह प्रसंगे भाट चारणोने अपातां इनाम
दादुर—देडकां
द्वादशी—बारस
दाम—पैसा, रज्जु, दोरडुं
दामिनी—रात्री
दारा—स्त्री
दारातिक्रमण—परस्त्री साथे व्यभिचार
दारुण—उग्र, भयंकर
द्रावित—पातळुं करेलुं
दावाग्नि—वननो अग्नि
द्वार—बारणुं
दाक्षिण्य—प्रमाणिकपणुं, सुजनता
दिग्दाह—दिशाओ एनी मेळे सळगती देखाय ते
दिग्पाल—दिशानुं रक्षण करनार
दिगंत—दिशाओना छेडा
द्विगुणता—बमणापणुं
द्विजराज—चंद्र, ब्राह्मण
द्विपट्टी—दुपट्टो, खेश
दिनकर—सूर्य
द्विरद—हाथी
दिव्य—स्वर्गीय, अलौकिक
दिवाचर—सूर्य
दीर्घसूत्री—मुलतवी राखवानी टेववाळो
दीपन—प्रदीप्त करवुं, अग्नि पेदा करवो ते
दीपमालिका—दीपोत्सव, दीवानी रोशनी
दुर्ग—किल्लो
दुर्दिन—खराब दिवस
दुर्दशा—खराब दशा

दुर्भग–कमनशीबवाळो, अभागी
दुर्भिक्ष–दुकाळ
दुलकी–शरीर हलावीने गति करवी ते
दुर्वा–एक जातनुं घास
दुर्विद्ध–खराब रीते वींधाएलुं
दुशाला–शाल
दुष्कर–अघरुं
दुष्टात्मा–खराब माणस
दुःस्वप्न–खराब स्वप्न
दूषण–दोष, अपराध
दूषित–अपराधमां आवेल
द्यूत–जुगार
देदीप्यमान–झळहळतुं
देवपुर–अमरापुरी, इन्द्रापुरी
देवप्रासाद–देवनो महेल
देवर–धणीनो न्हानोभाइ, देर
देवांगना–देवतानी स्त्री, अप्सरा, परी
देवाधिदेव–देवताओनो देव, परमेश्वर
देहेशत–बीक
द्वैध–वैर, विरोध
दैवजनित्–भाग्यवशात्
दैवज्ञ–नशीबमां शुं शुं छे ते जाणनार
दोलायमान–जेनी बुद्धि भमती होय ते
दोपारोपण–कोइने माथे आळ चढाववुं ते
दोहन–दोहवुं ते
द्रोण–एक जातनुं माप छे
दौहित्र–दीकरीनो दीकरो
धन्वी–धनुष्य धारण करनार
धनु–धनुष्य
धनुष्यकुन्त–भालुं
धर्मधुरंधर–घणोज धर्मिष्ठ
धर्मभ्रष्ट–धर्मना नियमो न पाळतो होय ते
धर्मज्ञ–धर्मने जाणनार

धरणीपति–राजा
धरा–पृथ्वी
धव–धणी
धवल–धोळुं
ध्वज–धजा, वावटो
ध्वजापात–वावटानुं पडी जवुं
ध्वनि–अवाज
ध्वंस–नाश
ध्वांक्ष–गृह, घर, भूत, पिशाच
धात्री–दूध पानारी स्त्री
धान्यक–एक जातनुं अनाज
धाम–घर
धारणबुद्धि–तोलन करवानी शक्ति
धिष्ण्या–उल्का
धुरंधर–म्होटा, महान
धुरा–धोंसरी, (राज्यनी) लगाम
धूर्त–धूतारो
धूम–धूमाडो
धूलि–धूळ
धूसर–धूसरित रग, बदामी रंग
धृति–धीरज
धेनु–गाय
नकुळ–नोळीयुं
नक्तमाल–करंजानुं झाड
नगीना–जडाव दागीना
नन्दातिथिओ–पडवे, छठ, अने अगीआरस नामनी त्रण तिथिओ
नप्तृक–चटक पक्षी, चकला.
नरदुर्ग–माणसोनो किल्लो
नरलोक–दुनिया, पृथ्वी
नरेश–राजा
नल–तृण विशेष
नलिनाक्ष–कमळना जेवी आंखोवाळो

नलिनी—कुमुदिनी
नवनीत—माखण
नवमालिका—मालती
नाभि—डुटी
नाभिभाग—चक्र, पैडानो वचलो भाग
नालिका—कमळनो समूह, कमळनू मूळीयुं
नाव—होडी
नासरन्ध्र—नसकोरुं
नासिका—नाक
नाहर—सिंह
निकष—कसोटी
निकदन—नाश
निकास—पेदाश
निकृष्ट—हलकु
निकुंज—क्रीडा करवाने वनावेल लता मंडप
निगड—(बंधननी) बेडी
निगम—वेद
निग्रह—दमन, दाबमां राखवुं ते
निर्ग्रन्थ—गाठ विनानुं
निगूढ—गुह्य, छुपाएला
निर्घात—आघात, फटको
निचुल—कडवो लींबडो
निचुल—वीणा, आच्छादन वस्त्र
निर्जन—उज्जड
नितंब—केडनी पाछळनो भाग
नित्यसत्र—सदावृत
निदध्यास—जाणेली वस्तुनु हमेशां चिंतन करवुं ते
निदान—कारण, निमित्त
निधान—भडार
निधिपाल—भडारनो रक्षक, कुबेर
निर्धूम—धूमाडा रहित
निपात—मृत्यु
निम्ब—लींबडो
निमग्न—तल्लीन
निमज्जन—डुबकी मारवी ते
निम्न—नीचुं
निर्माण—सर्जीत
निर्मालिका—नरमाळी नामनी औषधिनुं नाम छे
निर्मांस—मांस रहित
नियत—निर्माण करेल
नियन्ता—सारथी, नियमन करनार, स्वामी
निरंकुश—दाव वगरनुं
निरखन—सारी पेठे तपासीने जोवुं ते
निरंजन—अज्ञानरुपी अंधकार विनाना एवा परमात्मा
निरपेक्ष—आशा विनाना
निरवद्य—निंदवा योग्य नहीं
निरवयव—जेना भाग न पडी शके ते
निरालस्य—आलस विनानो
निराहार—आहार विनानो भूख्यो
निराकार—आकार रहित परमेश्वर
निरामय—रोग विनानु
निरूपण—वर्णन करवु ते
निरुपद्रव—पीडा विनानुं
निरुपाय—लाचार, उपाय रहित
निरोध—अटकाव, प्रतिबंध
निग्रन्थ—भिखारी
निवाज—बक्षीस
निवार—एक जातनुं धान्य छे
निवारण—अटकाववु ते
निर्वात—पवन रहित
निर्विकार—विकार रहित एवा परमेश्वर
निर्विष—झेर विनानु
निर्व्यसनी—जेने कोइ जातनी कुटेव न होय ते
निष्कंटक—काटा वगरनु, उपाधि विनानु
निष्ठुर—कठोर बोलवावाळो माणस

निष्परिग्रह–कांइ ग्रहण नथी करतो एवो वेरागी
निषाद–राक्षस
निःसार–सार विनानुं
निसिद्ध–धर्मशास्त्रमां जे काम करवानी मना करेली होय ते
नीहार–बरफ
नीप–कळंवानुं झाड, नील अशोक
नीराजन–आरति
नूतन–नवा
नूपुर–पगमां पहेरवानुं आभूषण
नेक–सारुं, उत्तम
नेति–अकळ, अनंत
नेमी–वृक्ष विशेष
नेमिभाग–पैडानो घेरावो
नेश–भरवाडने वगडामां तेनां ढोर साथे रहेवानी जगा, अणीवाळां दांत
नैष्ठिक–आस्था पूवक ब्रह्मचर्य पाळनार
नौका–लश्करी वहाण
पक्व–पाकुं
पंक–कादव
पंक्ति–हार
पचगव्य–गायथी उत्पन्न थएल दूध, दही, घी, मूतर, छाण
पंचशर–कामदेव
पचाग्नि–चारपास धुणी अने उपर सूर्यनो ताप
पचानन–सिंह
पटक–पछाडवुं ते, झोक
पटीर–चदन, औषघ विशेष
पणव–वाद्य विशेष
पर्णपुट–पाननो पडीयो
प्रत्याहार–चित्त वगेरे पांच इन्द्रियने खेचीने सयममा राखवी ते
पत–आवरु
पतझार–पानखर ऋतु
पताका–वावटो
पवित–नीतिथी भ्रष्ट थएल, वंठेल
पत्री–झाड, पक्षी
पथ–रस्तो
पथ्य–हितकारक
पक्वाशय–उदर, पेट
पथिक–रस्ते चालनार
पदगाख्य–कविताना रुपमां लखेली वार्ता
पद्म–कमल
पद्मजा–लक्ष्मी
पन्नगी–सर्पिणी
पनस–फणसनुं झाड
पपीहा–मोर
पयःपान–दूध पीवुं ते, धाववु ते
पयाल–पराळ
पयोनिधि–सागर
पयोद–वादळुं
परचक्र–परराज्य, दुश्मन राजानो अमल
परम–मोटु
पर्व–मांगलिक दिवस, भाग, प्रकरण
परशु–कुहाडी
पराग–पुष्परज, सुगंध
परागपुंज–घणीज सुगंध
पराभव–हार, नाश
परास्त–फेंकेलो
पलक–आंख वध थइ उघडे एटलो वखत
पलाद–मांस
पलाश–खाखरानुं झाड
परिक्रमण–प्रदक्षिणा फरवी ते
परिकर–नोकर, चाकर वगेरे आश्रित
परिजनो–परिवार, कुटुंब कबीलो इत्यादि
परित्याग–सर्वनो त्याग करवो ते

परिताप—दुःख
परितोष—संतोष शान्ति
परिधान—वस्त्र
परिधि—कुंडाळां
परिपाक—खूब पाकेलुं होय ते
परिमल—सुगध
परिरंभण—आलिंगन करवुं ते
परिवर्तिन्—चक्रना आकारनी पेठे गोळ फरनार
परिवेष—कुंडाळु, चंद्र, सूर्यनी आसपास उडतो गोळ प्रकाश
परिहास—मश्करी
परुषक—भोंयधामणीनु झाड
परोक्ष—पाछळथी
पर्यंक—पलंग, शय्या
पवि—वज्र
पशुक—चतुष्पद प्राणी, पासळी
पक्षच्छेद—पाखनुं भागी जवु ते
पक्षान्तर्गत—पाखनी अंदर आवेल
पक्ष्म—पांख, पांपण
प्रकाशात्मक—अजवाळुं करवानो जेनो स्वभाव छे एवुं
प्रकोष्ट—पोंचो
प्रचड—उग्र
प्रजल्पन—बडबडाट करवो ते
प्रचुर—घणु
प्रणव—ओंकार
प्रणवमय—ओंकार स्वरुप
प्रदेशिनी—अंगुठा पासेनी आंगळी
प्रत्यचा—धनुषनी दोरी
प्रत्यावर्त—फरीने आववु ते
प्रत्युपकार—सामो बदलो
प्रत्यालीढ—डाबो पग पाछळ राखी जमणो पग आगळ धरवो ते

पतंग—पतंगीयो, सूर्य
प्रतिध्वनि—पडघो
प्रतिपदा—पडवे
प्रतिपक्षिओ—शत्रुओ, दुश्मनो
प्रतिबंधक—अवरोध करनार
प्रतिभानवान—कांतिवाळो, तेजस्वी
प्रतिमा—मूर्ति
प्रतिलोम—उलटु, जाति विरूद्ध, चांडाल
प्रतिष्ठा—आबरु, कीर्ति
प्रतिसंहार—संक्षेपमा आणवुं ते
प्रतिहार—द्वारपाळ
प्रतीति—विश्वास
प्रतीकार—उपाय
प्रबंध—श्लोक वगेरेनी रचना
प्रभजन—पवन
प्रभा—कान्ति, तेज
प्रमथ—शिवजीना गण. घोडा
प्रमत्त—मदोन्मत्त, मस्त
प्रमादी—गाफल
प्रमुक्त कंठे—लाबे रागे, छूटा कंठे
प्ररुढक—अति वधी गयेल होय ते
प्रलय—सृष्टिनो नाश, महामारी
प्रलंब—घणाज लांबा
प्रवर्षण—वर्षा ऋतु
प्रवाल—परवाळा
प्रवास—मुसाफरी करवी ते
प्रशस्त—वखणाएल, प्रख्यात
प्रशसा—वखाण, स्तुति
प्रसून—फूल, पुष्प
प्रस्तुत—वर्णन करेल होय ते
प्रस्वेद युक्त—परसेवावाळुं
प्रक्षालन—धोवु ते

प्रक्षेपण विधि—फेंकवानो विधि
प्रार्थित—जेने अरज गुजारेल होय ते
पाखर—सोना रुपानी बनावेली घोडा उपर नाखवानी झूल.
पाखंड—ढोंग
पांगळी—लूली, बुठ्ठी
पाटल—लाल रंग, लोध्रनुं झाड
पाठा—पहाडना मूळ नामनी वनस्पति
पांडु—पांडवना पिता
पांडुर—पीळो रंग
पातकी—पापी, दुष्ट
पादप—झाड
पानकपणा—अमररस, गुड आंबलवाणु वगेरे
पान्थ—पथिक, मुसाफर
पापग्रह—शनि, राहु, केतु
पापाचरण—पापकर्म करवु ते
पायजामा—सुरवाल
पायसान्न—खीर, दूधपाक
पायु—मूळ द्वार
पारगामी—प्रविण हुशियार माणस
पारंगत—पार पामेलो, विद्या परिपूर्ण भणेलो
पाराधि—शिकारी
पारावत—आरामानी कबूतर
पारिकर्म—कारीगर
पारितोषिक—इनाम आपवुं ते
पावक—अग्नि
पावस—चोमासुं
पांसुवृष्टि—धूळनो वरसाद
प्रादुर्भाव—देखावु ते
प्राणाधान—गर्भ राखवो ते
प्रान्त—छेडो
प्रायश्चित—पापनु निवारण करवा माटे जे कर्म करवुं ते
प्रासाद—महेल
प्रासादपृष्ठ—अगाशी
पिंगल—घुवड पक्षी, पीळु
पिंगलिका—पक्षीनुं नाम छे
पिटक—लाकडानी पेटी
पिंड—शरीर, गरवाळो
पिंडिका—शरीरनो मासवाळो भाग
पिंढार—पेंढीनुं झाड
पिपासा—पाणी पीवानी इच्छा, तरस
पिपीलिका—कीडी
पियूष—अमृत, सुधा
प्रियतमा—व्हाली स्त्री
प्रियंवद—मीठु मीठु बोलनार
पीन—जाडु, पुष्ट
पीनस—रोगनु नाम छे
पुंज—ढगलो
पुण्याहवाचन—विवाहादि शुभ कर्मोमा जे मंत्रो बोलाय छे ते.
पुन्नाग—कमळ, जायफळ
पुरंदर—इंद्र
पुरश्चरण—कार्यसिद्धि करवा माटे आगळथी जे जप करवो ते.
पुरिष—मूत्र, विष्टा आदि
पुरोहित—गोर
पुलक—रुंवाडुं
पुलिन—किनारो
पूजनीय—पूजन करवा योग्य
पूर्वोक्त—आगळ कहेवाइ गएल
पृषत्—मृगनी एक जात छे
पेचिका—घूड पक्षीनी मादा
पेदल—पायदल, पगे चालनार
पेय—पीवा योग्य पदार्थो
पेशकर्सी—खंडणी

प्रेक्षक—जोनार
पोतकी—एक जातनु पक्षी
पौर—शहेरमा रहेनार
प्रोषित—परदेश गएल
प्रौढ—पाकी उमरनु, बुद्धिमान
प्यावा—परव
प्लक्ष—पीपळो
प्रोथ—नाकनो वचलो भाग
प्रत्याहार—इन्द्रियदमन
प्राकार—किल्लो
फणीधर—सर्प
फणिनी—गोफण
फरस—छोवध चोक
फरास—पथारी पाथरवी, सामान गोठववो, दीवा करवा वगेरे जे काम करे छे ते चाकर
फलदायी—फल आपनार
फलादेश—फळनो हेतु
फेन—फीण
फेंटपक्षी—पक्षीनी जात छे
वकस्थलो—वगला आदि पक्षीओ रहेवाने माटीनो वेट अथवा टींवो होय छे.
वकुल—वोरसळीनु झाड
वदवो—खराव गंध
वदरी—वोरडीनु झाड
वन्दी—चारणो
वन्धमाल—तोरण
वन्धुजीव—वपोरीयानु झाड
वरात—जान
वरौनी—पापण
वलाध्यक्ष—सेनापति
वहार—खुशवो
वहिर्लोम—वहारना वाळ

व्रह्मनाडी—सुपुम्ना नाडी
व्रह्ममणि—व्राह्मणोमा मणिरुप, श्रेष्ट.
वहुश्रुत—घणु श्रवण करेल होय ते, विद्वान.
वाजी—रमत, जींदगानी
वानी—वाणी, चीज, वस्तु.
वालचन्द्रमा—द्वितीयानो चन्द्र
वाष्म—वराळ, आंसु
वाहु—हाथ
वाहुयुद्ध—कुस्ती
व्राह्मी—सोमवेली
विम्व—किरण, प्रकाश, छवि.
विरद—पण, प्रतिज्ञा
विल—दर, राफडो
विछात—पथारी
वीजपुर—वीजोरा
वीन—वीणा
वेरख—नगारु, डको अने भुंडावाळी आरवनी टुकडी
भग्नचित्त—निराश
भद्रा—नागरमोथ
भद्रासन—राजाने वेसवानुं आसन
भयार्त—भयथी दुःखी
भल्लातक—भिलामानु झाड
भववाध—संसाररुपी विघ्न
भष—कूतरो, भषक
भाषपक्षी—गोठामानो कूकडो
भाजन—पात्र, ठेकाणु
भाडिक—व्यापारनो माल
भानु—सूर्य
भारद्वाज—पक्षी विशेष, ऋषिनु नाम छे
भार्या—स्त्री
भार्गी—भारगी
भालचन्द्र—शिवजी

भित्ति–एक प्रकारनो थर छे तेमा गोखलाओ आवे छे जेमां मूर्तिओ स्थापन कराय छे
भीरु–वीकण
भुजा हाथ
भुवर्लोक–पाताळ
भूमंडल–पृथ्वीनो गोळो
भूलोक–पृथ्वी
भृत्य–नोकर, चाकर
भृंगार–झारी
भ्रू–भँवर
भेदन–चीरवुं, कापवुं ते
भेरी–वाद्य विशेष
भोक्ता–भोगवनार
भोजनशाला–रसोडु
भोजनपत्र–एक जातना झाडनी अन्तरछाल, एना उपर मंत्र लखीने मादळीयामा राखे छे.
भौतिक–पंचमहाभूत सबंधी
भौम–पृथ्वी सबंधी
भ्रमर–भमरो
मकरन्द–फूलनो रस, मध
मकर–मगरमच्छ
मकरी–मगरी
मर्कट–वांदरो
मर्कटिका–नेवाळी नामनी वनस्पति
मखतूल–मखमल, रेशमी झीणु वस्त्र
मग–शाकद्वितीय ब्राह्मण
मंजरी–मांजर, झाडनो मोर
मज्जा–जेमांथी वीर्य उत्पन्न थाय छे ते धातु
मंडूक–देडकु
मणिवन्ध–पहोंचा
मणिक–पहोंचानी कळाइनो भाग
मणिसोपान–रत्नजडित्र निसरणी
मत्कुण–मांकड
मत्स्य–माछलु
मतंग–हाथी, मतंगज
मंत्री–प्रधान, सलाहकार
मद–उन्माद, छाकटापणु
मदन–कामदेव, रतिपति
मल्लिका–वटमोगरानुं झाड
मर्दन–तैलादि स्निग्ध पदार्थ चोळवा ते
मन्दार–एक जातनुं स्वर्गनु फूलझाड, पारिजातक
मदिरा–दारु
मधु–मध
मधुकर–भमरो
मधुनिलय–मधपूडो
मधुप–भ्रमर, भमरो
मधूक–महुडानुं झाड छे
मनःशिला–पर्वतनी कोइ धातुनुं नाम छे
मनभावन–पति, धणी
मन्मथ–कामदेव, मदन
मनोज–उपलो शब्द जुओ
मनोभव–मदन, कामदेव
मन्या–देह उपर देखाती नसो
मयूख–किरण
मयूर–मोर
मरकत–पन्ना
मराल–राता पग अने राती चांचवाळो हंस
मर्कटिका–मांकडी
मसक–माखण, खुशामत
महर्लोक–सूर्य चंद्र ज्या छे ए दुनिया
महानील–रत्नविशेष, नीलमणि
महिष–पाडो
महिषी–भेंस
महीन–झीणा

मक्षिका—माखी
मार्जन—लोध्र वृक्ष, पाणी छांटी पवित्र करवुं ते
मार्जार—बिलाडो
माधवी—एक जातनी लता
मानपुरःसर—आदर सहित
मानिनीओ—स्त्रीओ
मार—कामदेव, अनग
मालूर—बिलीनुं झाड
माल्य—पुष्पना हार गजरा वगेरे
माष—पांच चणोठीनुं वजन, अडद
माषपर्णी—एक जातनी वनस्पति, जंगली अडद
मांसल—मासवाळो भाग
मित—मापसर, माफक
मिथुन—स्त्री पुरुषनु जोडु, सभोग
मीन—माछलुं
मीसरी—खाड
मुक्तकठे—खीले मोढे, मोकळे सादे
मुक्ता—मोती
मुकुर—अरीसो
मुकुलित—जरा उघडेलु (फूल)
मुद्ग—मग
मुंज—ए नामनु घास
मुंडन—हजामत, वपन
मुंड—माथुं
मुद्रा—वींटी
मुद—आनद
मुनीश—मोटा मुनि
मुमुक्षु—आ ससाररुपी बधनमाथी छूटवानी इच्छा राखनार
मुष्टि—मुठी
मुसाहिब—साथी, मोत्रती
मुस्ता—मोथ
मूक—मुंगो
मूर्वा—मोरवेल
मूषक—उंदर
मृगराज—सिंह
मृगांक—चद्र
मृगमद—कस्तुरी
मृगशावक—मृगनु बच्चुं
मृजा—पचमहाभूतमयी शरीरनी छाया
मृणाल—सुगंधि घास, कमळना तांतणा
मृत्तिका—माटी
मृदु—कोमळ, सुवाळु
मेचक—मयूर पक्षीनो कठ जेवु काळुं
मेद—शरीरमा रहेली एक धातु
मेधावी—बुद्धिशाळी
मेनफळ—मींढोळ, मदनफळ
मोका—संजोग, वखत
मोदक—लाडु
मोदमदाकिनी—आनद आपनारी स्त्री
मौन—मुंगु रहेवु
मौलि—मुकुट
यंत्र—तोप
यथामति—बुद्धि प्रमाणे
यवक—जव नामनु धान्य
यशस्वी—कीर्तिमान
यष्टि—लाकडी
यक्ष्मा—क्षयरोग
याग—यज्ञ
यान—वाहन
यामिनी—रात्रि
यायी—गमन करनार
यावच्चन्द्रदिवाकर—ज्या लगी चंद्र अने सूरज तपे त्या सुधी
युग्म—जोडु
युगल—बे, जोडुं

युवति–स्त्री
यूका–जू
यूप–यज्ञमां ज्या पशु बाधवामा आवे छे ते थाभलो
योग–संयोग, मिलाप ध्यान,
योगपरायण–इश्वरना ध्यानमां तल्लीन
योगवित्–योगने जाणनार
योधवृष–जोरावर बळद
रक्त–लोही श्रोणित
रक्तशालिनी–एक जातनुं झाड
रंगकर–रंगारो
रंगभूमि–ज्यां लडाइ चालती होय ते मेदान
रंगोली–जमीन उपर काढेल चित्र
रजत–रुपुं
रजक–धोबी
रजक–मन रंजन करनार, उत्तेजक
रजनी–रात्रि
रणरागी–लडवानो प्रेम धरावनार
रतिकंत–मदन, कामदेव
रति–कामदेवनी स्त्री
रतिपति–रतिराज, कामदेव
रत्नि–मूठ, मुठी
रंभा–कदली, केळनुं झाड, अप्सरा
रला–कलहकारिका
रव–अवाज
रवैया–रिवाज, चालती आवेली रीत
रश्मि–किरण
रसना–जीभ
रस–पारद, सीसुं
रसात्मक–जेमां रस होय ते
रसाल–आंबो
राजकोशातक–म्होटां तुरीया
राजि–हार
राजिता–शमीनुं झाड
राजिव–रातु कमळ
रात्रिचर–रात्रिए फरवावाळा राक्षस
रिपु–शत्रु
रीर–राड, बूम
रुक्को–टुंकी चिट्ठी
रुखी–सुकाइ गएली, कीकी
रुड–वड
रुदन–रडवु ने
रुद्र–शिव, शिवजीनुं भयकर स्वरुप, अग्नि-आरनी संज्ञा
रुधिर–लोही
रुवाब–रोफ भपको डोळ
रुक्ष–कठोर, स्नेह वगरनुं
रेखा–लीटी
रेणु–रज, धूळ
रोगार्त–रोगथी पीडाएल
रोम–वाळ
रोमकूप–जे काणामां वाळ उगे छे ते रन्ध्र
रोमथ–पशुओनां वागोळवाथी थतां फीण
रोमशः–वाळवाळा
रोमांच–शरीरना रुवाटां उभां थइ जाय ते
रोहित–लाल रग
रोहितकवृक्ष–रोहीडानु झाड
रौद्र–भयकर, विशाळ
रौक्ष्य–कठोरपणुं, निस्नेहीपणु, लुखस, निःरसता.
लंक–केड
लकुच–एक जातनु झाड
लगर–स्त्रीनुं पगनु घरेणु
लय–नाश
लर–(हारनी) सेर
ललाट–कपाळ, भाल

लवा—एक जातना पक्षीओ
लक्ष्मणा—जास्वंदीनुं झाड
लाजा—तांदुळ वनस्पतिविशेष
लाठी—जाडी लाकडी
लावी—सर्पनी फेण
लालाओ—शोखीन पुरुषो
लालित्य—सौन्दर्य मनोहरपणु
लालिमा—रताश लालसुरखी
लाक्षा—लाख
लिक्षा—लींख
लुप्त—लोप थएल उखडी गएल
लोकपाल—राजा, सूर्य, चंद्र अग्नि, वायु, यम, इन्द्र.
लोचन—नेत्र
लोध्रवृक्ष—धोळु अने रातुं बे प्रकारनु होय छे.
लोम—वाळ
लोमाच—रुवाटा उभां थइ जवां ते
लोमशी—लोमडी
लोष्ठ—लोखंड. लोढु
लोहकण—छरा
लोहित—लोहीना रंगवाळा
लोहपत्र—लोढानां पतरा
लोळ—कान उपरनो भाग
लौकिक—आ संसारमां प्रसिद्ध होय एवुं
वक्ता—बोलनार. भाषण करनार
वक्र—वांकु
वक्त्र—मोढु मुख
वच—पोपट. वनस्पति विशेष
वचनामृत—अमृत जेवा वचनो
वंजुल—अशोक वृक्ष
वज्र—इन्द्रनुं हथिआर
वर्जित—तर्जी दीधेलुं
वर्तुलाकार—गोळाकार
वंदन—प्रणाम करवा ते
वंदनीय—पगे लागवा योग्य
वधःस्थान—फांसीए चडाववानुं ठेकाणुं
वनवीथि—वनना रस्ता
वनराज—सिंह वननो राजा
वमन—उलटी
व्यस्त— जुदुं पाडेलुं
व्यंजन—शाक, पंखो, अथाणु, गुह्यांग, निशानी
व्यक्त—इन्द्रिय ग्राह्य जगत
वर—वरदान. श्रेष्ठ
वरक—सोना रुपाना छेक झीणा पाना
वरजी--तर्जीदइने
वरत्रा—ढोर बांधवानुं दोरडुं
वरांगना—नायिका. अप्सरा
वरांगी—श्रेष्ठ अंगवाळी स्त्री
वर्धमान—माटीनुं वासण
वरुणक—वायवर्णानुं झाड
वलयनाद—हाथमां पहेरवाना कंकणथी थतो अवाज
वलि—पेटमा वळिया अथवा करचली पडे छे ते
वल्कल—झाडनी छाल
वल्मीक स्थाणु—शाखा विनाना न्हाना झाड
वल्लरी—वेल लता
वल्ल—कडवा वाल. वालनुं वजन
वल्लभ—प्यारो. व्हालो. पति
वंश—पीठनी हड्डी, वांस
वशीकरण—तावे करवा माटे मंत्र जंत्र
वषट्कार—यज्ञ समय वषट् मंत्रनुं उच्चारण करनार
वसंततिलका—वसंत ऋतुमां उगती वेल
वसन—वस्त्र लुगडां
वस्त्रगोपन—लुगडांनुं रक्षण करवु ते
वसा—चरबी

वसीलो—वग ओळखाण
वसुमति—पृथ्वी
वसुंधरा—पृथ्वी
वस्ति—गर्भस्थान, मूत्रस्थान
वह्नि—अग्नि
वक्षःस्थल—छाती
वृश्चिक—वींछी
वराह—सुवर
वाक्—वाणी
वाटिका—वाडी
वांच्छित—जे इच्छेलुं होय ते
वाडवानल—पाणीनो अग्नि
वात्सल्यता—प्रेम
वादित्र—नगारां तुरी, शंख इत्यादि वगाडवाना वाद्य
वानप्रस्थ—चार आश्रममांनो त्रीजो आश्रम
वानीर—भींडीनुं झाड
वापी—वाव
वापिका—वाव
वाम—डावुं
वामरन्ध्र—डावु नसकोरुं
वामावर्त—डावी तरफ वळतुं
वामाओ—स्त्रीओ
व्याप्त—वहार फेलाएल
व्याघ्रपदा—वेहकळी नामनी वनस्पति
व्यायाम—कसरत
वारिज—कमळ
वारिधर—वादळुं
वारिधि—समुद्र दरियो
वाराही—डुकरी कन्द विशेष
वारुण—पाणी
वालखिल्य—पार्वतीजीना विवाह समये उत्पन्न थएल ऋषिओ

वासव—इन्द्र
वासित—वासवाळुं गन्धवाळुं
वास्तव—खरी रीते
विक—तरतमां वीआएल गायनुं दुध
विकट—अघरु
विकटता—मुश्केली
विकत्थन—खोटां वखाण करवां ते
विकळता—गभरामण
विकंकत—पक्षीनुं नाम छे. वेहकळी नामनी वनस्पति
विकृत वर्ण—लालने बदले काळो
विकृत सर्ग—जेना अंतःकरण काम क्रोध इत्यादि षड शत्रुओथी विकार पामेला छे एवा मनुष्यो जेमां छे एवी दुनिया
विकृत सख्या—एकने बदले बे चार
विजातीय—अन्य जातिनु
विघट्टन—अथडावु
विचारग्रस्त—चितातुर. विचारमा तल्लीन
विच्छिन्न—तूटेलां
विच्छेद—काप
विजया—भांग
विटप—वडनुं झाड
विटंबना—दुःख मुश्केली
विडग—चतुर होशिआर वावडींग नामनी वनस्पति,
वितस्ति—वेंत
वितान—मूर्ख, पापी, दुराचरणी तंबु
विदारनारा—टाळनारा. मटाडनारा
विदारवा—टाळवा. मटाडवा
विदिशाओ—अन्य दिशाओ
विदूषी—विद्वान स्त्री भणेली स्त्री
विदेशगमन—परदेश जवु ते
विदेह—मैथिल देश

विद्यमान—हयात
विद्याधरी—वजीरी
विद्यालयो—निशाळो कोलेजो
विद्युत्—वीजळी
विद्रुम—परवाळा
विद्वेषण—भेर करवु ते
विधान—शास्त्र प्रमाणे जे कर्म करवां ते
विधि—क्रिया करवानी रीत
विध्वंस—नाश संहार
विनय—विवेक
विनष्ट—नाश पामेलु
विपत्—आपदा दुःख
विपर्यय—उलटापणुं पराभव
विपरीत—उलटुं
विपल—एक पळनो साठमो भाग
विप्रवर्य—श्रेष्ट ब्राह्मण
विबुध—देवता देव
विभक्त—भाग पडेला, वहेचाएलुं
विभाकर—सूर्य
विभीतक—वहेडानुं झाड
विमलक—चोख्खुं करनार
विमुक्त—छूटो थएलो
विमुख—पराङमुख, विरुद्ध, प्रतिकुल
वियोग—विरह. जुदा पडवुं ते
विरचन—श्लोक, भींत, काची वगेरेने रचना करवी ते
विरल—थोडा. छुटक छुटक
विरहीजनो—स्नेहीओथी जे दूर होय ते
विराजमान—शोभायमान. सुंदर
विराम—अन्त. छेवट समाप्ति
विरुत—आक्रोश रुदन
विरुप—भयकर स्वरुप
विरोध—दुश्मनावट वेर
विरोधी जनो—दुश्मनो. शत्रुओ
विलक्षणता—लोक संप्रदायथी तद्दन जुदाज प्रकारनुं होवुं ते
विलाप—रोतां रोतां बोलवुं ते
विलास—गीत, नृत्य अने स्त्री आदिना उपभोग करवाथी सुख मेळववुं ते
विलासी—विलास भोगवनार पुरुष
विलासिनी—विलास भोगववावाळी स्त्री. रमणी रामा
विलुप्त—हरण करेलुं
विलोकतां—जोतां
विवर—गुफा. बखोल. छिद्र
विवासन—परदेश वसवुं ते
विशद—साफ. स्वच्छ. चोख्खुं
विशाख—कार्त्तिक स्वामी, निशान मारवानुं ठेकाणु
विशालाक्ष—मोटी आंखवाळो. गरुड. महादेवजी
विश्रान्ति—आराम, थाकखावो ते
विश्व—दुनिया
विश्वभरक—एक प्रकारनो जीव
विश्वेश्वरी—जगदंबा. माताजी. आद्यशक्ति पद्मचारिणी
विशुद्धि—निर्मळता स्वच्छता
विषम—सरखुं नही ते. अघरुं. कष्टसाध्य
विष्णुकान्त—काळी गोकर्णी. वाराही
विसर्जन—त्याग
विह्वळ—आकुळ व्याकुळ
विहार—क्रीडा. अहींथी तहीं फरवुं ते
विहीन—रहित विनाना निराळा
विक्षिप्त—फेंकेलु विखेरेलुं
विक्षेप—मननु एककाम उपरथी उठी जवुं ते. अटकाव हरकत
विज्ञप्ति—अरज. विनति. प्रार्थना

विज्ञता–कैवल्य ज्ञानवाळा होवुं ते
व्युत्क्रम–उलटो क्रम
वृक–वरु
वेतस–वेत्र, नेतर
वेध–उंडाई
वेर–शत्रुवट
वैदूर्य मणि–प्रातःकालना सूर्यना जेवो जेनो
रंग छे एवो मणि. पन्ना
वैद्यवर–उत्तम वैद्य
वैरस्य–रस विनानुं होवुं ते. निरस–लुखु
शकट–गाडु
शकटी–सगडी
शक्ति–सांग वरछी
शख–(मनुष्यनो) कान–कपाळनुं हाडकुं
शंखपुष्पी–शाखवेल, संखाहुली
शत–सो
शतघ्नी–सो माणसनी घात करनार तोप
शतपत्र–कमळ मोर सारस पक्षि
शतावरी–वनस्पति विशेष छे
शपथ–सोगन
शव–मुडदु, लास
शब्दात्मक–जेमां शब्द थाय एवा पदार्थो
शमी–खीजडानुं झाड
शर–बाण
शरकांड–बाणनी लाकडी
शरट–सरडो एक जातनु झाड
शराव–कोडीयुं पात्र
शल्यक- शेह
शबल–बहुरंगी, विचित्र, श्वेत अने कृष्ण रंगथी
मिश्रित
शश–ससलुं
शशघ्न–ससलांने मारनार
शस्त्र–हथिआर आयुध
शस्त्रकोप–लडाइ सळगी उठवी ते
शस्त्रज्ञ–हथिआर केम वापरवां ते जाणनार
शाक–भाजी. द्वीपनु नाम छे. सागनु झाड
शाक्य–रक्तपट
शाकुन–शकुन अथवा प्रश्न संबंधी
शाकुनिक–शकुन शास्त्र जाणनार
शांतात्मा–शांत चित्तवाळो
शायी–सूतेलो
शारिवा–अनंत मूळी वनस्पति
शार्दूल–सिंह. छंदनु नाम छे
शाल्मलि–शेमळो
शावक–बच्चु
शासन-अमल हुकम
शास्त्रज्ञता–शास्त्रनुं जाणपणु
शिखा–चोटली
शिथिल–ठंडी
शिरकेश–माथाना वाळ
शिरबंदी–शहेरना बचाव माटे राखेलु लश्कर
शिरा–रक्त वाहिनी रग, नस
शिरोमणि–माथा उपरनो मणि, बधामा श्रेष्ट
शिलशास्त्र–कारीगीरी उपर लखाएलु पुस्तक
शिरोरुह–माथाना वाळ
शिला–पत्थर
शिलिमुख–बाण–भमरो
शिवा–पार्वतीजी. हरडेनुं झाड
शिसपा–सीसमनुं झाड
शीघ्र–जल्दी, तूर्ण
शीत–ठंडु
शीतधूप–टाढ अने ताप
शिर–माथुं
शुक–पोपट
शुक्ति–छीप
शुक्र–वीर्य. वारनुं नाम छे

शुक्लपक्ष–अजवाळीयुं पखवाडीयुं
शुक्लवर्ण–धोळो रंग
शुचि–पवित्र
शुभ्र–सफेद, धोळु
शुश्रुषा–सेवा, नोकरी
शृगाल–शिआल
शृंग–शिंगडु
शृंगाटक–पाणीमां उत्पन्न थएल वेल, शिंगडुं, त्रण शिखरवाळो पर्वत
शृगार–सणगार
शेफालिका–रान निर्गुंडी
शेह–शाह, राजा, बीक
शैल–पर्वत
शैलराज–मोटो पर्वत
शोकाग्नि–दिलगीरीरुपी अग्नि
शोर–अवाज
शोणित–लोही
शौच–तन, मन तथा गृह शुद्ध करवुं ते
शौंडिक–कलाल, दारु वेचनार
शौर्य–बहादुरी, पराक्रम
श्मश्रु–दाढी
श्याम–काळो, पति, धणी
श्यामा–नसोतर, काळी ग्रो, गळीना छोड, रात्रि, यमुना नदी
श्याव–धूसर रग, बदामी रंग
श्येन–बाज पक्षी
श्रमित–थाकी गएल
श्रीकृष्णनी कृति–गीता
श्रीपर्णिका–कायफळ, कुंभीनुं झाड

श्रीवत्स–विष्णुनी छाती उपरनी एक निशानी
श्रीवृक्ष–पीपळानुं झाड, बीलीनुं झाड
श्रुवा–सरवो
श्रीवास–सरल वृक्षनो गुंद
श्रेणी–पंगत, पंक्ति
श्रेष्ठी–धनपति, शाहुकारो
श्रोणि–मार्ग
श्रोणिमंडळ–मार्ग
श्रोत्र–कान
श्योनाक–टीडानुं झाड
श्लथ–ढीला, पोचा पडी गएला
श्लाघनीय–वखाणवा लायक
श्लेष्म–सळेखम
श्लेष्मातक–झाडनुं नाम छे
षट्रस–मधुर, कटु, कषाय, आम्लक क्षार अने तिक्त एवा छ रसो
षण–सेवा, पूजा, खंड
षोडशांस–सोळमो भाग
संकीर्ण–प्रसरेला, विस्तार पामेला
सक्तु–साथवो
सख्यभाव–मैत्री
सर्ग–दुनिया
संगम–बे नदीओनो मेळाप
संगर–युद्ध
संग्राम–सगर, युद्ध
सघन–जाडुं
सचर–चाले तेवुं, अस्थिर
सचिक्कण–चिक्कणुं
सचिव–प्रधान, मित्र

सज्ज—तैयार
सर्जवृक्ष—अर्जुनसादडानुं झाड, जेनां पान घोडाना कान जेवां होय छे.
सजातिय—एक जातिनुं
संतप्त—खूब तपेलो
संतानहीन—छोकरां विनानो, वांझीओ
सत्त्व—पराक्रम
सत्वर—एकदम
सत्र—सदावृत
सातपत्र—सातवणनुं झाड
सदन—घर
सदस्य—सभामां बेसनार, सभासद
संदिग्ध—संशयवाळुं
सदैव—हमेशां
सद्गुणसपन्न—सारा गुणवाळो
सद्म—घर
सद्योमरण—तुरतमां थनारु मृत्यु
सद्योवृष्टि—झट थाय एवो वरसाद
सन्नत—सारी रीते नमेलुं
सनातन—सदोदित, अविनाशी, अनादि काळनुं
सन्निध—नजीक, पासे
सपत्—पैसो, वैभव
सपत्नी—शोक
सप्तर्षिओ—सात ऋषिओ, आकाशमां ए नामना ताराओ उगे छे ते
स्पंदमान—टपकतां, फरकतां
स्वस्तिक—साथीओ
सफरी—मोटी माछली
समग्र—समस्त, अखिल, सर्व

समंगा—मजीठ
संमति—अनुमोदन, अनुमति
समदर्शी—समानभावथी जोनार
समर—युद्ध
समसूत्र उत्तर—बरोबर उत्तर
समशेर—तरवार, कृपाण
समीर—वायु, पवन, अनिल, मारुत
समीक्षा—दृष्टि, समज
संयम—निग्रह
संयोग—बे वस्तुओनु जोडावुं ते
सरट—कृकलास, काकीडो
सरल—देवदारनु झाड
सर—तळाव
सरसी—तळावडी
सरसिज—कमळ
सराजाम—सामान
सराहता—वखाणता
सरिता—नदी
सरोज—कमळ
संलग्न—सारी रीते जोडाएला
सल्लकी—वनस्पतिनुं नाम छे
सलाक—सूयो
सलिल—पाणी
संवर्तक अग्नि—समुद्रनो अग्नि
संवाद—सवाल जवाबवडे जे वातचीत थाय ते
सवाहन—भार लई जवो ते, जुलमथी हरण करी जवुं ते
सवृत्त—संकुचित
सर्षप -वृक्ष विशेष, सरसव

सहकार—आंबो
सहत—खूब ताडन करवामा आवेला
सहति—समुदाय
सहदेवी-प्रियगुलता, महाबला
सहा—शेवती, गुलाब
सहास—हसवु, दांत काढवु
सहृति—बलात्कारथी हरण करी जवु ते
सळ—करचली
स्तनी—थली
स्थपति—कारीगर
स्थाणुत्व—इशत्व
स्थालीपाक—एक प्रकारनो चरु
स्फिच—केडर्ना पाछळनो भाग, नितंब
स्फुलिंग—अग्निकण
स्वतः—पोतानी मेळे
स्वरगाख्य—स्वरथी गवातुं गायन
स्रश—टपकवु ते, खाली थवुं ते
स्रस्त—जुदा पाडेला, निराळा करेला
साक—सागनु झाड
सार—चरबी
सिक्ता—रेती
सिन्दुवार—निर्गुंडी
सिंहद्वार—दरवाजा
सीकर—जलबिन्दु
सीवनी—वृषणथी मूळद्वार सुधीनी वचली नाडी
सुखपाल—म्यानो, अबाडी
सुधाकर—चंद्र
सुभग—सर्वने प्रिय सारा भाग्यवाळो
सुभिक्ष—सुकाळ
सुमन—फूल
सुरपति—इन्द्र
सुरभि—गाय
सुवर्णकार—सोनी
सुवर्णवृक्ष—धतुरानुं झाड
सुषिर—छिद्र
सुशिक्षित—सारी रीते केळवाएला
सूकरिका—डुक्करकन्द
सूम—लोभीयो
सृक्किणी—ओष्ठोना छेडा
सौरभ—सुगंध
हनु—हडपची, नखलो
हय—घोडो
हयग्रीव—घोडानी डोक
हरित—हळदर, हळदरना जेवो रंग
हरिताल—हरताळ
हरिद्र—हळदर
हर्म्य—हवेली
हलवो—शीरो
हस्त—हाथ
हस्ती—हाथी
हारित—हरियल पक्षी
हारीत—कबूतर, पारेवुं, ठग, लबाडी
हालाहल—झेर
हिमगिरि—हिमालय
हिमवारि—झाकळना टीपां
हुतद्रव्य—अग्निमां होमेली चीज
हुताशन—होमेलु खानार अग्नि
हृदयभेदक—अंतःकरण चीरी नांखे एवो

हृदयवल्लभ—धणी पति

हृदयवल्लभा—भार्या, प्यारी.

हृदयान्तर— हृदयअंदरथी जोनार, आत्मा

ह्रस्व—टुंकु

हेमंत—ऋतुनुं नाम छे

क्षति—नाश, संहार, विनाश

क्षात्र—शिष्य

क्षाम—अशक्त, कमजोर

क्षितिपाल—पृथ्वीनो राजा, नृपति

क्षीण—कृश, दुबळो पडी गएलो

क्षीर—दूध

क्षीरवृक्ष—उवरानुं झाड, दूधवाळां झाड

क्षीरसागर—सात समुद्रमाथी एक दूधनो समुद्र

क्षीरिका—वृक्षनुं नाम छे, खीर, दुधी

क्षुद्र—हलकुं

क्षुधा—भूख

क्षुधालु—भूखाळवो

क्षुर—अस्त्रो, मजेयो, गोखरुनामनी वनस्पति

क्षुरक—गोखरुनुं झाड

क्षेत्रज्ञ—खेडुत, आत्मा

क्षेम—कल्याण

क्षेमा—वृक्षनुं नाम छे

क्षौद्र—मध, पाणी, वृक्षनुं नाम छे.

क्ष्वेडा—वनस्पति विशेष, मोडानो अवाज, विष

काका राजोजी चलावता हता. ए राजाजीने " रातीदेवळी " नामे गाम गरासमां मळेलुं हतुं; राज मानसिंहजीना मातुश्रीनी इतराजीने लीधे राजोजी रातीदेवळीमां रह्या अने पछीथी खोडूमां जइ तेणे दरबार बांध्यो. त्यारबाद देवनी अनुकूळताथी वि. सं. १६८१ मां तेओ वढवाणना स्वतंत्र मालिक बन्या. तेओना न्हाना भाइ बलूजी तथा अदेभाणजीने गरासमा सरधारकुं मळेलुं हतुं. ए त्रणे भाइओ मूळीना भाणेज थता हता.

राज मानसिंहजीए उम्मरलायक थइ हळवदपर हल्लाओ करवा माड्या, परंतु तेओ फावी शक्या नहि, तेओना लग्न " सीसाग " थएलां हतां; तेओने रायसिंहजी, भीमजी, भाणजी, अगरसिंहजी, वीरमजी, वरशोजी, रतनजी, तथा हरदासजी नामे आठ कुमार थया. वि–सं. १७०२ मां राज मानसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना पाटवी कुमार रायसिंहजी वांकानेरने टीले रह्या, भीमसिंहजीने " कणकोट ", भाणजीने " वधाशीयुं " अगरसिंहजी तथा वीरमदेवजीने खेरवा, राती देवळी तथा सरधारकानो थोडो भाग; अने वरसाजी तथा रतनजीने खेरवानो भाग गरासमां मळ्यो. सहुथी न्हाना कुमार हरदासजी निःसंतान मरण पाम्या हता.

राज मानसिंहजीना लघु बन्धु रामसिंहजीने लूणसरीयुं तथा बोकडथंभुं गरासमा मळेलुं हतुं. ए रामसिंहजीना वंशमां छठी पेढीए कलोजी तथा सबळोजी नामे बे बन्धुओ घणाज बहादुर थया; ए बन्ने भाइओ ज्यारे गोंडल ठाकोर पासे नोकरी करता हता त्यारे हादाखुमाण नामनो कोइएक काठी संख्याबंध स्वारो तथा पायदळ साथे काठियावाडमां लूटफाट चलावी रह्यो हतो अने धोळे दिवसे धाड पाडी गामो भांगतो हतो. एक वखते एणे गोंडळ तावानुं सतापर नामे गाम भांग्युं ए समाचार गोंडलमां आवतां त्यांथी जबरी वार चढी, कोटडाथी पण केटलाएक लडवैयाओ गोंडळना पक्षमा मळ्या; भादरकांठे उभय दळनो भेटो थयो; झाला कलाजीए काठीओनुं महान कटक जोइ गोंडळना तथा कोटडाना माणसोने शान्त रहेवा समजाव्युं, परंतु वाथी भरेला ए लोकोए कलाजीना कहेवा पर कांइ पण ध्यान नहि आपतां शेखीमां ने शेखीमां घोडाओने प्रतिपक्षीओ पाछळ मारी मूक्या. हे हथीआरा काठीओ वीरहाकनी

---

१ बारोटना चोपडामां एवुं लखेलुं छे के बलुजी तथा उदेभाणजीने पांचदुवारका नामनुं गाम गरासमां मळ्युं हतुं, तेना वंशजो हाल सरधारकामां छे अने ते नीचाणी पाटीवाळा कहेवाय छे.

२ बारोटना चोपडामां भीमसिंहने कणकोट उपरांत सरधारकुं मळ्युं हतुं एम लखेल छे.

साथे मारवा मरवानो निश्चय करी सामा थया. समशेर अने भालांओना प्रहार पूर्वक युद्धनो आरंभ थतां कंपायमान बनेला कोटडाना लोको एज वखते पलायन करी गया, गोंडलीआओ पण गर्व छोडी न्हासी गया, मात्र कलोजी तथा सवळोजी पोताना कुळनी टेक जाळववा माटे रणमां अडग रही शत्रुओना समुदायपर तुटी पड्या; आशरे एक हजार काठीओ फक्त बेज झालाओना बाहुबळथी छिन्नभिन्न थइ गया. वीरवर कलाजीए हादाखुमाण उपर समशेरनो प्रहार कर्यो अने सवळाजीए तेना बावळा नामना अश्वने ठार कर्यो. झाला रामसिंहजीना भीम अने अर्जुन जेवा पौत्रोए एवो धर्मचक्र मचाव्यो के काठीओनुं कटक भयभीत बनी भागवा लाग्युं. अगणित अश्वोना पोरनथी उडेली धूलिने लीधे आकाश धूसरित बनी गयुं. कलोजी तथा सवळोजी संसारनो मोह छोडी सेंकडो प्रतिपक्षीओना मध्यमां खुल्ली कृपाणे खेलवा लाग्या, वृक्षथी पर्ण खरे तेम करपद आदि अवयवोना पात थवा लाग्या. घायल जनोनां गात्रमांथी धकधकाट करती रुधिरनी धाराओ छूटवा लागी, काठीओना बखतनी कडीओ तडोतड तूटवा लागी. "मारो मारो" अने "कापो कापो" एवा शोर सांभळी जेम पोष मासनी रात्रीमां प्रमदा विनानो पुरुष धृजे, तेम कायरजनो कंपवा लाग्या, खरा शूरवीरो हता एज कलाजी सन्मुख स्थिर थइ शक्या, खरेखर ए वखते वीरवर कलाजीए वांकानेरना पाणीने विश्वमां विख्यात कर्युं. ए बन्ने बन्धुओए हादो, सामत, वरु अने हमीर नामना चार अग्रणी पुरुषोने मारवानो संकल्प कर्यो हतो, तेमांना त्रणने तो तुरतज यमराजना अतिथि बनाव्या; मात्र एक हादोज घायल अवस्थाए बचवा पाम्यो हतो, परंतु ते ज्यांसुधी जीव्यो त्यांसूधी कसूंबो लेती वखते तेने कलाजीनो रंग आपतो हतो अर्थात् कसूंबो पीवा टाणे हमेशां ए एवुं बोलतो के रंगछे झाला मरद कलाजीने जेणे हजारो माणसो वचे हिम्मतथी प्रवेश करी मारा उपर प्रहार कर्यो

खुमाणोनी आंखमा खटकी रहेला कलोजी तथा सवळोजी एज युद्धमां छेवटे काम आव्या हता. एना पराक्रमनी प्रशंसा करता कवि लोकोए नीचे मुजब गीतो कहेलां छे.

गीत. १

घरे ठाठ कटकांतणा कोळीए काठीए. हण्यो लइ गामडा नणो होथा;
बूंबीयो आवीयो गोंडले बरकतो, सतापर हाडले कीयो सोथा;
चडी वार गोंडलरी कोटडारी पण चडी. भादरे थका असवार भाळ्या;
बावळे कलानुं कर्युं नहि वारियुं. बावळे मोरथा पवंग बाळ्या;

वळ्या काठी भाला हथा वांकडा, वीर हकाडका ठोर लागी;
कोटडातणा नर गीआ खेपट करी, भूर गोंडलीआतणी भागी;
सनसुख हलाव्ये गीयो सांगा सतण झींक भालां दई वाई झटक्यां;
वकर हादासरे कले घा वाळीयो, वावळो सवळे कीयो वटका;
धमचक्र मचाइ एसी झाला धणी, हेमरा दळां सरदार हणीया;
पांडवा सरीखा रामरा पोतरा, भीम अरजण जसा भणीया;
खतरी पूरा हता तकोरीआ खळे, आवगो वंकपर वेण आदो;
मरद माटीपणे कलाने मोरथी, हर्जी रंग कसुंवे दीए हादो ॥

गीत. २

खळ खुमा साथ माचीयो खेखट, दळ आडो मकवाण दीयो;
केता सवे सदा मत कळीयो, इ गोंडलीयो पोवार गीयो;
कामो वगत पडीदो कोमां, बोल अबोला साहव राम;
झटके रमण अटकीया झाला, इ हाला भाग्या लूणहराम;
माणासवर समो दध मातो, खातो डळा समळरत खाळ;
सेहसागण पोतो सरदारे, कटकासर वातो करमाळ;
इघरमांझ हतो इ एकज, होय तो कदि मेडते होय;
खशीयें कयुं बाबरीए खुमे, कलीया जसो न मळीयो कोय;
परचल पोखण सकत प्रखपूरी, मेर सवरकर कंठ प्रमाण;
पाडे प्रसण पछे रण पडीयो, इ रंग परीयां चाडें झलराण.

गीत. ३

रण आयो खत ठेकी रमवा, भात्रीजा भेळा त्रहुं भाइ;
पाळबंधु बरके रजपूतो, भोयो मांडी बडी भवाइ;

पूगो घट घट अशो करे पग, वेंश भजाड्यो भोगवी वार;
कलीये गोत्या धणी कटकरा, चारहजार वचेथी चार;
लोह सतान सरे रंग लाग्यो, सजडे खेल्यो अशो सधीर;
भाले झलवे रूप भेचक्या, हादो सामत वरू हमीर;
अधपत चार नजरमां आणे, घायक कले बांधीयो घेर;
वत लेवा पाछो दळ वच्चे, सांगातणे पाडीयो शेर;
फरें घाळ जेम पाळ फुदडी, प्रसणण करेन मींटपरी;
खशीये क्युं वावरीये खुमे, जे कलींये एसी रसत करी;
वटी गया भुंगळांवाळा, छाना ढोलक रया छपी;
भाग्यो नहीं साथींयां भेळों, खेळो पडमां रयो खपी.

एकविंशत् तरंग.

गीति.

रायसिंह बीजाथी, विनयसिंह लगि समग्र वृतान्त;

स्नेहें अमर ! सुणावुं, विदित वक्रपुरीतणा कलितकान्त !

राज रायसिंहजीए वि-सं. १७०९ मां तख्तनशीन थया पछी हळवद लेवा माटे घणो श्रम कर्यो, पण ते सार्थक थयो नहि, तेओ अलवर परण्या हता, तेनाथी कुमार चन्द्रसिंहजी उर्फे चांदोजी तथा वेराजी नामना वे कुमारनी उत्पत्ति थइ. वि-सं. १९२५ मां राज रायसिंहजीनो कैलासवास थतां पाटवी कुमार चन्द्रसिंहजी राज गादीपर अभिषिक्त थया अने वेराजीने कोठारीआ नामनुं गाम गरासमां मळ्युं.

राज चन्द्रसिंहजी उर्फे चांदाजीए वांकानेरना राज्यासने विराजमान थया बाद एक वर्षनी अंदर एक म्होटुं लश्कर एकठुं कर्युं अने वारंवार हळवदपर हुमलाओ करवा माड्या. तेओ जाते घणाज वहादुर अने हिम्मतवान हता. ए अरसामां हळवदनी गादीए राज जसवतसिंहजी राज्य करता हता, अने जोधपुरना महाराजा जसवतसिंहजी दिल्हीना बादशाह तरफथी गुजरातना सूबा बनी आव्या के जे वांकानेरना राज चन्द्रसिंहजीना जामातृ थता हता, तेओए पोतानां राणी झालीजीना केहवाथी हळवद उपर चढाइ करी. ए वखते राज जसवतसिंहजी वाराही तरफ वंचते करी गया. राठोड जसवतसिंहे हळवदनुं राज्य हस्तगत करी बावी नजरअलीखानने जागीरमां आपी दीधुं. ए बावीए छ वर्ष पर्यन्त हळवदमां हकुमत भोगवी, त्यारबाद वीरवर चन्द्रसिंहजीए बावी नजरअलीखानने हरावी हळवद हाथ कर्युं अने त्यां त्रण वर्ष पर्यन्त स्वतंत्र सत्ता चलावी. वि-सं. १७३८ मां राज जसवतसिंहजीए बादशाह तरफथी हळवद तथा तेने लगता मीठाना अगरनी सनंद मेळवी अने राज चन्द्रसिंहजी साथे युद्ध करी हळवदनो कवजो हाथ कर्यो. परंतु चन्द्रसिंहजीए हळवदनी वलगण जारी राखी जीवतां सूधी राज जसवतसिंहजीने सुखे सुवा दीधा नहि. ए

अद्वितीय पराक्रमी पुरुष हता, एणे असह्य बाहुबळथी पोताना मुलकनी अभिवृद्धि करी. कोइएक वखते कच्छ देशान्तर्गत वेंध प्रगणाना हरभमजी नामे शावल जातिना रजपूते वांकानेरीआमां प्रवेश करी लींवाळा नामनुं गाम भांग्युं. ए समाचार साभळतांज राज चन्द्रसिंहजीए तेनी पाछळ पडी वांकानेरथी आशरे दोढ गाउ उपर आशोइ तथा मच्छु नदीना संगम स्थळे धींगाणुं कर्युं; झाला-ना झाटकाओथी हरभमजी झाटकीआना समग्र सैनिको मरणने शरण थया अने ए पण घायलें अवस्थाए राज चन्द्रसिंहजीने पगे पडी अपराधनो माफी मागवा लाग्यो. शरणागतने अभयदान आपवुं ए क्षत्रीओनो धर्म छे. ए धर्मानुसार राज चन्द्रसिंहजीए पण हरभमजीने अपराधनी क्षमा आपी जीवतो जवा दीधो. ए प्रसंगे कोइएक कविए नीचे मुजब गीत कहेलुं छे.

गीत. १

चन्द्रसेन हभोरण वंधे चाला, वेकरमाला वाटकीया;
झालातणा सपेखी झाटक, झाटकीये कर झाटकीया;
रासाओत हाजाओत रूके, राम चडीआ माझी समराथ;
वळीओ कडतल दलां वखेरे, हरभमजीओ खंखेरी हाथ;
झालावाड मोहाड झूवतो, घणुं मचवतो राहाड घणी;
सामावाडे सेहेडीओ सामो, धाड मरावे धाड धणी;
वांकानेरतणी दस वहवा, कटक न काछीगाहो कसे;
जोध जुआण वढावे जाडो, घाण कढावी पाण घसे.

राज चन्द्रसिंहजी जेवा पराक्रमी हता तेवाज उदार अने प्रजाप्रिय हता; राजसी नामना गढवीए एओनी प्रशंसा करतां कह्युं छे के.

गीत. २

वडे टोर वांकानेर कवी देवा वडंग, भामणे प्राक्रम धग भाओ;
चंद राए संगरो खलां दल चूरवा. अभनवो राण नग्नान आओ;
सकव उछाह घर घर प्रजा परम नख. प्रगण दग्व अनंग्वन गलांप्राजी;

पाट रायसंगरे भलो झल प्रगटीयो, मानहर चंदहर जसो माझी;
धवे सहे दुअण सीसाडीआ धूजीआ, पूजीआ खरा अहेनांण वणपार,
पथाओत वेर करवा नवा प्रहोणा, वलीतांए आवीओ वीजीआइवार;

राज चन्द्रसिंहजी जाडेजाभां तेमज मागंद परण्या हता, तेओने पृथीराजजी, केसरीसिंहजी, वरसोजी तथा तेजोजी नामना चार कुमार अने जमुवा, लखमाजीवा, राजुवा, तथा अनुपवा नामनां चार पुत्रीओ हतां. तेमां जमुवानां लग्न नवानगरना जाम रायसिंहजी साथे, लखमाजीवाना लग्न जाम लाखाजी साथे अने राजुवा तथा अनुपवानां लग्न कच्छ भुजना रावो देशळजी साथे म्होटी धामधूमथी करवामां आव्यां हतां.

वि-सं. १७७७ मां राज चन्द्रसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना पाटवी कुमार पृथीराजजी उर्फे सतानजी वांकानेरनी राजगादीए बेठा. कुमार केसरीसिंहजीने वगजारुं, वरसाजीने दुआ अने तेजाजीने घीयावड नामनुं गाम गरासमां मळ्युं.

राज पृथीराजजीए सातवर्ष पर्यन्त राज्य सुखनो उपभोग करी वि-सं. १७८४ मां निःसंतान कैलासवास कर्यो त्यारे तेओना लघु बन्धु केसरीसिंहजी वांकानेरनी गादीए बेठा. ए वखते कोइएक चारणे नीचे मुजब दोहो बनावी केसरीसिंहजीने संभळाव्यो हतो.

करम तारुं केहडा, उनाळे लीलुं;
वणझारानो गराशीओ, एने वांकानेरनुं टीलुं.

राज पृथीराजजीना कारज उपर जामनगरथी जाम तमाचीना माणसो आवेल हतां, तेओनो विचार वरसाजीने वांकानेरनी गादीए बेसाडवानो हतो, परंतु वढवाणथी ठाकोर केसरीसिंहजीनी मदद आवी पहोंचवाथी नगरवाळानो विचार पार पडी शक्यो नहि. राज केसरीसिंहजीए ए उपकारना बदलामां वढवाणने बार गाम सहित पोतानुं नागनेश परगणुं वि-सं. १७९२ मां आप्युं हतुं.

राज केसरीसिंहजीना लघु बन्धु वरसोजी के जेने दुवा नामनुं गाम वांकानेर तरफथी गरासमां मळ्युं हतुं, एना पौत्र गजसिंहजी महान भक्त अने कवि थया, एणे **विष्णुप्रकाश** नामे एक ग्रन्थ रचेलो छे, ए अद्यापि हस्तलिखित छे. छपाइ प्रसिद्ध थयो नथी. ए ग्रन्थनी एकन्दर सोळ कळा छे, तेमां रामावतार तथा कृष्णावतारनी लीलाओ वर्णवेली छे, शिवजीनो विवाह लखे-

लो छे, बुद्धावतार तथा कल्कि अवतारनी भविष्यत् हकीकत आपेली छे अने वल्लभकुळ संबंधी पण वर्णन करेल छे; ए उपरान्त केटलीक वैराग्यनी कविताओ पण तेमां रचेली छे. दोहा, सवैया, सोरठा विगेरे ६४५० छन्दोथी ग्रथेलो ए ग्रन्थ (विष्णुप्रकाश) बुद्धिने विशुद्ध करनार अने आनंद उपजावे तेवो छे. श्रीमान् गजसिंहजीए ए ग्रन्थ रच्यो ते वखते झालाओना राज्यमां निम्नलिखित महाराजाओ राज्य कर्ता हता एम ए ग्रन्थमा लखेलु छे.

१. वांकानेर–महाराजा राजसाहेब श्री चन्द्रसिंहजी उर्फे डोसाजी.

२. हळवद–महाराजा राजसाहेब श्री अमरसिंहजी.

३. लींबडी–श्रीमान् ठाकोरसाहेब श्री हरिसिंहजी.

४. लखतर–श्रीमान् ठाकोर श्री पृथीराजजी.

५. वढवाण–श्रीमान् ठाकोरसाहेब श्री जालिमसिंहजी.

६. सायला–श्रीमान् ठाकोर श्री वखतसिंहजी.

७. सादडी–श्रीमान राजराणाश्री चन्द्रसिंहजी.

८. प्रांतेज–श्रीमान् ठाकोर श्री दोलतसिंहजी.

९. देलवाडा–श्रीमान् ठाकोर श्री कल्याणसिंहजी.

१०. गोघुंदा–श्रीमान् ठाकोर श्री मोहकमसिंहजी.

राज केसरीसिंहजीना अमलमां प्रजा अत्यन्त सुखी हती, शत्रुओ उचुं मायुं करवा हाम भीडी शकता नहि. ए उदार दिलना राजानी प्रशंसा करनां ए वखतना कविओए घणां काव्यो रचेलां छे. तेमांना थ्रण गीतो नीचे हजर छे.

गीत. १

वंद दाग केसा नरस अभंग्रम वगुना,
अंबर इर लगो मोढ न ओढे;
कंथ लागे नीआं त्रीआ पोढण करे,
परनारी जगे त्री कंथ पोढे:
गल्लचां हींदुआं अमर लागो गजर.

अषाडे चडे फरे न के आवे;
धमक नालां तणे चंदरे ध्रूजवा.
नारीआं पंपोले पलंग नावे;
परजवीं राजवी खान मोहटोपणां,
डाढ वोहे नको काढ दावे;
वाढ दीनो धमक पाखरां वाजते,
अब लरे वाजीत्रे टाढ आवे.

गीत. २

हेक जूनां थीए नवा दूजा करे, रूक धोडें भडे तमण रेसो;
प्रगट ऊंबरडातणो तल पालटों, कला नत नवनवी करे केसो;
सात्रवां काल ओनाड दूजो सतो, तवां कोण सामो चडे तो?;
एक वेहेर करे बीआंपोआंजसे, वेर चंदतणो नत नवां वोरे;
धणी वंकनेररो मेर जैवडधडे, धुपटे करपडां दीह धोले;
माण हालातणुं नमषमां मोडीयुं, खाग धोडे बीआं मदा खोलें.

गीत. ३

वहे नारही डोलती नागला रांनवच, झुझ मुकी प्रसणथीआ झरडो;
साद काढी नको गाढ बोली सके, केंसरी संघरो अमल करडो;
त्रजड मोहें दुथ चन्द्रसेनरे टालीओ, सुथ कीधो सत्रांहए साले;
कनकचा सोल सणगार सज कामनी, हेकली वेकली रान हाले;
घणा आनंद मंगल वरतीआ घर घर, वसी सवसीधरा रामवारो;
धींग रासाहरा भोए वेरी धवे, सराए वार संसार सारो;

उपरनां गीतो उपरथी सिद्ध थाय छे के राज केसरीसिंहजी महान् प्रतापी तेमज पराक्रमी हता, तेओए हालाओनी साथे युद्ध कर्युं होय एवुं अनुमान थाय छे, कारणके ए लोको तेओना हकमां विघ्नरूप थया हता.

राज केसरीसिंहजी सीसांग परण्या हता, तेओने भारजी नामे एक कुमार तथा लाडुबा नामनां एक कुंवरी थयां हतां. कुंवरी श्री लाडुबाने नवानगरना जाम लाखाजी साथे परणाव्या बाद वि-सं. १८०५ मां राज केसरीसिंहजीनो कैलासवास थतां कुमार भारोजी राजपदवीने धारण करी वांकानेरना तख्तपर विराजमान थया. ए एक महान समर्थ लडवैया हता. एनामां आलस्य तो बिलकुल हतुंज नहि, आठे प्रहर उत्साहथी तेओ पोताना मुलकने वधार्येज जता हता; कहे छे के तेओए हळवद पर चढाइ करी एक वखत विजय मेळव्यो हतो. परंतु लांबो वखत तेमना कबजामां रही शक्युं नहि. जसदण पासेना सुदामडा तथा कोटीसुदणीना काठीओए वांकानेर तावानां गाम मदीसा. कोटी तथा जाधपुरमां लूंट चलावी अने त्यांथी घणा ढोर लइ गया. ए वखते काठी, जाट अने बीजी कोमनां पोताना विजयनी निशानी तरीके ढोर लइ जवानो रिवाज प्रचलित हतो; अने जे राजाना मुलकमांथी ए रीते ढोर लइ जवामां आवे ते राजानी कीर्ति कलंकित गणाती एटला माटे राज भाराजीए पोतानी प्रजामां पशुओनी करेली चोरीथी पोतानी सत्तानुं तेमज प्रतिष्ठानुं अपमान थएलुं समजी ज्यांसुधी ए चोराएलां पशु पाछां न मळे अने ज्यांसुधी शत्रुओने पूरेपूरी सजा न अपाय त्यांसुधी वांकानेरमां दाखल नहि थवानी दृढ प्रतिज्ञा करी; परंतु ए प्रतिज्ञा पूर्ण करवा माटे जोइए तेटलुं सैन्य पोता पासे नहि होवाथी जूनागढना दिवान अमरजीनी सहायता मेळववा माटे पोताना कारभारी रणछोडराम हरिरामने मोकली आप्या. रणछोडराम दिवान अमरजीना सजातिय तथा सदधी होवाने लीधे धारेलुं काम सरळताथी पार पड्युं. जूनागढथी आवेला पांच हजार सिपाहीओने साथे लइ राज भाराजी काठीओना गामडांओ भांगवामां तेमज पोतानी मिलकत पाछी मेळववामां फतेहमंद थया. भजावनार भाराजीए भालानी अणीथी काठीओनां कलेजांओने एवा कंपायमान कर्यां के ए लोको फरीथी वांकानेरनी हदमां प्रवेश करवा हिम्मत धरी शक्या नहि. ए वखतना कोइएक चारणे कह्युं छे के—

भालो धारो भारमल, अडीयो आभ जके;
वेरी वीधा वने, नो रूठे वेहरागढन ॥

राज भारोजी चोर अने लूंटाराओनो पराजय करी तेमना पर धाक बेसाडवामां बहु प्रवीण हता, काठीओ तो एनुं नाम सांभळतांज सो सो गाउ भागी जता ए नीचेना दोहा उपरथी सिद्ध थाय छे.

तोळे भय त्राठां, काठां केहराउत,
एना घोडे चप गाठां, ते भाठां न मटे भारमल.

राजभारोजी घणाज उग्रभागी हता, तेओए वांकानेरने फरतो गढ बंधाव्यो, शहेरनी स्थिति सुधारी, ब्राह्मणोने गरास आप्या, देवमन्दिरो बंधाव्यां अने गामडाओनी पण आबादी करी, महान उदार दिलना महीपतिए भाट चारणो विगेरे याचकवर्गने अनेक प्रकारनां दान आपी म्होटी नामना मेळवी. परोणागतमां अत्यन्त पंकाएला राज भारोजी संख्याबंध गरीबगरबांओने निरंतर अन्नदान आपता, एओना दरबारनां मेमानगतोनो रोटलो एवडो म्होटो थतो के जे बे त्रण माणसोने पूरेपूरी तृप्ति आपी शकतो; ए वखतनां एक साधारण कहेवत हतुं के "**भारा साइ रोट अने कुंभा साइ कोट**" वांकानेरना राज भाराजोनो रोटलो अने गोंडल ठाकोर कुंभाजीना किल्लाओ एकी साथे प्रशंसाने पात्र थया हता, काठिआवाडनां तो शुं, पण आखा हिन्दुस्थानमां ए वात मशहूर हती.

राजकोटना ठाकोर बावाजीराजे राज भाराजोनो महिमा घटे अने पोतानो यश वधे एवा हेतुथी चार माणसो खाइ शके एवो अकेक रोटलो तैयार करावी चारण लोकोनी परोणागत शरु करी. मिजमान बनेला चारणो ठाकोर बावाजीराजनी हाजरीमां थाळीनी अंदर आवेलो रोटलो जोइ बोली उठया के—ओहो हो हो, कांइ भारासाइ रोटलो बन्यो छे नां ? आ सांभळी ठाकोर बावाजीराजने बहुज गुस्सो चढ्यो, एणे चारणोने कयुं के, में भाराजी करतां चोगणो वजनदार रोटलो तैयार कराव्यो छतां भारासाइ भारासाइ कर्या करो छो ते तमे एनामां एटलुं वधुं शुं भाळ्यु छे? आटला दिवस एणे काठीओ जेवी बेडीयुं माथेज हाथ कर्या छे, ए हजु शीगाळीयुंमां चर्या नथी. जो तमारे जोवुं होय तो जाओ, भाराजोने जइ कहो के, राजकोटीआनी जेटली जमोनमां तमारा घोडाना पग पडे तेटली भूमि ब्राह्मणोने आपवा बावाजोराज बंधाय छे. चारणोने तो एज जोइतुं हतुं, कारण के बेनी लडाइमां त्रीजाने लाभ ए कहेवत कांइ ए लोकोथी अजाण्युं नहोतुं. एज वखते एमांनो एक चारण राजकोटथी चाली निकळ्यो अने वांकानेर आवी राजभाराजीने मळ्यो. राजभाराजीए एनुं

कुमार रायसिंहजीने तेना हलकी बुद्धिना सलाहकारोए आडु अवळुं समजावी राज साहेबने शहेरमां दाखल नहि थवा देवा माटे उश्केर्या. कुमार रायसिंहजीए राज्य करवानी उत्कंठाथी चारसो आरबने नोकर राख्या अने ज्यारे राज भारोजी राजकोटथी वांकानेर आव्या, त्यारे तेओने शहेरनी अंदर पेसवा न दीधा. योग्य उम्मरे पहोंचेला कुमारने राज्य चलाववामां समर्थ समजी तेमज पुत्र साथे क्लेश करवानु अनुचित धारी राज भारोजी सीधा पचाशीए पधार्या.

युवराज रायसिंहजी उर्फे वायजी साणंद परण्या हता. तेओने केसरीसिंहजी नामना एक कुमार अने नानीबा, तेजीबा, फूलजीबा, वखतुबा, राजुबा तथा अदीबा नामनां छ कुंवरी थयां हतां; तेमांना नानीबाने कच्छ बेराजे आप्यां, तेजीबाने कच्छ भुजना राओश्री रायधरजीसाथे परणाव्यां, फुलजीबानां लग्न नवानगरना जामश्री जसाजी साथे कर्यां; वखतुबाने मोरबीना ठाकोर जीआजी वेरे, राजुबाने वांढीए जाडेजामां अने अदीबाने माळीए परणाव्या हतां.

पंचाशीआमां निवास कर्ये एक वर्ष पूर्ण थता वि० सं० १८४० मां राज भारोजीए कैलासवास कर्यो; पाछळी कुमार रायसिंहजी तेओना पहेलां थोडेज वखते स्वर्गवासी थएला होवाथी कुमार केसरीसिंहजी पोताना दादाने आसने विराजमान थया; तेओना काका लाखाजी तथा जी-वणजीने राज भाराजीए अमुक गरास आपेलो हतो, परंतु ए बन्ने विनवारस गुजरी जवाथी तेओनो गरास पाछो दरबार दाखल थयो; एमना लघु बन्धु सामतसिंहजीने गरासमां अरणीटीबा नामनुं गाम मळ्युं हतुं.

केहेछे के राज भाराजीने अभेसिंहजी तथा वाघजी नामना बे ओरमान भाइ हता, तेओने जाली तथा जेतपरडा नामे गामो जीवाइमां अपायां हतां; तेमां वाघजीनो निःसंतान देहान्त थतां जाली गाम दरबार दाखल थयुं.

राज भाराजीनी प्रशंसाना जूदाजूदा कविओए घणां काव्यो रचेलां छे, तेमांना थोडां अत्रे दाखल करीए छीए.

---

१ जीवणजीने जीवाइमां गाम तीथवा आप्युं हतुं एम वारोटना चोपडामां लखेलुं छे.

२ वळी एक जगोए एवो लेख छे के वाघजी तथा अभेसिंहजी राज रायसिंहजीना पुत्र अने केसरीसिंहजीना भाइ थता हता, एओने गाम जाली तथा जेतपरडुं गरासमां मळ्युं हतुं, परंतु अभयसिंहजी विनवारस गूजरी जतां जाली गाम दरबारमां दाखल थयुं.

गीत. १

भूपतीआं रूप सदेवंत भारा, सारा सकवी कहे सही;
मेख धारा कोण जोड सीढीए, नख धारा कोए जोड नहीं,
कल छाती सतलक के लाणी, नमख अजाणी वात नथी;
मदन जोड कोण करां वखाणी, को नख जोडी नथी कथी,
वरपत आभ्रणे हराचन्द घर, तु नत कवीआं दलीद्रतडे;
जोडी कसलतणी कोण जोडां, जोडी नखही नको जडे.

धा गीतनी अंदर राज भाराजीना शरीरनी लावण्यतानुं वर्णन छे, कविए सदेवंतनी उपमा आपी एओना अखिल अंगोनुं सर्वोत्कृष्ट सौन्दर्य बतावेल छे.

गीत. २

पीवे संघ अजा एक तट पाणी, हेम सांकला ग्रहे हलो;
कीधो धर वंकनेरतणी कोए, भारो भाले सुथ भलो;
वाघ वाकरी सजल पीए वल, भमो कनकहथ कीआं भेओ;
दस देसां एला लहे दाखे, वेलावाले सवाकेओ;
पंचमख छाली नीर पीए पण, लजसो त्रण भालो प्रजसार;
भारो चांदाहरो भोगवे. वारो रामतणो इणवार.

आ गीतनी अंदर तेमनी राजनीति सबधी वर्णन छे. श्री रामचंद्रना समयमां जेम प्रजा निर्भयपणे आनंद मंगलना दिवसो गुजारती हती अने सिंह तथा बकरी एक घाटे पाणी पीतां हतां तेम राज भाराजीना राज्यमां पण सिंह तथा बकरी एक स्थले भेला थया छतां सबळ निर्बळने पीडी शकतां नहि.

गीत ३

वागे हवतार आभसुं वागे. आगे ए कडनस एहनाण;
दागे लत्रांलेअण जस दजटे. जागे भागमाल जुआण;

धड भांजे प्रसणां घणघाए, चड चड चले वांधीआं चाल;
केसा सतण अनड कीरत कज, भड सोवे नहि लीलमुआल;
वोहोरे त्रेअण अरीहर वेहेंडे, धरे अरांपड वेए धर;
पोहोरे भलप खडो हर पीथल, न करे निग्रह नणे नर.

आ गीतनी अंदर राज भारोजी कीर्ति मेळववामां केवा उत्सुक अने केवी वीरतायी विश्व-मां विख्यात थया तेनुं वर्णन छे.

गीत ४

अत दन दन सजस करे घर उथंड, दन दन अथवहो दिए दता;
भडजा दन दन कसे भारसल, छत्रपत दन दन झुंझ छता;
प्रसधां दन दन करे पाटपत, पात्रां दन दन त्रवें प्रवा;
साहण दन दन सजे संघसत, दन दन खलसर करे दवा;
कीरत दन दन करे कुंवर एक, चाओ अधक दन मोज चडे;
हेमर दन दन कसे चंदहर, घड दन दन सत्रतणी घडे.

आ गीतनो अंदर राज भारोजी दिवसे दिवसे याचकोने दान देता, सुयशनो वृद्धि करता, खळजनोने खंखेरता, युद्ध अर्थे अश्वोने सज्ज राखता अने शत्रुओनो संहार करवा माटे दिवसे दिवसे घाट घड्याज करता वगेरे बाबतो वर्णवेली छे.

गीत. ५

भजे साहाआ ताग खग खत्रीचा आभरण, सुअण गण वसाअण घणुसारा
खागने तागचीं आज मोटा खत्रीं, भूप थारे भुजे लाजभारा,
वडा दातार झुंझार बेठए वेंधां, लीलघण प्रथी वाखाण लहीए,
केसाउत देसपत उजाले मान कुळ, सरम रजपूत हथ तुंझ सोहिए,
हरा चन्द्रसेन दसेदस थारा होवे, सेगढपति वखाण साचा,
वडंग कविआं देअण वधोसण वेरीआं, आज खत्र महातम तुझ आंचा.

आ गीतनी अंदर राज भाराजीए क्षात्र कुळनी मर्यादा केवा उत्तम प्रकारे जाळवी हती एतुं वर्णन छे.

गीत. ६

कल अवचल राजतवांरो कडतल, आछी मोज वरीसण आजः
काज सरेजण राज कवीआं, राज घणुं थीए महाराज,
भूपां रूप सरोमण भारा, भारा भारे लाज भ्रज,
तजसां काज केसा उत सारा, सो कविआं आपे वाजसज,
सेरखपाल सकाज भारमल, भारां मजजग लील भवाल,
भड जन दीप भारमल भला, नाए डनल झल गोत्र गोआल ॥

आ गीतनी अंदर राज भारोजी उत्तम कविओने नणनारेला अश्वो आपता एथी कविए एनुं राज्य कलियुगमां अविचल रहे एवो आशीर्वाद आपेलो छे.

गीत. ७

भाग आठमा उदध समा रारा सडे नको भडे,
रोसखे आभा देखे जट धारा रूप;
भारारूं सतारामें न सामा आवे न को भडें,
भारा सामा सरधारा हारे गीआ भूप;
झाला साथे नीसाडीआ नाना ने गन को झाले,
नमाडे नीसाडाजाडा गुजरो सो नाथ;
देखाडीआ झाले हाथ नामा नाहृ नाथ दले,
हाला साथे भडे झाले देखाडीआ हाथ;
दलीदला केसाउन चडे घोडे रेनवंणुं,
भडे सुघाकेनाउन जामका खंधार:
केआ घेरे जेर जेर राज दले जन काटी.

धणी झालावाड हूका राजे धाडे धाड;
राजसूं न वंधे दाउ जामराउ चडे रखे,
राजसूं भडंते वाउ हारे गेउ राउ ॥

आ गीतनी अंदर राज भाराजीए अद्भूत वीरताथी दक्षिणीओने डरावी दामाजी गायकवाडने हाथ देखाड्यो, सरधारना अधिपति ठाकोर बावाजीने गेह आपी, हालाओने हराव्या तेमज काठीओने, जतने, जामने अने कच्छना राओने पण भयभीत बनाव्या वगेरे वातनो वर्णवेली छे.

गीत. ८

भज भारा धन अतल वलभारा, डारा अरिआ दसे दसा,
तागे खागे दोए अतारा, पात्र हजारां करण पसा;
ए हथ समथ धनकेसाउत, साहू साहां दहण सथे,
गेमर मूलतणा गढवाडां, हेमर लाभे तुझ हथे;
प्राणां जोर सतारे प्राझा, प्रसणां सेहेरे सोर पडे;
पाणो तूबाले पाटरीआ, झाण झाण केकाण जडे;
कर गेसते लेआ तल केवी, झाला कुण थारी जोडीक,
हरचांदा करहे हीलोहल, कवि आंजण लाभे कोडीक ॥

आ गीतनी अंदर राज भाराजीए जेना वळनी तुलना न थइ शके एवा जे हाथथी हजारोनां दान आप्यां अने हजारो शत्रुओनां मूळ काप्यां ए समर्थ हाथने कविए धन्यवाद आपेल छे.

गीत. ९

वढण ढाल मांडे अवस भूप केणी वरे, चरे पल हाथीआं खलो चारो;
खाग हथ पंच लांव चाले खाखरे, भाखरे वसे लंकाल भारो;
कलाकरवान वा भूखिओ प्राक्रमी, जमीपत वीआ तन सके जाकी;

सत्रां गज भांजवा केसरी समो श्रम, डुंगरे केहरी रहे डाकी,
रोज सीमाडीआं फडक न मटे रुदे, धडक लागे पोहा देस ध्रूजे,
चंदहर मेंअंदगत गयंद अरिआं चरे, गरवरेथीओ दिनरात गुंजे.

आ गीतनी अंदर पांच हजार लांबी तलवारने धारण करनार परम पराक्रमी राज भाराजी-ना बाहुबळथी सीमाडीआओ केम ध्रूजता अने शत्रुओ केवा कंपता इत्यादि वर्णन छे.

गीत. १०

गजभांजण ढाल ढाल गजपतीआं, साल सत्रांनन फरे सोहाल;
हालगो दार्द कवांसु हाले, माल वरीसण भार हमाल;
वांकानेर पधोरण वांका, वांकमोहा सज वांक मछंद;
कवसु पांका बोल न काढे, चालण वंक कलाधर चंद;
सींग खडाक नांखे सींगाला, सतण केसरीसींग त्रसींग;
पात्रां हथ वोडिग देअणपो, धींगा सरे ओखलण धींग.

आ गीत एवी मतलबनुं छे के वांकानेरना वाकडा नरेश राज भाराजीनुं कोइ कविओ बुरुं बोलता न हता. अमित, उदारताने लीधे एओना चोमेर वखाणज थतां हता.

गीत ११

एकां धर धप्पे उथप्पे एकां. कडतल नत नत करे कला;
अर हरतणी पेअंपे अवला. भारा धारा हाथ भला;
भारथ पारथ जेम अभंगभड. जडए रावण वान जग;
महरतणी वखाणे राणी. केला ओत धारा करग;
झूझवराल सदेवंत झाला, मोडण खगे अगंचा माण;
वेरीतणी वखाणे वनिता. पीथलहरा तुंआरा पाण.

आमा पण राज भाराजीनी वीरता तथा अकमावुर्दनु वर्णन छे.

गीत. १२

प्रजा हुइ घर घर सखी दखी नह कोएपर, हेडवें केआ सत्रहणां हेठे;
बापहोबाप झल भारमल अतल बल, बापरी गादीए आप बेठे;
अतरदस दखणदस उगमण आथमण, अरीहर उगरां न को आरो;
वणंते तखत चांदाहरा वीरवर, वरतीओ घरोघर रामवारो;
सकवी भागा दलद्र हुआ राजीसेअण, वेरीए कीआ गरे जंगल वासा;
धरा सोन्नन फले फलीसह धूंवडा, राजते वंकपर वेआरासा;
चाकरे संघरा भलां बेठो चडे, नरां सणगार पोह वखत नीले;
वरण नव दुण आसीसदे वीरवर, तरणज्यम भारमल तपे टीले.

आ गीतनी अंदर राज भाराजीना वखतमां प्रजा केवी सुखी हती, पृथ्वीपर केवो पाक थतो हतो, कवीओनां दारिद्र केवी रीते दूर थयां हतां अने दुश्मनो भय पामी केवी रीते भागता हता वगेरे वर्णवेल छे.

गीत. १३

प्रजा सखी थै घरोघर सेअण सख पामीआं, जगमां देअण जसरात जायो;
वंकपरसे धणी आज मोटे वखत, अभंग भड भारमल तखत आयो;
सेअल फूले कनक सको जाणी सही, नहीं अरि ऊगर्या तणो नेठो;
बापहोबाप केसर सत्तण अतल बल, बापरी गादीए भलां बेठो;
धरा आनंद ऊछाह वधीआ धमल, वदे कोए प्रसणनह वेण वांदा;
हरो चांदा छतो हमीरे हिन्दवे, चाकले आवीओ हरो चांदा.

आ गीतमां पण उपरनोज भाव छे, परंतु रचनार जूदो कवि जणाय छे.

गीत. १४

जडे साहणां पाखरां जोप जुआणां जुसाणां जडे,
पडे वीज जेम सत्रां करेवा अखेम;

गीत. १२

प्रजा हुइ घर घर सखी दखी नह कोएपर, हेडवें केआ सत्रहणां हेठे;
बापहोबाप झल भारमल अतल बल, बापरी गादीए आप बेठे;
अतरदस दखणदस उगमण आथमण, अरीहर उगरां न को आरो;
वणंते तखत चांदाहरा वीरवर, वरतीओ घरोघर रामवारो;
सकवी भागा दलद्र हुआ राजीसेअण, वेरीए कीआगरे जंगल वासा;
धरा सोव्रन फले फलीसह धूंवडा, राजते वंकपर वेआरासा;
चाकरे संघरा भलां बेठो चडे, नरां सणगार पोह वखत नीले;
वरण नव दुण आसीसदे वीरवर, तरणज्यम भारमल तपे टीले.

आ गीतनी अंदर राज भाराजीना वखतमा प्रजा केवी सुखी हती, पृथ्वीपर केवो पाक थतो हतो, कवीओनां दारिद्र केवी रीते दूर थयां हतां अने दुश्मनो भय पामी केवी रीते भागता हता वगेरे वर्णवेल छे.

गीत. १३

प्रजा सखी थे घरोघर सेअण सख पामीआं, जगमां देअण जसरात जायो;
वंकपरसे धणी आज मोटे वखत, अभंग भड भारमल तखत आयो;
सेअल फूले कनक सको जाणी सही, नहीं अरि ऊगर्या तणो नेठो;
बापहोबाप केसर सत्तण अतल बल, बापरी गादीए भलां बेठो;
धरा आनंद ऊछाह वधीआ धमल, वदे कोए प्रसणनह वेण वांदा;
हरो चांदा छतो हमीरे हिन्दवे, चाकले आवीओ हरो चांदा.

आ गीतमां पण उपरनोज भाव छे, परंतु रचनार जूदो कवि जणाय छे.

गीत. १४

जडे साहणां पाखरां जोप जुआणां जुसाणां जडे,
पडे वीज जेम सत्रां करेवा अखेम;

अडे कडे चडे झल सींधवा रडे अथाह,
ओढीओ भांजीयो तडें भडे भारे एम;
वाहरां जाहरां काज केसरीसंघरे बाह,
थाहरां थाहरां थकी तेडी आहे थाट;
भाहरां नगारां खरां सवारां देवाड भारे,
वेरीआं भ्रजरां नरां नाहरां दो वाट;
वडालां भजालां लजे राओ तालां सूरवीर,
कांधालां धडालां खलां ऊपरे केकाण,
धारालां ढालालां धींग भालालांरे चाड धके,
जालां जालां वेरी दीआं पंचालां जोधाण,
वेरहरां वाटे मरी काटे सीस खगां वर राण,
झाटे अवझाटे खाटे तोरंगाणां झाण,
थाटे थाटे वातां थीए चंदहरातणी थरू,
ओढीओ जुजवी वाटे कीओ रामाआण,

आ गीतमां जेकर राज भाराजीए कोड ओढा नामना शत्रुनी साथे भयंकर लडाइ करेली छे अने तेमां ए ओढाने मारी भगाडेल छे तेनु वर्णन छे.

गीत. १५

रसे हर तें देख अस्रीनम रासा, कोए एहडो भारथ कीओ,
सांज सवेर दलांरो सांसी. रणकुं झचके अजां रीओ,
भारामलतें खाग ग्रहे भल, लोथा दखणीतणा लीआ,
वेसत सुअत वाल वीहावे, हे पडंतरे ओदूक हीआ,
केसा सतण कलह तें कहते, घण दलसर कई घणावणी,

जलरा माछ जेही भड जालम, दज फडके एम कहे दणी,
ए वार्ता कहेसे एम आगें, रणकुरे सर रेस रीओ,
साहू लगें लगें पतसाहां, थारो जस ते अचल थीओ.

आ गीतनी अंदर राज भारोजी सांज सवार खड्गने धारण करी शत्रुओना समुदायनी साथे निरंतर युद्ध करता अने तेमां विजय मेळवता एनो यश पातशाही सूधी पहोंची गयो हतो अने एना नामथी बेसतां तथा शयन करतां बाळकोने एनां मावापो व्हीवरावतां हता, वगेरे भाव कविए वर्णवेलो छे.

गीत. १६

झूले वीटेउ केव झांक झमाले, गण वन्दीजण गाऊं,
पाटरीआ उभे भुज पारा, भारा वेस भजाऊं
गले त्रंबा गल गाज अगाजे, वाजे जेत्र त्रजाया;
जोध अभंग लगे जमवारा, रामते रंग रचाया;
पाखर घूघर घोर पडगह, सोर पवाड सवाडां;
माथे पांउ दीआ मकवाणा, वेर हरां रजवाडां;
हेमर खेला कीध हलबल, सार झल झल सेला,
थारा खेल सखेला ठाकर, ऊरां खेल अखेलां,
नुरवा वांकानेर नरेसर, खेल खत्रवट खासा,
कारणरूप केआ केसाउत, मासां बा॰ तमासा,
आंग सुआंग रहु झल आऊं, रीझहु इसहेराणे,
एम सुआंग कणी नह आवे, देस हुते दुनिआणे.

आ गीतनी अंदर रणवाद्यना निनादनी साथे उत्तम प्रकारना अश्वपर आरूढ थएला राज भारोजी बारे मास लडाइरूपी तमासा करता, बीजा रजवाडाओनो साथे वैरने हमेशां कीलंज राखता, छतां तेओनी भूमिनो एक टुकडो पण कोइ लइ शक्यों नहि ए रीतनुं वर्णन छे.

गीत. १७

भज घुडे खाग सदेवंत भारा, चकचारा भले चाक चडे,
राणा धाह पडे दोए राहां, पत साहां लगे धाह पडे;
करमालां घुंडे केसाउत, दल रुद्रा अण दंड वडीआ,
जोगण परे ताला रहे जडीआ, आठे पोर न उघडीआ;
हाला धने थारा चांदाहर, झाला सार अवार झली,
डाकमडोल आगरूं दीसे, दीसे हालकलोल दली;
तरू आरे बाधा त्रेवडीआ, छे वडीआ ते वंस छत्री,
तलपापडे लागीं तरकाणां, खुरसाणां वांकडा खत्री ॥

आमां पण राज भाराजीनी वीरतानुंज वर्णन छे.

गीत. १८

कनक मेरु आगें रति सूर आगें कला, सरस वेदां अगे भेद सारो,
एम दूजातणा चाऊं तुज आगले, भूपरा रूप दरियाउ भारा;
लगे धर जेम कूबेर आगेलछी, लाह हणमंतरी अगा लागे,
राएआ माजना नेम आवे रहे, एमचांदा हरा तुंज आगे,
माणवुं जेहवुं इन्द्र आगे मेअण, जाणवु अगे सहदेव जेहा,
केसउत तुंज आचार जोते क्रमी, अनेरांतणा आचार एहा,
गागरी सागरां अगे झाला गयंद, हाथ हर अगे जूदां न होते,
पुहुवींद दूजा सवे वार फीकी पडी, जोध थारी घडी एक जोते ॥

आ गीतनी अंदर मेरु पासे कनकनो ककडो, वेद पासे बीजा शास्त्रोनो भेद, कुबेर पासे बीजा धनवान, प्रलयना अग्नि पासे हनुमाने लंकामां लगाडेली आग, सूर्य आगळ चन्द्रकळा अने सागर आगळ गागर जेम कांइ गणतीमां नथी, तेम राज भाराजीनी एक घडि जोतां बीजा राजाओनी वात फीकी फच जेवी लागे छे एम कविए वर्णवेल छे.

गीत. १९

कामणे कंथना कहे एम कवेसर, कांइ फरे अनेकारे,
जारे लाव हजारीजां गम, झाला राउ जुहारे,
ईहणे एम फरंगणे आखे, फरे कसूअन फेरे,
आछी भाते मले आसाउआं, काछी वांकानेरे,
भुज उदंड केआ जगभारे, केदी नाऊं न केसे,
अले केसाउत खेग उडंतां, देखंतां मझ देसे,
सेहे सीखामण देदे सारी, नाहां भेजत नारी,
हर चन्द्रसेन केआ हजारी, पाणी जू पणहारी.

आ गीतनी अंदर जेणे पोताना उद्दंडभुज दान देवामां लंबावेला छे एवा राज भाराजीनी सलामे जवा माटे याचकनी स्त्रीओ पोताना पतिने प्रेरणा करे छे.

राज भाराजीनी प्रशंसाना आवां काव्यो अनेक छे, विस्तार भयथी अत्रे लखवानुं मोकुफ राख्युं छे; आ उपरथी एटलुं सिद्ध थइ शके छे के ए महीपति महान् उदार, शुरवीर तेमज प्रजाप्रिय हता. एओए पोतानां जाडेजी राणी कनकाजी माटे दरबारगढनो अंदर एक सुन्दर महेल तैयार कराव्यो हतो के जे अद्यापि "कनकाजीवानो महेल" एवा नामथी ओळखाय छे. ए महेल मच्छु नदीने किनारे अने दरबारगढना दरवज्जानी अंदर प्रवेश करतां सामेज दृष्टिगोचर थाय छे.

राज भाराजीना पौत्र केसरीसिंहजीए वि० सं० १८४० मां राजगादीपर विराजमान थइ मात्र त्रण वर्ष राज भोगव्युं. तेओ साणंद परण्या हता अने ए साणंदवाळां बाइथी कुमार चन्द्रसिंहजी उर्फे डोसाजीनो जन्म वि० सं० १८३५ ना आश्विन वदी ९ ने बुधवारे थयो हतो.

वि० सं० १८४३मां राज केसरीसिंहजी २नो कैलासवास थतां चन्द्रसिंहजी उर्फे डोसाजी आठ वर्षनी उम्मरे वांकानेरना राज्यासनपर विराजमान थया. बाल्यवयथीज एना अंगनो बांधो मजबूत हतो; परंतु पगे जरा खोट हती. एओ ज्यारे उम्मर लायक थया त्यारे कोंढ, उतेळीयुं, गोंडल अने आडेसर ए चारे स्थळे परण्या. तेमां आडेसरवाळां राणी रुपाळीबाथी वि० सं०

१८६२ ना वैशाख वदि १४ ने शनिवारे कुमारश्री बखतसिंहजीनो जन्म थयो.

राज डोसाजी महान् शूरवीर हता, तेओना वखतमां चोर तेमज धाडपाडु लोको वांकानेरनी हद्दमां धांधल करवा हिम्मत धरी शकता नहि अने कदाच कोइ एवो गुन्हो करता तो राज डोसाजी पोतानी प्रजाने थएल नुकशाननुं सख्त वैर लेता. घोडाओनो तेओने घणोज शोख हतो; शिरबंधी लोकोनी सारी जमावट करी हती.

एक वखत रामपरडाना छावा तथा हापा करपडा नामना काठीओए वांकानेरनी हदमां प्रवेश करी लूंट करी हती, एथी राज डोसाजीए तेना पर क्रोधायमान थइ चढाइ करी अने रामपरडा गाम लूंटीने खेदान मेदान करी नांख्युं; तथा पोताना जयचिन्ह तरीके त्यांथी सारामां सारी बत्रीश ताजण घोडीओ लइ पाछा वांकानेर पधार्या. रामपरडाना काठीओ ए वखते ध्रांगध्रानी हकुमतमां हता, एथी त्यांना राज जसवतसिंहजीए पोताना आश्रितने थएल नुकशाननुं वैर लेवा जामनी तेमज जूनागढना नवाबनी मदद मागी. छावा करपडाए जामने तथा नवाबने भेट आपवा माटेज ए ताजणोने एकठी करी हती के जे राज डोसाजी बळात्कारथी लइ गया. आ उपरांत तेओ हालारमांथी शींगाळी अने ढसेथी केटलीएक माणकी घोडीओ हरी लाव्या हता एथी बमणा कोपायमान बनेला जामे तुरतज मेरुखवासने ध्रांगध्रानी मददे मोकली आप्यो अने नवाब अहमदखाने पण जबरुं सैन्य राज जसवतसिंहजीनी सहायताए मोकल्युं. ए रीते जाम, नवाब अने ध्रांगध्रानां लश्करोए मळी वांकानेरने घेरी लीधुं. राज डोसाजीए अवर्णनीय बहादुरीथी शहेरनो बचाव कर्यो, घेरो घणा समय सूधी रह्यो छतां तेओ ताबे थया नहि. आखरे घेरो घालनाराओए कंटाळी राज डोसाजीने सलाह संप करवा कहेवराव्युं. ध्रांगध्राना राज जसवतसिंहजीए छावा करपडावाळी ताजणो पाछी मळे तो चाल्या जवानी प्रतिज्ञा करी; परंतु राज डोसाजीए ए वातनो अनादर कर्यो, जेथी जबरुं धींगाणुं थयुं. उभय पक्षना योद्धाओ घायल थया तेमज कइक मुवा तो पण कांइ चोक्कस परिणाम न आव्युं. बाबी तथा जामनुं लश्कर जीतनो असंभव जाणी पाछुं वळ्युं एटले ध्रांगध्रानी फोज पण पलायन करी गइ. आ प्रसंगने पुष्टि आपे एवुं एक गीत ए वखतना कोइएक चारणे बनावेलुं छे. घणी शोध करतां ए आखुं गीत तो हाथ न आव्युं, परंतु तेनी छेल्ली एक लीटी नीचे मुजब छे.

" बाबी जाम जसो त्रण बाधा, (पण) डोहे घोडा नको दीआ.

वळी एक बीजो पण सोरठो छे के—

हलवद ने हालार, त्रीजो गढजूनो मळ्यो,
ताणीने तेजाण, दोरी न आपी डोहले.

ए रीते ज्यारे वांकानेरने घेरो घालवामां आव्यो हतो, त्यारे वोरा शेठ आदमजी तथा शाह झवेर वलभे पोतानी सघळी दोलत राज डोसाजीने अर्पण करी हती अने एथीज तेओ एकत्र थएलां त्रण राज्योनां लश्कर साथे टक्कर झीली शक्या हता.

वाघी, जाम अने ध्रांगध्रानी फोजो वांकानेरपर चढाइ करी वीले मुखे पाछी वळ्या बाद कोइ म्होटा राजाओ राज डोसाजीने छेडता नहि, परंतु काठीओ के जे चोरी अने लूंट माथेज पोतानो निर्वाह चलावता हता ते वारंवार वांकानेरनी हदमां आवी हाथ मारी जता, एथी राज डोसाजीए काठीओनो उच्छेद करवा माटे बराबर कम्मर कसी अने अनेकवार तेओने मारी मारी जेर कर्या तोपण ए लोकोए जातिस्वभाव न छोड्यो. सुदामडानो काठी नाजो धांधल एक वखत वांकानेर मिजमान बनी आव्यो हतो ते कसुंबापाणी पीधा बाद मिजमानी लीधा बाद राजसाहेबनी रजा लइ गाम बाहेर निकळ्यो, त्यां पाणी भरवा निकळेली कोइ स्त्रीना दागीनापर झोंट मारी भा-ग्यो, ए वात सांभळतांज राज डोसाजी एकला घोडे चढी तेनी पाछळ पड्या. जोतजोतामां तेओ ना-जाना घोडा नजीक जइ पहोंच्या, पण भयभीत बनेला नाजाए घोडाने एवो मारी मूक्यो हतो के राजसाहेब-ना अने एना घोडा वच्चे थोडो अंतर रह्यो जतो, ते ठेठ गाम कुवाडवाने झांपे भेळा थया, जेवो नाजो झांपामां दाखल थतो हतो तेवोज राज डोसाजीए तेना वांसामां एवो डा-मणनो प्रहार कर्यो के ते बेहोश बनी घोडापरथी नीचे जइ पड्यो. राज डोसाजीनी एक एवी प्र-तिज्ञा हती के ते भागेला दुश्मन साथे भालांनो के तलवारनो कदी पण प्रहार करता नहि, एने मारवा माटे तेओए एक लोढानुं डामण तैयार करावेलुं हतुं. तेओए अश्वपरथी नीचे उतरी नाजा-नां तमाम हथीआरो पडावी लीधां अने श्रमित थएला पोताना अश्व तरफ दृष्टि करवा गया, तेवामां मृत्युना मुखथी बचेलो नाजो चारणोना अवासमां जइ भरायो. राज डोसाजीए त्यां जइ नाजाने सोंपी आपवा चारणोने कह्युं, परंतु चारणोए जवाब आप्यो के अमारां माथां कापवां होय तो का-पी लीओ; पण अमो शरणागतने आपने हवाले नहि करीए. चारणोपर हाथ करवो ए क्षात्र धर्मथी विरुद्ध होवाने लीधे निरुपाय बनी राज डोसोजी गामने चोरे आवी बेठा अने त्यां कसुंबो काढी

चारणोद्वारा अभयदान आपी नाजाने कहेराव्युं के—चाल हवे, तारा जेवो कोण थाय. नाजोधांध-ल चोरे आवी राजसाहेबने पगे पड्यो अने अपराधनी माफी मागी. राज डोसाजीए तेने कसुंबो पाइ तेनां हथिआर पाछां सोंपी आप्यां अने कह्युं के—जो बहादुरनो दीकरो हो तो फरी पण वांकानेरनी हदमां आवी खुशीथी लूंट करी जजे. हाथ आवेला दुश्मनने जीवतो जवा दीधो ए राज डोसाजीना दिलावर दिलनी साबीती करी आपे छे. नाजाधांधलने तो शुं, पण एवा अनेक काठीओने राज डोसाजीए शिक्षा करेली छे अने शिक्षा कर्या बाद एओने जमाडी रमाडी विदाय-गीरी आपती वखते उपर मुजब वचनो कहेलां छे. तेओनी बहादुरीनुं बयान करतां कोइ कविए कह्युं छे के—

भाग्याने भालो हणीं कडतल करे न केर;
जबरा करीआ जेर, डामण मारी डोहले.

आ रीते आठे प्रहर राज डोसाजी ज्यारे शत्रुओने छुंदवा लाग्या, त्यारे कंपायमान बनेला काठीओ स्वप्ने पण वांकानेर तरफ आववानी स्पृहा करता नहि. थोडा दिवस पोताना राज्यमां ज्यारे शान्ति जोवामां आवी त्यारे खानगी कचेरी भरी बेठेला राज डोसाजी बोल्या के—काठी ह-मणां केम देखातां नथी ? ए वखते त्यां बेठेला एक चारणे जवाब आप्यो के—

हाके खाइ हार, कंपे बांधा काठीआं,
तें डोहा दातार, डामणथी कामण कर्यां.

श्वाननी पूंछडी छेवट सूधी वक्रताने छोडती नथी, तेम कुटिल स्वभावना काठी नाजा धां-धले फरी वाकानेरनी हदनां ढोर वाळ्यां, ए वैरना बदलामां राज डोसाजीए तेनुं सुदामडा नामनुं गाम लूट्युं.

कोइएक वखते जतवाडाना जत लोको काठिआवाडनी अंदर फेरो करवा निकळेला ते पाछा फरतां रात्रीने समये लूणसरने पादर आव्या, त्यां केटलाएक परदेशी गाडांवाळाओ पण रात्रि गाळवा रोकाएला हता. शीआळानी ऋतु होवाने लीधे शीत अने क्षुधाथी संकष्ट पामता जत लोकोए गाडांवाळाओ पासेथी पाणकोरांनी जाडी पछेडीओ तथा लोटनी कोथळीओ पडावी पोता-रां गण्यां. पोतानी हदमां बनेला ए गुन्हानी वीना सांभळतां राज डोसाजी वारे चड्या अने ठेठ भोगावे भेळा थइ ए बधा जतोने जानथी मारी नाख्या. वांकानेरना शिरबंधीओ हजु थान सुधी

पण न्होता पहोंच्या त्यां तो राज डोसाजी शत्रुओने प्राणान्तनी सजाए पहोंचाडी पाछा फर्या; तेओ रैयतना संरक्षण अर्थे पोताना अमूल्य प्राणनी लेश पण दरकार राखता नहि. एओने पोताना भुजबळनो एटलो बधो भरोसो हतो के-हाकल पडवाथी पचास सेंकडो शत्रुओ पाछळ पोते एकला चाली निकळता; अने शिरबंधी लोकोतो ते पछी अर्थात् ज्यारे दरबारगढनी पेहेली दोढीए आरब मकराणीओनी बेठक पर राखेल नगारा उपर डंको देवातो त्यारेज लडवा तैयार थता. परंतु एटला वखतमां तो सामान्य बळवाळा अर्थात् काठी जेवा शत्रु समुदायने मारी जेर करी राजसाहेब पाछा वळी आवता, मात्र सबल शत्रुओ सायेना युद्धमांज तेओ शिरबंधीओना साहाय्यनी अपेक्षा राखता हता. एओ म्होटा गुन्हेगारोनेज मारता एम न हतुं, परंतु एक साधारणमां साधारण नजीवी चोरी करनारने पण पूरेपूरी शिक्षा आपता. एओना मनमां निरंतर एमज रह्या करतुं के मारा राज्यमांथी मात्र एक शेरडीनो सांठो लइ जनार पण जो जीवतो जाय तो मारुं नाक लजाय. धन्य छे एवा राजाओने के जेना राज्यमां कोइथी रैयतनो वाळ वांको थइ शकतो नहि. ज्यारे राज डोसाजीए जत लोकोने मार्या त्यारे कोइ चारणे नीचे मुजब एक दोहो बनावेलो छे.

जतवाडेथी जत चड्या, लीधो लूणसरनो माल,
एनी डोहे खेंची खाल; भोगावे भेळा थइ.

राज डोसाजीने एक वखत कोइ अतीतनो मिलाप थयो हतो, ए अतीत कोण अने क्यांना हता ए जाणवामां आव्युं नथी, परंतु एना अद्भुत चमत्कारथी आधीन बनेला राज डोसाजीए तेने गुरु तरीके मान्य राख्या. ए गुरुए पोताना राजवंशी आस्तिक शिष्यने एक भगवो रुमाल तथा एक न्हानो सरखो धोको आपी आशीर्वाद दीधो हतो के बेटा ! आ रुमाल तथा धोको तुं निरंतर सायेज राखजे, तने कोइ पण पराजय आपी शकशे नहि. राज डोसाजीए जीवतां सूधी ए गुरुनी प्रसादीने साथे राखी सर्वत्र विजय मेळव्यो हतो.

भीमोराना काठी नाजा खाचर पासे जत्थाबंध माणसो होवाथी ते फाटीने धुमाडे गयो हतो. काठियावाडनां घणाखरां राज्योमां ते फावेलो होवाथी एक वखत वांकानेरीआमां फेरो मारवा आवी चढ्यो. आवतां तो आव्यो, पण राज डोसाजीए तेने एवो हाथ बताव्यो के ते मांडमांड जीव लइ भीमोरा तरफ भागी छूट्यो. राज डोसाजीए तेने पकडी पायमाल करवा माटे दृढ प्रतिज्ञा करी अने तेनी पाछळ पाछळ जइ त्यांना गढने घेरी लीधो. ए वखते जबरुं धींगाणुं थयुं; परंतु नाजे

जाण्युं के हवे बचवुं मुश्केल छे, जेथी ते एकाएक भागी गया रेशमीआना चारणोने आश्रये छुपायो. राज डोसाजीए भीमोरा भांग्युं अने पोताना विजय चिन्ह तरीके त्यांना किल्लाना कमाड वांकानेर लइ आव्या के जे अद्यापि दरबारगढनी अंदरनी डोढीए दाखल करेला दृष्टिगोचर थाय छे. ए वखते कोइएक चारणे कहेलुं छे केः—

भल गढ भीमोरातणो, फोजे न पडे फेर,
वारे वांकानेर, त्यां डंको दीधो डोहले.

भीमोरा भांग्या पछी राज डोसाजी पग लेता लेता रेशमीए जइ पहोंच्या, परंतु त्यांना चारणोए पण कुवाडवाना चारणोनी माफक आशरे आवेला नाजा खाचरने सोंप्यो नहि, नाजो त्यांथी गुप्त रीते न्हासी नगर भेळो थइ गयो अने राज डोसाजी वांकानेर पधार्या.

नाजो खाचर भागीने नगर तो गयो, परंतु त्यांए तेना हृदयमां रात्रि दिवस राज डोसाजीनो भय रह्या करतो. एणे मेरु खवासना पगमां पडी कह्युं हतुं के हवे मने आपना शरणमांज राखो, निभावो, अथवा तो वांकानेरनुं वेर पार पडावो, कारण के राज डोसाजी मने कदी पण जीवतो छोडशे नहि, हाथमां अने पगमां वेडी पहेरावी मने वगर मोते मारी नांखशे. जो मने आवी खबर होत तो हुं वांकानेरनी हदमां जातज नहि. नाजा खाचरनां उक्त वाक्यो तेने कोइ चारणे नीचे मुजब पद्यमां गोठव्यां छे.

नाजो भागीने नगर गीओ, मेरु खवासना पगमां पड्यो,
कांतो मने आंही निभावो, कांतो कजीओ पार पडावो,
जरूर लेशे मने जीवतो झाली, कांतो नांखशे जीवथी मारी,
हाथमां डहकलां पगमां वेडी, न्होती दीठी राज डोहानी मेडी.

नाजो खाचर बीजा राजाओने जोइ सबळ अने शूरवीर बनतो, परंतु ज्यारे राज डोसाजी डंको देता त्यारे ते घणे दूर भागी जतो. एवा आशयनो एक दोहो मळेलो छे ते नीचे मुजब छेः—

सबळ बने छे शूर, निरखी नरपत नाजीओ,
(पण) देखी भागे दूर, डंका दे जब डोहलो.

वि० सं० १८६३ मां वडोदराथी गायकवाड सरकारना दिवान बापाजी आपाजी कर्नल वॉकरनी साथे मुल्कगीरीना नक्की आंकडाओ ठराववाने माटे काठिआवाडमां आव्या हता. तेओए जेम बीजां राज्योनी खंडणीनी चोकस रकम ठरावी तेम वांकानेरनुं पण थयुं हतुं.

राज दोसाजी वि० सं० १८६८ मां वढवाणना ठाकोर पृथीराजजीनी साथे अमदावाद तरफ फेरो मारवा गया हता; त्यांथी खूब हाथ मार्या बाद वतन तरफ पाछा वळतां तेओने मार्गमां बचा जमादारनां माणसो मळ्यां, तेओनी साथे वातवातमां धींगाणुं थइ पडयुं, घणां माणसो मराया, तेना भेळो बचा जमादारनो भत्रीजो–जमादार इसबभाइ हतो ते पण काम आव्यो, अने एनी साथेनो तमाम माल वांकानेर तथा वढवाणनी फोजे लूंटी लीधो. त्यारबाद बचा जमादारे नामदार गायकवाड सरकारनी मददथी पोतानां माणसोने जे नुकशान थयुं हतुं ते भरी आपवानी तथा पोताना भत्रीजा इसबभाइना खून बदल मेसरीआ गाम आपवानी राज दोसाजीने फरज पाडी.

राज दोसाजी लगभग सुरतानसिंहजी जेवाज पराक्रमी हता, तेओ एक पगे जरा लंगडा होवाथी कविलोको तेने हनुमाननी उपमा आपता. काठीओ तो एनुं बाहुबळ जोइ त्राहि त्राहि करता; छतां तेओ दिलना एवा दयाळु हता के एक वखत एओए आणंदपुरना खाचर रवाजी के जेने गोंडळना ठाकोर कनुभाइए केद कर्या हता तेने केदमांथी मुक्त कराव्यानुं मान मेळव्युं हतुं. ए वखतना कविओए राज दोसाजीनी बहादुरीनां नीचे मुजब काव्यो बनावेलां छे.

दोहो.

केहररो केहर बन्यो, फोरी भरतो फाळ,
काठीवरणनो काळ, दनिया उपर डोहलो,
वडहथ वांकानेरीआ, थारुं जगत बधामां जाण,
खाचर वाळा खुमाण, दांते तृणले डोहला,
भीमोरा भांगी कीओ, मार इसबरो मोत,
आडो उदध न होत, तो लंकाभांगत लंगडो.

गीत.

कर ढाल त्राजु आणीआ केवी, कर डांडी करमाल करी.
सेल पांगरा घाट सचोडा, वगतें जोख्या वरी वरी,
करमीचंद भला तें कीधा, घमसाणे वेपार घणा,
धडे चडावी कैक नर ढीबीआ, तें लइ केसरीसिंघ तणा.
काठीवरण तो सांधणे कीधा, खतरीराज दलाल खरा,
जवतल वध्या त्यांलग जोख्या, हद थाने रासंगहरा.

आ गीतनी अंदर राज चन्द्रसिंहजी उर्फे डोसाजीने तोल करनारा वाणीआनी उपमा आपी कविए कह्यु के ढाल रुपी त्राजवां, तलवाररुपी दांडी, अने भालांरुपी पांगराने हाथमां धारण करी हे–करमीचंद ! (करमीचंद ए वाणीआनुं नाम अने करमी एवा चंद्रसिंहजी उर्फे डोसाजी !) तें घमसाण (रणांगण) मां घणा वेपार कर्या, जूदा जूदा तमाम शत्रुओने जोख्या अर्थात् मार्या. हे केसरीसिंहजीना पुत्र ! केटलाएक नरने तो तें धडे चडावीनेज ढीबी नाख्या अने काठी वरणने तो सांधणना उपयोगमांज लीधा. ए वेपारमां क्षत्री राजाओ तारा दलाल हता. जोखनी अंदर ज्यांसूधी दुश्मनो जव अने तलभार अवशेष हता त्यांसूधी तें जोख्या अर्थात् हण्या. माटे हे रायसिंहजीना पौत्र डोसाजी ! तने तो हद छे.

कहे छे के आडेसर तरफथी नियमसर जमाबंधी नहि मळतां कच्छना राओसाहेबे त्यां तोपो माडी. भुजना लश्करे आडेसरने घेरी लडाइ शरु करी. ए वखते आडेसरना ठाकोरे केटलाएक उंट वांकानेर मोकली पोताना जमाइ राज डोसाजीने मददे बोलाव्या. राज डोसोजी एकहजार शिरबंधीओ सहित त्यां पधार्या; परंतु ए पहेलां भुजनी फोजे आडेसरनो गढ तोडी पाडयो हतो, तो पण राज डोसाजीए वच्चे पडी चढेली जमाबंधी राओसाहेबने चुकवी आपी अने आडेसर तथा भुज वच्चे सुलेह संप करावावामां फतेहमंदी मेळवी. आडेसरमां ए प्रसंगे तेओ लगभग बे मास लगी रोकाया हता.

राज डोसाजीए कुमार वखतसिंहजीने वि–सं. १८७७ ना अषाढ सुदि ९ ने दहाडे मोर

वीना यदुवंशी ठाकोर जीवाजीना कुंवरी वाजीराजबा साथे हयेवाळे परणाव्या. × ए वखते तेओ जाने सेंकडो माणसो सहित म्होटा आडंबरथी जान जोडी मोरवी पधार्या हता अने त्यां खुल्ले हाथे ब्राह्मण आदिने अनेक प्रकारना दान आपी तेओए म्होटी नामना मेळवी हती, तेमज भाट चारणोने किम्मती पोषाक उपरात लगभग त्रणसो अश्व तथा उंटो आपी बहुज उदारता बतावी हती.

राज डोसाजीनो हाथ हद उपरान्त लांबो होवाथी राज्यना पैसा संबंधी तंगी रह्या करती अने एने परिणामे जे पुरुष राज्यने पैसो धीरे अथवा धीरावे तेने कारभारी बनाववानो जरुर पडी हती. जेमके रामठक्कर, शेठ मूळजी, सवोटक्कर, मोनजीशा, झवेर वेलाणी तथा वोरा हंसराज वगेरे-ए राज डोसाजीना वखतमां अमुक अमुक समय वांकानेरनुं कारभारुं कर्युं हतुं.

राज डोसाजीने कुमार वखतसिंहजी उपरांत वजेराजजी तथा जालिमसिंहजी नामना बे कुमार थया हता; तेमांना वजेराजजीने गाम खोजडोरुं तथा वणझारुं अने जालिमसिंहजीने केराळा तथा राजवडलो नामनां गाम गरासमां मळ्यां. पाछळथी कुमार वजेराजजी विनवारस गुजरी जतां तेओनो गरास दरबार दाखल थयो.

राज डोसाजी शत्रुओने शिक्षा करती वखते जेवी क्रूरता वापरता एवीज याचक वर्ग प्रत्ये तेमज शरणे आवेला अथवा नमेला दुश्मन प्रत्ये उदारता बतावता. धर्म उपर तेओनो घणीज आस्था हती. जत्थाबंध माणसो सहित तेओए द्वारिकानी बेवार यात्राओ करी हती अने तेमां स्वहस्ते लाखो रुपिआ पुण्यदानमां वापर्या हता. ए पुण्यशाळी पृथ्वीपतिनी हयातीमांज कुमार वखतसिंहजीनां मोरवीवाळां जाडेजी राणी वाजीराजबाए वि-सं. १८८० ना पोशशुदी १ ने शुक्रवारे कुमार जसवतसिंहजीने जन्म आप्यो. ए वाजीराजबाने जसवतसिंहजी उपरांत दानसिंहजी, वेरोजी, खेंगारजी अने देवोजी नामना चार कुमार तथा बाइसाबबा, मोंघीबा, हाजुबा अने अदीबा नामनां चार कुंवरी मळी कुल आठ संतान थया हतां. ज्यारे राज डोसोजी द्वारिकानी यात्राए पधार्या हता

+ राजपूत राजाओमां परणवानी बे रीत छे एक हयेवाळे अने बीजी खांडे. तेमां वरराजा जाते परणवा जाय ए लग्न "हयेवाळे" तथा कन्याने त्यां वर तरफथी तलवार अथवा खांडुं जाय अने ए खांडा साथे कन्यानां लग्न करवामां आवे तेने "खांडे परणवुं" कहे छे. हयेवाळे परणवाथी वधारे मुशीबती अने खर्च थाय छे. कारणके तेमां वरराजा पोताना मित्रमंडळ सहित जाते परणवा पधारे छे. खांडा करतां ए रीति घणेज थोडे भागे वपराय छे.

त्यारे तेओनी साथे बामा, मोटी बाइ तथा दीकरा दीकरीओ मळी एकंदर पांचसो माणसो, सो जुत अने अढीसो घोडा हता; तेओ नामदारे द्वारिकामां गोमती स्नान करी चोराशी जमाडी तेमज श्री द्वारिकानाथजीना मंदिरपर ध्वजा चढावी अने त्यांना गोरने सामान शोखे अश्व एक, पोतानो समग्र पोशाक, हेम गदी पचाशना आभूषण तथा रुपानो तोडो एक दक्षिणामां आप्यो हतो. वळतां जाम साहेबे खंभाळीआ सूधी सामा माणसो मोकली राज डोसाजीने नगर पधराव्या अने बेठक उठक-मां कांइ पण तफावत नहि राखतां जनानो अंदर बामा साहेब तथा बाइसाहेबबा वगेरेने उतारो आप्यो. जामसाहेबे करेली उत्तम प्रकारनी सरभराथी राज डोसोजी प्रसन्न थया अने तेओनी मागणीथी श्रीमान वखतसिंहजीनां पुत्री बाइसाहेबबानो संबंध त्यांना राजकुमार अजा-जी उर्फे गगजीभा साथे कर्यो. त्यारबाद आनंद पूर्वक वांकानेर पधारी पोताना पौत्र कुमार श्री जसवतसिंहजीनां लग्न लजाइना जाडेजा जेसिंहजीनां कुंवरी अदीबा वेरे तथा बाइसाहेबबाना लग्न जामनगरना कुमारश्री अजाजी वेरे म्होटी धामधू-मथी कर्यां. पोते एवा शोखीन हता के ए अरसामां रेल्वेनुं साधन नहि होवा छतां पौत्रना लग्न महोत्सव प्रसंगे अमदावादथी रंगबेरंगी चित्रविचित्र फुलवाडीओ मगावी हतो अने चार दिवस पर्यन्त ठाठमाठथी जूदी जूदी रीते वरणागीओ फेरवी हती. कुंवरीश्री बाइसाहेबबाने घणोज उत्तम दायजो आपी नगर वोळाव्यां हतां अने तेओनी साथे कायम रहेवा माटे त्रीश माणसो आप्यां हतां. लग्न संबंधी केटलुंएक काम शाह अवेर वेलाणी तेमज ठक्कर मेघा वीरजीनी देखरेख नीचे थयुं हतुं. ए लग्न प्रसंगे मोरबीना ठाकोर पृथीराजजीए महेता मुसद्दीओ तथा केटलांएक माणसो सहित पोतानुं जनानु मोकल्युं हतु, जेमां हंसकुंवर तथा प्राणकुंवर नामनी तेओनी बे रखात राणीओ हती. ए बन्नेने ठाकोरसाहेबे कह्युं हतुं के-जो मारां व्हेन बाजीराजबा उभां थइ तमोने मळे तो तेओने एक लाख कोरीनी उपजवाळुं एक गाम अघाट आपवा मारो विचार छे अने तोज हुं विवाह व-खते आवीश नहितो नहि आवुं. ए खबर बाजीराजबाने मळतां तेओए कह्युं के "मारे गाम जोइतुं नथी, हुं ठाकोर जीआजीनी दीकरी रखातने कदी पण उभी थइने मळनार नथी." आनुं नाम राजपूताणी के जेणे पोतानी प्रतिष्ठा जाळववा हजारो रुपिआनी हांसलने धिक्कारी काढी. एथी ठाकोरसाहेब न आव्या. मोरबीथी आवेला माणसो भाणेजने मोसाळामां हाथी तथा पोशाक आपी चाली निकळ्या. वढवाणथी जनाना सहित बाइश्री वाघेलीमा अढीसो माणस लइ आव्यां हतां तथा मोरबी ठाकोरना भाइ मकुभा पण पधार्या हता. विवाह घणोज वखाणवा लायक थयो हतो.

जामनगरथी म्हेता गंगाराम तथा भावसार मोनाभाइना मुखीपणा हेठळ साडा त्रणसो माणसो तथा हाथी घोडाओ सहित आवेलुं ओंझणुं आठ दिवस वांकानेर रोकायुं हतुं. राजसाहेब तरफथी तेमज जामसाहेब तरफथी ब्राह्मण, भाट तथा चारणोने सारी रकमो मळी हती.

वि० सं० १८९५ ना फाल्गुन शुदि ८ ने दिवसे राज डोसाजीनो स्वर्गवास थतां श्रीमान वखतसिंहजी वांकानेरना राज्यासनपर विराजमान थया. ए अरसामां काठिआवाडनी अंदर नामदार ब्रीटीश सरकारनी प्रबळ सत्ता दिनप्रतिदिन वृद्धि पाम्ये जती हती. जेथी ए प्रान्तना राज्यकर्ताओए सुखवर्धक शान्तिना आशीर्वादोने ओळखी लूंटमारनी प्रथानो परित्याग करवा प्रयत्न कर्यो. एथी एओनो लडायक जुस्सो नरम पड्यो अने तेओने दीर्घ समय पर्यन्त प्रवृत्तिवाळी लडायक जींदगी भोगववा फरज पडी न हती. एक वखत एवो आव्यो के तेओ पोतानुं सर्व बळ अंदरनो राज्यकारभार सुधारवाने वापरी शक्या, परंतु ए जातनुं काम समजवाने अशक्त होवाथी तेओ कारभारी लोको जेम दोरवे तेम दोराता. ए वखतना राजाओ सारा लडवैया हता, परंतु राजकाजमां एटला बधा कुशळ न हता; तेम ए बाबत स्हेलाइथी समजी शकवाने तेओ समर्थ पण न थया; एथी मात्र मोजशोखमांज पोतानुं अमूल्य जीवन विताववा लाग्या. काठिआवाडमां सेंकडे पोणोसो टका तालुकदारोए तेमज महान राज्यकर्ताओए पोतपोतानी जींदगी एज रीते पसार करेली छे.

राज वखतसिंहजी शान्तिने इच्छनारा अने निखालस हृदयना महाराजा हता, तेओनो बीजो विवाह कच्छ देशनी अंदर आवेला वांढीआ नामने गामे थयो. ए बाइनुं नाम बाइराजबा हतुं. एनाथी कुमार श्री दीपसिंहजीनो जन्म थयो. त्रीजीवार तेओ मुळीए परण्या ए बाइनुं नाम चांदबा हतुं, एने कांइ संतति थइ नहीं.

राज वखतसिंहजीए पाटवी कुमार जसवतसिंहजीने बीजीवार मधुतरे[1] जाडेजा वखतसिंहजीनां दीकरी बाइबा साथे तथा त्रीजी वार गाम रोझका[2] चुडासमानी कन्या हीरजीबा साथे धामधूमथी परणाव्या. लजाइवाळां राणीश्री अदीबाए वि० सं० १८९९ ना चैत्र शुदि ९ ने सोमवारे राजकुमार बनेसिंहजीने जन्म आप्यो अने मधुतरावाळां राणीश्री बाइबाथी कुंवरीश्री नानीबानो जन्म थयो.

---

१ मधुतरा कच्छ वागडमां छे. २ रोझका लींबडी पासे छे.

श्रीमान जसवतसिंहजी वि० सं० १९०० ना श्रावण शुदि १२ ने दिवसे पोताना पितानी हयातीमांज मात्र वीश वर्षनुं अल्प आयुष्य भोगवी स्वर्गवासी थया.

राज वखतसिंहजीना वखतमां कोइएक नागाबावा नामना योगी वांकानेरमां आव्या हता, तेओना अपूर्व चमत्कार जोइ राज वखतसिंहजीए तेने गुरु मान्या अने आग्रहपूर्वक वांकानेरमां राख्या. ए महात्मा त्रिकाळदर्शी, वचनसिद्धिवाळा तेमज घणा वखाणवा लायक त्यागी हता; तेना उपर राजसाहेबनो एटलो बधो प्रेम हतो के तेओ नामदार तेने केटलांक उत्तम वस्त्रो तेमज साल दुशालाओ आपता, परन्तु नागोबावो ते तमाम पोता पासे जे कोइ साधु संत आवता तेने आपी देता अने पोते तो निरंतर दिगंबर दशामांज दिवसो वितावता, मात्र ज्यारे दरबारमां आवता त्यारे पग सूधी लांबो एक भगवो झब्बो पहेरता. महाराजा राजसाहेबे तेओने चडवा माटे एक उत्तम घोडी आपी, ए नागाबावाए फरवा जवाने मिषे घोडे दूर निकळी कोइएक पगे पाळा साधुने आपी दीधी. आ रीते अनेक वस्तुओ महाराजा राजसाहेब तेने आपता, छतां ते तो हमेशां त्यागीने त्यागीज रहेता. आथी नामदार राजसाहेबना कामदार वोरा हंसराज नागाबावा उपर घणोज द्वेष राखता अने एथीज एणे उक्त महात्मानां खोटां छिद्रो जोवा पोतानां अमुक माणसोने योज्यां हतां. नागोबावो एक दादा खवास नामना माणसनी स्त्री पुरबाइने धर्मनी माता मानी तेने त्यां दररोज जता अने मातानी पेठे प्यार करी तेने धावता हता. पुरबाइ पण तेने पोताना पुत्र पेठे मानी धवरावती. जो के ए बाइ पुख्त उम्मरनी होवाथी एनुं धावण सूकाइ गएलुं हतुं, तो पण जाणे तुरतमांज बाळक जन्म्युं होय तेम धावणनी शेडो छूटती हती. आ बनावने वोरा हंसराजे जूदा रुपमां गोठवी नामदार राजसाहेब हजुर जाहेर कर्युं के तमारो गुरु पुरबाइ खवासणनी साथे चाले छे. जो के ए वात राजसाहेबना मानवामां न आवी, तो पण विशेष खात्री अर्थे तेओ नामदारे पोताना प्रतिष्ठित अने विश्वासु माणसोने ए बनाव नजरे जोवा सूचना करी. फरी एक दिवसे ज्यारे नागो बावो धावता हता, त्यारे नामदार राजसाहेबनां माणसोए छुपीने जोयुं तो नागोबावो मात्र छ महिनाना बाळक जेवडाज पुरबाइना खोळामां पड्या पड्या धावता हता, आ अपूर्व बनावनी श्रीमान राजसाहेबने खबर मळतां तेओनी भक्ति नागाबावा साथे वधारे दृढ थइ.

वि० सं० १९०१ ना अरसामां महाराजा राज वखतसिंहजी ज्यारे द्वारिकानी यात्राए पधार्या त्यारे नागोबावो पण साथे हता, वळता सहु जामनगरना महाराजा जाम विभाजीना मिजमान बन्या. महाराजा जामसाहेबने महान् धर्मनिष्ठ जोइ प्रसन्न थएला नागाबावाए तेओने

कह्युं के "हुं तारे त्यां जन्म लइश." महाराजा जामे घणीज नम्रताथी प्रणाम करी कह्युं के "मारां एवां भाग्य क्यांथी के आप मारे त्यां जन्म लीओ ?" कचेरीमां बेठेला तमाम माणसोए ए वखते प्रत्यक्ष नहि बोलतां नागबावानी वातने हसी कहाडी; परंतु महाराजा जामसाहेबने ए महात्माना वचन उपर दृढ विश्वास बेसी गयो. महाराजा राज बावरसिंहजी तथा नागोबावो वगेरे वांकानेर आव्या. त्यारबाद थोडां वर्ष पछी नागबावाए पोताना तपनी पूर्णाहुती करी घणा ब्राह्मणोने तेमज साधु-संतोने जमाड्या अने पोतानी पाषाणमूर्ति पोतानी हाजरीमांज कडीआओ पासे तैयार करावी एक मकान चणाववा मांडयुं. ए पछी ज्यारे तेओ अग्निप्रवेश करवा तैयार थया त्यारे महाराजा राजसाहेबे तेओने तेम करतां अटकाव्या, परंतु पाछळथी कोइ न जाणे तेम चुनानी भट्टी करवाने मिषे एक म्होटी खाड खोदावी अने तेमां छाणां लाकडां पूरावी थोडां घणां सुखडनां कटका पण नंखाव्यां; एनी अंदर ब्राह्मण जमाडवाने मिषे अगाउथी मगावी राखेला घृतना कुडलाओ रेडी अग्निने प्रज्वलित कर्यो अने तेज रात्रीना बार वागताने सुमारे एक म्होटा छराथी पोतानुं मस्तक पोताने हाथे छेदी होम्युं, पछीथी ए महात्मानुं धड पण जाज्वल्यमान अग्निनी ज्वाळामां जइ पडयुं. ए वातनी महाराजा राजसाहेबने जाण थतां तेओने महान् खेद थयो. नागो बावो जीवित हुताशन प्रवेश कर्या पहेलां एक चीठी लखी गया हता के—"हवे हुं महाराजा जामसाहेबने त्यां जन्म लइश, मारुं नाम धनराशि उपर रहेशे, मारो विचार पूर्ण राज्य करवानो हतो, परंतु आपे मने अग्नि प्रवेश करतां अटकाव्यो अने मारा मनोरथमां एक वर्षनुं विघ्न नांख्युं, एथी हवे हुं पूर्ण राज्य नहि करी शकुं; मारी अन्तिम अवस्था योगी जेवां आचरणमांज व्यतीत थशे." ए चीठी वांची महाराजा राजसाहेबने वधारे अपशोस थयो. जे दिवसे नागाबावाए जीवित हुताशन प्रवेश कर्यो तेज दिवसे जाम विभाजीनां राणी म्होटां धनबाइने गर्भ रह्यो अने पूर्ण मास थतां वि–सं. १९१३ ना कार्तिक वदी ६ ने दहाडे पुत्र अवतर्या अने तेनुं नाम भीमसिंहजी उर्फे कालुभा राखवामां आव्युं. आ वातने पुष्टि आपनार **भुटान्त** नामना भविष्यप्रकाशक पुरातन ग्रन्थमां लखेलुं छे के—"वि–सं. १९०१ मां कोइ एक धैर्यवान् राजा भेख लेशे अने ते निर्वाणपदने पामी सदाकाळ नग्न रहेशे. वचनमां रिद्धिसिद्धिवाळो अने त्रिकालदर्शी ए महात्मा जाम विभाजी पासे आवी केटलीएक आगम वार्ता कही अंतमां कहेशे के तारा जेवा धर्मीष्ट राजाने घेर पुत्र बनी आववा मारी इच्छा छे, जामनगरनी गादीनो भूपाळ बनवा तेर वर्ष पछी कार्तिक वदि ६ ने दहाडे तारे त्यां जन्म लइश."

वळी एज ग्रन्थमां अमुक पेरीग्राफने अंतरे लखेलुं छे के—" वि–सं. १९१३ मां उपर

कहेल नागो वांकानेरमां जीवित हुताशनप्रवेश करशे, अने एज सालमां विभाजामने घेर पुत्र जन्मशे, तेनुं नाम धनराशिए धारण करावाशे. "

राज वखतसिंहजीना वखतमा वोरा हंसराजे लगभग वीश वर्ष कारभार कर्यो, परंतु राज्य माथे थएलुं करज तेनाथी कापी शकायुं नहि. कारण के राजकुटुंब विशाळ होवाने लोधे विवाहत्राजन वगेरे कार्योमां प्रतिष्ठानी खातर लाखोनो लक्ष्मीनो व्यय करवो पडतो हतो. वि-सं. १९०५ मां राज वखतसिंहजीए पोताना फटाया कुमार दानसिंहजीने खाजडीयुं तथा वणझारुं, वेराजीने पंचाशीआ तथा राणेकपरनो अर्ध भाग, खेंगारजीने सींधावदर तथा कालावडीनो अर्धभाग, देवीसिंहजीने पंचाशीआ तथा राणकपरनो अर्धभाग, अने दीपसिंहजीने सींधावदर तथा कालावडीनो अर्धभाग गरासमां आप्यो.

राज वखतसिंहजी पण पोताना पितानी माफक भक्त तेमज स्वधर्मनिष्ट हता. वि-सं. १९०७ मां तेओ जनाना सहित प्रभासपाटणनी यात्राए पधार्या, त्यारे बामासाहेब श्री रुपाळीबा, वजेराजजीना वहु जवलबा तथा जालिमसिंहजीना वहु बाइराजबा वगेरे साडापांचसो माणसो साथे हतां. रेल्वेनुं साधन नहि होवाथी त्रणसो घोडा, सवासो जुत अने पांच रथ साथे लीधेलां हतां. वांकानेरथी प्रयाण कर्या बाद तेओ गोंडळमां चार दिवस रोकाया हता अने त्यांथी धोराजी पधार्या, ए वखते गोंडलना कारभारी केटलाएक स्वारो सहित त्यांसुधी सरभरा करवा माटे साथे गया हता. धोराजीमां बे दिवस रह्या बाद प्रभास जइपहोंचेला महाराजा वखतसिंहजीए सरस्वती नदीने किनारे तंबूओ तणावी सात नारायणवली करी श्राद्ध कर्युं, गोरने बेहजार मुद्रा दक्षिणा आपी, चोराशी जमाडी, त्यांथी पीपळे पाणी नामवा पधार्या, त्यां एक रात्री रही पाछा प्रभास पधार्या, त्यां जूनागढना माणसो तेडे आवेलां होवाथी सर्व जूनागढ गया. त्यां आठ दिवस रोकाया, बधा गिरनार उपर चढ्या अने दामोदर कुंडमां न्हाया. राज वखतसिंहजीए ए तीर्थस्थळोमां अनेक प्रकारनां पुण्यदान कर्यां. प्रभासथी वळतां तेओश्रीने वेरावळमां छावणी नांखी पडेला काठिआवाडना मे. पोलीटीकल एजन्ट कर्नल लेंगसाहेबनी मुलाकात थइ हती.

आ उपरांत राज वखतसिंहजीए बे वखत द्वारिकानी यात्राओ पण करी हती. वि-सं. १९०८ ना आषाढ शुदि ९ ने दहाडे कुंवरी श्री हाजुबाने राजकोटना ठाकोर श्री मेरामणजी साथे परणाव्यां. ए संबंध महेता अनंतजी हधु थयो हतो. वोरा हंसराजना मुखीपणा हेठळ दोढसो माणसो षाइने वोळाववा गयां हतां. राजकोटथी ओझणामां पारेख लालजी वगेरे अढीसो माणसो

आव्यां हता अने ए सर्वने स्वागत सहित उत्तम प्रकारनो पोषाक आपवामां आव्यो हतो.

वि-सं. १९०९ ना अषाढ शुदि ९ ने दिवसे राज वखतसिंहजी पोते चोथीवार कच्छ देशान्तर्गत गाम गजोडना कुंवरी श्री लाडुवा साथे परण्या. ए वखते मुखी वोरा मवजी तथा म्हेता जीवणराम ओंझणुं लइ त्यां गया हता

वि-सं. १९११ ना महाशुदि ३ ने शुक्रवारे राज वखतसिंहजीए कुंवरी श्री मोंघीवाने नवानगरना जाम विभाजी साथे तथा कुंवरी श्री अदीवाने कच्छभुजना राओ श्री देशळजीना भाइ हमीरजी के जेने पाछळथी तेरा नामनो तालुको (सेकन्डक्लास) स्टेट गरासमां मळेलो छे, तेनी साथे म्होटी धामधूमथी परणाव्यां. ए वखते नगरथी तथा भुजथी खांडु लइने बे ओंझणां आव्यां, तेमां नगर तरफथी म्हेता देवचंद तथा म्हेता माणशंकर वगेरे पांचसो माणस, बसो घोडा तथा एक हाथी अने भुज तरफथी कायस्थ राघवजीभाइ तथा लधा राघवजी वगेरे बसो माणस, पोणोसो घोडा अने दश उंट आव्या हता. राज वखतसिंहजीए खानपान आदिथी सर्वने संतुष्ट करी किम्मती पोशाक आप्यो हतो.

त्यारबाद बे वर्षे अर्थात् वि० सं० १९१३ ना मार्गशीर्ष मासमां एवो कलह जाम्यो के जे राज वखतसिंहजीनी सुखमय अने लांबी कारकीर्दीमां एकज वखत बनवा पाम्यो हतो. पाडल अने सरोडी वच्चेनी वीडी वांकानेर अने थानना सरहद उपर होवाथी जो वांकानेरवाळा वाढे तो थानना हकने वांधो आवे अने थानवाळा वाढे तो वांकानेरना हकने वांधो आवे एटला माटे घणा वर्षो थयां एमनी एम पडी हती, जेथी वांकानेर अने थानने आटला दिवस सूधी जोखममां उतरवुं पडयुं नहोतुं, पण ज्यारे थानना पांच पळेचा झालाओ तथा दश मकराणी मानजी सिपाहीना मुखीपणा हेठळ लगभग बसो मजूरने लइ वीडीमां दाखल थया अने वाढ शरु कर्यो, त्यारे सरहदनी संभाळ राखनारा वांकानेर तरफना माणसे राज वखतसिंहजीने खबर आप्या के "थानना माणसोए निडरपणे वीडीने वाढवा मांडी छे" महाराजा राजसाहेबे एज वखते सुंदरजी रावळ अने शेरु गोरीना मुखीपणा हेठळ पंदर घोडेस्वार तथा पंदर धोळकीया (मुमना) ने त्यां मोकली आप्या. ए लोकोए प्रथम सेखरडीना पटेल सवा धोरीयाने तथा एक राजगर ब्राह्मणने वीडीमां मोकली थानना माणसोने कहेराव्युं के-" आनुं परिणाम सारुं नहि आवे, माटे तमो वाढ बंध राखो, अने आव्या छो ए रस्ते चाल्या जाओ." छतां ममतने लीधे कोइए मान्युं नहि. थान तरफना कोइएक मकराणीए वांकानेरना घोडाओ तरफ बन्दूकनो फेर कर्यो. ए गोळी

सुंदरजी रावळनी घोडीना इनामां लागी अने पेटने अडकती चाली गइ, आथी वांकानेरनां माणसो तुरतज सामा गया अने मारामारी चाली. ए वखते खड वाढवा आवेला वसो माणसो तथा मकराणीओ एकदम भागी गया, मात्र पांच थळेचा झालाओज शुद्ध राजपूत होवाने लीधे धींगाणामा अडग रह्या अने एक पछी एक पाचे मार्या गया. मानजी सिपाही पण घणोज घायल थयो. वांकानेर तरफना ७ घोडा, हेरीसीडी, बाघजी खोखर, नथु गोरी, रामो खवास तथा वनेसिंह देदो वगेरे केटलांक माणसो घवायां. थान तरफना पांच घोडां तथा केटलांएक हथियारो कबजे करो वांकानेरवाळा पाछा वळ्या त्यारबाद आशरे छ सात महीने मे. लांगसाहेब राजकोटथी वांकानेर पधार्या अने गाम जांबुडीए मुकाम राखी, महाराजा राजसाहेबने समजावी तेओ नामदार थाननां घोडा तथा हथियारो पाछा अपाव्यां. ए धींगाणुं कल्याणीधार उपर थएलुं हतु.

श्रीमान् राजसाहेबश्री वखतसिंहजीए वि० सं० १९१५ ना वैशाख वदी १० ने शुक्रवारे पोताना पौत्र श्रीमान वनेसिंहजीने मोरबी ठाकोरश्री रवाजीनां कुंवरी साथे हथेवाळे परणाव्या. वोरा हंसराज तथा म्हेता मानशंकर वगेरे सातसो माणसोथी जान जोडी पोते जाते त्या पधार्या हता अने लग्नक्रिया समाप्त थया बाद भाट चारणोने सवासो घोडा तथा पदर उंट आपी महान औदार्य बताव्युं हतुं तथा पैसो पण पुष्कळ खर्च्यो हतो.

राज वखतसिंहजीनां गजोडवाळां राणीश्री लाडुबाए माजीराजबा, हरिबा तथा चांदाबा नामना त्रण कुंवरीओने अने करणसिंहजी नामना एक कुंवरने जन्म आप्यो.

वि० स० १९१६ मां राजखटपट शरु थइ. कुमारश्री दीपसिंहजी वगेरेने गरास मळेलो होवा छतां तेओ पोतानुं केटलुएक खर्च राज्यमाथी लेता, एथी राज्य माथे ऋणनो पार रह्यो नहि. राज वखतसिंहजीए नामदार अंग्रेज सरकारनी परवानगीथी वाकानेर तलपद शिवायनां तमाम गामो आणदजी अमरजीने दश वर्षने पेट्टे इजारे आपवानो कागळीओ तैयार कर्यो अने तेमां श्रीमान वनेसिंहजीने सही करवा कह्युं. राजकुमार वनेसिंहजीए ए वातनो इनकार करी पोताना दादाने विनति करी के राज्यने इजारे आपवा करता कार्यभारी तरीकेना समग्र हक आप मने सोंपी आपो, हुं स्वल्प समयमा मने इश्वरे आपेल बुद्धिबळथी राज्यने ऋण रहित करी आपीश, परंतु ए वात राज वखतसिंहजीए लक्षमां न लीधी. राजकुमार वनेसिंहजी विरुद्ध कावतरु रचायुं, तेओ कार्यकुशळ

---

१ ए बाइने लहु मोटाया कही बोलावता.

माणसनी सलाहथी गुप्तरीते मोरबी जइ पहोंच्या. ए वखते राज्यना भयथी तेओनी साथे जवा कोइनी हिम्मत न चाली. मात्र एक तेमना हजुरीए साथे जवा हिम्मत भीडी हती. पोताना श्वसुर ठाकोर, रवाजीने सघळी हकीकतथी वाकेफ करी तेओनी सलाह मुजब महेता झुंझाभाइ सखीदासनी साथे राजकोट पधार्या. त्यां गया बाद तेओए जीवणराम घेलाभाइ महेताने वकील करी पोताना दावा पोतानी मरजी विरुद्ध स्टेटनी उपजनी कांइपण व्यवस्था न करी शके एवा मतलबनी एक अरजी एजन्सीमां दाखल करी नामदार सरकार तरफथी स्टेटने इजारे मूकवा सबंधी परवानगी नहि मळता राज वखतसिंहजीनो मनोरथ पार पडयो नहि. राजकुमार बनेसिंहजी पाछा मोरबी पधार्या अने त्यां लगभग चारेक मास रह्या तेवामां वि० सं० १९१७ ना मागशर शुदि २ ने दहाडे राज वखतसिंहजीनो स्वर्गवास थता श्रीमान बनेसिंहजीए मोरबीथी तुरत वांकानेर पधारी राज्यनी लगाम हाथमां लीधी. ए वखते राज्यपर देणुं घणु होवाथी पैसा सबंधी स्थिति वणीज नवळी हती.

वि० सं० १९१७ मां तख्तनशीन थएला राज बनेसिंहजीए प्रथम तो राजकुटुंबमां विक्षेपनां बीज रोपनार जूना कारभारी वोरा हंसराजने रुकसद आपी महेता जीवणराम घेलाभाइने कार्यभार सोंप्यो. स्टेटनां गामडांओ इजारे आपवानी प्रथाने बंध करी, स्टेटनी पैसा संबंधी स्थिति सुधारवा उपर विशेष ध्यान आप्युं, न्यायनी अदालतो स्थापी अने नोकर वर्ग प्रजाने पीडे नहि तेमज तेना पासेथी गेरकायदे पैसा न कढावे वगेरे बाबतोमां बराबर सावचेती राखी राज्यनी आबादी करवा मांडी; तेओए गुर्जर भाषानो उत्तमरीते अभ्यास करेलो हतो अने एनी धोरणवार परीक्षा ए वखतना एज्युकेशनल इन्सपेक्टर मी. टी. सी. होपे लीधेली हती.

वि–सं. १९१९ मां राज बनेसिंहजी ध्रोळना ठाकोर जेसंगजीनां कुंवरी सुंदरबा साथे परण्या. महा वदी १ ने बुधवारने दहाडे लग्न निरधारेलां होवाथी वांकानेरथी खांडुं लइ ओझणुं ध्रोळ गयुं हतुं. ए ओझणामां साडात्रणसो माणस तथा एकसोदश घोडांओ हतां. ए सर्वनी आठ दिवस पर्यंत ध्रोळ ठाकोरे उत्तम प्रकारे सरभरा करी हती अने दीकरीने वखाणवा लायक दायजो आप्यो हतो. कपु महेता वगेरे सो माणसो त्यांथी बाइने वोळाववा माटे वांकानेर सूधी आव्या हता. ए बाइ घणाज विद्वान अने चतुर हतां तथा राज बनेसिंहजीने प्रसंगोपात केटलीएक उमदा

१ राज बनेसिंहजी तख्तनशीन थया त्यारे मोरबीथी ठाकोर रवाजी त्रणसो माणसो लइ झुंझा महेता साथे वांकानेर पधार्या हता.

सलाह आपतां. त्यारबाद वि–सं. १९२१ ना मागशर वदी १ ने रविवारे मुळीना परमार वखत-सिंहजीनां दीकरी जेठीबा साथे परण्या अने एज लग्ने गवरीदडनां जाडेजा प्रतापसिंहजीनां कुंवरी बाजीराजबा साथे पोंखाणा.

ए अरसामां कारभारी जीवणराम घेलाभाइपर अरुचि थता राज वनेसिंहजीए जामनगरथी स्वादीआ कीपाशंकर प्राणजीवनने बोलावी कारभार सोंप्यो. पण ए आशरे एक मास वांकानेर-मां रही जामनगर जता रह्या, जेथी फरी जीवणराम घेलाभाइने ए जगो आपवामां आवी; एणे वि–सं. १९२४ सूधी कारभार कर्यो हतो.

राज वनेसिंहजीए वि–सं. १९२२ मां मुंबइथी पुना सूधीनी मुसाफरी करी अने त्यांथी तेओ नाशिक त्र्यंबकनी यात्राए पधार्या. ए वखत दरम्यान तेओए मुंबइना ए वखतना गवर्नर सर बेटलफेरीनी मुलाकात लीधी हती अने एना तरफथी मळेल मानने लीधे घणाज प्रसन्न थया हता.

वि–सं. १९२५ ना कार्तिक शुदि ११ ने दहाडे राज वनेसिंहजी जनाना सहित पांचसो माणसोनो म्होटो संघ कहाडी द्वारिकानी यात्राए पधार्या; जामनगरनी हदमां प्रवेश करतां ए तमामनी जाम श्री विभाजी तरफथी उत्तम रीते खातर बरदास करवामां आवी. राज वनेसिंहजी द्वारिकामां अनेक प्रकारना पुण्य दान करी वळतां जामसाहेबना आग्रहथी जामनगर पधार्या अने त्यां चोवीश दहाडा रोकाया. चालनी वखते जाम श्री विभाजीए राज वनेसिंहजीने मोतीनी माळा तथा पोशाक अने जनानामां सर्वने जरीअन कपडां तेमज साथेनां तमाम माणसोने पोशाक आप्यो हतो. राज वनेसिंहजी नगरथी निकळी जामनी हदमां दरेक स्थळे उत्तम प्रकारनी मिजमानी लेता ध्रोळ पधार्या. ध्रोळना ठाकोर साहेबे पोताना जमाइने बे दिवस आग्रहपूर्वक रोक्या अने त्यांथी तमाम निर्विघ्ने वांकानेर आवी पहोंच्या. ए यात्रामां राज वनेसिंहजी रु. ६०००) छ हजारनी किम्मतनो खास एक हाथी खरीदी साथे लइ गया हता.

वि–सं. १९२६ मां मुंबइना नामदार गवर्नर राइट ओनरेबल वीलीयम रोबर्ट सीमोरवीसी फीटझराल्डे राजकोट मुकामे भरेला दरबारमां राज वनेसिंहजीए हाजरी आपी हती. कारभारी जीवणराम घेलाभाइने रजा आप्या बाद तेओश्रीए राजकोटना रहिश महेता दलपतराम प्रजारामने वि–सं. १९२६ ना भाद्रपद मासमां कारभार सोंप्यो हतो; ए दलपतरामभाइए शुद्ध हृदयथी राज्यनी सेवा बजावी स्टेटनी अंदर घणो सुधारो वधारो कर्यो.